

हिंदी शब्दसागर के संशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ
प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय ने वहन किया ।

परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८६४

स० २०२६ वि०

१६७२ ई०

नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

पूर्ण दस भागों का (२५०)

मूल्य

२५०/-

शशुनाथ वाजपेयी

द्वारा

नागरी मुद्रण, वाराणसी

में मुद्रित

प्रकाशिका

‘हिंदी शब्दसागर’ अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के दिशानिर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओं ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० में मूर्त रूप दिया था। तब से निरंतर यह ग्रंथ इस क्षेत्र में गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज में प्रकाशस्तम्भ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खंड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रंथ के रूप में इसका मूल्य लोगों को सहस्र मुद्राओं से भी अधिक देना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशों का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरंतर इसकी पुनः अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव में अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्यादित पीढ़ी का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढ़ता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बड़े व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसंपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढ़ते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरंतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयंती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप में डा० संपूर्णानंद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एवं हिंदीजगत् का ध्यान निम्नांकित शब्दों में इस और आकृष्ट किया—‘हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ़ गया है। हिंदी में एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका वृहत् संस्करण निकालने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों का सहारा मिलता रहे।’

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—‘वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण में सभा ने लगभग एक लाख रुपये व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया संस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला संस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातों में और हिंदी के अलावा ससार में बहुत बातों में बड़ी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वंचित नहीं रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके

और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियों के लिये भी साधारणतः पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयों का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया संस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपये, जो पाँच वर्षों में बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम में अग्रसर होंगे।’

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुनः संपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामंत्रालय ने अपने पत्र सं० एफ १४—३१५४ एच० दिनांक ११.५.५४ द्वारा एक लाख रुपये पाँच वर्षों में, प्रति वर्ष बीस हजार रुपये करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमंडल का गठन किया गया, इस संवध में देश के विभिन्न क्षेत्रों के अधिकारी विद्वानों की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमंडल के अनेक सदस्यों का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानों की राय के अनुसार इस कार्य का संयोजन करना चाहती थी, वह भी नहीं उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानों तथा परामर्शमंडल के सदस्यों ने गभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के संपादन हेतु सिद्धांत स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामंत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपये का अनुदान बीस बीस हजार रुपये प्रति वर्ष की दर से निरंतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय देता रहा और कोश के संशोधन, संवर्धन और पुनः संपादन का कार्य लगातार होता रहा, परंतु इस अवधि में सारा कार्य निपटाया नहीं जा सका। मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बड़े मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५०००) अनुदान प्रदान करने की सत्सुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुनः उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार संपूर्ण कोश का संशोधन संपादन दिसंबर, १९६५ में पूरा हो गया।

इस ग्रंथ के संपादन का संपूर्ण व्यय ही नहीं, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खंडों तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसी लिये यह ग्रंथ इतना सस्ता निकालना संभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामंत्रालय के अधिकारियों का प्रशंसनीय-सहयोग हमें प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी हैं।

जिस रूप में यह ग्रंथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमें अत्यंत विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रंथों के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव में वैसा कर सकना संभव नहीं हुआ। फिर भी यह कहने में हमें संकोच नहीं कि अद्यतन प्रकाशित कोशों में शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोशों में अतुलनीय है, और इस क्षेत्र में काम करनेवाले प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषाओं के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते हैं कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का संकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवर्धन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सबंधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप में शब्दों की संख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य (पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रंथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एवं पुरस्कृत ग्रंथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से संकलित किए गए हैं। नरिंशष्ट खंड में प्राविधिक एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित संस्करण कुल दस खंडों में पूरा होगा। इसका पहला खंड पौष, संवत् २०२२ वि० में छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतंत्र के प्रधान मंत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग में ३ पौष, सं० २०२२ वि० (१८ दिसंबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पहाल में काशी, प्रयाग एवं अन्यान्य स्थानों के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियों, पत्रकारों तथा गण्यमान्य नागरिकों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। समारोह में उपस्थित महानुभावों में विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान संपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानंदन जी पंत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित संवर्धित संस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य में इसके समस्त संपादकों को एक एक फाउंटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रंथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलों

द्वारा भेंट की गई। उन्होंने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण में इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियों की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढंग की अकेली संस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी संस्था ने नहीं की। भिन्न भिन्न विषयों पर जो पुस्तकें इस संस्था ने प्रकाशित की हैं वे अपने ढंग के अनूठे ग्रंथ हैं और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढ़ा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ में लिए हैं जिनकी इस समय नितांत आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र में यह सभा अग्रतिम है'।

प्रस्तुत नवें खंड में 'व' से लेकर 'ठ्यूति' तक के शब्दों का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, योगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से संकलित इस भाग का शब्दसंख्या लगभग २०,००० है। अपने मूल रूप में यह अंश कुल ४२८ पृष्ठों में था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित संस्करण में लगभग ४४९ पृष्ठों में आ पाया है।

संपादकमंडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण में योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ नियमित रूप से नित्य सभा में पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गंभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके संपादन और संयोजन में प्रगाढ़ निष्ठा के साथ घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य संपन्न होना संभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। संभव है, हम सबके प्रयत्न में त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहे क्योंकि ऐसे ग्रंथ का कार्य अस्थायी नहीं, सनातन है।

अंत में शब्दसागर के मूल संपादक तथा सभा के संस्थापक स्व० डा० श्यामसुंदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह संकल्प हम पुनः दुहराते हैं कि जब तक हिंदी रहेगी तब तक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र में यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया संस्करण और भी अधिक प्रभोज्य होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी }
निर्जला एकादशी २०२६ वि० }

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री

संकेतिका

[उद्धरणों में प्रयुक्त संदर्भग्रन्थों के इस विवरण में क्रमशः ग्रन्थ का संकेताक्षर, ग्रन्थनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं ।]

प्रवेरे०	प्रवेरे की भूख, डा० रागेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण	अरस्तू०	अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २०१४ वि०
अबिकादत्त (शब्द०)	अबिकादत्त व्यास	अर्चना	अर्चना, प० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कला-मंदिर, इलाहाबाद
अकबरी०	अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, स० २००७	अर्थ०	अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), सपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस, मैसूर, प्र० स०, १९१९ ई०
अखबार	'आज' दैनिक, वाराणसी	अर्घ०	अर्घकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० स०
अखिलेश (शब्द०)	अखिलेश कवि	अष्टाग (शब्द०)	अष्टागयोग संहिता
अग्नि०	अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०	अष्टाग०	अष्टागयोग संहिता
अजात०	अजातशत्रु, जयशकर प्रसाद, १६वां स०	अष्टाघी	अष्टाघी, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम स०
अणिमा	अणिमा, प० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', युग मंदिर, उन्नाव	आ० अ० रा०	आज की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मंदिर, पटना, १९५१ ई०
अतिमा	अतिमा, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स०	आकाश०	आकाशदीप, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
अधखिला (शब्द०)	अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिंह उपाध्याय	आचार्य०	आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चंद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० स०
अनामिका	अनामिका, प० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० स०	आग्नेय अनु-क्रमणिका (शब्द०)	आग्नेय अनुक्रमणिका
अनुराग०	अनुरागसागर, सपा० स्वामी युगलानंद विहारी, वैकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० स०	आदि०	आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० स०, १९५३ ई०
अनुराग बाग (शब्द०)	अनुराग बाग	आधुनिक०	आधुनिक कविता की भाषा
अनेक (शब्द०)	अनेकार्थ नाममाला (शब्दसागर)	आनंदधन (शब्द०)	कवि आनंदधन
अनेकार्थ०	अनेकार्थमजरी और नाममाला, सपा० बलभद्र-प्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आफ इलाहाबाद स्टडीज, प्र० स०	आराधना	आराधना, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार ससद्, इलाहाबाद, प्र० सं०
अपरा	अपरा, प० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग	आर्द्रा	आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, असी, प्र० स०, १९८४ वि०
अपलक	अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई०	आर्य भा०	आर्यकालीन भारत
अभिषाप्त	अभिषाप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई०	आर्यों०	आर्यों का आदिदेश, सपूर्णानंद, भारता भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९६७ वि०, प्र० स०
अमिट०	अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई०	इंद्र०	इंद्रजाल, जयशकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
अमृतसागर (शब्द०)	अमृतसागर	इंद्रा०	इंद्रावती, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
अयोध्या (शब्द०)	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिप्रोष'		

इंशा०	इंशा, उनका काव्य तथा रानी कितकी की कहानी, सपा०, वजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथ-माला, बुलानाला, काशी, प्र० स०	कविता की०	कविता कीमुदी (१-४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर, प्रयाग, तृ० स०
इति०	इतिहास और छालोचना, नामवर सिंह, प्र० सं०	कवित्त०	कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशंकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग
इतिहास	हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवी स०	कादंबरी (शब्द०)	कादंबरी ग्रंथ अनुवाद
इत्यलम्	इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली	कानन०	काननकुसुम, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पंचम स०
इनशा (शब्द०)	इनशा अत्ला खौ	कामायनी	कामायनी, जयशंकर प्रसाद, नवम स०
इरा०	इरावती, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०	काया०	कायाकल्प, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ६वां स०
उत्तर०	उत्तररामचरित नाटक, अनु० प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पंचम स०	काले०	काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मंदिर, प्रयाग, २००७ वि०
एकांत०	एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९८६ वि०	काव्य०	काव्यशास्त्र
कंकाल	कंकाल, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स०	काव्य० निबध	काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
कठ० उप० (शब्द०)	कठवल्ली उपनिषद्	काव्य० प्र०	काव्य प्रभाकर (शब्द०)
कढी०	कढी मे कोयला, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स०	काव्य० य० प्र०	काव्य यथायं और प्रगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र० स०, २०१२ वि०
कबीर ग्र०	कबीर ग्रंथावली, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी	काशीराम (शब्द०)	काशीराम कवि
कबीर० बानी	कबीर साहब की बानी	काश्मीर०	काश्मीर सुपमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
कबीर बीजक	कबीर बीजक, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, वाराणसी, २००७ वि०	काण्डजिह्वा (शब्द०)	काण्डजिह्वा स्वामी
कबीर बी०	कबीर बीजक, सपा० हंसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, वाराणसी, २००७ वि०	कासीराम (शब्द०)	कासीराम कवि
कबीर म०	कबीर मसूर (२ भाग), वैकुण्ठेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई, सन् १९०३ ई०	किन्नर०	किन्नर देश में, राहुल सांकृत्यायन, इंडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स०
कबीर० रे०	कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेस्ते, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद	किशोर (शब्द०)	किशोर कवि
कबीर० श०	कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८	कीर्ति०	कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० सं०
कबीर(शब्द०)	कबीरदास	कुकुर०	कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमंदिर, उन्नाव
कबीर सा०	कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानंद विहारी, वैकुण्ठेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई	कुणाल	कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी
कबीर सा० सं०	कबीर साखी सग्रह, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०	कृषि०	कृषिशास्त्र
कमलापति (शब्द०)	कवि कमलापति	केशव (शब्द०)	केशवदास
करुणा०	करुणालय, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०	केशव ग्र०	केशव ग्रंथावली, सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
करुण०	सेनापति करुण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०	केशव० ग्रमी०	केशवदास की ग्रमीघुट
कर्पूर मजरी (शब्द०)	कर्पूरमजरी नाटक, भारतेंदु लिखित	कोई कवि (शब्द०)	अज्ञातनाम कोई कवि
कविद (शब्द०)	कविद कवि	कुलार्णव तत्र (शब्द०)	कुलार्णव तत्र
		कौटिल्य ग्र०	कौटिल्य का ग्रंथशास्त्र
		कवासि	कवासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई०
		ज्ञानखाना (शब्द०)	अबुदुर्रहीम खानखाना
		खालिक०	खालिकवारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि०
		खिलीना	खिलीवा (मासिक)

खुदाराम	खुदाराम और चंद हसीनो के खतूत, पाँचवे वचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर आठवाँ स०	घनानंद	घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
खुमरो (शब्द०)	प्रमीर खुमरो	घाघ०	घाघ और भट्टरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
खेती की पहली पुस्तक (शब्द०)	खेती की पहली पुस्तक	घासीराम (शब्द०)	घासीराम कवि
गग क०	गंग कवित्त (प्रयावली), सपा० बटेकृष्ण ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०	चंद०	चंद हसीनो के खतूत, 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० सं०
गदाधर०	श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी	चंद्र०	चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, नवाँ स०
गदाधर सिंह (शब्द०)	गदाधर सिंह	चक्र०	चक्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदया- चल, पटना, प्र० सं०
गदन	गवन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स०	चरण (शब्द०)	चरणदास
गगं संहिता (शब्द०)	गगं संहिता	चरणचंद्रिका (शब्द०)	चरणचंद्रिका
गालिब०	गालिब की कविता, स० कृष्णदेवप्रसाद गौड़, वाराणसी, प्र० सं०	चरण० बानी	चरणदास की बानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहा- बाद, प्र० सं०
गि० दा०, गि० दास गिरिधरदास (शब्द०)	गिरिधरदास (दा० गोपालचंद्र)	चाँदनी०	चाँदनी रात और अजगर, उपेंद्रनाथ 'अशक', नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० सं०
गिरिधर (शब्द०)	गिरिधर राय (कुडलियावाले)	चाणक्य नीति (शब्द०)	चाणक्य नीति
गीतिका	गीतिका, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०	चाणक्य (शब्द०)	चाणक्य नीति दर्पण
गुजन	गुजन, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०	चिंता	चिंत, प्रज्ञेय सरस्वती प्रेस, प्र० सं०, सन् १९४० ई०
गुधर (शब्द०)	गुधर कवि	चिंतामणि	चिंतामणि (२ भाग), रामचंद्र शुक्ल, इडियन प्रेस, लि०, प्रयाग
गुमान (शब्द०)	गुमान मिश्र	चिंतामणि (शब्द०)	कवि चिंतामणि त्रिपाठी
गुरुदास (शब्द०)	गुरुदाम कवि	चित्रा०	चित्रावली, स० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
गुनाब (शब्द०)	कवि गुलाब	चुभते०	चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरि- औध', खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं०
गुनाल०	गुनाल बानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०	चोखे०	चोखे चौपदे, " " "
गोकुल (शब्द०)	कवि गोकुल	चोटी०	चोटी की पकड़, 'निराला', किताब महल इलाहाबाद, प्र० सं०
गोदान	गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० सं०	छंद०	छंद प्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०
गोपाल उपासनी (शब्द०)	गोपाल उपासनी	छत्र०	छत्रप्रकाश, स० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२९ ई०
गोपाल० (शब्द०)	गिरिधर दास (गोपालचंद्र)	छिताई०	छिताई वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
गोपालभट्ट (शब्द०)	गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक	छीत०	छीत स्वामी, सपा० ब्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, काँकरोली, प्र० सं०, सवत् २०१२
गोरख०	गोरखबानी, स० डा० पीतावरदास बड्डवाल, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, द्वि० सं०	जंतुप्रबंध (शब्द०)	जंतुप्रबंध ग्रंथ
गोल० (शब्द०)	गोलघिनोद (ग्रंथ)		
ग्राम०	ग्राम साहित्य, सपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर, प्रयाग, प्र० सं०		
ग्राम्या	ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०		
घट०	घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिव, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० सं०		

जग० बानी	जगजीवन साहव की बानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०६, प्र० सं०	तितली	तितली, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स०
जग० श०	जगजीवन साहव की शब्दावली	तिथितत्व (शब्द०)	तिथितत्व निर्णय
जगन्नाथ (शब्द०)	जगन्नाथप्रसाद 'भानु'	तुलसी	तुलसीदास, 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ स०
जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)	जगन्नाथ शर्मा (लेखक)	तुलसी ग्र०	तुलसी ग्रंथावली, सपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय स०
जनमेजय०	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पंचम स०	तुलसी मुधाकर (शब्द०)	तुलसी मुधाकर
जनानी०	जनानी ड्योढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ	तुलसी श०, तुलसी श०	तुलसी साहव (हाथरमवाले) की शब्दावली, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०६, १९११
जमाना (शब्द०)	जमाना अखबार (शब्द०) ।	तेग अली (शब्द०)	वदमाश दर्पण के रचयिता तेग अली
जय० प्र०	जयशंकर प्रसाद, नवद्वलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९६५ वि०	तेग०, तेगवहादुर (शब्द०)	गुरु तेगवहादुर
जयसिंह (शब्द०)	जयसिंह कवि	तेज०	तेजविदूषणपद
जरासधवव (शब्द०)	जरासधवव नाम का काव्य	तोप (शब्द०)	कवि तोप
जायसी ग्र०	जायसी ग्रंथावली, सपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० स०	त्याग०	त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० स०
जायसी ग्र० (गुप्त)	जायसी ग्रंथावली, सपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५१ ई०	द० सागर	दरिया सागर, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
जायसी (शब्द०)	मलिक मुहम्मद जायसी	दक्खिनी०	दक्खिनी का गद्य श्रीर पद्य, सपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० स०
जिप्सी	जिप्सी, इलाचंद्र जोशी, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०	दयानंद (शब्द०)	स्वामी दयानंद जी
जुगलेश (शब्द०)	जुगलेश कवि	दयानिधि (शब्द०)	दयानिधि कवि
ज्ञानदान	ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई०	दरिया० बानी	दरिया साहव की बानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० स०
ज्ञानरत्न	ज्ञानरत्न, दरिया साहव, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद	दश०	दशरूपक, सपा० डा० भोलाशंकर व्यास, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं०
झरना	झरना, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स०	दशम० (शब्द०)	भाषा दशम स्कंध, भागवत
झाँसी०	झाँसी की रानी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० स०	दहकते०	दहकते छगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अश्विदय कार्यालय, इलाहाबाद
टैगोर०	टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०	दादू०	श्री दादूदयाल की बानी, सपा० मुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी
ठडा०	ठडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० स०, १९५२ ई०	दादूदयाल ग्रं०	दादूदयाल ग्रंथावली
ठाकुर०	ठाकुर शतक, सपा० काशीप्रसाद, भारत-जीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १९६१	दादू० (शब्द०)	दादूदयाल
ठेठ०	ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०	दिनेश (शब्द०)	कवि दिनेश
ढोला०	ढोला मारू रा बूहा, सपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०	दास (शब्द०)	कवि भिखारीदास
		दिल्ली	दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० स०
		दिव्या	दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई०
		दीन० ग्रं०	दीनदयाल गिरि ग्रंथावली, सपा० श्याम-सुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
		दीनदयाल (शब्द०)	कवि दीनदयाल गिरि

दीप०	दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई०	नदी०	नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई०
दी० ज०, दीप ज०	दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्वक,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग	नया०	नया साहित्य नए प्रश्न, नदुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर, वाराणसी, २०११ वि०
दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद मिश्र	नरेश (शब्द०)	'नरेश' कवि
दुर्गाप्रसाद (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद कवि	नागयज्ञ	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम सं०
दुर्गेशनदिनी (शब्द०)	दुर्गेशनदिनी, उपन्यास, मूल लेखक वकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद)	नागरी (शब्द०)	नागरीदास कवि
दूलह (शब्द०)	कवि दूलह	नागरी० उर्दू०	नागरी और उर्दू का स्वर्ण अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गीरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यंत्रालय, मेरठ, प्र० स०
देवकीनंदन (शब्द०)	देवकीनंदन खत्री	नाथ (शब्द०)	नाथ कवि
देव० ग्र०	देव ग्रंथावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	नाथसिद्ध०	नाथसिद्धों की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
देव (शब्द०)	देव कवि	नानक (शब्द०)	सत नानक गुरु
देव (शब्द०)	देव कवि (मैनपुरीवाले)	नाभादास (शब्द०)	नाभादास सत
देवदत्त (शब्द०)	देवदत्त कवि	नारायणदास (शब्द०)	नारायणदास
देवीप्रसाद (शब्द०)	मुशी देवीप्रसाद	निबधमालादर्श (शब्द०)	निबधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबधसंग्रह
देशी०	देशी नाममाला	निश्चनदास (शब्द०)	सत निश्चलदास जी
दैनिकी	दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, भाँसी, प्र० स०, १९९९ वि०	नील०	नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स०
दो सौ बावन०	दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता (दो भाग), शुद्धाद्वैत एकेडमी, काँकरोली, प्रथम स०	निहाल (शब्द०)	निहाल कवि
द्वंद्व०	द्वंद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०	नूतनामृतसागर (शब्द०)	नूतनामृतसागर नाम का ग्रंथ
द्वि० अभि० ग्रं०	द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी	नूर (शब्द०)	'नूर' उपनाम के कवि
द्विज (शब्द०)	द्विज कवि	नुपशमु (शब्द०)	शिवाजी के पुत्र महाराज शंभाजी
द्विजदेव (शब्द०)	अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव'	नेपाल०	नेपाल का इतिहास, प० बलदेवप्रसाद, वैकुण्ठेश्वर प्रेस, बवई, १९६१ वि०
द्विवेदी (शब्द०)	आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी	पचवटी	पचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, भाँसी, प्र० स०
घरनी० बानी	घरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०	पजनेस०	पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यंत्रालय, काशी, प्र० स०
घरम० शब्दा०, घरम०	घरमदास की शब्दावली	पदमावत	पदमावत, स० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, भाँसी, प्र० स०
धीर (शब्द०)	'धीर' कवि	पदु०, पदुमा०	पदुमावती, सपा० सूर्यकांत शास्त्री, पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई०
धूप०	धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर,' अजंता प्रेस, लि०, पटना ४	पद्माकर ग्र०	पद्माकर ग्रंथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
ध्रुव०	ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग	पद्माकर (शब्द०)	पद्माकर भट्ट
नद० ग्र०, नददास ग्र०	नददास ग्रंथावली, सपा० अजरतलदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	प० रा०, प० रासी	परमाल रासी, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
नई०	नई पीढ़ी, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५३	परमानंद०	परमानंदसागर
नकछेदी (शब्द०)	नकछेदी तिवारी, कवि	परमेश (शब्द०)	परमेश कवि
नट०	नटनागर विनोद, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०		

परिमल	परिमल, 'निराला', गंगा प्रथागार, लखनऊ, प्र० स०	प्रभावती	प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भंडार, लखनऊ, प्र० स०
पदें०	पदें की रानी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, १९६६ वि०	प्राण०	प्राणसगली, सपा० सत सपूरणसिंह, बेल-वेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
पलटू०	पलटू साहब की बानी (१-३ भाग), वेल्वे डियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई०	प्रा० भा० प०	प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास डा० रागेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स०, १९५३ ई०
पल्लव	पल्लव, सुमिधानंदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स०	प्रिय०	प्रियप्रवास, धयोध्यामिह उपाध्याय 'हरिश्चोष', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, पृष्ठ स०
पाणिनि०	पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्र-वाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स०	प्रिया० (शब्द०)	प्रियादास
पारिजात०	पारिजातहरण	प्रेम०	प्रेमपथिक, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेम, प्रयाग, तृ० स०
पार्वती	पार्वती, रामानंद तिवारी शास्त्री, भारतीयवन, मंगलभवन, नयापुरा, कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई०	प्रेम० और गीर्की	प्रेमचंद और गीर्की, सपा० शचीरानी गुर्द, राजकमल प्रकाशन लि०, ववई, १९५५ ई०
पा० सा० सि०	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धांत, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०	प्रेमघन०	प्रेमघन सवस्व, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, प्र० स०, १९६६ वि०
पिंजरे०	पिंजरे की उड़ान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०	प्रे० सा० (शब्द०)	प्रेमसागर
पीतल०	पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पाँच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स० सं०, १९७४ वि०	प्रेमाजलि	प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई०
पूर्ण (शब्द०)	पूर्ण कवि	फिसाना०	फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ सरदार, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ स०
पू० म० भा०	पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २००६ वि०	फूलो०	फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स०
पु० रा०	पृथ्वीराज रासो (५ खंड), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पड्या, श्यामसुंदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	बगाल०	बगाल का काल, हरिवंश राय 'वच्चन', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई०
पु० रा० (उ०)	पृथ्वीराज रासो (४ खंड), स० कविराज मोहनसिंह, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्व-विद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स०	बदन०	बदनवार, देवेन्द्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४६ ई०
पोद्दार अभि० ग्र०	पोद्दार अभिनंदन प्र०, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमंडल, मथुरा, स० २०१० वि०	बद०	बदमाश दण्ड, तेगमली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स०
प्र० सा०	प्रगतिशील (वादी) साहित्य	बलवीर (शब्द०)	बलवीर कवि
प्रताप ग्र०	प्रतापनारायण मिश्र प्रथावली, सपा० विजय-शंकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०	बलभद्र (शब्द०)	बलभद्र कवि
प्रताप (शब्द०)	व्यंग्यार्थ कीमुदी के रचयिता प्रताप कवि	बाँकी० ग्र०, } बाँकीदास प्र० }	बाँकीदास प्रथावली (तीन भाग), सपा० राम-नारायण दुग्ग, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
प्रताप सिंह (शब्द०)	प्रताप सिंह	बांगेदरा	बांगेदरा
प्रवध०	प्रवधपत्र, 'निराला', गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० स०	बापू	बापू, कवितासंग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० स०
		बालकृष्ण (शब्द०)	बालकृष्ण
		बालमुकुद (शब्द०)	बालमुकुद गुप्त
		बिरहा (शब्द०)	प्रचलित बिरहा गीत
		बिल्ले०	बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमंदिर, उन्नाव, प्र० स०
		बिसराम (शब्द०)	बिसराम कवि
		बिहारी र०	बिहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्ना-कर', गंगा प्रथागार, लखनऊ, प्र० स०
		बिहारी (शब्द०)	कवि बिहारी

बी० रासो	वीसलदेव रासो, सपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०	भारत०	भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, भाँसी, नवम सं०
वीसल० रास	वीसलदेव रास, सपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० सं०	भा० भू०, भारत० नि०	भारत भूमि और उसके निवासा, जयचन्द्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० सं०, १९८७ वि०
बी० श० महा०	वीसवी शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपाल सिंह, थोरिएटल बुकशिप, देहली, प्र० सं०	भारतीय०	भारतीय राज्य और शासनविधान
बुद्ध च०	बुद्धचरित, रामचन्द्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०	भारतेंदु ग्र०	भारतेंदु ग्रथावली (४ भाग), सपा० बजरत्न-दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
बृहत्०	बृहत्संहिता	भा० सैन्य०	भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ श्रकादमी, भोपाल, प्र० सं०
बृहत्संहिता (शब्द०)	बृहत्संहिता	भा० शिक्षा	भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १९५३ ई०
वेनी (शब्द०)	कवि वेनी प्रवीन	भापा शि०	भापाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी
बेला	बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद, प्र० सं०	भिखारी ग्र०	भिखारीदास ग्रथावली (दो भाग), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा काशी
बेलि०	बेलि फ्रिसन रुक्मिणी री, सपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३१ ई०	भीखा श०,	भीखा शब्दावली प्र० सं०
वैताल (शब्द०)	वैताल कवि	भुवनेश (शब्द०)	भुवनेश कवि
वोधा (शब्द०)	कवि वोधा	भूधर (शब्द०)	भूधर कवि
व्रज०	व्रजविलास सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वैकटेश्वर प्रेस, बबई, तृ० सं०	भूपति (शब्द०)	भूपति कवि
व्रज० ग्रं०	व्रजनिधि ग्रथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०	भूमि०	भूमि की अनुभूति (कवितासंग्रह)
व्रजमाधुरी०	व्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, तृ० सं०	भूषण ग्र०	भूषण ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं०
व्रह्म (शब्द०)	व्रह्म कवि (बीरबल)	भूषण (शब्द०)	कवि भूषण त्रिपाठी
भक्तमाल (प्रि०)	भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वैकटेश्वर प्रेस, बबई, १९५३ वि०	भोज० भा० सा०	भोजपुरी भापा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० सं०
भक्तमाल (श्री०)	भक्तमाल, श्रीभक्तिसुधाविदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० सं०, १९८३ वि०	मतपरीक्षा (शब्द०)	मतपरीक्षा (पुस्तक)
भक्ति०	भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वैकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६० वि०	मति० ग्र०	मतिराम ग्रथावली, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० सं०
भक्ति प०	भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वैकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६०	मतिराम (शब्द०)	कवि मतिराम त्रिपाठी
भगवतरसिक (शब्द०)	भगवत रसिक	मधु०	मधुकलश, हरिवंशराय 'वचन,' सुपमा निकुंज, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
भजन (शब्द०)	भजन	मधुज्वाल	मधुज्वाल, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
भट्ट (शब्द०)	बालकृष्ण भट्ट	मधु मा०	मधुमालती वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
भस्मावृत०	भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०	मधुशाला	मधुशाला, हरिवंश राय 'वचन,' सुपमा निकुंज, इलाहाबाद, प्र० सं०
भा० इ० रु०	भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचन्द्र विद्यालकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३३ वि०	मधुसूदन (शब्द०)	मधुसूदनदास कवि
भा० प्रा० लि०	भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गोरीशंकर हीराचंद श्रोत्रा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड़, प्र० सं०, १९५१ वि०	मनविरक्त०	मनविरक्तकरण गुटका सार (चरणदास)
		मनु०	मनुस्मृति
		मन्नालाल (शब्द०)	कवि मन्नालाल
		मल्लूक० बानी	मल्लूकदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

मंलूक० (शब्द०)	मलूकदास	युगलेश (शब्द०)	कवि युगलेश
महा०	महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद, भारती भट्टार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०	युगात्	युगात्, सुमित्रानन्दन पत्त, इद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोडा, प्र० स०
महावीरप्रसाद (शब्द०)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी	योग०	योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगा-विष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापा-खाना, कल्याण, बंबई, स० १९६७ वि०
महाभारत (शब्द०)	महाभारत	रगभूमि	रगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स०, १९८१ वि०
महाराणा प्रताप (शब्द०)	महाराणा प्रताप, ग्रंथ	रघु० छ०	रघुनाथ रूपक गीतारो, सपा० महताबचंद्र खारेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
माधव०	माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ स०	रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०)	रघुनाथदास
माधवानल०	माधवानल कामकदला, बोधा कवि, नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० स०, १८९१ ई०	रघुनाथ (शब्द०)	रघुनाथ
मान०	मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	रघुराज, रघुराजसिंह (शब्द०)	रीवानेश महाराज रघुराजसिंह, स० १८८०-१९३६ वि०
मानव	मानव, कवितासंकलन, भगवतीचरण वर्मा	रजत०	रजतशिखर, सुमित्रानन्दन पत्त, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि०
मानव०	मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० स०	रज्जव०	रज्जव जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि०
मानस	रामचरितमानस, सपा० शम्भुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	रतन०	रतनहजारा, सपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, १९८२ ई०
मा० स०, मा० स० २०	मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा	रति०	रतिनाथ की चाची, नागाजुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९५३ ई०
मिट्टी०	मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भट्टार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि०	रत्न० (शब्द०)	रत्नसार
मिलन०	मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'वच्चन', भारतीय ज्ञानपीठ काशी, प्र० स०, १९५० ई०	रत्नपरीक्षा (शब्द०)	रत्नपरीक्षा
मीरा (शब्द०)	भक्त मीरा वाई	रत्नाकर	रत्नाकर [दो भाग], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम स० १९८०
मीर हसन (शब्द०)	मीर हसन	रत्नावली (शब्द०)	रत्नावली नाटिका
मुशी अभि० प्र०	मुशी अभिनन्दन ग्रंथ, सपा० डा० विश्वनाथ-प्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा	रश्मि०	रश्मिवन, सुमित्रानन्दन पत्त, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
मुकुदलाल (शब्द०)	मुकुदलाल कवि	रस०	रसमीमासा, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
मुबारक (शब्द०)	मुबारक कवि	रस क०	रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय स०
मुरारिदान (शब्द०)	कवि मुरारिदान	रसखान०	रसखान और घनानंद, सपा० धर्मरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० स०
मृग०	मृगनयनी, वृ दावतलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, भाँसी	रसखान (शब्द०)	सैयद इब्नाहिम रसखान
मैला०	मैला आंचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु', समता प्रकाशन, पटना-४, प्र० स०	रस र०, रसरतन	रसरतन, सपा० शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
मोहन०	मोहनविनोद, स० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लां जर्नेल प्रेस, प्र० स०	रसनिधि (शब्द०)	राजा पृथ्वीसिंह
यमुना (शब्द०)	यमुनाशंकर	रसिया (शब्द०)	रसिया कवि ? रसिया गीत ?
यशो०	यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, भाँसी, प्र० स०	रहिमन (शब्द०)	रहीम कवि
यामा	यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० स०		
युग०	युगवाणी, सुमित्रानन्दन पत्त, भारती भट्टार, इलाहाबाद, प्र० स०		
युगपथ	युगपथ " " "		

रहीम (शब्द०)	अबदुरहीम खानखाना	विद्यापति	विद्यापति, सपा० खर्गेन्द्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना
रहीम०	रहीम रत्नावली	विनय०	विनयपत्रिका, टीका० प० रामेश्वर भट्ट, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० स०
राज० इति०	राजपूताने का इतिहास, गौरीशंकर हीराचंद प्रोभा, अजमेर, १९९७ वि०, प्र० स०	विशाख	विशाख, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
राज०	राजतरंगिणी	विश्राम (शब्द०)	विश्रामसागर
रा० रु०	राजरूपक, सपा० प० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	विश्वनाथसिंह (शब्द०)	रीवां नरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (स० १८४६-१९११ वि०)
रा० वि०	राजविलास, सपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०	विश्वप्रिया	विश्वप्रिया, अज्ञेय
राजनीतिक०	राजनीतिक विचारधाराएँ	विश्वास (शब्द०)	विश्वास ?
राज्यश्री	राज्यश्री, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ स०	वीणा	वीणा, सुमित्रानंदन पंत, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० स०
राम०	रामचरितमानस, सपा० विजयानंद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १९७३ वि०	वेणी (शब्द०)	वेणी (या बेनी) कवि
राम, रामकवि (शब्द०)	राम कवि	वेनिस (शब्द०)	वेनिस का बाँका
रामकृष्ण (शब्द०)	रामकृष्ण	वैशाली०, वै० न०	वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गीतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० स०
राम० च०	संक्षिप्त रामचंद्रिका, सपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ स०	वो दुनिया	वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई०
राम० धर्म०	रामस्तेह धर्मप्रकाश, सपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहवल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।	व्यंग्यार्थ०	व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, सवत् १९५७
राम० धर्म० सं०	रामस्तेह धर्मसंग्रह, सपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहवल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।	व्यंग्यार्थ (शब्द०)	व्यंग्यार्थ कौमुदी
रामरसिका०	रामरसिकावली (भक्तमाल)	व्यास (शब्द०)	प्रविकादत्त व्यास
रामसहाय (शब्द०)	रामसहाय कवि कृत सतसई	अज (शब्द०)	अज विलास
रामानंद०	रामानंद की हिंदी रचनाएँ, सपा० पीतावरदत्त बडवाल, ना० प्र० सभा, प्र० स०	श० दि० (शब्द०)	शंकरदिग्विजय
रामाश्व०	रामाश्वमेध, ग्रंथकार, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १९३९ वि०	शंकर (शब्द०)	शंकर कवि
रिखिनाथ (शब्द०)	कवि रिखिनाथ	शंकर०	शंकरसर्वस्व, सपा० हरिश्चंद्र शर्मा, गयाप्रसाद एंड सन, आगरा, प्र० स०
रेगुका	रेगुका, रामधारी सिंह 'दिनकर', पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०	शंभु (शब्द०)	शंभु कवि, शिवाजी के पुत्र सभाजी
रै० बानी	रैदास बानी, डेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद	शकु०	शकु तला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, भाँसी
लक्ष्मणसिंह (शब्द०)	राजा लक्ष्मणसिंह	शकुतला	शकुतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, चतु० स०
लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०)	लल्लूलाल	शब्दावली (शब्द०)	शब्दावली ग्रंथ
लवकुश चरित्र (शब्द०)	लवकुश चरित्र	शाहजहाँनामा (शब्द०)	शाहजहाँनामा
लहर	लहर, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम स०	शाङ्गधर स०	शाङ्गधर संहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मूबई वैभव मुद्रणालय, सवत् १९७१
लाल (शब्द०)	लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले)	शिखर०	शिखर वशोत्पत्ति सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०, १९८५
वर्ण०, वर्णरत्नाकर	वर्णरत्नाकर	शिर्मीर (शब्द०)	कवि शिर्मीर
वाल्मीकीय० (शब्द०)	वाल्मीकीय रामायण	शिवप्रसाद (शब्द०)	राजा शिवप्रसाद सितारेहिन

शिवराम (शब्द०)	शिवराम कवि	सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)	सत्यार्थप्रकाश, स्वामि दयानन्द
शिवशम्भु (शब्द०)	शिवशम्भु का चिट्ठा	सवल (शब्द०)	सवलसिंह चौहान (महाभारत)
शुक्ल० अभि० ग्रं०	शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समेलन	सभा० वि० (शब्द०)	सभाविलास
शृ० सत० (शब्द०)	शृगार सतसई	सरस्वती (शब्द०)	सरस्वती मासिक पत्रिका
शृगार सुभाकर (शब्द०)	शृगार सुभाकर	सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०)	सर्पाघात चिकित्सा
शेखर (शब्द०)	शेखर कवि	स० शास्त्र	समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, मखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० स०
शेर०	शेर श्री सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र स	स० सप्तक	सतसई सप्तक, सपा० श्यामसुंदरदास, हिंदु-स्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
शैली	शैली, प० कल्याणपति त्रिपाठी, प्र० स०	सरलाबाई (शब्द०)	सरलाबाई, कवयित्री ।
श्यामबिहारी (शब्द०)	श्यामबिहारी मिश्र ('मिश्रवधु')	सहजो०	सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि०
श्यामा०	श्यामास्वप्न, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	साकेत	साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगांव, भौसी, प्र० स०
श्रद्धानन्द (शब्द०)	स्वामी श्रद्धानन्द	सागरिका	सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
श्रद्धाराम (शब्द०)	श्रद्धाराम फुल्लोरी	सात सतक	हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शम्भु कवि
श्रीकृष्णसदेश (शब्द०)	श्रीकृष्णसदेश	साम०	सामवेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० सं०
श्रीधर (शब्द०)	श्रीधर कवि	सा० दर्पण	साहित्यदर्पण, सपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्युंजय श्रीपथालय, लखनऊ, प्र० स०
श्रीधर पाठक (शब्द०)	श्रीधर पाठक	सा० द०	साहित्य दर्शन
श्रीनिवास ग्र०	श्रीनिवास ग्रंथावली, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	सा० लहरी	साहित्यलहरी, सपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना
श्रीपति (शब्द०)	श्रीपति कवि	सा० मनीषा	साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इडियन प्रेम, प्रयाग
सतति०	चंद्रकाता सतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी	साहित्य०	साहित्यालोचन, श्री श्यामसुंदर दास, इडियन प्रेम इलाहाबाद
सचिता	सचिता (कवितासंग्रह)	सिद्धांतसंग्रह (शब्द०)	सिद्धान्तसंग्रह
सत तुरसी०	सत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद ।	सीतल (शब्द०)	कवि सीतल
सं० दरिया, सत० दरिया	सत कवि दरिया, म० धर्मेश ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०	सीताराम (शब्द०)	सीताराम कवि
स० दा० (शब्द०)	मगीन दामोदर	सुंदर० ग्र०	सुंदरदास ग्रंथावली (दो भाग), सपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
म० शा० (शब्द०)	सगीत शाकुंतल	सुदरीसिद्धर (शब्द०)	सुदरी सिद्धर, कवितासंग्रह
सत र०	सत रविदास और उनका काव्य स्वामी रामानन्द शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासघ, हरिद्वार, प्र० स०	सुकवि (शब्द०)	सुकवि उपनाम के कवि
मंतवाणी०, सत०सार०	सतवाणी सार संग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद	सुखदा	सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
सन्धासी	सन्धासी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०	सुखदेव (शब्द०)	कवि सुखदेव
सपूर्ण० अभि० ग्र०	सपूर्णनिध अभिनन्दन ग्रंथ, सपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी	सूधाकर (शब्द०)	महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी
स० दर्शन	समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०	सुजान०	सुजानचरित (सूदनकृत), सपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स०
सत्य०	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०		

सुधानिधि	कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० स०	हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
सुनीता	सुनीता, जैनैन्द्रकुमार, साहित्यमण्डल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० स०	हरिश्चन्द्र (शब्द०)	भारतेंदु हरिश्चन्द्र
सुंदर (शब्द०)	सुंदर कवि, सुंदरदास जी	हरिसेवक (शब्द०)	हरिसेवक कवि
सूत०	सूत की माला, पत और बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स०	हरी घास०	हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई०
सूदन (शब्द०)	सूदन कवि (भरतपुरवाले)	हर्ष०	हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेव-शरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०, १९५३ ई०
सूर०	सूरसागर (दो भाग), ना० प्र० सभा, द्वितीय स०	हालाहल	हालाहल, हरिवंशराय बच्चन, भारती भंडार, प्रयाग, १९४६ ई०
सूर० (शब्द०)	सूरदास	हिंदी आ०	हिंदी आलोचना
सूर० (राधा०)	सूरसागर, सपा० राधाकृष्णदास, वैकटेश्वर प्रेस, प्र० स०	हिंदी का०	हिंदी काव्य की अंतश्चेतना
सेवक (शब्द०)	'सेवक' कवि	हि० का० प्र०	हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० स०
सेवक श्याम (शब्द०)	सेवक श्याम कवि	हि० क० का०	हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
सेवासदन	सेवासदन, प्रेमचंद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, द्वि० सं०	हि० ना०	हिंदी के नाटक
सेर कु०	सेर कुहसार, प० रतननाथ 'सरशार', नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ, च० स०, १९३४ ई०	हिंदी प्रदीप (शब्द०)	हिंदी प्रदीप
सी अज्ञान० (शब्द०)	सी अज्ञान और एक सुज्ञान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	हिंदी प्रेमगाथा०	हिंदी प्रेमगाथा काव्यसंग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई०
स्कंद०	स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०	हिंदी प्रेमा०	हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी भानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड
स्वर्ण०	स्वर्णकिरण, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०	हि० प्र० चि०	हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
स्वाधीनता (शब्द०)	स्वाधीनता	हि० सा० भू०	हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, तृ० सं०, १९४८
स्वामी रा०	स्वामी रामकृष्ण	हिंदु० सभ्यता	हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
स्वामी राम कृष्ण (शब्द०)	स्वामी हरिदास	हित हरिवंश (शब्द०)	वैष्णव सत हित हरिवंश दास
हस०	हसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०	हिम कि०	हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, तृ० सं०
हंसराज (शब्द०)	हंसराज	हिम त०	हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
हकायके०	हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० सपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०	हिम्मत०	हिम्मतबहादुर विरदावली, लाला भगवान-दीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
हनुमन्नाटक (शब्द०)	हनुमन्नाटक	हिल्लोल	हिल्लोल, शिवमंगल सिंह 'धुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० सं०
हनुमान, हनुमान कवि (शब्द०)	हनुमान कवि	हुमायूँ०	हुमायूँनामा, अनु० अजरतनदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० सं०
हम्मीर०	हम्मीरहठ, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', इडियन प्रेस लि०, प्रयाग	हृदय०	हृदयतरंग, सत्यनारायण कविरत्न
ह० रासो०	हम्मीर रासो, सपा० डा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०	हृदयराम (शब्द०)	कवि हृदयराम
हरिजन (शब्द०)	कवि हरिजन		

[व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण]

छं०	अग्रजेजी	त०	तमिल
छ०	अरवी	तखं०	तर्कशास्त्र
छक० रूप	अकर्मक रूप	ति०	तिष्ठती भाषा
अनु०	अनुकरण शब्द	तु०	तुर्की
अनुध्व०	अनुध्वन्यात्मक	दू०	दूहा या दूहला
अनु० मू०	अनुकरणार्थमूलक	तुल०	तुलनीय
अनुर०	अनुरणनात्मक रूप	दे०	देखिए
अप०	अपभ्रंश	देश०	देशज
अर्ध० मा०	अर्धभागधी	देशी	देशी
अल्पा०	अल्पार्थक	धर्म०	धर्मशास्त्र
अव०	अवधी	नाम०	नामधातु
अव्य०	अव्यय	ना० घा०	नामधातुज क्रिया
इता०	इतालवी	नामिक घातु	नामिक घातु
इव०	इब्रानी	नि०	नेपाली
उ०	उदाहरण	न्याय०	न्याय या तर्कशास्त्र
उच्चा०	उच्चारण सुविधायं	पं०	पंजाबी
उडि०	उडिया	परि०	परिशिष्ट
उप०	उपसर्ग	पा०	पाली
उभय०	उभयलिङ्ग	पु०	पुलिङ्ग
एकव०	एकवचन	पुर्त०	पुर्तगाली
कनाडी	कन्नड भाषा	पृ० हि०	पुरानी हिंदी
कहावत्	कहावत्	पू० हि०	पूर्वी हिंदी
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र	पु०	पुष्ट
[को०], (को०)	अन्य कोष	प्र०	प्रकाशकोय या प्रस्तावना
०	समाव्य व्युत्पत्ति	प्रत्य०	प्रत्यय
१	अनिश्चित व्युत्पत्ति	प्रा०	प्राकृत
कौंक०	कौंकणी	प्रे०	प्रेरणार्थक रूप
क्रि०	क्रिया	फ०	फरांसीसी भाषा
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	फकीर०	फकीरो की बोली
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	फा०	फारसी
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	वंग०	बंगला भाषा
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	बरमी०	बरमी भाषा
क्व०	क्वचित्	बहुव०	बहुवचन
गीत	लोकगीत	बु० खं०	बु देलखड की बोली
गुज०	गुजराती	बुदिल०	" "
ची०	चीनी भाषा	बोल०	बोलचाल
छद	छद	भाव०	भाववाचक सज्ञा
जापा०	जापानी	भू०	भूमिका
जावा०	जावा द्वीप की भाषा	भू० कृ०	भूत कृदन्त
जी०, जीवन०	जीवनचरित	मरा०	मराठी
ज्या०	ज्यामिति	मल०	मलयाली या मलयालम भाषा
ज्यो०	ज्योतिष	मला०	मलाया की भाषा
हि०	हिगल	मि०	मिलाइए
		मुसल०	मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त
		मुद्दा०	मुद्दावर

ग्र०	यूनानी	सयो० क्रि०	संयोजक क्रिया
यौ०	यौगिक	स०	सकर्मक
राज०	राजस्थानी	सक० रूप	सकर्मक रूप
सश०	लशकरी	सधु०	सधुक्कडी भाषा
ला०	लाक्षणिक	सर्व०	सर्वनाम
लै०	लैटिन	सिहली	सिहली भाषा
व० कृ०	वर्तमान कृदत	स्पे०	स्पेनी भाषा
वर्ण वि०	वर्णविपर्यय	स्त्रि०	स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त
वि०	विशेषण	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
वि० द्वि० मु०	विषमद्विरक्तिमूलक	हि०	हिंदी
वै०	वैदिक	पु०	काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी
व्या०	व्याकरण	>	व्युत्पन्न
व्यंग्य	व्यंग्यार्थ मे प्रयुक्त	†	प्रातीय प्रयोग
(शब्द०)	हिंदी शब्दसागर प्र० सं०	‡	ग्राम्य प्रयोग
स०	संस्कृत	✓	घातुचिह्न
सयो०	संयोजक अव्यय		

हिंदी शब्दसागर

व

व—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अतस्थ अर्धव्यंजन माना जाता है। इसका उच्चारणस्थान दंत्योष्ठ है अर्थात् दांत और ओठ से इसका उच्चारण होता है। प्रयत्न ईषत्स्फुट होता है, अर्थात् उच्चारण के समय दांतों का ओठ से कुछ स्पर्श होता है। हिंदी में इस वर्ण का उच्चारण अधिकतर केवल ओठ से होता है, केवल संस्कृताभ्यासी लोग ही शुद्ध दंत्योष्ठ उच्चारण करते हैं।

वक्—वि० [सं० वक्] कुछ झुका हुआ। टेढ़ा। वक्र।

वक्र^२—सज्ञा पु० १ नदी का मोड़। वकर। २. टेढ़ापन। कुटिलता (को०)। ३ पत्ययन। दे० 'वका'। (को०)। ४ आवाज व्यक्ति (को०)।

वक्रट—वि० [सं० वक्र] १ टेढ़ा। वाँका। २ कुटिल। जो सीधा न हो। ३ विकट। दुर्गम। उ०—रही है धूँधटपट की ओट। मनो कियो फिर मान मवासो मन्मथ वक्रट कोट।—सूर (शब्द०)।

वक्रटक—सज्ञा पु० [सं० वक्रटक] एक पर्वत जिसे वक्राटक भी कहा गया है।

वक्रनाल—सज्ञा पु० [सं० वक्रनाल] शरीर की एक नाड़ी का नाम। सुपुम्ना।

वक्रनाली—सख्या स्त्री० [हि० वक्र + नाडी] साधुओं की बोलचाल में सुपुम्ना नामक नाड़ी, जो मध्य में मानी गई है। उ०—वक्रनालि सदा रस पीवै, तब यह मनुवाँ कही न जाय। विगसै कँवल प्रेम जब उपजै ब्रह्म जीव को करें सहाय।—दादू (शब्द०)।

वकर—सज्ञा पु० [सं० वक्कर] वह स्थान जहाँ से नदी मुड़ी हो। नदी का मोड़।

वक्रसेन—सज्ञा पु० [सं० वक्रसेन] अगस्त का वृक्ष।

वक्रा—सज्ञा स्त्री० [सं० वक्रा] चारजामे की अगली मेड़ी।

वक्राटक—सज्ञा पु० [सं० वक्राटक] एक पर्वत का नाम।

वक्राला—सज्ञा स्त्री० [सं० वक्राला] राजतरंगिणी के अनुसार बगाल की प्राचीन राजधानी का नाम जिसके कारण उस देश का बगाल नाम पड़ा। (राज०)।

वक्रिणी—सज्ञा स्त्री० [सं० वक्रिणी] एक चूप का नाम।

वक्रिम—वि० [सं० वक्रिम] ईषत् वक्र। कुछ टेढ़ा या झुका हुआ। वाँका। उ०—निद्रालस वक्रिम विशाल नेत्र मूँदे रही। किंवा मतवाली थी जीवन की मदिरा पिए।—अपरा, पृ० ५।

वक्रिल—सज्ञा पु० [सं० वक्रिल] कटक। काँटा।

वक्क्य—वि० [सं० वडक्क्य] टेढ़ा। लचीला। वक्र [को०]।

वक्रा—सज्ञा स्त्री० [सं० वड्क्रा] दे० 'वक्रि'।

वक्रि—सज्ञा स्त्री० [सं० वड्क्रि] १ पशुओं की पसली की हड्डी। २. काँड़ी। कड़ी। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

वक्त्रण—सज्ञा पु० [सं० वड्क्त्रण] भूत्राशय और जंघास्थल का संधि-स्थान। वह स्थान जो पेड़ और जाँघ के बीच में है और जहाँ 'वर्म' नामक रोग की गाँठ निकला करती है।

वल्गु—सज्ञा स्त्री० [सं० वड्गु] १ आक्सस नदी जो हिंदुकुश पर्वत से निकलकर मध्य एशिया में बहती हुई आरल समुद्र में गिरती है।

विशेष—इस नदी का नाम वेदों में कई जगह आया है। पुराणों में यह केतुमाल वर्ष की एक नदी कही गई है। महाभारत में इसकी गणना पवित्र नदियों में की गई है। रघुवंश की प्राचीन प्रतियों में भी रघु के दिग्विजय के अंतर्गत इस नदी का उल्लेख है और इसके किनारे हूणों की बस्ती कही गई है।

२ गंगा की एक छोटी सी शाखा (को०)।

वंग—सज्ञा पु० [सं० वङ्ग] १ मगध या बिहार के पूर्व पड़नेवाला प्रदेश। बंगाल।

विशेष—ऋग्वेद में सबसे पूर्व पड़नेवाले जिस प्रदेश का उल्लेख है, वह 'कीकट' (मगध) है। अथर्व संहिता में 'अग' देश का भी नाम मिलता है। संहिताओं में 'वग' नाम नहीं मिलता। ऐतरेय आरण्यक में ही सबसे पहले वग देश की चर्चा आई है, और वहाँ के निवासियों की दुर्बलता और दुराहार आदि का उल्लेख पाया जाता है। बात यह है कि संहिता काल में कीकट और वग देश में अनार्य का ही निवास था। आर्य लोग वहाँ तक न पहुँचे थे। वीषायन वर्मसूत्र में लिखा है कि वग, कलिग, पुङ्ग आदि देशों में जानेवाले को लौटने पर पुनस्तोम यज्ञ करना चाहिए। मनुस्मृति में तीर्थयात्रा के लिये जाने की आज्ञा है। इससे जान पड़ता है कि उस समय आर्य वहाँ बस गए थे। शतपथ ब्राह्मण

के समय मे मिथिला मे विदेह वंश प्रतिष्ठित था। रामायण मे प्रागज्योति पुर (रंगपुर से लेकर आसाम तक प्रागज्योतिप प्रदेश कहलाता था) की स्थापना का उल्लेख है।

महाभारत (आदिपर्व) मे लिखा है कि क्षत्रिय राजा बलि को कोई सतति न हुई। तब उन्होंने अथे दीर्घतमा ऋषि द्वारा अपनी रानी के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न कराए, जिनके नाम हुए—अग्र, वग, कलिग, पुङ्गु और सुह। इन्हीं के नाम पर देशों के नाम पड़े।

२ रांगा नाम की धातु। ३ रांगे का भस्म। ४ कपास। ५ वैंगन। भटा। ६ राजा बलि का पुत्र। एक चद्रवशी राजा (को०)। ७ एक धातु। सीसा। सीसक।

वगज—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गज] १ सिंदूर। २ पीतल।

वंगज—वि० १ वगल मे उत्पन्न होनेवाला। २ वगाली।

वगजीवन—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गजीवन] चाँदी।

वगन—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गन] वैंगन।

वगमल—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गमल] सीसा नामक धातु।

विशेष—प्राचीनों की यह धारणा थी कि रांगा और सीसा दोनों एक ही धातु हैं और वे सीसे को रांगे का मल समझते थे।

वगला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वङ्गला] वगाला या वगालिका नाम की रागिनी। विशेष दे० 'वगाली'।

वगशुल्यज—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गशुल्यज] कांसा। कास्य (को०)।

वगसेन—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गसेन] लाल फूलवाला अग्रस्त।

वगा—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्ग] दे० 'वग'। उ०—तेलगा, वगा, चोला, कलिगा राश्रा पुत्ते मडिया।—कीर्ति०, पृ० ४८।

वगारि—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गारि] हरताल।

वगाल—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गाल] एक राग। दे० 'वगाल'—२।

वगाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वङ्गाली] भैरव राग की एक रागिनी।

विशेष—यह ओच्च जाति की है और इसमे ऋषभ तथा धैवत स्वर नहीं लगते। कल्लिनाथ के मत से यह सपूर्ण जाति की है और इसमे दो बार मध्यम आता है।

वगाष्टक—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गाष्टक] एक रसौषध जिसमे रांगा आदि आठ धातुएँ एक साथ मिलाकर फूँकी जाती हैं। यह प्रमेह रोग पर दिया जाता है।

विशेष—पारा, गधक, लोहा, चाँदी, खपरिया, अन्नक और ताँवा बराबर लेकर जितना सव हो, उतना रांगा लेकर सब को एक साथ मर्दन करके गजपुट द्वारा फूँकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसको वगाष्टक कहते हैं। वगाष्टक की मात्रा दो रत्ती है, और मधु, हलदी के चूर्ण तथा आमले के रस मे इसे खाते हैं।

वगेरिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वङ्गेरिका] चगेरी। डलिया। टोकरी (को०)।

वगेरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वङ्गेरी] चंगेरी। डलिया (को०)।

वगेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्गेश्वर] एक प्रसिद्ध रस।

विशेष—पारे का भस्म ८ तोला, वग का भस्म ८ तोला, ताँवे का भस्म ३२ तोला और गधक ३२ तोला लेकर मदार के दूध मे

मलकर फिर पिंडी बनाकर 'भूवर यत्र' द्वारा फूँकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसे वगेश्वर कहते हैं। इसकी मात्रा २ रत्ती है। इसे गुल्मोदर रोग मे घी के साथ देते हैं, और ऊपर से पुनर्नवा का रस और गोभूत्र या हल्दी का रस पिलाते हैं।

वघ—सञ्ज्ञा पु० [सं वङ्घ] एक वृक्ष का नाम (को०)।

वचक^१—वि० [सं वञ्चक] १ धूर्त। धोखेबाज। ठग। २ खल।

वचक^२—सञ्ज्ञा पु० १ गीदड़। २ मोखियार। ३. चोर। ठग। ४ गृहवधू। गधमूपक (को०)।

वचति—सञ्ज्ञा पु० [सं वञ्चति] अग्नि (को०)।

वचथ—सञ्ज्ञा पु० [सं वञ्चथ] १ धूर्तता। छनना। २ धूर्त। छनी। ३ पिक। कोकिल। ४ मरण। मृत्यु (को०)।

वचन—सञ्ज्ञा पु० [सं वञ्चन] [वि० वचित] १ धोखा देना। धूर्तता। ठगी। २ धोखा खाना। ठगा जाना। ३ भ्राति। व्यामोह (को०)। ४ क्षति। हानि (को०)।

यौ०—वचनचतुता = वंचन कार्य मे कुशलता। वचनपटुता = दे० 'वचनचतुता'। वचनप्रवण = धोखा देने की ओर प्रवृत्त। वचन योग = ठगो या धोखा देने का अभ्यास।

वचना^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वञ्चना] धोखा। जाल। फरेव। छल। वंचन।

यौ०—वचनापडित = कुशल धोखेबाज। वचनापटु, वचना-कुशल = वचना करने मे पडित।

वचना^२—क्रि० सं० [सं वञ्चना] धोखा देना। ठगना। उ०—दभ विलोक्यो कहल जाँ, दिल्ली नगरी जाइ। वचनु जग जैसे फिरतु मो पै वरनि न जाइ।—केशव (शब्द०)।

वचना^३—क्रि० सं० [सं वञ्चना] पढ़ना। वांचना।

वचनीय—वि० [सं] १. स्याज्य। परित्याग करने लायक। छोड़ने के काबिल। २ भोला भाला। जिमे धोखा दिया जा सके। जो ठगा जा सके (को०)।

वचयिता—वि० [सं वञ्चयितृ] वचना करनेवाला। दे० 'वचक' (को०)।

वचित—वि० [सं वञ्चित] १ धोखे मे आया हुआ। जो ठगा गया हो। २ अलग किया हुआ। ३ विमुख। अलग। हीन। रहित। जैसे—मैं इस कृपा से वचित रखा गया हूँ।

वचिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वञ्चिता] प्रहेलिक। गूढ़ प्रश्न। पहेली (को०)।

वचुक^१—वि० [सं वञ्चुक] [वि० स्त्री० वचुकी] धूर्त। ठग। चालाक। वेईमान (को०)।

वचुक^२—सञ्ज्ञा पु० गीदड़। स्यार (को०)।

वचुलक—सञ्ज्ञा पु० [सं वञ्चुलक] १ एक प्रकार का वृक्ष। दे० 'वजुल'। २ एक पक्षा (को०)।

वञ्छित—वि० [सं वञ्छित] दे० 'वाञ्छित'। उ०—कितहूँ न भयो वञ्छित कछू अब ती तूँना मोहि तजि।—ब्रज० प्र०, पृ० १०७।

वजुल—सञ्ज्ञा पु० [सं वञ्जुल] १ वेत। उ०—मजु वजुल की लता और नील निजुल के निकुज जिनके पता ऐसे सघन जो सूय को

फिरनी को भी नहीं निकलने देते ।—श्यामा, पृ० ४१ । २. तिनिश का पेड़ । ३ अशोक का पेड़ । ४ स्थलपद्म । ५ एक प्रकार के पक्षी का नाम ।

यौ०—वजुलद्रुम = अशोक । वजुलप्रिय = वेतस ।

वजुला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वज्जुला] १ अधिक दूध देनेवाली गौ । दुधारी गाय । दुधारू गाय । २ एक नदी का नाम जो मत्स्यपुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलती है ।

वजुलावती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वज्जुलावती] एक नदी का नाम जो दक्षिण के एक पर्वत से निकलती है ।

वट^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्ट] १ भाग । बाँट । २ हँसिया आदि की मूठ । बँट । वह । ३. वह जिसकी पूँछ न हो या कट गई हो । लँडूरा । बाँडा । ४. अविवाहित पुरुष ।

वट^२—वि० १ बाँडा । लँडूरा । २ अविवाहित [को०] ।

वटक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्टक] भाग । बाँट ।

वंटक^१—वि० बाँटनेवाला । विभाजक ।

वटन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्टन] अश या भाग लगाना । विभक्त करना । बाँटना [को०] ।

वटनीय—वि० [सं० वण्टनीय] बाँटने लायक । वटन के योग्य ।

वटाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्टाल] १ शूरो का युद्ध । २. नौका । ३ खोदने का औजार । खनती ।

वठ^१—वि० [सं० वण्ठ] १ जिसका कोई अंग खंडित हो । हीनाग । जैसे—लूला, लँडूरा, खंजा आदि । २. अविवाहित [को०] ।

वठ^२—सञ्ज्ञा पुं० १ अविवाहित पुरुष । २. दास । सेवक । ३ वामन । बौना । ४ कुत । भाला ।

वठर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्ठर] १. ताड़ के वृक्ष का कोपल । २ बाँस के कल्ले का वह मोटा पत्ता जो उसे छिपाए रहता है ।

विशेष—यह पत्ता गाँठ गाँठ पर होता है और बहुत कड़ा तथा भूरे रंग का होता है ।

३ कुत्त की पूँछ । ४. वह रस्सी जिससे बकरी, गाय आदि को गले से बाँधते हैं । ५ स्तन । थन । ६. मेघ । ७ कुत्ता ।

वठाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्ठाल] दे० 'वटाल' ।

वड^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्ड] १ वह जिसकी लिङ्गेन्द्रिय के अग्र भाग पर वह चमड़ा न हो, जो सुपारी को ढाँके रहता है । २ व्वजभग नामक रोग ।

पर्या०—दुश्चर्मा । द्विगन्धक । शिपिविष्ट ।

वड^२—वि० १ बाँडा । हीनाग । २ अविवाहित [को०] ।

वडर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्डर] १ मक्खीचूस । सूम । कजूस । २ वह नपुंसक जो अत पुर का रज्ज हो । खोजा ।

वडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वण्डा] रंडा । पुश्चली स्त्री ।

वडाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वण्डाल] दे० 'वटाल' ।

वद—वि० [सं० वन्द] १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला । २. परोपजीवी [को०] ।

वदक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वन्दक] १ स्तुतिकर्ता । चारण । वंदी । २ एक परोपजीवी पौधा । विशेष दे० 'वदा' । ३ बौद्ध भिक्षु [को०] ।

वदका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दका] दे० 'वदा' [को०] ।

वदथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वन्दथ] १ वदीजन । चारण । २ वदनीय व्यक्ति [को०] ।

वन्दन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वन्दन] १ स्तुति और प्रणाम । पूजन ।

विशेष—वन्दन षोडशोपचार पूजन में है । यह समस्त पदों के अंत में 'वन्दन' शब्द से पूजित या पूज्य का अर्थ देता है । (जैसे,—जगवन्दन)

२ शरीर पर बनाए हुए तिलक आदि चिह्न । ३ एक विष का नाम । ४ एक असुर का नाम । ५ एक ऋषि का नाम । ६ वदाक । वाँदा ।

वन्दनक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विनम्र भाव से नमस्कार [को०] ।

वन्दनमाल—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाल] वन्दनवार ।

वन्दनमाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाला] दे० 'वन्दनमाल' ।

वन्दनमालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमालिका] दे० 'वन्दनमाल' ।

वन्दनवार—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाल] वह माला जो सजावट के लिये घरों के द्वार पर या मंडप के चारों ओर उत्सव के समय बाँधी जाती है । उ०—सेजहि सुवारैं एक, रोशनी उज्यारैं एक, बाँधती वन्दनवारैं भारैं फूल क्यारी की ।—राम (शब्द०) ।

विशेष—इस माला में फूल पत्तियाँ गुथी रहती हैं । यज्ञादि के अवसर पर इसमें आम के पल्लव गुँथे जाते हैं ।

वदना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दना] [वि० वदित, वदनीय] १. स्तुति । २ प्रणाम । वन्दन । ३ वह तिलक जो होम के भस्म से यज्ञ के अंत में लगाया जाता है ।

वदनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनी] १ स्तुति । २ जीवातु नामक ओषधि । ३. गोरोचन । ४ तिलकादि चिह्न जो शरीर पर बनाए जाते हैं । ५ याचनाकर्म । ६. बटी ।

वदनीय^१—वि० [सं० वन्दनीय] वदना करने योग्य । आदर करने योग्य ।

वदनीय^२—सञ्ज्ञा पुं० पीत भृगराज । पीली भँगरैया [को०] ।

वदनीया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनीया] गोरोचना [को०] ।

वदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दा] दूसरे पेड़ों के उपर उसी के रस से पलनेवाला एक प्रकार का पौधा । वदाक । वाँदा ।

पर्या०—वृक्षादनी । वृक्षहा । वदाका । जीवतिका । शेखरी । सव्या । वदका । वदक । नीलवल्ली । वदाकी । परवासिका । वशिनी । पुत्रिणी । वद्या । परपुष्पा । पराश्रया । कामवृक्षा । केशरूपा । गंधमादनी । कामिनी । श्यामा । कामवृक्ष ।

विशेष—इसका स्वाद तिक्त होता है, और वैद्यक में यह कफ, पित्त, तथा श्रम को दूर करनेवाला कहा गया है ।

२ भिक्षुणी [को०] ।

वदाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वन्दाक] दे० 'वदा' ।

वंदाका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वन्दाका] दे० 'वंदा' ।

व दाकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वन्दाकी] दे० 'वदा' ।

व दार—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दार] परोपजीवी पीधा । वदा । बाँदा [को०] ।

व दारु^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दारु] १ स्तोत्र । २ वाँदा । वदाक ।
३ वैतालिक । चारण । स्तुतिपाठक । स्तुतिकर्ता । भाट [को०] ।

व दारु^२—वि० वदशील । नम्र ।

व दि—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दि] १ दे० 'वदी' । २ कैंद । ३ सोपान ।
सीढ़ी । ४ स्तुति । ५ स्तुतिपाठक । वदी [को०] ।

व दिग्राह—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दिग्राह] डाकू ।

व दिचौर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दिचौर] १ चोर । तस्कर ।
२ डाकू [को०] ।

व दित—वि० [स० वन्दित] [वि० स्त्री० वदिता] १ आहत ।
पूजित । २ पूज्य । आदरणीय ।

व दितव्य—वि० [स० वन्दितव्य] दे० 'वद्य' ।

व दिता—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दितृ] स्तुति करनेवाला । प्रशंसा करने-
वाला [को०] ।

व दिपाल—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दिपाल] कैदखाने का अधिकारी [को०] ।

व दी—सञ्ज्ञा पुं० [वन्दिन्] १ दे० 'वदी' । २ दे० 'वदि' ।

व दीक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दीक] इद्र ।

व दीगृह—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दीगृह] कैदखाना ।

व दीजन—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्दीजन] राजाओं आदि का यश वर्णन
करनेवाली एक प्राचीन जाति ।

व द्य—वि० [स० वन्द्य] वदना करने योग्य । वदनीय । आदरणीय ।
पूजनीय ।

व द्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वन्द्या] १ वाँदा । वदा । २ गोरोचन [को०] ।

व द्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्द्र] १ अमृदय । मगल । २ प्राचुर्य ।
प्रचुरता । ३ भक्त । उपासक [को०] ।

व धु—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्धु] दे० 'वधु' ।

व धुर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्धुर] १ रथ या गाड़ी का आश्रय जिसमें
दोनों होंसे और घुरा प्रधान है । २, गाड़ी में का वह स्थान
जहाँ सारथी या गाड़ीवान बैठकर उसे चलाता है ।

व धुर^२—वि० दे० 'वधुर' ।

व ध्य—वि० सञ्ज्ञा पुं० [स० वन्द्य] दे० 'वध्य' ।

यौ०—वध्यफल ।

व ध्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वन्द्या] बाँझ स्त्री जिसे सतान न उत्पन्न
हो । दे० 'वध्या' ।

यौ०—वध्यातनय । वध्यापुत्र । वध्यासुत । वध्यासूनु = दे०
'वध्यापुत्र' ।

व न्न^(१)—सञ्ज्ञा पुं० [स० वर्ण, प्रा० वण] दे० 'वर्ण' । उ०—
मारवणी सुहं वन्न आदिता है उज्जली ।—ढोला०, दू० ४६४ ।

व भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० वम्भ] वाँस [को०] ।

व भारव—सञ्ज्ञा पुं० [स० वम्भारव] रँभाना । जानवर के रँभाने का
शब्द [को०] ।

व श—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वाँस । २ वैडेर । ३ पीठ की हड्डी ।
४ नाक के ऊपर की हड्डी । वाँसा । ५ वाँसुरी । ६ एक प्रकार
की ईख । ७ खड्ग के बीच का वह भाग जो ऊँचा हो, अर्थात्
जहाँ पर वह अधिक चौड़ा होता है । ८ बारह (कुछ के मत
में दस) हाथ का एक मान । ९ बाहु आदि की लकी हड्डियाँ ।
१० युद्ध की सामग्री । जैसे, रथ, ध्वजा इत्यादि । ११ विष्णु ।
१२ वशलोचन । १३ फूल । १४ कुल । परिवार । जाति
(को०) । १५ सतान । पुत्र (को०) । १६ एक ही जैसी वस्तुओं
का समूह या वग (को०) । १७ शाल का वृक्ष (को०) । १८
अभिमान । दर्प (को०) । १९ दृढ ग्रन्थि । मजबूत गाँठ (को०) ।
२० ववडर ।

यौ०—वशज । वशवृत्त । वशज्ञय । वशच्छेद, इत्यादि ।

व शश्वपि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वे ऋषि जिनके नाम वश ब्राह्मण में
आए हैं ।

व शकज—सञ्ज्ञा पुं० [स० वशकज] काले अंगर की लकड़ी ।
वृष्णागुरु ।

व शक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अंगर नामक गन्धद्रव्य । अंगुर । २
एक प्रकार की मछली । ३ एक प्रकार का गन्ना या ईख ।

विशेष—वैद्यक में इस शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, सारक,
वृष्य और कफनाशक लिखा है । इसके रस का स्वाद कुछ खारी-
पन लिए भारी होता है । इसे 'कडऊख' कहते हैं ।

४ वाँस की गाँठ या संधि (को०) । ५ छोटी जाति का वाँस ।

व शकठिन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जहाँ वाँस परस्पर गुंथे हुए हो । वाँस
का जंगल [को०] ।

व शकपूर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वशकर्पूर] वसलोचन ।

व शकफ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सेमल आदि का धूआ जो आकाश में
उड़ता फिरता है ।

व शकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह पुरुष जिससे किसी वश का आरम्भ
हुआ हो । मूल पुरुष । पूर्वज । पुरखा । २ पुत्र (को०) ।

व शकरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मार्कण्डेय पुराणानुसार एक नदी जो महेंद्र
पर्वत से निकलती है । वशधारा ।

व शकर्पूर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वसलोचन ।

यौ०—वशकर्पूररोचना, वशकर्पूररोचनी, वशकर्पूरलोचना =
दे० 'वशलोचन', 'वसलोचन' ।

व शकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [स० वशकर्म] बँसोर का काम । वाँस की
डलिया, सूप, टोकरी आदि बनाने का काम [को०] ।

यौ०—वशकर्मवृत्त = दे० 'बँसोर' ।

व शकार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गन्धक ।

व शकत्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] किसी वश का मूल पुरुष [को०] ।

व शक्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वशीवादन । वाँसुरी बजाना [को०] ।

व शक्रम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] किसी वश की तालिका । वशानुक्रम [को०] ।

व शक्षय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वश या कुल का विनाश [को०] ।

वंशक्षीरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन ।
 वंशगोप्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वंशगोप्तृ] वह जो कुल या वंश का सर-
 च्छक हो [को०] ।
 वंशघटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दिव्यावदान के अनुसार एक प्रकार
 का खेल ।
 वंशचर्मकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाँस और चमड़े की वस्तुएँ
 बनाता हो [को०] ।
 वंशचरित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का इतिहास [को०] ।
 वंशचिन्तक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वंशचिन्तक] कुल या वंश का कुर्सीनामा
 तैयार करनेवाला [को०] ।
 वंशच्छेत्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वंशच्छेत्तृ] वंश का अंतिम पुरुष [को०] ।
 वंशज^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का चावल या बीज । २ पुत्र ।
 ३ कुल में उत्पन्न पुरुष । सतान । संतति । श्रौलाद । ४ वंश-
 लोचन [को०] ।
 वंशज^२—वि० १. बाँस का बना हुआ । २ अच्छे कुल में उत्पन्न ।
 ३ (किसी) वंश में उत्पन्न [को०] ।
 वंशजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वंशलोचन । २ कन्या ।
 वंशतडुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वंशतरडुल] बाँस का चावल या बीज [को०] ।
 वंशतालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वंशवृक्ष । कुर्सीनामा [को०] ।
 वंशतिलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक छंद का नाम ।
 वंशचला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जीरिका वृक्ष । बाँस । विशेष दे०
 'वंशपत्री' [को०] ।
 वंशधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कुल में उत्पन्न । वंशज । संतति ।
 सतान । २ वंश की मर्यादा रखनेवाला ।
 वंशधरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो महेंद्र पर्वत से निकली है ।
 यह नदी मध्य प्रदेश में है । इसे वंशकरा भी कहते हैं । इसका
 आधुनिक नाम वंशधारा है ।
 वंशधान्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाँस का चावल ।
 वंशनर्त्ती—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वंशनर्त्तिन्] भांड ।
 वंशनाडिका, वंशनाडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी । २ बाँस
 की पुपली या नली [को०] ।
 वंशनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वंश का प्रधान पुरुष । जाति का मुखिया
 या प्रधान व्यक्ति [को०] ।
 वंशनाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो
 शनि और राहु के सूर्य के साथ एक लग्न में, विशेषतः पंचम में
 पडने पर होता है ।
 वंशनेत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के अकुरवाले डठल जिन्हें जमीन में
 गाड़ने से ईश्वर का नया पौधा उत्पन्न होता है । आँख ।
 वंशपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ हरताल । २ बाँस का पत्ता [को०] ।
 ३. एक प्रकार का सरकड़ा [को०] ।
 वंशपत्रक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की ईश्वर जो सफेद होती
 है । २. एक प्रकार की मछली । ३. हरताल । ४. सरकड़ा [को०] ।

वंशपत्रपतित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १७ वर्षों के एक छंद का नाम
 जिसमें क्रम से भगण, रगण, नगण, भगण, नगण और अंत में
 एक लघु और एक गुरु होता है ।

वंशपत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की हींग । २ एक घास
 जिसे बाँस कहते हैं ।

विशेष—इसकी पत्तियाँ बाँस की पत्तियों से मिलती हैं । वैद्यक में
 यह शीतल, मधुर, रुचिकारी तथा रक्तपित्त के दोषों को शांत
 करनेवाली कही गई है ।

पर्याय—वंशदला । जीरिका । जीर्णपत्रिका । वेणुपत्री । पिंडा ।
 शिराटिका ।

वंशपरंपरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वंशपरम्परा] १ वंशतालिका । वंश-
 वृक्ष । २ पूर्वपुरुषों से चली आती हुई रीति । कुलगत आचार ।

वंशपात्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाँस का बना पात्र । जैसे, डलिया, टोकरी
 आदि [को०] ।

वंशपीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गुग्गुलु ।

वंशपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] क्षुप जाति की एक वनौषधि । सहदेई ।
 विशेष दे० 'सहदेई' ।

वंशपूरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर या गन्ने की पोर [को०] ।

वंशपोट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का अकुर । करइल । २ अच्छे
 कुल की सतान [को०] ।

वंशबाह्य—वि० [सं०] वंश से बाहर किया गया । वंशच्युत [को०] ।

वंशब्राह्मण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सामवेद के ब्राह्मणों में एक प्रधान
 ब्राह्मण, जिसमें सामवेदी ब्राह्मणों के वंशकार ऋषियों की
 नामावली है ।

वंशभव—वि० [सं०] १ बाँस का बना हुआ । २. कुलीन ।
 पालनकर्ता ।

वंशभृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वंश का प्रधान [को०] ।

वंशभोज्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह सर्पति जिसपर वंशगत
 अधिकार हो । मौखी जायदाद । २ वंशगत अधिकार की
 शासनप्रणाली ।

वंशयव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाँस का बीज [को०] ।

वंशराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत लंबा बाँस । २ खानदान
 का मालिक । कुल का प्रधान ।

वंशरोचना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन ।

वंशलून—वि० [सं०] जिसके वंश का लून अर्थात् उच्छेद हो गया
 हो । ससार में अकेला [को०] ।

वंशलोचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वंसलोचन ।

पर्याय—त्वक्क्षीरा । वंशलोचना । तुगाक्षीरी । वाशी । वंशजा ।
 क्षीरिका । तुगा । त्वक्क्षीरी । शुभ्रा । शुभा । वंशक्षीरी ।
 त्वक्क्षारा । कर्मरी । श्वेता । वंशकर्पूर । रोचना । रोचनिका ।
 पिंगा । वंशशर्करा । वेणुलवण । वंशावी ।

वंशलोजना—वि० स्त्री० [सं०] वंसलोचन ।

वंशवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाँसों का जंगल [को०] ।

वशवर्धन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वश की वृद्धि करनेवाला । पुत्र [को०] ।
वशवितति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ परिवार । २ बाँसो का भुर-
मुट [को०] ।

वशविस्तर—सञ्ज्ञा पु० [स०] वशवृद्ध [को०] ।

वशवृत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बाँस का पेड़ । २ किसी वश की वृद्धि
की आकृति में बनाई गई तालिका [को०] ।

वशशर्करा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वसलाचन ।

वशशलाका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बोन, सितार आदि वाजो का डंडा ।

वशसप्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [वशमस्पत्] उच्च कुल में जन्म एवं प्रभूत
वैभव [को०] ।

वशस्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] बारह वर्गों का एक वर्णवृत्त जिसका
व्यवहार सङ्ख्या काव्यो में अधिक मिलता है । इसमें जगण,
तगण, जगण और रगण आते हैं । जैसे,—प्रथा तु वशस्थ
विलिधि धावती । नसाय तीनों कुल को लजावती । इसे 'वश-
स्थविल' भी कहते हैं ।

वशस्थविल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बाँस के भीतर का खोखला
हिस्सा । २ एक वर्णिक छंद । वशस्थ [को०] ।

वशहीन—वि० [स०] जिसके वश में कोई न हो । निर्वश । २ अपुत्र ।

वशाकुर—सञ्ज्ञा पु० [स० वशाङ्कुर] १ बाँस का कोपल । करइल ।
२ पुत्र [को०] ।

वशागत—वि० [स०] कुल परंपरा से आता हुआ ।

वशाग्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वशाकुर' [को०] ।

वशानुक्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] वशावली ।

वशानुकीर्तन—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वशानुचरित' [को०] ।

वशानुचरित—सञ्ज्ञा पु० [स०] प्राचीन राजवंशों की कथा ।

विशेष—ग्रह पुराणों के लक्षणों में से एक है ।

वशावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] किसी वश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर
क्रम से सूची ।

वशाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] वसलोचन ।

वशिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अंगर की लकड़ी । २ काला गन्ना ।
केतारा । ३ प्राचीन काल की एक माप जो चार स्तोम की
कही गई है (को०) । ४. एक जाति जो शूद्र और वेपों से
उत्पन्न कही गई है (को०) ।

वशिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ अंगर की लकड़ी । २ बसी । मुरली ।
३ पिप्पली ।

वशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक
प्रकार का वाजा जो बाँस में सुर निकालने के लिये छेद करके
बनाया जाता है । बाँसुरी । मुरली ।

[विशेष—पुराने ग्रंथों में लिखा है कि वशी बाँस ही की होनी
चाहिए, पर खैर, लाल चंदन आदि की लकड़ी की अथवा
सोने, चाँदी की भी हो सकती है । यह वास्तव में बाँस की एक
पोली नली होती है, जिसके बजानेवाले छोर पर एक जीभ लगी
होती है और दूसरी ओर नली के ऊपर एक पंक्ति में सुर निक-

लने के छेद होते हैं । मातंग ऋषि का मत है कि नली का छेद
कनिष्ठा उँगली के मूल के बराबर होना चाहिए । जो छोर मुँह
में रखकर फूँका जाता है, उसे 'फूँकाररध्र' और सुर निकालने-
वाले सात छेदों को 'ताररध्र' कहते हैं । इस वशी के अतिरिक्त
मातंग के अनुसार चार प्रकार की मुरलियाँ और होती हैं,
जिन्हें मदानदा, नदा, विजया और जया कहते हैं । मदानदा में
ताररध्र फूँकाररध्र से दस अंगुल पर, नदा में ग्यारह अंगुल पर,
विजया में बारह अंगुल पर और जया में चौदह अंगुल पर
होते हैं । आजकल वह वशी जो एक साथ दो बजाई जाती है,
अलगोजा कहलाती है । प्राचीन काल के गोपों में इस वाजे
का प्रचार बहुत था ।

यौ० - वशीधर ।

२ चार कर्प का एक मान, जो आठ तोले के बराबर होता है ।

३ वसलोचन । ४ धमनी । नाडी (को०) ।

वशीधर—सञ्ज्ञा पु० [म०] श्रीकृष्ण, जो वशी बजाया करते थे ।

वशीधारी—सञ्ज्ञा पु० [स० वशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण । २ वह जो
बाँसुरी बजाता हो । बाँसुरीवादक [को०] ।

वशाय—वि० [स०] वशीद्भव । कुल में उत्पन्न । जैसे,—चंद्रवंशीय ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत में हुआ
करता है ।

वशीवट—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृंदावन में वह वरगद का पेड़ जिसके नीचे
श्रीकृष्ण वशी बजाया करते थे ।

वशीवादन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वशी बजाना ।

वशीद्भव—वि० [स०] वशज । कुल में उत्पन्न ।

वशीद्भवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वसलोचन ।

वश्य^१—वि० [स०] १ वशी । वशज । २ मेरुदंड सवधी । मुख्य अस्थि
से सबद्ध (को०) । ३ अच्छे कुल का । कुलीनवश सवधी [को०] ।

वश्य^२—सञ्ज्ञा पु० १ पीठ की रीढ़ । २ वह बड़ी लकड़ी जो छाजन के
बीचोबीच रीढ़ के समान होती है । बेंडर । ३ पूर्व पुरुष ।
पूर्वज (को०) । ४ सतति । सतान (को०) ५ परिवार या कुल
का कोई व्यक्ति (को०) । ६ शिष्य (को०) । ७ वे सवधी व्यक्ति
जो सात पुष्ट पूर्व और सात पीढ़ी बाद के हों (को०) ।

वंश्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] धनिया [को०]

वस—सञ्ज्ञा पु० [स० वश] दे० 'वश' । उ०—एक पुत्र है, सो तेरो
वस चलो जायगो ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७२ ।

वसग—सञ्ज्ञा पु० [स०] साँड । वृषभ [को०] ।

वसली—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वासुरी] दे० 'वाँसुरी' । उ०—गावणहार
माँडइ (अ) र गाई । रास कइ (सम) यह वसली वाई ।—बी०
रासो, पृ० ५ ।

व^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वायु । २ वाण । ३ वरुण । ४ बाहु ।
५ मन्त्रणा । ६ कल्याण । ७ सात्वता । ८ वसति । वस्ती ।
९ वरुणालय । समुद्र । १०. शार्दूल । ११ वस्त्र । १२ कोई
का कद । सेरकी । १३. जल में उत्पन्न होनेवाले कद । शालुक ।

१४ वंदन । १५ अस्त्र । १६ खड्गवारी पुरुष । १७ मूर्वा नामक लता । १८ वृद्ध । १९ कलण से उत्पन्न ध्वनि । २० मद्य । २१ प्रचेता । २२ । पानी । जल (को०) । २३ आदर । समान (को०) । २४- राहु (को०) ।

व२—वि० बलवान् ।

व३—अव्य० [फा०] और । जैसे,—राजा व रईस ।

वञ्चन(५)—सञ्ज्ञा पु० [स० वचन, प्रा० वयण, वञ्चन] दे० 'वचन' । उ०—कुटिल राजनीति चतुरहु, मोर वञ्चन आकर्षण करहु ।—कीर्ति०, पृ० २० ।

वड्ठन(५)†—क्रि० अ० [स० √विष्, विट, प्रा० विट् + हिं० ना (प्रत्य०) या स० वित्तिष्ठति, प्रा० वड्ठइ] दे० 'वँठना' । उ०—वड्ठहि ठामहि ठामा ।—कीर्ति०, पृ० ६६ ।

वड्ढराग(५)†—सञ्ज्ञा पु० [स० वैराग्य, प्रा० वड्ढराग] दे० 'वैराग्य' । उ०—मनि वड्ढराग न थाइ, वालभ वीछुडिया तराी ।—ढोला०, दू० १७१ ।

वड्ढसाना(५)—क्रि० स० [हिं० वँठाना] दे० 'वँठाना' । उ०—अमरा-पति चढि चाल्यो राय । ली अस्त्री अरघग वड्ढसाय ।—बी० रासो, पृ० २७ ।

वक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बगला नाम का पक्षी । २ अगस्त का पेड़ या फूल । ३ एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था । ४ एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था । ५ कुवेर । ६ एक यक्ष का नाम । ७ एक जाति का नाम । ८ वचक । ठग । ढोगी (को०) ।

वकअत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वकअत] इज्जत । मान । गौरव । साख । ऊँचाई । प्रतिष्ठा । उ०—मबमे ज्यादा जिस बात से तथ्याञ्जुव होता है, यह है कि खान देहली की जवान और उर्दू को भी वकअत की निगाह से नहीं देखते ।—पीढ़ार अभि० ग्र०, पृ० ८७ ।

वककच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा के किनारे था ।

विशेष—कथामरित्सागर में लिखा है कि उज्जयिनी के राजा सातवाहन सर्ववर्मा ने कलाप व्याकरण का अध्ययन करके अपने गुरु को यह राज्य गुरुदक्षिणा में दिया था ।

वकचर—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वकवृत्ति' ।

वकचिचिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वकचिञ्चिका] एक प्रकार की छोटी मछली ।

वकजित्—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण । २ भीमसेन ।

वकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [प्र० वकत] दे० 'वकअत' [को०] ।

वकनख—सञ्ज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वकनिपूदन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'बकनिपूदन' [को०] ।

वकधूप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वकधूप' [को०] ।

वकपचक्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वकपञ्चक] कार्तिक के शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पाँच तिथियाँ ।

वकयंत्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वकयन्त्र] ग्रामव आदि भवके से उतारने के लिये एक यंत्र या बरतन, जिसके मुँह पर बगले की गरदन की तरह टेढ़ी नली लगी रहती है ।

वकवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] घोखा देकर काम निकालने का घात में रहने की वृत्ति । कदाचार ।

वकल—सञ्ज्ञा पु० [स० वल्कल] भीतर की छाल [को०] ।

वकत्रत—सञ्ज्ञा पु० [स०] बगले की तरह घात में रहनेवाला । कपटी । चालवाज मनुष्य ।

वकाची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मछली [को०] ।

वकार—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वकार] १ प्रतिष्ठा । बड्ढपन । इज्जत । २ गुरुता । गभीरता [को०] ।

वकारना—क्रि० अ० [देश०] गरजना । नलकारना । हुकारना । उ०—भये त्रिपत वीराधिवर, पूरन डकर डकार । अति आनंदत उत्हसत, बोलत वयन वकार ।—पृ० रा०, ६।१७० ।

वकालत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ दूसरे के किसी काम का भार लेना । दूसरे के स्थानापन्न होकर काम करना । २ दूसरे का सँदेमा जोर देकर कहना । दूतकर्म । ३ दूसरे के पक्ष का मडन दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना । जैसे,—उन्हे जो कुछ कहना होगा आप कहेंगे, तुम क्यों उनकी ओर से वकालत करते हो । ४ अदालत या कचहरी में किसी मामले में वादी या प्रतिवादी की ओर से प्रश्नोत्तर या वादविवाद करने का काम । मुकदमे में किसी फरीक की तरफ से बहम करने का पेशा ।

मुहा०—वकालत चलना या चमकना = वकालत के पैसे में ग्रामदनी होना । वकालत जमना = वकालत के पैसे में लाभ होने लगना ।

यौ०—वकालतनामा ।

वकालतन्—क्रि० वि० [अ०] वकील के द्वारा । अमालतन् का उलटा ।

वकालतनामा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वकालत + फा० नामह] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे में बहस करने के लिये मुकर्रर करता है ।

वकाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वक + आलि] वकपत्ति । उ०—नभ में मेधाबलि है काली, क्षिति में है मञ्जुल हरियाली, है दोनों के बीच वकाली । विद्युदञ्जला की माला मी, है वह मुदर श्वेत सुमन की ।—प्रेमाञ्जलि, पृ० ११६ ।

वकासुर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम ।

विशेष—इस नाम के दो राक्षस हुए हैं । एक को श्रीकृष्ण ने अपनी बाल्यावस्था में मारा था । वत्सामुर और अघामुर नाम के इसके दो भाइयों का भी कृष्ण ने सहार किया था । यह पूतना नाम की राक्षसी का भाई और कस का अनुचर था । हमारे को भीमसेन ने उस समय मारा था, जब पाँचा पाण्डव लाक्षागृह से निकलकर वन में जाकर रहते थे ।

वकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक राक्षसी का नाम ।

वकीअ—वि० [अ० वेकीअ] १ इज्जतदार । प्रतिष्ठित । २. ऊँचा । बलद ।

वकीअत—सज्ञा स्त्री० [अ० वकीअत] १ कुत्सा । निंदा । २ युद्ध । लड़ाई [को०] ।

वकील—सज्ञा पुं० [अ०] १ दूसरे के काम को उसकी ओर से करने का भार लेनेवाला । २ दूसरे का सदेसा ले जाकर उसपर जोग देनेवाला । दूत । ३ राजदूत । एलची । उ०—सूरज कहीं नवाव के है आनद सरीर । तब वकील बिनती करी कृपा पाइ जदुवीर ।—सूदन (शब्द०) । ४ प्रतिनिधि । ५ दूत के का पक्ष मडन करनेवाला । दूसरे की ओर से उनके अनुकूल बात करनेवाला । ६ कानून के अनुसार वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जिसे हाईकोर्ट की ओर से अधिकार मिला हो कि वह अदालतों में मुद्दई या मुद्दाजैह की ओर से बहस करे ।

वकीली—सज्ञा स्त्री० [अ० वकील + हि० ई (प्रत्य०)] दे० 'वकालत' ।

वकुल—सज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड़ या फूल । २ मौलसिरी । उ०—सूखा है यह मुख यहाँ, सूखा है मन आज । किंतु मुमन-सकुल रहे प्रिय का वकुल समाज ।—साकेत, पृ० २६३ । ३. शिव । दे० 'वकुल' ।

वकुला—सज्ञा स्त्री० [सं०] कुटकी नामक ओषधि ।

वकुली—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली नाम की ओषधि । २ वकुल । मौलसिरी ।

वकुश—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह त्यागी यती, साधु जिसे अपने प्रयो, शरीर और भक्तों या शिष्यों की कुछ कुछ चिंता रहती हो । (जैन) । २ पत्तो के झुरमुट में रहनेवाला एक जंतु (को०) ।

वकूअ—सज्ञा पुं० [अ० वकूअ] घटित होना । प्रकट होना ।

मुहा०—वकूअ में आना = प्रकट होना । घटित होना ।

वकूआ—सज्ञा पुं० [अ० वकूआ] १ फसाद । झगडा । २ घटना । वारदात । हादसा (को०) ।

वकूफ—सज्ञा पुं० [अ० वकूफ] १ जानकारी । ज्ञान । २ बुद्धि । समझ ।

यौ०—वेवकूफ = मूर्ख ।

वक्त—सज्ञा पुं० [अ० वक्त] १ समय । दाल ।

मुहा०—वक्त काटना = (१) किसी प्रकार समय बिताना । (२) जी बहलाना । वक्त की चीज = (१) किसी समय या ऋतु विशेष में मिलनेवाली चीज । (२) किसी विशेष समय में गाया जानेवाला गीत या राग । जैसे,—कोई वक्त की चीज गाइए । वक्त खोना = समय नष्ट करना ।

२ किसी बात के होने का समय । अवसर । मौका ।

मुहा०—वक्त पर = अवसर आने पर । कोई विशेष परिस्थिति होने पर । जैसे,—इसे रख छोड़ो, वक्त पर काम आवेगी । वक्त ताकना = मौका देखना । इस बात की प्रतीक्षा में रहना कि कब उपयुक्त अवसर मिले और कोई बात करूं । वक्त हाथ से देना = अवसर चूकना । मौका आने पर भी काम न करना । ३ इतना समय कि कोई काम किया जा सके । अवकाश । फुरसत ।

क्रि० प्र०—निरुलना ।—निरुलना ।—मिलना ।

४ विपत्काल । मुसीबत का समय (को०) । ५ मौमिम (को०) ।

६ मरने का निश्चय समय । मृत्युकाल ।

क्रि० प्र०—आ जाना ।—आ पहुँचना ।

वक्त^७—वि० म० वक्त, वक्ता दे० 'वक्ता' । उ०—उनईस महम गर-एह पुरान । श्रोतान वक्त भक्ती उरान ।—पृ० ग० १।४० ।

वक्तन् फौजतन्—क्रि० वि० [अ० वक्तन् फौजतन्] यदाकदा । कभी कभी । ३ यथासमय ।

वक्तव्य—वि० [म०] १ कहने योग्य । वाच्य । २ कुछ कहने मुनने लायक । ३ हीन । तुच्छ । ४ जिम्मेदार । उत्तरदायी । ५ आधारित । निर्भर । आधारित (को०) ।

वक्तव्य —सज्ञा पुं० [म०] १ कथन । वचन । २ वह बात जो किसी विषय में कहनी हो । ३ निंदा । बुराई (को०) । ४ नियम (को०) । ६ नीरस । शिक्का (को०) ।

वक्तव्यता—सज्ञा स्त्री० [म०] १ दोषारोपण । तिरस्कार । २. निर्भरता । पराधीनता (को०) ।

वक्तव्यत्व—सज्ञा पुं० [म०] दे० 'वक्तव्यता' (को०) ।

वक्ता—वि० [म० वक्तृ] १ वाग्मी । बोलनेवाला । २ भाषणपटु । वदान्य । ३ ईमानदार (को०) ।

वक्ता^२—सज्ञा पुं० १ कथा कहनेवाला पुरुष । व्यास । उ०—मृत तहें कथा भागवत की कहत है ऋषि अठासी महम हुने श्रोता । राम को देखि मनमान तब ही कियो मृत नहि उटयो निज जानि वक्ता ।—नूर (शब्द०) । २ शिक्षक । अध्यापक (को०) । ३ बुद्धिमान् । मेधावी व्यक्ति (को०) ।

वक्तुकाम—वि० [म०] जीतने की इच्छा रखनेवाला (को०) ।

वक्तुमना—वि० [म० वक्तुमनम्] जो बोलना चाहता हो । जिनके मन में बोलने की इच्छा हो (को०) ।

वक्तृक—वि० [म०] बोलनेवाला । वक्तृता देनेवाला (को०) ।

वक्तृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाग्मिता । वाक्पटुता । २ व्याख्यान । ३ कथन । भाषण ।

वक्तृत्व—सज्ञा पुं० [म०] १. वक्तृता । वाग्मिता । २ व्याख्यान । प्रवचन । ३ कथन । भाषण ।

वक्त्र—सज्ञा पुं० [म०] १ मुख । २ तगर की जड़ । ३ एक प्रकार का छद जो अनुपुष्ट छद के अनुरूप होता है । ४ काम का आरम्भ । ५ मुखारुति । चेहरा (को०) । ६ दाँत (को०) । ७ बाण की नोक (को०) । ८ एक प्रकार का पहनावा ।

यो०—वक्त्रज ।

वक्त्रसुर—सज्ञा पुं० [म०] दाँत । दाँत (को०) ।

वक्त्रज—सज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण । २ दाँत (को०) ।

वक्त्रताल—सज्ञा पुं० [सं०] वह ताल जो मुँह से उत्पन्न किया जाय । जैसे, वशी को बजाने से या मुँह में वायु भरकर छोड़ने से ।

वक्त्रतुंड—सज्ञा पुं० [सं० वक्त्रतुण्ड] गणेश ।

वक्रदल

वक्रदल—सज्ञा पु० [सं०] तालु । तालू ।
 वक्रत्रट्ट—सज्ञा पु० [सं०] तोबडा [को०] ।
 वक्रत्रपरिस्पन्द—सज्ञा पु० [सं० वक्रत्रपरिस्पन्द] वार्ता । बात [को०] ।
 वक्रत्रबाहु—सज्ञा पु० [सं०] बाराही कद ।
 वक्रत्रभेदी—वि० [सं० वक्रत्रभेदिन्] बहुत तीखा या चरपरा [को०] ।
 वक्रत्रवास—सज्ञा पु० [सं०] नारंगी ।

वक्रत्रशल्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] गुजा । घुँघची ।
 वक्रत्रशोधो—सज्ञा पु० [सं० वक्रत्रशोधिन्] जमीरी नीबू [को०] ।
 वक्रत्रशोधो—वि० मुख को शुद्ध करनेवाला [को०] ।

वक्रत्रासव—सज्ञा पु० [सं०] लाला । थूक [को०] ।
 वक्रफ—सज्ञा पु० [अ० वक्रफ] १ वह भूमि या संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो । किसी धर्म के काम में लगी हुई जायदाद ।

क्रि० प्र०—करना ।

२ किसी धर्म के काम में धन आदि देना । धर्मार्थ दान । ३ किसी के लिये चीज या धन संपत्ति आदि छोड़ देना (क्व०) ।

वक्रफनामा—सज्ञा पु० [अ० वक्रफ् + फा० नामह्] वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्रफ की जाय । दानपत्र ।

वक्रफा—सज्ञा पु० [अ० वक्रफा] १. अवकाश । अंतर । छुट्टी । मोहलत ।

क्रि० प्र०—देना ।—मिलना ।

२. काम करने से विराम ।

क्रि० प्र०—मिलना ।

वक्र—वि० [सं०] १ टेढ़ा । बाँका । ऋजु का उलटा । २ झुका हुआ । तिरछा । ३ कुटिल । दाँवपेच चलनेवाला । ४ बेईमान [को०] । ५ निर्दय । क्रूर [को०] ।

वक्र—सज्ञा पु० १ नदी का मोड़ । बाँका । २ तगरपादुका । ३. शनैश्चर । ४ भौम । मगल । ५ रुद्र । ६ पर्पट । ७ वह ग्रह जिसमें तीस अंश के अंदर ही सूर्य हो । वक्री ग्रह । ८ एक राजस का नाम । ९ त्रिपुरासुर । १० नासिका । नाक [को०] । ११ अस्थिभग का एक प्रकार [को०] ।

वक्रकट—सज्ञा पु० [सं० वक्रकण्ट] बैर का वृक्ष । वक्रकटक ।

वक्रकटक—सज्ञा पु० [सं० वक्रकण्टक] १. बैर का वृक्ष । २. खैर का पेड़ [को०] ।

वक्रकील—सज्ञा पु० [सं०] अकुश [को०] ।

वक्रगति—सज्ञा पु० [सं०] १ भौम । मगल । २ ग्रहलाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें हो । इस प्रकार मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है ।

वक्रगल—सज्ञा पु० [सं० वक्र + गला] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है ।

वक्रगामी—वि० [सं० वक्रगामिन्] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला । २. शठ । कुटिल ।

वक्रगुलरु—सज्ञा पु० [सं०] ऊँट ।

वक्रग्रीव—सज्ञा पु० [सं०] ऊँट । क्रमेलक [को०] ।

वक्रचक्षु—सज्ञा पु० [सं० वक्रचक्षु] तोता । शुक पक्षी ।

वक्रता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ापन । २ पीछे की ओर मुड़ने की क्रिया । ३ विफलता । असफलता । चूक । ४ कुटिलता [को०] ।

वक्रताल—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाया जाता है । वक्रनाल ।

वक्रताली—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वक्रताल' ।

वक्रतुड—सज्ञा पु० [सं० वक्रतुण्ड] १. शुक पक्षी । तोता । २ गणेश ।

वक्रत्व—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'वक्रता' ।

वक्रदंष्ट्र—सज्ञा पु० [सं०] शूकर । सूअर ।

वक्रदृष्टि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढ़ी दृष्टि । २ क्रोध की दृष्टि । ३ मद दृष्टि ।

वक्रधर—सज्ञा पु० [हिं० वक्र + धर] द्वितीया का टेढ़ा चंद्रमा धारण करनेवाले, शिव ।

वक्रधी^१—वि० [सं०] टेढ़ी बुद्धिवाला । धूर्त । बेईमान [को०] ।

वक्रधी^२—सज्ञा स्त्री० [सं०] धूर्तता । बेईमानी । मक्कारी ।

वक्रनक्र—सज्ञा पु० [सं०] १ पिशुन । चुगुलखोर । २ शुक पक्षी । तोता ।

वक्रनाल—सज्ञा पु० [सं०] वक्रताल नाम का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है ।

वक्रनासिक^१—सज्ञा पु० [सं०] उल्लू ।

वक्रनासिक^२—वि० टेढ़ी नाकवाला ।

वक्रपद—सज्ञा पु० [सं०] विभिन्न प्रकार की नक्काशी से युक्त कपडा । छोट [को०] ।

वक्रपाद—वि० [सं०] जिसका पैर टेढ़ा हो ।

वक्रपुच्छ, वक्रपुच्छिक—सज्ञा पु० [सं०] कुत्ता ।

वक्रपुष्प—सज्ञा पु० [सं०] १ अग्रस्त का पेड़ । २ पलाश ।

वक्रबुद्धि—वि० [सं०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।

वक्रभाव—सज्ञा पु० [सं०] १ टेढ़ापन । २ धूर्तता [को०] ।

वक्रभुज—सज्ञा पु० [सं०] गणेश [को०] ।

वक्रम—सज्ञा पु० [सं०] भागना । अवक्रम । पलायन [को०] ।

वक्रमति—वि० [सं०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।

वक्रय^१—सज्ञा पु० [सं०] मूल्य । दाम ।

वक्रय^२—सज्ञा पु० [सं०] अवक्रम । भागना [को०] ।

वक्रवक्त्र—सज्ञा पु० [वि०] शूकर । सूअर [को०] ।

वक्रशल्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कडवा कद्दू या घीया । २ लाल फूल की विपलागली ।

वक्रांग^१—वि० [सं० वक्राङ्ग] जिसका अंग टेढ़ा हो ।

वक्रांग^२—सज्ञा पु० १. हंस । २. सर्प । साँप ।

वक्राख्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] टीन [को०] ।

वक्रि—वि० [सं०] असत्यभाषी । झूठा [को०] ।

वक्रित—वि० [सं०] जो टेढ़ा हो गया हो ।

वक्रिम—वि० [सं०] टेढ़ा । कुटिल ।

वक्रिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वक्रिमन्] १ टेढ़ापन । कुटिलता । २ कथन की भंगी [को०] ।

वक्रो^१—वि० [म० वक्रिन्] १ अपने मार्ग को छोड़कर पीछे लौटनेवाला ।

विशेष—फलित ज्योतिष में जो ग्रह अपनी राशि से एकवारगी दूसरी राशि में चला जाता है, उसे अतिवक्रो या महावक्रो कहते हैं । यह वक्रना मंगल आदि पाँच ग्रहों में भी होती है । विशेष दे० वक्रगति ।

२ कुटिल । टेढ़ा [को०] । ३ घूर्त । मक्कार । फरेवी [को०] ।

वक्रो^२—सञ्ज्ञा पुं० १ वक्र ग्रह । २ वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हो । २ बुद्धदेव या जैन जिन्होंने टेढ़ी युक्तियों से वैदिक मत का विरोध किया था ।

वक्रोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है । २ काकूक्ति । ३ वह उक्ति जिसमें चमत्कार हो । बढ़िया उक्ति ।

विशेष—किसी किसी आचार्य (जैसे 'वक्रोक्तिजीवितम्' के कर्ता) ने वाक्चातुर्य को ही काव्य की आत्मा कह दिया है, जिसका और आचार्यों ने खंडन किया है ।

वक्रोक्तिजीवित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] साहित्य शास्त्र का एक ग्रन्थ जिसमें वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा माना गया है । इसके रचयिता आचार्य 'कुतक' थे ।

वक्रोष्ठि, वक्रोष्ठिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी मद हँसी जिसमें दाँत न खुलें केवल ओठ कुछ टेढ़े हो जायें । मुसकान । स्मित ।

वक्वस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मद्य ।

वक्वस्थल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उरस्थल । वक्व ।

वक्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वक्वम्] १ पेट और गले के बीच में पड़नेवाला भाग जिसमें स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के स्तन के से चिह्न होते हैं । छाती । उरस्थल । २ बल । वृषभ । ३ शक्ति । बल । ताकत [को०] ।

वक्वण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ छाती । सीना । २ शक्ति वा स्फूर्तिदायक पदार्थ । ३ अग्नि । पावक [को०] ।

वक्वणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेट । उदर । २ नदी का पाट या चौड़ाई । ३ नदी [को०] ।

वक्वथ—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ उगना । बड़ा होना ।

वक्वस्थल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उर । छाती ।

वक्वो—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अग्निशिखा ।

वक्वु—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'वक्वु' ।

वक्वोप्रीव—सञ्ज्ञा पुं० [म०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वक्वोज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्तन । कुच ।

वक्वोरुह—सञ्ज्ञा पुं० [म०] स्तन । कुच ।

वक्वोमडली—सञ्ज्ञा पुं० [म० वक्वोमण्डलिन्] नृत्य में हाथों की एक मुद्रा वा स्थिति [को०] ।

वक्वोमणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] मणि या रत्न जो वक्व पर धारण किया जाय [को०] ।

वक्वयमाण—वि० [सं०] १ वाच्य । वक्तव्य । २ जिसे कह रहे हो अथवा जो आगे या बाद में कहा जानेवाला हो । जो कथन का प्रस्तुत विषय हो ।

वक्वरुह—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ मुह से निकला हुआ शब्द । वोन । वकार । २ अश । भाग । वक्वरा । उ०—वक्वरु माचु करे वा पारु । नानक पाए मुक्ति द्वार ।—प्राण०, पृ० १०४ ।

वक्वराण—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० वक्वान] दे० 'वक्वान' । उ०—मालव दम वक्वोडिया, मारु किया वक्वराण । मारु सोहागिणि वक्व, नुदरि मगुण नुजाण । - टोला०, दू० ६७२ ।

वक्वपती—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० वक्वपडि क्त] वक्वनो की पाँत । वक्वपत्ति । उ०—जामन चलत मेत मिर दती । स्थाम घटा मानहु वक्वपती—हिं० क० का०, पृ० २२३ ।

वक्वर—अव्य० [फा०] दे० 'अगर' । उ०—मेरे घर में दोनों के वक्वर रंग है । वक्वर नहीं तो तुम मूँ मेरा जग है ।—दक्खिनी०, पृ० ३४८ ।

वक्वर^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० प्रघण, प्रा० पघण] महल । निवास । दे० 'वक्वर' । उ०—जडित नीलमणि जामु वक्वर सुदर चामोकर । नगर परम रमनीय सुखर सुरलोकहु ते वर ।—दीन० प्र०, १४६ ।

वक्वरना—अव्य० [फा० वक्वरह्] अन्यथा । वर्ना । नही तो [को०] ।

वक्वराना—क्रि० सं० [म० वक्वरान] फैलाना । दे० 'वक्वराना' । उ०—कुसुम समूढ रहत मुदर मुगध वक्वरार्द्र ।—प्रेमघन०, पृ० १६ ।

वक्वलवदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० वक्वलवदी] मिरजई । उ०—अतः वक्वलवदी आई, पर वह भी न भई ।—प्रेमघन० भा० २, पृ० २१६ ।

वक्वला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वक्वलामुखी' ।

वक्वलामुखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दम महाविद्याओं में से एक जिसकी पूजा का महत्व तनों में वर्णित है ।

वक्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वक्वा] युद्ध । लड़ाई [को०] ।

वक्वाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'अवक्वाह' [को०] ।

वक्वैरह—अव्य० [अ० वक्वरह्] एक अव्यय जिसका अर्थ यह होता है कि 'इसी प्रकार और भी समझिए' । इत्यादि । आदि । जैसे,—बैल, ऊँट, हाथी, वक्वैरह बहुत से जानवर वहाँ आए थे ।

विशेष—इसका प्रयोग वस्तुओं को गिनाने में उनके नामों के अतः में मत्सेप या लाघव के लिये होता है ।

वक्वर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्ग, प्रा० वग्ग (=वाडा)] १ दे० 'वर्ग' । समूह । शाला । (लाव्ठ) । उ०—ढोलह चित्त विमासियउ, मारु देश अलग । आपण जाए जोइयउ, करहा हृदउ वग्ग । - ढोला०, दू० ३०७ ।

वग्ग(७)^२—मञ्जा पु० [अ० वाग] वगीचा । वाग । उ०—फुले सुगव के वरन फूल । देखत वग्ग पावस्स भूल ।—पृ० रा०, १४।६८ ।

वग्ग^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वल्गा, प्रा० वग्ग] लगाम । उ०—फेरे वग्ग तुरग री, तोले खग्ग करग्ग ।—रा० रु०, पृ० ३२ ।

वग्गना(७)^४—क्रि० अ० [स० वल्ग, प्रा० वग्ग (= दहाडना) + हिं० ना (प्रत्य०)] तीव्र ध्वनि करना । गरजना । वजना । उ०—ब्रजे ब्रव जंगी गढे नाल वग्गी । लजावत जगी दूहँ दीठ लग्गी ।—रा० रु०, पृ० १८६ ।

वग्नु^५—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वक्ता । वाचक । २ शब्द । आवाज । ध्वनि । ३ (किसी पशु की) चिल्लाहट [को०] ।

वग्नु^६—वि० वक्वादी [को०] ।

वग्नु^७—सञ्ज्ञा पु० [स०] ध्वनि [को०] ।

वचडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वचण्डी] १ सारिका । मैना । २ दीप की बत्ती । बत्ती । ३ एक शस्त्र का नाम ।

विशेष—मेदिनी कोश में इस शब्द का पाठ 'वचडा' और 'वरडा' है ।

वचदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वचन्दा] दे० 'वचडी' [को०] ।

वच^८—मञ्ज्ञा पु० [स०] १ तोता । शुक पक्षी । २ वजह । कारण । हेतु । ३ सूर्य ।

यौ०—वचार्च = सूर्यपूजक ।

वच^९—सञ्ज्ञा पु० [वचस्, वचन] १ वचन । वाक्य । २. आज्ञा । आदेश [को०] । ३ सलाह । मन्त्रणा । परामर्श [को०] । ४ चिडियो की चहचह ध्वनि [को०] । ५ स्तुति । स्तवन [को०] । ६. (व्याकरण में) शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व आदि का बोध होता है । दे० 'वचन'—३ ।

वचक्नु^{१०}—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण [को०] ।

वचक्नु^{११}—वि० वक्वादी । वग्नु । बहुत बोलने या बड़बड़ानेवाला [को०] ।

वचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द । वाणी । वाक्य ।

पर्या०—इरा । सरस्वती । ब्राह्मी । भाषा । गिरा । गोदेवी । भारती । वरजा । वर्णमातृका । व्याहार । लपित ।

२ कही हुई बात । कथन । उक्ति ।

यौ०—वचनबद्ध । वचनगुप्ति ।

३ व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है ।

विशेष—हिंदी में दो ही वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन । पर कुछ और प्राचीन भाषाओं के समान संस्कृत में एक तीसरा वचन द्विवचन भी होता है ।

४. बोलना । बोलने की क्रिया । उच्चारण । वाचन [को०] । ५ शास्त्रों का उद्धृत अंश । जैसे शास्त्रवचन, श्रुतिवचन [को०] ।

६. आदेश [को०] । ७ मन्त्रणा । परामर्श [को०] । ८ धोपणा । प्रख्यापन [को०] । ९. शब्द का अर्थ या भाव [को०] । १०. सोठ झूठी [को०] ।

वचनकर—वि० [स०] १. दे० 'वचनकारी' । २. किसी नियम या आदेश का लेखक या उद्धोषक ।

वचनकारी—वि० [स० वचनकारिन्] आज्ञाकारी ।

वचनक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आज्ञापालन [को०] ।

वचनगुप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जैन धर्म के अनुसार वाणी का ऐसा समय जिससे वह अशुभ वृत्ति में प्रवृत्त न हो ।

वचनगोचर—वि० [स०] जो वाणी द्वारा व्यक्त हो । कथन द्वारा व्यक्त [को०] ।

वचनगौरव—सञ्ज्ञा पु० [स०] आज्ञा की गुरुता । आदेश के प्रति आदर भाव [को०] ।

वचनग्राही—वि० [स० वचनग्राहिन्] आज्ञा का पालन करनेवाला [को०] ।

वचनपटु—वि० [स०] बातचीत करने में कुशल [को०] ।

वचनबद्ध—वि० [स०] प्रतिज्ञाबद्ध । प्रतिश्रुत [को०] ।

वचनरचना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कथन, लेखन, भाषण की प्रभावशाली शब्दावली [को०] ।

वचनलक्षिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसका उपपत्ति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता है । जैसे,—अगन की छवि भूपन की रघुनाथ सराहि सबै सिहराते । आपनी प्रीति, मया उनकी प्रगटी प्रगटे सुख के हियरातें । काहे के आजु छिपावति हौ हमसो करि ये चतुराई की घातें । मैं निज कान सुनी जो कही यह कालिह सखी सो गोपाल की बातें ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

वचनविदग्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नायिकाओं का एक भेद । वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुर्गई से नायक की प्रीति का साधन करती हो । जैसे,—जब लौ घर को धनी आवैं घरैं तब लौ तो कहूँ चत दैवो करो । पदमाकर ये बछरा अपने बछरान के मग चरैंवो करो । ग्रह औरन के घर तैं हम सो तुम हूनी दुहावन लैवो करो । नित साँझ सकारे हमारी हहा । हरि गँयन को दुहि जैवो करो ।—पद्माकर (शब्द०) ।

वचनव्याक्ति—मञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी उक्त का ठीक ठीक आशय । २ भाष्य । विवृति । निर्वचन । व्याख्या [को०] ।

वचनसहाय—वि० [स०] सहायता का वचन देनेवाला [को०] ।

वचनसहाय^{१२}—सञ्ज्ञा पु० १. कथन द्वारा की गई सहायता । २ मित्र [को०] ।

वचनस्थित—वि० [स०] बात पर दृढ़ रहनेवाला [को०] ।

वचनावक्षेप—सञ्ज्ञा पु० [स०] अवक्षेप से भरे वचन का कथन [को०] ।

वचनीय—वि० [स०] १ कथनीय । २ निदनीय [को०] ।

वचनीय^{१३}—सञ्ज्ञा पु० [स०] निदा । शिकायत ।

वचनोपक्रम—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वाक्य का आरम्भ [को०] ।

वचर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुक्कुट । २ शठ ।

वचलु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दुश्मन । शत्रु । २. दुष्ट व्यक्ति [को०] ।

वचस^{१४}—वि० [उ०] १ कुशल । चतुर । २. वाचाल [को०] ।

वचसांपति—सञ्ज्ञा पु० [स० वचसांपति] बृहस्पति [को०] ।

वचसा—अव्य० [सं०] वचन द्वारा । कथन द्वारा [को०] ।

वचस्कर—वि० [सं०] १ आज्ञाकारी । २ बोलनेवाला [को०] ।

वचस्वी—वि० [सं० वचस्विन्] बोलने में पटु । प्रवक्ता ।

वचा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वच नाम की श्रोपधि । विशेष दे० 'वच' । २ सारिका पक्षी । मैना ।

वचार—सञ्ज्ञा पुं० [?] दे० 'विचार' । उ०—वाँहे सुदरि बहरखा,
चासु चुडस वचार । मनुहरि कटि बल भेसना, पग भाँभर
भरणकार ।—ढोला०, दू० ४८१ ।

वचोग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कर्ण । कान [को०] ।

वचोहर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दूत । सदेशवाहक [को०] ।

वच्छु^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वच्छस्, प्रा० वच्छ] उर । छाती ।

वच्छ^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] दे० 'वत्स' ।

वजग—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वजग] दे० 'वजगा' [को०] ।

वजगा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वजगह्] १ महुक । मेढक । २ गृहगोवा ।
छिपकिली । ३ गिरांगट । कृकलास [को०] ।

वजन—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वजन] १ भार । बोझ । २ तौल । ३
तौलने की क्रिया । ४ मान । मर्यादा । गौरव ।

क्रि० प्र०—करना ।—रखना ।

यौ०—वजनदार = दे० 'वजनी' ।

वजनी—वि० [अ० वजन + ई] १ जिसका बहुत बोझ हो । भारी ।
२ जिसका कुछ असर हो । मानने योग्य ।

वजर^१—सञ्ज्ञा, पुं० [सं० वज्र] दे० 'वज्र' । उ०—एक अनेकाँ
सुँ हिचै, छाती वजर कपाट ।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ५ ।

यौ०—वजरकपाट = वज्र के समान दरवाजा ।

वजर^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] भय । डर । खौफ [को०] ।

वजह—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ कारण । हेतु । २ प्रकृति । ३ तत्व ।
४ मुखाकृति । चेहरा [को०] ।

वजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वज्र] १ सघटन । वनावट । रचना । २
चालढाल । सजघज । ३ रूप । आकृति । ४ दशा । अवस्था ।
५ रीति । प्रणाली । तौर तरीका । उ०—हुनकी रहन सहन
वजा अदाज और कार्या मे.. ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ०
१७७ । ६ मुजरा । मिनहा । कटती । ७ जनना । प्रसव [को०]
८ रखना [को०] । ९ सदैव एक समान रहना और यथायोग्य
व्यवहार करना । [को०] ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वजादार—वि० [अ० वजा + फा० दार] १ जिसकी वनावट या
गठन आदि बहुत अच्छी हो । तरहदार । दर्शनीय । २ अपनी
रीतिनीति पर कायम रहनेवाला । जो अपनी वजा का पाबंद
हो [को०] ।

वजादारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वजा + फा० दारी] १ कपड़े वगैरह
पहनने का सुंदर ढंग । फैशन । २ सजावट का उत्तम ढंग ।
३ किसी प्रकार की मर्यादा आदि का भली भाँति निर्वाह ।
३ उ०—प्रायः स्त्रियों के नाज व अदाज के कारण नजाकत

वजादारी से रहित न हो प्रचलित थी ।—प्रेमघन०, भा० २,
पृ० ५ ।

वजारत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वजारत] १ मन्त्री, वजीर या अमात्य का
पद । वजीरी । २ मन्त्री या अमात्य का कार्य । ३, अमात्य का
कार्यालय ।

वजाहत^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुदरता । भव्यता । चेहरे का रोम ।
उ०—कहते हैं जो था कोई मौदाग^२ एक । वजाहत मन पाक
सीरत में नेक ।—दक्खिनी०, पृ० ७ । २ प्रतिष्ठा । महत्व ।
बडप्पन ।

वजाहत^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वजाहत] १, स्पष्टता । विवरण ।
२ विस्तार । फैलाव [को०] ।

वजीफा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वज्र + फा०] १ वृत्ति । उ०—याद करना हर
घडी तुम यार का । हं वजीफा मुझ दिले दीमा^२ या ।—कविता
को०, भा० ४, पृ० ६ । २ वह वृत्ति या आर्थिक महायत्ना जो
विद्वाना, छात्रों, सन्यासियों, दीनों या बिगड़े हुए रईसा आदि
को दी जाती है । ३ निवृत्त वेतन । पेनशन [को०] । ४ वह
जप या पाठ जो नियमपूर्वक प्रतिदिन किया जाता है ।
(मुसलमान) । उ०—प्रातः काल नमाज वजीफा पढ़िके चढ़
पट ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २० ।

क्रि० प्र०—पढ़ना ।

वजीफादार—वि० [अ० वजीफा + फा० दार] वजीफा पानेवाला ।

वजीर—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वजीर] १, वह जो वादशाह का रियासत के
प्रबंध में सलाह या सहायता दे । मन्त्री । अमात्य । दीवान ।
२ शतरंज को एक गोटी ।

विशेष—यह वादशाह से छोटी और दीप सब माहरो से बड़ी
होती है । यह गोटी आग, पाछे, दाहिने, बाएँ और तिरछे
जिबरे चाहे, उबर और जितने घर चाहे, उतने घर चल
सकती है ।

यौ०—वजीरे आजम = प्रधान मन्त्री । वजीरे रसाफ = न्यायमन्त्री ।
वजीरे खारिजा = परराष्ट्रमन्त्री, वजीरे गिजा = खानमन्त्री ।
वजीरे जग = युद्धमन्त्री । वजीरे तालीम = शिक्षामन्त्री । वजीरे
दाखिला = गृहमन्त्री । वजीरे माल = अर्थमन्त्री ।

वजीरा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वजीरी] वजीर का काम या पद ।

वजीरी^२—सञ्ज्ञा पुं० १ सरहद्दी पठानों का एक वर्ग या कबीला ।
२ घोड़ों की एक जाति जो यलूचिस्तान में पाई जाती है ।

विशेष—इस जाति के घोड़े बड़े परिश्रमी और दौड़ने में बहुत
तेज होते हैं । इनके कंधे ऊँचे और पट्ट चौड़े होते हैं ।

वजीह—वि० [अ०] दृढ़ । मजबूत [को०] ।

वजीहा—वि० [अ० वजीह] १ सुंदर । भव्य । रोबदार । २ सामान्य ।
विशिष्ट [को०] ।

वजू—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वजू] नमाज पढ़ने के पूर्व शौच के लिये हाथ पाँव
आदि धोना । उ०—का भो वजू व मज्जन कीन्हे का मसजिद
सिर नाएँ । हृदया कपट निमाज गुजारै का भो मक्का जाएँ ।
कबीर (शब्द०) ।

विशेष—मुसलमानों का नियम है कि नमाज पढ़ने के पूर्व वे पहले तीन बार हाथ धोते, फिर तीन बार कुल्ली करके नयनों में पानी देते हैं। फिर मुँह धोकर कुहनियों तक हाथ धोते हैं, और सिर पर पानी लगे हाथ फेरते हैं। अंत में पाँव धोते हैं। इसी आचार का नाम वज्र है।

क्रि० प्र०—करना।

वज्र—सज्ञा पुं० [अ०] १ सत्ता। स्थिति। अस्तित्व। उ०—नाही खबर वज्र की मैं फकीर दिवाना।—मल्लूक० बाना, पृ० ७। २ शरीर। देह। उ०—वज्र खजाना अलह का, जर अदर अरि बाहि। रज्जब पीर खजानची, दसत न सकई बाहि।—रज्जब०, पृ० १८। ३ सृष्टि। ४ प्रकट या घटित होना। अभिव्यक्ति।

मुहा०—वज्र पकड़ना = प्रकट होना। अस्तित्व में आना। वज्र में आना = उत्पन्न होना। प्रकट होना। वज्र में लाना = उत्पन्न करना।

वज्रहात—सज्ञा स्त्री० [अ० वज्रह का बहु० रूप] कारणों का समूह।

विशेष—यह बहुवचन शब्द है, और इसका प्रयोग भी सदा बहुवचन में ही होता है।

वजेकता—सज्ञा पुं० [अ० वजए + कत्अ] वनावट। तर्ज। ढग। उ०—ओर फकीराना मकान होने की शहादत अपनी वजेकता और तर्जें तामीर से वजवाने हाल खुद ही दे रहा है।—सुदर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० ५३।

वजेदारी—सज्ञा स्त्री० [फा० वज्अदारी] दे० 'वजादारी'। उ०—पंडित पुरुषोत्तमदास ने बड़ी वजेदारी से कहा।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १७०।

वजोग—सज्ञा पुं० [स० वियोग] दे० 'वियोग'। उ०—किसन वजोग चारखा कारण गलियो जुजठल राव गत।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ११२।

वजित्त—सज्ञा, पुं० [स० वादित्त] वादित्त। बाजा। उ०—वजित्त नृधोष अरि धोष पर, छोरि पग दिखे मु ह्य।—पृ० रा०, २६।१४।

वज्र—सज्ञा पुं० [अ०] १ आनदातिरेक में होनेवाली आत्मविस्मृति। २. काव्य या संगीत की रसानुभूतिजन्य तन्मयता। ३ आनंद की स्थिति में आपा भूला हुआ व्यक्ति [को०]।

वज्र—सज्ञा पुं० [म०] १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है।

विशेष—इसकी उत्पत्ति की कथा ब्राह्मण ग्रंथों और पुराणों में लिखी हुई है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि दधीचि ऋषि की हड्डी स इंद्र ने राक्षसों का ध्वंस किया। ऐतरेय ब्राह्मण में इसका इस प्रकार विवरण है। दधीचि जब तक जीते थे, तब तक असुर उन्हें देखकर भाग जाते थे पर जब वे मर गए, तब असुरों ने उत्पात मचाना आरंभ किया। इंद्र दधीचि ऋषि की खोज में पुष्कर गए। वहाँ पता चला कि दधीचि का देहावसान हो गया। इसपर इंद्र उनकी हड्डी ढूँढने लगे। पुष्कर क्षेत्र में

सिर की हड्डी मिली। उसी का वज्र बनाकर इंद्र ने असुरों का महार किया। भागवत में लिखा है कि इंद्र ने वृषासुर का वध करने के लिये दधीचि की हड्डी से वज्र बनवाया था। मत्स्य-पुराण के अनुसार जब विश्वकर्मा ने सूर्य को भ्रमयत्र (खराद) पर चढ़ाकर खरादा था, तब छिनकर जो तेज निकला था, उसी से विष्णु का चक्र, रुद्र का शून और इंद्र का वज्र बना था। वामनपुराण में लिखा है कि इंद्र जब दिति के गर्भ में घुस गए थे, तब वहाँ उन्हें बालक के पास ही एक मासर्पिड मिला था। इंद्र ने जब उसे हाथ में लेकर दबाया, तब वह लवा हो गया और उसमें सौ गाँठें दिखाई पड़ी। वही पीछे कठिन होकर वज्र बन गया। इसी प्रकार और और पुराणों में भी भिन्न भिन्न कथाएँ हैं।

पर्या०—ह्लादिनी। कुलिश। भिदुर। पवि। शतकोटि। स्वर। शव। दभोलि। अशनि। स्वरुम्। जभारि। शतार। शतधार। आपोत्र। अक्षज। गिरकटक। गो। अत्रोत्य। दभ, इत्यादि। वदिक निघट्ट के अनुसार—विद्युत्। नोम। होत। नम। पवि। सुक्। वृक। वच। अर्क। कुत्स। कुलिश। तुज। तिग्म। मेनि। स्वधिति। सायक परशु।

२ विद्युत्। बिजली।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

मुहा०—वज्र पड़े = दैव से भारी दड मिले। सत्यनाश हो। (स्त्रियाँ)।

३ हीरा। उ०—मुझे बड़ी दयापूर्वक एक अमोल वज्र की अँगूठी केवल स्मरणार्थ दे गए थे।—श्यामा०, पृ० १२७। ४ एक प्रकार का लोहा। फीलाद।

विशेष—वैद्यक के ग्रंथों में वज्रलौह के अनेक भेद कहे गए हैं। यथा—नीलपिंड, अरुणाभ, मोरक, नागकेशर, तित्तिराग, स्वर्णवज्र, शैवालवज्र, शेषावज्र, रोहिणी, काकोल, ग्रथिवज्रक, और मदन।

५ भाला। बरछा। उ०—हरन रुक्मिणी होत है, दुहँ और भई भीर। अति अघात, कछु नाहिन सूझन, वज्र, चलहि ज्यो नीर। सूर० (शब्द०)। ६ ज्योतिष में २२ व्यतीपात योगों में से एक। ७ वास्तुविद्या के अनुसार वह स्तंभ (खम्भा) जिसका मध्य भाग अष्टकोण हो। ८ विष्णु के चरण का एक चिह्न। ९ अन्नक। १० कोकिलाक्ष वृत्त। ११ श्वेत कुश। १२ काँजी। १३ वज्रपुष्प। १४ घात्री। १५ शहर का पेड़। सेहुँड। १६ कृष्ण के एक प्रपौत्र जो अनिरुद्ध के पुत्र थे। १७ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। १८ बौद्ध मत में चक्राकार चिह्न। १९ बालक। शिशु (को०)। २०. आसन की एक मुद्रा या स्थिति। बैठने का एक प्रकार (को०)। २१ एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)। २२ रत्न, मणि आदि छेदने का एक औजार (को०)। २३ वज्रवत् कठोर एवं घातक अस्त्र (को०)। २४ कठोर भाषा। वज्र की तरह कठोर भाषा (को०)। २५ अकलवीर नाम का पौधा।

वज्र—वि० १. वज्र के समान कठिन। बहुत कड़ा या मजबूत। अत्यन्त

हृद और पुण्ड । जैसे,—यह मसाला जब मुखेगा, तब वज्र हो जायगा । २ घोर । दारुण । भीषण । उ०—वज्र अग्नि विरहिनि हिय जारा । सुलगि सुलगि दहि कै भइ छारा ।—जायसी (शब्द०) । ३ जिसमें अनी या शल्य हो । अनीदार । काँटेदार ।

वज्रककट—सञ्ज्ञा पु० [म० वज्रककट] हनुमान का एक नाम ।

वज्रकटक—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रकटक] स्तुही वृक्ष । थूहर । सेहुंड । २ कोकिलाक्ष वृक्ष ।

वज्रकटशात्मली—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रकटशात्मली] भागवत पुराण के अनुसार अट्टाईम नरको में से एक नरक का नाम ।

वज्रकन्द—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रकन्द] १. जगली सूरन या जिमीकद । २ शकरकद । कदा । ३. ताल के वृक्ष का फूल ।

वज्रक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वज्रक्षार । २. फालत ज्योतिष के अनुसार सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक, जो सूर्य से तेईसवा नक्षत्र हाता है । ३ एक प्रकार का तेल (को०) । ४ हीरा (को०) ।

वज्रकपाली—सञ्ज्ञा पु० [म० वज्रकपालिन्] बौद्धों की महायान शाखा के अनुसार एक बुद्ध का नाम ।

वज्रकर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] द० 'वज्रकद' (को०) ।

वज्रकपण—सञ्ज्ञा पु० [स०] इद्र (को०) ।

वज्रकवच—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ समाधि का एक भेद । एक प्रकार का समाधि । २ वह कवच जिस काटा न जा सके । वज्र के समान दुर्भेद्य कवच (को०) ।

वज्रकारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख नामक सुगन्धित द्रव्य ।

वज्रकालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बुद्ध की माता मायादेवी का नाम ।

वज्रकाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जैना की एक शक्ति (को०) ।

वज्रकीट—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पत्थर या काठ को काटकर उसमें छेद कर देता है ।

विशेष—कहते हैं, गडक नदी में इन कीटों के द्वारा काटी हुई शिला ही शालग्राम की बटिया बन जाती है ।

वज्रकील—सञ्ज्ञा पु० [स०] सौदामिनी । तडिह । विजली (को०) ।

वज्रकुच—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि ।

वज्रकूट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक पर्वत का नाम । २ हिमालय की चोटी पर का एक प्राचीन नगर ।

वज्रकेतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] मार्कण्डेयपुराण के अनुसार एक राजस जो नरक का राजा था । नरकामुर ।

वज्रक्षार—सञ्ज्ञा पु० [म०] वैद्यक में एक रसायन योग जिसका व्यवहार गुल्म, शूल, अजीर्ण, शोथ तथा मदाग्नि आदि उदर रोगों में होता है ।

विशेष—संभर, सैधव, काच और सोवर्चल लवण तथा जवाखार और सज्जी सम भाग लेकर चूर्ण करते हैं, और उसको थूहर के दूध में भिगोकर तीन दिन तक छाया में सुखाते हैं । इसके उपरांत उस चूर्ण का आक (मदार) के पत्तों में लपेटकर

एक घड़े में गजपुट द्वार फूँकते हैं । जत्र वह भस्म हो जाता है, तब उसमें सोठ, मिर्च पीपल, त्रिकला, अजगयन, जीरा और चित्रक (चीना) का चूर्ण उतना ही मिलाकर खरन कर लेते हैं और दो टक मात्रा में सेवन कराते हैं । इसका अनुपान उष्ण जल, गोमूत्र, घी या काँजी है ।

वज्रगर्भ—सञ्ज्ञा पु० [स०] बौद्धों की महायान शाखा के अनुसार एक बोधिमत्त्व का नाम ।

वज्रगोप—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीरवहूटी नाम का कीड़ा । इद्रगोप ।

वज्रघात—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वज्र की चोट । २ वह चोट जो वज्र की चोट के समान भयकर हो (को०) ।

वज्रघोष—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विजली की कड़क । २ विजली की कड़क के समान भीषण ध्वनि (को०) ।

वज्रचक्षु—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रचक्षु] गृध्र (को०) ।

वज्रचर्मा—सञ्ज्ञा पु० [म० वज्रचर्मन्] गैंडा ।

वज्रजित्—सञ्ज्ञा पु० [म०] गरुड का एक नाम (को०) ।

वज्रज्वाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ विरोचन दैत्य की पत्नी का नाम । २ कुम्भकर्ण की पत्नी । ३ विजली जो अग्नि (को०) ।

वज्रटीक—सञ्ज्ञा पु० [म०] वज्रकपाली बुद्ध का एक नाम (को०) ।

वज्रडाकिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महायान शाखा के तांत्रिक बौद्धों की उपास्य डाकिनियों का एक वर्ग ।

विशेष—इस वर्ग के अंतर्गत ये आठ डाकिनियाँ मानी जाती हैं,—लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा और गद्या । इनकी पूजा तिब्बत में होती है ।

वज्रतर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार का जोड़ने या पलस्तर करने का मसाला । वज्रनेप (को०) ।

वज्रतुंड—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रतुण्ड] १ गरुड । २ गरुड । १ गीव । ४ मशक । मच्छिड । ५ थूहर । सेहुंड ।

वज्रतुल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] नीलम (को०) ।

वज्रदंड—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रदण्ड] एक अस्त्र का नाम जिसे इद्र ने अर्जुन को प्रदान किया था ।

वज्रदत्त—सञ्ज्ञा पु० [स० वज्रदन्त] १ चूहा । २ सूअर ।

वज्रदती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वज्रदन्ती] एक प्रकार का पेड़ या पौधा ।

विशेष—इसकी दंतुवन अच्छी होती है और वैद्यक में इसकी जड़ वमनकारक कही गई है ।

वज्रदण्ड—देश० पु० [स०] १ इद्रगोप नाम का कीड़ा । वीरवहूटी । २ भागवत के अनुसार एक अमुर का नाम ।

वज्रदक्षिण—सञ्ज्ञा पु० [स०] इद्र का एक नाम (को०) ।

वज्रदर्शन—सञ्ज्ञा पु० [स०] चूहा (को०) ।

वज्रदेह—वि० [स०] वज्र के समान कठोर शरीरवाला (को०) ।

वज्रदेहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम ।

वज्रद्रुम—सञ्ज्ञा पु० [स०] थूहर का वृक्ष । स्तुही । सेहुंड ।

वज्रधर—मन्त्र पु० [सं०] १ इन्द्र । २ वीरों की महायान शाखा के अनुयायी आदि बुद्ध ।

विशेष—तिब्बत के तान्त्रिक बौद्ध मतानुसार ये प्रधान बुद्ध, प्रवान् जिन, गुह्यपति तथा मन्त्र तन्त्रगतों के प्रवान् मन्त्री आदि अर्न्त श्रीर वज्रसत्त्व हैं । अपदेवताओं ने उनसे हार मानकर प्रतिज्ञा की थी कि बौद्ध धर्म के विरुद्ध कभी प्रयत्न न करेंगे ।

३ उल्लू । उल्लूक ।

वज्रधातुशिवरी—सन्ना स्त्री० [सं०] १ एक देवी जिगकी उपासना तान्त्रिक करते हैं । २ वैरोचन की पत्नी [को०] ।

वज्रधार—वि० [सं०] जिसका धार हीरे की तरह कठिन होता है [को०] ।

वज्रधारण—मन्त्र पु० [सं०] नकली सोना । कृत्रिम कोना [को०] ।

वज्रनख—सन्ना पु० [सं०] नृमिह ।

वज्रनाभ—सन्ना पु० [सं०] १ स्कन्द के एक अनुचर का नाम । २. एक दानवराज । ३. राजा उक्थ के पुत्र का नाम । ४ विष्णु के चक्र का नाम को [को०] ।

वज्रनिर्घोष—मन्त्र पु० [सं०] दे० 'वज्रघोष' ।

वज्रपरीक्षा—सन्ना स्त्री० [सं०] हीर की परख [को०] ।

वज्रपाणि—सन्ना पु० [सं०] १ इन्द्र । २ ब्राह्मण । ३ बौद्धशास्त्रानुसार एक प्रकार की देवयोनि । ४. एक बोधिसत्त्व । ध्यानी बोधिसत्त्व । ५. उल्लूक । उल्लू [को०] ।

वज्रपात—सन्ना पु० [सं०] १ बिजली का गिरना । २ भारी विपत्ति का आना [को०] ।

वज्रपुष्प—मन्त्र पु० [सं०] १ तिल का फूल । २ एक विशिष्ट गुणवान् कीमती पुष्प [को०] ।

वज्रपुष्पा—सन्ना स्त्री० [सं०] शतपुष्पा [को०] ।

यज्रप्रभ—सन्ना पु० [सं०] एक विद्याधर का नाम ।

वज्रबाहु—सन्ना पु० [सं०] १ इन्द्र । २. रुद्र । ३. अग्नि ।

वज्रबीजक—सन्ना पु० [सं०] लना [को०] ।

वज्रभृकुटी—सन्ना स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार तन्त्र की एक देवी जिसकी उपासना तान्त्रिक करते हैं [को०] ।

वज्रभृत्—सन्ना पु० [सं०] इन्द्र [को०] ।

वज्रभैरव—सन्ना पु० [सं०] महायान शाखा के बौद्धों के एक देवता, जिन्हें भूतान में 'यमातक शिव' कहते हैं । इनके अनेक मुख और हाथ माने जाते हैं ।

वज्रमणि—सन्ना पु० [सं०] हीरा ।

वज्रमय—वि० [सं०] १ कठोर । कठिन । २ क्रूर हृदय । कठिन हृदयवाला [को०] ।

वज्रमति—सन्ना पु० [सं०] एक बोधिसत्त्व [को०] ।

वज्रमुख—सन्ना पु० [सं०] १ एक प्रकार का कीड़ा । वज्रकीट । २ एक प्रकार की नमाधि [को०] ।

वज्रमुष्टि—सन्ना पु० [सं०] १. इन्द्र । २. एक राक्षस का नाम । ३. जगली सूत । ४. घोर । क्षत्रिय । योद्धा [को०] । ५. एक अस्त्र

(को०) । ६ वज्र के समान हाथ की चैंची हुई मुष्टि (को०) । ७ तीर चलाने के समय हाथ की मुद्रा (को०) ।

वज्रमूली—सन्ना स्त्री० [सं०] मापण्णी ।

वज्रयान—सन्ना पु० [सं०, प्रा० वज्रजाण] वह बौद्ध मत जिसपर तन्त्र का बहुत अधिक प्रभाव था । उ०—उस काल की रचना के नमूने बौद्धों की वज्रयान शाखा के सिद्धों की कृतियों के बीच मिले हैं ।—इतिहास, पृ० ६ ।

वज्रयोगिनी—सन्ना स्त्री० [सं०] तन्त्रानुसार एक देवी । इसे वरदयोगिनी भी कहते हैं ।

वज्ररथ—सन्ना पु० [सं०] क्षत्रिय ।

वज्ररत्न—सन्ना पु० [सं०] सूकर [को०] ।

वज्रलिपि—मन्त्र स्त्री० [सं०] लिखने की एक विशेष रीति [को०] ।

वज्रलेप—सन्ना पु० [सं०] एक मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि अत्यन्त दृढ़ और मजबूत हो जाती है ।

विशेष—यह दो तरह से बनता है । एक में तो तेंदू और कैय के कच्चे फल, सेमल के फूल, शल्लकी (मलई) के बीज, धन्वन की छाल और वक् को लेकर एक द्रोण पानी में उबालते हैं । जब जलकर आठवाँ भाग रह जाता है, तब उसे उतारकर उसमें गन्धविरोजा, बोल, गुगल, भिलावाँ, कुदुरु, गोद, राल, प्रलसी और वेल का गुदा घोटकर मिलाते हैं । दूसरा मसाला इस प्रकार है—लाख, कुदुरु, गोद, वेल का गुदा, गोंगरन का फल, तेंदू का फल, महुए का फल, मजीठ, राल, बोल और आँवला इन सबको द्रोण भर पानी में उबालते हैं । जब अष्टमांश रह जाता है, तब काम में लाते हैं ।

वज्रलोहक—सन्ना पु० [सं०] चुम्बक [को०] ।

वज्रवध—सन्ना पु० [सं०] १ अशनिपात जन्य मृत्यु । वज्रपात से हुई मौत । २ वज्र के समान कठोर आघात [को०] ।

वज्रचल्ली—सन्ना स्त्री० [सं०] अस्थिसहार नाम की लता [को०] ।

वज्रवारक—सन्ना पु० [सं०] पुराणानुसार जमिनि, सुमत्त, वंशपायन, पुलस्त्य, और पुलह नामक पाँच ऋषि, जिनका नाम लेने से वज्रपात का भय नहीं रहता ।

वज्रवाराही—सन्ना स्त्री० [सं०] १ बौद्धों की एक देवी का नाम ।

पर्या०—मारीची । त्रिमुखा । वज्रकालिका । विकटा । गौरी । २ बुद्ध की माता मायादेवी का नाम ।

वज्रविष्कम्भ—सन्ना पु० [सं० वज्रवेष्कम्भ] गरुड के एक पुत्र का नाम ।

वज्रवीर—सन्ना पु० [सं०] महाकाल रुद्र का एक नाम ।

वज्रवृक्ष—सन्ना पु० [सं०] नेहूँड [को०] ।

वज्रवेग—सन्ना पु० [सं०] १ एक राक्षस का नाम । २ एक विद्याधर का नाम ।

वज्रव्यूह—सन्ना पु० [सं०] एक प्रकार की सेना की रचना, जो दुवारे खड्ग के आकार में स्थित की जाती थी ।

वज्रशाल्य—सन्ना पु० [सं०] साही नाम का वन्य जंतु । गन्धर्व [को०] ।

वज्रशाखा—संज्ञा स्त्री० [म०] जैन मत के एक संप्रदाय का नाम जिसे वज्रस्वामी न चलाया था ।

वज्रशृङ्खला—संज्ञा स्त्री० [स० वज्रशृङ्खला] जैन मतानुसार सोलह महाविद्याओं में से एक ।

वज्रसंघात—संज्ञा पुं० [स० वज्रसङ्घात] १ भीमसेन । २ पत्थर जोड़ने का एक मसाला जिसमें आठ भाग सीसा, दो भाग कांसा और एक भाग पीतल होता था । इससे पत्थर की जोड़ाई की जाती थी ।

वज्रसहस्र—संज्ञा पुं० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम ।

वज्रसत्त्व—संज्ञा पुं० [स०] एक ध्यानी बुद्ध का नाम ।

वज्रसमाधि—संज्ञा स्त्री० [स०] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि ।

वज्रसार^१—संज्ञा पुं० [स०] हीरा ।

वज्रसार^२—वि० अत्यंत कठोर [को०] ।

वज्रसूची—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह सुई जिसकी नोक पर हीरा लगा हो । २ एक उपनिषद् । ३ शश्वधोपप्रणीत एक ग्रन्थ [को०] ।

वज्रमय—संज्ञा पुं० [स०] एक बुद्ध का नाम ।

वज्रसेन—संज्ञा पुं० [म०] एक बौधिसत्त्व का नाम [को०] ।

वज्रहस्त—संज्ञा पुं० [स०] इन्द्र । २ अग्नि [को०] । ३ मरुत [को०] । ४ शिव [को०] ।

वज्रहृदय—वि० [स०] कठोर । क्रूर ।

वज्राङ्क—वि० [स० वज्राङ्क] हीरा जड़ा हुआ [को०] ।

वज्राग—संज्ञा पुं० [स० वज्राङ्ग] १ सर्प । साँप । २. हनुमान । उ०—जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव । वज्राग तेज धन बना पवन को ।—अनामिका, पृ० १५३ ।

वज्राङ्गी—संज्ञा स्त्री० [स० वज्राङ्गी] १ गवेयुक्त । कौडिल्ला । २ हड-जोड़ नाम की लता जो चोट लगने पर लगाई जाती है ।

वज्रावुजा—संज्ञा स्त्री० [स० वज्राम्बुजा] बौद्धों की एक देवी का नाम । [को०]

वज्राशु—संज्ञा पुं० [स०] वृष्ण के एक पुत्र का नाम [को०] ।

वज्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्तुही । ध्वज । २ गुडुच । ३ दुर्गा ।

वज्राकर—वि० पुं० [स०] हीरे की खान [को०] ।

वज्राकार—वि० [स०] १ वज्र के समान । वज्र जैसा । २ वज्र का आकार का [को०] ।

वज्राक्षी—संज्ञा स्त्री० [स०] सेहूँड नाम का कँटीला पौधा [को०] ।

वज्राख्य—संज्ञा पुं० [म०] एक रत्न । एक मूल्यवान् पत्थर । [को०] ।

वज्राग—संज्ञा स्त्री० [स० वज्राग्नि] वज्र की आग । उ०—राठौड़ा उखा वार रा जोस पराक्रम जोर । की बडवाग वज्राग की मिधन आगन सोर—रा० ६० । ७८ ।

वज्राग्नि—संज्ञा स्त्री० [म० वज्राग्नि] वज्र की आग । विजली की आग । उ०—परि है वज्राग्नि ताकै ऊपर अचानचक्र घुरि उडि जाइ कहूँ ठीहर न पाइ है ।—सुदरन, भा० २, पृ० ५०० ।

वज्राघात—संज्ञा पुं० [म०] वज्र की चोट । विजली का आघात [को०] ।

वज्राचार्य—संज्ञा पुं० [स०] नेपाली बौद्धों के अनुसार तान्त्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत में लामा कहते हैं ।

विशेष—यह बौद्ध आचार्य गृहस्थ होता है और अपने पुत्र कलन के साथ विहार में रह सकता है । नेपाल और तिब्बत में ऐसे आचार्यों का बड़ा मान है ।

वज्राभ—संज्ञा पुं० [स०] दुग्ध पापाण । स्फटिक मृत्तिका । एक मूल्यवान् पत्थर [को०] ।

वज्राभिषेक—संज्ञा पुं० [म०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अनुष्ठान जिसमें तीन दिन तक जी का मत्त पीकर रहते थे ।

वज्राभ्र—संज्ञा [स०] एक प्रकार का अभ्रक जो कानि रंग का होता है ।

वज्रायुध—संज्ञा पुं० [स०] इन्द्र ।

वज्रावर्त—संज्ञा पुं० [स०] एक मेघ का नाम । उ०—नुनन मेघवर्त सजि सैन लै आए । जलवर्त, वाग्वर्त, पवनवत, वज्रावर्त, आगिवर्तक जलद सग लाए ।—मूर । (शन्द०) ।

वज्राशनि—संज्ञा पुं० [म०] इन्द्रात्मा । वज्र [को०] ।

वज्रासन—संज्ञा पुं० [म०] १ हठ योग के चारों ओर आसनो में स एक जिसमें गुदा और लिंग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एड़ी से दबाकर उनके ऊपर दाहिना पैर रखकर पालथी लगाकर बैठते हैं । २ वह शिला जिसपर बैठकर बुद्धदेव ने बुद्धत्व प्राप्त किया था । यह गया जी में बौद्धिद्रुम के नीचे थी ।

वज्रास्थि—संज्ञा स्त्री० [स०] सेहूँड [को०] ।

वज्रास्थिशृङ्खला—संज्ञा स्त्री० [स० वज्रस्थिशृङ्खला] तालमखाना । कोकिलान्त [को०] ।

वज्रजित्—संज्ञा पुं० [स०] गरुड ।

वज्री^१—संज्ञा पुं० [स० वज्रिन्] १ इन्द्र । २ एक प्रकार की ईंट । ३ वह जो वज्र से युक्त हो [को०] । ४ ऊँखू [को०] । ५ बौद्ध भिक्षु [को०] ।

वज्री^२—संज्ञा स्त्री० १ ध्वज । स्तुही । २ तिघारा । नरमेज ।

वज्रश्वरी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ बौद्धों की एक देवी । २ एक तान्त्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहनिका भी कहते हैं ।

विशेष—इसमें वज्र बनाकर मन्त्रों द्वारा अभिषेक करते हैं और उसपर सोने से मन्त्र लिखते हैं । इसके उपरांत उस वज्र को किसी जितेंद्रिय पुरुष के हाथ में दे देते हैं और लाख बार मन्त्र जाप करके वज्रकुंड में हवन करते हैं । इस प्रयोग से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है ।

वज्रोद्ग—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की समाधि [को०] ।

वज्रोली—संज्ञा स्त्री० [स० या हि० वज्र + ओली] हठयोग की एक मुद्रा का नाम ।

वट—संज्ञा पुं० [स०] १ वरगद का पेड़ । उ०—लेकर वट का दूध जटा प्रभु ने रची, अब सुमन के लिये न कुछ आशा बची । साकेत, पृ० १२६ । २ गोली वस्तु । गेंद । गोल [को०] । ३. एक खाद्य । बड़ा या पकीटा [को०] । ४ साम्य । एकरूपता

(को०) । ५ शृङ्खला । लडी या डोरी (को०) । ६ एक पत्ती (को०) । ७ कौडो । कपर्दक (को०) । ८ गवक (को०) । ९. शून्य । सिफर (को०) । १०. शतरज का प्यादा (को०) ।
वटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बड़ी टिकिया या गोला । बट्टा । २ बड़ा । पकौड़ा । ३ एक तौल जो आठ माशे की होती है और सोना तौलने के काम में आती था । इसे लुद्रम, प्रक्षर और कोक भी कहते थे । यह १० गुजा या शोण के बराबर कहीं गई है,— १० गुजा = १ माशा, ४ माशा = १ शोण, २ शोण = १ वटक ।
वटका—सञ्ज्ञा पु० [देश०] टुकड़ा । उ०—दोह घटका खिरै वट वटका दुवै, आध जगनाथ राजाण अटका हुवै ।—रघु० ८०, पृ० १८४ ।
वटच्छद—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्वेत वर्वरा । सफेद बनतुलसी ।
वटपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वटच्छद' २ वट का पत्ता (को०) ।
वटपत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वृत्तमल्लिका नामक फूल का पौधा ।
वटपत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पाखानभेद । पथरफोड ।
वटर—वि० [स०] दुष्ट । खल । शठ (को०) ।
वटर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ चोर । २ वटेर नामक पत्ती । ३ पगडी । ४ विस्तर । चटाई । ५ मयानी । ६ एक सुगन्धित घास (को०) । ७ मुर्गा (को०) ।
वटवासी—सञ्ज्ञा पु० [म० वटवासिन्] यक्ष (को०) ।
वटसावित्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं । दे० 'वरसायत' ।
वटाकर, वटारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] रज्जु । रस्सी ।
वटावीक—सञ्ज्ञा पु० [स०] छद्मतापस । दाभिक (को०) ।
वटाश्रय—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुवेर का एक नाम (को०) ।
वटि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कृमि । कीट । २. चिउंटी । चीटी । ३ दे० 'वटिका' (को०) ।
वटिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] शतरज का प्यादा या मोहरा (को०) ।
वटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ गोली । बटी । २ शतरज का मोहरा । वटिक (को०) । ३ एक खाद्य पदार्थ जो चावल और उडद के मिश्रण से बनता है (को०) ।
वटी—वि० [स० वटिन्] जिसमें डोरी या सिकड़ी लगी हो । वर्तुल या गोलाकार (को०) ।
वटी—सञ्ज्ञा पु० शतरज की गोटी । वटिक (को०) ।
वटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ गोली या टिकिया । बटी । २ रस्सी । सिकड़ी । रज्जु (को०) ।
वट्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बालक । २ ब्रह्मचारी । माणवक ।
वट्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बालक । २ माणवक । ब्रह्मचारी । ३ एक भैरव । बट्टकभैरव । ४ मूर्ख । अज्ञ (लात्त०) ।
वट्टुरी वि० [स० वट्टुरिन्] चौड़ा । विस्तृत । फैलावदार (को०) ।
वटेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स० वटेश्वर] शिव । महादेव । उ०—पुज्जि वटेश्वर मल्ल सौं परी सरसव जाय ।—प० रासो, पृ० ६१ ।

वटोदका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार एक नदी जो पवित्र मानी जाती है ।
वटोरना—क्रि० स० [म० वर्तुल + करण] दे० 'बटोरना' ।
 उ०—परम ब्रह्म परमस्थ बुज्झइ, वित्तै वटोरइ कित्ति ।—कीर्ति०, पृ० ८ ।
वट्ट—सञ्ज्ञा पु० [स० वर्त्म, प्रा० वट्ट] बाट । मार्ग । रास्ता ।
वट्ट—सञ्ज्ञा पु० [देश०] १ प्याला । कटोरा । (तुल० गुज० वाटको) । २ हानि । नुकसान (तुल० गुज० बट्टो, हि० बट्टा) । ३. बट्टा । लोहा (को०) ।
वट्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] गोली । वटिका (को०) ।
वट्टा—सञ्ज्ञा पु० [म० वर्त्मन्, प्रा० वट्टअ] रास्ता । बाट । पथ ।
वट्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अन्न नामक एक वर्णसंकर जाति । २ शब्दकार । ३ चिकित्सक । हकीम (को०) । ४ जल-पात्र (को०) ।
वट्ट—वि० १ मूर्ख । २ शठ । ३ मद ।
वडफर—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] ढाल । उ०—अति खीजे सुण सुण असुर, जण जण खीजे प्राण । अवदल खाँ पडियौ अकस, कस वडफर केवाँण ।—रा० रू०, पृ० २२६ ।
वड्ब—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वड्वा] घोड़ा ।
वड्बा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वड्वा' (को०) ।
वड्भा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की चिड़िया (को०) ।
वड्भी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह शाला या घर जो किसी प्रासाद के शिखर पर हो । गृहचूडा । वीरहर । बरहरा ।
पयो—गोपानसी । चंद्रशाला । कूटागार । बलभी ।
वड्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'वड्वा' (को०) ।
वड्वाग्नि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वड्वाग्नि' ।
वड्वाभर्ता—सञ्ज्ञा पु० [स० वड्वाभर्तृ] इंद्र का अश्व जिसका नाम उच्चैश्रवा है (को०) ।
वड्वामुख—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वड्वाग्नि । २ शिव । ३ एक प्राचीन जनपद । ४ एक पौराणिक समुद्र । दे० 'वड्वामुख' (को०) ।
वड्वासुत—सञ्ज्ञा पु० [स०] अश्विनीकुमार (को०) ।
वड्हसिका, वड्हसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी । दे० 'वड्हसिका' (को०) ।
वडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ एक पक्वान्न । दे० 'वडा' । २ छोटा गोला । वटिका (को०) ।
वडिल—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० वडिश (को०) ।
वडिश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बसी जिसमें मछली फँसाई जाती है । कंटिया । २ चिकित्सको का एक अस्त्र जिससे वे वेधते या नशतर लगाते हैं । (वैद्यक) ।
वड्ड—वि० [देशी या स० वड्ड] बड़ा । महान् ।
वड्डिपन—सञ्ज्ञा पु० [अप० वड्डप्पण, हि० वड्डपन] वड्डप्पन ।

बडाई । महत्ता । उ०—ता कुल केरा बड्डिपन क्हावा कवन उपाए ।—कीर्ति०, पृ० १० ।

बड्—वि० [सं०] बडा । महान् । श्रेष्ठ [को०] ।

बर्ग^१—सञ्ज्ञा पु० [देश०] घनुप । उ०—बर्ग छेद मुजेह, कवाण बर्गी । फव ईस चकै फिर सेस फणी ।—रा० रू०, पृ० ३४ ।

बर्ग^२—मञ्ज्ञा पु० [सं०] शब्द । ध्वनि । शोर [को०] ।

बर्णिक—दे० पु० [सं० बर्णिज्] १ वह जो वाणिज्य के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो । रोजगार करनेवाला । २ वैश्य । बनिया । उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की । सोचकर घटना बर्णिक के चित्त की ।—शकु०, पृ० ४१ ।

यौ०—बर्णिकवृत्त = बर्णिकमार्थ । बर्णिककर्म = सौदागरी । बर्णिककर्म । बर्णिकवृत्त = बर्णिककर्म । सौदागरी । बर्णिकपथ = दे० 'बर्णिकपथ' । बर्णिकसार्थ = व्यापारियों का काफिला । कारवां । बर्णिकग्राम = व्यापारियों का दल । बर्णिकजन । बर्णिकग्वधु । बर्णिकभाव = व्यापार । बर्णिकवह । बर्णिकवीथी = हाट । बाजार । बर्णिकवृत्ति = बर्णिक की जीविका । व्यापार ।

बर्णिककर्म—सञ्ज्ञा पु० [सं० बर्णिककर्मन्] व्यापारी । सौदागर [को०] ।
बर्णिकजन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वैश्य । बनिया । २ व्यापारी । सौदागर [को०] ।

बर्णिकग्वधु—सञ्ज्ञा पु० [सं० बर्णिकग्वधु] नील का पीवा [को०] ।

बर्णिकवह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] क्रमेलक । कैंट [को०] ।

बर्णिकवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यापार । सौदागरी । २ लाभ की दृष्टि से काम करना [को०] ।

बर्णिज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ व्यापार । बनिय । २ व्यापारी । सौदागर । ३ तुला राशि । ४ शिव का एक नाम । ५ ज्योतिष में एक करण [को०] ।

बर्णिजक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] व्यापारी । सौदागर [को०] ।

बर्णिजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सौदागरी । व्यापार [को०] ।

बर्णिजार^१—सञ्ज्ञा पु० [सं० बर्णिज + हि० आर (प्रत्य०)] वन-जारा । व्यापारी । उ०—बहुले भौति बर्णिजार हाट हिडए जवे आवथि ।—कीर्ति०, पृ० ३० ।

बर्णिज्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० बर्णिज्या] व्यापार । सौदागरी [को०] ।

वतड—सञ्ज्ञा पु० [सं० वतरड] साधु । संत । महात्मा [को०] ।

वतग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'अवतस' ।

वतसित—वि० [सं०] अवतसित । विभूषित [को०] ।

वत^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ खेद । २ अनुकंपा । ३ सतोष । ४ प्रियमय । ५ आमत्रण ।

वत^२—अव्य० [सं०] शब्दों एवं विचारों पर जोर देने के लिये प्रयुक्त शब्द । विशेष ३० 'वत' ।

विशेष—हिंदी में इसका प्रयोग नहीं मिलता है ।

वतक—सञ्ज्ञा पु० [देश० या गुज० वाडको] वत्स के गर्दन के आकार की मुराही जिममें जराब रखी जाती है । उ०—मतवाला रो वतक प्यकै, पिय नई परहरियाह ।—ढोला०, दू० ४१८ ।

वतन—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ निवासस्थान । वासस्थान । २ जन्म-भूमि । स्वदेश ।

यौ०—वजनपरस्ती = देशभक्ति ।

वतनी—सञ्ज्ञा पु० [अ० वतन] अपने देश का निवासी । उ०—एते जीव ज्याचे वतनी सो ऐसा राजा त्रिभुवन घनी ।—दक्खिनी०, पृ० ३० ।

वतास^१—सञ्ज्ञा पु० [सं० वातमह] दे० 'वातास' । उ०—काहु हांघ अइसनो आस कउमे लागन आचर वतास ।—कीर्ति०, पृ० ३६ ।

वतीरा—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ ढग । रीति । प्रथा । २ चाल ढाल । ३ लत । टेव । वान ।

वतू^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग की एक नदी [को०] ।

वतू^२—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ सडक । २ आँख का एक रोग [को०] ।

वतोका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वव्या स्त्री । २ वह स्त्री या गाय जिसका गर्भ किसी दुर्घटना से गिर जाय [को०] ।

वत्—अव्य० [सं०] समान । तुल्य । सदृश । जैसे, पुत्रवत् । मित्रवत् ।

वत्री^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वार्ता, प्रा० वत्तडी] दे० 'वार्ता' । उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसे विगत हर्मे सुण वत्री । खडे में वमुवा विण खत्री कीधो वार इकीसे, —रघु० ८०, पृ० ६० ।

वत्स—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ गाय का बच्चा । बछड़ा । २ शिशु । बालक । बच्चा । ३ वत्सर । वर्ष । ४ कस का एक अनुचर । वत्सामुर । ५ इद्रजौ । ६ वत् । उर । छाती । ७ एक देश का नाम जो कोशावी की राजधानी था और जहाँ का राजा उदयन था ।

वत्सक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ पुष्प कसीस । २ कुटज । ३ इद्रजौ । ४ निर्गुंडी । ५ छोटा बछड़ा [को०] । ५ शिशु । बच्चा [को०] ।

वत्सकामा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चों को प्यार करनेवाली स्त्री या गाय [को०] ।

वत्सघोष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम जो नक्षत्रों के प्रथम वर्ग में है ।

वत्सतत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वत्सतन्त्री] बछड़ा बाँधने की रस्सी ।

विशेष—मनुस्मृत के अनुसार बछड़ा बाँधने की रस्सी को लौघना नहीं चाहिए ।

वत्सतर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० वत्सतरी] जमान बछड़ा जो जोता न गया हो । दोहान ।

वत्सतरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह बछिया जो तीन वर्ष की हो । कलोर ।

विशेष—वृषोत्सर्ग में चार वत्सतरी के साथ एक वृष उत्सर्ग करने का विधान है ।

वत्सदंत—सञ्ज्ञा पु० [सं० वत्सदन्त] एक प्रकार का वारण [को०] ।

वत्सनाभ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ एक विप जिसे 'वत्सनाग' या 'वत्सनाग' भी कहते हैं । मीठा जहर ।

विशेष—इसका पीवा हिमालय के कम ठंडे भागों में होता है । इसकी जड़ विशेषतः नेपाल से आती है । इसके पत्तों में भालू के पत्तों के समान होने हैं । विप जड़ में होता है । यह विप शोथ-कर औषधों में दिया जाता है । शोथन के लिये जड़ के छोटे छोटे

टुकड़े काटकर तीन दिन तक गोमूत्र में भिगोते हैं। फिर छाल अलग करके लाल सरसो के तेल में भिगोए हुए कपड़े में पोटली बाँधकर रखते हैं। उपयुक्त मात्रा और युक्ति के साथ सेवन करने से यह रसायन, योगवाही, वातनाशक और त्रिदोषघ्न कहा गया है। वृद्ध लोग इसे ज्वर और लकवा रोग में देते हैं। इसके प्रयोग में बड़ों सावधानी चाहिए, क्योंकि अधिक मात्रा में होने से यह विष प्राणनाशक होता है। इसके योग से मृत्युञ्जय रस, आनन्दभैरव रस, पञ्चवक्त्र रस आदि कई प्रसिद्ध औषधें बनती हैं।

पर्या०—अमृत । विष । उग्र । सहौषध । गरल । मारण । नाग । खतौक । प्राणहारक । स्थावर ।

२ एक वृक्ष का नाम ।

वत्सपत्तन—सञ्ज्ञा पु० [स०] कौशावी नगरी का प्राचीन नाम । जहाँ का राजा उदयन था [को०] ।

वत्सपद—सञ्ज्ञा पु० [स०] बछड़े के खुर का निशान । गोपद [को०] ।

वत्सपाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो बछ गायों का पालन करता हो । गोपाल । २ कृष्ण । ३ बलराम [को०] ।

वत्सपालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वत्सपाल' ।

वत्सपीता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह गाय जिसका दूध बछड़ा पी चुका हो [को०] ।

वत्सवधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वत्सवन्धा] वह गाय जिसका बछड़ा बंधा हुआ हो । गाय जो अपने बछड़े को पाना चाहती हो [को०] ।

वत्सर—सञ्ज्ञा पु० [स०] उतना काल या समय जितने में पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है और सब ऋतुओं की एक उद्धारणी हो जाती है । काल का वह मान जो बारह महीनों या ३६५ दिनों का होता है । वर्ष । साल । बरस ।

वत्सरातक—सञ्ज्ञा पु० [स० वत्सरातक] वर्ष का आखिरी महीना [को०] ।

वत्सराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक राजा का नाम ।

विशेष—इस नाम के अनेक राजा हो गए हैं । एक तो कौशावी का प्रसिद्ध राजा था, जो गौतम बुद्ध का समसामयिक था । चौहान वंश में भी एक वत्सराज हुआ । लाट देश का एक चौलुक्यवंशी राजा भी इस नाम का हुआ है । महोबे के चंदेल राजाओं का एक मंत्री भी वत्सराज था जो आल्हा गानेवालों में आल्हा का पिता कहा गया है और 'वच्छराज' के नाम से प्रसिद्ध है ।

वत्सरादि—सञ्ज्ञा पु० [स०] मार्गशीर्ष । अग्रहन का महीना [को०] ।

वत्सराण—सञ्ज्ञा पु० [स०] ऋण जो एक वर्ष के लिये लिया अथवा दिया गया हो [को०] ।

वत्सरूप—सञ्ज्ञा पु० [स०] छोटा बछड़ा [को०] ।

वत्सल^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० वत्सला] १ पुत्र या संतान के प्रति पूर्ण स्नेह से युक्त । बच्चे के प्रेम से भरा हुआ । जैसे,—

पुत्रवत्सल पिता, पुत्रवत्सला माता । २ अपने से छोटी के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु । जैसे,—प्रजावत्सल राजा ।

वत्सल—सञ्ज्ञा पु० १ साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस । वात्सन्य रस, जिसमें पिता या माता का अपनी सतति के प्रति रतिभाव या प्रेम प्रदर्शित होता है । २ घास फूस की आग (को०) । ३ विष्णु का एक नाम (को०) ।

वत्सशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बछड़े बाँधने की जगह । वह स्थान जहाँ बछड़े रखे जायें [को०] ।

वत्साक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] तरबूज । कलीदा ।

वत्सादन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृक्ष । भेड़िया [को०] ।

वत्सादनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गुडुव । गिलोय ।

वत्सासुर—सञ्ज्ञा पु० [स०] कस का अनुचर एक राक्षस जिसे कृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था ।

वत्सिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बछिया । बाछी [को०] ।

वत्सिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वत्सिमन्] शिशुता । बचपन [को०] ।

वत्सी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वत्सिन्] विष्णु ।

वत्सी^२—वि० जिसे बहुत बच्चे हो [को०] ।

वत्सीय^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] गोपालक [को०] ।

वत्सीय^२—वि० वत्स सबकी । बछड़ा सबकी [को०] ।

वदति, वदती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वदन्ति, वदन्ती] कथा । कहानी । २ बात । वार्ता ।

वद—वि० [स०] बोलनेवाला ।

विशेष—यह शब्द समासात् में जुड़ता है । जैसे,—वर्णवद, प्रियवद, आदि ।

वदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वक्ता । कहनेवाला ।

वदतोऽयाधात—सञ्ज्ञा पु० [स०] कथन का एक दाव, जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है ।

वदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मुख । मुँह । २ अगला भाग । ३. कथन । बात कहना । ४ त्रिभुज का शीर्ष भाग (को०) । ५. चेहरा । आकृति । स्वरूप (को०) ।

वदनपवन—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुख की हवा । साँम [को०] ।

वदनमदिरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अवरासव । अवरामृत [को०] ।

वदनश्यामिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ मुख का एक रोग । मुँह पर पड़ी हुई भाई । २ मुँह का कालापन [को०] ।

वदनामय—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुख का रोग [को०] ।

वदनासव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वदनमदिरा' । २ लार । लाला ।

वदनोदर—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुखगह्वर । मुख का गड्ढा [को०] ।

वदन्य—वि० [स०] दे० 'वदान्य' [को०] ।

वदर—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वदर' [को०] ।

वदान्य—वि० [म०] १ अतिशय दाता । उदार । २. मधुरभाषी । अपनी बात से दूसरों को सतुष्ट करनेवाला ।

वदाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वादाम' [को०] ।

वदाल—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. पाठीन मत्स्य । पट्टिना मछली । २. आवर्त । भँवर (को०) ।

वदालक—सञ्ज्ञा पु० [सं] पाठीन मत्स्य [को०] ।

वदालक—वि० [सं] वाग्मी । वाचाल । वडवडिया [को०] ।

वदित—सञ्ज्ञा पु० [सं] अवदिन । कृष्ण पक्ष । जैसे—जेठ वदि ४ ।

वदितव्य—वि० [सं] बोलने योग्य । कहने लायक [को०] ।

वदित्ता—सञ्ज्ञा पु० [सं] वदितृ । बोलनेवाला । कहनेवाला । वक्ता ।

वदोअत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] अमानत । वरोहर ।

वदुसाना—क्रि० सं० [सं] विदूषण । दोष देना । भला बुरा कहना । इलजाम लगाना । उ०—हम सब जानत हरि की घातें । तुम जो कहत हरि राज करत नहि जानत ही फछु का तैं ? उपसेन वैठारि सिंघासन लोग कहत कुल नाते । तप तैं राज, राज तैं आगे तुम सन समुझन वातें । सुरश्याम यहि भाँति सयाने हमही को वदुसाते, —सूर (शब्द०) ।

वदेस—सञ्ज्ञा पु० [सं] विदेश । परदेश । उ०—बहु बवालू आव धरि, काँसू करइ वदेस । सपत सधाले सपज, आ दिन कहाँ लहेस ।—ढोला०, दू० १७८ ।

वदल—सञ्ज्ञा पु० [देशी०] दुर्दिन । वरसात ।

वद्य—वि० [सं] १ कथनीय । २ अनिष्ट । निर्दोष [को०] ।

वद्य—सञ्ज्ञा पु० १ कृष्ण पक्ष । २ वात । कथन [को०] ।

यौ०—वद्यपक्ष = कृष्णपक्ष ।

वध—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ घात । नाश । मरण । विशेष दे० 'वध' । २ प्रहार । अभिघात । मार (को०) । ३ लकवा (को०) । ४ तिरोधान । लोप । ओझल । ओट (को०) । ५ (गणित में) गुणन क्रिया (को०) । ६ वधक । मारनेवाला (को०) । ७ जेता । जयी (को०) । ८ मृत्युदंड (को०) । ९ विफलता । हार । पराजय (को०) । १० दोष । दोषण (को०) । ११ उत्पत्ति । उपज (बीजगणित) ।

वधक—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ घातक । हिंसक । २ व्याध । ३ मृत्यु । ४ एक प्रकार का सरकड़ा (को०) ।

वधकर्माधिकारी—सञ्ज्ञा पु० [सं] वधकर्माधिकारिन् । जल्लाद ।

वधजीवी—सञ्ज्ञा पु० [सं] वधजीविन् । वह जो वध करके जीविका निर्वाह करता हो ।

वधत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं] अस्त्र । हथियार ।

वधनिग्रह—सञ्ज्ञा पु० [सं] मृत्युदंड । फाँसी की सजा [को०]

वधनिर्णय—सञ्ज्ञा पु० [सं] हत्या का प्राचक्षिप्त ।

वधभूमि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] दे० 'वधभूमि' ।

वधागक—सञ्ज्ञा पु० [सं] वधाट्गक । कारागार । कैदखाना ।

वधाप—सञ्ज्ञा पु० [पा० वदव] दे० 'वधावा' । उ०—शोक वधाव जिग सम करि माना । ताकी वात इद्रहुँ नहि जाना ।—कवीर बी० (जिह्वा०), पृ० २५४ ।

वधावरा—सञ्ज्ञा पु० [हिं० वधाव + रा (प्रत्य०)] दे० 'वधावा' ।

उ०—सोक को जनम अज ओक मे भयो है ऊधो साँवरे विरह तैं वधावरे वजत ये ।—दीन० ग्र०, पृ० ४० ।

वधिरु—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ मृगमद । कस्तूरी । २ दे० 'वधिर' [को०] ।

वधित्र—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ कामदेव । २ कामात्मिक [को०] ।

वधिर—वि० [सं] दे० 'वधिर' ।

वधु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] दे० 'वधुका' ।

वधुरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ पुत्र की स्त्री । बहू । २ दुलहन । स्त्री ।

वधुटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] दे० 'वधूटी' ।

वधू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ नव विवाहिता स्त्री । दुलहन । २ पत्नी । भार्या । ३ पुत्र की बहू । पतोहू ।

यौ०—वधूप्रवेश, वधूप्रवेश = विवाहिता स्त्री का पति के घर में पहली बार प्रवेश करने की विधि । वधूधन = स्त्री की निर्जा संपत्ति । वधूपक्ष = कन्यापक्ष । वधूवस्त्र = विवाह के समय कन्या को दिया जानेवाला वस्त्र ।

वधूटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ नई व्याही हुई स्त्री । दुलहन । २ भार्या । पत्नी । ३ पुत्रवधू । पतोहू ।

वधूत—सञ्ज्ञा पु० [सं] अवधूत । दे० 'अवधूत' । उ०—अवन कुडल गरल कठ करुणाकद सच्चिदानंद वदे वधूत ।—तुलसी (शब्द०) ।

वध्य—वि० [सं] मार डालने योग्य । वधाहै ।

यौ०—वध्यधन = जल्लाद । वध्यचिह्न = प्राणदंड पाए हुए अपराधी का चिह्न । वध्यडिंडिम, वध्यपट्ट = फाँसी देने के समय की जानेवाली सूचना । वध्यपट = वध दंड दिए जाने के समय का काला या लाल वस्त्र । वध्यपाल = जेलर । वध्यशिला = वह वेदी या शिला जिसपर वध किया जाता है ।

वध्र—सञ्ज्ञा पु० [सं] सीसा नाम की वस्तु ।

वध्रि—सञ्ज्ञा पु० [सं] वधिया ।

वध्रिका—सञ्ज्ञा पु० [सं] वह पुरुष जो वधिया हो । खोजा ।

वध्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] चमड़े का तसमा [को०]

वध्य—सञ्ज्ञा पु० [सं] पदनाण । जूता [को०] ।

वध्यश्व—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ आखता घोड़ा । २ एक प्राचीन राजा का नाम ।

वन—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ वन । जंगल । २ वाटिका । ३ जल । ४ घर । आलय । ५ चमसा नामक यज्ञपात्र जो काष्ठ का होता था । ६ रश्मि । ७ शंकराचार्य के अनुयायी सन्यासियों की एक उपाधि । ८ फूलों का गुच्छा । ९ समूह । झुंड । १० काष्ठ । लकड़ी (को०) । ११ बादल (को०) । १२ पहाड़ (को०) । १३ जंगल का निवास (को०) । १४ भरना । सीता । १५ अर्चन । पूजन (को०) ।

वनकथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] वनपिप्पली ।

वनकदली—सञ्ज्ञा पु० [सं] जंगली केला [को०]

वनकरी—सञ्ज्ञा पु० [सं] वनकरिन् । जंगली हाथी [को०] ।

वनकुंजर—सञ्ज्ञा पु० [सं] वनकुञ्जर । दे० 'वनकरी' ।

वनकुंडल—सज्ञा पुं० [म० वनकुण्डल] अच्छी जाति का मूल या जिमीकद ।
 वनकोकिलक—सज्ञा पुं० [म०] एक प्रकार का छद्म (को०) ।
 वनकोलि—सज्ञा स्त्री० [म०] जंगली बेर (को०) ।
 वनग—सज्ञा पुं० [म०] वन में रहनेवाला । वनवासी (को०) ।
 वनगज—सज्ञा पुं० [म०] जंगली हाथी (को०) ।
 वनगमन—सज्ञा पुं० [म०] १ सन्वागग्रहण (को०) । २ सब कुछ छोड़कर वन का यात्रा करना ।
 वनगव—सज्ञा पुं० [सं०] जंगली बिल (को०) ।
 वनगहन—सज्ञा पुं० [म०] घना जंगल (को०) ।
 वनचन्दन—सज्ञा पुं० [म० वनचन्दन] १. अमुर । अमर । २. देवदार ।
 वनगुप्त—सज्ञा पुं० [सं०] जागूम (को०) ।
 वनगाचर—सज्ञा पुं० [म०] १ शिकारी । व्याध । २ वनवासी । वन । ३ जंगल (को०) ।
 वनगोचर—वि० १ जंगल में रहनेवाला । २ जन में रहनेवाला (को०) ।
 वनग्रामक—सज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली गाँव । २ गरीब गाँव (को०) ।
 वनग्राही—सज्ञा पुं० [म०] व्याध । बहेलिया (को०) ।
 वनचन्द्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं० वनचन्द्रिका] मल्लिका ।
 वनचपक—सज्ञा पुं० [सं० वनचम्पक] एक प्रकार का चंपा का पुष्प ।
 वनचर—सज्ञा पुं० [सं०] १ वन में भ्रमण करने या रहनेवाला । २ जंगली मनुष्य या प्राणी । ३. शरन नामक वनजलु ।
 वनचर्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] वन भ्रमण या वनवास (को०) ।
 वनछाग—सज्ञा पुं० [म०] १ जंगली बकरा । २. सूअर (को०) ।
 वनछिट—सज्ञा पुं० [म० वनच्छिद] लकड़ी काटनेवाला । लकड़ हारा (को०) ।
 वनज—सज्ञा पुं० [म०] १ वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो । २ फल । ३ सुस्तक । मोथा । ४ तुलसी का फल । ५ जंगली विजोरा नीलू । ६. वनकुलधी ।
 वनजा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुद्गपर्णा । २ निर्गुडी । ३ गफेद कटवारि । ४. वनतुलसी । ५ अश्वगवा । ६ वनकपासी ।
 वनजोर—सज्ञा पुं० [सं०] काली जोरी ।
 वनजीवी—सज्ञा पुं० [सं० वनजीवन] १ वनवासी । २ लकड़हारा (को०) ।
 वनत्तिका—सज्ञा पुं० [म०] होतकी । हड ।
 वनतिक्तिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा । २ पथरी नाम का शक ।
 वनद—सज्ञा पुं० [म०] मेघ । बादल ।
 वनदाह—सज्ञा पुं० [म०] वनाग्नि ।
 वनदीप—सज्ञा पुं० [म०] वनचक्र पुष्प ।
 वनदेव, वनदेवता—सज्ञा पुं० [म०] वन का अभिष्ठाता देवता ।
 वनदेवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वन की अभिष्ठात्री देवी ।
 वनद्विप—सज्ञा पुं० [म०] जंगली हाथी (को०) ।
 वनटुम—सज्ञा पुं० [सं०] जंगली पट पोषा (को०) ।
 वनधेनु—सज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली गाय । गयय (को०) ।

वनधान्य—सज्ञा पुं० [म०] जंगल धान । एवमा नाम (को०) ।
 वनन—सज्ञा पुं० [सं०] वन नपान । शीत (को०) ।
 वनप—सज्ञा पुं० [म०] १ जलपान । २ वनपान । उ०—वन जंगल की देवता करनेवाले (वनप), जंगली प्राण कुम्हारने (नवप) । हि० नम्यता, पृ० २८ ।
 वनपल्लव—सज्ञा पुं० [सं०] शाखाजन्त पत्र । मृत्जन (को०) ।
 वनपांसुल—सज्ञा पुं० [म०] शिकारी । व्याध (को०) ।
 वनपाल—सज्ञा पुं० [सं०] १. दानपाल । २. वनपाल । उ०—मुरधर तथा बघावणा, हरण जस्ट नाम । वन वनपान पाटिया, सिर प्राणी रंगान ।—रा० म०, पृ० २६ ।
 वनपिप्पली—सज्ञा स्त्री० [म०] छाटी पीत ।
 वनपूरक—सज्ञा पुं० [सं०] जंगली विजोरा नीलू (को०) ।
 वनप्रस्थ—सज्ञा पुं० [सं०] तपस्वी ।
 वनप्रिय—सज्ञा पुं० [म०] १. काकिल । २ बहुरा का वृक्ष । ३ कपूरवचरी । ४ माभर हिम ।
 वनभूषणी—सज्ञा स्त्री० [म०] काकला । बौधन (को०) ।
 वनभक्षिक—सज्ञा स्त्री० [म०] जान । जन (को०) ।
 वनमालिका—सज्ञा स्त्री० [म०] भेवली का पीवा या फूल ।
 वनमल्ली—सज्ञा स्त्री० [म०] २० 'वनमल्लिका' (को०) ।
 वनमाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन के फूलों की माला । २. एक विशेष प्रकार की माला ।
 विशप—यह सब ऋतुगा में होनेवाले अनेक प्रकार के फूलों वनती और घुटने तक लम्बी होती थी । इसी माला श्रीहृण धारण करते थे ।
 वनमालिनी—सज्ञा स्त्री० [म०] शारिका पुरी का एक नाम ।
 वनमाली—वि० [म० वनमालिन्] वनमाता धारण करनेवाला ।
 वनमाली—सज्ञा पुं० श्रीहृण ।
 वनमुक्—सज्ञा पुं० [म० वनमुक्] वादन । मेघ (को०) ।
 वनमुद्ग—सज्ञा पुं० [म०] एक प्रकार की मूग (को०) ।
 वनमृत—सज्ञा पुं० [म०] मेघ । बादल ।
 वनमूर्धजा—सज्ञा स्त्री० [म०] १ जंगली विजोरा नीलू । २ तापान मिणी ।
 वनमोच—सज्ञा स्त्री० [सं०] वन वदनी । जंगली बेता (को०) ।
 वनर—सज्ञा पुं० [म०] २० 'वारर' (को०) ।
 वनरक्तक—सज्ञा पुं० [म०] जंगल की दधमान करनेवाला । वनरसा (को०) ।
 वनराज—सज्ञा पुं० [सं०] १. निर । २. वनराज रुद्र ।
 वनराजि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की श्रेणी । वनमूह । वनमूह । २ वन के दोन गड्ढे वनमूह । ३. तुलसी का एक नाम ।
 वनराजी—सज्ञा स्त्री० [म०] २० 'वनराजि' ।
 वनरुद्ध—सज्ञा पुं० [सं०] वनरुद्ध ।

वनलक्ष्मी—सञ्ज्ञा स्त्री० [ल०] १ वन की शोभा । वनश्री । २ कदली । केला ।

वनलता— ॥ स्त्री० [स०] जगली वेल ।

वनवर्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का वृक्ष । बटेर । लता पक्षी [को०] ।

वनवसना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] धरती जिसका वस्त्र वन है । पृथिवी । उ०—नमित शालि से भरी हुई, सुरर वनवसना ।—अपरा, पृ० १६५ ।

वनवह्नि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दग्धवाग्नि [को०] ।

वनवास^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वन का निवास । जगल में रहना । २ बस्ती छोड़कर जगल में रहने की व्यवस्था या विधान ।

मुहा०—वनवास देना = जगल में रहने की आज्ञा देना । बस्ती छोड़ने की आज्ञा देना । वनवास लेना = बस्ती छोड़कर जगल में रहना । अंगीकार करना ।

वनवास^२—वि० जगल में रहनेवाला । वनवासी ।

वनवासक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शात्मली कद । २ एक प्राचीन नगर जो कादम्ब राजाओं को राजधानी था ।

वनवासन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गदाबलाव [को०] ।

थनवासी^१—वि० [स० वनवाग्नि] [वि० स्त्री० वनवासिनी] वन में रहनेवाला । बस्ती छोड़कर जगल में निवास करनेवाला ।

वनवासी^२—सञ्ज्ञा पुं० १ ऋषभ नामक ओपवि । २ वाराही कद । ३ शात्मली कद । ४ नीलमहिष कद । ५ द्रोण काक । डोम कौशा । ६ दक्षिण में तुंगभद्रा की शाखा परदा नदी के किनारे बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो कादम्ब राजाओं का प्रधान नगर था । ७ वानप्रस्थ आश्रमी । तपस्वी [को०] ।

वनविलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शखपुष्पी लता ।

वनवीज, वनवीजक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जगली नींबू [को०] ।

वनवृत्ताक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वनवृन्ताक्षी] जगली बैंगन । भंटा [को०] ।

वनव्रीहि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तिन्नी नाम का जगली अन्न ।

विशेष—यह अपने आप पैदा होता है और इसे अन्नो में नहीं गिना जाता । इसका व्यवहार फल के रूप में व्रतादि में होता है ।

वनशूकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कपिकच्छु । केवाँच । २ जगली मादा सुथर ।

वनशृगाट—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनशृङ्गाट] गोखरू ।

वनशृगाटक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनशृङ्गाटक] दे० 'वनशृगाट' ।

वनशोभन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कमल [को०] ।

वनश्वा—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनश्वन्] १ स्यार । गोदड । २ गंध-विलाव । ३ चीता । बाघ [को०] ।

वनसकट—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनसङ्कट] मसूर ।

वनसवासी—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ जो वानप्रस्थ आश्रम का हो । वन में रहनेवाला । वनवासी [को०] ।

वनसमूह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] निविड वन । घना जगल [को०] ।

वनसरोजिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वनरुपामा [को०] ।

वनसिंधुर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनसिन्धुर] जगली हार्थी । वनकुजर [को०] ।

वनस्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मीदर्य । लावण्य । २ कीर्ति । वज्र । ३ वनदोलत ।

वनस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वन में रहनेवाला । २ वानप्रस्थ आश्रम । ३ मृग । हिरन ।

वनस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वनभूमि । अश्वगवदेश । जगती जमीन ।

वनस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ अश्वत्थ । पीपल का पेड़ । २ बट । न्यग्रोध वृक्ष [को०] ।

वनस्थी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वनस्था' [को०] ।

वनस्पनि^१—सञ्ज्ञा स्त्री०, पुं० [स०] १ बट वृक्ष जिसमें फूल न हो (अर्थात् न दिखाई पड़े) केवल फल ही हो । जैसे,—गुन्ग, बट पीपल आदि बट वर्ग के वृक्ष । (मनु०) । २ वृक्ष मात्र । पेड़ पीथा । ३ बट वृक्ष । वरगद । ४ गोम नाम का पीथा [को०] । ५ पेड़ का तना । म्कव [को०] । ६ घरन । बडेर । लट्ठा [को०] । ७ यज्ञस्तम्भ । यूप [को०] । ८ काठ का रक्षा कवच [को०] । ९ वन्यवच । फासी का तन्ता [को०] । १० यती । तपस्वी । योगी [को०] । ११ मूँगफनी, विनीला, नारियल आदि का जमाया हुआ तेल ।

वनस्पति^२—सञ्ज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

वनस्पतिशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बट शास्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता हो कि पीथा और वृक्षा आदि के क्या क्या रूप और कौन कौन सी जातियाँ होती हैं, उनके भिन्न भिन्न अंगों की बनावट कैसी होती है और कलम आदि के द्वारा किन प्रकार के नए पौधे या वृक्ष उत्पन्न होत हैं । वनस्पति विज्ञान ।

वनस्रक्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वनस्रक्] दे० 'वनमाला' [को०] ।

वनहरिद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जगली हल्दा ।

वनह्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का यज्ञ । एकाह यज्ञ [को०] ।

वनहास, वनहासक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ काश । कास । २ कुद का फूल ।

वनहुताशन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वनाग्नि । वनवाह [को०] ।

वनात—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनान्त] वनप्रात । जगली भूम या मैदान ।

वनान्तर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वनान्तर] १ दूसरा वन । २ वन का भीतरी भाग [को०] ।

वनाखु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] खरगोश । शशक [को०] ।

वनाखुक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का माप । उरद [को०] ।

वनाग्नि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दावानल । वन में अपने आप लगनेवाली आग [को०] ।

वनाज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वन्य अज । जगली बकरा [को०] ।

वनाटु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नीली जगली मक्खी [को०] ।

वनानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वनाली] वन का समूह । घना और विस्तृत वन । उ०—काफल थे रँग रहे, फूल में थी फल लिए

खुवानी । लाल बुरुसो के मधु छत्तो से थी भरी वनानी ।—
अतिमा, पृ० १५ ।

वनायु—सज्ञा पु० [म०] १. एक प्राचीन देश का नाम जहाँ का
घोडा अच्छा होता था । २ इस देश में रहनेवाली जाति ।
३ पुरुरवा के एक पुत्र का नाम ।

वनायुज—सज्ञा पु० [स०] वनायु देश का घोडा ।

वनारिष्टा—सज्ञा स्त्री० [म०] वनहरिद्रा । वनहृत्दी [को०] ।

वनार्चक—सज्ञा पु० [स०] माली । माला या हार बनानेवाला [को०] ।

वनार्द्रका—सज्ञा स्त्री० [स०] वन अदरक जिसे ऐंद्र भी कहते हैं [को०] ।

वनालक्त—सज्ञा पु० [स०] गेरु ।

वनालक्तक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनालक्त' [को०] ।

वनालिका—सज्ञा स्त्री० [म०] हस्तिशु डी लता । हाथी सूँडी ।

वनाश^१—वि० [स०] केवल जल पीकर रहनेवाला [को०] ।

वनाश^२—सज्ञा पु० १ वनविहार । पिकनिक । २ एक प्रकार का
छोटा जौ [को०] ।

वनाश्रम—सज्ञा पु० [म०] वानप्रस्थ आश्रम [को०] ।

वनाश्रमी—सज्ञा पु० [स० वनाश्रमिन्] वानप्रस्थी । तपस्वी [को०] ।

वनाश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ काला कौआ । डोम कौआ । २ वह
जो जंगल का निवासी हो [को०] ।

वनाहिर—सज्ञा पु० [स०] वन्य शूकर । जंगली सूअर [को०] ।

वनि^१—सज्ञा पु० [स०] १ याचना । २ राशि । ढेर । ३. आग ।
अग्नि [को०] ।

वनि^२—सज्ञा स्त्री० [स०] इच्छा । कामना [को०] ।

वनिका—सज्ञा स्त्री० [म०] कु जवन । उपवन ।

वनित—वि० [स०] १ पूजित । २ इच्छित । ३. याचित [को०] ।

वनिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुरक्ता स्त्री । प्रिया । प्रियतमा ।
२ स्त्री । औरत । ३ छह वर्णा की एक वृत्ति जिसे 'तिलका'
और 'डिल्ला' भी कहते हैं । इसमें दो सगरा होते हैं ।
जैसे,—मसि वाल खरो । शिव भाल खरो । ४ मादा [को०] ।

वनिताद्विप्—सज्ञा पु० [म० वनिताद्विट्] स्त्रीद्विपे [को०] ।

वनितामुख—सज्ञा पु० [स०] मार्कण्डेयपुराण के अनुसार मनुष्यों
की एक जाति ।

वनिताविलास—सज्ञा पु० [स०] वनिताओं का विहार । स्त्रियों की
क्रीडा [को०] ।

वनिष्णु—वि० [स०] मागनेवाला । याचक [को०] ।

वनी^१—सज्ञा पु० [स० वनिच्] १ वानप्रस्थ । २ वृक्ष [को०] ।
३ सोमलता [को०] ।

वनी^२—वि० १ पूजित । २ अभिलषित । ३ दिया हुआ । ४ जल के
ऊपर निर्वाह करनेवाला । ५. जंगल में रहनेवाला [को०] ।

वनी^३—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा वन । वनस्थली । उ०—अति चंचल
जहँ चलदलै, विधवा वनी, न नारि ।—केशव (शब्द०) ।

वनीक—सज्ञा पु० [स०] याचक । भिखारी [को०] ।

वनीपक—सज्ञा पु० [स०] भिखारी [को०] ।

वनीयक—सज्ञा पु० [म०] दे० 'वनीपक' [को०] ।

वनीयस—वि० [वनीयस्] अत्यंत उदार [को०] ।

वनेकिशुक—सज्ञा पु० [स०] वह वस्तु जो वैसे ही, बिना माँगे मिले
जैसे वन में किशुक बिना माँगे या प्रयास किए मिलता है ।

वनेलुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] करज [को०] ।

वनेचर—सज्ञा पु० [स०] १ वन में फिरनेवाला मनुष्य । वनचर ।
जंगली आदमी । २ यती । तपस्वी [को०] । ३ जंगली पशु ।
जंगली जानवर [को०] । ४. प्रेत । भूत । पिशाच [को०] ।

वनेजा—सज्ञा पु० [म०] १ ग्राम । २ पर्वट । पापडा ।

वनेज्य—सज्ञा पु० [म०] १ पापडा । २. उत्तम जाति का
ग्राम [को०] ।

वनेसर्ज—सज्ञा पु० [म०] पीतसाल का वृक्ष । प्रसन [को०] ।

वनेविल्वक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनेकिशुक' [को०] ।

वनेत्सर्ग—सज्ञा पु० [स०] १ देवमंदिर, वापी, कूप, उपवन,
आदि का उत्सर्ग जो शास्त्रविधि से किया जाता है । मंदिर
कुआँ आदि वनवाकर सर्वसाधारण के लिये दान करना । २
ऐसे दान या उत्सर्ग की विधि ।

वनेत्साह—सज्ञा पु० [स०] गैडा [को०] ।

वनेद्धवा—सज्ञा स्त्री० [म०] वनकपायी जिसे वनेद्धवा भी कहा
गया है [को०] ।

वनेपल्लव—सज्ञा पु० [स०] वनदाह । जंगल में आग लगना [को०] ।

वनेपल—सज्ञा पु० [स०] कडा । करीप । मूखा गोबर [को०] ।

वनौकस्—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका घर वन में हो । वनवासी ।
२ जंगली पशु । बदर, शूकर आदि । ३ तपस्वी । यती ।

वनौका—सज्ञा पु० [स० वनौकस्] दे० 'वनौकस्' [को०] ।

वनौपध—सज्ञा स्त्री० [म०] वन की ओपधियाँ । जंगली जड़ी बूटी ।

वन्न—सज्ञा पु० [स०] हिस्सेदार । साझीदार [को०] ।

वन्य^१—वि० [म०] १. वन में उत्पन्न होनेवाला । वनोद्भव ।
२. जंगली ।

यौ०—वन्य गज = वन्यद्विज । वन्यचर । वन्यद्विप = जंगली हाथी ।
वन्यपक्षी = वन के पक्षी । वन्यवृत्ति = जंगल में उत्पन्न पदार्थों
से जीवननिर्वाह करनेवाला ।

वन्य^२—सज्ञा पु० १. वनसूरन । २ क्षीर विदारी । ३ वाराही कद ।
४ शख । ५. जंगली जानवर [को०] । ६. जंगली पौधा [को०] ।
७ बदर [को०] । ८. जंगल में उत्पन्न होनेवाले फल [को०] ।
९. त्वचा । छाल [को०] ।

वन्यचर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनचर' । उ०—वस, पत्र पुष्प
हम वन्यचरो की सेवा ।—साकेत, पृ० २, ६ ।

वन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मुद्गपर्णी । २. गोपाल ककडी । ३. गुआ ।
४. भद्रमुस्ता । ५. अश्वगव । असगव । ६. मधन जंगल । वन-

समूह । ७ बाढ । जलप्लावन । ६ अप्रकेत जलराशि । १० लता । उ०—परतु मेरा तो निज का कोई स्वार्थ नहीं, हृदय के एक एक कोने को छान डाला—कही भी कामना की वन्या—नहीं । स्कंद०, पृ० ६३ ।

वन्योपोदकी—सज्ञा स्त्री० [म०] लताविशेष । वन पोय । को० ।

वन्न—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वन्न' [को०] ।

वप—सज्ञा पु० [स०] १ बीज बोना । २ बीज बोनेवाला । ३ क्षीर । मुडन । ४ बुनाई ।

वपन—सज्ञा पु० [म०] [पि० वपनीय] १ केशमु डन । २ बीज बोना । ३ शुक । बीज (को०) । ४ बाल बनाने का अस्तुरा (को०) । ५ क्रम में रखना । रोपना (को०) ।

वपनी—सज्ञा स्त्री० [म०] १ वह स्थान जहाँ नाई क्षीरकार्य करते हैं । वह स्थान जहाँ हज्जाम बैठकर हजामत बनाते हैं । २ वह स्थान जहाँ जुलाहे कपड़ा बुनते हैं । ३ कपड़ा बुनने का औजार । करघा (को०) ।

वपनीय—वि० [स०] १ बोने योग्य । २ वपन के योग्य । मूँडने लायक (को०) ।

वपा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चरवी । मेद । २ वल्मीक । बाँसी । ३ विवर । छिद्र (को०) । ४ आँतों की भिन्नी । अश्वारण (को०) । ४ बाहर निकली हुई नाभि (को०) ।

वपाकृत्—सज्ञा पु० [म०] मज्जा (को०) ।

वपित—वि० [स०] बोया हुआ (को०) ।

वपित्—सज्ञा पु० [स०] पिता । जनक (को०) ।

वपु—सज्ञा पु० [म० वपु] १ शरीर । देह । २ रूप । ३ सौंदर्य (को०) । ४ सत्व । सत्ता । नैमर्गिक प्रवृत्ति (को०) । ५ पानी (वेद) । ६ आश्चर्य (को०) । ७ अश (को०) ।

वपु—वपुर्गुण । वपु प्रकर्ष । वपुर्वर । वपु न्व ।

वपु—सज्ञा स्त्री० दक्ष की एक कन्या का नाम जो धर्मराज की पत्नी थी (को०) ।

वपु'प्रकर्ष—सज्ञा पु० [म०] दे० 'वपुर्गुण' (को०) ।

वपु स्रव—सज्ञा पु० [स०] शरीरस्थ रस वातु (को०) ।

वपुन—सज्ञा पु० [स०] देवता (को०) ।

वपुमान—वि० [स०] १ सुंदर शरीरवाला । २ साकार । मूर्त (को०) ।

वपुरा—वि० [देश०] बेचारा । उ०—तुम्हेण होसउँ असहना जइ सुनिअउँ रिउ नाम । इअर वपुरा को करओ वीरत्तरा निज ठाम ।—कीर्ति०, पृ० ६० ।

वपुर्गुण—सज्ञा पु० [म०] आकृति का सौंदर्य (को०) ।

वपुर्वर—वि० [म०] १ सौंदर्ययुक्त । सुंदर । २ शरीरी । मूर्त (को०) ।

वपुपु—सज्ञा पु० [म० वपुम्] शरीर । देह । उ०—विन नाथ की मैं दीन । विधवा सु वपुप नवीन । जग सिधु घोर अपार । ता मद्धि मो तनु डारि ।—प० रासो, पृ० ११ ।

वपुपु—वि० [न०] १ सुंदर । सलोना । २ आश्चर्यजनक (को०) ।

वपुपु—सज्ञा पु० [स०] आकार या शरीर का सौंदर्य (को०) ।

वपुष्टमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पञ्चाक्षरिणी लता । २ हरिवंश के

अनुमार काशिराज की एक कन्या, जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय से व्याही थी ।

विशेष—हरिवंश में लिखा है कि राजा जनमेजय ने एक अश्वमेध यज्ञ किया । उनकी पत्नी, वपुष्टमा साथ ही बँठी थी । इद्र ने अश्व के शरीर में प्रविष्ट होकर उसके साथ सहवाम किया । जब मरा हुआ अश्व जोवित दिखाई पड़ा, तब इद्र की चाल का पता लगा । जनमेजय ने क्रुद्ध होकर इद्र को शाप दिया कि अब से अश्वमेध में तुम्हारा कोई पूजन न करेगा । उन्होंने ऋत्विक् ऋषियों को भी देश से निकाल दिया और वपुष्टमा का भी तिरस्कार किया । उसी समय गवर्धराज विश्वावसु ने आकर राजा का समझाया कि इद्र ने तुम्हारे अश्वमेध यज्ञ में डगकर रभा अस्तरा को वपुष्टमा का शरीर वारण करा के भेजा है । ऋत्विजों को निकालने में तुम्हारा अश्वमेध का पुण्य क्षीण हो गया ।

वपुष्मान्—वि० [स० वपुष्मत्] १ मूर्तिमान् । शरीरी । २ सुंदर । ३ हृष्टपुष्ट । ४ पूर्ण । अक्षत । ५ देहात्मवादी (को०) ।

वपोदर वि० [म०] तुदिक । तोदवाला (को०) ।

वप्ता—सज्ञा पु० [स० वप्त्] १ पिता । जनक । २ कवि । ३. नापित । नाई । ४ बीज बोनेवाला । ५ कपक । किसान (को०) ।

वप्पु—सज्ञा पु० [म० वप्त् > वप्ता, प्रा० वप्प, वप्पा] दे० 'वाप' । उ०—जें सत्तु ममर मम्मदि कहू वप्प वर उद्धरिअ धुप्र ।—कीर्ति०, पृ० ८ ।

वप्पीओ—सज्ञा पु० [देशी] चातक । पपीहा ।—देशी०, पृ० २८५ ।

वप्पो—सज्ञा पु० [स० वपुम्] शरीर । तनु । देह ।—देशी०, पृ० ३०७ ।

वप्र—सज्ञा पु० [म०] १ मिट्टी का ऊँचा घुस्स, जो गढ़ या नगर की खाई से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारों ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है । चय । मृत्तिकास्तूप । २ क्षेत्र । जेत । ३ रेणु । धूल । ४ ऊँचा किनारा । नगर । (नदी आदि का) । ५ पहाड़ की चोटी । ६ टीला । भीटा । ७ सीमा नाम की वातु । ८ प्रजाति । ९ द्वापर युग के एक व्याम । १० चादह्वें मनु के एक पुत्र का नाम । ११ मांड अथवा हाथी का अपनी सींग या दाँत से मिट्टी का दूह गाराना (को०) । १२ पिता । जनक (को०) । १३ सोना (को०) । १४ नीव (को०) । १५. पख्खा । खाई (को०) । १६. बेरा (को०) । १७ मंदान (को०) ।

वप्रक—सज्ञा पु० [म०] वृत्त की परिधि । गोलाई का घेरा । चक्कर ।

वप्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'वप्रक्रीडा' ।

वप्रक्रीडा—सज्ञा स्त्री० [स० वप्रक्रीडा] टोले या ऊँचे उठे हुए मिट्टी के ढेर की हाथी, साँड आदि का दाँतो या सींग से मारना, जो उनकी एक क्रीडा है ।

वप्रा—सज्ञा स्त्री० [म०] १ मजीठ । २ जैनों के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम । ३ मिट्टी का चिपटे सिरे का बाँध (को०) । ४. उद्यानशय्या (को०) ।

वप्राभिघात—सज्ञा पु० [स०] १ तटाघात । २ दे० 'वप्रक्रिया' [को०] ।
वप्रि—सज्ञा पु० [स०] १ ज्ञेय । २ समुद्र । ३ स्थान की दुर्गमता ।
दुर्गति ।

वप्री—सज्ञा स्त्री० [म०] १ वल्मीक । वाँची । २ मिट्टी का ढूह (को०) ।
वफा—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा] १ वादा पूरा करना । वात
निवाहना ।

यौ०—वफादार । वफादारी । वफापरस्त = दे० 'वफादार' ।
वफापरस्ती = वफादार होना । वफादारी । वफाशनास = वफा
की पहचान रखनेवाला । वफाशनामी = वफा को पहचानना ।
२ निर्वाह । पूर्णता । उ०—अब कूच ही करना सही इस खेत से
न वफा लही ।—मुदन (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।

३ मुरीवत । सुशीलता । उ०—वे खाए ते वेवफा वफा रहै ठहराइ ।
मीन कीनै दूर ज्यों तेही तै रह जाइ ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वफात—सज्ञा स्त्री० [अ० वफात] मौत । मृत्यु ।

क्रि० प्र०—करना ।—पाना ।—होना । उ०—नवाव आलिफ खाँ
कोट कागडे मे वफात प्राप्त हुआ और लाश फतेहपुर मे लाके
रखी ।—मुदर० प्र० (जी०), भाट० १, पृ० ५१ ।

वफादार—वि० [अ० वफा + फा० दार] [सज्ञा वफादारी] १.
वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला । २ अपने काम को
ईमानदारी से करनेवाला । ३ सच्चा ।

वफादारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा + फा० दारी] १ प्रतिज्ञापालन ।
वात को पूरा करना । २ मित्र या स्वामी का तन, मन, धन से
साथ निभाना [को०] ।

वफीक—सज्ञा पु० [अ० वफीक] अनुकूल आचरण करनेवाला, मित्र ।
दोस्त । उ०—जा को साहब देत वफीक, चारि पियाला कर
तहकीक ।—धरनी०, पृ० २० ।

वफक—सज्ञा पु० [अ० वफक] अनुकूल । मुआफिक [को०] ।

वफद—सज्ञा पु० [अ० वफद] दूतमंडल । प्रतिनिधि मंडल [को०] ।

ववर—सज्ञा पु० [अ०] ऊन । बाल [को०] ।

ववा—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरी । महामारी । फैलनेवाला भयकर
रोग । जैसे,— हैजा, प्लेग आदि । २ छूत का रोग ।

क्रि० प्र०—आना ।—पडना ।—फैलना ।

ववाई—सज्ञा स्त्री० [अ०] ववा सबधी । फैलनेवाली । छुतही [को०] ।

ववाल—सज्ञा पु० [अ०] १ बोझ । भार । २ आपत्ति । कठिनाई ।
३ घोर विपत्ति । आफत । ४ ईश्वरीय कोप । ५ पाप
का फल ।

क्रि० प्र०—होना ।

मुहा०—किसी का ववाल पडना = किसी को दुख पहुँचाने का
फल मिलना । दुखिया की आह पडना । जैसे,—इसका ववाल
तेरे ऊपर पड़ेगा ।

वभ्रु—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का सर्प । (सुश्रुत) । २ एक
यद्वशीय योद्धा । विशेष दे० 'वभ्रु' ।

वभ्रुवाहन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वभ्रुवाहन' ।

वम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वमन' [को०] ।

वमति—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन करना । वमनक्रिया [को०] ।

वमथु—सज्ञा पु० [स०] १ वमन । २ थूक । ३ हाथी के सूँड से
निकला हुआ पानी । ४ खाँसी [को०] ।

वमन—सज्ञा पु० [स०] १ कै करना । उलटी करना । छर्दन । २
वमन किया हुआ पदार्थ । ३ आहुति । ४ पीडा । ५.
भाँग (जे०) ।

वमना—क्रि० स० [स० वमन] कै करना । उलटी करना [को०] ।

वमनी—सज्ञा स्त्री० [म०] १ जोक । २ कपास का पौधा (को०) ।

वमनाया—सज्ञा स्त्री० [स०] मक्खो ।

वमि^१—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक रोग, जिसमें मनुष्य का जी मतलाता
है, मुँह से पानी छूटता है और जो कुछ वह खाता पीता है,
उसे मुँह के रास्ते निकालकर बाहर फेंक देता या कै कर देता है ।

टिप्पणी—यह वमन रोग पाँच प्रकार का माना गया है,—वातज,
पित्तज, कफज, सन्निपातज, और आगतुक । वातज में वगल
और छाती में दर्द, मस्तक और नाभि में शूल तथा अग्रे में मूर्छा
छेदने की सी पीडा होती है । वमन बड़े वेग से और बड़े शब्द
के साथ अधिक मात्रा में निकलता है । पित्तज में मूर्छा,
प्यास, मुँह सूखना, तालू और आँखों में जलन और आँखों के
सामने अंधेरा छाना आदि लक्षण होते हैं और वमन कुछ हरा
और तीता होता है । कफज में मुँह मीठा रहता है, कुछ कफ
निकलता है । भोजन की अनिच्छा होती है, शरीर भारी जान
पडता है और वमन सफेद, गाढ़ा और मीठा होता है, तथा
वमन के समय रोगटे खड़े हो जाते हैं और बड़ी पीडा होती है ।
आगतुक वमन कोई बुरी वस्तु खा लेने या घृणित वस्तु देखने या
सूँघने से एकवारगी हो जाता है ।

२ वमन करानेवाली दवा

वमि^२—सज्ञा पु० [म०] १ अग्नि । २ घटूरा । ३ दुष्ट ।

वमित—वि० [म०] वमन किया हुआ । जो वमन किया गया
हो [को०] ।

वमी^१—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन । छर्दि । दे० 'वमि' ।

वमी^२—वि० [म० वमिन्] वमन रोग का रोगी [को०] ।

वम्य—वि० [म०] (श्रीपय आदि) जिससे वमन हो । वमन कराने-
वाली [को०] ।

वम्र—सज्ञा पु० [स०] दीमक । वम्री [को०] ।

वम्रक^१—सज्ञा पु० [म०] दीमक या चीटा [को०] ।

वम्रक^२—वि० अत्यंत छोटा । बृत्त छोटा [को०] ।

वम्री—सज्ञा स्त्री० [म०] दीमक ।

वन्नीकूट—सज्ञा [सं०] वल्मीक । वाँवी । विमोह ।

वन्ह (७)†—सज्ञा पुं० [देशी] वल्मीक । विमोह ।—देशी०, पृ० २८४ ।

वन्हण (७)†—सज्ञा पुं० [सं० ब्राह्मण, प्रा० बन्हन] दे० 'ब्राह्मण' ।
उ०—बहुल वन्हण बहुल काश्य राजपुत्र कुल बहुल बहुल जाति
मिलि वइस ।—कीर्ति०, पृ० ३० ।

वय (७)—सर्व० [सं० अस्मद् शब्द का प्र० पु० बहुवचन] हम ।
उ०—विकटतर वक्र छुर धार प्रमदा तीव्र दर्प कदर्प खर
खड्गधारा । धीर गभीर मन पीर कारक तत्र के बराका वय
विगत सारा ।—तुलसी (शब्द०) ।

वय क्रम—सज्ञा पुं० [सं०] क्रमागत जीवन काल । अवस्था । उम्र ।

वय परिणति—सज्ञा स्त्री० [सं०] अवस्था की परिपक्वता । प्रौढ
अवस्था [को०] ।

वय परिणाम—सज्ञा पुं० [सं०] वय परिणति ।

वय प्रमाण—सज्ञा पुं० [सं०] जीवन का पूरा समय [को०] ।

वय सधि—सज्ञा स्त्री० [सं० वय सन्धि] बाल्यावस्था और यौवना-
वस्था के बीच की स्थिति । लङ्कपन और जवानी के बीच
का काल ।

वय स्थ—सज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'वयस्य' ।

वय स्था—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयस्था' ।

वय स्थान—सज्ञा पुं० [सं०] जवानी । दे० 'वयस्थान' [को०] ।

वय^१—सज्ञा पुं० [सं० वयस्] १ वीता हुआ जीवनकाल । अवस्था ।
उम्र । २ बल । शक्ति । ३ पत्नी । ४ युवावस्था । जवानी
(को०) । ५ कौवा (को०) । ६ यज्ञ प्रयुक्त बलि पदार्थ । बलि
या अन्न (वेद) (को०) । ७ स्वास्थ्य । पुष्टता (को०) ।

वय^२—सज्ञा पुं० [सं०] १ तनुवाय । जुलाहा । २ वया पत्नी ।

वय^३—सज्ञा स्त्री० जुलाहो के करवे में मूत का एक जाल । विशेष दे०
'वै' या 'वय' ।

वयताल (७)†—सज्ञा पुं० [सं० वैताल] उ०—कालीदास भोज के
ज्यों विक्रम के वयताल ।—वाकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १३३ ।

वयन—सज्ञा पुं० [सं०] बुनने की क्रिया या भाव । बुनना ।

वयराट (७)—वि० [सं० विराट] दे० 'विराट्' । उ०—वयराट रूप
गावत निगम । निज दासन (दाता) अक्षय ।—वट०, पृ० १० ।

वयस्—सज्ञा पुं० [सं०] १ वीता हुआ जीवन काल । अवस्था ।
उम्र । २ पत्नी ।

वयस—सज्ञा पुं० [सं० वयस्] दे० 'वयस्' ।

वयसिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयस्या' ।

वयस्क—वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १ उमर का । प्रवस्थावाला ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग समस्तपद के अंत में
होता है । जैसे, अल्पवयस्क, समवयस्क इत्यादि ।

२ पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ । जो अब बालक न हो । सयाना ।
बालिग ।

वयस्कर—वि० [सं०] दे० 'वयस्कृत' ।

वयस्कृत—वि० [सं०] आयु प्रद । जीवन देनेवाला ।

वयस्थ^१—वि० [सं०] [स्त्री० वयस्था] १ प्राप्तवयस्क । २, युवा ।
युवक । ३ समवयस्क ।

वयस्थ^२—सज्ञा पुं० समवयस्क पुष्प ।

वयस्था—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ आमलकी । आवला । २ हरीतकी ।
हड । ३ गुड़ूच । ४ छोटी इलायची । ५ काकोली । ६.
सेमल । ७. युवती । ८ मत्स्याक्षी (को०) । ९ अत्यम्नपर्णी
(को०) । १० सोमवल्लरी । सोमनता (को०) । ११ आली ।
मथी । सहेली । (को०) ।

वयस्थान—सज्ञा पुं० [सं०] यौवन ।

वयस्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. समवयस्क । एक उमरवाले । हमजोनी ।
२. मित्र । उ०—प्रिय वयस्य ? आज तुम्हें आए तीन दिन
हुए ।—स्कंद० पृ० १२७ ।

यौ०—वयस्यभाव = मित्रता । मैत्री । दोस्ती ।

वयस्यक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वयस्य' [को०] ।

वयस्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मथी । सहेली । उ०—देखकर अपनी
सखी को पलक सी ध्यानलग्ना, एक ने मकेत कर यो वयस्या से
दखे स्वर में कहा ।—ग्रिय०, पृ० ७२ । २ इष्टका । ईंट ।

वयस्यिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'वयस्या'—१ । २ अतरंग
चेटी वा दासी [को०] ।

वया—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयाक' [को०] ।

वयाक—सज्ञा पुं० [सं०] १ डाली । टहना । २. लता (को०) ।

वयार (७)—सज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'वयार' ।

वयाला (७)—सज्ञा पुं० [सं० ध्याल] १ दे० 'व्याल' । २ वायु ।
हवा । उ०—प्रधा भया वनाय बंद की बात न माने । विषय
वयाला खाय करे सजय का जाने ।—पलटू, पृ० ६० ।

वयुन—सज्ञा पुं० [सं०] १ ज्ञान । बुद्धि । बौद्धिक चेतना । २
मंदिर । देवागार । ३ आज्ञा । आदेश । नियम । ४ कर्म ।
५ रीति । पद्धति । सरणि । ६ स्पष्टता [को०] ।

वयोगत^१—वि० [सं०] प्रौढ । अधिक वय का ।

वयोगत^२—सज्ञा पुं० युवावस्था का गमन । प्रौढावस्था [को०] ।

वयोधा^१—सज्ञा पुं० [सं० वयोधम्] १ अन्न । २ युवा अथवा मध्यम
वय का व्यक्ति । प्रौढ़ व्यक्ति [को०] ।

वयोधा^२—वि० [सं०] १. शक्तिशील । ताकतवर । २ शक्तिदायक
वा स्वास्थ्यप्रद । ३ भोजन देनेवाला । अन्न देनेवाला [को०] ।

वयोधा^३—सज्ञा स्त्री० शक्ति । ताकत । सामर्थ्य [को०] ।

वयं बाल—वि० [सं०] छोटी उम्र का । बाल्यावस्था का [को०] ।

वयोरग—सज्ञा पुं० [सं० वयोर्ग] सीसा धातु [को०] ।

वयोवग—सज्ञा पुं० [सं० यौवङ्ग] सीसक । सीसा धातु [को०] ।

वयोविशेष—सज्ञा पुं० [सं०] वय की विशेषता । उम्र का अंतर [को०] ।

वयोवृद्ध—वि० [सं०] जो अवस्था में बड़ा हो । बड़ा बूढ़ा ।

वयोहानि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बल या शक्ति का कम होना । २. वृद्धाना । वृद्धावस्था होना [को०] ।

वरच—अव्य [सं० वरञ्च] १ ऐसा न होकर ऐसा । वल्कि । अपितु । २. परंतु । लेकिन । किंतु ।

वरड—सज्ञा पुं० [सं० वरण्ड] १ बम्बी की डोर । शिम्त । २. समूह । ३. मुहाँसा । ४ घास का गट्टर । ५ फीलखाने आदि में की वह दीवार जो दो लडाके हाथियों के बीच में लडाई बचाने के लिये बनाई जाती है । ६ कोष । थैली । भोला (को०) । ७. अलिंद । वरामदा । दालान (को०) ।

वरडक—सज्ञा पुं० [सं० वरण्डक] १ मिट्टी का भीटा । ढूह । २. दो लडाके हाथियों के बीच की दीवार । ३. हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा । ४ मुँहासा (को०) । ५ दीवार (को०) ।

वरडक—वि० १ लबा । बडा । विस्तृत । २ भयानक । डरावना । भयभीत । ३ दुखी । पीडित । ४ गोल । वरुलाकार [को०] ।

वरडलवुक—सज्ञा पुं० [सं० वरण्डलवुक] वसी की डोरी [को०] ।

वरडा—सज्ञा स्त्री० [सं० वरण्डा] १ कटारी । कर्त्ती । २ वत्ती । ३ मैना । सारिका (को०) ।

वरडा—सज्ञा पुं० दे० 'वरामदा' ।

वरडालु—सज्ञा पुं० [सं० वरण्डालु] एरड वृद्ध । रेड का पेड [को०] ।

वर—सज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ । वह बात जिसके लिये किसी देवी, देवता या बड़े से प्रार्थना की जाय । जैसे,—उसने शिव से यह वर माँगा ।

क्रि० प्र०—माँगना ।

२ किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि । वह बात जो किसी देवता या बड़े की प्रसन्नता से प्राप्त हुई हो । जैसे,—उसे यह वर था कि वह किसी के हाथ से न मरेगा ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

३. जामाता । ४. पति या दूल्हा । ५. गुग्गुलु । ६. कुकुम । केसर । ७. दारचीनी । ८. बालक । ९. अदरक । आर्द्रक । १०. मुगध तृण । ११. सेंधा नमक । १२. पियाल या चिरीजी का पेड । १३. वकुल । मौलसिरी । १४. हलदी । १५. गौरा पत्नी । १६. चुनाव (को०) । १७. पसद (को०) । १८. इच्छा (को०) । १९. लपट या छिछोरा व्यक्ति (को०) । २०. वह जो किसी से प्रेम करता हो । प्रेमी (को०) । २१. दहेज (को०) ।

वर—वि० १ श्रेष्ठ । उत्तम । २ सर्वोत्तम (को०) ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः श्रेष्ठता सूचित करने के लिये सज्ञा या विशेषणों के आगे होता है । जैसे,—पंडितवर, विज्ञवर, वीरवर, मित्रवर ।

वरकठ—सज्ञा पुं० [सं० वर + कठ] सुग्रीव । उ०—वरकठ वामा धरी घामा किता कामा वद किया । भय भेट भारी अनुष धारी अरज सारी यह ।—रघु० २०, पृ० १४६ ।

वरक—सज्ञा पुं० [सं०] १ साधारण वस्त्र । गमछा, दुपट्टा आदि । उ०—गुरु के चरण अनद जाय करि, अनुभव वरक उतारी ।—

घरनी०, पृ० ३ । २ नाव का आच्छादन । ३ वनमृग । ४ काकुन । प्रियगु । ५ जगली वेर । भडवेरी । ६ अभिलापा । मनोरथ । इच्छा (को०) । ७. घडी । घटा (को०) । ८ किसी स्त्री से विवाह की प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति (को०) ।

वरक—सज्ञा पुं० [अ० वरक] १ पत्र । २ पुस्तको का पन्ना । पत्रा । ३ दल । पत्र । पखुडी (को०) । ४ सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर, जो कूटकर बनाए जाते हैं और मिठाइयों पर लगाने और औषध में काम आते हैं ।

यौ०—वरकसाज = सोने चाँदी के वरक बनानेवाला । वरकसाजी = वरकसाज का काम ।

वरका—सज्ञा पुं० [अ० वरकह] दल । पत्र । पत्ता [को०] ।

वरकी—वि० [अ० वरकी] वरक की तरह पतला [को०] ।

वरकोद्रव—सज्ञा पुं० [सं०] कोविदार । कचनार का पेड ।

वरक्रतु—सज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र ।

वरग—सज्ञा पुं० [सं० वर्ग, प्रा० वग्ग] दे० 'वग्ग' । उ०—मालवणी मनि दूमणी आवी वरग विमासि ।—ढोला०, दू० ३१६ ।

वरचन्दन—सज्ञा पुं० [सं० वरचन्दन] १ काला चंदन । २ देवदारु ।

वरज—वि० [सं०] ज्येष्ठ । बडा ।

वरजिश—सज्ञा स्त्री० [फा० वरजिश] १. व्यायाम । कसरत । शारीरिक परिश्रम । २ अभ्यास । मशक । ३. ग्रहण । इख्तियार [को०] ।

यौ०—वरजिशखाना, वरजिशगाह = व्यायामशाला । अखाड़ा ।

वरजिशी—वि० [फा० वरजिशी] कसरती [को०] ।

वरजीवी—सज्ञा पुं० [सं० वरजीविन्] १ एक वर्णसंकर जाति जो स्मृतियों में गोप और तनुवाय के संयोग से उत्पन्न कही गई है । २ ब्राह्मण का औरस पुत्र जो शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हो ।

वरट—सज्ञा पुं० [सं०] १ हस । २. कुद का फूल । ३. भिड । बरें । ४ एक प्रकार का अन्न (को०) । ५ कुसुम का बीज (को०) ।

वरटक—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वरटिका, वरटिका] कुसुम का बीज । बरें का बीज ।

वरटा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी । २ गविया कीडा । गवकोट । ३ बरें । तर्तिया । भिड । ४ कुसुम का बीज (को०) ।

वरटो—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी । २ गविया कीडा । ३ पीली मक्खी । उ०—वरटो (पीली माँखी), भोगर आदि आपसे चौगुने भारी भी हैं ।—माधव०, पृ० १६२ ।

वरण—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को पसंद करके किसी कार्य के लिये नियुक्त करना । किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

२. मंगल कार्य के विधान में होता आदि कार्यकर्त्ताओं को नियत करके दान आदि से उनका सत्कार करना । ३. मंगल कार्य में नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान । जैसे,—विवाह में ११ आदमियों को वरण मिला है ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

४. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति । ५. पूजा । अर्चना । सत्कार । ६. ढकने या लपेटने की वस्तु । आवरण । आच्छादन । वेष्टन । ७. किसी स्थान के चारों ओर घेरी हुई दीवार । ८. ऊँट । ९. वरुण वृद्ध । १०. पुल । सेतु । ११. घनुष की सज्जा या अलंकार (को०) । १२. इद्र (को०) । १३. एक प्रकार का अस्त्र का मन्त्र (को०) । १४. वृद्ध । पेड (को०) । १५. याचना । प्रार्थना ।

वरण^५—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वरुण] १. रग । दे० 'वरुण' । २. मनुष्यों के चार विभाग या वर्ण । उ०—जो कोई भक्त हमारा होई । जात वरुण को त्याग सोई ।—कवीर सा०, पृ० ८२० ।

वरणक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन । आवरण । २. वह जो किसी का आच्छादन करे । आच्छादन करनेवाला (को०) ।

वरणजथा^५—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डिगल छद्म ।—रघु० ८०, पृ० २५३ ।

वरणना^५—क्रि० सं० [सं० वरुण] वरुण करना । कहना । उ०—नभ वायु तेज चल धरणी । पीछे बहु विधि करि वरणी ।—सुंदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६७ ।

वरणमाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] जयमाल (को०) ।

वरणसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाराणसी ।

वरणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वरुण ?] १. एक छोटी नदी का नाम जो काशी के उत्तर में बहती है । यह नदी वाराणसी क्षेत्र की उत्तरीय सीमा है । वरुणा । २. पञ्जाब देश की एक नदी का नाम जो सिंधु नदी में दक्षिण ओर से अटक के विपरीत दिशा से आकर मिलती है । ३. अरहर ।

वरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वरुण] दे० 'वरुण'—३ ।

वरणीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वरणीया] १. पूजनीय । पूज्य । २. श्रेष्ठ । बड़ा । ३. चुनने या ग्रहण करने योग्य । उ०—यही श्रुत की गोद सदृश जो विस्तृत गुहा वहाँ रमणीय । उसमें मनु ने स्थान बनाया सुंदर स्वच्छ और वरणीय ।—कामायनी, पृ० ३० ।

वरतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वरतन्तु] एक ऋषि का नाम ।

वरत^५—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्रत] उपवास । दे० 'व्रत'-२ । उ०—विकट करो तीरथ वरत, धरा भेष के धार । विन नाम रघुवीर रै, परत न उतरै पार ।—रघु० ८०, पृ० ३४ ।

वरतनु^५—वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला (को०) ।

वरतनु^५—सञ्ज्ञा स्त्री० सुंदरी स्त्री (को०) ।

वरतमान^५—वि० [सं० वर्तमान] दृश्य जगत् जो वर्तमान है । उ०—वरतमान मैं सतगुरु सारा । सतगुरु भव तारन कडिहारा ।—कवीर सा०, पृ० ४३० ।

वरति^५—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्रत] दे० 'व्रत' । उ०—वरति करइ धरि आपणाई ।—वी० रासो, पृ० ४६ ।

वरतिक्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुटज । कोरैया । २. नीम । ३. पर्पट । पापडा । ४. रोहितक । रोझना का पेड ।

वरतिक्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाठा ।

वरत्त^५—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० वरयात्रा, प्रा. वरत्त] दे० 'वारात' । उ०—नाथद्वारे परसवा, आवी धार वरत्त ।—रा० ८०, पृ० ३५६ ।

वरत्र—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'वरत्रा' (को०) ।

वरत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वरेत । वरेता । २. हाथी खींचने का रस्सा । ३. चमड़े का तसमा ।

वरत्वच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नीम का पेड ।

वरद^५—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वरदा] वर देनेवाला । श्रमीष्टदाता । २. प्रसन्न । हर्षयुक्त (को०) ।

यौ०—वरदचतुर्थी = वरदा चतुर्थी । वरदहस्त = वर देने की मुद्रा । हाथ की वरद मुद्रा ।

वरद^५—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. उपकारी । कल्याणकर । २. पितृगणों का एक वर्ग (को०) ।

वरदक्षिणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है । दहेज । दायदा ।

वरदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. कन्या । २. अश्वगव । ३. अटहल । ४. आदित्यभक्ता । हरहर । ५. वाराही कद । ६. एक नदी का नाम (को०) ।

वरदाई^५—वि० [सं० वरदायिन्] वरदायी । वर देनेवाला । उ०—इद्र को इद्र, देव देवन को, ब्रह्मा को ब्रह्म महा वरदाई ।—नद० ग्र०, पृ० ३४३ ।

वरदाई^५—सञ्ज्ञा पुं० पृथ्वीराज रासो के रचयिता चंद का उपनाम ।

वरदा चतुर्थी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी । वरदा चौथ ।

वरदाता—वि० [सं० वरदातृ] [वि० स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला । वरद । उ०—जीवन समीर शुचि नि श्वसना, वरदात्री ।—अपरा, पृ० २०३ ।

वरदान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना । उ०—देन कहेहु वरदान दुइ तेउ पावत सदेह ।—तुलसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—देना ।

२. किसी फल का लाभ जो किसी को प्रसन्नता से हो ।

क्रि० प्र०—पाना ।—मिलना ।

वरदानी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वरदानिन्] वर प्रदान करनेवाला । मनोरथ पूर्ण करनेवाला । वरदायक ।

वरदायक^५—वि० [सं०] दे० 'वरदाता' ।

वरदायक^५—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि (को०) ।

वरदारुह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विपरीत पक्षियोंवाला एक पौधा (को०) ।

वरदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] वह परिधान जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिये नियत हो । वह पोशाक या पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो । जैसे,—पुलिस की वरदी, फौज की वरदी ।

वरद्वम—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अग्र, जिसका वृद्ध बहुत बड़ा होता है।

वरन्—अव्य० [सं० वरम्] ऐसा नहीं। वल्कि।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग अब उठता जा रहा है।

वरन०—सज्ञा पु० [सं० वरण] दे० 'वरण'। उ०—इनकी अग्र वोहोत सुंदर और गौर वरन है, श्री स्वामिनी जी सहृदय।—
दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

वरना०—सज्ञा पु० [सं० वरण] ऊँट। उ०—वरना भल कर मे अवलोकत केश पास कृतवद। अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखकद।—सूर (शब्द०)।

वरना^२—अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो। जैसे,—
आप बैठिए, वरना मैं भी उठकर चला जाऊँगा।

वरना०—क्रि० सं० [सं० वरण] वरण करना। उ०—और चाहते होंगे फिर से मर्त्य धरा पर आकर, जीवन श्रम के शोभा सुख को वरना।—युगपथ, पृ० ११५।

वरपत्न—सज्ञा पु० [सं०] १ वरात। २ वराती [को०]।

वरपर्णाख्य—सज्ञा पु० [सं०] क्षीरकचुकी का वृद्ध [को०]।

वरपीतक—सज्ञा पु० [सं०] अवरक। अन्नक [को०]।

वरप्रद—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वरप्रदा] १ वर देनेवाला।
२ प्रसन्न।

वरप्रदा—सज्ञा स्त्री० [सं०] अग्रस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा [को०]।

वरप्रदान—सज्ञा पु० [सं०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वरप्रभ^१—सज्ञा पु० [सं०] एक बोधिसत्व [को०]।

वरप्रभ^२—वि० शोभायुक्त। अच्छी कातिवाला [को०]।

वरप्रस्थान—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'वरयात्रा' [को०]।

वरफल—सज्ञा पु० [सं०] नारिकेल। नारियल।

वरवाहिक—सज्ञा पु० [सं०] केसर [को०]।

वरम०—सज्ञा पु० [सं० वर्म] दे० 'वर्म'।

वरमना०—क्रि० अ० [देश० या सं० विरमण] रमना। भुक्ता।
उ०—भिरिहिरि वहै बयारि अमी रस ढरक हो। वरमी नौर-
गिया कं डारि, चंदन गछ मटक हो।—पल्लव भा० ३, पृ० ७३।

वरमेहो—सज्ञा पु० [पुर्त०] एक प्रकार का लाल चदन जो मलाया द्वीप से आता है।

वरम्म०—सज्ञा पु० [सं० वर्म] दे० 'वर्म'। उ०—नमसकार सूरों नरों,
विरद नरेस वरम्म। रिजक उजालें साँम रौ, पानै साँम वरम्म।
—बाकी० ग्र०, भा० १, पृ० १३।

वरमुखी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधद्रव्य। रेणुका [को०]।

वरयात्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाह के लिये वर का अपने इष्ट-मित्रों और सवयियों के सहित धूमधाम के साथ कन्या के घर जाना। दूल्हे का बाज गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। २ वह भीड़ भाड़ जो दूल्हे के साथ चलती है। वरात।

वरयिता—सज्ञा पु० [सं० वरपितृ] १ वरण करनेवाला। २ पति।
भर्ता।

वरयुवति, वरयुवती—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री [को०]।

वररुचि—सज्ञा पु० [सं०] एक अत्यंत प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।

विशेष—अष्टाध्यायीवृत्ति, प्राकृतप्रकाश, लिंगानुशासन, राक्षस काव्य आदि अनेक ग्रंथ इनके नाम से प्रसिद्ध हैं, पर सब इनके नहीं बनाए हैं। इनका प्राकृत का व्याकरण 'प्राकृत प्रकाश' बहुत प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है। ये कव हुए, इसका ठीक ठीक निश्चय विद्वानों को अभी नहीं हुआ है। कथा सरित्सागर में ये पाणिनि के सहाध्यायी और प्रतिद्वंद्वी कहे गए हैं, पर यह कल्पना मात्र है। उसी ग्रंथ में वररुचि और कात्यायन एक हो गए हैं, पर यह भी ठीक नहीं है। इसी प्रकार ज्योतिर्विदाभरण का नवरत्नवाला वह श्लोक भी, जिसमें वररुचि का नाम है, कपोलकल्पना मात्र है। 'प्राकृतप्रकाश' की भूमिका में कावेल साहब ने वररुचि को इसा की पहली शताब्दी का ठहराया है, और कोई कोई इन्हें चंद्रगुप्त मौर्य से भी पहले ईसा से ४०० वर्ष पूर्व का मानते हैं। फिर भी ये पतञ्जलि (ई० पू० १५७) में एक दो शती पूर्ववर्ती थे, इसमें कोई सदेह नहीं है।

वरल—सज्ञा पु० [सं०] भिड़। बरें [को०]।

वरलब्ध—सज्ञा पु० [सं०] १ चपक वृद्ध। २ वह जो वररूप में प्राप्त हो। वरदान के रूप में प्राप्त वस्तु [को०]।

वरला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी। २ भिड़। बरें [को०]।

वरली—सज्ञा स्त्री० [सं०] भिड़। बरें [को०]।

वरवत्सला—सज्ञा स्त्री० [सं०] सास। पत्नी की माता [को०]।

वरवराह—सज्ञा पु० [सं०] घुंघराले वाला जंगली आदमी। बर्वर।

वरवर्ण—सज्ञा पु० [सं०] स्वर्ण। सोना [को०]।

वरवर्णिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम स्त्री। २ लाख। ३ हल्दी।
४ गोरोचन। ५ कंगनी। काकुन। ६ गौरी। ७ लक्ष्मी। ८ सरस्वती। ९ महिला। स्त्री [को०]। १०. प्रियगु लता [को०]।

वरवाहिक—सज्ञा पु० [सं०] कुकुम। केसर।

वरवृद्ध—सज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव [को०]।

वरशिख—सज्ञा पु० [सं०] एक असुर जिसे इंद्र ने सपरिवार मारा था।

वरशोत—सज्ञा पु० [सं०] दालचीनी। विशेष दे० 'दारचीनी' [को०]।

वरसाल०—सज्ञा पु० [सं० वर्षाकाल] वर्षाकाल। वरसात का मौसम। उ०—विना नीर जहो कमल है बिन वरखा वरमाल।
—राम० धर्म०, पृ० ६१।

वरसावरस०—सज्ञा पु० [सं० वर्ष + प्रतिवर्ष] सालोसाल। प्रतिवर्ष। उ०—सीदो उदियासिध सुँ, कीधौ राम करार। सोमल ली वरसावरस रुपिया सात हजार।—रा० रू०, पृ० २२४।

वरसुरत—वि० [सं०] १. राते के भेदों का ज्ञाता। रतिज्ञ। २. कामी। भागी। विलासी [को०]।

वरसूक्—सज्ञा स्त्री० [सं० वरसूज] वरमाल। वर को पहनाई जाने-
वाली माला [को०]।

वरहक—सञ्ज्ञा पु० [न०] एक जनपद का नाम ।

वरही—सञ्ज्ञा पु० [हि० वर] सोने की एक लकी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है । टीका ।

वरही^७—सञ्ज्ञा पु० [स० वरहिन् । मयूर । ३० वहीं ।

वरही^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० वारह + ई (प्रत्य०)] प्रसूता का बारहवें दिन स्नान । दे० 'वरही' ।

वही^४—सञ्ज्ञा स्त्री० [दश०] मोटी रस्सी । दे० 'वरही' ।

वराग^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वराङ्ग] १ मस्तक । २ गुदा । ३ योनि । ४ हस्ती । ५ विष्णु का एक नाम । ६ एक प्रकार का नक्षत्र-वत्सर जो ३२४ दिनों का होता है । ७ दारचीनी । ८ पेड़ की टहनी का सिरा । ९ कामदेव का एक नाम (को०) । १० मुख्य भाग । उत्कृष्ट अण (को०) । ११ सुंदर रूप (को०) ।

वराग^२—वि० सुंदर एवं सुघटित अण युक्त (को०) ।

वरागक—सञ्ज्ञा पु० [म० वराङ्गक] दारचीनी ।

वरागना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वराङ्गना] सुंदर स्त्री ।

वरागी—सञ्ज्ञा पु० [स० वराङ्गिन] १ हाथी । २ अमलवेल ।

वरागी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वराङ्गी] १ हल्दी । २. नागदती । ३ मजीठ ।

वरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ त्रिफला । रेणुका नामक गंधद्रव्य । ३ गुरुच । ४ मेदा । ५ ब्राह्मी । ६ विडग । ७ पाठा । ८ हल्दी । ९ वैगन । १० अडहुल । जपा । देवीफूल । ११ मद्य । १२ सोमराजी लता । १३ अपराजिता । १४ शतमूली । १५ पार्वती का एक नाम (को०) ।

वराक^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शिव । २ युद्ध । ३ पापडा ।

वराक^२—वि० १ शोचनीय । २ नीच । ३ अशुचि । अशुद्ध (को०) ।

वराकक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शिव । २ युद्ध । लड़ाई (को०) ।

वराक्री—वि० स्त्री० [स०] दीन । भाग्यहीन । दुखिनी (को०) ।

वराजीवी—सञ्ज्ञा पु० [स० वराजीविन्] ज्योतिषी । गणक ।

वराट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पशवीज । कँवलगट्टे का बीज ।

वराटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पशु का बीज ।

वराटकरजा—सञ्ज्ञा पु० [स० वराटकरजस्] नागकेसर का पेड़ ।

वराटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ कौडी । २ तुण्ड्य वस्तु । ३ नागकेसर ।

वराटी, वराडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सगीत में एक प्रकार का राग (को०) ।

वराण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इद्र । २ वरुण वृक्ष । वरना ।

वराणसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वाराणसी । काशी (को०) ।

वरातना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सुंदर स्त्री ।

वरान्न—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दला हुआ उत्तम अन्न । २ उत्तम खाद्य । उत्कृष्ट भोजन (को०) ।

वराभिद, वराभिध—सञ्ज्ञा पु० [स०] अम्लवेतस् । अमलवेद ।

वराभल—सञ्ज्ञा पु० [म०] करौदा ।

वरारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] हीरा । हीरक ।

वरारणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] माता ।

वरारुह—सञ्ज्ञा पु० [म०] वृषभ । बैल । साँड (को०) ।

वरारोह^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विष्णु । २ एक प्रकार का पक्षी । ३ चतुर सवार । ४ अश्वारोही वा गजारोही (को०) । ५ सवार होना । मवारी करना (को०) ।

वरारोह^२—वि० [वि० स्त्री० वरारोहा] १ श्रेष्ठ सवारीवाला । २ जिसकी कटि या नितव सुंदर हो (को०) ।

वरारोहा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सुंदर स्त्री । वरवर्णिनी । २ कटि । कमर । (को०) ।

वरारोहा^२—वि० स्त्री० नितविनी । ऊँचे चक्राकार नितबोवाली (को०) ।

वरार्द्रक—सञ्ज्ञा पु० [स०] पूजा की सामग्री जिसमें चदन, कुकुम और जल सम भाग होता है ।

वराल, वरालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ लवंग । लौंग । २ दानी । दाता (को०) ।

वराला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हमिनी (को०) ।

वरालि—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रमा ।

वरालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा ।

वराशि—सञ्ज्ञा पु० [स०] मोटा कपडा ।

वरासत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ उत्तराधिकार । दायधिकार । २. मृत पुरुष की संपत्ति जो उत्तराधिकार में प्राप्त हो । रिक्क । तरका (को०) ।

वरासतन्—वि० [अ०] उत्तराधिकार के रूप में (को०) ।

वरासतनामा—सञ्ज्ञा पु० [अ० वरासत + फा० नामह्] उत्तराधिकार-पत्र । वरासत का कानूनी दस्तावेज (को०) ।

वरासन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ श्रेष्ठ आसन । ऊँचा आसन । २ विवाह में वर के बैठने का आसन या पाटा । ३ जपा । देवी फूल । अडहुल । ४ हिजडा । खोजा । ५ द्वारपाल ।

वरासि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मोटा कपडा । २ कृपाणधर पुरुष ।

वरासी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ नहाने का मोटा कपडा । २ मैला कपडा । मलिन वस्त्र (को०) ।

वराह—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शूकर । सूअर । २ विष्णु । ३ मुस्ता । मोथा । ४ एक पर्वत का नाम । ५ एक मान । ६ सूँस । शिशुमार । ७ वराहीकद । ८ अठारह द्वीपों में से एक छोटा द्वीप । ९ भेडा । मष (को०) । १० साँड (को०) । ११ वादल । मेघ (को०) । १२ मगर । घडियाल (को०) । १३ सेना का एक व्यूह । दे० 'वराह व्यूह' (को०) । १४ वराहमिहिर का नाम (को०) । १५ सिक्का (को०) । १६ एक प्रकार का वृण (को०) । १७ एक पुराण जो १८ पुराणों में से है ।

वराहकद—सञ्ज्ञा पु० [स० वराहकन्द] वराहीकद (को०) ।

वराहक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ हीरा । २ शिशुमार । सूँस ।

वराहकर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाण (को०) ।

वराहकणिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अस्त्र का नाम [को०] ।

वराहकर्णा—सज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगधा । अश्वगंध ।

वराहकल्प—सज्ञा पुं० [सं०] वह कल्प या काल जिसमें विष्णु ने वराह अवतार धारण किया था [को०] ।

वराहकाता—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाराही' [को०] ।

वराहकाता—सज्ञा स्त्री० [सं० वराहकान्ता] १ वाराही । २ लज्जालु । लज्जालु ।

वराहकाली—सज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्यमुखी का फूल [को०] ।

वराहपत्नी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगधा । अश्वगंध ।

वराहमिहिर—सज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए वृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका और बृहज्जातक नामक ग्रंथ प्रचलित हैं ।

विशेष—इनके समय के संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद कुछ वचनों के आधार पर प्रचलित हैं । जैसे,—ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक में कालिदास, धन्वतरि आदि के साथ वराहमिहिर भी विक्रम की सभा के नौ रत्नों में गिनाए गए हैं । पर इन नौ नामों में से कई एक भिन्न भिन्न काल के सिद्ध हो चुके हैं । अतः यह श्लोक प्रमाण के योग्य नहीं । इसी प्रकार कुछ लोग ब्रह्मगुप्त के टीकाकार पृथुस्वामी के इस वचन का आश्रय लेते हैं—'नवाधिक पञ्चशतसंख्य शाके वराहमिहिराचार्य दिवगतः ।' और शक ५०६ में वराहमिहिर की मृत्यु मानते हैं । पर अपनी पंचसिद्धांतिका में 'रोमकसिद्धांत' का 'अहर्गण' स्थिर करते हुए वराहमिहिर ने शक सवत् ४२७ लिया है । ज्योतिषी लोग अपना समय लेकर ही अहर्गण स्थिर करते हैं । अतः इससे ईसा की पाँचवीं शताब्दी में वराहमिहिर का होना सिद्ध होता है । अपने बृहज्जातक के उपसहाराध्याय में आचार्य ने अपना कुछ परिचय दिया है । उसके अनुसार ये अवती (उज्जयिनी) के रहनेवाले थे । 'कावित्थ' स्थान में सूर्यदेव को प्रसन्न करके इन्होंने वर प्राप्त किया था । इनके पिता का नाम आदित्यदास था ।

वराहमुक्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोती ।

विशेष—जैसे, 'गजमुक्ता' हाथी से उत्पन्न मानी जाती है, वैसे ही यह सूअर से उत्पन्न मानी जाती है ।

वराहव्यूह—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्यूह या सेना की रचना, जिसमें अग्र भाग पतला और बीच का भाग चौड़ा रखा जाता था ।

वराहशिला—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक विचित्र पवित्र शिला जो हिमालय के शिखर पर है ।

वराहशृंग—सज्ञा पुं० [सं० वराहशृङ्ग] शिव ।

वराहशैल—सज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम ।

वराहसंहिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष की बृहत्संहिता नाम की प्रसिद्ध पुस्तक ।

वराहान्नी—सज्ञा स्त्री० [सं० वराहाङ्गी] लुप्तवती ।

वराहिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] कपिसाधु । केवाँच । काँच ।

वराही—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूसरी । झूली । २ भद्रमुष्ठा । नागरमोथा । ३ वाराहीकंद । ४ अश्वगधा । ५ एक प्रकार का पक्षी जो गौरैया के बराबर ग्रीष्म ऋतु में गगन का होता है । ६. दे० 'वाराही' ।

वराहु—सज्ञा पुं० [सं०] झूकर । सूअर ।

वरिता—वि० [सं० वरित] १ परण करनेवाला । २ ढकनेवाला [को०] ।

वरिमा—सज्ञा स्त्री० [सं० वरिमन्] १ श्रेष्ठता । उत्तमता । प्रभुसत्ता । २ विस्तार । आयाम । परिणाम । ३ मटल । घेरा [को०] ।

वरिवसित—वि० [सं०] पूजित । संमानित । उपामित [को०] ।

वरिवसिता—सज्ञा पुं० [सं० वरिवसितृ] उग्रामक । भक्त [को०] ।

वारवस्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपासना । पूजा । २ सेवा । मुद्रुपा ।

वरिवस्यित—वि० [सं०] दे० 'वरिवसित' ।

वरिशो—सज्ञा स्त्री० [सं०] मछली फँसाने की कंठिया । वंसी [को०] ।

वरिष—सज्ञा पुं० [सं०] वर्ष । वत्सर ।

वरिषा—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा ?] वर्षा ऋतु । वरमात [को०] ।

यौ०—वरिषाप्रिय चानक पक्षी ।

वरिष्ठ—वि० [सं०] १ श्रेष्ठ । पूजनीय । उ०—भाव देव उन एक महा व्रतनिष्ठ के, भर आए युग नेत्र वरिष्ठ वशिष्ठ के ।—साकेत, पृ० १०८ । २ बहुत बड़ा । अत्यंत विस्तृत [को०] । ३ बहुत बजनी । अत्यंत भारी [को०] । ४ खराब । अत्यंत दुष्ट [को०] ।

वरिष्ठ—सज्ञा पुं० १ तित्तिर पक्षी । तीतर । २ चाक्षुष मनु के पुत्र का नाम । ३ धर्म सार्वणि मन्वन्तर के मत्त ऋषियों में से एक । ४ ताम्र । ताँबा । ५ मिर्ब । ६ उस्तमन् ऋषि का एक नाम । ७ नारंगी का पीया [को०] ।

वरिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हलदी । २ हृद्दुर नाम का पीया ।

वरिस(७)—सज्ञा पुं० [सं० वरिष] दे० 'वर्षि' या 'वर्ष' । उ०—दरबार बरहे दिवस भइहुँ, वरिसहु भेटु न पावता ।—कीर्ति०, पृ० ४६ ।

वरिहिष्ठ—सज्ञा पुं० [सं०] १ उज्जीर । खस । २ सुगन्धला ।

चरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतावरी । सतावर । २ नूर्य की पत्नी । छाया ।

चरीता—वि० [सं० चरीतृ] दे० 'वरिता' [को०] ।

चरीमा—सज्ञा स्त्री० [सं० चरीमन्] दे० 'वरिमा' [को०] ।

चरायान्—वि० [सं० चरीयत्] १ श्रेष्ठ । २ अति युवा ।

चरायान्—सज्ञा पुं० १ कनिष्ठ ज्योतिष में विष्कम्भ आदि नक्षत्रों में से अठारहवाँ योग ।

विशेष—इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु दाता, मुद्र, मत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का होता है ।

२ पुलह ऋषि के एक पुत्र का नाम ।

चरीवद्—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'चलीवर्द' [को०] ।

चरीपु—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव ।

वरीसिय(७) - वि० [स० वरोयस्] प्रगाढ । घनघोर । बहुत बड़ा ।
उ०—मनु सहित उडगन नवग्रहनु मिल जुद्ध रच्चि वरीसिय ।—
सुजात०, पृ० १६ ।

वरीमणहार(७) वि० [स० वर्षण, हि० वरीमना + हार] वरसने-
देनेवाला । उ०—लक वरीमणहार मुण, दमकवर दुस मीह ।
—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ४६ ।

वरु—ग्रव्य० [अ० वल्कि, हि० वरुक, वरु] वल्कि । उ०—छेदि देहे
वरु निकलि जाउ, मोरे नामे भिखि मागि खाउ ।—विद्यापति,
पृ० १३ ।

वरुक—सज्ञा पु० [स०] एक मोटा अन्न । एक कदल [को०] ।

वरुट—सज्ञा पु० [स०] म्लेच्छों की एक जाति [को०] ।

वरुड—सज्ञा पु० [स०] बाँस, बेंत आदि से कुर्मो, चटाई आदि बनाने-
वाली एक जाति का नाम [को०] ।

वरुण—सज्ञा पु० [स०] १ एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति,
दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है ।
पुराणों में वरुण की गिनती दिक्पालों में है और वह पश्चिम
दिशा का अधिपति माना गया है । वरुण का अस्त्र पाश है ।

विशेष—बहुत प्राचीन वैदिक काल में वरुण प्रधान देवता थे, पर
क्रमशः उनकी प्रधानता कम होती गई और इंद्र को प्रधानता
प्राप्त हुई । वरुण अदिति के आठ पुत्रों में कहे गए हैं । निरुक्त-
कार इन्हें द्वादश आदित्यों में बतलाते हैं । ऋग्वेद में वरुण के
अनेक मंत्र हैं, जिनमें से कुछ के सवध में ऐतरेय ब्राह्मण में शुन-
शेफ की प्रसिद्ध गाथा है । इसके अनुसार 'हरिश्चंद्र वैवम' नामक
एक राजा ने पुत्रप्राप्ति के लिये वरुण की उपासना की । वरुण
ने पुत्र दिया, पर यह वचन लेकर कि उम्मी पुत्र से तुम मेरा यज्ञ
करना । पुत्र का नाम रोहित हुआ । जब वह कुछ बड़ा हुआ
और उसे यह पता चला कि मुझे वरुण के यज्ञ में ग्लिपशु बनना
पड़ेगा, तब वह जंगल में भाग गया । वहाँ उसे इंद्र घर लौटने
को बराबर मना करते रहे । अंत में राजा ने अजीर्गर्त नामक
एक ऋषि को मौ गौं देकर उनके पुत्र शुन शेफ को बलि के
लिये मोल लिया । जब शुन शेफ यूँ में बाँधा गया, तब वह
अपन छुटकारे के लिये प्रजापति, अग्नि, सविता आदि कई
देवताओं की स्तुति करने लगा । अंत में वरुण की स्तुति करने
से उसका उद्धार हुआ । ऋग्वेद में वरुण के कुछ मंत्र वेही हैं,
जिन्हें पढ़कर शुन शेफ ने स्तुति की थी ।

पुराणों में वरुण कश्यप के पुत्र कहे गए हैं । भागवत में लिखा है
कि चर्पली नाम्नी पत्नी से वरुण को भाद्र और वाल्मीकि नामक
दो पुत्र हुए थे । वरुण अब तक जल के देवता माने जाते हैं
और जलाशयोत्सर्ग में इनका पूजन होता है । साहित्य में ये
वरुण रस के अविष्ठाता माने गए हैं ।

पर्या०—प्रचेतस । पाशो । यादशापति । अपत्ति । अपत्ति । याद
पति । अपापति । जवूरु । सेवन । परजय । वारिलोम ।
कुडली ।

२. वरुणा का पेठ । ३. जल । पानी । ४. समुद्र (को०) । ५. आकाश

(को०) । ६. सूर्य । ७. एक ऋषि का नाम । ८. एक ग्रह का नाम
जिसे अंगरेजी में 'नेपचून' कहते हैं । (आधुनिक) ।

वरुणा—सज्ञा पु० [स०] वरुणा का वृद्ध ।

वरुणकुमार—सज्ञा पु० [स०] अगस्त्य ऋषि । उ०—उन वरुण-
कुमार अगस्त्य जी की स्तुति करने का फन हम कहाँ तक
कहे ।—वृहत्०, पृ० ७६ ।

वरुणगृहीत वि० [स०] जलोदर रोग से पीड़ित । जलोदर का
रोगी [को०] ।

वरुणग्रह—सज्ञा पु० [स०] घोड़ों का एक रोग जो अचानक हो
जाता है ।

विशेष—इस रोग में घोड़े का तालू, जीभ, आँख और लिङ्गद्रिय
आदि अंग काले रंग के हो जाते हैं । उसका शरीर भारी हो
जाता है और पसीना बहता है । यह रोग भयानक होता है
और बहुत यत्न करने पर घोड़े के प्राण बचते हैं ।

२ वरुण नाम का ग्रह । नेपचून ।

वरुणघृत—सज्ञा पु० [स०] घृत में बनी हुई एक औषध जो अश्मरी
(पथरी) रोग में दी जाती है ।

विशेष—इसमें वरुणा नामक पेठ की छाल को जल और घी में
जलाकर काय बनाया जाता है ।

वरुणदेव—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वरुणदेवत' [को०] ।

वरुणदेवत—सज्ञा पु० [स०] शतभिषा नक्षत्र ।

वरुणपाश—सज्ञा पु० [स०] १ वरुण का अस्त्रपाश या पंदा । २
नाक नामक जलजंतु । नक्र ।

वरुणप्रघास—सज्ञा पु० [स०] एक व्रत या वृत्त्य जो आषाढ़ या
श्रावण की पूर्णिमा के दिन किया जाता है ।

विशेष—इसमें लोग जी का सत्तू नकार रहे हैं । इस व्रत का
फल यह कहा गया है कि व्रत करनेवाला जल में डूबता नहीं
और उसे मगर, घड़ियाल आदि जलजंतु नहीं पकड़ते ।

वरुणप्रघासा—सज्ञा स्त्री० [स०] पति द्वारा पत्नी से उसके प्रेमियों
के बारे में पूछताछ की रीति । उ०—वरुणप्रघासा उम रीति
को कहते थे, जिसमें पति अपनी पत्नी से उसके प्रेमियों के बारे
में पूछता था ।—प्रा० भा० ५०, पृ० ६० ।

वरुणप्रस्थ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के पश्चिम
में था ।

वरुणमंडल—सज्ञा पु० [स० वरुणमण्डल] नक्षत्रों का एक मंडल
जिसमें रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद
और शतभिषा है । उ०—रेवती आदि सात नक्षत्र वरुणमंडल
के हैं ।—वृहत्०, पृ० १४६ ।

वरुणा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वरुणा' । उ०—वरुणा असी गग के
तीरा ।—बवीर सा०, पृ० १५६ ।

वरुणागुरुह—सज्ञा पु० [स० वरुणाङ्गुरुह] वरुणकुमार । अगस्त्य
मुनि का एक नाम [को०] ।

वरुणात्मज—सज्ञा पु० [स०] जमदग्नि ऋषि [को०] ।

वरुणात्मजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] वारुणी। सुरा। मदिरा। शराव।

विशेष—पुराणों में यह समुद्रमयन से उत्पन्न कही गई है।

वरुणादिगण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पेढों और पीयों का एक वर्ग।

विशेष—सुश्रुत में इस वर्ग के अतर्गत वरुन, नील भिटी, महिजन, जपती, मेढासीगी, पूतिका, नाटकरज, अग्निमय (अग्नेयू), चीता, शतमूली, बेल, अजशृंगी, डाम, वृहती और कटकारी (भटकटैया) हैं। (सुश्रुत)।

वरुणानी - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री।

वरुणालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वरुणावास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। [को०]।

वरुणावि - सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] वरुण से आविर्भूत, लक्ष्मी [को०]।

वरुणेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शतभिषा नक्षत्र। दे० 'वरुण दैवत' [को०]।

वरुणोद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वरुन्न—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] उपरना। उत्तरीय [को०]।

वरुल—वि० [मं०] १ मभक्त। वितरित। विभाजित। २ सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। [को०]।

वरुथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ तनुयाण। वक्तर। २ ढाल। ३ लोहे की चदर या सीकड़ी का बना हुआ आवरण या झूल जो शत्रु के आघात से रथ को रक्षित करने के लिये उसके ऊपर डाली जाती थी। ४ सैन्य। सेना। फौज। ५ एक प्राचीन ग्राम (रामायण)। ६ दन। झुड। समूह [को०]। ७ रक्षक। बचाव [को०]। ८ परवार [को०]। ९ कोयल। को कल [को०]। १० गृह। घर [को०]। ११ समय। काल [को०]।

वरुथप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

वरुथवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सेना। फौज [को०]।

वरुथाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] सेनापति।

वरुथिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। २ वंशाख वृष्टि एकादशी [को०]।

वरुथी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वरुथिन्। [स्त्री० वरुथिनी] १ हाथी की काठी। २ रक्षक। प्रहरी। [को०] ३ रक्षाम्यान या घेरा [को०]। ४ रथ [को०]।

वरुथी^२—वि० १ रथारूढ। २ कवच या कवच धारी। ३ सेना में घिरा हुआ या रक्षित। ४ रक्षक। बचानेवाला [को०]।

वरुनी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण। वरुनी। वरुण। उ०—सौ ब्राह्मण ने रुद्रया ले के वरुनी कराई। महादेव के नाम को जज्ञ किया। वेहीत जतन किए।—दो सौ बावन—भा० २, पु० ४५।

वरेंद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वरेंद्र १ राजा। २ इन्द्र। ३ बगल का एक भाग।

वरेंद्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वरेंद्री गौड देश [को०]।

वरें—अव्य० [हि०] परे। उपर।

वरेंण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वरें। भिड [को०]।

वरेंणुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] घनाज। अज [को०]।

वरेंण्य^१—वि० [मं०] १ प्रधान। मुख्य। २ उग्राणीय। पूजनीय। ३ जिसकी कामना की जाय [को०]।

वरेंण्य^२—सञ्ज्ञा पुं० १ भृगु के एक पुत्र का नाम। २ महादेव। ३ कुकुम। केसर। ४ पिठूणों का एक वर्ग [को०]।

वरेंश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पित्र [को०]।

वरोट—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ मरुवा। मरुवाक। २ मरुवा का पुण [को०]।

वरोरु—वि० स्त्री० [मं०] १ श्रेष्ठ जघोवाली। २ सुदृगी।

वरोरु—वि० स्त्री० [मं०] दे० 'वरोरु'।

वरोल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वरें। भिड। [को०]।

वरुं—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] कार्य। काम।

वरुंटे—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ हाथी का वचन जो लकड़ी का घना हुआ और काँटेदार होता है। २ काँटा। कील। ३ अगरी। अर्गल।

वरुंण—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] जवान बकरी। पठिया।

वरुंर^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ जवान पशु। २ बकरा। ३ भेड़ का वच्चा। मेमना। ४ आमोद प्रमोद। परिहाम।

यौ०—वरुंर कर्कर = मेढा, बकरा आदि बाँधने का चमड़े का फीता या रस्सी।

वरुंर^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] कार्यकर्ता। काम करनेवाला।

वरुंरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] जवान बकरी। पठिया [को०]।

वरुंराट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कटाक्ष। २ मध्याह्न के सूर्य की प्रभा। ३ स्त्री के कुच के किनारे लगा हुआ नखदान।

वरुंिंग कमिटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] कार्यकारिणी समिति। जैसे—कांग्रेस वरुंिंग कमिटी।

वरुंन्—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] फिल्लो। कील [को०]।

वर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। कोटि। गण। श्रेणी। २ आकार प्रकार में कुछ भिन्न, पर कोई एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। जैसे, अतिरिक्त वर्ग, शूद्र वर्ग, ब्राह्मण वर्ग। ३ शब्दगान्ध में एक स्थान से उच्चरित होनेवाला स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह। जैसे,—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, इत्यादि।

विशेष—ज्योतिष में स्वर अतस्थ और ऊष्म वर्ण भी (जैसे,—अ, य, श,) क्रमशः अवर्ग, यवर्ग और शवर्ग के अतर्गत रमे गए हैं। इस प्रकार ज्योतिष के व्यवहार के लिये सब वर्णों के विभाग 'वर्ग' के अतर्गत किए गए हैं और अवर्ग, वचवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, तथा शवर्ग के स्वामी प्राण, मूल, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और चंद्रमा कहे गए हैं।

४ ग्रंथ का विभाग। पच्छिद्देद। प्रकरण। अध्याय। ५ दो नमान अक्षों या राशियों का घात या गुणनफल। जैसे,—३ का ६, ५ का २५ (३ × ३ = ९। ५ × ५ = २५)। ६ वह चौड़ाई जो जिसकी तराई चौड़ाई बराबर और चारों कान समान हो। (रेखागणित)। ७ वृत्ति। मानव्य [को०]। ८ धर्म, धर्म तथा काम का निर्वाह [को०]।

वर्गचर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पढ़ना या पढ़िना मछली। पाठीन।

वर्गघन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वर्ग का घन।

वर्गण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गुणन। घात।

वर्गण—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुणन। घात। २ सचयन। एकत्रीकरण। राशि। ३ श्रेणी। विभाग। विभाजन [को०]।

वर्गपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह अक्षर जिसके घात से कोई वर्गाक्षर बना हो। वर्गमूल।

वर्गफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो। वह अक्षर जो किसी अक्षर को उसी अक्षर के साथ गुणा करने से आवे। जैसे,—५ का वर्गफल २५ होता है।

वर्गभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दो या अधिक वर्गों वा श्रेणियों का पारस्परिक अंतर। उ०—इसलिये वर्गभेद और द्वेप दिन पर दिन बढ़ता ही गया।—भा० ६० रु०, पृ० ६७।

वर्गमूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी वर्गाक्षर का वह अक्षर जिसे यदि उसी से गुणन करें, तो गुणन वही वर्गाक्षर हो। जैसे,—४ वर्गाक्षर का वर्गमूल २ और २५ का ५ होगा।

वर्गवर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वर्ग का वर्ग। जैसे,—३ का वर्ग ९ और उसका वर्ग ८१ (९ × ९) हुआ [को०]।

वर्गलाना—क्रि० सं० [फा० 'वरगला नीदन' से] १ कोई वाम करने के लिये उभारना। कुछ करने के लिये उत्तेजित करना। उकसाना। २ वहकाना। फुसलाना।

वर्गश—क्रि० वि० [सं० वर्गशस्] वर्गों के अनुसार। वर्गों के क्रम से [को०]।

वर्गस्थ—वि० [सं०] वर्ग के साथ रहनेवाला। पक्षपाती। नरफदार [को०]।

वर्गाक्षर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्गाक्षर] वह अक्षर जो किसी अक्षर का वर्ग हो [को०]।

वर्गात्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्गान्त्य] व्याकरण में वर्ग का अंतिम अक्षर। नासिक्य वर्ण।

वर्गाष्टक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] व्यंजनो के आठ वर्ग। जैसे, कवर्ग, चवर्ग आदि [को०]।

वर्गी^१—वि० [सं० वर्गिन्] किसी वर्ग या पक्ष में सबधित।

वर्गी^२—सञ्ज्ञा पुं० वर्ग का नेता [को०]।

वर्गीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओं को विभिन्न वर्गों में बाँटना [को०]।

वर्गीकृत—वि० [सं०] १ वर्गों में बाँटा हुआ। २ गणित में जिसका वर्ग किया गया हो [को०]।

वर्गीण—वि० [सं०] वर्गी। वर्ग से सबद्ध [को०]।

वर्गीय^१—वि० [सं०] किसी वर्ग से सबद्ध [को०]।

वर्गीय^२—सहपाठी [को०]।

वर्गीक्षम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फलित ज्योतिष में राशियों के वे श्रेष्ठ अश्व जिनमें स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

विशेष—चर राशि (मेघ, कर्कट, तुला, मकर) का प्रथम अश्व, स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) का पंचम अश्व और द्वायात्मक राशि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) का नवम अश्व वर्गों-

तम कहा जाता है। इसके अतिरिक्त राशियों का नवाक्ष भी वर्गीक्षम कहा जाता है।

२ नासिक्य वा अनुनासिक वर्ण। द० 'वर्गाक्ष्य' (को०)।

वर्ग्य^१—वि० [सं०] एक ही वर्ग, जाति या समूह में संबद्ध। (व्यक्ति, पदार्थ आदि)।

वर्ग्य^२—सञ्ज्ञा पुं० १ महयोगी। २ वर्गाय। सहाव्यायी [को०]।

वर्च स्थान—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] पाखाना। (परा० स्मृति)।

वर्चटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १ वेश्या। पातुर। २ एक प्रकार का धान [को०]।

वर्चस्—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] [वि० वर्चस्वान्, वर्चस्वी] १ स्व। २ तेज। काति। दीप्ति। ३ अन्न। ४ विद्या। ५ शक्ति। शौर्य (को०)। ६ शुक्र। वीर्य (को०)।

वर्चस्क—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ दीप्ति। तेज। २ विद्या। ३ शौर्य। शक्ति (को०)।

वर्चम्य—वि० [सं०] १ तेजवर्धक। २ रचक। दस्तावर (को०)।

वर्चस्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्चस्] १ शक्ति। २ प्रधान्य। उ०—मेरी प्रार्थना यह है कि वे महानुभाव जीवन को सर्वोत्कृष्ट में समझने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं जब वे काव्य या कला में घोर पदार्थमूलक उपयोगितावाद का ही वर्चस्व चाहने लगते हैं।—मुकुम, पृ० ७।

वर्चस्वान्—वि० [सं० वर्चस्वत्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ वर्चस्व युक्त। शक्तिमान्। २ तेजवान्। दीप्तियुक्त। समृज्ज्वल।

वर्चस्वा^१—वि० [सं० वर्चस्विन्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ तेजस्वी। दीप्तियुक्त। २ शौर्यशाली। शक्तिमान्।

वर्चस्वी^२—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] चंद्रमा।

वर्चा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्चस्] बुध। चंद्रमा का पुत्र [को०]।

वर्चाग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कब्ज। कोष्ठमृदाता [को०]।

वर्चाभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अतीसार [को०]।

वर्चासार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गुदा [को०]।

वर्चावानग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] द० 'वर्चाग्रह' [को०]।

वर्ज^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] परित्याग। छोटा देना [को०]।

वर्ज^२—वि० छोटा हुआ। परित्यक्त [को०]।

वर्जक—वि० [सं०] १ वर्जन करनेवाला। २ त्यागनेवाला [को०]।

वर्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोड़ना। २ ग्रहण या आचरण का निषेध। मनाही। मुमानियत। ३ हिंसा। मारण। ४ अपवाद (को०)।

वर्जना^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वर्जन। निषेध। मनाही। उ०—प्रभु की वह सौम्य वर्जना।—साकेत, पृ० ३५७।

वर्जना^२—क्रि० सं० [सं० वर्जन] १ वर्जना। मना करना। निषेध करना। २ त्यागना। छोड़ना।

वर्जनीय—वि० [सं०] १ छोड़ने योग्य। न ग्रहण करने योग्य। त्याज्य। २ निषेध के योग्य। निषिद्ध। मना।

वर्जयिता

वर्जयिता—वि० [स० वर्जयितृ] १ वर्जन करनेवाला । २ त्यागने-वाला । छोड़नेवाला ।

वर्जित—वि० [स०] १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । त्यक्त । २ जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो । अग्राह्य । निषिद्ध । जैसे,—कलि में नियोग वर्जित है । ३ रहित । जैसे, गुणवर्जित ।

वर्जिश—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० वर्जिश] दे० 'वरजिश' ।

वर्जि—वि० [स० वर्जिन्] दे० 'वर्जक' [को०] ।

वर्ज्य—वि० [स०] १ छोड़ने योग्य । त्याज्य । वर्जनीय । २ जिसका निषेध किया गया हो । जो मना हो । ३ अपवाद योग्य (को०) ।

वर्ज्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रमा की एक विशेष स्थिति जिसमें नया काम निषिद्ध होता है [को०] ।

वर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम । रंग । विशेष दे० 'रंग' । २ जनसमुदाय के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जो प्राचीन आर्यों ने किए थे । जाति ।

विशेष—इस शब्द का प्राचीन प्रयोग ऋग्वेद में है । वहाँ यह जनता के दो वर्गों आर्यों और दस्युओं को सूचित करने के लिये हुआ है । यह विभाग पहले रंग के आधार पर था, क्योंकि आर्य गोरे थे और दस्यु या अनार्य काले । पर पीछे यह विभाग व्यवसाय के आधार पर हुआ और चार वर्ण माने गए । पुरुष-सूक्त में चारों वर्णों की उत्पत्ति का आलंकारिक रूप से इस प्रकार वर्णन है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से, क्षत्रिय बाहु से, वैश्य जघे से और शूद्र पैर से उत्पन्न हुए । इस व्यवस्था के अनुसार 'वर्ण' शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से बताई जाती है, जिसका अर्थ है 'जुनना' । अतः 'वर्ण' शब्द का अर्थ हुआ व्यवसाय । स्मृतियों में भिन्न भिन्न वर्णों के धर्म निरूपित हैं । जैसे, ब्राह्मण का धर्म—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म—प्रजारक्षा, दान, यज्ञानुष्ठान और अध्ययन, वैश्य का धर्म—पशुपालन, कृषि, दान, यज्ञ और अध्ययन, शूद्र का धर्म—तीनों वर्णों की सेवा । व्यवसायभेद और सब देशों में भी चला आ रहा है, पर भारतीय आर्यों की लोकव्यवस्था में वह व्यवसायों के विचार से जातिगत या जन्मना माना गया है । इसी 'वर्ण' और 'आश्रम' की व्यवस्था को भारतीय आर्य अपना विशेष लक्ष्य मानते थे और अपने धर्म को 'वर्णाश्रम धर्म' कहते थे ।

३. भेद । प्रकार । किस्म । ४. आकारादि शब्दों के चिह्न या सकेत अक्षर । ५. गुण । ६. यश । कीर्ति । ७. स्तुति । बड़ाई । ८. स्वर्ण । सोना । ९. मृदग का एक ताल जो चार प्रकार का होता है—पाट, विधि पाट, कूट पाट और खड पाट । १०. रूप । ११. अंगराग । विलेपन । १२. कुकुम । केसर । १३. चित्र । तसवीर । १४. रंग । रोगन (को०) । १५. रंग ढग । आकृति । आक्षेप रूप (को०) । १६. पोशाक । वेशभूषा (को०) । १७. एक

प्रकार का ढीला ढाला अंगरखा । लबादा (को०) । १८. ढक्कन । आवरण (को०) । १९. हाथी की झूल (को०) । २०. उपवास । व्रत (को०) । २१. अज्ञात राशि (को०) । २२. एक की संख्या (को०) । २३. एक माप (को०) । २४. एक गंध-द्रव्य (को०) ।

वर्णकट—सञ्ज्ञा पु० [स० वर्णकट] तृतीया ।

वर्णक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ हरताल । २ अनुलेपन । उबटन । ३ चदन । ४ पिमी हुई हल्दी आदि जो देवताओं को चढाई जाती है । ५ मडल । ६ चारण । ७ रंग । ८ अभिनेताओं के परिधान या परिच्छेद । ९ चित्रकार । १० विभाग । अध्याय । परिच्छेद (को०) । ११ सिंदूर (को०) । १२ चित्रलेखन (को०) । १३ ढाँचा । रूपरेखा (को०) । १४ अक्षर । वर्ण । १५ वक्ता । व्याख्याता (को०) । १६ कलम । लेखनी । उ०—ललितविस्तर के अध्याय १० (अंग्रेजी अनुवाद, पृ० १८१-१८५) में बुद्ध का लिपिशाला में जाकर अध्यापक विश्वामित्र से चदन की पाटी पर वर्णक (कलम) से लिखना सीखने का वृत्तान्त मिलता है ।—भा० प्रा० लि०, पृ० ६ ।

वर्णका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ नृत्यादि के समय अभिनेताओं का परिच्छेद या परिधान । २ रंग । रोगन । ३ उच्च कोटि का सोना । ४ सेंदुर । ईशुर [को०] ।

वर्णकवि—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुवेर के एक पुत्र का नाम [को०] ।

वर्णकूपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दावात । मसिपात्र [को०] ।

वर्णक्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अक्षरानुक्रम । २ जाति या रंगों का क्रम [को०] ।

वर्णखंडमेरु—सञ्ज्ञा पु० [स० वर्णखण्डमेरु] पिंगल या छंदशास्त्र में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए मेरु का काम निकल जाता है । अर्थात् यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु और कितने लघु होंगे ।

विशेष—जितने वर्णों का खंडमेरु बनाना हो, उतने से एक कोष्ठ अधिक बाईं से दाहिनी ओर को बनावे । फिर उन्हीं कोष्ठों के नीचे पहला स्थान छोड़कर दूसरे स्थान से आरंभ करके ऊपर से एक कोष्ठ कम बनावे । इसी प्रकार उसी स्थान से नीचे एक कोष्ठ कम बराबर बनाता जाता जाय, जब तक एक कोष्ठ न आ जाय । इन कोष्ठों को इस प्रकार भरे, कोष्ठों की पहली पक्ति में बाईं ओर से सब में एक एक का अक्षर लिखे । दूसरी पक्ति के पहले कोष्ठ से आरंभ करके क्रमशः २, ३, ४, ५, ६, आदि अतः तक लिख जाय । इसके अनंतर कोष्ठों की प्रथम पक्ति के तीसरे अक्षर से उत्तरोत्तर नीचे की ओर वक्रगति से अक्षरों को जोड़कर अगले खानों में रखता जाय । अंतिम कोष्ठों में जो अक्षर होंगे, वे लघु गुरु के हिसाब से वृत्तों के भेद सूचित करेंगे । उदाहरणार्थ आठ वर्णों का खंडमेरु बनाना हो, तो इस प्रकार करे—

वर्णखण्डमेरु की आकृति—

१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२	३	४	५	६	७	८	
	३	६	१०	१५	२१	२८		
	४	१०	२०	३५	५६			
	५	१५	३५	७०				
	६	२१	५६					
	७	२८						
	८							

वर्ण वृत्तो मे एक भेद ऐसा होगा जिसमे सब गुरु होंगे, और एक ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होंगे अतः सर्वगुरु से आरम्भ करके एक एक गुरु घटाते जायें, तो भेदों की संख्या इस प्रकार होगी । १ भेद ऐसा होगा, जिसमे सब (८) गुरु होंगे । ८ भेद ऐसे होंगे जिनमे १ लघु और ७ गुरु होंगे । ८ भेद ऐसे होंगे जिनमे २ लघु और ६ गुरु होंगे । ५६ भेद ऐसे होंगे, जिनमे ३ लघु और ५ गुरु होंगे । ७० भेद ऐसे होंगे, जिनमे ४ लघु और ४ गुरु होंगे । ५६ भेद ऐसे होंगे, जिनमे ५ लघु और ३ गुरु होंगे । २८ भेद ऐसे होंगे, जिनमे ६ लघु और २ गुरु होंगे । ८ भेद ऐसे होंगे जिनमे ७ लघु और १ गुरु होगा । एक भेद ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होंगे ।

वर्णगत—वि० [स०] १ रगिन । रग या वर्ण युक्त । २ वीज गणित सबधी [को०] ।

वर्णगुरु—सञ्ज्ञा पु० [स०] राजा का पुत्र । राजकुमार । राजा [को०] ।

वर्णग्रथणा—सञ्ज्ञा पु० [स०] पद्यरचना की एक पद्धति [को०] ।

वर्णचारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] चित्रकार [को०] ।

वर्णचित्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] रंगों के द्वारा बना चित्र । रंगीन चित्र । उ०—इस काल मे भी वर्णचित्र और रेखाचित्र भी बने जरूर होंगे ।—भा० इ० ८०, पृ० ३७ ।

वर्णल्येष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] सब वर्णों मे बड़ा, ब्राह्मण ।

वर्णतर्क—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वर्णतर्किका] चटाई या विद्याने के काम मे प्रयुक्त ऊनी वस्त्र । ऊन की दरी [को०] ।

वर्णतूलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह कुँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते हैं । कलम ।

वर्णतूलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्णतूलि' ।

वर्णतूलो—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चित्र बनाने की कुँची । दे० 'वर्णतूलि' ।

वर्णदं—सञ्ज्ञा पु० [स०] कालीयक । एक प्रकार की पीली लकड़ी [को०] ।

वर्णदं—वि० रंग देनेवाला । रंगनेवाला [को०] ।

वर्णदात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हरिद्रा । हल्दी [को०] ।

वर्णदूत—सञ्ज्ञा पु० [स०] लिपि । लेख ।

वर्णदूषक—सञ्ज्ञा पु० [स०] अपने ससर्ग से हमरे को जातिभ्रष्ट करनेवाला । पक्षिदूषक । पक्षित मनुष्य ।

वर्णधर्म—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्णों या जातियों का पृथक् पृथक् धर्म । जातिधर्म [को०] ।

वर्णधर्मा—वि० [स० वर्णधर्मिन्] वर्णव्यवस्था को माननेवाला । वर्णों के धर्म मे विश्वास रखनेवाला । उ०—यह मर्यादा उन आर्य, अनार्य, अनुलोम, सकर सभी पर लागू हो, जो वर्णधर्मा हो ।—वैशाली०, पृ० ३४० ।

वर्णधातु—सञ्ज्ञा पु० [स०] गेरु, ईंगुर आदि रंग के काम मे आनेवाली धातु ।

वर्णन—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १ चित्रण । रंगना । २ किसी बात को सविस्तार कहना । कथन । बयान । उ०—पौ चौबीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार ।—सूर (शब्द०) । ३. स्तवन । प्रशंसा । गुणकथन । तारीफ । ४ लिखना । लेखन [को०] ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वर्णनष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] पिंगल या छंद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिमाव से कैसा होगा ।

विशेष—जितने वर्णों के प्रस्तार के किसी भेद का रूप निकालना हो, उतने लघु के चिह्न लिखकर उनके सरे पर क्रमशः वर्णोंद्विष्ट अक्ष (१ से आरम्भ करके क्रमशः दूने दूने अक्ष) लिखे । फिर अंतिम अक्ष का दूना करके उसमे से पूछी हुई संख्या घटावे । जो अक्ष शेष रहे, वह जिन जिन उद्दिष्टा के याग से बना हो, उनके नीचे की लघु मात्राओं के चिह्नों को गुरु कर दे । जो रूप सिद्ध होगा, वही उत्तर होगा । जैसे,—किसी ने पूछा कि चार वर्णों के प्रस्तार मे तेरहवें भेद का रूप क्या होगा ? इसके लिये हमने यह क्रिया की—

१	२	४	८

अंतिम अक्ष ८ का दूना १६ हुआ । उसमे से १३ घटाया, तो ३ रहा । अब हमने देखा कि ३ संख्या ऊपर दिए हुए उद्दिष्टाओं में से १ और २ जोड़ने से आ जाती है । अतः उनके नीचे गुरु बनाया तो यह रूप SSII सिद्ध हुआ ।

वर्णना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ गुणकथन । २ चित्रकारी । ३ व्याख्या । किसी विषय का व्योरेवार कथन । ४ लेखन [को०] ।

वर्णनातीत—वि० [स०] जिसका वर्णन न हो सके । अवर्णनीय [को०] ।

वर्णनात्मक—वि० [स०] वर्णनप्रधान । जिसमे वर्णन की प्रमुखता हो ।

वर्णन संबंधी । उ०—ऐसी अलङ्कृत भाषा में जो भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न रीतियों से चमत्कृत हो—वर्णनात्मक रीति से नहीं वरन् कार्यात्मक रीति से ।— पा० सा० सि०, पृ० ३ ।

वर्णनाश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] निरुक्तकार के अनुसार शब्द में किसी वर्ण का नष्ट हो जाना । जैसे,—‘पृषोदर’ शब्द में ‘पृषतोदर’ शब्द के ‘त’ का नाश पाया जाता है ।

वर्णनीय—वि० [सं०] १ चित्रण करने योग्य । २ वर्णन करने योग्य [को०] ।

वर्णपताका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पिंगल या छंद शास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा (पहला, दूसरा या तीसरा आदि) ऐसा है, जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे ।

वर्णपत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ लघु तत्प । २ रग रखने का पात्र ।

वर्णपरचय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ श्रुतियों का बोध करानेवाली पुस्तक । २ संगीत का ज्ञान [को०] ।

वर्णपरिध्वंस—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जातिच्युति । जातिभ्रंश [को०] ।

वर्णपात—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० ‘वर्णनाश’ ।

वर्णपाताल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पिंगल या छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णों के कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उन वृत्तों में से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वत तथा कितने सर्वगुरु और कितने सर्वलघु होंगे ।

विशेष—जितने वर्णों का पाताल बनाना हो, उतनी ही खड़ी रेखाएँ और उन्हें काटती हुई पाँच आड़ी रेखाएँ खींचे । इस प्रकार कोष्ठ बन जाने पर कोष्ठों की पहली पंक्ति में क्रम से १, २, ३, ४ आदि अंक भरे । दूसरी पंक्ति में २, ४, ८, १६ आदि वर्णसूची के अंक लिखे । तीसरी पंक्ति में सूची के अंकों के आधे लिखे, और चौथी पंक्ति में पहली और तीसरी पंक्ति के अंकों का गुणनफल लिखे । उदाहरण के लिये ६ वर्णों का पाताल इस प्रकार होगा ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	वर्णसंख्या ।
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	सर्वसंख्या ।
१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	लघ्वादि, लघ्वत, गुर्वादि, गुर्वत ।
१	४	१२	३२	८०	१६२	४४८	१०२४	२३०४	सर्वगुरु, सर्वलघु ।

इस पाताल से विदित हुआ कि ६ वर्णों के ५१२ वृत्त हो सकते हैं । इन वृत्तों में २५६ ऐसे वृत्त होंगे, जिनके आदि में लघु होंगे, २५६ ऐसे होंगे, जिनके अंत में लघु होंगे, फिर २५६ ऐसे होंगे जिनके आदि में गुरु होंगे, और २५६ ऐसे होंगे, जिनके अंत में गुरु होंगे । सब वृत्तों में कुल मिलाकर २३०४ गुरु और २३०४ लघु होंगे ।

वर्णपात्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० ‘वर्णपत्र’ [को०] ।

वर्णपुर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शुद्ध राग का एक भेद ।

वर्णपुष्प—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ पारिजात । २ राजतरुणी नाम का फूल का वृक्ष [को०] ।

वर्णपुष्पक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० ‘वर्णपुष्प’ [को०] ।

वर्णप्रकर्ष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ रग की विशिष्टता । २ जाति की उत्तमता [को०] ।

वर्णप्रणाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण + प्रणाली] वर्णों या जातियों में एक क्रम के स्थापन की पद्धति । वर्णव्यवस्था । उ०—ग्रन्थ-विधियों के विस्तार के साथ ही साथ उस वर्णप्रणाली का भी विकास और सगठन होने लगा जिसमें ब्राह्मणों को सामाजिक एवं धार्मिक श्रेष्ठता प्राप्त हुई ।—सत० दरिया (भू०), २० ५३ ।

वर्णप्रत्यय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छंद शास्त्र या पिंगल में वे क्रियाएँ जिनके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णवृत्तों के कितने भेद हो सकते हैं और उनके स्वरूप क्या होंगे, इत्यादि ।

विशेष—जिस प्रकार मात्रिक छंदों में ६ प्रत्यय होते हैं, उसी प्रकार वर्णवृत्तों में भी ६ प्रत्यय होते हैं—प्रस्तार, सूची, पाताल, उद्दिष्ट, नष्ट, मेरु, खड्मेरु, पताका और मर्कटी ।

वर्णप्रसादन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] अंगुर [को०] ।

वर्णप्रस्तार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पिंगल या छंद शास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे ।

विशेष—जितने वर्णों का प्रस्तार बढ़ाना हो, उतने वर्णों का पहला भेद (सर्वगुरु) लिखे । फिर गुरु के नीचे लघु लिखकर शेष ज्यों का त्यों लिखे । फिर सबसे बाईं ओर के गुरु के नीचे लघु लिखकर आगे ज्यों का त्यों लिखे, और बाईं ओर जितनी न्यूनता रहे, उतनी गुरु से भरे । यह क्रिया अत तक अर्थात् सर्वलघु भेद के आने तक करे । उदाहरण के लिये तीन वर्णों का प्रस्तार इस प्रकार होगा—

रूप	भेद
S S S	पहला
l S S	दूसरा
S l S	तीसरा
l l S	चौथा
S S l	पाँचवाँ
l S l	छठा
S l l	सातवाँ
l l l	आठवाँ

इस प्रस्तार से प्रकट हुआ कि तीन वर्णों के आठ ही भेद हो सकते हैं, अर्थात् आठ ही प्रकार के वृत्त बन सकते हैं, अधिक नहीं ।

वर्णबुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षर या ध्वनिजन्य सबद्ध आशय अथवा बोध [को०] ।

वर्णभिनन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] संगीत का एक ताल [को०] ।

वर्णभीरु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० ‘वर्णभिनन’ [को०] ।

वर्णभेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] शरीर के वर्ण या जाति के कारण होने-
वाला भेदभाव [को०] ।

वर्णभेद्विनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मोटा अन्न जिसमें बाजरा, कोदो,
मडुवा, जोन्हरी आदि हैं [को०] ।

वर्णमञ्चिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वर्णमञ्चिका] सगीत का एक
ताल [को०] ।

वर्णमकटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पिगल या छद शास्त्र में एक क्रिया
जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के इतने वृत्त
हो सकते हैं, जिनमें इतने गुर्वाद, गुर्वत और इतने लघ्वाद
लघ्वत होंगे, तथा सब वृत्तों में मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु,
लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिंड (= दो कल) होंगे ।

विशेष—जितने वर्ण हो, उतने खाने बाएँ से दाहिने बनावे । फिर
उन खानों के नीचे उतने ही खानों की छह पत्तियाँ और
बनावे । कोष्ठों की पहली पक्ति में १, २, ३, आदि अक्षर लिखे,
दूसरी में वर्णसूची के अक्षर (२, ४, ८, १६ आदि) लिखे,
तीसरी पक्ति में दूसरी पक्ति के अक्षरों के आधे अक्षर भरे,
चौथी में पहली और दूसरी पक्ति के अक्षरों के गुणफल
लिखे, पाँचवीं में चौथी पक्ति के आधे अक्षर भरे, छठी
पक्ति में चौथी और पाँचवीं पक्ति के अक्षरों का योग लिखे,
और सातवीं पक्ति में छठी पक्ति के आधे अक्षर भरे ।
उदाहरण के लिये छह वर्णों की मकटी इस प्रकार होगी ।

१	२	३	४	५	६	वर्णमख्या
२	४	८	१६	३२	६४	वृत्तों की संख्या
१	२	४	८	१६	३२	गुर्वाद, गुर्वत, लघ्वाद, लघ्वत
२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण
१	४	१२	३२	८०	१६२	गुरु लघु
३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला
१३	६	१८	४८	१२०	२८८	पिंड

इस मकटी से प्रष्ट हुआ कि ६ वर्णों के ६४ वृत्त हो सकते हैं ।
३२ वृत्त ऐसे होंगे जिनके आदि में गुरु, ३२ ऐसे जिनके अंत में
गुरु, ३२ ऐसे जिनके आदि में लघु और ३२ ही ऐसे जिनके अंत
में लघु होंगे । सब वृत्तों को मिलाकर ३८४ वर्ण होंगे, इत्यादि,
इत्यादि ।

वर्णमाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वर्णमातृ] कलम । लेखनी [को०] ।

वर्णमातृका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती । विद्या देवी । २ वर्ण
माला [को०] ।

वर्णमाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अक्षरों के रूपों की यथाश्रेणी लिखित
सूची । किन्नी भाषा में आनेवाले सब हरेफ जो ठीक सिलसिले

से रखे हो । जैसे देवनागरी में अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ
ए ऐ ओ औ ।

फ	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
अ	इ			

वर्णपति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सगीत में एक एक ताल का नाम [को०] ।

वर्णरेखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] खडिया मिट्टी [को०] ।

वर्णलेखा, वर्णलेखिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] खडिया [को०] ।

वर्णवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी ।

वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. चित्र बनाने की कुँची
या कलम । २ पेसल [को०] ।

वर्णवादी—सञ्ज्ञा पु० [स० वर्णवादित्व] स्तुतिपाठक । वदीजन
चारण । वतालिक [को०] ।

वर्णविकार—सञ्ज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दों में एक वर्ण
का विगड़कर दूसरा वर्ण हो जाना । जैसे 'हल्दी' शब्द में
'हरिद्रा' के 'र' का 'ल' हो गया है । 'द्वादश' के 'द' का 'वारह'
शब्द में 'र' हो गया है ।

वर्णविक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जातिगत विद्वेष । किमी जाति के
प्रति दुर्भावना [को०] ।

वर्णविचार—सञ्ज्ञा पु० [स०] भाषा के व्याकरण का वह अंश जिसमें
वर्णों के आकार, उच्चारण और मधि आदि के नियमों का
वर्णन हो ।

विशेष—प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था और
व्याकरण से विल्कुल स्वतंत्र माना जाता था ।

वर्णविन्यास—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ रूपयोजना । चित्रण । रूपाकन ।
२ अक्षरों की योजना । वर्णों का चुनाव । उ०—जिस प्रकार
की रूपरेखा या वर्णविन्यास से किसी की तदाकार परिणति
होती है, उसी प्रकार की रूपरेखा या वर्णविन्यास उसके लिये
सुंदर है ।—रस०, पृ० ३० । ३ वर्णनवृत्ति । हिज्जे ।

वर्णविपर्यय—सञ्ज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दों में वर्णों
का उलटफेर हो जाना । जैसे, 'हिम' शब्द से बने 'सिंह' शब्द
में हुआ है ।

वर्णविभाग—सञ्ज्ञा पु० [स०] १० 'वर्णव्यवस्था' ।

वर्णविलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी ।

वर्णविलोडक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ काव्य का चोर । काव्यार्थचोर ।
रचना का चोर । २ सेंध खोलकर चोरी करनेवाला ।
संधिया चोर [को०] ।

वर्णविवृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वर्णविन्यास । हिज्जे [को०] ।

वर्णवृत्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णव्यतिक्राता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वर्णव्यतिक्रान्ता] वह औरत जो अपने से नीची जातिवाले के साथ सवध करे [को०]।

वर्णव्यवस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वर्णों के आधार पर समाज की योजना एवं सघटन। विशेष दे० 'वर्ण'। उ०—ऋग्वेद के समय तक वर्णव्यवस्था कायम नहीं हुई थी।—हिंदू० सम्यता पृ० ३३।

वर्णवैचित्र्य—सञ्ज्ञा पुं० [स० वर्ण + वैचित्र्य] रंगों की विचित्रता। विविध रंगों का अनूठापन। वर्णों के संयोजन का अनूठापन। उ०—बाहर नयनाभिराम रूपरेखा, विकसित वर्णवैचित्र्य, चमक दमक इत्यादि हैं तो भीतर सौंदर्य की मादक अनुभूति, प्रेमोल्लास, स्वप्न, दर्शनपिपासा, इत्यादि।—रस०, पृ० ७४।

वर्णश्रेष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण।

वर्णसकर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वर्णमङ्कुर] १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो।

विशेष—स्मृतियों में ऐसी बहुत सी जातियाँ गिनाई गई हैं। इस विषय में एक दूसरे के मत भी नहीं मिलते। वर्णसकर दो प्रकार के कहे गए हैं, अनुलोमज और दूसरा प्रतिलोमज। अनुलोमज का पिता माता से श्रेष्ठ वर्ण का होता है और प्रतिलोमज की माता पिता से श्रेष्ठ वर्ण की होती है। प्रतिलोमज सकर प्राचीन काल में निषिद्ध माने जाते थे। अनुलोम विवाह का प्रचार प्राचीन काल में था, पर पीछे बद हो गया। धर्मशास्त्रों में यद्यपि वर्णमकरता के ये कारण गिनाए गए हैं—(१) व्यभिचार, (२) अवेद्याविद्वान और (३) स्वकर्मत्याग, पर लोक में अतिम बात पर ध्यान नहीं दिया जाता।

२ वह व्यक्ति जो ऐसे स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ हो, जो वर्णानुसार विवाह न हो। व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य। दोगला।

वर्णसघात—सञ्ज्ञा पुं० [स० वर्णमङ्कुरात] वर्णमाला। वर्णसमाम्नाय। अक्षरगमूह [को०]।

वर्णसंयोग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] किसी एक जाति के भीतर परस्पर विवाह सवध [को०]।

वर्णसंसर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जातियों का घालमेल। दूसरी जाति में विवाह नवव [को०]।

वर्णसंहार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ प्रतिमुख संधि के तरह अंगों में एक। २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों के लोगों का एक स्थान पर सम्मेलन। (नाट्यशास्त्र)।

विशेष—भरत नाट्यशास्त्र के व्याख्याता अभिनवगुप्त (अभिनव भारती) का मत है कि नाटक के विभिन्न पात्रों के एक स्थान पर सम्मेलन को वर्णसंहार कहना चाहिए।

वर्णसमाम्नाय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वर्णमाला।

वर्णसि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ जल। पानी। २. कमल [को०]।

वर्णसूची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छंद शास्त्र या पिंगल में एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अत लघु और आदि अत गुरु की संख्या जानी जाती है।

विशेष—जितने वर्णों की सूची देखनी हो उतने वर्णों की संख्या तक क्रम से २, ४, ८ इत्यादि अर्थात् उत्तरोत्तर दूने अंक लिखे। इस क्रिया के अंत में जो संख्या आएगी, वह वृत्तभेद की संख्या होगी। अत के अंक से बाईं ओर जो अंक होगा, उतने आदिलघु और अतलघु तथा आविगुरु और अंतगुरु होंगे। फिर उससे भी बाईं ओर अर्थात् अत से तीसरे कोष्ठ में जो अंक होगा उतने ही आद्यत लघु और आद्यत गुरु वृत्त होंगे। उदाहरणार्थ ४ वर्णों की सूची यह है—

२	४	८	१६
	आद्यत लघु आद्यत गुरु	आदि लघु अत लघु आदि गुरु अंत गुरु	सब वृत्त

वर्णस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वर्णों के उच्चारण का स्थान, कंठ, गला आदि [को०]।

वर्णहीन—वि० [म०] जाति से वहिष्कृत [को०]।

वर्णांका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वर्णाङ्का] कलम। लेखनी।

वर्णांतर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वर्णान्तर] दूसरा वर्ण। दूसरी जाति [को०]।

यौ०—वर्णांतर गमन = (१) अन्य वर्ण में जाना। जाति या धर्म परिवर्तन। (२) व्याकरण में वनि या अक्षर का बदलना।

वर्णा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] अरहर।

वर्णागम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] व्याकरण में किसी शब्द के बीच किसी वर्ण का आगम होना। जैसे,—'हय' शब्द में ह के ऊपर अनुस्वार का आगम हो जिससे इस शब्द का व्युत्पन्न रूप 'हस' हो जाता है। (निरुक्त)।

वर्णाट—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ चित्रकार। गायक। ३ स्त्री के द्वारा उपाजित धन में जीविका करनेवाला। ४ प्रेमी [को०]।

वर्णात्मक वि० [स०] वर्णमय। वर्णरूप। उ०—दूसरा वर्णात्मक शब्द वर्णविन्यास युक्त होता है।—रस क०, (भू०), पृ० २।

वर्णात्मा—सञ्ज्ञा प्र० [म० वर्णात्मन्] शब्द [को०]।

वर्णाधम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो वर्णों वा जातियों में निम्न श्रेणी का हो।

वर्णाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार ब्राह्मणादि वर्णों के अधिपति ग्रह।

विशेष—ब्राह्मण के अधिपति बृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भीम और रवि, वैश्य के चंद्र, शूद्र के बुध और अत्यज के शनि माने जाते हैं।

वर्णानुप्रास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक शब्दालंकार विशेष : दे० 'अनुप्रास'।

वर्णापसद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जातिच्युत व्यक्ति [को०]।

वर्णापेत—वि० [स०] वर्णहीन । जातिच्युत [को०] ।

वर्णाहि—सञ्ज्ञा पु० [स०] मूँग [को०] ।

वर्णावकृष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] शूद्र [को०] ।

वर्णावर—वि० [स०] निम्न जाति का [को०] ।

वर्णावली—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णमाला' । उ०—हमारी सरकार से वहाँ की एक दूमरी ही भाषा और वर्णावली स्वीकार की जाती है ।—प्रेमघन, भा० २, पृ० ४१४ ।

वर्णाश्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्ण और आश्रम । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम । उ०—वर्णाश्रम की नव स्फुरित ज्योति, नूतन विलाम ।—अपरा, पृ० २०१ ।

यौ०—वर्णाश्रम गुरु = शिव । वर्णाश्रम धर्म = वर्णों और आश्रमों के कर्तव्य ।

वर्णि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ स्वर्ण । सोना । २. बलि । ३ सुगन्धित श्रगराग [को०] ।

वर्णिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] लेखक ।

वर्णिक^२—वि० वर्ण से सबब रखनेवाला । जैसे, वर्णिक वृत्त ।

वर्णिकवृत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह वृत्त या छंद जिसके प्रत्येक चरण के वर्णों की संख्या और लघु गुरु के स्थान समान हों ।

वर्णिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कठिनी । खडिया । २ मसि । स्याही । ३ सोने का पानी । ४ चद्रमा । ५ विलेपन । ६ नट की वेशभूषा या पहनावा । अभिनेताओं का परिच्छद या पोशाक [को०] । ७ चित्र में विशिष्ट वर्णों या रंगों का संयोजन [को०] ।

वर्णित—वि० [स०] १ कथित । कहा हुआ । २ जिसका वर्णन हो । बयान किया हुआ । ३ चित्रित । अंकित [को०] । ४ प्रशंसित स्तुत [को०] ।

वर्णिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ स्त्री । नारी । २ चार वर्णों में से किसी एक वर्ण की स्त्री । ३ हरिद्रा हल्दी [को०] ।

वर्णिलिङ्गी—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्णिलिङ्गिन् ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण करनेवाला व्यक्ति [को०] ।

वर्णी^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्णिन् १ लेखक । २ चित्रकार । ३ ब्रह्मचारी । उ०—बाण के अनुसार निम्नलिखित संप्रदाय अधिक प्रचलित थे । * भागवत, वर्णी (ब्रह्मचारी) आदि ।—प्रायः भा०, पृ० ४५२ । ४ चारों वर्णों में से किसी वर्ण का व्यक्ति [को०] ।

वर्णी^२—वि० १ विशेष आकृति या रंगवाला । जैसे, देववर्णी । २ किसी जाति से सबब रखनेवाला ।

वर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक नदी का नाम । बन्नू । आदित्या । २ बन्नू नामक देश । ३ सूर्य ।

वर्णोदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] रंगीन जल । रंग मिला हुआ पानी [को०] ।

वर्णादृष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि श्रमुक सख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है ।

विशेष—जो भेद दिया गया हो, उसमें लघु गुरु के ऊपर क्रम से दूने अक्ष अर्थात् १, २, ४, ८ इत्यादि लिखे । फिर लघु के ऊपर जितने अक्ष हो, उन्हें जोड़कर उसमें १ और जोड़ दें । जैसे,—किसी ने पूछा कि चार वर्ण के वृत्तों में ॥९९ कौन सा भेद है तो यह क्रिया की—

१	२	४	८
।	।	९	९

अब लघु वर्णों के ऊपर अक्ष (१+२) जोड़ने से ३ हुए । इससे विदित हो गया कि यह चौथा भेद है ।

वर्ण्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुकुम्भ । २ वनतुलसी । बवई । ३ प्रस्तुत विषय । ४ उपमेय ।

वर्ण्य^२—वि० १ वर्णन के योग्य । २ जो वर्णन का विषय हो । उ०—वर्ण्य वस्तु और वर्णन प्रणाली बहुत दिनों से एक दूसरे से अलग कर दी गई है ।—रस०, पृ० ५० ।

वर्ण्यमान—वि० [स०] वर्ण्यमान् जिसका वर्णन या उल्लेख किया जा रहा हो । उ०—उमके अंत करण में यह दृढ सस्कार होना चाहिए कि वर्ण्यमान नदी, पर्वत तथा वन के समुख वह स्वयं उपस्थित होकर उसकी शोभा देख रहा है ।—हि० भा० पं०, पृ० ६६ ।

वर्ण्यविषय—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह विषय जिसका वर्णन किया जाय या किया गया हो । उ०—तीसरे अध्याय में उपर्युक्त कवियों की रचनाओं तथा उनके वर्ण्य विषय का परिचय दिया गया है ।—अकवरी०, पृ० ६ ।

वर्ण्यसम—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का हेत्वाभास [को०] ।

वत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] जोविका । आहार । समाभ्रात में प्रयुक्त, जैसे, कल्यवत्त [को०] ।

वर्तक^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बटुवा । २ नर बटेर । ३ घोड़े का खुर । ४ एक प्रकार का पीतल या काँसा [को०] ।

वर्तक^२—वि० १ रहनेवाला । अस्तित्वयुक्त । २ अनुरक्त [को०] ।

वर्तका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० बटेर ।

वर्तकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्तका' ।

वर्तजन्मा—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्तजन्मन् वादल । मेघ [को०] ।

वर्ततोदण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वर्तलोह' । २ एक प्रकार का पातल या काँसा धातु [को०] ।

वर्तन^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० वर्तित] १ बरताव । व्यवहार । २ व्यवसाय । जोवनोपाय । वृत्ति । रोजी । ३ फेरना । घुमाना । बटना । ४ परिवर्तन । फेर फार । ५ स्थिति । ठहराव । ६ स्थापन । रखना । ७ मिल बट्टे से पीसना । पेपण । बटना । ८ वर्तमान । ९ चरखे की वह लकड़ी जिसमें तक्ला लगा रहता है । १० बटलोई । बकला । ११ पात्र । बरतन । १२ घाव में सलाई डालकर हिलाना डुलाना, जिससे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है । शल्यकर्म कर्म । १३ विष्णु । १४ कौश्या । १५ गोल । वर्तुल । गेंद [को०] । १६ वामन । बीना [को०] । १७. रजन । लगाना ।

मंदोदित करना । १८ बोड़े के लोहने की जाह (को०) । १९. देन । धृति (को०) । २० वक्ता । तर्क (को०) । २० कवच (को०) । २२ प्रायः स्थित उच्च । बारबार कहा हुआ उच्च (को०) ।

वर्तन—वि० १. रहनेवाला । ठहरनेवाला । २. घबरा । घटन । ३. जीविन रहनेवाला । ४. गतिमान करनेवाला (को०) ।

वर्तनदान—सज्ञा पुं० [६०] मोटा देना । जीविका देना (को०) ।

वर्तनविनियोग—सज्ञा पुं० [६०] वेतन । धृति (को०) ।

वर्तना—वि० अ०, वि० म० [६० वर्तन] दे० 'वर्तना' ।

वर्तनार्थी—वि० [६०] रोजी या जीविका चाहनेवाला । नौकरी का इच्छु (को०) ।

वर्तनि—सज्ञा पुं० [६०] १ पूर्व दिशा । पूर्व देग । २ बाट । रास्ता । ३. तृप्त रात का एक भेद । ४ स्तोत्र । मूल (को०) ।

वर्तनि—सज्ञा स्त्री० १ मटक । पय । २ पड़िया । चक्र । ३. लोक । गाड़ी के पहिए का निगन । ३. मच्छीम । बरीनी (को०) ।

वर्तनी—सज्ञा स्त्री० [६०] १ घटने की क्रिया । पेषण । पिनाई । २ बाट । रास्ता । ३. तल्ला । टेढ़ा (को०) । ४ भेड़ने या प्रेरण करने की क्रिया (को०) । ५ रहना । वर्तमान होना (को०) ।

वर्तनी—सज्ञा स्त्री० [६० वर्तन] अक्षररूप वा व्यास । हिन । दे० 'वर्तनी' ।

वर्तम—सज्ञा पुं० [६० वर्तम] मार्ग । रास्ता । उ०—वर्तम प्रवृत्ता नरनि पय सवर पारविहार ।—अनेकार्य०, पृ० ७७ ।

वर्तमान—वि० [६०] १ चलता हुआ । जो जारी हो । जो चल रहा हो । २. उपस्थित । मौजूद । विद्यमान । ३. साक्षात् । ४. वास्तविक । हाल का ।

वर्तमान—सज्ञा पुं० १. व्यक्तिगत में क्रिया के तीन वानों में से एक, निम्नमें सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चली है, समाप्त नहीं हुई है ।

विशेष—वर्तमान के कई भेद होते हैं । 'वह माना है' इस क्रिया में आरम्भ और चला चलना पाया जाता है, समाप्ति नहीं, इससे यह 'मानान्य वर्तमान' है । कभी कभी वर्तमान के प्रयोग द्वारा 'नित्य प्रवृत्ति' भी पाई जाती है । जैसे,—'मात के उत्त' में हिमाचल है ।' कभी कभी 'वृत्ताविरतता' भी पाई जाती है । जैसे,—'एक मैदान में लड़के खेलते हैं' इस वाक्य से यह सूचित होता है कि चाहे हमने के समय पढ़ने न खेले रहे हो, पर उनके पूर्व वर्तमान का उक्त वृत्ति है और प्राप्ति भी बराबर मिलेगी । इसी प्रकार 'वह मान रही गयी' इस वाक्य में 'प्रवृत्ताविरतता' पाई जाती है, क्योंकि वह वर्तमान से ही मान नहीं खाता । इसी प्रकार और भी भेद हैं ।

२. वृत्तांत । समाचार । ३. चलता प्रवृत्त । उ०—युग पांच नाम पीतों के वर्तमान की समाप्ति प्रवृत्त मानते हो ।—महाभारत (अ०) ।

वर्तक—सज्ञा पुं० [६०] १ एक नदी का नाम । २ गिरे का दे-६

घोना । ३. द्वागता । ४. गतिहीन वा स्थिर जन । ५. प्राचीन । मंदर (को०) । ६ छोटा नागाय या पोयग जिसका जन पत्र के कारण मलिन हो । जनर (को०) ।

वर्तलोह—सज्ञा पुं० [६०] एक प्रकार का लोहा ।

विशेष—चंद्रक में गोले हुए वर्तलोह को कक, राह और पिन का नाख और उनके साथ को कटु मधुर और तिल मिठा है । यह वही लोहा है जिसके बिंदों बलतन बनते हैं ।

पर्या०—वर्तलीय । वर्तक । लोहसंघट । नीलक । नीलज । नीललोह ।

वर्ति—सज्ञा स्त्री० [६०] १ वत्ती । २ अजन । ३ वह वत्ती जो बंध घाव में देता है । ४ औषध बनाना । ५ अनुदेन । उबटन । ६ गोनी । बटो । ७ नकीर । रेखा (को०) । ८ तले की मूजन (को०) । ९. ऐंद्रजालिक का या आभिशारिक तिनक (को०) । १०. कण्डे के किनारे की भालर (को०) । ११ चिराग । दीपक (को०) ।

वर्तिक—सज्ञा पुं० [६०] बटेर ।

वर्तिका—सज्ञा स्त्री० [६०] १ बटेर । २ अजन्यो । ३ वत्ती । ४ गलाका । मजारी । ५ वृत्तिका । चित्र बनाने की कुंजी (को०) । ६ रंग । रोगन (को०) ७ छडा । बाष्ट (को०) ।

वर्तिकाचिदु—सज्ञा पुं० [६० वर्तिकाचिदु] हीरे का एक दोष । विशेष—'रत्नपरीक्षा' के अनुसार इस प्रकार के हीरे को धारण करने में भय उत्पन्न होता है ।

वर्तित—वि० [६०] १ नम्रदित । निष्पादित । किया हुआ । २. चलाया हुआ । जारी किया हुआ । ३. उक्त किया हुआ । ४ व्यतीत । बीता हुआ । जैसे, वर्तित जीवन या काल (को०) ।

वर्तितजन्मा—वि० [६० वर्तितजन्म] उन्मादित । जनेन । उत्पन्न किया हुआ (को०) ।

वर्तिर—सज्ञा पुं० [६०] बटेर ।

वर्तिगु—वि० [६०] १ वर्तुलाकार । २ चक्राकार होनेवाला । ३ स्थिर । ४ बुद्ध में प्रविष्ट । ५ रहनेवाला (को०) ।

वर्ती—वि० [६० वर्तित] (वि० स्त्री० वर्तिनी) १ वर्तनशील । चलनेवाला । २ स्थित रहनेवाला । जैसे,—नमीपवर्ती ।

वर्ती—सज्ञा स्त्री० १ वत्ती । २ गलाका । मजारी ।

वर्तीर—सज्ञा पुं० [६०] बटेर (को०) ।

वर्तुल—वि० [६०] गोला । गुलाकार ।

वर्तुल—सज्ञा पुं० १ गुजन । गाजर । २ मटर । ३ गुड वृण । ४ मुहागा । ५ गोला नैद (को०) । ६ वृत्त । घेरा (को०) । ७. दिन का एक मण ।

वर्तुला—सज्ञा स्त्री० [६०] तटुए के पिने से पुंसी (को०) ।

वर्तुलाकार—वि० [६० वर्तुल + आकार] गोला । गुलाकार । उ०—(१) अब अहमंदा कायाय तब है हुए वर्तुलाकार ।—पुरा प्र०, भा० १, पृ० ५२ । (२) वर्तुल वर्तुलाकार बांध बन

मदनी के गंधों की नाईं गजनी की मानो किमी ने उलटे स्तंभ
उगा दिए हैं।—श्यामा, पृ० २८।

चतुर्लाज—सज्ञा पुं० [सं०] श्वेत। राजपत्नी। (को०)।

चतुर्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] गजपिप्पली (को०)।

चर्म—सज्ञा पुं० [सं० चर्मन्] १ मार्ग। पथ। २ गाड़ी के पहिए
का मार्ग। लोकर। ३ किनारा। आँठ। दारी। ४ आँख की
पलक। ५ आधार। आश्रय। ६ प्रथा। परंपरा। कार्यविधि
(को०)। ७ अवकाश। क्षेत्र (को०)।

चर्मरुद्धम—सज्ञा पुं० [सं०] आग का एक रोग जिसमें पित्त और
रक्त के प्रकोप से आँखों में कीचड़ भरा रहता है।

चर्ममर्म—सज्ञा पुं० [सं० चर्मकर्मन्] रास्ता बनाना। राह बनाना।
पथ निर्माण (को०)।

चर्मणि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ पथ। राह। २ मंडक राजमार्ग (को०)।

चर्मनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'चर्मनि' (को०)।

चर्मपात—सज्ञा पुं० [सं०] १ पथ का अतिक्रमण। मार्गभ्रम।
२ राह पर आना। मार्ग पर आना। रास्ता पकड़ना (को०)।

चर्मपातन—सज्ञा पुं० [सं०] मूटने के लिये राह में घात लगाए
रहना (को०)।

चर्मवध—सज्ञा पुं० [सं० चर्मवध] आँख का एक रोग जिसमें पलक में
मृजन हो आती है, खुजली तथा पीड़ा होती है और आँख नहीं
खुलती।

चर्मवधक—सज्ञा पुं० [सं० चर्मवधक] एक नेत्ररोग। दे० 'चर्मवध'
(को०)।

चर्ममाक्षिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णमाक्षिका। सोनामाखी।

चर्मरोग—सज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पलकों में विकार
उत्पन्न हो जाता है और आँखों को खोलने में बड़ी पीड़ा
होती है।

विशेष—चर्मरोग में इस रोग के २१ भेद माने गए हैं। उत्तमिनी,
कुभिरा, पोथरी, चर्मगर्करा, चर्मगर्ग, शुष्कार्श, अजनदूषिका,
उद्भूतचर्म, चर्मवधक, क्लिष्टचर्म, चर्मकर्म, श्यावचर्म,
पिग्गचर्म, अविग्नचर्म, वातहतचर्म, चर्मधुद, निमेष,
शोणितार्ग, नगण, त्रिपचर्म और कुचन।

चर्मगर्गरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पलकों में
दो-दो आँधी फुगियों के सहित एक बड़ी और कड़ी फुसी हो
जाती है।

चर्ममथा—सज्ञा स्त्री० [सं०] आँखों का एक रोग। चर्मरोग।

चर्मामुद—सज्ञा पुं० [सं०] आँखों का एक रोग जिसमें पलक के अंदर
एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है। यह टेढ़ी और लाल रंग की
होती है और उसमें पीड़ा नहीं होती।

चर्मामास—सज्ञा पुं० [सं०] यात्राजन्म अम (को०)।

चर्मामरोग—सज्ञा पुं० [सं०] चर्मरोग।

चर्म—सज्ञा पुं० [सं०] बाँस। पुन्ना। मेरु। गुल (को०)।

चर्मि—सज्ञा स्त्री० [सं०] चर्मि (= दत्ती)। मंज की पत्नी जो गज के
छोटे हाँथ पर चरने में लगती जाती है।

चर्दी—सज्ञा स्त्री० [अं०] दे 'वरदी'।

चर्द्ध, चर्द्ध—सज्ञा पुं० [सं०] १ सीसा धातु। २ भारभी। ३.
काटना। तराशना। ४ पूर्ति। पूरण। ५ बढ़ोतरी। वृद्धि
(को०)। ७ ब्राह्मणयष्टिका। एक धुर। छड़ी।

चर्द्धक, चर्द्धक—वि० [सं०] १ बढ़ानेवाला। पूरक। २ काटने-
वाला। छीलनेवाला।

चर्द्धक, चर्द्धक—सज्ञा पुं० १ बढई। २ एक वृत्त का नाम। भारग।

चर्द्धकि, चर्द्धकि—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'चर्द्धकी' (को०)।

चर्द्धकी चर्द्धकी—सज्ञा पुं० [सं० चर्द्धकि, चर्द्धकिन्] बढई। लपड़ी
का काम करनेवाला।

चर्द्धकी, चर्द्धकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] गरिका। वेश्या। कुलटा स्त्री।

चर्द्धन, चर्द्धन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० चर्द्धित] १ बढ़ाना। २. वृद्धि।
बढ़ती। उन्नति। ३. छेदना। काटना। छीलना। तराशना।
४ दाँत पर जमनेवाला दूसरा दाँत (को०)। ५ शिव (को०)।
६ शिक्षण (को०)। ७ पूर्ति। पूरण (को०)। ८ वह जिसमें
बल, शक्ति आदि बढ़े। सत्व वर्धक (को०)।

चर्द्धन, चर्द्धन—वि० १ अभ्युदय वा वृद्धि करनेवाला। जैसे, हर्ष-
वर्धन। वशवर्धन।

चर्द्धनक, चर्द्धनक—वि० [सं०] अभ्युदय करनेवाला। उल्लास और
आनंददायक (को०)।

चर्द्धनिका, चर्द्धनिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह छोटा घड़ा या पात्र
जिसमें पवित्र जल रखा जाता है (को०)।

चर्द्धनी, चर्द्धनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ भाड़ू। २ कलसा। छोटा
घड़ा। ३. अरधी (को०)।

चर्द्धमान, चर्द्धमान—वि० [सं०] १ बढ़ता हुआ। जो बढ़ता जा रहा
हो। उ०—कज्जल का वर्द्धमान भूवर, उत्तरा नभ पर, उत्तरा
भू पर।—अपलक, पृ० ६६। २ बढ़नेवाला। वर्द्धनशील।

चर्द्धमान, चर्द्धमान—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णावृत्त जिसमें
चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न भिन्न होती है, अर्थात्
१४, १३, १८ और १५।

विशेष—इसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या इस प्रकार होती
है। प्रथम चरण—मगण, मगण, जगण, भगण, गुरु, गुरु,
द्वितीय चरण—सगण, नगण, जगण, रगण, गुरु, वृत्ताय चरण
—नगण, नगण, मगण, नगण, नगण, सगण, और चतुर्थ
चरण—नगण, नगण, नगण, जगण, यगण। यथा—गोविंदा
पद में तु मित्त चित्त लगैहो। निहचै यहि भवनिधु पार जैहो।
अमर सकल जग मोह मदहि सब तज रे। तन मन धन सन
भजिए हरि को रे।

२. मिट्टी का प्याला। मकोरा। ३. जैनियों के २४ वें जिन महावीर
का नाम। ४. वगान का एक जिला और नगर। आधुनिक
वर्द्धमान। ५. एरट वृद्ध। बेंड (को०)। ६. एक प्रकार की पहली
(को०)। ७. विष्णु का एक नाम (को०)। ८. मोठा नीबू। ९.
हाथों की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)। १०. नृत्य की एक मुद्रा
(को०)। ११. वह मकान जिसमें दक्षिण दिशा में दरवाजा न

हो (को०) । १२ वाम्नु सबही एक तात्रिक यत्र वा रेखाकित
आकार (को०) । १३ एक विशिष्ट प्रकार का प्रासाद या मंदिर
जो उक्त तात्रिक यत्र के आधार पर निर्मित हो (को०) ।
१४ ईशान कोण में स्थित दिग्गज ।

वर्द्धमानक, वर्द्धमानक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कसोरा । मकोरा ।
२ ढक्कन [को०] ।

वर्द्धमानगृह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] क्रीडागृह । प्रमोदमंदिर [को०] ।

वर्द्धमानपुर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक नगर । आधुनिक वर्द्धवान [को०] ।

वर्द्धयिता, वर्द्धयिता—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धयितृ [स्त्री० वर्द्धयित्री]
बढानेवाला ।

वर्द्ध्या, वर्द्ध्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम जो सतपुरा के
पर्वतो से निकलकर गोदावरी में गिरती है । मध्यप्रदेश की
अमरावती नगरी इसी नदी के किनारे बसी है ।

वर्द्धापन, वर्द्धापन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कर्णवेध । नाडीछेदन ।
कनछेदन । २ महाराष्ट्र देश में अम्यगादि क्रिया जो किसी
पुरुष की जन्मतिथि को की जाती है । ३ जन्मदिन का
उत्सव (को०) । ४ वह उत्सव जिसमें किसी के अम्युदय की
कामना की जाय, अथवा वधाई दी जाय (को०) । ५ काटना ।
छेदना (को०) ।

वर्द्धापनिक, वर्द्धापनिक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ अभिनयन । २ अभि-
नयन के समय दी जानेवाली भेंट [को०] ।

वर्द्धापिका, वर्द्धापिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] घाय । वात्री [को०] ।

वर्द्धित, वर्द्धित—वि० [सं०] १ बढा हुआ । २ पूर्ण । ३ छिन्न ।
कटा हुआ ।

वर्द्धिष्णु, वर्द्धिष्णु—वि० [सं०] वृद्धिशील । बढने की कामना करने-
वाला [को०] ।

वर्द्धिणस, वर्द्धिणस—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह सफेद रंग का बकरा
जिसके कान नदी में पानी पीते समय पानी में डू जायँ ।

वर्द्धम, वर्द्धम—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धमन् १ वह फोडा जो जाँघ के मूल
में संधिस्थान में निकल आता है । यह फोडा कठिन होता है ।
इसके रोगी को ज्वर आता है, शूल होता है और वह सुस्त पड़ा
रहता है । बद । २ अत्रवृद्धि रोग । आँत उतरने का रोग ।

वर्द्ध, वर्द्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ खाल । चमड़ा । २ चमड़े की
बढ़ी । वर्द्धिका । ३ सीसा । राँगा ।

वर्द्धिका, वर्द्धिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमड़े की रस्सी । बढ़ी ।
२ एक प्रकार का आभूषण जिसे बढ़ी कहते हैं ।

वर्द्धी, वर्द्धी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वर्द्धिका' ।

वर्द्धन^७, वर्द्धन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धन दे० 'वर्द्धन' । उ०—दीपक वर्द्धन
कह कही, सब मनोरथ काज ।—कवीर सा०, पृ० ५६७ ।

वर्द्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] आकृति । आकार । रूप [को०] ।

वर्द्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धमन् १ कवच । बकतर । २ घर । आश्रय ।
३ पित्त पापडा । पर्पटक । ४ बल्कल । छाल (को०) ।

वर्द्धक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम,
जिसे अब 'बरमा' कहते हैं ।

वर्द्धकटक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धकटक पित्तपापडा । पर्पटक ।

वर्द्धकशा, वर्द्धकषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सातला । ससला ।

वर्द्धण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नारंगी का पेड़ [को०] ।

वर्द्धधर—वि० [सं०] कवची । वर्द्धहर ।

वर्द्धहर—वि० [सं०] १ वर्द्धधर । कवचधारी । २ जो वर्द्ध धारण न
कर सके । जैसे, अत्यंत वृद्ध (को०) ।

वर्द्धा—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्द्धमन्] क्षत्रियो आदि की उपाधि जो उनके
नाम के अंत में लगाई जाती है ।

वर्द्धि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की मछली ।

वर्द्धिक—वि० [सं०] दे० 'वर्द्धित' [को०] ।

वर्द्धित—वि० [सं०] कवचधारी । कृतसन्नाह ।

वर्द्धिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सड़क का
महसूल । पथकर (को०) ।

वर्द्धी—वि० [सं०] वर्द्धिन् दे० 'वर्द्धिक' [को०] ।

वर्द्धुष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की मछली [को०] ।

वर्द्ध—वि० [सं०] १. प्रवान । २ निर्वाचित या चुनने योग्य ।
३. श्रेष्ठ ।

विशेष—इसका प्रयोग विशेषतः समस्त पदों में होता है । जैसे,—
विद्वद्बर्द्ध ।

वर्द्ध—सञ्ज्ञा पु० कामदेव ।

वर्द्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कन्या । २. पतिवरा वधू । ३ अरहर ।

वर्द्धट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] लोविया । वोडा । वजरवटू ।

वर्द्धणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नीली मक्खी ।

वर्द्धर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ एक देश का नाम । २ इस देश का
असम्भ्य निवासी जिसके बाल घुँघराले कहे गए हैं ।

विशेष—यद्यपि वर्द्धर देश का उल्लेख महाभारत (भोगपर्व) तथा
वामन, मार्कण्डेय आदि पुराणों में है, तथापि यह जनपद कहाँ
था, इसका ठीक ठीक पता नहीं । कहीं कहीं वर्द्धरों के बाल
घुँघराले कहे गए हैं । पुराने यूनानी और रोमन भौगोलिकों
ने सिंधु नदी के मुहाने के आसपास के प्रदेश को वर्द्धर (बारवे-
रियन) देश कहा है । कुछ भारतीय ग्रंथकारों ने महाराष्ट्र
देश के एक विशेष भाग को वर्द्धर कहा है । वर्द्धर नाम की
एक प्राकृत भाषा का उल्लेख भी 'प्राकृतचंद्रिका' में है ।
इसमें सदेह नहीं कि इस जनपद के निवासी असम्भ्य समझे जाते
थे और घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे । पीछे से दूर दूर तक
की सभ्य जातियों में यह शब्द 'म्लेच्छ' और जंगली' का
वाचक हुआ । प्राचीन यूनानी अपनी जाति के लोगों के
अतिरिक्त औरों को 'वर्द्धर' कहा करते थे । रोमनों में भी ऐसा
ही था ।

३ पामर । नीच । ४ घुँघराले बाल । ५ काली वनतुलसी । ६
हिगुल । ईगुर । ७ पीला चदन । ८ मूर्ख । अज्ञ (को०) । ९
नीच जाति (को०) । १०. जातिभ्रष्ट व्यक्ति (को०) । ११.
नृत्य का एक प्रकार । एक प्रकार का नाच (को०) । १२.
शस्त्रों का परस्पर टकराना ।

वर्षर'—वि० १ धुंधराला । छलेदार । २. जो स्पष्ट न हो [को०] ।

वर्षरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चदन ।

विशेष—इसका गुण शीतल, कफ, वायु, पित्त, कोढ़, खाज और ब्रण तथा रक्तदोष का नाशक और स्वाद कटुवा माना गया है ।

पर्या०—वर्षरोत्थ । शीत । पित्तारि ।

वर्षरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की माखी । नीली माखी । २ वर्षरी । वनतुलसी [को०] ।

वर्षरो—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनतुलसी । २ दे० 'वर्षरा' ।

वर्षरीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भार्गवी । २ वनतुलसी । ३. महाकाल । ४ भीम के पौत्र का नाम जो घटोत्कच का पुत्र था । ५ धुंधराले केश । छलेदार बाल [को०] ।

वर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षरी । वनतुलसी [को०] ।

वर्षि—वि० [सं०] बहुत खानेवाला । पैटू [को०] ।

वर्षुर—स्त्री० पुं० [सं०] एक वृक्ष । विशेष दे० 'ववून' [को०] ।

वर्षूर—संज्ञा पुं० [सं०] ववून ।

वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृष्टि । जलवर्षण । २ काल का एक मान जिसमें दो अयन और बारह महीने होते हैं । उतना समय जितने में सब ऋतुओं की एक आवृत्ति हो जाती है । सवत्सर । साल ।

विशेष—वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र । सौर वर्ष ३६५ दिन, ५ घंटे, ४८ मिनट और ४६ सेकंड का होता है । यह उतना समय है, जितने में पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेती है । पृथ्वी के इसी भ्रमण के कारण सूर्य का सत्ताईस नक्षत्रों और बारह राशियों में गमन दिखाई पड़ता है । लोग कहते हैं कि अब सूर्य श्रमुक नक्षत्र या राशि में है । घूमते समय पृथ्वी की धुरी सीधी न रहकर कुछ टेढ़ी रहती है और उसके मार्ग की कक्षा गोल न होकर अंडाकार होती है । इसी से सूर्य कुछ महीनों तक भूमध्यरेखा के उत्तर और कुछ महीनों तक दक्षिण में उदय होता दिखाई पड़ता है । ये दोनों 'उत्तर अयन' और 'दक्षिण अयन' कहलाते हैं । वर्ष में केवल दो दिन सूर्य भूमध्य या विषुव रेखा पर उदय होता है । इन दोनों को मायन कहते हैं । एक सायन तुला राशि में और दूसरा मेष में होता है । सूर्य कर्क राशि में आकर दक्षिण की ओर बढ़ने लगता है और धनु राशि में पहुँचने तक भूमध्यरेखा के दक्षिण ही रहता है । मकर राशि से फिर उत्तर की ओर बढ़ने लगता है और कर्क राशि में पहुँचने तक उत्तर ही रहता है । प्राचीन भारतीय शायों में राशियों का व्यवहार न था, इससे सौर वर्ष दो अयनों का ही माना जाता था । ग्रहों का उदय राशियों में न माना जाकर २७ नक्षत्रों में माना जाता था । इससे कभी कभी बड़ी अव्यवस्था होती थी । चांद्र वर्ष ३५४ दिन, ८ घंटे, ४८ मिनट और ३६ सेकंड का होता है । इतने काल में चंद्रमा पृथ्वी की बारह परिक्रमाएँ कर लेता है । इस प्रकार सौर वर्ष और चांद्र वर्ष में प्रति वर्ष १० दिन, २१

घंटे का अंतर पड़ता है । हिंदू पंचांग में यह अंतर प्रति तीसरे वर्ष, १३ महीने का अर्ध मानकर पूरा किया जाता है । उस वर्ष हुए महीने को 'अधिमास' या 'मनमास' कहा है । तीन वर्ष पूरे ३६० दिनों का होता है और उमते महीने तीस तीस दिन के होते हैं । ईस्वी काल में माघन मान ही अधिक चलता था और प्रत्येक मास की नियति की गणना चंद्रमा के ही हिमाय में होती थी । मूल्य प्रातिपदिक में पूर्णिमा तक १५ दिन का शुक्ल पक्ष और पूर्णिमा के बाद अश्विनास्या तक १५ दिन का कृष्ण पक्ष होता था । नाक्षत्र वर्ष ३६५ दिन का और उमरा प्रत्या महीना २७-२८ दिन का होता है । इन चार प्रकार के वर्षों के अनिरक्त प्राचीन काल में और पंडित प्रचार में आया था प्रचार था । जैसे,—मत्ति ।

३ पुराण में माने हुए मास ऋषी का एक विभाग । ४ किमी द्वीप का प्रधान भाग, जैसे,—भारतवर्ष । ५ मेष । वादन ।

वर्षकर—संज्ञा पुं० [सं०] मेष ।

वर्षकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किल्ली । तीगुर ।

वर्षकाम—वि० [सं०] वृष्टि की कामना रखनेवाला । उष्टि चाहनेवाला ।

वर्षकामेष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो वर्षों के लिये किया जाता था ।

ववकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जोरा ।

ववकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग की पुनर्नया । लाल गदहूरना ।

ववकोश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षकोष' [को०] ।

ववकोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता । ज्योतिषी । २. माप । उद्द ।

वर्षगाँठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वर्ष + गाँठ] यह रज्ज्व जो किसी पुरुष के जन्मदिन पर बिधा जाता है । विशेष दे० 'वरनगाँठ' ।

वर्षगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] गगार का विभाग फरनगले मात पर्वत जो वर्षवर्षन कहें जाते हैं । इनमें हिमवान्, हेमकूट, निपथ, मेघ, चंद्र, कर्ण और शृंगी नामक पर्वत हैं [को०] ।

वर्षघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ पवन । २ ग्रहा का वह योग जिससे वर्षा नष्ट हो जाती है ।

वर्षघ्न—वि० वर्षा से बचानेवाला ।

वर्षज—वि० [सं०] १ वर्षा से उत्पन्न । २ एक वर्ष का [को०] ।

वर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्षित] १ वृष्टि । वर्षना । उ०—भाव बदला हुआ—पहले को घनघटा वर्षण बनी हुई ।—अपरा, पृ० १४३ । २ छिड़कना । नीचे किसी पर डालना या फेंकना । जैसे, द्रव्यवर्षण, पुष्पवर्षण [को०] ।

वर्षणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृष्टि । वर्षा । २ कर्म । क्रिया । कृति । ३ निवास । वर्तन । ४, यज्ञकर्म । यज्ञ [को०] ।

वर्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छत्र । छाता [को०] ।

वर्षत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षत्र' [को०] ।

वर्षधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेष । वादल । २ अत पुर का रक्षक । नपुसक । खोजा । ३. पर्वत । पहाड़ [को०] । ४ वर्ष (पृ०) का

खड) का अधिपति (को०) । ६ पृथ्वी को वर्षा (खडो) में विभा-
जित करनेवाले पहाड । (जैन) ।

वर्षधर्प—सञ्ज्ञा पु० [सं०] अत पुर का रक्षक । नपुमक । खोजा ।

वर्षप—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वर्षपति' ।

वर्षपति—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्ष के अधिपति ग्रह ।

विशेष—फलित ज्योतिष में वर्षप्रवेण होने पर कोई न कोई ग्रह
उप वर्ष का अधिपति या राजा माना जाता है । इसी अधिपति
के विचार से यह बताया जाता है कि वर्ष शुभ होगा या अशुभ ।

वर्षपद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पचाग । पत्रा । जत्री (को०) ।

वर्षपर्वत—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी को सात भागों में बाँटनेवाले
पहाड । वर्षगिर (को०) ।

वर्षभाकी—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्षपाकिन्] आभ्रातक । आभडा ।

वर्षपुष्पा—स । स्त्री० [सं०] सहदेई नाम की लता (को०) ।

वर्षपूग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षशुखला । वर्ष का समूह (को०) ।

वर्षप्रतिवध—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्षप्रतवन्ध] वृष्टि का न होना ।
अनावृष्टि । अवर्षण । सूखा (को०) ।

वर्षप्रवेग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] घनघोर वर्षा (को०) ।

वर्षप्रवेश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नववर्षारम्भ (को०) ।

वर्षप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पपीहा । चातक (को०) ।

वर्षफल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार वह
कुडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का
विवरण जाना जाता है ।

क्रि० प्र०—निकालना ।—बनाना ।

वर्षरात्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षा ऋतु (को०) ।

वर्षवर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नपुसक । अत पुर का रक्षक । खाना (को०) ।

वर्षवसन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षा ऋतु में किसी एक निवास में रहना ।
(बौद्ध) ।

वर्षवृद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षगाँठ । जन्मदिन (को०) ।

वर्षशत—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सौ वर्ष । शताब्दी (को०) ।

वर्षसहस्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक हजार वर्ष (को०) ।

वर्षाग—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्षाङ्ग] माम । महीना ।

वर्षाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वर्षाङ्गी] पुनर्नवा (को०) ।

वर्षालु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षा का जल (को०) ।

वर्षाश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] महीना ।

वर्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है ।

विशेष—छह ऋतुओं के हिसाब से सावन और भादो के दो महीने
वर्षा ऋतु के माने जाते हैं । पर साधारण व्यवहार में जाड़ा,
गरमी और बरसात के हिसाब से वर्षा काल आषाढ से कुआर
तक चार महीने का लिया जाता है जिसे चातुर्मास या 'चौमासा'
कहते हैं ।

पर्या०—प्रावृत् । पावस । घनागम । घनाकर ।

२ पानी बरसने की क्रिया या भाव । वृष्टि ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = (१) बहुत अधिक परि-
माण में ऊपर से गिरना । जैम,—फूलों की वर्षा होना । (२)
बहुत अधिक सख्या में मिलना । जैसे,—वहाँ सग्यों की वर्षा
होती है ।

वर्षाकाल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षा ऋतु । बरसात ।

वर्षागम—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्षा ऋतु का आगमन । वर्षारम्भ ।

वर्षाघोष—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्षा + आघोष] बड़ा मेढक (को०) ।

वर्षाधिर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो
सबसे अधिक वर्ष का अधिपति हो । वि० दे० 'वर्षपति' ।

वर्षाप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चातक । पपीहा ।

वर्षाबीज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मेघ । बादल ।

वर्षाप्रभजन—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्षाप्रभञ्जन] आँसी (को०) ।

वर्षाभव—सञ्ज्ञा पु० [सं०] रक्त पुनर्नवा । पुनर्नवा जिसके फूल लाल
होते हैं (को०) ।

वर्षाभू—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ भेक । दादुर । मेढक । २ इद्रगोप ।
म्वालिन नाम का कीड़ा । ३ लाल रंग की पुनर्नवा । ४ कीड़े
मकोड़े ।

वर्षाभू—वि० वर्षा में उत्पन्न होनेवाला ।

वर्षाभ्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा मेढक । छोटा मेढक । २ पुन-
र्नवा । २ केचुम्रा (को०) ।

वर्षाभट्ट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मयूर । मोर ।

वर्षायस—वि० [सं०] नब्बे बरस से ऊपर की अवस्था का । अति वृद्ध ।

वर्षारात्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वर्षा ऋतु । २ वर्षा की रात (को०) ।

वर्षारात्रि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वर्षारात्र' ।

वर्षार्ची—सञ्ज्ञा पु० [सं० वर्ष + अर्चिस्] मंगल ग्रह ।

वर्षार्ह—वि० [सं०] वर्ष भर के लिये पर्याप्त (को०) ।

वर्षालंकायिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वर्षालङ्कायिका] पृवका । असवर्ग ।

वर्षाल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] फसिगा । पतंग ।

वर्षावसान—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शरद ऋतु (को०) ।

वर्षाशन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वर्ष भर के लिये दिया जानेवाला अन्न का
दान (को०) ।

वर्षाहिक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] बरसाती साँप जिसमें विष नहीं होता ।

वर्षिक—वि० [सं०] १. वर्षा सबधी । २. एक वर्ष का । वार्षिक (को०) ।

वर्षिक—सञ्ज्ञा पु० अशुभ (को०) ।

वर्षित—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वृष्टि । वर्षा (को०) ।

वर्षित—वि० बरसा हुआ (को०) ।

वर्षिता—वि० [सं० वर्षितृ] बरमान या वर्षा करनेवाला (को०) ।

वर्षिष्ठ—वि० [सं०] बहुत वृद्ध (को०) ।

वर्षी—वि० [सं० वर्षिन्] १. वर्षा करनेवाला । २. वर्ष का । साल का ।
समासात् में प्रयुक्त । जैसे, घनवर्षी । वारिवर्षी (को०) ।

वर्षाका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त [को०] ।

वर्षाण—वि० [सं०] (इतने) वर्ष का [को०] ।

वर्षाय - वि० [सं० वर्षायम्] दे० 'वर्षाण' ।

वर्षायस्—वि० [सं०] १ वर्षा युक्त । २ वृद्ध । अत्यत वृद्ध । ३ अत्यत शक्तिशाली । ४ महत्तम । विशिष्ट [को०] ।

वर्षुक्—वि० [म०] १ जलयुक्त । २ वर्षा करनेवाला [को०] ।

वर्षेज—वि० [सं०] दे० 'वर्षज' ।

वर्षेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वर्षाविप । विशेष दे० 'वर्षपति' ।

वर्षोपल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ ओला । करका । २ एक तरह की गेलाकार मिठाई [को०] ।

वर्ष्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शरीर । दे० 'वर्ष्मा' [को०] ।

वर्ष्मवान्—वि० [सं० वर्ष्मवत्] शरीरवाला । शरीरधारी [को०] ।

वर्ष्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्ष्मन्] १ शरीर । २ प्रमाण । ३ इयता । ४ जलरोधक बाँध । ५ नाप । उँचाई [को०] । ६ अत्यत सुंदर या कोमल आकृति । ७ वर्षीयान् । अत्यत वृद्ध [को०] ।

वर्ह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मोर का पख । २ गठिवन । ग्रथिपर्णी । ३ पत्र । पत्ता । ४ दे० 'परीवार' [को०] ।

वर्हण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पत्र । पत्ता ।

वर्हा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्हस्] १ अग्नि । २ दीप्ति । ३ यज्ञ । ४ कुश । ५ चित्रक । चीते का पेड़ । ६ एक राजा का नाम । ७ जल । पानी [को०] ।

वर्हि शुष्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्हि शुष्मन्] आग । अग्नि [को०] ।

वर्हि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्हिस्] १ जल । २ अग्नि । ३ यज्ञ । ४ कुश । ५ चित्रक वृक्ष । ६ दीप्ति । ७ एक राजा [को०] ।

वर्हिकुसुम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गठिवन । ग्रथिपर्णी [को०] ।

वर्हिज्योति—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्हिज्योतिस्] अग्नि [को०] ।

वर्हिण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मोर । २ भारतवर्ष के एक द्वीप का नाम । ३ तगर [को०] ।

यौ०—वर्हिणवाहन = स्कद का एक नाम । वर्हिणवासा = 'वर्हिवासा' ।

वर्हिण^१—वि० मोरपख से सज्जित [को०] ।

वर्हिध्वज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्कद [को०] ।

वर्हिर्वह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गधद्रव्य ।

वर्हिमुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ देवता । २ अग्नि [को०] ।

वर्हिवासा—वि० [सं० वर्हिवासस्] वह बाण जिसमें मोर का पख लगा हो [को०] ।

वर्हिवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्कद ।

वर्हिषद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक पितर का नाम ।

वर्हिष्केश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अग्नि । पावक [को०] ।

वर्ही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वर्हिन्] १. मयूर । मोर । २ कश्यप के एक पुत्र का नाम । ३. तगर ।

वलत्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वलन्तिका] अग्निक्षेप या हाव भाव की एक विशेष मुद्रा [को०] ।

वल्लव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] १ अलव । सहाग । २ लव (ज्यामिति) । आवार (को०) ।

वल्ल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ । २ एक अमुर का नाम ।

विशेष—यह देवताओं की गीर्ण चुगकर एक गुड़ा में जा दिया था । इद्र उस गुड़ा को चेरकर उसमें से गोश्रो को छुड़ा लाए थे । फिर वल ने वैन का रूप धारण किया और वह वृहस्पति के हाथ से मारा गया । दे० 'वल' ।

वल्लक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] माकडेपुराणानुसार ताम्र मन्वनर के सप्तपत्नियों में से एक ऋषि का नाम । २ याना (को०) । ३ शहतीर (को०) । ४ खुल्लू (को०) ।

वल्लक्ष—वि० [सं०] वल्ल । श्वेत । उ०—मानव की पूजा की मने सुर के समक्ष, नर की महिमा का लिप्ता पृष्ठ नूनन, वल्लक्ष । सामवेनी, पृ० ५३ ।

वल्लग्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कटि । कमर [को०] ।

वल्लज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अन्न का ढेरो । २ खेत । क्षेत्र । ३ अन्न । ४ युद्ध । लड़ाई । ५, प्राकार । चहारदीवारी [को०] ।

वल्लजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री [को०] ।

वल्लद्विप—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वल्लद्विप्] इद्र ।

वल्लन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का सायनाश में हटकर चलना । विचलन । वक्रगति । २ गोल में घूमना । चक्कर खाना (को०) । ३ क्षोभ (को०) ।

वल्लनाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार अयनाश से किसी ग्रह के चलन अर्थात् हटकर चलने या वक्रगति की दूरी का अंश ।

वल्लनाशन, वल्लभित्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] इद्र [को०] ।

वल्लभि, वल्लभो—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह मत्स्य जो घर के ऊपर शिखर पर बना हो । रावटी । बडभी । २ घर की चोटी । ३ छानी । ४ एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ में थी और जिसके खंडहर अब तक मिलते हैं ।

विशेष—यहाँ एक प्रसिद्ध राजवंश का राज्य था, जिसके संस्थापक सेनापति भट्टार्क थे ।

वल्लय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मडल । २ कण । ३ चूड़ी । ४ वेष्टन । ५ अठारह प्रकार के गलगड रोगों में से एक ।

विशेष—इसमें कफ के कारण गले के अंदर उस नली में जिसमें से होकर अन्न जल पेट में जाता है, एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है । यह गाँठ ऊँची और बड़ी होती है और अन्न जल के जाने का मार्ग रोक देती है । बँध लोग इसे अस्राव्य मानते हैं ।

६ दंड व्यूह का एक भेद । सैनिकों की दो दो पंक्तियों में स्थिति । (कौटिल्य अर्थशास्त्र) । ७ कुडल । बाला (को०) । ८ कटिबध । मेखला । कमरपेटी (को०) । १० प्राकार । चहारदीवारी (को०) । ११ शाखा । डाली (को०) । १२ शरीर की गोल हड्डियाँ । १३ प्राचुर्य । विविधता । आधिक्य (को०) ।

वलयित—वि० [स०] १, वेष्टित । परिवृत्त । घेरा हुआ । २. चक्रर खाता हुआ (को०) । ३. गोल मुड़ा हुआ (को०) ।

वलयिता—वि० [स० वलयितृ] वेष्टित करनेवाला । घेरनेवाला (को०) ।

वलयी—वि० [स० वलयिन्] १ वलय या ककण पहननेवाला । २. आवेष्टित । घिरा हुआ (को०) ।

वलवड (७)—वि० [स० वलवन्त] दे० 'वरिवड' । उ०—अपौसिह अयनैत इक खल खडन वलवड ।—मुजान०, पृ० ५ ।

वलवला—सञ्ज्ञा पु० [अ०] उमग । आवेश ।

वलसूदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] इद्र ।

वलहता—सञ्ज्ञा पु० [स० वलहन्तृ] इद्र ।

वलाक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वगना । वक (को०) ।

वलाका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वगला । दे० 'वलाका' ।

वलाकी—वि० [स० वलाकिन्] दे० 'वलाकी' ।

वलाट—सञ्ज्ञा पु० [स०] भूँग ।

वलायत—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ विलायत । इंग्लैंड । २. वली होना । सरक्ष्य होना (को०) ।

वलासक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कोकिल । २. मेढक । मेक (को०) ।

वलाहक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मेघ । बादल । २. पर्वत । ३. एक दैत्य का नाम । ४. साँपो की एक जाति जो दर्वीकर के अतर्गत मानी जाती है । ५. मुस्तक । मोथा । ६. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम । ७. एक नद का नाम । ८. कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम । दे० 'वलाहक' ।

वलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ रेखा । लकीर । २. चदन आदि से बनाई हुई रेखा । ३. मिकुडन के कारण पड़ी हुई लकीर । भुरी । ४. पेट के दोनों ओर पेट की सिकुडने से पड़ी हुई रेखा । वल । जैसे,—त्रिवली । ५. देवता को चढाने की वस्तु । ६. राजकर । ७. एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । विशेष—दे० 'वलि' । ८. कौटिल्य कथित एक प्रकार का धार्मिक कर । धर्म-कार्य के लिये लगाया हुआ कर । ९. श्रेणी । पक्ति । १०. ववासीर का भस्मा । ११. छाजन की ओलती । १२. गधक । १३. एक प्रकार का दाजा ।

वलिक—सञ्ज्ञा पु० [म०] घर की छत या छाजन की ढाल का अत जहाँ से पानी गिरता है । ओलती ।

वलित—वि० [स०] १ वल खाया हुआ । लचका हुआ । २. भुका हुआ । मोड़ा हुआ । ३. परिवृत्त । आवेष्टित । घेरा हुआ । ४. जिसमें भुरियाँ पड़ी हो । जो जगह जगह से सिकुड़ा हो । ५. लिपटा हुआ । लगा हुआ । उ०—उरज मलय शैल शील सम मुनि देखि अलक वलित व्याल आशा कर आए है ।—केशव (शब्द०) । ६. आच्छादित । ढका हुआ । उ०—कटक कलित तृन वलित विंध जल ।—केशव (शब्द०) । ७. युक्त । सहित । उ०—श्री रघुवर के इष्ट अश्रु वलित सीतानयन ।—केशव (शब्द०) ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग 'कलित' आदि के समान काव्य की भाषा में बहुत अधिक होता है ।

वलित—सञ्ज्ञा पु० १ काली मिर्च । २. नृत्य में हाथ मोड़ने की एक मुद्रा ।

वलितक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का आभूषण । एक गहना (को०) ।

वलिन, वलिम—वि० [स०] भुरीदार । सिकुडनवाला (को०) ।

वलिमान्—वि० [स० वलिमत्] दे० वलि युक्त । 'वलिन ।'

वलिमुख—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वानर । २. गरम दूध में मट्ठा मिलाने से उत्पन्न छठा विकार ।

वलिर—वि० [स०] ऐँचाताना (को०) ।

वलिस—सञ्ज्ञा पु० [स०] वडिश । कँटिया । वसी (को०) ।

वलिशि, वलिशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वलिश' (को०) ।

वली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ भुरी । शिकन । २. अवली । श्रेणी । ३. रेखा । लकीर । ४. चदन आदि से बनाई हुई लकीर । ५. पेट के दोनों ओर पेट की सिकुडने से पड़ी हुई लकीर । जैसे,—त्रिवली । उ०—यह रोग गुदा की तीन वली के भीतर होय है ।—सावव०, पृ० ५३ ।

वली—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ मालिक । स्वामी । उ०—वेवहा मेरे सिर पर सदा वली अल्लाह मदद वेवहा की, दोहाई दरिया साहब की, दाहाई ।—सत० दरिया, पृ० ३५ । २. शासक । हाकिम । अविपत्ति ।

यौ०—वलीअहद ।

३. साधु । फकीर । उ०—करम उनका मदद जब तें न होवे । वला हरगज विलायत कूँ न पावे ।—दक्खिनी०, पृ० ११४ ।

यौ०—वली खगर = साधु होने का झूठा दावा रखनेवाला । धर्म-वजी साधु ।

४ [स्त्री० वलीया] उत्तराधिकारी । वारिस (को०) । ५. मित्र । दास्त । सहायक (को०) ।

वलीअहद—सञ्ज्ञा पु० [अ०] युवराज । टीका । टिकत ।

वलीक—सञ्ज्ञा पु० [न०] १ घर की छत या छाजन का ओलती । २. सरकडा ।

वलीभृत्—वि० [स०] घुँघराला । मुड़ा हुआ । वलियुक्त (को०) ।

वलीमुख—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वानर । २. दे० 'वलिमुख' (को०) ।

वलीवदन, वलीवक्त्र—सञ्ज्ञा पु० [म०] वानर । कापे (को०) ।

वलीवर्द—सञ्ज्ञा पु० [म०] वृषभ । बल (को०) ।

वल्लरू—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पद्ममूल । भिस्सा । भसीड । कमल की जड़ । २. एक प्रकार का पत्ती ।

वल्लल—वि० [स०] शक्तिपान् । वली (को०) ।

वले, वलेक—प्रत्यय [फा० वलेकिन का सञ्चित रूप] लेकिन । मगर उ०—नुमाइश में गरचे मुठा भर हूँ मैं । वले इतम के फन में बेहतर हूँ मैं ।—दक्खिनी०, पृ० ७६ ।

वलेकिन—अव्य० [फा०] किन्तु । परन्तु । मगर (को०) ।

वल्क^१—सञ्ज्ञा पुं [स० वल्क् (= भरण, कथन)] वक्ता । वाक्-
द्रुक [को०] ।

वल्क^२—सञ्ज्ञा पुं [म०] १ पेड़ों के धड़ और काष्ठ पर का आवरण ।
वल्कल । छाल । २ मछली के ऊपर की छाल । चौई ।
शल्क (को०) । ३ खड । भाग (को०) । ६ एक प्रकार का
वस्त्र (को०) । ५ पट्टिका लोध्र । पठानी लोध्र (को०) ।

यौ०—वल्कतर । वल्कद्रुम । वल्कपत्र । वल्कफल । वल्कलोत्र ।
वल्कवासा = वल्कल या छाल का परिधान ।

वल्कतरु—सञ्ज्ञा पुं [स०] सुपारी का वृक्ष ।

वल्कद्रुम—सञ्ज्ञा पुं [स०] भोजपत्र का वृक्ष ।

वल्कपत्र—सञ्ज्ञा पुं [स०] हिताल ।

वल्कफल—सञ्ज्ञा पुं [स०] अनार का पेड़ [को०] ।

वल्कल—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ वृक्ष की छाल । पेड़ों के धड़ और काष्ठ
पर का आवरण ।

पर्वा०—त्वक् । वल्क । चोच । चोलक । शल्क । छल्लक ।
छल्लि । छल्ली ।

२ वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे अरण्यवासी मुनि और तपस्वी
पहनना करते थे उ०— वल्कल की चोली हँस हँसकर ढीली
करती थी आली ।—शकुं०, पृ० ५ । ३ ऋग्वेद की वाक्कल
नामक शाखा । ४ एक प्रकार की लोध्र (को०) । ५ एक
दैत्य (को०) ।

यौ०—वल्कलसवीत = वृक्ष की छाल का परिधान धारण
करनेवाला ।

वल्कला—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ सफेद रंग का एक प्रकार का पत्थर
जिसका गुण शीतल और शांतिकारक माना जाता है । शिला-
वल्का । २ तेजवल ।

वल्कली—वि० [स० वल्कलिन्] वल्कल या पेड़ की छाल पहनने
वाला । वल्कलधारी ।

वल्कलोत्र—सञ्ज्ञा पुं [स०] एक प्रकार की लोध्र । पठानी लोध्र ।

वल्कवान्^१—सञ्ज्ञा पुं [स० वल्कवत्] वह जिसमें शल्क या चौई हो,
मछली मीन [को०] ।

वल्कवान्^२—वि० दे० 'वल्कली' [को०] ।

वल्कल—सञ्ज्ञा पुं [स०] कटक । काँटा ।

वल्कुट—सञ्ज्ञा पुं [म०] छाल । वल्कल [को०] ।

वल्गक वि० [स०] उछलनेवाला । नाचने कूदनेवाला [को०] ।

वल्गन—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ घोड़े का कूदते या उछलते हुए चलना ।
दुलकी । २ बहुत सी इधर उधर की बातें कहना । बहुत
बकना ।

वल्गर—वि० [अ०] ग्राम्य । भोडा । अशिष्ट । उ०—वल्गर शब्द ही
इस आशय को व्यक्त कर सकता है ।—रगभूमि, भा० २,
पृ० ५०० ।

वल्गा—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] लगाम । बाग ।

वल्गित—वि० [स०] १ घूमता या नाचता हुआ । नचता हुआ ।

उ०—अपलक था आकाश चपल वल्गित गति लक्ष्मी ।—
माकेत, पृ० ४०३ । २ उछलता कूदना हुआ ।

वल्गित^२—सञ्ज्ञा पुं १ डींग । बढ़ा चढ़ा कर की गई बात । २ घोड़े
की एक चाल । प्लुन गति [को०] ।

वल्गु^१—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ छाग । वकरा । २ वीहों के बोधिद्रुम
के चार अधिष्ठाता देवताओं में से एक ।

वल्गु^२—वि० १ मुदर । नृगसूरत । २ मीठा । मधुर (को०) । ३
अमूल्य । बहुमूल्य (को०) ।

वल्गु^३—क्रि० वि० मुदरता से । मुग्धतापूर्वक [को०] ।

वल्गुरु^१—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ चंदन । २ त्रिपिन । वन । ३ पण ।
बाजी । ४ सीदा । ५ मूल्य (को०) ।

वल्गुरु^२—वि० रुचिर । मुदर ।

वल्गुजघ—सञ्ज्ञा पुं [स० वल्गुजघ] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वल्गुज—सञ्ज्ञा पुं [स०] [स्त्री० वल्गुजा] छाग । वकरा ।

वल्गुदत्तीसुत—सञ्ज्ञा पुं [म० वल्गुदन्तीसुत] इन्द्र ।

वल्गुनाद—वि० [स०] मधुर कृजन या गान करनेवाला [को०] ।

वल्गुपत्र—सञ्ज्ञा पुं [स०] वनमृग ।

वल्गुपोदिका—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] १ लहसुआ नाम का साग । २ एक
प्रकार की लता ।

वल्गुल—सञ्ज्ञा पुं [स०] चमगादड़ । गादुर ।

वल्गुला—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ बकुची । २ चमगादड़ ।

वल्गुलिका—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ कथई रंग का पतंग जाति का
कीड़ा जिसे 'तैलपायी' भी कहते हैं । चपड़ा । २ मजूरा ।
भावा । पिटारा ।

वल्गुली—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ चमगादड़ । गादुर । २ मजूरा ।
भवा । पिटारा ।

वल्द—सञ्ज्ञा पुं [अ०] ग्रीष्म वेदा । पुन ।

विशेष—किमी मनुष्य के कुल के परिचय के लिये उनके नाम के
आगे इस ण्वद्ग का व्यवहार करके उसके पिता का नाम रखा
जाता है । जैसे, — गोकुल वल्द बलदेव' अर्थात् गोकुल, वेदा
बलदेव का' । दस विजो और सरकारी कामकाज आदि में, जिनकी
भाषा उर्दू होती है, इन शब्द का प्रयोग अधिक होता है ।

वल्दियत—सञ्ज्ञा स्त्री [अ०] पिता के नाम का परिचय । बाप के नाम
का पता । जैसे,— अपनी वल्दियत और सकूनत लिखाओ ।

वल्मन—सञ्ज्ञा पुं [म०] १ आहार । भोजन । २ खाना । भोजन
करना [को०] ।

वल्मिक, वल्मिकि—सञ्ज्ञा पुं [स०] दे० 'वल्मीक' [को०] ।

वल्मी—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] दामक । चीटी [को०] ।

यौ०—वल्मीकूट ।

वल्मीक—सञ्ज्ञा पुं [म०] १ दीमको का लगाया हुआ मिट्टी का
ढेर । बाँधी । विमोट ।

यौ०—वल्मीकभौम, वल्मीकराशि, वल्मीकवपा = बाँवी। विमोट।
वल्मीकशीर्ष। वल्मीक सम्भव।

२ वल्मीक मुनि। ३. वह मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पड़ती
हो। ४ एक प्रकार का रोग।

विशेष—इस रोग में त्रिदोष के कारण गले, कंधे, काँख, हाथ,
पैर और सधि स्थानों (जोड़ों) में सूजन हो जाती है, जो क्रमशः
गाँठ की तरह कड़ी हो जाती है। इसमें सूई चुभने की सी पीड़ा
होती है और पकने पर अनेक छेद हो जाते हैं। यदि आरम्भ में
ही इसकी चिकित्सा न की जाय, तो यह रोग असाध्य हो
जाता है।

वल्मीकशीर्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] स्रोताजन। लाल सुरमा।

वल्मीकसंभवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वल्मीकसम्भवा] एक प्रकार की
ककड़ी [को०]।

वल्मीकाग्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] रामगिरि पर्वत का एक शृंग [को०]।

वल्मीकूट—सञ्ज्ञा पु० [म०] विमोट [को०]।

वल्म—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ लीलावती के अनुसार एक मान जो तीन
गुजा या रस्ती के बराबर तौल में होता है।

विशेष—वैद्यक में दो गुजा का एक 'वल्म' माना गया है और
राजनिघट्ट सार्ध एक घुँघची का ही वल्म मानता है।

२ खलिहान में भूसा अलग करना। बरसाना। ओसाना। ३
निषेध। ४ आवरण। ५ सलई का पेड़। ६ बौरा। ७ एक
माशा चाँदी [को०]। ८ एक किस्म का गेहूँ [को०]।

वल्मक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ समुद्र में रहनेवाला एक प्रकार का जंतु।
२ चिड़िया। पक्षी [को०]।

वल्मकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वीणा। उ०—वही वल्मकी में लिए
गोद में, उसे छेड़ती थी महामोद में।—साकेत, पृ० ३०४।
२. सलई का वृक्ष।

वल्मणहार—वि० [स०] √वल् या वल् (= गमन) + हि० हार]
गमनशील। चलनेवाला। चलायमान। उ०—सज्जन वल्मे,
गुण रहे, गुण भी वल्मणहार। सूकण लागी बेलडी, गयाज
मीचणहार।—ढोला०, दू० ३७४।

वल्मभ—वि० [स०] १ अत्यंत प्रिय। प्रियतम। प्यारा। २ सर्व
श्रेष्ठ। सर्वप्रधान [को०]।

वल्मभ^३—सञ्ज्ञा पु० १ अत्यंत प्यारा व्यक्ति। प्रिय मित्र। नायक।
२ पति। स्वामी। जैसे,—रावावल्मभ। ३ अध्वक्ष।
मालिक। ४ सुंदर लक्षणों से युक्त घोड़ा। ५ एक प्रकार की
सेम। ६ वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका
संप्रदाय वल्मभ संप्रदाय कहलाता है।

विशेष—इनके माता पिता का पता नहीं। लक्ष्मण भट्ट नामक एक
दाक्षणी ब्राह्मण ने चुनारगढ़ के पास एक बालक पड़ा पाया,
और उसे अपने घर लाकर पुत्र के समान पाला। फिर वही
बालक प्रसिद्ध वल्मभाचार्य हुआ। जयतक लक्ष्मण भट्ट

जीते रहे, तबतक वल्मभ उन्हीं के पास अध्ययन करते थे।
उनके मरने पर वे विष्णुस्वामी के मंदिर में जाकर शिष्य हुए
और काशी में आकर सन्यास लिया। सन्यास छोड़कर ये फिर
गृहस्थ हो गए थे। इनके कई पुत्र हुए, जो गढ़ियों के मालिक
गोस्वामी हुए। इन्होंने राधाकृष्ण की बड़ी आडंबरपूर्ण उपासना
चलाई और अपना वेदांत सबकी एक स्वतंत्र सिद्धांत भी
स्थापित किया जो 'विशुद्धाद्वैतवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। इस
कारण ये वेदांत के चार मुख्य आचार्यों में माने जाते हैं।
इनका जन्म सन् १४७६ ई० और मृत्यु १५३१ ई० में हुई।
सुरदास आदि अष्टछाप के कवि इन्हीं के शिष्य थे।

वल्मभपाल, वल्मभपालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] साईस। अश्व-
रक्षक [को०]।

वल्मभमत—सञ्ज्ञा पु० [स०] विशुद्धाद्वैतवाद। उ०—वल्मभाचार्य
के द्वितीय पुत्र विट्ठलनाथ ने 'वल्मभ मत' के आठ प्रधान
भक्त कवियों को लेकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।—अक-
वरी०, पृ० ५।

वल्मभा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्रिय स्त्री। प्रिय पत्नी। प्यारी जोड़।

वल्मभा^२—वि० स्त्री० प्यारी। प्रिया।

वल्मभाचार्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य।
विशेष दे० 'वल्मभ'—६। उ०—चैतन्य महाप्रभु एवं वल्मभा-
चार्य द्वारा कृष्णभक्ति को प्रश्रय मिला।—अकवरी०, पृ० ५।

वल्मभायित—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रतिबंध [को०]।

वल्मभी—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. दे० 'वल्मी'। २ गोपिका। गोपी [को०]।

वल्मर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ लता। २ निकुंज। ३ वन। ४ कृष्णा-
गुरु। अगर। ५ मजरी। दे० 'वल्मुर'।

वल्मरि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वल्मरी'।

वल्मरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्ली। लता। २ मजरी। ३ मेयी।
४ वच। ५. एक प्रकार का बाजा।

वल्मव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ गोप। उ०—छोत स्वामी सकल जीव
उद्धरण हित प्रगट वल्मव सदन दनुज हारी।—छोत०, पृ० १।
२ सुपकार। सुआर। रसोइया। ३ भीम का एक नाम।
दे० 'वल्मभ' [को०]।

वल्मवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गोपी। अहीरिन [को०]।

वल्मह^(१)—सञ्ज्ञा पु० [स० वल्मभ, प्रा० वल्मह] दे० 'वल्मभ'।
उ०—सखिए सज्जन वल्महा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिए खिए
अतर सभरइ, नही विमारइ सोइ।—ढोला०, दू० २३।

वल्मह^(२)—अव्य० [अ०] ईश्वर की शपथ। सचमुच। उ०—इन नए
नखरो ने तो वल्मह बस बेतरह आफत मचा दिया।—प्रेम-
घन०, भा० २, पृ० २४।

वल्मि—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ लता। २ पृथिवी [को०]।

वल्मिकटकारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वल्मिकटकारिका] अग्निदमनी।
शोला।

वल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ लता । २ वेला । ३ कोई नाम की लता जिसकी पत्तियों का साग बनाकर खाया जाता है ।

वल्लिकाग्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मूँगा [को०] ।

वल्लिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वल्लिकी' [को०] ।

वल्लिज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मरिच । मिर्च ।

वल्लिदूर्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्वेत दूर्वा । सफेद दूर्वा ।

वल्लिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वल्लिदूर्वा' [को०] ।

वल्लिपापाणसम्भव—सञ्ज्ञा पुं० [स० वल्लिपापाणसम्भव] मूँगा [को०] ।

वल्लियु—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वल्ली] लता । उ०—विना वृक्ष वल्लिय आरोहति ।—प० रासो०, पृ० ६३ ।

वल्लिशूरण, वल्लिस्त्रण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अत्यम्लपर्णी लता । रामचना । रपटुआ ।

वल्लो—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ लता । २ केवटी मोथा । कंवतिका । ३ अग्निदमनी । शोला । ४ काली अपराजिता । ५ चव्य । चाव [को०] । ७ अजमोदा ।

वल्लोक्कर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कानों का वैरूप्य । श्रवणेंद्रिय की विरूपता [को०] ।

वल्लागड—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की मछली [को०] ।

वल्लीज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मिर्च ।

वल्लीपद्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वल्ल [को०] ।

वल्लीवदरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की वेर [को०] ।

वल्लीवृक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शाल वृक्ष ।

वल्लुर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ कुज । २ मजरी । फूलों का गुच्छा ३ क्षेत्र । ४ निर्जन स्थान । सूखी जगह ।

वल्लूर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ घूप में सुखाया हुआ मास । २ शूकर का मास । ३ ऊपर । ऊमर । रेगिस्तान । ४ जंगल । ५ वीरान । उजाड़ । ६ विना जोती हुई भूमि । परती [को०] । ७ कुज । लतामडप [को०] । ८ मजरी [को०] । १०, निर्जल भूमि [को०] ।

वल्लूरक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कान की कुरूपता । वल्लीकर्ण । [को०] ।

वल्ल्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] धात्री वृक्ष । अँवला [को०] ।

वल्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अँवला ।

वल्गज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ओखली ।

वल्गजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का तृण या घास ।

पर्या०—दृढपत्री । तृणक्षु । दृढचुरा । मौंजीपत्री ।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह और तृषा को दूर करनेवाली कही गई है ।

वल्गल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था । इवल । उ०—राम दिन कइक ता ठौर औरहु रहे, आइ वल्गल तहाँ दियो दिखाई । रहिर अरु मास की लग्यो वर्षा करन, ऋषिमकल देखि कै गए डराई ।—सूर (शब्द०) ।

वल्हक, वल्हीक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वल्हीक' [को०] ।

वव—सञ्ज्ञा पुं० [म०] कलित उद्योतिष के अनुसार ग्यारह करणों में एक करण, जिसमें जन्म लेनेवाले मनुष्य का बलवान्, वीर, श्रुती, और विचक्षण होना माना जाता है ।

ववर्जा—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यपगम या देशज] विघ्न । प्रायः । उ०—सदेर्माहि ववर्ज पडयो ।—गी० रामो, पृ० ६७ ।

ववणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [दशी] कपास ।—देशी०, पृ० २८४ ।

ववहार—सञ्ज्ञा पुं० [म० व्यवहार] दे० 'व्यवहार' ।

ववर्णा—क्रि० स० [प्रा० वव] बोना ।

वशकर—वि० [म० वाङ्मय] वश या काबू में करनेवाला [को०] ।

वशकृत—वि० [म० वशकृत] वशीभूत [को०] ।

वशगत—वि० [म० वशगत] वशवर्ती [को०] ।

वशवद—वि० [स०] १ वशीभूत । वशवर्ती । २ आज्ञाकारी । दास ।

वश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. इच्छा । चाह । २ एक व्यक्ति पर दूसर का ऐसा प्रभाव कि दूसरा उसके साथ जा चाहे कर सक, या उससे जो चाहे करा सके । काबू । इन्गियार । अधिकार, जैसे,—(क) इस समय वह तुम्हारे वश में है, जो चाहें करा लो । (ख) मैं उसके वश में हूँ, जैसा वह वहेगा, वैसा वहेंगा । (ग) उसपर मेरा कोई वश नहीं है ।

मुहा०—(किसी का किसी के) वश में होना = (१) अधिकार में होना । काबू में होना । कब्जे में होना । अधीन होना । (२) कहें में होना । आज्ञानुवर्ती होना । दबाव मानना । क्रिया पर वश होना = किसी पर अधिकार होना । 'कमी पर ऐसा प्रभाव होना कि उसे इच्छानुकूल चलाया जा सके । जैसे,—उम लड़के पर हमारा कोई वश नहीं है । वश का = जिसपर अधिकार हो । जो इच्छानुसार चलाया जा सके । अधीन । जैसे,—अब वह मरना हुआ, हमारे वश का नहीं है ।

३ किसी वस्तु या बात को अपने मनकूल घटित करने का सामर्थ्य । शक्ति की पहुँच । काबू । जैसे,—(क) जो अपने वश की बात नहीं उसके लिये शोक क्या ? (ख) हार जीत अपने वश की बात नहीं ।

मुहा०—वश का = इच्छा के अधीन । वश चलना = शक्ति काम करना । कुछ करने का सामर्थ्य होना । काबू करना । जैसे,—यदि मेरा वश चलता, तो मैं उसे निकाल देता ।

४ अर्पण करने का भाव । अधिकार । कब्जा । पभृत्व । उ०—हरि कछु ऐमो टोना जानत । सबके मन अपने वश आनत ।—सूर (शब्द०) । ५ जन्म । ६ वेश्याओं के रहने का स्थान । चकला । ७ आर्यों का एक समूह । उ०—मध्यदेश में बुराओ और पचालों के अलावा वश और उशीनर भी थे ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७ ।

वश^१—वि० १ अधीन । २ आज्ञाकारी । ३. मुग्न [को०] ।

वश^२—प्रत्य० [फा०] समान । तुल्य ।

वशका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आज्ञाकारिणी पत्नी [को०] ।

वशकारक—वि० [सं०] वश या अधिकार में करनेवाला । वशीभूत कराने योग्य [को०] ।

वशक्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] वश में लाने की क्रिया । वशीकरण प्रयोग [को०] ।

वशग—वि० सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वशनर्तों' [को०] ।

वशगा—पञ्चा स्त्री० [सं०] आज्ञाकारिणी स्त्री । वशका [को०] ।

वशन—सज्ञा पुं० [सं०] इच्छा या आकांक्षा करना । चाहना । अभिलाषा करना [को०] ।

वशवर्ती^१—वि० [सं० वशवर्तिन्] जो दूसरे के वश में रहे । जो दूसरे के आज्ञानुसार चलता हो । अधीन । तावे । उ०—उसके सपादक आग्रह और हठ के वशवर्ती हो अपनी मयादा को सर्वथा भूल गए हैं ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८५ ।

वशवर्ती^२—सज्ञा पुं० सेवक । चाकर । दास [को०] ।

वशा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ व०या स्त्री । बाँझ । २ नारी । स्त्री । ३ पत्नी । ४ गाय । ५ हथिनी । ६ व०या गाय । ठाँठ । ७. पति की बहन । ननद । ८. कन्या । बेटो । पुत्री (को०) । ९ वेश्या । वारागना (को०) ।

वशाकु—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की चिड़िया ।

वशाढ्यक—सज्ञा पुं० [सं०] शिशुमार सूँस ।

वशानुग^१—सज्ञा पुं० [सं०] आज्ञाकारी सेवक । अधीन दास ।

वशानुग^२—वि० वशाभूत ।

वशापायी—सज्ञा पुं० [सं० वशापायिन्] कुत्ता । श्वान [को०] ।

वशालोभ—सज्ञा पुं० [सं०] हथिनी के द्वारा हाथी को पकड़ने का ढग या तरीका [को०] ।

वशि—सज्ञा स्त्री० [सं०] वश में करना । समोहित करना [को०] ।

वशिक—वि० [सं०] शून्य । खाली ।

वशिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] अग्न । अग्न की लकड़ी ।

वशिता^१—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधीनता । तावेदारो । २ मोहने की क्रिया या भाव । मोहन । ३ दे० 'वशित्व' (को०) ।

वशिता^२—वि० [सं० वशितृ] स्वतंत्र । २ मयमो [को०] ।

वशित्व—सज्ञा पुं० [सं०] १ वशता । अधीनता । २. योग के अग्निमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक । कहते हैं कि इस सिद्धि से सावक सबको अपने वश में कर लेता है । ३ आत्मसयम (को०) ।

वशिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. शमी का पेड़ । २ एक वनस्पति । बाँदा (को०) । ३ पत्नी । स्त्री (को०) ।

वशिमा—सज्ञा स्त्री० [सं० वशिमन्] योग की आठ सिद्धियों में से एक वशित्व । सिद्धि ।

वशिर—सज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्रनवण । समुद्री नमक । २ एक प्रकार का वृक्ष । ३. एक प्रकार की लाल मिर्च । मिर्चा । ४. चव्य (को०) । ५ अपामार्ग (को०) । ६ राजपिप्पली (को०) ।

वशिष्ठ—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वसिष्ठ' ।

वशी^१—वि० [सं० वशिन्] [वि० स्त्री० वशिनी] १ अपने को वश में रखनेवाला । २ वश में किया हुआ । काबू में लाया हुआ । अधीन । ३ शक्तिशाली (को०) ।

वशी^२—सज्ञा पुं० १ ऋषि । २ शासक । राजा [को०] ।

वशीकर—वि० [सं०] वश में करनेवाला । अधीन बनानेवाला [को०] ।

वशीकरण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० वशीकृत] १ वश में लाने की क्रिया । नियमन । निग्रह । २ मणि, मन्त्र या औषध आदि के द्वारा किसी को अपने वश में करने का प्रयोग । अधीन करना ।

विशेष—तत्र में चार प्रकार के प्रयोग कहे जाते हैं—मारण, मोहन, वशाकरण और उच्चाटण । ऋग्वेद में मन्त्र सिद्ध करके मणि और औषध द्वारा वश में करने का उल्लेख है ।

वशीकरणीय—वि० [सं०] वश में किए जाने योग्य । अपना लेने लायक । उ०—तुम वशीकरणीय, प्रियतम, तुम रुचिर वरणीय साजन । लाजत तव नयन में अब विरति के रंग राग ये क्यों ?—कथास, पृ० ४३ ।

वशीकार—सज्ञा पुं० [सं०] वश में करना ।

वशाकृत—वि० [सं०] १ किसी प्रकार वश में किया हुआ । २ मन्त्र द्वारा वश में किया हुआ । मन्त्रमुग्ध । ३ मोहित । मुग्ध ।

वशीभूत—वि० [सं०] १ वश में आया हुआ । अधीन । तावे । २. दूसरे की इच्छा के अधीन । ३ शक्तिशाली । शक्तिपूर्ण (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वशीर—सज्ञा पुं० [सं०] गजपिप्पली [को०] ।

वशद्रिय—वि० [सं० वशेन्द्रिय] इन्द्रियों को अधीन रखनेवाला । जितेंद्रिय [को०] ।

वश्य^१—वि० [सं०] १ वश में आनेवाला । तावे होनेवाला । २ किसी की इच्छा के अधीन । दूसरे की आज्ञा या कहने में रहनेवाला । वश में रहनेवाला । उ०—तुम्हारा धन है मान अवश्य, किंतु मैं तो यो ही वश्य ।—साकेत, पृ० ४४ ।

वश्य^२—सज्ञा पुं० १ दास । सेवक । २ मातहत । ३ मार्कंडेयपुराण के अनुसार अग्नीध्र का पाँचवाँ पुत्र । ४. लवण । लौंग (को०) ।

वश्यक—वि० [सं०] आज्ञापालक । वश में रहनेवाला [को०] ।

वश्यक—सज्ञा स्त्री० [सं०] वश्या । आज्ञाकारिणी स्त्री [को०] ।

वश्यता—सज्ञा स्त्री० [सं०] वश में होने की अवस्था या भाव । अधीनता । (राष्ट्र या राजा) ।

वश्यमित्र—सज्ञा पुं० [सं०] वह (राष्ट्र या राजा) मित्र जिसका बहुत प्रकार से उपयोग किया जा सके । यह तीन प्रकार का होता है । —(१) एकतोभोगी, (२) उभयोतोभोगी और (३) सर्वतोभोगी ।

वश्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाम । २ नीला पगजिता । ३ गोरचन । ४ आज्ञाकारिणी या वशीभूता स्त्री (को०) ।

वषट्—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय यज्ञी में होता है । अग्न्यास और करन्यास में शिखा और मध्यमा के साथ इसका व्यवहार होता है ।

वपट्कर्ता—सञ्ज्ञा पु० [सं० वपट्कर्तृ] वपट् का या देवाहुति के मनो का उच्चारण करनेवाला होता [को०] ।

वपट्कार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ । होम । होत्र । २. वेदोक्त तैत्तिरीय देवताओं में से एक ।

वपट्कृत—वि० [सं०] देवताओं के निमित्त अग्नि में डाला हुआ । होम किया हुआ । हुत ।

वपट्कृत्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] होम ।

वष्कय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक वर्ष का वछडा [को०] ।

वष्कयणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वष्कयिणी' ।

वष्कयिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वकेना गाय ।

वसत—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्त] [पि० वासत, वासतक, वामतिक, वसती] १ वर्ष की छह ऋतुओं में से प्रथम और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और वसाख के महीने माने गए हैं । नई पत्ती लगन और बहुत से फूल फूलने का मुदर ऋतु । बहार का मौसम ।

विशेष—प्राचीन वैदिक काल में यह ऋतु चैत और वसाख में ही पड़ती थी, पर क्रमशः अथन खिनकने से प्राजकत प्रवृत्ति में कुछ अंतर दिखाई पड़ता है । इसी से पीछे के कुछ ग्रंथों में फागुन और चैत के महीने वसत ऋतु के कहे गए हैं । पर काव्य आदि में परंपरा अनुसार अनन्तक चैत और वसाख ही इस ऋतु के महीने माने जाते हैं । वसत ऋतु के ये लक्षण कहे गए हैं—पेड़ों में फूल लगना और नई पत्तियाँ आना, शीतल, मद और सुगंधयुक्त वायु चलना, सायबाल अत्यंत मनोरम होना और स्त्री पुरुषों का उमंग से भरना, आदि । इस ऋतु में प्राचीन काल में वसंतोत्सव और मदनपूजा होती थी । आजकल होली का उत्सव उसी की परंपरा है । पुराणों में इस ऋतु का अधिष्ठाता देवता कामदेव का सहचर कहा गया है ।

२ अतिसार रोग । ३ शीतला रोग । विस्फोटक । चेचक ।

४ मसूरिका रोग । ५ छह रागों में दूसरा राग । (संगीत) ।

विशेष—इस राग की उत्पत्ति पंचवक्त्र शिव के पाँचवें मुख से कही गई है । इसकी छह रागिनियाँ ये हैं—देशी, देवगिरी, वैराटी, ताडिका, ललिता और हिंडोला । कल्लिनाथ के अनुसार छह रागिनियाँ ये हैं—अधूनी, गमनी, पटमजरी, गौडकेरी, वामकली और देवशाखा । संगीतदामोदर का मत है कि श्रीपंचमी से हरिश्चयनी एकादशी तक वसत राग गा सकते हैं । पर संगीतदर्पण के अनुसार इसे वसत ऋतु में ही गाना चाहिए । इसका सरगम इस प्रकार है—सा, रि, ग, म, प, नि, सा । मुख्य लोग इस राग को हिंदोल राग का पुन मानते हैं ।

६ एक ताल का नाम । (संगीत) । ७ फूलों का गुच्छा । ८ नाटक में विद्रूपकों की आख्या का नाम [को०] । ९ एक वृत्त का नाम [को०] ।

वसतक—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तक] १ वसत ऋतु [को०] । २ श्योनाक । सोनाप.डा । टेंडू । अरबू ।

वसतकाल—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तकाल] बहार का मौसम । वसत ऋतु [को०] ।

वसतकुसुम—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तकुसुम] गोदनी नाम का वृक्ष । विशेष दे० 'गोदी' [को०] ।

वसतकुसुमाकर—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तकुसुमाकर] एक उत्तम रमोपय । (वैद्यक) ।

वसतवोष—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तवोष] कोकिल । कोयल [को०] ।

वसतवोपी—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तवापिन्] कोकिल ।

वसतजा—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तजा] १ वामती या माघनी लता । २ गफेद जुहो । ३ वसंतोत्सव ।

वसततिलक—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्ततिलक] १ एक प्रकार के फूल का नाम । २ एक वर्षावृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगरा, भगण, जगरा, जगरा, और दो गुरु, इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते हैं । जैसे,—लाला ललाम मृदुता अवलोकनीया ।

वसततिलका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्ततिलका] एक वर्षावृत्त । दे० 'वसततिलक' ।

वसतदूत—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तदूत] १ आम का वृक्ष । २ कोयल । ३ पंचम राग । ४ चैत्र मास ।

वसतदूती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तदूती] १ कोकिला । २ पटोली वृक्ष । पाँउरी । पाडर । ३ माघनी लता ।

वसतद्रु—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तद्रु] आम्रवृक्ष [को०] ।

वसतद्रुम—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तद्रुम] आम का वृक्ष [को०] ।

वसतपंचमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तपञ्चमी] माघ महीने की शुक्ल पंचमी ।

विशेष—इस दिन वसत और रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है । वसत राग के चुनन का महाफल है । इस दिन एकाहार व्रत भी किया जाता है ।

वसतपुष्प—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तपुष्प] १. वसत ऋतु के पुष्प । २ एक प्रकार का कदव पुष्प [को०] ।

वसतवधु—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तवधु] कामदेव ।

वसतभरवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तभरवी] एक रागिनी का नाम ।

वसतमहोत्सव—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तमहोत्सव] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसतपंचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसत की पूजा के उपलक्ष्य में मनाया जाता था । २ होलिकोत्सव ।

वसतमारु—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तमारु] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

वसतमालतीरस—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तमालतीरस] एक प्रसिद्ध रसोपय का नाम [को०] ।

वसतमालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तमालिका] एक वर्षावृत्त । एक छंद का नाम [को०] ।

वसतयात्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तयात्रा] वसंतोत्सव ।

वसतयोध—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तयोध] कामदेव [को०] ।

वसन्तर्तु—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तर्तु] ऋतुराज वसन्त । बहार का मौसम [को०] ।

वसन्तवाक्—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तवाक्] सगीतदामोदर के अनुसार चौदह तालों में से एक ।

वसन्तव्रत—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तव्रत] कोकिल ।

वसन्तसखा—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तसखः] १ कामदेव । मदन । २ मलय पवन ।

वसन्तसखा—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तसखा] १ मदन । कामदेव । २ मलयानिल ।

वसन्तसहाय—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तसहाय] जिसका सहायक वसन्त हो, कामदेव [को०] ।

वसन्ता—सञ्ज्ञा पु० [हि० वसन्ता] हरे रंग की एक सुन्दर चिड़िया जिसका कंठ और सिर लाल होता है ।

वसन्तार्त—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तार्त] विभीतक वृक्ष । बहेडा ।

वसन्ती^१—सञ्ज्ञा पु० [हि० वसन्ती] एक रंग जो हलका पीला होता है । सरसों के फूल के रंग का । वसन्ती ।

वसन्ती^२—वि० वसन्ती रंग का ।

विशेष—वसन्तोत्सव में इस रंग के कपड़े पहने जाते हैं ।

वसन्तोत्सव—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसन्तोत्सव] १ एक उत्सव, जो प्राचीन काल में वसन्त पंचमी के दूसरे दिन होता था ।

विशेष—इसे 'मदनोत्सव' भी कहते थे । इसमें उद्यानों में जाकर लोग वसन्त और कामदेव का पूजन करते थे । होली का उत्सव इसी की परंपरा है ।

२ होली का उत्सव ।

वसन्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वसन्त] १. विस्तार । फैलाव । २. समाई । अँटने की जगह । ३. चौड़ाई । ४. सामर्थ्य । शक्ति । जैसे—सब काम अपना वसन्त देखकर करना चाहिए ।

वसन्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वास । रहना । २. घर । ३. वस्ती । आवादी । ४. जैन साधुओं का मठ । ५. रात । रात्रि । विश्राम काल । ६. शिविर । पड़ाव [को०] ।

वसन्ती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वास । रहना । २. रात । ३. घर । दे० 'वसन्ति' ।

वसन्त^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वसन्त] दे० 'वस्तु' । उ०—हुता सज्जण हीयड़े सयणाँ हृदा हत्त । जउ सोहणो साचइ होअइ, सोहणो बडी वसन्त ।—ढोला०, दू० ५०६ ।

वसन्त^२—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. रहने का स्थान । २. वास । घर । ४. पक्षियों का घोंसला [को०] ।

वसन्त^३—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. वस्त्र । २. ढकने की वस्तु । आवरण । छादन । ३. घेरा । अवरोध । परिवेष्टन [को०] ।

यौ०—वसन्तपर्याय = वस्त्रपरिवर्तन । वस्त्र बदलना । वसन्तसय = तबू । खेमा । रावटी ।

वसन्ता^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों की कमर का एक आभूषण ।

वसन्ता^२—वि० (समास में) १. वस्त्र धारण करनेवाली । जैसे, शुभ्र-

वसन्ता । २. धिरी हुई । आवेष्टित । जैसे समुद्रवसन्ता । ३. निमग्न । लीन [को०] ।

वसन्तार्णवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भूमि । पृथिवी ।

वसन्ती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वसन्ता' [को०] ।

वसन्ता—सञ्ज्ञा पु० [अ० वसन्त] १. नील का पत्ता । २. खिजाव । ३. उबटन । ४. एक प्रकार का छपा कपड़ा जो चाँदी के वर्क लगाकर छपा जाता है ।

वसवस्त—सञ्ज्ञा पु० [अ०] दे० 'वसवास' [को०] ।

वसवास—सञ्ज्ञा पु० [अ०] [वि० वसवासी] १. भ्रम । दुश्वा । सदेह । २. भुलावा । बहकावा । प्रलोभन या मोह । उ०—सरगहुँ ते दोउ निकसे नारद के वसवास ।—जायसी (शब्द०) ।

वसवासी—वि० [अ० वसवास] १. विश्वास न करनेवाला । शक्की । शय्यात्मा । २. भुलावे में डालनेवाला । बहकानेवाला ।

वसह^१—सञ्ज्ञा पु० [सं० वृषभ, प्रा० वसह] बैल । वसह ।

वसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेद । २. चरबी । ३. भेजा । मगज [को०] ।

वसाकेतु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के धूमकेतु जो पश्चिम में उदय होते हैं और जिनका पूँछ का विस्तार उत्तर की ओर होता है । ये देखने में स्तम्भ ज्ञान पड़ते हैं और इनके उदय से सुभिन्न होता है ।

वसाच्छटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मस्तिष्कपिंड । भेजा [को०] ।

वसाढ्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शिशुमार । सूँस ।

वसाढ्यक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वसाढ्य' ।

वसातनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पीला शीशम ।

वसाति^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. वसाति नामक जनपद का अधिवास । २.—दक्षिणी पश्चिमी पंजाब में अवन्तो, क्षत्रियों तथा वसातियों के छोटे छोटे सभ थे ।—ग्रा० आ० पृ० २८० । २. इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । ३. जनमेजय के एक पुत्र का नाम ।

वसाति^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १. उत्तर के एक जनपद का नाम । २. उषा [को०] ।

वसादनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पीला शीशम [को०] ।

वसान—वि० [सं०] निवास करनेवाला । रहनेवाला [को०] ।

वसापाथी—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसापाथिन्] कुत्ता ।

वसापावन—सञ्ज्ञा पु० [सं० वसापावन्] एक प्रकार के वैदिक देवता । पशुभाजा ।

वसाप्रमेह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का मेह रोग जिसमें मूत्र के साथ चरबी मिलकर निकलती है ।

विशेष—आधुनिक डाक्टरों की चिकित्सा में यह बहुमूत्र का भेद है, जिसमें मूत्र के साथ शरीर का सत निकलता है और रोगी बहुत क्षीण हो जाता है ।

वसाप्रमेही—वि० [सं० वसाप्रमेहिन्] चर्बीयुक्त अथवा चर्बी के समान

पेशाव करनेवाला । उ०—वसामेही वसा (चर्वी) युक्त अथवा वसा के समान मूत्रे '—माधव०, पृ० १८४ ।

वसामूर—सज्ञा पुं० [स०] एक जनपद का नाम ।

वसामेह—सज्ञा पुं० [स०] वसामेह ।

वसार—सज्ञा पुं० [स०] १ इच्छा । २ वश । ३ अभिप्राय ।

वसारोह—सज्ञा पुं० [स०] कुकुरमुत्ता । खुनी ।

वसि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भवन । घर । २ वस्त्र । कपड़ा [को०] ।

वसित—सज्ञा पुं० [स०] १ निवासस्थान । २ वस्त्र ।

वसित—वि० १ वसा हुआ । निवसित । २ पहना हुआ । ३ इकट्ठा किया हुआ [को०] ।

वसितव्य—वि० [स०] १ धारण के योग्य । पहनने लायक । २ निवास करने या ठहरने के उपयुक्त [को०] ।

वसिता—वि० [स० वसितृ] १ निवास करनेवाला । २ पहनने-वाला [को०] ।

वसिर—सज्ञा पुं० [स०] १ समुद्रलवण । २ गज, पत्थली । ३ लाल रंग का अपामार्ग । लाल चचडा । ४ जलनीम ।

वसिष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्राचीन ऋषि, जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत, पुराणों आदि तक में है ।

विशेष—वेदों में ये मित्र और वरुण के पुत्र कहे गए हैं । यज्ञ-स्थल में एक बार उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण का वीर्यपात हो गया । वह वीर्य एक यज्ञकुम्भ में रखा गया । कुम्भ से वासिष्ठ और अगस्त्य का जन्म हुआ । 'वृहद्देवता' में लिखा है कि कुम्भ के जल में मत्स्य, स्थल में वासिष्ठ और कुम्भ में अगस्त्य उत्पन्न हुए थे । ऋग्वेद के अनुसार ये वासिष्ठ गांधार और काबुल की और राज्य करनेवाले त्रिस्तु वंश के राजा दिवादास क पौत्र और पिजवन के पुत्र सुदास क पुरोहित थे । सुदास ने इनको बहुत कुछ दान दिया था । एक बार सुदास ने यज्ञ करने के लिये विश्वामित्र का बुलाया, इसपर वासिष्ठ बहुत क्रुद्ध हुए । उन्होंने अपने अन्य यजमानों, भरतों क द्वारा विश्वामित्र को बहुत तग किया । विश्वामित्र तो चले आए, पर सुदास के पुत्रों ने वासिष्ठ के सौ पुत्रों का नाश कर दिया । फिर वासिष्ठ ने 'एकस्मान्' इत्यादि ५० मंत्रों द्वारा यज्ञ करके सुदासों का पराभूत किया ।

पुराणों में वासिष्ठ ब्रह्मा के मानसपुत्र कहे गए हैं । राजा निमि और वासिष्ठ के बीच एक बार झगडा हुआ । वासिष्ठ ने निमि को और निमि ने वासिष्ठ को शाप दिया । निमि तप करके शरीररहित होकर अमर हुए और उनका वंश विदेह कहलाया । वासिष्ठ ने शरीर को त्यागकर मित्रावरुण के वीर्य से जन्म ग्रहण किया । कामधेनु के लिये वासिष्ठ और विश्वामित्र (जो पहले राजा थे) से बहुत दिनों तक झगडा होता रहा । विश्वामित्र के सौ पुत्रों को वासिष्ठ ने केवल हुकार से जला दिया था । विश्वामित्र अंत में हारकर ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिये तप करने लगे । पुराणों में वासिष्ठ को अनेक पत्नियों के नाम मिलते हैं, जिनमें से एक अरुधती थी, जो कर्दम की कन्या

थी और वसिष्ठ को सवसे प्रिय थी । इनकी एक और स्त्री अक्षमाला नीच जाति की थी । किसी और पत्नी में इन्हें प्रवृत्त नामक एक पुत्र हुआ था जो गोनकार ऋषि हुआ । ऋग्वेद के अनेक मंत्रों के द्रष्टा वसिष्ठ हैं । सप्तम मंडल के द्रष्टा ये ही माने जाते हैं ।

२. सप्तपिंडल का एक तारा जिनके पास का छोटा तारा अरुधती कहलाता है । ३ नाम । ४ एक स्मृतिकार [को०] ।

वसिष्ठक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वसिष्ठ' [को०] ।

वसिष्ठनिहव, वसिष्ठनिह्व—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठपुराण—सज्ञा पुं० [स०] एक उपपुराण जिनका उत्प्रेत देवी भागवत में है । कुछ लोग कहते हैं कि लिंगपुराण ही वसिष्ठ पुराण है ।

वसिष्ठप्राची—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल के एक जनपद का नाम ।

वसिष्ठशफ—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठसर्प—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सन्यासी ।

वसिष्ठसहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक स्मृति का नाम ।

वसिष्ठसिद्धान्त—सज्ञा पुं० [स० वाग्विद्वान्त] ज्योतिष का एक सिद्धान्त ग्रंथ ।

वसिष्ठकुश—सज्ञा पुं० [स० वसिष्ठकुश] एक नाम का नाम ।

वसिष्ठानुपद—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठानुवाद—सज्ञा पुं० [स०] मरस्वती नदी के किनारे का एक प्राचीन स्थान ।

विशेष—कथा है कि जब वसिष्ठ और विश्वामित्र के बीच घोर युद्ध हुआ था, तब मरस्वती नदी ने वसिष्ठ को विश्वामित्र से बचाने के लिये इसी स्थान पर छिपा लिया था ।

वसिष्ठोपपुराण—सज्ञा पुं० [स०] वसिष्ठपुराण नाम का एक उपपुराण [को०] ।

वसी^१—पुं० [स० वसिन्] ऊदबिलाव [को०] ।

वसी^२—सज्ञा पुं० [अ०] वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो [को०] ।

वसीअ—वि० [अ० वसीअ] विस्तृत । लंबा चौड़ा [को०] ।

वसीअत—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'वसीयत' ।

वसी०—वसीअतनामा = वसीयतनामा ।

वसीक—वि० [अ० वसीक] मजबूत । टिकाऊ । ठोस । दृढ़ [को०] ।

वसीका—सज्ञा पुं० [अ० वसीकह] १ मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार वह धन जो विधर्मी या काफिर से नगद रूप के मुनाफे के तौर पर लिया जाय । २ वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सुद जमा करनेवाले के सबधियों को मिला करे अथवा किसी धर्मकार्य, मकान की मरम्मत आदि में लगाया जाय । उ०—आपको पाँच सौ रूपए महीने का वसीका सरकार से मिलता है । —प्रेमचन्द०, भा० २, पृ० ८४ । ३. ऐसे धन से आया हुआ सुद । वृत्ति । ४. वक्फ का इकरारनामा ।

वसीकादार—सज्ञा पु० [अ० वसीकह् + का० दार] वसीका पाने-
वाला । पेशनयापता [को०] ।

वसीग्र—वि० [अ०] १ चार । सुदर । मनोहर । २ अकिन ।
चिह्नित [को०] ।

वसीयत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह अंतिम आदेश जो विदेश जाने-
वाला या मरणासन्न पुरुष इस उद्देश्य से करता है कि मेरी
अनुपस्थिति में अमुक काम इस प्रकार किया जाय । २. अपनी
मर्त्यता के विभाग और प्रवच आदि के संबन्ध में की हुई वह
व्यवस्था जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है ।
विल ।

वसीयतनामा—सज्ञा पु० [अ० वसीयत + का० नामह] वह लेख
जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी मर्त्यता
का विभाग और प्रवच मरे मरने के पीछे किस प्रकार
हो । विल ।

वसीरो—वि० [म० वसु] वसा या वसाया हुआ । प्रजा । उ०—
हुँ वै वसीरो वाणियो, पातर हुँ वै खवास ।—वाँकी० ग्र०, भा०
२, पृ० ६२ ।

वसीला—सज्ञा पु० [अ० वसीलह्] १ सबध । २ आश्रय ।
सहायता । उ०—बिना वसीला सत नाम से भेंट न होई ।—
पलटू०, पृ० ७ । ३ किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग । जरिया ।
द्वार । जैसे,—(क) किस वसीले से वह यहाँ आया । (ख)
नौकरी के लिये जाता हूँ, कोई वसीला निकल ही आवेगा ।

मुहा०—वसीला पैदा करना = (१) किसी कार्य की सिद्धि का
मार्ग निकालना । सहारा पैदा करना । (२) आमदनी आदि
का रास्ता निकालना । वसीला रखना = (१) मवध रखना ।
(२) आसरा रखना ।

वसुधरा—सज्ञा स्त्री० [सं० वसुधरा] १ धरा । पृथ्वी । २. श्वफलक
की कन्या जो सात से व्याही थी । ३ एक देवी का नाम ।
४ देश । राज्य [को०] ।

वसुधराधर—सज्ञा पु० [सं० वसुधराधर] भूवर । पर्वत [को०] ।

वसुधराधव—सज्ञा पु० [सं० वसुधराधव] भूपति । राजा [को०] ।

वसुधराभृन्—सज्ञा पु० [सं०] पशु [को०] ।

वसु—सज्ञा पु० [सं०] १ देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत
आठ देवता हैं ।

विशेष—वेदों में वसु शब्द का प्रयोग अग्नि, मरुद्गण, इन्द्र, उषा,
अश्वी, रुद्र और वायु के लिये मिलता है । वसु को आदित्य भी
कहा है । बृहदारण्यक में इस गण में पृथिवी, वायु, अतरिक्ष,
आदित्य, सूर्य, अग्नि, चंद्रमा और नक्षत्र माने गए हैं । महाभारत
के अनुसार आठ वसु ये हैं—वर, ध्रुव, मोम, विष्णु, अनिल,
अनल, प्रत्यूष और प्रभास । श्रीमद्भागवत में ये नाम हैं—द्रोण,
प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वास्तु और विभावसु । अग्नि-
पुराण में आप, ध्रुव, मोम, वर, अनिल, अनन, प्रत्यूष और
प्रभास वसु कहे गए हैं । भागवत के अनुसार दक्ष प्रजापति

की कन्या 'वसु' ने, जो धर्म को व्याही थी, वसुओं को
उत्पन्न किया ।

देवीभागवत में कहा है कि एक बार वसुओं ने वसिष्ठ की नदिनी
गाय चुरा ली थी, जिससे वसिष्ठ जी ने शाप दिया था कि तुम
लोग मनुष्य योनि में जन्म लोगे । उमी शाप के अनुसार
वसुओं का जन्म शातनु की पत्नी गंगा के गर्भ से हुआ, जिनमें
सात को तो गंगा जनमने ही गंगा में फेंक आई, पर अंतिम
भीष्म वचा लिए गए । इसी में भीष्म वसु के अवतार माने
जाते हैं ।

२. शब्दों द्वारा मर्यादा सूचित करने की रीति के अनुसार आठ की
संख्या । ३ रत्न । ४ धन । ५ वक् वृक्ष । अगस्त का पेड़ ।
६ अग्नि । ७ रश्मि । किरण । ८ जल । ९ सुवर्ण । सोना ।
१० योक्त्व । जोत । ११ कुबेर । १२ पीली मूँग । १३ वृक्ष ।
पेड़ । १४ शिव । १५ सूर्य । १६ विष्णु । १७ मौलविर ।
वकुल । १८ साधु पुरुष । सज्जन । १९ मरोवर । तालाब ।
२० राजा नृग के एक पुत्र का नाम । २१ छप्पय के हो
सकनेवाले भेदों में से ६६ वाँ भेद । २२ घृत । घी [को०] ।
२३ वस्तु । पदार्थ [को०] । २४ एक प्रकार का नमक [को०] ।
२५ रास । लगाम । बागडोर [को०] । २६ रज्जु । रस्सी
[को०] । २७ हाथ की कुहनी से लेकर बँधी हुई मुट्ठी तक की
लंबाई या दूरी [को०] ।

वसु^१—सज्ञा स्त्री० १ दीप्ति । आभा । २ वृद्धोपव । वृद्धि । ३ दक्ष ।
प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को व्याही थी और जिससे
द्रोण आदि आठ वसुओं का जन्म हुआ था । ४ अमरावती ।
इंद्रपुरी [को०] । ५ अलका । कुबेर की नगरी [को०] ।

वसु^२—वि० १ जो मवमे वाम करता हो । २ जिसमें मवका वाम
हो । ३ मोठा । मधुर [को०] । ४ मूला । गुल्फ [को०] । ५.
धनी । संपन्न । ६ अच्छा । उत्तम ।

वसुक—सज्ञा पु० [सं०] १ मोंभर नमक । २ पाणु लवण । रेह ।
३ वास्तुक शाक । बघुग्रा । ४ काना प्रगर । कृष्णागुरु । ५
चार लरण । ६ मदार का वृक्ष । ७. वनहला वृक्ष । बटी
मौलसिरी । ८ एक प्रकार का तान [को०] । ९ एक प्रकार
का पुष्प [को०] ।

वसुकर्ण—सज्ञा पु० [सं०] एक मयद्रष्टा ऋषि ।

वसुकीट—सज्ञा पु० [सं०] भिखारी [को०] ।

वसुकृत—सज्ञा पु० [सं०] एक मयद्रष्टा ऋषि ।

वसुकृमि—सज्ञा पु० [सं०] भिक्षुक । भिखारी [को०] ।

वसुकोट्य—सज्ञा पु० [सं०] तानोजगर ।

वसुक—सज्ञा पु० [सं०] एक मयद्रष्टा ऋषि का नाम ।

विशेष—इस नाम के दो ऋषि हुए हैं । एक इन्द्र के गोत्र में
उत्पन्न हुए थे, दूसरे वसिष्ठ के गोत्र के थे ।

वसुचरण—सज्ञा पु० [सं०] उगण के चौथे भेद का नाम जिसके
आदि में गुह और फिर दो लघु होने हैं । (विगल) ।

वसुचारुक—सज्ञा पु० [सं०] सोना ।

वसुच्छिद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] महामेधा ।

वसुद^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर । २ विष्णु ।

वसुद^२—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्कन्दमाताओं में से एक । २ पृथ्वी ।
३ माली राज्ञस की पत्नी ।

विशेष—यह नर्मदा नाम की गधवों की पुत्री थी । इसके अन्तल, निल, हर और सपति नामक चार पुत्र थे, जो विभीषण के अमात्य थे ।

वसुदान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विदेहराज के एक पुत्र का नाम । २.
वृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वासुदामन्] वृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्कन्दमाताओं में से एक का नाम ।

वसुदेव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ यदुवशियों के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे ।

विशेष—इनके पिता का नाम देवमीढ और माता का मारिषा था । इनके जन्म के समय स्वर्ग में दुर्दुर्भ का शब्द सुनाई पड़ा था इससे ये 'आनकदुर्दुर्भ' कहलाते थे । ये अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे । इनकी वारह स्त्रियाँ थी—पौरवी, रोहिणी, मदिरा, धरा, वैशाखी, भद्रा, सुनाम्नी, सहदेवा, शांतिदेवा, सुदेवा, देवरक्षिता और देवकी । इन पत्नियों के अतिरिक्त इनके सुतनु और बडवा नाम की दो परिचारिकाएँ भी थी । रोहिणी के गर्भ से बलराम और देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था । वसुदेव की बहन कुन्ती थी, जिससे पांडव उत्पन्न हुए थे ।

२ एक राजा जो पहले वसुभूति का अमात्म था और पीछे उसे मारकर आप राजा हुआ । ३ धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेवत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेव्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ धनिष्ठा नक्षत्र । २ पक्ष की नवमी तिथि ।

वसुदैव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वसुदैवत' [को०] ।

वसुदैवत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुद्रुम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उदुवर । गूलर ।

वसुधर्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुधर्मन्] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

वसुधार्मिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० वसुधार्मिका] स्फटिक पत्थर [को०] ।

वसुधा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । भूतल । २ देवलोक ।

वसुधा^२—वि० वसु अर्थात् धन देनेवाला । धनदाता ।

वसुधातल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धरातल । पृथ्वीतल [को०] ।

वसुधाधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत । २ विष्णु ।

वसुधाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा ।

वसुधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी ।

वसुधार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मार्कण्डेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

वसुधारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ जनों की एक ऐसी का नाम ।

पर्या०—तारा । नीलमरन्वती । महाश्री । स्वाहा । श्री । जया । अन्ता । शिवा । भद्रा । शम्पिनी । महातारा । त्रिलोचना । तारिणी ।

२ कुबेर की पुरी, अलका । ३ एक तीर्थ का नाम । ४ नादीमुख आदि या अग एक वृत्त, जिसमें राजा वसु के लिये धी की सात धारें दी जाती हैं । पहले दीवार में चदन में मात चिह्न बनाए जाते हैं । फिर वेदमन्त्र पढ़ने हुए धारें दी जाती हैं । ५ एक नदी का नाम । स्वर्गगंगा । मदाक्षिनी ।

वसुधारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी [को०] ।

वसुधार्मिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्फटिक । स्तरविल्ली । २ मगमर्गर ।

वसुनेत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, जिन्हें चार मुख होने के कारण आठ आँखें हैं [को०] ।

वसुनीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा ।

वसुनीथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वसुपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण [को०] ।

वसुपाता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुपातृ] कृष्ण [को०] ।

वसुपाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा [को०] ।

वसुप्रद^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ स्कन्द के एक अनुचर का नाम । ३ कुबेर ।

वसुप्रद^२—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुप्रभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । ४ कुबेर की नगरी । अलका [को०] ।

वसुप्राण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अग्नि [को०] ।

वसुपंधु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुपंधु] एक प्राचीन बौद्ध आचार्य जो महायान शाखा के अनुयायी थे । इन्होंने अनेक ग्रंथ रचे थे, जिनमें से कुछ के अनुवाद चीनी भाषा में भी वर्तमान हैं ।

वसुभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुभारत—वि० [सं०] धनपूर्ण । धनाढ्य [को०] ।

वसुमती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ छह वरों का एक वृत्त, जिनके प्रत्येक चरण में तमरा और सगरु होते हैं । उ०—तानी परिहरो जो है । हनु खरो । रारी जडमती । धारी वसुमती । ३ धनी या संपन्न स्त्री [को०] । ४ देश । राज्य । प्रदेश [को०] ।

वसुमना—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुमन्] पुराणानुसार एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि का नाम ।

वसुमान^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुमन्] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो उत्तर दिशा में है । २ वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम [को०] । ३ कृष्ण का एक नाम [को०] ।

वसुमान^२—वि० धनवान् । धनी । समृद्ध [को०] ।

वसुमित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक बौद्ध आचार्य ।

विशेष—ये महायान शाखा के अतर्गत वैभाषिक संप्रदाय के थे ।

ये काश्मीर के पश्चिम अश्मापरात देश के निवासी कहे गए हैं ।

वसुर वि० [सं०] कीमती । मूल्यवान् [को०] ।

वसुरक्षित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक बौद्ध आचार्य का नाम ।

वसुरात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम ।

वसुरुच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के देवता ।

वसुरुचि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गर्व का नाम ।

वसुरूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव ।

वसुरेता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुरेतस्] १ अग्नि । २ शिव ।

वसुरोचि—सञ्ज्ञा पुं० । सं० वसुरोचिस्] १ यज्ञ । २ अग्नि [को०] ।

वसुरोधी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव ।

वसुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] देवता ।

वसुवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार ईशान कोण में स्थित एक देश ।

वसुवाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम ।

वसुविद्—वि० [सं० वसुविन्द] धन पानेवाला [को०] ।

वसुविद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वसुव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुष्ठान । एक तरह की तपस्या जिसमें १२ दिनों तक पृथ्वी पर गिरे हुए अन्न को खाकर रहा जाता है [को०] ।

वसुश्रवा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वसुश्रवस्] शिव [को०] ।

वसुश्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

वसुश्रुत—सञ्ज्ञा पुं० अत्रिगोत्रीय एक ऋषि का नाम ।

वसुश्रेष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चाँदी । रजत । २ कृष्ण । ३. नकली सोना । कृत्रिम स्वर्ण [को०] ।

वसुपेण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कर्ण । २ विष्णु [को०] ।

वसुसारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका ।

वसुसेन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कर्णराज [को०] ।

वसुस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका ।

वसुहस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम ।

उ०—चल्यो वीर वसुहस हस दुति हस वरन पट । जादवकुल अवतस शत्रु विववसवरन भट ।—गोपाल (शब्द०) ।

वसुहृद्, वसुहृत्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अगस्त का वृक्ष ।

वसुहोम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार अग्न देश के एक राजा का नाम ।

वसूक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड़ या फूल । २ साँभर नामक । ३. दे० 'वसुक' ।

वसूज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अत्रिगोत्रीय एक ऋषि जो ऋग्वेद के एक सूक्त के द्रष्टा थे ।

वसूत्तम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पितामह भीष्म का एक नाम [को०] ।

वसूदम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सजीखार [को०] ।

हि० श० ९-८

वसूरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०] ।

वसूल—वि० [अ०] १ पास पहुँचा हुआ । मिला हुआ । प्राप्त । जैसे,—खत का वसूल होना । २. जो चुका लिया गया हो । जो हाथ में आ गया हो । प्राप्त । लब्ध । जैसे,—लगान वसूल करना, रुपया वसूल करना ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

मुहा०—वसूल पाना = दूसरे से जो पाना हो, वह मिल जाना ।

वसूल—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'उसूल' ।

वसूली—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] १ चुकता कराने की क्रिया । दूसरे से रुपया पैसा या वस्तु लेने का काम । प्राप्ति । जैसे,—इन्हे रुपया देते तो हो, पर वसूली में बड़ी दिक्कत होगी । २ बाकी निकला या चाहता हुआ रुपया लेने का काम । जैसे,—उस गाँव में वसूली शुरू हो गई ।

वस्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. जाना । चलना । गमन । २ परिश्रम । अध्यवसाय [को०] ।

वस्कय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वण्कय' ।

वस्कयणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वण्कयणी' ।

वस्कराटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू [को०] ।

वस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वकरा । २ निवास की जगह । ३. मकान । घर [को०] ।

वस्त^२—अव्य० [अ०] मध्य । बीच ।

वस्त^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वस्तु' ।

वस्तक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कृत्रिम लवण । बनाया हुआ नमक ।

वस्तकर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शाल वृक्ष । साखू का पेड़ ।

वस्तगन्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वस्तगन्धा] अजगन्धा [को०] ।

वस्तमोदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा ।

वस्तर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्र] दे० 'वस्त्र' । उ०—कामकंदला विरहवसि, वस्तर गात मलीन । मुख माधो माधो रटै, होइ सो छिन छिन छीन ।—हिं० क० का०, पृ० २१२ ।

वस्तव्य - वि० [सं०] १ निवास योग्य । रहने लायक । २ विताने या व्यतीत करने लायक [को०] ।

वस्तव्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] निवास । रहना [को०] ।

वस्तात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृषपत्रिका नामक पीवा । अजात्री [को०] ।

वस्ता—वि० [सं० वस्तु] १ द्योतित या दीप्त होनेवाला । चमकनेवाला । २. पहनने या धारण करनेवाला । ३ रखनेवाला । ऊपर रखनेवाला [को०] ।

वस्तादी—सञ्ज्ञा पुं० [अ० उस्ताद] दे० 'उस्ताद' । उ०—अब्वल याद करो वस्ताद की । गुरु, पीर, पैगवर की और याद किए करतार की ।—दक्खिनी०, पृ० ५७ ।

वस्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाभि के नीचे का भाग । पेड़ू । २ मूत्राशय । ३. पिचकारी । ४ रहना । रुकना । पड़ाव । निवास [को०] । ५, वस्त्र का आँचल । छोर [को०] ।

वस्तिवर्म—सञ्ज्ञा पु० [सं० वस्तिकर्मन्] लिङ्गेंद्रिय, गुर्देन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देने की क्रिया ।

वस्तिकर्माढ्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] रीठे का पेड़ । अरिष्ट वृद्ध [को०] ।

वस्तिकुडलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वस्तिकुण्डलिका] एक रोग ।

विशेष—इस रोग में मूत्राशय में गाँठ सी पड़ जाती है, उसमें पीड़ा तथा जलन होती है और पेशाब कठिनता से उतरता है । गाँठ को दवाने से कभी तो बूँद बूँद करके पेशाब गिरता है, और कभी धार भी निकल पड़ती है । यह रोग असाध्य कहा जाता है । अधिक परिश्रम करने, दौड़कर चलने या चोट लगने से इस रोग की उत्पत्ति कही गई है ।

वस्तिकोश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मूत्राशय [को०] ।

वस्तिमल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मूत्र । पेशाब ।

वस्तिवात—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक मूत्र रोग जिसमें वायु बिगड़कर वस्ति (पेड़) में मूत्र को रोक देता है ।

वस्तिशिर—सञ्ज्ञा पु० [सं० वस्तिशिरस्] १ पिचकारी का अग्रभाग या टोटी । २ मूत्राशय का ऊपरी सक्कीर्ण भाग [को०] ।

वास्तशोधन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ मदन वृद्ध । मदनफल का पेड़ । २ मदनफल । मदनफल ।

वस्ती—वि० [अ०] दरम्यानी । बीच का । मध्यवर्ती [को०] ।

वस्ती०^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वस्ति = (रहना)] रहने की जगह । जनपद ।

वस्तु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १. वह जिसका अस्तित्व हो । वह जिसकी सत्ता हो । वह जो सचमुच हो । जैसे,—डर कोई वस्तु नहीं । २ सत्य । ३ वह जिसका नाम-रूप हो । गोचर पदार्थ । चीज । जैसे,—घर में बहुत सी वस्तुएँ इधर उधर पड़ी हैं । ४ इतिवृत्त । वृत्तात । ५ आचार । पीठ [को०] । ६ उपकरण । सामग्री । ७ नाटक का कथन या आख्यान । कथावस्तु ।

विशेष—नाटकीय कथावस्तु दो प्रकार की कही गई है—आधिकारिक जिसमें नायक का चरित्र हो, और प्रासंगिक जिसमें नायक के अतिरिक्त और किसी का चरित्र बीच में आ गया हो । विशेष दे० 'नाटक' ।

८ धन । संपत्ति [को०] । ९ ढाँचा । आकार । रूपरेखा [को०] ।

वस्तुक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वधुआ का साग [को०] ।

वस्तुकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वधुआ नाम का साग । श्वेत चिल्ली ।

वस्तुगत—वि० [सं०] वस्तुनिष्ठ । कथागत । वस्तु या आख्यान में स्थित । उ०—सन्देश में ये विचार साहित्य और जीवन का यथार्थ, अविच्छेद और वस्तुगत सबध मानते हैं ।—न० सा० न० प्र०, पृ० १४१ ।

वस्तुजगत्—सञ्ज्ञा पु० [सं०] प्रत्यक्ष ससार । दृश्यमान विश्व [को०] ।

वस्तुजात—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वस्तुओं का योग या समूह [को०] ।

वस्तुज्ञान—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ किसी वस्तु की पहचान । २ मूल तथ्य का बोध । सत्य की जानकारी । तत्त्वज्ञान ।

वस्तुत—अव्य० [सं० वस्तुतस्] यथार्थत । सचमुच । असल में ।

वस्तुनिर्देश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है । यह एक तरह की सुची होती है ।

वस्तुनिष्ठ—वि० [सं०] वस्तु अर्थात् वृत्तात, कथा आदि से सबद्ध । वस्तुपरक । जैसे,—वैसी लर्वा वस्तुनिष्ठ कविताएँ वे पहले लिख चुके हैं ।

वस्तुपरक—वि० [सं०] वस्तुनिष्ठ । वस्तुगत । जैसे,—विज्ञानवेत्ता का परीक्षण वस्तुपरक होगा ।

वस्तुपुरुष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नायक [को०] ।

वस्तुबल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वस्तु का गुण ।

वस्तुभान—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सत्यता । यथार्थता [को०] ।

वस्तुभेद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] तात्त्विक अंतर [को०] ।

वस्तुमात्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] किसी विषय या पदार्थ का बाहरी रूप [को०] ।

वस्तुरचना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शैली ।

वस्तुवद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी मत्ता मानी जाती है । जैसे,—न्याय और वैशेषिक ।

विशेष—यह सिद्धांत अद्वैतवाद का विरोधी है, जिसमें नामरूपात्मक जगत् की सत्ता नहीं मानी जाती ।

वस्तुविनिमय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वस्तुओं का पारस्परिक लेन देन । अदला बदली [को०] ।

वस्तुविवर्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दर्शन में सत्त्व या सत्ता का प्रसार [को०] ।

वस्तुवृत्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ यथार्थ वात । यथार्थ कथा । २ सुंदर चरित्र [को०] ।

वस्तुव्यापार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वस्तु का स्वभाव और धर्म । उ०—प्राकृतिक वस्तुव्यापार का सूक्ष्म निरीक्षण धीरे धीरे कम होता गया ।—रस०, पृ० १२६ ।

वस्तुशून्य—वि० [सं०] यथार्थतारहित [को०] ।

वस्तुस्थिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सच्ची स्थिति [को०] ।

वस्तुप्रेक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद । विशेष दे० 'उत्प्रेक्षा' ।

वस्तुपमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का भेद, जिसमें साधारण धर्म का लोप होता है । विशेष दे० 'उपमा' ।

वस्त्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वसने की जगह । घर ।

वस्त्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कपड़ा । २ पहनावा । पोशाक [को०] । ३ दारचीनी का पत्ता [को०] ।

वस्त्रक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] कपड़ा [को०] ।

वस्त्रकुट्टिम—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ छाता । २ खेमा । डेरा ।

वस्त्रगृह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वस्त्रभवन' [को०] ।

वस्त्रगोपन—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ६४ कलाओं में से एक का नाम । विशेष दे० 'कला' ।

वस्त्रग्रंथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वस्त्रग्रन्थि] नीवी । नाडा । इजाग्वद ।
वस्त्रधरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का बाजा । २ छनना
या छानने का वस्त्र (को०) ।

वस्त्रदशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कपड़े की किनारी [को०] ।
वस्त्रधारणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खुंटी । नागदातेका । अलगनी [को०] ।
वस्त्रावी—वि० [सं० वस्त्रधाविन्] कपड़ा धोनेवाला [को०] ।

वस्त्रनिर्णोजक—सञ्ज्ञा [सं०] धोत्री [को०] ।
वस्त्रपञ्जल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रपञ्जल] कोलकंद [को०] ।

वस्त्राप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक तीर्थ स्थान, जिसका नाम पुराणों
में वस्त्रापथक्षेत्र मिलता है । यह आजकल का गिरनार है, जो
गुजरात में है । २ शुक्रनीति के अनुसार रेशम, ऊन तथा सब
प्रकार के वस्त्रों को पहचानने और उनके भाव आदि का पता
रखनेवाला राजकर्मचारी ।

वस्त्रपुत्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कपड़े की बनी गुड़िया । पुतरौ [को०] ।
वस्त्रपूत—वि० [सं०] कपड़े से छना हुआ ।

वस्त्रपेशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] झालर [को०] ।

वस्त्रधध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रधन्व] नीवी ।

वस्त्रभवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्र + भवन] कपड़े का बना हुआ घर ।
जैसे,—रावटी, खेमा आदि ।

वस्त्रभूषण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रत्ताजन ।

वस्त्रभूषणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ ।

वस्त्रभेदक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दरजी [को०] ।

वस्त्रभेदी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रभेदिन्] कपड़ा सीनेवाला दरजी [को०] ।

वस्त्रभौन(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रावटी । खेमा । डेरा । उ०—वस्त्र-
भौन स्यो वितान आसने विछावने, दागजो विदेहराज भाँति भाँति
को दियो ।—केशव (शब्द०) ।

वस्त्रयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वस्त्र का उपादान । जैसे,—टई
आदि [को०] ।

वस्त्ररजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्ररञ्जन] कुसुम का वृक्ष ।

वस्त्ररंजनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वस्त्ररञ्जनी] मजीठ ।

वस्त्रवेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वस्त्रवेशम' ।

वस्त्रवेशम—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रवेशमन्] रावटी । वस्त्रभवन [को०] ।

वस्त्राचल, वस्त्रांत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्राञ्चल, वस्त्रान्त] कपड़े का
किनारा या छोर [को०] ।

वस्त्रांतर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रान्तर] उपरना । ऊर्ध्ववस्त्र [को०] ।

वस्त्रागार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कपड़े की दुकान । २ कपड़े का
घर । रावटी । खेमा [को०] ।

वस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भवन । घर [को०] ।

वस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ३० 'अवस्था' [को०] ।

वस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वेतन । २. मूल्य । ३. वस्त्र । ४. द्रव्य ।
चोज । ५. धन । ६. त्वक् । वस्त्र । छाल । ७. मृत्तु [को०] ।

वस्त्रन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कटिभूषण । करधनी ।

वस्त्रसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्नायु । नम [को०] ।

वस्त्रिक—वि० [सं०] धनलोलुप । भृतिभोगी [को०] ।

वस्त्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मूल्यवान् याती । बहुमूल्य धरोहर [को०] ।

वस्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्र] १ प्रशसा । स्तुति । उ०—करें सत्र
वस्त्र उम शाहशाह के ।—कवीर म०, पृ० ३६६ । २ गुण ।
सिफत । उ०—फिर मुझे तिरसना जो वस्त्रे हुए जाना हो
गया । वाजिव इस जा पर कलम को सर झुगाना हो गया ।—
भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४६ । ३ विशेषता ।

वस्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वस्त्रम्] १ कपड़ा । २ वासस्थान (बंदक अर्थ) ।

वस्त्र—वि० [सं० वस्त्रस] १ उत्कृष्ट । उत्तम । २ बहुरंग नपात-
शाली । धनी ।

वस्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दिन । २. घर । मकान । ३. निवास ।
३ वह स्थान जहाँ मार्ग मिलें, चौराहा ।

वस्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दो चीजों का आपस में मिलना ।
मिलन । २ सयोग । मिलाप । विशेषतः प्रेमी और प्रेमिका
का मिलाप । उ०—अगर उसके वस्त्र के सब रंङ्गोंना है यह
हंसी नहीं ।—भारतेंदु ग्र०, भा० १ पृ० ५७० ।

वस्त्रौकसारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ इद्रपुरी । २ कुवेरपुरी । ३
गंगा । ४ इद्र नामक नदी ।

वहंत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वहन्त] १ वायु । २ बालक । ३ रथ [को०] ।

वह^१—सर्व० [सं० स या असौ] १. एक शब्द जिसके द्वारा हमारे मनुष्य
से बातचीत करते समय किसी तीसरे मनुष्य का सकल किया
जाता है । जैसे,—तुम जाया, वह आता ही होगा । २ एक
निर्देशकारक शब्द जिससे दूर का या पराक्ष वस्तु का सकल
करते हैं । जैसे,—यह और वह दाना एक ही हैं ।

विशेष—इस अर्थ में यह शब्द मछा के पहले विशेषण का तरह भा
आता है । जैसे,—यह आदमी और वह आदमी ।

वह^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बेल का कवा । २. घोड़ा । ३. वायु ।
४. मार्ग । पथ । ५. नदी । ६. वाहन (का०) । ७. प्रवाह । धारा
(को०) । ८. ले जान या ढान की क्रिया (को०) । ९. चार द्राण
का एक मान (को०) । १०. गाय के रत्न का शब्द (को०) ।

वह^३—वि० १. बोल उठाकर ले जानवाला । जस, काष्ठ भारवह ।
२. गवाहक । जैसे, धवह (समास ग) ।

वहत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बेल । २. यात्रा । यावक (को०) । ३. जिन-
पर लोग चलते हैं, पथ । मार्ग (?) ।

वहतात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वहतात्री] धातुवाली चुर ।

विशेष—बैद्यक में यह पोषा कटु तथा कास रोग का नाशक और
शुक्रवधक कहा गया है ।

पर्या०—वृषगवा । मवात्रा । वृषगवात्रा ।

वहति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वायु । २. त. व. । नदी । नदी
३. वन । वृष (को०) ।

वहती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय । २. नदी जो प्रवहमान रहती है ।

वहतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वैल । २. पथिक (वेद) । ३. विवाह (वेद) ।
 ४. स्त्रीघन । दायज । दहेज (को०) ।
 वहदत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] एकत्व । वाहिद या एक होने का भाव ।
 अद्वैतवाद । उ०—परीखे वे गर इस राज का खास । के जे
 वहदत की दरिया का है गन्वास —द० प० ग०, पृ० १५५ ।
 वहदानी—वि० [अ०] एक ईश्वर से ही सबध रखनेवाला । अद्वैतवाद
 को माननेवाला । अद्वैतवादी [को०] ।
 वहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १. वेढा ।
 तरेंदा । नौका नाव । २. खीचकर अथवा सिर या कंधे पर
 लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना । जैसे,—भार
 वहन करना । रथ वहन करना । ३. कंधे या सिर पर लेना ।
 ४. ऊपर लेना । उठाना । ५. वास्तु विद्या में खम्भे के नौ
 भागों में से सब से नीचे का भाग । ६. वहना । प्रवाहित
 होना (को०) । ७. यान । सवारी (को०) ।
 वहनभग सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पोतभग । पोत आदि का डूब जाना [को०] ।
 वहनीय—वि० [सं०] १. उठा या खीचकर ले जाने योग्य । २. ऊपर
 लेने या धारने योग्य ।
 वहम—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १. विना सकल्प के चित्त का किसी बात पर
 जाना । मिथ्या धारणा । भूठा खयाल । २. भ्रम । ३. व्यर्थ की
 शका । मिथ्या सदेह । फजूल शक । जैसे,—वहम की तो कोई
 दवा ही नहीं । उ०—जिस वस्तु की ससार में सृष्टि ही न
 हो वह भी वहम समा जाने से तत्काल दिखाई देने लगती है ।
 —श्रीनिवास ग्रं०, पृ० २४५ ।
 वहमी—वि० [अ० वहम] १. वृथा सदेह द्वारा उत्पन्न । भ्रमजन्य ।
 २. भूठे खयाल में पड़ा रहनेवाला । ३. वहम करनेवाला । जो
 व्यर्थ सदेह में पड़े । किसी बात के सबध में जो व्यर्थ भला
 बुरा सोचे । सशयात्मा ।
 वहल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नौका । नाव ।
 वहल—वि० १. दृढ । मजबूत । २. दे० 'वहल' ।
 वहलगध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वहलगन्ध] शबर चदन ।
 वहलचक्षु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वहलचक्षुस्] मेढासीगी । मेपशृंगी ।
 वहलत्वच्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोथ ।
 वहला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. शनपुष्पा । २. बड़ी इलायची । ३.
 दीपक राग की एक रागिनी का नाम ।
 वहवाँ—क्रि० वि० [हिं० वहाँ] उस स्थान पर । उस जगह । वहाँ ।
 उ०—ग्रहवाँ सूरज क्रांति प्रकाशा । वहवाँ जोती स्थिर
 निवासा ।—कवीर सा०, पृ० ६८ ।
 वहश—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वन्य पशु । जंगली पशु [को०] ।
 वहशत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १. जंगलीपन । असम्यता । बर्बरता ।
 २. उजड़पन । ३. पागलपन । बावलापन । ४. चित्त की
 चंचलता । अधीरता । ५. विकलता । घबराहट । ६. चहल-
 पहल या रौनक न होना । सन्नाटापन । उदासी । उ०—ऐ
 खिरदमदो मुवारक हो तुम्हें फजनिगी । हम हो श्री सहारा
 हो श्री वहशत हो श्री दीवानगी ।—कविता को०, भा० ४,
 पृ० ४३ । ७. डरावनापन ।
 मुहा०—वहशत उछलना = (१) सनक होना । खल्ल होना । (२) घुन

होना । वहशत बरसना = (१) उदासी छाना । कहरा या दुख
 का भाव प्रकट होना । रौनक न रहना । (२) जंगलीपन
 प्रकट होना ।

वहशतजदा—वि० [अ० वहशत + फा० जदह] भयभीत । उद्विग्न [को०] ।

वहशियाना—वि० [फा०] वहशी जैसा । वहमी के समान [को०] ।

वहशी—वि० [अ०] १. जंगल में रहनेवाला । जंगली । उ०. ये
 लोग भी एक किस्म के वहशी हैं, इनमें दुनियाँ के लोगों को
 किसी तरह का फायदा नहीं पहुँचता ।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ०
 १८ । २. जो पालतू न हो । जो आदमियों में रहना न जानता
 हो । ३. असम्य । ४. भटकनेवाला ।

वहसा—सञ्ज्ञा पुं० [दिश०] सम । तुक । उ०—विषम सम विषम सम
 दवालें वेद तुक ठीक गुर, अत तुक वहम ठाला ।—रघु०
 रू०, पृ० ५० ।

वहाँ—अव्य० [हिं० वह] उस जगह । उस स्थान पर । उहा ।

विशेष—जैसे 'यहाँ' का प्रयोग पास के स्थान के लिये होता है,
 वैसे ही इस शब्द का प्रयोग दूर के स्थान के लिये होता है ।

वहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नदी । स्रोतस्विनी [को०] ।

वहा—वि० स्त्री० वहन या धारण करनेवाली । जैसे, स्रोतवहा ।

वहावी—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक संप्रदाय जो अब्दुल
 वहाब नज्दी का चलाया हुआ है ।

विशेष—अब्दुलवहाब अरब के नज्द नामक स्थान में उत्पन्न हुआ
 था । वह मुहम्मद साहब के सर्वोच्च पद को अस्वीकार करता था ।
 इस मत के अनुयायी किसी व्यक्ति या स्थानविशेष की प्रशंसा
 नहीं करते । अब्दुलवहाब ने अनेक मसजिदों और पवित्र स्थानों
 को गिराया और मुहम्मद साहब की कब्र को भी खोदकर
 फेंक देना चाहा था । इस मत के अनुयायी अरब और फारस
 में अधिक हैं ।

वहाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायु, को० ।

वहि—अव्य० [सं० वहिर्] जो अंदर न हो । बाहर ।

विशेष—हिंदी में इस शब्द का प्रयोग अकेले नहीं होता, समस्त
 रूप में होता है । सस्कृत व्याकरण के अनुसार समास में इसके
 रूप वहिर्, वहिष्, वहिप् आदि होते हैं । जैसे,—वहिरगत ।
 वहिश्चर । वहिरग । वहिष्कार इत्यादि ।

वहित—वि० [सं०] १. ढोया हुआ । वहन किया हुआ । २. अवहित ।
 ३. प्रसिद्ध । ख्यात । ४. प्राप्त [को०] ।

वहित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. नाव । जहाज । २. स्तंभयुक्त । एक प्रकार
 का वर्गाकार रथ [को०] ।

वहितकर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक योगासन जिसमें दोनों पैर एक में
 मिलाकर सामने फँसाए जाते हैं [को०] ।

वहितक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वहित' [को०] ।

वहिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नौका । नाव ।

वहिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वाहा] वाहा । धारा । सोता । उ०—बगाल
 में तो चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण को केंद्र में रखकर भक्ति की
 वहिया ही बहा दी ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ६२ ।

वहिरंग—सञ्ज्ञा पु० [स० वहिरङ्ग] १ शरीर का बाहरी भाग। देह का बाहरी हिस्सा। २ ऊपर या बाहर का हिस्सा। बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। ३ वह जो किसी वस्तु के भीतरी तत्व को न जानना चाहता हो। ४ आगतुक पुरुष। कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। ५ वह मनुष्य जो अपने दल या मंडली का न हो। वायवी आदमी। ६. पूजा में वह कृत्य जो आदि में किया जाय।

वहिरंग—वि० १ ऊपर ऊपर का। बाहर का। जो अंतरंग न हो। बाहरी। २ जो सार रूप न हो। जो भीतरी तत्व न हो। ३ अनावश्यक। फालतू।

वहिरतर—वि० [स० वहिर् + अन्तर] बाहरी और भीतरी। आंतरिक और बाह्य।

उ०—‘ज्योत्सना’ में मैंने जीवन की वहिरतर मान्यताओं का समन्वय करने का प्रयत्न किया है।—हि० आ० प्र०, पृ० २५३।

वहिरिन्द्रिय—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वहिरिन्द्रिय] १. कर्मेन्द्रिय। २ बाह्य-करणमात्र। कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय।

वहिरांत—वि० [म०] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।

वहिरदेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. बाहर का स्थान। २ विदेश। ३. अज्ञात स्थान। ४. द्वार। दरवाजा।

वहिरद्वार—सञ्ज्ञा पु० [स०] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।

वहिरध्वजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दुगो।

वहिरभूत—वि० [स०] वहिगत।

वहिरमुख—वि० [स०] विमुख।

वहिर्योग—सञ्ज्ञा पु० [स०] हठयोग।

वहिरलव—सञ्ज्ञा पु० [स० वहिरलम्ब] रेखागणित में वह लव जो किसी चित्र के बाहर बढ़ाए हुए आधार पर गिराया जाता है।

वहिरांपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कोई ऐसा टेढ़ा वाक्य या प्रश्न जिसका उत्तर बतलाने के लिये श्रांति से कहा जाय। पहेली।

विशेष—पहेलियाँ दो प्रकार की होती हैं। जिनके उत्तर का शब्द पहेली के वाक्य के अंदर ही रहता है, उसे ‘अंतर्लापिका’ कहते हैं। और जिनके उत्तर का पूरा शब्द पहेली के अंदर नहीं होता, वे ‘वहिरांपिका’ कहलाती हैं। जैसे,—भाखै काह सज्जन को ? कौन शंभु बाहन है ? काको सुख होत ? काकी माल शिव वारो ह ? कहा गज बचन ? छवीले रंग का के अति ? कौन हरपुत्र ? सीमुत को सुप्यारो है ? शोभा को सुनाम का है ? कृष्ण नख वारो कहा ? सिधु से मलत कौन ? काह अनियारो है ? । उत्तर के वर्णन में आदि अंत छाँडि दीजै, मध्य लीजै सो हिये मनोरथ हमारो है।

इन प्रश्नों के उत्तर क्रमशः ये होंगे—(१) सयाने। (२) वरद। (३) सुकती। (४) कपाल। (५) साँकल। (६) हरिणी। (७) गनेश। (८) मुक्ता। (९) पानिप। (१०) पहाड। (११) सरिता। (१२) नयन। उत्तर के इन शब्दों के मध्याक्षर

लेने से यह उत्तर वाक्य निकलता है,—यार कृपा करि नेक निहारिय।

वहिरवैगज्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर में ताप, प्यास आदि उपद्रव होते हैं। उ०—तृष्णादिक लक्षण थोड़े होवे ये वहिरवैगज्वर के लक्षण हैं।—मायव०, पृ० ३७।

वहिरश्चर—सञ्ज्ञा पु० [स०] केवडा।

वहिरष्क—वि० [स०] बाहरी। बाह्य [को०]।

वहिरष्करणा—सञ्ज्ञा पु० [स०] बाहर की इन्द्रियाँ। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। बाह्येन्द्रिय। (मन या अंत करण को भीतर की इन्द्रिय कहते हैं।)

वहिरष्कार—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० ‘वहिरष्कार’ [को०]।

वहिरष्कृत—वि० [म०] १ निकाला हुआ। बाहर किया हुआ। २ अलग किया हुआ। त्यागा हुआ। त्यक्त।

वहिरष्ठ—वि० [स०] अधिक भार उठानेवाला।

वहिरष्प्राण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ जीवन। २ श्वास। वायु। ३. अर्थ।

वही—अव्य० [हि० वहाँ + ही] उसी स्थान पर। उसी जगह।

विशेष—जब वहाँ शब्द पर जोर होता है तब ‘ही’ लगाने के कारण उसका यह रूप हो जाता है।

वही—सर्व० [हि० वह + ही] १ उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके सवध में कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। जैसे,—(क) यह वही आदमी है जो कल आया था। २. निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नहीं। जैसे—जो पहले वहाँ पहुँचेगा, वही इनाम पावेगा।

वही^२—सञ्ज्ञा पु० [स० वहिन्] १ बैल। २ मोटिया। भारवाहक। बोझा ढोनेवाला [को०]।

वहीर—सञ्ज्ञा पु० [हि० भीर, वहीर या देश०] परिजन। प्रजा। दे० बहीर^२। उ०—चाली अहमद बेगमरी, दिल्ली दिसा वहीर।—रा० रू०, पृ० ३१७।

वहीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ रक्तवाहिनी नाडियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। ३. मासपेशी। पुट्टा।

वहूदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] चार प्रकार के सन्यासियों में से एक।

विशेष—सूतसंहिता के अनुसार कुटीचक, वहूदक, हस और परमहंस ये चार प्रकार के सन्यासी कहे गए हैं। वहूदको के लिये यह नियम है कि वे एक घर से पूरी भिक्षा न ग्रहण करें, सात घरों से लें। उन्हें अपने साथ में गाय की पूँछ के रोयो से बंधा हुआ त्रिदंड, शिख्य, जलपूर्ण पात्र, कौपीन, कर्मडलु, कथा, पादुका, छत्र, रुद्राक्ष की माला, योगपट्ट, खनित्र और कृपाण रखना चाहिए। मरने पर वहूदक सन्यासी जल में डुबाए जाते हैं।

वहेटक, वहेडुक, वहैडुक—सञ्ज्ञा पु० [स०] विभीतक वृक्ष [को०]।

वह्नि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. अग्नि। २. कृष्ण के एक पुत्र का नाम, जो मित्रविदा से उत्पन्न हुआ था। ३. तुवसु क पुत्र का नाम। ४. कुक्कुर वशी एक यादव का नाम। ५. चित्रक। चीता।

६ भिलावा । ७ तीन की सख्या । ८ राम की सेना के सेनापति एक वदर का नाम । ९ जनों के अनुसार लौकातिक जीवों का तीसरा वर्ग । १० पाचन शक्ति । पाचन । जठराग्नि (को०) । ११ यान (को०) । १२. देवता (को०) । १३. मरुत् (को०) । १४ सोम (को०) । १५ सवारा खींचनेवाले जानवर । बल, घोडा आदि (को०) । १६ निवृत्त । विजोरा नीबू । चकोतरा नीबू (को०) । १७ तत्र के अनुमार रेफ, रवर्ण (को०) । १८ आठवाँ कल्प (को०) । १९ पुरोहित (को०) । २० क्षुधा । भूख (को०) ।

वह्निक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उष्णता । गरमी (को०) ।

वह्निक^२—वि० गरम । उष्ण (को०) ।

वह्निकर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विद्युत् । बिजली । २ जठराग्नि । ३ चक्रमक । पथरी ।

वह्निकर^२—वि० १ उत्तापक । उर्दीपक । २ पाचक । क्षुधावर्धक (को०) ।

वह्निकरी - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] धो का फूल ।

वह्निकाष्ठ - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अगुरु । दाहागुरु (को०) ।

वह्निकुड - सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निकुण्ड] अग्निकुड ।

वह्निकुमार - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भुवनपति देवगण में से एक ।

वह्निकोण - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'अग्निकोण' (को०) ।

वह्निकोप - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. ज्वलन । जलना । प्रदाह । २ प्रलयाग्नि । ३ दावाग्नि (को०) ।

वह्निगंध - सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निगंध] १ घूप । लोधान । २ यक्ष-घूप । राल (को०) ।

वह्निगर्भ - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वाँस । २ शमीवृक्ष ।

वह्निगर्भा - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शमीवृक्ष (को०) ।

वह्निचक्रा - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष ।

वह्निजाया - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह्नि की पत्नी स्वाहा । स्वाहा मन्त्र (को०) ।

वह्निज्वाल - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम (को०) ।

वह्निज्वाला - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] धव का पेड़ ।

वह्निदमनी - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अग्निदमनी नाम का पौधा ।

वह्निदीपक - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुसुम का वृक्ष ।

वह्निदीपिका - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा ।

वह्निदैवत - वि० [सं०] अग्नि की पूजा करनेवाला । अग्नि का उपासक अग्निपूजक (को०) ।

वह्निधौत - वि० [सं०] अग्नि के समान पवित्र (को०) ।

वह्निनामा - सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निनामन्] १ चित्रक । चीते का पेड़ । २ भिलावा ।

वह्निनी - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जटामासी ।

वह्निपुष्पा, वह्नपुष्पी - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] धव का वृक्ष ।

वह्निवीज - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ण । सोना ।

विशेष—ब्रह्मवर्त पुराण के कृष्णजन्म खंड में स्वर्ण की उत्पत्ति की कथा यह है—स्वर्ण की सभा में एक बार सब देवता बैठे

हुए थे और रभा नाच रही थी । रभा की देवका अग्निदेव कामपीडित हुए और उनका वीर्य गिरा, जिसे उन्होंने लज्जावश कपडों से ढाँक लिया । कुछ दिना पीछे वह वीर्य दमकनी हुई घातु होकर वस्त्र भेँकर नीचे गिरा, जिसे मुवर्ण की उत्पत्ति हुई ।

२ तत्र में 'र' बीज । १ नीबू ।

वह्निभूतिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चाँदी ।

वह्निभोग्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धो ।

वह्निमथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निमन्थ] गनियारी का पेड़ । अग्निमथ वृक्ष । अग्नेयू का पेड़ ।

वह्निमथन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निमन्थन] गनियारी का पेड़ ।

वह्निमारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पानी । जल (को०) ।

वह्निमित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायु । हवा ।

वह्निमुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] देवता ।

विशेष—यज्ञ की अग्नि में डाला हुआ भाग देवताओं को पहुँचता है इसी से वे वह्नमुख कहलाते हैं ।

वह्निरैता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वह्निरैतस्] जिव ।

वह्निलोह - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ताम्र । ताँबा ।

वह्निलोहक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ काँसा । २. ताँबा (को०) ।

वह्निवयया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष ।

वह्निवधू - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वह्निजाया' (को०) ।

वह्निवर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल ।

वह्निवल्लभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सर्ज रस । यक्षघूप (को०) ।

वह्निवल्लभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वह्निजाया' ।

वह्निवीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वह्निबीज' ।

वह्निशिख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. केसर । २ कुसुम (को०) ।

वह्निशिखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रत्नजटा नाम का पौधा ।

वह्निशिखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कलिहारी या कलियारी नाम का विष । २. धव का पेड़ । ३ काकुन नाम का अन्न । प्रियगु । ४ गजपिप्पली ।

वह्निशेखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] केसर (को०) ।

वह्निसज्जक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चित्रक वृक्ष (को०) ।

वह्निसख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. जीरक । जीरा । २ पवन (को०) ।

वह्निसाक्षिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] साक्षीस्वरूप अग्नि ।

वह्निसात्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जल जाना । भस्वीभूत होना (को०) ।

वह्निसुत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पयोस । पायस क्षीरिका । अन्नरस । रस ।

वह्नीक—सञ्ज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'वह्निक' ।

वह्नीरवरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी (को०) ।

वह्नी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वाहन । यान । २ शकट । गाड़ी ।

वह्नीक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उठाकर ले जानेवाला । वाहक ।

वह्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मुनिपत्नी । ऋषिवधू (को०) ।

वाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वाङ्] समुद्र [को०] ।

वागाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं वाङ्गाल] संगीत में एक राग [को०] ।

वागाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वाङ्गाली] एक रागिनी (संगीत) [को०] ।

वाछक—वि० [सं वाञ्छक] चाहने या वाछा करनेवाला । अभिलाषी ।
इच्छुक [को०] ।

वाछन—सञ्ज्ञा पुं० [सं वाञ्छन] चाहना । इच्छा करना [को०] ।

वाछनीय—वि० [सं वाञ्छनीय] १ चाहने या कामना के योग्य ।
२ जिसकी इच्छा हो ।

वाछा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वाञ्छा] [वि० वाछित, वाछनीय] इच्छा ।
अभिलाषा । चाह ।

विशेष—सिद्धांत मुक्तावली के अनुसार वाछा नामक आत्मवृत्ति दो प्रकार की होती है । एक उपायविषयिणी, दूसरी फल-विषयिणी । फल का अर्थ है—सुख की प्राप्ति और दुःख का न होना । जिस वाछा का कारण फलज्ञान हो, अर्थात् जो वाछा इस रूप में हो कि अमुक सुख मुझे मिले, वह फलविषयिणी है । जो वाछा किसी ऐम उपाय के सबब में हो, जिससे इष्ट-साधन हो, वह उपायविषयिणी है ।

वाछातीत—वि० [सं वाञ्छातीत] इच्छा के परे । जिसकी अभिलाषा न की जा सके । उ०—उन्मेष उसकी गति तीव्र हो या मद, प्रत्यक्ष हो या परोक्ष, वाछित हो या वाछातीत ।—नदी०, पृ० ८८ ।

वाछित—वि० [सं वाञ्छित] अभिलषित । इच्छित । चाहा हुआ ।
जिसकी इच्छा हो ।

वाछित—सञ्ज्ञा पुं० १. इच्छा । आकांक्षा । चाह । २ संगीत में एक ताल [को०] ।

वाछितव्य—वि० [सं वाञ्छितव्य] देश० 'वाछनीय' ।

वाछिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वाञ्छिनी] १. कुलटा । पुश्चली । २ कामार्थिनी या अत्यंत कामुक स्त्री [को०] ।

वाछी—वि० [सं वाञ्छित] १ इच्छुक । चाहनेवाला । २ कामुक ।
लपट । विषयी [को०] ।

वाछ्य—वि० [सं वाञ्छ्य] देश० 'वाछनीय' ।

वात—सञ्ज्ञा पुं० [सं वान्त] १ वमन । कै । २ वमन किया हुआ पदार्थ [को०] ।

वात—वि० १ वमन किया हुआ । २ निस्त । त्यक्त । उत्क्षिप्त ।
३ गिराया हुआ । चूरा हुआ । ४ जिसने कै किया हो [को०] ।

वाताद—सञ्ज्ञा पुं० [सं वान्ताद] १ कुत्ता । श्वान । २. एक पक्षी का नाम । [को०] ।

वातान्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं वान्तान्न] वमित अन्न । कै किया हुआ अन्न ।

वाताशी—वि० [सं वान्ताशिव] वमन खानेवाला ।

वाताशी—सञ्ज्ञा पुं० १ कुत्ता । २ वह ब्राह्मण जो भोजन के लिये अपने कुल या गोत्र की प्रशंसा करे । ३ दूषित या निषिद्ध पदार्थों को खानेवाला राक्षस [को०] ।

वाति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वान्ति] १. वमन । वात । कै । २. वमन करने की क्रिया [को०] ।

वातिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वान्तिका] कुटकी ।

वातिकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं वान्तिकृत्] मदनफल वृक्ष । मदनफल का पेड़ ।

वातिकृत्—वि० वमनकारक । वमन करानेवाला [को०] ।

वातिदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वान्तिदा] कुटकी ।

वातिशोधनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वान्तिशोधनी] जीरक । जीरा ।

वातिहृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं] देश० 'वातिकृत्' ।

वाश—वि० [सं] वश सबधी । बाँस का बना हुआ [को०] ।

वाशिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ बाँसुरी बजानेवाला । २. बाँस काटने-वाला [को०] ।

वाशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] वशरोचना । वसलोचन [को०] ।

वाँ—अव्य० [हि० वहाँ का सक्षिप्त रूप] उस जगह । उस स्थान पर ।
उ०—घर बैठत वाँ जल सो रजए ।—हम्मीर रा०, पृ० ४५ ।

वाँकमाँ—सञ्ज्ञा पुं० [हि० वाक्रमन् या वक्रम्] वक्रता । वाँकापन ।
उ०—सखी अमीणो साहिबो, वाँकम सँ भरियोह ।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ७ ।

वाँगा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० वांग] देश० 'वांग' । उ०—कतहु वांग कतहु वेद, कतहु मिसिमल कतहु छेद ।—कीर्ति०, पृ० ४२ ।

वाँचण—क्रि० सं० [सं वाचन, हि० वाँचना] देश० 'वाँचना' । उ०—
सदेसा मति मोकलउ, प्रीतम तूँ आवेस । आंगलडी ही गलि
गयाँ, नयण न वाँचण देस ।—ढोला०, दू० १४४ ।

वाँलम—सञ्ज्ञा पुं० [सं वल्लभ] देश० 'वल्लभ—२' । उ०—वाँलम
एक हिलोर दे, आइ सकइ तउ आइ । वाहडियाँ वे थक्कियाँ,
काग उडाइ उडाइ ।—ढोला०, दू० १६७ ।

वाँस—सञ्ज्ञा पुं० [सं पार्श्व, प्रा० पास, वास] देश० 'पास' । उ०—
साह कुँवर करहइ चञ्चउ, वाँसइ चाढी नार ।—ढोला०,
दू० ६२५ ।

वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं वार्] जल । पानी [को०] ।

वा किटि—सञ्ज्ञा पुं० [सं] जल का कोट वा शूकर, शिशुमार । सूँम ।

वा पुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं] लवण । लौग ।

वा सदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं] जलपात्र [को०] ।

वा स्थ—वि० [सं] पानी में स्थित । पानी में टिका हुआ [को०] ।

वा—अव्य० [सं] विकल्प या मदेहवाचक शब्द । या । अथवा ।

वा—सर्व० [हि० वह] व्रजभाषा में प्रथम पुरुष का वह एक-वचन रूप, जो कारकचित्त लगने के पहले उसे प्राप्त होता है । जैसे,—वाने वाको, वासे, वासो इत्यादि । उ०—(क) वा सुरतरु महँ अवर एक अदभुत छवि छार्ज । साखा दल फल फूलनि हरि प्रतिविब बिरार्ज ।—नद० ग्रं०, पृ० ६ । (ख) रहै देह वाके परस याहि हगन ही देखे ।—विहारी (शब्द०) । (ग) और प्रभु जब किवाड खोलन पधारते तब

श्री ठाकुर जी वा इ पुकार सो पूछने ।—दो सो बावन०, भा० १, पृ० १०१ ।

वा^१—वि० [फा०] कुशादा । खुला या फैला हुआ । खुने । उ०—दिन के वा सतुपन के दर्बार मे रौनक अफरोज हुए ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७ ।

वाइ^१—सर्व० [हि० वह] दे० 'वाहि' । उ०—नैन कमल ह्या लगत है कमल लगत है वाइ । कमल काल सज्जन हियो दोनो एक सुभाह ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वाइ^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वापी] वापिका दे० 'वाय' ।

वाइक^१—वि० [सं० वाचिक] कहा हुआ । वाणी या वचन द्वारा व्यक्त । उ०—काइक वाइक मानस हू करि है गुरु देव ही वदन मेगे ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ३८३ ।

वाइकौट—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० वाइकौटेम] इंग्लैंड के सामंतों और बड़े बड़े भूम्यधिकारियों को वशपरपरा के लिये दी जानेवाली एक प्रतिष्ठासूचक उपाधि जिसका दर्जा 'अर्ल' के नीचे और 'बैरन' के ऊपर है । विशेष दे० 'ड्यूक' ।

वाइज—वि० सञ्ज्ञा पुं० [अ० वाइज] धर्मोपदेष्टा । उपदेशक । मजहबी नसीहत देनेवाला । उ०—रगे शराव से मेरी नीयन बदल गई । वाइज की बात रह गई साकी की चल गई ।—कविता को०, भा० ४, पृ० ६२० ।

वाइदा—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] दे० 'वादा' ।

वाइन—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] शराव । मद्य । सुरा ।

वाइस^१—सञ्ज्ञा पुं० दे० [सं० वायस] 'वायस' । उ०—कक वाइम उलू गिद्ध सुर अमुभ कहि ।—सुजान०, पृ० १६ ।

वाइस^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] प्रतिनिधि । दूसरे के स्थान पर या सहायक रूप में काम करनेवाला व्यक्ति । जैसे, वाइस चांसलर, वाइस प्रेसिडेंट आदि ।

वाइस चांसलर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] विश्वविद्यालय का वह ऊँचा मुख्याधिकारी जो चांसलर के सहायतार्थ हो और प्रायः उसकी अनुपस्थिति के कारण उसके अधिकांश कामों को कर सकता हो । हिंदो में इसके पर्याय 'रज' में कहा कुलाति और कही उपकुलपति शब्द प्रयुक्त हो रहा है ।

वाइस चेयरमैन—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह जिसका दर्जा चेयरमैन या सभाध्यक्ष के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति में उसका काम करता है । उपाध्यक्ष । उपसभापति । जैसे,—म्युनिसिपैलिटी के वाइम चेयरमैन ।

वाइस प्रेसिडेंट—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह जिसका दर्जा प्रेसिडेंट या सभापति के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति में सभा का संचालन करता है । उपसभापति । जैसे,—कौंसिल के वाइस प्रेसिडेंट ।

वाइसराय—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] अंग्रेजों के शासन काल में हिंदुस्तान का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि (बड़ा लाट) के रूप में कार्य करता था और भारत का सर्वोच्च अधिकारी था । बड़े लाट साहब ।

वाई^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायु] दे० 'वायु' । उ०—सकसे का जैतवार अकसे का वाई । अरिदल समुद्र आए कुभज के भाई ।—रा० रू०, पृ० ६७ ।

वाउ^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायु] दे० 'वायु' । उ०—भ्राति गनै मो लवे न वाउ ।—प्राण०, पृ० ३३ ।

वाउचर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह कागज या पुरजा या वही जिसमें किसी प्रकार के हिमाज का व्योम हो ।

वाक्—पुं० [सं० वाक्] १ वाणी । वाक्य । २ सरस्वती । ३ बोलने की इन्द्रिय । ४ शब्द । ५ ध्वनि (को०) । ६ कथन । वक्तव्य (को०) । ७. वादा । प्रतिज्ञा । ८ उक्ति (को०) ।

वाक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वगलो का समूह । २ वगलो की उदान (को०) । ३ वाणी । वाक्य । ४ वेद का एक भाग । ५ खेत की वह कृत जो बिना खेत नापे का जाती है ।

वाक्^२—वि० वक् सवधी । वगलो का ।

वाकई^१—वि० [अ० वाकई] ठीक । यथार्थ । सच । वास्तव । जैसे,—जो कुछ कहता हूँ, वह वाकई कहता हूँ ।

वाकई^२—अव्य० सचमुच । यथार्थ में । वास्तव में । जैसे,—क्या आप वाकई वहाँ गए थे ?

वाकफियत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वाकफियत] १ वाकफ होने का भाव जानकारा । २ जन पहचान । परिचय ।

वाकया—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वाक्यग्रह] १ कोई बात जो घटित हो । व्यपारसयाम । घटना । २. वृत्तांत । समाचार ।

यौ०—वाकयानवीस, वाकयानिगार = मुसलमानी साम्राज्य में वह कर्मचारी जिसका कार्य इतिहास के रूप में घटनाओं को लिखना होता था ।

वाकयात—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वाकयान] वाकया का बहुवचन ।

वाका—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वाक्य] १ होनेवाला । घटनेवाला ।

मुहा०—वाका होना = घटना के रूप में उपस्थित होना । घटित होना ।

२ स्थित । सत्ता । प्रतिष्ठित । जैसे,—वह मकान दरिया के किनारे वाका है ।

वाकिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] तत्र के अनुसार एक देवी का नाम ।

वाकिफ—वि० [अ० वाकिफ] १ जानकार । ज्ञाता । जैसे,—मैं इस बात से वाकिफ न था । २ बात की समझने वाला । बातों का जानकारी रखनेवाला । अनुभवी । जैसे,—किसी वाकिफ आदमी को इतनाम के लिये भेजना चाहिए ।

वाकिफकार—वि० [अ० वाकिफ + फा० कार] काम की समझने वाला । जो अनाड़ी न हो । कार्याभिज्ञ उ०—ये हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावैं ।—पलटू०, पृ० ७ ।

वाकिफकारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफकारी] परिचय । जानकारी । अभिज्ञता (को०) ।

वाकिफीयत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफीयत] दे० 'वाकफियत' (को०) ।

वाकुची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वकुची ।

वाकुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बकुल या मौनसिरी का पेड़ वा पुष्प ।

वाकै—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वाक्य] दे० 'वाका' । उ०—इस सब से उसकी कारवाई में शक्सर खलल वाकै होते रहते हैं ।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० ३१ ।

वाकोवाक—सञ्ज्ञा पु० [स०] कथोपकथन । बातचीत ।

वाकोवाक्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] परस्पर कथोपकथन । बातचीत ।
२ परस्पर तर्क । ३ तर्क विद्या ।

विशेष—छादोग्योपनिषद् में नारद ने मन्तकुमारो से अपनी जिन जिन विद्याओं के ज्ञाता होने की बात कही थी, उनमें 'वाको-वाक्य' विद्या भी थी ।

वाकौ—सञ्ज्ञा पु० [अ० वाक्यह्] दे० 'वाक्या' । उ०—वाकौ झूठी श्रवण्यौ, दक्षिण गयो सदूर ।—रा० ३०, पृ० ३२४ ।

वाक्कलह—सञ्ज्ञा पु० [म०] कहोसुनी । वाक् युद्ध । उ०—मुख्य विवाद-ग्रस्त विषय छूट कर व्यर्थ घृणित वाक्कलह उत्पन्न हो जाता ।
प्रेमवन्त०, भा० २, पृ० ३०३ ।

वाक्का—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] चरक के अनुसार एक प्रकार का पक्षी ।

वाक्कीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] पत्नी का भाई । साला । श्यालक [को०] ।

वाक्केलि, वाक्केली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हास परिहास [को०] ।

वाक्क्षत—सञ्ज्ञा पु० [स०] बात की चोट ।

वाक्चपल—वि० [स०] १ बहुत बातें करनेवाला । बातें करने में तेज । मुँहजोर । २ भडभडिया ।

वाक्छल—सञ्ज्ञा पु० [स०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक ।

विशेष—जब वक्ता के साधारण रूप से कहे हुए कथन में दूसरे पक्ष द्वारा अभिप्रेत अर्थ से अन्य अर्थ की कल्पना उसे केवल चक्कर में डालने के लिये की जाती है, तब वाक्छल कहा जाता है । जैसे,—वक्ता ने कहा,—यह बालक नवकवल है । (नव-कवलोऽय बालक) अर्थात् नए कवलवाला है । इसका प्रति-वादी यदि यह अर्थ लगावे कि इस बालक के पास सख्या में नौ कवल हैं, और कहे—'नौ कवल कहाँ है, एक ही तो है' । तो यह वाक्छल होगा ।

वाक्पटु—वि० [स०] बात करने में चतुर । वाक्कुशल ।

वाक्पाति—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वृहस्पति । २. विष्णु । ३. पुण्य नक्षत्र (को०) । ४. अनवद्य वचन । पटु वाक्य । निर्दोष बात ।

वाक्पतिराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक कवि जो राजा यशोवर्मा के आश्रित थे । इन्होंने प्राच्य में गौडवहो (गौडवय) नामक काव्य की रचना की है । ये भवभूति के समसामयिक थे । २. मालवा का एक परमार राजा जो सीयक का पुत्र था । (इस नाम का एक और राजा हुआ है ।)

वाक्पथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बोलने के लिये उपयुक्त क्षण । २. वाणी का क्षेत्र । भाषण का क्षेत्र [को०] ।

वाक्पाटव—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाक्पटुता । भाषण की योग्यता । [को०] ।

वाक्पारीण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो वाणी या कथन के क्षेत्र को पार कर गया हो ।

वाक्पाठ्य—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वचन की कठोरता । बात का कड़ुआपन । मुँहजोरी । २. धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषों को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्देग उत्पन्न हो ।

वाक्पुष्प—सञ्ज्ञा पु० [स०] डीगभरी बात । वे मिर पैर की बात [को०] ।

वाक्प्रचोदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] मौखिक या श्राव्यिक आज्ञा [को०] ।

वाक्प्रतोद—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाणी का श्रकुश । व्यग्य । ताना । [को०] ।

वाक्प्रदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती नदी [को०] ।

वाक्प्रलाप—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाक्पटुता । वाग्मिता [को०] ।

वाक्प्रसारी—वि० [स० वाक्प्रसारण] भाषणकुशल । लंबी चौड़ी बातें करनेवाला [को०] ।

वाक्फियत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वाक्फियत] जानकारी । परिज्ञान ।

वाक्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह पद समूह जिसमें श्रोता की वक्ता के अभिप्राय का बोध हो । भाषा की भाषावैज्ञानिक आधिक इकाई का बोधक पद समूह । वाक्य में कम से कम कारक (कर्तृ आदि) जो सञ्ज्ञा या सर्वनाम होता है, और क्रिया का होना आवश्यक है । क्रियापद और कारक पद से युक्त साकाक्ष अर्थबोधक पद-समूह या पदोच्चय । उद्देश्यश और विधेयाशवाले सार्थक पदों का समूह ।

विशेष—नैयायिकों और अलंकारियों के अनुसार वाक्य में (१) आकाक्षा, (२) योग्यता और (३) आसक्ति या सन्निधि होना चाहिए । 'आकाक्षा' का अभिप्राय यह है कि शब्द या ही रखे हुए न हो, वे मिलकर किसी एक तात्पर्य का बोध कराते हो । जैसे, कोई कहे—'मनुष्य चारपाई पुस्तक' तो यह वाक्य न होगा । जब वह कहेगा—'मनुष्य चारपाई पर पुस्तक पढ़ता है ।' तब वाक्य होगा । 'योग्यता' का तात्पर्य यह है कि पदों के समूह से निकला हुआ अर्थ श्रमगत या श्रमभव न हो । जैसे, कोई कहे—'पानी में हाथ जल गया' तो यह वाक्य न होगा । 'आसक्ति' या 'सन्निधि' का मतलब है सामोप्य या निकटता । अर्थात् तात्पर्यबोध करानेवाले पदों के बीच देश या काल का व्यवधान न हो । जैसे, कोई यह न कहकर कि 'कुत्ता मारा, पानी पिया' यह कहे—'कुत्ता पिया मारा पानी' तो इसमें आसक्ति न होने से वाक्य न बनेगा, क्योंकि 'कुत्ता' और 'मारा' के बीच 'पिया' शब्द का व्यवधान पड़ता है । इसी प्रकार यदि कोई 'पानी' सवेरे कहे और 'पिया' शाम को कहे, तो इसमें काल संबंधी व्यवधान होगा ।

वाक्य भेद का विषय मुख्यतः न्याय दर्शन के विवेचन से प्रारंभ होता है और यह मीमांसा और न्यायदर्शनों के अंतर्गत आता है । दर्शन शास्त्रीय वाक्यों के ३ भेद-विधिवाक्य, अनुवाद वाक्य और अर्थवाद वाक्य किए गए हैं । इनमें अंतिम के चार भेद-स्तुति, निंदा, परकृति और पुराकल्प बनाए गए हैं ।

वक्ता के अभिप्रेत अथवा वक्तव्य की अवधारणा वाक्य का मुख्य उद्देश्य माना गया है । इसी की वृष्टि भूमि में संस्कृत व्याकरणों ने वाक्यस्फोट की उद्भावना की है । वाक्यस्फोटकार द्वारा स्फोटात्मक वाक्य का अखंड सत्ता स्वाकृत है ।

भाषावैज्ञानिकों की दृष्टि में वाक्य सश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक होते हैं । शब्दाकृतिसमूह वाक्य के शब्दभेदानुसार चार भेद है—समासप्रधान, व्यासप्रधान, प्रत्ययप्रधान और विभक्तिप्रधान । इन्हीं के आधार पर भाषाओं का भी वर्गी-

करणा विद्वानो ने किया है। आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं—सरल वाक्य मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य।

२ कथन। उक्ति (को०)। ३ न्याय में युक्ति। उपपत्ति। हेतु। ४. विधि। नियम। अनुशासन (को०)। ५. ज्योतिष में गणना की सौर प्रक्रिया (को०)। ६. प्रतिज्ञा। पूर्व पक्ष (को०)। ७. आदेश। प्रभुत्व। शासन (को०)। ८. विधिमत साक्ष्य वा प्रमाण (को०)। ९. वाक्प्रदत्त होना (को०)।

वाक्यकठ—वि० [सं० वाक्यवण्ठ] जिसके कठ में बात आ गई हो। जो बोलना ही चाहता हो [को०]।

वाक्यकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक की बात दूसरे से कहनेवाला। दूत। २. बातें बनानेवाला।

वाक्यखड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाक्यखण्ड] वाक्य के भीतर आया हुआ वाक्य। उपवाक्य [को०]।

वाक्यखडन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाक्यखण्डन] तर्क का खडन करना [को०]।

वाक्यग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी कारण से वाणी का रुकना। वाक्स्तम्भन [को०]।

वाक्यज्ञान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] केवल वार्तालाप करना। वाचक ज्ञान। विद्या का ज्ञान। उ०—वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुणभव पार न पावै कोई। निशि गृह मध्य दीप की वातन तम निवृत्त नहि होई। सतवाणी०, भा० २, पृ० ८५।

वाक्यपदीय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भर्तृहरि द्वारा विरचित एक व्याकरण ग्रंथ जिसमें तीन कांड हैं। वाक्यपद सबंधी व्याकरण दर्शन के सिद्धांतों का कारिकाओं में गूढ विवेचन है। व्याकरण दर्शन के प्राचीनतम और प्रामाणिक ग्रंथों में इसकी गणना है। शब्दब्रह्म, स्फोटब्रह्म और स्फोटवाद का इसमें प्रतिपादन है। इसे 'हरिकारिका' भी कहते हैं। इसकी दो प्राचीन टीकाएँ प्राप्त होती हैं।

वाक्यपद्धति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाक्यरचना की पद्धति, प्रणाली या ढंग। शैली [को०]।

वाक्यप्रवध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. निबंध। लेख। २. वाक्य की गति। वाक्य का प्रवाह [को०]।

वाक्यभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा के एक ही वाक्य का एक ही काल में परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।

वाक्यरचना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाक्यविन्यास'।

वाक्यवक्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाक्यगत वक्रता। वाक्य की भंगिमा। उ०—अलंकार, चाहे अस्तुत वस्तुयोजना के रूप में हो (जैसे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा इत्यादि में), चाहे वाक्यवक्रता के रूप में हो (जैसे अस्तुतप्रशंसा, परिसंख्या, व्याजस्तुति, विरोध इत्यादि में), चाहे वर्णविन्यास के रूप में (जैसे अनुप्रास में) लाए जाते हैं वे अस्तुत भाव या भावना के उत्कर्ष के लिये ही।—रस०, पृ० ४६।

वाक्यविन्यास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाक्यरचना। वाक्यों का संयोजन या गठन [को०]।

वाक्यविलेख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लेखा जोखा तथा आदेश आदि लिखने का प्रधान अधिकारी [को०]।

वाक्यविशारद—वि० [सं०] बात करने में कुशल [को०]।

वाक्यशेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अधूरी बात। अधूरा भाषण। २. अपूर्ण वाक्य। न्यूनपद वाक्य [को०]।

वाक्यसारथि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रवक्ता। प्रमुख बोलनेवाला [को०]।

वाक्यस्थ—वि० [सं०] आज्ञाकारी। विनत। नम्र [को०]।

वाक्यहारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दूत। संदेशवाहक [को०]।

वाक्यहारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दूती। संदेशवाहिका [को०]।

वाक्याडवर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाक्यआडम्बर] दीर्घ और क्लिष्ट शब्दों तथा लंबे लंबे समासों से युक्त वाक्य [को०]।

वाक्यार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वाक्य का अर्थ। २. वाक्य प्रमाण के बल पर प्राप्त किया हुआ वाक्य का अभिगम। सामान्य ढंग से अभिप्रवृत्त, पदार्थों का विशेष में अवस्थान (सामान्येनाभि-प्रवृत्ताना पदार्थाना यद्विशेषेऽवस्थानं स वाक्यार्थः)।

वाक्यालाप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बात चीत। सभाषण। प्रवचन [को०]।

वाक्यैकवाक्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मीमांसा के अनुसार एक वाक्य को दूसरे वाक्य से मिलाकर उसके सुसंगत अर्थ का बोध करना।

वाक्यशक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी। सरस्वती। उ०—ईश्वरीय वाक्शक्ति अर्थात् वाणी वा सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७१।

वाक्शलाका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कड़ी बात। २. लगनेवाली बात। ३. आप। शाप [को०]।

वाक्शल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाक्शलाका'।

वाक्सग—सञ्ज्ञा पुं० [म० वाक्सङ्ग] १. धीरे धीरे कहना। २. वाणी का रुक जाना। वाक्यस्तम्भ [को०]।

वाक्सतक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाक्य सन्तक्षण] व्यंग्यात्मक वचन [को०]।

वाक्सयम—सञ्ज्ञा पुं० [वि०] वाणी का संयम। अन्यथा बात न कहना। व्यर्थ बातें न करना।

वाक्सवर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाणी को प्रतिरुद्ध या सीमित करना वाक्यसंयम [को०]।

वाक्सरणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी की पद्धति या राह। वाक्यप्रकार। बात कहने का ढंग। उ०—वाक्सरणि जिसके द्वारा पात्रों के विचार व्यक्त होते हैं।—पा० सा० सि०, पृ० १३१।

वाक्सार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] व्यंग्य [को०]।

वाक्सिद्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी कही हुई बात ठीक निकले। वह जिसने वाक्सिद्धि प्राप्त कर ली हो [को०]।

वाक्सिद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी की सिद्धि, अर्थात् इस प्रकार का सिद्धि या शक्ति कि जो भी बात मुँह से निकले, वह ठीक ठीक घटे।

वाक्स्तम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाक्स्तम्भ] वाणी का रुक जाना। वाणी को लकवा मार जाना। बोली बंद हो जाना [को०]।

वागत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वागन्त] सत्रसे ऊँचा स्वर [को०]।

वागु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वागा] दे० 'वागा'। उ०—धाली टापर वाग मुखि, भेक्यउ राज दुगारि। करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि।—ढोला०, दू० ३४५।

वागतीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक मिश्र वा सकर जाति [को०]।

वागधिप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृहस्पति [को०]।

वागना पुं—क्रि० अ० [स० वक्र = (चलाना)] दे० 'वागना' ।
 वागपहारक—वि०, सञ्ज्ञा पुं [स०] १ दूसरे की उक्ति को चुराने वाला । २ मिथ्यावादा [को०] ।
 वागपेत—वि० [स०] मूक । गूँगा [को०] ।
 वागर—सञ्ज्ञा पुं [स०] १. वारक । २ शाण । सान । ३. निर्णय । ४ वृक । भंडया । ५ पंडित । ६ मुपुच्छ । ७ निर्भय । निडर । नायक । ८. वडवाग्नि । (को०) । ९, सूर्य का एक घोड़ा ।
 वागरवाल पुं—वि० [म० वागर] वाक्चतुर । विद्वान् । पंडित । उ०—नरवर गढ ढोलइ कन्हइ, जावउ वागरवाल ।—ढोला०, दू०, पृ० १०५ ।
 वागा—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] वल्गा । लगाम ।
 वागाडवर—सञ्ज्ञा पुं [स० वाक् + आडम्बर] वाग्जाल । व्यर्थ की लंबी चौड़ी बात । उ०—कसी जन विशेष को मनस्ताप देने हो के अर्थ व्यर्थ वागाडवर ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६६ ।
 वागात्मा—वि० [म० वाक् + आत्मन्] शब्दमय [को०] ।
 वागारु—सञ्ज्ञा पुं [स०] आशा देकर निराश करनेवाला । आसरे मे रखकर पाछे धोखा देनेवाला । विश्वासघाती ।
 वागाशनि—सञ्ज्ञा पुं [स०] बुद्धदेव ।
 वागीश'—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ वृहस्पति । २. ब्रह्मा । ३ वाग्मी । कवि । ४ पुण्य नक्षत्र [को०] ।
 वागीश'—वि० अच्युत बालनवाला । वक्ता ।
 वागीशा—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] सरस्वती ।
 वागीश्वर'—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ वृहस्पति । २ ब्रह्मा । ३ मनुजोपवाधित । ४. वाग्मी । कवि ।
 वागीश्वर'—वि० अच्युत बालनवाला । सद्बक्ता ।
 वागीश्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] सरस्वती ।
 वागुजार—सञ्ज्ञा पुं [स० वागुज्जार] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार को मद्यली ।
 वागुजार—वि० [फा० वागुजार] छाडने या त्यागनेवाला [को०] ।
 वागुजारी—सञ्ज्ञा स्त्री [फा० वागुजारी] १ मुक्ति । त्यागना । २ छूट (जायदाद आदि की) ।
 वागुजारता—वि० [फा० वागुजारत] छूटा या छोटा हुआ [को०] ।
 वागुजी—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] कुक्की नाम की ओषधि । सामराजी ।
 वागुण—सञ्ज्ञा पुं [स०] १. कमरख । २ बैगन । भटा ।
 वागुरा—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] मृगा या पक्षियों के फँसाने का जाल । जाल ।
 यो०—वागुरावृत्त = (१) शिकारा । बहेलिया । (२) पशु फँसाने जीविका ।
 वागुरिक—सञ्ज्ञा पुं [स०] हिरन फँसानेवाला शिकारी । मृगव्याध ।
 वागुरीक—सञ्ज्ञा पुं [स०] दे० 'वागुरिक' । उ०—एक तनुवाय क सेवर के रूप में, वागुरीक मृगपाशक अथवा बड़ई का काम करते हैं ।—हिंदु० सम्यता, पृ० ३०४ ।
 वागुलि—सञ्ज्ञा पुं [म०] डिब्बा । पानदान ।
 वागुलक—सञ्ज्ञा पुं [स०] राजाओं का वह सेवक जिसका काम उनका पान खिलाना होता है । खवास ।
 वागुस—सञ्ज्ञा पुं [स०] एक प्रकार का बड़ा मत्स्य [को०] ।
 वागुपभ—सञ्ज्ञा पुं [स०] १. उत्तम वक्ता । २. विद्वान् [को०] ।
 वाग्गुण—सञ्ज्ञा पुं [स०] वक्त्रत्व की श्रेष्ठता । बालने का एक गुण वा पद्धति ।

विशेष—हेमचंद्र ने ३५ प्रकार के वाग्गुण कहे हैं ।

वाग्गुद—सञ्ज्ञा पुं [स०] एक प्रकार का पक्षी ।

विशेष—मनुस्मृति में लिखा है कि जो गुड चुराता है, वह दूसरे जन्म में वाग्गुद पक्षी होता है ।

वाग्गुलि, वाग्गुलिक—सञ्ज्ञा पुं [स०] राजाओं का वह खवास जो उनको पान खिलाता है ।

वाग्जाल—सञ्ज्ञा पुं [स०] बातों की लपेट । बातों का आडवर या भरमार ।

वाग्जीवन—सञ्ज्ञा पुं [स०] विदूषक [को०] ।

वाग्डवर—सञ्ज्ञा पुं [स० वाग्डवर] १ दर्पवचन । अतिशयोक्ति । २ विदग्धतापूर्ण भाषा [को०] ।

वाग्दंड—सञ्ज्ञा पुं [स० वाग्दण्ड] १. भला बुरा कहने का दंड । मौखिक दंड । डाँट डपट । लियाड़ । २. वाक्सयम । वाणी का नियंत्रण [को०] ।

वाग्दत्त—वि० [स०] मुँह से दिया हुआ । वचनों द्वारा प्रदान किया हुआ । जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हो ।

वाग्दत्ता—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो, केवल विवाह संस्कार होने को बाकी हो । उ०—यह विधि वाग्दत्ता कन्या के लिये है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १६६ ।

विशेष—पूर्व काल में प्रथा थी कि कन्या का पिता जामाना के पास जाकर कहता था कि मैं अपनी कन्या तुम्हें दूँगा । इस प्रकार देने को कही हुई कन्या वाग्दत्ता कहो गई है । आजकल इस प्रकार तो नहीं कहा जाता, पर वरच्छा या फलदान का टीका चढाया जाता है ।

वाग्दरिद्र—वि० [स०] बहुत कम बालनवाला । अल्पवक्ता [को०] ।

वाग्दल—सञ्ज्ञा पुं [स०] ओष्ठार । ओठ ।

वाग्दान—सञ्ज्ञा पुं [स०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें दूँगा ।

विशेष—प्राचीन काल में कन्या का पिता जिसे उत्तम वर समझता था, उसके पास जाकर कहता था—मैं अपनी कन्या तुम्हें दूँगा । यहाँ कथन वाग्दान कहलाता था ।

वाग्दुष्ट'—वि० [स०] १. पक्षपाती । कटुभाषी । २ जिसे किसी ने शाप दिया हो । जिस किसी ने कासा हो । अभिमत । ३ अशुद्ध वा व्याकरण क प्रातकूल भाषा का प्रयोग करनेवाला [को०] ।

वाग्दुष्ट'—सञ्ज्ञा पुं [स०] १. वह जा निंदा करता हो । निंदक । वह ब्राह्मण जिसका उपयुक्त समय पर उपनयन संस्कार न हुआ हो [को०] ।

वाग्देवता—सञ्ज्ञा पुं [स०] वाणी । सरस्वती ।

वाग्देवा—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] सरस्वती । वाणी ।

वाग्देवत्यचर—सञ्ज्ञा पुं [स०] वह चर जो सरस्वती के उद्देश्य से पकाया गया हो ।

वाग्दोष—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ बालने का त्रुटि । जैसे, वर्णा का ठाक उच्चारण न करना इत्यादि । २. व्याकरण सबका त्रुटिया या 'दोष' । ३. निंदा या गाली ।

वाग्धारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी की अप्रतिहत गति । वाणी की अटूट धारा । उ० - रामानन्द और वल्लभाचार्य ने जिस भक्तिरस का प्रसूत सचय किया, कवीर, सुर आदि की वाग्धारा ने उसका सचार जनता के बीच किया ।—आचार्य०, पृ० ६४ ।

वाग्निवधन—वि० [म० वाग्निवन्धन] जो शब्दों पर निर्भर या आश्रित हो [को०] ।

वाग्वधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाग्वन्धन] बोलने से विरत करना । बोलने न देना ।

वाग्वद्ध—वि० [सं०] मौन । चुप [को०] ।

वाग्वाहुल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] 'वागाडवर' । उ०—उनकी कृति वाग्वाहुल्य से भरा रहती है ।—साहित्य०, पृ० २५१ ।

वाग्भट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अष्टांगहृदय संहिता नामक वैद्यक के ग्रंथ के रचयिता जिनके पिता का नाम सिंहगुप्त था । ग्रंथकार का वैद्यक के ग्रंथकलाश्रो मे बड़ा समान और प्रामाण्य है । २ पदार्थ-चक्रिका, भावप्रकाश, रसरत्न समुच्चय, शास्त्रदर्पण आदि के रचयिता । ३ वैद्यक निघण्टु के रचयिता । ४. एक जैन पंडित जिनकी पत्नी का नाम नमिकुमार था । इनके रचे अलंकारतिलक, वाग्भटालंकार और छदानुशासन प्रामुख्य ग्रंथ हैं ।

वाग्मिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ पांडित्य । २ उत्तम वक्तृत्व शक्ति [को०] ।

वाग्मिन्त्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] द० 'वाग्मिता' [को०] ।

वाग्मी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाग्मिन्] १ वाचाल । अच्छा वक्ता । २. पंडित । ३ वृहस्पति । ४. एक पुष्यशी राजा । ५. विष्णु [को०] । ६ शुक्र । तीता [को०] ।

वाग्य'—वि० [सं०] १. परिमलभाषी । २ सत्य वक्ता [को०] ।

वाग्य'—सञ्ज्ञा पुं० १ निवेद । २ विनम्रता । विनय । शालीनता [को०] । ५. सदेह । शका । विकल्प [को०] ।

वाग्यत—वि० [सं०] वाणी का सयम या निरोध करनेवाला मितभाषी । [को०] ।

वाग्यम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने वाणी का निरोध कर लिया हो, मुनि [को०] ।

वाग्यमन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाणी का सयम । बोलने में मयम ।

वाग्याम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मूक । गुँगा [को०] ।

वाग्युद्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] । कहासुनी । वादविवाद ।

वाग्वज्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अशुद्ध रूप से कहा हुआ वाक्य । २ कठोर वाक्य । ३. शाप ।

वाग्वद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चमगादड़ [को०] ।

वाग्वादिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती ।

वाग्विद—वि० [सं०] दे० 'वाग्विदग्ध' [को०] ।

वाग्विदग्ध—वि० [सं०] १ पंडित । २ बातचीत करने में चतुर ।

वाग्विदग्धता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाग्विदग्ध' ।

वाग्विनि सुत—वि० [सं०] कथन से व्यजित [को०] ।

वाग्विभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाणीरूपी सपत्ति । वाणी का वैभव । भाषा पर विशेष अधिकार [को०] ।

वाग्विरोध—सञ्ज्ञा पुं० [पुं०] वादविवाद । कहासुनी [को०] ।

वाग्विलास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आनन्दपूर्वक परस्पर समापण । आनन्द-पूर्वक बातचीत करना । २. व्यर्थ का वागाडडर ।

वाग्विलासी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वाग्विलामिन्] १ कपोत । बबूतर । २ पट्टक । पट्टखी [को०] ।

वाग्विस्तर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाक्प्रपञ्च । वाणी का विस्तार [को०] ।

वाग्वीर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] गूढ़ लबा चौड़ी बातें करनेवाला व्यक्ति । बातचीत में धीरता दिखानेवाला आदमी [को०] ।

वाग्वैचित्र्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चमत्कारप्रियता । भाषा की विचित्रता । उ०—आनन्दजननावाद ता वैचारा आनन्दजनना को छाटकर किसी वाग्वैचित्र्य की बात ही नहीं करता ।—आचार्य०, पृ० १२० ।

वाग्वैदग्ध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बात करने की चतुरता । २ मुंदर ग्रन्थकार और चमत्कारपूर्ण उक्ति का निपुणता । उ०—कवि गगन छंदों में जमा काव्यगत चमत्कार, वाग्वैदग्ध्य, भाषासौष्ठव वतमान हैं, उनके प्रकाश में रत्निकालीन कवियों का पृथक्ता स्पष्ट हो जाती है ।—अकबरी०, पृ० ११८ ।

विशेष—काव्य में वाग्वैदग्ध्य का प्रधानता मानते हुए भा काव्य को आत्मा रम ही कहा गया है । अग्निपुराण में स्पष्ट लिखा है—'वाग्वैदग्ध्यं प्रधानं स प रम एवात्र जीविन्म्' ।

वाग्व्यय—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वाक्छन्द । वाक्छन्द्य [को०] ।

वाग्व्यवहार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाक्चक्र विचारणा । मौखिक निरूपण या कथन [को०] ।

वाग्व्यापार—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ कथन की पद्धति । २ भाषण शैली । ३ बातचीत । वार्तालाप [को०] ।

वाघभर—सञ्ज्ञा पुं० [म० व्याघ्रान्धर] दे० 'वाघवर' । उ० शिव विभूत गोला लिये, वाघभर धरि अग ।—प० रामो, पृ० १७६ ।

वाघमर—सञ्ज्ञा पुं० [म० व्याघ्राम्बर] दे० 'वाघवर' ।

वाङ्निमित्त—सञ्ज्ञा पुं० [म०] पूर्वसूचना [को०] ।

वाङ्निश्चय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाणी द्वारा विवाह की बातचीत पक्की होना [को०] ।

वाङ्निष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वचनवद्धता । वचन का पालन [को०] ।

वाङ्मती—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] एक नदी जो नेपाल से निकलती है और राजकल 'वागमती' कहलाती है ।

विशेष—वराहपुराण (गोकर्ण महात्म्य) में इस नदी की अत्यंत पवित्र, गंगा से भी पवित्र, कहा है और इसमें स्नान करने तथा इसके किनारे मरने से विष्णुलोक की प्राप्ति बतलाई है ।

वाङ्मधुर—वि० [सं०] मिष्टभाषी । मधुर बोलनेवाला [को०] ।

वाङ्मय—वि० [सं०] १ वाक्यात्मक । वचन सवधो । २. वचन द्वारा किया हुआ । जैसे,—वाङ्मय पाप ।

विशेष—वचनो द्वारा किए हुए पाप चार प्रकार के कहे गए हैं—पाण्ड्य, अनृत, पैशुन्य और असनद्ध प्रलाप ।

३. जो पठन पाठन का विषय हो । ४ वाक्पटु । वाक्चतुर [को०] ।

वाङ्मय—सञ्ज्ञा पुं० १ गद्य पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो । साहित्य । उ०—इस्लाम के प्रवेश ने भारतवर्ष की ललित कलाओं तथा वाङ्मय के क्षेत्रों पर अपना विशेष प्रभाव डाला ।—अकबरी० (भू०) पृ० २ । २. वाक्पटुता । वाग्मिता [को०] । ३. अलंकारशास्त्र । साहित्यशास्त्र [को०] ।

वाङ्मयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती ।

वाङ्मुख—सज्ञा पुं [मं] १ एक प्रकार का गद्यकाव्य । उपन्यास ।
२ भूमिका । प्रस्तावना ।

वाङ्मूर्ति—सज्ञा स्त्री [मं] वाणी । सरस्वती [को०] ।

वाचयम्—सज्ञा पुं [मं] १ मुनि । २ मौन व्रत धारण करनेवाला पुरुष । मौनी ।

वाच्—सज्ञा स्त्री [सं] वाचा । वाणी । वाक्य ।

वाच^१—सज्ञा स्त्री [मं वाच्] दे० 'वाच्' । उ०—काय मन वाच सब धर्म करिवो करै ।—केशव (शब्द०) ।

वाच^२—सज्ञा स्त्री [सं] १. एक प्रकार की मछली । २. मदन नाम का एक पौधा (को०) ।

वाँच—सज्ञा स्त्री [अं०] जेब में रखने की या कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी ।

वाचक^१—वि० (सं) १ बतानेवाला । कहनेवाला । द्योतक । सूचक । बोधक । जैसे—उपमावाचक शब्द, लिंगवाचक प्रत्यय । २. मौखिक । शाब्दिक (को०) ।

वाचक^२—सज्ञा पुं १ वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो । नाम । सज्ञा । संकेत । २ वक्ता । ३ पाठक (को०) । ४. दूत । सदेशवाहक (को०) ।

वाचकत्व—सज्ञा पुं [सं] सूचकत्व । वाचक होने का भाव । बोधकत्व । उ०—मेरी समझ में रसास्वादन का प्रकृत स्वरूप आनन्द शब्द से व्यक्त नहीं होता । लोकोत्तर, अनिवर्चनीय आदि विशेषणों से न तो उसके वाचकत्व का परिहार होता है, न प्रयोग का प्रायश्चित्त होता है —आचार्य०, पृ० ४ ।

वाचकता—सज्ञा स्त्री [सं] दे० 'वाचकत्व' ।

वाचकधर्मलुप्ता—सज्ञा स्त्री [सं] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो, जैसे ईस प्रसाद असास तुम्हारी । सब मुनवधू देवसरि बारी ।—तुलसी । यहाँ उपमान और उपमेय तो हैं पर उपमावाचक शब्द और साधारण धर्म नहीं है ।

वाचकपद—सज्ञा पुं [सं] बोधक पद या शब्द [को०] ।

वाचकलुप्ता—सज्ञा स्त्री [सं] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप होता है । जैसे,—नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन ।—तुलसी (शब्द) ।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता—सज्ञा स्त्री [सं] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हो केवल उपमेय भर हो । जैसे,—जेहि वर वाजि राम असवारा । तेहि सारदौ न वरनै पारा ।—तुलसी ।

वाचकोपमानलुप्ता—सज्ञा स्त्री [सं] उपमालंकार का एक भेद जिसमें वाचक और उपमान का लोप होता है । यथा,—तेरे ये कटु वचन हैं सुनत हियो हरखात ।

वाचकोपमेयलुप्ता—सज्ञा स्त्री [सं] उपमालंकार का एक भेद जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है । जैसे,—अट्टा उदय होतें भयो छविबर पुरन चंद ।

वाचकनवी—सज्ञा स्त्री [सं] वचकनु ऋषि की अपत्या । गार्गी । वाचकूटी ।

वाचन—सज्ञा पुं [सं] पढ़ना या उच्चारण करना । पठन । वाँचना । २ कहना । बताना । ३ प्रतिपादन ।

वाचनक—सज्ञा पुं [सं] १ पहेली । २ एक प्रकार की मिठाई (को०) ।

वाचना—सज्ञा स्त्री [सं] १ पाठ । २ पाठ का अंश । ३ अध्याय । परिच्छेद [को०] ।

वाचनालय—सज्ञा पुं [सं] वह कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें और समाचारपत्र आदि पढ़ने की मिलते हो । (अं०) रीडिंग रूम ।

वाचनिक—वि० [सं] १ वचन संबंधी । मौखिक । शब्दों द्वारा व्यक्त । २ वाचन करनेवाला [को०] ।

वाचयिता—वि० [सं वाचयितृ] १ वाचक । बतानेवाला । २ पाठ करानेवाला । पाठसंचालक (को०) ।

वाचसापति—सज्ञा पुं [सं वाचसापति] बृहस्पति ।—(यम, ब्रह्मा, प्रजापति, विश्वकर्मा आदि के लिये भी प्रयुक्त) ।

वाचस्पति—सज्ञा पुं [सं] १ बृहस्पति । २ शब्द प्रतिपालक । ३ पुण्य नक्षत्र (को०) । ४. सुवक्ता (को०) । एक कोशकार (को०) । ६. एक ऋषि का नाम (को०) । ७ एक दार्शनिक का नाम (को०) । ८ वेद (को०) ।

वाचस्पत्य^१—सज्ञा पुं [सं] १ भाषणकुशलता । २ उत्तम वक्तव्य । ३ संस्कृत का एक काशप्रथ [को०] ।

वाचस्पत्य^२—वि० १ वाचस्पति संबंधी । २ बृहस्पति द्वारा कथित या उक्त [को०] ।

वाचा^१—सज्ञा स्त्री [सं] १ वाणी । सरस्वती । २. वाक्य । वचन । शब्द । ३. सूक्त । ऋचा (को०) । ४ शपथ । कसम (को०) ।

वाचा^२—वि० वचन द्वारा । वचन या कथन से ।

वाचाट—वि० [सं] १. वाचाल । २ वक्ता । वक्तावादी ।

वाचापत्र—सज्ञा पुं [सं] प्रतिज्ञापत्र ।

वाचावध^१—वि० [सं वाचावद्ध] । प्रतिज्ञावद्ध । वचनवद्ध । उ०—वाचावध कस कार छाँड्या तव वसुदेव पतीज हा । याकु गर्भ अवतरे जे मुत सावधान हूँ लाज हा ।—पूर (शब्द०) ।

वाचावधन—सज्ञा पुं [सं वाचावधन] प्रतिज्ञावद्ध होता ।

वाचावद्ध—सज्ञा पुं [सं] वादे में बाँधा हुआ । वचन देने के कारण । ववश । प्रातिज्ञावद्ध ।

वाचाल—वि० [सं] १. बालन में तज । वाक्पटु । २ वक्तावादी । व्यर्थ वकनवाला ।

वाचालता—सज्ञा स्त्री [सं] १. बहुभाषिता । बहुत बोलना । २. बातचात में निपुणता ।

वाचासहाय—सज्ञा पुं [सं] वह जो वाणी द्वारा सहायक हो, मित्र । मधुरभाषी सखा [को०] ।

वाचिक^१—वि० [सं] [वि० स्त्री वाचिका, वाचिकी] १ वाणी संबंधी । २. वाणी से किया हुआ । ३ संकेत से कहा हुआ ।

वाचिक^१—सद्वा पु० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्यविन्यास द्वारा अभिनय का कार्य संपन्न होता है।

यौ० वाचिकपत्र—(१) प्रतिज्ञापत्र। (२) समाचारपत्र। (३) चिट्ठी। पत्र। वाचिकहारक = मदेशहारक, दूत।

वाची—वि० [स० वाचिन्] १ वाक्ययुक्त। २ प्रकट करनेवाला। बोध करानेवाला। सूचक।

विशेष—यह शब्द समास में समस्त पद के अंत में आने से वाचक और विधायक का अर्थ देता है। जैसे,—पुरुषवाची = पुरुषवाचक।

वाचोयुक्ति^१—सद्वा स्त्री० [स०] १ सुंदर भाषण। २ वक्तव्य [को०]।

वाचोयुक्ति^२—वि० भाषणपटु। वक्तव्य में निपुण [को०]।

वाचोयुक्तिपटु—स० [स०] वाग्मी [को०]।

वाच्य^१—वि० [स०] १ कहने योग्य। जो कथन में आवे। २ शब्द-सकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधा द्वारा जिसका बोध हो। अभिवेय।

विशेष—जिस शब्द द्वारा बोध होता है, उसे 'वाचक' कहते हैं, और जिस वस्तु या अर्थ का बोध होता है, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

३ जिसमें लोभ भला बुरा कहे। कुत्सित। हीन।

वाच्य^२—सद्वा पु० १ अभिधेयार्थ। वाच्यार्थ। शब्दयोजना से प्राप्त अर्थ। व्यंग्य का उलटा। विशेष दे० 'वाच्यार्थ'। उ०—एक में भाव वाच्य द्वारा प्रकट किया गया, दूसरे में अलंकार रूप व्यंग्य द्वारा।—रस०, पु० १२३। ४ प्रतिपादन।

वाच्यचित्र—सद्वा पु० [स०] निम्न कोटि का काव्य [को०]।

वाच्यता—सद्वा स्त्री० [स०] १ वाच्य होने का भाव। ४ कुत्सा। निंदा। अपयश [को०]।

वाच्यत्व—सद्वा पु० [स०] दे० 'वाच्यता' [को०]।

वाच्यार्थ—सद्वा पु० [स०] वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। सकेत रूप से स्थिर शब्दों का नियत अर्थ। मूल शब्दार्थ।

विशेष—अभिधा, लक्षणा और व्यजना ये तीन शक्तियाँ शब्द की माना जाती हैं। इनमें से प्रथम के सिवा और सब का आधार 'अभिधा' है, जो शब्दसकेत में नियत अर्थ का बोध कराती है। जैसे,—'कुता' और 'इमलो' कहने से पशुविशेष और वृक्षविशेष का ही भाव होता है। इस प्रकार का मूल अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है। विशेष दे० 'शब्दशक्ति'।

वाच्यावाच्य—सद्वा पु० [स०] भली बुरी या कहने न कहने योग्य बात। जैसे,—उसे वाच्यावाच्य का विचार नहीं है।

वाछो(७)†—सद्वा पु० [स० वत्सक, प्रा० वच्छग्र, वच्छय] दे० 'वत्स'। उ०—पाँच कोपर चरावे। चित सी वाछा राखीला।—दक्खिनो०, पु० ३३।

वाजती(७)†—वि० [हि० वाजना, वजना] वजती हुई। उ०—बोली वीणा

हस गत, पग वाजती पाल। रायजादी घर अगणइ छुटे पटे छछाल।—ढोला०, दू०, ५४०।

वाज^१—सद्वा पुं० [स०] १ घृत। घी। २ यज्ञ। ३. अन्न। ४ जल। ५ सग्राम। युद्ध। ६ बल। ७ वारा में वा पख जो पीछे लगा रहता है। ८ पलक। निमेष। ९. वेग। उ०—अवलवत, रव, जव, चपल, रहसि, रय, त्वर, वाज। सहसा, सत्वर, रभ, तुरा, तुरत वेग के साज।—तद० ग्रं०, पृ० १०७। १० मुनि। ११. शब्द। आवाज। १२ आद में दिया जानेवाला चावल का पिंड (को०)। १३ पख। पर (को०)। १४ चंद्र मास का एक नाम (को०)। १५ यज्ञ के अंत में पड़ा जानेवाला एक मंत्र (को०)। १६ प्रतियोगिता में प्राप्त पुरस्कार (को०)। १७ तीव्र गतिवाला घोड़ा (को०)। १७. तीन ऋतुओं में से एक ऋतु (को०)। १८. प्राप्ति। लाभ (को०)।

वाज^२—सद्वा पु० [अ० वाज] १. उपदेश। शिक्षा। २. धार्मिक व्याख्यान। ३. धार्मिक उपदेश। कथा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

वाजकर्मा—वि० [स० वाजकर्मन्] युद्ध में सलग्न [को०]।

वाजकृत्य—सद्वा पु० [स०] लड़ाई [को०]।

वाजगव्य—वि० [स० वाजगव्य] जिसके पास गाड़ी भर धन या लूट का माल हो। [को०]।

वाजजित्—वि० [स०] प्रतियोगिता या युद्ध में विजयी होनेवाला [को०]।

वाजदा—वि० [स०] वाज अर्थात् बल या वेग प्रदान करनेवाला [को०]।

वाजदावर्पा—सद्वा पु० [स० वाजदावर्प्स] एक साम का नाम।

वाजदावा—वि० [स० वाजदावन्] धनद्रव्य, इनाम आदि देनेवाला [को०]।

वाजना(७)†—क्रि० अ० [हि०] वजना। ध्वनित होना।

वाजपति—सद्वा पुं० [स०] १ अग्नि। २ अन्नपति।

वाजपेई(७)†—सद्वा पुं० [स० वाजपेयिन्, वाजपेयी] दे० 'वाजपेयी'। उ०—व्याध अराराध को साध राखी कौन, पिंगल कौन मति भक्तभेई। कौन वीं सामजाजी अजामिल अघम कौन गजराज धी वाजपेई?—तुलसी (शब्द०)।

वाजपेय—सद्वा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात और यज्ञों में पाचवाँ है।

वाजपेयक—वि० [स०] वाजपेय यज्ञ सबंधी [को०]।

वाजपेयी—सद्वा पुं० [स० वाजपेयिन्] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया है। २. ब्राह्मण का एक उपाधि जो कान्यकुब्जा में होती है। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष। जस,—वे कौन वड़े भारी वाजपेयी हैं।

वाजप्य—सद्वा पुं० [स०] एक गोत्रकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाजप्यायन कहलाते हैं।

वाजवी—वि० [फा० वाजिबी] दे० 'वाजिबी'।

वाजभर्मिय—सद्वा पुं० [स०] एक साम का नाम।

वाजभृत—सद्वा पुं० [स०] एक साम का नाम।

वाजभोजी—सद्वा पुं० [स० वाजभोजिन्] वाजपेय यज्ञ [को०]।

वाजयु—वि० [स०] १. युद्ध या प्रतियोगिता के लिये इच्छुक । २ तेजस्वी । शक्तिशाली । ३ उत्साही । ४. धन देनेवाला [को०] ।

वाजवत—सञ्ज्ञा पु० [स०] [अपत्य वाजवतायनि] एक गोत्रकार ऋषि, जिनके गोत्र के लोग 'वाजवतायनि' कहलाते हैं ।

वाजवाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] मरकत [को०] ।

वाजश्रव—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम ।

वाजश्रवस—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वाजश्रवा ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष । २ एक ऋषि जिनके पुत्र का नाम 'नचिकेता' था और जो अपने पिता के क्रुद्ध होने पर यमराज के यहाँ चला गया था । वहाँ उसने उनमें ज्ञान प्राप्त किया था ।

वाजश्रवा—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजश्रवस्] १ अग्नि । २ एक गोत्र-कार ऋषि का नाम ।

वाजस—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक साम ? का नाम ।

वाजसन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । २. विष्णु [को०] ।

वाजसनि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सूर्य । २ अन्नदाता [को०] ।

वाजसनेय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. यजुर्वेद की एक शाखा का नाम ।

विशेष—इसे याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशंपायन पर क्रुद्ध होकर उनकी पढाई हुई विद्या उगलने पर सूर्य के तप से प्राप्त की थी । मत्स्य पुराण के अनुसार वैशंपायन के शाप से वाजसनेय शाखा नष्ट हो गई । पर आजकल शुक्ल यजुर्वेद की जो सहिता मिलती है, वह वाजसनेय सहिता कहलाती है । यजुर्वेद के दो पाठ हैं शुक्ल और कृष्ण । शुक्ल में १५ शाखा हैं, कराव, माध्यदिन, जावाल, बुधेय, शाकेय, तापनीय, कापीस, पीड्वहा, आर्वात्तिक, परमावत्तिक, पाराशरीय, वनेय, बीधेय, ओधेय और गालव । यह सब एकत्रित होकर वाजसनेयी शाखा भी कहलाती हैं ।

२ याज्ञवल्क्य ऋषि जो सूर्य के छात्र थे ।

वाजसनेयक—वि० [स०] १. वाजसनेय सबधी । २ याज्ञवल्क्य द्वारा रचित [को०] ।

वाजसनेयी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजसनेयिन्] १ वाजसनेय शाखा के प्रवर्तक याज्ञवल्क्य । २ इस शाखा के अनुयायी लोग [को०] ।

वाजसनेयी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शुक्ल यजुर्वेद की पंद्रहों शाखाओं का नाम ।—प्रा० भा० पृ०, पृ० १८२ ।

वाजसाम—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजसामन्] एक साम का नाम ।

वाजसजाक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेणु राजा का नाम ।

वाजा^३—सञ्ज्ञा, पु० [स० वाद्य] दे० 'वाजा' । उ०—सज्जण चाल्या है सखी, वाजइ वाजा रग । जिए वाटइ सज्जण गया, सा वाटइ सुरग ।—ढोला०, दू० ३५६ ।

वाजिगधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वाजिगन्धा] अश्वगधा । असगध ।

वाजित—वि० [स०] वाज युक्त । पखोवाला । जैसे, वाण [को०] ।

वाजित्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वादित्र] वाजा । वाद्य । वाद्ययंत्र । उ०—हुई सोपारी मनि हरण्यो छइ राव । वाजित्र बाजइ नीसाँगो घाव ।—वी० रासो, पृ० ६ ।

वाजिदंत, वाजिदंतक—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजिदन्त, वाजिदन्तक] वासक । अडूसा ।

वाजिन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शक्ति (वेद) । २ सवर्ष । होड । ३. उलम्ह । ४ छेने का पानी [को०] ।

वाजिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ घोड़ी । २ अश्वगधा । असगध । ३ उपा [को०] । ४ अन्न (वेद) ।

वाजिब—वि० [अ०] उचिन । ठोक । मुनासिब । उ०—वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब ।—कवीर० श०, पृ० ३० ।

वाजिवी—वि० [अ०] उचित । ठीक । मुनासिब ।

मुहा०—वाजिवी बात = ठीक बात । यथार्थ या सच्ची बात ।

वाजिवी खर्च = आवश्यक खर्च ।

वाजिवुल् अदा^१—वि० [अ०] (रकम या धन) जिसके देने का समय आ गया हो । (वह रकम) जिसका दे देना उचित हो, या जिसे देने का समय पूरा हो गया हो ।

वाजिवुल् अदा^२—सञ्ज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे देने का समय पूरा हो चुका हो ।

वाजिवुल् अर्ज—सञ्ज्ञा पु० [अ० वाजिवुल अर्ज] वह शर्त जो कानूनी बदोबस्त के समय जमींदारों और काश्तकारों के बीच गाँव के रिवाज आदि के सबंध में लिखी जाती है ।

वाजिवुल् वसूल^१—वि० [अ०] (धन) जिसके वसूल करने का वक्त आ गया हो ।

वाजिवुल् वसूल^२—सञ्ज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे वसूल करना उचित हो ।

वाजिपृष्ठ—सञ्ज्ञा पु० [स०] अम्लान वृक्ष । दे० 'अम्लान' [को०] ।

वाजिभ—सञ्ज्ञा पु० [पुं०] अश्विनी नक्षत्र ।

वाजिभक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] चना । चराक [को०] ।

वाजिभोजन—सञ्ज्ञा पु० [स०] मूँग । मुद्ग ।

वाजिमान्—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजिमत] परवल । पटोल [को०] ।

वाजिमेघ—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक यज्ञ । अश्वमेघ ।

वाजियोजक—सञ्ज्ञा पु० [स०] सारथी । साईस [को०] ।

वाजिराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विष्णु । २ उच्चैश्वा ।

वाजिविष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वट का वृक्ष । वरगद [को०] ।

वाजिशत्रु—सञ्ज्ञा पु० [स०] अश्वमार । कनेर का पेड़ ।

वाजिशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मदुरा । अस्तबल । घुडसाल [को०] ।

वाजिशिरा—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजिशिरस्] १ भगवान् के एक अवतार का नाम । २ एक दानव का नाम ।

वाजी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वाजिन्] १ घोड़ा । २. वासक । अडूसा । ३ फटे हुए दूध का पानी ।

विशेष—बंदक में इसे रुचिकर तथा तृष्णा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर का नाशक लिखा है ।

४ हवि । ५. बाण । तीर [को०] । ६ वह जो वाजसनेयी शाखा का अनुयायी हो [को०] । ७. अदित्य । सूर्य [को०] । ८. इंद्र ।

६ वृहस्पति (को०) । १० पत्नी (को०) । ११. मात की संख्या (को०) । १२ लगाम । वल्गा (को०) ।

वाजी —वि० १ तीव्र । वेगयुक्त । तेज । २ सुदृढ । मजबूत । ३ अतवाला । जिसके पास अन्न हो । ४ पखोवाला । पक्षयुक्त (को०) ।

वाजीकर वि० [स०] १ कामोद्दीपक । २ शक्तिवर्धक (को०) ।

वाजीकरण —सञ्ज्ञा पु० [म०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य, स्तम्भनशक्ति और पमत्त्व की वृद्धि हो । उ०—जिस औषध से स्त्री विषये अभिनाया उत्पन्न हो और धातु बदे तिसको वाजीकरण कहते हैं ।—शाङ्गवर०, पृ० ३६ ।

विशेष—जिस प्रयोग से मनुष्य अश्व के समान रतिशक्तिवाला हो, उसे वाजीकरण कहते हैं । मनुष्य में जब वीर्य की अल्पता होती है, तब वाजीकरण औषधों का व्यवहार किया जाता है । साधारणतः धी, दूध, मांस आदि पदार्थ वीर्यवर्द्धक होते हैं । पर आयुर्वेद में वाजीकरण पर एक अलग प्रकरण रहता है, जिसमें अन्नक प्रसार की काष्ठोषधों और रसोषधों की व्यवस्था रहती है ।

वाजीत्र —सञ्ज्ञा पु० [म० वादित्र] वाजा । वाद्ययंत्र । उ०—मोती चउक पुरानीया, वाजीत्र वाजै धुरइ निसाण ।—बी० रासो, पृ० २२ ।

वाजूँ —वि० [अ० वजूँ] अधोमुख । उलटा ।

वाजे वि० [अ० वाजेअ] १ रखने या धर देनेवाला । वजा करनेवाला । २ रचनेवाला बनानेवाला (को०) ।

वाट —सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मार्ग । रास्ता । उ०—जिण वाटइ सज्जण गया सा वाटडी सुरग ।—ढोला०, दू० ३५६ । २ वास्तु । इमारत । ३ मंडप । ४ आवृत स्थान । घेरेदार जगह (को०) । ५ उद्यान । उपवन (को०) । ६ एक अन्न (को०) । ७ तट पर लगाया हुआ लकड़ी का बाँध (को०) । ८ उच्छिष्ट । वक्षण (को०) । ९ प्रातः । प्रदेश (को०) ।

वाटक —सञ्ज्ञा पु० [म०] १ उद्यान । उपवन । २ घेरा । बाड । दे० 'वाट' (को०) ।

वाटडी —सञ्ज्ञा स्त्री [स०] वाट + (राज०) डी (प्रत्य०) मार्ग । राह । पथ । उ०—मज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारग । जिण वाइट मज्जण गया सा वाटडी सुरग ।—ढोला०, दू० ३५६

वाटवान —सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक जनपद जो काश्मीर के नैऋत्य कोण में कहा गया है । नकुल के दिग्विजय में इसे पश्चिम में और मत्स्यपुराण में उत्तर दिशा में लिखा है । २ स्मृति के अनुसार ब्राह्मणों माता और वर्ण ब्राह्मण या कर्महीन ब्राह्मण ने उत्पन्न एक सकर जाति । ३ वह सैन्याधिकारी जो अपनी सेना को प्रवृत्ति एवं प्रवृत्ति से परिचित हो (को०) । ४ भूस्वामी । जमींदार (को०) ।

वाटर —सञ्ज्ञा पु० [अ०] पानी ।

यी०—वाटरकलर = (१) एक प्रकार का रंग । (२) इस रंग से बना चित्र । वाटर पेंटिंग = वाटरकलर से चित्र बनाना । वाटरपोलो = एक खेल का नाम । वाटरप्रूफ़ । वाटर मार्क = (१)

जल की गहराई का सूचक चिह्न । (२) कागज पर छपा विशेष प्रकार का चिह्न आदि का प्रकाश के सामने करने पर दिखाई पड़ता है, जैसे मुद्राबनिमय के मोटा आदि पर रहता है । वाटर वर्क । वाटरगूट । माडावाटर आदि ।

वाटरप्रूफ़ —वि० [अ०] जिसपर पानी का प्रभाव न पड़े । जो पानी में न भीग सके । जैसे, वाटरप्रूफ़ कपड़ा ।

वाटरवक्स —सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ नगर में पानी पहुँचाने का विभाग । पानी पहुँचाने का कल का कार्यालय । २ पानी पहुँचाने की कल । जलकल ।

वाटरशूट —सञ्ज्ञा स्त्री [अ०] पानी में कूदकर तैरने की क्रोडा । जलक्रोडा ।

वाटली पु —सञ्ज्ञा स्त्री [स० वतुली, प्रा० वटुली, राज०, वाटला, अथवा दश० वटु या वटु, गुज० वाटकी०] पात्र । छोटी कटोरी । ल०—माती जडी म हाथि, नुरह सुगधी वाटली । सूती मौंफिर राति, जागूँ ढोलू जागली ।—ढोला०, दू०, ५०५ ।

वाटशृखला —सञ्ज्ञा स्त्री [स० वाट शृङ्खला] वह शृंखला या जंजीर जिससे कोई स्थान घेर दिया गया हो (को०) ।

वाटि' —सञ्ज्ञा स्त्री [म०] घिरा हुआ भूभाग (को०) ।

वाटि(उ)^२ —सञ्ज्ञा स्त्री [स० वाति, प्रा० वट्टि, राज० वाटि] दे० 'वत्ती' । उ०—ढोला माखडी मुई, मई गारडी न लव । दीवा केरी वाटि जिम, खोडी खोडी दव्व ।—ढोला०, दू० ६०६ ।

वाटिका —सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ वास्तु । इमारत । २ वाग । बगीचा । ३ हिमपत्रो । ४ पर्यायवाची । कुटीर (को०) । ५ अतिवला । वरियारा (को०) ।

वाटिदीर्घ —सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री वाटिदीर्घा] सरपत । एक प्रकार का लंबी घास (को०) ।

वाटी —सञ्ज्ञा स्त्री [म०] १ वास्तु । इमारत । घर । २ वह भूभाग जहाँ कोई घर बनाया गया हो (को०) । ३ अहाता । बाडा (को०) । ४ उद्यान । उपवन (को०) । ५ सड़क । रथ्या (को०) । ६ बाँध का जोड़ । उच्छिष्ट (को०) । ७ एक प्रकार का अन्न (को०) । ८ अतिवला । वरियारा (को०) ।

वाटुक —सञ्ज्ञा पु० [स०] भुना हुआ जी । बहरी ।

वाट्य' —सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वना । वरियारा । खिरौटी । २ भुना हुआ जी ।

वाट्य' —वि० १ उपवन । २ वटकाष्ठ का बना हुआ । वट निर्मित (को०) ।

वाट्यपुष्प —सञ्ज्ञा पु० [स०] १ चदन । २ कुकुम ।

वाट्यपुष्पी —सञ्ज्ञा स्त्री [स०] अतिवला । वरियारा

वाट्यमंड —सञ्ज्ञा पु० [स० वाट्यमण्ड] बिना भूसी या चिन्के के भुने हुए और दले हुए जी का मांड ।

विशेष—एक भाग दले हुए जी को चौगुने पानी में पकाने से वाट्यमंड बनता है । चूल्ह में यह हल्का, चक्कर, दीपन, हृद्य तथा पित्त, श्लेष्मा, वायु और कृनाहनाशक कहा गया है ।

वाट्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वरियारा । वीजवद ।

वाट्याल—सज्ञा पुं० [स०] वरियाग । वीजवद ।

वाट्यालक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वाट्याल' ।

वाट्यालिका, वाट्याली—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा वरियारा ।

वाड—सज्ञा पुं० [स०] घेरा । वाड । वेष्टन [को०] ।

वाड ५—सज्ञा स्त्री० [स० वाड] दे० 'बाड' । उ०—सील सतोष की वाड करायलो गुरु शब्द रखवारी ।—राम० धर्म०, पृ० ४२ ।

वाडव^१—सज्ञा पुं० [म० वाडव] १ दे० 'बाडव' । २ ब्राह्मण (को०) । ३ एक वैयाकरण का नाम (को०) । ५. वडवा का समूह । अश्वसमूह (को०) । ६ एक मुहूर्त का नाम (को०) । ७ एक रतिवध । ८ पाताल (को०) ।

वाडव^२—वि० दे० 'बाडव' ।

वाडवहरण—सज्ञा पुं० [स०] घोड़े का चारा । घोड़े को दिया जाने-वाला चारा, दाना, घास आदि [को०] ।

वाडवहारक—सज्ञा पुं० [स०] एक समुद्री जंतु [को०] ।

वाडवाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स० वाडवाग्नि] १ समुद्र के अंदर की आग । २ समुद्री आग । वह आग जो समुद्र में दिखाई देती है ।

वाडवानल—सज्ञा पुं० [स० वाडवानल] वडवानल । दे० वाडवाग्नि [को०] ।

वाडवेय—सज्ञा पुं० [स०] १. अश्विनीकुमार । २ ब्राह्मण । ३ अश्व । घोड़ा । ४ सांड [को०] ।

वाडव्य—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण समुदाय [को०] ।

वाढ -वि० [स०] दे० 'बाढ' । [को०] ।

वाढम्—अव्य० [स०] अलम् । बस । काफी है । बड़न हो चुका ।

वाण—सज्ञा पुं० [स०] धारदार फल लगा हुआ छड़ी के आकार का छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खींचकर छोड़ा जाता है । तीर ।

विशेष—वृहत् शाङ्गधर में धनुष और वाण बनाने के सबध में बहुत स नियम दिए गए हैं । उसमें लिखा है कि वाण या तीर का फल शुद्ध लौह का होना चाहिए । फल कई आकार के बनाए जाते थे, जैसे,—आरामुख, क्षुरप्र, गोपुच्छ, अधचद्र, सूचीमुख, भल्ल, वत्सदन, द्विभल्ल, कीर्णक और काकतुड । ये सब भिन्न भिन्न कामों के लिये होते थे । जैसे,—आरामुख वाण वर्म (बकतर) भेदने के लिये, अधचद्र सिर काटने के लिये, आरामुख और सूचीमुख ढाल छेड़ने के लिये, क्षुरप्र धनुष काटने के लिये, भल्ल हृदय भेदने के लिये, द्विभल्ल धनुष की डोरी काटने के लिये, आदि । वाण के फल पर अच्छी जिला होनी चाहिए । पीपल, सेंधा नमक और गुड को गोमूत्र में पासकर फल पर लेप कर, फिर फल को आग्न में तपाकर तेल में बुभावे, तो अच्छी जिला होगी । शर कसा होना चाहिए, इसके सबध में भी बहुत सी बातें हैं । वाण रीक सीधा जाय, रास्ते में इधर उधर न हो, इसके लिये पिछले भाग में कुछ दूर तक कौवे, हम, बगले, गीध और मयूर आदि किसी पक्षी के पर हिं० श० ६-१०

लगाने चाहिए । विशेष विवरण के लिये देखिए 'धनुर्वेद' और 'वाण' शब्द ।

वाणावली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वाणों की अवली । तीरों की कतार । तीरों की लगातार वर्षा । २ एक साथ बने हुए पाँच श्लोक । श्लोको क' पंचक ।

वाणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बुनना (कपड़ा आदि) । २ करगह । करघा । ३ सरस्वता । ४ वादल । ५ मूल्य । कोमत । ६. शब्द । वाणी [को०] ।

वाणिज—सज्ञा पुं० [स०] १ वणिक । २ बडवानल । ३. तुला राशि का चिह्न (को०) ।

वाणिजक—सज्ञा पुं० [स०] वणिक । व्यापारी ।

वाणिजिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वणिक । व्यापारी । २. धूर्त । ठग । ३ बडवानल [को०] ।

वाणिज्य—सज्ञा पुं० [स०] व्यापार । वाणिज्य ।

वाणिज्यक—सज्ञा पुं० [स०] व्यापारी [को०] ।

वाणिज्य दूत—सज्ञा पुं० [म०] वह मनुष्य जो किसी स्वाधीन राज्य या देश के प्रतिनिधि रूप में दूसरे देश में रहता और अपने देश के व्यापारिक स्वार्थों की रक्षा करता हो । कान्सल । उ०—दोनों सरकार महावाणिज्य दूतों, वाणिज्य दूतों, उपवाणिज्य दूतों, तथा अन्य वाणिज्य दूताधिकर्ताओं की नियुक्ति के लिये समत हैं ।—नेपाल०, पृ० २५६ ।

वाणिज्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाणिज्य' [को०] ।

वाणिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त [को०] ।

वाणिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नर्तकी । २ मत्त । ३ शृंगार-प्रिय और स्वेच्छाचारिणी औरत (लाक्ष०) । ४ एक वर्णवृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण अर्थात् क्रमानुसार नगण, जगण, भगण, फिर जगण और अन में रगण और गुरु होता है ।

वाणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १, सरस्वती । २ मुह में निकले हुए मार्थक शब्द । वचन । उ०—इसमें भी मन और भाव हैं किंतु नहीं वैसी वाणी ।—पंचवटी, पृ० ६ ।

मुहा०—वाणी फुरना = मुँह से शब्द निकलना ।

३ वाक्शक्ति । उ०—इतनी कहत गण्ड पर चढिकै तुरतहि मधु-वन आए । कबु कपोल परसि वालक के वाणी प्रगट कराए ।—सूर (शब्द०) । ४ वाग्विद्य । जीभ । रसना । उ०—नैन निरखि चक्रित हूँ गए । मन वाणी दोऊ थकि गए ।—मूर (शब्द०) । ५ स्वर । ६ साहित्यिक रचना या कृति । ग्रंथ (को०) । ७ प्रशमा । स्तनन । स्तुति (को०) । ८ एक छंद (को०) । ९ बुनाई [को०] ।

वाणीवाद—सज्ञा पुं० [स०] एक पक्षी (को०) ।

वाणीमय—वि० [स०] शब्दित । शब्दायमान । ध्वनि । उ०—वाणी-मय मरु प्रातर, छई है विपण लज ।—आराधना, पृ० ३१ ।

वातड—सञ्ज्ञा पु० [स० वातण्ड] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिनके गोत्रवाले वातड्य कहलाते हैं।

वातड्य—सञ्ज्ञा पु० [स० वातण्ड्य] [स्त्री० वातड्यादिनी] वातड ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

वात—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

विशेष—शरीर में इसका स्थान पक्वाशय माना गया है। कहते हैं, शरीर की सब धातुओं और मल आदि का परिचालन इसी से होता है, और श्वास प्रश्वास, चेष्टा, वेग आदि इंद्रियों के कार्यों का भी यही मूल है।

३ वायु का देवता। वायु का अधिष्ठाता देवता (को०)। ४ गठिया। सधिवात (को०)। ५ घृष्ट नायक (को०)।

वात^१—वि० १ वही हुई। २ इच्छित। अभीष्ट। प्रार्थित (को०)।

वातकटक—सञ्ज्ञा पु० [स० वातकटक] एक प्रकार का वात रोग विशेष—इसमें पाँव की गांठों में वायु के घुसने के कारण जोड़ों में बड़ी पीड़ा होती है। यह रोग ऊँचे नीचे पैर पड़ने या अधिक परिश्रम करने से हो जाता है।

वातक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अशनपर्णी। २ उपपत्ति। जार (को०)।

वातकर्पिण्डक—सञ्ज्ञा पु० [स० वातक पिण्डक] जन्मजात नपुंसक (को०)।

वातकर—वि० [स०] वायुकारक। शरीर में वात पैदा करनेवाला।

वातकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० वातकर्मन्] अपानवायु का निकालना। पादना (को०)।

वातकी—वि० [स० वातकिन्] १ वात संबंधी। वात दोष से उत्पन्न। उ०—स्वरभेद और सूखी खाँसी उठे ये वातकी खाँसी के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० ८६। २ वात रोग का रोगी (को०)।

वातकुडलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वातकुण्डलिका] एक प्रकार का मूत्ररोग। उ०—इम दारुण व्याधि को वातकुडलिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० १७४।

विशेष—मूत्रकृच्छ्र का रोगी यदि कुपथ्य करके रुखी वस्तुएँ खाता है, तो यह उपद्रव होता है। इस व्याधि में वायु कुडलाकार होकर पेडू में घूमता रहता है, रोगी को पेशाब करने में पीड़ा होती है, और बूँद बूँद करके पेशाब उतरता है।

वातकुडली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वात कुण्डली] एक मूत्ररोग। विशेष दे० 'वातकुडलिका' (को०)।

वातकुभ—सञ्ज्ञा पु० [स० वातकुम्भ] हाथी के मांसे का निचला भाग। हाथी का गटस्थल (को०)।

वातकेतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] घूल। गर्द।

वातकेलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सुंदर आलाप। प्रेमियों की कानाफूसी। २. उपपत्ति के दाँतो या नखों का क्षत।

वातकोपन—वि० [स०] शरीरस्थ वायु को दूषित करनेवाला (को०)।

वातक्षोभ—सञ्ज्ञा पु० [स०] शरीरस्थ वायु का दूषित होना (को०)।

वातगड—सञ्ज्ञा पु० [स० वातगण्ड] वातज गलगड रोग जिसमें गले की नसें काली या लाल और बड़ी हो जाती हैं तथा बहुत दिन में पकती हैं।

वातगज—सञ्ज्ञा पु० [स०] तीव्र गति से दौड़नेवाला मृग (को०)।

वातगामी—सञ्ज्ञा पु० [स० वातगामिन्] पक्षी। विहग (को०)।

वातगुल्म—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म रोग जो वात के प्रकोप से होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार अधिक भोजन करने, रुखा अन्न खाने, बलवान् से लड़ने, मल मूत्र रोकने या अधिक विरेचनादि लेने से यह रोग होता है। इसमें गोला सा बंध जाता है, जो इधर से उधर रेंगता सा जान पड़ता है। कभी कभी बड़ी पीड़ा होती है। यह पीड़ा प्रायः भोजन पचने के पीछे खाली पेट होने पर होती है और भोजन करने पर घट जाती है।

२ आँधी। अघड। तूफान (को०)।

वातघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शालपर्णी। २ अश्वगघा। घसगघ।

वातचक्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष में एक योग।

विशेष—आपाढी पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय यह योग आता है। उस समय वायु को दिशा द्वारा वर्ष के फलाफल का विचार किया जाता है।

२ अंधवायु। चक्रवात। बवंडर।

वातचटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] तित्तिर। तीतर पक्षी।

वातज^१—वि० [स०] वायु द्वारा उत्पन्न। वातकृत्।

वातज^२—सञ्ज्ञा पु० उदरव्यथा। उदरशूल। पेट में उत्पन्न होनेवाली चुभन या पीड़ा (को०)।

वातजात—सञ्ज्ञा पु० [स० वात + जात] पवनसुत। हनुमान। उ०—सहमि सुखात वातजात की सुरति करि लवा ज्यो लुकात तुलसी अपेटे बाज के।—तुलसी (शब्द०)।

वातज्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर।

विशेष—इसमें गला, होठ और मुँह सूखते हैं, नींद नहीं आती, हिचकी आती है, शरीर रुखा हो जाता है, सिर और देह में पीड़ा होती है, मुँह फीका लगता है और मल रुद्ध हो जाता है। यह ज्वर कभी घट और कभी बढ़ जाता है।

वाततूल—सञ्ज्ञा पु० [स०] महीन तागा जो कभी कभी आकाश में इधर उधर उड़ता दिखाई पड़ता है।

विशेष—यह एक प्रकार की बहुत छोटी भकड़ियों का जाला होता है जिसके सहारे वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाया करती हैं। इसी को बुढ़िया का तागा कहते हैं।

पर्या०—वृद्धसूत्रक। इद्रतूल। ग्रावहाम। वशकफ। मरुध्वज।

वातथुडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] [अन्य रूप—वातथुडा, वातथुडा, वातहुडा] १ तेज हवा। २ भयकर वातरोगी। ३ एक प्रकार की चेचक की बीमारी। ४ सुदरी स्त्री (को०)।

वातध्वज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मेघ। २ धूल (को०)।

वातसह—वि० [५०] वात रोग मरणा । मरित वा रोग । जिह्वा
वातसह वा रोग ह्वा [५०] ।

वातसार—सङ्घा पु० [स०] विल्व । वेल ।

वातसारथि—मङ्घा पु० [स०] अग्नि ।

वातस्कन्ध—मङ्घा पु० [स० वातस्कन्ध] आकाश वा वह भग जहाँ वायु चलती रहती है ।

वातस्वन—सङ्घा पु० [स०] अग्नि ।

वातहत—वि० [स०] व युज्य उन्माद से ग्रस्त [को०] ।

वातहा—वि० [स०] वायुविकार शब्दक । वायुनाशक [को०] ।

वाताड—सङ्घा पु० [स० वाताड] अडकोश का एक रोग, जिसमें एक अड चलता रहता है ।

वाता—मङ्घा पु० [स० वात] पवन । वायु [को०] ।

वाताख्य—सङ्घा पु० [स०] वह घर जिसमें दक्षिण और पूर्व की ओर दालान है [को०] ।

वाताट—सङ्घा पु० [स०] १ सूर्य का घोड़ा । २ हिरन ।

वातातिसार—सङ्घा पु० [स०] एक प्रकार का अतिसार जो वायुविकार से होता है ।

विशेष—इसमें ललाई लिए हुए भागदार, रुखा, आम मिला हुआ दस्त होता है, और मल उत्पत्ति समय आवाज भी होती है ।—माधव०, पृ० ४५ ।

वातात्मज—सङ्घा पु० [स०] १ हनुमान । २ भीमसेन [को०] ।

वाताद—सङ्घा पु० [स०] बादाम ।

वाताध्वा—स० पु० [स०] भरोखा । मोखा । गवाक्ष । खिडकी [को०] ।

वातापि—सङ्घा पु० [स०] १ एक असुर का नाम ।

विशेष—आतापि और वातापि दो भाई थे । दोनों मिलकर ऋषियों को बहुत सताया करते थे । वातापि तो भेड़ बन जाता था और उसका भाई आतापि उसे मारकर ब्राह्मणों को भोजन कराया करता था । जब ब्राह्मण लोग खा चुकते, तब वह वातापि का नाम लेकर पुकारता था और वह उनका पेट फाड़कर निकल जाता था । इस प्रकार उन दोनों ने बहुत से ब्राह्मणों को मार डाला । एक दिन अगस्त्य ऋषि उन दोनों के घर आए । आतापि ने वातापि को मारकर अगस्त्य को खिलाया और फिर नाम लेकर पुकारने लगा । अगस्त्य जी ने डकार लेकर कहा कि वह तो मेरे पेट में कभी का पच गया, अब कहाँ आता है ।

यौ०—वातापिद्विद्, वातापिसूदन, वातापिहा=वातापि को मारने या पचा जानेवाले, अगस्त्य ऋषि ।

वातापी—सङ्घा पु० [स० वातापि] दे० 'वातापि' । उ०—मुनियों की कोख के भेदन करनेवाले वातापी नामक असुर को जिन्होंने पचा डाला था ।—वृहत्संहिता, पृ० ७६ ।

वाताप्य—सङ्घा पु० [स०] १ उदक । जल । २ सोम । ३ शोध । ४ उफान । खमीर [को०] ।

वाताम—सङ्घा पु० [स०] वादाम ।

वातामोदा—सङ्घा स्त्री० [स०] कस्तूरी ।

वाताय—सङ्घा पु० [स०] पर्ण । पत्ता [को०] ।

वातायन—सङ्घा [स०] १ गवाक्ष । भरोखा । छोटी खिडकी । २ घोड़ा । ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम । ४ रामायण के अनुसार एक जनपद का नाम । ५ अलिद । द्वारमण्डप [को०] । ६ मडन । माँडो [को०] ।

वातायमान—वि० [स०] वायु की तरह गतिशील [को०] ।

वातायु—सङ्घा पु० [स०] हिरन ।

वातारि—सङ्घा पु० [स०] १ एरड । रेंड । २ शन्मूली । ३ सिंहास । निर्गुंडी । ४ अजवाइन । ५ थूहर । सेंहुड । ६ वायविडग । ७ मुरन । जिमीकद । ८ भिलावा । ९ सतावर । १० तिलक वृक्ष । ११ नील का पौधा ।

वातालि, वाताली—सङ्घा स्त्री० [स०] वात्या । आँधी । तूफान [को०] ।

वातावरण—सङ्घा पु० [स०] १ पृथ्वी के चारों ओर रहनेवाली वायु । २ परिस्थिति । ३ आस पास की स्थिति । ४—प्रगमित है वातावरण, नमिस्तुव साव्य कमल ।—अपरा, पृ० ३८ ।

वातावर्त—सङ्घा पु० [स०] वक्रावर । वात्थाचक्र [को०] ।

वाताश—सङ्घा पु० [स०] सर्प [को०] ।

वाताशी—सङ्घा पु० [स० वाताशिन] साँप । सर्प [को०] ।

वाताश्व—सङ्घा पु० [स०] तीव्रगामी घोड़ा [को०] ।

वाताष्ठीला—सङ्घा स्त्री० [स०] एक उदररोग जिसमें नाभि के नीचे वायु की गाँठ सा पड़ जाती है, जो हवा उधर रेंगती सो जान पड़ती है । यह कभी कभी मूत्र का अवरोध भी करती है ।

वातास—सङ्घा स्त्री० [स० वात, हि० वातास] हवा । वायु । बयार । उ०—आज जाने कैसी वातास, छोड़ती सौरभ शून्य उच्छ्र-वास ।—गुजन, पृ० ५३ ।

वाताहत—वि० [स०] वायु से आहत, हिलाया हुआ । वायुकपित । उ०—दिक्पिंजर में बद्ध गजाधिप सा विनतानन, वाताहत हो गगन आर्त करता गुरु गर्जन —रश्मि०, पृ० ५४ । २ गठिया रोग से ग्रस्त [को०] ।

वाताहति—सङ्घा स्त्री० [स०] वायु का प्रचंड भोका [को०] ।

वाताहार—वि० [स०] वायु पीकर जीनेवाला [को०] ।

वातिगण—सङ्घा पु० [स० वातिगण] दे० 'वातिगम' [को०] ।

वाति—सङ्घा पु० [स०] १ वायु । २ सूर्य । ३ चंद्रमा ।

वातिक^१—वि० [स०] [स्त्री० वातिकी] १ तूफानी । २ पागल । उन्माद से पीड़ित । ३ सधवात या गठिया रोगवाला । ४ वायु के कारण उत्पन्न । वातजन्य । उ०—ऐसे शूलों को वातिक शूल कहते हैं ।—माधव०, पृ० १५८ ।

वातिक^२—सङ्घा पु० १ पपीहा । २ वह व्यक्ति जो वातव्याधि से प्रभावित हो । पागल । उन्मत्त । वातुल । ३ चाटुकार । ४ एक प्रकार का ज्वर । ५ देवयौनि विशेष । ६ ऐंद्र-जालिक । बाजीगर । ७ विप बंध [को०] ।

वातिग—सङ्घा पु० [स०] दे० 'वातिगम' ।

वातिगम—सङ्घा पु० [स०] १ भंडा । वगैर । २ वह व्यक्ति जो घातुविज्ञान का ज्ञाता हो । खनिजविज्ञान का वेत्ता [को०] ।

वातीक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का छोटा पक्षी ।

वातीय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चावल का मण्ड [को०] ।

वातीय^३—वि० वायुसंबन्धी [को०] ।

वातुल—वि० [सं०] १ वायुप्रधान । २ वायु के कोप से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो । वातूनी । वक्त्रवादी (को०) । ३ सधिवीर्य से पीडित (को०) ।

वातुल^२—सञ्ज्ञा पुं० १ वाक्ता । उन्मत्त । २ पागल । वायु का आवर्त । वक्त्र (को०) ।

वातुलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा चमगादड़ [को०] ।

वातूल—वि० [सं०] दे० 'वातुल' । उ०—उठता वह वातूल वेग से है कब से ।—साकेत, पृ० ४०१ ।

वातूलीभ्रम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बवडर । वात्याचक्र [को०] ।

वातृ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायु [को०] ।

वातोदर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक वातरोग ।

विशेष—इसमें हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पमली, पेट, कमर और पीठ में पीड़ा होती है, सूखी खाँसी आती है, शरीर भारी रहता है, अगो मे ऐठन होती है, और मल का अवरोध हो जाता है, पेट में कभी कभी गुडगुडाहट भी होती है और पेट फूला रहता है । पेट ठोकने से ऐसा शब्द निकलता है, जैसे हवा भरी हुई मशक ठोकने से ।

वातोना—सञ्ज्ञा पुं० [न०] गोजिह्वा नाम का एक पौधा [को०] ।

वातोर्मी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें मगण, भगण, तगण और अत में दो गुरु होते हैं । जैसे,—मो भाँती गो गहि बीरा धरो जू । नीकँ कीरौ सह युद्धँ करो जू । पाओगे अर्जुन या रीति मुक्ति । वातोर्मी सो समुझी आत्मयुक्ति । —छंदः०, पृष्ठ १६१ ।

वातोलवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वातोलम्बन] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर ।

विशेष—इसमें रोगी को श्वास, खाँसी, भ्रम और मूर्छा होती है तथा वह प्रलाप करता है । उसकी पसलियों में पीड़ा होती है, वह जभाई अधिक लेता है और उसके मुँह का स्वाद कसला रहता है ।

वात्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बवडर । २ तूफान । आँधी । उ०—आरंभक वात्या उद्गम मैं अब प्रकृति बन रहा स्रष्टा का ।—कामायनी, पृ० ७६ ।

वात्याचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बवडर । २. वावेला (लाचन) । उ०—कारण समझ में नहीं आता—यह वात्याचक्र क्यों ?—चंद्र०, पृ० १८१ ।

वात्स—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक गोत्रकार ऋषि का नाम । २ एक साम का नाम ।

वात्सक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बखडो का समूह या झुंड [को०] ।

वात्सरिक—सञ्ज्ञा पुं० [न०] ज्योतिषी ।

वात्सल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम । स्नेह । १. वह स्नेह जो पिता

या माता के हृदय में संतति के प्रति होता है । माता पिता का प्रेम ।

विशेष—साहित्य में जिस प्रकार नायक नायिका के रतिभाव के वर्णन द्वारा शृंगार रस माना जाता है, उसी प्रकार कुछ लोग माना पिता के रतिभाव के विभाव, अनुभाव और सचारी सहित वर्णन को वात्सल्य रस मानते हैं । पर यह सर्वसमत् नही है । अधिकांश लोग दास्य रति के अतिरिक्त और प्रकार के रति भाव को 'भाव' ही मानते हैं ।

वात्सि, वात्सी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मण और शूद्र के ससर्ग से उत्पन्न बन्धा [को०] ।

वात्सिपुत्र, वात्सीपुत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नाई, ना पत [को०] ।

वात्स्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि का नाम । ३ एक गोत्र जिसमें श्रोत्र, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्स्तुवान नामक पाँच प्रवर होते हैं ।

वात्स्यायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि का नाम । २ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार । ३ कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

वाथुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [द्व्य०] एक पुरानी जाति का नाम । उ०—अन्य जातियाँ भी थी—हाडिक्क, वागुडि के पूर्वज वाथुरी तथा चूहे ।—प्रा० भा० प०, पृ०, १८१ ।

वाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह वातवात जो किसी तत्व के निर्माण के लिये हो । तर्क, शास्त्रार्थ, दलील ।

विशेष—'वाद' न्याय के सोलह पदार्थों में दसवाँ पदार्थ माना गया है । जब किसी बात के सबध में एक कहता है कि यह इस प्रकार है और दूसरा कहता है कि नहीं, इस प्रकार है, और दोनों अपने अपने पक्ष की युक्तियों को सामने रखते हुए कथोप-कथन में प्रवृत्त होते हैं, तब वह कथोपकथन 'वाद' कहलाता है । यह वाद शास्त्रीय नियमों के अनुसार होता है, और उसमें दोनों अपने अपने कथन को प्रमाणा द्वारा पुष्ट करते हुए दूसरे के प्रमाणा का खंडन करते हैं । यदि कोई निग्रहस्थान में आ जाता है, तो उसका पक्ष गिरा हुआ माना जाता है और वाद समाप्त हो जाता है ।

२. किसी पक्ष के तत्वज्ञा द्वारा निश्चित सिद्धांत । उसूल । जैसे—अद्वैतवाद, आरम्भवाद, परिणामवाद । ३ वहस । झगडा । ४. भाषण (को०) । ५ वक्तव्य । उक्ता । आरोप (को०) । ५ वर्णन । वृत्त (को०) । ६ उत्तर (को०) । ७. विवृति । व्याख्या (को०) । ८ ध्वनन । ध्वनि (को०) । ९. विवरण । अफवाह (को०) । १० अभियोग । नालश । (को०) । ११ समति । सलाह (को०) । १२ अनुबध । इकरारनामा (को०) ।

वादक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बाजा बजानेवाला । २ वक्ता । ३. वाद करनेवाला । तक या शास्त्रार्थ करनेवाला ।

वादकर—वि० [सं०] दे० 'वादकृत' [को०] ।

वादकर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वादकर्तृ] वाद्य बजानेवाला । वादक [को०] ।

वादकृत—वि० [सं०], जो झगडे या विवाद का कारण हो । विवाद करनेवाला [को०] ।

वादग्रस्त - वि० [स०] १ किमी वाद का आग्रही। उ०—इसका प्रमाण वादग्रस्त आलोचको की प्रवृत्ति है।—आचार्य०, पृ० १४१। २ अनिश्चित, विवादास्पद (को०)।

वादचक्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वादचक्र] १ शास्त्रार्थ करने में पटु। वाद करने में दक्ष। २ हाजिरजवाब। श्लेषगर्भित उत्तर देने में पटु व्यक्ति (को०)।

वाददंड—सञ्ज्ञा पु० [स० वाददण्ड] सारंगी आदि वाजो के बजाने की कमाना।

वादद—वि० [स०] प्रतिस्पर्धी (को०)।

वादन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वाजा बजाना। २ वाजा। ३ वह जो मगीतवाद्य को बजाता हो (को०)।

वादनक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाजा।

वादनीय—सञ्ज्ञा पु० [स०] नरसत्त्व। सर (को०)।

वादप्रतिवाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] शास्त्रीय विषयो में होनेवाला कथोप-कथन। बहस।

वादयुद्ध—सञ्ज्ञा पु० [म०] विवाद। तर्कवितर्क (को०)।

वादरंग—सञ्ज्ञा पु० [स० वादरङ्ग] १ अश्वत्थ का वृक्ष। २ गूलर का वृक्ष (को०)।

वादर—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ कपास के सुन का काड़ा। २ कपास का पेड़। ३ वेर का पेड़।

वादरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कपास।

वादरायण—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यासदेव। वेदव्यास।

वादरायणि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ व्यास के पुत्र, शुक्रदेव। २ व्यासदेव। वादरि—सञ्ज्ञा पु० [स०] वादरायण के पिता।

विशेष—इसका मत वेदांत दर्शन में प्रायः उद्धृत मिलता है।

वादरिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेर बोननेवाला।

वादल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मधुपटिका। जेठी मधु। मधु। मुलेठी। २. अथकारमय दिवस (को०)।

वादवादी—सञ्ज्ञा पु० [स० वादवादिन्] जैन (को०)।

वादविवाद—सञ्ज्ञा पु० [म०] शाब्दिक झगडा। बहस।

यौ०—वादविवाद प्रतियोगिता = वह वादविवाद जिसमें विभिन्न प्रतियोगी किसी निर्धारित विषय के पक्षविपक्ष में भाषण करते हैं और निर्णायक की समिति से सर्वोत्तम वक्ता पुरस्कृत होते हैं।

वादसाधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अपकार करना। २ तर्क करना या तर्क में प्रमाण देना।

वादा—सञ्ज्ञा पु० [अ० वादह] (१) नियत समय या घड़ी।

मुहा०—वादा आना = १ घड़ी आ पहुँचना। नियत समय का प्राप्त होना। २ काल आना। मृत्यु का समय आना। वादा पूरा होना = जीवनकाल समाप्त होना।

२ इस बात का विश्वास दिलाना कि मैं अमुक काम करूँगा। वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।

मुहा०—वादा करना = कोई बात या काम करने के लिये वचन देना। प्रतिज्ञा करना। वादा पूरा करना = वचन के अनुसार काम पूरा करना। प्रतिज्ञा पूर्ण करना। वादा टालना = जिस समय कोई काम करने का वचन दिया हो, उस समय न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। वादा खिलाफी करना = बात पूरी न करना। कथन के विरुद्ध कार्य करना। वादा रखना = वचन लेना। प्रतिज्ञा करना।

उ०—सीह करि कहत हीं, एहो प्यारे रघुनाथ आवति रखाए वादो उनही के घर सो।—रघुनाथ (शब्द०)। वादे से निकल जाना = वचन से पलट जाना। कहकर न करना। कहे के खिलाफ करना। कहकर मुकर जाना। उ०—नवाब मादव ने शर्ई कसम खाई और कहा, अगर भवकी वादे से निकल जाऊँ तो शरीफ नहीं पाजी समझना, चमार समझना—पैर कु०, पृ० २५।

यौ०—वादाखिलाफ = वादा पूरा न करनेवाला। वादाखिलाफी = प्रतिज्ञा भंग। वचन पूरा न करना। वादागाह = सहेट स्थल। वह स्थान जहाँ मिलने की बात तै हुई हो। वादाफरामोश, वादाशिकन = वचन भंग करनेवाला। वादा पूरा न करनेवाला।

वादानुवाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] तर्क वितर्क। शास्त्रार्थ। बहस।

वादान्य—वि० [स०] उदार। वदान्य (को०)।

वादाम—सञ्ज्ञा पु० [म०] वादाम (को०)।

वादाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] सहस्रदण्ड नामक मछली।

वादाशिकनी [सञ्ज्ञा स्त्री०] [फा०] प्रतिज्ञा भंग। वादखिलाफी (को०)।

वादि^१—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ विद्वान्। बुद्धिमान। चतुर। उ०—लहो जीति वह वादिगन जिन वादीश्वर नाम,—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० १०२। २ वक्ता। बोलनेवाला (को०)।

वादि^२—अव्य०, [हिं० वादि]। दे० 'वादि'।

वादिक^१—वि० [स०] १ तात्त्विक। वाद करनेवाला।

वादिक^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वाजोगर। जादगर। ऐंद्रजालिक। २ वदी। भाँटे (को०)।

वादित^१ वि० [स०] १ बजाया हुआ। नादिन। २ जो बोलने के लिये प्रतिर कराया गया हो। उच्चरित कराया हुआ (को०)।

वादित^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाद्य संगीत (को०)।

वादितव्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ जो कहे या बजाए जाने योग्य हो। २ वाद्य संगीत (को०)।

वादित्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] बाद्य। वाजा। उ०—यै मिल बंठन जब सब रंग जात एक रंग। भिन्न भिन्न वादित्र यथा मिल बजत एक संग।—प्रेमघन० भा० १ पृ० ४। २ वाद्यसंगीत (को०)।

यौ०—वादित्रगण = वाद्य समूह। वाद्यश्रेणी।

वादित्रलगुड—सञ्ज्ञा पु० [स०] नगाडा, ढाल आदि बजाने की लकड़ी।

वादिर—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेर के समान छाटे फलवाला वृक्ष (को०)।

वादिराज—सञ्ज्ञा पु० [स० वादिराज] मजुषाव।

वादिश^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विद्वान् पुरुष। विद्याव्यसनी। २ सत। ऋषि। मुनि (को०)।

वादिश^२—वि० सत्यवक्ता। साधुवादो (को०)।

वादीन्द्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वादीन्द्र] मजुषोप।

वादी—सञ्ज्ञा पु० [स० वादिन्] १ वक्ता। बोलनेवाला। २ किसी वाद का पहले पहल प्रस्ताव करनेवाला जिसका प्रतिवादी की ओर से खडन होता है। ३ व्यवहार में किसी के प्रति कोई अभियोग चलानेवाला। मुकदमा लानेवाला। फरियादो। मुद्दई। ४. व्याख्याता। अध्यापक (का०)। ५. राग का मुख्य स्वर (का०)। ६. रागायनिक। कामिनागर (का०)। ७. गायक। ८. वाजा बजानेवाला (का०)। ९. एक बुद्ध (का०)।

वादी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ घाटी । २. नदीतट का मैदान । ३ वना जंगल [को०] ।

वादीला—वि० [स० वादिन् + हि० ला (प्रत्य०)] वाद करनेवाला । हठीला । हठवाला । उ०—वादीला बनवा रै, जितै कलाया जोर ।—वांकी० ग्र०, भा० १, पृ० २० ।

वादु—सञ्ज्ञा पु० [स० वाद्] वाद । सवाद । बातचीत । उ०—तेल तबोल का वादु ।—अकबरी०, पृ० १५० ।

वादूलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वादुगल—सञ्ज्ञा पु० [स०] ओष्ठ । ओष्ठ ।

वाद्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वजाना । २ वाजा । ३ बाजे की ध्वनि या स्वर (को०) ।

यौ० वाद्यकर, वाद्यधर = संगीतज्ञ । वाद्यनिर्घोष = वाद्य की ध्वनि । वाजे को आवाज वाद्यभाड

वाद्यक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वाजा बजानेवाला । २ वाद्य (को०) ।

वाद्यभाड—सञ्ज्ञा पु० [स० वाद्यभाण्ड] १ मुरज आदि बाजे । २ बाजो का समूह । वाद्ययंत्रों का ढेर (को०) ।

वाद्यमान—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो बजने या बोलने में प्रवृत्त किया जाय । २. वाद्य संगीत [को०] ।

वाद्य, वाधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाधा । रोक । प्रतिबध [को०] ।

वाधल—सञ्ज्ञा पु० [स०] तैत्तिरीय संहिता से संबंधित एक श्रौत सूत्र [को०] ।

वाधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पीडा । २ निषेध । रोक [को०] ।

वाधुवय, वाधूवय—सञ्ज्ञा पु० [स०] पारिग्रह । विवाह [को०] ।

वाधुल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक व्यक्ति का नाम । २ वह व्यक्ति जो सम्कार करे । मस्कार करनेवाला [को०] ।

वाधू—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ नाव का डाँड । २ नौका । नाव ।

वाधूल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम । इस गोत्र के लोग वाधूल कहलाते हैं ।

वाध्रीएस—सञ्ज्ञा पु० [स०] गैडा [को०] ।

वाध्युश्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रगि ।

वान^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बट । गोनटी । चटाई । २ पानी में लगनेवाला वायु का भोका । ३ गति । ४ सुरग । ५ सौरभ । सुगंध । ६ सुखा फल । ७ बाना । ८ बनों का समूह या घना जंगल (को०) । ९ बुनाई । बुनने की क्रिया (को०) । १० घर की दीवार का छेद (को०) । ११ चतुर व्यक्ति (को०) । १२ यमराज (को०) । १३ एक प्रकार का वसलोचन (को०) ।

वान^२—वि० खिला हुआ । प्रफुल्लित । ३ हवा से सूखा हुआ । शुष्क । ३ वन का । वन संबंधी । जंगली [को०] ।

वान^३—सञ्ज्ञा, स्त्री० [स० वाणी] वाणी । वचन । प्रतिज्ञा । उ०—निज्ज वान सुप्रमान । वान नीमान वर्षे सुर ।—पृ० रा० ।

वान^४—सञ्ज्ञा पु० [स० वाण] दे० 'वाण' । उ०—करे कुभ चूर । भरे वान भूर ।—पृ० रा०, २ । २८ ।

वानक—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्रह्मचर्य की अवस्था [को०] ।

वानदड—सञ्ज्ञा पु० [स० वानदण्ड] वह लकड़ी जिसमें बाना लपेटकर बुना जाता है ।

वानप्रस्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. महर्ष का पेड । मधूक वृक्ष । २ पलाश ।

३ प्राचीन भारतीय आर्यों के अनुसार मनुष्य के चार विभागों या आश्रमों में से तीसरा विभाग या आश्रम ।

विशेष—यह आश्रम गार्हस्थ्य के पीछे और संन्यास के पहले पड़ता है । शास्त्र के अनुसार पचास वर्ष के ऊपर हो जाने पर और गार्हस्थ्य आश्रम से चित्त हट जाने पर मनुष्य इस आश्रम का अधिकारी होगा है । इस आश्रम में प्रवेश करनेवाले को नगर, गाँव या वस्ती में अलग वन में रहना, जंगली फल खाना, और उन्हीं से पचमहायज्ञादि करना चाहिए शय्या, वाहन, वस्त्र, पलग आदि सब त्याग देना चाहिए । स्त्री को चाहे पुत्र के पाम छोड़े, चाहे अपने साथ वन में ले जाय । जब इस आश्रम में रहकर मनुष्य पूर्ण वैराग्यमपन्न हो जाय, तब उसे संन्यास लेना चाहिए ।

४ उदासी । वैरागी । साधु (को०) ।

वानप्रस्थी—वि० [स० वानप्रस्थिन्] वानप्रस्थ के योग्य । वानप्रस्थ से संबंधित । विरक्त । सर्वत्यागी । उ०—निर्मल वानप्रस्थी मनोवृत्ति में बरामदे में टहल रही थी ।—त्रो दुनिया, पृ० १०० ।

वानप्रस्थ्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] वानप्रस्थ की स्थिति या अस्थिति [को०] ।

वानर^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बदर । २ दोहे का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण में १० गुरु और २८ लघु होते हैं । यथा—जड चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार । सत हस गुण गहहि पै परिहरि वारि विकार । ३. एक प्रकार का गंधद्रव्य । राल । यक्षधूप (को०) ।

वानर^२—सञ्ज्ञा पु० [देश०] राठीड क्षत्रियों की एक शाखा । उ०—वनर नील जिसी बल वानर ।—रा० रू०, पृ० १४६ ।

वानरकेतन, वानरकेतु, वानरध्वज—सञ्ज्ञा पु० [स०] कपिध्वज । अर्जुन [को०] ।

वानरप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [स०] खिरनी का वृक्ष [को०] ।

वानराक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] जंगली बकरा [को०] ।

वानराधात—सञ्ज्ञा पु० [स०] लोभ वृक्ष [को०] ।

वानरापसद—सञ्ज्ञा पु० [स०] उपेक्षणीय । तुच्छ ।

वानरी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ केवाँच । कपिकच्छु । २ बदर की मादा । बंदरिया । मर्कटी ।

वानरी^२—वि० वानर का । वानर संबंधी [को०] ।

वानरद्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वानरेंद्र] १ हनुमान । २ सुग्रीव [को०] ।

वानल—सञ्ज्ञा पु० [स०] काली वनतुलसी ।

वानवासक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैश्य पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न मतान [को०] ।

वानवासिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद जिसमें नर्था और बारहवीं मात्राएँ लघु पड़ती हैं । जैसे,—'सीय लघन जेहि बिधि सुख लट्ही ।

वानस्पत्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह वृक्ष जिसमें पहले फूल लगकर पीछे फल लगते हैं । जैसे, आम, जामुन आदि । २ वनस्पति का समूह ।

वानस्पत्य^१—वि० १ वृक्ष सवधी । वृक्ष से प्राप्त होनेवाला । वनस्पति
निमित्त, जैसे सोम । २ वृक्ष के नीचे रहनेवाला (को०) ।
वाना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ बटेर पत्नी । २ सूखा फल (को०) ।
वानायु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ भारत के पश्चिमोत्तर स्थित एक देश का
प्राचीन नाम । २ हिरन (को०) ।
वानायुज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वानायु देश का घोड़ा ।
वानिक—वि० [स०] वनवासी (को०) ।
वानिनि^७—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वणिज (वणिक) प्रा० वनिग्र, वनी]
वनियाइन । वणिक का पदो । उ०—
वानिनि वीथी माँडि सए मइस हि नागरि ।—कीर्ति०, पृ० ३२ ।
वानीय^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कैवर्त मुस्तक । केवटी मोथा । कुट । गोन ।
वानीय^२—वि० बिनने योग्य (को०) ।
वानीर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बेंत । उ० जिनके तीर वानीर के भिरे
मदकल कूजित विहगमो से शोभित हैं ।—श्यामा०, पृ० ४० ।
२ पाकड़ का पेड़ । पक्कड़ ।
वानीरक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] मूँज ।
वानीरज—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ मूँज नाम की घास । २ कुण्ड नाम का
वृक्ष (को०) ।
वानेत^७—सञ्ज्ञा पुं० [हि० वान + एत (प्रत्य०)] ३० 'वानेत' । उ०—
जित्यो वानेत उदल चढेत वैम मरेत स्वर्ग गयी ।—प० राघो,
पृ० १४६ ।
वानेय^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गोन नाम का वृक्ष जो पानी में हंता है ।
कैवर्त मुस्तक ।
वानेय^२—वि० १ जलमवधी । जलीय । २ वनसवधी । वन का (को०) ।
वान्य—वि० [स०] दे० 'वानेय' ।
वान्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ वनममूह । २ मृतवत्सा गी (को०) ।
वाप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ बोना । वपन । वयन । २ मुडन । ३ क्षेत्र ।
खेत । ४ बुनना । ५ वप्ता । बोनेवाला (को०) । ६ बीया ।
बीज (को०) ।
विशेष—हिंदी के पितावाचकशब्द 'बाप' का भा यह पूर्वका तीन
रूप है ।
वापक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बीज बोनेवाला ।
वापन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बीज बोना । २ क्षौर । मुडन (को०) ।
वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ । फिरा हुआ ।
मुहा०—वापम आना = किसी स्थान पर जाकर वहाँ से फिर आ
जाना । लौट आना । वापस करना = (१) किसी आए हुए मनुष्य
को फिर वही भोजना, जहाँ से वह आया हो । लौटाना ।
(२) किसी वस्तु को मोल लेकर फिर दूकानदार को दे देना और
उसमें दाम ले लेना । जैसे, यह छाता अच्छा नहीं है, वापस
कर दो । (३) दे० 'वापम लेना' । (४) किसी में लो हुई वस्तु को
फिर दे देना । वापस जाना = फिर वही जाना, जहाँ से आया
हो । लौट जाना । वापस लेना = दी हुई या बेचा हुई वस्तु को
पुन देने या बेचनेवाले द्वारा ले लेना । वापस होना = (१) लौट
जाना । (२) किसी मोल ली हुई वस्तु का फिर दूकानदार को
उसमें दाम लेकर दे दिया जाना । फेरा जाना । जैसे,—अब यह
छाता वापस नहीं हो सकता । (३) दी हुई वस्तु का फिर मिल
जाना या ली हुई वस्तु का फिर दे दिया जाना ।

वापसी—वि० [फा०] अतिम । आखिरी । जैसे, वापसी साँस (को०) ।
वापसी^१—वि० [फा० वापम] लौटा हुआ या फेरा हुआ । जैसे,—
वापसी डारू ।
वापसी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ लौटने की क्रिया या भाव । प्रत्यावर्तन ।
जैसे,—वापसी के समय लेने जाना । २ किसी दी हुई वस्तु
को फिर लेने या ली हुई वस्तु को फिर देने का काम या
भाव ।
वापार^७—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यापार] दे० 'व्यापार' । उ०—मुख दुख
श्रर पुन पापु भला बुरा वापार ।—प्राण०, पृ० २११ ।
वापि—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० वापि, वापी] दे० 'वापी' । उ०—कियाँ पेट बन
किधो, वापि किधो सागर है । जेतो जल परै, तेतो सकल समातु
है ।—सुंदर ग्र०, भा० १, पृ० १२१ ।
वापिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] एक प्रकार का बड़ा चौड़ा कूपाँ या
जलाशय । वापी । वावली ।
वापित^१—वि० [स०] १ बोया हुआ । २ मुडित । मूँडा हुआ ।
वापित^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का घान्य । बोवारी घान (को०) ।
वापी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छोटा जलाशय । वावली ।
वापी—वि० [म० वापिन्] बोनेवाला (को०) ।
वापीह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पपीहा । चातक (को०) ।
वाप्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ कुट । २ बोवारी घान । ३. वावली का
पानी ।
वावस्तगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] लगाव । मवध (को०) ।
वावस्ता—वि० [फा० वावस्तह] १ बँधा हुआ । सवद्ध । २. सलग्न ।
३ संवधी । आत्मीय (को०) ।
वाभन^७—सञ्ज्ञा पुं० [म० ब्राह्मण] दे० 'ब्राह्मण' । उ०—वाभन को
जन्म जनेऊ मेलि जानि बूझ, जीभ ही बिगारिखे को याच्यो
जन जन मे ।—चक्रवर्ती०, पृ० ११५ ।
वाम^१—वि० [स०] १ बायाँ दक्षिण या दाहिने का उलटा । २
प्रतिकूल । विरुद्ध । खिलाफ । अहिन में तत्पर । उ०—त्रिवि
वाम को करनी कठिन जेइ मातु कीही वामरी ।—तुलसी
(शब्द०) । ३ टेढ़ा । कुटिन । ४ खोटा । दुष्ट । नीच । ५ जो
अच्छा न हो । बुरा । ६ बाईं ओर स्थित या विद्यमान (को०) ।
७ सुंदर । प्रिय । लावण्यमय । जैसे, वामलोचना, वामोष्ठ
(को०) । ८ अल्प । लघु (को०) । ९ क्रूर । कठोर (को०) ।
वाम^२—सञ्ज्ञा पुं० १ कामदेव । २ एक रुद्र का नाम । वामदेव । शिव ।
३ वरुण । ४ कुच । स्नान । ५ धन । ६ ऋषीक के
एक पुत्र का नाम । ७ वृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
८ चंद्रमा के रथ के एक घोड़े का नाम । ९. २४ अक्षरों
का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण
और एक यणण होना है । इसे मजरी, करद और माववी
भी कहते हैं । यह एक प्रकार का सर्वथा ही है । जैसे,—जु
लोक यथामति वेद पढ़ैं सह आगम औ दम आठ सयाने ।
लहैं भलि वाम शरु धनधाम तु काह भयो विनु रामहि
जाने ।—छंद०, पृ० २४५ ।

१०. निषिद्ध आचरण वा कार्य । कशत्रार । वामाचार [को०] ।
 ११. बायाँ पार्श्व या हाथ (को०) । १२. प्राणी । जंतु (को०) ।
 १३. साँप (को०) । १४. वमन । मतली (को०) । १५. सुदरतम वा
 अभीप्सित वस्तु । प्रिय वस्तु या व्यक्ति (को०) । १६. दुर्भाग्य ।
 अभाग्य । सकट (को०) ।

वामपुं^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वामा] दे० 'वामा' । उ०—नवल त्रिभग
 कदम तर ठाढो, मोहत सब व्रज वाम —गीत (शब्द०) ।

वाम^२—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १ ऋण । कर्ज । २ रग । वर्ण (को०) ।

वामक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अंगभगी का एक भेद । २ बौद्ध ग्रंथों के
 अनुसार एक चक्रवर्ती । ३ एक संकर जाति (को०) ।

वामक^१—१ बायाँ । २ विरुद्ध । विपरीत (को०) ।

वामकक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम जिनके गोत्र
 के लोग वामकक्षायन कहे जाते थे ।

वामकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी जिसकी पूजा प्राग्. जादूगर आदि
 करते हैं ।

वामत कि० वि० [स० वामतस्] बाई ओर । बाई तरफ (को०) ।

वामता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] प्रतिकूलता । विपरीतता । उ०—बुद्धि से
 तो क्षुद्र मानव भी चलाता काम अपने । वामता से हीन विधि
 की शक्ति क्या होती प्रमाणित ।—इत्यलम्, पृ० ११४ ।

वामहृक्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वामहृन्] सुदर नेत्रोंवाली औरत । स्त्री
 महिला ।

वामदेव^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. शिव महादेव । २. गौतम गोत्रीय
 एक वैदिक ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मंडल के अविकाश सूक्तों
 के द्रष्टा थे । ३. दशरथ के एक मंत्री का नाम ।

वामदेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ सावित्री ।

वामदेव्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ एक साम का नाम । २ एक ऋषि
 का नाम । ३ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक पर्वत
 का नाम ।

वामदेव्य^२—वि० वामदेव ऋषि से उत्पन्न (को०) ।

वामन^१—वि० [स०] १ बीना । छोटे डोल का । २. ह्रस्व । खर्व ।
 ३. विनत । नम्र (को०) । ४. पूज्य । अभिवाद्य (को०) ।
 ५. दुष्ट । नीच । ओछा (को०) ।

वामन^१—सञ्ज्ञा पुं० १ विष्णु । २ शिव । ३ एक दिग्गज का
 नाम । ४. एक प्रकार का घोड़ा, जो डीलडौल में छोटा होता
 है । ५. दनु के एक पुत्र का नाम । ६. एक नाग का नाम ।
 ७. गरुडवशी एक पक्षी का नाम । ८. क्रीच द्वीप के एक
 पर्वत का नाम । ९. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो
 बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था । १०.
 अठारह पुराणों में से एक । ११. नीले रंग का चकरा । उ०—
 नीले रंग के छाग को वामन कहते हैं ।—वृहत्सं., पृ० ३०८ ।
 १२. सस्कृत साहित्य में रीति संप्रदाय की प्रतिष्ठा करनेवाले
 एक आचार्य । ११ बीना या तिगना व्यक्ति (को०) । १२
 अकोट या अकेल का युद्ध (को०) । १३. एक मास (को०) ।

हि० श० ६-११

१४ पाणिनि के सूत्र पर 'काशिका वृत्ति' नामक भाष्य के
 प्रणेता (को०) ।

वामनक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १. क्रीच द्वीप का एक पर्वत । २. छोटे कद
 का आदमी । ३. तिगनावन । बीना (को०) ।

वामनद्वादशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक पर्व तिथि जो भद्र शुक्ल १२
 को पड़ती है । इस दिन व्रत करके विष्णु भगवान् के वामना-
 वतार की पूजा की जाती है ।

वामनपुराण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] अठारह पुराणों में से एक पुराण ।

वामनयना सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] सुदर नेत्रोंवाली स्त्री (को०) ।

वामना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम ।

वामनिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ स्कंद की अनुचरी एक माता या
 मातृका का नाम । २ बीनी स्त्री ।

वामनी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ बीन आकार की स्त्री । २ घाड़ी । ३.
 एक प्रकार का नारी राग जो योनि में हाता है । वामिनी । ४.
 एक प्रकार की स्त्री (को०) ।

वामनी^२—वि० वाम अर्थात् घन लानेवाली ।

वामनीकृत—वि० [म०] छोटा किया हुआ । नम्र क्रिया हुआ । झुकाया
 हुआ (को०) ।

वामनेत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दीर्घ ईकार (को०) ।

वामपथ—सञ्ज्ञा पुं० [स० वाम + पथ] दे० 'वाममार्ग' । उ०—जन बल-
 वर्धन के हेतु वामपथ का चालन ।—अपरा पृ० २१२ ।

वामभ्रू—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] मुभ्रु । मुंदर भीहोवाली स्त्री (को०) ।

वाममार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वेदविहित दक्षिण मार्ग में भिन्न
 तान्त्रिक मत ।

विशेष—वाम मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, व्यभिचार आदि
 निषिद्ध बातों का विधान रहता है । तान्त्रिक मत की दक्षिण
 मार्ग शाखा भी है जिसमें दक्षिणकाली, शिव, विष्णु आदि
 की उपासना का विशिष्ट विधान है ।

वामरथ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिनके गोत्र
 वाले वामरथ्य कहलाते थे ।

वामलूर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दीमक का भीटा । वल्मीक । बाँबी ।

वामलोचना—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] मुंदरी स्त्री ।

वामागिनी, वामागी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वामाङ्गिनी, वामाङ्गी] पत्नी ।
 भार्या (को०) ।

वामा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ स्त्री । २ दुर्गा । ३ लक्ष्मी (को०) । ४.
 सस्वती (को०) । ५. मनोहारिणी स्त्री । अंबुविलामयती मुंदरी
 रमणी (को०) । ६. दम अक्षरों के एक वृत्त का नाम जिसके
 प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अत में एक गुरु
 होता है । यथा—तू यो भग वामा तैं सरना । टेढ़े धनु ते ज्यो
 तीर चना । ये हैं दुख नाना को जननी । ऐसी हम गाया ते
 अकनी ।—छंद०., पृ० १५४ ।

वामाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. सुंदर स्त्री । २. दीर्घ ईकार । वामनेत्र ।

वामागम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वामाचार' (को०) ।

वामाचार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] तान्त्रिक मत का एक भेद जिसमें पंच-मकार अर्थात् मय, मम, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की पूजा की जाती है। इस मत को माननेवाले स्वमतावलम्बी को वीर, साधक आदि और विरोधी को कटक कहते हैं।

वामाचारी—सञ्ज्ञा पु० [सं० वामाचारिन्] वामागम को माननेवाला वामाचार मत का अनुगामी [को०]।

वामापीडन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पीलू का पेड़।

वामारम्भ—वि० [सं० वामारम्भ] जो भुके नहीं। स्वाभिमानी। अदमनीय [को०]।

वामावर्त—वि० [सं०] १ दक्षिणावर्त का उल्टा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु (देवप्रतिमा आदि) की दाईं ओर से आरम्भ की जाय। जैसे,—वामावर्त परिक्रम। २ (वह चक्कर) जो दाईं ओर से चला हो। ३ जिसमें दाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो। जैसे,—वामावर्त शंख।

विशेष—शंख दो प्रकार के होते हैं—एक वामावर्त, दूसरा दक्षिणावर्त। दक्षिणावर्त शंख अत्यंत शुभ और दुष्प्राप्य कहा जाता है।

वामि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नारी [को०]।

वामिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] चड़िका।

वामिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का योनिगोग जिसमें गर्भाशय से छद्म सात दिन तक रज का स्राव होता रहता है। इसमें कभी पीडा होती है, कभी नहीं होती।

वामिल—वि० [सं०] १ सुंदर। मनोहर। २ अहंकारी। घमडी। ३ धूर्त। चालाक। कपटी [को०]।

वामी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ शृगाली। गीदडी। २ मादा हाथी। हथिनी [को०]। ३ घोड़ा। ४ गदही।

वामी^२—वि० [सं० वामिन्] १. वामाचार को माननेवाला। २ वमन करनेवाला [को०]।

वामेक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मनोहर नेत्रवाली स्त्री [को०]।

वामेतर—वि० [सं०] दाहिना [को०]।

वामोरु, वामोरू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर उरवाली स्त्री। सुंदरी स्त्री।

वाम्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक स्त्री जो गोत्रकार थी। इसके गोत्रवाले वाम्नेय कहलाते थे।

वाम्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वामदेव ऋषि के छोड़े का नाम। २ वामता। कुटिलता। दुष्टता। विपरीतता [को०]।

वाम्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ एक साम का नाम। २ एक ऋषि का नाम [को०]।

वाय^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वुनना या सीना। २ वुनने या सीने का साधन। ३ तागा। डोरा [को०]। ४ पच्ची [को०]। ५ नेता नायक [को०]।

वाय^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायु] दे० 'वायु'।—उ० वाय सो वाय मलि मलि कर जानि। पानि म घ्रत कस मथि आन।—रामानंद०, पृ० १४।

वाय^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वापी, हिं० वाय] वावली। वापी।

वायक^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वह जो वुनता हो। वुननेवाला। उ०—पत्र रघ्न तैं छनि छनि आवत, चाँदनि रस सिंगार की वायक।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ४००। २ ततुवाय। जुलाहा। ३. राशि। समूह। ढेर [को०]।

वायक^२—सञ्ज्ञा पु० [सं० वाद, प्रा० वाय+क (प्रत्य०)] उक्ति। कथन। वचन। वाक्य। उ०—बाँका रा वायक सुणै, कायरड़ा किए काज।—बाँकी ग्र०, भा० १, पृ० ८।

वायदड—सञ्ज्ञा पु० [सं० वायदण्ड] जुलाहो की ढरकी।

वायन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वह मिठाई या पकवान जो देवपूजा या विवाहादि के लिये बनाया जाय। २ एक गघद्रव्य [को०]।

विशेष—दे० 'वायन'।

वायनक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वायन' [को०]।

वायनरज्जु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जुलाहो के बरधे की रै।

वायर^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० बयार] वायु। बयार। उ०—सुराँ नूर दरस्सिया, तोले सेल करग्ग। वायर ज्यों लागा विमुह कायर आँसू मग्ग।—रा० रू०, पृ० २०३।

वायव—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वायवी] १ वायु सवधी या वायु से प्राप्त। २ आध्यात्मिक। ३ मन कल्पित। हवाई। ४ अमूर्त। सूक्ष्म। उ०—तुम्हारी अलौकिक शक्ति, वायवी प्रतिभा, एवं मायावी आकषण के प्रभाव से यह कार्य आषक सुगमता से संपन्न हो सकेगा, इसी लिये मैंने तुम्हारा आवाहन किया है।—ज्योत्स्ना, पृ० ५०।

वायवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायवी, वायवीय] वायु की दिशा। उत्तरपश्चिम दिशा [को०]।

वायवीय—वि० [सं०] वायु सवधी। २ सूक्ष्म। उ०—मूर्तिमती कला का वायवीय आकार उसके हृदय के भीतर स्पर्श करके मधुरता से भर रहा था।

यौ०—वायवीय पुराण = वायुपुराण।

वायव्य^१—वि० [सं०] १ वायु सवधी। २ वायुघटित। वायु से बना हुआ। ३ जिसका देवता वायु हो।

वायव्य^२—सञ्ज्ञा पु० १ वह कोण या दिशा जिसका अधिपति वायु है। उत्तरपश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २ वायु पुराण। ३ एक अस्त्र का नाम। ४ स्वाती नक्षत्र [को०]।

वायव्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०]।

वायस—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ अगुरु। अगर का पेड़। २ कौश्या। ३ तारपीन [को०]। ४ वह मकान जिसका दरवाजा उत्तरपूर्व की ओर हो [को०]। ५ कौश्या का भुंज [को०]। ६ पच्ची। बड़ा पच्ची [को०]।

वायसजघा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायसजङ्घा] काकजघा नाम का पौधा विशेष दे० 'काकजघा'। [को०]।

वायसततु—सञ्ज्ञा पु० [सं० वायसतन्तु] १ हनु के दोनों जोड़। २ काकतुडी। कौआठोठी।

वायसतुड—सञ्ज्ञा पु० [सं० वायसतुण्ड] कौआठोठी [को०]।

वायसपीलु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक वृक्ष। काकपीलु [को०]।

वायसातक—सञ्ज्ञा पु० [सं० वायसान्तक] उलूक। उल्लू।

वायुसादनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाज्योतिष्मती लता । २. कौआठोठी ।

वायुसाराति, वायुसारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उल्लू । उल्लूक [को०] ।

वायुसाह्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का भक्ष्य शाक ।

वायुसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी मकोय जिममे गुच्छो मे गोल मिर्च के समान लाल फल लगते हैं । काकमाची । २ महाज्योतिष्मती । ३ काकतुंडी । कौवाठोठी । ४ सफेद धुंधली । ५ काकजघा । मासी । ६ महाकरज । बडा कजा । ७ कौवे की मादा (को०) ।

वायुसेक्षु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कांस नाम का तृण ।

वायुसोलिका, वायुसोली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली । मालकगनी । २ महा ज्योतिष्मती लता ।

वायार—सञ्ज्ञा पुं० [देशी] ठंड भरी हवा । जाडे की हवा ।—देशी०, पुं० २६५ ।

वायु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] हवा । वात ।

विशेष—वैशेषिक दर्शन वायु को द्रव्यो मे मानता है और उसे रूपरहित, स्पर्शवान् तथा नित्य कहता है । न्याय दर्शन मे वायु पचभूतो मे है और इसका गुण स्पर्श कहा गया है । वायु से ही स्पर्शद्रव्य की उत्पत्ति मानो गई है । वैशेषिक दर्शन स्पश के अतिरिक्त सख्या, परिमाण, पृथक्त्व, मयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और वेग भी वायु के गुण मानता है । साध्य मे वायु की उत्पत्ति सशं तन्मात्र से मानी गई है । उरनिपदो के अनुसार वेदाती भी वायु को उत्पत्ति आकाश से मानते हैं ।

२. वायु देवता । पवन देवता (को०) । ३. प्राणवायु । जीवनवायु भी पांच प्रकार कहा का है—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान । ४ सांस । श्वास (को०) । ५ 'य' अक्षर (को०) । ६. एक वसु (को०) । ८. एक दैत्य का नाम, (को०) । ९ गधवों के एक राजा का नाम (को०) ।

वायुकेतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धूलि [को०] ।

वायुकोण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुगड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुगण्ड] प्रजोर्ण । अफरा [को०] ।

वायुगति—वि० [सं०] तीव्र गति । अत्यंत तीव्र चाल [को०] ।

वायुगीत—वि० [सं०] सर्वविदित । प्रसिद्ध [को०] ।

वायुगुल्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वातचक्र । बगोला । बवंडर । २ पेट का एक रोग । वायुगोला ।

विशेष—इस रोग मे पेट के अंदर वायु का एक गोला सा बंध जाता है, जो घटता बढ़ता और सारे पेट मे फिरता रहता है । कभी कभी यह पीडा भी उत्पन्न करता है । इसमे प्रायः मल मूत्र का अवरोध भी हो जाता है और गला सूखा रहता है । हृदय, बगल और पसली मे कभी कभी बड़ा दर्द होता है । खाली पेट मे इसका जोर अधिक रहता है और भरे पेट मे कम । कड़ुवे, कसैले पदार्थों के खाने से यह रोग बढ़ता है ।

३. जल का आवर्त । पानी की भँवर (को०) ।

वायुगोचर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुग्रन्थि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायुग्रन्थि] १. वायुगुल्म । २. बवंडर [को०] ।

वायुग्रस्त—वि० [सं०] वात रोग से पीडित [को०] ।

वायुजात, वायुतनय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वायुपुत्र' [को०] ।

वायुदार, वायुदार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मेघ । बादल ।

वायुदिश—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०] ।

वायुदेव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्वाति नक्षत्र जिसके देवता वायु है [को०] ।

वायुनिधन—वि० [सं०] वातप्रकोप से पीडित । उन्मत्ता [को०] ।

वायुपचक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुपचक] शरीरस्य पंचवायु [को०] ।

वायुपुत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान । २ भीम ।

वायुपुराण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अट्टारह पुराणो मे से एक पुराण ।

वायुकल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ इद्रवनुष । २ ओला (को०) ।

वायुभक्ष, वायुभक्ष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प । साँप । २. वह तपस्वी जो केवल वायु पीकर रहे ।

वायुभुक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुभुज] दे० 'वायुभक्ष' [को०] ।

वायुमंडल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुमण्डल] १ आकाश, जिसमे वायु प्रवाहित होती है । २ बवंडर (को०) ।

वायुमरुत्तिलिपि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक लिपि का नाम ।

वायुमार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आकाश ।

वायुयान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हवाई जहाज । वायु मे उडनेवाला यान । विमान । उ०—रेडियो, तार, श्री फोन वायर, जल, वायुयान । मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान यान ।—ग्राम्फा, पुं० ८८ ।

वायुयानवेधी तोप—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वायुयानवेधी + तु० तोप] विमान विव्वसक तोप । (अ० एंटी-एयरक्राफ्ट गन) । उ०—जमीन से वायुयानवेधी तोपें आक्रमणकारी वायुयानो पर गोले चला रही थी ।—'आज' ।

वायुर—वि० [सं०] १. वायुयुक्त । हवादार । २ तूफानी । अवड से भरा हुआ [को०] ।

वायुरोषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रात ।

वायुलोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम । २. आकाश ।

वायुवर्त्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुवर्त्मन्] आकाश [को०] ।

वायुवाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ धूम । धुआँ । २ भाप [को०] ।

वायुवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ धूम । धुआँ । ३ शिव (को०) । ४ विष्णु । (को०) ।

वायुवाहिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की नस । शिरा [को०] ।

वायुवेग—वि० [सं०] वायु के समान तीव्र गतिवाला [को०] ।

वायुसख, वायुसखा, वायुसखि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वायुस्कव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वायुस्कन्व] वायु का क्षेत्र [को०] ।

वायुहन्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम जो मकण ऋषि के पुत्र थे ।

विशेष—कथा है कि मकर ऋषि एक बार सरस्वती में स्नान कर रहे थे। वहाँ उनको एक नग्न स्त्री स्नान करती हुई दिखाई दी। उसे देखकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। उसे च'होने एक घड़े में रखा, वह सात भागो में विभक्त हो गया और उनसे वायुवेग, वायुवल, वायुहन्, वायुमडल, वायुजाल, वायुरेता और वायुचक्र नामक सात पुत्र उत्पन्न हुए।

वायौॐ†—वि० [स० वायुप्रस्त] वाक्ला। उ०—विचित्र हुवो लडता रस वायो।—रा० ६०, पृ० ५१।

वाय्यास्पद—सञ्ज्ञा पु० [स०] आकाश। वातावरण [को०]।

वारक—सञ्ज्ञा पु० [स० वारङ्क] पत्नी।

वारग—सञ्ज्ञा पु० [स० वारङ्ग] १ तलवार की मूठ। २ अंकुश के आकार का एक अस्त्र जिससे चिकित्सक अस्थिविनष्ट शल्प निकालते थे। (सुश्रुत)।

वारट—सञ्ज्ञा पु० [अ०] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को वह काम करने का अधिकार प्राप्त हो जाय, जिसे वह अन्यथा करने में असमर्थ हो। यह कई प्रकार का होता है, जैसे,—वारट गिरफ्तारी, वारट तलाशी, वारट रिहाई इत्यादि।

वारट गिरफ्तारी—सञ्ज्ञा पु० [अ० वारट+फा० गिरफ्तारी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी पुरुष का पकड़कर अदालत में हाजिर करे।

वारट तलाशी—सञ्ज्ञा पु० [अ० वारट+फा० तलाशी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी स्थान में जाकर वहाँ की तलाशी ले।

घारट रिहाई—सञ्ज्ञा पु० [अ० वारट+फा० रिहाई] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी सरकारी कर्मचारी को यह आज्ञा और अधिकार मिले कि वह किसी पुरुष को, जो जेल, हवालात या गिरफ्तारी में हो, छोड़ दे, या किसी माल या जायदाद को, जो कुर्फ हो या किसी की सपुर्दगी में हो, मालिक को लौटा दे।

वारवार—अव्य० [वारम् वारम्] दे० 'वारवार'। उ०—रिपुओं की पुकार भी मानो निष्फल जाती वारवार।—साकेत, पृ० ३६४।

वार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ रक्षक। त्राता। प्रतिपालक (को०)।

वार^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ द्वार। दरवाजा। उ०—सदेसे ही घर भरघउ कई अगणि कई वार।—ढोला०, दू० २००। २. अवरोध। रोक। रूकावट। ३. ढाँकनेवाली वस्तु। आवरण। ४ कोई नियत काल। अवसर। दफा। मरतवा। जैसे—वार-वार। ५ क्षण। ६ सप्ताह का दिन। जैसे—आज कौन वार है। ७ कुंज वृक्ष। ८ पानपात्र। मद्य का प्याला। ९ वाण। तीर। १० नदी या समुद्र का किनारा।—उ० जोय प्रवल अणपार जल वार रह्या भड आन। निडर उलघण वार-निब, हुवो तयार हनुमान।—रघु० ६०, पृ० १६३। ११. शिव

का नाम। १२ जलराशि। जलोघ (को०)। १३ पूँछ। दुम (को०)। १४. दाँव। वारी। जैसे—अपना अपना वार है। उ०—देम देस के भूपति आवैं। द्वारे भीर वार नहि पावैं।—हि० क० ३०, पृ० १८८।

मुहा०—वार मिलना=फुरसत मिलना। वार सरना=अवसर या मौका मिलना। सभव हो सकना। पार पडना। उ०—सूत्रा एक सदेसडउ, वार मरेसी तुभम्। प्रीतम वानइ जाय नई, मुई मुणावे मुभम्।—ढोला०, दू० ३६८।

वार^२—सञ्ज्ञा पु० [स० वार (= दाँव, वारी)] या फा०] चोट। आघात। आक्रमण। हमला। उ०—वार नाम वरौ के ऊपर प्रहार चाहै हैं किवा वार है बाल ताको चाहै हैं, अर्थात् उत्तम बालक वा वारागना। × × × अथवा वार मूठ को न चाहै।—दीन० १०, पृ० १७८।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वार खाली जाना = (१) प्रहार का ठीक स्थान पर न पडना। चलाया हुआ अस्त्र न लगना। (२) युक्ति सफल न होना। चली हुई चाल या तदवीर का कुछ नतीजा न होना।

वार^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वार, हि० वेग] देर। विलंब। उ०—चल्या ठकुरात्या न लावीय वार, भोज तणाँ मिलिया असवार।—बी० रासो पृ० १६।

वार^४—सञ्ज्ञा पु० [हि० उवार] वचाना। रक्षा करना। उ०—गया है हृदय हिल, लो थके को वार।—आराधना, पृ० ४६।

वार^५—सञ्ज्ञा पु० [स० बाल] [स्त्री० वारा] १ बालक। बच्चा। शिशु। २ अज्ञ या मूर्ख व्यक्ति। उ०—(क) किवा वार है बाल ताको चाहै हैं अर्थात् उत्तम बालक।—दीन०। १०, पृ० १७८। (ख) तीनों अर्थ भए तिवारा। ता के रूप भए अधिकारा।—रुबीर सा०, पृ० १६।

वार^६—सञ्ज्ञा पु० [अ०] युद्ध। ममर। जग। जैसे,—जर्मन वार।

यौ०—वारफड = युद्ध के लिये आर्थिक मदद या चढ़ा आदि का संग्रह।

वारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. निषेध करनेवाला। वह जो वारण करे। प्रतिबंधक। २ घोड़े का कदम। ३ घोड़ा। ४. एक प्रकार का विशेष घोड़ा (को०)। ५ वह स्थान जहाँ पीड़ा हो। कष्ट-स्थान। ६ बाधा का स्थान। ७ एक सुगंधित तृण।

वारकन्यका, वारकन्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रंडी।

वारकी—सञ्ज्ञा पु० [स० वारकिन्] १. प्रतिवादी। शत्रु। २ समुद्र। ३. पत्ते खाकर रहनेवाला तपस्वी। पणाली यति। ४ शुभ लक्षणों से युक्त घोड़ा (को०)।

वारकीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ साला। २ द्वारपाल। ३ बाडवाग्नि। ४ जूँ। ५ कधी। ६ लड़ाई का घोड़ा। चित्राश्व।

वारट—सञ्ज्ञा पु० [स०] खेत या खेतों का सिलसिला [को०]।

वारटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हसिना [को०]।

वारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. किसी बात को न करने का संकेत या आज्ञा। निषेध। मनाही। उ०—हठपूर्वक मुझको भरत करे यदि वारण।—साकेत, पृ० २२०।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

२. रोक । रुकावट । बाधा । ३ कवच । वकतर । ४. हाथी ।
६ हरताल । ७ काला सीसम । ८ पारिभद्र । ९. सफेद
कोरैया का फूल । १० छप्पय छद का एक भेद जिसमें ४१ गुरु,
७० लघु कुल १११ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं, अथवा
४१ गुरु, ६६ लघु, कुल १०७ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं ।
११ द्वार । कपाट (को०) । १२ प्रतिरक्षा । सरक्षा । प्ररक्षा
(को०) । १३ हाथी की सूँड । १४. मेहराब या तोरण की एक
प्रकार की सजावट या नक्काशी (को०) ।

वारणकणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गजपिप्पली ।

वारणकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सूँड (को०) ।

वारणकृच्छ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत जिसमें एक
महीने तक पानी में जो का सत्तू धोलकर पीना पड़ता है ।

वारणकेसर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'नागकेसर' ।

वारणबुषा, वारणबुसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कदली । केला ।

वारणवल्लभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] केला । कदली (को०) ।

वारणशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] हस्तिशाला (को०) ।

वारणसाह्वय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हस्तिनापुर का एक नाम (को०) ।

वारणसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाराणसी' (को०) ।

वारणहस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तंत्रवाद्य (को०) ।

वारणनन—सञ्ज्ञा पुं० [पुं०] गजानन । गणेश (को०) ।

वारणावत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद या
नगर जो गंगा के किनारे था ।

विशेष—यही पर दुर्योधन ने पांडवों को जलाने के लिये लाक्षाग्रह
बनवाया था । कुछ लोग इसे करनाल के आसपास मानते हैं
और कुछ लोग इलाहाबाद जिले के हाँडया नामक स्थान
के पास ।

वारणीय—वि० [सं०] निषेध योग्य । प्रतिषेध ।

वारता^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वार्ता] बातचीत । कथोपकथन । उ०—
सदा ज्ञान वैराग्य योग की होत वारता । ईस भक्ति मैं निरत,
सवन के हिय उदारता ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४ ।

वारतिय^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वारत्ती] वेश्या । उ०—ताके रही
वारतिय दोई । रुपवती रभा छवि छोई ।—रघुराज (शब्द०) ।

वारत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वारत्रा] चर्म रज्जु । चमड़े का बना
तसमा (को०) ।

वारत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक पक्षी । वारटा (को०) ।

वारद^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिद] वादल । उ०—सोहति धोती सेत
मे कनक वरन तन वाल । सारद वारद बीजुरी भा रद कीजत
लाल ।—विहारी (शब्द०) ।

वारदात—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोई भीषण या शोचनीय कांड ।
दुर्घटना । २ मारपीट । मारकाट । दगा फसाद ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

३. घटना सबकी समाचार । हाल (को०) ।

वारघ^४—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिघ] दे० 'वारिघ' । उ०—वारघ
मुनि पीघो, वरक विष, जिके प्रकट दरसे जग जाण ।—रघु०
रू०, पृ० २६८ ।

वारधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक जनपद का नाम । इसे
वाटधान भी कहते हैं ।

वारन^५—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर । बलि । उ०—नित
हित सो पालत रहै रूप भूप नंदलाल । छत्रि पनिवारन मैं मनी
हग पर वारन हाल ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वारन^६—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वदन] वदनवार । वदनमाला । उ०—घर
घर घुजा पताका बानी । तोरन वारन वापर ठानी ।—सूर
(शब्द०) ।

वारना^७—क्रि० सं० [हिं० उतारना] निछावर करना । उत्सर्ग करना ।
उ०—(क) चितै रही मुख इदु मनोहर ग छवि पर वारति
तन को । कछि काछिनी भेप नटवर को बीच मिली मुरली, घर
को ।—सूर (शब्द०) । (ख) कौसिला की कोषि पर तोप तन वारिए
री । राम दसरथ की बलाय लीजै आलि रो ।—तुलसी (शब्द०)
(ग) तो पर वारौ उरवसी मुन राधिका सुजान । तू मोहन के
उर बसी हूँ उरवसी समान ।—विहारी (शब्द०) ।

वारना^८—सञ्ज्ञा पुं० निछावर । उत्सर्ग । उ०—अति कोमल कर चरन
सरोरुह, अधर दसन नासा सोहे री । लटकन सीस कठ मणि
भ्राजत कोटि वारने गै री ।—सूर (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

मुहा०—वारने जाना = निछावर होना । बलि जाना । उ०—
बाल विभूषन, वसन मनोहर अगनि विरचि बर्नहौं । सोभा-
निरखि निछावरि करि उर लाइ वारन जंही ।—तुलसी
(शब्द०) ।

वारनारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] वेश्या ।

वारनिश—सञ्ज्ञा स्त्री० [अं० वारिनिश] एक प्रकार का यौगिक तरल
पदार्थ जो लकाड्यों आदि पर उनमें चमक लाने के लिये लगाया
जाता है ।

वारपार^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० अवार+पार] १ (नदी आदि का) यह
किनारा और वह किनारा । पूरा विस्तार । जैसे,—नदी इतन,
बढ़ी है कि वारपार नहीं सूझता । २ यह छोर और वह छोर ।
अंत । उ०—वारपार नहिं सूझहिं लाखन उमरा मोर ।
—जायसी (शब्द०) ।

वारपार^२—अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक । जैसे,—वार-
पार जाने मे एक घंटा लगेगा । उ०—अति सुमार मार सार
वारपार बहत है ।—घनानंद, पृ० ३५० ।

मुहा०—वारपार करना = पूरा विस्तार तै करना । वारपार
होना = पूरा विस्तार तै होना ।

२. एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक । एक बगल से दूसरी बगल तक ।
पूरी चौड़ाई या मोटाई तक । जैसे,—बरछी वारपार हो गई ।

मुहा०—वारपार करना = इस ओर से उस ओर तक घूमना ।
पूरी मोटाई छेदकर दूसरी ओर निकालना ।

वारफेर—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वार+फेर] १ निछावर । बलि । २ वह
रुपया पैसा जो दूल्हा या दुल्हिन के सिर पर स धुमाकर
डोमनियो आदि को दिया जाता है । उ०—बोली कर जोरि
मेरी जोर न चलत कछु चाहो सोई होहु यह वारिफेरि डारिए ।
—प्रियादास (शब्द०) ।

वारवाण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ दे० 'वारवाण' । २ एक प्रकार का कवल (को०) ।

वारवृषा, वारवृषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कदली । केला [को०] ।

वारमुखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । उ०—कहै तुम कौन वारमुखी नही भोग मग भवना सुगहै मोन चुनी पगी बेरी है ।—प्रिया-दास (शब्द०) ।

वारमुख्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्याओं के वर्ग की प्रधान स्त्री । कुट्टनी । कुट्टनी नायका ।

वारयिता—सञ्ज्ञा पु० [सं० वारयितृ] पति [को०] ।

वारयुवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०] ।

वारयोग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चूर्ण । पाउडर [को०] ।

वारयोषित्, वारयोषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारवधू' ।

वारला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी । हसिनो । २ केला । ३ भिड़ या बेरें (को०) ।

वारवारण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कवच । २ ढाल [को०] ।

वारलीक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विल्वजा तृण । वनकप ।

वारवधू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रडी ।

वारवाण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कौ टेल्य के अनुसार एंडो तक लवा अग्रा । २ कञ्जुक । कु चुकी (को०) । ३ कवच । जिरहपुस्तक ।

वारवाणि^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वशी वज्र, नेवाला । २ उत्तम गायक । ३ धर्माध्यक्ष । न्यायाधीश । जज । ४ ज्योतिर्विद । ज्योतिषी । ५ वर्ष (को०) ।

वारवाणि^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रडी [को०] ।

वारवाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या ।

वारवासि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम जो भारत का पश्चिमोत्तरी भाग के आगे था ।

वारवास्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वारवासि' ।

वारविलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रडी ।

वारवृषा—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ अन्न । २ केला [को०] ।

वारवला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दिन का एक अशुभ समय जब कोई शुभ कार्य करना वांछित है [को०] ।

वारशिप—सञ्ज्ञा पु० [अ०] जगो जहाज । लडाकू जहाज । युद्धपोत ।

वारमुदरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वारमुन्दरी] दे० 'वारस्त्री' ।

वारसेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्यावृत्ति । रडी का व्यवसाय । २ वेश्याओं का समुदाय [को०] ।

वारस्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाजारू स्त्री । गणिका । वेश्या । रडी ।

वारागणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाराङ्गणा] वेश्या । रडी ।

वारागना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाराङ्गना] दे० 'वारागणा' ।

वारानिधि—सञ्ज्ञा पु० [सं० वारानिधि] समुद्र । उ०—जयति वाराण्य विज्ञान वारानिधे, नमत नर्मद पाप ताप हर्ता ।—तुलसी (शब्द०) ।

वारा^१—सञ्ज्ञा पु० [सं० वारण (= रक्षा, वचाव)] १ खर्च की वचन । किराया । २ लाभ । फायदा ।

क्रि० प्र०—पड़ना ।—बैठना ।

वारा^२—सञ्ज्ञा पु० [हि० वार (= यह किनारा)] इवर का किनारा । इस ओर का तट या छोर । वार ।

यी०—वारान्यारा । वागपार ।

वारा^३—वि० किराया । तस्सा ।

वारा^४—वि० [हि० वारना] [वि० स्त्री० वारी] जो निछावर हुआ हो । जिसने किसी पर अपने को उत्सर्ग किया हो ।

मुहा०—वारा होना = निछावर होना । कुम्हान होना । (प्यार का वाक्य) । उ०—हैं वारी तेरे इदुवदन पर अति छवि अलसानि रोई ।—सूर (शब्द०) । वारा जाना = दे० 'वारा होना' । उ०—वनवारी वारी गई वनवारी पं आज ।—रस-निधि (शब्द०) ।

वारा^५—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाला] दे० 'वाला' । उ०—इक नूतन अस्थल दै, वारा भूषण येह ।—प० रामो, पृ० १६३ ।

वाराणसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] काशी नगरी का प्राचीन नाम ।

विशेष—कुछ लोग यह नाम वर्णा और अमी नदियों के कारण मानते हैं । पर इस प्रकार यह शब्द मिथ्या नहीं होता । लोग इसका ठीक व्युत्पत्ति 'वर' + अन्नम् (जल) अर्थात् 'पवित्र जल-वाली पुरी' वतलाते हैं । कुछ विद्वान् 'उत्तम रयोवाली पुरी' अर्थ भी करते हैं । विशेष दे० 'कशी' ।

वाराणसेय—वि० [सं०] वाराणसी का । वाराणसी में स्थित या उत्पन्न । जैसे, वाराणसेय विद्वत्सभा ।

वारान्यारा—सञ्ज्ञा पु० [हि० वार + न्यारा] १ इस पक्ष या उस पक्ष में निर्णय । किसी ओर निश्चय । फैसला । उ०—आर्य गौरव-सर्वस्व का वारान्यारा होना सहज सुलभ है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२ । २ भग्न या भगड़े का निचटेरा । चले आते हुए मामले का खतमा । जैसे,—उम मामले का अभी तक कुछ वारान्यारा नहीं हुआ ।

वारापार—सञ्ज्ञा पु० [हि० वारपार] ओर छोर । अतः । उ०—(क) महिमा अपार काहू बोल को न वारापार बड़ी साहवी में नाथ बड़े सावधान हो ।—तुलसी ग्र०, पृ० २२६ । (ख) वह खुद मव कुछ सह सकती थी, उसकी सहन शक्ति का वारापार न था, पर चक्रधर को इस दशा में देखकर उसे दुःख होता था ।—काया०, पृ० ३७६ ।

वारालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

वारावस्कदी—सञ्ज्ञा पु० [सं० वारावस्कन्दिन्] अग्नि ।

वाराशि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सागर । समुद्र ।

वारामन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] तालाब । भोल । [को०] ।

वाराह^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० वाराही] १ दे० 'वराह' । २ काली मंती का घृत् । ३ पानी के किनारे होनेवाला वेंत । अबुवेतस । ४ एक पहाड़ (को०) । ५ एक साम (को०) ।

वाराह^२—वि० १ शूकर सबधी । २ वराह अवतार सबधी [को०] ।

वाराहकद—सञ्ज्ञा पु० [सं० वाराहकन्द] एक प्रकार का कद, जिसपर शूकर के समान बाल होते हैं ।

वाराहकर्णी—स्त्री० [सं०] असगव । वराहकर्णी [को०] ।

वाराहकल्प—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक कल्प (ब्रह्मा का दिन) का नाम जिसमें हम लोग रह रहे हैं [को०] ।
 वाराहद्वादशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल द्वादशी [को०] ।
 वाराहपत्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगधा । अश्वगध ।
 वाराहाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाराहाङ्गी] दंती का पेड़ ।
 वाराही—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ ब्राह्मणी आदि आठ मातृकाओं में से एक मातृका का नाम । २ एक योगिनी का नाम । ३ वाराहीकद । ४ कङ्गती । ५ श्यामा पक्षी । ६ सफेद भू-कुण्डला । विलाई कद । विदारी कद । ७ शूकरी (को०) । ८ पृथ्वी (को०) । ९ एक प्रकार की माप (को०) ।
 वाराहीकद—सञ्ज्ञा पु० [सं० वाराहीकन्द] एक प्रकार का महाकद जो गेठी कहलाता है ।
 विशेष—कहते हैं, यह अनूप (जलप्राय) देश में होता है । इसके कद के ऊपर सूअर के बालों के समान रोएँ होते हैं । इसका आकार प्रायः गुड़ की भेली के समान होता है और इसके पत्ते कँटीले, बड़े बड़े तथा अनीदार होते हैं । बँद्यक में यह चरपरा, कटुवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, मधुर, गरम, स्वर को शुद्ध करनेवाला, आयुवर्धक तथा कोढ़, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र का नाशक माना है ।
 पर्या०—वाराही । चर्मकारालुक । विष्कसेनप्रिया । घृष्टि । वदरा । कच्छा । वनमालिनी । गृष्टि । बिल्वमूला । शूकरी । क्रोड-कन्या । कौमारी । त्रिनेत्रा । ब्रह्मपुत्री । क्रोडी । कन्या । माघवेष्टा । शूकरकद । वनवासी । कुक्षुनाशन । वल्य । अमृत । महावीर्य । शवरकद । वराहकद । वीर । ब्राह्मीकद । महोपध । सुकदक । वृच्छिद । व्याधिहता । मागधी ।
 वारि^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ जल । पानी । २ तरल पदार्थ । ३ ह्रीवेर । सुगन्धाला ।
 वारि^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ बाणा । सरस्वती । २ हाथी के बाँधने की जजीर आदि । ३ हाथी के बँधने का स्थान । ४ छोटा कलमा या गगरा । ५ हाथियों के पकड़ने का गड्ढा आदि (को०) । ६ वदी । कँदी (को०) । ७ वाक् । बोली (को०) ।
 वारि^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वारा (= छाटा)] दे० 'वारी' । उ०—सुनहु वारि माधौनल कहई । इहि जग नेहु नहीं थिर रहई ।—माघवा-नल०, पृ० १६७ ।
 वारिकटक—सञ्ज्ञा पु० [सं० वारिकटक] सिंघाडा [को०] ।
 वारिकफ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] समुद्र ।
 वारिकणिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुभी । कुभिका (को०) ।
 वारिकर्पूर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] इलीश या हिलसा नाम की एक मछली [को०] ।
 वारिकुब्ज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सिंघाडा ।
 वारिकुब्जक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'वारिकुब्ज' ।
 वारिकूट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नगरद्वार की रक्षा के लिये बना हुआ स्तूप वा द्वार [को०] ।
 वारिकोल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] कच्छप । कछुआ ।

वारिक्रिमि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जलीका । जोक [को०] ।
 वारिगर्भ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वादल [को०] ।
 वारिगृह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] तालाब । पोखरा [को०] ।
 वारिचक्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जलावर्त । भँवर । उ०—तुम्हें बहु वारिचक्र है, कितने कच्छप और नक्र हैं ।—साकेत, पृ० ३३० ।
 वारिचत्वर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कुभी । जलकुभी । कुभिका । २ जलशय [को०] ।
 वारिचर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ पानी में रहनेवाले जंतु । २. मत्स्य । मछली । ३ शङ्ख ।
 वारिचरकेतु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] कामदेव । मीनकेतन ।
 वारिचामर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शंवाल । सेवार [को०] ।
 वारिचारी—वि० [सं० वारिचारिन्] जल में रहनेवाला (जंतु) ।
 वारिज^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. कमल । २. द्रोणी लवण । ३, मछली । ४ शङ्ख । ५ घाघा । ६ कौडी । ७ ? उत्तम सुवर्ण । खरा सोना । ८ एक प्रकार का शाक । विशेष दे० 'गौर सुवर्ण' (को०) । ९ लौंग (को०) ।
 वारिज^२—वि० जल में उत्पन्न । जल में होनेवाला [को०] ।
 वारिजात—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ कमल । २ शङ्ख । ३ दे० 'वारिज' ।
 वारिजीवक—वि० [सं०] जल से जीविका चलानेवाला (मल्लाह) ।
 वारित—वि० [सं०] १ जो रोका गया हो, जो मना किया गया हो । निवारित । २ छिपाया हुआ । ढका हुआ (को०) ।
 वारितर—सञ्ज्ञा पु० [म०] उशीर । खम ।
 वारितस्कर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वादल । २ सूर्य [को०] ।
 वारित्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] निषिद्ध आचरण [को०] ।
 वारित्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छत्र । छाता [को०] ।
 वारिद^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ मेघ । वादल । २ भद्र मुस्तक । नागर-माया । ३ एक गंधद्रव्य । सुगन्धाला । वाला । ४ पितरो को जल देनेवाला (को०) ।
 वारिद^२—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चातक । पपीहा [को०] ।
 वारिधर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ मेघ । वादल । वारिवाह । २ भद्र-मुस्तक । नागरमाया ।
 वारिधार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०] ।
 वारिधारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृष्टि की बौछार । जन की वर्षा [को०] ।
 वारिधि—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ समुद्र । २ जलपात्र [को०] ।
 वारिनाथ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वरुण । २ समुद्र । ३ वादल । मेघ । ४ नाग लोक जहाँ मर्षों का निवास माना जाता है (को०) ।
 वारिनिधि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] समुद्र ।
 वारिपथ—सञ्ज्ञा पु० [म०] समुद्रयात्रा । जलयात्रा [को०] ।
 वारिपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ जलकुभी । २ पानी की बौछार ।
 वारिपूर्ण—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारिपर्णी' [को०] ।
 वारिपृथ्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जलकुभी ।
 वारिप्रवाह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ जल का प्रवाह या धारा । २ भ्रमना । जलप्रपात [को०] ।
 वारिवदर—सं० स्त्री० [सं०] शंवाल [को०] ।
 वारिवालक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ह्रीवेर नामक गंधद्रव्य [को०] ।

वारिभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शख । २. रसाजन । सौवीर [को०] ।
 वारिमसि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बादल ।
 वारिमुक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिमुक्] बादल । मेघ ।
 वारिमूली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारिपर्या' [को०] ।
 वारियत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारियन्त्र] १. फौजारा । जलयन्त्र । २
 जलघटिका । रहट (को०) ।
 वारियाँ—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर । वलि ।
 क्रि० प्र०—जाना ।
 मुहा०—वारियाँ जाळें = तुझपर निछावर हूँ । (स्त्रियों का प्यार
 का वाक्य जो वे बातचीत में लाया करती हैं) ।
 वारिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मेघ । बादल [को०] ।
 वारिरथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नौका । नाव । पोत । [को०] ।
 वारिराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वरुण [को०] ।
 वारिराशि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र । २ भील ।
 वारिरुह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कमल ।
 वारिलोमा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिलोमन्] वरुण ।
 वारिवद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिवन्द] एक प्राचीन जनपद ।
 विशेष—यह कूचविहार के उत्तर में बताया जाता है ।
 वारिवदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वारिवदर' ।
 वारिवर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] करीदा ।
 वारिवर्णक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रेत । बालू । सिकता ।
 वारिवर्त(ु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारि आवर्त्त] एक मेघ का नाम ।
 उ०—सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए । जलवर्त, वारिवर्त,
 पवनवर्त, दञ्जवर्त, आगिवर्तक जलद सग लाए ।—सूर (शब्द०) ।
 वारिवल्लभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विदारी कद [को०] ।
 वारिवास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मद्य वनानेवाला । कलवार । कलार ।
 वारिवाह, वारिवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ । वारिवर । २
 मुस्तक । माथा ।
 वारिवाही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिवाहिन्] मेघ । बादल ।
 वारिश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।
 वारिशस्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष का एक ग्रन्थ ।
 विशेष—यह ग्रन्थ गर्ग मुनि का रचा हुआ कहा जाता है । इससे
 यह निकाला जाता है कि किस स्थान में कौनो वृष्टि होगी, और
 कब कब होगी ।
 वारिसभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारिसम्भव] १ लौंग । २ अजन विशेष ।
 ३ खस की सुगन्धित जड़ । उमीर [को०] ।
 वारिस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दायद । दायभागी पुरुष । २ वह पुरुष
 जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और
 उसके ऋण आदि का देनदार हो । उत्तराधिकारी । ३ रक्षक ।
 वारिसाम्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दुग्ध । दूध [को०] ।
 वारिसार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भागवत पुराण के अनुसार चंद्रगुप्त के
 एक पुत्र का नाम ।
 वारिवद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारीन्द्र] समुद्र ।

वारी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी के बाँधने की जजीर या शृङ्गुया ।
 २ कलसी । छोटा गगरा । दे० 'वारि' ।
 वारी^२—वि० दे० 'वारी' ।
 वारी^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वालिका > प्रा० वालिआ > हिं० बरी] छोटी
 उम्र की बालिका उ०—वारी
 सुकुमारी, दरिद्र, जर्जर लस्त को व्याह दी जाय ।
 प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७ ।
 वारी^४—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० पारी, वारी] वारी । अवसर । समय । उ०—
 साँकिया राज राँगा मकल, अकल पाँण छिन्नियो अमुर । लहर स
 जाँण वारी लहै, गरज निवागी सीम गुग ।—रा० रू०, पृ० १६ ।
 वारीट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथी ।
 वारीफेरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वारना + फेरना] किसी प्रिय व्यक्ति के
 ऊपर कुछ द्रव्य, या और कोई वस्तु धुमाकर इसलिये छोड़ना
 या उत्सर्ग करना, जिसमें उसकी सब बाधाएँ दूर हो जायें ।
 निछावर । (स्त्रियों का एक टोटका) । उ०—भुजन पर जननी
 वारीफेरी डारी । क्यो तोरचा कामल कर कमलन सभु सरामन
 भारी ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) क्योंकि आपकी लेखनी
 विचारी कलम की कारीगरी पर वारीफेरी हो जाती है ।
 —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७ ।
 क्रि० प्र०—ढालना ।
 वारीश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।
 वारुड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारुण्ड] १ साँपो का राजा । २, नाव में से
 पानी निकालने का यन्त्र । तसला । ३ कान की मँल ।
 सूँट । ४ आँख का कँचड़ ।
 वारुडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वारुण्डी] द्वार की सीढ़ी [को०] ।
 वारु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विजयहस्ति । विजयकुजर । जगी हाथी ।
 २ अश्व । घडा (को०) ।
 वारुक—वि० [सं०] चयनकर्ता । चुननेवाला [को०] ।
 वारुठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अतश्शय्या । मरण खाट । २ वह टिकठो
 जिसपर मुरदे को लेट कर ले जाते हैं । अस्थी ।
 वारुण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जल । २ शतभिषा नक्षत्र । ३ भारतवर्ष
 के एक खंड का नाम । (इसे आजकल 'वरुणारक' कहते हैं ।)
 ४ एक अश्व का नाम । ५ हरताल । ६ एक उपपुराण का
 नाम । ७ वरुण या वरुना नाम का पेड़ । ८ जलजंतु (को०) ।
 ९ पश्चिम दिशा [को०] ।
 वारुण^२—वि० १ वरुण नवमी । वरुण का । २ जलीय । जलसम्बन्धी ।
 ३ पश्चिमी [को०] ।
 वारुणक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद का नाम ।
 वारुणकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वारुणकर्मन्] क्रुआँ, पोखरा, बावली आदि
 जलाशय बनवाने का काम ।
 वारुणकृच्छ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्मृति के अनुसार एक व्रत, जिसमें
 महाने भर तक पानी में धुला सत्तू खाकर रहते थे ।
 वारुणपाशक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक विशाल समुद्री जंतु [को०] ।
 वारुण^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त्य मुनि । २ वसिष्ठ । ३ भृगु ।
 ४ विनता के एक पुत्र का नाम । ५ एक जनपद का नाम ।
 ६ देतला हाथी । ७. वारुण वृद्ध । वरुना का पड़ ।

वारुणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ मदिरा। शराव।

विशेष—कई प्रकार की मदिरा का नाम वारुणी है। जैसे,—
पुनर्नवा (गदहपुरना) की पीसकर बनाई हुई, ताड़ या खजूर के
रस में बनी हुई, साठी धान के चावल और हड़ पीसकर
बनाई हुई।

२. वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३. उपनिषद् विद्या, जिसका उपदेश
वरुण ने किया था। ४ पश्चिम दिशा। ५ शतभिषा नक्षत्र।
६ एक नदी का नाम। ७ भृङ्गविला। ८ गाँडर दूव।
९ घोड़े की एक चाल। १०. इन्द्रवारुणी लता। इन्द्रास्त्र की
वेल। ११. हृदिनी। १२ एक पर्व जो उस समय माना जाता
है जब चैत महीने की कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र
पड़ता है। इस दिन लोग गंगास्नान दान आदि करते हैं।
१३. दूर्वा। दूव (को०)। १४. घोड़े की गति का एक भेद (को०)।
१५ एक नदी का नाम (को०)। १६ वृंदावन के एक कदव
का रस, जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिये निकला था।
१७ कदंब के पके हुए फलों से बनाया हुआ मद्य।

वारुणीवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] जैनो के अनुसार चौथे द्वीप और उसके
समुद्र का नाम।

वारुणीवल्लभ—सञ्ज्ञा पु० [स०] वरुण देवता को०।

वारुणीश—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु को०।

वारुण्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] भ्रम। भ्राति को०।

वारुण्य—वि० १ वरुण संबंधी। २. मदिरा संबंधी को०।

वारुड—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वारुडा] १ अग्नि। आग। २.
पिंजरा (को०)। ३. सबल। पाथेय (को०)। ४ द्वार का
पल्ला (को०)। ५. वस्त्र का छोर (को०)। ६ किनारा।
तट (को०)।

वारुद्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वारुन्द्र] [स्त्री० वारुंद्री] गौड देश के एक प्राचीन
जनपद का नाम जो आजकल के राजशाही जिले में था।

वारुर्—क्रि० वि० [स० वरिर्] दे० 'वाहर'। उ० - पाँण जोड़े हुकुम
पावै अतुर वारै भरय आवै ले चले हित लेख।—रघु० ८०,
पृ० ११६।

वार्कजभ—सञ्ज्ञा पु० [स० वार्कजम्भ] १ एक साम का नाम। २
वृकजभ ऋषि का गोवज।

वार्कार्य—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक यज्ञ कर्म।

वार्क्ष—वि० [स०] [वि० स्त्री० वार्क्षी] १. वृक्ष संबंधी या वृक्ष का
बना हुआ। २ वृक्षों से युक्त या घिरा हुआ (को०)।

वार्क्ष—सञ्ज्ञा पु० १ वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र। २ वन।
अरण्य। जंगल (को०)।

वार्क्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का नाम।

विशेष—इसका जन्म कुंड मुनि और प्रम्लोचा अप्सरा से हुआ
था। कुंड मुनि गोमता के तट पर तप कर रहे थे।
उनको तपोभ्रष्ट करने के लिये इंद्र ने प्रम्लोचा को भेजा था।
वह मुनि के आश्रम में बहुत काल तक रहो। जब मुनि को उसके
छल का ज्ञान हुआ, तब वे अपने को धिक्कारने लगे। प्रम्लोचा
शाप के भय से भागी। उसके शरीर से पसाना निकल, जो
एक वृक्ष के ऊपर पड़ा। उसी से मारिषा उत्पन्न हुई। मारिषा
को राजा ने प्रचेतागण को प्रदान किया, जिसे इंद्र
प्रजापति का जन्म हुआ।

हि० श० ६-१२

वार्क्ष्य—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्क्ष' (को०)।

वार्गर्—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्यालक। साला (को०)।

वार्च—सञ्ज्ञा पु० [स०] हम।

वार्ड—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ रक्षा। हिफाजत। २. किसी विशिष्ट कार्य
के लिये धरकर बनाया हुआ स्थान। ३ नगर में उसके
महल्लो आदि का समूह, जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये
अलग नियत किया गया हो। ४ अस्पताल या जेल आदि के
अंदर के अलग अलग विभाग। ५ अलग अलग कमरा या
विभाग आदि (को०)।

वार्डन—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ अभिभावक। २ छात्रावासों में छात्रों के
प्रतिपालक। ३ रक्षक। ४. जेल के भीतर का पहरेदार (को०)।

वार्डर—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ वह जो रक्षा करता हो। रक्षक। २.
जेल आदि के अंदर का पहरेदार।

वार्णुक—सञ्ज्ञा पु० [स०] लेखक।

वार्णिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] लेखक।

वार्त्तक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्त्तक' (को०)।

वार्त्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ आरोग्य। निरामय। २ किसी वृत्ति या
व्यवसाय में लगा हुआ व्यक्ति। कामकाजी आदमी। ३ कुश-
लता। दक्षता (को०)। ४ भूमि। तुप। छिलका (को०)।

वार्त्त—वि० १. स्वस्थ। निरोग। २ हलका। कमजोर। सारहीन।
३. वृत्तिशाली। जीविकाप्राप्त।

वार्त्तिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] बटेर पक्षी।

वार्त्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वार्त्ति, वार्त्ति] १ जनश्रुति। अफवाह। २.
संवाद। वृत्तांत। हाल। ३. विषय। मामला। प्रसंग। वात।
४ चार विद्यावर्गों (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्त्ता और दंडनीति) में
एक। ५ कथोपकथन। वातर्चात।

यौ०—वार्त्तालाप।

५ वैश्य वृत्ति जिसके अंतर्गत कृषिकर्म, वाणिज्य, गोरक्षा और
कुसीद हैं।

यौ०—वार्त्तिकर्म = कृषि, व्यापार, गोपालन आदि वैश्यों के कार्य।

६ दुर्गा। ७ अन्य के द्वारा क्रय विक्रय होना। ८ ठहरना।
रहना (को०)। ९ वेंगन। भंटा (को०)। १० वृत्ति। आजी-
विका (को०)।

वार्त्तिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेंगन। भंटा। २ बटेर पक्षी।

यौ०—वार्त्तिकशाकट, वार्त्तिकशाकिन = वेंगन का खेत (को०)।

वार्त्तिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेंगन। भंटा।

वार्त्तिकु—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेंगन। भंटा।

वार्त्तिकुर्षक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ गुप्तचर। जामूस। २ दूत। चर।
संदेशवाहक (को०)।

वार्त्तिनुजीवी—सञ्ज्ञा पु० [स० वार्त्तिनुजीविन्] कृषि, गोरक्षा, व्यापार
आदि द्वारा जीविका चलानेवाला। वैश्य (को०)।

वार्त्तिपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] काम करानेवाला मालिक।

वार्त्तिन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ गूढ पुरुष। प्रणवि। चर। २ दूत।
एलची। संदेशवाहक।

वार्त्तिरंभ—सञ्ज्ञा पु० [स० वार्त्तिरम्भ] व्यापार। रोजगार (को०)।

१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वार्त्तचीत। कथोपकथन।

प्र०—करना।—होना।

वार्ताविह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पनसारी। २ समाचार ले जानेवाला। दूत। ३ नीति शास्त्र का वह भाग, जो आय व्यय से सबध रखता है। वार्ता।

वार्ताविशेष—वि० [सं०] मृत। मरा हुआ।

वार्तावृत्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी जीविका वार्ता, कृषिकर्म पर आश्रित हो। २, ग्रहपति। ३ वंश्य [को०]।

वार्ताशिखोपजीवी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वार्ताशिखोपजीविन्] केवल वारिण्य या युद्ध व्यवसाय में लगे रहनेवाले लोग।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि कावोज और सौराष्ट्र देशवाले अधिकतर ऐसे ही हैं।

वार्ता साहित्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आर्यान। कथा साहित्य। उ०—जिसका उल्लेख संह ग्रंथों, वार्तासाहित्य, समकालीन कवियों की रचनाओं, ऐतिहासिक ग्रंथों तथा हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है।—अकवरी, ० पृ० ३८।

वार्तिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टायकारी विवेचक वाक्य या ग्रंथ। जैसे,—पाणिनि की अष्टाध्यायी पर कात्यायन का वार्तिक, न्यायसूत्र के वात्स्यायन भाष्य पर उद्योतकर का न्याय वार्तिक।

विशेष—वृत्ति और भाष्य केवल मूल ग्रंथ के आशय को स्पष्ट करते हैं, उसके बाहर कुछ नहीं कहते। पर वार्तिककार को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। वह नई बातें भी कह सकता है।

२ वृत्ति या आचार शास्त्र का अध्ययन करनेवाला। उ०—वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक, वार्तिक, वक्ता, व्यसनी, व्यावहारिक विद्यामत।—वर्ण०, पृ० १०। ३ दूत। चर। ४ वैद्य (को०)। ५ बटेर पक्षी (को०)। ६ किसान (मुख्यतः वंश्य)। ७ व्यवसायी। व्यापारी (को०)। ८ विवाह का भोजन (को०)। ९ भटा। वैन (को०)।

वार्तिक—वि० १ संदेश लानेवाला। दूत। संदेशवाहक। २ समाचार सबधी। व्याख्यात्मक [को०]।

वार्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यापार। वारिण्य। २ खबर। समाचार [को०]।

वार्तिक, वार्तीर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बटेर पक्षी का एक भेद।

वार्त्रघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन। २ जयत।

वार्त्रघ्न—वि० वृत्रघ्न सबधी। इद्र सबधी। [को०]।

वार्त्रतूर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

वार्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वार्द] मेघ। बादल।

वार्दर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वार्दर] १ दक्षिणावर्त शख। २ जल। ३ घोड़े के गले पर की दाहिनी ओर की भीरी। ४ आम की गुठली। ५ रेशम। ६ जल। ७ कार्कचिचा।

वार्दल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मेघाच्छन्न दिवस। दुर्दिन। वर्षा का दिन। २ मसिपात्र। ३ मसि। स्याही [को०]।

वार्दालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा [को०]।

वार्दक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बुढ़ापा। बुढ़ावस्था। २ बुढ़ापे के कारण होनेवाली कमजोरी (को०)। ३ वृद्ध जनो का समूह या मङ्गलो (को०)।

वार्दक्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बुढ़ापा। २ वृद्धि। बढती। ३ बुढ़ापे की कमजोरी (को०)।

वार्द्धि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वार्द्धिभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्री नमक। द्रोणी लवण [को०]।

वार्द्धक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्द्धक' [को०]।

वार्द्धप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्द्धपि'।

वार्द्धपि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक व्याज लेनेवाला।

वार्द्धपिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक सूद लेनेवाला। सूदखोर।

वार्द्धपी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वार्द्धपिन्] सूदखोर। वार्द्धपिक [को०]।

वार्द्धपी—सञ्ज्ञा स्त्री० सूदखोरी [को०]।

वार्द्धप्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अन्न को अधिक व्याज पर देने का व्यवसाय। विसार।

वार्द्ध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्री लवण [को०]।

वार्द्ध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृद्धता। बुढ़ापा [को०]।

वार्द्ध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चमड़े की बढती। तसमा।

वार्द्ध्यी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वार्द्ध्य' [को०]।

वार्द्ध्येणस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गैडा। २ वह बधिया बकरा जिसका रंग सफेद हो और जिसके कान इतने लंबे हो कि पानी पीते समय पानी से छू जायें। ३ एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर लाल, गला नीला और शेष शरीर काला कहा गया है। प्राचीन काल में इस पक्षी का बलिदान विष्णु के उद्देश्य से होता था।

वार्धनी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जलपात्र। घड़ा [को०]।

वार्धि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र [को०]।

वार्धुपिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कम दाम पर वस्तु खरीदकर अधिक दाम पर बेचने का व्यवसाय करनेवाला। खरीद फरोल का रोजगारी। बनिया। (स्मृति)।

वार्निश—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'वारनिश'। लकड़ी आदि की बनी वस्तुओं में खूबसूरती और चमक लाने के लिये लगाया जानेवाला रोगन। उ०—(क) रमा ने मुग्ध की जोड़ी देखी। उसपर वार्निश थी, साफ सुथरी, मानो अभी किसी ने फेरकर रख दिया हो।—गवन, पृ० २३४। (ख) वे मार्मिक से मार्मिक प्रत्यक्ष दृश्य के सामने वार्निश किए हुए काठ के कुंदे या गढी हुई पत्थर की मूर्ति के समान खड़े रह जायेंगे।—चितामण, भा० २, पृ० २१२।

वार्वट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नाव [को०]।

वार्भट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] घड़ियाल।

वामण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कवचों का समूह [को०]।

वार्मिण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कवच धारण करनेवाला का दल [को०]।

वार्मुच—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वार्मुच्] १ बादल। २. मुस्तक। मोथा।

वार्य—वि० [सं०] १ जो रोका जा सके। जिसका निवारण हो सके। वारणीय। २ जिसे वारण करना हो। जिसे रोकना हो। ३ वारि सबधी। जल सबधी [को०]।

वार्य—सञ्ज्ञा पुं० १ आशीर्वाद। वरदान। २ जायदाद। संपत्ति। ३. दीवार [को०]।

वार्युद्भव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जलज। कमल [को०]।

वार्योका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वार्योक्स्] जोक ।
 वार्वट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नौका । नाव । वेडा ।
 वार्वणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नीले रंग की मक्खी ।
 वार्ष—वि० [सं०] १ वर्षा संबंधी । २. वार्षिक [को०] ।
 वार्षक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागों में से एक भाग का नाम, जिसे सृष्टि ने विभक्त किया था ।
 वार्षगण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के वैदिक आचार्य ।
 वार्षभ—वि० [सं०] वृषभ संबंधी । बैल संबंधी [को०] ।
 वार्षभान्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृषभानु की पुत्री । राधा [को०] ।
 वार्षल—वि० [सं०] शूद्र संबंधी । शूद्र का कार्य, पेशा आदि [को०] ।
 वार्षलि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूद्र का पुत्र ।
 वार्षाहर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।
 वार्षिक^१—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्षिकी] १ वर्ष संबंधी । २. जो प्रतिवर्ष होता हो । सालाना । ३. वर्षाकाल में होनेवाला ।
 ४. एक वर्ष तक रहनेवाला [को०] ।
 वार्षिक^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] त्रायमासा नाम की एक लता, जिसका प्रयोग ओषधि के रूप में होता है ।
 वार्षिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेल का फूल । २. वह नदी जिसमें साल भर पानी रहता है [को०] । ३. प्रति वर्ष नियमित रूप से होनेवाली पूजा आदि [को०] ।
 वार्षिक्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु [को०] ।
 वार्षिक्य^२—वि० वर्षा संबंधी [को०] ।
 वार्षिला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ओला । करका । पत्थर ।
 वार्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा ऋतु [को०] ।
 वार्षुक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्षुकी] वर्षासाल । वर्षाशील । वर्षासनेवाला [को०] ।
 वाष्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र ।
 वाष्णि—सञ्ज्ञा [सं०] कृष्ण [को०] ।
 वाष्ण्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वृष्णि की सतान । २. कृष्णचंद्र ।
 ३. नल का सारथी [को०] ।
 वार्ह—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्ही] दे० 'वार्ह' [को०] ।
 वार्हत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृद्धि फल [को०] ।
 वार्हद्रथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृहद्रथ का पुत्र, जरासंध ।
 वार्हद्रथि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हद्रथ' [को०] ।
 वार्हस्पत—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हस्पत' ।
 वार्हस्पत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हस्पत्य' [को०] ।
 वार्हिण—वि० [सं०] मयूर संबंधी । दे० 'वार्हिण' ।
 वालटियर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १. वह मनुष्य जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे । स्वयं-सेवक । स्वेच्छा सेवक । २. वह सिपाही जो बिना वेतन के अपनी इच्छा से फौज में सिपाही या अफसर का काम करे । वल्लमटेर ।
 वाल^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाला] युवती स्त्री । बाला । उ०—सुभत केश वालय । सारत्त ज्यौ सेवालय ।—पृ० रा०, ६१ । १८८३ ।

वाल^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाल' ।
 वालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बालछड । २. कंकण । कगन । अगूठी ।
 ३. घोड़े या हाथी की पूँछ [को०] । दे० 'वालक' ।
 वालखिल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'वालखिल्य' । २. ऋग्वेद की ११ ऋचाएँ ।
 वालदैन—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] माता पिता । माँ बाप ।
 वालघान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वालघि । पूँछ ।
 वालघि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूँछ । पुच्छ । २. मैसा । महिष । ३. एक ऋषि [को०] ।
 वालनाटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक तरह का निम्नकोटि का अन्न वा कदब [को०] ।
 वालपाशक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथी की पूँछ का एक भाग [को०] ।
 वालपुत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मूँछ [को०] ।
 वालप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गाय की ज.ति का एक पशु । चमरी गाय [को०] ।
 वालरा^१—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] विशेष ढग से फी जानेवाली खेती । उ०—पहाड़ों के ढेलों आदि पर, जहाँ हल नहीं चलाए जा सकते, भोल लोग जगह जगह लकड़ियाँ काटकर उनके ढेर लगाते और उनको जला देते हैं, जिसकी राख खाद का काम देती है फिर, वे लोग वहाँ की जमीन को खोदकर उसमें मक्का वगैरह अन्न बोते हैं । ऐसी खेती को वालरा (वल्लर) कहते हैं ।—राज० इति०, पृ० १४३४ ।
 वालव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में एक करण का नाम ।
 वालव्यजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चामर । चँवर । २. छोटा पखा ।
 उ०—यह माला, यह मल्लिका का वालव्यजन क्या होगा—मेरा दिनभर का परिश्रम ।—राज्यश्री, पृ० ८ ।
 वालहस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बालवि । पूँछ [को०] ।
 वाला^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. इद्रवज्जा और उपेद्रवज्जा के मेल से बने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक, जिसके पहले तीन चरणों में दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं, तथा चौथे चरण में और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है । जैसे,—राखी सदा शम्भु हिए अखडा । बाधो सब शूर तनै छु दडा । धारो विभूती तन अक्षमंडा । नसै सर्वई अघ ओष चडा । २. नारियल [को०] ३. दे० 'बाला' ।
 वाला^२—वि० [फा० बालह] १. प्रतिष्ठित । मान्य । २. उच्च । उत्तुंग । श्रेष्ठ । उत्तम [को०] ।
 यौ०—दे० 'बाला' शब्द में ।
 बालाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा, जिसके फूलों के दल आँख के आकार के लगते हैं ।
 बालाग्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन मान जो आठ रज का माना जाता था । उ०—आठ रज का बालाग्र होता है ।—वृहत्संहिता पृ० २८६ । दे० 'बालाग्र' ।
 बालि—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'बालि' ।
 बालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'बालिका' । २. बालुका । बालू । ३. कान का एक गहना । बाला । बाली । ४. इलायची । ५. मुहर । मुद्रा [को०] ।

वालखिल्ल^७—सञ्ज्ञा पुं [सं वालखिल्य] दे० 'वालखिल्य' ।

वालद—सञ्ज्ञा पुं [अ०] पिता । बाप ।

वालदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वालदह] माता । माँ ।

वालदैन—सञ्ज्ञा पुं [अ०] माँ बाप । उ—देखता वालदैन अपने मकमूर हल । परेशान अपन भी फिकर लग दुवाल ।—दक्खिनी०, पृ० २६८ ।

वालिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] अश्विनी नक्षत्र [को०] ।

वालिभ^७—सञ्ज्ञा पुं [सं वल्लभ] दे० 'वल्लभ' । उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सह अक्यथ्य । जिए चत्था दल उत्तरद, तरुण पसारइ हथ्य ।—ढोला०, दू० १६६ ।

वाली—सञ्ज्ञा पुं [सं वालिन्] वदगे का एक राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई और अगद का पिता था ।

विशेष—पुराणों में इसकी उत्पत्ति इन्द्र के वीर्य से कही गई है । विशेष दे० 'वालि' ।

वाली—सञ्ज्ञा पुं [अ०] १ मित्र । सखा । २ शासक । हाकिम । उ०—वह वाला वाली इस घर का । है खालिक सब बहरो वर का ।—दक्खिनी०, पृ० २२३ ।

वालुक—सञ्ज्ञा पुं [सं वालुङ्क] एक प्रकार की ककड़ी [को०] ।

वालु—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक गव द्रव्य ।

वालुक^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ एक गव द्रव्य । २ पनियालू ।

वालुक^२—वि० १ बालू की तरह का । २ नमक से बना हुआ [को०] ।

वालुकावुधि—सञ्ज्ञा पुं [सं वालुकावुधि] बालू का समुद्र, मरुस्थल । रागस्तान [को०] ।

वालुका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ बालू । रेत । २ शाखा । ३ हाथ पैर । ४. ककड़ी । ५ कपूर । ६ चूर्ण [को०] ।

वालुकात्मिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] चीनी । शर्करा [को०] ।

वालुकाप्रभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] एक नरक का नाम ।

वालुकाट्वि—सञ्ज्ञा पुं [सं] रेगिस्तान । मरुभूमि ।

वालुकायत्र—सञ्ज्ञा पुं [सं वालुकायत्र] श्रौषथ सिद्ध करने का एक प्रकार का यत्र । दे० 'वालुका यत्र' ।

वालुकार्णव—सञ्ज्ञा पुं [सं] मरुभूमि । रेगिस्तान [को०] ।

वालुकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] एक प्रकार की ककड़ी ।

वालुकेल—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक प्रकार का लवण [को०] ।

वालुकेश्वर—सञ्ज्ञा पुं [सं] शिव [को०] ।

थौ०—वालुकेश्वर तीर्थ = बड़ई के पास का एक तीर्थ स्थान ।

वालुक—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक प्रकार का विष ।

वालेय^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ गवा । २ पुत्र । ३ एक प्रकार का करज । अगारवल्लरी ।

वालेय^२—वि० [सं] दे० 'वालेय^१' [को०]

वाल्क—सञ्ज्ञा पुं [सं] क्षौमादि वस्त्र । वल्क से बना वस्त्र ।

वाल्कल^१—वि० [सं] वल्कल का । छाल का ।

वाल्कल^२—सञ्ज्ञा पुं दे० 'वाल्क' ।

वाल्कली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] मदिरा । गौड़ी मद्य ।

वाल्पुक—वि० [सं] बहुत सुंदर [को०] ।

वाल्गुद—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक प्रकार की चमगादड़ [को०] ।

वाल्मिकि, वाल्मीकि, वात्मीकि—सञ्ज्ञा पुं [मं] एक मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं ।

विशेष—इनका जन्म भृगु वंश में हुआ था । ये प्रचेता के वंशज थे और तमसा नदी के किनारे, जिसे अन्न टोम कहते हैं, रहते थे । ये एक बार अपने शिष्यों सहित नदी तट पर स्नान करने गए । वहाँ शिष्यों को घाट पर स्नान सध्या करने के लिये छोड़कर नदी के किनारे टहल रहे थे कि इसी बीच में एक निपाद ने एक क्रीच को मारा । क्रीच रक्त में लयपय भूमि पर गिर पड़ा और क्रीचो चिल्लाने लगे । यह घटना देखकर मुनि के मुँह से यह वाक्य निकल गया—'मा निपाद प्रतिष्ठा त्वमगम प्राश्वती समा । यत्क्रीञ्च मिथुनादेकमवधौ काममोहितम् ।' यह वाक्य विशुद्ध वर्णयुक्त सुंदर अनुष्टुभू था । यह छंद मुनि को इतना रुचिकर हुआ कि उन्होंने समस्त रामायण महाकाव्य इसी छंद में रच डाला ।

वाल्मीकीय—वि० स्त्री० [सं] १ वाल्मीकि सवधी । वाल्मीकि की । २ वाल्मीकि की बनाई हुई ।

वाल्लभ्य—सञ्ज्ञा पुं [सं] प्रियता । प्यार । वल्लभता [को०] ।

वाल्हा^७—सञ्ज्ञा पुं [सं वल्लभ] बालम । प्रिय । स्वामी । उ०—वाल्हा सेज हमारे रे, तूँ आव हूँ वारी रे, हूँ दासी तुम्हारी रे ।—दादू०, पृ० ५०४ ।

वाल्हा^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वल्लभा] पत्नी । प्रिया । उ०—वाल्हा हूँ ताहरी, तूँ माहरी नाथ । तुम सून पहली प्रीतडी, पूरिवलो साथ ।—दादू० पृ० ३८६ ।

वावदूक—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ अच्छा बोलनेवाला । वक्ता । वाग्मी । २ बहुत बकनेवाला । बक्कावादी ।

वावदूकता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] वाग्मिता ।

वावय—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक प्रकार की तुलसी का पौधा [को०] ।

वावसू^७—सञ्ज्ञा पुं [देख०] चर । दूत । जानूस । उ०—इतरे अस खड आविया, सब वावसू सताव । अकबर कहियो आवते, बहियो साह निवाव ।—रा० रू०, पृ० १०८ ।

वावात—वि० [सं] प्रिय । चहेता [को०] ।

वावाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] राजा की वह प्रिया पत्नी जो शूद्र जाति की होती थी । उ०—उस समय राजा को चार स्त्रियाँ रखने का अधिकार था, महिषी (पटरानी), परिवाकत्री (उपेक्षिता), वावाता (प्रिया) तथा पालागली (किसी दरबारी अफसर की लडकी) ।—प्रा० भा० पं०, पृ० १८५ ।

वावुट—सञ्ज्ञा पुं [सं] नाव । बेड़ा । डोंगी [को०] ।

वावू^७—सञ्ज्ञा, पुं [सं वायु] दे० 'वायु' । उ०—खोजे वावू हथडा, धूडि भरेसी मूठि ।—ढोला० दू० ३६१ ।

वावृत्त—वि० [सं] छाँटा गया । चुना गया । पसंद किया गया [को०] ।

वावेला—सञ्ज्ञा पुं [अ०] १. विलाप । रोना पीटना । २ शोरगुल । हल्ला । चिल्लाहट ।

क्रि० प्र०—करना ।—मचाना ।—होना ।

वाश^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] अडूसा । वासक ।

वाश^२—वि० १. बहुत रोनेवाला । रोना । २. निवेदित ।

वाश^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम ।

वाशक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. चिल्लानेवाला । निनादकारी । २. रोने-वाला । ३. अडूसा ।

वाशन^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. पक्षियों का बोलना । २. मक्खियों का भिनभिनाना ।

वाशन^२—वि० १. चिल्लानेवाला । शब्द करनेवाला । २. चहचहाने-वाला ३. भिनभिनानेवाला ।

वाशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वासक । अडूसा ।

वाशि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अग्नि । आग ।

वाशिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा

वाशित^१—सञ्ज्ञा पुं० [म०] पशु पक्षी आदि का शब्द ।

वाशित^२—वि० १. दे० 'वासित' । २. शब्दित । पुकारा हुआ । (को०) ।

वाशिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. स्त्री । २. हथिनी । ३. पत्नी (को०) ।

वाशितागृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जवान हथिनी (को०) ।

वाशिष्ठ^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. एक उपपुराण का नाम । २. एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वाशिष्ठ^२—वि० [म०] वाशिष्ठ सबधी । वाशिष्ठ का ।

वाशिष्ठी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गोमती नदी ।

वाशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. कुल्हाड़ी । कुठार । २. ध्वनि । स्वर । ३. युद्ध का निनाद (को०) ।

वाशुरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] रात । रात्रि (को०) ।

वाश्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. मंदिर । निवास । २. चौराहा । ३. दिन । दिवस (को०) । ४. वृषभ । बल (को०) । ५. गोबर (को०) ।

वाश्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. माता । २. बछड़े सहित गाय (को०) ।

वाष्कल^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वीर । योद्धा (को०) ।

वाष्कल^२—वि० महान् । बड़ा (को०) ।

वाष्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. लोहा । २. आंसू । ३. भाप । भाफ । ४. कटकार । भटकटैया ।

यौ०—वाष्पदुर्दिन = अशुभरी (आँखें) । वाष्पमुख = आंसू से जिसका मुँह गीला हो । वाष्पमोक्ष, वाष्पमोक्षण = अशुभपात । रुदन । (अन्य यौ० शब्दों के लिये देखें 'वाष्प' शब्द) ।

वाष्पक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. मरसा नाम का साग । २. दे० 'वाष्पक' ।

वाष्पयान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भाप की शक्ति से चलनेवाला यान । रेलगाड़ी । उ०—रेडियो, तार और 'फोन',—वाष्प, जल, वायुयान, मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान मान । —ग्राम्या, पृ० ८८ ।

वाष्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हिगुपत्री ।

वाष्पी, वाष्पीका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाष्पिका' (को०) ।

वासत^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासन्त] १. ऊँट । २. कोकिल । ३. मलय वायु । ४. मूँग । ५. मैनफल । ६. लपट या दुराचारी व्यक्ति (को०) । ७. जवान हाथी या कोई भी जवान पशु (को०) ।

वासत^२—वि० १. वसती । वसंत ऋतु का । वसत सबधी । २. युवा । जीवन के वसत में वर्तमान । युवक । ३. कार्यतत्पर । काम में सबलग्न (को०) ।

वासत^३—सञ्ज्ञा पुं० [स० वसन्त] दे० 'वसत' । उ०—वामत विना इन सकल बुधि सब मनोरथ रह्यो मन ।—पृ० रा०, ५८ । ८१ ।

वासतक—वि० [स० वासन्तक] १. वसत सबधी । २. वसंत ऋतु में बोया हुआ ।

वासतिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासन्तिक] १. भाँड । विदूषक । २. नाचनेवाला । नर्तक । अभिनेता ।

वासतिक^२—वि० वसंत संबंधी ।

वासतिकता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वासतिकता] वसत सबधी होने का भाव । आनंद । मौज ।

वासती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वासन्ती] १. मायवी लता । २. जूही । ३. एक पुष्प जो जूही की जाति का होता है । यह वसंत ऋतु में ही फूलता है और सुगंधित होता है । नेवारी । ४. गनियारी नामक फूल । ५. मदनीत्सव । ६. दुर्गा । ७. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण (म, त, न, म, ग ग) होते हैं, जिनमें ६, ७, ८ और ९ वाँ वर्ण लघु और शेष गुरु होते हैं ।

वासदर(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [स० वंशवानर, प्रा० वइसाणर, वइस्माणर, अप० वासदर, वंसदर] अग्नि । वंसदर । उ०—का वासदर सेवियइ, कइ तरुणी, कइ मंद ।—ढोला०, दू० २६४ ।

वास—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासस्] दे० 'वासस्' ।

यौ०—वास कुटी = रावटी । खेमा । तबू । २. वास खड = वस्त्र का टुकड़ा ।

वास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अवस्थान । रहना । निवास । उ०—गोदावरी तीर पर प्रभु ने दडक वन में वास किया ।—साकेत, पृ० ३७८ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

यौ०—कारावास । तीर्थवास । कल्पवास । कैलाशवास । वंकुठवास । २. गृह । घर । मकान । ३. स्थान । स्थल । जगह । स्थिति (को०) । ४. वासक । अडूसा । ५. एक दिन की यात्रा (को०) । ६. वासना । भावना (को०) । ७. सकाश । औपम्य । सादृश्य (को०) । ८. सुगंध । बू ।

यौ०—वासकर्णी । वासगृह = गृह का भीतरी हिस्सा । शयनकक्ष । वासताबूल = सुगंधित पान । वासपर्यय । वासप्रासाद = महल । वासभवन, वासमंदिर, वाससदन = निवासस्थान । घर । वास-यष्टि । वासयोग = सुगंधित चूर्ण । पाउडर । वाससज्जा = दे० 'वासकसज्जा' ।

वासक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अडूसा । २. गान का एक भ्रग ।

विशेष—शंकर के मत से मनोहर, कदर्प, चारु और नदन नामक इसके चार भेद हैं । कोई कोई विनोद, वरद, नद और कुमुद को इसका भेद मानते हैं ।

३. वासर । दिन । ४. शालक राग का एक भेद । ५. वस्त्र । ६. गंध । सुगंधद्रव्य (को०) । ७. शयनागार शयनकक्ष (को०) ।

वासक(पु)^२—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासुकि] दे० 'वासुकि' । उ०—एक दत्त पाताल चलावा । तहाँ जाय वासक को खावा ।—कबीर सा० पृ० ८०२ ।

वासक^१—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वासिका, वासिका] १ सुवासित करने-वाला। सुगन्धित करनेवाला। २ वसानेवाला वसने के लिये प्रेरित करनेवाला [को०]।

वासकर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ वङ्ग कक्ष जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन, नृत्य, गीत, कुश्ती आदि किए जायें। २ यज्ञशाला [को०]।

वासकसज्जा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नायिका भेद के अनुसार वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।

वासकसज्जिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वासकसज्जा' [को०]।

वासका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अड़ूसा।

वासकेट—सञ्ज्ञा पुं०, स्त्री० [अ० वेस्टकेट] एक प्रकार की छोटी बड़ी या कमर तक की कुरती जिससे केवल पीठ, छाती और पेट ढकता है।

विशेष—इसमें आस्तीन नहीं होती। आगे और पीछे के कपड़े में भेद होता है। इसे कसने के लिये पीछे बकगुएदार दो बंद होते हैं। २ एक प्रकार की बड़ी जिसमें आस्तीन नहीं होती। यह एक ही कपड़े की बनती है। इसे जवाहर बड़ी भी कहते हैं।

वासत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गर्दभ। गदहा।

वासतेय—वि० [सं०] वस्ती के योग्य। रहने लायक।

वासतेयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात। रात्रि। २ रहने की जगह। घर। निवास (को०)।

वासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० वासिन] १ सुगन्धित करना। वासना। धूपन। २ वस्त्र। ३ वास। निवास। ४ ज्ञान। ५ वसना। निवास करना (को०)। ६ आच्छादन। गिलाफ। लिफाफा (को०)। ७ कोई पात्र, आभार, टोकरी, सटूक, वर्तन आदि (को०)। ८ योग की एक मुद्रा (को०)।

वासना^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रत्याशा। २ ज्ञान। ३ किसी पूर्व स्थिति के जन्म प्रभाव से उत्पन्न मानसिक दशा। भावना। संस्कार। स्मृति हेतु। ४ न्याय के अनुसार देहात्म बुद्धिजन्य मिथ्या संस्कार। ५ इच्छा। कामना। ६ दुर्गा। ७ अर्क का पत्नी। ७ सुगन्धित करने या वासने की क्रिया (को०)। ८ प्रमाण। उपपत्ति (गणित में)।

वासना^२—क्रि० सं० दे० 'वासना'।

वासना^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वास। सुगन्ध। खुशबू। उ०—विन वासना को फूल कहो कौन काम को।—कवीर म०, पृ० ३६३।

वासनात्मक—वि० [सं०] वासना। वासनामय। वासनायुक्त। उ०—वासनात्मक अवस्था में इन दोनों के विषय सामान्य रहते हैं।—रस०, पृ० ७५।

वासनामय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] संस्कारजन्य। भावना से युक्त [को०]।

वासनीय—वि० [सं०] दुर्बोध। अत्यंत क्लिष्ट [को०]।

वासपर्यय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्थान बदलना। स्थानपरिवर्तन [को०]।

वासयष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] चिड़ियों के बैठने का अड्डा। छतरी [को०]।

वासर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दिन। दिवस। उ०—यह तारक जो खचे रचे, निशि में वासर बीज से बचे।—साकेत, पृ० १२२। २,

क्रम। वारी (को०)। ३ एक नाग का नाम (को०)। ४ वह घर जिसमें विवाह हो जाने पर स्त्री पुरुष पड़ली रात को सोते हैं।

वासर^२—वि० प्रभात भवधी। प्रातःकालीन (को०)।

वासरकन्यका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।

वासरकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्य [को०]।

वासरमणि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

वासरसग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वासरसङ्ग। प्रातःकाल।

वासराधीश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दिन का स्वामी। सूर्य [को०]।

वासरेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्य [को०]।

वासव^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ इन्द्र। २ घनिष्ठा नक्षत्र।

यौ०—वासवचाप = इन्द्रवनुष। वासवज = इंद्र का पुत्र—१ अर्जुन। (२) बालि। (३) जयत। वासवदत्ता = (१) सुवसु का संस्कृत गद्य काव्य (२) वत्सराज उदयन की महिषी। वासवदिकु, वासवदिशा = पूर्वदिशा जिसका अधिपति इंद्र है।

वासव^२—वि० १ वसु सवधी। २ इन्द्र सवधी। इन्द्र का [को०]।

वासवानुज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ उपेन्द्र। विष्णु। २. कृष्णचंद्र।

वासवार—सञ्ज्ञा पुं० [देशी०] घोड़ा। तुरग।—देशी०, पृ० २६६।

वासवावरज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वासवावास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आकाश। गगन [को०]।

वासवाशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] इन्द्र की दिशा। पूर्व दिशा।

वासवि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र के पुत्र—१ अर्जुन। २ बालि। ३ जयत।

वासवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगंधा।

वासवेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

वाससु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। कपड़ा। २ आच्छादन। परदा (को०)। ३ प्रेत पट। वाच्छादन (को०)। ४ वाणपुंख। तीर के पिछले भाग में लगाया जानेवाला पर (को०)। ५ रुई। कपास (को०)। जाल। सूत्रजाल (को०)।

वासा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वासक। अड़ूसा। उ०—वासा यह तर पै तुम्हें वासा वासर येक।—दीन० ग्र०, पृ० १०१। २ वासती। माधवी लता।

वासा^२—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'वासा'।

वासात्य—वि० [सं०] उप कालीन। उपाकाल का [को०]।

वासायनिक—वि० [सं०] दरवाजे दरवाजे घूमनेवाला [को०]।

वासि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का कुठार। बसूला। २ निवास। वास करना। रहना (को०)।

वासिक—वि० [अ० वासिक] मजदूर। हड़ [को०]।

वासिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वासक' [को०]।

वासित^१—वि० [सं०] १ सुगन्धित किया हुआ। महकाया हुआ। २ वस्त्राच्छादित। कपड़े से ढका हुआ। ३ जो ताजा न हो। बाली। ४. ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ५ जो रोका गया हो। ठहराया हुआ (को०)। ६. बसाया हुआ। आवाद (को०)। ७. मसालेदार (को०)। ८. आर्द्र। तर। भिगीया हुआ (को०)।

वासित^१—सञ्ज्ञा पुं० १. पक्षियों की चहचहाहट । कलरव । २ स्मृति-जन्य ज्ञान । वासना [को०] ।
 वासित^२—वि० [अ०] मध्यवर्ती । बीच का [को०] ।
 वासिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. स्त्री । २. हथिनी । ३. दे० 'वाशिता' ।
 ४. चन्द्रोत्तर के मत में आर्याछद्र का एक भेद, जिसमें ६ गुरु और २६ लघु वर्ण होते हैं ।
 वासिल—वि० [अ०] १. पहुँचाया हुआ । प्राप्त । २. मिलनेवाला । मुलाकात करनेवाला [को०] । ३. सटा हुआ । संयुक्त [को०] । ४. मिला हुआ । जो वसूल हुआ हो ।
 यौ०—वासिल बाकी = वसूल और बाकी कम । उ०—वासिल बाकी स्याहा मुजमिल सब अधरम की बाकी । चित्रगुप्त होते मुस्तीकी शरण गहों में काकी ।—सूर (शब्द०) ।
 वासिलात—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो वसूल हुआ हो ।—वसूल हुए धन का योग ।
 विशेष—इसका प्रयोग बहुवचन में होता है ।
 वासिष्टवा—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. रक्त । रुधिर । २. दे० 'वासिष्ठ' ।
 वासिष्ठ^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० वाशिष्ठी] वाशिष्ठ संबंधी । २. वाशिष्ठ द्वारा कृत ।
 वासिष्ठ^२—सञ्ज्ञा पुं० वाशिष्ठ ऋषि का पुत्र । २. दे० 'वासिष्ठ' [को०] ।
 वासिष्ठी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. उत्तर दिशा । २. गोमती नदी [को०] ।
 वासी^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासिन्] रहनेवाला । बसनेवाला । अधिवासी । जैसे, ग्रामवासी । नगरवासी ।
 वासी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वसूला जिससे बढई लकड़ी छीलते हैं । तक्षणी ।
 वासुधरेय—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासुधरेय] एक नरक का नाम [को०] ।
 वासुधरेयो—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वासुधरेयी] वसुंधरा की पुत्री । भूमिजा । भूमिगत । मीता [को०] ।
 वासु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु । २. परमात्मा । ३. आत्मा [को०] । ४. पुनर्वसु नक्षत्र ।
 वासुक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासुकि] दे० 'वासुकि' । उ०—दंड भर सेवा करै, वासुक इद्र कुबेर । गनु गंधर्व किन्नर सब, जच्छ रहे होइ चेर ।—माववानल०, पृ० १८६ ।
 वासुकि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] आठ नागों में से दूसरा नागराज ।
 यौ०—वासुकिमुता = वासुकि की पुत्री । सुलोचना ।
 वासुकी—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासुक] दे० 'वासुकि' ।
 वासुकेय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वासुकि [को०] ।
 यौ०—वासुकेयस्वसा = मनमा देवी ।
 वासुदेव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वसुदेव के पुत्र, श्री कृष्णचंद्र । २. मुनि-श्रेष्ठ कपिल का एक नाम [को०] । ३. घोड़ा । अश्व [को०] । ४. जैनों का एक वंश [को०] । ५. हरिवंश के अनुसार पुंड्र देश के राजा का नाम [को०] । ६. पीपल का पेड़ । अश्वत्थ । (बोलचाल) ।
 वासुदेवक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वासुदेव । २. श्रीकृष्ण का उपासक । ३. वह जिसमें वासुदेव नाम कलंकित हो [को०] ।
 वासुदेवप्रियकारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वासुदेवप्रियङ्गुरी] शतावरी । वासुदेवी [को०] ।

वासुदेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शतावरी [को०] ।
 वासुभद्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वासुदेव । श्रीकृष्णचंद्र ।
 वासुमद—सञ्ज्ञा पुं० [स० वासुमन्द] एक साम का नाम ।
 वासुरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. स्त्री । २. हथिनी । ३. रात्रि । रात । ४. भूमि । जमीन ।
 वासू—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नाटकी की परिभाषा में स्त्रियों के लिये सर्वोपन का शब्द ।
 वासूला^१—सञ्ज्ञा पुं० [हि०] दे० 'वसूला' । उ०—ऊछले खले तज तुरग एक । वासूले पूलासूं विमेल ।—रा० रू०, पृ० २४६ ।
 वासोस्त—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वासोस्त] उर्दू कविता का एक प्रकार, जो मुसद्स के ढग का होता है और जिसमें प्रेमिका के व्यवहार से रुष्ट होकर प्रेम छोड़ने और प्रेमिका के त्याग का उल्लेख होता है [को०] ।
 वासोस्वा—वि० [अ० वासोस्तह] १. जला हुआ । २. रुष्ट [को०] ।
 वासोद—वि० [स०] जो वस्त्र देता हो । वस्त्रदाता [को०] ।
 वासोभृत्—वि० [स०] जो वस्त्र पहने हुए हो । जिसने वस्त्र पहना हो [को०] ।
 वासौकस्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. निवासगृह । २. तबू । खेमा ।
 वास्कट—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वेस्टकोट] फुटूही ।
 वास्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बकरा ।
 वास्तव^१—वि० [स०] प्रकृत । यथार्थ । मत्त ।
 यौ०—वास्तव में = सचमुच । सत्यत । असल में । दरअसल । वाकई ।
 वास्तव^२—सञ्ज्ञा पुं० परमार्थभूत । असल तत्व ।
 वास्तविक^१—वि० [स०] १. परमार्थ । मत्त । प्राकृत । २. यथार्थ । ठीक ।
 वास्तविक^२—सञ्ज्ञा पुं० १. मालाकार । माली । २. यथार्थवादी [को०] ।
 वास्तवोषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] निशा । रात [को०] ।
 वास्तव्य^१—वि० [स०] १. रहने योग्य । बसने योग्य । २. बसनेवाला । अधिवासी । ३. अनुपयोगी होने से त्यक्त्वा वा छोड़ा हुआ [को०] । ४. आवाद । जो बसा हुआ हो [को०] ।
 वास्तव्य^२—सञ्ज्ञा पुं० वस्ती । आवादी ।
 वास्ता—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १. सबध । लगाव ।
 मुहा०—वास्ता पडना = व्यवहार का अवसर आना । काम पडना । जैसे—तुमको उससे वस्ता नहीं पडा है, नहीं तो जानते । वास्ता पैदा करना = ढव लगाव । सबध जोडना । वास्ता रखना = लगाव रखना । सबध रखना ।
 २. मिश्रता । ३. स्त्री और पुरुष का अनुचित संबंध । ४. वह जो मध्यस्थ हो [को०] ।
 वास्तिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बकरो का समूह [को०] ।
 वास्तु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. शुभ निवासयोग्य स्थान । वह स्थान जिस-पर घर उठाया जाय । डोह ।
 विशेष—घर बनाने के पहले वास्तु या डोह के शुभाशुभ का विचार किया जाता है । वृत्तहिता में वास्तुह के उत्तम, मध्यम, आदि क्रम से पाँच भेद बड़े गए हैं ।

२ घर । गृह । मकान । ३ इमारत । ४ कक्ष । कमरा (को०) ।
५ दे० 'वास्तुक'—१, २ । ६ आठ वस्तुओं में से एक का नाम (को०) । ७ एक प्रकार का अन्न (को०) ।

वास्तुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वयुआ नाम का साग । २. पुनर्नवा । गदहपुरना ।

यौ०—वास्तुवर्म = गृहनिर्माण । वास्तुकाल = भवन बनाने का उपयुक्त एव शुभ समय । वास्तुकालिग । वास्तुकीर्ण = एक प्रकार का पट मङ्ग । वास्तुज = घरेलू । गृह संबंधी । वास्तुज्ञान = दे० 'वास्तुकला' । वास्तुदेव, वास्तुदेवता = गृहदेवता । वास्तुनर = आदर्श भवन । वास्तुपि । वास्तुपति । वास्तुपुरुष । वास्तुपूजा । वास्तुयाग ।

वास्तुकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक शाक । चिल्ली शाक [को०] ।

वास्तुकला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वस्तु या भवननिर्माण की कला । उ०—उसमे न तो मूर्तिकला और न वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों के सौंदर्य की प्रशंसा करने का क्षमता थी ।—पा० सा० सि०, पु० १२१ ।

वास्तुकालिग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वास्तुकालिङ्ग] तरबूज । कलीदा ।

वास्तुप, वास्तुपति सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वास्तु का अधिष्ठाता देवता । उस स्थान का देवता जिसमें घर बना हो । वास्तुपुरुष ।

वास्तुपुरुष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वास्तुपति' ।

वास्तुपूजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वास्तुपुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृहप्रवेश के आरंभ में की जाती है ।

वास्तुवधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वास्तुवन्धन] गृहनिर्माण [को०] ।

वास्तुयाग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह याग जो नवीन गृह में प्रवेश करने के समय किया जाता है ।

वास्तुविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे वास्तु या इमारत के संबंध की सभी बातों का परिज्ञान होता है । भवननिर्माण की कला ।

वास्तुविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गृहनिर्माण [को०] ।

वास्तुशान्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वास्तुशान्ति] व शांति आदि कर्म जा नवीन गृह में प्रवेश करते समय किए जाते हैं ।

पर्या०—वास्तुशमन । वास्तुप्रशमन । वास्तुयाग । वास्तुपशम । वास्तुपशमन, आदि ।

वास्तुशाक - सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वयुआ [को०] ।

वास्तुशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वास्तुविषयक शास्त्र । दे० 'वास्तुविद्या' ।

वास्तुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक शाक । वयुआ ।

वास्ते—अव्य० [प्र०] १ लिये । निमित्त । जैसे,—तुम्हारे वस्ते आम लाया हूँ । २ हेतु । सबब । जैसे—तुम किस वास्ते वहाँ जाते हो ?

वास्तेय—वि० [म०] १ वस्ति सबधी । कुच्छि वा उदर सबधी । २ वस्त्र, वस्तु और वाम्न सबधी । बसाने लायक । आवाद करने लायक [को०] ।

वास्तोष्पति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ इन्द्र । मुरपति । २ देवता मात्र । ३ वास्तुपति ।

वास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रथ जिसपर परदा वा ओहार पड़ा हो । वस्त्र से ढका रथ [को०] ।

वास्त्र—वि० १ वस्त्रनिर्मित । २ वस्त्र से आच्छादित या ढँका हुआ [को०] ।

वास्थ—वि० [सं०] — में रहनेवाला । जलस्थ ।

वास्प—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ गरमी । ऊष्मा । २ लोहा । ३ भाप । वाष्प ।

वास्पेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नागकेसर ।

वास्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुठार । कुल्हाड़ा [को०] ।

वास्थ—वि० १ ढँकने या आच्छादन करने लायक । २ आवाद करने या बसाने योग्य [को०] ।

वास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दिवस । दिन [को०] ।

वास्त्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सवत्मा गौ । गाय । २ माता [को०] ।

वाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वाहन । सवारी । २ लादकर या खींचकर ले चलनेवाला । ३ घोड़ा । ४ बैल । ५ भैंसा । ६ वायु । ७ बाहु । भुजा (को०) । ८ ढोना । ले जाना । वहन करना (को०) । ९. अर्जन । प्रापण (को०) । १० प्रवाह । धारा । बहाव (को०) । ११ प्राचीन काल का एक तौल या मान जो चार गोणी का होता था ।

वाह—वि० १ लादकर या खींचकर ले जानेवाला । जैसे, अनुवाह । २ प्रवहमान । बहनेवाला [को०] ।

वाह—अव्य० [फा०] १. प्रशंसासूचक शब्द । धन्य । जैसे,—वाह ! यह तुम्हारा ही काम था ।

विशेष—कभी कभी अत्यंत हर्ष प्रकट करने के लिये यह शब्द दो बार भी आता है । जैसे, वाह वाह, आ गए ।

२ आश्चर्यसूचक शब्द । जैसे,—वाह ! मियाँ काले, क्या खूब रंग निकाले । ३ घृणाद्योतक शब्द । जैसे,—वाह, तुम्हारा यह मुँह । ४ आनंदसूचक शब्द ।

वाहक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लादकर या खींचकर वस्तुओं को ले चलनेवाला । बोझ टोने या खींचनेवाला । जैसे, भारवाहक । २ सारथी । ३ अश्वारोही । घुड़सवार (को०) । ४ जल-प्रणाली । नहर (को०) ।

वाहन—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ सवारी । २ धारण करना या ले जाना (को०) । ३ हाँकना । गति में प्रवृत्त करना । जैसे, घोड़े आदि को (को०) । ४ गज । हाथी (को०) । ५ नौका का दंड । डांडा । पतवार (को०) ।

वाहनप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] अश्व आदि का परिचारक । माईस [को०] ।

वाहनश्रेष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अश्व । घोड़ा [को०] ।

वाहना—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] सेना [को०] ।

वाहना—क्रि० सं० [म० वहन] दे० 'वाहना' ।

वाहरिपु—सञ्ज्ञा पुं० [म०] महिप । भैंसा ।

वाहल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जलप्रणाली । प्रवाह । स्रोत । जल की धारा । २ मान । वाह । प्रवहण [को०] ।

वाहला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाहल] धारा । प्रवाह । जल का प्रवाह या पूर । उ०—जउ साहिब तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर । बिचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरे दूर ।—ढोला०, दू० १४७ ।

वाहला—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वल्लभ, प्रा० वल्लह] प्रिय । स्वामी । उ०—मारा वाहला जी, विपदा थी वारे ।—दादू०, पृ० ५१६ ।

वाहवाह—अव्य० [फ्रा० वाह] बहुत अच्छा । साधुवाद । प्रशंसासूचक शब्द । उ०—जब अपने प्राण पिंड को जानो । तब प्रगटी वाह-वाह की बानी ।—प्राण०, पृ० १६१ ।

मुहा०—वाह वाह होना = खूब प्रसन्न होना । उ०—जवाने खल्क भी 'हातिम' अजब तमाशा है । जिघर वह निकले उघर वाह वाह निकले है ।—कविता को०, भा० ४, पृ० ४५ ।

वाहवाही—सच्चा स्त्री० [फ्रा०] लोगो की प्रशंसा । स्तुति । साधुवाद ।

मुहा०—वाहवाही लेना या लूटना = लोगो की प्रशंसा का पात्र बनना । जैसे,—दूसरे का माल बाँटकर उसने खूब वाहवाही लूटी ।

वाहस्—सच्चा पुं० [सं०] १. अग्नि । २. ऋचा । सूक्त [को०] ।

वाहस—सच्चा पुं० [सं०] १. अजगर । २. अग्नि । पावक । ३. एक साग । ४. भरना [को०] ।

वाहा—सच्चा स्त्री० [सं०] बाहु । भुजा [को०] ।

वाहावाहवि अव्य० [सं०] १. हाथोहाथ । २. आमने सामने [को०] ।

वाहावाहवी—सच्चा स्त्री० [सं०] हाथ से होनेवाला युद्ध [को०] ।

वाहिक—सच्चा पुं० [सं०] १. गाड़ी । छकड़ा । २. ढक्का । ३. बोझ ढोने की गाड़ी [को०] ।

वाहित^१—वि० [सं०] १. प्रवाहित । २. चलाया हुआ । चालित । ३. वचित । ४. जो वहन किया गया हो । ढोया हुआ । ५. विताया हुआ । व्यतीत किया हुआ [को०] । ६. नष्ट । विध्वस्त [को०] । ७. जिसके निमित्त चेष्टा की गई हो [को०] ।

वाहित^२—सच्चा पुं० बड़ा भार । भारी बोझ [को०] ।

वाहित्य—सच्चा पुं० [सं०] हाथी के मस्तक के बीच का भाग [को०] ।

वाहिद^१—सच्चा पुं० [अ०] १. एक की सैख्या । २. ईश्वर । खुदा । उ०—है वाहिद और युक्ज्वा वही । गुन ज्ञान की टकसार है ।—कबीर म०, पृ० ३६१ ।

वाहिद^२—वि० यकला । अद्वय । एक । इकला [को०] ।

वाहिनी—सच्चा स्त्री० [सं०] १. सेना । २. सेना का एक भेद, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे । एक वाहिनी में तीन गण होते थे । ३. नदी [को०] ।

यो०—वाहिनीनिवेश = सेना की छावनी । मन्थशिविर । वाहिनी-पति ।

वाहिनीक—सच्चा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनी' [को०] ।

वाहिनीपति—सच्चा पुं० [सं०] १. वाहिनी नामक सेना विभाग का अधिपति या प्रधान । २. सेनापति । ३. नदियों का अधिपति । समुद्र [को०] ।

वाहिनीश—सच्चा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनीपति' ।

वाहिम—वि० [अ०] १. शक्की । वहमी । २. कल्पना करनेवाला [को०] ।

वाहिमा—सच्चा पुं० [अ० वाहिमह] १. भ्रम । भ्राति । वहम । २. कल्पना शक्ति [को०] ।

वाहियात^१—वि० [अ० वाही + फ्रा० यात] १. व्यर्थ । फज़ूल । जैसे,—तुम तो यो ही वाहियात बका करते हो । २. बुरा । खराब । जैसे,—वाहियात आदमियों का साथ मत किया करो ।

हि० श० ९-१३

वाहियात^२—सच्चा स्त्री० निरर्थक और व्यर्थ की बात ।

वाही^१—वि० [अ०] १. सुस्त । ढोला । २. निक्म्मा । ३. बुद्धिहीन । भूल । उ०—पीठि परो ईठि सो बसीठि बिनु ढोठ मन नीठ न संभारै वाही मोहि मडि रहो है ।—देव (शब्द०) । ४. भ्रवारा । ५. बेठिकाने का । ६. वेहूदा । उ०—वाही हाँ खासे ।—सं०, पृ० ४ ।

वाही^२—सर्व० [हि०] दे० 'वही' । उ०—(क) वाही थी गुण बेलड़ी, वाही थी रस बेलि । पीणई पीवो मारवी, चाल्या सूटी मेलि ।—ढोला०, दू० ६१० । (ख) उपरना वाही कै खु रह्यो । जाही के उर बसे स्यामघन, निसि को जहँ सुख गह्यो ।—नंद० ग्रं०, पृ० ३५५ ।

वाही^३—वि० [सं० वाहिन्] १. वहन करने या ढोनेवाला । २. रथ आदि खींचनेवाला । ३. उत्पन्न करनेवाला । पैदा करने या लानेवाला । ४. बहनेवाला । ५. गिराने या प्रवाहित करने वाला [को०] ।

वाही^४—सच्चा पुं० रथ । गाड़ी [को०] ।

वाहीतवाही^१—वि० [अ० वाही + तवाही] १. बेहूदा । भ्रवारा । क्रि० प्र०—फिरना ।

२. अद्वंद । बेसिर पंर का ।

क्रि० प्र०—बकना ।

वाहीतवाही^२—सच्चा स्त्री० अद्वंद बातें । गाली गलौज । उ०—वेगम साहब के सामने लगी वाहीतवाही बकने, बड़ी एक हो ।—सं०, पृ० २७ ।

वाहु—सच्चा स्त्री० [मं०] १. हाथ के ऊपर का भाग जो कुहनी और कंधे के बीच में होता है । भुजदंड । दे० 'बाहु' । २. गणित शास्त्र में त्रिकोणादि क्षेत्रों के किनारे की (पार्श्व) रेखा । भुजा ।

वाहुक—सच्चा पुं० [सं०] दे० 'बाहुक' [को०] ।

वाहुमूल—सच्चा पुं० [सं०] कंधे और बांह का जोड़ । कांख ।

वाहुल—सच्चा पुं० [सं०] १. कार्तिक का महीना । २. शाक्य मुनि के पुत्र का नाम । दे० 'बाहुल' [को०] ।

वाहुल्य—सच्चा पुं० [सं०] अधिक्य । अधिकता । वाहुल्य ।

वाहुवार—सच्चा पुं० [सं०] बहेड़े का वृक्ष ।

वाह्य^१—सच्चा पुं० [सं०] १. यान । रथ । सवारी । २. भारवाही पशु । दे० 'बाह्य' ।

वाह्य^२—क्रि० वि० १. बाहर । २. प्रलग । जैसे,—लोकवाह्य ।

वाह्य आतिथ्य—सच्चा पुं० [सं०] बाहर से आया हुआ विदेशी माल ।

वाह्यक—सच्चा पुं० [सं०] रथ [को०] ।

वाह्यकी—सच्चा स्त्री० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक विषला कीट [को०] ।

वाह्यान्तर^१—वि० [सं० वाह्यान्तर] भीतर और बाहर का । जैसे,—वाह्यान्तर शुद्धि ।

वाह्यान्तर^२—क्रि० वि० भीतर और बाहर ।

वाह्याभरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाहरी भूषण । बाहर की भूषा, या सजावट, झलकार आदि । उ०—झलकार सिद्धात गान्य के केवल वाह्याभरण पर जोर देते हैं ।—प्रस्व०, पृ० १५६ ।

वाह्यायाम—सञ्ज्ञा, पुं० [सं०] एक प्रकार का वात रोग ।—माधव०, पृ० १३६ ।

वाह्याली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] घोड़े के चलने योग्य सड़क [को०] ।

यौ०—वाह्यालीभू=वाह्याली ।

वाह्येन्द्रिय—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वाह्येन्द्रिय] पाँचो ज्ञानेन्द्रियाँ जिनका काम बाह्य विषयो का ग्रहण करना है । आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा ।

वाह्लि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाह्लीक' ।

यौ०—वाह्लिज = बलख या वाह्लीक का अश्व ।

वाह्लीक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक जनपद जो भारत की उत्तरपश्चिम सीमा पर था । गांधार के पास का एक प्रदेश ।

विशेष—साधारणतः आजकल के 'बलख', जो अफगानिस्तान के उत्तरी भाग में है, के आसपास का प्रदेश ही, जिसे प्राचीन पारसी 'वक्तार' और यूनानी 'वैक्ट्रिया' कहते थे, वाह्लीक माना जाता है, पर पाश्चात्य पुरातत्वविद् इसे आजकल के हिंदुस्तान के बाहर नहीं मानना चाहते ।

२. वाह्लीक देश का घोड़ा । ३. कुकूम । केसर । ४. हींग । ५. एक प्रमुख गर्ध्व का नाम ।

विख—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहख] घोड़े का छुर [को०] ।

विगना—वि० [सं० व्यङ्ग्य ?] व्यङ्ग्यजन्य । व्यङ्ग्य । मकेतित । उ०—दुसरी बानी विगन कही । पिडज बानि मे बोल सही ।—कबीर सा०, पृ० ८८० ।

विगेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ?] अग्नि । आग ।

विजना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जना] दे० 'व्यञ्जना' । उ०—कवित की जाति बहु भाँति गनि रीत धुनि, लच्छना कही लो वाच्य विजना जनाओ मैं ।—दीन० ग्रं०, पृ० ६ ।

विजामर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विज्जामर] आँख का वह भाग जो सफेद होता है ।

विजोलि, विजोली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विञ्जोलि, विञ्जोली] श्रेणी । पक्ति । कतार ।

विम्भ—वि० [सं० विन्ध्य या विद्ध, प्रा० विज्भ] घना । गभीर । गम्भिर । उ०—नयणा आटा विम्भ वन, मनह न आडउ कोह ।—ढोला०, दू० २१३ ।

विम्भासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यवासिनी] दुर्गा, विन्ध्य पर निवास करनेवाली देवी । उ०—एक सुदिन संख्या समय विम्भासिनी के ध्यान ।—पृ० रा०, २४ । ४६१ ।

विद'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्द] १. अर्बती के एक राजा का नाम । २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ३. दिन का एक विशेष भाग । ४. प्राप्ति । लाभ ।

विद'—वि० १. प्राप्त करनेवाला । लाभ करनेवाला । २. जिसने प्राप्त किया हो ।

विद'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्द] दे० 'विन्द' । उ०—कनिदजा के मुन मून नतान के विद वितान तने है ।—राम (मन्द०) ।

विद'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्द] १० 'विदु' ।

विदक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दक] १. प्राप्त करनेवाला । पापाना । २. जाननेवाला । ज्ञाता । यत्ता । उ०—(१) परम मायु परमाय्य विदक । मभु उपायक नहि हरि निदक ।—तुलसी (मन्द०) । (२) भय कि परहि परमात्म रिपक । मुखी कि होहि पबहु परनिदक ।—तुलसी (मन्द०) ।

विदणी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वन्दीजन] स्तुतिपाठक । उ०—जै जय मयद विदण भरी, वदण राजा बामहा । लागीय सहे भ्रकवर लियी, दुरगे दागण गामहा ।—ग० रं०, पृ० १७३ ।

विदु'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दु] १. जनक । पुँद । २. पुँदकी । विदी । ३. रग की विदी जो हाथी ने मरनक पर मोना के निरे बनाई जाती है । ४. धुस्वार । ५. जून्व । ६. दाँत का सगाया हुआ चूत । दत्ता । ७. दो भोहों के बीच की विदी । ८. एक वृँद परिमाण । ९. रेमाणित के अनुसार वह जिनका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके । १०. छोटा टुटड़ा । कण । कणी । उ०—फनक विदु दुइ चारि त देगे । गरि मीम मीय सम मेगे ।—तुलसी (मन्द०) । ११. रगो का एक दोष या घन्वा जो चार प्रकार का कहा गया है—प्रावत्त (गोन), तति (नवा), प्रारवन (सान) और यव (जो के आकार का) १२. मूँज या सरदई का धूपी ।

विदु'—वि० १. जानी । वेत्ता । जानवार । २. उदार । दाता । ३. जानने योग्य ।

विदुचित्रक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विदुचित्रक] वह मृग जिनके शरीर पर मोन मोन सफेद बुँदियाँ होती हैं । मकेर चित्तियों का हिरन ।

विदुजाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुजाल] मकेर विदियों का समूह जो हाथों के मस्तक और मूँद पर बनाया जाता है ।

विदुजालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुजालक] हाथियों का पथक नामक रोग ।

विदुत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विदुत्त] १. चौराट आदि की विमात । २. सारिफलक । ३. तुल्यक ।

विदुतीर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विदुतीर्थ] काशी के प्रसिद्ध पंचनद तीर्थ का नामांतर जहाँ विदुमाधव का मन्दिर है । पंचगंगा ।

विदुन्विणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विदुन्विणी] गाने में खरसाधन की एक प्रणाली जिसमें तीन बार एक स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके बाद के स्वर का उच्चारण करते हैं । फिर तीन बार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक बार तीसरे स्वर का उच्चारण करते हैं, और अंत में तीन बार सातवें स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके भगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते हैं । यथा—प्रारोही—सा सा सा रे, रे रे रे ग, ग ग ग म, म म म प, प प प ध, ध ध ध नि, नि नि नि सा । अवरोही—सा सा सा नि, नि नि नि ध, ध ध ध प, प प प म, म म म ग, ग ग ग रे, रे रे रे सा ।

विदुपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुपत्र] भोजपत्र ।

विदुमति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुमति] दे० 'विदुमती' ।

विदुमती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुमती] राजा शशिविदु की कन्या का नाम ।

विदुमाधव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुमाधव] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति का नाम ।

विशेष—इनके विषय में काशी खड में लिखा है कि एक बार भगवान् विष्णु शिव जी की समति पाकर काशी आए और यहाँ के राजा दिवोदास को बाहर निकाल दिया । उस समय अग्निविदु नामक ऋषि ने विष्णु की स्तुति की और भगवान् ने प्रसन्न होकर उससे वर माँगने के लिये कहा । ऋषि ने कहा कि मोक्षाभिलाषियों के हितार्थ पचनद तीर्थ पर आप अवस्थान करें और हमारे नाम से प्रसिद्ध होकर सबको मुक्ति प्रदान करें । विष्णु भगवान् ने 'एवमस्तु' कहकर कहा कि आज से हम तुम्हारा आधा नाम अपने नाम के आगे जोड़कर विदुमाधव नाम से प्रख्यात होकर पचनद तीर्थ (पचगंगा) पर वास करेंगे । पचनद तीर्थ भी विदुतीर्थ कहलावेगा ।

विदुर^(५)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विदु + र (प्रत्यय)] किसी पदार्थ पर दूसरे रंग के लगे हुए छोटे छोटे चिह्न । बुंदकी । उ०—सिंदुर विदुर वान के चिह्न चुनो जरि केमर कुंदन कीज ।—सुंदरी सं० । (शब्द०) ।

विदुराजि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुराजि] एक प्रकार का साँप । राजमन ।

विदुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुल] अग्न्या नामक कीड़ा जिसके छूने से शरीर में फफोले निकल आते हैं ।

विदुसर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुसर] १ पुराणानुसार एक सरोवर का नाम जिसके उत्तर कैलाश पर्वत है ।

विशेष—कहते हैं, भगीरथ ने गंगा के लिये इसी सर के किनारे तप किया था । गंगा जो इसी स्थान से निकली हैं । देवताओं ने यहाँ अनेक यज्ञ किए थे और भगवती गंगा के जितने विदु पृथ्वी पर उतरते समय गिरे, वे इसी स्थान पर थे । इससे वह सर बन गया और विदुसर कहलाने लगा ।

२ उड़ीसा में भुवनेश्वर क्षेत्र के एक प्राचीन सरोवर का नाम ।

विदुसार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्दुसार] चद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम ।

विशेष—यह चद्रगुप्त के बाद मगध का राजा हुआ था । सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था ।

विध^(५)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्य] विन्ध्याचल । विन्ध्य पर्वत । उ०—कुसुमउ देखि सनेह सँभारा । बढ़त विध जिमि घटज निवारा ।—तुलसी (शब्द०) ।

विधपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्धपत्र] बेलसोठ । विल्व शलाघु ।

विधपत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्धपत्री] दे० 'विधपत्र' ।

विधस—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्धस] चद्रमा [को०] ।

विन्ध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्य] एक प्रसिद्ध पर्वत या पर्वतश्रेणी का नाम ।

विशेष—यह पर्वत भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है । आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर यह पर्वत है । विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश दक्षिणापथ या दक्षिण कहलाता है । इससे दो प्रधान नदियाँ नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा में बहकर अरब की खाड़ी में गिरती हैं । इस पर्वत के पत्थर प्रायः बलुए और परतदार होते हैं । इसकी अनेक शाखा प्रशाखाएँ सतपुरा आदि नाम से विख्यात हैं । पुराणानुसार यह सात कुलपर्वतों में है और मनु के अनुसार मध्य देश की दक्षिणी सीमा है । महाभारत में कथा है कि विन्ध्य ने सूर्य से कहा कि मेरे के समान तुम हमारी प्रदक्षिणा किया करो । जब सूर्य ने न माना, तब विन्ध्य ऊपर बढ़ने लगा और यह आशंका हुई कि यह सूर्य का मार्ग ही रोक देगा । देवताओं ने अगस्त्य जी से प्रार्थना की । अगस्त्य उसके पास गए और उसने साष्टांग दंडवत किया । मुनि ने कहा कि जबतक मैं न-लोढ़ूँ, तबतक इसी तरह पड़े रहना । इतना कहकर अगस्त्य जी चले गए और फिर वापस नहीं आए । कहते हैं कि इसी लिये यह पर्वत अब तक ज्यों का त्यों लेटा पड़ा है, और इसी लिये इसका इतना अधिक विस्तार है ।

यौं—विन्ध्यकूट । विन्ध्यकूटक । विन्ध्यकूटन । विन्ध्यकैलास-वासिनी । विन्ध्यगिरि = विन्ध्याचल । विन्ध्यचूलक । विन्ध्यचूलिक । विन्ध्यनिलया । विन्ध्यनिवासी । विन्ध्यवासी । विन्ध्यपति । विन्ध्यवासिनी । विन्ध्यशैल । विन्ध्यस्थ ।

विन्ध्यकूट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यकूट] १. विन्ध्य पर्वत । २. अगस्त्य मुनि का एक नाम ।

विन्ध्यकूटक, विन्ध्यकूटन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यकूटक, विन्ध्यकूटन] विन्ध्य पर्वत । विन्ध्यकूट । २ अगस्त्य मुनि ।

विन्ध्यकैलासवासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यकैलासवासिनी] विन्ध्य-वासिनी देवी [को०] ।

विन्ध्यगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यगिरि] विन्ध्य नाम का पर्वत ।

विन्ध्यचूलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यचूलक] विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश । महाभारत के अनुसार यहाँ एक प्राचीन जंगली जाति बसती थी ।

विन्ध्यचूलिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यचूलिक] दे० 'विन्ध्यचूलक' ।

विन्ध्यनिलया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यनिलया] दे० 'विन्ध्यवासिनी' ।

विन्ध्यवासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यवासिनी] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति ।

विशेष—यह मूर्ति मिर्जापुर जिले में विन्ध्य के एक टीले पर अवस्थित है । पुराणों में इस मूर्ति के सबंध में अनेक आख्यान हैं । वामन पुराण का मत है कि इंद्र ने भगवती दुर्गा को विन्ध्य पर्वत पर ले जाकर स्थापित किया था । किसी किसी का मत है कि सती के देह परित्याग करने पर जब शिव जी उनके शव को अपनी पीठ पर लादकर फिरने लगे, तब विष्णु धनुष बाण लेकर उनके पीछे पीछे चले, और जहाँ जहाँ अवकाश पाया, शव को काट काटकर गिराते गए । उसी समय एक अंग यहाँ भी गिरा था, जिससे यह सिद्धांश हो गया । यह मूर्ति बहुत प्राचीन है, क्योंकि प्राकृत के गोइवहो (गोइवध)

काव्य मे वाकपतिराज ने, जो आठवीं शताब्दी मे था, इसका वर्णन किया है। राजतरंगिणी मे विष्यवासिनी को अमरवासिनी नाम से लिखा है। जिस स्थान पर यह मूर्ति है, वह स्थान विष्याचल कहलाता है।

विष्यवासी—सद्या पुं [सं विन्ध्यवासिन्] १. व्याकरण के एक आचार्य व्याहि मुनि का एक नाम। २. वह जो विष्य का निवासी हो। विष्य पर्वत का रहनेवाला।

विष्यशक्ति—सद्या पुं [सं विन्ध्यशक्ति] एक यवन राजा का नाम।

विष्यशैल—सद्या पुं [सं विन्ध्यशैल] विष्य नाम का पर्वत।

विष्यस्थ—सद्या पुं [सं विन्ध्यस्थ] १. व्याहि मुनि का एक नाम। २. विष्य का निवासी।

विष्या^१—सद्या स्त्री [सं विन्ध्या] १. एक नदी का नाम। २. सवली नाम का वृक्ष जिसे हरफारेवटी भी कहते हैं (को०)। ३. इलायची (को०)। ४. समय का एक अत्यंत सूक्ष्म मान या विभाग दे० 'लुटि'—८ (को०)।

विष्या^२—सद्या पुं दे० 'विष्य'।

विष्याचल—सद्या पुं [सं विन्ध्याचल] १. विष्य पर्वत। २. विष्य पर्वत की एक शाखा पर बसी हुई एक छोटी सी बस्ती जिसमे विष्यवासिनी देवी का मंदिर है। यह मिर्जापुर से थोड़ी दूर पर है।

विष्याटवी—सद्या पुं [सं विन्ध्याटवी] विष्य का भरण्य। विष्य पर्वत पर का जंगल (को०)।

विष्याद्रि—सद्या पुं [सं विन्ध्याद्रि] विष्य पर्वत।

विष्यारि—सद्या पुं [सं विन्ध्यारि] भगस्त्य मुनि (को०)।

विष्यावली—सद्या स्त्री [सं विन्ध्यावली] राजा बलि की स्त्री का नाम।

यौ०—विष्यावली पुत्र, विष्यावली सुत = वाणासुर।

विब—सद्या पुं [सं विम्ब] दे० 'विब' (को०)।

विबक—सद्या पुं [सं विम्बक] दे० 'विबक' (को०)।

विबट—सद्या पुं [सं विम्बट] सरसो का पौधा।

विवा, विविका—सद्या स्त्री [सं विम्बा, विम्बिका] एक लता। कुंदरु।

विंबु—सद्या पुं [सं विम्बु] सुपारी का पौधा। दे० 'विंबु' (को०)।

विंबोष्ठ, विवोष्ठ—सद्या पुं [सं विम्बोष्ठ, विम्बोष्ठ] दे० 'विंबोष्ठ'।

विश^१—वि० [सं] [वि० स्त्री विशी] क्रम में बीस के स्थान पर पढ़ने-वाला। बीसवां।

विश^२—सद्या पुं बीसवां हिस्सा। बीसवां अंश (को०)।

विशक—वि० [सं] [वि० स्त्री विशकी] १. बीस (रूपए आदि) में खरीदा हुआ। २. बीस अंश या भाग का। ३. बीस (को०)।

विशत—वि० [सं] बीस। (कुछ समस्त शब्दों मे)।

विशति^१—सद्या स्त्री [सं] १. बीस की संख्या। २. इस संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२०। ३. सेना के व्यूह का एक प्रकार (को०)।

विशति^२—वि० जो गिनती में बीस हो।

विशतिक—वि० [सं] बीस के योग्य (को०)।

विशतितम—वि० [सं] बीसवां (को०)।

विशतिप—सद्या पुं [सं] बीस गाँवों का अधिपति।

विशतिवाहु, विशतिभुज—सद्या पुं [सं] रावण का एक नाम। विशदवाहु।

विशतिम—वि० [सं] बीसवां। बीस की संख्या का (को०)।

विशतीश—सद्या पुं [सं] बीस गाँवों का अधिपति।

विशतीशी—सद्या पुं [सं विशतीशिन] बीस गाँवों का अधिपति। विशतीश।

विंशी—सद्या पुं [सं विशिन्] बीस। विशति (को०)।

विशोत्तरी—सद्या स्त्री [सं] कर्मित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति, जिसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उनके विभाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की गणना की जाती है। यथा—

ग्रह	काल	नक्षत्र
सूर्य	६ वर्ष	वृश्चिक, उत्तर फाल्गुनी और उत्तर राशदा।
चंद्र	१० वर्ष	रोहिणी, हस्त और श्रवण।
मंगल	७ वर्ष	मृगशिरा, चित्रा और पनिष्ठा।
राहु	१८ वर्ष	आर्द्रा, स्वाती और शत-भिषा।
बृहस्पति	१६ वर्ष	पुनर्वसु, मिथुना और पूर्व भाद्र।
शनि	१६ वर्ष	पुष्य, अनुराधा और उत्तर भाद्र।
बुध	१७ वर्ष	अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती।
कतु	७ वर्ष	मघा, मूल और अश्विनी।
शुक्र	२० वर्ष	पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और भरणी।
कुल	१२० वर्ष	

वि कृधिका—सद्या स्त्री [सं वि कृधिका] १. भेटकों की बोलों। २. टर टर की आवाज। कर्कश ध्वनि। टर्राहट।

वि^१—उप० [सं] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है—१. पृथक्ता। वियोजन, जैसे,—वियोग। २. निषेध या अपरीत्य। जैसे,—विक्रय, विकच्छ। ३. प्रमाण। माग। जैसे,—विभाग। ४. क्रम। व्यवस्था। जैसे,—विधा। ५. विशेषता; जैसे,—विकराल, विहीन। ६. वैरूप्य; जैसे,—विविध।

वि^२—सद्या पुं [सं] १. मग्न। २. आकाश। ३. बलु। आँख। ४. बोझ। ५. सोम का एक नाम। ६. पत्नी। ७. बागडोर (को०)।

वि^३—सद्या स्त्री पत्नी।

विश्वारिया—सद्या पुं [वि०] पूर्वाह्न भोजन। वह भोजन जो दोपहर के पहले किया जाता है।—देशी०, पुं० ३०१।

विश्राल—सञ्ज्ञा पुं० [देशी, तुल० बंग० बिकाल] सञ्ज्ञा । सायकाल ।—
देशी०, पृ० ३१० ।

वि०—वि० [सं० द्वितीय] अन्य । दूसरा । उ०—सोमेसर परिगह
प्रबध मित उप्पने खिन्नवर । हुए बीस अजमेर वि० उप्पने अपर
घर ।—पृ० २०, १ । ५८३ ।

विककट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकड्कट] १. गोक्षुर । गोखरू । २. एक
वृक्ष । विककत (को०) ।

विककत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकड्कत] एक जगली वृक्ष का नाम । यज्ञादि
में सुवा इमी का बनता था ।

विशेष—इसे कटाई, किर्विणी और वज कहते हैं । इसके पत्ते छोटे
छोटे और डालियों में काटे होते हैं । इसके फल बेर के आकार
के तथा पकने पर भीठे होते हैं, पर अघपकी अवस्था में खटमोठे
होते हैं । वृक्ष में यह लघु, दीपन और पाचक तथा कमल और
प्लीहा का नाशक लिखा है । यज्ञों के लिये सुवा इसी की
लकड़ी का बनाने का विधान है ।

पर्या०—प्रयिल । सुवावृक्ष । स्वाडुकटक । कटकी । व्याघ्रपाद ।
कटकारी । वृत्तिकट । सुग्दार । मधुपर्ण । बहुफल । गोपघटी ।
दंतकाष्ठ । ब्रह्मपाटप । हिमक । पिडार । पृथुवीज । रावण ।
पादरोहण । सुषावृक्ष, इत्यादि ।

विकंकता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विकड्कता] अतिवला ।

विकंकट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकड्कट] १. जवासा । २. विकंकट ।

विकप—वि० [सं० विकम्प] १. चपल । चंचल । अस्थिर । कांपता
हुआ । २. दीर्घ सांस लेनेवाला (को०) ।

विकपन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकम्पन] १. एक राक्षस का नाम । २.
सूर्य की गति या कंपन (को०) । ३. कंपन । कांपना (को०) ।

विकपित—वि० [सं० विकम्पित] कांपता हुआ । हिलता डुलता
हुआ (को०) ।

विकपित—सञ्ज्ञा पुं० १. स्वरों का गलत उच्चारण करना । २. मंद
पड़ते हुए स्वर का एक भेद (को०) ।

विकंपी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विकम्पी] सगीत में एक श्रुति (को०) ।

विकंपी—वि० [सं० विकम्पिन्] कांपनेवाला । कांपता हुआ या
हिलता हुआ (को०) ।

विक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सद्य प्रसूता गाय का दूध । तुरत की व्याई गो
का दूध । पेउस । पीयूष ।

विक^२—वि० १. जलरहित । जलविहीन । २. जो प्रसन्न न हो । शुष्क ।
सूखा (को०) ।

विकच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के घूमकेतु ।

विशेष—इनकी सञ्ख्या ६५ है । ये वृहस्पति के पुत्र माने जाते हैं ।
इनमें शिखा नहीं होती । इनका वर्ण सफेद होता है और ये
प्रायः दक्षिण दिशा में उदय होते हैं । इनके उदय का फल
अशुभ माना जाता है । (वृहत्संहिता) ।

२. वज्रा । केतु ३. क्षपणक ।

विकच^३—वि० १. विकसित । खिला हुआ । २. जिसमें बाल न हो ।
बिना बाल का । केशहीन । ३. विस्तृत । फैला हुआ । विस्तीर्ण

(को०) । ४. सुस्पष्ट । व्यक्त । स्फुट (को०) । ५. उज्ज्वल ।
दीप्तिमत् (को०) ।

यौ०—विकचश्री = विकसित सौंदर्य से युक्त । दीप्त । शोभायुक्त ।

विकचा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कदंबपुष्पी । महामुडी (को०) ।

विकचित्त—वि० [सं०] प्रफुल्ल । खिला हुआ (को०) ।

विकच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] (नदी) जिसके दोनों ओर तराई या कछार
न हो । जिसके किनारे पर दलदल या गीली जमीन न हो ।

विकट^१—वि० [सं०] १. विशाल । २. विकराल । भयकर । भीषण ।
३. वक्र । टेढ़ा । उ०—(क) भृकुटी विकट निकट नैन के राजत
अति वर नारि । मनहुं मदन जग जीति जेर करि राख्यो घनुष
उतारि ।—सूर (शब्द०) । (ख) विकट भृकुटि कच घूबरवारे ।
नव सरोज लीचन रतनारे ।—तुलसी (शब्द०) । ४. कठिन ।
मुश्किल । उ०—(क) नित प्रति सबै उरहने के मिस आवति हैं
उठि प्रात । अनसमुके अपराध लगावति विकट बनावति बात ।
—सूर (शब्द०) । (ख) नट कृत कपट विकट खगराया । नट
सेवकहि न व्यापहि माया ।—तुलसी (शब्द०) । ५. दुर्गम ।
जैसे, विकट मार्ग ६. दुस्साध्य । ७. बिना चटाई का । ८.
गर्वयुक्त । घमंड से भरा हुआ । दर्पयुक्त (को०) । ९. सौंदर्य
युक्त । सुंदर (को०) । १०. जिसके दांत लंबे हो । लंबदंत
(को०) । ११. विकृत । भद्दा (को०) ।

विकट^२—सञ्ज्ञा पुं० १. विस्फोटक । ब्रण । फोडा । २. सोमलता ।
३. घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ४. गरुड (को०) । ५.
चदन । मलयज (को०) । ६. श्वेत फेनाशम । मैनसिल ।
मन.शिला (को०) ।

विकटक—वि० [सं०] भद्दी आकृति या देहवाला (को०) ।

विकटमूर्ति—वि० [सं०] डरावने शक्ल का । जिसका आकार भयंकर
हो ।

विकटवदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दुर्गा देवी के एक अनुचर का नाम ।
२. वह जिसकी आकृति भयावनी हो । डरावने मुहवाला (को०) ।

विकटविषाणु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बारहसिंहा (को०) ।

विकटशृंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकटशृङ्ग] बारहसिंगा (को०) ।

विकटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध देव की माता माया देवी का एक नाम ।

विकटाकृति—वि० [सं०] दे० 'विकटमूर्ति' ।

विकटाक्ष—वि० [सं०] जिसकी आँखें विकट हो । भयंकर आँखवाला ।

विकटानन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । २.
वह जिसका मुख विकट हो ।

विकतिक—[पालि] कनी चदर । पलंगपोश । ऐसा शय्यास्त-
शेर, बाघ आदि की आकृतियाँ काढ़ी रहती हैं ।
गान स्थान पर करीने से भासंदी, पलंग, चित्रक,
क, तूलिका, विकतिक, उच्छलोमी,
और समूरी मृग के खानों के
ये ।—वंशाली०, पृ० ६५ ।
[सं०] १. लंबी चौड़ी बाँटें
। व्यंग्याक्ति । झूठी प्रशंसा

विकल्पा^१—वि० १ श्रेष्ठो वधारनेवाला । डींग हाँकनेवाला । २ व्यंग्योक्तिपूर्वक प्रशंसा करनेवाला [को०] ।

विकल्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ डींग । श्लाघा । २ भूगो प्रशंसा । व्यंग्योक्ति । ३ स्तवन । स्तुति । प्रशंसा । बड़ाई । ४ उद्धो-
परणा । कोई बात जोरो से कहना । घोषणा [को०] ।

विकल्पी—वि० [सं० विकल्पिन्] विकल्पा करनेवाला । श्रेष्ठो मारने-
वाला । आत्मश्लाघी [को०] ।

विकल्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विशिष्ट कथा । २ कुरिस्त कथा ।
(चैन) ।

विकल्पा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] यादवों के एक भेद का नाम ।

विकल्पाहिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

विकल्पा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रोग । व्याधि । युद्ध का एक ढंग ।
२ तलवार के ३२ हाथों में से एक का नाम ।

विकल्पा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ परिवर्तन । सशोधन । सुधार । २
व्याकरण में क्रियाभूतों की रचना के समय वातु और कालवाचक
लकार प्रत्ययों के मध्य में रखे जानेवाले विशिष्ट गणघोतक
प्रत्यय अथवा चिह्न ।

विकल्पा^१—वि० [सं० विकराल] विकराल । भयकर । डरावना ।
उ०—(क) कान नाक बिनु भइ विकराला । जनु खन सैल गेर
कै धारा ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) कियो युद्ध अति ही
विकराल । लागी चलन रुधिर की धार ।—सूर (शब्द०) ।

विकल्पा^२—वि० [अ० फा० वेकराल] विकल । बेचैन । व्याकुल ।
उ०—खनहि चेत खन होइ विकराला । भा चदन बदन सब
छारा ।—जायसी (शब्द०) ।

विकराल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकराला, विकराली] भीषण ।
भयानक । डरावना । उ०—कितनी आतुरता से देखे अपने पर्व
आली । निर्दय परीक्षकों की कृतियाँ कैसी हैं विकराली ।—कुतुब,
पृ० ७६ ।

विकराला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ एक वेश्या का नाम [को०] ।

विकराली—वि० [सं० विकरालिन्] ऊष्म । गरम [को०] ।

विकराली^३—सञ्ज्ञा स्त्री० ऊष्मा । ताप । गरमी [को०] ।

विकर्ण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कर्ण के एक पुत्र का नाम । २. दुर्घोषन
के भाई का नाम जो कुरुक्षेत्र की लड़ाई में मारा गया था ।
३ एक साम का नाम । ४ एक प्रकार का बाण ।

विकर्ण^२—वि० १ श्रवण शक्ति से हीन । बधिर । २ जिसे कान न
हो । ३ जिसके कान बड़े बड़े हो [को०] ।

विकर्णक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की गँठिवन । २. शिव का
व्याडि नामक गण ।

विकर्णिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सारस्वत प्रदेश ।

विकर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ईंट, जिसका व्यवहार यज्ञ
की वेदी बनाने में होता था ।

विकर्णी^२—सञ्ज्ञा पुं० एक साम का नाम ।

विकर्णी^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकर्णिन्] एक प्रकार का बाण [को०] ।

विकर्तन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य । २ मदार । आक । ३ वह पुत्र
जो अपने पिता को राज्यच्युत करके राजा बना हो [को०] ।
४. वह व्यक्ति जो विकर्तन करे । काटनेवाला [को०] ।

विकर्म^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकर्मन्] १ निषिद्ध कर्म । विरुद्धाचार ।
२ अनेक प्रकार के काम । विविध कार्य [को०] । ३ कार्य
व्यापार से मुक्त होना [को०] ।

यी०—विकर्मकृत् = निषिद्ध कर्म करनेवाला । विकर्मक्रिया = निषिद्ध
कार्य । अविहित कर्म । विकर्मस्थ = पापात्मा ।

विकर्म^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वि० + कर्म] विशिष्ट कार्य । उत्तम कर्म ।
उ०—अकर्म से दूर भागना और विकर्म में मनुष्य अपने को
मुक्त और भाग्यवान बनाता है ।—कवीर सा०, पृ० ६६४ ।

विकर्मा—वि० [सं० विकर्मन्] कर्मभ्रष्ट । दुराचारी ।

विकर्मस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार वह पुरुष जो वेदविरुद्ध
कर्म करता हो । वेद के विरुद्ध आचार करनेवाला व्यक्तित्व ।
पापात्मा ।

विकर्मिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बाजार और मेले का निरीक्षक [को०] ।

विकर्मिक^२—वि० १ अविहित या निषिद्ध कर्म करनेवाला । दुष्कर्म
करनेवाला । २ जो अनेक प्रकार के कार्यों में लगा हो ।
विभिन्न काम करनेवाला [को०] ।

विकर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बाण । तीर । २ खीचना । आकर्षण
[को०] । ३ दूरी । फासला । अंतर [को०] ।

विकर्षण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ आकर्षण । खीचना । २ विभाग ।
हिस्सा । ३ एक शास्त्र का नाम, जिनमें आकर्षण करने की
विद्या का वर्णन है । उ०—सत्य अस्त्र मायाम्ब्र महाबल
घोर तेज तनुकारी । पुनि पर तेज विकर्षण लीजै सौम्य अस्त्र
भयहारी—(शब्द०) । ४ कामदेव के एक बाण का नाम
[को०] । ५ निवारण । हटाना । दूरीकरण [को०] । ६ खाद्य से
परहेज । अन्न से परहेज करना [को०] । ७ अन्वेषण । जाच ।
८ कुशती का एक ढँग । अपनी ओर खींचकर गिराना या
फेंकना [को०] । ९. प्रतिच्छेद कर्षण । विपरीत दिशा की ओर
खींचना [को०] ।

विकलक—वि० [सं० विकलङ्क] कलकरहित । निर्दोष । दीप्तिपुस्त ।

विकल^१—वि० [सं०] १ विह्वल । व्याकुल । बेचैन । २ कलाहीन ।
अशरहित । ३ खंडित । अपूर्ण । जैसे—विकलाग । ४ घटा
हुआ । ह्रासप्राप्त । ५ अस्वाभाविक । अनसर्गिक । ६ असमर्थ ।
७ अस्त । भयभीत । डरा हुआ [को०] । ८ प्रभाव रहित ।
प्रभावहीन [को०] । ९ हतोत्साह । जिसका उत्साह समाप्त
हो गया हो [को०] ।

विकल^२—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'विकला'—५ ।

विकलकरण—वि० [सं०] शिथिलाग । स्रस्ताग । श्लथ । क्षीण-
शक्ति [को०] ।

विकलकरण—वि० [सं०] दयनीय । असहाय । निरवलंब [को०] ।

विकलपाणिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लूला । वह आदमी जिसके हाथ
कट गए हो [को०] ।

विकलाग—वि० [स० विकलाङ्ग] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो।
न्यूनांग। अंगहीन। जैसे, लूला, लंगड़ा काना, खजा आदि।

विकला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. कला का साठवाँ अंग। २. वह स्त्री जिसका रजोदर्शन होना बंद हो गया हो। ऋतुहीना। ३. वह स्त्री जो ऋतुमनी हो। रजरवला (को०)। ४. बुध ग्रह की गति का नाम। ५. समय का एक अत्यंत छोटा भाग।

विकलाई—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विकल + हि० आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। विकलता। उ०—सूफो का पहिन बलेवर सा, विकलाई का कल जेवर सा। घुल घुल आँखों के पानी में, फिर छलक छलक बन छद चलो, पर मद चलो।—हिम त०, पृ० ३।

विकलाना^(७)—क्रि० अ० [स० विकल + हि० आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। उ०—(क) नितुर बचन सुनि स्याम के युवती विकलानी। मनो महानिधि पाइकँ खोए पछितानी।—सूर (शब्द०)। (ख) एक एक हूँ दूँही तरुनी विकलाही। सूर प्रभू कहूँ नाहिँ मिले दूँडति द्रुम पाही।—सूर (शब्द०)।

विकलाना^(७)—क्रि० स० व्याकुल करना। विचलाना।

विकलास—सञ्ज्ञा पुं० [स० विकलास्य] एक प्रकार का प्राचीन वाजा, जिसपर चमड़ा मढ़ा होता था।

विकलित—वि० [स०] १. व्याकुल। बेचैन। २. दुःखी। पीड़ित।

विकली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ऋतुहीना स्त्री (को०)।

विकलेंद्रिय—वि० [स० विकलेन्द्रिय] १. जिसकी इंद्रियाँ वश में न हो। २. जिसकी कोई इंद्रिय खराब हो, अथवा विल्कुल न हो। न्यूनेंद्रिय। जैसे,—लूला, लंगड़ा, काना, खजा इत्यादि।

विकल्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. आति। भ्रम। धोखा। २. एक बात मन में बैठकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार। सकल्प का उलटा। ३. विपरीत कल्पना। विरुद्ध कल्पना। ४. विशेष रूप से कल्पना करना या निर्धारित करना। जैसे,—दंड विकल्प। ५. विविध कल्पना। नाना भाँति से कल्पना करना। ६. कई प्रकार की विधियों का मिलना।

विशेष—मीमांसा में विकल्प दो प्रकार का माना गया है—एक व्यवस्थायुक्त, दूसरा इच्छानुयायी। जिसमें दो प्रकार की विधियाँ मिलती हों, उसे व्यवस्थायुक्त कहते हैं। यथा 'दर्श पौर्णमास याग मे यव द्वारा होम करे, ब्रीहि द्वारा होम करे इसमें दो प्रकार की विधियाँ हैं। इनमें यदि कर्ता यव से होम करे या ब्रीहि से तो यह इच्छानुयायी विकल्प होगा। इच्छा विकल्प में आठ दोष होते हैं—प्रमाणत्व, परिस्थाग, अप्रामाण्य कल्पना, अप्रामाण्योपजीवन और प्रामाण्यहानि। ये चारो उक्त दोषों में लगने में आठ हो जाते हैं।

७ योग शास्त्रानुसार पंचविध चित्तवृत्तियों में एक।

विशेष—यह चित्रावृत्ति ऐसे शब्दज्ञान की शक्ति है जिसका वाच्य वस्तु नहीं होती। इसमें मनुष्य इस बात की खोज नहीं करता कि अमुक शब्द का वाच्य कोई पदार्थ है या नहीं, अथवा हो सकता है या नहीं। परंपरा से उसके वाच्य के, सबध में

जैसा लोग मानते आते हैं वैसा ही वह भी मान बैठता है। जैसे,—पारस पत्थर न मिला और न किसी ने देखा है। पर पारस पत्थर शब्द से लोग यही समझते हैं कि कोई ऐसा पत्थर है, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। इस प्रकार के शब्दों के वाच्य के संबंध में जो वृत्ति चित्त में उत्पन्न होती है, उसे विकल्प कहते हैं।

८ अवातर कल्प। ९ एक काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या यही। जैसे,—कँ लखिहीं मुख मोहन को कँ पलास प्रसून की आगि जरौंगी। १० वंचिश्य। विलक्षणता। ११. समाधि का एक भेद जिसे सविकल्प कहते हैं। १२ व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण। १३. गणना (को०)। १४ उपाय (को०)। १५ कथन। वक्तव्य (को०)। १६ उत्पत्ति (को०)। १७ देवता। ईश्वर (को०)। १८ कृत्युक्ति। कला (को०)।

विकल्प आपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य द्वारा व्याख्यात वह आपत्ति जो दूसरे मार्ग के अवलंबन से बचाई जा सकती हो।

विकल्पक—वि० [स०] विभेदक। विच्छेदक। विभाग कल्पक (को०)।

विकल्पजाल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अनिश्चय का घेरा। अनेक प्रकार की दूविधा।

विकल्पन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अनिश्चय। सदेह। द्विविधा। २. दो में से किसी एक का निश्चय करने की छूट। ३. विचारशून्यता (को०)।

विकल्पसंप्राप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विकल्पसम्प्राप्ति] वातादि दोषों की मिश्रित अवस्था में प्रत्येक के अंशांश की कल्पना करना। (वेद्यक)।

विकल्पसम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] न्यायदर्शन में २४ जातियों में से एक जिसमें वादी के दिए हुए दृष्टांत में अन्य धर्म की योजना करते हुए माध्य में भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टांत को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का मिथ्या खंडन किया जाता है। जैसे—वादी—'शब्द अनित्य है, क्योंकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है, घट के समान'। प्रतिवादी—'अनित्य और मूर्त है, क्योंकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है घट के समान जो अनित्य और मूर्त है'। यहाँ प्रतिवादी का अभिप्राय यह है कि या तो शब्द को मूर्त मानो अथवा उसका नित्य होना स्वीकार करो।

विकल्पित—वि० [स०] १. जिसके सबध में निश्चय न हो। सदिग्ध। २. जिसका कोई नियम न हो। अनियमित। ३. क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित (को०)। ४. विभाजित। विभक्त (को०)।

विकल्मष—वि० [स०] जिसमें पाप न हो। निष्पाप। पापरहित। निर्दोष।

विकवच—वि० [स०] वर्म से रहित। विना कवच का (को०)।

विकश्वर—वि० सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विकारवर'।

विकषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मजीठ।

विकस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।

विकसन—पद्या पुं [सं] [वि० विकसित] प्रस्फुटन । फूटना ।
खिलना ।
विकसना—क्रि० अ० [सं विकसन] दे० 'विकसना' ।
विकसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] मजीठ [को०] ।
विकसाना—क्रि० स० [हिं० विकसना का प्रे० रूप] खिलाना ।
विकसित करना ।
विकसित—वि० [सं] १ प्रफुल्ल । खिला हुआ । २ प्रपन्न [को०] ।
विकस्वर^१—वि० [सं] १ विकासशील । खिलनेवाला । २. खुला
हुआ । फूला हुआ [को०] । ३ जो स्पष्ट सुनाई दे (ध्वनि) ।
ऊँचे स्वरवाला [को०] । ४. निष्कपट [को०] ।
विकस्वर^२—सञ्ज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात
कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है । उ०—मधुप
मोह माहन तज्यो यह स्वामन की रीति । करी आपने काज लों
तुम्हें भाति सौ प्रीति ।
विकस्वरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] लाल रंग की पुनर्नवा । लाल गदहपुरना ।
विकाक्ष—वि० [सं विकाङ्क्ष] काक्षा या इच्छा रहित । इच्छा
रहित । निष्काम [को०] ।
विकाक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विकाङ्क्षा] १ मिथ्या कथन विस्वाद ।
२. इच्छा का अभव । ३. दुःख । अनिश्चय [को०] ।
विकाक्षी—वि० [सं विकाङ्क्षन्] दे० 'विकाक्ष' ।
विकाम—वि० [सं] कामना रहित । निष्काम [को०] ।
विकार^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल
जाना । विकृति । २. निश्चित के चार प्रधान नियमों में एक
जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण हो जाना है ।
३. दोष की प्राप्ति । बिगडना । खराबी । ४. दोष । बुराई,
अवगुण । ५. मन की वृत्ति या अवस्था । मनोवेग या प्रवृत्ति ।
वासना । उ०—सकल प्रकार विकार बिहाई । मन क्रम बचन
करेहु सेवकाई ।—तुलसी (शब्द०) । ६. वेदान्त और सांख्य दर्शन
के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना ।
परिणाम । जैसे,—कण्ठ सोने का विकार है; क्योंकि वह
सोने से ही रूपांतरित होकर बना है । ७. उपद्रव । हानि ।
८. बीमारी । रोग । व्याधि [को०] । ९. भाव । जलम । क्षत
[को०] । १०. परिवर्तन । रद्दीबदल [को०] । ११. मनोवृत्ति या
विचार का बदलना [को०] ।
विकारण—वि० [सं] बिना कारण के । अकारण [को०] ।
विकारित—वि० [सं] विकृत किया हुआ । विकारयुक्त बनाया
हुआ । परिवर्तित ।
विकारी^१—वि० [सं विकारिन्] १. जिसमें विकार हो । विकार-
युक्त । २. क्रोधादि मनोविकारों से युक्त । दुष्ट वासनावाला ।
उ०—रे रे अंध बौसहूँ लोचन परतिय हरन । विकारी । सूने
भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी —सूर (शब्द०) ।
३. जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो । परिवर्तित । उ०—
तो है क्रोध न कियो विकारि । महादेव हूँ फिरे विहारि ।
—सूर (शब्द०) । ४. परिवर्तनशील । ५. प्रेमासक्त ।
आसक्त [को०] ।

विकारी^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं] साठ सवत्सरो में से एक सवत्सर का नाम ।
विकार्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं] अहंकार जो विकार से होता है [को०] ।
विकाल^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं] १ अतिकाल । देर । २. ऐसा समय जब
देवकार्य या पितृकार्य करने का समय बीत गया हो । ३. सायं-
काल का समय ।
पर्या०—सायं । दिनात । सायाह्न । विकालक ।
विकाल^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं द्विकाल, प्रा० वि + काल] दोनों काल—प्रातः
सायं । उ०—होम जाप घनान विकाला । तजहि न एकी
तिनहुँ क हाला ।—चित्रा०, पृ० ११ ।
विकालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] दे० 'विकाल' ।
विकालत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वकालत] दे० 'वकालत' ।
विकालतनामा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० वकालतनामह] दे० 'वकालतनामा' ।
उ०—(क) विकालतनामा में लिखूँ कर्मसिंह के नाम । नागरी
मेरा नाम है आर्यावर्त है धाम ।—नागरी० उद्गू०, पृ० ४ ।
(ख) मिरजा साहब के नाम विकालतनामा इस प्रकार लिखा
दिया ।—नागरी० उद्गू०, पृ० ५ ।
विकालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] घडियाल का कटोरा । जलघडी ।
विकाश^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ प्रकाश । २. प्रसार । फैलाव । विस्तार ।
वृद्धि । ३. आकाश । ४. विषम गति या सुस्पष्ट पद्धति ।
५. प्रस्फुटन । खिलना । ६. एक काव्यालंकार जिसमें किसी
वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विक-
सित होना वर्णन किया जाता है । ७. किसी वस्तु की वृद्धि
के लिये उसके रूप आदि में उत्तरोत्तर परिवर्तन होना । ८.
प्रदर्शन । प्रकटीकरण । दिखलावा [को०] । ९. हर्ष । आनंद
[को०] । १०. उत्सुकता । प्रवचन उत्कंठा [को०] । ११. एकांत
स्थान । एकाकीपन [को०] ।
विकाश^२—वि० निर्जन । एकांत ।
विकाशक—वि० [सं] [वि० स्त्री० विकाशिका] प्रदर्शित करनेवाला ।
व्यक्त करनेवाला । खोलनेवाला [को०] ।
विकाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ प्रकटीकरण । प्रदर्शन । २. खिलना ।
विकाशना—क्रि० स० [सं विकाश] दे० 'विकासना' । उ०
छटपटाहि वै अर्थ विकाशै । ये पुनि आतम अर्थ प्रकाशै ।
(शब्द०) ।
विकाशित—वि० [सं] दे० 'विकासित' ।
विकाशी^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं विकाशिन] धातुओं को शिथिल करनेवाली
औषध । उ०—जो औषध धातुओं को शिथिल कर दे
तिसको विकाशी कहते हैं ।—शाङ्गधर०, पृ० ४० ।
विकाशी^२—वि० १ दिखाई देनेवाला । चमकनेवाला । २. फूलनेवाला ।
खिलनेवाला । ३. खिलानेवाला [को०] ।
विकास^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ प्रसार । फैलाव । २. खिलना । प्रस्फुटित
होना । ३. किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर अत या आरम्भ से
भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना । क्रमशः उत्पन्न
होना । जैसे,—सृष्टि का विकास, मानव सभ्यता का विकास,

बीज से पेड़ों का विकास, गर्भादि से जरीर का विकास । ४ एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसके आचार्य डार्विन नामक प्राणिविज्ञानवेत्ता हैं ।

विशेष—इस सिद्धांत में यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और उसमें पाए जानेवाले जीवजंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं । यह सिद्धांत इस बात का विरोधी है कि सारी सृष्टि जैसी है, नैमी ही एक वारंशी उत्पन्न हो गई थी । इसे विकासवाद भी कहते हैं ।

विकास^१—सज्ञा स्त्री० [म० वि+काश] एक प्रकार की धाम जो नीची भूमि में होती है । इसकी पत्तियाँ हून की भाँति पर कुछ बड़ी होती हैं । चाँगाएँ इसे बड़े चाव से खाते हैं ।

विकासन—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विभाशन' [क्ते०]

विकासना(पुं०)—क्रि० स० [स० विकास] १ प्रकट करना । निगलना । उ०—जनु अमृत होइ वन विकास । कमल जो वाम बास धन बासा ।—जायसी (शब्द०) । २ विकसित करना । प्रस्फुटित करना । खिलने में प्रवृत्त करना ।

विकासना^१—क्रि० अ० १ विकसित होना । खिलना । २ प्रकट होना । जाहिर होना ।

विकासमान्—वि० [स० विकासमान्] उत्तरोत्तर विकसित होनेवाला । उ०—उन्होंने ईश्वर सबधी मनुष्य की कल्पना को विकासमान् स्वीकार किया है ।—आचार्य०, पृ० ७० ।

विकासित—वि० [स०] १ विकास किया हुआ । खिला हुआ । विस्तारित । उ०—विकासित केसर कुकुम काम ।—पृ० रा०, २५ । २३३ । २ प्रस्फुटित । ३ प्रकाशित । प्रदर्शित ।

विकिर—सज्ञा पुं० [स०] १ पत्ती । चिड़िया । २ कूआँ । ३ वह चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न आदि दूर करने के लिये चारों ओर फेंका जाता है । अक्षत । ४ पेड़ (को०) । ५ बूँद बूँद करके (तटवर्ती बालू आदि से) चूनेवाला जल (को०) । ६ अपमृत्यु (आग में जलकर, पानी में डूबकर आदि) पात पितरो को दिया जानेवाला पिंड (को०) । ७ छिराई या बिछेरी हुई वस्तु (को०) ।

विकिरण—सज्ञा पुं० [स०] १ छितराना । इधर उधर बिखेरना । २ हिसन । मारना । ३ ज्ञान । ४ किरणों का एकत्र करना । ५ अर्क वृद्ध । ६ एक समाधि (को०) ।

विकिष्कु—सज्ञा पुं० [म०] प्राचीन काल का बड़इधो वा एक प्रकार का गज जो पाय, सवा दो हाथ या ४२ इंच का होता था ।

विकीरण—सज्ञा पुं० [म०] श्वाक । मदार ।

विकीरन(पुं०)—सज्ञा पुं० [म० विकीरन] फँलाना । छितराना । उ०—मद मद आवै देखो प्रात समीरन करत सुँव चाँगे और विकीरन ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ६८६ ।

विकीर्ण^१—वि० [स०] १ चारों ओर फँला या छितराया हुआ । अस्तव्यस्त । बिखरा हुआ । २ विरघात । प्रमिद्ध । मसहूर । ३ प्रसूत (को०)

स० श० ६-१४

विकीर्ण^२—सज्ञा पुं० स्वर के उच्चारण में होनेवाला एक प्रकार का दोष ।

विकीर्णक—वि० [म०] फँलाने या बिखेरनेवाला (को०)

विकीर्णकेश, विकीर्णमूर्ध्वज—वि० [म०] अस्तव्यस्त या खुले बिखरे बालवाला । (को०) ।

विकीर्णरोम—सज्ञा पुं० [म० विकीर्णरोमन्] एक प्रकार का सुगन्धित पौधा ।

विकीर्णसज्ञा—दे० सज्ञा पुं० [स०] 'विकीर्णरोम' ।

विकुचन—सज्ञा पुं० [स० विकुञ्चन] निकुड़ने या मिमटने की क्रिया । मुड़ने की क्रिया ।

विकुचित—वि० [स० विकुञ्चित] सिकुड़ा या सिमटा हुआ । मुड़ा हुआ । मोड़दार (को०) ।

विकुज—सज्ञा पुं० [स० विकुञ्ज] महाभारत के अनुमार एक जाति का नाम ।

विकुठ^१—सज्ञा पुं० [स० विकुण्ठ] १ वैकुण्ठ । विष्णुलोक । उ०—(क) हरि रस माते मगन रहइ । निरमल भगति प्रेमरस पीवइ आन न पूजा भाव धरइ । सहजइ सदा राम रसराते, मुक्ति विकुठइ कहा करइ ।—दादू (शब्द०) । (ख) नारायण सुंदर भुज चारी । बसहि विकुठहि सदा सुगरी ।—रघुराज (शब्द०) । २ विष्णु का एक नाम (को०) ।

विकुठ^२—वि० [स० विकुण्ठ] १ जो कुठित न हो । तेज धारवाला । कुद या भुयरा का उलटा । २. जो धारहीन हो । कुंद या अत्यंत भुयरा (को०) ।

विकुठा—सज्ञा स्त्री० [स० विकुण्ठा] १ विष्णु की माता । २. मन को केंद्रस्थ करना (को०) ।

विकुठित—वि० [स० विकुण्ठित] १ शक्तिहीन । अशक्त । २ धारहीन । कुद । भोयरा (को०) ।

विकुमांड—सज्ञा पुं० [स० विकुम्भण्ड] पुराणानुसार एक दानव का नाम ।

विकुक्षि^१—सज्ञा पुं० [म०] अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम ।

विकुक्षि^२—वि० जिसका पेट फूला या आगे को निकला हुआ हो । तोड़वाला ।

विकुचित—सज्ञा पुं० [स०] युद्ध का एक प्रकार । लड़ने की एक प्रकार की पद्धति (को०) ।

विकुज—वि० [स०] १ भीम ग्रह से रहित । २ मंगल के व्यति-ग्विन (दिन) ।

यौ०—विकुजरवीडु=मंगल, सूर्य और चंद्रमा रहित ।

विकुत्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] विगर्हणा (को०) ।

विकुर्वण—सज्ञा पुं० [म०] १. शिव । २. इन्द्रानुकूल रूप धारण की शक्ति । कामरूपता (बीद०) (को०) ।

विकुर्वाणा—वि० [स०] १ प्रमत्त । सुप्त । २. परिवर्तनशील । ३. आत्मशोधक (को०) ।

विकुर्वित—सज्ञा पुं० [स०] नाना रूप धारण करना (को०) ।

विकुल—सज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा ।

विकृजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कलरव करना। पक्षियों का चहचहाना।
२ उदर में वायुविकार से होनेवाली गुडगुडाहट [को०]।
विकृजित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कृजन। गुजार। पक्षियों का कलरव [को०]।
विकूपण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ टेढ़ी चितवन। कटाक्ष। २ सँकोचन [को०]।

विकूपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

विकृत—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो।
उ०—पुरुष के शुक्र और स्त्री के आर्तव में कौंसा दोष हो जाने से संतान नहीं होती अथवा विकृत संतान होती है।—जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)। ३ असाधारण। अस्वाभाविक। अप्राकृतिक।
४ असंस्कृत (को०)। ५ अपूर्ण। अधूरा। अगर्हीन, छिन्न भिन्न। ६ विद्रोही। अपराजक। ७ रोगी। बीमार। ८ आवेश-गस्त। भावाविष्ट (को०)। ९ बीभत्स। घृणास्पद (को०)।
१० पराङ्मुख। विरक्त (को०)। ११ विच्छिन्न (को०)।

यौ०—विकृतदर्शन = जिसका रूप बदल गया हो या विकारयुक्त हो। विकृतदृष्टि। विकृतरक्त = लाल रंगा हुआ या लाल धब्बोवाला। विकृतवदन = भद्दी आकृतिवाला। वदणकल।
विकृतवेपी = वस्त्रादि को असंस्कृत रूप से पहननेवाला।
विकृतस्वर।

विकृत स्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरता है।

विशेष—संगीत शास्त्र में १२ विकृत स्वर माने गए हैं—(१) च्युत पडज, (२) अच्युत पडज, (३) विकृत पडज, (४) साधारण गाधार, (५) अंतर गाधार, (६) च्युत मध्यम, (७) अच्युत मध्यम, (८) त्रिश्रुति मध्यम, (९) कौशिक पचम, (१०) विकृत धैवत, (११) कौशिक निपाद और (१२) काकली निपाद।

विकृता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

विकृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। बिगाड़। २. वह रूप जो विकार के उपरांत प्राप्त हो। बिगड़ा हुआ रूप।
३ रोग। बीमारी। ४ साध्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५ परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ।
७ विद्रोही होने का भाव। शत्रुता। ८ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ९ उन्नति। विकास।
१० माया का एक नाम। ११ २३ वर्ष के वृत्तों की सञ्ज्ञा।
१२ गर्भपात। गर्भच्युति (को०)।

विकृती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोग। २ विकार। ३. द्वि।
४. मदिरा (को०)।

विकृष्ट—वि० [सं०] १. खोचा हुआ। आकृष्ट। २ अलग किया हुआ (को०)। ३ फैलाया हुआ। विस्तृत किया हुआ (को०)।
४ ध्वनित। शब्दायमान (को०)। ५ लुटा हुआ (को०)।

यौ०—विकृष्टकाल = चिरकाल।

विकेट—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] क्रिकेट के खेल में दोनों पक्षों की ओर आने सामने गाड़े गए तीन तीन रटप या डंडे और उनके ऊपर लगाई जानेवाली दो दो गुल्लियाँ।

यौ०—विकेट कीपर = बल्लेबाज के पीछे के स्टंप के पास रहने-वाला प्रतिपक्ष का खिलाड़ी।

विकेट डोर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का छोटा चक्करदार दरवाजा या जाने का रास्ता, जो प्रायः कमर तक ऊँचा और ऊपर से बिलकुल खुला हुआ होता है।

विशेष—यह बागों आदि के बड़े दरवाजों के पास ही इसलिये लगाया जाता है कि आदमी तो आ जा सके, पर पशु आदि न आ सकें। इसके रूप प्रायः इस प्रकार के होते हैं—

(१) (V), (२) [X], (३) [□]

विकेतु—वि० [सं०] ध्वजाविहीन। पताका से रहित [को०]।

विकेश—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकेशी] १ जिनके बाल खुले या घोंडर हो।

विकेश—सञ्ज्ञा पुं० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ पुच्छल तारा। ३ एक प्रकार के प्रेत।

विकेशिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] क्षोमवव [को०]।

विकेशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मही (पृथ्वी) रूप शिव की पत्नी का नाम। २ एक प्रकार की राक्षसी या पूतना। ३ बालों की छोटी छोटी लटों को मिलाकर बनाई गई चूटी। वेणी (को०)।
४ ब्रिखरे बालोंवाली स्त्री (को०)। ५ गजी स्त्री।

विकोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृकासुर के पुत्र और कोक के छोटे भाई का नाम।

विकोदर(पुं०)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकोदर] दे० 'वृकोदर'। उ०—गोयद का सुंदर विकोदर सा बाहूँ। समर की मरजाद घर में राहूँ।
—रा० रू०, पृ० १२३।

विकोश—वि० [सं०] दे० 'विकोप' [को०]।

विकोष—वि० [सं०] १ कोप या म्यान से निकली हुई (तलवार)।
२ जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण या आच्छादन न हो। बिना छिलके का।

विकौतुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता रहित। उदासीन [को०]।

विवक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] करभ। हृदिनशावक। हाथी का बच्चा [को०]।

विवकाण पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विक्कण] दे० 'विक्रय'। उ०—वेवहार मुल्लहि वणिक् विक्कण कीनि आनहि वव्वरा।—कीर्ति०, पृ० २८।

विवकेणुअ—वि० [सं० विक्रेय] दे० 'विक्रय'।—देशी०, पृ० ३००।

विवटोरियाँ—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ ब्रिटेन की महारानी जिसके शासन-काल में भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में चला गया था। २ एक प्रकार की घोड़ागाड़ी जो देखने में प्रायः फिटन से मिलती जुलती, पर उससे कुछ छोटी और हलकी होती है और जिसे प्रायः एक एक ही घोड़ा खींचता है।

विवटोरिया—सञ्ज्ञा पुं० एक छोटे गृह का नाम जिसका पता हैड नामक एक यूरोपियन ने सन् १८५० में लगाया था।

वित्त—वि० [सं०] १ पृथक् किया हुआ। २. खाली। रिक्त [को०]।

विक्रम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। उ०—रुद्र तट प्रगट प्रताप महान त्रिविक्रम रक्षै। पृष्ठ देस महं परम रास

वर विक्रम रखै।—गोपाल (शब्द०)। २. बल, शीर्ष या शक्ति की अधिकता। ताकत का ज्यादा होना। बहादुरी। पराक्रम। उ०—(क) कासी भूपति चलेउ प्रकासी विक्रम रासी।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वर भोगी भूपन को घरे पंचानन विक्रम अधिक।—गोपाल (शब्द०)। (ग) विपुल बल मूल सटूल विक्रम जलदनाद मदन महावीर भारी।—तुलसी (शब्द०)। ३. ताकत। बल। ४. गति। ५. प्रकार। ढग। मार्ग। ६. साठ सवत्सरो मे से चौदहाँ सवत्सर। ७. वेदपाठ की वह प्रणाली जिसमे क्रम का अभाव हो। ८. दे० 'विक्रमादित्य'। ९. पादविक्षेप। कदम। ढग (को०)। १०. चडता। तीव्रता उत्कर्ष (को०)। ११. स्थिति (को०)। १२. चरण (को०)। १३. विमर्श का उत्प्रेम मे न बदलना (को०)। १४. कुडली के लग्न चक्र का तीसरा स्थान (को०)। १५. संस्कृत भाषा के एक जैन कवि जिन्होंने मेघदूत के पदों को लेकर नेमिदूत नामक काव्य की रचना की थी।

विक्रम^७—वि० श्रेष्ठ। उत्तम। उ०—मुवा सुफल लै आएउ^३ तेहि गुन ते मुख रात। क्या पीत सो तासो सवरी विक्रम बात।—जायसी (शब्द०)।

विक्रमक—संज्ञा पु० [सं०] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. चलना। कदम रखना। २. विष्णु का एक ढग (को०)। ३. शूरता। वीरता (को०)। ४. (पाशुपत) अलौकिक शक्ति (को०)।

विक्रमशील—संज्ञा पु० [सं०] एक बौद्ध विहर का नाम [को०]।

विक्रमस्थान—संज्ञा पु० [सं०] बौद्ध मठ। विहार [को०]।

विक्रमाजीत—संज्ञा पुं० [सं० विक्रमादित्य] दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य—संज्ञा पुं० [सं०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध-प्रतापी राजा का नाम।

विशेष—इनके सबध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। ये बहुत बड़े विद्याप्रेमी, कवि, उदार, गुणग्राहक और दानी कहे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि इनकी सभा में नौ बहुत बड़े बड़े और प्रसिद्ध पंडित रहा करते थे, जो 'नवरत्न' कहलाते थे और जिनके नाम इस प्रकार हैं—कालिदास, वररुचि, अमरसिंह, धनवतरि, क्षणिक, वेतालमह, घटकर्पर, शकु और चूचाराहमिहर। परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से इन नौ विद्वानों का एक ही समय में होना सिद्ध नहीं होता, जिससे 'नवरत्न' को लोग कल्पित ही समझते हैं। आजकल जो विक्रमी सवत् प्रचलित है, उसके सबध में भी लोगों की यही धारणा है कि इन्हीं राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, पर इस बात का भी कोई ऐतिहासिक प्रमाण अभी तक नहीं मिला है कि विक्रमी सवत् का आरंभ होने के समय मालव देश में या उसके आसपास विक्रमादित्य नाम का कोई राजा रहता था। विक्रमी सवत् किस राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, इसका अभी तक कोई ठीक ठीक पता नहीं चला है। कुछ विद्वानों का मत है कि विक्रम सवत् का विक्रमादित्य नाम के किसी राजा के साथ कोई सबध नहीं है और न वह किसी एक व्यक्ति का चलाया हुआ है। उनका मत है कि

ईसवी सन् से ५८ वर्ष पूर्व जब नहुषाण को गौतमीपुत्र ने युद्ध में बुरी तरह परास्त करके उसे मार डाला था। इस युद्ध में उसने अपना जो विक्रम (वीरता) दिखलाया था, उसी की स्मृति के रूप में मालवों के गण ने उसी तिथि में 'वृत्त युग का आरंभ माना' और इस प्रकार इस विक्रम सवत् का प्रचार हुआ। तात्पर्य यह है कि सवत् वाला 'विक्रम' शब्द किसी विक्रमादित्य नामक सवत् चलानेवाले राजा का सूचक नहीं है, बल्कि वह पीछे के किसी राजा के विक्रम या वीरता का बोधक है। स्कंद-पुराण में लिखा है कि कलियुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर विक्रमादित्य नाम का एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था। मोटे हिसाब से यह समय ईसवी सन् से प्रायः सौ वर्ष पूर्व पड़ता है, पर यह राजा कौन था, इसका निश्चय नहीं होता। यह भी प्रसिद्ध है कि इस राजा ने शको को एक घोर युद्ध में पराजित किया था और उसी विजय के उपलक्ष्य में अपना सवत् भी चलाया था। शको को पराजित करने के कारण ही इसको एक उपाधि 'शकारि' भी हो गई थी। बौद्धों और जैनियों के धर्मग्रंथों तथा चोनी और अरबी आदि यात्रियों के यात्राविवरणों में भी विक्रमादित्य के सबध में कुछ फुटकर बातें पाई जाती हैं पर न तो यही ज्ञात है कि इन्होंने कब से कब तक राज्य किया और न इनके जीवन की और बातों का ही कोई क्रमबद्ध इतिहास मिला है। इतिहास से यह भी पता चलता है कि गुप्तवंशीय प्रथम चंद्रगुप्त ने उत्तर भारत में शको को परास्त करके 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी, परंतु ये सवत् चलानेवाले विक्रमादित्य के बहुत बाद के हैं। इसके अतिरिक्त इसी गुप्तवंश के समुद्रगुप्त के पुत्र द्वितीय चंद्रगुप्त ने भी 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। ईसवी सातवीं शताब्दी के आरंभ में काश्मीर में भी विक्रमादित्य नाम का एक राजा हुआ था जिसके पिता का नाम रणादय था। इसी प्रकार चालुक्य वंश में भी इस नाम के कई राजा हो गए हैं। पीछे से तो मानो यह प्रथा सी चल पड़ी थी कि जहाँ कोई राजा कुछ अधिक बड़ निकलता था, वहाँ वह अपने नाम के साथ 'विक्रमादित्य' की उपाधि लगा लिया करता था। यहाँ तक कि अकबर की बाल्यावस्था में जब हेमू दूसरे ने दिल्ली पर अधिकार किया, तब वह भी विक्रमादित्य बन बैठा था।

उज्जयिनी नरेश विक्रमादित्य का पना भव चल गया है। वह मालव गणतंत्र का प्रधान था। ऊपर के अनुच्छेद में हमने ही गौतमीपुत्र के नाम से पुकारा गया है। वह इतना पराक्रमी निकला था कि बाद के प्रभावशाली नरेशों ने भी अपने नाम के आगे उसका नाम जोड़ने में गौरव का अनुभव किया। ई० सन् से ५७ वर्ष पूर्व उसने भयंकर युद्ध करके शको को पान्त करके भारत से बाहर निकाल दिया था। इस विषय में तथ्य के निर्णय में कतिपय शिलालेख और उज्जयिनी में खुदाई में निकले मंदिर आदि अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं।

विक्रमाब्द—ख्री० पु० [सं०] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

विक्रमार्क—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विक्रमादित्य'।

विवलवित्त—सषा पु० [सं०] भय से भरी बात । भयभीत बचन ।

विकलात—वि० [स० विकलात] १ थका हुआ। श्रात। पन्त हिम्मत।
२ हनोत्साह [को०]।

विविलत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आर्द्रता। क्लिन्नता। गीलापन [को०]।

विविलघ—वि० [स०] पसीने से तर। प्रस्वेद से भीगा हुआ। [को०]।

विविलन्न—वि० [स०] १ जो पुराना होने के कारण सड़ या गल गया हो। जीर्ण शीर्ण। २ अत्यंत गीला। पूरी तरह भीगा हुआ [को०]। ३ मुर्झाया हुआ। म्रान। शुष्क [को०]।

विविलष्ट—वि० [स०] १ अत्यंत कष्टग्रस्त। दुःखी। २ क्षतिग्रस्त। नष्ट किया हुआ [को०]।

विविलष्ट^१—सञ्ज्ञा पु० उच्चारण दोष [को०]।

विकलेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ आर्द्रता। गीलापन। २ भली भाँति तर या गीला होना। ३ विगलन। द्रवीकरण [को०]।

विकलेदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुलायम या आर्द्र करने की क्रिया [को०]।

विकलेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] दैत्य वर्णों का अशुद्ध उच्चारण [को०]।

विक्षत^१—वि० [स०] १ जिसमें क्षत लगा हो। जिसमें खराश पड़ी हो। घायल। जखमी। २ पीटा हुआ [को०]। ३ प्रभावित। अभिभूत [को०]।

विक्षत^२—सञ्ज्ञा पु० घाव। जखम [को०]।

विक्षय—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जो अधिक मद्यपान करने से होता है।

विक्षर^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। २ कृष्ण। ३ एक राजस [को०]।

विक्षर^२—वि० प्रवहमान। बहता हुआ [को०]।

विक्षरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] बहता [को०]।

विक्षार—सञ्ज्ञा पु० [स०] भाग्यशाली दैवी घटना।

विक्षाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ खाँसी। कास। २ शब्द। ध्वनि [को०]।

विक्षित—वि० [स०] १ नीचे गिरा हुआ। २ हीन। दुःखी [को०]।

विक्षित^१—वि० [स०] १. जेका या छितराया हुआ। २ जिसका त्याग किया गया हो। त्यक्त। ३ जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। उ०—(क) उसकी नींद भी उड़ जाती होगी और जो रात दिन जागता होगा, तो विक्षिप्त या अतिरोगी होगा। —दयानंद (शब्द०)। (ख) तुमहि कही श्रुति शास्त्रन माही। जहँ विक्षिप्त भूप ह्व जाही।—रघुराज (शब्द०)। ४ घबराया हुआ। पागलो का सा। विकल। व्याकुल। ५ भेजा हुआ। प्रेषित [को०]। ६ जिसका खंडन किया गया हो। निराकृत [को०]। ७ कपित। विक्षुब्ध। जैसे, विक्षित अर्थात् विलास [को०]।

विक्षित^२—सञ्ज्ञा पु० योग में चित्त की वृत्तियों या अवस्थाओं में से एक जिसमें चित्त प्रायः अस्थिर रहता है, पर बीच बीच में कुछ स्थिर भी हो जाता है। कहा गया है कि ऐसी अवस्था योग की साधना के लिये अनुकूल या उपयुक्त नहीं होती।

विशेष—दे० 'चित्तभूमि' और 'योग'।

विक्षितक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह मृत् शरीर जो जलाया या गाढ़ा गया हो, बल्कि यो ही कही फेंक दिया गया हो। (बौद्ध)।

विक्षिप्तता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विक्षिप्त या पागल होने का भाव। पागलपन। उ०—यहाँ तक कि कुछ काल के पश्चात् स्वयं उसे ही अपनी विक्षिप्तता को देखकर विस्मित होना पड़ता है। —निबन्धमालादर्श (शब्द०)।

विक्षीएक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ देवमंडली। २ शिव के अनुचरो का प्रधान। ३ वह स्थान जहाँ में भूमिपाहारी हटा दिए गए हो। ४ विध्वंस या नष्ट करनेवाला व्यक्ति। विनाशक [को०]।

विक्षीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] आक। मदार।

विक्षीरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दुग्घी। दुग्धिका।

विक्षुरण—वि० [स०] १ प्रोत्साहित। प्रेरित। २ चूर्णित। मर्दित। ३ पददलित [को०]।

विक्षुद्र—वि० [स०] जो अपेक्षाकृत छोटा हो [को०]।

विक्षुब्ध—वि० [स०] जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ हो। जिसका मन चंचल हो। क्षुब्ध।

विक्षुभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छाया का एक नाम।

विक्षेप—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फेंकना। डालना। २ इधर उधर हिलाना। भटकना देना। ३ (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४ मन को इधर उधर भटकाना। इन्द्रियों को वश में न रखना। समय का उलटा। उ०—ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषों से अलग हो के सत्य आदि गुणों को धारण करे।—दयानंद (शब्द०)। ५ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। ६ सेना का पड़ाव। छावनी। ७ एक प्रकार का गेग। ८ बाधा। विघ्न। खलल। जैसे,—इस काम में कई विक्षेप पड़े हैं। उ०—समाधि की प्राप्ति होने पर भी उसमें चित्त स्थिर न होना ये सब चित्त की समाधि होने में विक्षेप अर्थात् उपासनायोग के शत्रु है।—दयानंद (शब्द०)। ९ भेजना। प्रेषण [को०]। १०. खटका। भय [को०]। ११ तर्क का निराकरण [को०]। १२, ध्रुवीय अक्षरेखा [को०]। १३. व्यर्थ गवाना [को०]। १४. अनवधानता [को०]।

विक्षेपण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ऊपर अथवा इधर उधर फेंकने की क्रिया। २. हिलाने या भटका देने की क्रिया। ३ धनुष की डोरी खींचने की क्रिया। ४ विघ्न। बाधा। खलल। ५ प्रेषण। भेजना [को०]। ६. व्यमोह। व्यग्रता। चित्तविक्षेप [को०]।

विक्षेपलिपि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक प्रकार की प्राचीन लिपि या लेख प्रणाली।

विक्षेपशक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेदातदर्शन के अनुसार माया की शक्ति। अविद्या [को०]।

विक्षेप—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विक्षेप + अवस्था] असमय की दशा। स्थिति। उ०—जहाँ उसकी यह विक्षेपावस्था में बदली कि उसका आवरण। —साहित्य, पृ० २३६।

विक्षेप्ता—वि० [म० विक्षेप] विक्षेप करनेवाला । फेंकनेवाला ।
 तितर बितर करनेवाला [को०] ।

विक्षोभ—सझा पुं० [म०] १ मन की चंचलता या उद्विगता । चोम ।
 २ हाथी की छाती का एक भाग या पार्श्व । ३, हृन्मन ।
 कपन । जैसे, वीचिविक्षोभ (को०) । ४ द्र० । मर्म (को०) ।
 ५ विक्षेपन । विदारण (को०) । ६ धातक । भय ।
 सौक (को०) ।

विक्षोभण—सझा पुं० [म०] १ पृथक् पृथक् एक बात का नाम ।
 २ मन में बहुत अधिक चोम उत्पन्न होना या करना । ३,
 कपित करना । हिलावा (को०) ।

विक्षोभित—वि० [म०] क्षुब्ध किया हुआ । हिलाया हुआ (को०) ।

विक्षोभी—वि० [म० विक्षोभिन्] [वि० स्त्री विनाभिनी] जो चोम
 उत्पन्न करे । चोभारी । विजुब्ध करनेवाला ।

विखडित—वि० [सं० विखण्डित] १ तोटा हुआ । टूटा में विभक्त ।
 विचटित । २ दो भागों में किया हुआ । ३ टुकड़ों में विभक्त ।
 ३ अग्रभग किया हुआ । ४ जिसका मदन या निदारण
 किया गया हो (ध्याय) । ५ क्षुब्ध । अनाश । शीत () ।

विखडी—वि० [म० विखण्डिन्] विभक्त या विभिन करनेवाला ।
 नष्ट करनेवाला [को०] ।

विख'—वि० [म०] जिसकी नाक न हो । शिना नामवाला ।

विखण्डि^३—सझा पुं० [सं० विख, प्रा० विख्] २० 'विप' ।

विखड, विखडण्ड—सझा पुं० [म० विपम या विपय] विपत्ति । मार ।
 दुर्दिन । उ०—(क) आज विपद साँ दीकरी, हाथ उ हँसि
 लोह ।—ढोना०, दू० ७ । (ग) परदेसे घोंपन बणा विपद
 न जाणइ मुख ।—ढोना०, दू० १७ ।

विखनन—सझा पुं० [म०] गोदा । पारो या काम । माशर (को०) ।

विखना—सझा पुं० [सं० विखान] १ प्रजापति । प्रह्ला । २ एक मुनि
 का नाम [को०] ।

विखमण्ड—वि० [सं० विपम] २० 'विपम' । उ०—उ पदुताको कीम
 दग, जह गिरि विपम उजारि । धीरी चार निमि बीत पुनि,
 भयो नपत उजियार ।—विप्रा०, पृ० २७ ।

विखहा—सझा पुं० [सं० विपहा] विपल मया के शत्रु, मरुत ।

विखाद^३—सझा पुं० [सं० विपाद] २० 'विपाद' । उ०—अप्रतार
 अम अग्रगीत ग्रह वग विखाद पलटिया ।—रा० २०,
 पृ० ३७७ ।

विखाद'—सझा पुं० [सं०] १ नष्ट करना । ध्वस्त करना । ध्वगन ।
 २ खादन । निगलना । भक्षण । पाना [को०] ।

विखादितक—सझा पुं० [सं०] वह मृत शरीर जिस पशुओं ने खा डाला
 हो । (बौद्ध) ।

विखान^३—सझा पुं० [सं० विपाण] सीमा ।

विखानस—सझा पुं० [सं०] २० 'विखानस' ।

विखाना^३—क्रि० सं० [सं० वीक्षण, प्रा० विखण] ?] दिखाना ।
 उ०—सौहृद नूतनी नू अर्था तनदो आनंदपन मुख आशि
 विखावे ।—मनानंद०, पृ० ३६६ ।

[illegible]

जैसे,—विगतज्वर = जिसका ज्वर उतर गया हो। विगत-नयन = जिसकी आँखें नष्ट हो गई हो। विगतवास = जिसका भय दूर हो गया हो। उ०—विगतवास प्रमुदित मन माही। निरखि राम छवि हग न अषाही।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

२ गत से पहले का। अंतिम या बीते हुए से पहले का। जैसे,—विगत सप्ताह = गत सप्ताह से पहले का सप्ताह। ३. जो कही इधर उधर चला गया हो। ४. जिसकी प्रभा या कांति नष्ट हो गई हो। जिसकी चमक आदि जाती रही हो। निष्प्रभ। ५. रहित। विहीन। उ०—(क) विगत मान सम सीतल मन पर गुन नहि दोस कहौगी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख विगत नयन मन पीर।—सूर (शब्द०)। ६ मृत (को०)। ७ खोया हुआ। लुप्त (को०)। ८ अधकारा च्छन्न। अस्पष्ट। धुँधला (को०)।

यौ०—विगतकल्मष = निष्पाप। पवित्र। विगतक्लम = अक्लात क्लातिरहित। विगतज्ञान = नष्टज्ञान। विनष्टबुद्धि। विगत-नयन = नेत्रहीन। अंधा। विगतभी = निर्भय। निडर। विगत-राग = विगतस्पृहा। विगतलक्षण = अभागा। विगतश्रेक = कांतिहीन। अभागा। विगतस्पृहा = आकांक्षाहीन उदासीन।

विगत^३—सज्ञा पुं० पक्षियों का उड़ना [को०]।

विगत^४—सज्ञा पुं०। स० विगत (= व्यतीत)। १ बीता हुआ। व्यतीत। २ असलीयत। व्योम। हालचल। उ०—पह भाँत विगत विवाह सुगता अग प्रफुल्ल आण।—रघु० ८०, पृ० ८१।

विगतवार—क्रि० वि० [हिं० विगत + वार] दे० 'व्योरेवार'। उ०—या सर्मै आजानवाह जेते सरदार। कवि जेते जानै सो वखानै विगतवार।—रा० ८०, पृ० ११८।

विगता—क्रि० स्त्री० [स०] १ जो विवाह करने के योग्य न रह गई हो। २ जो परपुरुष से प्रेम करती हो।

विगतार्तवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह औरत जिसका ऋतुस्राव बंद हो गया हो [को०]।

विगतासु—क्रि० [स०] मृत। निष्प्राण [को०]।

विगति—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्दशा। दुर्गति। खराबी।

विगतोद्बद्ध—सज्ञा पुं० [स०] एक बुद्ध का नाम।

विगत^५—सज्ञा पुं० [स० विगति (= व्यतीत)] व्योरा। विवरण। उ०—उल्लस्य वेले परसँ अरस, ग्यान न लोक विगतरौ।—रा० ८०, पृ० १५३।

विगद^१—क्रि० [स०] गद रहित। नीरोग। स्वस्थ [को०]।

विगद^२—सज्ञा पुं० एक साथ अनेक प्रकार के शब्द होना [को०]।

विगदित—क्रि० [स०] १ चतुर्दिक् फैला हुआ (जनरव)। २ कहा हुआ। वातचीत किया हुआ। वर्णित [को०]।

विगम—सज्ञा पुं० [स०] १. प्रस्थान। अनुपस्थिति। चला जाना। प्रयाण। २ समाप्ति। अंत। खातमा। ३ नाश। हानि। ४ मोक्ष। ५ परित्याग (को०)। ६ मृत्यु (को०)। ७ पार्थक्य। अलगव (को०)।

विगर—सज्ञा पुं० [स०] १ भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति।

२ नग्न यति। नागा। नगा यति। ३ पर्वत। पहाड़ [को०]।

विगर्जा—सज्ञा स्त्री० [स०] भर्त्सना करना। डाँटना। डपटना। धिक्कार। फटकार।

विगर्हण—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र की लहरों की गर्जनध्वनि [को०]।

विगर्हणा—सज्ञा स्त्री० [स०] भर्त्सना। डाँट। फटकार।

विगर्हणीय—क्रि० [स०] बुरा। दुष्ट। निंद्य [को०]।

विगर्हा—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्सा। भर्त्सना। निंदा [को०]।

विगर्हित^१—क्रि० [स०] १. जिसे भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। तिरस्कृत। २ बुरा। खराब। निंदनीय। ३ निषिद्ध। ४ नीच। दुष्ट (को०)।

विगर्हित^२—सज्ञा पुं० निंदा [को०]।

विगर्ही—क्रि० [स० विगर्हिन्] निंदक [को०]।

विगर्ह्य—क्रि० [स०] जो भर्त्सना करने योग्य हो। डाँटने डपटने या निंदा करने के योग्य।

विगलन—सज्ञा पुं० [स०] १ गिरना। श्लथ होना। शैथिन्य। २ नाश। ३ एकरूप होना। घुलना। ४ रिसना। वह जाना। ५ गल जाना [को०]।

विगलित—क्रि० [स०] १ जो गिर गया हो। अथ पतित। २ जो बह गया हो। जो चूकर या टपककर निकल गया हो। ३. ढीला पड़ा हुआ। छुटा हुआ। शिथिल। ४ विगडा हुआ। उ०—ऋतुपति तर विगलित सुदल, तहँ कुरूपता वास। वसी अरुचि यक अघन में, पाप न बस्यो विनास,—रामस्वयंवर (शब्द०)। ५ अतर्हित। गया हुआ। लुप्त (को०)। ६ तितर बितर। अस्तव्यस्त (को०)। ७ विदीर्ण।

यौ०—विगलितकेज = बिखरे वालोवाला। विगलितनीवी = जिसकी नीवी खुल गई हो। विगलितवध = वधनमुक्त। विगलितलज्ज = धृष्ट। ढोठ। निर्लज्ज। विगलितवमन, विगलितवस्त्र = विवस्त्र। नग्न। नगा। विगलितशुब्ध, विगलितशोक = दुःखरहित। कष्टरहित। वेदनामुक्त।

विगसना^१—क्रि० अ० [स० विकसन] विकसित होना। खिलना। उ०—हीरा मन निज दास है, सब दामन को दास। सतगुरु से परिचय भई, विगसा प्रेम प्रकाश।—स० दरिया, पृ० ४५।

विगाढ—क्रि० [स० विगाढ] १ अतिशय। २ आगे बढ़ा हुआ। ३ बसा हुआ (रास्त्र)। ४ स्नात। अवगाहित। ५ प्रगाढ़। ६ गहरा घुसा हुआ। डूबा हुआ। निमज्जिन [को०]।

विगाथा—सज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छंद का एक भेद जिसके विषम (प्रथम और तृतीय) पदों में १२, दूसरे में १५ और चौथे में १८ मात्राएँ होती हैं और अंत का वर्ण गुरु होता है। विषम गणों (पदों) में जगण नहीं होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता है। इसे 'विगाथा' और 'उद्गीति' भी कहते हैं।

विगान—सज्ञा पुं० [स०] १ निंदा। भर्त्सना। मानहानि। अपमान। २. परस्पर विरोधी युक्ति। असंगति [को०]।

विगाह—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ डुबको लगाना । २ प्रवेश । ३ स्नान करना [को०] ।

विगाहना(७)—क्रि० अ० [सं विगाहन] अवगाहन करना । अवगाहना ।

विगाहमान—वि० [सं] विलोडन या अवगाहन करनेवाला [को०] ।

विगाहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं विगाथा] दे० 'विगाथा' ।

विगीत—वि० [सं] १ निन्दित । बुरा । कुत्सित । २ परस्पर विरोधी । अमंगल । ३ बुरे ढंग से गाया हुआ ।

विगीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं] १ निंदा । भिडकी । २ परस्पर विरोधी उक्ति । ३ आर्याछंद का एक भेद [को०] ।

विगुण^१—वि० [सं] १ जिसमें कोई गुण न हो । गुणरहित । निर्गुण । विशेष दे० 'निर्गुण' । उ०—दृशि रूप मन तमज विगुण । हृदयस्थ लखौ सब त्यागि भ्रम ।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०) । २ बुरा । निकम्मा (को०) । ३ विना रस्सी का (को०) । ४ सूक्ष्म (को०) । ५ अव्यवस्थित । अस्तव्यस्त (को०) । ६ असफल (को०) । ७ अपर्याप्त । थोड़ा । अधूरा (को०) । ८ विवृत । उलटा । विपरीत । उ०—मन का अन्तरोध होने से वायु विगुण (उलटा) होकर अफरा वात शून्य और मूत्र इनका नाश करे तब मूत्रकृच्छ्र प्रगट होय ।—माधव० पृ० १७१ ।

विगुल्फ—वि० [सं] प्रचुर । अधिक [को०] ।

विगूढ—वि० [मं विगूढ] १ गुप्त । छिपा हुआ । २ निन्दित [को०] ।

विगृहीत—वि० [सं] १, विभक्त । भग्न किया हुआ । २ पकड़ा हुआ । अभिभूत । ३ मुकाबला किया हुआ । विरोध किया हुआ । ४ प्रतिबद्ध । निरुद्ध [को०] ।

विगृह्यगमन—सञ्ज्ञा पु० [सं] कामंदक नीति के अनुसार चारों ओर से मित्रों तथा शत्रुओं से घिरकर पानी में से भागना ।

विगृह्ययान—सञ्ज्ञा पु० [सं] चढाई । हमला [को०] ।

विगृह्यवाद—सञ्ज्ञा पु० [सं] कहासुनी [को०] ।

विगृह्यास—सञ्ज्ञा पु० [सं] कामंदक नीति के अनुसार शत्रु की शक्ति आदि की कुछ भी परवाह न करके की जानेवाली अवाधु घ चढाई ।

विगृह्यासन—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ दुश्मन को छेड़कर या उमकी जमीन आदि छीनकर चुरावाप बैठना । २ शत्रुस्थित दुर्ग को जीतने में असमर्थ होकर घेरा डालकर बैठना ।

विगाहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं विगाथा] विगाथा नामक छंद जो आर्यों का एक भेद है ।

विग्न—वि० [सं] १ कंपित । क्षुब्ध । २ अस्त । भीत [को०] ।

विग्नपति(७)—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विज्ञप्ति > विग्नपति] दे० 'विज्ञप्ति' । उ०—विग्नपति ये हैं देव । भृति भयो भार्य मेव । सुदर सुधा समुद्र ग्रथ मोहि भायी है ।—सुदर० ग्र० (जी०) भा० १, पृ० ६२ ।

विग्र—वि० [सं] १ नामाहीन । विना नाक का । २. शक्तिशाली । मेधावी । बली [को०] ।

विग्रह—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ दूर या अलग करना । २ विभाग । ३ यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना (व्याकरण) । ४ कलह । लड़ाई । झगडा । ५ युद्ध । समर । ६ नीति के छह गुणों में से एक । विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना । ७ आकृति । शकल । ८ शरीर । ९ मूर्ति । १० सजावट । शृंगार । ११ साख्य के अनुसार कोई तत्व । १२ शिव का एक नाम । १३ स्कंद के एक अनुचर का नाम । १४ दूसरे के प्रति हानिकारक लपायो का प्रत्यक्ष प्रयोग । १५ विस्तार । फैलाव । प्रसार (को०) ।

विग्रहग्रहण—सञ्ज्ञा पु० [सं] रूपाकार धारण करना [को०] ।

विग्रहण—सञ्ज्ञा पु० [सं] रूप धारण करना । शकल में आना ।

विग्रहपर—वि० [मं] युद्ध या लड़ाई के लिये तुला हुआ ।

विग्रहवान—वि० [सं विग्रहवत्] शरीरवारी [को०] ।

विग्रहावर—सञ्ज्ञा पु० [सं] देह का पिछला भाग । पीठ [को०] ।

विग्रही—सञ्ज्ञा पु० [सं विग्रहिन्] १ लड़ाई झगडा करनेवाला ।

२ युद्ध करनेवाला । ३. युद्ध विभाग का मंत्री या सचिव ।

विग्रहेच्छु—वि० [सं] युद्ध चाहनेवाला । युद्धाभिलाषी [को०] ।

विग्राहित—वि० [सं] बुरी धारणा रखनेवाला [को०] ।

विग्राह्य—वि० [सं] जो इस योग्य हो कि उसके साथ लड़ाई की जा सके । जिसके साथ युद्ध हो सके ।

विग्रीव—वि० [सं] ग्रीवा रहित । जिसकी गरदन कट गई हो । [को०] ।

विघटन—सञ्ज्ञा पु० [सं] १ संयोजक अंगों को अलग अलग करना । २ तोड़ना फोड़ना । उ०—प्रगटी धनु विघटन परिपाटी ।—तुलसी (शब्द०) । ३ नष्ट या बरबाद करना ।

विघटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं] समय का एक छोटा भाग । लगभग २३-२४ सेकंड के बराबर का काल । घड़ी का २३ वाँ या ६० वाँ भाग । पल ।

विघटित वि० [सं] १ जिसके संयोजक अंग अलग अलग किए गए हो । २ जो तोड़ फोड़ वाला गया हो । ३ नष्ट ।

विघट्टन—सञ्ज्ञा पु० [नं] १ खोलना । २ पटकना । ३ रगड़ना । ४ दे० 'विघटन' । ५ प्रहार करना । टक्कर मारना (को०) । ६ ठेस पहुँचाना । व्यथित करना (को०) ।

विघट्टनीय—वि० [सं] १ पृथक् करने योग्य । २ जिसका विघटन किया जाय, विघटन करने योग्य [को०] ।

विघट्टित—वि० [सं] १ खुला हुआ । २ तोड़ा फोड़ा हुआ । ३ विभक्त या अलग अलग किया हुआ (को०) । ४ रगड़ा हुआ (को०) । ५ हिलाया हुआ । विलोडित (को०) । ६ आधारित (को०) ।

विघट्टी—वि० [सं विघट्टिन्] विघटित करनेवाला [को०] ।

विघन^१—सञ्ज्ञा पु० [मं] १ प्राधात करना । चोट पहुँचाना । २ एक प्रकार का बहुत बड़ा हथौड़ा । घन । ३ इद्र ।

विघन^२—वि० १ अत्यंत ठोस । कठिन । बठोर । २ घनता से रहित । कोमल । मृदु । ३. मेघविहीन । बादलों से रहित [को०] ।

विघ्न(७)^१—सञ्ज्ञा पु० [स० विघ्न] दे० 'विघ्न' ।

विघ्नर्पण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह रगड़ने या घिसने की क्रिया ।

विघ्नस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. आहार । भोजन । खाना । २. वह अन्न जो देवता, पितर, गुरु या अतिथि आदि के खाने पर बच रहे ।
उ०—अतिथि के भोजन से बचा हुआ अन्न 'विघ्नस' और पचयज्ञ से बचा अन्न 'अमृत' कहलाता था ।—प्रा० भा० प०, पृ० ३२६ । ३. आघा चबाया हुआ ग्रास (को०) । ४. खाद्य पदार्थ (को०) । ५. सिक्थक । मोम (को०) ।

विघ्नसाश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विघ्नस नामक अन्न का भक्षक । भुक्तशेष अन्न खानेवाला । जैसे, कौआ, कुत्ता आदि (को०) ।

विघ्नसाशी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विघ्नसाशिन] दे० 'विघ्नसाश' ।

विघात—सञ्ज्ञा पु० १. आघात । प्रहार । चोट । २. टुकड़े टुकड़े करना । तोड़ना फोड़ना । ३. नाश । ४. बाधा । विघ्न । रोक । ५. सफल न होना, विफलता । ६. हत्या । वध (को०) । ७. परित्याग करना । छोड़ना (को०) । ८. व्याकुलता (को०) ।

विघातक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विघ्न डालनेवाला । बाधक । २. विघात करनेवाला । घातक (को०) ।

विघातन^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विघात करने की क्रिया । २. मार डालना । हत्या करना ।

विघातन^२—वि० विघात करनेवाला । निवारण करने या हटानेवाला ।

विघाती—सञ्ज्ञा पुं० [स० विघातिन्] [स्त्री० विघातिनी] १. विघात करनेवाला । २. बाधा डालनेवाला । ३. हत्या करनेवाला । घातक ।

विघृष्ट—वि० [म०] उच्च स्वर से कथित । उद्धोषित (को०) ।

विघृष्टिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नासिका । नाक ।

विघूर्णन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चारो ओर घुमाना । चक्कर देना ।

विघूर्णित—वि० [स०] १. कँपाया हुआ । कपित । २. चारो ओर घुमाया या चक्कर दिया हुआ (को०) ।

विघृष्ट—वि० [स०] १. भली भाँति रगड़ा हुआ । घिसा हुआ । २. पीड़ित (को०) ।

विघोषण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] घोषणा करना । जोरो से चिल्लाना (को०) ।

विघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. किसी काम के बीच में पड़नेवाला अड़चन । रुकावट । बाधा । व्याघात । अंतराय । खलल ।

क्रि० प्र०—करना ।—डालना ।—दूर करना ।—पड़ना ।—होना ।

विशेष—जब इस शब्द के साथ नायक, नाशक अथवा इनके पर्यायवाची शब्दों का योग होता है तब इसका अर्थ 'गणेश' होता है ।

२. कृष्ण पाकफला । काली मकोय । ३. कण्ट । कठिनाई (को०) ।
विघ्नक, विघ्नकर, विघ्नकर्ता—वि० [स०] विघ्न करनेवाला । बाधा डालनेवाला ।

विघ्नकारी—सञ्ज्ञा पुं० [म० विघ्नकारिन्] वह जो विघ्न डालता हो । बाधा उपस्थित करनेवाला ।

विघ्नकृत्—वि० [स०] दे० 'विघ्नक' (को०) ।

हि० श० ६-१५

विघ्नजित्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विनायक । गणेश ।

विघ्ननायक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश ।

विघ्ननाशक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] गणेश ।

विघ्ननाशन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश (को०) ।

विघ्नपति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश ।

विघ्नराज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश ।

विघ्नविनायक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] गणेश ।

विघ्नसिद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विघ्न का दूर होना (को०) ।

विघ्नहता—सञ्ज्ञा पुं० [म० विघ्नहन्तृ] गणेश (को०) ।

विघ्नहरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश (को०) ।

विघ्नहारी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विघ्नहारिन्] गणेश ।

विघ्नित—वि० [स०] १. बाधायुक्त । अंतराययुक्त । अवरुद्ध । २. मलिन । आकुलित (को०) ।

विघ्नेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश ।

विघ्नेशकाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विघ्नेशकान्ता] सफेद दुर्वा ।

विघ्नेशवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश जी का वाहन । मूसा । चूहा (को०) ।

विघ्नेशान—सञ्ज्ञा पुं० [म०] गणेश (को०) ।

यौ०—विघ्नेशानकाता = श्वेत दुर्वा ।

विघ्नेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गणेश । गणपति ।

विचद्र—वि० [स० विचन्द्र] चंद्रमारहित । जिसमें चंद्रमा न हो (को०) ।

विचकित—वि० [स०] घबराया हुआ ।

विचकिल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. एक प्रकार की मल्लिका या चमेली । २. मदनक । मदन वृक्ष ।

विचक्र^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक दानव का नाम ।

विचक्र^२—वि० जो चक्ररहित हो । चक्रविहीन (को०) ।

विचक्षण—वि० [स०] १. प्रकाशवान् । चमत्ता हुआ । २. जो स्पष्ट दिखाई दे । ३. जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो । निपुण । पाण्डुरी । ४. पंडित । विद्वान् । ५. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान् । न०—परम साधु सब बात विचक्षण । बसे ताहि महुँ सकल सुलक्षण ।—रघुराज शब्द० ।

विचक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नागदती ।

विचक्षण(७)—वि० [स० विचक्षण] दे० 'विचक्षण' । चतुर । बुद्धिमान् ।
उ०—अंतरवेद विचक्षण नारि निरंतर अंतर की गति जानै ।
—देव (शब्द०) ।

विचक्षा—सञ्ज्ञा पुं० [स० विचक्षस्] आध्यात्मिक गुरु (को०) ।

विचक्षु—सञ्ज्ञा पुं० [म० विचक्षुन्] १. अधा । नेत्रहीन । २. आकुल । घबराया हुआ । ३. विमनस्क । उदाम (को०) ।

विचच्छेन(७)—सञ्ज्ञा [स० विचक्षण, प्रा० विचच्छेन] बहुत बड़ा बुद्धिमान् या चतुर । उ०—(क) रत्न परम विचच्छेन गरम तर घरम मुरच्छेन करम कर ।—गोपाल (शब्द०) । (ख) लच्छ रथी अघ्यच्छ प्रबल प्रत्यक्ष विचच्छेन । कसे कच्छ निज संनु रच्छ

करि पर बल भच्छन ।—गोपाल (शब्द०) । (ग) हूँ कपूर
मनिमय रही मिलि तन दुति मुकुतालि । छिन छिन खरी
विचच्छिन्नौ लखति छायाय तिन आलि ।—विहारी (शब्द०) ।

विचच्छिन्न(वि०) [सं विचक्षण] दे० 'विचक्षण' । उ०—मुग्धा
मे घोरादिक लच्छिन । प्रगट नही पै लखै विचच्छिन्न ।—नद०
ग्र०, पृ० १४७ ।

विचय—सज्ञा पु० [सं] १ एकत्र करना । इकट्ठा करना । जमा
करना । २ जाँच पड़ताल करना । परीक्षा करना । श्रवण ।
खोजना । हूँटना (को०) । ३ विशिष्ट रूप से रखना । क्रम
या तरतीब से रखना (को०) ।

विचयन—सज्ञा पु० [सं] १ इकट्ठा करना । एकत्र करना । २
जाँचना । परीक्षा करना । दे० 'विचय' ।

विचर—वि० [सं] १ घूमा हुआ । भ्रमिष्ठ । भ्रमण किया हुआ ।
२ भूला हुआ । भटका हुआ (को०) ।

विचरण—सज्ञा पु० [सं] १ चलना । २ घूमना फिरना । पर्यटन
करना । उ०—आर्य सतान उस दिन अपने प्राचीन वेप मे
विचरण करती थी ।—बालमुकुद गुप्त (शब्द०) ।

विचरणीय—वि० [सं] विचरण के योग्य । आचरणीय (को०) ।

विचरन(उ०) [सं विचरण] दे० 'विचरण' । उ०—(क) पूछ
पूरी सोभा विचरन नरचप दीह सीकर की चरनन रचना ऊपर
है ।—गोपाल (शब्द०) । (ख) भए कवीर प्रगट मधुरा में ।
विचरन लगे सकल वसुधा मे ।—कवीर (शब्द०) ।

विचरना—क्रि० श्र० [सं विचरण] चलना फिरना । उ०—(क)
जग महँ विचरि विचरि सब ठौरा । हरि विमुखन किय हरि
की ओरा ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) भोग समग्रो जुरी अपार ।
विचरन लागे सुख ससार ।—सूर (शब्द०) । (ग) रामचरण
घरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशंक ।—सूर (शब्द०) ।

विचरनि(उ०) [सं विचरण] चलने फिरने या विचरण
करने की क्रिया या भाव ।

विचरित^१—वि० [सं] १ घूमा हुआ । विचरण किया हुआ । २
(लाक्ष०) अनुष्ठित । कृत । आचरित । (को०) ।

विचरित^२—सज्ञा पु० घूमना । विचरण (को०) ।

विचर्चिका—सज्ञा स्त्री० [सं] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का
रोग जिसमे दाने निकलते और खुजली होती है । व्योची ।
२. छोटी फुसी ।

विचर्मा—वि० [सं विचर्मन्] बिना ढाल का । जिसके पास चर्म अर्थात्
ढाल न हो (को०) ।

विचल—वि० [सं] १ जो बराबर झिलता रहता हो । २ जो स्थिर
न हो । अस्थिर । ३ ढिगा हुआ । स्थान से हटा हुआ ।
४ व्यग्र । घबड़ाया हुआ (को०) । ५ अभिमानी । घमडी
(को०) ६ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ ।

मुह०—चलविचल होना=मन का किसी एक बात पर न
ठहरना । चित का चंचल होना ।

विचलता—सज्ञा स्त्री० [सं] १ विचल होने की क्रिया या भाव ।
चंचलता । अस्थिरता । २. घबराहट ।

विचलन—सज्ञा पु० [सं] १ अस्थिरता । २. इतस्तत् भ्रमण ।
३ गर्व । घमड (को०) ।

विचलना(उ०) [सं विचलन] १ अपने स्थान से हट जाना
या चल पड़ना । (विशेषतः घबराहट या गड़बड़ी आदि के
समय) । उ०—(क) श्री जीवन ममंत विघांसा । विचला विरह
त्रिहू लै नामा ।—जायसी (शब्द०) । (ख) दल विचलत
लखिकै भट सगरे । घरि घरि धनुष गदादिक श्रगरे ।—गोपाल
(शब्द०) । (ग) जो मोता मत ते मिचलै तो श्रीपति काहि
मंभारै । मोमे मुग्ध महापापी को कौन क्रोध करि तारै ।
—सूर (शब्द०) । २ विचलित होना । अस्थिर होना । घबराना ।
उ०—(क) जेहि भजत वि । इह इकरदन चलन ममर विचलत
प्रबल ।—गोपाल (शब्द०) । (ख) चलत जव रन हेत तव
विचलत लखिकै पर ।—गोपाल (शब्द०) । ३ प्रतिज्ञा या
संकल्प पर हठ न रहना । बात पर जमा न रहना ।

विचलाना(उ०) [सं विचलन] १. इधर उधर हटाना या
चलाना । विचलित करना । उ०—एहि विधान भरि जोर मकल
यदु दल विचलायो ।—गोपाल (शब्द०) । २ ऐसा काम करना
जिससे कोई घबरा जाय वा स्थिर न रह सके ।

विचलित—वि० [सं] १ जो विचल हो गया हो । अस्थिर । चंचल ।
जैसे,—किसी चीज को देखकर मन विचलित होना । उ०—
(क) उमकी बुद्धि ऐसी तीक्ष्ण थी कि कोई कैसा ही दुर्घट काम
हो, परंतु वह, कभी विचलित न होता ।—कादवरी (शब्द०) ।
(ख) तेहि ते अय यह रूप दुरावहु । विचलित सफल लोक सुख
पावहु ।—शं० दि० (शब्द०) । २ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा
हुआ । जो हठ न रहा हो । ढिगा हुआ । ३ गया हुआ । गत ।
चलित (को०) । ४ घबराया हुआ । व्यग्र ।

विचलपन(उ०) [सं विचक्षण, प्रा० विचलपन, विचलपन] दे०
'विचक्षण' । उ०—ग्रानन इदु उदोत सु मानौ । जानन भोज
विचलपन जानौ । रवि ज्यो सजुन के तन तापन । कामिनो कौं
मकरध्वज मानन ।—पृ० रा०, १७५३ ।

विचार—सज्ञा पु० [सं] १ वह जो कुछ मन से सोचा जाय अथवा
सोचकर निश्चित किया जाय । किसी विषय पर कुछ सोचने
या सोचकर निश्चय करने की क्रिया । २ वह बात जो मन मे
उत्पन्न हो । मन मे उठनेवाली कोई बात । भावना । खयाल ।
जैसे,—अभी मेरे मन मे विचार आया है कि चलकर उससे बातें
करूँ । ३ राजा या न्यायाधीश आदि का वह कार्य जिसमे वादी
और प्रतिवादी के अभियोग और उत्तर आदि सुने जाते हैं, यह
निश्चित किया जाता है कि किस पक्ष का कथन ठीक है, और
तब कुछ निर्णय किया जाता है । मुकदमे की सुनवाई और
फैसला । जैसे,—राजकर्मचारी दोनों को पकड़कर उनका विचार
कराने के लिये उन्हें राजद्वार पर ले गया (शब्द०) ।

यौ०—विचारकर्ता । विचारविमर्श । विचारसभा । विचारस्थल ।
४ विचरना । घूमना । ५ घुमाना । फिरना । ६ चयन (को०)
७ सकोच । सदेह (को०) । ८ दृग्दर्शिता । सतर्कता (को०) । ९
विमर्श । गवेषणा । तत्त्वार्थनिर्णय (को०) । १०. विवेक । तर्कण
(को०) । ११ परीक्षा (को०) ।

विचारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [क्षी० विचारिका] १ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। उ०—इन बातों पर ध्यान करके विचारक पुरुष जानते हैं कि ऐसा वृत्तान्त केवल कबीश्वर का कल्पित भाव है।—मत्परीक्षा (शब्द०)। २ फँसला करनेवाला। न्यायकर्ता। उ०—तब तक विरोधा विचारको का होना बहुत ही जरूरी है।—स्वाधीनता (शब्द०)। ३ नेता। पथप्रदर्शक। ४ गुप्तचर। जामूस।

विचारकर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विचारकर्तृ] १ वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। माचने विचारनेवाला। २ वह जो अभियोग आदि सुनकर उनका निर्णय करता हो। न्यायाधीश।

विचारज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विचार करना जानता हो। विचार करने में कुशल या प्रवीण। २ वह जो अभियोग आदि का निर्णय या निपटारा करता हो।

विचारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। २. घूमना फिरना। ३. घुमाना फिराना। ४ संदेह। हिचक (को०)। ५ परीक्षण। पर्यालोचन। अन्वेषण (को०)।

विचारणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। उ०—क्योंकि केवल अपनी बुद्धि, या अपने ज्ञान या अपनी विचारणा पर आदमी का विश्वास जितना कम होता है, उतना ही समार की प्रमादहीनता या निश्चयता पर उसका विश्वास अधिक होता है।—स्वाधीनता (शब्द०)। २ घूमने फिरने या घुमाने फिराने की क्रिया या भाव। ३ संदेह। हिचक (को०)। ४ परीक्षण। गवेषण (को०)। ५ दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति (को०)।

विचारणीय—वि० [सं०] १. जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। उ०—अब यह अवश्य-मेव विचारणीय है कि यदि ऐसा ही है तो बिना कारण किसी को दूषित करना और व्यर्थ उसपर दोषारोपण कर लोगो में उसकी योग्यता कम करने के लिये यत्न करना नीचता एवं अधमता है।—निबन्धमालादर्श (शब्द०)। २ जो सिद्ध न हो। जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिन्त्य। संदिग्ध।

विचारना—क्रि० अ० [सं० विचार + हि० ना (प्रत्यय)] १ विचार करना। सोचना। समझना। गौर करना। उ०—(क) कृष्णदेव द्वारावति अहै। मन में बहुत विचारत रहै।—सबल (शब्द०)। (ख) फिर मैंने यह बात विचारो की लिखने में तो कुछ अधिक अनर्थ नहीं होता।—अश्वाराम। (शब्द०)। (ग) आबु ही अजादवी घरा करों विचारि कै।—गोपाल (शब्द०)। (घ) रचो विरचि विचार तहँ, नृपमणि मधुकर शाहि।—केशव (शब्द०)। २. पूछना। ३. हूँटना। पता लगाना। उ०—तुलसी तेहि अवसर सावनता दस चारि नव तीनि एकीस सर्व। मति भारति पगु भई जो निहारि विचारि फिरो उपमा न पवै।—तुलसी (शब्द०)।

विचारपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विचार + पति] वह जो किसी बड़े न्यायालय में बैठकर मुकदमों आदि के फैसले करता हो। विचारक। न्यायाधीश।

विचारपरिणीत—वि० [सं० विचार + परिणीत] जिसका विचार द्वारा ग्रहण किया गया हो। विचारित। भली भाँति विचार किया हुआ। सकल्प द्वारा गृहीत। उ०—वर श्रम प्रसूति से की कृतार्थ तुमने विचारपरिणीत उक्ति।—युगात, पृ० ५५।

विचारभू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ अदालत। न्यायालय। २ यम का न्यायासन। यमराज का न्यायालय (को०)।

विचारमूढ—वि० [सं० विचारमूढ] १ निर्णय लेने में अममर्थ। जो भला बुरा समझने में असमर्थ हो। २. जड़। मूर्ख। अज्ञ (को०)।

विचारवान्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विचारवत्] वह जिसमें सोचने समझने या विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारशील।

विचारशक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय। सोचने या भला बुरा पहचानने की शक्ति। उ०—मनुष्य जानता तो है कि मैं जीता हूँ और सोच विचार भी करता हूँ, परन्तु प्राण और विचारशक्ति किससे बनाई गई।—गोलविनोद (शब्द०)।

विचारशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा शास्त्र।

विचारशील—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें किसी विषय को सोचने विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्। उ०—(क) जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)। (ख) विद्वान्, बुद्धिमान और विचारशील पुरुषों के चरण जिन भूमि पर पड़ते हैं वह तीर्थ बन जाते हैं।—शिवशम्भु (शब्द०)।

विचारशीलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विचारशील होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता। अकनमंदी। उ०—मात्मकर्तव्य का मामूली अर्थ विचारशीलता या बुद्धिमानी है।—स्वाधीनता (शब्द०)।

विचारशृङ्खला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विचार + शृङ्खला] परंपरा द्वारा प्राप्त विचार की सरणि। विचारों की परंपरा या कड़ी। उ०—इस तरह अनेक विचारशृङ्खलाएँ अर्थात् अनेक व्यनस्थित दर्शन होते हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६१।

विचारसरणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विचार करने का ढग। विचार करने की पद्धति (को०)।

विचारस्थल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो। २ न्यायालय। अदालत। ३ तर्कसंगत चर्चा जिसपर विचार विमर्श किया जा सके।

विचारस्वातन्त्र्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विचार + स्वातन्त्र्य] १ किसी विषय पर अपने हृदयगत भावों को व्यक्त करने की छूट या आजादी। २ जो चाहे कहने की छूट। भाषण करने की स्वतन्त्रता। शासन की आलोचना करने में प्रतिबन्ध न होना।

विचारालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो न्याय विभाग का प्रधान हो। प्रधान विचारक। प्रधान न्यायाधीश।

विचारालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अभियोगों आदि का विचार होता हो। न्यायालय। कचहरी। उ०—बड़े बड़े आचार्य, नीतिज्ञ, धर्मशास्त्री लोग विचारालय में बैठे विचार कर रहे हैं।—कादंबरी (शब्द०)।

विचारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल की वह दासी जो घर में लगे हुए फूल पौधों की देखभाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ वह स्त्री जो अभियोगों आदि का विचार करती हो।

विचारित^१—वि० [स०] १ जिसपर विचार किया जा चुका हो। जो सोचा सम्झा जा चुका हो। निर्णीत। निश्चित। २ जो अभी विचाराधीन हो। जिसपर अभी विचार होने को हो। सदिग्ध। अनिश्चित।

विचारित^२—सञ्ज्ञा पुं० १ विचार। मतव्य। २ सदेह। सशय [को०]।
विचारितसुस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] साहित्य का वह प्रकार जिसमें वैचारिक प्रौढता रहती है। बुद्धिप्रधान साहित्य। उ०—साहित्य विषय के दो प्रभेद हैं विचारितसुस्थ और अविचारित-रमणीय। पा० सा० सि०, पृ० ७।

विचारी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विचारिन्] १ वह जिसपर चलने के लिये बहुत बड़े बड़े मार्ग बने हो (जैसे, पृथ्वी)। २ जो इधर उधर चलता हो। विचरण करनेवाला। ३ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। ४ कवंध के एक पुत्र का नाम। ५ जो लपट वा कामुक हो (को०)।

विचारु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

विचार्य—वि० [स०] जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर विचार करने की आवश्यकता हो। विचारणीय।

विचाल^१—वि० [स०] मध्यस्थ। मध्यवर्ती। बीच का [को०]।

विचाल^२—सञ्ज्ञा पुं० १ विभाग करना। अलग करना। पृथक् करना। २ मध्यवर्ती स्थान या काल। अंतराल। अंतर। उ०—अरण्य साते उदर, विरछ रोमांच विचालें।—रघु० ६०, पृ० ४४।

विचालन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. हटाना या चलाना। २ नष्ट करना।

विचिंतन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विचिन्तन] [स्त्री० विचिन्तना] चिन्ता करना। सोचना। २ देखभाल। निरीक्षण [को०]।

विचिन्तनीय—वि० [स० विचिन्तनीय] १ जो चिन्ता करने या सोचने योग्य हो। २ देखभाल करने लायक (को०)।

विचिन्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विचिन्ता] १ सोच विचार। २ देखभाल। निरीक्षण।

विचिन्तित—वि० [स० विचिन्तित] विचारा हुआ [को०]।

विचिन्त्य—वि० [स० विचिन्त्य] १. जो चिन्तन करने या सोचने के योग्य हो। २ जिसमें किसी प्रकार का सदेह हो। सदिग्ध। ३ निरीक्षण या देखभाल करने योग्य (को०)।

विचि^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बीच। तरंग। लहर।

विचि^२—क्रि० वि० [हि० बीच] बीच में। मध्य में। उ०—सो मुख ब्रज अवलोकन करै। तब जु आई विचि पलकें परै।—नद० ग्रं०, पृ० १६३।

विचिकित्सा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सदेह। अनिश्चय। शक। २ वह सदेह जो किसी विषय में कुछ निश्चय करने के पहले उत्पन्न हो

और जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जाय। ३ अनवधानता। भूल। प्रमाद (को०)।

विचिकित्सित—वि० [स०] सदिग्ध। सदेहास्पद [को०]।

विचिकीर्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वि० (उप०)+चिकीर्षा] करने की इच्छा या अभिलाषा।

विचिकीर्षु^१—वि० [स० वि० (उप०)+चिकीर्षु] करने की इच्छा रखनेवाला।

विचिचीपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अन्वेष्टन की आकांक्षा [को०]।

विचिचीपु—वि० [स०] अन्वेष्टन करने की इच्छावाला [को०]।

विचित—वि० [स०] जिसका अन्वेष्टन किया जाय।

विचित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विचार। मोचना। २ अनुमान।

विचित्त^१—वि० [स०] १ अचेत। बेहोश। २. जिसका चित्त ठिकाने न हो। जो अपना कर्तव्य न समझ सकता हो।

विचित्त^२—वि० [स० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्र'। उ०—अद्भुत चित्त चढ़े चरिचि सुर विचित्त हिय हृदय किय।—पृ० १०, ६।४९।

विचित्तरा^१—वि० [स० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्र'। उ०—कभी नागा नदी करता था अक्षर। चतुर सब श्रोतां मे था विचित्र।—दक्खिनी०, पृ० २४६।

विचित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. बेहोशी। २ वह अवस्था जिसमें मनुष्य का चित्त ठिकाने न रहे।

विचित्र^१—वि० [स०] १ जिसमें कई प्रकार के रंग हो। कई तरह के रंगों या वर्णोंवाला। रंग विरंगा। २ जिसमें किसी प्रकार की विलक्षणता हो। जिसमें किसी प्रकार की असाधारणता हो। विलक्षण। जैसे,—(क) ऐसा विचित्र पक्षी मैंने पहले नहीं देखा था। (ख) तुम भी बड़े विचित्र आदमी हो। ३. जिसके द्वारा मन में किसी प्रकार का आश्चर्य उत्पन्न हो। विस्मित या चकित करनेवाला। ४ सुंदर। खूबसूरत। ५ रंगीन। चित्रित। रंगा हुआ (को०)।

यौ०—विचित्रचरित्र = अद्भुत चरित्रवाला। विचित्रदेह = (१) सुंदर शरीरवाला। (२) जिसकी देह चितकवरी हो। विचित्ररूप = विविध प्रकार का। अनेक रूपोंवाला। विचित्र-वोर्य। विचित्रशाला।

विचित्र^२—सञ्ज्ञा पुं० १ पुराणानुसार रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। २ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है, जब किसी फल को सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है। उ०—(क) करिबंको उज्ज्वल सुधा सो अभिराम देखो, मन ब्रजवाम रंगती हैं श्याम रंग में (ख) राम कहेउ रिस तजहु मुनीसा। कर कुठार आये यह सीसा।—तुलसी (शब्द०)। (ग) जीवन हित प्रानहि तजत नवै ऊचाई हेत। सुख कारण दुख संगहै बहुधा पुरुष सचेत (शब्द०)। (घ) क्यों नहि गंगा को सुमिरि दरस परस सुख लेत। जाके तट में मरत नर अमर होन के हेत (शब्द०)। ३ अनेक रंगों का समूह। विभिन्न रंगों का एकीभवन। (को०)। ४. आश्चर्य (को०)।

विचित्रक^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ भोजपत्र का वृक्ष । २ आश्चर्य ।
विचित्र ।

विचित्रक^२—वि० दे० 'विचित्र' ।

विचित्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ रंग विरमे होने का भाव । २. विलक्षण
या अद्भुत होने का भाव ।

विचित्रताई—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] विचित्र + सं ताति/हिं ताई (प्रत्य०)]
दे० 'विचित्रता' । उ०—उस विचित्रता से बढरर विचित्रताई
दिखा सकने की आशा इन्हें होती ।—प्रेमघन०, भा० २,
पृ० ३६ ।

विचित्रदेह—सञ्ज्ञा पुं [सं] मेघ । बादल ।

विचित्रवर्षी—वि० [सं] विचित्रवर्षिन्] इधर उधर बरसनेवाला ।
जहाँ तहाँ बरसनेवाला (मेघ) ।

विचित्रवीर्य—सञ्ज्ञा पुं [सं] चन्द्रवशी राजा शातनु के पुत्र का नाम ।
जिनका कथा महाभारत में है ।

विशेष—जब राजा शातनु ने अपने पुत्र भीष्म के आजन्म ब्रह्मचारी
रहने की प्रतिज्ञा करने पर सत्यवती के साथ विवाह कर
लिया था, तब उसी सत्यवती के गर्भ से उन्हें चित्रागद और
विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे । चित्रागद तो
छोटी अवस्था में ही एक गर्भव द्वारा मारा गया था, पर
विचित्रवीर्य ने बड़े होने पर राज्याधिकार पाया था । इसने
काशिराज की अशिका और अशालिका नाम की दो कन्याओं के
साथ विवाह किया था, जिन्हें भीष्म इसी के लिये हरण
कर लाए थे । परंतु थोड़े ही दिनों बाद निःसंतान अवस्था में
हो इसकी मृत्यु हो गई । सत्यवती को विवाह से पहले ही
पराशर ऋषि से गर्भ रह चुका था और उससे द्वैपायन (व्यास)
का जन्म हुआ था । विचित्रवीर्य के निःसंतान मर जाने पर
सत्यवती ने अपने उसी पहले पुत्र द्वैपायन को बुलाया और
उसे विचित्रवीर्य की विधवा स्त्रियों के साथ नियोग करने को
कहा । तदनुसार द्वैपायन ने अशिका और अशालिका से धृतरा-
ष्ट्र और पांडु तथा एक दासी से विदुर (विशेष दे० 'विदुर')
नाम के तीन पुत्र उत्पन्न किए थे ।

विचित्रशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के
वाचन पदार्थों का संग्रह हो । अजायबघर ।

विचित्राग^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] विचित्राङ्ग] १. मोर । जिसकी देह चित्र-
कवरी हो । २. व्याघ्र । बाघ ।

विचित्राग^२—वि० चित्रकवरे शरीरवाला [को०] ।

विचित्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ एक रागिनी, जिसे कुछ लोग भैरव
राग की पांच स्त्रियों में से एक और कुछ लोग त्रिवरा,
वराही, गौरी और जयती के मेल से बनी हुईं सकर जाति की
मानते हैं । २. श्वेत हिरन [को०] ।

विचित्रित—वि० [सं] १. जो कई तरह के रंगों आदि से बना हो ।
अनेक प्रकार के रंगों से चित्रित । रंग विरंगा । २. आभूषित ।
अलंकृत [को०] । ३. आश्चर्यजनक [को०] ।

विचिन्वत्क—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ अन्वेषण । तलाश । खोज । २.
योद्धा । शूरवीर । ३. गवेषणा [को०] ।

विचिलक—सञ्ज्ञा पुं [सं] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का
जहरीला कीड़ा ।

विची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] वीची । तरंग । लहर ।

विचीर्ण—वि० [सं] १. अधिकृत । अधिकार में लिया हुआ । २.
जिसको विदीर्ण किया गया हो । ३. जिममें प्रवेश किया गया
हो [को०] ।

विचुंबन—सञ्ज्ञा पुं [सं] विचुम्बन] चुंबन । चुम्बन । चुम्मा [को०] ।

विचुंबित—वि० [सं] विचुम्बित] १ चुम्बा हुआ । जिसका चुम्बन किया
गया हो । २. स्पृष्ट । छूया हुआ [को०] ।

विचेतन—वि० [सं] १. जिसे चेतना न हो । सञ्ज्ञाहीन । अचेतन ।
बेहोश । २. निर्जिव । प्राणहीन [को०] । ३. जिसे भले बुरे
का ज्ञान न हो । विवेकहीन । ४. सभ्रात । हतबुद्धि । कातर ।
अधार् (को०) ।

विचेतना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ विचेतन होने का भाव । सञ्ज्ञाहीन ।
अचेतनता । अवीरता । व्याकुलता ।

विचेत्ता—सञ्ज्ञा पुं [सं] विचेतस्] १. जिमका चित्त ठिकाने न हो ।
धवगया हुआ । २. बेहोश । ३. जिसे किसी विषय का विशेष
ज्ञान हो । चतुर । विशेषज्ञ । ४. दुष्ट । पाजो । ५. मूर्ख ।
वेकूफ ।

विचेष्ट—वि० [सं] जिसमें किसी प्रकार की चेष्टा न हो । जो हिलवा
डोलता न हो ।

विचेष्टन—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. (पीडा आदि से) बुरी चेष्टा करना ।
इधर उधर लोटना । तडपना । २. (घाड़े का) लात फेरना या
लोटना [को०] ।

विचेष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १. बुरी या खराब चेष्टा करना । मुँह
बनाना या हाथ पैर पटकना । २. प्रयत्न । उद्यम । कोशिश ।
गति [को०] । ३. व्यवहार । आचार [को०] ।

विचेष्टित^१—वि० [सं] १. जिसके लिये उद्योग या प्रयत्न किया गया
हो । २. परोक्षित । ३. अविचारित या मूर्खता के साथ किया
हुआ । ४. अन्वेषित [को०] ।

विचेष्टित^२—सञ्ज्ञा पुं १. कार्य । काम । २. प्रयत्न । उद्योग । ३.
इंगित । संकेत । भावभंगी । ४. कार्य । आचार । ५. अभिसंधि ।
पट्यत्र । ६. बुरा कार्य । दुष्कर्म [को०] ।

विच्छेद^१—वि० [सं] विच्छेद] विविध प्रकार के छंदों से युक्त । अनेक
छंदोंवाला [को०] ।

विच्छेद^२—सञ्ज्ञा पुं दे० 'विच्छेदक' ।

विच्छेदक—सञ्ज्ञा पुं [सं] विच्छेदिक] १. देवमंदिर । देवालय । २.
प्रासाद । महल ।

विच्छेदक—सञ्ज्ञा पुं [सं] सुसनी का साग ।

विच्छेदक—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. देवमंदिर । देवालय । देवालय ।
२. प्रासाद । महल ।

$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$

ଆମ ଦେଶର ସ୍ୱାଧୀନତା ପାଇଁ ଯୁଦ୍ଧ କରିବାକୁ ଆମେ ସମର୍ଥନ ଦେଉଛୁ ।

विछाडना†—क्रि० प्र० [हि० छोडना या सं० वि + १/छड] लक्ष्य पर छोडना । चलाना । उ०—कोमड लियो रघुवीर करौ सारंग विछाडे साँघ मरौ ।—रघु० ६०, पृ० १३३ ।

विछाल(उ)†—वि० [सं० विशाल, या सं० विस्तार, प्रा० विच्छार] दे० विशाल । उ०—छाड्यो नयर विछाल छौ छाड्यो साँभरि का रिरावास ।—वी० रासो, पृ० ६० ।

विछेद(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना । वियोग । विछोह । उ०—सूर श्याम के परम भावती पलक न होत विछेद ।—सूर (शब्द०) ।

विछेप(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विक्षेप, प्रा० विच्छेव] दे० 'विक्षेप' । उ०—देहि क दैविक छुटे भवतिक सोई अनन्य कहावन । इंद्री रहित विछेप नाही सोई है आतीतन ।—पलटू०, पृ० ६२ ।

विछोई(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [हि० विछोह + ई (प्रत्यय)] वह जिनका अपने प्रिय से विच्छेद हो गया हो । वियोगी । उ०—द्वितू पियारा मीत विछोई । साथ न लाग आप गा सोई ।—जायसी (शब्द०) ।

विछोह(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विच्छेद, देशी विच्छोह] प्रिय से अलग या दूर होना । वियोग । उ०—जस विछोह जल मीन दुहेला । जल हति काढ अंगन मँहँ मेला ।—जायसी (शब्द०) ।

विजघ—वि० [सं० विजघ्न] १. जिसकी जाँघें कट गई हो या न हो । २ (गाढ़ी) जिससे घुरी और पहिए आदि न हो ।

विज(उ)†—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विजृत्, प्रा० विज्जु, विज्ज] विजली । विजृत् । उ०—आवृत्त घट आजान भुश मनु कजल कोट कि विज लहि ।—पृ० रा०, ७ । १४२ ।

विजई(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजयिन्] दे० 'विजयी' ।

विजउरा†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० बीजपू क, प्रा० बीजऊरय] दे० 'विजौरा' । उ०—कह्या नीरँ सोई चर बाट चलतउ पूर । द्राख विजउरा नीरती सो धण रही सू दूर ।—ढोला०, ४२६ ।

विजट—वि० [सं०] मुक्त । खुला हुआ । जैसे, केश [को०] ।

विजडित—वि० [सं० विज डित] १ स्थिर । अडोल । उ०—चरण हुए थे विजडित मधुमार से ।—लहर, पृ० ६६ । २ जडा हुआ । जटित ।

विजन†—वि० [सं०] जिनमें अथवा जहाँ आदमी न हो । जनरहित । एकांत । निराला । उ०—तहाँ सचिव सब लेहि सुधारी । भूपहि विजन भवन मह डारी ।—रघुराज (शब्द०) ।

विजन†—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ निर्जन या एकांत स्थान । २ गवाह या साक्ष्य का अभाव [को०] ।

विजन(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यजन] हवा करने का पखा । बीजन । उ०—(क) मुरछल चँवर विजन बहु करते । मृदु कहि राह परिसम हगते ।—गोपाल (शब्द०) । (ख) कोऊ विजन डोलावन लागे । कोउ सीचे जल आत अनुरागे ।—रघुराज (शब्द०) ।

विजनता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विजन होने का भाव । एकांत का भाव ।

विजनन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जनन करने की क्रिया । प्रसव ।

विजना(उ)†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजन] पंखा । उ०—इत एक सखी वतराय रही विजना इत एक डुलाय रही ।—मगीत शाकुंतल (शब्द०) ।

विजनिन†—वि० [म०] उत्पन्न । जनित । जन्म लिया हुआ [को०] ।

विजन्मा†—सञ्ज्ञा पुं० [म० विजन्मन्] १ किसी स्त्री का उसके उपपति या पार से उत्पन्न पुत्र । जारज । दोगला । २ मनु के अनुसार एक वर्णसंकर जाति । ३ वह जो जातिच्युत कर दिया गया हो ।

विजन्मा†—सञ्ज्ञा पुं० उत्पत्ति । पैदाइश । जनन [को०] ।

विजन्म्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो प्रसव करने की हो । गर्भवती । गर्भिणी ।

विजपिल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कर्दम । कीचड [को०] ।

विजयत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजयन्त] इंद्र का एक नाम ।

विजयतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विजयस्तिका] एक योगिनी का नाम ।

विजयती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विजयन्ती] १ एक अप्सरा का नाम । २ ब्राह्मी वृत्ति ।

विजय†—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत । विपक्षी या शत्रु को दबाकर अपना प्रभुत्व या पक्ष स्थापित करना । जय । जीत । पराजय का उलटा । उ०—पार्व विजयी यह कथा राजा सुन के कान । विजय होय सब जगत में शत्रु होय क्षय जान ।—सबल (शब्द०) । २. एक प्रकार का छंद जो केशव के अनुसार सर्वथा का मत्तगयद नामक भेद है । ३. हरिवंश के अनुसार जयत (इंद्र का पुत्र) के पुत्र का नाम [को०] । ४ जैनो के अनुसार पाँच अनुत्तरो में से पहला अनुत्तर या सबसे ऊपर का स्वर्ग । ५. विष्णु के एक पार्षद का नाम । ६ अर्जुन का एक नाम । ७. यम का नाम । ८ जैनियों के एक जिन देव का नाम । ९ कलिक के एक पुत्र का नाम । १. कालिकापुराण के अनुसार भैरववंशी कल्पराज के पुत्र का नाम जो काशिराज नाम से प्रसिद्ध थे । ११. विमान १२ सजय के एक पुत्र का नाम । १३ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम । १४ एक प्रकार का शुभ मूर्त । १५ प्रस्थान । गमन (आदरार्थ), जैसे—विजययात्रा । उ०—श्री गुणार्थ जी फेरि श्री गोकुल को विजय करे ।—दो सौ वानन०, पृ० १६३ । १६ एक सवत्सर का नाम [को०] । १७ वर्ष का तीमरा मास [को०] । १८ एक प्रकार का सैन्य व्यूह [को०] । १९. एक प्रकार की मान या तीन [को०] । २० जात का पारितोषिक । सूट का माल [को०] । २१. प्रदेश । जिला [को०] । २२ एक प्रकार की बांसुरी [को०] । २३ कृष्ण के पुत्र का नाम [को०] । २४ शिव का त्रिशूल [को०] । २५ राजकीय शिविर [को०] ।

विजय†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यजन < पू० हि० विजन, विजय बीजन] भोजन करना । खाना । (पूरय) ।

विजयक—वि० [म०] जो विजय करता हो । सदा जीतनेवाला ।

विजयकर—वि० [सं०] दे० 'विजयक' [को०] ।

विजयकुंजर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजयकुञ्ज] १ राजा की सवारी का हाथी । २. लड़ाई के मैदान में जानेवाला हाथी ।

विजयकेतु—सङ्घा पु० [स०] १ वह ध्वजा जो शत्रु पर विजय प्राप्त करके फहराई जाती है। विजय पताका। २ एक विद्याधर का नाम (को०)।

विजयछद्म—सङ्घा पु० [स० विजयच्छद्म] १ पाँच सौ मोतियों का हार। २ एक प्रकार का कल्पित हार, जो दो हाथ लंबा और ५०४ (कुछ के मत) में ५०० लड्डियों का माना जाता है। कहते हैं कि ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते हैं।

विजयडिंडिम—सङ्घा पु० [स० विजयडिंडिम] प्राचीन काल का एक प्रकार का बड़ा ढोल, जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

विजयतीर्थ—सङ्घा पु० [स०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

विजयदंड—सङ्घा पु० [स० विजयदण्ड] १ सैनिकों का वह समूह अथवा सेना का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो। २ सेना का एक विशिष्ट विभाग जिसपर विजय विशेष रूप से निर्भर करती है, ३ विजयसूचक दंड।

विजयदशमी—सङ्घा स्त्री० [स० विजय (विजया) + दशमी] >० 'विजया दशमी'।

विजयदुदुभि—सङ्घा स्त्री० [स० विजयदुदुभि] युद्ध में विजय होने पर बजनेवाला घोंसा या नगाडा। विजयडिंडिम (को०)।

विजय द्वादशी—सङ्घा स्त्री० [स०] श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि का नाम (को०)।

विजयध्वज—सङ्घा पु० [स०] दे० 'विजयपताका'। उ०—फिर चले छोड़कर गृह त्याग के विजयध्वज से।—अपरा, पृ० २१३।

विजयनन्दन—सङ्घा पु० [स० विजयनन्दन] इक्ष्वाकुवंश के राजा जय का एक नाम।

विजयनगर—सङ्घा पु० [स०] एक नगर का नाम जो कर्नाटक के अंतर्गत है (को०)।

विजयपताका—सङ्घा स्त्री० [स०] १ सेना में की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २ विजय का सूचक कोई चिह्न।

विजयपर्पटी—सङ्घा स्त्री० [स०] वैद्यक में एक प्रकार की श्रौषध।

विशेष—यह पारे, जयती के पत्तों, रेंड की जड़ और अदरक आदि के योग से बनाई और सग्रहणी रोग में दी जाती है।

विजयपूर्णिमा—सङ्घा स्त्री० [स०] विजयदशमी के उपरांत पड़नेवाली पूर्णिमा। आश्विन की पूर्णिमा।

विशेष—इस तिथि को बंगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है और उत्सव मनाया जाता है।

विजयभैरव—सङ्घा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—इसमें हड का छिलका, चीता, इलायची, तज, संभालू, पीपल, लोहसार आदि के योग से गंधक और पारे की कजली तैयार की जाती है। यह सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करनेवाला माना जाता है।

विजयभैरव तैल—सङ्घा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार तेल।

विशेष—यह तेल, मालकंगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को कोल्हू में पेरकर निकाला जाता है और सब प्रकार के वायुरोगों का नाशक माना जाता है।

विजयमर्दल—सङ्घा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ढक्का।

विजययात्रा—सङ्घा स्त्री० [स०] वह यात्रा जो किसी पर किमी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजयरस—सङ्घा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक और सीसे के योग से बनता और प्रायः अजीर्ण रोग में दिया जाता है।

विजयलक्ष्मी—सङ्घा स्त्री० [स०] विजय की अविष्ठात्री देवी। वह देवी जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयशील—सङ्घा पु० [स०] वह जो बराबर विजय करता हो। सदा जीतनेवाला।

विजयश्री—सङ्घा स्त्री० [स०] विजय की अविष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयसार—सङ्घा पु० [स०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिसकी लकड़ी औजार बनाने और इमारत के काम में आती है। विशेष दे० 'विजैसार'।

विजयसिद्धि—सङ्घा स्त्री० [स०] विजयप्राप्ति। सफलता। कामयाबी (को०)।

विजया—सङ्घा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम, जो गौतम की कन्या थी। २ दुर्गा। ३ यम की भार्या का नाम। ४ हरीतकी। हरे। ५ वच। ६ जयती। ७ मजीठ। ८. एक प्रकार का शमी। ९ अग्निमय। १० भांग। सिद्धि। भग। उ०—(क) ससार के सब दुखों और समस्त चिन्ताओं को जो शिवशुभ्र शमा दो झुल्लू बूटी पीकर भुना देता था, आज उसका उम प्यारी विजया पर भी मन नहीं है।—शिवशुभ्र (शब्द०)। (ख) हम तो यह जानते हैं कि यदि किसी मन्त्र, यत्र से सर्पादि के डंक का कष्ट या कोई ज्वर, शूल आदि विकार दूर हो जाता हो, तो वह मन्त्र सखिया, घतूरा, विजयादि के विषों पर पड़ा हुआ भी अवश्य फल करे।—अद्वाराम (शब्द०)। ११ एक योगिनी का नाम। १२ वर्तमान अवस्थापिणी के दूसरे अर्थात् बी माता का नाम। १३ दक्ष का एक कन्या का नाम। १४ श्रीकृष्ण की माला का नाम। १५ इद्र की पताका पर की एक कुमारी का नाम। १६ प्राचीन काल का एक प्रकार का बड़ा खेमा। १७. काश्मीर के एक पवित्र क्षेत्र का नाम। १८ दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें अक्षरों का कोई नियम नहीं होता और जिसके अंत में रगण रखना कर्गमधुर होता है। १९ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इनके अंत में लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। उ०—वरन वसु चारिए। चरण प्रति चारिए। लगन ना बिसारिए। सुविजया संहारिए। २० दे० 'विजयादशमी'। २१ एक विद्या का नाम जिसे ऋषि विश्वामित्र ने रामचंद्र को सिखाया था (को०)। २२ पौंड्र मातृकाओं में से एक का नाम।

विजया एकादशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। २. फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

विजया दशमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

विशेष—यह हिंदुओं का और विशेषतः क्षत्रियों का एक बहुत बड़ा त्योहार है। प्राचीन काल में राजा लोग इसी दिन अपने शत्रुओं पर आक्रमण करने अथवा दिग्विजय आदि करने के लिये निकला करते थे। इस दिन देवी, घोड़े, हाथी और खड्ग आदि का पूजन तथा राजा के दर्शन करने का विधान है। इस दिन किसी नए कार्य का आरंभ करना बहुत ही शुभ समझा जाता है।

विजयानन्द—सञ्ज्ञा पुं० [स० विजयानन्द] १ संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २. बँदक में एक प्रकार की श्रौषण जो पारे और हस्ताल के योग से बनाई जाती और कुष्ठरोग में से दी जाती है।

विजयाम्बुपाय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] युद्ध में विरोधी पर विजय प्राप्त करने का उपाय [को०]।

विजयार्थी—वि० [स० विजयार्थिन्] विजय का इच्छुक। विजय पाने की कामना रखनेवाला [को०]।

विजयार्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विजयावटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बँदक में एक प्रकार की वटिका या गोली जो पारे और गंधक के योग से बनाई जाती है और जिसका व्यवहार संग्रहणी में होता है।

विजया सप्तमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार किसी मास के शुक्ल पक्ष की वह सप्तमी जो रविवार को पड़े।

विशेष—ऐसी विधि को पुराणानुसार रामचंद्र जी का पूजन और दान करने का विधान है।

विजयी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विजयिन्] [वि० स्त्री० विजयिनी] १ वह जिसने विजय प्राप्त की हो। विजय करनेवाला। जीतनेवाला। उ०—(क) सीजर भी उसी धर्म के प्रभाव से ऐसी विजयी सेना सग होने पर भी काँप उठता है।—तोताराम (शब्द०)। (ख) ऐरावत विजयी द्विरद मत्त उसके सब। मेघा में टक्कर मार खेलते हैं अब।—द्विवेदी (शब्द०)। (ग) शक्ति के विद्युत्करण, जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय, समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाय।—कामायनी, ५६। २. अर्जुन।

विजयेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम, जो विजय के देवता माने जाते हैं।

विजयोत्सव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह उत्सव जो आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। विजया दशमी को होनेवाला उत्सव। २ वह उत्सव जो किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने पर होता है।

हि० श० ९-१६

विजर^१—वि० [स०] १. जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो। जरा-रहित। २. नवीन। नया।

विजर^२—सञ्ज्ञा पुं० वृद्ध का तना या डंठल [को०]।

विजरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मलोक की एक नदी का नाम।

विजर्जर—वि० [स०] १ बहुत जीर्ण। कमजोर। २ सड़ा हुआ। जैसे काष्ठ [को०]।

विजल^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ जल या वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। सूखा। २. जल का न होना। पानी का अभाव। ३. दे० 'विजिल' [को०]।

विजल^२—वि० जलहीन। निर्जल [को०]।

विजला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चंचु या चंच नाम का साग।

विजल्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ सच, झूठ और तरह तरह की ऊटपटांग बातें करना। व्यर्थ की बहुत सी वक्काद। २ किसी सज्जन या भले आदमी के संबंध में दोषपूर्ण झूठी बातें कहना। ३ सामान्य कथन या वार्ता [को०]।

विजल्पित—वि० [स०] १ निरर्थक या ऊटपटांग कहा हुआ। २. कथित। कहा। अस्पष्ट या तुतलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजवल—वि० [म०] पिच्छल। फिसलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजाग^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वियोग] विमोह। वियोग। उ०—सूरज जरत हिमंचल ताका। विरह विजाग सौह रथ हांका।—जायसी (शब्द०)।

विजाग^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वज्रग्नि, हिं० वजागि] विजली। उ०—छया रुचि, छटा, अकाल जो, तडित चचला होइ। विद्युत, संप, विजाग, विजु, दामिनि घन विनु सोइ।—नद० ग्र०, पृ० ८८।

विजागी^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वियोगिन्] जिसका अपने प्रिय से विछोह हुआ हो। वियोगी। उ०—तेहि के जरत जो उठै विजागी। तीनो लोक जरहि तेहि लागी।—जायसी (शब्द०)।

विजात^१—वि० [स०] १ वर्णसंकर। दोगला। हंगमजादा। २. उत्पन्न या जनमा हुआ [को०]। ३. रूपांतरित। जो दूसरे रूप में परिणत हो [को०]।

विजात^२—सञ्ज्ञा पुं० सखी छंद का एक भेद

विशेष—इसके प्रत्येक चरण में ५-५-४ के विश्राम से १४ मात्राएँ और अंत में मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवीं मात्राएँ लघु रहती हैं। इसके अंत में जगण, तगण या रगण नहीं होना चाहिए।

विजाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ जारज लड़की। दोगली। २. वह स्त्री जिसे हाल में सतान हुई हो। जच्चा। ३. माता [को०]।

विजाति^१—वि० [स०] १ भिन्न या दूसरी जाति का। भिन्न वर्ग का। उ०—जो विजातियो और सजातियो में भेद नहीं मानते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २२८।

विजाति^२—सञ्ज्ञा स्त्री० विभिन्न जाति या वर्ग [को०]।

विजातीय—वि० [स०] १ जो दूसरी जाति का हो। एक अथवा अपनी जाति से भिन्न जाति का। उ०—(क) हम विजातीय कार्य-

कर्त्ताओं की बनाई हुई वस्तुओं को काम में लाते हैं। (ख) ब्रह्म से पृथक् कोई सजातीय, विजातीय और स्वगत अवयवों के भेद न होने से एक ब्रह्म ही सिद्ध होता है।—दयानन्द (शब्द०)। २ विभिन्न प्रकार का। असमान। विषम (को०)। ३ मिली-जुली जाति का। मिश्रित जातिवाला (को०)।

विज्ञानक—वि० [स०] ज्ञाता। परिचित। विज्ञ (को०)।

विज्ञानता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चतुरता। बुद्धिमत्ता (को०)।

विज्ञानना(उ)—क्रि० सं० [स० (उप०) वि० + हि० जानना] जानना। भली भाँति जानना। विशेष रूप से जानना। उ०—आतम कवन अनातम को है। याको तत्त्व विज्ञानत जो है।—पद्माकर (शब्द०)।

विज्ञानु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ या प्रकार। उ०—तिमि सव्य जानु विज्ञानु सकोचित सुग्राहित चित्त को।—रघुगज (शब्द०)।

विज्ञापयिता—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स० विज्ञापयितृ] वह जो विजय दिलावे। विजय करानेवाला (को०)।

विज्ञायठ†—सञ्ज्ञा पुं० [स० विजय ?] दे० 'विज्ञायठ'। उ०—आभूषणों में सोने के बने विज्ञायठ, शिरोभूषण, हार, मुकुट आदि थे।—आ० भा०, पृ० ४१।

विज्ञार—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मटिया भूमि जिसमें घान और कभी कभी चना भी बोया जाता है।

विज्ञारत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० विज्ञारत] वजीर का पद, धर्म या भाव। मन्त्रित्व। उ०—वजीर की तनखाह १ लाख रुपए की और विज्ञारत के दस्तूर समेत २ लाख रुपए की सालाना है।—देवी प्रसाद (शब्द०)। २. दे० 'वजारत'।

विज्ञारौ(उ)†—वि० [देश० या स० विजेतृ = विजेतर] विजय करनेवाला। उ०—छात्र विज्ञारौ सोनगिर, वात सुगौ ससार।—रा० रू०, पृ० ३५५।

विजिगीत—वि० [स०] ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)।

विजिगीष—वि० [स०] विजिगीषु। विजयेच्छु (को०)।

विजिगीषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह इच्छा जिसके अनुसार मनुष्य यह चाहता है कि मुझे कोई यह न कह सके कि मैं अपना पेट पालने में असमर्थ हूँ। २ विजय प्राप्त करने की इच्छा। उ०—परस्पर की विजिगीषा के कारण दोनों दल जीतोड़ परिश्रम करेंगे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२४। ३. व्यवहार। ४ उत्कर्ष। उन्नति।

विजिगीषु—वि० [स०] १. विजय की इच्छा करनेवाला। २ महत्वाकांक्षी (को०)। ३ योद्धा। शूर वीर (को०)। ४ प्रतिद्वंद्वी। प्रतिपक्षी (को०)।

विजिगीषुता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] विजिगीषु होने भाव या धर्म।

विजिघत्स—वि० [स०] भ्रूख पर विजय पानेवाला (को०)।

विजिघासु—वि० [स०] मारने की इच्छा रखनेवाला। हनन या विनाश करने को उत्सुक (को०)।

विजिज्ञाना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. जानने की विशिष्ट इच्छा। २. अन्वे-पण। शोध। खोज (को०)।

विजिज्ञासु—वि० [स०] जो पूर्णतया जानना चाहता हो। जानने समझने की इच्छावाला। (को०)।

विजिट—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० विजिट] १ भेंट। मुलाकात। २. डाक्टर आदि का रोगी के देखने के लिये आना। उ०—मालती कौं भी एक विजिट करनी थी।—गोदान, पृ० १३४। ३ वह घन जो डाक्टर आदि को आने के उपलक्ष्य में दिया जाय। डाक्टर की फीस।

विजिटर—वि० [अ० वि'जटर] विजिट करनेवाला (को०)।

विजिटर्स बुक—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० विजिटर्स बुक] किसी सार्वजनिक सस्था की वह पुस्तक जिसमें वहाँ के आने जानेवाले अपना नाम और कभी कभी उस सस्था के मवघ में अपनी समिति भी लिखते हैं।

विजिटिंग कार्ड—सञ्ज्ञा पुं० [अ० विजिटिंग कार्ड] एक प्रकार का बढ़िया छोटा कार्ड जिसपर लोग अपना नाम, पद और पता छपवा लेते हैं, और जब किसी से मिलने जाते हैं, तब उसे अपने आगमन की सूचना देने के लिये पहले यह कार्ड उसके पास भेज देते हैं।

विजित—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। वह जो जीत लिया गया हो। २ वह प्रदेश जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। जीता हुआ देश। ३ कोई प्रांत या प्रदेश। ४ फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो युद्ध में किसी दूसरे ग्रह से बल में कम होता है। ५ जीत। विजय (को०)।

विजितवानु—वि० [स० विजितवत्] विजेता। विजयी (को०)।

विजिता†—सञ्ज्ञा पुं० [स० विजितृ] १ निर्णायक। २ भागोदार। हिस्सेदार (को०)।

विजिता²—वि० १. पृथक्। २ भीत। डरा हुआ। ३ कपित (को०)।

विजितात्मा—सञ्ज्ञा पुं० [स० विजितात्मन्] १ शिव का एक नाम। २ वह जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर लिया हो।

विजितामित्र—वि० [स०] आत्मियों को जीतनेवाला। शत्रुंजय। विजितारि (को०)।

विजितारि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ एक राक्षस का नाम। २. वह जिसने अपने शत्रु को जीत लिया हो।

विजिताश्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।

विजितासु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक मुनि का नाम (को०)।

विजिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विजय। जीत। २. प्राप्ति।

विजिती—वि० [स० विजितिन्] विजयी (को०)।

विजितद्रिय—वि० [स० विजितेन्द्रिय] दे० 'जितेंद्रिय' (को०)।

विजितेय—वि० [स०] जिसे जीतना हो। विजय करने योग्य (को०)।

विजित्वर—वि० [स०] जीतनेवाला। विजेता।

विजित्वरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

विजिन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विजिल'।

विजिल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ ऐसा भोजन जिसमें अधिक रस न हो। २. एक प्रकार का दही।

विजविल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विजिल' [को०] ।

विजिहीर्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. मनोरजन की लालसा । २. धूमने की कामना [को०] ।

विजिहीर्षु—वि० [सं०] मनोरजन या धूमने के लिये इच्छुक [को०] ।

विजिह्वा—वि० [सं०] १ कुटिल । झुका हुआ । मुड़ा हुआ । २ वेड़-मानी । ३. तिरछा । टेढ़ा । ४ शून्य । ५. निष्प्रभ । फीका । विच्छाद्य [को०] ।

विजिह्व—वि० [सं०] १ जिह्वारहित । २ मूक । शून्या [को०] ।

विजीवित—वि० [सं०] प्राणहीन । मृत [को०] ।

विजीष—वि० [सं०] जिसे जय प्राप्त करने की इच्छा हो ।

विजु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पक्षी के शरीर का वह अंग जहाँ से डैने निकलते हैं [को०] ।

विजु^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्, प्रा० विज्जु] विजली । उ०—विद्युत् सप्त विजाग विजु दामिनि घन विनु मोह ।—नंद० ग्रं०, पृ० ८८

विजुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शाल्मलि कंद ।

विजुली^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवी का नाम ।

विजुली^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्] दे० 'विजली' ।

विजृम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजृम्भ] १. सिकोडना । सकोचन (भीह आदि का) । २ जँभाई [को०] ।

विजृम्भक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजृम्भक] एक विद्याधर [को०] ।

विजृम्भण—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजृम्भण] १ किसी पदार्थ का मुँह खोलना । २ बौर आना । कली आना । खिलना । ३ जँभाई लेना । उवासी लेना । ४ धनुष की डोरी खींचना । ५. (भी) सिकोडना । ६ कामक्रोडा । आमोद प्रमाद । रंगरेली [को०] ।

विजृम्भा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० विजृम्भा] उवासी । जँभाई ।

विजृम्भिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विजृम्भिका] १ जृम्भा । जँभाई । २ हफती । हाँफ [को०] ।

विजृम्भित—वि० [सं० विजृम्भित] १ जम्हाई लिया हुआ । २ उद्धाटित । विक्रमित । फैलाया हुआ । ३ प्रदर्शित । ४. उपस्थित । आविर्भूत । ५ क्रीडित । खेला हुआ [को०] ।

विजृम्भित^२—सञ्ज्ञा पुं० १. क्रीडा । मनोरंजन । २ अभिलाषा । इच्छा । ३. प्रदर्शन । प्रदर्शनी । ४ कृत्य । कर्म । आचार । ५ फल । परिणाम । ३ जँभाई [को०] ।

विजेतव्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विजेतव्या] जो विजित करने के योग्य हो । जो जीतने के योग्य हो ।

विजेता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो । जीतनेवाला । विजय करनेवाला ।

विजेय—वि० [सं०] जिसपर विजय प्राप्त की जाने की हो । जीता जाने के योग्य ।

विजै^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विजय] दे० 'विजय' । उ०—हारि जात नर करि उपाय । कपट न तिनको यह कँपाय । सोइ अकपन पद कहाय । त्रैलोक्य विजै जो रहा पाय ।—देव स्वामी (शब्द०) ।

विजैसार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजयसार] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो साल का एक भेद माना जाता है ।

विशेष—यह पूर्वी भारत तथा बरमा में बहुत अधिकता से पाया जाता है । इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेत के औजार बनाने तथा इमारत आदि के काम में आती है ।

विजैसाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विजयसार] दे० 'विजैसार' ।

विजोग^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वियोग] विछोह । वियोग । उ०—जूँ राणी सँ पडइ विजोग ।—वी० रासो, पृ० ६३ ।

विजोगी—वि० [सं० वियोगी] दे० 'वियोगी' ।

विजोर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० बीजपूरक] दे० 'विजोरा' ।

विजोर^२—वि० [हि० वि+जोर (=वल)] अशक्त । निर्बल । कमजोर । उ०—जीव को सुख दुख तनु संग होई । जोर विजोर तन के संग सोई ।—सूर (शब्द०) ।

विजोहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमोहा] एक वृक्ष का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो रंग होते हैं । इसे 'जोहा', 'विमोहा' और 'विजोहा' भी कहते हैं ।

विज्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विज्जल' ।

विज्जनु—सञ्ज्ञा स्त्री० [प्रा० विज्ज] विजली । विद्युत् । उ०—प्राची प्रमान समुह अनिय सुष पगुर विज्जनु मनिय ।—पृ० रा०, ५५ । ७ ।

विज्जल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की लपसी या चटनी । २ शर । तीर । वाण । ३. शाल्मली कंद [को०] ।

विज्जल^२—वि० फिसलनेवाला । पिच्छल [को०] ।

विज्जलत्ता^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युल्लता] विजली । विद्युत् की लता । दे० 'विजली' । उ०—ठनक्कत घटा वल्ल अग मोरँ । मनी कूलटा छैल चित चालि चोरँ । भूमैकत दतो सुनँन विराजँ । मनी विज्जलत्ता नभ मध्य छाजँ । व—पृ० २०, १२ । १७८ ।

विज्जव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक विशेष प्रकार का वाण या तीर ।

विज्जाहार^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्याधर, प्रा०] उ०—इद चद सुर सिद्ध चरण विज्जाहार राह भरिब वीर जुझ देण्ह कारण ।—कीर्ति०, पृ० १०६ ।

विज्जल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विज्जल' [को०] ।

विज्जु पुं^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्] । विद्युत् । विजली । उ०—ससि विज्जु मनहुँ दोउ दिसि वसत उडगन को बखतर घरे ।—गापाल (शब्द०) ।

विज्जुमला^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युज्ज्वाला, प्रा० विज्जुमला] । विजली की चमक । विद्युत् की ज्योति । उ०—तरवारि चमक्कइ विज्जुमला ।—कीर्ति०, पृ० ११० ।

विज्जुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. त्वचा । छिलका । २. दारचोनी ।

विज्जुलता^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विद्युल्लता] विद्युत् । विजली । उ०—कर लीने मनि रस्मि रस्मि राह फौल अथोरी । विज्जुलता बढि मनहुँ रची विमुकरमा डोरी ।—गोपालचंद्र (शब्द०) ।

विज्जुलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका या पहाड़ी नाम का लता ।

विज्जोहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमोहा] दे० 'विजोहा' ।

विज्ञ—वि० [सं०] १. जो जानता हो । जानकार । २. बुद्धिमान् । समझदार । ३. विद्वान् । पंडित ।

विज्ञ^२—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. बुद्धिमान् व्यक्ति । पंडित । २. मुनि । ऋषि [को०] ।

विज्ञता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विज्ञ होने का भाव । जानकारी । २. बुद्धिमत्ता । ३. पांडित्य । विद्वत्ता ।

विज्ञत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'विज्ञता' ।

विज्ञप्त—वि० [सं०] जो बतलाया या सूचित किया गया हो । जतलाया हुआ ।

विज्ञप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया । २. विज्ञापन । इशतहार । ३. शिक्षा । उपदेश [को०] । ४. निवेदन । प्रार्थना [को०] ।

विज्ञासिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] प्रार्थना । निवेदन ।

विज्ञबुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जटामासी ।

विज्ञराज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. ऋषिश्रेष्ठ । २. पंडितराज [को०] ।

विज्ञात—वि० [सं०] १. जाना या समझा हुआ । २. प्रसिद्ध । मशहूर ।

विज्ञातवीर्य—वि० [सं०] जिसकी शक्ति प्रख्यात हो [को०] ।

विज्ञातव्य—वि० [सं०] जो जानने या समझने के योग्य हो ।

विज्ञातस्थाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सामान्य ढग से तैयार किया हुआ पात्र [को०] ।

विज्ञाता—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विज्ञातृ वह जो जानता या समझता हो ।

विज्ञातार्थ—वि० [सं०] जो स्थिति को जानता हो या जो उससे अच्छी तरह परिचित हो ।

विज्ञाति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्ञान । समझ । २. जानकारी । ३. एक प्रकार की देवयोनियों जिसे गय भी कहते हैं । ४. एक कल्प का नाम ।

विज्ञान—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. ज्ञान । जानकारी । २. किसी विशिष्ट विषय के तत्वों या सिद्धांतों आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संगृहीत हो । किसी विषय की जानी हुई बातों का ठीक तरह से किया हुआ संग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप में हो । शास्त्र । जैसे,—पदार्थ विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शरीर विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, समाज-विज्ञान आदि । ३. किसी विषय का अनुभवजन्य, पूरा और अच्छा ज्ञान । कार्यकुशलता । ४. कर्म । ५. माया या अविद्या नाम की वृत्ति । ६. बौद्धों के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान । आत्मा का अनुभव । ७. ब्रह्म । ८. आत्मा । ९. आकाश । १०. निश्चयात्मिका बुद्धि । ११. मोक्ष । १२. संगीत [को०] । १३. चौदह विद्याओं का ज्ञान [को०] । १४. व्यवसाय । नियोजन [को०] ।

विज्ञानकृत्स्न—सञ्ज्ञा पु० [सं०] तत्र का एक कृत्स्न । (बौद्ध०) ।

विज्ञानकेवल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जीवात्मा [को०] ।

विज्ञानकोश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वेदात के अनुसार ज्ञानेंद्रियाँ और बुद्धि । विज्ञानमय कोश । विशेष दे० 'कोप' ।

विज्ञानवन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] केवल ज्ञान । विशुद्ध ज्ञान [को०] ।

विज्ञानता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विज्ञान का भाव या धर्म ।

विज्ञानपति—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह जो परम ज्ञानी हो ।

विज्ञानपाद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वेदव्यास का एक नाम ।

विज्ञानमय—वि० [सं०] प्रज्ञायुक्त । विशुद्ध ज्ञान से मण्डित [को०] ।

विज्ञानमय कोप—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह । विशेष दे० 'कोप' ।

विज्ञानमातृक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] बुद्धि का एक नाम ।

विज्ञानयोग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शुद्ध ज्ञान तक पहुँचने का साधन । प्रमाण [को०] ।

विज्ञानवाद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. वह वाद या सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो । उ०—विज्ञानवाद को मैं अब तक इतना प्रिय समझता था ।—मानव०, पृ० ४१७ । २. वह वाद या सिद्धांत जिसमें केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो ।

विज्ञानवादी—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विज्ञानवादिन् १. वह जो योग के मार्ग का अनुसरण करता हो । यागी । २. वह जो आधुनिक विज्ञान शास्त्र का पक्षपाती हो । विज्ञान के मत का समर्थन करनेवाला ।

विज्ञानहस—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'परमहस' । उ०—और ब्रह्मज्ञानी सब बड़कर विज्ञानहस हैं ।—कबीर मं०, पृ० ३०६ ।

विज्ञानिक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. जिसे ज्ञान हो । २. विज्ञ । पंडित । ३. दे० 'वैज्ञानिक' ।

विज्ञानिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विज्ञानी का भाव या धर्म । किसी विषय का पूर्ण ज्ञान ।

विज्ञानी—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विज्ञानिन् १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो । २. वह जो किसी विज्ञान का अच्छा वेत्ता हो । वैज्ञानिक । ३. वह जिसे आत्मा तथा ईश्वर आदि के स्वरूप के सबंध में विशेष ज्ञान हो ।

विज्ञानीय—वि० [सं०] विज्ञान सबधी । वैज्ञानिक ।

विज्ञानेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक महात्मा का नाम जिन्होंने याज्ञवल्क्य स्मृति की व्याख्या मितान्तरा नाम से की थी । उ०—हिंदू व्यवहार के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा 'मितान्तरा' के के उन्नायक तथा विधायक विज्ञानेश्वर उसी के आश्रय में रहते थे ।—आ० भा०, पृ० ५५८ ।

विज्ञापक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह जो विज्ञापन करता हो । समझाने, बतलाने या जतलानेवाला ।

विज्ञापन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [वि० विज्ञापनीय] १. किसी बात को बतलाने या जतलाने की क्रिया । जानकारी कराना । सूचना देना । २. वह पत्र या सूचना आदि जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाय । इशतहार । ३. निवेदन । प्रार्थना [को०] ।

विज्ञापना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विज्ञप्त करना । जतलाना । बतलाना । २. निवेदन [को०] ।

विज्ञापनीय—वि० [सं०] १. जो बतलाने या जतलाने के योग्य हो । सूचित करने के योग्य । २. निवेदनीय । प्रार्थनीय ।

विज्ञापित—वि० [सं०] १. जो बतलाया जा चुका हो जिसकी सूचना दी जा चुकी हो । २. जिसका इशतहार दिया जा चुका हो ।

विज्ञापी—वि० [स० विज्ञापिन्] जतलाने या बतलानेवाला । सूचना देनेवाला ।

विज्ञाप्ति—सब्बा खी० [स०] दे० 'विज्ञप्ति' ।

विज्ञाप्य^१—वि० [स०] बतलाने योग्य । सूचित करने योग्य ।

विज्ञाप्य^२—सब्बा पु० [स०] प्रार्थना । निवेदन [को०] ।

विज्ञप्ति—वि० [स०] जतलाने, सूचना देने अथवा निवेदन करने का अभिलाषी । [को०] ।

विज्ञेय—वि० [स०] १ जो जानने, सीखने, या समझने के योग्य हो । २ सम्मान्य [को०] ।

विज्य—वि० [स०] जिस धनुष से कसी डोर उतार दी गई हो । (वह धनुष) जिसमें डोर न हो । २ (धनुष) जो गुण या प्रत्यचा विहीन हो [को०] ।

विज्वर—वि० [स०] १ जिसका ज्वर उतर गया हो । जिसका बुखार छूट गया हो । २ जिसे सब प्रकार की चिताओं से छुटकारा मिल गया हो । निश्चित । बेफिक्र । ३ जो सब प्रकार के क्लेशों आदि से मुक्त हो । जिसे किसी प्रकार का शोक या सताप न हो ।

विभ्रमर—वि० [स०] १ अप्रिय । २ विषम । बेमेल [को०] ।

विटक^१—वि० [स० विटङ्क] सुदर । मनोहर ।

विटक^२—सब्बा पु० १ सब से ऊँचा सिरा या स्थान । २ पक्षियों का पिंजड़ा । कबूतर का दरवा । काबुक । ३. बड़ी ककड़ी ।

विटकक^१—वि० सब्बा पु० [स० विटङ्कक] दे० 'विटक' [को०] ।

विटकित—वि० [स० विटङ्कित] १ टकित । मुद्राकित । २ उत्थित । खड़ा हुआ । अचित [को०] ।

विट—सब्बा पु० [स०] १. वह जिसमें कामवासना बहुत अधिक हो । कामुक । लपट । २ वह जा किसी वेश्या का यार हो या जिसने किसी वेश्या को रख लिया हो । ३. घूर्त । चालाक । ४. साहित्य में एक प्रकार का नायक । साहित्यदर्पण के अनुसार जो व्यक्ति विषय भोग में अपनी सारी संपत्ति नष्ट कर चुका हो, भारी घूर्त हो, फल या परिणाम का एक ही अंग देखता हो, वेप भूषा और बातें बनाने में बहुत चतुर हो, वह विट कहलाता है । ५. एक पर्वत का नाम । ६ एक प्रकार का खर जिस 'दुर्ग व खैर' भी कहते हैं । ७. नारंग का वृक्ष । ८. चूड़ा । ९ साँवर नमक । १० विष्टा । गुह । मल । उ०—(क) कवि भस्म विट परिनाम तन तेहि लागि जगु वैरी भयो । (ख) पाछे तें शूकर सुत आवा । विट ऊपर मुख मारि गिरावा ।—विश्राम (शब्द०) । ११. (नाटक में) एक पात्र । नायक का सखा [को०] । १२ गाहू । इल्लती [को०] । १३. पल्लवयुक्त शाखा । पत्तोवाली डाली [को०] ।

विटक—सब्बा पु० [स०] १. प्राचीन काल की एक जाति का नाम । २. पुराणानुसार एक प्राचीन देश जो नर्मदा नदी के तट पर था । ३. फोडा । ब्रण ।

विटकाता—सब्बा खी० [स० विटकान्ता] हरिद्रा । हल्दी [को०] ।

विटका—सब्बा खी० [स०] विटो के मिलने का कच्चा [को०] ।

विटकारिका—सब्बा खी० [स०] एक प्रकार का पक्षी ।

विटकृमि—सब्बा पु० [स०] चुन्ना या चुनचुना नाम का कीड़ा जो बच्चों की गुदा में उत्पन्न होता है ।

विटप—सब्बा पु० [स०] १ वृक्ष या लता की नई शाखा । कोपल । २ छतनार पेड़ । झाड़ी । ३ वृक्ष । पेड़ । उ०—ठहर गए नृप वहीं विटप की छाँह में, हुआ विस्फुरण शकुनरूप वर बाँह में ।—शकुं०, पृ० ४७ । ४ आदित्य पत्र । ५ विस्तार । फोलाव [को०] । ६ लता [को०] । ७ अडकोश पटल [को०] ।

विटपक—सब्बा पु० [स०] १ दुष्ट । पाजी । २ वृक्ष [को०] ।

विटपि—सब्बा पु० [म० विटपी] दे० 'विटपी' । उ०—नियममयी उलझन लतिका का भाव विटपि से आकर मिलना । जीवन वन की बनी समस्या आशा नभकुसुमों का खिलना ।—कामायनी, पृ० २६५ ।

विटपिमृग—सब्बा पु० [स०] वानर । बदर [को०] ।

विटपी—सब्बा पु० [स० विटपिन्] १ जिसमें नई शाखाएँ या कोपलें निकली हो । २. वृक्ष । पेड़ । उ०—बढ़ते हैं विटपी जिधर चाटता मन है ।—साकेत, पृ० २१२ । ३ अजीर का पेड़ । ४ वट वृक्ष । वट का पेड़ ।

विटपीमृग—सब्बा पु० [स०] शाखामृग । बदर ।

विटपेटक—सब्बा पु० [स०] धूर्तमंडली । धूर्तों का समुदाय [को०] ।

विटप्रिय—सब्बा पु० [स०] मोगरा नामक फूल या उसका पीवा ।

विटभूत—सब्बा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम ।

विटमाक्षिक—सब्बा पु० [स०] सोनामक्खी नाम का खनिज द्रव्य ।

विटलवण—सब्बा पु० [स०] साँचर नमक ।

विटवल्लभा—सब्बा खी० [स०] पाटली वृक्ष ।

विटाटिका—सब्बा खी० [स०] १ धूर्तों का मिलन कच्चा । विट लोगों का आश्रय या गृह । २. एक प्रकार का मुस्तक या मोथा [को०] ।

विटि, विटी—सब्बा खी० [स०] १ लाल चंदन । २ पीत चंदन [को०] ।

विट्—सब्बा पु० [स०] साँचर नमक ।

विट्क—सब्बा पु० [स०] १ विष । जहर । २ मल [को०] ।

विट्घात—सब्बा पु० [स०] मूत्राघात नामक रोग ।

विट्चर—सब्बा पु० [स०] गाँवों में रहनेवाला सूअर ।

विट्ठल—सब्बा पु० [स०] पंढरपुर (महाराष्ट्र) की विष्णु की एक मूर्ति का नाम ।

विट्पति—सब्बा पु० [स०] जामाता । दामाद ।

विट्प्रिय—सब्बा पु० [स०] शिशुमार या सूँस नामक जलजंतु ।

विट्शूल—सब्बा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शूल रोग ।

विट्सग—सब्बा पु० [स० विट्सङ्ग] मलरोग । कब्जियत ।

विट्सारिका—सब्बा खी० [म०] एक प्रकार का पक्षी ।

विठक—वि० [स० विठङ्क] नीच । दुर्वृत्त । कमीना [को०] ।

विठर—सब्बा पु० [स०] १. वृहस्पति का एक नाम । २. वावहूक । वाग्मी व्यक्ति । पंडित । ३. मूर्ख भादमी [को०] ।

विठल—सञ्ज्ञा पु० [सं विट्ठल ?] दे० 'विट्ठल' ।

विठोवा -सञ्ज्ञा पु० [हिं०] दे० 'विट्ठल' ।

विठुल—सञ्ज्ञा पु० [सं या सं विष्टरश्चस् = विष्णु (कृष्ण) के एक नाम का संज्ञित रूप, सं विष्टर > प्रा० विठुल] १ विष्णु या कृष्ण की एक मूर्ति जो पठरपुर में है ।

विठुलनाथ—सञ्ज्ञा पु० [हिं०] वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र का नाम जिन्होंने 'वल्लभ मत' के आठ प्रधान भक्त कवियों को लेकर 'अष्ट छाप' की स्थापना की ।

विडग—सञ्ज्ञा पु० [म० विडङ्ग] वायविडंग ।

विडग^२—वि० अभिज्ञ । जानकार । निपुण [को०] ।

विडग^३—सञ्ज्ञा पु० [दश०] अश्व । घोड़ा । उ०—तिरिगामइ लेस्या टालिमा वाँकड मुहाँ विडग—ढोला०, दू० २२७ ।

विडंग^४—सञ्ज्ञा पु० [दश०] घोड़ा । उ०—निस प्रथम जाम आनोभनर, दारण मोनागिर दुरग । कर वाचपाद अकवर कुशल, वोदहरे सभिया विडंग ।—रा० रू०, पृ० १७० ।

विडगी^५—वि० [हिं० वेढग] वेढगी । उ०—आया मृग मार मेसनू आखे वधव मृगो मवीता । दारुण कुटी विडगी दीसै सही गमाई मीता ।—रघु० रू०, पृ० १३८ ।

विडव^६—सञ्ज्ञा पु० [सं विडव] १. नकल । अनुकरण । २. दुखी करना । तग करना । ३. मजाक । परिहास । ठिठोली [को०] ।

विडव^७—वि० अनुकरण करनेवाला । नकल करनेवाला ।

विडवक—सञ्ज्ञा पु० [सं विडवक] १. ठीक ठीक अनुकरण करनेवाला । पूरी पूरी नकल करनेवाला । २. अनुकरण करके चिढ़ाने या अपमान करनेवाला । ३. निंदा या परिहास करनेवाला ।

विडवन—सञ्ज्ञा पु० [सं विडवन] १. किसी के रंगढग या चाल-ढाल आदि का ठीक ठीक अनुकरण करना । पूरी पूरी नकल करना । २. चिढ़ाने या अपमानित करने के लिये नकल करना । भाँडपन करना । मजाक करना । मजाक का विषय बनाना । ३. निंदा या उपहास करना । ४. धोखेवाजी । जालसाजी [को०] । ५. क्लेश । संताप [को०] । ६. निराश करना [को०] ।

विडवना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विडवना] [वि० विडवनीय, विडवित] १. अनुकरण करना । नकल उतारना । २. किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसकी नकल उतारना । ३. हँसी उड़ाना । मजाक करना । ४. हँसी का विषय । उ०—मँसार के समस्त अभावो को असंनोप कहकर हृदय को धोखा देता रहा । परतु कँसी विडवना । लक्ष्मी के लालो के भूभग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या ?—स्कंद०, पृ० १६ । ५. डाँटना डपटना । फटकारना । दे० 'विडवन' ।

विडवनीय—वि० [सं विडवनीय] १. जो अनुकरण करने के योग्य हो । नकल उतारने लायक । २. चिढ़ाने या उपहास करने योग्य । दे० 'विडवित' ।

विडवित—वि० [म० विडवित] १. नकल किया हुआ । २. जिसका परिहास किया गया हो । ३. वंचित । छला हुआ । ४. सतप्त किया हुआ । जो हताश किया गया हो । ५. नीच । हेय । कमीना ।

विडवी—सञ्ज्ञा पु० [म० विडम्वि] वह जो किसी प्रकार की विडवना करता हो । विडवना करनेवाला ।

विडव्य—सञ्ज्ञा पु० [म० विडव्य] वह जो विडवना के लायक हो । उपहास का विषय [को०] ।

विड—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. विट् लवण । काला नमक । २. खड । अण । टुकड़ा [को०] ।

विडगड—सञ्ज्ञा पु० [सं विडगण्ड] विट् लवण । साँचर नामक ।

विडद^१—सञ्ज्ञा पु० [हिं० विरद] दे० 'विरद' । उ०—भाट विडद तिहाँ ऊचरै । धनि धनि हो बीसल चहूँवाण —वी० रासो, पृ० ११० ।

विडरना^२—क्रि० अ० [सं विधारित ? या सं तलव, हिं० डालना या सं वितरण] १. इधर उधर होना । वितर वितर होना । उ०—(क) विडरत विमुक्ति जानि रथ ते मृग जुनु ससकि शशि लगर सारे ।—सूर (शब्द०) । (ख) जानत नही कौन गुण यहि तन जाते सब विडरे ।—सूर० । २. भागना । दौडना । उ०—रुँके मुगल ताल की जोरी । भजै विडरि बालक चहुँ ओरी ।—द्वयप्रकाश (शब्द०) । ३. चौकना । भौचक होना । ४. डरना । भीत होना ।

विडराना^३—क्रि० सं० दे० 'विडारना' ।

विडौणा, विडाणा^४—वि० [दश०] [वि० स्त्री० विडाँणी] विराना । विगाना । पराया । उ०—(क) थल मथ्यइ ऊजासडि, थे इण केहइ रग । धण लीजइ प्रे मारिजइ, छाँडि विडाँणउ मग ।—ढोला०, दू० ६३२ । (ख) रामनाम निशि दिन मजो तजो विडाणी तात । जन हरिया नर देह सो श्रीमर बीतो जात ।—राम० धर्म०, पृ० ५८ । (ग) आँखडियाँ डवर हुई नयण गमाया रोय । से साजण परदेश मई रह्या विडाणा होय ।—ढोला०, दू० १६५ ।

विडारक—सञ्ज्ञा पु० [सं] विडाल । बिल्ली ।

विडारना—क्रि० सं० [हिं० विडरना का सक० रूप] १. वितर करना । इधर उधर करना । छितराना । उ०—हारे लँ विडारे जोइ । पति पै पुकारे कहो वजमारे मति जोवो हरि गाम् ।—नाभादास (शब्द०) । २. नष्ट करना । उ०—विष्वक्मेन रूप हरि लेगे कोन्हो शिव को हेत । अमुर मारि सब तुरत विडारे दोन्हें रुद्र निकेत ।—सूर (शब्द०) । ३. भगाना । दौडाना । ४. चौकाना । आश्चर्यचकित कर देना ।

विडाल—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. आँख का पिंड । २. आँख की एक प्रकार की दवा जो जेठी मधु, गेरू, दारु हल्दी और रमाजन आदि से बनती है और जिसका आँख के चारो ओर लेप किया जाता है । ३. आँख के चारो ओर किया जानेवाला कोई लेप । ४. बिल्ली । ५. गवमाजरी । मुश्क बिलाव । ६. हरताल । दे० 'विडाल' ।

विडालक—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. हरताल । २. बिल्ली । ३. आँख की एक औषध । विडाल ।

विडालपद—सञ्ज्ञा पु० [सं] दो तोले का परिमाण ।

विडालपदक—सञ्ज्ञा पु० [सं] वैद्यक परिभाषा के अनुसार एक कर्म का परिमाण ।

विडालाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम जो महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में गया था।
 विडालाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी का नाम [को०]।
 विडाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदारी कद। २. विल्ली।
 विडीन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पक्षियों की उड़ान का एक प्रकार।
 विडीनक—सञ्ज्ञा सं० [सं०] पक्षियों की उड़ान का एक भेद। पक्षियों का अलग अलग होकर उड़ना [को०]।
 विडुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वेत [को०]।
 विडूरज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक बहुमूल्य रत्न। वैदूर्य मणि [को०]।
 विडोजा, विडौजा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विडोजस् विडौजस्। इद्र का एक नाम।
 विड्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विट' [को०]।
 विड्गघ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्गन्ध। विड लवण।
 विड्ग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कोष्ठबद्धता। कव्जयत। मलरोध।
 विड्घात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाव और पाखाना रुकना।
 विड्ज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा आदि से उत्पन्न होनेवाले कीड़े मकोड़े।
 विड्ड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अस्थि। हड्डी [को०]।
 विड्डल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विडुल' [को०]।
 विड्वन्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्वन्ध। मल का अवरोध। कव्जयत।
 विड्भग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्भङ्ग। बहुत दस्त होना। पेट चलना।
 विड्भव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विट्ज' [को०]।
 विड्भुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्भुज्। १. गुवरैला। २. सूअर [को०]।
 विड्भेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहुत दस्त होना। पेट चलना।
 विड्भेदी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्भेदिन्। वह ओषधि या द्रव्य जो विरेचक हो। दस्तावर चीज या दवा।
 विड्भोजी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विड्भोजिन्। वह जो विष्टा खाता हो। शूअर, गुवरैला आदि।
 विड्लवण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विट्लवण। साँचर नमक।
 विड्वराह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गाँवों में रहनेवाला सूअर।
 विड्विघात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मूत्रघात रोग।
 विड्ढना^१—क्रि० अ० [सं०] वि + दहन तुल० हिं० वेढना। मुद्द करना। भिडना उ०—गाया साह अलावदा, विड कटकाँसु वीर।—वांकी० ग०, भा० १, पृ० ८१।
 विण्ज^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वणिज्। व्यापार उ०—शरुण नगर सक जुत देवे। दोलत विणज बजार न देवे।—रघु०, १।११२।
 विण्ठना^१—क्रि० अ० [सं०] विण्ठ, प्रा० विण्ठ + हिं० ना (प्रत्यय)। नष्ट होना। उ०—तन विण्ठा जीउ खेलिया छाडि चलिया घर पाह।—प्राण०, पृ० २५६।
 विणसना^१—क्रि० अ० [सं०] विनशन। नष्ट होना। उ०—कलिजुग पाप जन्मवतरयो रजि के कारण विणसस लक।—बी० रासो, पृ० ८६।

विणसा^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विनाश'। उ०—अस्ती चरित गति को लहइ? एकई आखर रस मवइ विणाम।—बी० रासो, पृ० २।
 वितड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वितण्ड। १ हाथी। २ एक प्रकार का ताला [को०]।
 वितडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वितण्डा। १ न्यायशास्त्र में मोलद प्रकार की तर्क प्रणालियों में से एक। दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २ व्यर्थ का झगडा या कहासुनी। ३ कचूर। ४. दर्वी। ५. करवीरी [को०]। ६. शिनारस।
 वितडावाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वितण्डावाद। व्यर्थ के तर्क का आश्रय लेना। उ०—आधुनिक प्रवृत्तियों को प्रवाद और वितडावाद कहकर उनकी निंदा की थी।—आचार्य०, पृ० १४०।
 वितत^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वि + तन्त्र। वह वाजा जिसमें तार न लगे हो। विना तार का वाजा। उ०—तत वितत सुम्रघन वाजहि शब्द होय झन्कारा।—जायसी (शब्द०)।
 विततु^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वितन्तु। ऊँची जाति का घोडा। अच्छा घोडा [को०]।
 विततु^२—सञ्ज्ञा स्त्री० पतिहीना स्त्री। विधवा [को०]।
 वितत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वितन्त्री। वह वीणा जिसके तारों के स्वरो में एकरूपता न हो [को०]।
 वितस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षियों अथवा छोटे छोटे पशुओं आदि को फँसाने का जाल। २. पिंजडा [को०]।
 वित^१—वि० [सं०] विद्। १ जाननेवाला। ज्ञाता। उ०—मव शस्त्र विसारद अस्त्र वित विदित वली मनि जगत जित।—गोपाल (शब्द०)। २. चतुर। निपुण। उ०—रन जु आन रद वित नृप लस्या करद मगध महाराज को।—गोपाल (शब्द०)।
 वित^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वित्त। धन दौलत।
 वितघनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी अरणा।
 वितङ्गा^१—क्रि० सं० [सं०] वितङ्ग। १. बाँटना। २. अन्नित करना। दान करना। उ०—दादू ज्यो आवै त्यों जाइ विचारी। विलसी वितडो न मार्य मारी।—दादू०, पृ० २३७।
 वितत^१—वि० [सं०] १. विस्तृत। फैला हुआ। २. आयत। विशाल। विस्तीर्ण [को०]। ३. विद्या हुआ। संपन्न। कार्यान्वित [को०]। ४. ढका हुआ। आच्छादित [को०]। ५. खींचा हुआ। कपित। झुकाया हुआ (धनुष या ज्या)। जैसे, विततधनु, विततज्या [को०]।
 वितत^२—सञ्ज्ञा पुं० १. वीणा अथवा उससे मिलता जुनता हुआ और कोई वाजा। २. मृदंग या ढोल आदि आनन्द वाजा से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३. द० 'प्रतान' [को०]।
 विततधन्वा—वि० [सं०] विततधन्वन्। धनुष की प्रत्यक्षा या डोरी को खींचनेवाला [को०]।
 विततवपु—वि० [सं०] लंबे चौड़े गरीबवाना [को०]।
 वितताना^१—क्रि० अ० [सं०] व्यथा। व्याकुल होना। बेचैन होना। उ०—देखे आइ तहाँ हरि नाही, चितवति जहाँ तहाँ विततानी।—सूर (शब्द०)।
 विततायुध—वि० [सं०] जिसने धनुष की प्रत्यक्षा या डोरी कान तक तान दी हो [को०]।

वितति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विस्तार । फैलाव । आतिशय्य ।
आधिक्य । २. सगह । गुल्म । झुड (को०) । ३ रेखा । कतार ।
पक्ति (को०) ।

विततोत्सव—वि० [स०] जिसने उत्सव की व्यवस्था की हो [को०] ।

वितथ—वि० [स०] [सञ्ज्ञा वितथता] १ मिथ्या । झूठ । २ व्यर्थ ।
निरर्थक । बेफायदा ।

वितथता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वितथ का भाव । मिथ्यात्व ।

वितथप्रयत्न—वि० [स०] निष्फल यत्न करनेवाला ।

वितथमयादि—वि० [स०] अनाचारी । आचारहीन [को०] ।

वितथवादी—वि० [स० वितथवादिन्] असत्यभाषी ।

वितथाभिनिवेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] असत्य बोलने की प्रवृत्ति या
आदत [को०] ।

वितथ्य—वि० [स०] १ मिथ्या । असत्य । झूठ । २ व्यर्थ । निरर्थक ।

वितद्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पञ्जाब की वितस्ता या भेलम नदी का
एक नाम ।

वितन—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स० वितनु] दे० 'वितनु' ।

वितनिता—वि०, सञ्ज्ञा [स० वितनितृ] विस्तृत करनेवाला । वह जो
विस्तृत करता हो । विस्तारक ।

वितनु^१—वि० [म०] १ जा बहुत ही सूक्ष्म हो । २ शरीररहित
(को०) । ३ सुदूर (को०) । ४ कोमल । मृदु (को०) । ५ निस्तत्व ।
सारहीन (को०) ।

वितनु^२—सञ्ज्ञा पुं० कामदेव [को०] ।

वितपन्न^१—सञ्ज्ञा पुं० [म० व्युत्पन्न] वह जो किसी काम में कुशल हो ।
व्युत्पन्न । दत्त । प्रवीण । उ०—(क) सूरज प्रभु वितपन्न
कोक गुन ताते हरि हरि व्यावत ।—मूर (शब्द०) (ख) सगहि
रहति सदा पिय प्यारी क्रीडत कर्त्त उपाधा । कोककला
वितपन्न भई ही कान्तरूप तनु आधा ।—मूर (शब्द०) ।

वितपन्न^२—वि० [म० विपत् + पन्न = विपन्न] धनहीन ।
व्याकुल । उ०—उन्ही मिने वितपन्न भई अब वै दिन गए
भुलाइ ।—मूर (शब्द०) ।

वितमस्क—वि० [स०] जिसमें अधिकार न हो । २ जिसमें तमोगुण
न हो ।

वितमा—वि० [स० वितमस्] । दे० 'वितमस्क' [को०] ।

वितर—वि० [स०] जो आगे पहुँचावे (मार्ग आदि) । आगे पहुँचाने-
वाला [को०] ।

वितरक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वितरण करनेवाला । बाँटनेवाला । उ०—
नुनु धुनि पूरत ताते नूपुर विनरक अर्थ सुरायन मे ।—देवस्यारी
(शब्द०) ।

वितरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ दान करना । अर्पण करना । देना ।
२ बाँटना । ३ वितरक (को०) । ४ पार करना । पार जाना
(को०) । ५ छाड़ देना । त्याग करना । तिलाजलि देना (को०) ।

वितरन—वि० [स० वितरण] १ बाँटनेवाला । वितरण
करनेवाला । जैसे—तरन तरन दुत्त भवतरन वितरन सुख हित
रनकरन ।—गोपाल (शब्द०) । २ दे० 'वितरण' । उ०—कछु

दिन प्रभु तहँ । कणो निवाना । वितरन वैष्णव वृद्ध हुलाना ।
—रघुराज (शब्द०) ।

वितरना—वि० [म० वितरण] वितरण करना । बाँटना ।
उ०—(क) ये लहुरे अति रहै उदारा । वितरहि मय को द्रव्य
अपारा ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) नुरग्य तनु तिनके किए,
सुवरण वितरि अपार ।—रघुराज (शब्द०) ।

वितरिक्त—वि० [म० व्यतिरिक्त] अतिरिक्त । गिवा । उ०—
हरि वितरिक्त जाहि शिर नार्चै मूरति तुरत फूटि सो जावै ।
—रघुराज (शब्द०) ।

वितरित—वि० [स०] जो वितरण किया गया हो । बाँटा हुआ ।

वितरिता—वि० सञ्ज्ञा पुं० [स० वितरितृ] १ वितरण करनेवाला ।
बाँटनेवाला । २ दान देनेवाला [को०] ।

वितरेक—वि० [स० व्यतिरेक] व्यतिरेक अलंकार । दे०
'व्यतिरेक' ।

वितरेक—वि० [स० व्यतिरिक्त] छोटकर । सिवा । उ०—
वितरेक तोहि निर्दय महाबल आनु कहु को कहि सकै ।—
तुलसी (शब्द०) ।

वितर्क—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ एक तर्क के उपरान होनेवाला दूसरा तर्क ।
युक्ति । दलील । २ नदेह । शक । ३ अटकल । अनुमान ।
४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के नदेह या
वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नहीं होता ।
५ विचार विनिमय (को०) । ६ आध्यात्मिक गुह (को०) ।
७ अभिप्राय । प्रयोजन (को०) ।

वितर्कण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वादविवाद । २ तर्क करने की क्रिया ।
३ सदेह । ४ अटकल करना । अंदाज लगाना [को०] ।

वितर्कित—वि० [स०] विचारित [को०] ।

वितर्क्य—वि० [स०] १ जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या नदेह का
स्थान हो । २ जा विचार करने योग्य हो (को०) । ३ जो
देखने में बहुत विलक्षण हो ।

वितर्दि—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ वेदी । मंत्र । वेदिका । २ छत्रा ।
वरामदा (को०) ।

वितर्दिका, वितर्दी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वितर्दि' [को०] ।

वितर्द्धि, वितर्द्धिका, वितर्द्धी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वितर्दि' [को०] ।

वितल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा
पाताल ।

विशेष—देवी भागवत के अनुसार यही दूसरा पाताल है । कहते हैं,
इम पाताल में शिव जी 'हाटकेश्वर' नाम से अपने पापदो
के साथ रहते हैं । इनके बीच से हाटकी नाम की नदी बहती
है जिसे हुताशन पीते हैं । उन्ही हुताशन के मुँह में जब फुफकार
निकलता है, तब उससे हाटक नामक सोना निकलता है ।

वितली—सञ्ज्ञा पुं० [स० वितलिन्] वितल लोक को धारण करनेवाले,
बलदेव । उ०—बलिन मुणलिन देव हलिन वितलिन स्वय ।—
गर्गसंहिता (शब्द०) ।

वितष्ट—वि० [स०] १ काटा हुआ । २ खोदा हुआ । ३. समतल या हमवार किया हुआ [को०] ।

वितसारु—१. अव्य० [देश० या स० वित्त + सार] यथाशक्ति । उ०—
दान सदा वितसारु देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम । —रघु०
६०, पृ० २४ ।

वितस्त—सञ्ज्ञा पुं० [म० वितस्ति] वितस्ति । वालिशत । एक वित्त ।
वारह अगुल ।

वितस्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पंजाब की भेलम नामक नदी का प्राचीन
नाम । उ०—वितस्तातीर स्वच्छ स्थल । —का० सुपमा, पृ० १ ।

वितस्ताख्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार तक्षक नाग का
निवासस्थान ।

वितस्ताद्रि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] राजतरंगिणी के अनुसार एक पर्वत का
नाम ।

वितस्ति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ उतना परिमाण जितना हाथ अंगूठे और
उँगली को पूरा पूरा फैलाने से होता है । वालिशत । वित्त । २
वारह अगुल का परिमाण ।

विता† अव्य० [हि० उतना—उत्ता] उतने । उ०—वहूँवचन विते
वर्जा वहिष्ट म्यनि जिते ये विते गुनहगार आदम हवाकर
कते । —दक्खिनी०, पृ० ३३२ ।

विताडन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विताडन] मारना । ताड़ना करना [को०] ।

वितान^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ यज्ञ । २ विस्तार । फैलाव । ३ बड़ा
चँदोआ या खेमा । ४ समूह । संघ । जमाव । ५ सुश्रुत के
अनुसार एक प्रकार का वधन जो सिर पर के श्वाघात या घाव
आदि पर बाँधा जाता है । ६ अवसर । अवकाश । ७ घृणा ।
नफरत । ८ शून्य । खाली स्थान । ९ अग्निहोत्र आदि कर्म ।
१०. वेदिका । वेदी (को०) । ११ गद्दी (को०) । १२ प्राचुर्य ।
आधिव्य (को०) । १३ एक प्रकार का छद । १४. एक वृत्त का
नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, एक भगण और दो गुरु
होते हैं । उ०—सुभगगा जल तेरो । सुखादता जन केरो ।
नसिक भौ दुख नाना । जस को तान विताना । —जगन्नाथ
(शब्द०) ।

वितान^२—वि० १ मंद । धीमा । २ शून्य । खाली । ३ उदास । हतो-
त्साह (को०) । ४ जड़ बुद्धिहीन । ५ खल । दुष्ट (को०) । ६
सारहीन । तुच्छ (को०) ।

वितानक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] धनिया ।

वितानक^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बड़ा चँदोआ या खेमा । २ समूह ।
जमावडा । ३ धन । संपत्ति । ४ विछाने की बड़ी चाँदनी
(को०) । ५. माड नामक वृक्ष (को०) ।

वितानना^१—क्रि० स० [स० वितान] १ शामियाना आदि तानना ।
२. कोई चीज तानना । उ०—मनी हीन छीन फनी, मोन धारि
सो बिहीन हूँ कै मलीन मति दीनता वितानई । —रसकुसुमाकर
(शब्द०) ।

वितानमूल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] खस । उशीर ।

वितानमूलक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] उशीर । गाढर । खस ।

वितामस^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] प्रकाश । उजाला ।

हि० श० ६-१७

वितामस^२—वि० १ जिसमें तमोगुण न हो । २ अघकार रहित ।

वितार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु
या पुच्छल तारा । २ वह रात्रि जिसमें तारे न हो ।

वितारक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] विवारा नामक जडो ।

विताल—वि० [स०] १ अशुद्ध (ताल) । २ (संगीत में) तालहीन [को०] ।

वितिक्रम^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यतिक्रम] क्रम का भग होना । व्यति-
क्रम । गड़बड़ी । उ०—प्रोति परीक्षा तिहूत की वैर वितिक्रम
जानि । —तुलसी (शब्द०) ।

वितिमिर—वि० [स०] अंधकाररहित [को०] ।

वितिलक—वि० [स०] सांप्रदायिक तिलक से हीन लगाटवाला [को०] ।

वितिहोतर—सञ्ज्ञा पुं० [स० वितिहोतृ] अग्नि । (हिं०) ।

वितीत^१—वि० [स० व्यतीत] दे० 'व्यतीत' । उ०—आम मजरी
सग सनेह सो कछु दिन करत वितीत । —स० शा० (शब्द०) ।

वितीपात—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यतीपात] एक योग । दे० 'व्यतीपात' ।

वितीपाती—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यतीपात + हिं ई (प्रत्य०)] वह जो
बहुत अधिक उपद्रव करता हो । पाजी । शरारती (लडका) ।

वितीर्ण^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वितरण' ।

वितीर्ण^२—वि० दे० 'उत्तीर्ण' ।

वितुड—सञ्ज्ञा पुं० । स० वि० + तुण्ड] हाथी । उ०—(क) जादो पुड
के वितुड चित्र तुड भुड भुंड मुंड धरे कुड मुंड कुडल करे करे ।
—गोपाल (शब्द०) । (ख) तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई ।
चढे वितुडन आनंद छाई । —रघुगज (शब्द०) ।

वितु^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० वित्त] धन । संपत्ति । उ०—दै चितु कै हित
लै सब छवि वितु विधि निज हाथ सँवारे । —तुलसी (शब्द०) ।

वितुड—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नीला थोथा । तूतिया ।

वितुद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैदिक साहित्य के अनुसार एक प्रकार की
भूतयोनि ।

वितुन्न^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शिगियारी या सुसना नामक साग ।
२ सेवार ।

वितुन्न^२—वि० छिन्न । चीरा या काटा हुआ [को०] ।

वितुन्नक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ धनिया । २ तूतिया । ३ केंवर्त-
मुस्तक । ४ भुईं आँवला । ५ कान का छेद जिसमें आभूषण
पहनते हैं (को०) ।

वितुन्नका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भुईं आँवला ।

वितुन्नभूता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भुईंआँवला ।

वितुन्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भुईंआँवला ।

वितुन्निका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वितुन्ना' ।

वितुप्—वि० [स०] तुपहीन । तुपरहित । जिसका छिलका निकाल
लिया गया हो [को०] ।

वितुष्ट—वि० [स०] जो सतुष्ट न हो । असतुष्ट ।

वितृट्—वि० [स० वितृप्] तृपारहित । जिसे प्यास न हो [को०] ।

वितृण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ तृण या घास आदि न
होती हो ।

वितृतीय—वि० [स०] अंतर देकर होनेवाला । जैसे, ज्वर [को०] ।

वितृप्त—वि० [स०] १ जो तृप्त या सतुष्ट न हुआ हो । २ जो पूर्ण सतुष्ट हो [को०] ।

वितृप्तक—वि० [म०] दे० 'वितृप्त' [को०] ।

वितृप्तता—सङ्घा खी० [स०] १ वितृप्त या असतुष्ट होने का भाव ।

वितृप—सङ्घा पुं० [स०] १ वह जिसे किसी प्रकार की तृप्णा न रह गई हो । निस्पृह । उदासीन । २. वह जिसे तृप्ता न हो [को०] ।

वितृप्णा—वि० [स०] इच्छा या कामनारहित । तृप्णारहित [को०] ।

वितृप्णा—सङ्घा खी० [स०] १ तृप्णा का अभाव । तृप्णा का न होना । विरक्ति । २ सतुष्टि [को०] । ४ प्रबल कामना । तीव्र इच्छा [को०] ।

वितोय—वि० [स०] निर्जल । जलविहीन [को०] ।

वित्त^१—सङ्घा पुं० [स०] १ धन । संपत्ति । उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की । सोच कर घटना वणिक् के वित्त की ।—शकुं०, पृ० ४० । २ प्राप्त वस्तु [को०] । ३ अधिकार [को०] । शक्ति [को०] । ५ सोना [को०] । ६ कुडली के जन्मलग्न का दूसरा स्थान [को०] ।

वित्त^२—वि० १ सोचा या विचारा हुआ । २ जाना या समझा हुआ । ३ मिला या पाया हुआ । ४ विख्यात । प्रसिद्ध । मशहूर । ५ परीक्षित [को०] ।

वित्तक^३—सङ्घा पुं० [स०] वृत्त + क (अस्पर्धक प्रत्य०) चरित्र । वीतक । आचरण । वात । उ०—(क) जिहि निसि सो वर वित्तक वित्ती । ज्यो राजन वंमास सु हत्ती ।—पृ० रा०, ५७, ११६ । (ख) अश्वश्रु पति पामार पह, लिय गिर गुज्जर राइ । ता पछ वित्तक वित्त यौ, कछौ चद वरदाइ ।—पृ० रा०, १२।१०६ ।

वित्तक^४—वि० [स०] विशेष प्रसिद्ध [को०] ।

वित्तकाम—वि० [स०] धन संपत्ति की कामना रखनेवाला [को०] ।

वित्तकोश—सङ्घा पुं० [स०] रुपए पैसे आदि रखने की थैली ।

वित्तगोप्ता—सङ्घा पुं० [स०] वित्तगोप्तृ कुवेर के भडारी का नाम ।

वित्तजानि, वित्तजाय—वि० [स०] विवाहित [को०] ।

वित्तद—वि० [स०] दानी । दाता [को०] ।

वित्तदा—सङ्घा खी० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

वित्तनाथ—सङ्घा पुं० [स०] कुवेर का एक नाम ।

वित्तप—सङ्घा पुं० [स०] १. वह जो धन की रक्षा करता हो । भडारी । २ कुवेर का एक नाम ।

वित्तपति—सङ्घा पुं० [स०] कुवेर का एक नाम । उ०—ज्यो वित्तपति चित्त मई, कहि धनि श्रनुज हमार ।—रघुराज० (शब्द०) ।

वित्तपाल—सङ्घा पुं० [स०] कुवेर का एक नाम ।

वित्तपुरी—सङ्घा खी० [स०] कुवेर की पुरी, भलका ।

वित्तपेटा, वित्तपेटी—सङ्घा खी० [स०] रुपया पंसा रखने की थैली । विसकोश [को०] ।

वित्तमात्रा—सङ्घा खी० [स०] धन । संपत्ति [को०] ।

वित्तरक्षी—सङ्घा पुं० [स०] वित्तरक्षिन् वह जिसके पास वित्त रक्षित हो । संपन्न व्यक्ति । धनी व्यक्ति [को०] ।

वित्तराग^५—सङ्घा पुं० [स०] वीतराग दे० 'वीतराग' । उ०—कप-डिया बीर कहा कहौ वित्ति । मन वित्तराग लै मुक्ति जित्ति—पृ० रा०, ६।८३ ।

वित्तवान्—सङ्घा वि० [म०] वित्तवत् धनी [को०] ।

वित्तविवर्धी—सङ्घा पुं० [स०] वित्तविवर्धन् १. वह जो धन की अभिवृद्धि करता हो । २ व्याज । सूद [को०] ।

वित्तशाठ्य—सङ्घा पुं० [स०] लेनदेन में धोखाधड़ी [को०] ।

वित्तहीन—सङ्घा पुं० [स०] धनहीन । दरिद्र । गरीब । उ०—मव परिवार मेरो याही लागे राजाजू हौं दीन वित्तहीन कैसे दूमरी गढ़ाइहौं ।—तुलसी (शब्द०) ।

वित्तागम—सङ्घा पुं० [स०] १ धन की प्राप्ति या आगम । २ धन की प्राप्ति का साधन [को०] ।

वित्ताढ्य—वि० [स०] बहुत धनी [को०] ।

वित्तान^६—सङ्घा पुं० [स०] वितान दे० 'वितान' । उ०—सिधुजा रच्यो भक्ति वित्तान ।—भक्तमाल (श्री०), पृ० ३८१ ।

वित्ताप्ति—सङ्घा खी० [स०] धन की प्राप्ति ।

वित्तायन—वि० [स०] धन लानेवाला [को०] ।

वित्तार्थ—सङ्घा पुं० [स०] चतुर आदमी । निपुण व्यक्ति [को०] ।

वित्ति—सङ्घा खी० [स०] १ विचार । २ लाभ । प्राप्ति । ३ ज्ञान । ४ सभावना ।

वित्तीय—वि० [स०] वित्त संबंधी । वित्त की व्यवस्था के अनुसार । जैसे, वित्तीय वर्ष ।

वित्तेश—सङ्घा पुं० [स०] कुवेर ।

वित्तेरवर—सङ्घा पुं० [स०] कुवेर ।

वित्तेहा—सङ्घा खी० [स०] दे० 'वित्तेपणा' [को०] ।

वित्तेपणा—सङ्घा खी० [स०] धन का लोभ । संपत्ति पाने की लालसा । उ०—लोर्कपणा, वित्तेपणा तथा दारपणा की यथोचित सतृप्ति भौतिक तथा आध्यात्मिक सुख एवं साफल्य की प्राप्ति समीक्षा शक्ति के ऊपर ही निर्भर है ।—स० दर्शन, पृ० ६६ ।

वित्थार^७—सङ्घा पुं० [स०] विस्तार, विस्थार प्रसार । विस्तार । फैलाव ।

वित्त्रप—वि० [स०] निर्मज्ज । बेहया । बेधरम ।

वित्त्रस्त—वि० [स०] विशेष रूप से घ्रस्त । बहुत बरा हुआ । उ०—यो तुम अपनी विजय घोषणा कर सकते हो क्योंकि मेरी गजवाहिनी तुम्हारे अश्वारोहियों से वित्रस्त हो चुकी है ।—राज्यश्री, पृ० ५ ।

वित्रास—सङ्घा पुं० [स०] आतंक । भय । डर । खौफ ।

वित्रासन^८—सङ्घा पुं० [स०] भयभीत करना । डराना [को०] ।

विग्रामन—वि० भवानक । डरावना [को०] ।

विग्रामित—वि० [सं०] किमी के द्वारा भयभीत कराया हुआ । डराया हुआ [को०] ।

विग्रिमलग्नक—सङ्घा पु० [सं०] क्षितिज के ऊपर रविमार्ग का सबसे ऊँचा बिंदु [को०] ।

वित्तव—सङ्घा पु० [सं०] वेत्ता होने का भाव ।

वित्तान—सङ्घा पु० [सं०] चैन । साँट ।

विथक—सङ्घा पु० [हिं० विथकना ?] पतन ।

विथकना—क्रि० प्र० [हिं० घबना] १. बचना । शिथिल होना । उ०—सुनि किन्नर गधर्व सराहत विथके हैं विबुध विमान ।—तुलसी (शब्द०) । २. माहित या चरित होकर चुप हो जाना । उ०—तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकी पुलकी तन मी चले लोचन बर्ब ।—तुलसी (शब्द०) ।

विथकित—वि० [हिं० विथकना] १. थका हुआ । शिथिल । उ०—तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान । राम लपन के रूप न देखेउ आन ।—तुलसी (शब्द०) । २. जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकता हो । उ०—गोपीजन विथकित हूँ चितवत सब ठाढ़ी ।—सूर (शब्द०) ।

विथराना—क्रि० स० [सं० विरतरण, प्रा० विश्वरण] १. फीलाना । २. हथर उधर करना ।

विथा—सङ्घा ली० [सं० व्यथा] १. व्यथा । पीड़ा । तकलीफ । उ०—(क) तनकहु विथा नही मन मायो । पर उपकार न तनु प्रिय जान्यो ।—रघुराज (शब्द०) । (ग) भँवर जानि पैं कमल विरीती । जेहि मंह विथा प्रेम गे बीती ।—जायसी (शब्द०) । (ग) बूटी जटी मनी बहुविधि की । लीनी विथा निवारन मिधि की ।—गोपाल (शब्द०) । २. रोग । बीमारी । उ०—फेन तब मुख तैं, पटक कर, जो न किमी जू विथा निवारन ।—रस पुनुमाकर (शब्द०) ।

विथारना—क्रि० स० [सं० विस्तारण, प्रा० विथारण] फीलाना । छितराना । उ०—ओ रघुवीर के दाक विलाम तैं धर्म रण्यो नैलोभ विथारयो ।—हृदयराम (शब्द०) ।

विथित—वि० [सं० व्यथित] जिसे निम्नो प्रकार की व्यथा हो । व्यथायुक्त । दुखी ।

विथुर—सङ्घा पु० [सं०] १. चोर । २. राक्षस । ३. क्षम । नाग ।

विथुर—वि० १. घलप । धोटा । कम । २. व्यथित । दुःखित । ३. पनस्पृहित । जो छोग न हो (को०) । ४. विचलित । स्थलित (को०) ।

विथुरना—क्रि० स० [सं० विस्तारण प्रा० विथरना] फीलना । छितराना । हथर उधर होना । फटना । उ०—पर धन को घबाल ही के मेघ ता ये दण में प्रवात ये विथुर गर आनाय पुन गया ।—श्यामा, पृ० ७ ।

विथुरा—सङ्घा ली० [सं०] १. वह स्त्री जिसका स्वामी से विभोग हो । विरहिणी । २. विषया (को०) ।

विथ्या—वि० [सं० दुःखा या निथ्या] दे० 'नुथा' । उ०—विथ्या जीवन मनुष्य की, जो वन गरी पान ।—पृ० रा०, २२।८ ।

विथ्या—सङ्घा ली० [सं०] गोभी ।

विदड—सङ्घा पु० [सं० विदंरु] श्रेष्ठता । शर्मला ।

विदत—वि० [सं० विदंत] (हाथी) अपना दाँत का । शर्मला [को०] ।

विदंत—सङ्घा पु० [सं० विदू (=जानना)] विद्वान् । ज्ञाता ।

विदत—सङ्घा ली० [सं० विदता] एक प्रकार की गोश ।

विदश—सङ्घा पु० [सं०] १. ऐसा चरपरा साध जिन्हें ध्यान में ध्यान जगती है । २. दंगल [को०] ।

विद—सङ्घा पु० [सं०] १. तितपुष्पी । तितथ । २. जातवार । जाननेवाला । ३. पक्षित । विद्वान् ।

विदत्त—वि० [सं०] जो दिया गया हो । वितरित ।

विदकना—क्रि० प्र० [सं० विदरण या देगं] भड़ाना । चीरना । विदकना ।

उ०—एक बूँद विष गात बूँद मधु रा दूँपन गर श्या, धरनी परछाईं न भा तो मानव आन विदकना ।—परा०, पृ० ८१ ।

विदग्ग—सङ्घा पु० [सं०] १. रगिक पुग्ग । रसस । नागर । २. पाउन विद्वान् । ३. चतुर । चालाक । हीनियार । कलाभिज्ञ । ४. रुपा नामक धातु ।

विदग्ग—वि० १. जला हुआ । दग्ध । २. जिसका पाक हुआ हो । पका या पचा हुआ (को०) । ३. नष्ट । सड़ा गया (को०) । ४. जो जला या पचा न हो (को०) । ५. सुंदर (को०) । ६. भस्मावृत्त । जंमे, पोनाक । ७. परिपक्व । जंमे, गुग्गु (को०) । ८. विग । पीला (को०) ।

यौ०—विदग्ग अजीर्ण = दे० 'विदग्गाजीर्ण' । विदग्ग परिपक्वता = दे० मे अम्ल का घुनडना और पेट का फूटना । विदग्ग परिपक्व = रसको या विदग्ग व्यक्तियों की सभा । विदग्गराज = वाक्चतुर ।

विदग्गक—सङ्घा पु० [सं०] जलता हुआ धान [को०] ।

विदग्गता—सङ्घा ली० [सं०] १. विदग्ग होने का भाव । पाठिक । विद्वता । २. चानुर्य । चातुरी (को०) । ३. समता (को०) ।

विदग्गत्व—सङ्घा पु० [सं०] दे० 'विदग्गता' ।

विदग्गा—सङ्घा ली० [सं०] १. वह परकीय नायिका या हाथियारी के नाय परपुरा का अपनी धार अनुकूल करने ।

विरोप—यह दो प्रकार की मानी गई है—वक्त्रविदग्गा और श्रियाविदग्गा । जो स्त्री अपनी बाँझों के कोटन न दूर पुर पर अपनी मानवाचता प्रकट करती है, वह वक्त्रविदग्गा कहलाती है; और जो किसी प्रकार के अमान्यता से अपनी मान प्रकट करती है, उसे श्रियाविदग्गा कहते हैं ।

विदग्गाजीर्ण—सङ्घा पु० [सं०] एक प्रकार का मरीज का रोग जिस के प्रभाव से उसका दाँत है और जिसमें मरीज का शरीर, दृग्गा, बूँदों, दाँत और पेट में दर्द होता है ।

विदग्गमनदृष्टि—सङ्घा ली० [सं०] मतिवाला एक प्रकार का रोग जो बहुत मानव घटार्ह माना जाता है और जिसमें मरीज की पक जाता है ।

विदग्धशाला—वि० [सं०] बात करने में कुशल । वाक्मटु [को०] ।

विद्वत्—वि० [सं०] १. जानकार । ज्ञाता । २. बुद्धिमान् [को०] ।

विद्वथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. यागी । २. यज्ञ । ३. वैदिक काल के एक राजा का नाम । ४. विद्वान् । जानकार (को०) । ५. धार्मिक, सामरिक अथवा सामाजिक सघटन । ६. मकान । ७. ज्ञान । प्रज्ञा । बुद्धि । उ०—ऋग्वेद में एक तीसरा शब्द विद्वथ भी अनेक बार आया है जिसका अर्थ कहीं तो धार्मिक, कहीं मकान, कहीं यज्ञ और कहीं बुद्धि इत्यादि है ।—हिंदु० रभ्यता, पृ० ७२ ।

विद्वथी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्वथिन्] एक वैदिक ऋषि का नाम ।

विद्वदधु—वि० [सं० विद्वदधु] डँसने के लिये तैयार या तत्पर [को०] ।

विद्वमान् पुं०—वि० [सं० विद्वमान्] जो विद्वान् हो । उ०—(क) फारुषा नयन काग नाह छाँड्यो सुरपात के विद्वमान् ।—सूर (शब्द०) । (ख) ताको वधन कियो इहि रघुपति को देखत विद्वमान् ।—सूर (शब्द०) ।

विद्वमान्^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्वान्] पंडित । ज्ञाता । विद्वान् ।

विदर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. ककारी । विश्वसारक । २. विदारण करना । फाटना । ३. रत्न । विवर । दरार । उ०—पुगति मग्न खुल्ले विदर ।—पृ० रा०, ५८ । २३५ ।

विदर^२—वि० [सं० विदल, प्रा० विदर] दे० 'विदल' ।

विदर^३—सञ्ज्ञा पुं० [दंश०] दासीपुत्र । उ०—विदर पिदर जायें नही, मादर विदर^३ मूल ।—वाका० ग्र०, भा० २, पृ० ८५ ।

विदरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विदारण करना । फाटना । २. विद्रधि नामक रोग ।

विदरना(पुं०)—क्रि० अ० [म० विदरण] विदीर्ण होना । फटना । उ०—(क) विदरत नाह बज्र की छाती हार । वियोग क्यों साहए ।—सूर (शब्द०) ।

विदरना^२—क्रि० स० विदीर्ण करना । फाटना । उ०—महेश यही तुमका निदरघाजू । अरा सम पत्रान ह्वे विदरघाजू ।—गुमान (शब्द०) ।

विदर्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. आधुनिक वरार प्रदेश का प्राचीन नाम । २. भागवत के अनुसार एक राजा का नाम । कहते हैं, इसा राजा के नाम पर विदर्भ देश का नाम पड़ा था । ३. पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम । ४. दातो में चाट लगने के कारण मूँड़ा फूलना या दातो का हिलना । ५. सूखा भूम या मरुभूम (को०) । ६. विदर्भ देश के निवासी (को०) ।

विदर्भजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपामुद्रा का एक नाम । २. दमयंती का एक नाम जो विदर्भ के राजा भोग्मक की कन्या थी । ३. संक्षमणी का एक नाम ।

विदर्भतनया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दमयंती [को०] ।

विदर्भराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दमयंती के पिता राजा भोग्म या भागमक जो विदर्भ के राजा थे ।

विदर्भसुभ्र—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दमयंती [को०] ।

विदर्भा—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १. विदर्भ की राजधानी । कुठिनपुर । २. एक नदी । ३. चातुष्य मनु की पत्नी [को०] ।

विदर्भाविपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ नरेश । राजा भोग्मक [को०] ।

विदर्भा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विद्वर्य—सञ्ज्ञा पुं० [म०] विना फनवाला माँस ।

विदर्शना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विवेक । ज्ञान [को०] ।

विदल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. ताल रंग का माता । २. मोना । स्वर्ण । ३. अनार का दाना वा कल्क । ४. वाम का वना हुआ दौरा या और कोई पात्र । ५. चना । ६. पीठी । ७. पहाड़ी शत्रुनाम (को०) । ८. विभाग । पार्थक्य (को०) । ९. टुकड़ा (को०) । १०. वेतम (को०) । ११. टहना (को०) । १३. दाल (को०) ।

विदल^२—वि० विकसित । खला हुआ । ३. जिसमें दल न हो । बिना दल का ।

विदलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मलने, दलने या दवाने आदि की क्रिया । २. टुकड़े टुकड़े या इधर उधर करना । फाटना ।

विदलना(पुं०)—क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना । नष्ट करना । उ०—तैं रन वेहार केहर के विदले अरि कुजर छैल दवा से ।—तुलसी (शब्द०) ।

विदला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिपृत या निमोथ नाम की एक प्रकार की लता । विशेष दे० 'नलाथ' [को०] ।

विदलान्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पकाई हुई दाल । २. वह अन्न जिसमें दो दल हो । जैसे—चना, उड़द, मूँग, अरहर, मसूर आदि ।

विदलित—वि० [म०] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो । २. रौंदा हुआ । मला हुआ । ३. टुकड़े टुकड़े किया हुआ । ४. फाड़ा हुआ ।

विदलिनी—वि० स्त्री० [सं० विदल + इति ?] विदीर्ण करनेवाली । फाड़नेवाली । उ०—किंतु तर्जनी तेरी हा, उनके मस्तक तैयार, पथ दर्शक अमरत्व और हो नभ । विदलिनी पुकार ।—हिम०, पृ० ५२ ।

विदश—वि० [सं०] (वस्त्र) जिसमें कनारी या पाठ न हो । जो बिना किनारा के हो [को०] ।

विदस्त—वि० [म०] कृश । दुर्बल । क्षीण [को०] ।

विदा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि । अक्ल । समझ । २. ज्ञान ।

विदा^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विदाय, मि० अ० विदाम्] १. प्रस्थान । रवाना होना । विदाई । जैसे, मैं से वह । २. कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति ।

क्रि० प्र०—करना ।—माँगना ।—होना ।

विदाई—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० विदा + ई (प्रत्यय)] १. विदा होने की क्रिया या भाव । खलती । प्रस्थान । २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति । ३. वह धन आदि जो विदा होने के समय किसी को दिया जाय ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

विदान—सञ्ज्ञा पु० [स०] खड रंड करने की क्रिया [को०] ।

विदाम—सञ्ज्ञा पु० [स० वादाम से लक्ष्यार्थ] कौडी । छदाम । उ०—
लेता नाम विदाम न लागै, विगत जिका दह व्यापै ।—रघु०
रु०, पृ० २७ ।

विदाय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विसर्जन । २. प्रस्थान । ३. जाने की
आज्ञा या अनुमति । विदा । उ०—ता पाछे श्री गुमाई जी विजय
करिवे को विदाय भए सो चले ।—दो सो बावन०, भा० २,
पृ० ८१ ।

क्रि० प्र०—माँगना ।—लेना ।

४ दान । वितरण । ५ विभाग । विभाजन (को०) ।

विदायी—सञ्ज्ञा पु० [स० विदायिन्] १. वह जो ठीक तरह से चलाता
या रखता हो । नियामक । २. दान करनेवाला ।

विदायी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० विदा + यी (ई) प्रत्य०] दे० 'विदाई' ।

विदार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ युद्ध । समर । २ दे० 'विदारण' ।
३ प्लावन । पानी का ऊपर से बहना । जलोच्छ्वास (को०) ।

विदारक^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह वृद्ध या पर्वत आदि जो जल
के बीच में हो । २. छोटी नदियों के तल में बनाया हुआ गड्ढा,
जिसमें नदी के सूखने पर भी पानी बचा रहता है ।
३. नौसादर ।

विदारक^२—वि० विदारण करनेवाला । फाड़ डालनेवाला ।

विदारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. बीच में से अलग करके दो या अधिक
टुकड़े करना । फाड़ना । २. मार डालना । हत्या करना ।
३ युद्ध । समर । लड़ाई । ४ कनेर । ५ खपरिया । ६.
नौसादर । ७. जैनों के अनुसार दूसरों के पापों या दोषों की
घोषणा करना । ८. पेट पोंवे आदि काटकर साफ करना
(को०) । ९. खोलना । जैसे, मुख विदारण (को०) । १०.
निवारण । छोड़ देना । रद्द करना (को०) । ११ रौंदना
(को०) । १२. कष्ट देना । तकलीफ पहुँचाना । १३ दे०
'विदारक'—१ ।

विदारणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] लड़ाई । संग्राम (को०) ।

विदारना(ण)—क्रि० स० [हिं० विदरना] फाड़ना । उ०—(क) जनु
उडगन विषु मिलन को चले तम विदारि करि वाट ।—तुलसी
(शब्द०) । (ख) निज जाँघन पर ताहि पछाँथो । नखन साथ
तब उदर विदारयो ।—केशव (शब्द०) ।

विदारि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शालपर्णी । विदारी (को०) ।

विदारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. बहसहिता के अनुसार एक प्रकार
की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण में रहती है ।
२ गंभारी वृक्ष । ३ विदारी कद । ४ शालपर्णी । ५ कड़वी
तूँबी । ६ विदारीकद के समान गोल और कड़ी जंघा-
मूल की सृजन या पिटिका ।—भावव०, पृ० १८७ ।

विदारिगघा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विदारिगन्वा] शालपर्णी ।

विदारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] काश्मीरी । गंभारी ।

विदारित—वि० [स०] विदीर्ण किया हुआ । फाड़ा हुआ ।

विदारी^१—वि० [स० विदारिन्] फाड़नेवाला । विदारण करनेवाला ।

विदारी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शालपर्णी । २ भुईं कुम्हड़ा । ३.
भावप्रकाश के अनुसार अठारह प्रकार के कंठरोगों में से एक
प्रकार का कंठरोग ।

विशेष—यह रोग पित्त के प्रकुपित होने से होता है । इसमें गले
और मुँह पर लाली आ जाती है, जलन होती है और बदबूदार
मांस के टुकड़े कट कटकर गिरने लगते हैं । कहते हैं, जिस
करबट कोई अधिक सोता है—उसी ओर यह रोग होता है ।

४ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें बगल में फुसी निकलता है ।

५. कान का एक रोग । ६ वाराहीकद । ७ क्षीर काकोली ।

८ वाग्भट्ट के अनुसार मेढासोगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार,
अनतमूल, वृहती आदि औषधियों का एक गण ।

विदारीकद—सञ्ज्ञा पु० [स० विदारीकन्द] भुईं कुम्हड़ा ।

विदारीगघा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विदारीगन्वा] १ शालपर्णी । २ सुश्रुत
के अनुसार शालपर्णी, भुईं कुम्हड़ा, गोखरू, शतमूल, अनत-
मूल, जीवती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि औषधियों का
एक गण ।

विशेष—इस गण की सब औषधियाँ वायु तथा पित्त की नाशक,
और शोथ, गुल्म, ऊर्ध्वश्वास तथा खासी आदि रोगों में हितकर
मानी जाती हैं ।

विदारीगधिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विदारीगन्विका] दे० 'विदारीगघा'
(को०) ।

विदार—सञ्ज्ञा पु० [स०] कृकलास । क्रकचपाद । गिरगिट । गृहगोवा ।

विदाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाली
जलन । २. हाथ पैर में किसी कारण से होनेवाली जलन । ३
आँतों में अम्ल बनने की क्रिया (को०) ।

विदाहक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो विदाह उत्पन्न करता हो ।
२ दे० 'विदाह' ।

विदाही—सञ्ज्ञा पु० [स० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो ।
दाह उत्पन्न करनेवाला । तीक्ष्ण । चरपरा उ०—विदाही,
अर्थात् जो चीज खाने से छाती में जलन होती है, और जितने
प्रकार के खेहे अन्न हैं, जैसे बाजरा आदि, इनको न खाय ।

विदिक्^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विदिक्] दिक्कोण । विदिक् (को०) ।

विदिक्^२—वि० भिन्न दिशा में जानेवाला (को०) ।

विदिक्चग—सञ्ज्ञा पु० [स० विदिक्चङ्ग] एक प्रकार का पक्षी जो पीला
होता है (को०) ।

विदित^१—वि० [स०] १. जाना हुआ । अवगत । ज्ञात । सूचित ।
२. विश्रुत । विख्यात (को०) । ३. प्रतिज्ञात । जिसकी प्रतिज्ञा
की गई हो । इकरार किया हुआ (को०) ।

विदित^२—सञ्ज्ञा पु० १ कवि । विद्वान् । विद्याव्यसनी । २ सूचना ।
परिज्ञान (को०) । ३. प्रसिद्धि । ख्याति (को०) । ५. अवाप्ति ।
लाभ (को०) ।

विदिता—मन्त्रा स्त्री० [स०] जैनों की एक देवी ।

विदितात्मा—मन्त्रा पुं० [स० विदितात्मन्] १ प्रसिद्ध या ख्यात व्यक्ति । २ आत्मज्ञानो पुरुष [को०] ।

विदित्य—सन्ना पुं० [स०] १ पंडित । विद्वान् । २ योगमार्गी । योगी । दे० 'विदय' ।

विदिश—सन्ना स्त्री० [स० विदिश] दे० 'विदिक्' । उ०— धायो धर शर शील विदिश दिशि चक्रहूँ चाहि लयो ।—सूर (शब्द०) ।

विदिशा—सन्ना स्त्री० [स०] १ वर्तमान भेलमा नामक नगर का प्राचीन नाम । २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम । ३ दे० 'विदिश' ।

विदिश—सन्ना स्त्री० [म०] दो दिशाओं के बीच का कोना । जैसे,—अग्नि या ईशान आदि ।

विदीधिति—वि० [स०] किरणहीन । निष्प्रभ [को०] ।

विदीपक—सन्ना पुं० [स०] दीपक । दोआ ।

विदीपित—वि० [स०] १ प्रज्वलित । २ प्रकाशित । दीपित । ३ धूँत । [को०] ।

विदीप्त—वि० [स०] प्रदीप्त । प्रभावान् । चमकीला [को०] ।

विदीर्ण—वि० [म०] १ बीच से फाड़ा या विदारण किया हुआ । उ०—हुआ विदीर्ण जहाँ तहाँ श्वेत आवरण जोरुं । श्योम शीर्ण कञ्जुक धरे विपधर सा विस्तीर्ण ।—साकेत, पृ० २७८ । २ टूटा हुआ । भग्न । ३. मार डाला हुआ । निहत । ४ फैला या खोला हुआ [को०] ।

यी०—विदारणमुख=जिसका मुँह खुला हो । विदीर्णहृदय=छिन्नहृदय । भग्नहृदय ।

विदु—मन्त्रा पुं० [स०] १ हाथी के मस्तक के बीच का भाग । २. घोड़े के कान के नीचे का भाग । ३ दरियाई घोड़ा । जल-हस्ती [को०] ।

विदुत्तम—सन्ना पुं० [स०] १ वह जो सब बातें जानता हो । २. विष्णु का एक नाम ।

विदुर—सन्ना पुं० [स०] १ वह जो जानता हो । जानकर । वेत्ता । ज्ञाता । २ पंडित । ज्ञानी । ३ कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री ।

विशेष—यह राजनीति, धर्मनीति और अर्थनीति में बहुत निपुण थे और धर्म के अवतार माने जाते हैं । महाभारत में कथा है कि जब सत्यवती ने अपने पुत्रवधू अविका को दूसरी बार कृष्णद्वैपायन के माथ नियोग करने की आज्ञा दी, तब उसने कृष्णद्वैपायन की आज्ञा से भयभीत होकर एक सुदरी दासी को अपने कपड़े आदि पहनाकर उनके पास भेज दिया, जिससे विदुर का जन्म हुआ । ये बहुत बड़े पंडित, बुद्धिमान्, शांत और दूरदर्शी थे, और पांडवों के बहुत बड़े पक्षपाती थे । पहले ये राजा पांडु के मंत्री थे, और इसी लिये पीछे से अनेक अवसरों पर इन्होंने पांडवों की भारी भारी विपत्तियों में रक्षा की थी । जतुग्रह के जलने के समय भी इन्हीं के परामर्श से पांडवों की जान बची थी । ये धृतराष्ट्र के

छोटे भाई और मंत्री भी थे । जिस समय दुर्योधन के बहुत कहन पर धृतराष्ट्र ने इनसे जूए के संवध में समति मांगी थी उस समय इन्होंने उन्हें बहुत रोका और समझाया था । पांडवों के वन जाने पर ये दुर्योधन के पास रहते थे । महाभारत का युद्ध आरंभ होने से पहले इन्होंने धृतराष्ट्र को रात भर अनेक प्रकार के अच्छे अच्छे उपदेश देकर युद्ध रुकवाना चाहा था, पर इसमें भी इन्हें सफलता नहीं हुई । युद्ध में इन्होंने पांडवों का पक्ष ग्रहण किया था । महाभारत के युद्ध के उपरांत जब पांडवों का राज्य हुआ, तब भी ये बहुत दिना तक मंत्री के पद पर थे । पर पीछे से वन में चले गए । वहाँ राजा युधिष्ठिर से एक बार इनकी मेंट हुई थी । वही बहुत दिनों तक धार तपस्या करने के उपरांत इनका परलोकवास हुआ था । नीति की प्रसिद्ध पुस्तक 'विदुरनीति' या 'विदुर प्रज्ञापर' इन्हीं की रचित मानी जाती है (जो महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ वें अध्याय से ४०वें तक है) ।

विदुर^२—वि० चतुर । जानकार । कुशल ।

विदुल^१—सन्ना पुं० [स०] १ वेंत । २. जलवेंत । ३. बोल या गवरस नामक गन्धद्रव्य । ४ अमलवेंत ।

विदुल^२—वि० [प्रा० विदुर] धीर । उ०—भर करत विदुल भर लोह भार ।—पृ० रा० ५६ । ८७ ।

विदुला—सन्ना स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का धूर जिससे सातला कहते हैं । २ विट् खदिर । ३ महाभारत में वर्णित एक स्त्री जिसके पुत्र का नाम सञ्जय था । युद्ध में पराजित होकर घर में युद्धविरत पड़े हुए पुत्र का उद्योवन कर इसने उसे युद्ध में भेजा था [को०] ।

विदुष—सन्ना पुं० [स० विद्वस] [को० विदुषी] विद्वान् । पंडित । उ०—(क) निज निज देह का सप्रभ जोग छेम मई मुदेत अपीस विप्र विदुषनि दई है ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मन में सुख पायो ।—सूर (शब्द०) ।

विदुषी—सन्ना स्त्री० [स०] विद्या पढी हुई स्त्री । विद्वान् स्त्री । उ०—(क) जैसे लडके ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवति, विदुषी, अपने अनुकूल प्रिय, सहश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं ।—दयानंद (शब्द०) । (ख) जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करनेवाली हो, वहाँ भेज दें ।—दयानंद (शब्द०) ।

विदुष्कृत—वि० [स०] निष्पाप [को०] ।

विदू—सन्ना पुं० [स०] दे० 'विदु' [को०] ।

विद्वन—वि० [स०] पीडित [को०] ।

विदूर^१—वि० [स०] जो बहुत दूर हो ।

विदूर^२—सन्ना पुं० १. बहुत दूर का प्रदेश । २ एक देश का नाम । २ एक पर्वत का नाम । कहते हैं, वैदूर्यमणि इसी पर्वत में मिलती है । ४ दे० 'वैदूर्य' । (मणि) । उ०—वेदी लसत विदूर फटिकमय सलिल तीर लस पाँती ।—श्यामा०, पृ० ११८ । ५. कुच का एक पुत्र [को०] ।

विद्वरग—वि० [सं०] दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। जो दूर तक फैला हुआ हो। [को०]।

विद्वरज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वर पर्वत से उत्पन्न, वैदूर्यमणि।

विद्वरजात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदूर्यमणि। विद्वरज [को०]।

विद्वरत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विदूर होने का भाव। बहुत अधिक दूर होना।

विद्वरथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कुरुक्षेत्र का एक नाम। २ एक ऋषि का नाम [को०]। ३ एक वृष्णिवंशीय राजा जिनके पुत्र का नाम शूर था [को०]। ४. पुराणानुसार एकरा जा का नाम। ५. कुरु का एक पुत्र, इसकी माता का नाम सुभागी था [को०]।

विद्वरभूधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्वराद्रि' [को०]।

विद्वरभूमि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वर नामक देश। कहते हैं, वैदूर्यमणि इसी देश में होती है।

विद्वररत्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदूर्यमणि जो अनुश्रुति के अनुसार विद्वर पर्वत पर प्राप्त होती है [को०]।

विद्वरविगत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अत्यज।

विद्वरित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विद्वरिता] हटाया हुआ या दूर किया हुआ। उ०—कण वरुणालया अर्चय विद्वरिता।—वी० श० महा०, पृ० २१६।

विद्वराद्रि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वर पर्वत [को०]।

विद्वरोद्भावित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वर पर्वत पर उत्पन्न होनेवाली, वैदूर्यमणि [को०]।

विद्वपु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्वपक] भाँड़। विद्वपक। उ०—नाचहि कहूँ विद्वप करि जाला। कूजहि काँख बजावहि ताला।—सवल (शब्द०)।

विद्वपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अधिक विपयी हो। कामुक। २ वह जो तरह तरह की नकलें आदि करके, वेश भूषा बनाकर अथवा बातचीत करके दूसरों को हँसाता हो। मसखरा।

विशेष—प्राचीन काल में राजाओं और बड़े आदमियों के मनोविनोद के लिये उनके दरबार में इस प्रकार के मसखरे रहता करते थे जो अनेक प्रकार के कौतुक करके, बेवकूफ बनकर अथवा बातें बनाकर लोगों को हँसाया करते थे। प्राचीन नाटकों आदि में भी इन्हें यथेष्ट स्थान मिला है, क्योंकि इनसे सामाजिको का मनोरंजन होता है। साहित्यदर्पण के अनुसार विद्वपक प्रायः अपने कौशल से दो आदमियों में झगडा भी कराता है, और अपना पेट भरना या स्वार्थ मिट्ट करना खूब जानता है। यह शृंगार रस में सहायक होता है और मानिनी नायिका को मनाने में बहुत कुशल होता है।

३. चार प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेल में सहायक होता है। ४. वह जो दूसरी की निंदा करता हो। खल। ५. भाँड़।

विद्वषक^१—वि० १. भ्रष्ट, दूषित या गंदा करनेवाला। २ परनिन्दक। बदनाम करनेवाला। ३ हँसी करनेवाला। मसखरा [को०]।

विद्वषण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पर विशेष रूप से दोष लगाने की क्रिया। ऐव लगाना। परिवाद। २ मलिन या दूषित करना। दुर्वचन। झिडकी [को०]।

विद्वषणा^२—क्रि० सं० [सं० विद्वषण या हिं० दुखाना] १ सताना। दुख देना। उ०—सुनु सठ काल प्रसित यह देही। जनि तेहि लागि विद्वषहि केही।—तुलसी (शब्द०)। २ दोष लगाना। दोषी ठहराना।

विद्वषणा^३—क्रि० प्र० दुखी होना। पीडा का अनुभव करना। उ०—तापन सो तपती बिर में बिन काल वृथा वन माहि विद्वषती।—मन्नालाल (शब्द०)।

विद्वषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाप। अनाचार [को०]।

विद्वपित—वि० [सं०] १ अपमानित। तिरस्कृत। लाछिल। २. दोषपूर्ण बनाया हुआ [को०]।

विद्वक—वि० [सं०] दे० 'विद्वश'।

विद्वति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सधि। सीवन। २ खोपड़ी का जोड़। उ०—यह शरीर ही द्वारकापुरी है। नौ इद्रिम द्वार और दमवाँ विद्वति द्वार ये दस फाटक हैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६४०।

विद्वश—वि० [सं०] जिसे दिखाई न पड़े। अधा।

विदेव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. दे० 'विदेह'।

विदेय—वि० [सं०] जो दिया गया हो। देय। देने लायक [को०]।

विदेव^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ राज्ञ्य। २ यक्ष। ३. अक्षक्रीडा। पासे का खेल।

विदेव^२—वि० १ देवरहित। देवताविहीन। देवताओं से विरहित। जैसे, विदेव मंदिर, विदेव यज्ञ। २. देवघोही। देवों का विद्वंषी [को०]।

विदेवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अक्षक्रीडा। पासा खेलना [को०]।

विदेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश। परराष्ट्र।

विदेशग—वि० [सं०] परदेश जानेवाला। विदेश जानेवाला [को०]।

यौ०—विदेशग। विदेशगमन=परदेश की यात्रा। विदेशगामी=विदेश जानेवाला। विदेशज=जो विदेश में उत्पन्न हो। विदेशवास=विदेश में रहना। विदेशवासी=प्रवासी। विदेश में रहनेवाला। विदेशस्थ=(१) परदेश में रहनेवाला। (२) परदेश में होनेवाला।

विदेशप्रवृत्तिज्ञान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार परराष्ट्र प्रवृत्तियों का ज्ञान और अनुमान। विदेशी मुआमलों की जानकारी।

विदेशी—वि० [सं० विदेशिन्] १ विदेश सवधी। बाहरी। २ परदेशी। दूसरे देश का निवासी।

विदेशीय—वि० [सं०] दे० 'विदेशी'।

विदेसा^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विदेश] दे० 'विदेश'। उ०—अब तू विदेस का मनमाना मजा लूट।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७।

विदेह^१—सच्चा पुं० [सं०] १ वह जो शरीर से रहित हो। २ वह जिसकी उत्पत्ति माता पिता से न हो। जैसे,—देवता आदि।
३ ज्ञानी एव देहवाद को अधिक महत्व न देनेवाले राजा जनक का एक नाम। विशेष दे० 'जनक'। ४ राजा निमि का एक नाम। विशेष दे० 'निमि'। ५ प्राचीन मिथिला का एक नाम। ६ इस देश के निवासी।

विदेह^२—वि० [सं०] ज्ञानशून्य। सखारहित। वेमुव। अचेत। उ०—
(क) मूर्ति मधुर मनोहर देखो। भयउ विदेह विदेहु विसेखो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देखि भरत कर सोच सनेहू। भा निपाद तेहि समय विदेहू।—तुलसी (शब्द०)। (ग) कौन ले आई कौने चरन चलाई, कौने बहियाँ गही माँ धीं केही री। मुरदास प्रभु देखे सुधि रही नहि, अति विदेह भई अब मैं ब्रूनि तोहो री।—सूर (शब्द०)। २ मृत (को०)। ३ विरागी। उदासीन (को०)। ४ शरीररहित। कामशून्य।

विदेहक—सच्चा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २ एक वर्ष का नाम (को०)।

विदेहकुमारी—सच्चा स्त्री० [सं०] (राजा जनक की पुत्री) जानकी। संता। उ०—कही धीं तात बयो जीनि सकल नृप वरी है विदेहकुमारी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहकूट—सच्चा पुं० [सं०] जैन पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विदेहकैवल्य—सच्चा पुं० [सं०] वह निर्वाण या मोक्ष जो जीवन्मुक्त को मरने पर प्राप्त होता है।

विदेहजा—सच्चा स्त्री० [सं०] सीता (को०)।

विदेहत्व—सच्चा पुं० [सं०] १ विदेह होने का भाव। २ शरीर का नाश। मृत्यु। मोत।

यौ०—विदेहत्वगत, विदेहत्वप्राप्त = (१) मृत। (२) मुक्त।

विदेहपुर—सच्चा पुं० [सं०] राजा जनक की राजधानी, जनकपुर। उ०—विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानो कीन्ही जैसी आई गो परी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहमुक्ति—सच्चा स्त्री० [सं०] दे० 'विदेहकैवल्य'। उ०—जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति का भेद प्रगट है, परंतु तुमहो मालूम नहीं हो सकता है।—कबीर मं०, पृ० १७६।

विदेहा—सच्चा स्त्री० [सं०] मिथिला नगरी और प्रदेश का एक नाम।

विदेही—सच्चा पुं० [सं०] विदेहिन्। ब्रह्म। उ०—कुल मर्यादा खोई कं खोजिनि पदनिर्वाण। अंकुर वाज नसाइ क भइ विदेही धान।—कबीर (शब्द०)।

विदोष—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो। दोषरहित। बेऐव।

विदोह, विदोहन—सच्चा पुं० [सं०] किसी से अत्यधिक लाभ उठाना या अधिक दूहना। शोषण (को०)।

विद्—सच्चा पुं० [सं०] १ वह जो जानता हो। जानकार। २. पंडित। विद्वान्। ३ बुध ग्रह। ४. तिल का पौधा।

विद्^१—वि० ज्ञाता। जानकार। विद्वान्। समामात में प्रयुक्त। जैसे,—वेदविद्, तद्विद्।

विद्^२—सच्चा स्त्री० ज्ञान। समझ। जानकारी (को०)।

विद्ध—वि० [सं०] १ बीच में से छेद किया हुआ। छिद्रित। विदीर्ण। २ फेंका हुआ। क्षित। ३ जिममें बाधा पड़ी हो। बाधित। ४ समान। तुल्य। बराबर। ५ जिमको चोट लगी हो। ताड़ित। ६ टेढ़ा। ७ मिला हुआ। आवद्ध।

यौ०—विद्धकर्ण १ जिसके कान छिदे हो। २ विद्धकर्णी। विद्धकर्णा, विद्धर्णिका = पाठा। विद्धकर्णी।

विद्ध^३—सच्चा पुं० (१) धाव। जल्म। (२) पहाड़मूल। पाठा (को०)।

विद्ध^४—सच्चा पुं० [सं०] विधि। ब्रह्मा। विधि। उ०—सपेपक जपी सुकथ, माधव माननि मभक्त। जो चित हित विलविषी। (सो) हरिहर विद्ध न सुभक्त।—पृ० रा०, २।४२२।

विद्धक—सच्चा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जिससे मिट्टी खोदी जाती थी।

विद्धकर्णी—सच्चा स्त्री० [सं०] अंबुष्ठा। पाठा (को०)।

विद्धर्ण—सच्चा पुं० [सं०] वह सूजन जो शरीर के किसी अंग में कटि की नोक के चुमने या दृढ़कर रह जाने से होती है।

विद्धा—सच्चा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिससे शरीर में बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ निकलती हैं।

विद्धायुध—सच्चा पुं० [सं०] धनुष का एक प्रकार। विशेष सवाई का धनुष (को०)।

विद्धि^१—सच्चा स्त्री० [सं०] १ आघात करना। हनन। मारना। २ बेचना या छेदना।

विद्धि^२—सच्चा पुं० [सं०] विधि = काम करने का तरीका। विधि। जुगत। उ०—आहार पान धनसार पूर। बठे सु आइ एकत सूर। सब कहिग विद्धि कनयज दिया। सुदरै वत सो काहु पान।—पृ० रा०, १।६२८।

विद्य—सच्चा पुं० [सं०] लाभ। प्राप्ति (को०)।

विद्यमान—वि० [सं०] १ वर्तमान। उपस्थित। मौजूद। उ०—सूर समर करनी करहि, कहि न जनावहि आपु। विद्यमान रन पाय गिपु, कायर करहि प्रलापु।—सतवाणी०, पृ० ७३। २ तथ्यपूर्ण। तथ्यपूर्ण (को०)।

विद्यमानता—सच्चा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्यमानत्व—सच्चा पुं० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्याकुर—सच्चा पुं० [सं०] विद्या + अङ्कुर। आरंभिक विद्या। बालको को पढ़ाई जानेवाली ज्ञान की प्रथम पुस्तक। उ०—वहाँ राजा शिवप्रसाद सदृश विलक्षण विद्वान् के बनाए भूगोल हस्तामलक, इतिहास तिमिर नाशक, गुटका आदि विद्याकुर ने पढ़ाये जाते थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१७।

विद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा उपाजित या प्राप्त किया जाता है। वह जानकांगी जो सीखकर हासिल की जाती है। किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान। इत्थम्। जैसे,—
(क) विद्या पढ़कर मनुष्य पंडित होता है। (ख) आजकल पाठशालाओं में अनेक प्रकार की विद्याएँ पढ़ाई जाती हैं।

विशेष—हमारे यहाँ विद्या दो प्रकार की मानी गई है—परा और अपरा। जिम विद्या के द्वारा ब्रह्मज्ञान होता है, वह परा विद्या और इसके अतिरिक्त जो अन्य लौकिक या पदार्थ विद्याएँ हैं, वे सब अपरा विद्या कहलाती हैं।

२ वह ज्ञान जिसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि होती है। ३ वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

विशेष—हमारे यहाँ इनकी संख्या १८ बतलाई गई है। यथा—चारो वेद, छत्रो अंग, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गार्ग्यवेद और अर्थशास्त्र।

४ दुर्गा। ५ देवी का मंत्र। ६ गनियारी। ७ सीता की एक स्त्री का नाम। ८ तत्र मे 'ई' अक्षर का वाचक शब्द (को०)। ९ छोटी घटी (को०)। १० ऐंद्रजालिक कौशल (को०)।

११ सिद्ध गुटिका। ऐंद्रजालिक गुटिका (को०)।

विशेष—कहते हैं, इसे मुँह में रखने से व्यक्ति उडता हुआ कहीं भी गमन कर सकता था।

१२ आर्या छंद का पाँचवाँ भेद, जिसमें चंद्रशेखर के मत से २३ गुरु और ११ लघु मात्राएँ होती हैं।

विद्याकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्या का आकर। विद्वान् व्यक्ति। वह जिससे ज्ञान प्राप्त हो। अव्यापक। शिक्षक (को०)।

विद्याकोशगृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुस्तकालय। ग्रंथागार (को०)।

विद्याकोशसमाश्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुस्तकालय। लाइब्रेरी (को०)।

विद्यागम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानप्राप्ति। विद्याप्राप्ति (को०)।

विद्यागुरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह गुरु जिससे विद्या पढ़ी हो। पवित्र ज्ञान का देनेवाला। पढ़ानेवाला गुरु। शिक्षक।

विद्यागृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। विद्यालय। पाठशाला।

विद्याचक्षु—वि० [सं० विद्याचक्षु] विद्या द्वारा स्थात। प्रसिद्ध विद्वान् (को०)।

विद्याचक्षु—वि० [सं०] दे० 'विद्याचक्षु'।

विद्याजम्भक—वि० [सं० विद्याजम्भक] भाँति भाँति की ऐंद्रजालिक फ्रिया अथवा जादू के खेल दिखानेवाला (को०)।

विद्यातीर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

विद्यात्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्या का भाव।

विद्यादल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र का पेड़।

विद्यादाता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यादातृ] विद्या पढ़ानेवाला गुरु, जो शास्त्रों के अनुसार पिता माना जाता है।

हिं० श० २-१८

विद्यादान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या पढ़ाना। शिक्षा देना। २ पस्नक का दान (को०)।

विद्यादायाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्या का दायाद। किसी विद्या का उत्तराधिकारी (को०)।

विद्यादेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मरुत्वती। २ जैनियों की सोलह जिन देवियों में से एक देवी का नाम।

विद्याधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या रूपी धन। २ वह धन जो अपनी विद्या द्वारा उपाजित किया जाय। ऐसे धन में किसी का हिस्सा नहीं लग सकता।

विद्याधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की देवयोनि जिसके अंतर्गत खेवर, गधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. सोलह प्रकार के रतिवधों में से एक प्रकार का रतिवध। ३. वैद्यक में एक प्रकार का यत्र जिससे पारे का संस्कार करते हैं।

विशेष—इसमें एक थाली में पारा रखकर उसपर दूसरी थाली रखकर मिट्टी से बीच का जोड़ बंद कर देते हैं, और ऊपर की थाली में पानी भरकर दोनों मिली हुई थालियों को पाँच पहर तक आग पर रखते हैं। इसके उपरांत ठंडे होने पर पारा निकाल लेते हैं।

४ एक प्रकार का अस्त्र। उ०—(क) वर विद्याधर अस्त्र नाम नंदन जो ऐसी। मोहन स्वापन सयन सौम्य कर्पण पुनि है सो।—पद्माकर (शब्द०) (ख) महा अस्त्र विद्याधर लीजै पुनि नंदन जेहि नाऊँ।—रघुराज (शब्द०)। ५ विद्वान् व्यक्ति। पंडित। उ०—कविदल विद्याधर सकल कलाधर राज राज वर वेश वने।—केशव (शब्द०)।

विद्याधर रस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक, ताँबे, सोठ, पीपल, मिर्च, घतूरे आदि की महायुक्तता से बनाया जाता है और ज्वर में बहुत उपयोगी माना जाता है।

विद्याधरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक की स्त्री। उ०—विद्याधरी किन्नरी नामा तयो वानरी अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

विद्याधरेन्द्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्याधरेन्द्र] जांबुवान का एक नाम।

विद्याधरेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक शिवलिंग का नाम।

विद्याधार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पंडित। विद्वान्।

विद्याधारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं। उ०—मैं चारो वधू गाँठ भक्ती को पाऊँ। लाभ सारे यामे अतै ना जाऊँ। जानै भेदा याको सत्संगा को धारी। वोही साँचो भक्ता साँचा विद्याधारी।—जगन्नाथ (शब्द०)।

विद्याधिदेवता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या पढ़ानेवाला। गुरु। शिक्षक। २ विद्वान्। पंडित।

विद्याधिराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो बहुत बड़ा पंडित हो।

विद्याधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्याधर नाम की देवयोनि।

विद्यानुपालन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अध्ययन (को०)।

विद्यानुपाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यानुपालिन्] अध्येता [को०] ।

विद्यानुसेवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्याध्ययन [को०] ।

विद्यानुसेवी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यानुसेविन्] अध्येता [को०] ।

विद्यापति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्रमुख पंडित या विद्वान् । २ मैथिली भाषा के एक महान् गीतकार कवि [को०] ।

विद्यापीठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा का केंद्र । विद्यालय [को०] ।

विद्यावल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जादू की शक्ति । २ विद्या की शक्ति । विद्वत्ता का बल [को०] ।

विद्याभाक्—वि० [सं० विद्याभाज्] विद्वान् ।

विद्याभ्यसन, विद्याभ्यास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्याध्ययन ।

विद्यामंडलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यामण्डलक] पुस्तकालय [को०] ।

विद्यामत^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यावत्] दे० 'विद्वान्' । उ०—व्यसनी व्यावहारिक विद्यामत वादी व्युत्पत्ति वदीजन बाहक ।—वरणा०, पृ० २० ।

विद्यामंदिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यामन्दिर] विद्यालय ।

विद्यामणि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्याधन' ।

विद्यामय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो पूर्ण पंडित हो ।

विद्यामहेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०] ।

विद्यामार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाय । श्रेय मार्ग (कठवल्ली उपनिषद्) ।

विद्यारम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यारम्भ] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढाई आरम्भ होती है ।

विद्याराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक मूर्ति का नाम ।

विद्याराशि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

विद्यार्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या का अर्जन । विद्या की प्राप्ति । २ विद्या द्वारा होनेवाली प्राप्ति [को०] ।

विद्यार्थ—वि० [सं०] विद्याप्राप्ति का इच्छुक [को०] ।

विद्यार्थी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढता हो । पढनेवाला छात्र । शिष्य ।

विद्यालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढाई जाती हो । पाठशाला ।

विद्यालाभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यार्जन' [को०] ।

विद्यावश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी विद्या के शिक्षको की क्रमागत परंपरा सूचनिका [को०] ।

विद्यावधू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती [को०] ।

विद्यावान—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यावान्] पंडित । विद्वान् । उ०—जीवत जग मे काहि पिछानी । विद्यावान होइ जो प्राणी ।—विश्राम (शब्द०) ।

विद्यावार्तिक—वि० [सं०] तरह तरह के जादू के खेल करनेवाला [को०] ।

विद्याविक्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] घन लेकर शिक्षा देना [को०] ।

विद्याविद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वान् । पंडित ।

विद्याविरुद्ध—वि० [सं०] विद्या के विपरीत या विरुद्ध ।

विद्यविशिष्ट—वि० [सं०] विद्याज्ञान या विद्वत्ता के लिये ख्यात [को०] ।

विद्याविहीन—वि० [सं०] विद्याहीन । मूर्ख । अपठ [को०] ।

विद्यावृद्ध—वि० [सं०] विद्या या ज्ञान में अग्रसर [को०] ।

विद्यावेश्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्यावेश्मन्] पाठशाला [को०] ।

विद्याव्यवसाय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'विद्याव्यसन' । २ दे० 'विद्याविक्रय' ।

विद्याव्यसन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्या+व्यसन] विद्या या ज्ञानप्राप्ति के लिये उत्कट अभिलाषा । विद्याप्रेम । अध्ययन । उ०—क्षत्रियो के पास सैन्य बल था, राजनैतिक प्रभुता थी, विद्या-व्यसन भी था ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ६७ ।

विद्याव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह व्रत जो गुरु के घर रहकर विद्या पढ़ने के उद्देश्य से धारण किया जाता है ।

विद्यासागर—वि० [सं०] विद्या का समुद्र । अग्राध विद्वान् [को०] ।

विद्याव्रतस्नातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के पास रहकर वेद और विद्याव्रत दोनों समाप्त करके अपने घर लौटे ।

विद्यास्नात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यास्नातक' [को०] ।

विद्यास्नातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के घर रहकर वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौटा हो ।

विद्यु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत् । बिजली ।

विद्युच्चालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्युत्+चालक] वह पदार्थ जिसमें विद्युत् की धारा प्रवाहित हो । जैसे, ताँवा आदि ।

विद्युच्छिखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक पीशा जिसकी जड़ विपरीत होती है । २ एक राक्षसी [को०] ।

विद्युज्ज्वाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक नाग का नाम । २ बिजली की कौंध [को०] ।

विद्युज्ज्वाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कलिकाड़ी या कलियारी नामक वृक्ष । २ बिजली की कौंध । उ०—इसपर चमक रही है रक्तिम, विद्युज्ज्वाला बारबार ।—अपरा, पृ० ३५४ ।

विद्युज्जिह्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार रावण के पत्न के एक राक्षस का नाम जो शूर्पणखा का पति था । २ एक यक्ष का नाम [को०] । ३ एक राक्षस का नाम ।

विद्युज्जिह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

विद्युता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत् । बिजली । २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम ।

विद्युताक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।

विद्युत्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सध्या । २ बिजली । ३ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की उल्का । ४ एक प्रकार की वीणा । ५ वज्र [को०] । ६ उषा [को०] । ७ प्रजापति बाहुपुत्र की चार कन्याएँ [को०] । ८ अतिजगली छद का एक भेद या प्रकार [को०] ।

विद्युत्—सञ्ज्ञा पुं० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम । २ समाधि का एक प्रकार [को०] । ३ एक असुर का नाम [को०] ।

विद्युत्—वि० १ जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो । बहुत चमकीला । २ जिसमें किसी प्रकार की दीप्ति या प्रभा न हो ।

विद्युत्कप—सखा पु० [सं० विद्युत्कप] विजली की कोंब या चमक [को०] ।

विद्युत्केश—सखा पु० [सं०] रामायण के अनुसार हेति नामक राज्ञ का पुत्र, जो कान की वन्या भया के गर्भ में उत्पन्न हुआ था । इसी विद्युत्केश और पौलोमो से राज्ञो के वंश की वृद्धि हुई था ।

विद्युत्केशी—सखा पु० [सं० विद्युत्केशिन्] दे० विद्युत्केश' [को०] ।

विद्युत्ता—सखा पु० [सं०] विद्युत् का भाव या धर्म । विजलीतन ।

विद्युत्पताक—सखा पु० [सं०] इलय के समय के तात मेघा मे से एक मेघ का नाम ।

विद्युत्पर्णी—सखा स्त्री० [सं०] एक अम्बरा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

विद्युत्पात—सखा पु० [सं०] विजली का गिरना । वज्रपात ।

विद्युत्पुज—सखा पु० [सं० विद्युत्पुज्ज] एक विद्याधर [को०] ।

विद्युत्प्रपतन—सखा पु० [सं०] दे० 'विद्युत्पात' [को०] ।

विद्युत्प्रभ—सखा पु० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक ऋषे का नाम । २ वह जो विद्युत् के समान दाहि मान् हो । ३ एक दैत्य का नाम ।

विद्युत्प्रभा—सखा स्त्री० [सं०] १ दैत्या के राजा वनि की पोती का नाम । २ अम्बराका का एक गण । ३. विजली का प्रकाश या दीप्ति ।

विद्युत्प्रिय—सखा पु० [सं०] काँसा नामक धातु या उसका कोई वस्तु, जिसकी ओर विजली जल्दी खिंचती है ।

विद्युत्य—वि० [सं०] विद्युत् या विजली से उत्पन्न ।

विद्युत्वत्—सखा पु० [सं०] वह जिसमें विद्युत् हो । जैसे, बादल । [को०] । २ मेघ । बादल ।

विद्युत्वान्—सखा पु० [सं० विद्युत्वत्] १. एक पर्वत । २. बादल । मेघ [को०] ।

विद्युत्वान्—वि० १ विजली के समान चमकीला । २. विजली के समान क्षणिक [को०] ।

विद्युदक्ष—सखा पु० [सं०] पुराणानुसार एक दैत्य का नाम ।

विद्युदुन्मेष—सखा पु० [सं०] विजली की चमक । विद्युत्कप [को०] ।

विद्युद्गौरी—सखा स्त्री० [सं०] शक्ति की एक मूर्ति का नाम ।

विद्युद्दाम—पु० [सं० विद्युद्दामन्] वक्रगति युक्त विजली की कोंब या चमक । विद्युत्लता । विद्युत्लेखा । उ०—दुहरा विद्युद्दाम चढा द्रुत, इंद्रधनुष की कर टंकार ।—पल्लव, पृ० ६२ ।

विद्युद्योत—सखा पु० [सं०] विजली की चमक या कोंब [को०] ।

विद्युद्वज्र—सखा पु० [सं०] १ एक भगुर का नाम । २. दे० 'विद्युत्पताक' ।

विद्युद्वर्णी—सखा स्त्री० [सं०] एक अम्बरा [को०] ।

विद्युद्वल्ली—सखा स्त्री० [सं०] विजली की कोंब । विद्युत्लता [को०] ।

विद्युन्मापक—सखा पु० [सं० विद्युत्+मापक] एक विशेष प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का दान कितना और प्रवाह किस ओर है ।

विद्युन्माल—सखा पु० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक वंदर का नाम । २. दे० 'विद्युन्माला' ।

विद्युन्माला—सखा स्त्री० [सं०] १ विजली का समूह या मिलनिला । २. एक यक्षिणी का नाम । ३. एक छद्म जिनके प्रत्येक चरण में आठ आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु वर्ण (म म ग ग) होते हैं और चार वर्णों पर यति होती है । उ०—मैं मागो गोपी सा दाना । भागा वाला नाही काना । कारी सारी ताही माला । भागी मोही विद्युन्माला ।—जगन्नाथ (शब्द०) ।

विद्युन्माली—सखा पु० [सं० विद्युन्मालिन्] १. पुराणानुसार एक राज्ञ का नाम । उ०—विद्युन्माली रजनिचर, हन्धा सुपुणहि वान । मारि मुपेणहुं शृ ग इक, ताखा वाकर यान ।—रघुराज (शब्द०) ।

विशेष—इमने शिव की भक्ति करके लीने का एक विमान प्राप्त किया था और उमा विमान पर चढ़कर यह नृप क पाछे पोछे घूमा करता था । इस रात क समय भा उम विमान में अव-कार नहीं हाने पाता था । इस घबराकर सूर्य न अरन तज स वह विमान गलाकर जमान पर गिरा दिया था । रामायण में कहा है कि घम के पुत्र सुपण के साथ इसका युद्ध हुआ था ।

२. महाभारत के अनुसार एक भगुर का नाम । ३. एक छद्म का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, एक मगण और अत में दो गुरु हाते हैं । ४. एक प्रकार क देवता [को०] । ५. एक विद्याधर का नाम [को०] ।

विद्युन्मुख—सखा पु० [सं०] एक प्रकार क उपग्रह ।

विद्युल्लक्षण—सखा पु० [सं०] अथर्ववेद का ५६वाँ परिषद [को०] ।

विद्युल्लता—सखा स्त्री० [सं०] विद्युत् । विजली । उ०—गौरव विद्युल्लता आज लका पर दूटा ।—साकत, पृ० ४०८ ।

विद्युल्लेखा—सखा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त का नाम जिनके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं । इस शब्द का भी कहत है । उ०—मैं माटा साई । झूठे ग्वाला माई । मू बायो मा दला । जाना विद्युल्लेखा ।—जगन्नाथ (शब्द०) । २. विद्युत् । विजली का कोंब । विजली ।

विद्युल्लोचन—सखा पु० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०] ।

विद्युल्लोचना—सखा पु० [सं०] एक नागवन्धा [को०] ।

विद्येश—सखा पु० [सं०] शिव का एक नाम ।

विद्येश्वर—सखा पु० [सं०] १. शिव । २. शिव मतानुसार एक उन्नत यानि । ३. एक ऐंद्रजालिक [को०] ।

विद्योत—सखा स्त्री० [सं०] १ विद्युत् । विजली । २. प्रभा । चाँति । चमक । ३. एक अम्बरा का नाम ।

विद्योत—वि० चमकीला । प्रकाशमान [को०] ।

विद्योतक—वि० [सं०] छाँतित करनेवाला । दाँत करनेवाला [को०] ।

विद्योतन—वि० [सं० स्त्री० विद्योतिनी] १. प्रकाश करनेवाला । चमकानेवाला, २ उदाहरण क साथ निरूपण करनेवाला । व्याख्याता [को०] ।

विद्योतन^२—सञ्ज्ञा पुं० विजली [को०] ।

विद्योती—वि० [सं० विद्योतिन्] [वि० स्त्री० विद्योतिनी] द्योतित करनेवाला । व्यक्त वा प्रकाशित करनेवाला [को०] ।

विद्योपयोग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राप्त ज्ञान को प्रयोग में लाना या विद्यादान करना ।

विद्योपार्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यार्जन' ।

विद्योपार्जित—वि० [सं०] जिसे विद्या द्वारा अर्जित किया जाय । जैसे, विद्योपार्जित धन ।

विद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ छिद्र । छेद । २ फाटना । खड खड करना । छेद करना [को०] ।

विद्रव^१—वि० [सं०] १ मोटा ताजा । २ दृढ़ । मजबूत । पक्का । ३ जो किसी काम के लिये अच्छी तरह तैयार हो ।

विद्रव^२—सञ्ज्ञा पुं० एक फोडा । दे० 'विद्रवि' ।

विद्रवि—सञ्ज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] पेट के अंदर का एक प्रकार का फोडा जो बहुत घातक होता है ।

यौ०—विद्रविघ्न । विद्रवनाशन = सिंहजन ।

विद्राघका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोडा जो प्रमेह रोग के बहुत दिनों तक रहने के कारण होता है ।

विद्रविघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शोभाजन । सिंहजन ।

विद्रम^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्रुम] दे० 'विद्रुम' । उ०—गति गयद जँष बेलिप्रभ केहरि जिमि वटि लक । हरो डसण, विद्रम अघर, मारु भृकुटि नयक —ढोला०, दू० ४५४ ।

विद्रव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पलायन । भागना । २ बुद्धि । अक्ल । ३ नाश । ४ भय । आतक । घबराहट । डर । ५ युद्ध । लड़ाई । ६ प्रवाह । बहना । ७ पिघलना । द्रवीभूत होना । ८ निदा । शिकायत ।

विद्रवण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पलायन । भागना । २. पिघलना । गलना [को०] ।

विद्रवित—वि० [सं० वि + द्रवित] १ भागा हुआ । पलायित । २. छितराया या बिखरा हुआ । ३ जो द्रवित हो चुका हो । उ०—किंतु कौन तुम, मौन ज्योति विद्रवित जलद से ।—रजत०, पृ० ६७ ।

विद्राण—वि० [सं०] सुप्ति से जाग्रत अवस्था में लाया हुआ । [को०] ।

विद्राव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बहना । क्षरण । २. पिघलना । गलना । ३ पलायन । 'विद्रव' ।

विद्रावक—वि० [सं०] १ भगानेवाला । २ द्रवित करनेवाला [को०] ।

विद्रावण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. भगाना । पराजित करना । २ पिघलाना । ३ गलाना । ४ उड़ाना । ५ फाटना । ६ वह जो नष्ट करता हो । ७ एक दानव का नाम ।

विद्रावण^२—वि० आतंकित करनेवाला । भगानेवाला । घबरा देनेवाला । जैसे—महामोह विद्रावण ।

विद्राविणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कौवाठोठी ।

विद्रावित—वि० [सं०] १ खदेडा या भगाया हुआ । डराया हुआ । २. फँलाया या बिखराया हुआ । तितर बितर किया हुआ । ३ पिघलाया या गलाया हुआ [को०] ।

विद्रावी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्राविन्] १ भगानेवाला । २ भगानेवाला । ३ गलनेवाला । ४ फाटनेवाला ।

विद्राव्य—वि० [मं०] १ जिनका विद्राव करणीय हो । भगाने के लायक । २. पिघलाने या गलाने योग्य [को०] ।

विद्रुत^१—वि० [सं०] १ भागा हुआ । २. गला हुआ । ३ पिघला हुआ । ४ आतंकित । भयभीत [को०] । ५ नष्ट [को०] ।

विद्रुत^२—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ युद्ध का एक विशेष ढंग । २. उड़ान [को०] ।

विद्रुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १ भागना । २ गलना । ३ पिघलना । ४ नष्ट होना ।

विद्रुवि—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विद्रवि' ।

विद्रुम^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ प्रवाल । मूंगा । २ मुक्ताफल नामक वृक्ष । ३ वृक्ष का नया पत्ता । कोपल । ४ एक पहाड का नाम [को०] ।

विद्रुम^२—वि० द्रुमहीन [को०] ।

विद्रुमच्छवि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०] ।

विद्रुमदड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मुक्ताफल या रत्नवृक्ष की शाखा [को०] ।

विद्रुमफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुडुव नामक सुगंधित गाद ।

विद्रुमलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. नलिका या नली नामक गन्धद्रव्य । २ मूंगा ।

विद्रुमलतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विद्रुमलता' [को०] ।

विद्रूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पारहास । व्यंग्य । मजाक । ठठ्ठा । उ०—प्रगांतशील साहित्य क मानदड पुस्तक में डा० रागेय राघव का यह आक्रोश भरा विद्रूप ।—हिंदा आ०, पृ० १२ ।

विद्रोह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. किसी के प्रति होनेवाला वह द्वेष या अचरण जिससे उसको हानि पहुँचे । २. राज्य में होनेवाला भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो । क्रांति । बला । बगावत ।

विद्रोही—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्राहन्] [स्त्री० विद्रोहिणी] १ जो किसी के प्रति विद्राह या द्वेष करता हो । २. राज्य का अनिष्ट करनेवाला । बागी ।

विद्रव्जन—सञ्ज्ञा पुं० [मं० विद्रव् + जन] १ विद्वान् या कुशल व्यक्ति । २. सत । तपस्वी ऋषि [को०] ।

विद्रव्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

यौ०—विद्रव्कल्प = जो विद्वान् न हो । कम पढ़ा लिखा । विद्रव्जन । विद्रव्त्तम = (१) शिव । (२) विद्वानों में श्रेष्ठ । महान् विद्वान् । विद्रव्देश्य । विद्रव्शाय = विद्रव्कल्प ।

विद्रव्त्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव । पांडित्य ।

विद्रव्त्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्रव्त्व] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव । विद्रव्ता । पांडित्य ।

विद्रव्देशीय—वि० [सं०] विद्रव्कल्प । कम शिक्षित [को०] ।

विद्वान्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विद्रव्] १ वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो । २ वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो । पंडित । ३. वह जो सब कुछ जानता हो । सर्वज्ञ ।

विद्वान्—वि० १. ज्ञाता । जानकार । २. बुद्धिमान् । पंडित ।
विद्यायुक्त ।

विद्विट्—सञ्ज्ञा पु० [सं० विद्विष] शत्रु [को०] ।

विद्विट्—वि० द्वेषी । द्वेष रखनेवाला [को०] ।

विद्विष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह जो विद्वेष या शत्रुता करता हो । शत्रु ।
दुश्मन ।

विद्विषाण—वि० [सं०] द्वेष या शत्रुता करनेवाला [को०] ।

विद्विप्—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'विद्विष' ।

विद्विष्ट—वि० [सं०] १. जिसके साथ विद्वेष या शत्रुता की जाय । द्वेष
का पात्र या भाजन । २. घृणित । कुत्सित [को०] ।

विद्विष्टता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] विद्विष्ट होने का भाव ।

विद्विष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] विद्वेष । शत्रुता । दुश्मनी ।

विद्वेष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. शत्रुता । दुश्मनी । वैर । द्वेष । २. अभि-
मत वा ईप्सित की प्राप्ति होने पर भी उद्धत गर्व या मान के
कारण अनादर या घृणाभाव [को०] ।

विद्वेषक—वि० सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह जो विद्वेष करता हो । द्वेषी शत्रु ।
वैरी ।

विद्वेषण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० विद्वेषणी] १. शत्रुता । दुश्मनी ।
वैर । २. तत्र क अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसके द्वारा दो
व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है । ३. वह जो
द्वेष करता हो । शत्रु । वैरी । ४. सञ्जनता का उल्टा । दुष्टता ।

विद्वेषणी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] १. रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री । कोपना
स्त्री । २. द्वेष या वैर रखनेवाली औरत [को०] ।

विद्वेषिणी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] पुराणानुसार दु मह नामक यक्ष की
आठवीं और अंतिम कन्या जो निर्याष्टि के गर्भ से उत्पन्न
हुई थी ।

विशेष—कहते हैं, यही लोगो में द्वेष उत्पन्न करती है । इसे
शात करने के लिये दूध, शहद और घी में मिले हुए तिलो से
होम आदि करने का विधान है ।

२. दे० 'विद्वेषणी' ।

विद्वेषिता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] शत्रुता । शत्रुत्व भाव । दुश्मनी [को०] ।

विद्वेषी—सञ्ज्ञा पु० [सं० विद्वेषिन्] [स्त्री० विद्वेषिणी] १. वह जो
विद्वेष करता हो । द्वेषी । २. शत्रु । वैरी ।

विद्वेष्टा—सञ्ज्ञा पु० [सं० विद्वेष्टृ] १. वह जो विद्वेष करता हो ।
२. शत्रु । वैरी ।

विद्वेष्ट्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. जिसके साथ विद्वेष किया जाय । द्वेष का
पात्र या भाजन । २. ककोल ।

विधस(उ)¹—सञ्ज्ञा पु० [सं० विध्वस] विध्वस । नाश । उ०—माया
कस विधस मुरारी । दारिद्र्य वारिद्र्य प्रवल बयारी ।—रघुराज
(शब्द०) ।

विधंस²—वि० विध्वस्त । नष्ट । विनष्ट ।

विधसना(उ)¹—क्रि० सं० [सं० विध्वसन] नष्ट करना । बरबाद
करना । उ०—चाँद सुरज सी होइ चिवाहू । चारि विधसव,
बेधव राहू ।—जायसी (शब्द०) ।

विध(उ)¹—सञ्ज्ञा पु० [सं० विधि] विधि । ब्रह्मा । उ०—नैन की कोर
ते नेह किया विध डील की छाँह ते शील मंवारो,—हृदय०
(शब्द०) ।

विध²—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० 'विध' ।

विध¹—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. प्रकार । विस्म । २. टग । रीति । रूप ।
३. प्रकार । तरह । किस्म । ४. हाथियों का आहार ।
५. समृद्धि । वैभव । ६. छेदन [को०] ।

विधत्री—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० विधात्री] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती ।

विधन—वि० [सं०] जिसके पास धन न हो । निर्धन । गरीब ।

विधनता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] विधन होने का भाव । निर्धनता ।
गरीबी ।

विधना¹—क्रि० सं० [सं० विधि] १. प्राप्त करना । अपने साथ
लगाना । ऊपर लेना । २. वेधन करना । वेधना । उ०—(क)
लए फँदाइ विहग मानो मदन व्याघ्र विधए ।—नूर (शब्द०) ।
(ख) थाके सूर पथिक मग माना मदन व्याघ्र विधए री ।—
सूर । (शब्द०) ।

विधना²—क्रि० अ० १. बिंवा जाना । विद्ध होना । २. उलझना ।
फँसना । दे० 'विधना' ।

विधना³—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० विधि] वह जो कुछ हाने को हो । भवित-
व्यता । होनी ।

विधना⁴—सञ्ज्ञा पु० विधि । ब्रह्मा । उ०—विधना ऐसी रैन कर भोर
कभी ना होय ।—(शब्द०) ।

विधनुष्क—वि० [सं०] धनुष से रहित । धनुषहीन [को०] ।

विधन्वा—वि० [सं० विधन्वन्] दे० 'विधनुष्क' ।

विधमन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. वाकनों ग नल आदि के द्वारा हवा
पहुँचाकर आग सुलगाना । घोंकना । विद्युत्तन । उड़ाना ।
२. आग्न आदि । बुझाना । नष्ट करना [को०] ।

विधमा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] एक राज्ञसा [को०] ।

विधर(उ)¹—क्रि० वि० [पुं० हिं०] दे० 'उधर' । उ०—जैसे रय के घोड़े
वाग के आश्रय जियर ले जाते हैं, विधर जाता है ।—यमुना-
शकर (शब्द०) ।

विधरकता²—सञ्ज्ञा स्त्री [हिं० देवढक + ता (प्रत्य०)] निर्भयता ।
उ०—या प्रकार बोहोत ही आति सो श्री गुसाईं जा मा हरिदास
की बेटी ने प्रार्थना करि कै अपनी सास तैं विधरकता सा वाली ।
—दो सो बावन०, भा० १, पृ० २५५ ।

विधरण¹—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. पकड़ना । रोकना । २. दे० 'विधृत' ।

विधरण²—वि० पकड़नेवाला । रोकने या रुद्ध करनेवाला [को०] ।

विधर्ता—वि०, सञ्ज्ञा पु० [सं० विधर्तृ] व्यवस्था करनेवाला । संभाल
करनेवाला । प्रबन्धक [को०] ।

विधर्म¹—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. अपने धर्म को छोड़कर और किसी का
धर्म । पराया धर्म । २. अन्याय । अधर्म [को०] । ३. अपने
धर्म को छोड़कर दूसरे का धर्म ग्रहण करना, जा पाँच प्रकार के
अधर्मों में से एक कहा गया है ।

विधर्मः—वि० [स०] १ जिसकी धर्मशास्त्र में निदा की गई हो ।

२ जिसमें गुण न हो । गुणहीन ।

विधर्मक—वि० [स०] दे० 'विधर्मिक' ।

विधर्मा—वि० [स० विधर्मन्] अनुचित या गलत कार्य करनेवाला ।
अन्यायकारी [को०] ।

विधर्मिक—वि० [स०] १ जो धर्मविरुद्ध आचरण करता हो ।
२ जो दूसरे धर्म का अनुयायी हो ।

विधर्मी—वि० [स० विधर्मिन] १. जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो । धर्मभ्रष्ट । २. जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो ।
३. विभिन्न प्रकार का [को०] ।

विधवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. कपन । २. हिलाना [को०] ।

विधवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो । पति-
हीन स्त्री । राड । देवा । उ०—(क) सुत वधू विधवा सो बोल
कै सुनायो लेहु धनपात गह आ गुपाल भरतार हँ ।—नाभा
(शब्द०) । (ख) ब्राह्मण विधवा नार सुर गुरु अश चुरावहो ।
कहै न वचन बवार, परै सोई निरश्वास मँह ।—विश्राम
(शब्द०) ।

विशेष—स्मृतियों में विधवा स्त्रियों के लिये ब्रह्मचर्य तथा कठिन
काठन नियमों का पालन विधेय है । जैसे,—ताड़न और मद्य-
माद आदि का त्याग । द्विजातियों में विधवा के लिये पुनर्विवाह
का नियम नहीं है । केवल पराशर संहिता में यह कहा गया है
कि स्वामी के नष्ट अर्थात् लापता होने, मरने, अथवा सन्वासी,
क्लीव या पतित होने पर स्त्री दूसरा पति कर सकती है । पर
और स्मृतियों के साथ अविरुद्ध सिद्ध करने के लिये पंडित लोग
'अन्य पति' शब्द का अर्थ 'दूसरा पालनकर्ता' किया करते हैं ।

विधवागामी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधवागामिन्] 'विधवा स्त्री के साथ
यौन संबंध रखनेवाला व्यक्ति । विधवा का जार [को०] ।

विधवापन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधवा + हि० पन (प्रत्य०)] विधवा होने
की अवस्था । वह अवस्था जिसमें पति के मरने के कारण स्त्री
पतिहीन हो जाती है । रैंडापा । वैधव्य । उ०—लिख्यो न विधि
मिलिवे तिहि मोही । प्राणजई विधवापन तोही ।—रघुराज
(शब्द०) ।

विधवाविवाह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विधवा स्त्री के साथ विवाह करना ।

विधवावेदन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधवा + आवेदन] दे० 'विधवाविवाह' ।

विधवाश्रम—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधवा + आश्रम] विधवाओं के रहने का
स्थान । अनाथ विधवाओं का शरणगृह । वह स्थान जहाँ विध-
वाओं के पालन पोषण तथा शिक्षा आदि का प्रबंध किया जाता
है । उ०—इन बालिकाओं के लिये अध्यापक कर्त्तव्य ने पूना में
'अनाथ विधवाश्रम' खोला है ।—सरस्वती (शब्द०) ।

विधव्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कपन । थरथराहट । विक्षोभ [को०] ।

विधस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मोम ।

विधस्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सृष्टिकर्ता । ब्रह्मा [को०] ।

विधासना०—क्रि० सं० [स० विध्वंसन] १. नष्ट करना । बरबाद
करना । उ०—(क) श्री जीवन मैमत विधासा । बिचला बिरह

बिरह लै नासा ।—जायसी (शब्द०) । (ख) भएउ जूझ जस
रावन रामा । सेज विधास, बिरह मगामा ।—जायसी (शब्द०) ।
२. अस्तव्यस्त करना । इधर उधर करना । गड़बड़ कर देना ।

विधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. माध्यम । रीति । रूप । ढंग । २. प्रकार,
तरह । विस्म । ३. हाथी घोड़े आदि का चारा । ४. समृद्धि ।
संपन्नता । ५. वेधन कर्म । छेदना । ६. जञ्चारण । ७. पारिश्रमिक ।
मजदूरी । ८. व्यवहार । आचरण । क्रिया । चेष्टा [को०] ।

विधातव्य—वि० [स०] १. विधान के योग्य । विधेय । २. करने
योग्य । कर्तव्य ।

विधाता—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १. विधान करने-
वाला । रचनेवाला । बनानेवाला । २. उत्पन्न करनेवाला ।
तैयार करनेवाला । उ०—विद्या वारिध बुद्धि विधाता ।—
तुलसी (शब्द०) । ३. व्यवस्था करनेवाला । प्रबंध करने-
वाला । इतजाम करनेवाला । ठीक तरह से लगानेवाला ।
उ०—ए गोसाईं । तू ऐस विधाता । जावत जीव सबह भुक्-
दाता ।—जायसी (शब्द०) । ४. सृष्टि बनानेवाला । जगत् की
रचना करनेवाला । सृष्टिकर्ता । ब्रह्मा या ईश्वर । उ०—कुछ
सदेह नहीं कि विधाता ने मुझे अत्यंत सुकुमारी बनाया है —
ताताराम (शब्द०) । ५. वितरण करने वाला देनेवाला । दाता
[को०] । ६. दैव । भाग्य । किस्मत [को०] । ७. विश्वकर्मा
[को०] । ८. कामदेव [को०] । ९. मदिरा । शराब । (छोलिंग में
भी प्रयुक्त) । १०. माया [को०] ।

विधातृका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विधान करनेवाली । विधात्री ।

विधातृभू—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नारद का एक नाम जो विधाता के पुत्र है
[को०] ।

विधात्रायु—सञ्ज्ञा पुं० [स० विधात्रायुस्] १. सूर्यमुखों का फूल । २. सूर्य
को ज्योति । सूर्यप्रभा [को०] ।

विधात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. विधान करनेवाली । रचनेवाली ।
बनानेवाली । २. व्यवस्था करनेवाली । प्रबंध करनेवाली । ३.
पिप्पली । पीपल । ४. माता । जननी । ५. सरस्वती । शारदा ।
उ०—सती विधात्री हादरा देखी श्रमिंत अनूर । जेहि जेहि वेप
अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ।—मानस, १।५४ ।

विधान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. किसी कार्य का आयोजन । काम का
होना या चलना । विन्यास । संपादनक्रम । अनुष्ठान । जैसे—
जो कुछ करना है, उसी का विधान अब होना चाहिए ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

२. व्यवस्था । प्रबंध । इतजाम । वंदोबस्त । जैसे,—पहले ही से
ऐसा विधान करो कि कार्य आरंभ करने में देर न हो । ३.
कार्य करने की रीति । विधि । प्रणाली । पद्धति । जैसे—
शास्त्रों में ऐसा विधान है । उ०—तुम विज्ञ विविध विधान ।—
केशव (शब्द०) । ४. रचना । निर्माण । ५. ढंग । तरीका ।
उपाय । युक्ति । जैसे—कोई ऐसा विधान निकालो कि कार्य
निर्विघ्न हो जाय । ६. उतना चारा जितना हाथी एक बार मुंह
में डालता है । हाथी का घास । ७. हानि पहुँचाने का दाँवपेंच ।

शत्रुता का आचरण । ८ प्रेरणा । भोजना । ९ अनुमति देने का कार्य । आज्ञा करना । १० धन संपत्ति । ११ पूजा । अर्चन । १२ नाटक में वह स्थल जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख प्रकट किया जाता है । जैसे,—‘वाल्मीकि काल’ ही में तुम्हारा ऐसा उत्साह देख मुझे हर्ष और विषाद दोनों होते हैं । १३ पीडा । वेदना । सताप (को०) । १४ प्राप्ति । लाभ (को०) । १५ प्रतिकार (को०) । १६ वेद (को०) । १७ भाग्य । दैव (को०) । १८ उपसर्ग या प्रत्यय का योग (को०) । १९ नियम । कानून (को०) ।

विधानक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विधान । विधि । २ विधानवेत्ता । विधि या रीति जाननेवाला । ३ कष्ट । पीडा (को०) ।

विधानग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विधान का ज्ञाता । पंडित । २ आचार्य । अध्यापक (को०) ।

विधानज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विधान का ज्ञाता । २ अध्यापक । आचार्य (को०) ।

विधानपरिषद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवस्थापिका सभा । प्रातः से सुचारु रूप से व्यवस्था के लिये विधान या कानून बनानेवाली सभा ।

विधानयुक्त—वि० [सं०] विधिविहित । विधि के अनुकूल (को०) ।

विधानविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रचना । वाक्यविन्यास । वाक्य रूप या आकार प्रकार । (अ० फार्म) उ०—विधानविधि का भेद ऊपर सूचित किया गया ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १३६ ।

विधानव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक व्रत । दे० ‘विधानसप्तमी व्रत’ (को०) ।

विधानशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवस्था शास्त्र । आईन । २ नीतिशास्त्र (को०) ।

विधानसप्तमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी ।

विधानसप्तमी व्रत—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का एक व्रत जो माघ शुक्ला सप्तमी को आरम्भ करके साल भर तक (पीप तक) किया जाता है । इसमें सूर्य का पूजन होता है ।

विधानापहार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विधान का अपहरण करना । निषेध को विधि के रूप में लाना । उ०—विधानापहार—विधान को बदल देना अर्थात् निषेध को विधि रूप में कहना ।—संपूर्णा० अभि० ग्र०, २६३ ।

विधानिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्ती ।

विधानी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विधान + ई (प्रत्य०)] १ विधान का जाननेवाला । विधानज्ञ । २ विधिपूर्वक कार्य करनेवाला ।

विधानीक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का डिंगल छंद । उ०—तुक तुक में क्रम से तब, अवर अवर विध जाण । सभ चौथी तुक नाम से विधानीक बांखाण ।—रघु० रू०, पृ० २४६ ।

विधायक—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विधायिका] १ विधान करनेवाला । कार्य करनेवाला । २ बनानेवाला । रचनेवाला । सस्थापक । उ०—हे विरचि तै विषयविधायक ।—रघुराज

(शब्द०) । ३. व्यवस्था करनेवाला । प्रवध करनेवाला । व्यवस्था देनेवाला । प्रस्तुत करनेवाला । उ०—मंगल मूरति सिद्ध विधायक ।—शंकर दि० (शब्द०) । ४. विधाननिर्माता । कानून बनानेवाला (आधु०) । ५ रचनात्मक ।

विधायिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० ‘विधायक’ ।

विधायी—वि० [सं० विधायिन्] ३ विधानकर्ता । २ व्यवस्थापक । ३ नियामक । दे० ‘विधायक’ (को०) ।

विधायिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. सस्थापिका । २ निर्मात्री (को०) ।

विधारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ संभालना । रोकना । २ वहन करना । ढोना । ३ वह जो अलग करे । पृथक्कर्ता (को०) ।

विधारा—सञ्ज्ञा पुं० [म० वृद्ध + दाह] एक प्रकार की लता जो दक्षिण भारत में बहुतायत से होती है ।

विशेष—इसका भाड़ बहुत बड़ा और इसकी शाखाएँ बहुत घनी होती हैं । इसकी डालियों पर गुलाब के से कांटे होते हैं । पत्ते तीन अंगुल लंबे अंडाकार और नोकदार होते हैं । डालियों के सिरे पर चमकदार पीले फूलों का गुच्छा होता है । वन्यक में इसे गरम, मधुर, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, धातुवर्धक और पुष्टिदायक माना है । उपदंश, प्रमेह, क्षय, वातरक्त आदि में इसे श्लेष्मिकी की भाँति व्यवहार में लाते हैं ।

पर्या०—जीर्णदार । वृद्धदार । वृद्धदारक । गर्भवृद्धि ।

विधि^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई कार्य करने की रीति । कार्यक्रम । प्रणाली । ढग । नियम । कथदा । जैसे—पूजा की विधि, यज्ञ की विधि । २ व्यवस्था । सगति । योजना । करीना । मेल या सिलसिला ।

मुहा०—विधि बैठना = (१) परस्पर अनुकूलता होना । मेल बैठना । मेल खाना । व्यवहार निभना । जैसे,—‘हमारी उनकी विधि नहीं बैठेगी । (२) मव बातों का ठीक होना । इच्छानुकूल व्यवस्था होना । जैसे,—फिर क्या है, तुम्हारी विधि बैठ गई ।

३ किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था । शास्त्रोक्त विधान ।

मुहा०—कुडली की विधि मिलना = कुडली में लिखी बात का पूरा होना । फलित ज्योतिष द्वारा बताई हुई बात का ठीक घटना ।

४ किसी शास्त्र या धर्मग्रंथ में किया हुआ कर्तव्यनिर्देश । कर्म के अनुष्ठान की आज्ञा या अनुमति । शास्त्र में इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे ।

विशेष—किसी काम को करने की आज्ञा को ‘विधि’ और न करने की आज्ञा को ‘निषेध’ कहते हैं । पूर्वमीमांसा में नियोग का नाम विधि है । अर्थात् जो वाक्य किसी इष्ट फल की प्राप्ति का उपाय बताकर उसे करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करे, वही विधि है । जैसे,—‘स्वर्ग चाहनेवाला यज्ञ करे’ । विधि दो प्रकार की कही गई है—प्रधान विधि और अग विधि । फल देनेवाली संपूर्ण क्रिया के आदेश करनेवाले वाक्य को ‘प्रधान विधि’ कहते हैं । जैसे,—‘जैसे

पूज की कामना हो, वह पुत्रेष्टि यज्ञ करे'। प्रधान क्रिया के अतर्गत होनेवाली छोटी छोटी क्रियाओं के निर्देश को 'अंग-विधि' कहते हैं। जैसे,—'चावल से यज्ञ करे, दधि का हवन करे, इत्यादि।

यौ०—विधि निषेध=किसी काम को करने और न करने की शास्त्रीय आज्ञा। उ०—विधিনিषेध मय कलिमल हरनी। —तुलसी (शब्द०)।

५ व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। जैसे,—यह काम करो या काम करना चाहिए। यह लिङ् लकार में होता है और इसके दो भेद हैं। एक विधिलिङ् दूसरा आशिषु लिङ्। ६ माहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध प्रिय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे—वर्षों काल के ही मेव मेव हैं। ७ आचार व्यवहार। चालढाल।

यौ०—गतिविधि=चेष्टा और कार्यवाई। जैसे,—उसकी गतिविधि पर ध्यान रखना।

८ भक्ति। प्रकार। किस्म। तरह। उ०—एहि विधि राम सर्वाह सभुभावा। —तुलसी (शब्द०)। ९ प्रयोग (को०)।

विधि^३—सज्ञा पुं० [सं०] १ सृष्टि का विधान करनेवाला। ब्रह्मा। उ० विधि कर्तव्य सब उलटे अट्टही। —तुलसी (शब्द०)। २ भाग्य। दैव (को०)। ३ विष्णु (को०)। ४ अग्नि (को०)। ५ समय (को०)। ६ हाथियों का खाद्य या चारा (को०)। ७ चिकित्सक। वैद्य (को०)। ८ कर्म (को०)। १० यज्ञ नियमों का उपदेशक ग्रन्थ (को०)।

विधिकर—वि०, सज्ञा पुं० [सं०] नौकर। दास। आशाकारी। सेवक (को०)।

विधिकृत्—वि० सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विधिकर'।

विधिघ्न—वि० [सं०] नियमों का उल्लंघन करनेवाला। विधि को न माननेवाला (को०)।

विधिज्ञ^१—वि० [सं०] १ विधि को जाननेवाला। शास्त्रोक्त विधान को जाननेवाला। २ रीति जाननेवाला।

विधिज्ञ^२—सज्ञा पुं० वह ब्राह्मण जो शास्त्रोक्त विधियों का पारंगत हो। शास्त्रवेत्ता। विद्वान् (को०)।

विधित्समान—वि० [सं०] करने या देने की इच्छा रखनेवाला। २ मतलबी।

विधित्सा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मपन करने या विधान करने की इच्छा। २ आयोजन (को०)।

विधित्सित^१—वि० [सं०] जिसे करने की इच्छा की गई हो (को०)।

विधित्सित^२—सज्ञा पुं० अभिप्राय। नीयत (को०)।

विधित्सु—वि० [सं०] करने की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विधिदर्शक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विधिदर्शी' (को०)।

विधिदर्शी—सज्ञा पुं० [सं०] विधिदर्शन्। १ यज्ञ में यह देखने के लिये नियुक्त पुरुष कि होता, आचार्य आदि ठीक ठीक विधि के अनुकूल कर्म कर रहे हैं या नहीं। २ सदस्य।

विधिदृष्ट—वि० [सं०] विधि के अनुकूल (को०)।

विधिदेशक—सज्ञा पुं० [सं०] १ सदस्य। २ 'विधिदर्शी'। २ अध्यापक। अर्थार्थ (को०)।

विधिवैध—सज्ञा पुं० [सं०] विधि या समावेश की विविधता। नियमों की भिन्नता (को०)।

विधिना—सज्ञा पुं० [सं०] विधि हि० + ना (प्रत्यय०) विधि। ब्रह्मा।

विधিনিषेध—सज्ञा पुं० [सं०] कर्णीय और अकर्णीय कर्म का निर्देश।

विधिपत्त^(१)—सज्ञा पुं० [सं०] विधि + पत्र, प्रा० विधि + पत्त विधि का पत्र। भाग्यलेख। उ०—दिय दरिद्र मगन बहू को मेटे विधिपत्त।—पृ० रा०, ६१:१७७।

विधिपाट—सज्ञा पुं० [सं०] मृदग के चार पलों में से एक वर्ण। चारो वर्ण ये हैं—पाट, त्रिधिपाट, कूटपाट और सटपाट।

विधिपुत्र—सज्ञा पुं० [सं०] विधि + पुत्र ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विधिपुर—सज्ञा पुं० [सं०] विधि + पुर ब्रह्मा का लोक, ब्रह्मलोक। उ०—स्वर्ग लोक महें वचन न देनी। विधिपुर गया प्राण निज लेखी।—रघुराज (शब्द०)।

विधिपूर्वक—अव्य० [सं०] निगम के अनुसार। 'विधिवत्' (को०)।

विधिप्रयोग—सज्ञा पुं० [सं०] विधि या नियम का प्रयोग (को०)।

विधिवोधित—वि० [सं०] शास्त्र विधि द्वारा बताया हुआ। शास्त्र समत।

विधियज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ जिसके करने की विधि हो। जैसे,—दर्शपौर्णमास।

विधियोग—सज्ञा पुं० [सं०] १ नियम का अनुसरण या पालन। २. भाग्य का प्रभाव (को०)।

विधिरानी^(१)—सज्ञा स्त्री० [सं०] विधि + हि० रानी। ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती। उ०—वदी बाणो वीण कर विधिरानी विख्यात।—रघुराज (शब्द०)।

विधिलोक—सज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मलोक। तत्पल्लव। २ शास्त्रीय विधानों का अभाव या न होना।

विधिलोप—सज्ञा पुं० [सं०] विधि या नियमों का तिरस्कार (को०)।

विधिवत्—क्रि० वि० [सं०] १ विधिपूर्वक। विधि में। पद्धति के अनुसार। कायदे के मुताबिक। २. जैसा चाहिए। उचित रूप से। यथायोग्य।

विधिवधू—सज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवशात्—अव्य० [सं०] भाग्यतः। भाग्य में। दैवयोग से।

विधिवाहन—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा की सवारी हंस।

विधिविपर्यय—सज्ञा पुं० [सं०] भाग्य का फेर। दुर्भाग्य (को०)।

विधिविहित—वि० [सं०] शास्त्र के अनुकूल। नियमानुकूल। (को०)।

विधिसेध—सज्ञा पुं० [सं०] विधि और निषेध।

विधिहीन—वि० [सं०] नियमशून्य। अशास्त्रीय। अविहित (को०)।

विधुत^(१)—सज्ञा पुं० [सं०] विधन्तुद दे० 'विधुतुद'।

विधुंतुद—सज्ञा पुं० [सं विधुंतुद] चंद्रमा को दुख देनेवाला, राहु ।
उ०—ज्ञानराकेस ग्रासन विधुंतुद चलन काम करि मत्त हरि ।—
तुलसी (शब्द०) ।

विधुसन^५—क्रि० सं० [सं विध्वंसन] दे० 'विध्वंसना' । उ०— पंड
कोपियौ किना धार पण, वीर भद्र दिख ज्याग विधुंसण —रा०
रू०, पृ० ६५ ।

विधुसना^५—क्रि० [सं विध्वमप] विध्वंस करना । नाश करना ।
उ०—ज्याग विधुंसे जावै ।—रघु० रू०, पृ० ६४ ।

विधु—सज्ञा पुं० [सं] १. चंद्रमा । २. वायु । ३. कपूर । ४. ब्रह्मा ।
५. विष्णु । ६. एक राक्षस का नाम । ७. आयुध । ८.
जलस्नान । ९. पापक्षालन । पाप छुड़ाना । प्रायश्चित्तपरक
आहुति । १०. शिव (को०) । ११. युद्ध । लड़ाई (को०) । १२.
काल । समय (को०) । १३. एक राजा का नाम (को०) ।

विधुकात—सज्ञा पुं० [सं विधुकात] सगीत का एक ताल ।
विधुक्षय—सज्ञा पुं० [सं] चंद्रमा की कलाओं का नाश । अक्षित पक्ष ।
कृष्ण पक्ष (को०) ।

विधुत—वि० [सं] १. त्यक्त । २. कपित । दे० 'विधूत' (को०) ।
विधुति—सज्ञा स्त्री० [सं] सक्षोभ । कपन । विधूति (को०) ।
विधुदार—सज्ञा पुं० [सं विधु+दार] चंद्रमा की स्त्री । रोहिणी ।
उ०—तारा किधो विधुदार किधो धृतधार सी पावक है
परिरभी ।—मन्नालाल (शब्द०) ।

विधुदिन—सज्ञा पुं० [सं] चंद्रवार । सोमवार (को०) ।
विधुनन—सज्ञा पुं० [सं] दे० 'विधूनन' (को०) ।
विधुपजर—सज्ञा पुं० [सं विधुपजर] खड्ग । खांडा ।
विधुपरिध्वंस—सज्ञा पुं० [सं] चंद्रग्रहण (को०) ।
विधुपिंजर—सज्ञा पुं० [सं] विधु+पिंजर] खड्ग । खांडा (को०) ।
विधुप्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं] १. चंद्रमा की स्त्री, रोहिणी । २.
कुमुदिनी । कोई ।

विधुवधु—सज्ञा पुं० [सं विधुवधु] कुमुद का फूल ।
विधुवधुर^५—सज्ञा पुं० [सं विधु+वधुर (= प्रिय)] कुमुद । उ०—
विधुवधुर मुख भा बडो वारिज नैन प्रभाति ।—रामसहाय
(शब्द०) ।

विधुवैनी^५—सज्ञा स्त्री० [सं विधु+वदन, प्रा० वयन] चंद्रमुखी ।
सुदरी स्त्री । उ०—सग लिए विधुवैनी वधू रति हू जेहि रचक
रूप दियो है ।—तुलसी (शब्द०) ।

विधुमडल—सज्ञा पुं० [सं विधुमडल] चंद्रमा की परिधि या
परिवेश । चंद्रमडल (को०) ।

विधुमणि—सज्ञा पुं० [सं] चंद्रकांत मणि (को०) ।
विधुमास—सज्ञा पुं० [सं] चांद्रमास । महीने की वह गणना जो
कृष्ण प्रतिपदा से लेकर शुक्ल पूर्णिमा तक (१ मास) मानी
जाती है ।

विधुमुखी—सज्ञा स्त्री० [सं] दे० 'विधुवदनी' ।
हि० श० ६-१६

विधुर^१—वि० [सं] [वि० स्त्री० विधुरा] १. दुखी । २. ध्वराया हुआ ।
३. डरा हुआ । ४. विकल । व्याकुल । जैसे—विह्व विधुर ।
५. असमर्थ । प्रशक्त । ६. परित्यक्त । शून्य । वंचित । ७.
विमूढ़ । ८. विरोधी (को०) । ९. एकाकी । अकेला । १०.
(गाड़ी) जिसमें धुरा न हो (को०) ।

विधुर^२—सज्ञा पुं० [सं] १. कण्ट । दुख । २. वियोग । जुदाई । ३.
अलग होने की क्रिया या भाव । ४. कैवल्य । मोक्ष । ५. शत्रु ।
दुश्मन । बैरी । ६. वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो (को०) ।

विधुरा^१—वि० स्त्री० [सं] १. कातर । व्याकुल । पीड़ित । २.
विधवा । पतिहीन ।

विधुरा^२—सज्ञा स्त्री० १. कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रंथि जिसके
पीड़ित या खराब होने से प्राणी बहुरा हो जाता है । ३.
दही की एक प्रकार की गाढ़ी लस्सी जिसे श्रीखंड भी कहते हैं ।
रसाला ।

विधुरित—वि० [सं] १. विवर्ण । मदप्रभ । २. कपित (को०) ।

विधुवदनी—सज्ञा स्त्री० [सं] चंद्रमा के समान मुखवाली स्त्री । सुदरी
स्त्री । उ०—विधुवदनी सब भाँति मँवारी । सोह न बसन बिना
वर नारी ।—तुलसी (शब्द०) ।

विधुवन—सज्ञा पुं० [सं] कपन । हिलना (को०) ।

विधूत—वि० [सं] १. कपित । काँपता हुआ । २. हिलता हुआ ।
डोलता हुआ । ३. त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । त्यक्त । ४. दूर
किया हुआ । हटाया हुआ । ५. निकाला हुआ । बाहर किया
हुआ ।

विधूतकल्मष—वि० [सं] दे० 'विधूतपाप्मा' (को०) ।

विधूतकेश—वि० [सं] जिसके बाल लहरा रहे हो (को०) ।

विधूतनिद्रा—वि० [सं] सोते से जगाया हुआ (को०) ।

विधूतपक्ष—वि० [सं] जिसने अपने पखने हिलाए हो (को०) ।

विधूतपाप्मा—वि० [सं विधूतपाप्मन्] पाप से मुक्त । पापों से छुट-
कारा पाया हुआ (को०) ।

विधूतवधन—सज्ञा [सं विधूतवधन] जिसने वधन दूर कर दिया हो ।
वधनमुक्त ।

विधूतवेश—वि० [सं] जिसके वस्त्र लहरा या झिल रहे हो (को०) ।

विधूति—सज्ञा स्त्री० [सं] थरथरी । काँपकाँपी । विक्षोभ (को०) ।

विधूनन^१—पुं० [सं] कपन । काँपना । विक्षोभ ।

विधूनन^२—वि० १. प्रतिघाती । विरोधक । विकर्षणशील । उ०—रस
वासल्य करन अनुभव नित । विह्व विधूनन हार मुख नाम ।—
भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४८१ ।

विधूनित—वि० [सं] १. क्षुब्ध । काँपित । उ०—हैं विह्व विधूनित
होते, हैं छिपता पुलिन दिखाता । पत्तो पर बूँद पतन का, है टप
टप नाद सुनाता ।—पारिजात, पृ० १२५ । २. उत्पीड़ित ।

विधूम—वि० [सं] धूमरहित । बिना धुएँ का । उ०—जारि वारि कै
विधूम वारिधि बुताई लूम ।—तुलसी (शब्द०) ।

विधूम्र—वि० [सं] धूमिल या मटमैले रंग का । धूसर वरण ।

विधूवन—सज्ञा पुं० [सं] कपन । काँपना ।

विधृत^१—वि० [स०] १ धारण या ग्रहण किया हुआ । २ पृथक् वा वियुक्त किया हुआ । ३ उठाया हुआ । ४ अधिकृत । स्वायत्ती-कृत । अपनाया हुआ । ५, अवरुद्ध । ६ समर्थित । ७ रखा हुआ । रक्षित [को०] ।

विधृत^२—सज्ञा पुं० १. असतोष । २ आदेश की अवहेलना । आज्ञा न मानना [को०] ।

विधृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रथक्ता । अलगत्व । विभाजन । २ व्यवस्था । नियमन । उ०—मत्ता और विधृति ये दोनों प्रतिष्ठा के रूप हैं ।—पोद्दार अभि० ग०, पृ० ६२२ ।

विधेय—वि० [स०] १ विधान के योग्य । जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो । जिसका करना उचित हो । कर्तव्य । २ जिसका विधान हो या होनेवाला हो । जो किया जाय या किया जाने-वाला हो । ३ जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय । जिसके करने का नियम या विधि हो । ४ वचन या आज्ञा के वशीभूत । अधीन । ५ वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के सबध में कुछ कहा जाय । जैसे,—‘गोपाल सज्जन है’ इस वाक्य में ‘सज्जन है’ विधेय है, क्योंकि वह गोपाल के सबध में कुछ विधान करता है, अर्थात् उसकी कोई विशेषता बताता है ।

विशेष—न्याय और व्याकरण में वाक्य के दो मुख्य भाग माने जाते हैं—उद्देश्य और विधेय । जिसके संबंध में कुछ कहा जाता है (अर्थात् कर्ता), वह उद्देश्य कहलाता है, और जो कुछ कहा जाता है, वह ‘विधेय’ कहलाता है ।

६ आश्रित । निर्भर (को०) । ७ प्राप्य (को०) । ८ प्रज्वलित करने योग्य (को०) ।

विधेय^२—सज्ञा पुं० १ वह जो किया जाना चाहिए । कर्तव्य कर्म । प्रतिज्ञा या प्रस्थापन की उक्ति । ३ सेवक । भृत्य [को०] ।

विधेयक—सज्ञा पुं० [स०] अधिपत्र । विधान लिपि । अधिनियम का प्रस्तावित एवं प्राथमिक रूप । (अं० विल) उ०—गवर्मेट आफ इंडिया विधेयक (विल) पार्लमेट में प्रेषित किया गया ।—भारतीय०, पृ० २ ।

विधेयज्ञ—वि० [स०] अपने कर्तव्य का ज्ञान रखनेवाला [को०] ।

विधेयता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विधि की योग्यता । विधान का औचित्य । २ अधीनता । वश्यता ।

विधेयत्व—सज्ञा पुं० [स०] विधेयता ।

विधेयवर्ती—वि० [स०] विधेयवर्तिन् दूसरे की आज्ञा में रहनेवाला । अधीन । वश्य [को०] ।

विधेयात्मा^१—सज्ञा पुं० [स०] विधेयात्मन् [विष्णु] [को०] ।

विधेयात्मा^२—वि० मयतात्मा । आत्मा को वश में रखनेवाला [को०] ।

विधेयाविमर्ष—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य में एक वाक्यदोष जो विधेय अश को अधिधान स्थान प्राप्त होने पर होता है । जो बात प्रधानत कहनी है, उसका वाक्यरचना के बीच दबा रहना ।

विशेष—प्रत्येक वाक्य में विधेय की प्रधानता के साथ निर्देश होना चाहिए । ऐसा न होना दोष है । ‘विधेय’ शब्द के समास

के बीच पड़ जाने से या विशेषण रूप में आ जाने पर प्रायः यह दोष होता है । जैसे,—‘हिसी वीर ने खिन्न होकर कहा—‘मेरी इन व्यर्थ फूनी हई बाहों से क्या’ । इस वाक्य में कहने-वाले का अभिप्राय तो यह है मेरी बाहें व्यर्थ फूली हैं, पर ‘फूनी हैं’ के विशेषण रूप में आ जाने से विधेय की प्रधानता नहीं स्पष्ट होती । दूसरा उदाहरण—‘शुक्र रामानुज के सामने राक्षस गया ठहरेगा ।’ यहाँ कहना चाहिए था कि—‘मैं राम का अनुज हूँ’ तब राम के संबंध में लक्ष्मण की विशेषता प्रकट होती ।

विधीत—वि० [म०] धुला हुआ । धातुर निर्मित किया हुआ । उ०—कठनम मृत्कामाला इन मज्जुन गुरसरि धारा । होना है विधीत पग पावन पूत पयोनिधि द्वारा ।—पारिजात, पृ० १० ।

विध्यापन—सज्ञा पुं० [म०] विकीर्ण करने या बिखेरनेवाला । तितर तितर करनेवाला [को०] ।

विध्य - वि० [म०] १ विंघने योग्य । छिदने योग्य । २ जिसे वेधना हो । जो छेदा जानवाला हो ।

विध्यपराध—सज्ञा पुं० [म०] विधि या नियम की अवहेलना [को०] ।

विध्यपाथय—सज्ञा पुं० [म०] विधि के अनुकूल आचरण [को०] ।

विध्यलकार—सज्ञा पुं० [स०] विध्यलकार एक काव्यालकार जिसमें किसी मिथ्या बात का पुनर्विधान किया जाता है । ३० ‘विधि’—६ ।

विध्यलक्रिया—सज्ञा स्त्री० [म०] ३० ‘विध्यलकार’ ।

विध्यभास—सज्ञा पुं० [म०] १. एक अर्थालकार जिसमें घोर अनिष्ट की सम्भावना दिताते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है । जैसे,—विदेश जाते हुए नायक के प्रति नायिका का यह कथन ‘जाते हो तो जाओ । जहाँ जाते हो, मैं भी वहाँ जन्म लेकर पहुँचूँगी’ ।

विध्रु^१—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रध्न ?] सूर्य । उ०—विध्र, विरोचन, विभावसु, मार्तण्ड, त्रिभुवन ।—नट० ग्र०, पृ० ११२ ।

विध्र^२—वि० सूर्य की तरह निर्मल । निर्दोष [को०] ।

विध्वंस—सज्ञा पुं० [स०] १ विनाश । नाश । वगवादी । २. घृणा । ३ अनादर । ४ बर । ५ वधनस्थ ।

विध्वंसक—सज्ञा पुं० [स०] १ नाश करनेवाला । २ छिछोरा । लपट [को०] । ३ शत्रुओं के समुद्रों पोतों को नष्ट करनेवाला पोत या अस्त्रशस्त्र (आधुनिक) ।

विध्वंसन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विध्वंसित, विध्वस्त] विध्वंस करना । नाश करना । बरबाद करना ।

विध्वंसात्मक—वि० [स०] विध्वंस या विनाश करनेवाला । विनाशक । संहारक । उ०—यह समय भारत में ईसाइयत के प्रचार और (डैरोजीयनिज्म ऐसे) अति विध्वंसात्मक मतों के प्रसार का था ।—हि० का० प्र०, पृ० ३४ ।

विध्वंसित—वि० [स०] विध्वंस किया हुआ । नष्ट किया हुआ । बरबाद किया हुआ ।

विध्वंसी—सञ्ज्ञा पु० [स० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] १ नाश-
कारी । सतीत्वनाश करनेवाला । २ वधवाद करने या होने-
वाला । ३ दुश्मन । शत्रु । अरि (को०) ।

विध्वस्त—वि० [स०] १ नष्ट किया हुआ । वधवाद किया हुआ ।
२. इधर उधर विकीर्ण या छिनराया हुआ (को०) । ३. अस्पष्ट ।
धुँधला (को०) । ४ ग्रहाग्रसन (को०) ।

विनशी—वि० [स० विनशिन्] नष्ट होनेवाला । लुप्त होनेवाला (को०) ।

विन^१—सर्व० [हि० वा (=उस)] प्रथम पुष्प बहुवचन सर्वनाम का
वह रूप जो उसे कारकविज्ञ लगने के पहले प्राप्त होता है ।
जैसे,—विन ने, विन को, इत्यादि ।

विन^२—अव्य० [स० विना] दे० 'विना' ।

विनश्च(उ)—सञ्ज्ञा पु० [स० विनश्च, प्रा० विणश्च] दे० 'विनय' । उ०—
तासु तनश्च नश्च विनश्च गुन गरुश्च राए गएनेस । जे पट्टाइश्च
दसओ दिस कित्ति कुमुम सदेश ।—कीर्ति०, पृ० १० ।

विनक्क(उ)—सञ्ज्ञा पु० [स० वणिक, (स्वरव्यत्यय से) विणक्] दे०
'वणिक' । उ०—गुरु पडन गुरु विदुष लच्छि पडन विनक्क घर ।
—पृ० रा०, ५५, ६३ ।

विनग्न—वि० [स०] निर्वस्त्र । नगा (को०) ।

विनटन—वि० [स०] इधर उधर घूमना । चक्रमण (को०) ।

विनत^१—वि० [स०] १ नीचे की ओर प्रवृत्त । झुका हुआ । २ टेढ़ा
पड़ा हुआ । वक्र । ३ सकुचित । सिकुड़ा हुआ । ४ विनीत ।
नम्र । ५. शिष्ट । शिष्टित । ६. अवसन्न । ७ हतोत्साह ।
८ खिन्न (को०) ।

विनत^२—सञ्ज्ञा पु० १ सुग्रीव की सेना का एक वदर । २ शिव ।
महादेव । ३. एक प्रकार की चीटी (को०) । ४ सुद्युम्न का एक
पुत्र (को०) । ५ व्याकरण में स् का प् या न का ए हाना ।
दे० विनाम ।

विनतक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम ।

विनतडी(उ)†—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विनत + हि० डी (प्रत्यय)] दे०
'विनती' । उ०—स्वामी तमो हौं सग न मेल्हो वीनतडी कहैस ।
—दादू (शब्द०) ।

विनता^१—वि० स्त्री० [स०] कुवडी या खज (स्त्री) ।

विनता^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ दत्त प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की
स्त्री और गरुड की माता थी ।

यौ०—विनतातनय, विनतातमज, विनतातदन, विनतासुत = दे०
'विनतासूनु' । २ एक प्रकार का भयानक फोडा जो प्रमेह या
बहुमूत्र के रोगियों को होता है ।

विशेष—जिस स्थान पर यह फाड़ा होता है, वह स्थान मुरदा
हो जाने के कारण नीला पड़ जाता है । सुश्रुत आदि प्राचीन
ग्रंथों में प्रमेह के अतर्गत इसकी चिकित्सा लिखी है । यह प्रायः
घातक होता है । इसमें श्रग बहुत तेजी के साथ सड़ता चला
जाता है । यदि बढ़ने के पहले ही वह स्थान काटकर अलग
कर दिया जाय, तो रोगी बच सकता है ।

३. महाभारत के अनुसार एक राज्ञसी जो व्याधि लाती है ।
४. एक प्रकार की टोकरी वा डलिया (को०) । ५. रासायन

के अनुसार एक राज्ञसी का नाम जिसे रावण ने सीता को
ममभाने के लिये नियुक्त किया था ।

विनतातनया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विनता की कन्या जिसका नाम
सुमति था । [को०]

विनतासूनु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अरुण । २ गरुड ।

विनति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. झुकाव । २ नम्रता । विनय । शिष्टता ।
सुशीलता । ३. अनुनय । प्रार्थना । विनती । ४ निवारण ।
रोक । ५. दमन । शासन । दंड । ६ विनियोग ।

विनतिय(उ)—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विनति] दे० 'विनति' । उ०—अतुल तेज
प्रथिराज करव विनतिय हितकारिय ।—प० रामो, पृ० ४३ ।

विनती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विनति] दे० 'विनति' ।

विनतोदर—वि० [स०] उदर के पाम में झुका हुआ (को०) ।

विनद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का पेड़ । विन्याक वृक्ष । २.
कोलाहल । ध्वनि । शोर (को०) ।

विनदी—वि० [स०] कोलाहल करनेवाला ।

विनद्ध—वि० [स०] १ बंधा हुआ । नंदा हुआ । २ जिसका वधन दूर
किया गया हो । मुक्त ।

विनमन—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विनत] १ नम्र करना । झुकाना । २.
लचाना । लपाना ।

विनमित—वि० [स०] १ लचाया हुआ । नम्र । २ झुका हुआ (को०) ।

विनम्र—वि० [स०] १ झुका हुआ । नम्र । २ विनीत । सुशील ।
३ अवसन्न (को०) ।

विनम्र^२—सञ्ज्ञा पु० तगर का फूल ।

विनम्रक—सञ्ज्ञा पु० [स०] तगर वृक्ष का फूल (को०) ।

विनय^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवहार में दीनता या अधीनता का
भाव । नम्रता । प्रणति । आजिजी । २ शिक्षा । नैतिक शिक्षण ।
मार्गदर्शन । ३ प्रार्थना । विनती । अनुनय । ४ शासन ।
तन्त्रीह । (स्मृति) । ५ नीति । उ०—नमत सर्व करि विनय,
विनय मत सर्व बखानत ।—गोपाल (शब्द०) ।

विनय^२—सञ्ज्ञा पु० १ वणिक । बनिया । २ बला । बरियारा । ३.
जितेंद्रिय । सयमी । ४ विनयपिटक (बौद्ध०) । उ०—'विनय
जिसमें पाच ग्रंथ हैं ।'—हिंदु० सभ्यता, पृ० २४६ ।

विनय^३—वि० १ फेंका हुआ । क्षिप्त । २. गुप्त । छिपाया हुआ । ३
दुर्वृत्त । अशिष्टाचारी । ४ अलग अलग करनेवाला । पृथक्कर्ता
(को०) ।

विनयकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० विनयकर्मन्] शिक्षण । मार्गदर्शन (को०) ।

विनयग्राही—वि० [स० विनयग्राहिन्] अनुशासन के नियमों का
पालक । आज्ञाकारी (को०) ।

विनयवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पुरोहित । २ अव्यक्त । उ०—कम से
कम निश्चित तथा अनिवाय सख्या को 'गणपूर्ति' (कोरम)
कहा जाता था और इसमें अव्यक्त (विनयवर) को गणना नहीं
होती थी ।—आ० भा०, पृ० १६१ ।

विनयन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिक्षा । अनुशासन । २. दूरीकरण ।
हटाना । दूर करना । उ०—खीर भरी वेदियाँ भयंकर

उनमे ज्वाला, विनयन का उपचार तुम्ही से खीच निकाला।

—कामायनी, पृ० १६६।

विनयपिटक—संज्ञा पु० [म०] आदि बौद्ध शास्त्रों में से एक।

विशेष—आदि बौद्ध शास्त्र, जो पाली भाषा में है, तीन भागों में विभक्त हैं—विनयपिटक, सूत्रपिटक और अभिधर्मपिटक। ये तीनों 'त्रिपिटक' नाम से प्रसिद्ध हैं। बुद्ध देव ने अपनी शिष्यमण्डली को भिक्षुधर्म के जो उपदेश दिए थे, वे ही विनयपिटक में मगूहीन हैं। इनके मकलन के समय में यह कथा है कि बुद्ध भगवान् तथा सारिपुत्र मौद्गल्यायन आदि प्रधान प्रधान शिष्यों के निर्वाणलाभ करने पर बौद्ध शास्त्र के लुप्त होने का भय हुआ। इसमें महावश्यप ने अजातशत्रु के राजत्वकाल में राजगृह के पास वैभार पर्वत की सप्तपर्णी नाम की गुफा में पाँच सौ स्थावरा को आमंत्रित करके एक बड़ी सभा की, जिसमें उपाल ने बुद्ध द्वारा उपदिष्ट 'विनय' का प्रकाश किया। इसके पीछे एक बार। फिर गडबड उपस्थित होने पर वैशाली व वलिकाराम में सभा हुई, जिसमें 'विनय' का फिर सग्रह हुआ। इस प्रकार कई सकलनों के उपरांत अशोक के समय में 'विनय' पूर्ण रूप से सकलित हुआ।

विनयप्रमाथी—वि० [सं० विनयप्रमाथिन्] शिष्या या अनुशासन न माननेवाला [को०]।

विनयभाक्—वि० [सं० विनयभाज्] विनयी। विनम्र [को०]।

विनययोगी—वि० [सं० विनययोगिन्] दे० 'विनयभाक्'।

विनयवाक्—वि० [सं० विनयवाच्] मधुरभाषी। नम्रता से बात करनेवाला [को०]।

विनयवान्—वि० [सं० विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमें नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील—वि० [सं०] विनययुक्त। नम्र। सुशील। शिष्ट।

विनयस्थ—वि० [सं०] विनयशील [को०]।

विनयस्थिति स्थापक—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल में विनय वा वाणिज्य विभाग की देख रेख करनेवाला अधिकारी। उ०—प्राचीन शासन के अधिकारियों में कई पद थे जैसे, 'कुमारामात्य', 'विनयस्थिति स्थापक' आदि।—आ० भा०, पृ० ४०२।

विनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाट्यालक। बरियारा।

विनया^२—संज्ञा स्त्री० [सं० विनय] विनय। नम्रता। प्रार्थना। उ०—विना विनया नृप बद्ध कराय।—प० रासो, पृ० ४३।

विनयावनत—वि० [सं०] विनय या शिष्टता से नम्र। नम्रता से झुका हुआ [को०]।

विनयासुर—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल में राजसभा का एक कर्मचारी जो आगतुको क आगमन को सूचित करता, उनकी देखरेख करता एवं उन्हें राजसभा में ले जाता था।—आ० भा०, पृ० ४४४।

विनयी—वि० [म० विनयिन्] विनययुक्त। नम्र।

विनर्दन—संज्ञा पु० [ए०] गरजन। चिंगाड़। शोरगुल [को०]।

विनयोक्ति—संज्ञा पु० [सं०] विनयभरी उक्ति या कथन [को०]।

विनर्दी—वि० [सं० विनर्दिन्] गरजनेवाला।

विनवना^१—क्रि० प्र०, क्रि० सं० [म० विनयन] दे० 'विनवना'।

विनशन—संज्ञा पु० [म०] [वि० विनष्ट, विनश्यत्] १ नष्ट होना। नाश। परवादी। हानि। लोप। क्षय। २. एक न्याय का नाम जहाँ सम्प्रती नदी रेत में डुल हुआ है [को०]।

विनशना^२—क्रि० प्र० [सं० विनशन] दे० 'विनमना'।

विनशनी^३—क्रि० प्र० [सं० विनशन] दे० 'विनमना'।

विनश्वर—वि० [म०] मग्न दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। नष्ट होनेवाला। ध्वस्तशील। अचिरस्थायी। अनिश्चय, जैसे,—गरीर विनश्वर है।

विनश्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनिश्चयता। अचिरस्थायित्व।

विनश्वरत्व—संज्ञा पु० [म०] दे० 'विनश्वरता' [को०]।

विनष्ट—वि० [म०] १ नाश को प्राप्त। जो बरबाद हो गया हो। जो न रह गया हो। जिसका अस्तित्व मिट गया हो। ध्वस्त। २ मृत। मरा हुआ। ३ जो बिगड़ या खराब हो गया हो। जो व्यवहार के योग्य न रह गया हो। जो निष्क्राम हो गया हो। बिगड़ा हुआ। ४ जिसका आचरण बिगड़ गया हो। भ्रष्ट। पतित। ५. भोक्तृ। क्षुप्त। अलाप।

क्रि० प्र०—करना।—हाना।

यौ०—विनष्टचक्षु=जिनके चक्षु देव न मर्के। विनष्टदृष्टि=दे० 'विनष्टचक्षु'। विनष्टधर्म=(१) धर्मभ्रष्ट व्यक्ति। (२) देश जिसका विधान भ्रष्ट हो।

विनष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाश। २ लोप। ३ पतन।

विनष्टोपजीवी—वि० [सं० विनष्टोपजीविन्] शव या सड़ी गली वस्तुओं का साकर जीवन धारण करनेवाला [को०]।

विनस—वि० [म०] जिसे नामिका न हो। विना नाक का। नकटा।

विनसना^१—क्रि० प्र० [सं० विनशन] नष्ट होना। न रहना। क्षुप्त होना। उ०—उपजं विनसं ज्ञान जिमि पाइ नुसण कुसग।—तुलसी (शब्द०)।

विनसाना^२—क्रि० प्र० [हि० विनसना का सक० रूप] १ वस्त्र या नष्ट करना। २ बिगाड़ना।

विनसाना^३—क्रि० प्र० [सं० विनशन] दे० 'विनमना'।

विना—अव्य० [सं०] १. अभाव में। न रहने को अवस्था में। बर्गर। जैसे—तुम्हारे विना यह कान न बनेगा। २. छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे—तुम्हारे विना और कौन यह काम कर सकता है।

विनाकृत—वि० [सं०] १. अलग किया हुआ। २. परित्यक्त। निर्जन। निभृत। एकांत [को०]।

विनाडि, विनाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विनाही'।

विनाडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक घड़ी का साठवाँ भाग। २४ सेकेंड का समय। पल।

विनाती^१—संज्ञा स्त्री० [सं० विनती] विनती। विनय। उ०—ए गोसाइँ, सुनु मोरि विनाती।—जायसी (शब्द०)।

विनाथ—वि० [सं०] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ। उ०—नाथ नाथ विनाथ नाथ अनाथ नाथ सुसिद्ध।—केशव (शब्द०)।

विनादित—वि० [स०] शब्दित या वनित [को०] ।

विनादी—वि० [स०] विनादिन् नाद करनेवाला । शब्द करनेवाला । शोर करनेवाला [को०] ।

विनान^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] विज्ञान, प्रा० विनायण] १ विज्ञान । सद्बोध । २ मया । मति । बुद्धि । उ०—सुकी वहै सुकसभरौ, कही कथा प्रति प्रान । पृथु भोरा भीमग पट्ट, किम हुअ बर विनान ।—पृ० रा०, ५।१ ।

विनाभव—सञ्ज्ञा पु० [स०] पृथक्ता । पार्थक्य । अलगव [को०] ।

विनाभाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० विनाभव ।

विनाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ भुकाव । टेढ़ापन २ भावप्रकाश के अनुसार किसी पीड़ा द्वारा शरीर का भुक्त जाना । ३. व्याकरण में सू का प् अथवा च का ए होना [को०] ।

विनयित—वि० [स०] नम्र किया हुआ । भुकाया हुआ [को०] ।

विनायक—सञ्ज्ञा पु० [स०] गणों के नायक, गणेश । २ गरुड । ३. विघ्न । बाधा । उ०—लसत विनायक केतु विनायक नसत निरखि रथ ।—गोपाल (शब्द०) । ४ गुरु । ५ देवी का एक स्थान । ६ बुद्धदेव । ७ नेता । नायक [को०] । ८ वह जा (विघ्न) दूर करता हो [को०] ।

विनायक^२—वि० १ ले जानेवाला । २. हटानेवाला । दूर करनेवाला । ३. विना नायक का । अनाय [को०] ।

विनायककेतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] गरुडध्वज । श्रीकृष्ण । उ०—लसत विनायककेतु विनायक नसत निरखि रथ ।—गोपाल (शब्द०) ।

विनायक चतुर्थी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] माघ महीने की शुक्ला चतुर्थी । माघ सुदी चौथ । गणेश चतुर्थी ।

विशेष—इस दिन गणेश का पूजन और व्रत होता है ।

विनायिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. विनायक की पत्नी । २. गरुड की पत्नी [को०] ।

विनारुहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'त्रिपर्णिका' [को०] ।

विनाल—वि० [स०] नालरहित । विना डठल का [को०] ।

विनाश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अभाव हो जाना । अस्तित्व का न रह जाना । न रहना । नाश । मिटना । ध्वंस । बरबादी । २. लोप । ३. अदर्शन । ३ बिगड़ जाने का भाव । खराब हो जाना । चौपट हो जाना । खराबी । ४ बुरी दशा । तबाही । ५ हानि । नुकसान ।

विनाशक—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विनाश करनेवाला । क्षय करनेवाला । २ बिगाड़नेवाला । खराब करनेवाला । घातक ।

विनाशधर्मा—वि० [स०] विनाशधर्मन् नश्वर । नाशवान् [को०] ।

विनाशधर्मी—वि० [स०] विनाशधर्मिन् दे० 'विनाशधर्मा' [को०] ।

विनाशन^३—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १ नष्ट करना । ध्वस्त करना । बरबाद करना । २ सहार करना । बंध करना । उ०—दससीस विनाशन बीस भुजा ।—तुलसी (शब्द०) । ३ खराब करना । बिगाड़ना । ४ एक असुर जो काल का पुत्र था ।

विनाशन^४—वि० नाशक । विध्वंसक [को०] ।

विनाशयिता—वि० सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाशयितृ विनाश करनेवाला । नाश करनेवाला [को०] ।

विनाशात—सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाशान्त मरण । मृत्यु [को०] ।

विनाशसम्भव—सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाशसम्भव विनाश का निदान या प्रधान कारण [को०] ।

विनाशहेतु—सञ्ज्ञा वि० [स०] विनाश का कारण या हेतु ।

विनाशित—वि० [स०] १ नष्ट किया हुआ । ध्वस्त किया हुआ । २ मारा हुआ । ३ बिगाड़ा हुआ । खराब किया हुआ ।

विनाशी—वि० [स०] विनाशिन् [वि० स्त्री० विनाशनी] १ नष्ट करनेवाला । ध्वस्त करनेवाला । बरबाद करनेवाला । २ बंध करनेवाला । मारनेवाला । ३ बिगाड़नेवाला । खराब करनेवाला ।

विनाशो-मुख—वि० [स०] १. विनाश की ओर उन्मुख या प्रवृत्त । जिसका शीघ्र नाश होनेवाला हो । २ पारपक्व [को०] ।

विनाश्य—वि० [स०] विनाश के योग्य ।

विनास^१—वि० [स०] नासारहित । विना नाक का [को०] ।

विनास^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाश दे० 'विनाश' ।

विनासक^३—वि० [स०] विना नाक का । नकटा ।

विनासक^४—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाशक दे० 'विनाशक' ।

विनासन^५—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाशन दे० 'विनाशन' ।

विनासना^६—क्रि० स० [स०] विनाशन १ नष्ट करना । ध्वस्त करना । बरबाद करना । न रहने देना । २ सहार करना । बंध करना । ३. खराब करना । बिगाड़ना ।

विनासना^७—क्रि० प्र० नष्ट होना । बरबाद होना । खराब होना ।

विनासिक—वि० [स०] विना नाक का । नकटा [को०] ।

विनासिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक विषयुक्त कीड़ी [को०] ।

विनाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वीनाह' [को०] ।

विनिद—वि० [स०] विनिन्द १ हँसोड़ । २ बढ जानेवाला [को०] ।

विनिदक—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] विनिन्दक १. अत्यंत निंदा करनेवाला । २. आगे बढ जानेवाला ।

विनिदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विनिन्दा अतिशय निंदा । बहुत बुराई ।

विनिदित—वि० [स०] विनिन्दित जिसकी बहुत निंदा या बुराई हुई हो । लाछित ।

विनि सरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] निकलना । बहिर्गमन । बाहर जाना [को०] ।

विनि सृत—वि० [स०] १. पलायित । भागा हुआ । २. निकला हुआ । बहिर्गत । जो बाहर हुआ हो ।

विनि सृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बाहर निकलना । विनि मरण । पलायन [को०] ।

विनि सृष्ट—वि० [स०] निक्षिप्त । फँका हुआ [को०] ।

विनिकषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] छीलने की क्रिया । खुचना [को०] ।

विनिकार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. नुष्टे । क्षति । हानि । २. अपराध [को०] ।

विनिकीर्ण—वि० [स०] १ बिखेरा हुआ । छितराया हुआ । स्तस्ततः क्षिप्त । २. भरा हुआ । ढँका हुआ [को०] ।

विनिर्कृत—वि० [स०] क्षति पहुँचाया हुआ। जिसका तिरस्कार हुआ हो।
 विनिर्कृतन—पञ्चा पु० [स०] १ वह जो क'टता या निरुत्पन्न करता हो। २ काटना। निरुत्पन्न। टुकड़े टुकड़े करना [को०]।
 विनिर्कृत—वि० [स०] काटा हुआ। निरुत्पन्न [को०]।
 विनिकेत—वि० [स०] निकेतन। गृहहीन। बेघर का।
 विनिलोचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] सिकोचना। सकोचन। जैसे,—भ्रूविनिलोचन [को०]।
 विनिक्षिप्त—वि० [स०] १, नीचे गिराया या फेंका हुआ। २ किमी-मे या नीचे का ओर रखा हुआ [को०]।
 विनिक्षेप—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ उछालना। फेंकना। २ अलगाव। ३ प्रेषण [को०]।
 विनिगड—वि० [स० विनिगड] जिसके पैरों में वेड़ी न हो। निगड-रहित [को०]।
 विनिगमक—वि० [स०] दो पक्षों में से किसी एक पक्ष को सिद्ध करनेवाला।
 विनिगमना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दो परस्पर विरुद्ध पक्षों में से किसी एक पक्ष का युक्ति और प्रमाण द्वारा निश्चय। दो बातों में से किसी एक बात के ठाक हाने का निर्णय जो विचार और तर्क द्वारा हो। (वैशेषिक)। २ सिद्धांत। नतीजा।
 विनिगृहीत—वि० [स०] छिपाया हुआ। ढका हुआ [को०]।
 विनिगृहिता—सञ्ज्ञा पु० [स० विनिगृहीत] वह जो गोप्य को छिपावे। गोपन करने या ढकनेवाला [को०]।
 विनिग्रह—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. नियम। बधेज। प्रतिबध। २ किसी वृत्ति को दबाकर अधीन करना। समय। ३ अवरोध। रुकावट। ४ व्याघात। बाधा। ५. पारस्परिक विरोध [को०]। ६ पार्थक्य। अलगाव। विभाजन [को०]।
 विनिग्राह्य—वि० [स०] निग्रह के योग्य। अवरोध करने लायक।
 विनिर्गुणित—वि० [स०] १ चक्कर करता हुआ। घूमता हुआ। २ अशांत। लुब्ध [को०]।
 विनिघ्न—वि० [स०] १. नष्ट। बरबाद। २ गुणित। वृद्धिगत। गुणा किया हुआ।
 विनिच्य—सञ्ज्ञा पु० [विनिच्य, पा० विनिच्य] न्यायाधीश। उ०—अट्टकथा के अनुसार विनिच्य - 'यह आठ न्यायाधीश थे, जो एक एक करके मुकद्दमों की जाँच करते थे।—हिंदु० सभ्यता पृ० २६२।
 विनिद्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. अन्न का एक संहार जिससे अन्न द्वारा निद्रित या मूर्छित व्यक्ति को नींद या बेहोशी दूर होती है। २. नींद न आने का एक रोग।
 विनिद्र—वि० १ जिसकी नींद खुल गई हो। २ मुकुलित। खुला हुआ। फूला हुआ [को०]।
 विनिद्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] निद्रा का अभाव। जागरण [को०]।
 विनिद्रत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'विनिद्रता'।
 विनिवस्त—वि० [स०] नष्ट। विवस्त किया हुआ [को०]।

विनिपतित—वि० [म०] अधःपतित। गिरा हुआ [को०]।
 विनिपात—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विनाश। ध्वंस। बरबाद। २ वध। हत्या। ३ अवमान। अनादर। नजर से गिरना। ४ अधःपतन। गिराव [को०]। ५ नरकपात। नरक [को०]। ६ क्षय। मृत्यु [को०]। ७ घटित होता। घटना [को०]। ८ पीड़ा। कष्ट। दुःख [को०]।
 यौ—विनिपातग्रस्त = अधःपतित। दुर्भाग्यग्रस्त। विपन्न। विनिपातप्रतीकार = विपत्ति या कष्ट से बचने का उपाय। विनिपातशसी = उत्पात, विपत्ति या दुर्भाग्य का सूचक।
 विनिपातक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विनाशकारी। २. सहारकर्ता। ३. अपमान करनेवाला।
 विनिपातन—सञ्ज्ञा पु० [स०] गर्भपातन। गर्भ गिराने की क्रिया [को०]।
 विनिपातित—वि० [स०] १ जिसका विनिपात किया गया हो। गिराया हुआ। ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २ मारा हुआ। हत [को०]।
 विनिपाती—वि० [स० विनिपातिन] विनिपात करनेवाला। गिरानेवाला [को०]।
 विनिवध—सञ्ज्ञा पु० [म० विनिवन्ध] किसी वस्तु से लगाव या सबंध हाना [को०]।
 विनिवधन—सञ्ज्ञा पु० [स० विनिवन्धन] दे० 'विनिवध'।
 विनिमग्न—वि० [स०] डूबा हुआ। लीन।
 विनिमय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देने का व्यवहार। अदल बदल। परिवर्तन। परिदान। २ गिरवी। बंधक। ३ वर्णव्यत्यय। वर्णों का परिवर्तन [को०]। ४ अन्योन्यता। परस्परता [को०]। ५ किसी देश की मुद्रा या सिक्के का अन्य देश की मुद्रा में परिवर्तन। जैसे, पाँड या डालर का भारतीय सिक्के में। (अ० एक्सचेंज)।
 विनिमित्त—वि० [स०] निमित्त या कारणाहित। जिसका कोई मुख्य कारण न हो [को०]।
 विनिमीलन—सञ्ज्ञा पु० [स०] बंद होना।
 विनिमीलित—वि० [स०] जो बंद हो गया हो। मुद्रित। सकुचित। मुँदा हुआ [को०]।
 विनिमीलितेक्षण—वि० [स०] मुँदी हुई आँखोंवाला [को०]।
 विनिमेष, विनिमेषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ (आँखों का) झपकना। पलकों का गिरना। २ सकेत। इंगित [को०]।
 विनियत—वि० [स०] नियमन किया हुआ। नियंत्रित। प्रतिबद्ध [को०]।
 यौ०—विनियतचेता = जिसका चित्त वश में हो। सयतात्मा। विनियतवाक् = (१) मयत कथन। (२) जिसकी बाणी सयमित हो। विनियताहार = मितभोजी। कम खानेवाला।
 विनियम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ निग्रह। रोक। समय। प्रतिबध। २ शासन [को०]।
 विनियम्य—वि० [स०] नियमन के योग्य। वश में रखने लायक [को०]।
 विनियुक्त—वि० [स०] १ किसी काम में लगाया हुआ। नियोजित। २ अप्रित। ३ प्रेरित। ४ अलग किया हुआ। विच्छिन्न [को०]। ५. व्यवहृत [को०]। ६. समाधिदत्त। विहित [को०]।

विनियुक्तात्मा—वि० [स० विनियुक्तात्मन्] जिसका मन किसी वस्तु में केंद्रित हो गया हो [को०] ।

विनियोक्तव्य—वि० [स०] १ नियुक्त करने योग्य । २. आदेश को पूर्ण करने में समर्थ [को०] ।

विनियोक्ता—वि० [स० विनियोक्तृ] नियुक्त करनेवाला [को०] ।

विनियोग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग । किसी विषय में लगाना । प्रयोग । २. किसी वैदिक कृत्य में मन्त्र का प्रयोग । ३. प्रेषण । भोजना । ४. प्रवेश । घुसना । ५. अलगाव । विभाग । विभाजन (को०) । ६. छोड़ना । त्यागना (को०) । ७. रूकावट । अडचन । ८. सबव । ताल्लुक (को०) ।

विनियोजित—वि० [स०] १ प्रयुक्त । नियुक्त । लगाया हुआ । २. अपित । ३. प्रेरित ।

विनियोज्य—वि० [स०] १ नियुक्त किया जानेवाला । २. उपयोग किया जानेवाला [को०] ।

विनिरोध—वि० [स०] १ जो निरोध न करे । निष्क्रिय । २. अप्रभावित [को०] ।

विनिरोधी—वि० [स० विनिरोधिन्] निरोध करनेवाला । रोकनेवाला । बाधा उपस्थित करनेवाला ।

विनिर्गत—वि० [स०] १ निकला हुआ । जो बाहर हुआ हो । वहिर्गत । २. गया हुआ । जो चला गया हो । निष्क्रांत । ३. बीता हुआ । अतीत । व्यतीत ।

विनिर्गम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बाहर होना । निकलना । २. प्रस्थान । चला जाना ।

विनिर्घोष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] उच्च स्वर ।

विनिर्जन—वि० [स०] निर्जन । सुनसान । जनहीन [को०] ।

विनिर्जय—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पूरी जीत । पूर्ण विजय [को०] ।

विनिर्जित—वि० [स०] पूर्णतः पराजित । पूरी तौर से हारा हुआ [को०] ।

विनिर्णय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ दृढ निश्चय । २. निर्धारित नियम । ३. पूर्ण रूप से निवटारा या फँसला [को०] ।

विनिर्णीत—वि० [स०] १ निश्चित । २. स्पष्टतया निर्णीत [को०] ।

विनिर्दग्ध—वि० [स०] पूर्ण रूप से जला या नष्ट किया हुआ [को०] ।

विनिर्दहन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पूरी तौर से जला डालना । संपूर्णतया नष्ट कर देना [को०] ।

विनिर्दिष्ट—वि० [स०] जिसका निर्देश किया गया हो । विशेष रूप से निर्दिष्ट । सुस्पष्ट । उ०—देश (स्थान) और काल (उससे सबद समय) दोनों दिए हो तो वह घटना या तथ्य पूर्णतया विनिर्दिष्ट होता है ।—संपूर्ण अ० ग्र०, पृ० २२३ ।

विनिर्देश्य—वि० [स०] उल्लेख योग्य । जिसका निर्देश किया जाय ।

विनिर्धुत, विनिर्धूत—वि० [स०] कपित या क्षुब्ध किया हुआ । २. क्षिप्त या फँका हुआ [को०] ।

विनिर्धूत—वि० [स०] भली भाँति धुला हुआ । स्वच्छ । निर्मल ।

विनिर्वन्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स० विनिर्वन्ध] आग्रह । दृढता ।

विनिर्वह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तलवार चलाने का एक प्रकार [को०] ।

विनिर्भिन्न—वि० [स०] खड़ित । टूटा हुआ । छिन्न भिन्न । फटा हुआ ।

विनिर्भोग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक कल्प का नाम ।

विनिर्मद—वि० [स०] निरभिमान । गर्वरहित । निर्विकार । उ०—श्यामश्यामा के युगल पद कोकनद मन के विनिर्मद ।—अर्चना, पृ० ६६ ।

विनिर्मल—वि० [स०] निर्मल । स्वच्छ । पत । पवित्र । उ०—प्रथम बंदू पद विनिर्मल ।—अर्चना, पृ० २७ ।

विनिर्माण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० विनिर्मित] विशेष रूप से निर्माण होना । अच्छी तरह बनना ।

विनिर्माता—सञ्ज्ञा पुं० [स० विनिर्मातृ] निर्माता ।

विनिर्मित—वि० [स०] १ विशेष रूप से निर्मित या बना हुआ । जैसे,—प्रस्तरविनिर्मित भवन । २. बनाया हुआ । निर्माण किया हुआ (को०) । ३. (उत्सव आदि) जो सपन्न या मनाया गया हो (को०) । ४. निर्धारित । निश्चित (को०) ।

विनिर्मिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कृति । सरचना । निर्माण [को०] ।

विनिर्मुक्त—वि० [स०] १ बाहर निकला हुआ । वहिर्गत । २. जो खुला हो या ढँका न हो । अनाच्छन्न । ३. छूटा हुआ । बंधन से रहित ।

विनिर्मुक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पूरी स्वतंत्रता होना । वधराहित्य । पूर्ण मुक्ति [को०] ।

विनिर्मूढ—वि० [स० विनिर्मूढ] कर्तव्यबोध रखनेवाला [को०] ।

विनिर्मोक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. निर्मोक रहित । २. बिना पहनावे का । वस्त्ररहित । परिधानशून्य ।

विनिर्मोक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विनिर्मुक्ति' ।

विनिर्याण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गमन । प्रस्थान [को०] ।

विनिर्याति—वि० [स०] गत । गया हुआ [को०] ।

विनिर्वाण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विशेष प्रकार की मुक्ति । उ०—तर्क सिद्ध है, स्वप्न एक है विनिर्वाण यह ।—अपरा पृ० १८७ ।

विनिवर्तक—वि० [स०] रद्द करने या बदलनेवाला [को०] ।

विनिवर्तन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० विनिवर्तित, विनिवर्तो] लौटना ।

विनिवर्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विराम । निवृत्ति [को०] ।

विनिवर्तित—वि० [स०] वापस किया हुआ । लौटाया हुआ [को०] ।

विनिवर्तो—वि० [स०] वापस करने या परिवर्तन करनेवाला [को०] ।

विनिवारण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] निवारण करना । दूर करना । नियंत्रित करना ।

विनिविष्ट—वि० [स०] १ बसा हुआ । निवास किया हुआ । २. रखा हुआ । रक्षित [को०] ।

विनिवेदन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विनिष्ट रूप से निवेदन करना । घोषित

वि० [स०] लौटा हुआ । वापस आया हुआ । २. सेवा । ३. निकाला हुआ । उत्पन्न ।

यौ०—विनिवृत्तकाम = आकाङ्क्षारहित । कामनाओं ने मुक्त ।
 विनिवृत्तशाप = शापमुक्त ।
 विनिवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विश्रान्ति । शराम । मुक्ति । २
 निवारण । दूरीकरण । ३ अत । अवसान । समाप्ति [को०] ।
 विनिवेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ प्रवेश । घुसना । २ निवास करना ।
 बसना । ३ छाप । चिह्न । ४ (पुस्तक आदि में) उल्लेख
 करना [को०] ।
 विनिवेशन—वि० [स०] [वि० विनिवेशित, विनिवेशी] १ प्रवेश ।
 घुसना । २ अविष्टान । स्थिति । वास । रहायश । ३ निर्माण
 [को०] । ४ व्यवस्था [को०] । ५ चिह्न या छाप डालना [को०] ।
 विनिवेशित—वि० [स०] १ प्रविष्ट । घुसा हुआ । २ ठहरा या
 टिका हुआ । अधिष्ठित । स्थापित । ३ बसा हुआ । ४ निर्मित ।
 रचा या बना हुआ [को०] ।
 विनिवेशी—वि० [स० विनिवेशिन्] [स्त्री० विनिवेशिनी] १ प्रवेश
 करनेवाला । घुसनेवाला । २ रहनेवाला । बसनेवाला ।
 विनिश्चय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ निश्चित करना । तय करना । २
 निर्णय । निश्चय ।
 विनिश्चल—वि० [स०] अचल । दृढ़ । कपरहित । स्थित [को०] ।
 विनिश्चलित—सञ्ज्ञा पु० [स०] साँस । प्रश्वास [को०] ।
 विनिश्वास—सञ्ज्ञा पु० [स०] उच्छ्वास । गहरी साँस । उसास [को०] ।
 विनिपूदित—वि० [स०] पूर्ण रूप से उच्छिन्न या नष्ट किया
 हुआ [को०] ।
 विनिष्कप—वि० [स० विनिष्कम्प] स्थिर । अचल [को०] ।
 विनिष्ट—वि० [स०] भली भाँति पकाया या भूना हुआ [को०] ।
 विनिष्पतित—वि० [म०] आगे की ओर उछला या झपटा हुआ [को०] ।
 विनिष्पात—सञ्ज्ञा पु० [स०] तेजी से झपटना या दूट पड़ना [को०] ।
 विनिष्पाद्य—वि० [स०] पूरा करने योग्य [को०] ।
 विनिष्पेष—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुचलना । पीसना । मर्दित करना ।
 रगड़ना । मलना [को०] ।
 विनिस्तद्र—वि० [स० विनिस्तद्र] तद्राविहीन । निर्गल । उ०—कुञ्ज-
 टिका अट्टहास अतर्हं विनिस्तद्र—आराधना, पृ० १३ ।
 विनिस्तार—सञ्ज्ञा पु० [म०] १. पारगमन । मुक्ति । छुटकारा ।
 उद्धार । उ०—कठिन यह ससार, कैसे विनिस्तार, ऊँच का
 पाथार, कैसे करे पार—अर्चना, पृ० ७५ ।
 विनिस्मृत—वि० [स०] निविष्ट । स्मृत । कीर्तित । वर्णित । लिखित
 [को०] ।
 विनिहत्—वि० [स०] १ चोट खाया हुआ । आहत । २ विनष्ट ।
 व्वस्त । बरबाद । ३ मारा हुआ । मृत । ४ लुप्त । ५ पूरी
 तरह परास्त किया हुआ [को०] । ६ उपेक्षित । उल्लिखित ।
 तिरस्कृत [को०] ।
 विनिहत्—सञ्ज्ञा पु० १ कोई बड़ी या अनिवार्य विपत्ति । भाग्यदोष से
 या दैवात् आनेवाला सकट । २ धूमकेतु ।
 विनिहित—वि० १ नीचे रखा हुआ । २ जमाया हुआ । नियुक्त । ३
 विकीर्ण । विभक्त । अलग किया हुआ ।

विनिहितदृष्टि—वि० [स०] जिसकी दृष्टि किसी वस्तु पर लगी हो [को०] ।
 विनिहितमना—वि० [स० विनिहितमनम्] जिसने किसी बात का हृद
 निश्चय कर लिया हो [को०] ।
 विनिहनुत—वि० [म०] १ छिया हुआ । २ अस्वीकृत [को०] ।
 विनीत—वि० [म०] १ जिमममें उत्तम शिक्षा का मस्कार और शिष्टता
 हो । विनययुक्त । सुशील । २. व्यवहार में अधीनता प्रकट करने-
 वाला । शिष्ट । नम्र । ३ जितेंद्रिय । ४ गयमी । ५ ग्रहण
 किया हुआ । ६ सिखाया हुआ । ७ दूर किया हुआ । हटाया
 हुआ । ले गया हुआ । ८ जिसको तबीह की गई हो । दंडित ।
 शासित । ९ नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला । धार्मिक । १०
 प्रिय । मनोहर [को०] । ११ साफ मुथरा (कपडा आदि) ।
 विनीत—सञ्ज्ञा पु० १ वणिक् । बन्धिया । साहु । २ निकाला हुआ
 घोडा । ३ पुनस्त्य के एक पुत्र का नाम । दमनक । दोने का
 पौधा । ५ मघाया हुआ बैल [को०] ।
 विनीतक—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वाहन । पालकी । २. वह जो वहन
 करे । वाहन । [को०] ।
 विनीतता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विनीत होने का भाव । नम्रता ।
 विनीतत्व—सञ्ज्ञा पु० [म०] विनीतता । नम्रता [को०] ।
 विनीता—वि० स्त्री० [स०] विनयवाली । नम्र (स्त्री) । उ०—कुछ
 नहीं कहा क्या सीता ने, चंदेही बधू विनीता ने ?—साकेत, पृ०
 १८५ ।
 विनीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विनय । सुशीलता । २ सद्व्यवहार ।
 ३ समान ।
 विनीय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पाप । दोष । जुर्म । अपराध । २ तलछट
 [को०] ।
 विनील—वि० [स०] गहरा नीला । नील वर्ण का [को०] ।
 विनीलक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह मृत देह जो नीला पड़ गया हो । नीला
 शव । (बौद्ध) ।
 विनु पं०—अव्य० [स० विना] , विना' ।
 विनुक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रशंसा । २ आश्वलायन श्रौत सूत्र के
 अनुसार एवाह कृत्य का नाम । ३ अपवारण । दूर करना [को०] ।
 विनुन्न—वि० [म०] १ अपकारित । दूर किया हुआ । २ चोट
 खाया हुआ । घायल [को०] ।
 विनूट①—वि० [हि० अनूठा?] दे० 'विनूठा' । उ०—अब सचिय मुद्र
 विनूट ।—पृ० २१०, ६१ । २११ ।
 विनूठा—वि० [हि० अनूठा?] अनूठा । सुदर । बढ़िया ।
 विने—सर्व० हि० विन + ने] दे० 'वह' । उ०—मेरे घर कूँ मेहमान
 जो आएगा । के यो शीर खुरमाँ विन खाएगा,—दक्खिनी०,
 पृ० ३३१ ।
 विनेता—सञ्ज्ञा पु० [म० विनेतृ] १ अगुआ । नेता । पथप्रदर्शक ।
 २ अध्यापक । गुरु । शिक्षक । ३ दंड देनेवाला । ४ राजा ।
 शासक [को०] ।
 विनेय—वि० [स०] १ दंडनीय । शासन के योग्य । जिसको दंड दिया
 जाय । २ हटा देने या ले जाने लायक । नेतव्य । ३ शिक्षा देने
 योग्य । जिसे शिक्षा दी जाय [को०] ।

विनेय^१—सं पुं शिष्य । वह जो शिक्षा ग्रहण करता हो । अनेवासी । छात्र [को०] ।

विनोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] एक अलकार जिसमें (किसी वस्तु के अभाव में) किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है । जैसे—(क) जिय विनु देह नदी विनु वारी । तैसई नाथ पुरुष विनु नारी ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) कंभे नीके लगत ये विनु संकोच के बैन ।—बिहारी (शब्द०) ।

विनोद—सञ्ज्ञा पुं [सं०] १ कौतूहल । तमाशा । मनोरंजक व्यापार । २ क्रीडा । खेल कूद । लीला । ३ प्रमोद । हँसी । दिल्लगी । परिहास । ४ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन । ५ एक प्रकार का प्रामाद । प्रमोदगृह । ६ हर्ष । आनंद । प्रसन्नता ।

यौ०—विनोदरसिक = क्रीडाशील । कौतुकी । विनोद में आनंद लेनेवाला । विनोदस्थान = आनंददायक स्थान । क्रीडा विनोद की जगह ।

७ हटाना । दूर करना । अपनयन । जैसे, अमविनोद (को०) । ८ श्रोतुम्वय । उत्सुकता । उत्कठा (को०) ।

विनोदन—सञ्ज्ञा पुं [सं०] [वि० विनोदित, विनोदी] १ ऐसे व्यापार करना जिनका उद्देश्य केवल मनोरंजन हो । आमोद प्रमोद करना । क्रीडा करना । खेल कूद करना । २ हँसी दिल्लगी या हास विलास करना । ३ आनंद करना । ४. हटाना । दूर करना । अपवारण (को०) ।

विनोदित—वि० [सं०] १. हर्षित । प्रसन्न । २ अपवारित । दूर किया या हटाया हुआ (को०) । ३. कुतूहल्युक्त ।

विनोदी—वि० [सं० विनोदिन्] [वि० स्त्री० विनोदिनी] १ कुतूहल करनेवाला । आमोद प्रमोद करनेवाला । क्रीडा करनेवाला । २ खेल कूद करनेवाला । चुल्लवाज । ३ जिसका स्वभाव आमोद प्रमोद करने का हो । आनंदी । ४ हटाने या दूर करनेवाला । अपवारण करनेवाला (को०) । ५ क्रीडाशील । खेलकूद या हँसी ठट्ठे में रहनेवाला । उ०—श्याम विनोदी रे मधुबनिया ।—सूर (शब्द०) ।

विज्ञ वि० [सं०] १ जाना हुआ । ज्ञात । २ प्राप्त । लब्ध । हासिल । ३ रखा हुआ । ४. विचारविमर्श किया हुआ । अनुसहित । विचारित । ५ अस्तित्वयुक्त । अस्तित्व या सत्ता रखनेवाला । ६. [स्त्री० विन्ना] परिणीत । विवाहित (को०) ।

विज्ञक—सञ्ज्ञा पुं [सं०] अगस्त्य ऋषि (को०) ।

विज्ञप—सञ्ज्ञा पुं [सं०] १. राजतरंगिणी के अनुसार एक राजा का नाम । २. अगस्त्य ऋषि (को०) ।

विज्ञा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] विवाहिता स्त्री (को०) ।

विन्यय—सञ्ज्ञा पुं [सं०] दशा । स्थिति । [को०] ।

विन्यसन—सञ्ज्ञा पुं [सं०] विन्यास करना (को०) ।

विन्यस्त—वि० [सं०] १. रखा हुआ । स्थापित । २ यथास्थान वैठाया हुआ । जडा हुआ । ३. करीने से लगा हुआ । ४. ढाला

हि० अ० ६-२०

हुआ । क्षिप्त । ५ सौपा हुआ । समर्पित (को०) । ६. उपस्थित किया हुआ । प्रस्तुत (को०) ।

विन्याक—सञ्ज्ञा पुं [सं०] वरियारा नाम का पीवा ।

विन्यास—सञ्ज्ञा पुं [सं०] [वि० विन्यस्] १. स्थापन । रखना । धरना । उ०—शेनी ने प्रबंधक्षेत्र में भी अच्छी तरह घुमकर भावों की अनेकरूपता का विन्यास किया था ।—रम०, पृ० ६६ । २ यथास्थान स्थापन । ठीक जगह पर करीने से रखना या वैठाना । सजाना । रचना । ३ जडना । ४. किसी स्थान पर ढालना । ५ सौपना । समर्पण (को०) । ६ मंग्रह । समवाय (को०) । ७ फैलाना । विस्तार करना (को०) । ८ आचार । स्थान (को०) । ९ स्थिति । जैसे, अगविन्यास (को०) ।

विपचनक—सञ्ज्ञा पुं [सं० विपञ्चनक] ज्योतिषी । भविष्य-दत्ता (को०) ।

विपचिक—सञ्ज्ञा पुं [सं० विपञ्चिक] [स्त्री० विपचिका] भविष्य-दत्ता (को०) ।

विपचिका, विपची—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० विपञ्चिका, विपञ्ची] १ एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे रहते हैं । एक प्रकार की वीणा । उ०—(क) नवल वसत धुनि सुनिए विपची नाद पंचम सुरनि ठानि श्रोठनि अमेठिए ।—देव (शब्द०) । (ख) तंत्री वीणा बल्लभी बहुरि विपंची आहि ।—नंददास (शब्द०) । २ केलि । क्रीडा । खेल ।

विप—वि० [सं०] विद्वान् (को०) ।

विपक्वम—वि० [सं०] विपक्व । पका हुआ । परिपक्व (को०) ।

विपक्व—वि० [सं०] १ खूब पका हुआ । २ पूर्ण अवस्था को प्राप्त । ३ जो पका न हो । कच्चा ।

विपक्ष^१—सञ्ज्ञा पुं [सं०] १ विरुद्ध पक्ष । किसी बात के विरुद्ध दूसरी स्थिति । २ शत्रु या विरोधी का पार्श्व । ३ विरोध करनेवाला दल । शत्रु पक्ष । विरोधी । प्रतिद्वंद्वी । दूसरा फरीक । जैसे—विपक्ष में जाना । ४ प्रतिवादी या शत्रु । विरुद्ध दल का मनुष्य । ५ किसी बात के विरुद्ध की स्थापना । विरोध । खडन । जैसे,—इसके विपक्ष में तुम्हें क्या कहना है ? ६ व्याकरण में किसी नियम के विरुद्ध व्यवस्था बाधक नियम । अपवाद । ७. न्याय या तर्क शास्त्र में वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो । ८. वह दिन जब पक्ष बदले (को०) । ९ निष्पक्ष होने का भाव । निष्पक्षता । पक्षविहीनता (को०) ।

विपक्ष^२—वि० १. विरुद्ध । खिलाफ । प्रतिकूल । २. उलटा । विपरीत । ३ जिसके पक्ष में कोई न हो । जिसका कोई तरफदार न हो । बिना पक्ष का । ४ बिना पर या डैन का । पक्षहीन ।

यौ०—विपक्षभाव, विपक्षवृत्ति=३० 'विपक्षता' । विपक्षरमणी ।

विपक्षता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] १ विरुद्ध पक्ष का अवलंबन । २. विपक्ष होने की क्रिया या भाव । खिलाफ होना ।

विपक्षरमणी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] वह स्त्री जिसकी किसी अन्य स्त्री से प्रतिद्वंद्विता हो (को०) ।

विपक्षी—सज्ञा पु० [स० विपक्षिन्] १ विरुद्ध पक्ष का । दूसरी तरफ का । २ शत्रु । प्रतिद्वंद्वी । प्रतिवादी । फरीक सानी । ३ विना पक्ष का । विना पक्ष या डैने का ।

विपच्छु—सज्ञा पु० [स० विपक्ष, प्रा० विपच्छ] १ दे० 'विपक्षी' । २ विना पक्ष या डैने का । उ०—गिरिहै विपच्छ बनाइ । —गुमान (७८८) ।

विपज्जन्य—वि० [स० विपत् + जन्य] दुःखी । पीडित । उ०—जन विपज्जन्य होकर अग्रर आपके—आराधना, पृ० १६ ।

विपण, विपणन—सज्ञा पु० [म०]

विपणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूकान । २ विक्रय का सामान । ३ व्यापार । ४ विक्रय । ५ बाजार । उ०—अपने इन विहारों के दौरान मे कर्मशाला, सभा, कूप, विपणि, निर्माण-शाला—इन सब आवासस्थानों मे ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२५ ।

यौ०—विपणिर्कर्म । विपणिगत = बाजार मे उपलब्ध या प्राप्त । विपणिजीविका = व्यापारजीवी । व्यवसायी । विपणिपथ = बाजार का मार्ग । पण्यवीथी ।

विपणिकर्म—सज्ञा पु० [स० विपणिकर्मन्] दूकानदारी । व्यापार ।

विपणी^१—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपणि' ।

विपणी^२—सज्ञा पु० [स० विपणिन्] व्यापारी [को०] ।

विपण्यु—वि० [स०] १ जिसने अपना रोजगार घषा छोड़ दिया हो । २ अन्यमनस्क [को०] ।

विपत्ताक—वि० [स०] पताकारहित । ध्वजविहीन [को०] ।

विपतित—वि० [स०] १ गिरा हुआ । २ उड़ा हुआ [को०] ।

विपत्—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपद्' ।

यौ०—विपत्कर = कष्टकर । विपत्ति पैदा करनेवाला । विपत्काल = बुरा समय । विपज्जन्य । विपत्फल = जिससे सकट उठाना पड़े । विपत्सकुल = विपत्तियों, आपत्तियों से भरा हुआ । उ०—छोटे छोटे राज्यों से हो गया विपत्सकुल यह देश ।—अपरा, पृ० २१६ । विपत्सागर = बहुत बड़ा सकट । विपत्तियों का समुद्र ।

विपत्ति^१—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कष्ट, दुःख या शोक की प्राप्ति । भारी रज या तकलीफ का आ पड़ना । आफत । २ वलेश या शोक की स्थिति । रज या तकलीफ की हालत । सकट की अवस्था । बुरे दिन । जैसे,—विपत्ति मे कोई माथी नहीं होता ।

क्रि० प्र०—आना ।—पडना ।

मुहा०—विपत्ति उठाना = सकट या कष्ट सहना । रज या तकलीफ बरदाश्त करना । विपत्ति काटना = सकट या कष्ट के दिन बिताना । रज या तकलीफ मे रहना । विपत्ति भेलना = कष्ट या शोक सहना । (किसी पर) विपत्ति डालना = (किसी को) शोक या दुःख पहुँचाना । किसी को रज या तकलीफ में डालना । (किसी पर) विपत्ति ढहना = सहसा कोई दुःख या शोक उपस्थित होना । एक बारगी आफत आना । विपत्ति

मे डालना = सकट या दुःख की अवस्था मे करना । विपत्ति मे पडना = शोक, दुःख या सकट की दशा को प्राप्त होना । विपत्ति भुगतना या भोगना = शोक, दुःख या संकट सहना ।

३ कठिनाई । भ्रम । बखेडा ।

मुहा०—विपत्ति मोल लेना = व्यर्थ अपने ऊपर भ्रम लेना । बखेडे मे पडना । विपत्ति सिर पर लेना = व्यर्थ भ्रम मे पडना । दिक्कत मे पडना ।

४ मृत्यु । नाश । विध्वंस [को०] । ५ समाप्ति ।

विपत्ति^२—सज्ञा पु० श्रेष्ठ पदाति । पैदल सिपाही । प्यादा [को०] ।

विपथ—सज्ञा पु० [स०] १ कुमार्ग । बुरी राह । खराब रास्ता । २ बगल का रास्ता । ३ बुरी चाल चलन । मद आचरण । ४ एक प्रकार का रथ ।

यौ०—विपथगत = कुमार्ग गमन । विपथगमन । विपथगा । विपथगामी ।

विपथगा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सरिता । नदी । २ वह जो कुमार्ग पर चले [को०] ।

विपथगामिन्—वि० [स० विपथगामिन्] [वि० स्त्री० विपथगामिनी] कुमार्गगामी । विरुद्ध मार्ग पर चलनेवाला । उ०—विपथगामी होने पर, वही संकेत करके मनुष्य का अनुशासन करती है ।—आंधी, पृ० २० ।

विपद्—सज्ञा स्त्री० [स०] विपत्ति । आफत । सकट ।

विपदा—सज्ञा स्त्री० [स०] विपत्ति । आफत । दुःख, शोक या संकट ।

यौ०—विपद्गत = विपत्ति मे पडा हुआ । विपद्ग्रस्त = विपन्न । आफत का मारा । विपद्दशा = सकट की स्थिति । विपद्द्युक्त = विपत्तिग्रस्त । अभागा ।

विपन^७—सज्ञा पु० [म० विपिन] जंगल । विपिन । उ०—विपन विहर ऊपल अकल सकल जीव जड जाल ।—पृ० २०, ६१४ ।

विपन्न^१—वि० [स०] १ जिसपर विपत्ति पड़ी हो । विपत्ति मे पडा हुआ । मुसीबत का मारा । २ दुःखी । आर्त । ३ कठिनाई या भ्रम मे पडा हुआ । ४ भूला हुआ । भ्रम मे पडा हुआ । ५ विध्वंस । नष्ट [को०] । ६ मृत ।

विपन्न^२—सज्ञा पु० सर्प [को०] ।

विपन्नक—वि० [स०] १ भाग्यहीन । २ मृत । ३ नष्ट [को०] ।

विपन्नाव—सज्ञा स्त्री० [स० विपत् + हि० नाव] विपत्ति या भँवर मे पड़ी हुई नौका । उ०—जीवन विना अन्न के विपन्नाव । —अर्चना, पृ० ८५ ।

विपरिक्रांत—वि० [स० विपरिक्रान्त] वीर । साहसी । हिम्मतवर [को०] ।

विपरिच्छिन्न—वि० [स०] १ कर्तित । कटा हुआ । २ विध्वस्त । नष्ट [को०] ।

विपरिणति—सज्ञा स्त्री० [स०] परिणाम । परिवर्तन । उ०—वह यह सिद्ध करने का जतन करता था कि मानव इतिहास का विकास प्राकृतिक प्रभावों की विपरिणतियों का ठीक अनुसरण करता है ।—भारत नि०, पृ० ३ ।

विपरिणामन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] परिवर्तन [को०] ।

विपरिणाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ परिवर्तन । २ रूपपरिवर्तन ।
रूपांतरण । ३. प्रौढि [को०] ।

विपरिणामी—वि० [सं०] विपरिणामिन् परिवर्तनशील [को०] ।

विपरिधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विशिष्ट परिधान । विशिष्ट प्रकार का पहनावा । २ विनियम । लेनदेन [को०] ।

विपरिवर्तन—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोटना । घूमना । २ चक्कर खाना [को०] ।

विपरिवर्तन^२—वि० लोटानेवाला [को०] ।

विपरिवर्तनी विद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या या मंत्र जो किसी व्यक्ति को दूर से खींच लाए [को०] ।

विपरिवर्तित—वि० [सं०] लोटा या लौटाय हुआ [को०] ।

विपरिवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लौटना [को०] ।

विपरीत^१—वि० [सं०] १. जो मेल में या अनुरूप न हो । जो विपर्यय के रूप में हो । उलटा । विरुद्ध । खिलाफ । २ किसी की इच्छा या हित के विरुद्ध । प्रतिकूल । जैसे,—विपरीत आचरण । ३ अनिष्टसाधन में तत्पर । रुष्ट । जैसे,—दंव या विधि का विपरीत होना । ४ हितसाधन के अनुपयुक्त । दुःखद । जस,—विपरीत समय । उ०—आजु विपरीत समय सब हैं, विपरीत है । (शब्द०) । ५ मिथ्या । असत्य (को०) । ६. व्यत्यस्त अर्थात् उलटा वा प्रतिकूल अभिनय करनेवाला (को०) ।

विपरीत^२—सञ्ज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार एक अर्थालंकार, जिसमें कार्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है । जैसे,—‘राधा जू सो कहा कहीं दूतिन की मानैं सोख साँ पनी सहित विपरहित फनिन की । क्यों न पैर बीच, वच आँ गेयो न सहि सकैं, वाच परी अगता अनेक आँगननि की’ । (यहाँ दूतो को साधक होना चाहिए था, पर वह बाधक हुई) । २ सोलह प्रकार के रतिबंधों में से दसवाँ रतिबंध ।

यौ०—विपरीतकर, विपरीतकारक, विपरीतकृत = उलटा काम करनेवाला । विपरीतचेता । विपरीतमान । विपरीतरत = विपरीतरति । विपरीतलक्षणा । विपरीतवृत्ति ।

विपरीतक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विपरीतरति [को०] ।

विपरीतक^२—वि० प्रतिकूल । विपरीत [को०] ।

विपरीतकरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग की एक क्रिया । उ०—विपरीतकरणी पुनि बञ्जाली शक्ति चालन कीजिए ।—सुंदर० ग्र०, भा० १, पृ० ५० ।

विपरीतकारी—वि० [सं०] विपरीतकारिन् विपरीत या उलटा काम करनेवाला । प्रतिकूल कार्य करनेवाला [को०] ।

विपरीतचेता—वि० [सं०] विपरीतचेतस् उलटी बुद्धिवाला [को०] ।

विपरीतता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विपरीत होने का भाव ।

विपरीतत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० ‘विपरीतता’ [को०] ।

विपरीतरति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार सभोग का एक प्रकार जिसमें पुरुष नीचे की ओर चित लेटा रहता है और स्त्री उसके ऊपर लेटकर सभोग करती है । कामशास्त्र में इसे पुष्पायित संबध कहा है । इसके कई भेद कहे गए हैं ।

विपरीतलक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंग्यात्मक उक्ति जो विरोधी बात द्वारा व्यक्त की जाय [को०] ।

विपरीतवृत्ति—वि० [सं०] उलटा काम करनेवाला ।

विपरीता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री ।

विपरीतार्थ—वि० [सं०] जिसका अर्थ उलटा हो ।

विपरीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० ‘विपरीत’ ।

विपरीतोपमा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी भाग्यवान् व्यक्त की हीनता वर्णन की जाय और वह अतिहीन दशा में दिखाया जाय । यथा,—देखिए मंडित दडन सो, भुजदंड दोऊ अति दड विहीनो । राजनि श्री रघुनाथ के राज कुमडल छाड़ि कमडली लीनो ।—केशव (शब्द०) ।

विपर्यय^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विपर्यय दे० ‘विपर्यय—३’ । उ०—तब साधें हठ जोग विपर्यय कौ घर पावें । प्रान कर आयाम पुष्प तब नजरि में आवें ।—पलटू०, पृ० ३६ ।

विपर्यय^२—वि० [सं०] पर्यारहित । विना पत्तो का ।

विपर्यय^३—सञ्ज्ञा पुं० पलाश का पेड़ । टेसू ।

विपर्यय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक वस्तु का दूसरे के स्थान पर और दूसरी का पहली के स्थान पर होना । उलट पुलट । इधर का उधर । जैसे,—वर्गविपर्यय । २ ऐसा परिवर्तन जिसमें दो वस्तुओं की स्थिति पूर्वस्थिति से विरुद्ध हो जाय । जैसी चाहिए, उससे विरुद्ध स्थिति । और का और । व्यतिक्रम । ३ मिथ्या ज्ञान । और का और समझना ।

विशेष—योग दर्शन के अनुसार ‘विपर्यय’ चित्त की पाँच प्रकार की वृत्तियों (प्रमाण, विकल्प आदि) में से एक है । जैसे,—रस्सो को साप या सीप को चाँदा समझना । यथार्थ ज्ञान द्वारा इसका निराकरण होता है । इस ‘विपर्यय’ या विपरीत ज्ञान के पांच अवयव कहे गए हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिमतवश । इन्हीं को साध्य में क्रमशः तम, माह, महामाह तामिस्र और अवतामस्र कहते हैं ।

४ अम । भूल । गलती । समझ का फेर । ५. गडबडी । अव्यवस्था । ६ नाश । विनाश । ७. अदल बदल । विनिमय (को०) । ८. शत्रुता (को०) । ९ वर । विरोध (को०) । १०, प्रलय (को०) । ११ अभाव । अनस्तत्त्व (को०) ।

विपर्यस्त—वि० [सं०] १. जिसका विपर्यय हुआ हो । जो उलट पलट गया हो । जो इधर का उधर हो गया हो । २ अस्त व्यस्त । गडबड़ । चौपट । ३ मिथ्याज्ञानजन्य । और का और समझा हुआ । भूल से वास्तविक समझा हुआ (को०) ।

विपर्यस्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिस लड़का न होता हो ।

विपर्याण—वि० [सं०] पयोणहान । जिसपर पलाश न हो । जिसमें चारजामा न हो [को०] ।

विपर्यास—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] [वि० विपर्यस्त] १ विपर्यय । उलट पुलट । इधर का उधर । व्यतिक्रम । २. पूर्व में विरुद्ध स्थिति । एक वस्तु का दूसरे के स्थान पर होना । ३. जैसा चाहिए,

उसके विरुद्ध स्थिति । और का और । ४ मिथ्या ज्ञान । और का और सम्भन्ता ।

विशेष—न्याय मे अग्रमात्मक बुद्धि का नाम विपरीस है । जैसे,—
रस्सी को साँप सम्भन्ता ।

विपल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समय का एक अत्यंत छोटा विभाग जो एक पल का साठवा भाग होता है ।

विपलायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्तत भागना । पलायन । इधर उधर भागना [को०] ।

विपलायित वि० [सं०] १ खदेडा या भगाया हुआ । २ पलायित । भागा हुआ [को०] ।

विपलायी—वि० [सं० विपलायित्] इधर उधर पलायन करने या भागनेवाला [को०] ।

विपलाश—वि० [सं०] विपरीत । पलाशहीन । पत्रविहीन [को०] ।

विपवन—वि० [सं०] [वि० विपवनीय, विपव्य] १ विशेष रूप से पवित्र करनेवाला । २. वायुरहित । पवनरहित ।

विपवन—सञ्ज्ञा पुं० विशुद्ध पवन । साफ हवा ।

विपव्य—वि० [सं०] विशेष रूप से शुद्ध या पवित्र करने योग्य [को०] ।

विपशी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विपशित्] एक बुद्ध का नाम ।

विपश्चित्—वि० [सं०] पाडत । बुद्धिमान् । सूक्ष्मदर्शी । उ०—तेहि कारण शिव गग तेहि गहै विपश्चित लोक । याह मे मज्जन किए ते मिटे महा अघ शोक ।—श० १८० (शब्द०) ।

विपश्यन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रकृत ज्ञान । यथार्थ बोध । (बौद्ध) ।

विपश्यी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विपश्यित्] एक बुद्ध का नाम ।

विपश्यी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विपश्यित्] बुद्ध का एक नाम [को०] ।

विपस्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मेधा । बुद्धि । २ ज्ञान । समझ ।

विपहुर—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० द्वि + प्रहर, प्रा० वि + पहर] द्वितीय प्रहर । दुहर ।—पृ० रा०, ६१ । १७०८ ।

विपाडु—वि० [सं० विपाण्डु] स्वर्णाभ । पीला [को०] ।

विपाडुर—वि० [सं० विपाण्डुर] पीत । पीला [को०] ।

विपाडुरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा ।

विपासुल—वि० [सं०] जिसमे धूल न हो [को०] ।

विपाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ परिपक्व होना । पचन । पकना । २ पूर्ण दशा का पहुँचना । तैयारी पर आना । चरम उत्कर्ष । ३ फल । परिणाम । ४ कर्म का फल ।

विशेष—योग दर्शन मे यह विपाक तीन प्रकार का कहा गया है—
जाति (जन्म), आयु और भोग ।

५ खाए हुए भोजन का पेट मे पचना । खाद्य द्रव्य की पेट के अंदर रस रूप मे परिणति । ६ दुर्गति । दुर्दशा । ७ स्वाद । जायका । ८ पकाना । परिपक्व करना । ९ मुरझाना । कुम्हलाना [को०] ।

यौ०—विपाककाल = पूर्णता या परिपक्व होने का समय । विपाक-
दारुण = जिसका परिणाम दुःख हो । विपाकदोष = पाचन-
क्रिया का दोष या कुप्रभाव । अजीर्ण ।

विपाट—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विपाश्] एक नदी । विशेष—दे० 'विपासा'
[को०] ।

विपाट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वाण ।

विपाटक वि० [सं०] १ विपाटन करनेवाला । उत्पाटित करनेवाला ।
उखाडनेवाला । खोदनेवाला । अपटर्ता । आहाक [को०] ।

विपाटन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ उखाडना । खोदना । २ खड खड करना
[को०] । ३ अपहरण [को०] ।

विपाटल—वि० [सं०] गहरा लाल । विशेष लाल [को०] ।

विपाटित—वि० [सं०] १ उखाडा हुआ । उन्मूलित । खोदा हुआ ।
२ खड खड किया हुआ । अलग किया हुआ । ३ अपहृत ।
[को०] ।

विपाठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार लवा वाण । तीर ।

विपात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पातन । नाश ।

विपातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ नाश करनेवाला । नाशक । २ गला
देनेवाला । पिघलानेवाला ।

विपातन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. गलाना । २ नाश करना ।

विपादन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० विपादित] वध । हत्या । नाश ।

विपादिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुछ रोग का एक भेद । अपरस ।
विशेष—यह पैर मे होता है । इससे उँगलियों के पास से ऊपर तक
चमड़े मे दरारें पड जाती हैं और बड़ी खुजली होती है । पीडा
के कारण पैर नही रखा जाता है ।

२. प्रहेलिका । पहेली ।

विपादित—वि० [सं०] विनाशित । नष्ट किया हुआ ।

विपाद्य—वि० [सं०] नाश करने योग्य । मारने योग्य । वध्य [को०] ।

विपाप—वि० [सं०] पापरहित । निष्पाप [को०] ।

विपापा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक नदी का नाम ।

विपाप्मा—वि० [सं० विपाप्मन्] निष्पाप [को०] ।

विपाल—वि० [सं०] (पशु) जिसका कोई पालनेवाला या मालिक न
हो । (स्मृति) ।

विपाश—वि० [सं०] पाशरहित । बधनमुक्त । निर्बंध [को०] ।

विपाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मुक्त करानेवाला [को०] ।

विपाशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास नदी जो पंजाब मे है । विशेष दे०
'विपासा' ।

विपासा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की एक नदी । व्यास ।

विशेष—ऋग्वेद मे इस नदी का उल्लेख शतुद्री (सतलज) के
साथ है ।

विपिन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वन । जंगल । २. उपवन । वाटिका ।

विपिन—वि० भयानक । डरावना ।

विपिनचर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वन मे रहनेवाला । वनचर । २.
जंगली आदमी । ३ पशु पक्षी आदि ।

विपिनतिलका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण
मे नगण, सगण, नगण, और दो रगण (न, स, न, र, र
अर्थात् III, IIS, III, SIS, SIS होते हैं ।

विपिनपति—संज्ञा पुं० [सं०] वन का राजा, सिंह । उ०—जिमि भेरी
दा नें विपिनपति गिनि दुचग मन मे धरत । तिमि नरयो
प्रबोन उतान गति नुर विगार करि समर रत ।—गोपाल
(शब्द०) ।

विपिनविहारी—संज्ञा पुं० [म० विपिन + विहारिन्] १ वन में विहार
करने वाला । मनचारी । २. वृक्षा का एक नाम । उ०—दरमन
पाइ गिरत भई गरी । कहत भए तव विपिनविहारी ।—
विश्राम (शब्द०) ।

विपिनीका—संज्ञा पुं० [म० विपिनीकम्] १ बंदर । २ वनमातुल ।
३ वन में रहनेवाला मनुष्य (को०) ।

विपुसक—वि० [सं०] पुत्रवरहित । पुत्रपत्य से हीन ।

विपुसी—संज्ञा स्त्री० [म०] वह स्त्री जिसको चेष्टा, स्वभाव या आदृति
पुरुषों जैसी हो ।

विपुत्र—वि० [सं०] [स्त्री० विपुत्रा] पुत्ररहित । पुत्रहीन ।

विपुनतु—संज्ञा पुं० [?] पक्ष । पक्षवाग । उ०—पक्ष हारघी पौगू
विपुन श्रममास बल जान । पक्ष तु पक्ष हरि राखिए जातें होइ
कल्याण ।—नद० ग्रं०, पृ० ६७ ।

विपुर—वि० [म०] जो एक स्थान पर न रहे (को०) ।

विपुल'—वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, सरया या परिमाण
में बहुत अधिक । २. बृहत् । बड़ा । ३. श्रगाध । बहुत गहरा ।
४. रोमांचित (को०) ।

विपुलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुप्ते पर्वत का पश्चिमी भाग । २. मगध
देश की प्राचीन राजधानी राजगृह के पास की एक पहाड़ी ।
३. हिमालय । ४. एक देवीपीठ । देवी का एक प्रधान स्थान
जहाँ की देवी का नाम विपुला है । ५. रोहिणी से उत्पन्न
वसुदेव के एक पुत्र का नाम । उ०—विपुल विपुल बल चत्या
रचत मन मे पुल गर को ।—गोपाल (शब्द०) । ६. समाहित
व्यक्ति । संमानित व्यक्ति (को०) ।

विपुलक—वि० [सं०] १. बहुत चौड़ा । २. जिसे रोमांच न हो ।
पुलकरहित ।

विपुलग्रीव—वि० [म०] जिसकी गर्दन लथी हो (को०) ।

विपुलच्छाय—वि० [सं०] (पृच्छ) जो घना छायावाला हो (को०) ।

विपुलजघना—संज्ञा स्त्री० [म०] पृष्ठ या बड़े नितबोवाली स्त्री (को०) ।

विपुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाषित्व । बड़तायत । बड़ाई । उ०—
तटो बोली मे उसकी भी विपुलता है ।—मर्चना (मू०), पृ० 'ख' ।

विपुलत्व—संज्ञा पुं० [म०] २० 'विपुलता' ।

विपुलपार्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम ।

विपुलद्रव्य—वि० [म०] जिसके पास प्रचुर पद हो (को०) ।

विपुलप्रज्ञ, विपुलबुद्धि—वि० [सं०] २० 'विपुलमति' ।

विपुलमति—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान । बहुत बुद्धिमान् ।

विपुलमति—संज्ञा पुं० १. एक बाधमय का नाम । २. जँनों के
मनुष्य मन तथा ज्ञान का एक भेद । उ०—मन, परम
ज्ञान के दो भेद हैं—शुद्धमति, और विपुलमति जो दूसरे

के मन में सरलता तथा उन्नता में ठहरे हुए पदार्थों का ज्ञान
है ।—हिंदु० मन्वन्ता, पृ० २४२ ।

विपुलरस—संज्ञा पुं० [सं०] गन्ना । ईप (को०) ।

विपुलश्रोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] २० 'विपुलमति' (को०) ।

विपुलस्काव—संज्ञा पुं० [म० विपुलस्काव] अश्वें का एक नाम ।

विपुलस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घातुवार । विपुलस्रवा (को०) ।

विपुलहृदय—वि० [सं०] विशाल हृदयवाला । उदारचा ।

विपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी । वसुधा । २. एक प्रकार का
छद्म, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और क्षा अनुगत
है । ३. आर्या छंद के तीन भेदों में एक भेद जिसके प्रथम
चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १४ और चौथे में १३
मात्राएँ होती हैं । ४. विपुल नामक पर्वत की आधुनाया दक्षि ।
५. एक प्रसिद्ध सती जो बहला का नाम में प्रसिद्ध है । ६. एक
तान का नाम । (मगीत) ।

विपुलाई पु—संज्ञा स्त्री० [सं० विपुल + हि० लाई (प्रत्यय)] विपुला ।
अधिराता । ज्यादाता । उ०—को बहि मक कपि दल विपुलाई ।
—मानग, ६.४ ।

विपुलस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घृतकुमारी । घातुवार । स्वारपादा ।

विपुलेक्षण—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विपुलक्षणा] विमान नयावाना ।
बड़ी आँखवाला (को०) ।

विपुलोरस्क—वि० [सं०] जिसका उररक छाँटा हो । चोटा छाती-
वाला । विशाल वक्षवाला (को०) ।

विपुष्ट—वि० [म०] दुर्बल । जिसे पर्याप्त पापण न बिना हो (को०) ।

विपुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नत । समृद्धि । सम्बुद्ध (को०) ।

विपुष्पित—वि० [सं०] हृषित । प्रकुल ।

विपूय—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्र नृण । भूज ।

विपूयक—संज्ञा पुं० [म०] १. सटो टूटें मरु की पत्त । सटव । २.
मझा हुआ शव (बोद) ।

विपृक्—वि० [सं० विपृक्] अलग । जुदा । पृक् (को०) ।

विपृक्त—वि० [म०] असमृद्ध । अलग किया हुआ । विपृक्त (को०) ।

विपृक्वत्—वि० [सं०] शुद्ध । बेमल । निर्मल (को०) ।

विपोहना पु—सं० सं० [सं० पि + पोह] १. पाउना । सीपना ।
२. नाश करना । मिटाना । उ०—ज्याँ जग बसुधा को जो
जग तान विलाचन पाप विपाहे ।—कवच (शब्द०) ।
३. २० 'पाहना' ।

विप्यन पु—संज्ञा पुं० [सं० विपिन, प्रा० विपन, विपन] २० 'विपिन' ।
उ०—बगुन घेरि विप्यन मय मूलन मे मण्डिय । तब एक
एक रहि हवि पद विप्यन धरिय ।—पृ० रा०, १६७ ।

विप्य पु—संज्ञा पुं० [सं० विपन, प्रा० विपन] २० 'विपिन' । उ०—नगर
राद मय दरम कीर । विप्य मय मय कन माता माता ।
कार जातमय मति मय मोपि । देश म विप्य मय मुद्ध
बोपि ।—पृ० रा०, १६६६ ।

विप्र'—संज्ञा पुं० [सं०] १. गह्वर ।

विशेष—जो यजन, याजन आदि कर्म पूर्ण रीति से करता है वह विप्र है। विशेष दे० 'ब्राह्मण'।

२ पुरो हत। यज्ञ करानेवाला। ३ वेदमन्त्रों को जाननेवाला। कर्मनिष्ठ। स्तवन करनेवाला। स्तुतिपाठक। ४. शिरीष वृक्ष। सिरिस का पेड़। ५ अश्वत्थ। पापल का पेड़। ६ पापर का पौधा जो ओषध के काम में आता है। रेणुक। ७ भाद्रपद मास (क्र०)। ८ चद्रमा (क्र०)। ९ बुद्धिमान् व्यक्ति।

विप्र^२—वि० मेधावी। बुद्धिमान्।

विप्रक—सञ्ज्ञा पु० [स० विप्र + क (प्रत्यय)] निम्न ब्राह्मण। चूद्र वा कुत्सिन ब्राह्मण (क्र०)।

विप्रकर्ता—सञ्ज्ञा पु० [स० विप्रकर्तृ] वह जो विप्रकार करे। अपकार या तिरस्कार करनेवाला व्यक्ति (क्र०)।

विप्रकर्ष, विप्रकर्षण—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विप्रकृष्ट] १ दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २ किसी कर्म या कृत्य का अंत। ३ अंतर। दूरी। फासला (क्र०)। ४ बिलगाव। अलगव। भेद। फर्क (क्र०)।

विप्रकार^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विप्रकृत] १. तिरस्कार। अनादर। २ उकार। ३ विभिन्न या विविध प्रकार। अनेक ढंग (क्र०)। ४ प्रतिशोध। बदला (क्र०)। ५ क्षति। हानि (क्र०)।

विप्रकार^२—अव्य० विविध प्रकार से।

विप्रकारी—वि० [स० विप्रकारिन्] १ तिरस्कार करनेवाला। २. विरोधी। ३ बदला लेनेवाला (क्र०)।

विप्रकाष्ठ—सञ्ज्ञा पु० [स०] रमा या कपास का पौधा।

विप्रकीर्ण—वि० [स०] १ बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पड़ा हुआ। २ अस्त व्यस्त। अव्यवस्थित। गड़बड़। ३ चौड़ा। विस्तृत। फैला हुआ (क्र०)।

विप्रकुड—सञ्ज्ञा पु० [स० विप्रकुण्ड] ब्राह्मण की जारज सतान (क्र०)।
विप्रकृत—वि० [स०] १ तिरस्कृत। २. जिसकी हानि की गई हो (क्र०)।

विप्रकृति—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ विप्रकार। अपकार। २ परिवर्तन। भ्रमता। रद्दावदल (क्र०)।

विप्रकृष्ट^१—वि० [स०] १. खींचकर दूर किया हुआ। २ जो दूरी पर हो। दूरस्थ। ३ फँसाया हुआ। विस्तारित (क्र०)।

विप्रकृष्ट^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] किसी ऋतु में सूचित हुए कफ, पित्त आदि का अन्य ऋतु में कुपित होना। उ०—विप्रकृष्ट उसे कहते हैं जैसे हेमन्त ऋतु में सूचित हुआ कफ वसन्त ऋतु में कुपित होता है।—माधव०, पृ० ३।

विप्रकृष्टक—वि० [स०] दूरवर्ता। दूरस्थ। जो फासले पर हो (क्र०)।

विप्रगीत—वि० [स०] जिसके विषय में मतंक्षय न हो (जैन)।

विप्रग्रह—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्रह्मराक्षस (क्र०)।

विप्रचरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रचरन्—सञ्ज्ञा पु० [स० विप्रचरण] दे० 'विप्रचरण'। उ०—

(क) उर वनमाल पदित अति शोभित विप्रचरन्, चित कर्हं करपे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) उर मनि हार पदक का मोभा। विप्रचरन् देखत मन लाभा।—तुलसी (शब्द०)।

विप्रचित्—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'विप्रचिति'।

विप्रचित्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक दन्त जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु की उत्पत्ति हुई थी।

विप्रच्छेन्न—वि० [स०] छिपा हुआ। अतर्हित। प्रच्छन्न (क्र०)।

विप्रणाश—सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाश। नाश। प्रणाश (क्र०)।

विप्रता—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] ब्राह्मणत्व।

विप्रतापस—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण तन्मयी।

विप्रतारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] बहुत धोखा देनेवाला।

विप्रतारित—वि० [स०] जिसने धाखा खाया हो। जो छला गया हो (क्र०)।

विप्रतिकार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ खड्गन। विरोध। २ प्रतिकार। प्रातिशोध (क्र०)।

विप्रतिकृत—वि० [स०] जिसका विप्रतिकार किया गया हो। जिमका प्रातिशोध किया गया हो (क्र०)।

विप्रतिपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ विरोध। मेघ न बंटना। जौमे,—मनुष्यों के स्वाथ का विप्रतिपत्ति। (मिताक्षरा)। २ ऐसा कथन जिसके अंदर दो ऐसा बातें हो जाँ एक के साथ न हो सकती हो। परस्पर विरुद्ध वचन। (न्याय)।

विशेष—जौमे कोई कहे कि वहाँ आग्न है और नहीं है तो उसका यह कथन विप्रतिपत्ति का उदाहरण होगा।

३ किसी बात का विभक्त उलटा मतलब। किताबान में ऐसा नतीजा निकालना जो ठीक न हो। विप्रात प्रातिपत्ति। असिद्धि। उ०—उनमें विप्रतिपत्ति न हो, उनमें यथायथा हो।—पा० सा० १२०, पृ० १३२। ४. प्रासिद्धि का अभाव। अख्याति। ५ कुल्यते। बदनामी। ६. गलत धारणा। भ्रात धारणा (क्र०)। ७ परस्परक सबध। परिचय। जान पहचान (क्र०) ८ हैराना। घबड़ाहट (क्र०)। ९ चातुर्य। विदग्धता (क्र०)। १०. किसी कृत्य या पूजन का वह विप्राति जो प्रातिनाथ द्रव्य का नाम लेने से होता है।

विशेष—किसी कृत्य या पूजन में जो द्रव्य विहित है, उसके अभाव में यदि कोई दूसरा द्रव्य प्रातिनाथ रूप में रखा जाय, तो समर्पण वाक्य में प्रातिनाथ द्रव्य का नाम न लेकर जिसके अभाव में वह द्रव्य रखा गया हो, उसी का नाम कहना चाहिए। प्रातिनाथ द्रव्य का नाम लेने से पूजा विधुत हो जाती है।

विप्रतिपद्य—वि० [स०] १ जो अनेक प्रकार से सिद्ध किया जाय। अनेक ढंग में सिद्ध किया जानवाला। २ जिसका खड्गन या विरोध किया जाय (क्र०)।

विप्रतिपद्यमान—वि० [स०] पाप करनेवाला। पापात्मा।

विप्रतिपन्न—वि० [स०] १. विप्रतिपत्तियुक्त। सदेहयुक्त। २ अस्वीकृत। ३. जो साबित न हुआ हो। असिद्ध। ४. व्याकुल।

घबड़ाया हुआ। हतबुद्धि। किंकर्तव्यविमूढ (को०)। ५ परस्पर संयुक्त या संबद्ध (को०)।

यौ०—विप्रतिपन्न बुद्धि = जिसकी धारणा गलत हो।

विप्रतिषिद्ध—वि० [स०] १ जिसका निषेध किया गया हो। जो मना हो, निषिद्ध। (स्मृति)। २ विरुद्ध। खिलाफ। उलटा। ३ निगारित। वर्जित।

विप्रतिषेध—संज्ञा पुं० [स०] १ दो बातों का परस्पर विरोध, मेल न बैठना। २. नियंत्रण या वश में रखना (को०)। ३ प्रतिषेध। रोक। वर्जन (को०)। ४ व्याकरण में समान रूप से महत्वपूर्ण दो नियमों की एक स्थान पर उपस्थिति। जहाँ दो प्रसंग अन्वयार्थ एक साथ प्राप्त हो—यंत्र द्वौ प्रसंगान्वयाथौ एकस्मिन् प्राप्तुं स विप्रतिषेध (काशिका)।

विप्रतिसार—संज्ञा पुं० [स०] १. अनुताप। पछतावा। २. रोष। क्रोध। ३. दुष्टता।

विप्रतिसारी—वि० [स० विप्रतिसारिन्] दुखी। अनुतप्त (को०)।

विप्रतीप—वि० [स०] उलटा। प्रतिकूल (को०)।

विप्रतीसार—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'विप्रतिसार'।

विप्रत्यनीक, विप्रत्यनीयक—वि० [स०] शत्रुतापूर्ण। वैरभाव से युक्त (को०)।

विप्रत्यय—संज्ञा पुं० [स०] अविश्वास (को०)।

विप्रत्व—संज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मणत्व।

विप्रथित—वि० [स०] विख्यात। मशहूर।

विप्रदह—संज्ञा पुं० [स०] सूखा फल, कद, मूल आदि (को०)।

विप्रदुष्ट—वि० [स०] १ पापरत। २. कामी। ३. मद। नष्ट।

विप्रघर्ष—संज्ञा पुं० [स०] १ पीड़ा। वलेश। दुःख। २. विरक्ति। व्यग्रता (को०)।

विप्रघुक्—वि० [स०] लाभकारी। हितकर।

विप्रपद—संज्ञा पुं० [स०] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के वक्षस्थल पर माना जाता है। विप्रचरण।

विप्रपात—संज्ञा पुं० [स०] १ विशेष रूप से पतन। बिलकुल गिर जाना। २ ऊँचा ढलवाँ टीला। ३ खाई। ४ उड़ने की एक विशेष स्थिति या दग (को०)।

विप्रप्रिय—संज्ञा पुं० [स०] १ पलाश का वृक्ष। २ जमा हुआ और खट्टा दही (को०)।

विप्रवधु—संज्ञा पुं० [स० विप्रवधु] १ वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २. गोपायन गोत्रीय एक मन्त्रब्रह्मा ऋषि।

विप्रबुद्ध—वि० [स०] १ जागा हुआ। २ ज्ञानप्राप्त।

विप्रबोधित—वि० [स०] १ जिसकी चर्चा हो चुकी हो। जो विचारित हो। २ जगाया हुआ। प्रबोध किया हुआ।

विप्रमत्त—वि० [स०] जो अनवधान न हो। प्रमादरहित (को०)।

विप्रमना—वि० [स० विप्रमनस्] जिसका जी न लगता हो। अन्य-मनस्क। अनमना।

विप्रमाथी—वि० [स० विप्रमाथिन्] [वि० स्त्री० विप्रमाथिनी] १ खूब मथन करनेवाला। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ३ आकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

विप्रमुक्त—वि० [स०] १ निर्वध। स्वतंत्र। खुला हुआ। मुक्त। २. जिसपर लक्ष्य सधान किया गया हो। ३ रहित। मुक्त। (पमा-सात में प्रयुक्त) जैसे, भयविप्रमुक्त (को०)।

विप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [स०] मोक्ष। मुक्ति। (को०)।

विप्रमोच्य—वि० [स०] छोड़ने या मुक्त करने योग्य। जिसे मुक्त किया जाय (को०)।

विप्रमोह—संज्ञा पुं० [स०] नियमभंग। अपराध। श्रुति (को०)।

विप्रमोहित—वि० [स०] मुगध। मूढ़। हतबुद्धि (को०)।

विप्रयाण—संज्ञा पुं० [स०] १ भागना। पलायन। २. चलना। गमन। जाना।

विप्रयात—वि० [स०] १ गत। गया हुआ। प्रस्थित। २ पलायित। भागा हुआ (को०)।

विप्रयुक्त—वि० [स०] १ जो मिला न हो। विश्लिष्ट। विभिन्न। अलग। २ वियुक्त, विछड़ा हुआ। (मित्र या प्रिय से)। ३. वंचित। रहित। उ०—संघ से मैं विप्रयुक्त हूँ, इसलिये दुखी हूँ।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० १६। ४ मुक्त। छोड़ा हुआ। ५ जिसका विभाग हुआ हो।

विप्रयोग—संज्ञा पुं० [स०] [वि० विप्रयुक्त] १ वियोग। विरह। जुदाई। विप्रलभ। २ विसवाद। बुरा समाचार। ३. विच्छेद। अलग होना। ४ असहमति। कलह। मतभेद (को०)। ५ अनुकूलता। योग्यता। पात्रता (को०)। ६ अभाव (को०)।

विप्रयोगी—वि० [स० विप्रयोगिन्] विरही। वियुक्त (को०)।

विप्रयोजित—वि० [स०] वियुक्त, रहित वा मुक्त किया हुआ।

विप्रराम—संज्ञा पुं० [स०] परशुराम। उ०—चैरिन में विप्रराम, नीति माहि जदुराम, वृंदीनाथ राजाराम शील माहि राम है।—मतिराम (शब्द०)।

विप्रलभ—संज्ञा पुं० [स० विप्रलभ] १ अभिलषित वस्तु की अप्राप्ति। चाही हुई वस्तु का न मिलना। २ प्रिय का न मिलना। वियोग। जुदाई। विरह। अमिलन।

विशेष साहित्य में शृंगार रस दो प्रकार का कहा गया है—सभोग शृंगार विप्रलभ शृंगार। इन्हीं को सयोग और वियोग भी कहते हैं। विप्रलभ शृंगार में नायक नायिका के विरहजन्य सताप आदि का वर्णन होता है।

३ अलग होना। विच्छेद। ४. छल से किसी को किसी लाभ से वंचित करना। धोखा। छल। धूर्तता। वचना। ५ विरुद्ध कर्म, बुरा काम। ६ असहमति। कलह

वि० [स० विप्रलभ] धूर्त या धोखेवाज आदमी।

वि० [स० विप्रलभ] छल करना।

वि० [स० विप्रलभ] धोखेवाज। धूर्त।

विप्रलपित—वि० [स०] दे० 'विप्रलप्त'।

विप्रलप्त—वि० [स०] १ तर्क या विवाद से युक्त। विचारित। २ विलपित। विलाप किया हुआ।

विप्रलप्त^१—सञ्ज्ञा पु० १ तर्क। विवाद। २ विलाप।

विप्रलब्ध—वि० [स०] १ जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वंचित। निराश। २ जिसे प्रिय का समागम न प्राप्त हुआ हो। वियोगवशाप्राप्त। ३ जो छल द्वारा किसी लाभ से वंचित किया गया हो। प्रतारित। ४ हानि पहुँचाया हुआ। क्षतिग्रस्त (को०)।

विप्रलब्ध^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो संकेत स्थान में प्रिय को न पाकर निराश या दुःखी हो।

विप्रलब्ध—वि० [स०] विप्रलब्ध छलिया। धूर्त (को०)।

विप्रलय—सञ्ज्ञा पु० [स०] पूर्ण विनाश। विलय। प्रलय (को०)।

विप्रलाप—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ सारहीन वाक्य। व्यर्थ वकवाद। २. पारस्परिक वचन विरोध। विवाद। ३ भगडा। तू तू मैं मैं। ४ वृथा वचन। ५ प्रतिज्ञाभंग। वचनभंग। कही हुई बात से मुकर जाना (को०)।

विप्रलापी—वि० [स०] विप्रलापिन् विप्रलाप करनेवाला। व्यर्थ वकवाद करनेवाला। वकवादी (को०)।

विप्रलीन—वि० [स०] बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पड़ा हुआ। जैसे—विप्रलीन सैन्य = जिसकी सेना हारकर विच्छिन्न हो गई हो।

विप्रलुपक—सञ्ज्ञा पु० [स०] विप्रलुपक १ बड़ा लालची। अति लोभी। २. अपने लाभ के लिये लोगों को सनानेवाला। उत्पीडक। ३ छीनकर लेनेवाला। बलात् लूटनेवाला (को०)। ४ अधिक कर लेनेवाला।

विप्रलुप्त—वि० [स०] १ जो लूटा गया हो। अपहृत। २ जो गायब किया गया हो। जो उड़ा लिया गया हो। ३ जिसके कार्य में विघ्न पहुँचाया गया हो।

विप्रलून—वि० [स०] १ छिन्न किया या तोड़ा हुआ। २ एकत्रित। इकट्ठा। कथा हुआ (को०)।

विप्रलोक—सञ्ज्ञा पु० [स०] चिह्निया पकड़नेवाला। व्याध। शिकारी।

विप्रलोडित—वि० [स०] विलोडित या इतस्तत किया हुआ। वरवाद किया हुआ (को०)।

विप्रलोप—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विप्रलुप] १ पूर्णतः अदर्शन या लोप। २ घस। नाश।

विप्रलोपी—वि० [स०] विप्रलोपिन् तोड़नेवाला। नष्ट या लुप्त करनेवाला।

विप्रलोभी—सञ्ज्ञा पु० [स०] विप्रलोभिन् किंकिरात नामक वृक्ष, जो अशोक की तरह होता है (को०)।

विप्रवसित—वि० [स०] प्रवास के लिये गया हुआ। प्रवासगत (को०)।

विप्रवाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बुरे वचन। २ व्यर्थ वकवाद। ३. कलह। विवाद। भगडा।

विप्रवास—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विप्रवसित] १ विदेश में वास। परदेस में रहना। २ सन्यास आश्रम में एक अपराध जो अपने कण्ठे दूसरे को देने से होता है।

विप्रवासन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ देश से निकाल देना। २ प्रवासी होना। प्रवास में रहना (को०)।

विप्रवासित—वि० [स०] दूर किया हुआ। अपवारित या नष्ट किया हुआ। (पाप आदि)।

विप्रविद्ध—वि० [स०] जो प्रविद्ध किया गया हो। इधर उधर किया या मारा हुआ (को०)।

विप्रव्राजिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो दो पुरुषों से सवध रखे।

विप्रश्न—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्रश्निका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दैवज्ञ। ज्योतिषी स्त्री (को०)।

विप्रष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक यादव का नाम जो बलराम जी का छोटा भाई लगता था।

विप्रसन्न—वि० [स०] अत्यंत सुलु। बहुत अधिक खुश।

विप्रसारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] विस्तार करना। फैलाना।

विप्रस्थित—वि० [स०] प्रस्थान किया हुआ। गया हुआ।

विप्रहत—वि० [स०] १ मारा हुआ। २. पराजित किया हुआ। मदित। पराभूत।

विप्रहरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ त्याग। २ मुक्ति।

विप्रहाण—सञ्ज्ञा पु० [स०] लोप। अत (को०)।

विप्रहीण—वि० [स०] १ वंचित। निरस्त। २ लुप्त (को०)।

विप्राधिप—सञ्ज्ञा पु० [स०] शशि। चंद्रमा (को०)।

विप्रियकर—वि० [स०] विप्रियङ्कर अप्रिय काम करनेवाला (को०)।

विप्रिय^१—वि० [स०] १ अप्रिय। २ कटु। ३ अतिशय प्रिय। ४ वियोग।

विप्रिय^२—सञ्ज्ञा पु० अपराध। कसुर।

विप्रुट्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विप्रुप्। १. पानी की छोटी बूँद या छीटा। २ धूक का वह छोटा जो वेदपाठ करने में उड़ता है।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार ऐसा छोटा अपवित्र नहीं है।

३ चिह्न। विटु। धवग (को०)। ४ दृग्निपय। गोचर वस्तु (को०)।

विप्रुद्धोम—सञ्ज्ञा पु० [स०] विप्रुप् + होम एक प्रकार का पूजन जो यज्ञ के अवसर पर सोमप्राप्ति के लिये किया जाता था।

विप्रुष—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पानी की छोटी बूँद या छीटा। २ दे० 'विप्रुट्'। ३ पक्षी।

विप्रेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] विप्रेन्द्र वह जो ब्राह्मणों में मुख्य या प्रधान हो।

विप्रेक्षण, विप्रेक्षित—सञ्ज्ञा पु० [स०] चांगे ओर देखना (को०)।

विप्रेक्षिता—वि० [स०] विप्रेक्षित चारों ओर देखनेवाला (को०)।

विप्रेत—वि० [स०] १ गत। २. पैला या बिखरा हुआ (को०)।

विप्रोषित—वि० [सं०] १ प्रवास में गया हुआ । २ अनुपस्थित ।
३. पठाया हुआ वा निष्काषित (को०) ।

विप्रोषितभर्तृका—सच्चा स्त्री [सं०] वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी परदेश गया हो । प्रोषितभर्तृका ।

विप्लव^१—सच्चा पुं० [सं०] १ उपद्रव । हंगामा । अशांति और हल-
चल । २ राज्य के भीतर जनता की अशांति और उद्धत
आचरण । बलवा । ३ दूसरे राष्ट्र द्वारा उपस्थित अशांति ।
परचक्र भय । ४. उथल पुथल । अव्यवस्था । ५. आफत ।
विपत्ति । ६. विनाश । ७. शत्रु को डराने के लिये मचाया
हुआ शोरगुल । बौट उपट या भभकी । ८. नाव का डूबना ।
पोतभंग । ९. जल की बाढ़ । बहिया । १०. वेदों के अपूर्ण
ज्ञान द्वारा उनका अनादर । ११. घोड़े की बहुत तेज चाल ।
१२. बहना । इधर उधर प्रवाहित होना (को०) । १३. विरोध ।
वैपरीत्य (को०) । १४. आड़ने पर का घव्वा (को०) । १५.
पाप । दुष्टता (को०) ।

विप्लव^२ - वि० [सं०] प्लवरहित । पोतविहीन (को०) ।

विप्लवक—वि० [सं०] विप्लव करनेवाला (को०) ।

विप्लवी—वि० [सं०] विप्लविन् १ अस्थिर । नश्वर । २ विप्लव या
विद्रोह करनेवाला । (को०) ।

विप्लाव—सच्चा पुं० [सं०] १. पानी की बाढ़ । बहिया । २. घोड़े की
बहुत तेज चाल । ३. विप्लव । उपद्रव (को०) ।

विप्लावक—वि० [सं०] १ विप्लवकारी । उपद्रव मचानेवाला । २
राज्य में उपद्रव खड़ा करनेवाला । बलवाई । ३. जल की बाढ़
लानेवाला ।

विप्लावन—सच्चा पुं० [सं०] निदनीय वचन । अपशब्द (को०) ।

विप्लावित—वि० [सं०] १. बहाया हुआ । २. नष्ट किया हुआ । ३.
व्यग्रता में फँका हुआ (को०) ।

विप्लावी—सच्चा पुं० [सं०] विप्लाविन् [स्त्री० विप्लाविनी] १. उपद्रव
करनेवाला । २. जल की बाढ़ लानेवाला ।

विप्लुट्—सच्चा स्त्री० [सं०] विप्लुप् १ जलसीकर । २ स्फुलिंग ।
चिनगारी । ३. कण । ४. निशान । घव्वा । विदो (को०) ।

विप्लुत^१—सच्चा पुं० [सं०] विस्फोट । स्फोट (को०) ।

विप्लुत^२—वि० [सं०] १. छितराया हुआ । बिखरा हुआ । २. घबराया
हुआ । आकुल । ३. क्षुब्ध । व्यग्र । दुखी । ४. भ्रष्ट ।
पतित । ५. नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत । ६. व्यसन के
कारण किसी वस्तु के अभाव में व्याकुल । व्यसनार्त । ७. इधर
उधर बहा हुआ (को०) । ८. डूबा हुआ । निमग्न । बाढग्रस्त
(को०) । ९. विध्वस्त । उजड़ा हुआ (को०) । १०. अपमानित ।
अनादृत (को०) । ११. नष्ट । बरबाद (को०) । १२. तिरोहित ।
विलुप्त (को०) । १३. विपरीत । उलटा (को०) । १४. असत्य ।
मिथ्या । झूठा (को०) ।

विप्लुतनेत्र, विप्लुतलोचन—वि० [सं०] हर्ष, शोक आदि के कारण
जिसकी आँखें अश्रुपूरित हो । (को०) ।

हि० श० ९-२१

विप्लुतभापी—वि० [सं०] विप्लुतभाषिन् तुलनाकर या हकलाकर
बोलनेवाला । (को०) ।

विप्लुतयोनि—सच्चा स्त्री० [सं०] एक स्त्रीगण । १० 'विप्लुत' (को०) ।

विप्लुता—सच्चा स्त्री० [सं०] स्त्रियों की एक व्याधि जिसमें उनकी
योनि में नित्य पीड़ा रहती है ।

विप्लुति—सच्चा स्त्री० [सं०] १ विप्लव । हलचल । उपद्रव । २. हानि ।
क्षति । (को०) ।

विप्लुप्—सच्चा पुं० दे० 'विप्लुट्' ।

विप्लुष्ट—वि० [सं०] झुलसा या जला हुआ (को०) ।

विप्सा—सच्चा स्त्री० [सं०] वीप्सा दे० 'वीप्सा' ।

विफल—वि० [सं०] १ जिसमें फल न लगता या लगा हो । फल-
रहित । २—भुरली सुनत अचल चले । द्रवित हूँ जल
भरत पाहन विफल वृक्ष फले ।—सूर (शब्द०) । २. जिसका
कुछ परिणाम न हो । जिसका कुछ नतीजा न हो । जिससे
कुछ सिद्धि न प्राप्त हो । निष्फल । व्यर्थ । बेफायदा । जैसे,—
कोई प्रयत्न विफल होना, विफलमनोरथ होना । ३. जिसके
प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो । अकृतकार्य । नाकाम-
याब । ४. हताश । निराश । ५. अङ्कोशरहित । ६. प्रभाव-
रहित । जिसका कुछ असर न हो (को०) ।

विफलता—सच्चा स्त्री० [सं०] कार्य की सिद्धि न होना । असफलता ।

विफला^१—वि० स्त्री० [सं०] १ बिना फल की । जिसमें फल न लगे ।
२. जिसका कुछ परिणाम न निकले । ३. जो प्रयत्न में कृतकार्य
न हुई हो ।

विफला^२—सच्चा स्त्री० केतकी ।

विफाक—सच्चा पुं० [अ०] विफाक १ सध । २ अनुकूलता । ३.
दोस्ती । मित्रता (को०) ।

विवध—सच्चा पुं० [सं०] विवन्ध १ विशेष रूप से वधन । खूब जक-
डना । २. आनाह । रोग (अफरा) का एक भेद जिसमें खाए
हुए पदार्थ का बिना पचा रस मल रूप में पेट में रुका रहता
है और दस्त नहीं होता । ३. एक प्रकार की पट्टी । विवधन ।

विवधन—सच्चा पुं० [सं०] निवन्धन पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या
फोड़े को कपड़े से विशेष रूप से बाँधने की युक्ति या क्रिया ।
(सुश्रुत) ।

विवधवर्ति—सच्चा स्त्री० [सं०] विवन्धवर्ति घोड़ों का एक रोग जिसमें
उनका पेशाब बंद हो जाता है तथा पेट और नाडियों में जक-
डने की सी पीड़ा होती है ।

विवधहृत्—वि० [सं०] विवध को दूर करनेवाला ।

विवधु—वि० [सं०] वि + वधु १ बहुवृद्धित । जिसके भाई वधु न
हो । २. पितृहीन । अनाथ ।

विवद्ध—वि० [सं०] पूर्णतया बँधा हुआ (को०) ।

विदल—वि० [सं०] १ बलरहित । ३. कमजोर । दुर्बल । अशक्त । ३.
विशेष बली । अधिक ताकत रखनेवाला ।

विवाध'—वि० [स०] वाधारहित । कष्टरहित ।

विवाध'—सञ्ज्ञा पु० [स०] दूर करना । हटा देना [को०] ।

विवाधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कष्ट । व्यथा । पीडा [को०] ।

विवाहु—वि० [स०] वाहुरहित । भुजाविहीन [को०] ।

विवुक्—सञ्ज्ञा पु० [स०] मल्लि से उत्पन्न वैश्य का पुत्र [को०] ।

विवुद्ध—वि० [स० वि + बुध] १ जाग्रत । जगा हुआ । २ विकसित । खिला हुआ । ३ ज्ञानप्राप्त । सचेत । ४. कुशल । चतुर [को०] ।

विवुध—सञ्ज्ञा पु० [स० वि + बुध] १ पंडित । बुद्धिमान् । २ देवता । ३ चंद्रमा । ४ एक राजा का नाम । ५ शिव । महादेव ।

विवुधगुरु—सञ्ज्ञा पु० [स०] बृहस्पति [को०] ।

विवुधतटिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ देवताओं की नदी, आकाशगंगा । २ गंगा, देवनदी ।

विवुधतरु—सञ्ज्ञा पु० [स०] कल्पवृक्ष ।

विवुधद्विट्—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवताओं के शत्रु । असुर [को०] ।

विवुधधेनु—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कामधेनु ।

विवुधनदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गंगा । देवापगा [को०] ।

विवुधपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवताओं का राजा, इंद्र ।

विवुधप्रिया—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ देवी । भगवती । २. अप्सरा । ३ एक वर्णवृत्त ।

विवुधवेलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कल्पलता । उ०—रूपा सुधा सीची विवुधवेलि ज्यौं फिरि सुख फरनि फरी ।—तुलसी (शब्द०) ।

विवुधरिपु—सञ्ज्ञा पु० [स०] असुर [को०] ।

विवुधवन—सञ्ज्ञा पु० [स० विवुध + वन] इंद्र का उद्यान । नदन कानन ।

विवुधविलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ देवागना । देवता की स्त्री । २ स्वर्ग की वेश्या । अप्सरा । उ०—सकल सुआसिनी गुरुजन प्ररजन पाहुने लोग । विवुधविलासिनी सुर मुनि जाचक जो जेहि जोग—तुलसी (शब्द०) ।

विवुधवैद्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] विवुधवैद्य, अश्विनीकुमार ।

विवुधवैद्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार ।

विवुधशत्रु—सञ्ज्ञा पु० [स०] दैत्य । असुर [को०] ।

विवुधसद्य—सञ्ज्ञा पु० [स० विवुधसद्यन्] सुरलोक । स्वर्ग [को०] ।

यौ०—विवुधसद्यस्त्री = अप्सरा । देवागना ।

विवुधाचार्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवों के आचार्य, बृहस्पति [को०] ।

विवुधाधिप—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवताओं के राजा, इंद्र ।

विवुधाधिपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवराज । इंद्र [को०] ।

विवुधान—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पंडित । बुद्धिमान । विज्ञ । आचार्य । शिक्षक । २ देवता ।

विवुधानुचर—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवसेवक । देवोपासक [को०] ।

विवुधापगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] देवताओं की नदी, आकाशगंगा ।

विवुधावास—सञ्ज्ञा पु० [स० विवुध + आवास] १ देवताओं का निवास-स्थान, स्वर्ग । २ देवमंदिर ।

विवुधेन्द्र—सञ्ज्ञा पु० [स० विवुधेन्द्र] इंद्र [को०] ।

विवुधेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] इंद्र । देवराज [को०] ।

विवुभूषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आत्माभिव्यक्ति इच्छा या कामना [को०] ।

विवोध—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ जागरण । जागना । २ एक सचारी भाव । उ०—चित्ता मोह मुपन विवोध स्मृति अमर्ष गर्व उत्तमुक्तासु अवहित्थ ठानिस ।—पद्माकर (शब्द०) ।

विशेष—दे० साहित्यदर्पण के अनुसार 'विवोध कार्य मार्गणम्' अर्थात् कार्य का अन्वेषण विवोध कहा जाता है । साहित्य के रसविधान में विवोध सचारी या व्यभिचारी भावों में से एक है । २ मम्यक् बोध । अर्द्धा ज्ञान । ३ सचेत होना । जागना । सावधान होना । ४ होश में आना । ५ विकास । प्रफुल्लता । ६ बुद्धि । प्रतीक्षा [को०] । ७ प्रमाद । अनवधानता [को०] । ८ एक पक्षी का नाम [को०] ।

विवोधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० विवोधित] १ जगाना । प्रवोधन । २ ज्ञान कराना । आँख खोलना । ३ जगना । जागृत होना । ४. समझाना बुझाना । ढाढस देना ।

विवोधित—वि० [स०] १ जगाया हुआ । २ ज्ञापित । जताया हुआ । बतलाया हुआ । ३ खिनाया या प्रफुल्लित किया हुआ । विकसित ।

विब्वोक—सञ्ज्ञा पु० दे० 'विब्वोक' [को०] ।

विभगी—सञ्ज्ञा पु० [स० विभङ्ग] १. विन्यास । गठन या रचना । २ दृटना । ३ विभाग । ४ क्रम या परपरा का दृटना । ५ भ्रमण । भौं की चेष्टा । ६ मुख का भाव या चेष्टा । ७ ठठाना । अवरोध । पडाव [को०] । ८ शिकन । झुर्री [को०] । ९ सोपान । सीढ़ी [को०] । १० फूट पडना । प्रकट होना [को०] । ११ तरंग । लहर [को०] ।

विभग'—वि० चपल । उ०—विमल विपुल वहमि वारि सीतल भय वाप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका ।—तुलसी (शब्द०) ।

विभगि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विभङ्गि] १ अनुकृति । २ भगिमा । भगी । [को०] ।

विभगी—वि० [स० विभङ्गिन्] १ कपनधर्मा । कपनशील । २ जिस-पर झुरियाँ पड़ी हो [को०] ।

विभगुर—वि० [स० विभङ्गुर] लोल । अस्थिर (दृष्टि) ।

विभज—वि० [स० वि + भज्] १ दृटना । फूटना । २ नाश । ध्वम ।

विभक्त'—वि० [स० वि + √भज् + क्त (प्रत्य०)] १ बंटा हुआ । विभाजित । २ अलग किया हुआ । पृथक् किया हुआ । ३ जो अपने पिता की संपत्ति से अपना भाग पा चुका हो और अलग हो । ४ विभिन्न । विविध [को०] । ५ सेवानिवृत्त । एकांतवासी [को०] । ६ नियमित [को०] । ७ विभूषित । अलंकृत [को०] । ८ मापा हुआ [को०] ।

विभक्त'—सञ्ज्ञा पु० १ कांतिकेय । २ एकांतवास । ३ अलगाव । पार्थक्य । ४ भाग । हिस्सा । ५ संपत्ति जो विभाजित की हुई हो । विभक्त संपत्ति ।

विभक्तज—सङ्घा पु० [सं०] वह बालक जो भाइयो या हिस्सेदारों में संपत्ति का विभाजन हो जाने पर जन्मा हो [को०] ।

विभक्ता—वि० [सं० विभक्तृ] १ हिंसा बाँटनेवाला । विभक्त करनेवाला । २ प्रवचक [को०] ।

विभक्ति—वि० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव । विभाग । बाँट । २ अलग होने की क्रिया या भाव । अलगाव । पार्थक्य । ३ उत्तराधिकार में मिली हुई संपत्ति या हिस्सा [को०] । ४. व्याकरण में शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है । उ०—एक ही प्रत्यय अथवा विभक्ति के योग से निष्पन्न धातु, शब्द, प्रत्यय या विभक्ति में निर्दिष्ट क्रमानुसार संव्यवस्थितियों में परिवर्तन हो जाता है ।—भोज० भा० सा०, पृ० १० ।

विशेष—संस्कृत व्याकरणानुसार नाम या सङ्ज्ञाशब्दों के बाद लगनेवाले वे प्रत्यय जो नाम या सङ्ज्ञाशब्दों को पद (वाक्य प्रयोगार्ह) बनाते हैं और कारक परिणति के द्वारा क्रिया के साथ संबंध सूचित करते हैं । प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियाँ हैं जिनमें एकवचन, द्विवचन, बहुवचन—तीन वचन होते हैं । पाणिनीय व्याकरण में इन्हें 'सुप' आदि २७ विभक्ति के रूप में गिनाया गया है । संस्कृत व्याकरण में जिसे 'विभक्ति' कहते हैं, वह वास्तव में शब्द का रूपांतरित अंग होता है । जैसे,—रामेण, रामाय इत्यादि । आजकल की प्रचलित खड़ी बोली में इस प्रकार की विभक्तियाँ प्रायः नहीं हैं, केवल कर्म और संप्रदान कारक के सर्वनामों में विकल्प से आती हैं । जैसे,—मुझे, तुझे, इन्हें इत्यादि । संस्कृत में विभक्तियों के रूप शब्द के अत्यंत अक्षर के अनुसार भिन्न भिन्न होते हैं । पर यह भेद खड़ीबोली के कारकों में नहीं पाया जाता, जिसमें शुद्ध विभक्तियों का व्यवहार नहीं होता, कारकचिह्नों का व्यवहार होता है ।

विभग्न—वि० [म० वि + भग्न] १ टूटा फूटा हुआ । २ जो जुदा हो । अलग हुआ । छिन्न ।

विभचार^(१)—सङ्घा पु० [सं० व्यभिचार] दे० 'व्यभिचार' । उ०—आचार धर्म नहि सुद मन विवि विचार विभचार धन ।—पृ० रा०, २५ । १२६ ।

विभच्छ^(२)—सङ्घा पु० [सं० विभत्स, प्रा० विभच्छ] दे० 'विभत्स' । उ०—भरौ सिंगार, विभच्छ, भय सात सुअद्भुत नार । कहरा वीर रुद्र, हास रस, नव रस उक्त निहार ।—रघु० रू०, पृ० ४६ ।

विभज—सङ्घा पु० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक बड़ी सख्या, [को०] ।

विभजन—सङ्घा पु० [सं०] भेद । अंतर । पार्थक्य [को०] ।

विभजनीय—वि० [सं०] विभक्त करने योग्य [को०] ।

विभज्य^१—वि० [सं०] १. जिसका विभाग करना हो । २ जिसका भेद दिखाना हो [को०] ।

विभज्य^२—क्रि० वि० विभाग करके । खंड खंड करके ।

विभय^१—सङ्घा पु० [सं०] भय से छुटकारा । भय से मुक्ति ।

विभय^२—वि० निर्भय [को०] ।

विभव—सङ्घा पु० [सं०] १ धन । संपत्ति । २ ऐश्वर्य । शक्ति । उ०—भव भव विभव पराभव कारिनि ।—तुलसी (शब्द०) ।

३. औदार्य । ४. बहुतायत । आधिक्य । ५. मोक्ष । जन्ममरण से छुटकारा । ६. साठ सवत्सरो में से छत्तीसवाँ सवत्सर । ७. सन्नत अवस्था । पद । प्रतिष्ठा [को०] । ८. महत्ता [को०] । ९. पालन । रक्षण [को०] । १०. प्रलय (बौद्ध) । ११. संगीत में एक ताल [को०] ।

विभवराशि—सङ्घा स्त्री० [सं० विभव + राशि] धनराशि । संपत्ति का ढेर । उ०—विश्व की विभव राशि, और ये प्रणत वही गुर्जर महीप भी ।—लहर, पृ० ७७ ।

विभववान्—सङ्घा स्त्री० [सं० विभववत्] [स्त्री० विभववती] १ विभववाला । धनी । दौलतमंद । २ शक्तिशाली ।

विभवशाली—वि० [सं० विभवशालिन्] [वि० स्त्री० विभवशालिनी] १. विभववाला । २. प्रतापवाला । ऐश्वर्यवाला ।

विभववी—वि० [सं० विभविन्] ऐश्वर्यवान् । प्रतापी [को०] ।

विभाडक—सङ्घा पु० [सं० विभाण्डक] एक ऋषि जो ऋग्वेद ग के पिता थे ।

विभाडिका—सङ्घा स्त्री० [सं० विभाण्डिका] आहुत्य वृक्ष ।

विभाडी—सङ्घा स्त्री० [सं० विभाण्डी] नीली अपराजिता । विष्णुक्रांता लता ।

विभांति^१—सङ्घा स्त्री० [सं० वि + हिं भांति] प्रकार । भेद । किस्म ।

विभांति^२—वि० अनेक प्रकार का ।

विभांति^३—अव्य० अनेक प्रकार से ।

विभा—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ प्रभा । काति । चमक । २ किरण । रश्मि । ३. शोभा । सुदरता ।

विभाइ पु०—सङ्घा पु० [सं० विभाव] दे० 'विभाव' । उ०—रस दारुण भय सवरिग । घोर गंभीर विभाइ ।—पृ० रा०, ६१ । २८८ ।

विभाकर—सङ्घा पु० [सं०] १ प्रकाशवाला । २ सूर्य । उ०—तिमिर प्रसित सब लोक ओरु लखि दुखित दयाकर । प्रगट कियो अद्भुत प्रभाउ भागवत विभाकर ।—नद० ग्रं०, पृ० ४ । ३. आक का पीघा । मदार । ४ चित्रक । चीते का पेड़ । ५ अग्नि । ६ राजा । ७. चंद्रमा का वह अंश जो सूर्य के प्रकाश से दीप्त होता है ।

विभाग—सङ्घा पु० [सं०] १. बाँटने की क्रिया या भाव । किसी वस्तु के कई भाग या हिस्से करना । बाँटवारा । तकसीम । जैसे,—संपत्ति का विभाग ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

२. कई वर्गों या खंडों में विभक्त वस्तु का एक एक खंड या वर्ग । भाग । अंश । हिस्सा । बखरा । ३. पतृक संपत्ति का कोई अंश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय । हिस्सा । बखरा । ४. प्रकरण । अध्याय । जैसे,—ग्रंथ का विभाग । ५. कार्यक्षेत्र । मुहकमा । जैसे,—शिक्षा विभाग । ६. व्यवस्था । प्रवच । इतजाम [को०] । ७. गणित में भिन्न का अंश [को०] । ८. न्यायशास्त्र के अनुसार २४ गुणों में से एक का नाम ।

यौ०—विभागकल्पन = हिस्सा या अंश नियन करना (याज्ञवल्क्य स्मृति) । विभागज्ञ = अंतर को जाननेवाला । विभाग को समझनेवाला । विभागधर्म = दायभाग की विधि । बाँटवारा

सबधी नियम कानून । विभागपत्रिका = विभाजन का दस्तावेज । वह कागज जिसपर विभाग का विवरण दर्ज हो । विभागभाक्, विभागभाज् = पहले से बँटी हुई संपत्ति का हिस्सेदार । विभाग पानेवाला । विभागरेखा = विभाजन की रेखा । दो हिस्सों का अलग-अलग सूचित करनेवाला चिह्न या निशान ।

विभागक — सङ्घ पुं० [सं०] १ व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति । २ हिस्से बाँटनेवाला [को०] ।

विभागत — क्रि० वि० [सं० विभागतस्] विभाग के अनुसार । हिस्से के मुताबिक ।

विभागश — क्रि० वि० [सं० विभागशस्] विभाग के अनुसार ।

विभागात्मक नक्षत्र सङ्घ पुं० [सं०] रोहणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र ।

विभागाध्यक्ष — सङ्घ पुं० [सं० विभाग + अध्यक्ष] विभाग (अं डिपार्टमेंट) का प्रधान अधिकारी या अध्यक्ष जैसे, हिंदी विभागाध्यक्ष ।

विभागी — सङ्घ पुं० [सं० विभागिन्] [स्त्री० विभागिनी] १ विभाग करनेवाला । २ विभाग या हिस्सा पानेवाला । हिस्सेदार ।

विभाजक^१ — सङ्घ पुं० [सं०] १ विभाग करनेवाला । बाँटनेवाला । २ गणित में वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को भाग दें । भाजक ।

विभाजक^२ — वि० विभाग या विच्छेद करनेवाला ।

विभाजन — सङ्घ पुं० [सं०] [वि० विभाजनीय, विभाजित, विभाज्य] १ विभाग करने की क्रिया या भाव । बाँटने का काम । २ पात्र । वरतन ।

विभाजयिता — वि० [सं० विभाजयितृ] विभाजन करनेवाला [को०] ।

विभाजित — वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो । जो बाँटा गया हो । जिसके खंड या हिस्से किए गए हो ।

विभाज्य — वि० [सं०] १ विभाग करने योग्य । २. जिसका विभाग करना हो । जिसे बाँटना हो । ३ (सख्या) जिसे किसी सख्या से बाँटना हो । भाज्य (गणित) ।

विभाड^७ — वि० [प्रा० विभाड] नाशक । नाश करनेवाला । उ०—वेमग राइ दारिद विभाड । अचगल्ल राइ जाडा उपाड ।—पृ० रा०, ५७।१६२ ।

विभात — सङ्घ पुं० [सं०] सवेरा । प्रभात ।

विभाति — सङ्घ पुं० [सं० विभा] दीप्ति । शोभा । सुंदरता ।

विभाती — सङ्घ स्त्री० [सं०] पौ फटना । प्रभात । सुबह (को०) । ७ २ दीप्ति । शोभा । विभाति । उ०—और वनिता की ओर भूलेहूँ न देहो मन तुम जो कहत आए सोह सीरी ताती मे । ताको अब करिवो निवाह सो देखाऊँ तुम्हें रघुनाथ देखो देह आपनी विभाती मे ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

विभाना^७ — क्रि० अ० [सं० विभा + ना (प्रत्य०)] १. चमकना । झलकना । २ शोभा पाना । शोभित होना । उ०—मनु फुल्ल कमल के मधि कठी सतगुन लता विभाति है ।—गापाल (शब्द०) ।

विभारना^७ — क्रि० अ० [हिं० विभाना या सं० वि० + १/भ्राज्] चमकना । झलकना । उ०—रयाम वरन पट अरुन विभारै । रवि सम तेज सुलच्छन धारै ।—पद्माकर (शब्द०) ।

विभाव — सङ्घ पुं० [सं०] साहित्य में वह वस्तु जो रति आदि स्थायी भावों को आलवन में उत्पन्न करनेवाली या उदीप्त करनेवाली हो । रसविधान में भाव का आलवन या विभावक या उद्दीपक । उ०—इसी भाव (प्रेम) के विवेक प्रकार के आलवनो और उद्दीपनो का चित्रण इस भूमि के विभाव पद में पाया जाता है ।—रस०, पृ० ७४ ।

विशेष — विभाव दो कहे गए हैं—आलवन और उद्दीपन । आलवन वह है जिसके प्रति आश्रय या पात्र के हृदय में कोई भाव स्थित हो । जैसे नायक के लिये नायिका और नायिका के लिये नायक । उद्दीपन वह है जिससे आलवन के प्रति स्थित भाव उद्दीप्त या उत्तेजित हो । रसभेद से आलवन और उद्दीपन भिन्न भिन्न होंगे । जैसे, शृंगार में आलवन होंगे नायक नायिका, हास में कोई बढगी आकृति या चारणी आदि वाला व्यक्ति, करुण में विनष्ट वधु आदि या कोई पीड़ित अथवा शाचनीय व्यक्ति इत्यादि, इत्यादि । इस प्रकार उद्दीपन भा रसभेद से भिन्न होंगे । जैसे, शृंगार में चाँदनी, फूल आदि, रौद्र में आलवन की दुष्ट चेष्टा इत्यादि ।

२ मित्र । परिचित व्यक्ति (को०) । ३. कोई भी उत्तेजक दशा, अवस्था या स्थिति जिससे भावों का उद्दीपन हो (को०) । ४ शिव का एक नाम (को०) ।

विभावक — वि० [सं०] १ वह करनेवाला । २ प्रकट करनेवाला । व्यक्त करनेवाला ३. सपादक । सघटित करनेवाला (को०) ।

विभावन — सङ्घ पुं० [सं०] [वि० विभावनीय] १. विशेष रूप से चिंतन । विचार । विमर्श । २. साहित्य के रसविधान में वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र में प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणोत्तरण द्वारा भागी होता है, विभावन व्यापार उ०—पर विभावन द्वारा जब वस्तुप्रतिष्ठा पूर्ण रूप से हो ले तब आगे कुछ और होना चाहिए ।—रस०, पृ० ११६ । ३. स्पष्ट ज्ञान या निश्चय । विवेक । निर्णय (को०) । ४. प्रत्यय । कल्पना (को०) । ५. विकास । प्रसार (को०) । ६ पालन । रक्षण (को०) । ७ देखना । अवलोकन । दर्शन (को०) । ८ दिखाना । अभिव्यक्ति ।

विभावना — सङ्घ स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें (क) कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या (ख) अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या (ग) प्रतिबंध होते हुए भी कार्य की सिद्धि या (घ) जो जिस कार्य का कारण नहीं हुआ करता, उससे उस कार्य का उत्पत्ति अथवा (ङ) विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति या (च) कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई जाती है । उ०—(क) सुनत लखत श्रुति नैन बिनु, रसना बिनु रस लेत । (ख) राजकुमार सरोज से हाथन सो गहि शत्रु शरासन तोड्यो । (ग) तब बेनी नागिनि रहै, बाँधी गुनन बनाय । तब बाम अजचद को बदावदी डसि जाय । (घ) कारे घन उमड़ि अगारे

वसत है। (ड) अग्निधार स्रवत सुधाकर बिलोकिए। (च) और नदी नदन तें कोकनद होत तेरो कर कोकनद नदी नद प्रगटत है।

विभावनीय—वि० [स०] भावना या चिंतन करने योग्य।

विभावर—वि० [स०] उज्ज्वल। प्रदीप्त [को०]।

विभावरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. रात्रि। रात। २. वह रात जिसमें तारे चमकते हो। ३. हरिद्रा। हल्दी। ४. कुटुनी। कुटनी। दूती। ५. टेढी स्त्री। चाल की औरत। ६. मुखरा स्त्री। बहुत बड़ बड़ करनेवाली स्त्री। ७. मेदा वृद्ध। ८. प्रचेतसु की नगरी का नाम। ९. वेश्या। गणिका [को०]। १०. एक प्रकार का वृत्त [को०]।

विभावरीकात—सञ्ज्ञा पुं० [स० विभावरीकान्त] निशापति। चद्रमा। रजनीकात [को०]।

विभावरीमुख—सञ्ज्ञा पुं० [स०] संव्या [को०]।

विभावरीश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] निशापति। चद्रमा।

विभावसु—वि० [स० विभावसु] दे० 'विभावसु'। उ०—हरि हरन-छिछ सुअछिछ बछिछ वर जछिछ विभावसु।—पृ० रा०, २।१४४।

विभावसु—वि० [स०] जिसमें प्रकाश की अधिकता हो। अधिक प्रभावाला।

विभावसु—सञ्ज्ञा पुं० १. वसुओं के एक पुत्र। २. सूर्य। ३. आका का पौधा। अर्क। मदार। ४. अग्नि। ५. चित्रक वृद्ध। चीता। ६. चंद्रमा। ७. एक प्रकार का हार। ८. एक दानव जो नरकासुर का पुत्र था। ९. एक ऋषि का नाम। (महाभारत)। १. एक गधर्व जिसने गायत्री से वह सोम छीना था, जो वह देवताओं के लिये ले जा रही थी।

विभावाश्रित—वि० [स०] विभाव पर आदधृत वस्तु पर आश्रित। उ०—जो भावपक्ष को महत्व देते हुए भी उसे विभावाश्रित देखना चाहती है।—आचार्य०, पृ० २२।

विभावित—वि० [स०] १. चिंतन किया हुआ। सोचा या विचारा हुआ। २. कल्पित। अनुमित। सकेतित। ३. निश्चित। ४. स्वीकृत। मजूर किया हुआ। ५. व्यक्त वा स्पष्ट किया हुआ। प्रकटीकृत [को०]। ६. सिद्ध। सर्वसमत [को०]।

विभावी—वि० [स० विभाविन्] १. भाव जाग्रत करनेवाला। २. व्यक्त करनेवाला। ३. शक्तिमान् [को०]।

विभाव्य—वि० [स०] १. अनुभव किया जाने योग्य। २. विवेच्य। ३. ध्यान देने योग्य [को०]।

विभाषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. संस्कृत व्याकरण में वह स्थल जहाँ ऐसे वचन मिलते हैं कि 'ऐसा न होगा' तथा 'ऐसा हो भी सकता है'। विकल्प। २. किसी व्यापक साहित्यभाषा क्षेत्र के अंतर्गत अन्य साहित्यिक प्रतिष्ठाप्राप्त भाषा—उ०—ब्रजभाषा हिंदी की विभाषा है। ३. बोली। किसी प्रधान भाषा के भीतर आनेवाली ज०भाषा [को०]। ४. एक रागिनी [को०]। ५. (बौद्ध) वृहत्कारिका [को०]।

विभाषित—वि० [स०] वैकल्पिक। विकल्प से होनेवाला [को०]।

विभास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. चमक। तेज। २. एक राग जो सवेरे के समय गाया जाता है। इसे कुछ लोग भैरव राग का ही भेद मानते हैं। उ०—अशब्द हो गई वीणा, विभास बजता था।—बेला, पृ० २६। ३. तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार सप्तपियों में से एक। ४. मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक देवयोनि। ५. सात सूर्यों में से एक सूर्य [को०]।

विभासक—वि० [स०] [वि० स्त्री० विभासका] १. चमकनेवाला। प्रकाशयुक्त। २. चमकानेवाला। झलकानेवाला। ३. प्रकाशित करनेवाला। प्रकट या व्यक्त करनेवाला। जाहिर करनेवाला।

विभासना—वि० [स० विभास + हिं० ना (प्रत्य०)] चमकना। झलकना।

विभासा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चमक। दीप्ति। प्रभा [को०]।

विभासिका—वि० स्त्री० [स०] चमकानेवाली। दीप्त करनेवाली। उ०—कचनधाम अकास विभासिका।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २८१।

विभासित—वि० [स०] १. प्रकाशित। दीप्त। चमकता हुआ। २. प्रकट। जाहिर।

विभित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० उ० वि + √भिद (=विदारण)] १. काटकर पृथक् करना। भेदना। २. टुकड़े टुकड़े करना [को०]।

विभिदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भेद। अंतर [को०]।

विभिन्न—वि० [स०] १. छिदा हुआ। बँटा हुआ। काटकर अलग किया हुआ। २. विलकुल अलग। पृथक्। जुदा। ३. अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४. मिश्रित। मिला हुआ [को०]। ५. और का और किया हुआ। उलटा। ६. हताश। निराश। ७. हैरान। परेशान। व्याकुल [को०]। ८. इधर उधर घूमा हुआ [को०]। ९. प्रकाशित। प्रदर्शित [को०]। १०. जो विश्वास करने योग्य न हो। अविश्वसनीय। अविश्वसित [को०]। ११. विरोधी [को०]।

विभिन्न^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

विभिन्नता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विभिन्न होने का भाव। भेद। पार्थक्य। अलगाव। फर्क।

विभी—वि० [स०] निर्भय। अभीत। विगतभय। बेडर [को०]।

विभीत^१—[स०] [वि० स्त्री० विभीता] डरा हुआ। उ०—वे परंपरा-प्रेमी, परिवर्तन से विभीत, ईश्वर परोक्ष से ग्रस्त, भाग्य के दास क्रीत।—ग्राम्या, पृ० ६१।

विभीत^२—सञ्ज्ञा पुं० विभीतक। बहेड़ा।

विभीतक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बहेड़ा। बहेड़े का वृद्ध।

विभीतकी, विभीता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बहेड़ा [को०]।

विभीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. डर। भय। २. शका। संदेह। उ०—नहिं तोरिहै राम शिव को धनु यह विभीति परिहरहु।—रघुराज (शब्द०)।

विभीषक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] डरानेवाला। भयानक।

विभीषण^१—वि० [स०] बहुत डरावना। बहुत भयानक।

विभीषण—सखा पु० १ एक राजस जो रावण का भाई था और रावण के मारे जाने पर राम द्वारा लका का राजा बनाया गया था ।

विशेष—यह विश्रवा मुनि द्वारा कैकयी राज्ञी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और सुपाली नामक राजस का दोहित्र (नाती) था । एक दिन सुपाली ने कुबेर को पुष्पक विमान पर चढ़कर जाते देखा । उस यह इच्छा हुई कि मेरे भी ऐसा ही दोहित्र होता । उसने अपनी परम स्त्रवती कन्या कैकयी को विश्रवा मुनि के पास भेजा । जिस समय वह गई, उस समय मुनि ध्यान में मग्न थे । वे उसका अभिप्राय समझकर बोले—‘तू बड़े विकट समय में आई । इससे हम बार तुझे एक विकट आकृति का पुत्र उत्पन्न होगा ।’ ककुसा के बहुत विनय करने पर ऋषि ने फिर आशीर्वाद दिया—‘अच्छा जा । तेरा अतम पुत्र मेरे ही वंश का सा और परम धार्मिक होगा ।’ वही अतम पुत्र विभाषण हुआ । अपने बड़े भाइयों रावण और कुम्भकर्ण के साथ विभीषण ने भी धार तप किया । जब ब्रह्मा वर देने आए, तब विभाषण ने यही वर माँगा—‘मेरा मति धर्म में सदा स्थिर रहे’ । ब्रह्मा ने वर दिया—‘तुम बड़े धार्मिक और अमर होगे’ । वरप्राप्ति के उपरांत विभीषण भी रावण के साथ लका में ही आकर रहने लगा । रावण ने जब सीता-हरण किया, तब यह राम की ओर हो गया था ।

२ नल तृण । नरसल का पौधा ।

विभीषणा—वि० स्त्री० [सं०] डरावनी । भयानक ।

विभीषणा—सखा स्त्री० १ एक मुहूर्त का नाम । २ स्कन्द की एक मातृका (को०) ।

विभीषा—सखा स्त्री० [सं०] भयालुता । भीरुता । भयभीत या शक्ति हाने की भावना [को०] ।

विभीषिका—सखा स्त्री० [सं०] १ भयप्रदर्शनी । डर दिखाना । २ भयकर बात । भयानक कांड या दृश्य । ३ आतंक । भय । खौफ (को०) । ४ भयभीत करनेका साधन (को०) ।

विभु—वि० [सं०] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो । जो सब मूर्त पदार्थों में रम रहा हो । जिसमें कोई स्थान खाली न हो । सर्वगत । सर्वव्यापक । जैसे,—दिक्, काल और आत्मा ।

विशेष—जीव की जाग्रत आदि चारों अवस्थाओं के चार विभु माने गए हैं । जाग्रत का विभु ‘विश्व’, स्वप्न का ‘क्षेत्रज्ञ’, सुषुप्ति का ‘प्राज्ञ’ और तुरीय का ‘ब्रह्म’ कहा गया है ।

२ जो सब जगह जा सकता हो । सर्वत्र गमनशील । जैसे, मन । ३ अत्यंत विस्तृत । बहुत बड़ा । महान् । ४ सब काल में रहनेवाला । सर्वकालव्यापी । नित्य । ५ दृढ़ । अचल । चिर स्थायी । ६ शक्तिमान् । ऐश्वर्ययुक्त । ७ योग्य । समर्थ । क्षम (को०) । ८ आत्मसयमी । जितेंद्रिय (को०) ।

विभु—सखा पु० १ ब्रह्मा । २ आत्मा । जीवात्मा । ३ प्रभु । स्वामी । ४ ईश्वर । उ०—विभु की बाट जीहते हैं सब ले ले-

कर अपने उपहार ।—माकेत पृ० ३७५ । ५ शक्र । शिव । ६ विष्णु । ७ भूतय । ८ सूर्य (को०) । ९ चंद्र (को०) । १० कुबेर (को०) । ११ एक देव वर्ग (को०) । १२ बुद्ध का एक नाम (को०) । १३ आकाश (को०) । १४ अवकाश । अवसर (को०) । १५, काल (को०) ।

विभुक्षित—वि० [सं० ‘विभुक्षित’ का अभाव प्रयोग] भूखा । उ०—वह तोस कोटि विभुक्षित और नग्नतन सतान की माँ है ।—हिं० का० प्र०, पृ० २३३ ।

विभुग्न—वि० [सं०] वक्र । टेढ़ा । कुटिल (को०) ।

विभुता—सखा स्त्री० [सं०] १ विभु होने का भाव । सर्वव्यापकता । उ०—युग युग की नव मानवता की । विस्तृत वनुषा की विभुता की ।—लहर, पृ० ३ । २ ऐश्वर्य । शक्त । ३ प्रभुता । ईश्वरता । ४ अधिकार ।

विभुत्व—सखा पु० [सं०] दे० ‘विभुता’ ।

विभू—सखा स्त्री० [सं०] दे० ‘विभु’ ।

विभूत—वि० [सं०] १ उत्पन्न । जात । २ प्रकट । व्यक्त । ३ महान् । शक्तिमान् । ४ उत्थित । [को०] ।

विभूति—सखा स्त्री० [सं०] १ बहुतायत । वृद्धि । वढती । २ विभव । ऐश्वर्य । ३ संपत्ति । धन । ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लविमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ मिद्धियाँ हैं ।

विशेष—योगदर्शन के विभूतपाद में इसका वर्णन है कि किन किन साधनाओं से कौन कौन सी विभूतियाँ प्राप्त होती हैं ।

५ शिव के अंग में चढ़ाने की राख या भस्म ।

विशेष—देवी भागवत, शिवपुराण आदि में भस्म या विभूति धारण करने का माहात्म्य विस्तार से वर्णित है ।

६ भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है । ७ लक्ष्मी । ८ विविध सृष्टि । ९ एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था । १० प्रभुत्व । बड़ाई । ११ सृष्टि । १२ ताकत । शक्ति । महत्ता (को०) । १३ प्रतिष्ठा । उच्च पद (को०) । १४ विस्तार । प्रसार (को०) । १५, प्रवृत्ति । प्रकृति । स्वभाव (को०) ।

विभूतिमान्—वि० [सं० विभूतिमत्] [वि० स्त्री० विभूतिमती] १ शक्ति सज्ज । ऐश्वर्यशाली । २ संपत्तिशाली । धनवान् । ३ विभूत । अलौकिक शक्ति से युक्त (को०) । ४ जिसने विभूति या भस्म धारण किया हो (को०) ।

विभूमा—वि० [सं० वि + भू + मत्] ऐश्वर्यवान् । शक्तिशाली ।

विभूमा—सखा पु० १ श्रीकृष्ण । २ महत्त्व । शक्ति (को०) ।

विभूमा—सखा स्त्री० [सं०] शक्ति । महत्ता । ऐश्वर्य (को०) ।

विभूरसि—सखा पु० [सं०] अग्नि की एक मूर्ति ।

विभूषण—सखा पु० [वि० विभूष्य, विभूषित] १ अलंकृत करने की क्रिया । गहने आदि से सजाने का काम । २ भूषण । अलंकार । जेवर । गहना ।

विशेष—किमी शब्द के आगे लगकर यह शब्द श्रेष्ठतावाचक हो जाता है । जैसे, रघुवशविभूषण ।

३. मजुश्री का एक नाम । (बौद्ध) । ४ सौंदर्य । छुति । (को०)

विभूषणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गहनो आदि की सजावट । भूषा ।
२ शोभा ।

विभूषणा—क्रि० म० [सं० विभूषण] १ अलंकृत करना । गहने आदि में सजाना । २ सुशोभित करना । मंडित करना । ३ अपने आगमन द्वारा सुशोभित करना । उ०—कहा रीति रावरी जो रक को विभूषी गेह, तुम मो प्रवीन गुरु सेवा ततपर को ।—दूलह (शब्द०) ।

विभूषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गहनो आदि की खूब सजावट । २ भूषण । अलंकार । गहना । ३. शोभा । सौंदर्य । काति ।

विभूषित—वि० [म०] १ गहनो आदि से सजाया हुआ । २ अलंकृत । ३ (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त । सहित । जैसे,—वे सब गुणो से विभूषित हैं । ४ शोभित ।

विभूषित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अलंकार । गहना [को०] ।

विभूषी—वि० [सं० विभूषिन्] १ अलंकृत । सज्जित । २ (गुण से) शोभित । ३ सजानेवाला [को०] ।

विभूषण—वि० [सं०] विभूषितयुक्त । सर्वव्यापक ।

विभूषण—सञ्ज्ञा पुं० शिव ।

विभूष्य—वि० [सं०] १. विभूषित करने योग्य । सजाने योग्य । २ जिसे गहनो आदि से सजाना हो ।

विभृत—वि० [सं०] १ जो धारण किया गया हो । संमाला हुआ । २. पोषित । पालित [को०] ।

विभेंटन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वि० + भेंट] आलिंगन करना । गले मिलना । भेंटना । उ०—एरे वाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज रौरे फरकन तैं जो बालम विहारि हौं । करिहौं गुलाब उपकार गुन मानिना कै देखन विभेंटन मैं आगे विस्तारिहौं ।—पद्म-कर (शब्द०) ।

विभेद—सञ्ज्ञा पुं० [म०] विभिन्नता । फरक । अन्तर । उ०—दोनो तुल्य स्त्री वा पुष्प बन सके और कभी कोई विभेद न रहे ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६७ । २ अनेक भेद । कई प्रकार । ३. छेदकर धुसना । धंसना । ४ काटना, तोड़ना या छेदना । ५ कटाव । छेद । दरार । ६ दो या कई खन्डों में करना । विभाग । ७ एक-रूपता से अनेकरूपता की प्राप्ति । विकास । परिवर्तन । ८ मिश्रण । ९ आहत करना (को०) । १० विरोध । वैर (को०) । ११ हस्तक्षेप । बाधा (को०) ।

विभेदक—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ भेदन करनेवाला । काटने या छेदने-वाला । २ धुसनेवाला । धंसनेवाला । ३ दो वस्तुओं में भेद प्रकट करनेवाला । फर्क दिखाने या डालनेवाला । एक से दूसरे में विशेषता प्रकट करनेवाला ।

विभेदक—सञ्ज्ञा पुं० विभीतक । बहेड़ा ।

विभेदकर—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विभेदकरी] विलगाव, फर्क वा भेद पैदा करनेवाला । दे० 'विभेदकारी' । उ०—अब दीनदयाल दया करिए मति मोरि विभेदकरी हरिए ।—मानस, ६। ११० ।

विभेदकारी—वि० [सं० विभेदकारिन्] [वि० स्त्री० विभेदकारिणी] १ छेदने या काटनेवाला । २ भेद या फर्क करनेवाला । ३ दो व्यक्तियों में विरोध उत्पन्न करनेवाला । फूट डालनेवाला ।

विभेदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० विभेदनीय, विभेद्य] १ छेदना । काटना या तोड़ना । २ छेदकर धुसना । धंसना । ३ काटकर दो या कई खन्डों में करना । ४ पृथक् पृथक् करना । अलग अलग करना । ५. भेद या फर्क डालना या दिखाना ।

विभेदन—वि० दे० 'विभेदक' ।

विभेदना—क्रि० म० [सं० विभेदन] १ भेदन करना । छेदना । काटना । २ धुसना । प्रवेश करना । उ०—लोक विभेदति वामना वासु परी मनु दीरघ मे गति ए जू ।—केशव (शब्द०) । ३ भेद या फर्क डालना ।

विभेदिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विभेदिका] पृथक् पृथक् करनेवाला । विभक्त करनेवाला [को०] ।

विभेदिनी—वि० स्त्री० [सं० विभेदिन्] १ छेदन या भेदन करनेवाली । २ छेदकर धुसनेवाली । ३ भेद या फर्क करनेवाली ।

विभेदी—वि० [सं० विभेदिन्] [वि० स्त्री० विभेदिनी] १ छेदन करने-वाला । काटनेवाला । २ छेदकर धुसनेवाला । धंसनेवाला । ३ भेद या फर्क करनेवाला । ४ दूर, अलग या नष्ट करनेवाला (को०) ।

विभेद्य—वि० [सं०] विभेद करने लायक । काटने या अलग करने लायक [को०] ।

विभेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वि + वेप/भेप] कुवेश । विकृत वेप । बुरा वेश । उ०—भोजन क्षोभ मलीन तन वसन विभेष बनाइ । रैन दिवस छिन पावत कल नही जहँ तहँ जाइ ।—कवीर सा०, पृ० ४०३ ।

विभो—सञ्ज्ञा पुं० [सं० 'विभु' का सर्वोच्च रूप] हे विभु ।

विभा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विभव] दे० 'विभव' । उ०—फल आए तरवर भुक्त भुक्त मेघ जल आय । विभो पाय सज्जन भुक्त यह परकाजि सुभाय ।—शकुंतला, पृ० ८८ ।

विभोर—वि० [सं० विह्वल, बग० विभोर] आत्म वधृत । किसी भाव में तल्लीन या खोया हुआ ।

विभौ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विभव] दे० 'विभव' । उ०—जोधपुर विभौ जेवडियौ, मेल बहादुर खान जूँ । हरि नख अचभा साहरा, दै थाँमा अग्रमान नूँ—रा० रू०, पृ० २४ ।

विभ्रंश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश । ध्वंस । २ पतन । अपनति । ३ ऊँचा कगार । ४ पहाड़ की चोटी पर का चौरस मैदान । ५ ह्रास । क्षय । वरबादी (को०) । ६ प्रवाहिका । संग्रहणी । अविस्तार (को०) । ७ अस्तव्यस्तता । अराजकता । विशृङ्खलता (को०) ।

विभ्रंशयज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक दिन में पूर्ण होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ [को०] ।

विभ्रंशित—वि० [सं०] १ विभ्रंश । ध्वस्त । २ पतित । ३ गुमराह किया हुआ । बहकाया हुआ (को०) ।

यौ०—विभ्रशितज्ञान = जिसका ज्ञान नष्ट हो गया हो। मूर्ख। निर्वुद्धि।

विभ्रशी—वि० [स० विभ्रशिव्] १ भ्रष्ट होनेवाला। २ खड खड होनेवाला [को०]।

विभ्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भ्रम। भ्राति। बोझ। भूल। ३ सदेह। सशय। ४ चकपकाहट। घबराहट। अस्थिरता। ५ स्त्रियो का हाव जिसमे वे भ्रम से उलटे पलटे भूपरा वस्त्र पहन लेती है, तथा रह रहकर मतवाले की तरह कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती है। ६ कांति। शोभा। ७ घमड। अभिमान (को०)। ८ तरंग। सनक। मन की लहर (को०)। ९ विक्षोभ। उद्वेग (को०)।

विभ्रमवती - सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हाव विशेषवाली कन्या। बालिका [को०]।

विभ्रमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०, बुढाई। बुढाप। वार्धक्य।

विभ्रमी—वि० [स० विभ्रमिव्] १ इधर उधर घूमनेवाला। भ्रमणकारी। घुमक्कड। २, चक्कर करने या खानेवाला [को०]।

विभ्रष्ट—वि० [स०] १ दूरा किया हुआ। अलग किया हुआ। २ क्षीण। लुप्त। पतित। नष्ट। ३ शोभन। अतर्हित। ४ वचन। विरहित। ५ व्यर्थ। अनुपयुक्त। ६ स्तरहीन। निस्तरत्व [को०]।

विभ्रात—वि० [स० विभ्रातन्] १ घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ। २ भ्रम में पडा हुआ। विभ्रमयुक्त। ३, विक्षुब्ध। व्याकुल (को०)। ४ चारो ओर फैला हुआ (को०)।

यौ०—विभ्रातनयन = तिरछी चितवनवाला। विभ्रातमना = हतबुद्धि। जड। विभ्रातशील = मत्त। मतवाला।

५ हतबुद्धि। ६ बदर। ७ सूर्य या चंद्रमा का मंडल [को०]।

विभ्राति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विभ्राति] १ फेरा। चक्कर। २ भ्रम। सदेह। ३ हडबडी। घबराहट।

विभ्राजित—वि० [स०] चमकदार या दीप्तियुक्त किया हुआ [को०]।

विभ्राट्—सञ्ज्ञा पुं० [स० विभ्राज् ? तुल० वें०] १, आपत्ति। विपत्ति। सफट। २ उपद्रव। बखेडा। उ०—(क) तिलक विभ्राट् के समय गोखले विलायत में थे।—सरस्वती (शब्द०)। (ख) कुछ न कुछ विघटित हुआ विभ्राट्।—साकेत, १६८।

विभ्राट्—वि० [स० विभ्राज्] प्रकाशमान। दीप्तिमान्। उ०—भर सको अगर तो प्रतिमा में चेतना भरो, यदि नहीं निमग्न दा जीवन के दानी को। विभ्राट् महावल जहाँ थके से दोख रहे, आगे आने दो वहाँ क्षीणवल प्राणी को।—धूप०, ७।

विभ्रातृव्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बर। शत्रुता। २ होडा होडी। प्रतिद्वंद्विता [को०]।

विभ्रष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दुष्कर्म करना। अपराध करना [को०]।

विमडन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विमण्डन] [वि० विमडित] १ गहने आदि से सजाना। २ शृंगार करना। सँवारना। ३ अलंकार। श्रृंगार। गहना।

विमडित—वि० [स० विमण्डित] १, अलङ्कृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३ सहित। युक्त। (अच्छी वस्तु से)। उ०—देख

विमडित दडिन सो भुजदंड दुअरी असि दड विहीनो।—केशव (शब्द०)।

विमथन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विमन्थन] खूब मथना।

विमथित—वि० [स०] मथा हुआ। विलोडित [को०]।

विमज्जित—वि० [स०] हूबा हुआ। निर्मज्जित [को०]।

विमत^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। उ०—छमत, विमत, न पुरान मत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम करत।—तुलसी (शब्द०)। २ खिलाफ राय। प्रतिकूल समति। ३ शत्रु। वैरी (को०)।

विमत^२—वि० १ विरुद्ध मतवाला। भिन्न मत का। २ विपम। असंगत (को०)। ३ अनाहत। उपेक्षित (को०)। ४ सशया-स्पद। सदिव्य (को०)।

विमति^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विरुद्ध मति। खिलाफ राय। प्रतिकूल विचार। २ उचित के विपरीत विचार। कुमति। दुर्वृद्धि। बुरा विचार। ३ असमति। अस्वीकृति। ४ वाद विवाद। वितर्क। वितडा (को०)।

विमति^२—वि० मूढ। मूर्ख। अज्ञ [को०]।

विमत्त—वि० [स०] १ अभिमानी। उ०—जे ज्ञानमान विमत्त तब भय हरनि भगति न आदरी।—मानस, ७। २ मतवाला या मस्त (हाथी)।

विमत्सर^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अधिक अहंकार। उ०—तजि काम क्रोध विमत्सरालस लोभ मोह निवारि कै। छल मल कुसंगति त्यागि मद दुरवासना सनमानि कै।—विश्राम (शब्द०)।

विमत्सर^२—वि० १ मत्सररहित। २, अहंकारशून्य।

विमद—वि० [स०] १ मदरहित। उन्मादहीन। जो मतवाला न हो। २ (वह हाथी) जिसे मद न बहता हो। ३ आनंद, दुख आदि से रहित। हर्षशून्य (को०)।

विमद्य—वि० [स०] जिसने शराब पीना छोड़ दिया हो। जो मदिरा पान करना छोड़े हो [को०]।

विमध्यम—वि० [स०] तटस्थ। मध्यवर्ती। उदासीन [को०]।

विमन^१—वि० [स० विमन्] अन्मना। उदाम। रजोदा। खिन्न। उ०—विमन बटि मुने सुर मरि तोरा। तह आयो नारद मुनि धीरा। कयो उदास अस पूछ्यो व्यास। वर्यो व्यास सकल निज आसै।—रघुराज (शब्द०)।

विमनस्क—वि० [स०] १ जिसका मन उचटा हो। जिसका मन न लगता हो। अनमना। २ उदाम। खिन्न। अप्रसन्न। रजोदा। ३ परेशान। व्याकुल। हैरान (को०)।

विमना—वि० [स० विमन्स्] दे० 'विमनस्क' [को०]।

विमनिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विमनिमन्] उदासी। विमनस्क होने का भावखिन्नता [को०]।

विमन्यु—वि० [स०] विगतमन्यु। क्रोधरहित [को०]।

विमय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] परिवर्तन। बदला बदली। लेन देन। विनिमय [को०]।

विमर्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चूर्ण करना। पीसना। २ मीजना। मसलना। रगड़ना। ३ सघर्ष। युद्ध। ४ बाधा। ५ संपर्क। स्पर्श। ६ खग्रास। ७ सूर्य और चंद्रमा का मेल। ८ एक वृत्त। ९ सपीडित करना। कसना (आलिंगन करते समय)। १०. छीनना। अपहरण करना। विगाड़ देना (जै)। ११. शरीर पर उबटन आदि लगाना या मलना (को०)। १२. विध्वंस। विनाश (को०)। १३ थकान। क्लान्ति (को०)।

विमर्दक—वि० [सं०] १ खूब मर्दन करनेवाला। मसल डालनेवाला। २ चूर चूर करनेवाला। पीस डालनेवाला। ३ नष्ट भ्रष्ट करनेवाला। ध्वस्त करनेवाला।

विमर्दक—सञ्ज्ञा पुं० १. विमर्दन करने की क्रिया। २ उपराग। ग्रहण। ३ एक पौधा। चक्रमर्द। चक्रवर्ड (को०)।

विमर्दन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १ खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना। दलना। २ कुचलना। पीस डालना। ३ ध्वस्त करना। नष्ट करना। बरबाद करना। ४ मार डालना। ५ पीडित करना। ६ अभिभव। प्रस्फुटन। स्फुरण। जैसे,—बीज फूटकर अकुर का प्रकट होना (साख्य)। ७ युद्ध। लड़ाई। सघर्ष (को०)। ८. उपराग। ग्रहण (को०)। ९. एक राक्षस का नाम (को०)।

विमर्दना—सञ्ज्ञा [सं०] दे० 'विमर्दन' (को०)।

विमर्दनीय—वि० [सं०] मर्दन करने योग्य।

विमर्दित—वि० [सं०] १. मला दला हुआ। २ कुचला हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। ४ पीडित। ५ अपमानित।

विमर्दिनि ७—वि० स्त्री० [सं०] नाश करनेवाली। ध्वस्त करनेवाली। उ०—जै मधुकैटभ छलनि देवि जै महिष विमर्दिनि।—भूषण प्र० पृ० ३।

विमर्दिनी—वि० स्त्री० [सं०] नाश करनेवाली। वध करनेवाली।

विमर्दी—वि० [सं० विमर्दिन्] [स्त्री० विमर्दिनी] १ खूब मर्दन करनेवाला। २. कुचलनेवाला। पीसनेवाला। ३. नष्ट करनेवाला। ४ वध करनेवाला। मारनेवाला।

विमर्दीत्य—वि० [सं०] (सुगंध आदि) जो रगड़ने से उत्पन्न हो (को०)।

विमर्श—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी तथ्य का अनुसंधान। किसी बात का विवेचन या विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ परखने की क्रिया। परीक्षा। ४ परामर्श। सलाह। ५ असंतोष। अधीरता। ६. सकोच। सदेह (को०)। ७ ज्ञान (को०)। ८ विपरीत निर्णय (को०)। ९ पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी हुई भावना या वासना (को०)। १०. शिर (को०)। ११ नाटक की पाँच प्रकार की संधियों में से एक। अवमर्श संधि (को०)।

विमर्शन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्श, विमर्शी] १ विवेचन करना। तर्क वितर्क करना। २, आलोचना करना।

विमर्श संधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विमर्श सन्धि] नाट्यशास्त्र के अनुसार पाँच प्रकार की संधियों में से एक। दे० 'अवमर्श संधि'।

विमर्शित—वि० [सं०] १ विचारित। विवेचित। २ आलोचित। समीक्षित (को०)।

विमर्शी—वि० [सं० विमर्शिन] १ विचारक। विवेचक। २ आलोचक। समीक्षक (को०)।

विमर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विवेचन। विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अपवाद संकेत, व्यवसाय, द्रव्य, गति, शक्ति, प्रसंग, वेद, प्रतिषेध, प्ररोचना, आदान और द्यादन का वर्णन होता है।

विशेष—दोष कथन को अपवाद, क्रोध से भरी वातनीति को संकेत, कार्य के हेतु के उद्भव को व्यवसाय, शोक आदि के वेग में गुरुजनों के आदर्श आदि का ध्यान न रखने को द्रव्य, भय-प्रदर्शन द्वारा उद्देग उत्पन्न करने को गति, विरोध की शक्ति को शक्ति, अत्यंत गुणकीर्तन या दोषदर्शन को प्रसंग, शरीर या मन की थकावट को वेद, अभिलपित विषय में थकावट को प्रतिषेध, कार्यध्वंस को विरोध, प्रस्तावना के समय नष्ट, नष्ट नाटक या नाटककार आदि को प्रशंसा को प्ररोचना, महार विषय के प्रदर्शित होने को आदान, तथा कार्योद्धार के लिये अपमान आदि सह लेने को द्यादन कहते हैं।

४ उद्देग। व्याकुलता। क्षोभ (को०)।

विमर्षित—वि० [सं०] अज्ञात। धुंध। व्याकुल। परेशान। उ०—अर्ध जीवित सा, श्री मृत सा, न हर्षित सा, न विमर्षित सा।—पल्लव, पृ० १११।

विमल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विमला] १ निर्मल। मनरहित। स्वच्छ। साफ। जैसे, जल। २ बिना ऐश का। निर्दोष। जैसे, विमल मति। ३ रमणीय। सुंदर। मनोहर। ४ श्वेत। उज्ज्वल।

यौ०—विमलकीर्ति। विमलगर्भ। विमलदत्त। विमलनिर्भास = 'विमलभास'। विमलमणि। विमलमति।

विमल—सञ्ज्ञा पुं० १ एक उपधातु जिसके शोधन आदि की विधि मन्द्रसार में लिखी है। २ चाँदी। ३ गत उत्सर्पिणी के ५वें और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हत् या तीर्थंकर (जैन)। ४, सुद्युम्न का पुत्र। ५ पक्षकाण्ड। पक्ष काठ। ६, मेंचा नमक। ७ चाद्र वर्ष (को०)। ८ अस्त्र सवधी एक मंत्र (को०)। ९ एक लोक का नाम (को०)। १० समधि का एक प्रकार (को०)। ११ सिलखडी। खडिया (को०)।

विमलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तग या बहुमूल्य पत्थर (को०)।

विमलकीर्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ महायान पंथ ने एक बौद्ध आचार्य जिन्होंने कई मंत्रों की रचना की है, जो उन्हीं के नाम ने प्रसिद्ध है। २. वह जिसकी कीर्ति विमल हो।

विमलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २ पवित्रता। ३ शुद्धता। निर्दोषता। ४ रमणीयता। मनोहरता।

विमलदान—सङ्घा पुं० [सं०] वह दान जो नित्य नैमित्तिक और काम्य के अतिरिक्त हो और केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाय। (गरुडपुराण)।

विमलध्वनि—सङ्घा पुं० [सं०] छह चरणों का एक छद्म जो एक दोहों और समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमलनेत्र—सङ्घा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलप्रदीप—सङ्घा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की समाधि। २ एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलभास—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

विमलमणि—सङ्घा पुं० [सं०] स्फटिक [को०]।

विमलमति—वि० [सं०] पवित्र अतः करणवाला। जिसकी मति शुद्ध हो शुद्ध बुद्धिवाला [को०]।

विमला^१—वि० स्त्री० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

विमला^२—सङ्घा स्त्री० १ सप्तला का पेड़। कोवी। सातला। चर्मकपा। २ सिद्धि की दस भूमियों (अवस्थाओं) में से एक प्रकार की भूमि। ३ एक देवी का नाम जो कालिकापुराण में वासुदेव की नायिका कही गई है। ४ शारदा। सरस्वती। ५ चाँदी का मुलम्मा [को०]।

विमलाक्ष—वि० [मं०] वह घोड़ा जिसके शरीर पर बालों की दस भौरी हो। इस प्रकार का घोड़ा बहुत उत्तम माना जाता है [को०]।

विमलात्मक—वि० [सं०] शुद्ध। साफ। विमल [को०]।

विमलात्मा^१—वि० [सं०] विमलात्मन्] शुद्ध हृदयवाला। शुद्ध मनवाला।

विमलात्मा^२—सङ्घा पुं० चंद्रमा।

विमलाद्रि—सङ्घा पुं० [सं०] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात में स्थित है [को०]।

विमलापति—सङ्घा पुं० [सं०] ब्रह्मा। उ०—जानत हो जिय सोदर दोऊ। कैं कमला विमलापति कोऊ।—केशव (शब्द०)।

विमलार्थक—वि० [सं०] विमल। निर्मल [को०]।

विमलाशोक—सङ्घा पुं० [सं०] १ सन्यासियों का एक भेद। २. एक तीर्थ स्थान।

विमलीकरण—सङ्घा पुं० [सं०] १ विमल करने की क्रिया। शुद्ध करने की क्रिया। २ सर्वदर्शनसंग्रह के अनुसार मन में विचार कर ज्योति मंत्र से तीनो मलों का नाश करना।

विमलोदका, विमलोदा—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

विमास—सङ्घा पुं० [सं०] अशुद्ध, अपवित्र या न खाने योग्य मास। (जैसे, कुत्ते आदि का)।

विमान^(१)—सङ्घा पुं० [सं०] विमान] दे० 'विमान'। उ०—परमानंद निरखि लीला थके सुर विमान।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३०।

विमाई^१—सङ्घा स्त्री० [सं०] विपादिका, हिं० विवाई] दे० 'विवाई'। उ०—तुम्हरे पग तो भई विमाई सो मल जानहु।—श्यामा०, पृ० १५६।

विमाता—सङ्घा स्त्री० [सं०] विमातृ] अपनी माता के अतिरिक्त पिता की दूसरी विवाहिता स्त्री। सौतेली माँ।

विमातृज—सङ्घा पुं० [सं०] विमाता का पुत्र। सौतेला भाई।

विमात्र, विमात्रा—वि० [सं०] जिसकी मात्रा समान न हो [को०]।

विमान—सङ्घा पुं० [सं०] १ आकाशमार्ग से गमन करनेवाला रथ जो देवताओं आदि के पास होता है। देवयान। जैसे, पुष्पक विमान। २ हवाई जहाज। वायुयान। उड़न खटोला (अ० एयरोप्लेन)। ३ मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अर्धों जो सज्जज के साथ निकाली जाती है। ४ रथ। गाड़ी। ५ अश्व। घोड़ा। ६ मात खड का मकान। सात मजिल का घर। ७ अपमान। अन्याय। ८ जलपोत। जहाज [को०]। ९ परिमाण। माप। १०. रामलीला आदि में सजाई हुई एक मवाड़ी। ११. राज-प्रासाद। १२. एक प्रकार का बुर्ज या मीनार [को०]। १३. उपवन। वृक्षवाटिका [को०]। १४. विस्तार। फैलाव। वितति [को०]। १५. सभाभवन या कक्ष [को०]। १६. प्राचीन वास्तु विद्या के अनुसार वह देवमंदिर जो ऊपर की ओर गावदुम या पतला होता हुआ चला जाय।

विशेष 'मानसार' नामक प्राचीन ग्रंथ के अनुसार विमान गोल, चौपहला और अठपहला होता है। गोल को 'वैसर', चौपहले को 'नागर' और अठपहले को 'द्राविड' कहते हैं।

विमानगति—सङ्घा पुं० [सं०] विमान + गति] देवता।—अनेकार्थ०, पृ० ४१।

विमानच्छद—सङ्घा पुं० [सं०] विमानच्छन्द] प्रासाद विशेष। उ०—विमानच्छदं प्रामाद का नाम है।—वृत्तसहिता, पृ० २८२।

विमानचारी—वि० [सं०] विमानचारिन्] विमान पर चलनेवाला। वायुयान से यात्रा करनेवाला [को०]।

विमानचालक—सङ्घा पुं० [सं०] विमान या वायुयान चलानेवाला।

विमानधुर्य—सङ्घा पुं० [सं०] तामजात्र, पालकी आदि ढोनेवाला व्यक्ति। (कहार आदि)।

विमानना—सङ्घा स्त्री० [सं०] अपमान। अवमानना। तिरस्कार।

विमाननिर्व्यूह—सङ्घा पुं० [सं०] एक समाधि [को०]।

विमानयान—वि० [सं०] दे० 'विमानचारी' [को०]।

विमानराज—सङ्घा पुं० [सं०] १. अष्ट व्योमयान। २. देवविमान का चालक [को०]।

विमानवाह—सङ्घा पुं० [सं०] पालकी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

विमानित—वि० [सं०] तिरस्कृत। उपेक्षित [को०]।

विमानीकृत—वि० [सं०] १ तिरस्कृत। अन्याय। २ विमान की तरह व्यवहृत। विमान बनाया हुआ [को०]।

विमार्ग—सङ्घा पुं० [मं०] १ बुरा रास्ता। २ कदाचार। बुरी चाल। ३. भाड़। कूचा।

विमार्गगा—सङ्घा स्त्री० [सं०] असती या कुलटा स्त्री [को०]।

विमार्गगामी—वि० [सं०] विमार्गगामिन्] कुमार्ग पर जानेवाला [को०]।

विमार्गण—सङ्घा पुं० [मं०] अन्वेषण। खोज। तलाश [को०]।

विमार्गदृष्टि—वि० [सं०] असत् पथ पर दृष्टि डालनेवाला [को०]।

विमार्गप्रस्थित—वि० [सं०] कुमार्ग की ओर प्रस्थित। विमार्गगामी। कदाचारी [को०]।

विमार्गस्थ—वि० [सं०] दे० 'विमार्गगामी' [को०] ।

विमार्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पवित्र कर्मा । शुद्ध करना । २. मार्जन करना । धोना [को०] ।

विमासना—क्रि० सं० [सं० विमर्शन, प्रा० विमर्ष] विचार विमर्श करना । सोचना । मलाह मशविरा करना । उ०—राणी राय विमासियउ, तेडइ साहकुमार ।—ढोना०, दू० १०० ।

विमित'—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १. वह चौकोर शाला या इमारत जो चार खम्भों पर टिकी हो । २. बड़ा कमरा या इमारत ।

विमित'—वि० १. जिसकी सीमा या हद हो । परिमित । निश्चित । २. निर्मित ।

विमिश्र—वि० [म०] १. मिला हुआ । मिश्रित । २. जिसमें कई प्रकार की वस्तुओं का मेल हो । मिला जुला । ३. (मूल या धन) जो मूद के साथ मिला हो (को०)

विमिश्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मृगशिरा, शार्द्रा, मघा, और अश्लेषा नक्षत्र में बुध की गति का नाम जो ३० दिनों तक रहता है ।

विमिश्रित—वि० [सं०] १. मिलाया हुआ । २. मिला जुला । विमिश्र ।

विमुक्त—वि० [सं०] १. अच्छे तरह मुक्त । छूटा हुआ । जो बंधन से अलग हुआ हो । २. जिसे किसी प्रकार का प्रतिबन्ध या रुकावट न रह गई हो । ३. स्वच्छुद । आजाद । ४. (हानि, दंड आदि से) बचा हुआ । ५. अलग किया हुआ । बरी । ६. पकड़ से छूटकर चला हुआ । फँका हुआ । छोड़ा हुआ । जैसे,—विमुक्त बाण । ७. अभिव्यक्त (को०) । ८. मुक्तकण्ठक । (सर्प) जिसने केचुली छोड़ी हो (को०) । ९. युक्त । सहित (को०) । १०. जो जल में उतरा गया हो । जैसे, जलपोत (को०) ।

विमुक्तकंठ—वि० [सं० विमुक्तकण्ठ] १. जोर से चिल्लानेवाला । २. उच्च स्वर से रोनेवाला ।

विमुक्तप्रग्रह—वि० [सं०] ढीली लगामवाला या जिमकी लगाम को ढील दे दी गई हो [को०] ।

विमुक्तमौन—वि० [सं०] जिसने मौन व्रत समाप्त कर दिया हो [को०] ।

विमुक्तशाप—वि० [सं०] जिसे शाप से छुटकारा मिल गया हो । शाप-मुक्त [को०] ।

विमुक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुटकारा । रिहाई । २. मुक्ति । मोक्ष । ३. पृथक्ता । अलगाव । वियोग (को०) ।

यौ०—विमुक्तिपथ = मुक्ति का मार्ग ।

विमुख—वि० [सं०] १. मुखरहित । जिसके मुँह न हो । २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो । जो किसी कार्य या विषय में दक्षचित्त न हो । जो किसी काम से हटा या अलग हो । अतत्पर । विरत । निवृत्त । जैसे,—कर्तव्य से विमुख होना । ३. जो अनुरक्त न हो । जिसे परवाह न हो । जिसने मन न लगाया हो । उदासान । जैसे,—हरिपद विमुख । ४. जो किसी के हित के प्रतिकूल हो । जिसकी स्थिति या आचरण

अनुकूल न हो । विरुद्ध । खिलाफ । अप्रसन्न । जैसे—जब ईश्वर ही विमुख है, तब क्या हो सकता है । ५. मुखरहित । छिद्ररहित । ६. जिसकी चाह या माँग पूरी न हुई हो । अप्राप्तमनोरथ । निराश । जैसे—उनके यहाँ से कोई याचक विमुख नहीं गया । उ०—जो ऐहं सो भोजन पैहं । विमुख कोइ इनतें नहि जँहं ।—रघुराज (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

विमुखता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी बात से दूर रहना । अतत्परता । विरति । २. विपरीतता । विरोध । अप्रसन्नता ।

विमुग्ध—वि० [सं०] १. मोहित । आसक्त । २. भ्रम में पड़ा हुआ । भूला हुआ । भ्रात । ३. धवराया हुआ । ढरा हुआ । ४. उन्मत्त । मतवाला । ५. पागल । बावला । ६. बेसुध ।

विमुग्धक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मोहनेवाला । २. एक प्रकार का छोटा अभिनय या नकल । (नाट्यशास्त्र) ।

विमुग्धकर—वि० [सं०] मोहक । आनन्दप्रद । उ०—रम का विवेचन जितना ही विमुग्धकर है उतना ही पाण्डित्यपूर्ण ।—रम क०, पृ० २४ ।

विमुग्धकारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमुग्धकारिन्] [स्त्री० विमुग्धकारिणी] १. मोहित करनेवाला । २. भ्रम में डालनेवाला ।

विमुद'—वि० [सं०] आनन्दरहित । उदास । खिन्न । उ०—करति केलि पिय हिय लगी, कोक कलनि अवरैखि । विमुद कुमुद लौं छै रही चहु मंद दुति देखि ।—पद्माकर (शब्द०) ।

विमुद'—सञ्ज्ञा पुं० एक बड़ी संख्या का नाम ।

विमुद्र—वि० [सं०] १. जो मुद्राकृत न हो । बिना मुहर का । २. विकसित । खिला हुआ । ३. अत्याधिक । प्रचुर । बहुत ज्यादा [को०] ।

विमुद्रण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. खोलना । अनावृत्त करना । विकसित करना । खिलाना [को०] ।

विमूढ़'—वि० [सं० विमूढ़] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध । अत्यंत मोहित । २. मोहप्राप्त । भ्रम में पड़ा हुआ । चकराया हुआ । ३. बेसुध । अचेत । ४. ज्ञानरहित । जिस समझ न पड़ना हा । जैसे,—किर्तव्यविमूढ़ । ५. बहुत मूर्ख । जडबुद्धि । नादान । नासमझ । ६. चतुर । बुद्धिमान् (को०) ।

विमूढ़'—सञ्ज्ञा पुं० १. एक प्रकार का संगीत कला । २. एक देव-योन (को०) ।

विमूढ़क—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमूढ़क] एक प्रकार का प्रहसन [को०] ।

विमूढ़गर्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमूढ़गर्भ] वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनाता हो ।

विमूढ़चेता—वि० [सं० विमूढ़चेतस्] १. हतबुद्धि । अज्ञ । मूर्ख [को०] ।

विमूढ़धी—वि० [सं० विमूढ़धी] दे० 'विमूढ़चेता' [को०] ।

विमूढ़भाव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विमूढ़भाव] विमूढ़ होने की स्थिति [को०] ।

विमूढ़सज्ज—वि० [सं० विमूढ़सज्ज] विभ्रमित । धवराया हुआ । व्याकुल [को०] ।

विमूढ़ात्मा—वि० [सं० विमूढ़ात्मन] दे० 'विमूढ़सज्ज' [को०] ।

विमूर्च्छित'—वि० [सं०] वेहोश या अचेत पड़ा हुआ। उ०—दीर्घकाल से सुप्त और विमूर्च्छित रष्ट्र में नवचेतना के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे।—हि० आ० प्र०, पृ० ३३। २ भगा हुआ। पूर्णा (को०)। ३ जो जमकर गाड़ा हो गया हो (को०)।

विमूर्च्छित^२—सङ्घा पुं० मूर्छा। वेहोशी। गश [को०]।

विमूर्च्छन—वि० [सं० विमूर्च्छन] वेहोश करनेवाला। उ०—सामर्थ्य दर्प से उन्मत्त, मैं जव तुझे पुकारा। किस ओर से वही उच्छल, यह दोम विमूर्च्छन धारा।—विश्वप्रिया, पृ० २२।

विमूर्त्त—वि० [सं०] जमा हुआ। ठोम [को०]।

विमूर्ध, विमूर्धज—वि० [सं०] गजा। सत्वाट [को०]।

विमूल—वि० [सं०] १ मूलरहित। बिना जड़ का। २. मूल से रहित। उच्छन्न। निर्मूल। ३ वरवाद। नष्ट।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

विमूलन—सङ्घा पुं० [सं०] १ जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. विनाश। ध्वंस।

विमृग—वि० [सं०] मृगरहित। जिसमें हिरन न हो। जैसे, जगल [को०]।

विमृत्यु—वि० [सं०] जिसकी मृत्यु न हो। अमर [को०]।

विमृदित—वि० [सं०] मसला हुआ। [को०]।

विमृश—सङ्घा पुं० [सं०] चित्ता। विमर्श। विचार [को०]।

विमृशित—वि० [सं०] विचारित। चितित [को०]।

विमृश्य'—वि० [सं०] १ विवेचन के योग्य। आलोचना या समीक्षा के योग्य। २ जिसपर विवेचना या विचार करना हो। जिसकी समीक्षा करनी हो।

विमृश्य^२—क्रि० वि० विचारोपरात। विचार करके। विचार विमर्श के अन्तर [को०]।

विमृश्यकारी—वि० [सं० विमृश्यकारिन्] [वि० स्त्री० विमृश्यकारिणी] साच विचारकर कार्य करनेवाला। विचारपूर्वक काम करनेवाला [को०]।

विमृष्ट'—वि० [सं०] जिसपर तक वितर्क या सम्पक् विचार हुआ हो। २ जिसका पूरी आलोचना या समीक्षा हुई हो। ३ परिच्छन्न। ४ मर्दित। मला हुआ। रगड़ हुआ [को०]।

विमृष्ट^२—सङ्घा पुं० चित्तन। विचार [को०]।

विमोक'—वि० [सं०] १ मलरहित। रागरहित। दुर्वासनारहित। (जैन)। २ ऊपरी आवरणरहित। ३. साफ। स्पष्ट।

विमोक^२—सङ्घा पुं० १ मुक्ति। छुटकारा। रिहाई। २ मुक्त करने, छोड़ने या खोलने की क्रिया।

विमोक्ता—सङ्घा पुं० [सं० विमोक्त] मुक्त करनेवाला। छुड़ानेवाला।

विमोक्ष—सङ्घा पुं० [सं०] १. बधन, गाँठ आदि का खुलना। २ छुटकारा। मुक्ति। रिहाई। ३ जन्म मरण के बधन से छूटना। आवागमन से छुट्टी पाना। मुक्ति। निर्वण। ४ सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण से छुटना। ग्रहण का हटना। उग्रह ५. किसी वस्तु

का पकट से उस प्रकार छूटना कि वह दूर जा पड़े। प्रक्षाल। ६ मेरु पर्वत का एक नाम। ७. शान। उपहार [को०]।

विमोक्षक—वि० [सं०] मुक्त करने या बधन में छुटानेवाला [को०]।

विमोक्षणा—सङ्घा पुं० [सं०] [स्त्री० विमोक्षणा] १ बधन आदि खोलना। २. मुक्त करना। रिहा करना। ३ शाय में छोड़ना जिसमें कोई वस्तु दूर जा पड़े। प्रक्षाल। ४ भंडे देना [को०]।

विमोक्षी—वि० [सं० विमोक्षिन्] मोक्षप्राप्त। मुक्ति पानेवाला [को०]।

विमोघ—वि० [सं०] १ व्यर्थ न होनेवाला। न चूकनेवाला। खाली न जानेवाला। अमोघ। २ व्यर्थ। बेकार। निष्फल [को०]।

विमोचक—वि० [सं०] १ मुक्त करनेवाला। छुड़ानेवाला। २. बधन खोलनेवाला। ३. गिरानेवाला। छोड़नेवाला। डालनेवाला।

विमोचन—सङ्घा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बधन, गाँठ आदि खोलना। २ बधन में छुड़ाना। मुक्त करना। रिहा करना। ३ गाँठ में बँल आदि को खोलना। ४ निकालना। बाहर करना। जैसे,—अश्रुविमोचन। ५ इस प्रकार अलग करना कि कोई वस्तु दूर जा पड़े। छाड़ना। फेंकना। जैसे,—घुप ने बाण। ६ गिराना। डालना। ७ शिव का एक नाम [को०]।

विमोचना^७—क्रि० सं० [सं० विमोचन] १. बधन आदि खोलना। २. छुटकारा देना। रिहा करना। मुक्त करना। छोड़ना। ३. गिराना। टपकाना। ४. निकालना। बाहर करना। उ०—जब तैं परदेज भिषारे पिवा अँमुषा अस्त्रियानि विमोचति सी।—वेनीप्रघने (शब्द०)।

विमोचनीय—वि० [सं०] विमोचन के योग्य। छोड़ने के योग्य। मुक्त करने योग्य।

विमोचित'—वि० [सं०] १. खुना हुआ। जो बँधा न हो। २. जो छोड़ दिया गया हो। मुक्त किया हुआ।

विमोचित^२—सङ्घा पुं० शिव का एक नाम [को०]।

विमोचितावास—सङ्घा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार ऐसे स्थान में निवास करना जिसे किसी ने रहने के अयोग्य मन्त्ररूप छोड़ दिया हो।

विमोच्य—वि० [सं०] १ छोड़ने योग्य। मुक्त करने योग्य। २. जिसे छोड़ना, खोलना या मुक्त करना हो।

विमोह—सङ्घा पुं० [सं०] १ मोह। अज्ञान। भ्रम। भ्राति। उ०—मन वसुदेव विमोह कंस से। मोचक माधव दुविद ध्वस से।—रघुराज (शब्द०)। २ वेसुध होना। अचेत होना। आसक्ति। ४ एक नरक का नाम।

विमोहक—वि० सङ्घा पुं० [सं०] १ मोहनेवाला। लुभावना। २. मन में लोभ उत्पन्न करनेवाला। ललचानेवाला। ३ ज्ञान या सुख हरनेवाला।

विमोहक^२—सङ्घा पुं० [सं०] एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विमोहन—सङ्घा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १ मोहित करना। मन लुभाना। मुग्ध करना। २. दूसरे का मन वश में

विमोहनशील

करना । ३. सुख बुध भुजाना । ऐसा प्रभाव डालना कि चित्त-
ठिकाने न रहे । मतिभ्रंश करना । ४. कामदेव के पाँच बाणों
मे से एक । ५. एक नरक का नाम । ६. भ्रम । चक्कर (को०) ।

विमोहनशील—वि० [सं० विमोहन + शील] [वि० स्त्री० विमोहनशीला]
१. भ्रमकारी । धोखा देनेवाला । चक्कर मे डालनेवाला । भ्रान
करनेवाला । उ०—गिरिजा सुनहु राम कै लीला । सुन हित
दनुज विमोहनशीला ।—तुलसी (शब्द०) । २. मोहित करने-
वाला । लुभानेवाला ।

विमोहना पुं०—क्रि० अ० [सं० विमोहन] मोहित होना । लुभा जाना ।
भ्रामकत होना । उ०—एक नयन कवि मुहमद गुनी । सोइ
विमोहा जो कवि सुनी ।—जायसी (शब्द०) । २. वेसुध होना ।
तन मन की सुख न रखना । भ्रात होना । धोखा खाना ।

विमोहना^२—क्रि० सं० १. मोहित करना । लुभाना । २. ऐसा प्रभाव
डालना कि तन मन की सुखि न रहे । वेसुध करना । ३. भ्राति
मे करना । धोखे मे डालना । ४. वशीभूत करना (को०) ।

विमोहा - सद्वा स्त्री० [देश०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण
(S'S) होते हैं । इसे 'जोहा', 'विजोहा' और 'विजोहा' भी
कहते हैं । विशेष दे० 'विजोहा' ।

विमोहित—वि० [सं०] १. लुभाया हुआ । मुग्ध । उ०—तुम अस बहुत
विमोहित भए । धुन धुन सीस जीव दै गए ।—(शब्द०) । २.
तन मन की सुख भूला हुआ । ३. मूर्छित । उ०—यह सुनना
न पड़े सोई अरुच्छा है और यही कहते कहते वह विमोहित हो
गई ।—कादंबरी (शब्द०) । ४. वशीकृत (को०) ।

विमोही—वि० [सं० विमोहिन्] [वि० स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित
करनेवाला । जी लुभानेवाला । मन आकर्षित करनेवाला ।
२. सुख बुध भुलानेवाला । ऐसा प्रभाव डालनेवाला कि तन मन
की सुख न रहे । ३. मूर्छित या बेहोश करनेवाला । ४. भ्रम
मे डालनेवाला । भ्रात करनेवाला । ५. जिसे मोह या दया न
हो । जिसे ममता या स्नेह न हो । निष्ठुर । कठोरहृदय ।
उ०—जिउ गंवाइ सो गएउ विमोही । भा विनु जिन, जिउ
दीन्हैसि ओही ।—जायसी (शब्द०) ।

विमोह—सद्वा पुं० [सं० वल्मीक, प्रा० वल्मी + ओट (प्रत्य०)] दीमको
का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह । बाँधी । उ०—गोहर ह्वै तुम
पूरव जनमा । वसे विमोह एक कहूँ वन माँ—रघुराज (शब्द०) ।

विम्लान—वि० [सं०] १. मुरझाया हुआ । विवर्ण । शुष्क । २. ताजा ।
हरा भरा (को०) ।

विम्लापन—सद्वा पुं० [सं०] १. ताजगी । अम्लानता । २. विशुद्धि ।
पारेषुक्ति । ३. म्लान करनेवाला । मुरझा देनेवाला (को०) ।

वियग पुं०—सद्वा पुं० [हि० विय + अग] दो अगवाले, महादेव ।
उ०—करहि वियगा आलिंगन । तेहि चंद्रहि कवहूँ सालिंगन ।
—श० दि० (शब्द०) ।

वियता—वि० [सं० विगन्तृ] १. जिसका कोई नियता न हो । निया-
मरहित । २. सारथिहीन (को०) ।

विय पुं०—वि० [सं० द्वि, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो । जोडा । २.
दूसरा । उ०—कहत सर्व कवि कमल से, मो मत नैन पखान ।
नातर कत इनि विय लगत उपजत विरह कृशान ।—विहारी
(शब्द०) ।

वियच्चारी—सद्वा पुं० [सं० वियत्चारिन्] चील पक्षी (को०) ।

वियत्^१—सद्वा पुं० [सं०] १. आकाश । २. वायुमंडल ।

वियत्^२—वि० गमनशील ।

वियत्पताका—सद्वा स्त्री० [सं०] विद्युत् । बिजली ।

वियत्पथ—सद्वा पुं० [सं०] आकाशमार्ग । वायुमंडल (को०) ।

वियति—सद्वा पुं० [मं०] १. भागवत के अनुसार नहुष राजा के
एक पुत्र का नाम । २. चिडिया । पक्षी (को०) ।

वियद्गगा—सद्वा स्त्री० [सं० वियद्गङ्गा] आकाशगंगा ।

वियद्गति—वि० [सं०] आकाशचारा (को०) ।

वियद्ध पुं०—सद्वा पुं० [सं० वियत्] । दे० 'वियत्' । उ०—उठति एहि
हल्लिता । वियद्ध चद्र चल्लिता ।—पृ० रा०, २५।१३१ ।

वियद्व्यापी—वि० [सं० वियत् + व्यापिन्] आकाशव्यापी । उ०—
शब्द वियद्व्यापी सत्ता है ।—संपूर्णानंद अर्थ० ग्रं०, पृ० ११२ ।

वियद्भूति—सद्वा स्त्री० [सं०] अंधेरा । अंधकार (को०) ।

वियन्मणि—सद्वा पुं० [सं०] सूर्य ।

वियन्मध्यहस—सद्वा पुं० [सं०] सूर्य (को०) ।

वियम—सद्वा पुं० [सं०] १. संयम । इन्द्रियदमन । २. दुःख । क्लेश ।
यातना । ३. प्रतिवध । रोक । नियंत्रण (को०) । ४. विराम ।
पडाव (को०) ।

वियव—सद्वा पुं० [सं०] अंत मे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का
कीडा (को०) ।

वियात—वि० [सं०] १. रास्ते से भटका हुआ । पथभ्रष्ट । २. गया
गुजरा । गया बीता । ३. ढीठ । हिम्मती । घृष्ट (को०) ।
४. निर्लज्ज । बेहया । ५. दुश्चरित्र । व्यसनी (को०) ।

वियान—सद्वा पुं० [सं० व्यान] शरीरस्थ एक वायु का नाम । दे०
'व्यान' । उ०—पाँचई बानी सिंगन लेखा । वियान व्यान मो
कोन्ह विवेखा ।—कवीर सा०, पृ० ८८० ।

वियाम—सद्वा पुं० [सं०] इन्द्रियनिग्रह । संयम । २. दे० 'वियम'
(को०) । ३. एक प्रकार की नाप जो विस्तृत दोनो भुजाओं
की लंबाई के बराबर कही गई है (को०) ।

वियास—क्रि० अ० [सं० व्यास] १. विस्तृत होना । बढ़ना । फैलना ।
२. उगना । हरा भरा होना । उ०—मन वच कर्म लगाय
संत की सेवा लावै । उकठा काठ वियास साच जो दिल मे
आवै ।—पल्लव, पृ० १०४ ।

वियुक्त—वि० [सं०] १. जो संयुक्त न हो । जिसकी जुदाई हो गई हो ।
विच्छुडा हुआ । वियोगप्राप्त । २. जुदा । अलग । पृथक् ।
३. रहित । हीन । वंचित । ४. अभावग्रस्त (को०) ।

वियुत—वि० [सं०] १. वियुक्त । अलग । २. रहित । हीन ।

वियुति—सद्वा स्त्री० [सं०] गणित मे दो राशियों का भ्रवर (को०) ।

वियुक्त—वि० [स०] जो अपने दल से अलग हो गया हो। पृथक् [को०]।
वियो०—वि० [स०] द्वितीय, प्रा० वीय] दूसरा। अन्य। उ०—ज्ञान
स्मारत पक्ष को ग्राह्य कोउ खड्गन वियो।—नाभादास।
(शब्द०)।

वियोग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ सयोग का अभाव। मिलाप का न
होना। विच्छेद। २ पृथक् होने का भाव। अलगाव।
३ दो प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना। विरह। जुदाई।
विशेष—पाहित्य में शृंगार रस दो प्रकार का माना गया है—
सयोग शृंगार (या सभोग शृंगार) और वियोग शृंगार
(या विप्रलम्भ शृंगार)। वियोग की दशा तीन प्रकार की होती
है—पूर्वराग, मान और प्रवास।

४ गणित में राशिका व्यवकलन। ५ अभाव। हानि (को०)।

वियोगभाक्—वि० [स० वियोगभाज्] वियोगी। विरही (को०)।

वियोगात्—वि० [स० वियोगान्त] (उपन्यास, नाटक या कथा आदि)
ाजमकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

विशेष—आधुनिक नाटक दो प्रकार के माने जाते हैं—सुखात
और दुःखात। इन्हीं का कुछ लोग सयोगात् और वियोगात् भी
कहते हैं। भारतवर्ष में सयोगात् या सुखात नाटक लिखने की
ही चाल पाई जाती है, दुःखात का निषेध ही मिलता है। पर
पूर्वकाल में दुःखात नाटक भी लिखे जाते थे, इसका आभास
कालिदास के पूर्ववर्ती महाकवि भास के नाटकों से मिलता है।

वियोगावसान—वि० [स०] जिसका अंत वियोग हो (को०)।

वियोगावह—वि० [स०] वियोगजनक। वियोग करने या देनेवाला
(को०)।

वियोगिन०—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वियोगिनी] दे० 'वियोगिनी'।

वियोगिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो अपने पति या प्रिय से
वियुक्त हो। जो अपने प्यारे से बिछुड़ी हुई हो। वह स्त्री
जिसका पति या नायक पास में न हो और जो उसके न रहने
से दुःखी हो। २ एक प्रकार का छंद।

विशेष—इसे वैतालीय और सुदरी भी कहते हैं। इसके विषय
चरणों में स स ज ग और सम चरणों में स भ र ल ग
होते हैं।

वियोगी—वि० [स० वियोगिन्] [वि० स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से
वियुक्त हो। जो प्रियतमा से बिछुड़ा हो। विरही। २. पृथक्
किया हुआ। जुदा किया हुआ (को०)। ३. अनुपस्थित (को०)।

वियोगी^२—सञ्ज्ञा पुं० १. वियोगी पुरुष। २. चक्रवाक। चक्रवा।

वियोजक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अलग करनेवाला। दो मिली हुई
वस्तुओं को पृथक् करनेवाला। २. गणित में वह सख्या जिसे
किसी दूसरी बड़ी सख्या में से घटाना हो।

वियोजन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० वियोजनीय, वियोजित, वियोज्य]
१. मिली हुई वस्तुओं को अलग करना। जुदा करना। पृथक्
करना। २. गणित में एक सख्या में से उससे कुछ छोटी दूसरी
सख्या निकालने या घटाने की क्रिया। बाकी।

वियोजित—वि० [स०] १. पृथक् किया हुआ। अलग किया हुआ।
२. रहित। शून्य।

वियोज्य^१—वि० [स०] १. वियोजन के योग्य। पृथक् करने योग्य।
२. जिसे अलग करना हो। जिसे जुदा करना हो।

वियोज्य^२—सञ्ज्ञा पुं० गणित में वह सख्या जिसमें कोई सख्या
घटानी हो।

वियोनि^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. अनेक जन्म। बहु जन्म। नाना जन्म।
२. पशुओं का गर्भाशय। ३. हीन जन्म। निष्ठुष्ट या कलकपूर्ण
पंदाइश। ४. अन्य जातीय स्त्री। विजातीय महिला (को०)।

वियोनि^२—वि० १. हीनजन्मा। जारज। २. हीन या तिर्यक् योनि-
वाला (को०)।

वियोनिज—वि० [स०] जो तिर्यक्योनि से उत्पन्न हो (पक्षी, पशु आदि)
(को०)।

वियोनी—सञ्ज्ञा स्त्री०, वि० [स० वियोगिनि] दे० 'वियोनि'।

विरग^१—वि० [स० विरङ्ग] १. बुरे रंग का। बदरंग। विवर्ण।
फीका। उ०—बैला करी काकिल कुरंग वार कोर कोर कुडि
कुडि केहरि कलक लङ्ग हदली। जरि जरि जवूनद विद्रुम
विरंग होत, अंग फारि दाढेम त्वना भुजग बदली—(शब्द०)।
२. अनेक रंगों का। कई वर्णों का।

यौ०—रंग विरंग, रंग विरंगा।

विरग^२—सञ्ज्ञा पुं० ककुष्ठ। एक प्रकार की पहाड़ी मिट्टी। विशेष दे०
'ककुष्ठ'।

विरंग^३—सञ्ज्ञा पुं० [स० विराग] वैराग्य। विराग। विरक्ति।

विरग काबुली—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] वायविडग। भाभोरग।

विरच—सञ्ज्ञा पुं० [म० विरञ्च] ब्रह्मा।

विरचन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विरञ्चन] ब्रह्मा। विधाता (को०)।

विरचि—सञ्ज्ञा पुं० [स० विरञ्चि] सृष्टि रचनेवाला, ब्रह्मा। विधाता।
उ०—सचि विरचि निकाई मनोहर लाजति मूरतिवत बनाई।
तापर तो बड भाग बड़े मतिराम लसें पति प्रीति सुहाई।—
मतिराम (शब्द०)।

विरचिसुत—सञ्ज्ञा पुं० [स० विरञ्चि + सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।
उ०—मुनि विरचिसुत अति हरषाए। कहत सुनहु जो चहत
सुहाए।—गोपाल (शब्द०)।

विरञ्च्य—सञ्ज्ञा पुं० [स० विरञ्च्य] ब्रह्मा (को०)।

विरज फूल—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० विरज + फूल] एक प्रकार का घान
या जड़हन।

विरजित—वि० [स० विरञ्जित] विगतानुराग। जिसका प्रेम मद पड़
गया हो (को०)।

विरक्त०—वि० [स० विरक्त] दे० 'विरक्त'। उ०—जन रामा
विरक्त सोई चौथे पद विश्राम जो—राम० धर्म०, पृ० ६८।

विरक्त^२—वि० [स०] १. जो अनुरक्त न हो। जिसका जो हटा हो।
जिसे चाह न हो। विमुख। जैसे,—ऐसी बातों से वे सदा

विरक्त रहते हैं। २ जो कुछ प्रयोजन न रखता हो। उदासीन। ३. अप्रसन्न। खिन्न। जैसे,—उनकी बातें सुनकर वे और भी विरक्त हो गए। ४. अत्यंत लाल रंग का (को०)। ५ बदरंग (को०)। ६ आविष्ट। आसक्त। आवेशयुक्त (को०)।

विरक्त^३—सङ्घा पुं० ऐसे वाजे जो केवल ताल देने के काम में आते हैं।
विरक्तता—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। विरक्त होने का भाव। २. उदासीनता।

विरक्ता—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ भाग्यहीन या खिन्न स्त्री। दुखियारी औरत। २. अननुकूल स्त्री (को०)।

विरक्ति—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। जी का हटा रहना। विराग। विमुखता। २ उदासीनता। ३ अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन—सङ्घा पुं० [सं०] [वि० विरचनीय विरचित] १ प्रणयन। निर्माण। बनाना। २ क्रमपूर्वक रचना या बनाना (को०)। ३ धारण करना (को०)।

विरचना^(१)—क्रि० सं० [सं० विरचन] १ रचना। बनाना। निर्माण करना। २. अलंकृत करना। सजाना।

विरचना^२—क्रि० अ० [सं० वि० + रञ्जत] विरक्त होना। जी का हटना। उचटना। उ०—विरचि मन फेरि राख्यो जाइ।—सूर० (शब्द०)।

विरचयिता—सङ्घा पुं० [सं० विरचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।

विरचित—वि० [सं०] १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। जैसे,—कालिदास विरचित शकुंतला नाटक। ३ घटित किया हुआ। सरचित। खचित। जटित (को०)। ४ संवारा हुआ। अलंकृत (को०)। ५ धारण किया हुआ। पहनाया हुआ (को०)।

विरछे^(१)—सङ्घा पुं० [सं० वृत्त] दे० 'वृत्त'। उ०—अरण्य साते उदर, विरछे रोमाच विचालें।—रघु० ६०, पृ० ४४।

विरज^१—वि० [सं० विरजस्] १ रजोगुणरहित। सुख, वासना आदि से मुक्त। २ जिसपर धून या गर्द न हो। निर्मल। स्वच्छ। साफ। ३ निर्दोष। वेदवै। ४ (स्त्री) जिसका रजोधर्म बंद हो गया हो।

विरज^२—सङ्घा पुं० १ विष्णु। २ शिव। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम (को०)। ५ एक ऋषि (को०)।

विरजतमा—वि० [सं० विरजतमस्] जो रजोगुण और तमोगुण से रहित हो (को०)।

विरजप्रभ—सङ्घा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

विरजमण्डल—सङ्घा पुं० [सं० विरजमण्डल] एक तीर्थ जो उड़ीसा में जाजपुर के पास माना गया है। यहाँ देवी की महाजया नामक मूर्ति है। (प्रभास खड्ग)।

विरजस्क—वि० [सं०] दे० 'विरज' को०।

विरजस्का—सङ्घा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म रुक गया हो (को०)।

विरजा^१—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ कपित्थानी का पौधा जिसकी पत्तियाँ कैथ की पत्तियों के समान होती हैं। २ श्रीकृष्ण की एक प्रेमिका सखी जिसने राधा के भय से नदी का रूप धारण कर लिया था।

विशेष—इसकी कथा ब्रह्मवैवर्तपुराण के श्रीकृष्ण जन्म खंड में दी हुई है। गोलोक में एक बार कृष्ण जी राधा को न देखकर विरजा नाम की एक गोपी के पास चले गए। खबर पाते ही राधा दौड़ी। श्रीकृष्ण तो अतर्धान हो गए, और विरजा बेचारी डर के मारे नदी हो गई। जब कृष्ण इसके विरह में बहुत व्याकुल हुए, तब इन्होंने फिर अपना पूर्व रूप धारण कर लिया। ३ दूब। दूर्वा (को०)। ४ राजा नहुष की पत्नी (को०)। ५. जगन्नाथ क्षेत्र (को०)।

विरजा^२—वि० [सं० विरजस्] दे० 'विरज'।

विरजा^३—सङ्घा स्त्री० गतार्तवा स्त्री। वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बंद हो गया हो।

विरजाक्ष—सङ्घा पुं० [सं०] मार्कंडेयपुराण के धनुमार एक पर्वत जो मेरु के उत्तर ओर है।

विरजाक्षेत्र—सङ्घा पुं० [सं०] उड़ीसा में एक तीर्थ स्थान जो जाजपुर के पास माना जाता है। विरज मंडल।

विरभ^(१)—सङ्घा पुं० [वि०] समूह। उ०—नंद० ग्रं०, पृ० ११४।

विरट—सङ्घा पुं० [सं०] १ कथा। २ अग्रर। अग्रर वृत्त।

विरण—सङ्घा पुं० [सं०] बरिन नाम की घास।

विरण्य—वि० [सं०] विस्तृत। विस्तीर्ण (को०)।

विरतत^(१)—सङ्घा पुं० [सं० वृत्तान्त] वृत्तान्त। हाल। कथा। उ०—ढोल्यु मनि आरति हुईं साभलि ए विरतत। जे दिन मारु विण गया, दर्ई न रयॉन गिएत।—ढोला०, दू० २०८।

विरत—वि० [सं०] १ जो अनुरक्त न हो। जिसे चाह न हो। जिसका मन हटा हो। विमुख। जैसे,—स्त्री या भोग विलास से विरत होना। २ जो लगा हुआ न हो। जिसने अपना हाथ हटा लिया हो। निवृत्त। जैसे,—किसी कार्य में विरत होना। ३ जिमने सासारिक विषयों से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४ विशेष रूप से रत। बहुत लीन। बिल्कुल लगा हुआ। उ०—कहुँ गनक गनत, जागी जपत जत्र मत्र मन विरत नित।—गुमान। (शब्द०)। ५ जिसका अन्न या समाप्ति हो गई हो। समाप्त। उपरहित (को०)। ६ विश्रान्त। थका या ठहरा हुआ (को०)।

विरति—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २ जी का उचटना। उदासीनता। ३ सासारिक विषयों से जी का हटना। वैराग्य। उ०—जोग तैं विरति, विरति ते शाना।—तुलसी (शब्द०)। ४ विश्राम। अवसान। गति (को०)।

विरत्त^(१)—वि० [सं० विरक्त, प्रा० विरत्त] विरत। अप्रसन्न। उ०—साह विरत्तो मारवाँ ग्राह जही गज वार। जठै सदसण चक्र ज्याँ रिसमल्ला पराधार।—रा० ६०, पृ० ७०।

विरथ—वि० [स०] १ बिना रथ का। जिसके पास रथ या सवारी न हो। उ०—रावण रथी विरथ रघुवीरा।—तुलसी (शब्द०)।
२ रथ से गिरा हुआ। ३ पैदल।

विरथीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] युद्ध में रथ नष्ट करके शत्रु को रथहीन करना।

विरथ्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव (को०)।

विरथ्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कुमार्ग। खराब राह। २ उपमार्ग। गली। लेन (को०)।

विरद^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० विरुद] १ बड़ा नाम। लवा चौड़ा या सुंदर नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। उ०—बड़े न हूँ गुनन विनु विरद बड़ाई पाय। कहत घतूरा को कनक गहनो गढ्यो न जाय।—बिहारी (शब्द०)। ३ यश। कीर्ति। विशेष दे० 'विरुद'।

विरद^२—वि० [स०] बिना दाँत का।

विरदावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विरुदावली] यश की कथा। कीर्ति की कथा। प्रशंसा के गीत।

विरदैत^३—वि० [हि० विरद + ऐत (प्रत्यय)] बड़े विरदवाला। कीर्ति या यशवाला। बड़े नामवाला।

विरघ^४—वि० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—विरघ भया कफ वाय ने घेरा। खाट पडा नहिं जाय खिपका रे।—कवीर श०, पृ० २६।

विरम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ सूर्यास्त। २ समाप्ति। अंत। ३ निवृत्ति। त्याग (को०)।

विरमण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विराम करना। रुकना। ठहरना। थमना। २ रम जाना। मन लगाना। ३ सभोग। विलास। ४ विरत होना। निवृत्त होना। त्याग। जैसे,—अदत्तदान-विरमण। (जैन)।

विरमना^१—पुं० क्रि० अ० [स० विरमण] १ रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। २ विराम करना। ठहरना। रुकना। ३ मोहित होकर रुक जाना। उ०—सूरदास कित विरमि रहे प्रभु आवत नहिं चले।—सूर (शब्द०)। ४ वेग आगि का थमना या कम होना। उ०—विरमै नहिं ताप जताए विन, जगजीवन की अहै रीति यही। करें जाहिर जीभ सो लाज लगी जो अक्राज न आज फिरै उमहो।—(शब्द०)।

विरमना^२—क्रि० अ० [स० विलम्बन अथवा स० विरम से हि० नामिक धातु] दे० विलंबना'।

विरमाना—पुं० क्रि० स० [हि० विरमना का सक० रूप] १ दूसरे का मन लगाना। अनुरक्त करना। २ मोहित करके रोक लेना। फँसाना। उ०—उत कुबजा विरमायो श्यामहि, इत यह दशा भई।—सूर (शब्द०)। ३ फँसा रखना। मशगूल रखना। उ०—देति न लेति कछु हँसिकै बड़ी बेर ली वातन ही विरमावति।—(शब्द०)। ४ भुलावे में रखना। भ्रम में डाले रखना।

विरमाना^३—क्रि० स० [स० विलम्बन] दे० 'विलंबाना'।

विरर—वि० [स० विरल] दे० 'विरल'। उ०—विरर चिकुर मुख डुं व सनेही—कवीर सा०, पृ० १५६७।

विरल^१—वि० [स०] १ जो घना न हो। जिसके बीच बीच में अवकाश हो। जिसके वचन बीच में खाली जगह हो। 'सघन' का उलटा। जैसे,—आगे चलकर यह वन विरल होता गया है। २ जो पास पास न हो। जो दूर दूर पर हो। ३ जो अधिकता से न मिले। जो केवल कही कही पाया जाय। दुर्लभ। जैसे,—ऐसे लोग ससार में बहुत विरल हैं। ४ जो गाढ़ा न हो। पतला। ढीला। ५ शून्य। निर्जन। ६ अल्प। थोड़ा।

विरल^२—सञ्ज्ञा पुं० जमाया हुआ दूध। दही।

विरल^३—अव्य० कठिनाई से। कभी कभी।

विरलजानुक—वि० [स०] जिसके दोनों घुटनों में अविक दूरी हो। जिसके घुटने आपस में मिल न सकें। धनु पदी (को०)।

विरलद्रवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लपसी (को०)।

विरलपातक—वि० [स०] जो बहुत कम पाप करे (को०)।

विरलपार्श्वग—वि० [स०] जो कम अनुचर या सेवक रखता हो (को०)।

विरलभक्ति—वि० [स०] जिसमें विविधता न हो। एक समान। नीरम। उबानेवाला (को०)।

विरला—वि० [स० विरल] कोई एक। इक्का दुक्का। दे० 'विरला'। उ०—चित्र खीचती थी जब चपला। नीलमेघ पट पर वह विरला।—लहर, पृ० २६।

विरलागत—वि० [स०] जो शायद हो कभी घटित होने। विरल रूप में आनेवाला (को०)।

विरलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का भीना या महीन वस्त्र।

विरलित—वि० [स०] जो सघन न हो (को०)।

विरलीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सघन को विरल करना।

विरव^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अनेक प्रकार के शब्द।

विरव^२—वि० शब्दरहित। नीरव।

विरश्मि—वि० [स०] रश्मि या किरणों से रहित (को०)।

विरष^३—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ० भएँ विरष पुनि हाथ न आवै। जो बल करे सोई दुख पावै।—चित्रा०, पृ० ५२।

विरस^१—वि० [स०] १ रसहीन। फीका। नीरस। बिना स्वाद का। उ०—जल पय सगिस चिकाय, देखहु प्रीति की रीति यह। विरस तुरत ह्वे जाय, कपट खटाई परत ही।—तुलसी (शब्द०)। २ जो अच्छा न लगे। विरक्तिजनक। जो हटानेवाला। अप्रिय। अरुचिकर। उ०—चहुँटी चिबुन चाँपि चूँचि लोल लोयन की, रस में विरस कलो वचन मलीनो है। गहि भरि लीनो कछु उत्तर न बाल दीनो हाल से हवाल राउ अक भरि लीनो है।—सूदन (शब्द०)। ३ (काव्य) जो रसहीन हो गया हो। जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो। ४ क्रूर। निर्दय (को०)।

विरस^२—सखा पु० १ काव्य मे रसभंग।

विशेष—केशव ने इसे 'अनरस' के पाँच भेदों में से एक माना है।

२ पीडा। वेदना (को०)।

विरसता—सखा स्त्री० [सं०] १ नीरसता। फीकापन। २ रसभंग। मजा किरकिरा होना।

विरसा—सखा पु० [अ०] मीरास। मृतक की मपत्ति। मरे हुए आदमी की जायदाद (को०)।

विरह^१—सखा पु० [सं०] १ किसी वस्तु में रहित होने का भाव। किसी वस्तु का अभाव। किसी वस्तु के बिना स्थिति। २ किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३. वियोग का दुःख। जुदाई का रज। ४. अंतर। व्यवधान। अविद्यमानता। उ०—नव नवय प्रातय विरह प्रावय सप दिव धुनि वज्जिय।—पृ० २०, २४। ११८। ५ परित्याग। छोड़ देना (को०)।

विरह^२—वि० रहित। शून्य। बगैर। विना।

विरहज, विरहजनित, विरहजन्य—वि० [सं०] जो विरह के कारण उत्पन्न हो (को०)।

विरहज्वर—सखा पु० [सं०] विरह में उत्पन्न ताप या पीडा (को०)।

विरहन्—वि० स्त्री० [सं० विरहिणी] दे० 'विरहिणी'। उ०—तजे सुग्रह धन वाम सहैनी। पिय विरहन् उठि चनै अकेली।—कबीर सा०, पृ० ६।

विरहविधुर—वि० [सं०] विरह के कारण व्यथित या अकेला। उ०—वया आँसु सा डुलक गया वह, विरहविधुर उर का उद्गार?—प्रपरा, पृ० १०२।

विरहा—सखा पु० [सं० विरहक या हि० विरह] एक प्रकार का गीत जिसे अहीर और गडरिए गाते हैं। विशेष दे० 'विरहा'। २ विरह। वियोग।

विरहाग्नि—सखा स्त्री० [सं० विरहाग्नि] दे० 'विरहाग्नि'।

विरहाग्नि—सखा स्त्री० [सं०] विरह से उत्पन्न ताप (को०)।

विरहानल—सखा स्त्री० [सं०] दे० 'विरहाग्नि' (को०)।

विरहिणी—वि० स्त्री० [सं०] १ जिसे प्रिय या पति का वियोग हो। जो पति या नायक से अलग होने के कारण दुःखी हो। २. पारिश्रमिक। मजदूरी (को०)।

विरहित वि० [सं०] १ रहित। शून्य। विना। उ०—आश्रम वरन घरम विरहित जग लोक वेद मरजाद गई है।—तुलसी (शब्द०)। २ छोड़ा हुआ। परित्यक्त (को०)। ३. विधुक्त (को०)। ४ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही^१—वि० [सं० विरहिन्] [वि० स्त्री० विरहिणी] १ जिसे प्रिया का वियोग हो। जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो। उ०—विरही कहँ लौ आयु सँभारै?—मूर। (शब्द०)। २ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही^२—सखा पु० [दे०] भीगा हुआ अन्न। उ०—नवरात्र में घटस्थापन के साथ साथ, भूमि पर बाँस की आयताकार चौहद्दी बनाकर अनाज भिगोए जाते हैं, जिन्हें विरही कहते हैं।—शुक्ल अभि० ग्र० पृ० १२६।

हि० श० ६-२३

विरहोत्कण्ठिता—मंज्ञा स्त्री० [सं० विरहोत्कण्ठिता] नायिकाभेद के अनुसार प्रिय के न आने से दुःखी वह नायिका जिसके मन में पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी किसी कारणवश वह न आवे।

विराग^१—सखा पु० [सं०] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। लगन न होना। २ किसी वस्तु से न विशेष प्रेम होना न द्वेष। उदासीन भाव। ३ सामारिक सुखों की चाह न करना। विषयभोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य। उ०—राजभोग्य के योग्य, विपिन में बैठा आज विराग लिए।—पंचवटी, पृ० ६। ४ एक में मिले हुए दो राग।

विशेष—एक राग में जब दूसरा राग मिल जाता है, तब उसे विराग कहते हैं।

५ वर्ण या रग का परिवर्तन (को०)। ६ असंतुष्टि। असंतोष (को०)।

विराग^२—वि० १ राग से रहित। उदासीन। विराग^३, २ वर्ण या रगहीन (को०)।

विरागी—वि० [सं० विरागिन्] [वि० स्त्री० विरागिनी] १ जिसे राग न हो। जिसे चाह न हो। जिसने मन न लगाया हो। उदासीन। विमुख। २ जिसे सासारिक विषयों से मन हटा लिया हो। संसारत्यागी। विरक्त।

विराज्—वि०, सखा पु० [सं०] दे० 'विराट्'।

विराज^१—सखा पु० [सं०] १ मंदिर का एक विशेष प्रकार। २ एक पौधा। ३ एक प्रजापति का नाम (को०)।

विराज^२—वि० १. अत्युत्तम। अत्यंत उत्कृष्ट। २ शासन करनेवाला। ३ चमकने वा दीप्त होनेवाला (को०)।

विराजन—सखा पु० [सं०] [वि० विराजमान, विराजित] १. शोभित होना। २ शासक का कार्य करना। शासन करना (को०)। ३. वर्तमान होना। रहना।

विराजना—क्रि० अ० [सं० विराजन] १ शोभित होना। सोहना। फवना। २ वर्तमान होना। मौजूद रहना। उपस्थित रहना। होना। रहना। ३ बैठना। जैसे,—आइए, विराजिए।

विराजमान—वि० [सं०] १ प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक दमकना। २ विद्यमान। उपस्थित। मौजूद। जैसे, पति जी यहाँ पहले ही से विराजमान है। ३ बैठा हुआ। उपविष्ट।

विराजित—वि० [सं०] १ सुशोभित। २ प्रकाशित। ३ उपस्थित। विद्यमान।

विराज्ञी—सखा स्त्री० [सं०] साम्राज्ञी। रानी (को०)।

विराज्य—सखा पु० [सं०] १ शासन। हुकूमत। २ राज्य (को०)।

विराट्—सखा पु० [सं० विराज्] ब्रह्मा वा वह स्थूल स्वस्व जिम्मे के अंदर अखिल विश्व है अर्थात् संपूर्ण विश्व जिसका परीर है। विश्वशरीरमय अन्न पुण्य।

विशेष—इस भावना का निरूपण इस प्रकार है—'उस पुण्य के सहस्रों मस्तक, महस्रों आँखें और सहस्रों चरण ह। वह पृथ्वी में सर्वत्र व्याप्त रहने पर भी दस अंगुल ऊपर अवस्थित है। पुरुष ही सब कुछ है—जो हुआ है और जो होगा। उसकी

इतनी बड़ी महिमा है, पर वह इससे कहीं बड़ा है। संपूर्ण विश्व और भूत एक पाद है, आकाश का अमर अंश त्रिपाद है। उससे विराट् उत्पन्न हुए और विराट् से अधिपुरुष। उन्होंने आविर्भूत होकर संपूर्ण पृथ्वी को आगे पीछे घेर लिया। भगवद्गीता के अनुसार भगवान् ने जो अपना विराट् स्वरूप दिखाया था, उसमें समस्त लोक, पर्वत, समुद्र, नद, नदी, देवता आदि दिखाई पड़े थे। बलि को छानने के लिये भगवान् ने जो त्रिविक्रम रूप धारण किया था, उसे भी विराट् कहते हैं। पुराणों में विराट् को ब्रह्मा का प्रथम पुत्र कहा है। ब्रह्मा दो भागों में विभक्त हुए—स्त्री और पुरुष। स्त्री अंश से विराट् की उत्पत्ति हुई जिम्ने स्वायम्भुव मनु को उत्पन्न किया। स्वायम्भुव मनु से प्रजापतियों की उत्पत्ति हुई।

२ लडाकू जाति। क्षत्रिय। ३ काति। दीप्ति। सौंदर्य। ४ शरीर। देह (को०)। ५ प्रज्ञा न। प्रतिभा। प्रज्ञा। (वेदात दर्शन)। ६ ब्रह्मांड (को०)।

विराट्—वि० १ बहुत बड़ा। बहुत भारी। जैसे,—विराट् सभा, विराट् आयोजन, २ शासन करनेवाला। प्रधान (को०)।

विराट्—सञ्ज्ञा स्त्री० १ एक वैदिक वृत्ति का नाम। २ उत्कृष्टता। दीप्तिमत्ता। सुदृग्ता (को०)।

विराट् स्वराज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ। एक प्रकार का एकाह। (श्रौत सूत्र)।

विराट्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. मत्स्य देश जहाँ के राजा के यहाँ पाँचों पांडव अज्ञातवास के समय छिपे थे।

विशेष—मनुस्मृति में मत्स्य देश का उल्लेख कुरुक्षेत्र और पांचाल के साथ है, इससे अनुमान होता था कि वह थानेसर के आस पास होगा। पर अब यह बात एक प्रकार से निश्चित हो गई है कि अलवर और जयपुर के बीच का प्रदेश ही महाभारत के समय मत्स्य देश कहलाता था। उक्त प्रदेश के अंतर्गत 'वैराट' और 'माचडी' दो स्थान अब तक 'विराट' और 'मत्स्य' का स्मरण दिलाते हैं।

२ मत्स्य देश का राजा।

विशेष—इनके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकर के रूप में रहते थे। इनकी कन्या उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र शभिमान्यु से हुआ था जिसमें परीक्षित की उत्पत्ति हुई। ३ महाभारत का एक पर्व। ४ सगीत में एक ताल का नाम।

विराटक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का निम्न कोटि का हीरा या रत्न जो विराट् देश में निकलता था। राजपट्ट। राजावर्त।

विराटज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विराटक'।

विराटपर्व—सञ्ज्ञा पुं० [स० विराटपर्वन्] महाभारत के अठारह पर्वों में से एक पर्व का नाम (को०)।

विराणी—सञ्ज्ञा पुं० [स० विराणिन्] हस्ती। हाथी।

विरातक—सञ्ज्ञा पुं० [न०] अर्जुन वृक्ष।

विरात—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ रात का अवसान। प्रातःकाल। २. रात का द्वितीय तृतीय प्रहर। बहुरात्र। अपरात्र (को०)।

विराट्—वि० [स०] १. तिरस्कृत। २. जिमका विरोध किया गया हो। ३. अपकृत। जिसका अपकार किया गया हो (को०)।

विराघ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पीडा। क्लेश। तकलीफ। २ पीडित करनेवाला। सतानेवाला। ३ विरोध। खिलाफत (को०)। ४ एक राक्षस जिसे दंडकारण्य में लक्ष्मण ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार इसके पिता का नाम सुपर्ण्य और माता का नाम अतद्रुता था। यह राक्षस पूर्व जन्म में तुवुरु नामक गधर्व था, जो वैश्रवण या कुबेर के शाप ने राक्षस योनि में उत्पन्न हुआ था। इसके बहुत प्रार्थना करने पर वैश्रवण ने कहा था—'अच्छा, जाओ। जब दशरथ के यहाँ भगवान् अवतार लेंगे, तब तुम्हारा शाप छूटेगा'।

रामायण में लिखा है कि दंडकारण्य में विराघ सीता को लेकर भागने लगा। राम ने बहुत बारा चलाए, पर वह युद्ध में न मारा गया और राम तथा लक्ष्मण दोनों को उठाकर ले चला। रास्ते में फिर युद्ध होने लगा और दोनों भाइयों ने मिलकर उसकी भुजाएँ काट डाली। पर वह जल्दी मरता नहीं था। अंत में लक्ष्मण ने एक बड़ा सा गड्ढा खोदा और उसका शरीर उसमें डाल दिया गया। मरने के पहले इसे अपने पूर्वशरीर और शाप का स्मरण हो आया था।

विराघन्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ अपकार करना। हानि करना। २ विरोध (को०)। ३. पीडित करना। सताना। तग करना। ४ वेदना। पीडा (को०)।

विराधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अपकार। दूसरे की हानि करना (को०)।

विराधान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कष्ट। व्यथा। दुःख (को०)।

विराना—वि० [फा० वेगानह्] दे० 'विराना'। उ०—फिर विराने देश में किससे पूछें।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५६।

विराम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ किसी क्रिया या व्यापार का कुछ देर के लिये बंद होना, रुकना या थमना। ठहराव। ठहरना।

यौ०—विरामसंधि=युद्ध में लड़ते दोनों पक्षों की ओर कुछ समय के लिये युद्ध बंद करने का सम्झौता। युद्ध बंद करने की संधि। उ०—हंगेरी ने विरामसंधि कर ली।—आ० अ० रा०, पृ० ५२।

२. चलने को थकावट दूर करने के लिये रास्ते में ठहरना। चलना रोकना। सुस्ताना। दम मारना। विश्राम।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ दोलते समय ठहरना पड़ता हो। ४ छंद के चरण में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ ठहरना पड़े। यति। ५ विष्णु का एक नाम (को०)। ६. अंत। समाप्ति। उपसंहार।

यौ०—विरामचिह्न=वह निशान वा चिह्न जिससे रुकाव, ठहराव या समाप्ति सूचित हो।

विरामण^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ठहराव (को०)।

विरामण^२—सञ्ज्ञा पुं० [स० ब्राह्मण] ब्राह्मण।

विरामताल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ब्रह्म ताल का एक प्रकार या भेद (को०)।

विरामदायिनी—वि० स्त्री० [स०] विश्राम देनेवाली। आराम पहुँचानेवाली। उ०—और विरामदायिनी अपनी सव्या को दे जाता है।—पंचवटी, पृ० ६।

विरामब्रह्म—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सगीत में ब्रह्म ताल के चार भेदों में से एक भेद ।

विराल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विडाल । बिल्ली । उ०—नेतरू माडल गेंडुआ एक सफुर विराल एक ।—वर्ण०, पृ० १४ ।

विराव^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ शब्द । बोली । कलरव । उ०—कान परी कोकिला की काकली कलित जो कलापिन की कूक कल कोमल विराव की ।—देव (शब्द०) । २. हल्ला गुल्ला । शोर गुल ।

विराव^२—वि० शब्दरहित ।

विरावण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जिससे बहुत शोर गुन हो । बहुत हल्ला करने या करानेवाला [को०] ।

विराविणी^१—वि० स्त्री० [सं०] १. बोलनेवाली । शब्द करनेवाली । २. रोने चिल्लानेवाली ।

विराविणी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ झाड़ू । २ चिल्लाहट रुदन । ३ ध्वनि [को०] । ४ नर्द ।

विरावित्त—वि० [सं०] ध्वनित किया हुआ [को०] ।

विरावी—वि० [सं०] विराविन् । [वि० स्त्री० विराविणी] १ शब्द करनेवाला । बोलनेवाला । ध्वनि करनेवाला । गूँजनेवाला । २. रोने चिल्लानेवाला । विलाप करनेवाला ।

विरावृत्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] काली मिर्च [को०] ।

विराम^७—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विलास] दे० 'विलास' ।

विरासत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] उत्तगधिकार । वरासत । विरसा । उ०—जो मिली विरासत तुम्हे, आँख उसकी आँसू से गोली है ।—धूप०, पृ० ६३ ।

विरासी^७—वि० [सं०] विलासिन् । दे० 'विलासी' । उ०—जौ लनि कालिदि होसि विरासी । पुनि सुरसरि होइ समुद परासी ।—जायसी (शब्द०) ।

विरिच—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विरिञ्च] १ ब्रह्मा । २. विष्णु । ३ शिव ।

विरिचन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विरिञ्चन । १ ब्रह्मा । २ विष्णु [को०] । ३ शिव [को०] ।

विरिचि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विरिञ्चि] दे० 'विरिच' ।

विरिक्त—वि० [सं०] १ जिसे विरेचन दिया गया हो । २. जिमका पेट छूटा हो । जिसे दस्त आ रहे हो । ३ निकालकर साफ या रिक्त किया हुआ [को०] ।

विरिक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरेचन । २ रिक्त करने की क्रिया [को०] ।

विरिद्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ध्वनि । स्वर [को०] ।

विरुमान्—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विरुमत्] १ दीप्तिमय या चमकीला आभूषण । २. दीप्त या ज्योतिष शब्द [को०] ।

विरुखा—वि० [फा०] वेरुख् । दे० 'वेरुखा' या 'वेरुख' ।

विरुण—वि० [सं०] १. विशेष रोगी । २. सुस्त । ३ खडित । टुकड़ों में विभक्त । कटा फटा । विदीर्ण । ४. भुका हुआ । ५. विष्वस्त । विनष्ट । ६ कुठित । भीथरा [को०] ।

विरुच—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मंत्रविशेष जिमसे अभिमन्त्रित कर अस्त्रक्षेपण किया जाय [को०] ।

विरुज्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ अत्यधिक पीडा । भीषण वेदना । २. विशिष्ट रोग । बड़ी व्याधि [को०] ।

विरुज्—वि० [सं०] रोगरहित । नीरोग । स्वस्थ ।

विरुम्भना^७—क्रि० अ० [सं०] वि + रुम्भन्] दे० 'उलम्भन' ।

विरुम्भाना^७—क्रि० सं० [हिं० विरुम्भना] दे० 'उलम्भाना' ।

विरुत्—वि० [सं०] रवयुक्त । अव्यक्त शब्दयुक्त । कूजित । गूँजना हुआ ।

विरुत्—सञ्ज्ञा पु० १ चीखना । चिल्लाना । २ चिल्लाहट । ध्वनि । शोर । कोलाहल । ३ कलरव । गुजार [को०] ।

विरुति—सञ्ज्ञा स्त्री० उत्क्रोश । क्रदन । चीख । चिल्लाहट [को०] ।

विरुद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ गुण, प्रताप आदि का वर्णन । राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो । यश-कीर्तन । प्रशस्ति । २ यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे । जैसे, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य । (इसमें चंद्रगुप्त तो नाम है और विक्रमादित्य विरुद है ।) ३. यश । कीर्ति । ४ उच्चारण करना । घोषित करना । प्रख्यापन [को०] । ५ जोर से चिल्लाना । चिल्लाहट [को०] ।

विरुदध्वज—सञ्ज्ञा सं० [सं०] राज्य या शासन की पताका, शासकीय ध्वज [को०] ।

विरुदावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का मविस्तर कथन । यशवर्णन । प्रशंसा । २ धार्मिक स्तुतिषो का संग्रह । स्तुतिसंग्रह [को०] ।

विरुदित—सञ्ज्ञा पु० [सं०] रुदन । रोना । शोक, सताप करना [को०] ।

विरुद्ध^१—वि० [सं०] १. जो हित के अनुकूल न हो । विरोधयुक्त । प्रतिकूल । खिलाफ । जैसे,—आजकल वह हमारे विरुद्ध है । २ अप्रसन्न । वाम । ३. जो मेल में न हो । जो एकदम भिन्न या उलटा हो । विपरीत । जैसे,—यह बात उस बात से सर्वथा विरुद्ध है । ४. जो उचित से सर्वथा भिन्न हो । जा न्याय या नीति के अनुकूल न हो । विपरीत । अनुचित । जैसे,—विरुद्ध आचरण । ५. बाधित । जिसका विरोध किया गया हो [को०] । ६ घेरा हुआ । नाकेबंद किया हुआ [को०] । ७ प्रतिषिद्ध । वर्जित [को०] । ८ अनिश्चित । सदेहपूर्ण [को०] । ९ बाह्यकृत । निराकृत । वचित [को०] ।

विरुद्ध^२—क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में । खिलाफ । जैसे—आजकल वह हमारे विरुद्ध चल रहा है ।

विरुद्ध^३—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. विरोध । वपरीत्य । शत्रुता । २. विराध नामक एक अलंकार (साहित्य) । ३ वैमत्य । असहमति [को०] ।

विरुद्धकर्मा—सञ्ज्ञा सं० [सं०] विरुद्धकर्मन् । १ विरुद्ध कर्म करनेवाला व्यक्ति । विपरीत आचरण का मनुष्य । बुरा चल चलन का आदमी । २ केशव के अनुसार श्लेष अलंकार का एक भेद, जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं । उ०—बाह्यी को राग होत, सुरज करत अस्त, अदी द्विजराज का जु होत यह कैसे है ?—केशव (शब्द०) इस पद का साधरण अर्थ तो यह है कि पश्चिम दिशा के लाल होते ही सुने

तो अस्म होता है और चन्द्रमा उदय, यह कैमी बात है। पर श्लेष में इसका अर्थ होना है कि वारुणी (गराव) की चाह होते ही शूरवीर का तो पराभव होता है, पर वारुणी (उपनिषद् की एक विद्या) की चाह होते ही ब्राह्मण की उन्नति होती है।

विरुद्धता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ विरुद्ध होने का भाव। २ प्रति-कूलता। विपरीतता। उलटापन।

विरुद्धधी—वि० [म०] वैर भाव रखनेवाला। दुष्ट। खोटा [को०]।
विरुद्धप्रसङ्ग—सञ्ज्ञा पु० [स० विरुद्धप्रसङ्ग] अकरणीय कार्य। न करने योग्य काम [को०]।

विरुद्धमतिकारिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक काव्यदोष, जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग से होता है जिससे वाच्य के सवध में विरुद्ध या अनुचित बुद्धि हो सकती है, जैसे, 'भवानीश' शब्द के प्रयोग से। 'भवानी' शब्द का अर्थ ही है 'शिव' की पत्नी। उसमें ईश लगाने से सहसा यह ध्यान हो सकता है कि 'शिव की पत्नी' का कोई और भी पति है।

विरुद्धमतिकृत्—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'विरुद्धमतिकारिता'।

विरुद्धरूपक—सञ्ज्ञा पु० [स०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद, जिसमें कही हुई बात बिल्कुल 'अनमिल' अर्थात् असंगत या असंबद्ध सी जान पड़ती है, पर विचार करने पर अर्थात् रूपक के दोनों पक्षों (उपमेय, उपमान) का ध्यान करने पर अर्थ संगत ठहरता है।

विशेष—इसमें उपमेय का कथन नहीं होता, इससे यह 'रूपकाति-शयोक्ति' ही है।

विरुद्ध हेत्वाभास—सञ्ज्ञा पु० [स०] न्याय में वह हेत्वाभास जहाँ साध्य के साधक होने के स्थान पर साध्य के अभाव का साधक हेतु हो। जैसे,—यह द्रव्य बल्लिषान् है, क्योंकि यह महा ह्रद है। यहाँ महा ह्रद होना बल्लि के होने का हेतु नहीं है, वरन् बल्लि के अभाव का हेतु है।

विरुद्धाचरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अनुचित, प्रतिपिद्ध या विरुद्ध आचरण और व्यवहार। [को०]।

विरुद्धार्थ—वि० [स०] विपरीत अर्थवाला [को०]।

विरुद्धार्थदीपक—सञ्ज्ञा पु० [स०] काव्यादर्श के अनुसार दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ हाना दिखाया जाता है। जैसे,—जलकण मिली वायु 'श्रीगमताप' को घटाती और 'विरहताप' को बढ़ाती है।

विरुद्धाशन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वज्रित आहार। अखाद्य भोजन [को०]।

विरुद्धोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विरोधपूर्ण कथन। प्रतिकूल कथन।

विरुव—वि० [स० विरुद्ध] दे० 'विरुद्ध'। उ०—कहे बले छवकाल विरुव भाषा विसतारै।—रघु० ८०, पृ० १४।

विरुल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का सर्प [को०]।

विरुला—सञ्ज्ञा पु० [स० विरुह] दे० 'विरवा'। उ०—कलियाय कुरे की रह्यो विरुला परि लेत नहीं छवि फूलि भली।—शकुन्तला, पृ० १०७।

विरुक्ष—वि० [स०] कठोर। कर्कश [को०]।

विरुक्षाण^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. रुखा करना। २. गर्हण। निंदा। ३. शाप। अभिशाप। ४. रक्तसाव को रोकनेवाली दवा [को०]।
विरुक्षाण^२—वि० १ सुखाने या रुद्ध करनेवाला। २. सकोचक [को०]।
विरुक्षित—वि० [स०] १ जो रुखा किया हुआ हो। २. लेपन किया हुआ। आवृत्त [को०]।

विरुज—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक अग्नि जिसका जल में होना कहा गया है।

विरुद्ध—वि० [स० विरुद्ध] १ आरुढ़। चढ़ा हुआ। २. अकुरित। जमा हुआ। बीज स फूटा हुआ। ३. जान। उत्पन्न। पंदा। ४. खूब जमा हुआ। खूब बैठा हुआ। खूब गड़ा या घँसा हुआ। ५. मुकुलित। खिला हुआ। [को०]। ६. भरा हुआ (घाव) [को०]।

विरुद्धक—सञ्ज्ञा पु० [स० विरुद्धक] १ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। २. एक शाक्यवशीय राजा का नाम। ३. एक लोकपाल का नाम। ४. अकुरित अन्न [को०]।

विरुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विरुद्धि] १ भेद या फोड़कर ऊपर उठना। २. अकुरित होना। अंकुशा फूटना [को०]।

विरुद्धिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख वृष्ण एकादशी। वरुद्धिनी एकादशी।

विरूप^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० विरूपा, विरूपी] १ कई रंग रूप का। कई शकलों का। तरह तरह का। २. कुरूप। बदसूरत। भद्दा। ३. विकटाकार। ३. बदला हुआ। परिवर्तित। ४. शोभाहीन। शोभा-रहित। ५. जो अनुरूप न हो। विरुद्ध। अप्राकृतिक। उलटा। ६. दूसरी तरह का। बिल्कुल भिन्न। ७. जिसमें एक कम हो [को०]।

विरूप^२—सञ्ज्ञा पु० १ पिपरामून। २. पांडुरोग [को०]। ३. शिव का एक नाम [को०]। ४. एक असुर [को०]। ५. कुरूपता। भद्दी आकृति [को०]। ६. रूप, प्रकृति या चरित्र की भिन्नता [को०]।

विरूपक^१—वि० १ कुरूप। २. भयकर। कराल। ३. अनुमित [को०]।

विरूपक^२—सञ्ज्ञा पु० १ एक असुर। २. पुकारने का अथवा उपाधि-नाम [को०]।

विरूपकरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुरूप बनाने की क्रिया। २. क्षति या हानि पहुँचाना [को०]।

विरूपचक्षु—सञ्ज्ञा पु० [स० विरूपचक्षुस्] त्रिनेत्र। शिव [को०]।

विरूपता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विरूप होने का भाव। २. कुरूपता। बदसूरती। ३. भद्दापन। बेढगापन।

विरूप परिणाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] एकरूपता से अनेकरूपता अर्थात् निविशेषता से विशेषता की ओर परिवर्तन। एक भूत प्रकृति से अनेक विकृतियों की ओर गति।

विशेष—साध्य में परिणाम दो प्रकार के कहे गए हैं—स्वरूप परिणाम और विरूप परिणाम। 'विरूप परिणाम' द्वारा प्रकृति से नाना रूप पदार्थों का विकास होता है, और 'स्वरूप परिणाम' द्वारा फिर नाना पदार्थ क्रमशः अपने रूप खोते हुए प्रकृति में लीन होते हैं। एक परिणाम सृष्टि की ओर अग्रसर होता है और दूसरा लय की ओर।

विरूपरूप—वि० [स०] कुरूप। बदसूरत [को०]।

विरूपा¹—वि० स्त्री० [सं०] कुरूप। वदसूरत। उ०—शूर्पणखी जो विरूपा करी तुम ताते दियो हमहूँ दुख भारी।—केशव (शब्द०)।

विरूपा²—सञ्ज्ञा स्त्री० १. दुरालभा। २. अतिविषा। ३. यम की पत्नी का नाम।

विरूपाक्ष¹—वि० [सं०] जिसके नेत्र वेढगे या डरावने हो।

विरूपाक्ष²—सञ्ज्ञा पुं० १. शिव। शंकर। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रावण का एक सेनानायक जिसे हनुमान ने प्रमोद वन उजाड़ने के समय मारा था। ४. एक राजसूय का नाम जिसे सुग्रीव ने राम-रावण-युद्ध में मारा था। ५. रावण का एक मंत्री। ६. एक दिग्गज का नाम। ७. एक नाग का नाम।

विरूपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुरूप स्त्री। वदसूरत औरत।

विरूपी¹—वि० [सं० विरूपिन्] [वि० स्त्री० विरूपिणी] १. वदसूरत। कुरूप। उ०—हरि रुक्मिणि मुख देखि छाँडि तब दीन्हैउ। मोछ गोछ शिर मुँडि विरूपी कीन्हैउ।—अकबरी०, पृ० ३४४। २. डरावनी सूरत का।

विरूपी²—सञ्ज्ञा पुं० कृकलास। गिरगिट।

विरूर—[सं० (उप०) वि० + हि० रुरि या सं० विरूढ, विरूह (=अंकुरित, जमा हुआ)] १. अत्यंत सुंदर। हृदयहारी। २. जमा हुआ। एकत्र। उ०—अगौ सुदति पतिय विरूर। पलकत अद्भुत मद भरत भूर।—पृ० रा०, १।६२४।

विरेक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दस्तावर दवा। जुलाब। विरेचन। २. आंत की सफाई। मल के निकालने की क्रिया (को०)।

विरेचक—वि० [सं०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मलभेदक औषध। दस्त लानेवाली दवा। जैसे,—रेंडी का तेल। २. दस्त लाना। मलभेद करने की क्रिया।

विशेष—वैद्यक के ग्रंथों में विरेचन की विधि विशेष विस्तार से लिखी है, क्योंकि कुपित मल ही सब रोगों का कारण कहा गया है। पूरी विधि के साथ विरेचन का विधान स्नेहन, स्वेदन और वमन के उपरांत किया गया है। शरद और वसंत में विरेचन विषेय ठहराया गया है। बालक, वृद्ध, क्षतग्रस्त, रोग से अत्यंत क्षीण, भयार्त, आत, पिपासार्त और मतवाले को विरेचन नहीं कराना चाहिए।

विरेचित—वि० [सं०] विरेचन कराया हुआ। दस्त लाया हुआ (को०)।

विरेची—वि० [सं० विरेचिन्] दस्त लानेवाला (को०)।

विरेच्य - वि० [सं०] विरेचन के योग्य। जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो।

विशेष—वैद्यक के ग्रंथों में नीचे लिखे रोगियों को विरेचन के योग्य कहा है—गुल्म, ववासीर, त्रिस्फोटक (चेचक), कमल रोग, जीर्णज्वार, उदररोग, विष, पेट की पीड़ा, योनि और शुक्लगत रोग, प्लीहा, कृष्ठ, मेह, श्लीपद (फीलपांव), उन्माद, काश, श्वास, विसर्प इत्यादि से पीड़ित रोगियों को विरेचन देना चाहिए।

विरेफ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. सग्निता। नदी। २. 'र' वर्ण का अभाव या अनुपस्थिति (को०)।

विरेमित—वि० [सं०] ध्वनित। शब्दित (को०)।

विरोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चमक। दीप्ति। २. रश्मि। किरण। ३. छिद्र। छेद। ४. चंद्रमा। ५. विष्णु। ६. प्रभात। प्रातःकाल (ऋग्वेद)।

विरोग¹—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्वस्थता। निरोगता (को०)।

विरोग²—वि० स्वस्थ। तदुरुस्त (को०)।

विरोचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चमकना। प्रकाशित होना। २. दीप्ति-युक्त। प्रकाशमान। ३. सूर्य। ४. चंद्र। ५. अग्नि। ६. मदार का पौधा। आक। ७. विष्णु। ८. रोहित वृक्ष। ९. श्योनाक वृक्ष। १०. घृन करज। ११. ऋणाद के पुत्र और बलि के पिता। १२. आलोचना। स्थापन (को०)।

विरोचनसुत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा बलि।

विरोचिष्णु—वि० [सं०] चमकीला। दीप्तिमान् (को०)।

विरोद्धा—वि० [सं० विरोद्ध] विरोध करनेवाला (को०)।

विरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मेल न होना। जिसा दूसरी वस्तु के साथ अत्यंत भिन्नता। विपरीत भाव। अनैक्य। जैसे,—इन दोनों भावों का परस्पर विरोध है। २. मेल का न होना। वैर। शत्रुता। बिगाड। अनवतन। जैसे,—उन दोनों का विरोध बहुत पुराना है।

यौ०—वैर विरोध।

३. दो बातों का एक साथ न हो सकना। विप्रतिपत्ति। व्याघात। असहभाव। जैसे,—आपके कथन में पूर्वापर विरोध है। ४. उलटी स्थिति। सर्वथा दूसरे प्रकार की स्थिति। ५. नाश। ६. नाटक का एक अंग, जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७. एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है। जैसे,—तुम्हारे वियोग में उस कामिनी को मलया नल दावानल हो रहा है। यहाँ जाति के साथ जाति का विरोध है। इसी प्रकार यह कहना गुण का द्रव्य के साथ जातिविरोध होगा—'तुम्हारे बिना चंद्रमा विष की ज्वाला से पूर्ण हो गया'। ८. प्रतिरोध। रुकावट (को०)। ९. नाकेबंदी। घेरा। आवरण (को०)। १०. सकट। दुर्भाग्य (को०)। ११. कलह। असह-मति (को०)।

विरोधक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध करनेवाला। २. नाटक में वे विषय जिनका वर्णन निषिद्ध हो।

विरोधकारक—वि० [सं०] भगडाव। विरोधी।

विरोधकारी—वि० [सं० विरोधकारिन्] विरोध उत्पन्न करनेवाला।

विरोधकृत्—वि० सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विरोधी। शत्रु (को०)।

विरोधक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रुता। भगडा। कलह (को०)।

विरोधन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १ विराध करना। वर करना। २ नाश। वरबादी। ३ नाटक में विमर्ष का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारण-वश कायध्वंस का उपक्रम (सामान) होता है। जैसे—कुरुक्षेत्र के युद्ध के अन होने के निकट जब दुर्योधन बच रहा था, तब भीम का यह प्रतिज्ञा करना कि 'यदि दुर्योधन को न मारेंगा तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगा'। सब बात बत जाने पर भी भीम का यह कहना युधिष्ठिर आदि के मन में यह विचार लाया कि यदि दुर्योधन न मारा गया तो हम सब लोग भी भीम के बिना कैसे रहेंगे। ४ बाधा। रुकावट (को०)। ५ प्रतिरोध। मुकाबिला (को०)। ६ परस्पर विरोध। असंगति (को०)। ७ कलह (को०)।

विरोधना पु०—क्रि० सं० [सं० विरोधन] विरोध करना। अपने विरुद्ध करना। वर करना। शत्रुता या भगडा करना। उ०—माई ये न विरोधिए गुरु, पंडित, कवि, यार।—गिरिधर (शब्द०)।

विरोधपरिहार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] भगडा मिटना। असामंजस्य या विराध का दूर होना (को०)।

विरोधवचन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विरुद्ध कथन। किसी के विरोध में कही गई बात (को०)।

विरोधशमन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] भगडा मिटना।

विरोधाचरण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. हित के प्रतिकूल आचरण। सिलाफ काररवाई। २. शत्रुता का व्यवहार।

विरोधाभास—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है। विशेष दे० 'विरोध'।

विरोधित—वि० [सं०] १ जिसका विरोध किया गया हो। २. क्षति-ग्रस्त (को०)। ३ अस्वीकृत। निराकृत (को०)।

विरोधिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरोध। शत्रुता। वर। २ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)।

विरोधिनी—वि० स्त्री० [सं०] १ विराध करनेवाली। वरिन। २ विरोध करानेवाली। दो आदमियों में भगडा लगानेवाली। ३ एक राज्ञसी जो दुसह की पुत्री थी (को०)।

विरोधिश्लेष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'विरोधीश्लेष'।

विरोधी^१—वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करने-वाला। हित के प्रतिकूल चलनेवाला। कार्यसिद्धि में बाधा डालनेवाला। २ प्रतिद्वंद्वी। विपक्षी। शत्रु। बैरी। दुश्मन। ३ मुकाबिला करनेवाला। घेरा डालनेवाला (को०)। ४ भगडालू (को०)। ५ अनुकूल न पडनेवाला। (अन्त) (को०)।

विरोधी^२—सञ्ज्ञा पु० १ साठ सवत्सरो में से पचीसवाँ संवत्सर। २ शत्रु। बैरी (को०)।

विरोधी श्लेष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] केशव के अनुसार श्लेष अलंकार का एक भेद, जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनताधिकता दिखाई जाती है। जैसे, उ०—कृष्ण हरे हरये हरे सपत्ति, शत्रु विपत्ति यहै अधिकाई। जातक काम अकामन के हित, घातक काम सकाम सहाई। इसमें यह दिखाया गया है कि हर (शिव) दासों पर हरि की अपेक्षा अधिक कृपा करते हैं। कृष्ण धीरे धीरे सपत्ति हरते हैं और शिव विपत्ति। हरि काम को उत्पन्न करनेवाले हैं और निष्काम लोगों के हिंदू ह, शिव काम के घातक हैं, पर कामना रखनेवालों के सहायक हैं। यहाँ 'काम' शब्द के 'कामदेव' और 'कामना' दो अर्थ हैं।

विरोधोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विरोधी उक्ति। विरोध में कही गई बात (को०)।

विरोधोपमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद, जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है। जैसे,—'तुम्हारा मुख चंद्रमा और कमल के समान है।' यहाँ कमल और चंद्रमा इन दोनों उपमानों में विरोध है।

विरोध्य—वि० [सं०] १ विरोध के योग्य। २. जिसका विरोध करना हो।

विरोपण^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [वि० विरोपणीय, विरोपित, विरोप्य] १ लेपन। लेप करना। २ लीपना। पोतना। तह चढाना। लेव चढाना। ३. जमीन में पौधा लगाना। रोपना। ४ घाव का भरना (को०)।

विरोपण^२—वि० १ पौधा रोपनेवाला। २ (श्रीपथादि) जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोपित—वि० [सं०] १ रोपा हुआ। २ भरा हुआ।

यौ०—विरोपितव्रण = जिसका घाव भर गया हो।

विरोम—वि० [सं० विरोमन्] रोमरहित। बिना रोएँ का।

विरोमा—वि० [सं० विरोमन्] दे० 'विरोम' (को०)।

विरोलना पु०^१—क्रि० सं० [सं० विलोडन] विलोडना। मथन करना। विवचित करना। उ०—मुद्रा सतोष शर्म पति भोली। गुरुमुखि जोगी तत्तु विरोली।—प्राण०, पृ० १०६।

विरोलित—वि० [सं०] अस्तव्यस्त। वितर वितर किया हुआ (को०)।

विरोसपु—वि० [सं० विरोप] रोप से पूर्ण। उ०—मुष हास नेन विरोस। नासाग्र उग्र न जोस।—पृ० रा०, ६१। १४६।

विरोह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ उद्भव स्थान। उद्गम। बुनियाद। मूल। २ अकुरित होना। उगना (को०)।

विरोहण^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] [वि० विरोहणीय विरोहित] १ एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना। २ अकुरित होना (को०)। ३ एक नाग (को०)।

विरोहण^२—वि० १ दे० 'विरोही'। २ जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोही—वि० [सं० विरोहिन्] [स्त्री० विरोहिणी] १ रोपनेवाला। पौधा लगानेवाला। २. अंशुआ फोडनेवाला। अकुरित होने-वाला (को०)।

विरौनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] वाजरा, मडूवा, कोदो वर्गरहू की एक प्रकार की जोताई जो उनके पीवे कुछ ऊँचे होने पर की जाती है।

वित्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृत्ति] दे० 'वृत्ति'। उ०—तस वह मोती आइ निसारै। तोहि संग परमद वित्त सवारै।—इद्रा०, पृ० ३६।

विलघन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विलघन] १ कूद या लाँघकर पार करने की क्रिया। २ उपवास करना। लघन करना। ३ किसी वस्तु के भोग से अपने आपकी रोक रखना। वचित रखना। ४. अपराध। अतिक्रमण। क्षति (को०)।

विलघना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विलघना] १ फाँदना। उल्लंघन करना। २ उपवास या लघन करना। ३ नीचा दिखाना या पराजित करना (को०)।

विलघनीय—वि० [स० विलघनीय] १ पार करने योग्य। लाँघने योग्य। २ नीचा दिखाने योग्य। परास्त करने योग्य।

विलघित—वि० [स० विलघित] १ जो परास्त हुआ हो। जिसने नीचा देखा हो। २ जो विफल हुआ हो। निष्फल। ३ लाँघा हुआ। ४ अतिक्रान्त। आगे बढ़ा हुआ (को०)।

विलघित—सञ्ज्ञा पुं० उपवास। भोजनादि न करना (को०)।

विलघी—वि० [स० विलघी] १ लाँघनेवाला। डाक जानेवाला। अतिक्रमण करनेवाला। २ चढ़नेवाला (को०)।

विलघ्य—वि० [स० विलघ्य] १ पार करने योग्य। (नदी आदि)। २ परास्त होने योग्य। वश में आने योग्य। ३ करने योग्य। सहज।

विलव—वि० [स० विलव] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात में लगे)। बहुत काल। अतिकाल। देर। क्रि० प्र०—करना।—होना।

विलव—सञ्ज्ञा पुं० १ लटकना। टँगना। २ धीमापन। देरी। दीर्घ-सूत्रता। सुस्ती। ३ एक सवत्सर का नाम।

विलवन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विलवन] [वि० विलवनीय, विलवी, विल-वित] १ देर करना। विलव करना। २ लटकना। टँगना। ३ सहारा पकड़ना। टेकना।

विलवना—क्रि० प्र० [स० विलवन] १ देर करना। विलव करना। आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २ रस जाना। मन लगने के कारण रस जाना। उ०—भँवर कँवल रस वेधिया, अनत न भरमै जाइ। तहाँ वास विलविया, मगन भया रस खाइ।—दादू (शब्द०)। ३ लटकना। ४ सहारा लेना।

विलविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विलम्बिका] एक प्रकार का रोग जो विदग्धाजीर्ण द्वारा उत्पन्न होता है। उ०—जिस (अजीर्ण) की चिकित्सा नहीं हो सके उसे विलंबिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० ६७।

विशेष—इस रोग में खाया हुआ अन्न कफ और वायु से दूषित होकर पेट में दुख देता है। न तो वमन होता है, न मल निकलता है।

विलंबित—वि० [स० विलम्बित] लटकता हुआ। झूलता हुआ। उ०—राजत रोमक की तन राजि वहै रस बीच नदी सुख देनी। आगे भई प्रतिविवित पाइ विलंबित जो मृगतैनी कि वेनी।—द्विज (शब्द०)। २. जिसमें विलव या देर हुई हो। ३ आश्रित। सुसंबद्ध (को०)। ४ मद। दीर्घसूत्री (को०)। ५ मथर। संगीत में द्रुत का उलटा जैसे, विल-वित लय या ताल।

यौ०—विलंबितगति = एक छंद। एक वर्णवृत्त। विलंबितफल = जिसका फल विलव से प्राप्न हो।

विलंबित—सञ्ज्ञा पुं० १ सुस्त चलनेवाला जानवर। जैसे,—हाथी, गैडा, भैंस इत्यादि। २ सुस्ती। देरी (को०)।

विलंबित—क्रि० वि० शनै शनै। मद मद (को०)।

विलंबी—वि० [स० विलम्बिन्] [वि० स्त्री० विलंबिनी] १ लटकना हुआ। झूलता हुआ। २ विलव करनेवाला। देरी करने-वाला। दीर्घसूत्री (को०)।

विलंबी—सञ्ज्ञा पुं० साठ सवत्सरो में से वत्तीसवाँ सवत्सर।

विलम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० विलम्भ] १ उदारता। २ दान। ३ उपहार। भेंट।

विल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विल'।

विलवखा—वि० [स० वि० + लक्ष्य, प्रा० विलवख, हिं० विलखना] उदास। व्याकुल। विलखता हुआ। व्यथित। उ०—सालूरा पाँखो बिना, रहइ विलवखा जेम।—ढोला०, दू० १७३।

विलक्ष—वि० [स०] १ अचभे में पड़ा हुआ। आश्चर्यचकित। २ लज्जित। ३ घबराया हुआ। व्याकुल। विह्वल। व्यस्त। ४ जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५ उद्देश्य या लक्ष्य-हित (को०)। ६ निशाना चूक जाने-वाला (को०)। ७ असाधारण। अपूर्व। ८ कृत्रिम। वनावटी (को०)।

विलक्षण—वि० [स०] १ साधारण से भिन्न। असाधारण। अपूर्व। अद्भुत। उ०—इस युग में न केवल राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से ही देश को उन्नति हुई वरन् हिंदी काव्य का भी विलक्षण उत्कर्ष हुआ।—अखरी०, पृ० ६। २. अनोखा। अनूठा। ३ भिन्न। इतर (को०)। ४. जिसमें कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५. अशुभ लक्षणों से युक्त (को०)। ६ निस्तेज। बुझी हुई। निष्प्रभ (को०)।

विलक्षण—सञ्ज्ञा पुं० १ निष्फल या व्यर्थ स्थिति। २ गौर से देखना। अवलक्षण करना (को०)।

विलक्षणता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विलक्षण होने का भाव। अपूर्वता। अद्भुतता। अनोखापन।

विलक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की शय्या (को०)।

विलक्षण—वि० [स० विलक्षण] दे० 'विलक्षण'। उ०—आपके बिना या प्रकार निवेदन की विलक्षण मार्ग दिखायो, सो आप प्रभु हो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २४०।

विलक्षित—वि० [सं०] १ जो विशेष रूप से लक्षित किया गया हो।
२ चिह्नरहित। ३ रुष्ट। क्षुब्ध। ४ अभेदित। जिसका
भेदन न किया गया हो। ५ हतबुद्धि। आश्चर्यचकित।
६ उद्विग्न। ध्वराया हुआ। व्याकुल [को०]।

विलक्ष्य—वि० [सं०] १ लक्ष्यहीन। २ लक्ष्य चूक जानेवाला। जैसे,
ब्राह्मण या लक्ष्य पर फेंकी हुई कोई वस्तु [को०]।

विलखना—क्रि० अ० [सं० विकल, या विलक्ष्य, प्रा० विलख] दुखी
होना। दे० 'विलखना'।

विलखना—क्रि० अ० [सं० लख] ताड़ना। पता पाना। लक्ष
करना।

विलखाना—क्रि० सं० [हि० विलखना] विलखना का सकर्मक रूप।
विकल करना। दे० 'विलखाना'।

विलग^१—वि० [हि० वि (उप०) + लगना] अलग। पृथक्।

विलग^२—सञ्ज्ञा पुं० अंतर। भेद। फरक।

विलगाना^१—क्रि० अ० [हि० विलग + ना (प्रत्य०)] १ अलग होना।
पृथक् होना। २ पृथक् पृथक् दिखाई पड़ना। विभक्त या
अलग दिखाई पड़ना।

विलगाना^२—क्रि० सं० पृथक् करना। अलग करना। दे० 'विलगाना'।

विलगित—वि० [सं०] लगा हुआ। लग्न। सबद्ध [को०]।

विलग्न^१—वि० [सं०] १ विशेष रूप से लगा या जुड़ा हुआ। २.
आधृत। ३. लटकता हुआ। ४ पिजरे में बंद। ५ पतला।
कोमल। ६ व्यतीत [को०]। ७ सलग्न। स्थिर [को०]।

विलग्न^२—सञ्ज्ञा पुं० १ जन्मकुंडली। जन्मपत्री। २ राशि का उदय।
३ कटि। कमर। ४ नितंब [को०]।

विलग्नता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विलगता। अलग होने की क्रिया।
अलगाव। उ०—काग्रेस से अपनी विलग्नता सूचन की।—प्रेम-
धन०, भा० २, पृ० २७१।

विलच्छन—वि० [सं० विलक्षण, प्रा० विलखन, विलच्छन] दे०
'विलक्षण'।

विलछाना—क्रि० अ० [सं० वि + लक्ष (देखना)] दे० 'विलछाना'।
उ०—धर्मनी यह अनुराग की बानी। तुन तत देख कहूँ विल-
छानी।—कवीर सा०, पृ० ७।

विलज्ज—वि० [सं०] निज्ज। वेशर्म [को०]।

विलज्जित—वि० [सं०] लजाया हुआ। शर्मिदा [को०]।

विलपन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वातचीत या गणशप करना। २
बिलाप करना। शोक प्रकट करना। ३. चीकट। तलछट।

यौ०—विलपनविनोद = रोकर दुख हलका करना।

विलपना—क्रि० अ० [सं० विलाप] विलाप करना। रोना।

विलपाना—क्रि० सं० [हि० विलपना का सक० रूप] दूसरे को
विलाप करने में प्रवृत्त करना। रलाना।

विलपित^१—वि० [सं०] जो विलाप कर रहा हो। जिसने रुदन
किया हो।

विलपित^२—सञ्ज्ञा पुं० विलाप। रुदन [को०]।

विलब्ध—वि० [सं०] १. दिया हुआ। पाया हुआ। २. प्राप्त किया
हुआ।

विलम्बि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स्त्री०] १ दूर करना। हटाना। २ प्राप्ति [को०]।

विलम्बु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विलम्ब] दे०। श्वेद। विनव।

विलमना—क्रि० अ० [सं० विलम्बन] दे० 'विलमना'।

विलमाना—क्रि० सं० [सं० विलम्बन > हि० विलमना का सक० रूप] दे०
'विलमाना'। उ०—मुझ नाहक श्यामसुंदर इतनी दे० विलमाए
रहे थे।—श्यामा०, पृ० ६२।

विलय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विलीन होने की क्रिया या भाव। लोप।
श्रुत। २ मृत्यु। मौन। ३ नाश। ४ प्रलय। ५ द्रवित
होना। पिघलना। विगलन [को०]।

विलयन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लय को प्राप्त होना। विलीन होना।
२ धुल जाना। मिलकर एक होना। ३ हटाना। दूर करना
[को०]। ४ पतला करना [को०]। ५. पतला करनेवाली
श्रोपधि [स्त्री०]।

विललती—वि० स्त्री० [सं० विलपन] विलाप करती हुई। दुखी।
व्यग्र। व्याकुल। उ०—पथी हाथ सँदेसड्ड, धन विनयती
देह। पगसूँ काढ़इ लोहरी, उर श्रांसुश्रां भरेह।—डोना०,
दू० १३७।

विलवती—वि० [सं० विलप, प्रा० विलव (= रोना)] विलाप करती
हुई।—पृ० रा०, ६१।११६५।

विलसन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चमकने की क्रिया। २ क्रीडा। प्रमोद।

विलसना—क्रि० अ० [सं० विलस] १ शोभा पाना। २ विलास
करना। क्रीडा करना। ३ आनंद मनाना। दे० 'विलसना'।

विलसाना—क्रि० सं० [हि० विलसना] दे० 'विलसाना'।

विलसित^१—वि० [सं०] १. चमकीला। चमकता हुआ। २ प्रकट।
व्यक्त। ३ शोभित। ४ विनोदी [को०]।

विलसित^२—सञ्ज्ञा पुं० १ चमक। दीप्ति। २ प्राकट्य। अभिव्यक्ति।
३ क्रीडा। विनोद। ४ फल। परिणाम। ५. भगिमा [को०]।

विलस्त—सञ्ज्ञा पुं० [फा० वालिस्त] वित्ता। अँगूठे के सिरे से छिगुनी
के सिरे तक की लंबाई का परिमाण। उ०—सवा विलस्त की
जाकी देह। तामे प्रस्थित गीव सनेही।—अष्टाग०, पृ० ७६।

विलह्वदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [?] जिले के बंदोबस्त का वह साक्षित व्योरा
जिसमें प्रत्येक महाल का नाम, काश्तकारा के नाम और उनके
लगान आदि का व्योरा लिखा होता है। इस वितरबंदी भी
कहते हैं।

विला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० इरा, इडा (= पृथ्वी)] पृथ्वी। चमुधरा।

विलाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिडिया।

विलाना—क्रि० अ० [सं० विलयन] दे० 'बिलाना'।

विलाप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बिलख बिलखकर या विकल होकर
रोने की क्रिया। रोकर दुख प्रकट करने की क्रिया। क्रदन।
रुदन। २. शोक व्यक्त करना। रब्दी होना।

विलापन^१—वि० [स०] १ रुलानेवाला । २ द्रवित करनेवाला ।
पिघला देनेवाला । ३ नाशक । नष्ट करनेवाला [को०] ।

विलापन^२—सञ्ज्ञा पु० १ रुलानेवाला कार्य । २ नाश । विध्वंस । ३.
नष्ट करने या द्रवित करने का साधन । ४ मृद्यु । ५ शिव का
एक गण [को०] ।

विलापना^३—क्रि० अ० [स० विलापन] शाक करना । विलाप
करना । रुदन करना ।

विलापना^४—क्रि० स० [स० विरोपण] वृक्ष रोपना या लगाना ।

विलापयिता—वि० [स० विलापयितृ] १ द्रवित करने या पिघलाने-
वाला । २ विलाप करनेवाला [को०] ।

विलापित—वि० [स०] पिघलाया हुआ [को०] ।

विलापी—वि० [स० विलापिन्] विलाप करनेवाला [को०] ।

विलायत—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ पराया देश । दूसरे का देश । दूरस्थ
देश । दूर का देश । विशेषतः आजकल की बोलचाल में यूरोप
या अमेरिका का कोई देश । (पहले इस शब्द का प्रयोग ईरान,
तर्किस्तान आदि के लिये होता था ।) जैसे—आप दो बार
विलायत हो आए हैं । उ०—एक बड़े बाप के बेटे विलायत
जाकर वहाँ की ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७४ । ३
वली होने का भाव या पद [को०] ।

विलायती—वि० [अ०] १ विलायत का । विदेशी । २ दूसरे देश का
बना हुआ । २ अन्य देश का रहनेवाला । परदेशी । उ०—
अब विदेशी राजा के होने से नौकरियाँ विलायतियों को विशेष-
कर दी जाती हैं ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६८ ।

विलायती अनन्नास—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + अनन्नास]
रामबाँस । रामवान । विशेष दे० 'रामबाँस' ।

विलायती कद्दू—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + कद्दू] एक विशेष प्रकार
का कद्दू जो तरकारी के काम में आता है ।

विलायती कपडा—सञ्ज्ञा पु० [हि०] विदेशी वस्त्र । विशेषतः यूरोप
का बना हुआ ।

विलायती कासनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० विलायती + कासनी] एक प्रकार
की कासनी जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं ।

विलायती कीकर—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + कीकर] पहाड़ी कीकर
जो हिमालय पर पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक होता है ।

विशेष—यह बाढ़ लगाने के काम आता है । यह जाड़े के दिनों
में खूब फूलता है और इसके फूलों से बहुत अच्छी महक
निकलती है । यूरोप में इन फूलों से कई प्रकार के इत्र आदि
बनाए जाते हैं । इसे पसी बबूल भी कहते हैं ।

विलायती छछूंदर—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + छछूंदर] एक प्रकार
का छछूंदर जो इंग्लैंड के पश्चिमी ओर के प्रदेशों में बहुत
पाया जाता है ।

विशेष—यह पृथ्वी के नीचे सुरंग में रहता है और प्रायः दूध
पीता है । इसे अघकार अधिक प्रिय होता है । इसके अगले
हि० श० ६-२४

पैर चौड़े और पट्टेदार तिरछे होते हैं । इसकी आंखें छोटी,
थुथना लंबा और नोकदार, बाल सघन और कोमल होते हैं ।
इसकी श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है ।

विलायती नील—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + नील] एक विशेष प्रकार
का नीला रंग जो चीन से आता है ।

विलायती पटुआ—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + पटुआ] लाल पटुआ ।
लाल सन ।

विलायती पात—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + पटुआ] रामबाँस । कृष्ण
केतकी ।

विलायती पानी—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + पानी] शराब । मदिरा ।
उ०—तौ भी भाँति भाँति के विलायती पानी ।—प्रेमघन०,
भा० २, पृ० २३३ ।

विलायती प्याज—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + प्याज] एक प्रकार का
प्याज जिसमें गाँठ नहीं होती, सिर्फ गुदेदार जड़ होती है ।

विलायती बैंगन—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + बैंगन] एक प्रकार का
बैंगन या भटा जो इस देश में यूरोप से आया है ।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है जो प्रतिवर्ष बोई जाती
है । इसका क्षुप दो ढाई हाथ ऊँचा होता है । इसकी डालियाँ
भूमि की ओर झुकी अथवा भूमि पर पसरी रहती हैं । पत्तों
आलू के पत्तों के से होते हैं । डडियों के बीच-बीच से सीके
निकलते हैं जिनपर गुच्छे में फूल आते हैं । ये फूल साधारण
बैंगन के फूलों के सदृश, पर उनसे छोटे होते हैं । इनका रंग
पीला होता है । फल प्रायः दो से चार इंच तक के गोलाकार
और कुछ चिपटे (नारंगी के समान) होते हैं । कच्चे रहने पर
उनका रंग हरा और पकने पर लाल चमकीला हो जाता है ।
इसकी तरकारी, चटनी आदि बनती है । स्वाद में यह कुछ
खट्टापन लिए होता है । रासायनिक विश्लेषण से पता लगता
है कि इसमें २३ सँकड़े लोहे का अंश होता है । इसमें 'ए' और
'सी' विटामिन होता है । अतः यह रक्तवर्धक है । अंगरेज लोग
इसका अधिक व्यवहार करते हैं । इसे अंगरेजी में टोमैटो और
हिंदी में टमाटर कहते हैं ।

विलायती भटा—सञ्ज्ञा पु० [हि०] दे० 'विलायती बैंगन' ।

विलायती मिट्टी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि०] विदेश में होनेवाली ऐसी मिट्टी
जिससे पात्र और खिलौने बनते हैं । उ०—विलायती मिट्टी,
पत्थर, ईंट ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १३३ ।

विलायती मेहदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० विलायती + मेहदी] मेहदी की
जाति का एक प्रकार का पौधा । सनट्ट ।

विशेष—यह पौधा प्रायः बाढ़ के रूप में लगाया जाता है
यह भारत, बलोचिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, अफ्रीका आदि
सभी स्थानों में होता है । यह वर्षा और शीतकाल में फूलता
है । इसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है और इसपर खुदाई
का काम बहुत अच्छा होता है ।

विलायती लहसुन—सञ्ज्ञा पु० [हि० विलायती + लहसुन] एक प्रकार
का लहसुन जो मसाले के काम में आता है ।

विलायती सिरिस—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० विलायती + मिरिस] एक प्रकार का मिरिस वृक्ष ।
 विशेष—यह पीदा विदेश से यहाँ आया है, पर अब यहाँ भी होने लगा है । यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है । पंजाब में भी यह पाया जाता है । इसकी छाल प्रायः चमड़ा सिझाने के काम में आती है ।
 विलायती सेम—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + सेम] एक प्रकार की सेम जिसकी फलियाँ साधारण सेम से कुछ बड़ी होती हैं ।
 विलायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक अस्त्र ।
 विशेष—कहते हैं, जब इस अस्त्र का उपयोग किया जाता था, तब शत्रु की सेना विभ्रम करने लगती थी ।
 विलायित—वि० [सं०] पिघलाया या द्रवित किया हुआ [को०] ।
 विलाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विडाल' ।
 विलावल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक राग । दे० 'विलावल' ।
 विलावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० विलावल] एक रागिनी जो हिंडोल राग की स्त्री मानी जाती है । (संगीत) ।
 विलास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसन्न या प्रफुल्लित करने की क्रिया । २ सुखभोग । आनंदमय क्रीडा । मनोरजन । मनोविनोद । ३ आनंद । हर्ष । ४ सयोग के समय में अनेक हाव भाव अथवा प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं । हाव भाव । नाज नखरा । ५ किसी अंग की मनोहर चेष्टा । जैसे, भ्रूविलास, करविलास । उ०—भृकुटि विलास जासु जग होई । राम वाम दिस सीता सोई ।—तुलसी (शब्द०) । ६ किसी चीज का हिलना डोलना । जैसे, चपला का विलास । चमक दमक । ७ चमकना । दीप्त होना । ८ आरामतलवी । अतिशय सुखभोग । ९ प्रफुल्लता । उत्साहशीलता । तेजस्विता । (दशरूपक में पुरुष का एक गुण कहा गया है ।)
 यौ०—विलासकानन = प्रमदवन । विलासकोदड, विलासचाप, विलासघन्वा, विलासबाण = कामदेव । विलाममंदिर = केलि-भवन । विलासवातायन = वरामदा । छज्जा । विलासविपिन = क्रीडाउपवन । विलासवेश्म = क्रीडागृह ।
 विलासक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विलासिका] १ इधर उधर फिरने-वाला । भ्रमणशील । २, लास्य करनेवाला । नृत्यकर्ता [को०] ।
 विलासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ क्रीडा । मनोरजन । २ रंगरेली । ३ विमोहन [को०] ।
 विलासमयी—वि० स्त्री० [सं०] विलास से प्रेम करनेवाली । क्रीडा-शीला । कामवती । उ०—ज्योतिमयी, हासमयी, विकल विलासमयी ।—लहर, पृ० ६७ ।
 विलासवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्वेच्छारिणी वा कामुक स्त्री [को०] ।
 विलाससामग्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विलास का सामान । प्रसाधन की वस्तुएँ । उ०—विलास सामग्री मँगाने में शासक वर्ग को फायदा जरूर हुआ ।—भा० इ० ट०, पृ० २७८ ।
 विलासिका^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है । इसका विषय सक्षिप्त और साधारण होता है ।

विलासिका^२—वि० स्त्री० आनंद देनेवाली ।
 विलासिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] सुखभोग की अनुरक्तता । विलामी का भाव या कार्य । विलास की भावना । उ०—भोले थे, हाँ तिरते केवल, सब विलामिता के नद में ।—कामायनी, पृ० ७ ।
 विलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरी युवा स्त्री । २ कामिनी । हाव भाव करनेवाली स्त्री (को०) । ३ वेश्या । गरिका । ४ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग, (IS SISISIS) होते हैं ।
 विलासी^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं० विलामिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुख-भोग में अनुरक्त पुरुष । कामी । २ जिसे आमोद प्रमोद पसंद हो । क्रीडाशील हँसोड । कोतुकशील । ३ ऐश-आराम-पसंद । आरामतलव । ४ वरुण वृक्ष । वरुण । ५ सर्प । साप (को०) । ६ अग्नि (को०) । ७ चंद्रमा (को०) । ८ विष्णु (को०) । ९ कृष्ण (को०) । १० शिव (को०) । ११. वार । कामदेव (को०) ।
 विलासी^२—वि० आमोदप्रिय । क्रीडाशील । ऐयाश [को०] ।
 विलास्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें वजाने के लिये तार लगे होते हैं ।
 विलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विलिङ्ग] १ वह जो भिन्न लिंग का हो । २ लिंग का अभाव [को०] ।
 यौ०—विलिंगस्थ = जो समझा न जा सके । जो समझने लायक न हो ।
 विलिपित—वि० [सं० विलिम्पित] लेपा हुआ । लेप किया हुआ [को०] ।
 विलिखन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ खरोचना । रेखांकित करना । २ लिखना । ३. विश्लेषण । विभाजन । ४ नदी का प्रवाह या मरणि [को०] ।
 विलिखित—वि० [सं०] १ खरोचा हुआ । २ लिखा हुआ । ३ खुदा हुआ ।
 विलिगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] एक प्रकार का साँप ।
 विलित—वि० [सं०] १ पुता हुआ । लिपा हुआ । २ कलुषित । मैला । दागदार (को०) ।
 विलिष्ट—वि० [सं०] १ टूटा हुआ । उखड़ा हुआ । २ जो ठीक अवस्था में न हो । अस्तव्यस्त ।
 यौ०—विलिष्टभेषज = हड्डी आदि टूटने की चिकित्सा ।
 विलीक(उ)—वि० पुं० [सं० व्यलीक] अनुचित । नामुनासिब ।
 विलीन—वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो गया हो । लुप्त । २ जो घुल गया या मिल गया हो । जैसे—पानी में नमक विलीन हो गया । ३ छिपा हुआ । ४. संवद्ध । सलग्न । अनुपक्त [को०] । ५. अहं पर उतरा हुआ या बैठा हुआ (पक्षी आदि) । ६ नष्ट । मृत । क्षयप्राप्त ।
 विलीयन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विलीन होना । मिल जाना [को०] ।
 विलुचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विलुचन] उखाडना । नोचना । फाडना । छीलना [को०] ।

विलु'ठन—सञ्ज्ञा पुं० [सं विलुठन] १ छौनना । लूटना । २ लुठन । लुठन । लोटना [को०] ।

विलुठित—वि० [सं विलुठित] १ लूटा हुआ । जो लूटा गया हो । २ लुठकता हुआ । लोटता हुआ [को०] ।

विलुपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं विलुपक] चोर । डाकू । लुटेरा । लूटपाट करनेवाला [को०] ।

विलुठित—वि० [सं] १ दे० 'विलुठित' । २ चुब्ब [को०] ।

विलुसायोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] एक प्रकार का योनिरोग । इस रोग में योनि में सदा पीडा होती है ।

विलुभित—वि० [सं] आकुल । अस्तव्यस्त । अव्यवस्थित । विलोडित । चुब्ब [को०] ।

यौ०—विलुभितप्लव = आकुल या चुब्ब गति ।

विलुलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] नाश करनेवाला ।

विलुलित—वि० [सं] १ अस्तव्यस्त । २ उद्धिग्न । ३ लहराता हुआ । हिलता हुआ । उ०—प्रिय । जब मेरे गात्रों में आकर छिप जाता है मलयानिल, तब किम ध्वनि से मुखरित हो उठता है मेरा विलुलित आँचल,—इत्यलम्, पृ० २६ ।

यौ०—विलुलितकेश = अस्तव्यस्त केशवाला । बिखरे बालोवाला ।

विलूघन^७—क्रि० अ० [सं वि० + लुघ, प्रा० वि + लुघ] विशेष लुघ होना । रम जाना । मोहित होना । आसक्त होना । उ०—आपस्वारथ यह विलूघा रे, आगम मरम न जाणें । जम कर माँयें बाण धरीला, ते ती मनि न आणें ।—दादू० पृ० ५५३ ।

विलून—वि० [सं] कटा हुआ । अलग किया हुआ ।

विलूला^७—सञ्ज्ञा पुं० [देश्य] बुदबुद । बुझा । उ०—वारि के विलूलन की सेज रचि कौन मोयो, ओसकन पिए हिए कौन तोस पायो है —दीन० ग्र०, पृ० १४० ।

विलेख—सञ्ज्ञा पुं० [सं] छिद्र । विवर । गुफा । २ फाडना । खरोचना । ३ विदारण । विलेखन [को०] ।

विलेखन—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. लेखन । लिखना । २ खरोचना । रेखाकित करना । चिह्न बनाना । ३ उत्पाटन । उखाड़ना । ४. खोदना । खनना । ५. विभाग करना । विश्लेषण करना । ६. नदी की सरणि वा मार्ग [को०] ।

विलेभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ चिह्न । खरोच । निशान । २. लिखित अनुबध या करार [को०] ।

विलेखी—वि० [सं विलेखिन] विलेखन करनेवाला । लकीर, खरोच या चिह्न बनानेवाला [को०] ।

विलेप—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ शरीर आदि पर चुपडकर लगाने की चीज । लेप । अग्राग । २ पलस्तर । गारा । २ लेप करना । गारा आदि लगाना [को०] ।

विलेपन—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. लेप करने या लगाने की क्रिया । अच्छी तरह लीपना । लगाना । २ लगाने या लेप करने का पदार्थ । जैसे,—चदन, केसर आदि ।

विलेपनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] [पुं०] १ वह स्त्री जो परिमल द्रव्य (इत्र आदि) से सुवासित हो । २ सुवेशा स्त्री । सुंदर पेशभूषा-वाली महिला । ३ माँड । चावल का माँड [को०] ।

विलेपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ अग्राग आदि लेपन करनेवाली महिला । प्रसाधिका । २ दे० 'विलेप्य' [को०] ।

विलेपी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] माँड । चावल का माँड [को०] ।

विलेपी^२—वि० [सं विलेपिन्] १. लेप या पलस्तर करनेवाला । २ लसदार । लसीला । चिपकने या सज्ज होनेवाला [को०] ।

विलेप्य^१—वि० [सं] १ जिसका लेप किया जाय । जैसे, विलेप्योपध । २ जिसपर लेप किया जाय । जैसे, विलेप्य स्थान [को०] ।

विलेप्य^२—सञ्ज्ञा पुं० [स्त्री० विलेप्या] चावल का माँड [को०] ।

विलेवासी—सञ्ज्ञा पुं० [सं विलेवासिन्] विलेश्य । सर्प [को०] ।

विलेश्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ बिल या दरार में रहनेवाले जीव । जैसे, साँप, बिच्छू, गोह्र आदि । २ सर्प । साँप । उ०—आशीविष विषधर फणी मणी विलेश्य व्याल ।—नददास (शब्द०) ।

विलै^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं विलय] दे० 'विनय' । उ०—दियो द्वै न दान कळू कियो है न पुत्य रव ऐसे हो प्रपव बीच वै सब विलै भई ।—दीन ग्र०, पृ० १२८ ।

विलोक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] दे० 'विलोकन' ।

विलोक^२—वि० लोकरहित । जनहीन । निर्जन । एकांत । शून्य [को०] ।

विलोकन—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. विचार करना । २ खोजना । ३. परिचय पाना । जानकारी पाना । ४ दृष्टि । निगाह । नजर (को०) । ५ अवलोकन । अच्छी प्रकार से देखना । उ०—वह अपलक लोचन अपने पादाग्र विलोकन करती, पय-प्रदर्शिका सी चनती धारे धारे डग भरती ।—कामायनी, पृ० २८० ।

विलोकना^७—क्रि० स० [सं विलोकन] १ देखना । २ अवलोकन करना । दे० 'विलोकना' ।

विलोकनि^७—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विलोकन] दे० 'विलोकनि' ।

विलोकनीय—वि० [सं] १. आकर्षक । सुंदर । २ दर्शनाय । ३. मम-कने योग्य [को०] ।

विलोकि^१—वि० [सं] १. देखा हुआ । २. परिचित । ३. परोक्षित । विचारित [को०] ।

विलोकि^२—सञ्ज्ञा पुं० १. परीक्षण । विवेचन । २ दृष्टि । ३ ताल विशेष [को०] ।

विलोकी—वि० [सं विलोकिन्] १ देखने या अवलोकन करनेवाला । २ जानकारी हासिल करनेवाला । परिचय पानेवाला [को०] ।

विलोक्य—वि० [सं] देखने योग्य । दर्शनीय [को०] ।

विलोचन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ नेत्र । नयन । आँख । उ०—धिक् डोग कर रहे है अब व्यर्थ ही विलोचन ।—शकु०, पृ० ३५ । २. दृष्टि । अवलोकन ।

यौ०—विलोचन पथ = नेत्रव्यापार का क्षेत्र । दृष्टिपथ । लोचन-मग । विलोचनात = दृष्टिपात । अवलोकन । निगाह करना ।

३ पुराणानुसार एक नरक का नाम, जिसमें मनुष्य अंधा हो जाता है और न देखने के कारण अनेक यातनाएँ भोगता है। ३ लोचनरहित करने की क्रिया। आँखें फोड़ने की क्रिया। नेत्ररहित कर देने की क्रिया।

विलोचन^२—वि० विपरीतदृष्टि। वक्रदृष्टि। विकृतदृष्टि [को०]।

विलोचनायु—सञ्ज्ञा पुं० [म० विलोचनाम्बु] नेत्रजल। आँसू [को०]।

विलोट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विलोटन लुढ़कना [को०]।

विलोटक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की मछली। बेला मछली।

विलोटन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] लुढ़कना [को०]।

विलोड—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ हिलना डुलना। लहराना। २ लुढ़कना। लोटना। ३ मथने की क्रिया। मथन [को०]।

विलोडक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चोर। तस्कर [को०]।

विलोडन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मथन करना। २ हिलाना डुलाना। आदोलित करना। इतस्तत करना [को०]।

विलोडना^३—क्रि० म० [स० विलोडन] दे० 'विलोडना'।

विलोडित^४—वि० [स०] १, कपित। लुब्ध। आदोलित। मथित उ०—
हुआ विलोडित गृह, तब प्राणी, कौन। कहाँ। कब। सुख पाते ?—कामायनी, पृ० १६। २ लुठित। लुढ़का हुआ [को०]।

विलोडित^५—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मठा। छाछ [को०]।

विलोना—क्रि० स० [हि०] दे० 'विलोना'।

विलोप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २ रुकावट। ३ विघ्न। बाधा। ४ आघात। ५. नाश। लोप। ६. हानि। नुकसान।

विलोपक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ नाश करनेवाला। २ दूर करनेवाला। ३. लेकर भागनेवाला।

विलोपन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विलोप करने की क्रिया। २ काटना या छिन्न करना। तोड़कर अलग करना।

विलोपना^६—क्रि० स० [स० विलोपन] १ लोप करना। नाश करना। २. लेकर भागना। ३ विघ्न डालना। बाधा उपस्थित करना।

विलोपभृत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा निर्दिष्ट वह सेना जो केवल लूटमार का लालच देकर इकट्ठी की गई हो।

विलोपित—वि० [स०] दे० 'विलु'। उ०—यदि मैं उसे इसी समय विलोपित कर दूँ।—कबीर म०, पृ० ११।

विलोपी—सञ्ज्ञा [स० विलोपिन्] [स्त्री० विलोपिनी] १ विलोप करनेवाला। २ नाश करनेवाला।

विलोपा—वि० [स० विलोप] लुटेरा। चोर। दस्यु। डाकू [को०]।

विलोप्य—वि० [स०] विलोप करने या होने योग्य।

विलोभ^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ आकर्षण। प्रलोभन। २. वहकावा। छलावा (को०)। ३ मोह। माया। भ्रम।

विलोभ^२—वि० जिसके मन में किसी प्रकार का लालच न हो। लोभरहित।

विलोभन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ लोभ दिखाने की क्रिया। २ मोहित या आकर्षित करने का व्यवहार। ३ प्रशंसा। स्तवन। चाटुकारिता (को०)। ४ कोई बुरा कार्य करने के लिये किसी को लोभ दिलाने का काम। ललचाना।

विलोभनीय—वि० [स०] लुभानेवाला [को०]।

विलोभित—वि० [स०] १ लुब्ध किया हुआ। लुभाया हुआ। २ छला हुआ। वहकाया हुआ। ३ प्रशंसा किया हुआ। प्रशंसित [को०]।

विलोम^१ वि० [स०] [वि० स्त्री० विलोमी] १ विपरीत। उलटा। प्रतिकूल। उ०—तुम सन कही वचन कटु वागी। अपन हाथ मीठु वहि माँगी। कहेसि विलोम वचन तजि जाना। यहिकर काल आय नियराना।—सबल (शब्द०)। २ प्रतिकूल या विपरीत क्रम में उत्पन्न (को०)। ३ पिछड़ा हुआ (को०)। ४ नियम वा रीति के विरुद्ध। ५ केश, वेहीन। रोम रहित (को०)।

विलोम^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ सर्प। २ वरुण। ३ कुत्ता। ४ रहट। ५ क्रमविपर्यय। उलटा क्रम (को०)। ६ सगीत में ऊँचे स्वर से नीचे स्वर की ओर आना। स्वर का अवरोह। उतार। ७ ऊँचे की ओर से नीचे की ओर आना।

विलोमक—वि० [स०] विपरीत। प्रतिकूल।

विलोम काव्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह काव्य या कविता जिसके अक्षरों को उलटकर भी पढ़ा जा सके और जो पहले से भिन्न एक विशेष अर्थ दे। संस्कृत में इस प्रकार के कई काव्य प्राप्त होते हैं।

विलोम क्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह क्रिया जो अंत से आदि की ओर की जाय। उलटी ओर से होनेवाली क्रिया।

विलोमज—वि० [स०] वह सतान जिसकी माता पिता से उच्च वर्ण की हो [को०]।

विलोमजात—वि० [स०] दे० 'विलोमज' [को०]।

विलोमजिह्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का हाथी।

विलोमन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नाट्यशास्त्र के अनुसार मुखसधि के बारह अंगों में से एक। नायक का मन नायिका की ओर अथवा नायिका का मन नायक की ओर आकृष्ट करने के लिये उसके गुणों का कथन। जैसे,—रत्नावली में वेंतालिक का सागरिका को लुभाने के लिये राजा उदयन के गुणों का कथन।

विलोमपाठ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] आखीर से पढ़ना। उलटा पढ़ना। विपरीत क्रम से पढ़ना।

विलोमरसन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हाथी [को०]।

विलोमवर्ण^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक सकर जाति। दोगली जाति।

विलोमवर्ण^२—वि० दे० 'विलोमज'।

विलोमविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ उलटी ओर से होनेवाली क्रिया या अनुष्ठान। विलोम क्रिया। २. गणित में प्रतिलोम नियम (को०)।

विलोमा—वि० [स० विलोमम्] १. रोमरहित । केशहीन । २ विपरीत दिशा की ओर घूम या मुड़ा हुआ ।

विलोमाक्षर काव्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'विलोम काव्य' ।

विलोमित—वि० [स०] विलोम या उलटा किया हुआ [को०] ।

विलोमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आँवला । आमलकी ।

विलोल—वि० [स०] १. चंचल । हिलता डुलता । अस्थिर । २ सुंदर । उ०—चपल विलोल डोल वह लगी । थिर न रहे चंचल वैरागी ।—जायसी (शब्द०) । ३ स्रस्त । ढीला । अस्तव्यस्त । बिखरा हुआ (केश) । जैसे, विलोलकवरी = स्रस्त वेणी या केश [को०] ।

विलोलन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ हिलाना । कंपाना । २ मथना । आलोलन [को०] ।

विलोलित—वि० [स०] १ हिलाया हुआ । कंपाया हुआ । २. मथित । धुँव किया हुआ । धुँभित [को०] ।

विलोलुप—वि० [स०] निर्लोभ । लोभरहित [को०] ।

विलोहित—वि० [स०] १ नीललोहित या धूम्रवर्ण का । २ लाल रंग का [को०] ।

विलोहित—सञ्ज्ञा पु० १ शिव । खड्ग । २ लाल रंग का प्याज । ३. एक नरक का नाम [को०] ।

विलोहितक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह मुर्दा जो लाल वर्ण का हो गया हो । लाल रंग का शव [को०] ।

विलोहिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम [को०] ।

विल्ल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ थाला । आलवाल । २. गर्त । गड्ढा । ३ हींग [को०] ।

विल्लसू—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह माता जो दस बच्चों को जन्म दे चुकी हो । दस सतानों की माँ [को०] ।

विल्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] बेल वृक्ष । बेल का पेड़ ।

विल्व तैल—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल ।

विशेष—इसे बनाने के लिये बेल की जड़ का रस, सोठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, अवामार्ग का क्षार और जवाखार को कूटकर गोमूत्र के साथ तेल में डालकर मद और पर पकाते हैं । रस जलने और तेल मात्र रहने पर इसे उतार लेते हैं । कहते हैं कि इनसे कान से बहिरता, कर्णसाव आदि रोग अच्छे हो जाते हैं ।

विल्वपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] बेल का पत्ता, जो शिव जी पर चढ़ाने के काम आता है । बेलपत्र ।

विल्वमगल—सञ्ज्ञा पु० [स० विल्वमङ्गल] भक्त और महाकवि सूरदास का अवे होने से पूर्व का नाम ।

विल्वान्तर—सञ्ज्ञा पु० [स० विल्वान्तर] एक वृक्ष [को०] ।

विल्वेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] आधुनिक भिलसा नगरी का प्राचीन नाम ।

विशेष—यह नगरी खालियर के दक्षिण में वेतवा नदी के दाहिने किनारे पर बसी है । इसका पुराना नाम भद्रावत भी कहा जाता है ।

विल्वहन—सञ्ज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा । विवहान । वोल्लाह । उ०—सामतन कारन विल्वहन, ममापि नमर जस कज्ज ।—पृ० रा०, ६१ । १४० ।

विवचिपु—वि० [स० विवचिपु] वचक । घूर्त [को०] ।

विवदिषु—वि० [स० विवन्दिषु] प्रशंसा करने को उत्सुक । वदना की इच्छा रखनेवाला [को०] ।

विवधक—सञ्ज्ञा पु० [स० विवन्धक] १ रोकनेवाला । कष्टवद्धता । कब्जियत । कब्ज ।

विवधन—सञ्ज्ञा पु० [स० विवन्धन] रोक । वधन । रुकावट ।

विव—वि० [स० द्वि] १ दो । २ द्वितीय । दूसरा । दे० 'विवि' ।

विवकृत—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बहुत बोलनेवाला । वाचाल । २. स्पष्ट बोलनेवाला । ३ वक्ता । वाग्मी ।

विवक्ता—सञ्ज्ञा पु० [स० विवक्तृ] १ कहनेवाला । २. किसी बात को प्रकट करनेवाला । ३. दुस्स करने या सुधारनेवाला । मशोधन करनेवाला ।

विवक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई बात कहने की इच्छा । बोलने की इच्छा । २ अर्थ । तात्पर्य । आशय । ३ अनिश्चय । शक । सदेह । ४ इच्छा । अभिलाषा [को०] ।

विवक्षित—वि० [स०] १. जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो । इच्छित । अपेक्षित । २ कहे जाने या बोले जाने के लिये अभिप्रेता । कथनीय [को०] । ३. उक्त । कथित । ४ अनुकूल । इष्ट । प्रिय [को०] ।

विवक्षित—सञ्ज्ञा पु० १. प्रयोजन । अभिप्राय । उद्देश्य । आशय । २. जो कहने की इच्छा हो । मतलब । अर्थ [को०] ।

विवक्षु—वि० [स०] कहने बोलने की इच्छुक या तत्पर [को०] ।

विवट्ट—सञ्ज्ञा पु० [स० वि + वट्, प्रा० वट्] कुआँ । बुढ़ी राह । वह राह जो प्रचलित न हो । उ०—अति बहुत भाँति विवट्ट वट्टहि भुलेओ वड्डोओ चेतना ।—कीर्ति०, पृ० २६ ।

विवत्स—वि० [स०] वत्सरहित । पुनहीन [को०] ।

विवत्सा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह गी जिसे वत्स न हो । बिना बड़ड़े-वाली गाय [को०] ।

विवत्सु—वि० [स०] बोलने की इच्छुक या तत्पर [को०] ।

विवदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] विवाद । झगडा । मुकदमेवाजी [को०] ।

विवदना—क्रि० अ० [स० विवाद + हिं० ना] किसी वस्तु या विषय पर जवानी झगडा करना । आशय करना । विवाद करना । जवानी झगडना । उ०—इमि विवदहि शारद यति राजा । सुनि विस्मित सब विदुष समाजा ।—शं० दि० (शब्द०) ।

विवदित—वि० [स०] १ विवाद में पडा हुआ । विवादग्रस्त । २ विवाद करनेवाला । ३ जिसके लिये वाद किया गया हो [को०] ।

विवदिषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कहने या बोलने की आकांक्षा [को०] ।

विवार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ व्यादन । फैलाना । २. अक्षर के उच्चारण में होनेवाला कठ का फैलाव । ३. एक आभ्यन्तर प्रयत्न जो सवार प्रयत्न के विपरीत होता है । उ०—अल्पप्राण, महाप्राण, विवार, सवार, बाह्य, आभ्यन्तर प्रयत्नादिक अक्षरगोचरों की एवं उदात्तानुदात्त स्वरितादिक स्वरगोचरों की शुद्धता कितनी महत्वपूर्ण मानी जाती थी ।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २८० ।

विवारी—वि० [सं० विवारिन्] वारण करनेवाला । रोकनेवाला [को०] ।

विवास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ निर्वासन । निष्कासन । २. वियोग [को०] ।

विवासकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] निष्कासन । निर्वासन [को०] ।

विवासकाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रातः काल । सूर्योदय वेला [को०] ।

विवासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विवास' ।

विवासित—वि० [सं०] निष्कासित । निर्वासित [को०] ।

विवास्य—वि० [सं०] निकाल देने योग्य ।

विवाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दापत्य मूत्र में बँधते हैं । कही यह प्रथा सामाजिक होती है, वही धार्मिक और वही कानून के अनुसार होती है । यह हिंदुओं के मोलह स कागों में स एक संस्कार है । शादी । व्याह ।

विशेष—मनुष्य जाति जब आदिम असम्पादकता में थी, उस समय उसमें विवाह या पतिसंवरण की प्रथा न थी । केवल कामवेग के कारण स्त्री पुरुषों का समागम हुआ करता था । यह प्रथा अब भी कुछ असभ्य जातियों में प्रचलित है । महाभारत में लिखा है—‘प्राचीन काल में स्त्रियाँ नगी रहती थी, वे स्वतंत्र और विहारिणी होती थी और बिना व्याह किए ही अनेक पुरुषों से समागम करती थी ।’ उनका यह कृत्य अधर्म नहीं समझा जाता था । सभ्यता बढ़ने पर लोगों को घर बनाने और एक ऐसे व्यक्ति को अपने यहाँ रखने की आवश्यकता हुई जो उसका प्रबंध कर सके । इसके लिये स्त्रियाँ उपयुक्त समझी गई । अतः लोगों ने उनकी फुमलाकर अथवा बलात् अपने यहाँ रखना आरम्भ किया । उन दिनों स्त्री एक पुरुष के अधिकार में तब तक रहती थी जब तक कोई दूसरा उससे बली पुरुष उसे बलपूर्वक छीन ले जाता था । अतः अब ऐसा नियम बनाने की आवश्यकता हुई कि एक दूसरे की स्त्रियों को हारण न कर सके । पर स्त्रीस्वतंत्रता में बाधा नहीं थी, जब आर्यों की सभ्यता बढ़ी और उनमें वर्णधर्म स्थापित हो चला, तब लोग सभुक्त स्त्री को अपने यहाँ रखने की अपेक्षा अभ्युक्त या कन्या को अच्छा समझते थे । कन्या के लिये कभी कभी युद्ध भी हुआ करते थे । धीरे धीरे सभ्यता बढ़ती गई और लोगों में स्त्री पुरुष की समता अधिक होती गई । पर स्त्रियों की स्वतंत्रता बनी रही । वे एक पुरुष के अधिकार में रहते हुए भी अन्य की कामना करती थी । उस समय यह व्यवहार नहीं समझा जाता था । महाभारत से पता चलता है कि इस प्रथा को उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु ने उठा दिया । उन्होंने यह

मर्यादा बाँधी कि पति के रहते हुए कोई स्त्री उसकी आज्ञा के विरुद्ध अन्य पुरुष से सम्भोग न करे । पर उस समय भी पति की अयोग्यता की अवस्था में उसके रहने स्त्रियाँ दूसरा पति कर लेती थी । महाभारत दार्ढ्यमा ने यह प्रथा निकाली कि ‘यावत् जीवन स्त्रियाँ पति के अधीन रहें । पति के जीवनकाल में तथा उसके मरने पर भी वे कभी पुरुष का आश्रय न लें और यदि आश्रय लें, तो पतित समझी जायें ।’ धीरे धीरे स्त्रियों की स्वतंत्रता जाती रही और वे सम्भोग की सामग्री समझी जाने लगी । यहाँ तक कि लोग उन्हें पति के मरने पर उसके शव के साथ अन्य आमोद प्रमोद की वस्तुओं की भाँति जलाने लगे जिसमें मरे हुए व्यक्ति को वे स्वर्ग में मिलें इसी प्रथा ने पीछे सती की प्रथा का रूप धारण किया । पीछे से आर्य जाति व्यसनी हो गई । एक पुरुष अनेक स्त्रियाँ रखने लगा, यहाँ तक कि तपस्वी भी इससे नहीं बचे थे । याज्ञवल्क्य के दो स्त्रियाँ (मैत्रेयी और गार्गी) थी । आर्य लोग अनार्य स्त्रियों को भी नहीं छोड़ते थे । इस कारण यह नियम बनाना पड़ा कि यज्ञीक्षा के समय रामा अर्थात् शूद्रा से सम्भोग न करे । पीछे से राजा वेणु ने अपने वंश की रक्षा के लिये जवर्दस्ती ‘नियोग’ की प्रथा चलाई । मनु जी ने उनकी निंदा की है । वे लिखते हैं—‘राजपि वेणु के समय में विद्वान् द्विजो ने मनुष्यों के लिये इस पशु धर्म (नियोग) का उपदेश किया था । राजपिप्रवर वेणु समस्त भूमंडल का राजा था । उसी कामी ने वरुणों का घालमेल किया ।’

उस समय तक विवाह दो प्रकार के होते थे । एक तो छिन भगदकर, लड भिडकर या यो ही कन्या को फुमलाकर अपने यहाँ ले आते थे । दूसरे यज्ञों के समय यजमान अपनी कन्याएँ पुरोहितों को चहे दक्षिणा के रूप में या धर्म समझकर दे देते थे । धीरे धीरे जब विवाह की यह प्रथा अनुचित मालूम हुई, तब विवाह का अधिकार पिता के हाथ में दे दिया गया और पिता योग्य वर्गों का एक समाज में बुलाकर कन्याओं को उनमें से एक को चुनने का अधिकार देता था । यही भाग चलकर स्वयवर हुआ । कभी कभी स्वयवर के मौके पर भी क्षत्रिय लोग लडकियाँ उठा ले जाते थे । विवाह के समय प्रायः वर की २५ वष और कन्या की १६ वर्ष की अवस्था होती थी, अतः विधवा होने की कम संभावना रहती थी । धीरे धीरे ‘नियोग’ की प्रथा मिट गई । विधवा का विवाह भी बुरा समझा जाने लगा । सभ्यता के बढ़ने पर पुरुष लोग स्त्रियों पर कड़ी दृष्टि रखने लगे और उनकी स्वतंत्रता जाती रही । स्त्रियों को अस्वतंत्रता हो जाने पर पुरुषों में बड़विवाह की प्रथा चल पड़ी । पीछे बुद्ध के समय में एक बार स्त्रियों की स्वतंत्रता फिर बढ़ी । पर बौद्ध मत का लोग होने पर वह फिर जानी रही । मुसलमानों के आने पर स्त्रियों की रक्षा करने के लिये हिंदुओं ने उनका जल्दी विवाह करना आरम्भ किया, क्योंकि उस समय मुसलमान लोग विवाहित स्त्रियों पर बलात्कार करना धर्मविरुद्ध समझते थे । इसी से

वाल विवाह की प्रथा चली। विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गाधर्व, राक्षस और पैशाच। पर आजकल केवल ब्राह्म विवाह प्रचलित है।

पर्या०—दारकर्म। परिणय। पाणिग्रहण।

यी०—विवाहकाम = विवाह की इच्छा रखनेवाला। विवाहार्थी। विवाहचतुष्टय = चार विवाह करना। विवाहदीक्षा = विवाह-विधि। विवाह नेपथ्य = विवाह के समय वर और वधू द्वारा धारण किया जानेवाला वेश। विवाहवधन। विवाहविच्छेद = पालक। पतिपाली का परस्पर सबब नोडना। विवाहविधि = विवाह का विधान या नियम। विवाहवेप = विवाह के समय वर वधू की वेशभूषा। विवाहनेपथ्य।

विवाहना—क्रि० स० [स० विवाह + हि० ना० (प्रत्य०)]
दे० 'व्याहना'।

विवाहवधन—सञ्ज्ञा पु० [स० विवाह + वधन] विवाह के द्वारा पत्नी के साथ हो जानेवाला दृढ सबंध। पति और पत्नी का नात्मिक, सबंध। उ०—मैं पुन हुआ चेतन। सोचता हुआ विवाहवधन।—अपरा, पृ० १७५।

विवाहित—वि० [स०] [वि० स्त्री० विवाहिना] जिसका विवाह हो गया हो। व्याहा हुआ।

विवाहिता—वि० स्त्री० [स०] जिसका पाणिग्रहण हो चुका हो। व्याही हुई स्त्री।

विवाही—वि० स्त्री० [स० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। उ०—और सहेली सब विवाही। मो कह देव कतहुं वर नाही।—जायसी (शब्द०)।

विवाह्य^१—वि० [स०] पाणिग्रहण करने योग्य। व्याह करने योग्य। व्याहने लायक।

विवाह्य^२—सञ्ज्ञा पु० १ दामाद। जामाता २ दूल्हा। वर [को०]।

विवि० [स० द्वि] १ दो २ दूसरा। उ०—श्रीफल कज-कली से विराजत कै विवि मौनी बसे ढिग गग के। कै गिरि हेम कै सपुट साने कै राजत सभु मनो रस रग के।—द्विज (शब्द०)।

विविक्त^१—वि० [स०] १ पृथक् किया हुआ। उ०—साव्य और साधनो को विविक्त करके काव्य के नित्य स्वरूप या मर्मशरीर को अलग निकालने का प्रयास बढ़ता गया।—रस०, पृ० ५०। २ बिखरा हुआ। ३ पवित्र। ४ विजन। निर्जन। ५ एकाकी। अकेला [को०]। ६ विवेकशील। विवेकयुक्त [को०]। ७ विवेचित। व्याख्यात [को०]। ८ गूढ़। गहन। सूक्ष्म (विचार या निर्णय)। ९ मुक्त। रहित [को०]। १० ज्ञात। व्यक्त। सुस्पष्ट। उ०—दर्शको को ऐसा विविक्त रसानुभव होता है जो और रसों के समकक्ष है।—रस०, पृ० १८५।

विविक्त^२—सञ्ज्ञा पु० [स्त्री० विविक्ता] १ सन्यासी। त्यागी। २ एकांत स्थान। ३ अकेलापन। एकाकीपन [को०]। ४ स्वच्छता। शुद्धता। पवित्रता [को०]।

हि० श० १-२५

विविक्तचरित—वि० [स०] जिसका आचरण बहुत अच्छा और पवित्र हो। शुद्ध चरित्रवाला।

विविक्तचेता—वि० [स० विविक्तचेतस्] स्वच्छ हृदयवाला [को०]।

विविक्तदृष्टि—वि० [स०] १ स्पष्ट दृष्टिवाला। २ सूक्ष्मदर्शी [को०]।

विविक्तनाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पुराणानुसार हिरण्यरेता के सात पुत्रों में से एक। २ इसके द्वारा शासित वर्ष का नाम।

विविक्तशय्यासन—सञ्ज्ञा पु० [स०] जैनो के अनुसार वह आचार जिसमें त्यागी सदा किसी एकांत स्थान में रहता और मोता है।

विविक्तशरण—वि० [स०] एकांतवास चाहनेवाला [को०]।

विविक्तसेवी—वि० [स० विविक्तमेविन्] एकांत में या अकेला रहने-वाला [को०]।

विविक्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह भाग्यहीन स्त्री जिसे उसका पति न चाहता हो। दुर्भाग्य [को०]।

विविक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ अलगव। पार्थक्य। २. विवेक करना। विवेचन [को०]।

विविग्न—वि० [स०] १ उद्विग्न। चिन्तित। २ अत्यंत क्रुद्ध। ३ शंका-युक्त। बहुत डरा हुआ [को०]।

विविचार—वि० [स०] १ विचाररहित। विवेकरहित। उ०—हैं अपने विविचार विचार अचार विचार अपार बहाळ धीरज धूरि मिल कहि केशव धर्म के धामिन धूरि जमाळ।—केशव (शब्द०)। २ आचाररहित। आचारहीन।

विविचारी—सञ्ज्ञा पु० [स० विविचारिन्] [स्त्री० विविचारिणी] १ अविवेकी। मूर्ख। बेवकूफ। २ दुराचारी। दुश्चरित्र। बदचलन।

विविच्च—वि० [स० विविक्त/विविच् + क्त], [प्रा० विविक्क] विविक्त। पृथग्भूत। विवध। उ०—विविच्च रोम रंगय। पदेल सुत्त रंगय। पृ० रा० ५७। १२६।

विवित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्राप्ति। उपलब्धि [को०]।

विवित्सा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जिज्ञासा। जानने की इच्छा [को०]।

विवित्सु—वि० [स०] जिज्ञासु। जानने की इच्छा रखनेवाला [को०]।

विविदिषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ज्ञानप्राप्ति की इच्छा जानने की कामना। उ०—इनके अलावा धृति, श्रद्धा, सुखा, विविदिषा, अविविदिषा, इत्यादि की भी विस्तृत व्याख्या की है।—हिंदु० सम्प्रदा, पृ० १६८।

विविदिषु—वि० [स०] जानने की इच्छा रखनेवाला। ज्ञानप्राप्ति का अभिलाषी [को०]।

विविध^१—वि० [स०] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का। भिन्न भिन्न का। जैसे,—विविध विषयों से विभूषित मासिक पत्रिका। उ०—अति रति गति मति एक करि, विविध विवेक विनास। रसिकन की रसिकप्रिया कीन्ही केशवदास।—केशव (शब्द०)।

विविध^२—सञ्ज्ञा पु० कार्य या चेष्टा का वैविध्य।

विविर—सङ्घा पुं० [सं०] १ खोह। पुफा उ०—विविर जाय मुख पाय, पायो महाप्रमाद पुति। तहँ के तीर्थ निकाय जाय जाय सादर कियो।—(शब्द०)। २ त्रिल। ३ दरार।

विविह—वि० [सं०] विविध, प्रा० विविह, विवह] अनेक प्रकार का। भाँति भाँति का। उ०—दोसँ विविह चरिय। जानिजँ सज्जन हज्जन।—पृ० रा०, ६१। ५०७।

विवीत—सङ्घा पुं० [सं०] १ वह स्थान जो चारो ओर से घिरा हो। वाडा। २ पशुओ के चराने का स्थान जो चारो ओर से घिरा हो।

विवीतभर्ता—सङ्घा पुं० [सं०] विवीतभर्तृ] चरागाह का मालिक [को०]।

विवीताध्यक्ष—सङ्घा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार चरागाहो का निरीक्षक कर्मचारी।

विवुध(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुध] १ देवता। २ पंडित। ज्ञानी। उ०—इमलिये पहिले पहल दृश्य काव्य के आधार मे हो इस-की ओर विवुधो का विचार आकर्षित हुआ।—रस०, पृ० १६।

विवुधपुर(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुधपुर] देवताओ का देश स्वर्ग।

विवुधप्रिया—सङ्घा स्त्री० [सं०] विवुधप्रिया] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे र, स, ज, ज, भ, और र गरा होते हैं। इसे 'चचरो', 'चचली' और 'चर्चरो' भी कहते हैं।

विवुधवैद्य(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुधवैद्य] दे० 'विवुधवैद्य'।

विवुधवन(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुधवन] देवताओ का प्रमोदवन, नन्दकानन।

विवुधवैद्य(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुधवैद्य] देवताओ के चिकित्सक, अधिवनी कुमार।

विवुधेश(उ)—सङ्घा पुं० [सं०] विवुध+ईश] देवताओ का राजा। इन्द्र।

विवृत्त—वि० [सं०] परित्यक्त। त्यागा हुआ [को०]।

विवृत्ता—सङ्घा स्त्री० [सं०] दुर्भंगा स्त्री। पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री। विविक्ता [को०]।

विवृत^१—वि० [सं०] १ विस्तृत। फैला या फैलाया हुआ। २ खुला हुआ। अनावृत। ३ नग्न। ४ तृण, तरु से विहीन [को०]। ५ प्रदर्शित। प्रकटीकृत। अभिव्यक्त [को०]। ६ जिसकी व्याख्या या टीका की गई हो। व्याख्यात [को०]। ७. स्पष्ट। प्रत्यक्ष [को०]। ८ उद्धोषित। घोषित [को०]।

विवृत^२—सङ्घा पुं० १. व्याकरण और भाषाविज्ञान के अनुसार कतिपय ध्वनियो के उच्चारण करने का एक प्रयत्न। २ प्रदर्शित या व्यक्त करने की क्रिया। प्रकाशन [को०]। ३ खुली जमीन। अनावृत भूमि। परती जमीन [को०]।

विवृतद्वार—वि० [सं०] १ उन्मुक्त। अनियंत्रित। २ जिसका द्वार खुला हो। ३ सीमाहीन [को०]।

विवृतपौरुष—वि० [सं०] शक्ति का प्रदर्शन करनेवाला [को०]।

विवृतभाव—वि० [सं०] खुले हुए हृदयवाला। साफ दिल का। निष्कपट का भाव [को०]।

विवृतस्मयन—सङ्घा पुं० [सं०] वह हँसी जिसमे सभी दाँत दिखाई पड़ जायें। खुली हँसी [को०]।

विवृता—सङ्घा स्त्री० [सं०] योनि का एक रोग, जिसमें गूतर के फन के सदृश मडलाकार फुमियाँ होती हैं और योनि में बहुत जनन होती है।

विवृताक्ष^१—वि० [सं०] विशाल नेत्रवाला। बड़ी आँखोवाला [को०]।

विवृताक्ष^२—सङ्घा पुं० मुरगा। ताम्रचूट। तमचुर। कुम्कुट [को०]।

विवृतानन—वि० [सं०] जिसका मुख खुला हो। खुले मुँहवाला [को०]।

विवृतास्य—वि० [सं०] दे० 'विवृतानन'।

विवृति—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ चक्र के समान घूमने की क्रिया। परिभ्रमण। २ टीका। भाष्य। ३ विस्तार। ४. प्रदर्शन। प्रकटीकरण। अनावरण। व्यक्तीकरण। उ०—वेदना की अधिक विवृति हम काव्यशिक्षा के विरुद्ध नमस्ते हैं।—चित्तामणि, भा० २, पृ० १०१।

विवृतोक्ति—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमे श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं अपने शब्दा द्वारा प्रकट कर देता है।

विवृत्—वि० [सं०] १ परावर्तित। लौटा हुआ। २. भ्रमण करता हुआ। ३ चतुर्दिक् चक्कर खाता हुआ। ४ निरावृत। अनावृत। व्यवृत। ५ ठेंहा या मुँहा हुआ [को०]।

विवृत्तदष्ट—वि० [सं०] जिसके दाँत दिखाई पड़ते हो। खुले हुए मुँहवाला [को०]।

विवृत्तवदन—वि० [सं०] मुँह मोठ लेनेवाला [को०]।

विवृत्ताग—वि० [सं०] विवृत्त+आग] पोछा से जिसके शरीर में ऐंझ हो रही हो [को०]।

विवृत्ता—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चर्मरोग [को०]।

विवृत्ताक्ष—वि० [सं०] मुर्गा। कुम्कुट। विवृताक्ष [को०]।

विवृत्तास्य—वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो।

विवृत्ति—सङ्घा स्त्री० [सं०] १. विवृत्त होने का भाव या क्रिया। विस्तार। फैलाव। २ चक्कर खाना। घूमना। ३. लुढ़कना। ४ व्याकरण मे उच्चारणभंग [को०]।

विवृद्ध—वि० [सं०] १ वृद्धित। बड़ा हुआ। तीव्र। २ पूर्ण विकसित। प्रौढ। ३. शक्तिमान्। ४ विपुल। बहुत अधिक। प्रचुर [को०]।

विवृद्धमत्सर—वि० [सं०] जिसका मत्सर या द्वेष अधिक बढ़ गया हो। विवृद्धमन्यु [को०]।

विवृद्धमन्यु—वि० [सं०] क्रुद्ध। विवृद्धमत्सर।

विवृद्धि—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ उन्नति। २ समृद्धि। ३ वर्धन। वृद्धि। ४ बढाव। वाढ़ [को०]।

यौ०—विवृद्धिभाक् = उन्नतिशील। वर्धनशील।

विवृह—सङ्घा पुं० [सं०] अलग होनेवाला। जो अन्य या दूसरो से स्वयं अलग हो जाय [को०]।

विवेक—सङ्घा पुं० [सं०] १. भली बुरी वस्तु का ज्ञान। सर्व असद् का ज्ञान। २ मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान होता हो। अच्छे और बुरे को पहचानने की शक्ति। ३ समझ। विचार। बुद्धि। ४. सत्य ज्ञान। ५. प्रकृति और

पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान । ६ पानी रखने का एक प्रकार का बरतन । जलपात्र । ७ जैनों के अनुसार बहुत ही प्रिय पदार्थों का त्याग । ८ भेद । अंतर । प्रभेद (को०) ।

यौ०—विवेकख्याति = यथार्थ या वास्तविक ज्ञान । विवेकज्ञान = विवेचन की योग्यता । न्यायबुद्धि । विवेकपदवी = विचारणा । विवेचना । चिंतन । विवेकपरिपथा = न्याय में बाधक । विवेकभाक् = विवेकी । बुद्धिमन् । विवेकमथरता = विवेक की दुर्बलता । विवेकविरह = विवेक से रहित होना । अविवेकिता । मूर्खता । विवेकविश्रान्त = मूर्ख । बुद्धिहीन । विवेकशील । विवेकशून्य ।

विवेकज्ञ—वि० [स०] विवेक करनेवाला । विवेकी [को०] ।

विवेकता—सच्चा स्त्री० [स०] १ विवेक का भाव । ज्ञान । २ सत् और असत् का विचार ।

विवेकदृष्टा—सच्चा पुं० [स० विवेकदृष्टवन्] विचारवान् या दूरदर्शी व्यक्ति । विवेकी पुरुष [को०] ।

विवेकवान्—सच्चा पुं० [स० विवेकवत्] १ वह जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो । अच्छे बुरे को पहचाननेवाला । २ बुद्धिमान् । अक्लमद । विवेकी ।

विवेकशील—वि० [स०] विवेकवान् । सत् और असत् का ज्ञान रखनेवाला । उ०—उसे ही सत्य का अंतिम बिंदु क्या कोई विवेकशील साहित्यकार स्वीकार कर सकता है ।—हिंदी का०, पृ० ४ ।

विवेकशून्य—वि० [स०] भले और बुरे का ज्ञान न रखनेवाला । उ० उद्धत—विवेकशून्य, चाहिए उन्हें कि शक्ति अपनी वे पहचानें ।—अपरा०, पृ० ६४ ।

विवेकी—सच्चा पुं० [स० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो । भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला । २. विचारवान् । बुद्धिमान् । समझदार । ३. ज्ञानी । ४. न्यायशील । ५. वह जो अभियोगो आदि का न्याय करता हो । न्यायाधीश । ६. दार्शनिक (को०) ।

विवेख, विवेखा—सच्चा पुं० [स० विवेक] दे० 'विवेक' । उ०—और सुनो गुरुमुख का लेखा । भक्त होय सो करे विवेखा ।—कबीर सा०, पृ० ८२३ ।

विवेचक—सच्चा पुं० [स०] विवेचना करनेवाला । विवेकी ।

विवेचन—सच्चा पुं० [स०] १. किसी वस्तु की भली भाँति परीक्षा करना । जाँचना । २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नहीं । निर्णय । ३. व्याख्या । तर्क वितर्क । ४. अनुसंधान । ५. परीक्षा । ६. सत् असत् का विचार । ७. सीमासा ।

विवेचना—सच्चा स्त्री० [स०] दे० 'विवेचन' ।

विवेचनीय—वि० [स०] विवेचन करने योग्य । विचार करने लायक ।

विवेचित—वि० [स०] १ जिसकी विवेचना की गई हो । जिसका अनुसंधान किया गया हो । निर्णय किया हुआ । २. तै किया हुआ । निश्चित ।

विवेक पुं०—सच्चा पुं० [स० विवेक] दे० 'विवेक' । उ०—पढ़े गुरु श्री घट पढ़े जो गुरु पथ त्र विवेक पायक चेतन कोटवाल ।—रामानंद०, पृ० १५ ।

विवेक—सच्चा पुं० [स०] साहित्य शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमें स्त्रियाँ समोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं ।

विशक—वि० [स० विशङ्क] जिसे किसी प्रकार की शका या भय न हो । निश्चक । निर्भय । निडर ।

विशकट—वि० [स० विशङ्कट] [वि० स्त्री० विश कटा, विश कटी] १ बहुत बड़ा या विस्तृत । विशाल । २ प्रचंड । शक्तिशाली (को०) । ३. भयानक । डरावना ।

विशकनीय—वि० [स० विशङ्कनीय] जिससे किसी प्रकार की शका हो । डरने योग्य । सदेहास्पद । शकनीय ।

विशका—सच्चा स्त्री० [स० विशङ्का] १. आशका । भय । डर । २. आशका का अभाव ।

विशकी—वि० [स० विशङ्किन्] जिसे किसी प्रकार की आशका या भय हो ।

विशङ्क्य—वि० [स० विशङ्क्य] आशका या भय करने योग्य ।

विशभर(पुं)—सच्चा पुं० [स० विश्वभर] दे० 'विश्वभर' । उ०—द्वंद्व हरण गोविंद तरण भव सिंधु विशभर ।—राम० धर्म०, पृ० ३०२ ।

विशंवरा—सच्चा स्त्री० [स०] छोटा गाँव । पुरा । परवा [को०] ।

विश^१—सच्चा पुं० [स०] १ कमल की डंडी । मृणाल । २. चाँदी । ३. मनुष्य । आदमी । ४. मृणालसूत्र या ततु । कमल की डंडी का रेशा (को०) ।

विश^२—सच्चा स्त्री० [स० विश] कन्या । लडकी ।

विशकंठा—सच्चा स्त्री० [स० विशकण्ठा] १ वक पक्षी । बलाका । २. कमल के नाल के समान कठवाली स्त्री [को०] ।

विशकलित—वि० [स०] जो अलग अलग या विभक्त हो । विभिन्न । सुस्पष्ट [को०] ।

विशद^१—वि० [स०] १ स्वच्छ । विमल । २ माफ । स्पष्ट । ३ जो दिखाई पड़ता हो । व्यक्त । ४ सफेद । ५ प्रसन्न । खुश । ६ सुंदर । मनोहर । खूबसूरत । ७. अनुकूल । ८. शांत । निश्चित (को०) । ९. कोमल । मुलायम ।

विशद^२—सच्चा पुं० १ सफेद रंग । २ भागवत के अनुसार जयद्रथ के एक पुत्र का नाम । ३. कसीस । ४ वृद्धी । बड़ी कटाई । बनभटा । ५ एक प्रकार की गंध (को०) । ६. एक प्रकार का स्पर्श । कोमल स्पर्श (को०) ।

विशदप्रज्ञ—वि० [स०] तीव्र बुद्धिवाला । विचक्षण [को०] ।

विशदप्रभ—वि० [स०] स्वच्छ या निर्मल प्रभाववाला । श्वेत कांति युक्त [को०] ।

विशदित—वि० [स०] विशद या स्वच्छ किया हुआ [को०] ।

विशब्दित—वि० [स०] कहा हुआ । ध्वनित । कथित [को०] ।

विशय—सच्चा पुं० [स०] १. सशय । सदेह । शक । २ आश्रय । सहारा । ३. केंद्र (को०) ।

विशयी—सज्ञा पुं० [सं० विशयिन्] १ वह जिसे किसी प्रकार की शरा या सदह हो। मशयात्मा। २ मरिच। महाभारत। अनिशित।

विशर—सज्ञा पुं० [मं०, मार डालना। वध। २. दुड़े दुड़े करना। विशारण (को०)।

विशरण—सज्ञा पुं० [सं०] मार डालना। हत्या करना। वध करना।

विशरण—वि० अशरण। अमहाय [को०]।

विशरद—सज्ञा पुं० [मं० विशारद] दे० 'विशारद'।

विशरद—वि० [सं०] नाशवान्। क्षणभंगुर [को०]।

विशर्द्धन—सज्ञा पुं० [मं०] प्रायुर्व्याय। पालना।

विशत्य—वि० [मं०] १ जिसमें काँटा निबल गया हो। २ जल्प-रहित (वाग्म)। ३ कष्ट से मुक्त। ४ जिसका शरीर अस्त्री का घाव अच्छा हो गया हो [को०]।

विशत्यकरण—वि० [मं०] जगत्पद का घाव भरनेवाला [को०]।

विशत्यकरणी, विशत्यकर्णी—सज्ञा स्त्री० [मं०] निरिणी।

विशत्यकृत्—सज्ञा पुं० [मं०] १ पत्नी नता। २ मास्कोता या हरपरवाली (?) नामक नता।

विशल्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुच्छ। २. अग्निशिखा नामक वृक्ष। ३. दत्ती वृक्ष। ४. तागदत्ती। ५. एक प्रकार की सुखी जिसे रागदत्ती भी कहते हैं। ६. एक नदी का नाम। ७. लक्ष्मण की स्त्री का नाम। ८. निशाप। ९. पाटना। १०. खेमासी। ११. अजयायन। अजगोदा [को०]।

विशम—सज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। वध। २. लड्ग।

विशसन—सज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। २. भागवत के अनुसार एक नरक का नाम। ३. वृक्ष। ४. विनाश। वर्षासी [को०]। ५. पुत्र [को०]। ६. पाटना। वीरगा [को०]। ७. कठोर व्यवहार [को०]।

विशसित—वि० [सं०] काटा हुआ। विदारित। चौरा हुआ [को०]।

विशसिता—सज्ञा पुं० [मं० विशासित] १. चागल। २. काटने, चोरने, या मार डालनेवाला व्यक्ति [को०]।

विशस्त—वि० [सं०] १ जो मार डाला गया हो। २. काटा हुआ। ३. जिसे किसी प्रकार का भय न हो। ४. उजड़। अशिश्ट [को०]। ५. प्रख्यात। विख्यात [को०]।

विशस्ता—सज्ञा पुं० [सं० विशस्त] १ मार डालनेवाला। हत्या करनेवाला। २. यशवि में बलिप्रदान करनेवाला। ३. चागल।

विशस्ति—सज्ञा स्त्री० [मं०] मार डालना। हत्या।

विशस्व—वि० [सं०] शस्त्ररहित। अशस्त्र [को०]।

विशस्पति—सज्ञा पुं० [सं०] राजा।

विशापति—सज्ञा पुं० [सं० विशास्पति] १ राजा। २. जामाता। दामाद [को०]। ३. व्यापारियों का प्रधान या मुखिया [को०]।

विशाकर—सज्ञा पुं० [सं०] १ अन्नचूट। लकासीज। २. दत्ती। ३. हाथी शुद्धी। ४. पाटल या पाटला का वृक्ष।

विशास—सज्ञा पुं० [मं०] १. विश्वास। २. भय। धर्म के समक्ष पर धर आने और सब धर्म को कुछ पात्र समझना। ३. विश्वास। यात्रा। ४. पुत्रगा। ५. अश्वत्थ। ६. गुच्छ। ७. भागवत का नाम। ८. मार डालना। ९. मार डालना। १०. मार डालना। ११. मार डालना। १२. मार डालना। १३. मार डालना। १४. मार डालना। १५. मार डालना। १६. मार डालना। १७. मार डालना। १८. मार डालना। १९. मार डालना। २०. मार डालना। २१. मार डालना। २२. मार डालना। २३. मार डालना। २४. मार डालना। २५. मार डालना। २६. मार डालना। २७. मार डालना। २८. मार डालना। २९. मार डालना। ३०. मार डालना। ३१. मार डालना। ३२. मार डालना। ३३. मार डालना। ३४. मार डालना। ३५. मार डालना। ३६. मार डालना। ३७. मार डालना। ३८. मार डालना। ३९. मार डालना। ४०. मार डालना। ४१. मार डालना। ४२. मार डालना। ४३. मार डालना। ४४. मार डालना। ४५. मार डालना। ४६. मार डालना। ४७. मार डालना। ४८. मार डालना। ४९. मार डालना। ५०. मार डालना। ५१. मार डालना। ५२. मार डालना। ५३. मार डालना। ५४. मार डालना। ५५. मार डालना। ५६. मार डालना। ५७. मार डालना। ५८. मार डालना। ५९. मार डालना। ६०. मार डालना। ६१. मार डालना। ६२. मार डालना। ६३. मार डालना। ६४. मार डालना। ६५. मार डालना। ६६. मार डालना। ६७. मार डालना। ६८. मार डालना। ६९. मार डालना। ७०. मार डालना। ७१. मार डालना। ७२. मार डालना। ७३. मार डालना। ७४. मार डालना। ७५. मार डालना। ७६. मार डालना। ७७. मार डालना। ७८. मार डालना। ७९. मार डालना। ८०. मार डालना। ८१. मार डालना। ८२. मार डालना। ८३. मार डालना। ८४. मार डालना। ८५. मार डालना। ८६. मार डालना। ८७. मार डालना। ८८. मार डालना। ८९. मार डालना। ९०. मार डालना। ९१. मार डालना। ९२. मार डालना। ९३. मार डालना। ९४. मार डालना। ९५. मार डालना। ९६. मार डालना। ९७. मार डालना। ९८. मार डालना। ९९. मार डालना। १००. मार डालना।

विशास—वि० [मं०] १. विश्वास। २. भय। ३. विश्वास। ४. विश्वास। ५. विश्वास। ६. विश्वास। ७. विश्वास। ८. विश्वास। ९. विश्वास। १०. विश्वास। ११. विश्वास। १२. विश्वास। १३. विश्वास। १४. विश्वास। १५. विश्वास। १६. विश्वास। १७. विश्वास। १८. विश्वास। १९. विश्वास। २०. विश्वास। २१. विश्वास। २२. विश्वास। २३. विश्वास। २४. विश्वास। २५. विश्वास। २६. विश्वास। २७. विश्वास। २८. विश्वास। २९. विश्वास। ३०. विश्वास। ३१. विश्वास। ३२. विश्वास। ३३. विश्वास। ३४. विश्वास। ३५. विश्वास। ३६. विश्वास। ३७. विश्वास। ३८. विश्वास। ३९. विश्वास। ४०. विश्वास। ४१. विश्वास। ४२. विश्वास। ४३. विश्वास। ४४. विश्वास। ४५. विश्वास। ४६. विश्वास। ४७. विश्वास। ४८. विश्वास। ४९. विश्वास। ५०. विश्वास। ५१. विश्वास। ५२. विश्वास। ५३. विश्वास। ५४. विश्वास। ५५. विश्वास। ५६. विश्वास। ५७. विश्वास। ५८. विश्वास। ५९. विश्वास। ६०. विश्वास। ६१. विश्वास। ६२. विश्वास। ६३. विश्वास। ६४. विश्वास। ६५. विश्वास। ६६. विश्वास। ६७. विश्वास। ६८. विश्वास। ६९. विश्वास। ७०. विश्वास। ७१. विश्वास। ७२. विश्वास। ७३. विश्वास। ७४. विश्वास। ७५. विश्वास। ७६. विश्वास। ७७. विश्वास। ७८. विश्वास। ७९. विश्वास। ८०. विश्वास। ८१. विश्वास। ८२. विश्वास। ८३. विश्वास। ८४. विश्वास। ८५. विश्वास। ८६. विश्वास। ८७. विश्वास। ८८. विश्वास। ८९. विश्वास। ९०. विश्वास। ९१. विश्वास। ९२. विश्वास। ९३. विश्वास। ९४. विश्वास। ९५. विश्वास। ९६. विश्वास। ९७. विश्वास। ९८. विश्वास। ९९. विश्वास। १००. विश्वास।

विशासक—वि० [मं०] दे० 'विशासक' [को०]।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशासक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशासक'।

विशेष—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशेष'।

विशेष—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशेष'।

विशेष—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशेष'।

विशेष—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशेष'।

विशेष—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'विशेष'।

विशाप—सज्ञा पुं० [मं०] एक प्राचीन शक्ति का नाम।

विशाप—वि० शापमुक्त [को०]।

विशाय—सज्ञा पुं० [सं०] पहेलियों का पानी पीरी से सोना।

विशायक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सत्ता जिसे विशाकर भी कहते हैं।

विशारण—सज्ञा पुं० [सं०] १. हत्या। वध। २. काटना। काटना। दुकड़ें दुकड़ें करना [को०]।

विशारद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २. वह जो किसी काम में बहुत कुशल हो। दक्ष। ३. वह जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा हो। ४. उकुल वृत्त। मौलसिरी।

विशारद—वि० १. विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. प्रगत। साहसी। भरोसे का (को०)। ४. अभिमानी। घमडी। ५. चतुरतापूर्ण (को०)। ६. वचन या वक्तृत्व शक्ति से हीन (को०)।

विशारदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केवाँच काँछ। २. घमासा। दुरालभा।

विशाल—वि० [सं०] १. जो बहुत बड़ा और विस्तृत हो। लंबा चौड़ा। २. जो देखने में सुंदर और भव्य हो। ३. प्रसिद्ध। मशहूर। ४. समृद्ध। भरा पूरा (को०)। ५. युक्त। सहित (को०)। ६. स्तम्भरहित (को०)।

विशाल—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का मृग। २. चिडिया। पक्षी। ३. पेड़। वृक्ष। ४. रामायण के अनुसार राजा इक्ष्वाकु के पुत्र का नाम, जिसने विशाला नाम की नगरी स्थापित की थी। ५. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ६. एक नाग जो तक्षक का पिता है (को०)।

विशालक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. गरुड। ३. एक यज्ञ का नाम।

विशालकुल—संज्ञा पुं० [सं०] ख्यात वंश। प्रसिद्ध कुल (को०)।

विशालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विशाल होने का भाव। बड़ापन। २. फैलाव। विस्तार (को०)। ३. उत्कर्ष। ख्याति (को०)।

विशालतैलगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] अकोट वृक्ष। अखरोट (को०)।

विशालत्व—संज्ञा पुं० [सं०] २० 'विशालता' (को०)।

विशालत्वक्—संज्ञा पुं० [सं०] विशालत्वक्। छतिवन।

विशालदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

विशालनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बौधिसत्व का नाम।

विशालनेत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयत नेत्रोवाली स्त्री। विशालाक्षी।

विशालपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीताल नामक वृक्ष। हिताल। २. मानकद। मानकचू।

विशालपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कद। मानकद। (को०)।

विशालफलक—वि० [सं०] बड़े बड़े फलोवाला (को०)।

विशालफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्पार्श्व। बरसेमा।

विशाललोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] २० 'विशालनेत्रा'।

विशालविजय—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक विशेष व्यूह (को०)।

विशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्रवारणी नामक लता। इंद्रावली। २. महेन्द्रवारणी। ३. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ४. दक्ष की एक कन्या का नाम। ५. पाई का साग। ६. एवांगी। मुगभासी। ७. कलगा नामक घास। ८. उज्जयिनी का एक नाम (को०)। ९. एक नदी का नाम (को०)। १०. संगीत में एक मूर्धना (को०)।

विशालाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. विष्णु। ३. गरुड। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५. एक प्रकार का उल्लू (को०)। ६. एक नाग का नाम (को०)। ७. कौटिल्य द्वारा उल्लिखित प्राचीन काल की एक प्रकार की राजनीय मत्ता (को०)।

विशालाक्ष—वि० जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों।

विशालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों। २. पार्वती। ३. देवी का एक रूप या मूर्ति। ४. चौसठ योगिनियों में से एक योगिनी का नाम। ५. नागदनी। हाथीशु हो।

विशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अजमोदा। २. पलाशी लता।

विशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू। रेत।

विशिख—संज्ञा पुं० [सं०] १. राममर या भद्रमुज नामक घास। २. बाण। ३. गच्छस तेरे तुच्छ बाण क्या ? मेरे ह्म उर में है शेल। उसे भेलने के पहले तू मेरा एक विशिख ही भेन।—साकेत, पृ० ४६४। ३. वह स्थान जिसमें रोगी रहता हो। ४. एक शारत्र। तोमर (को०)। ५. लोहे का कीवा (को०)। ६. गणित में बाण की आकृति का चिह्न (को०)।

विशिख—वि० १. जिसे शिखा न हो। २. खन्वाट। गजा। ३. भोयरी नोकवाला शस्त्र आदि। ४. अग्नि जिसमें लपट न हो। लपट से हीन। ५. धूमकेतु जिसमें पूँछ न हो (को०)।

विशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार की रथ्या। राज्य की वह बड़ी मंडक जिसपर बड़े बड़े जौहरियों तथा सुनारों की दुकानें हों। २. कुदल। फावड़ा। ३. रक्षा। पथ। ४. छोटा बाण। ५. तर्कु। तकुवा। ६. रोगियों के रहने का स्थान। ७. सुई या पिन (को०)। ८. नाविक की नाव नौ। नाउन। (को०)।

विशिखाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तूणोर। तरकम (को०)।

विशित—वि० [सं०] तीक्ष्ण। निशित (को०)।

विशिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजमहल। २. देवमंदिर। ३. भवन। आवास स्थान (को०)।

विशिरस्क—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पाद के एक पर्वत का नाम। २. कबंध। सिरविहीन घट।

विशिरा—वि० [सं०] विशिरस् जिससे मित्र न हो (को०)।

विशिष्ट—वि० [सं०] १. मिला हुआ। युक्त। २. जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो। विशेषतायुक्त। जैसे,—कुछ विशिष्ट धर्म ऐसे होते हैं, जिनके लिये मनुष्य को प्रायश्चित्त तक करना होता है। ३. विलक्षण। अद्भुत। ४. जो बहुत अधिक शिष्ट है। ५. यशस्वी। कीर्तिशाली। ६. प्रसिद्ध। मशहूर।

विशिष्ट—संज्ञा पुं० १. सीमा नामक धातु। २. विष्णु का एक नाम (को०)।

विशिष्टकुल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठित वंश (को०)।

विशिष्टकुल—वि० विशिष्ट पुत्र का। कुलीन (को०)।

विशिष्टचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बौधिसत्व का नाम।

विशिष्टचारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विशिष्टचारिन्] एक बोधिसत्व ।

विशिष्टता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विशिष्ट का भाव या धर्म । २ विशेषता ।

विशिष्टपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथिपत्रों, गठिवन ।

विशिष्टबुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सदसद् विवेकना प्रज्ञा । विवेक । प्रभेदक ज्ञान [को०] ।

विशिष्टलिङ्ग—वि० [सं० विशिष्टलिङ्ग] भिन्न लिङ्गवाला [को०] ।

विशिष्टवर्ण—वि० [सं०] जो उत्कृष्ट या चाखे रंग का हो । उत्तम वर्ण या रंगवाला [को०] ।

विशिष्टाद्वैत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वेदात् दर्शन का दार्शनिक [जन्मके सिद्धान्त अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं ।

विशेष—इस सिद्धांत में यद्यपि ब्रह्म, जीवात्मा और जगत् तीनों मूलतः एक ही माने जाते हैं, पर फिर भी तीनों कार्यरूप में एक दूसरे से भिन्न और कुछ विशिष्ट गुणों से युक्त माने जाते हैं । इस सिद्धांत के अनुसार जीव और ब्रह्म का वही संबन्ध है, जो किरण और सूर्य का है, अर्थात् किरण जिस प्रकार सूर्य से निकला हुई है, उसी प्रकार जीव भी ब्रह्म से निकला हुआ है, और जिस प्रकार किरण से सूर्य बहुत बड़ा है, उसी प्रकार जीव से ब्रह्म भी बहुत बड़ा है । इसमें ब्रह्म को एक भी माना जाता है और अनेक भी । वास्तव में द्वैत और अद्वैत दोनों वादों के मध्य का यह मार्ग है, अर्थात् इसमें उन दोनों वादों में सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की गई है । यह वाद रामानुजाचार्य का चलाया हुआ है और 'भेदाभेदवाद' या 'द्वैताद्वैतवाद' भी कहलाता है ।

विशिष्टाद्वैतवादी—वि० [सं० विशिष्टाद्वैतवादिन्] विशिष्टाद्वैत मत का माननेवाला । रामानुज संप्रदाय को माननेवाला ।

विशिष्टी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शंकराचार्य की माता का नाम ।

विशीर्ण—वि० [सं०] १ सूखा हुआ । २ दुबला पतला, ३ बहुत पुराना । जीर्ण । ४ छिन्न भिन्न । टुकड़े टुकड़े किया हुआ [को०] । ५ मुरझाया हुआ । कुम्हिलाया हुआ [को०] । ६ मर्दित हुआ [को०] । ७ सिकुड़ा हुआ । भुर्रियोवाला [को०] । ८, अपव्यय किया हुआ । उड़ाया हुआ [को०] । ९ गला या रगड़ा हुआ (सुगंधित द्रव्य) । १० जो सफल न हो । विफलीभूत [को०] । ११ नष्ट । व्वस्त [को०] ।

विशीर्णपूर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नीम का पेड़ ।

विशीर्णमूर्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव । २. वह जिसका शरीर विशीर्ण या छिन्न भिन्न हो [को०] ।

विशील—वि० [सं०] १ जिसका शील या चरित्र अच्छा न हो । २ दुष्ट । प.जी ।

विशुद्धि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विशुद्धि] कश्यप के एक पुत्र का नाम ।

विशुद्धि—वि० [सं०] १ जो बिल्कुल शुद्ध हो । जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो । २ सत्य । सच्चा । ३ पवित्र । निष्पाप [को०] । ४. बेदाग । निष्कलंक [को०] । ५. विनीत ।

नम्र [को०] । ६ चमकता हुआ । उज्ज्वल । जैसे, दाँत [को०] । ७ खर्च किया हुआ । अप्रययित । जंस, निधि [को०] ।

विशुद्धि—सञ्ज्ञा पुं० तत्र के अनुसार शरीर के अंदर के छह चक्रों में से पाँचवाँ चक्र, जो गले में माना जाता है । कहते हैं, इसमें सोलह दल होते हैं और शिव तथा आकाश इसमें निवास करते हैं ।

विशुद्धकरण—वि० [सं०] पवित्र कार्य करनेवाला [को०] ।

विशुद्धचरित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम ।

विशुद्धचरित्र—वि० जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो ।

विशुद्धचारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विशुद्धचारिन्] वह जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो ।

विशुद्धता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विशुद्ध होने का भाव या धर्म । पवित्रता ।

विशुद्धधी—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि धार्मिक हो [को०] ।

विशुद्धप्रकृति—वि० [सं०] जो स्वभावतः धर्मपरायण हो [को०] ।

विशुद्धसत्त्व—वि० [सं०] शुद्ध मनवाला । पवित्र आचरणवाला [को०] ।

विशुद्धात्मा—वि० [सं०] जिसकी आत्मा या मन निर्मल और विकारहीन हो [को०] ।

विशुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विशुद्ध होने की क्रिया या भाव । शुद्धता । पवित्रता । २. यथार्थता । सत्यता [को०] । ३. परिष्कार । भूत सुधार [को०] । ४. ऋण, वैर आदि का परिशोध [को०] । ५. मादृश्य । समानता [को०] । वीजगणित । ६ घटाने की सख्या [को०] । ७ प्रायश्चित्त । पश्चात्ताप [को०] । ८ सदेह का निराकरण [को०] । ९ पूर्ण ज्ञान [को०] ।

विशुद्धिचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गले में स्थित एक चक्र । दे० 'विशुद्धि' ।

विशुचिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विसूचिका] दे० 'विसूचिका' ।

विशून्य—वि० [सं०] पूर्णतः रिक्त । बिल्कुल खाली । उ०—शून्य विशून्य न तहाँ होई अगाध महिमा सो कहो—कबीर सा०, पृ० ४ ।

विशूल—वि० [सं०] १ भाले से रहित । कुतविहीन । २ पीड़ा या व्यथारहित [को०] ।

विश्रु खल—वि० [सं० विश्रुद्धखल] १ जिसमें श्रु खला न हो या न रह गई हो । उ०—स्वयं देव थे हम सब तो फिर क्यों न विश्रुद्ध होती सृष्टि—कामायनी, पृ० ६ । २ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके । ३ सब प्रकार के नैतिक वधनों से मुक्त । लपट [को०] ।

विश्रुग—वि० [सं० विश्रुद्धग] जिसे श्रुग न हो । श्रुगरहित ।

विशेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भेद । अंतर । फरक । २ प्रकार । तरह । ढंग । ३ नियम । कायदा । ४ विचित्रता । ५. व्यक्ति । ६ सार । निचोड़ । ७ तारतम्य । मुनासिब । ८ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो । अधिकता । ज्यादाती । ९ अवयव । अंग । १० वस्तु । पदार्थ । चीज । ११. तिल का पीछा । १२. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार । विशेष नामक अलंकार ।

विशेष—मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्यप्रकाश में इसका विवरण दिया है। इसके तीन भेद कहे गए हैं। पहला वह भेद है जिसमें बिना किसी आधार के ही आधेय का वर्णन होता है। जैसे—बिनु बारिद विजुरी बिना बारि लसत युग मीन। विधु ऊपर तम तोम यह निरखी रीति नवीन। दूसरा भेद वह है जिसमें थोड़ा सा ही काम करने पर बहुत बड़ा काम या लाभ हो। जैसे—पाइ चुके फल चारिहू करत गगजल पान। तीसरा भेद वह है जिसमें एक चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। जैसे—घर बाहर अथ ऊरधी सब ठाँ राम लखाय।

१३ वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थों में से एक प्रकार का पदार्थ।

विशेष—कणाद ने द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ माने हैं। 'विशेष' वे गुण हैं जिनके कारण कोई एक पदार्थ दोप दूसरे पदार्थों से भिन्न समझा जाता है। दो वस्तुओं में रूप, रस और गंध आदि में जो अंतर होता है वह इसी 'विशेष' गुण के कारण होता है। रूप, रस, गंध, स्पर्श, स्नेह, द्रवत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, सत्कार और शब्द ये वैशेषिक गुण या विशेष गुण कहलाते हैं। कणाद के दर्शन में इन्हीं विशेष पदार्थों या गुणों आदि का विवेचन है इसी लिये वह 'वैशेषिक दर्शन' कहलाता है। १४. प्रवर्ग। वर्ग (को०)। १५. मस्तक पर लगाया जानेवाला चदन या केसर का तिलक (को०)। १६ वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है (को०)। १७. ज्यामिति में कर्ण (को०)। १८ परिचायक चिह्न। प्रभेदक चिह्न (को०)। १९ रोग की वह अवस्था जब सुधार आरंभ होता है (को०)।

विशेष^२—वि० १ असाधारण। असामान्य। २. अधिक। प्रचुर।

विशेषक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ माथे पर लगाया जानेवाला तिलक। टीका। २ तिलक वृद्ध। तिलपुष्पी। ३ चित्रक। ४ साहित्य में एक प्रकार का पद्य जिसमें तान श्लोको या पदो में एक ही क्रिया रहती है, इस लिये उन तीनों श्लोको या पदो का साथ ही अवयव होता है। ५ चदन आदि है। सुगन्धित या रंगीन पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखांकन करना (को०)। ६ भेद करनेवाला गुण। विशिष्टता (को०)। ७ विशेषोक्ति अलंकार (को०)।

विशेषक^२—वि० विशेषता उत्पन्न करनेवाला। विशेष रूप देनेवाला।

विशेषकच्छेद्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चौमठ कलाओं में से एक माथे पर तिलक बनाने की कला (को०)।

विशेषकृत्—वि० [स०] अंतर करनेवाला। विवेकी (को०)।

विशेषज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। वह जो किसी बात का खास तौर पर जानकर हो। किसी विषय का पारदर्शी।

विशेषण^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। विभेदक लक्षण या चिह्न।

२ व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी सञ्ज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। जैसे,—'वीर मराठे' या 'चपल बालक' में वीर और 'चपल' शब्द विशेषण हैं।

विशेष—जब विशेषण किसी सञ्ज्ञा के साथ लगता है तब उसे विशेष्य विशेषण कहते हैं, और जब वह क्रिया के साथ लगता है, तब उसे विधेय विशेषण कहते हैं। जैसे—'हमें तो ससार सूना देख पड़ता है'। यहाँ 'सूना' विधेय विशेषण है। साधारणतः विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—(१) सार्वनामिक विशेषण, जैसे,—'वह आदमी' चला गया। में 'वह' सार्वनामिक विशेषण है। (२) गुणवाचक विशेषण; जैसे, नया, पुराना, सुडौल, सूखा, खराब आदि, और (३) सख्यावाचक विशेषण, जैसे—आधा, एक, चार, दसवाँ।

३ प्रकार। किस्म। जाति (को०)। ४ भेद। अंतर। पार्थक्य (को०)। ५ गुणवर्णन या गुणोत्कर्ष (को०)।

विशेषण^२—वि० १. गुण बतानेवाला। विशेषता बतानेवाला। २ प्रभेदक। व्यञ्छेदक (को०)।

विशेषणीय—वि० [स०] दे० 'विशेष्य'।^२

विशेषतः—अव्य० [स० विशेषतः] १. विशेष रूप से। खास तौर से। २ समानुपात में। ३ एकमात्र (को०)।

विशेषता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विशेष का भाव या धर्म। खसूसियत। खासपन। जैसे,—आपकी बातों में यह विशेषता है कि तुरंत प्रभाव डालती हैं।

विशेषदृश्य—वि० [स०] विशेष रूप से दर्शनीय। सुंदर आकृति-वाला (को०)।

विशेषना पु—क्रि० अ० [स० विशेष + हि० ना (प्रत्य०)] १ निश्चित करना। निर्णय करना। उ०—अनंत गुण गावें, विशेषहि न पावें।—केशव (शब्द०)। २ विशेष रूप देना। उ०—ताहि पूछत बोलि कै। तदपि भाँति भाँति विशेष कै।—केशव (शब्द०)।

विशेषपतनीय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विशिष्ट पाप। विशेष प्रकार का पाप (को०)।

विशेषप्रतिपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] समानार्थ दिया गया विशेष चिह्न (को०)।

विशेषभाग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हाथों के माथे का एक भाग (को०)।

विशेषमति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्त्व का नाम।

विशेषलक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विशेषलिंग'।

विशेषलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [स० विशेषलिङ्ग] विशिष्टतासूचक लक्षण वा चिह्न (को०)।

विशेषवचन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विशेषता द्योतन करनेवाला कथन (को०)।

विशेषविद्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विशेषज्ञ'।

विशेषविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विशेष शास्त्र'।

विशेषशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] किसी विषय पर विशिष्ट विधान वा नियमपरक शास्त्र (को०)।

विशेषित—वि० [स०] १ जो खास तौर पर अलग किया गया हो। जो 'विशेष' किया या बनाया गया हो। २ जिसमें विशेषण लगा हो। ३ विलक्षण। विचित्र (को०)। ४ परिभाषित। लक्षित (को०)। ५ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया (को०)।

विशेषाक—सञ्ज्ञा पु० [स० विशेष+अङ्क] पत्र पत्रिकाओं का वह अंक जो किसी पर्व आदि विशिष्ट अवसर, व्यक्ति, घटना, वस्तु या विषय आदि के पूर्ण विवेचन और जानकारी के साथ तत्संबंधी किसी विशिष्ट अवसर पर प्रकाशित हो।

विशेषी—वि० [स० विशेषिन्] १ जिसमें कोई विशेष बात हो। विशेषणायुक्त। २. पृथक्। अलग। भिन्न (को०)। ३ स्पर्धा करनेवाला। प्रतिद्वंद्विता करनेवाला (को०)।

विशेषोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के रहने हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है, जैसे,—(क) अलि इन लोयन की कछू उपजी बड़ी बलाय। नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। (ख) तमकि ताकि तकि शिव धनु धरही। उठत न कोटि भाँति बल करही—तुलसी (शब्द०)।

विशेषोन्मुख—वि० [स० विशेष+उन्मुख] विशेष की ओर झुका हुआ। जो सामान्य से भिन्न हो। उ०—यह अंतिम शक्ति उनमें है पर वह विशेषोन्मुख है।—आचार्य०, पृ० १४१।

विशेष्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ व्याकरण में वह सञ्ज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता है। वह सञ्ज्ञा जिसकी विशेषता विशेषण लगाकर सूचित की जाय। जैसे,—मोटा आदमी या काला कुत्ता में आदमी और कुत्ता विशेष्य है। २ नाम। सञ्ज्ञा (को०)।

विशेष्य^२—वि० १ विशिष्ट या विशेषतायुक्त होने योग्य। २ मुख्य। प्रधान। उत्तम (को०)।

विशेष्यसिद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विशेषः—सञ्ज्ञा पु० [स० विशेष] दे० 'विशेष'। उ०—मिश्रत माँहो माँ ह मिल, षिं उकत विशेष।—'धु०' ६०, पृ० ४६।

विशोक^१—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ अशोक वृक्ष। २ युद्ध के एक अनुचर का नाम। ३ पुराणानुसार ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम। ४ शोक का अंत या अपनयन (को०)। ५ एक दानव (को०)। ६ भीम के सारथिका नाम। ७ एक पर्वत-श्रेणी (को०)।

यौ०—विशोककोट=एक पर्वत का प्राचीन नाम।

विशोक^२—वि० जिसे शोक न हो। शोकरहित।

विशोकता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] शोकरहित होने का भाव या धर्म

विशोकपट्टी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] चँच झुल्ला पट्टी।

विशेष—कहते हैं कि इस दिन व्रत करने से मनुष्य को शोक नहीं होता।

विशोका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ योग दर्शन के अनुसार वह चित्तवृत्ति जो सप्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते हैं। २ दुःख से छुटकारा। शोक से मुक्ति (को०)। ३ स्कंद की मातृकाओं में एक का नाम (को०)।

विशोणित—वि० [स०] जिसमें रक्त न हो (को०)।

विशोघ—वि० [स०] विशुद्ध करने योग्य। साफ करने लायक।

विशोघन—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ अच्छी तरह साफ करना। २ विष्णु। ३. पाप या दोष आदि से रहित होना (को०)। ४ प्रायश्चित्त (को०)। ५ निश्चिन्त वा निर्यात होना (को०)। ६ रेचन (को०)। ७ इधर उधर फँसी पेड़ की ज़ाखाओं को छाँटना या काटना (को०)।

विशोघनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा की पुरी का नाम। २ नाग-दती। ३ नीली नामक पीया। ४ पान। तादूल।

विशोघनीय—वि० [म०] १ शुद्ध करने योग्य। २ सुधार करने लायक। ३ रेचन के योग्य (को०)।

विशोवित—वि० [स०] १ शुद्ध किया हुआ। साफ किया हुआ। २ निर्मल (को०)।

विशोघिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदती। २. नीली। ३ जमालगोटा।

विशोघिन बीज—सञ्ज्ञा पु० [स०] जमालगोटा।

विशोघी—वि० [स० विशोघिन्] विलकुल शुद्ध करनेवाला। विशुद्ध करनेवाला।

विशोध्य^१—वि० [स०] १ शुद्ध या पवित्र करने योग्य। साफ करने योग्य। २. जो घटाया या कम किया जाय। घटाने लायक।

विशोध्य^२—सञ्ज्ञा पु० ऋण। कर्ज (को०)।

विशोभित—वि० [स०] सुपजित (को०)।

विशोष—सञ्ज्ञा पु० [स०] नीरसता। शुष्कता। रूखापन।

विशोषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह मोखना।

विशोषित—वि० [म०] १ सुखाया हुआ। शुष्क किया हुआ। २. भ्लान। मुर्झाया हुआ (को०)।

विशोषी—सञ्ज्ञा पु० [स० विशोषिन्] अच्छी तरह सोखनेवाला।

विश^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह जिसने जन्म लिया हो। प्रजा। २. कन्या। लडकी। २ प्रवेश। रमाई (को०)। ४ कुल वंश। खानदान (को०)। ५ निवास। टिकान (को०)। ६ मपत्ति। धन दौलत।

विश^२—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ तृतीय वर्ण। वैश्य। २ आदमी। मनुष्य। ३ जनता (को०)।

विशन—सञ्ज्ञा पु० [म०] दीप्ति। कांति (को०)।

विशपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० विशपत्नी] १ राजा। २ वैश्यो का प्रधान, मुखिया या पंच। उ०—अग्नि विशपति था। ये अपनी वस्ती को विश् कहते थे।—प्र० भा० प०, पृ० ६६।

विश्यापण—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का यज्ञ।

विश्रंभ—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्रम्भ] १ विश्वास। एतबार। २ प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगडा। रतिकालीन प्रेमकलह। ३ प्रेम। मुद्वन। ४ हत्या। मार डालना। ५ स्वच्छतापूर्वक धूमना फिरना। ६ गुप्त बात। रहस्य (को०)। ७ आराम। विश्राम (को०)। ८ बनेबूझा। आत्मीयता (को०)। ९ स्नेह से पूछना। प्रेम से पूछना (को०)।

विश्र'भ कथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विश्रम्भकथा] प्रेमी और प्रेमिका के बीच एकांत में होनेवाली प्रेमचर्चा। प्रेमपूर्ण बातचीत।

उ०—सुख रजनी की विश्र'भ कथा सुनती।—लहर, पृ० ६७।

विश्र'भण—सञ्ज्ञा पुं० [स० विश्रम्भण] विश्वास पाना [को०]।

विश्र'भभूमि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विश्रम्भभूमि] १ विश्वसनीय व्यक्ति।
२ विश्वास के योग्य विषय [को०]।

विश्र'भस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [स० विश्रम्भस्थान] दे० 'विश्र'भभूमि'।

विश्र'भी—वि० [स० विश्रम्भिन्] १ विश्वाधी। विश्वस्व। २. विश्वास-प्राप्त। ३. प्रेम सबधी। प्रेमविषयक। ४. गोप्य [को०]।

विश्र'णन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दान। दान करना। उपहार देना [को०]।

विश्र'व्य वि० [स०] १ जो उद्धत न हो। शांत। २. जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। ३. जिसे किसी प्रकार का भय न हो। निर्भय। निडर। ४. दृढ़। स्थिर (को०)। ५. नम्र। विनोत। विनत (को०)। ६. अत्यधिक। बहुत ज्यादा। ७. धार (को०)।

विश्र'व्यनवोढा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य में नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो। जैसे, जाहि न चाह कहूँ रति की सु कछूँ पति को पतियान लगी है। त्यो पदमाकर आनन में रुचि, कानन भौंह कमान लगी है। देति पिया न छुवें छतयाँ वतियान में तो मुस्कयान लगी है। प्रीतम पान खवाइवे को परजक के पास लौं जान लगी है।—गद्याकर। (शब्द०)।

विश्र'व्यप्रलापी—वि० [स० विश्र'व्यप्रलापिन्] गोपनीय बातें कहनेवाला [को०]।

विश्र'म—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'विश्राम'।

विश्र'मकर—वि० [स०] विश्राम करनेवाला। उ०—श्रम कर तू विश्रम-कर।—अर्चना, पृ० ६२।

विश्र'मण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ आराम। विश्राम। २. विराम। समाप्ति। विरति [को०]।

विश्र'मित—वि० [स०] १ जिसे विश्राम दिया गया हो। २. जिसने विश्राम किया हो [को०]।

विश्र'य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शरण। आश्रय। सहारा। २. अवलंबन [को०]।

विश्र'यी—वि० [स० विश्रयिन्] जो सहारे पर हो। आश्रय लेनेवाला [को०]।

विश्र'वण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्र'वा—सञ्ज्ञा पुं० [स० विश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे और उनकी पत्नी हविर्भू के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। कुवैर इन्हीं के पुत्र थे और इन्हीं की पत्नी इलविडा के गर्भ से जनमेथ। इन्हीं की दूसरी पत्नी कैरुसी के गर्भ से रावण, कुभकर्ण, विभीषण और सूर्यपुत्र का जन्म हुआ था।

विश्रात'—वि० [स० विश्रान्त] १. जिनने विश्राम कर लिया हो। जो थकावट उतार चुका हो। २. विरामित। रुका या रोका हुआ (को०)। ३. सौम्य। शांत। स्मर्य (को०)। ४. समाप्त (को०)।

हि० श० ६-२६

५. रहित। वंचित (को०)। ६. क्लान्त। अत्यंत थका हुआ (को०)। ७. घटा हुआ (दुःसादि)।

विश्रात'—सञ्ज्ञा पुं० [स० विश्रान्त] यमुना तट का एक घाट। विश्राम-घाट। उ०—श्री जमुना जी के तीर विश्रात पर जाइ बैठे।
—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १८१।

यौ०—विश्रातकय = जो चुप हो। मौन। मूक। रुद्धवाक्। विश्रात-कर्णयुगल = जो कानों तक पहुँचता हो। कानों तक पहुँचने-वाला। विश्रातपुष्पोद्गम = जिसमें फूल घाना बंद हो गया हो। विश्रातविलास = क्रीडा कौतुक का त्याग कर देनेवाला। विश्रात-चर = शत्रुता त्याग देनेवाला।

विश्राति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विश्रान्ति] १. विश्राम। आराम। २. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

विशेष—कहते हैं, जनार्दन ने यही आकर विश्राम किया था।

३. विराम। रोक (को०)। ४. दुःख शाकादि का न्यून होना। समाप्ति। अंत (को०)।

यौ० = विश्रातिकृत = आराम पहुँचानेवाला। विश्रातिभूमि = विश्राम देनेवाली वस्तु या स्थान।

विश्राणन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दान देना। दान [को०]।

विश्राणित—वि० [स०] १ प्रदत्त। दान स्वरूप दिया हुआ। २. बाँटा हुआ। विभक्त [को०]।

विश्राम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अधिक समय तक कोई काम या परिश्रम करने के कारण थक जाने पर रुकना या ठहरना। श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। उ०—किय विश्रामन मगु महिपाला।—तुलसी (शब्द०)। २. ठहरने का स्थान। विश्राम करने का स्थान। ३. शांति। आराम। चैन। मुख। स्वस्थता। उ०—कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सतोष विन। चल कि जल विनु नाव कोटि जतन पवि पाच मरिय।—तुलसी (शब्द०)। ४. विराम। रोक (को०)। ५. न्यूनता। कमी (को०)। ६. समाप्ति। अंत (को०)। ७. श्रम दूर करने के लिये गड़ी मांस लेना। न. मकान। गृह (को०)।

विश्रामण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विश्राम देना। आराम कराना [को०]।

यौ०—विश्रामकक्ष, विश्रामवेश्म = आराम करने का स्थान या कमरा। विश्रामस्थान = विश्राम या विराम करने की जगह।

विश्रामालय—सञ्ज्ञा पुं० [स० विश्राम + आलय] यात्रियों के आराम करने का भवन। उ०—जिसमें अनेक कूप, बागी, विश्रामालय, लताकुंज।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७०।

विश्राव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बहुत अधिक प्रसिद्धि। शोहरत। २. ध्वनि। ३. भरना, बहना या रसना। क्षरण।

विश्रावण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वर्णन करना। सुनाना। २. प्रगटित करना। बहाना। ३. खून बहाना [को०]।

विश्री'—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मृत्यु। मौत।

विश्री'—वि० [स०] १. जिसकी ओ नष्ट हो गई हो। शोभाहीन। उ०—लगती विश्री और विरुत आज मानवकृति। एकत्वशून्य है विश्वमानवी सङ्कृति।—पुगात, पृ० ११। २. भद्दा। कुट्टा।

विश्रुत^१—वि० [सं०] १ जो जाना या सुना हुआ हो। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। ३ प्रसन्न। आनन्दित। खुश (को०)। ४ वहता हुआ (को०)।

विश्रुत^२—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. प्रसिद्धि। ख्याति। २ विद्या। शिक्षा (को०)। ३. वसुदेव का एक पुत्र। ४ भवभूति का एक नाम (को०)।

विश्रुतात्मा—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्रुतात्मन्] विष्णु।

विश्रुति—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] १ प्रसिद्धि। शोहरत। २. भरना, वहना या रसना। ३ संगीत में एक श्रुति (को०)।

विश्लथ—वि० [सं०] १ विशेष श्लथ। ढीला। २ निर्बन्ध। वचन-मुक्त। ३ थका हुआ। मंद। स्फूर्तिहीन। उ०—चूर्ण नील कुतल छहरा दिक् सौरभ विश्लथ।—रजत०, पृ० ६७।

विश्लथित—वि० [सं०] विश्लथ किया हुआ (को०)।

विश्लिष्ट—वि० [सं०] १ जो अलग हो गया हो। जो मिला हुआ न हो। जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ विकसित। खिला हुआ। ३ जो प्रकट हो। प्रकाशित। ४ जा खुला हुआ हो। मुक्त। ५ थका हुआ। शिथिल। ६ अपने समूह से अलग-किया हुआ (को०)। ७ (अग्न या अवयव) जो स्थाभ्रष्ट हो (को०)।

विश्लिष्टसन्धि—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० विश्लिष्टसन्धि] १ बँधक के अनुसार हड्डी हटने का एक प्रकार। २ शरीर के अंगों की किसी साध का चोट आदि के कारण टूटना।

विश्लेष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ अलग होना। पृथक् होना। २ वियोग। (पति पत्नी या प्रेमी प्रेमिका का)। ३. विच्छेद। बिलगाव। ४ शिथिलता। थकावट। ५ किसी की ओर से मन हट जाना। ६ विकास। ७ अपाय। हानि। अभाव (को०)। ८ दरार। छिद्र (को०)। ९ (गणित में) योग का विपर्यय (को०)।

विश्लेषण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों का अलग अलग करना। २ आलोचना। विवेचन। व्याख्यान (को०)। ३ वायु के प्रकोप से फोड़े या घाव में होनेवाली एक प्रकार की वेदना।

विश्लेषित—वि० [सं०] १ अलग किया हुआ। २ तोड़ा हुआ। भग्न। ३. विदीर्ण या फाड़ा हुआ (को०)।

विश्लेषी—वि० [सं० विश्लेषिन्] १ वियुक्त। पृथक्। २ ढीला किया हुआ। ३ अलग अलग होनेवाला। बिखरनेवाला (को०)।

विश्लोक—वि० [सं०] जो ख्यात न हो। अप्रसिद्ध (को०)।

विश्वकर^१—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वङ्कर] आँख। चक्षु (को०)।

विश्वकर^२—वि० सृष्टिकर्ता (को०)।

विश्वतरु—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वन्तर] वह जो सबको पराभूत कर दे। भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वभर—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वम्भर] १ सारे विश्व का पालन या भरण करनेवाला, परमेश्वर। २ विष्णु। ३ एक उपनिषद् का नाम। ४ अग्नि (को०)। ५ एक प्रकार का विच्छू या उससे मिलता जुलता जानवर (को०)।

विश्वभरक—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वम्भरक] एक तरह का विच्छू या उस आकार का जीव। एक प्रकार का जीव उ०—प्रथम एक पुरुष खोदने पर श्वेत रंग का विश्वभरक दिखाई देता है।—वृहत्सं०, पृ० २५६।

विश्वभर—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० विश्वम्भरा] पृथ्वी।

यो०—विश्वभरा पुत्र—मंगल ग्रह। कुज।

विश्वभरी—सञ्ज्ञा [सं० विश्वम्भरी] पृथ्वी (को०)।

विश्वभरेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वम्भरेश्वर] १ पुराणानुसार हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। २ राजा। भूपति (को०)।

विश्व^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ चौदहो भुवनो का समूह। समस्त ब्रह्मांड। विशेष दे० 'ब्रह्मांड'। २ समार। जगत्। दुनिया। ३ सोठ। ४ चोल नामक गंधद्रव्य। ५ देवताओं का एक गण।

विशेष—इसमें दस देवता हैं—वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, वृत्ति, कुल, पुरुषा और माद्रवा। ये धर्म के पुत्र और दक्ष की कन्या विश्वा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं।

६ जीवात्मा। ७ विष्णु। ८ शिव। ९ शरीर। देह। १० नागरिक। शहराती। नागर (को०)। ११ तरह की सख्या का वाचक शब्द (को०)। १२ सस्कृत का एक अभिधान ग्रन्थ जिसका नाम विश्वप्रकाश है। १३ पतृगणा का एक वर्ग (को०)।

विश्व—वि० १ समस्त। सब। २ बहुत अधिक। ३ हर एक। प्रत्येक (को०)।

विशेष—इन अर्थों में इस शब्द का व्यवहार योगिक शब्द बनाने के लिये उनके आरम्भ में होता है।

विश्वक—वि० [सं०] १ संपूर्ण। समस्त। पूरा। २ सबमें व्याप्त। सर्वव्यापक (को०)।

विश्वकद्रु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ शिकारी कुत्ता। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. शब्द। आवाज।

विश्वकर्ता—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वकर्तृ] ससार को उत्पन्न करनेवाला, परमेश्वर।

विश्वकर्म—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह जो सब प्रकार के कार्य करने में चतुर हो।

विश्वकर्मजा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] सूर्य की पत्नी सञ्ज्ञा का एक नाम।

विश्वकर्मसुता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] सूर्य की पत्नी, सञ्ज्ञा।

विश्वकर्मा—सञ्ज्ञा पु० [सं० विश्वकर्मन्] १. समस्त ससार की रचना करनेवाला, ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ एक प्रसिद्ध आचार्य अथवा देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता और सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता माने जाते हैं।

विशेष—पुराणानुसार ये आठ वसुओं में से प्रभास नामक वसु के पुत्र थे और देवताओं के लिये विमान तथा प्रानाद आदि बनाया करते थे। आग्नेयास्त्र इन्हीं का बनाया हुआ माना जाता है। महाभारत में ये सर्वश्रेष्ठ शिल्पी और श्रमर कहे गए हैं रामायण के अनुसार इन्होंने राक्षसों के लिये लका बनाई थी। वेदों में ये सर्वदर्शी, सर्वनिर्यता और विश्वज्ञ कहे

गए हैं। वेदो में कही कही 'विश्वकर्मा' शब्द इंद्र, सूर्य, प्रजापति, विष्णु आदि के अर्थ में भी आया है। महाभारत के अनुसार इनकी माता का नाम लावण्यमयी था और सूर्य की पत्नी सज्ञा इन्हीं की कन्या थी। कहते हैं, जब सूर्य के प्रखर ताप को सज्ञा न सह सकी, तब इन्होंने उसका आठवाँ अंग काट लिया और उससे सुदर्शन चक्र, त्रिशूल आदि बनाकर देवताओं में बाँटे। सृष्टि की रचना करने के कारण ये प्रजापति और त्वष्टा भी कहे जाते हैं। भाद्रपद की सक्रांति को इनकी पूजा हुआ करती है।

५. शिव का एक नाम। ६ चक्र के अनुसार शरीर में की चेतना नामक घातु। ७ दंड। ८ मेमार। राज। ९ लोहार। १० सूर्य की सात किरणों में से एक किरण (को०)। ११ एक मुनि का नाम (को०)। १२ एक परमाणु। एक माप (को०)।

विश्वकर्मेश—पञ्चा पुं० [सं०] एक शिवलिंग का नाम।

विश्वकवि—सञ्चा पुं० [सं०] १ विश्वविश्रुत कवि। सर्वश्रेष्ठ कवि। महाकवि। ३—असाचल रवि, जल छल छल छवि, स्वप्न विश्वकवि, जीवन उन्मन।—अमरा, पृ० २४। २ वग भाषा के ख्यात कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक उपाधि।

विश्वका—सञ्चा स्त्री० [सं०] एक जलपद्मा। गगाचिल्ली (को०)।

विश्वकाय—सञ्चा पुं० [सं०] ब्रह्माड जिनका शरीर है, विष्णु।

विश्वकाया—सञ्चा स्त्री० [सं०] दुर्गा। ३—नुम्ही में है महामाया, जुड़ी छुटकर विश्वकाया।—प्रचर्ना, पृ० ८।

विश्वकारक—सञ्चा पुं० [सं०] शिव।

विश्वकारु—पञ्चा पुं० [सं०] दे० 'विश्वकर्मा'।

विश्वकार्य—सञ्चा पुं० [सं०] १ सूर्य की सात प्रधान किरणों में से एक का नाम। २ सूर्य की सात प्रधान ज्योतिषों का समूह।

विश्वकाव्य—सञ्चा पुं० [सं०] विश्व + काव्य। ब्रह्मा का बनाया हुआ विश्वरूपी काव्य। काव्य के समान रमणाय, विश्व। ससार। ३—इस विश्वकाव्य की रसवारा में जो थोड़ी देर के लिये निमग्न न हुआ, उसके जीवन को मरुस्थल की यात्रा ही समझना चाहिए।—रस०, पृ० ८।

विश्वकूट—सञ्चा पुं० [सं०] पुराणानुसार हिमालय का एक चोटी का नाम।

विश्वकृत—वि० [सं०] विश्वकर्मा द्वारा निर्मिति या रचित (को०)।

विश्वकृत्—सञ्चा पुं० [सं०] १. विश्वकर्मा का एक नाम। २ जगत् का निर्माता, ब्रह्मा (को०)।

विश्वकृष्टि—सञ्चा पुं० [सं०] १. वह जो सब लोगों को अपने सगे संबंधी के समान समझता हो। २. वह जो सबसे रहता हो या व्याप्त हो (को०)।

विश्वकेतु—सञ्चा पुं० [सं०] १. अनिरुद्ध का एक नाम। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विश्वकोश—सञ्चा पुं० [सं०] १ वह कोश या भांडार जिसमें ससार भर के सब पदार्थ आदि सगृहीत हो। २. वह ग्रंथ जिसमें

ससार भर के सब प्रकार के विषयों आदि का विस्तृत विवेचन या वर्णन हो। (अं० इन्साइक्लोपीडिया)।

विश्वकोष—सञ्चा पुं० [सं०] दे० 'विश्वकोश'।

विश्वक्सेन—सञ्चा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. पुराणानुसार तेरहवें मनु का नाम। ३. कालिकापुराण के अनुसार एक चतुर्भुज देवता जो शंख, चक्र गदा और पद्म धारण किए रहते हैं और जो विष्णु का निर्मात्य धारण करनेवाले माने जाते हैं। दे० 'विश्वक्सेन'।

विश्वक्सेना—सञ्चा स्त्री० [सं०] प्रियगु नामक वृक्ष। कंगनी।

विश्वक्षय—सञ्चा पुं० [सं०] विश्व या ब्रह्माड का नाश। प्रलय।

विश्वक्षिति—सञ्चा स्त्री० [सं०] दे० 'विश्वकृष्टि' (को०)।

विश्वगगा—सञ्चा स्त्री० [सं०] विश्वगङ्गा। बरार प्रदेश का एक छोटी नदी का नाम।

विश्वगघ—सञ्चा पुं० [सं०] विश्वगन्ध। १ सर्वत्र गव देनेवाला। बोल नामक गधद्रव्य। २ जिसके समीप अंग गवमय है, प्याज।

विश्वगघा—सञ्चा स्त्री० [सं०] विश्वगन्धा। पृथ्वी।

विश्वगधि—सञ्चा पुं० [सं०] विश्वगन्धि। भागवत के अनुसार पृथु के पुत्र का नाम।

विश्वग—सञ्चा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ भागवत के अनुसार मरीचि के पुत्र का नाम जिसका जन्म पूर्णिमा के गर्भ से हुआ था।

विश्वगत—वि० [सं०] सर्वव्यापक। सर्वगत।

विश्वगर्भ—सञ्चा पुं० [सं०] १ वह जो सबको धारण करता हो, विष्णु। २ शिव। ३. पुराणानुसार रैवत के एक पुत्र का नाम।

विश्वगाथ—सञ्चा पुं० [सं०] विश्व जिसकी गाथा है, ईश्वर। परमात्मा। ३—जीवन के विपुल व्याल, मुक्त करो, विश्वगाथ।—अर्चना, पृ० ६।

विश्वगुरु—सञ्चा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वगोचर—वि० [सं०] सर्वविदित। जो सबके समझने योग्य हो (को०)।

विश्वगोप्ता—सञ्चा पुं० [सं०] विश्वगोपतृ। १ विष्णु। २ इंद्र। ३. वह जो समस्त विश्व का पालन करता हो।

विश्वग्रथि—सञ्चा स्त्री० [सं०] विश्वग्रन्थि। हसपदी लता। २ लाल लजाछू।

विश्वग्वात—सञ्चा पुं० [स्त्री०] दे० 'विश्वग्वायु'।

विश्वग्वायु—सञ्चा पुं० [स्त्री०] वह वायु जो सब जगह समान रूप से चलती है।

विशेष—ऐसी वायु अनेक प्रकार के दोष और उत्पाव उत्पन्न करनेवाली मानी जाती है।

विश्वचद्र—वि० [सं०] विश्वचन्द्र। पूर्णतः दीप्त या प्रभामय (को०)।

विश्वचक्र—सञ्चा पुं० [सं०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानों में से एक प्रकार का महादान।

विशेष—इसमें एक हजार पल का साने का एक चक्र या पहिया बनवाया जाता है जिसमें सालह आरे हान हैं, और तब यह चक्र कुछ विशिष्ट विधानों के अनुसार दान किया जाता है।

विश्वचक्रात्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्रात्मन्] वह जिसका स्वरूप या अत्मा विश्वचक्र अर्थात् ब्रह्मांड है। विष्णु।

विश्वचक्षु—वि० [सं०] सब कुछ देनेवाला [को०]।

विश्वचक्षुः—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्वचक्षुः' [को०]।

विश्वचक्षो—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्षुः] सब देखनेवाला, नेत्र [को०]।

विश्वचक्षु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्षुः] १. ईश्वर। २. लोकचक्षुः। सूर्य। ३. सबको देखनेवाला, नन्। आँख [को०]।

विश्वचर—वि० [मं०] विश्वव्याप्त। उ०—आनन्द का विश्वचर रूप 'यज्ञ' है। अन्वाद का अन्तग्रहण करना ही यज्ञ कहा जाता है इसलिये अन्न नाम से भी इस रूप का व्यवहार करते हैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

विश्वचर्षणि—वि० [मं०] सर्वव्यापक। सर्वत्र व्याप्त [को०]।

विश्वच्यवा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्य को सप्त रश्मियों में से एक का नाम [को०]।

विश्वछवि—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं० विश्व + छवि] ससार की शोभा। उ०—
राक्षस नभ नाल पर, सतत शत रूप धर, विश्वछवि में उतर।
—अपरा, पृ० १२।

विश्वजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मानव। मनुष्य [को०]।

विश्वजनीन—वि० [सं०] विश्व भर के लिये हितकर। सबके लिये सुखदायक। उ०—इतना आकस्मिक उत्थान और पतन। जहाँ एक विश्वजनीन धर्म की उत्पत्ति को सूचना हुई।—इन्द्र०, पृ० ३६।

विश्वजनीय—वि० [सं०] विश्वजन का। सर्वहितकारी। सबके उपयोग में आनेवाला [को०]।

विश्वजन्य—वि० [सं०] दे० 'विश्वजनीन'।

विश्वजयी—वि० [सं० विश्वजयिन्] ससार को जीतनेवाला। उ०—
जीत न सका एक अवला का मन तू विश्वजयी कंसा?—साकेत,
पृ० ३८८।

विश्वजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सोठ।

विश्वजित्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का यज्ञ। उ०—किसने मख विश्वजित् किया? रख मृत्पात्र सभी लुटा दिया?—साकेत, पृ० ३२६। २. वरुण का पाश। ३. महाभारत के अनुसार एक प्रकार की अग्नि। ४. विष्णु का एक नाम [को०]। ५. एक दानव का नाम। ६. सत्यजित् के पुत्र का नाम। ७. वह जिसने सारे विश्व पर विजय प्राप्त की हो।

विश्वजीव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वज्योति—वि० [सं०] पूर्णतः दीप्त वा द्योतित [को०]।

विश्वज्योतिः—सञ्ज्ञा पुं० १. एक साम। २. एक एकाह यज्ञ। सूर्य।

विश्वज्योतिष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

विश्वत—अव्य० [सं० विश्वन्] चारों ओर। सभी ओर। सर्वत्र। सब जगह [को०]।

विश्वतनु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समग्र विश्व जिनका शरीर माना गया है—विष्णु।

विश्वतुलसी—भस्मा स्त्री० [सं०] यवुः तुलसी। पनतुलमी।

विश्वतृप्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. वह जो प्रत्येक म तृप्त और प्रसन्न हो [को०]।

विश्वतोमुख—वि० [सं०] जिसे चारों ओर मुँह हो [को०]।

विश्वतोया—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] गंगा नदी।

विश्वत्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तीन लोक—प्राकाश, पाताल और मर्त्यलोक। त्रिलोक [को०]।

विश्वथा—अव्य० [सं०] १. सत्र। सत्र जगह। २. मद्य। सर्वदा [को०]।

विश्वदष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] एक अनुर का नाम [को०]।

विश्वदानि—वि० [सं०] सत्रका दाता। सबका देनेवाला [को०]।

विश्वदाव—वि० [सं०] जगत् का जलानमात्रा [को०]।

विश्वदासा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि का माता जिह्वाभा का एक नाम।

विश्वदेव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जिनकी पूजा नादामुख आदि में मानी है। विश्वदेव।

विश्वदेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागवला। गंगेरन। २. लाल दडापल। ३. कसा। गवेधुक [को०]।

विश्वदैव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उत्तरापट्टा नक्षत्र, जिनके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वदैवत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] २० 'विश्वदैव'।

विश्वधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वधरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सबका भरण पोषण [को०]।

विश्वधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] २० 'विश्वधरण'।

विश्वधाता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वधातृ] विश्व का धारण करनेवाला। ईश्वर [को०]।

विश्वधाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वधामन्] १. ईश्वर। २. स्वदेश। अपना देश।

विश्वधार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शाकद्वीप के राजा मेघातिथि के एक पुत्र का नाम।

विश्वधारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

विश्वधारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्वधारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वधारिन्] देवता। सुर [को०]।

विश्वधेना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरित्री।

विश्वधेनु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्वनन्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वनन्द] ब्रह्मा के एक मानसपुत्र [को०]।

विश्वनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. काशी का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

यौ०—विश्वनाथधाम, विश्वनाथनगरी, विश्वनाथपुरी = काशी। वाराणसी।

३. संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो 'साहित्यदर्पण' नामक रीतिप्रबन्ध के प्रणेता हैं।

विशेष

विशेष—ये उत्कल के भट्ट ब्राह्मण थे। आलंकारिक चक्रवर्ती और कविराज इनकी उपाधि थी। इनके पिता का नाम चन्द्रशेखर था। कविराज विश्वनाथ विद्वान् होने के साथ राज्य के उच्च पदाधिकारी थे और साधिविशहिक महापात्र थे। इनका समय विक्रम की चौदहवीं शताब्दी है।

विश्वनाभ—सन्ना पुं [सं] विष्णु।

विश्वनाभि—सन्ना स्त्री [सं] विष्णु का चक्र।

विश्वपति—सन्ना पुं [सं] १. ईश्वर। २. एक अग्नि (को०)। ३. श्रीकृष्ण।

विश्वपर्णी—सन्ना स्त्री [सं] भुईं आँवला।

विश्वपा—सन्ना पुं [सं] १. सबकी रक्षा करनेवाला, ईश्वर। २. सूर्य (को०)। ३. चद्रमा (को०)। ४. अग्नि (को०)।

विश्वपावक—विं [सं] जो सबको पकाता हो। (अग्नि) सबको पकानेवाला (को०)।

विश्वपाणि—सन्ना पुं [सं] एक बोधिसत्व का नाम।

विश्वपाता—सन्ना पुं [सं] विश्वपातृ एक पितृवर्ग [को०]।

विश्वपाल—सन्ना पुं [सं] ईश्वर।

विश्वपावन—विं [सं] सबको पवित्र करनेवाला।

विश्वपावनी—सन्ना स्त्री [सं] तुलसी।

विश्वपूजित—विं [सं] जो सबके द्वारा पूजित हो। विश्व द्वारा पूज्य। सर्वसमान्य।

विश्वपूजिता—सन्ना स्त्री [सं] तुलसी।

विश्वप्रकाशक—सन्ना पुं [सं] वह जो समग्र विश्व को प्रकाशित करता हो। सूर्य।

विश्वप्रबोध—सन्ना पुं [सं] विष्णु।

विश्वप्स—सन्ना पुं [सं] विश्वप्सन् १. अग्नि। २. चद्रमा। ३. सूर्य। ४. देवता। ५. विश्वकर्मा।

विश्वप्सा—सन्ना स्त्री [सं] अग्नि।

विश्ववधु—सन्ना पुं [सं] विश्ववन्धु १. विश्व का बधु। ससार का मित्र। २. शिव। महादेव।

विश्ववधुता—सन्ना स्त्री [सं] विश्ववन्धुता दे० 'विश्ववन्धुत्व'।

विश्ववधुत्व—सन्ना पुं [सं] विश्ववन्धुत्व १. शिवत्व। शिवता। २. सारे विश्व के मानवों में बधु का भाव। सब को भाई समझने का भाव।

विश्वबाहु—सन्ना पुं [सं] १. विष्णु। २. महादेव।

विश्वबीज—सन्ना पुं [सं] विश्व की मूल प्रकृति या माया।

विश्वबोध—सन्ना पुं [सं] भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वभद्र^१—सन्ना पुं [सं] दे० 'सर्वतोभद्र'।

विश्वभद्र^२—विं पूर्णतया अनुकूल [को०]।

विश्वभरणा—सन्ना स्त्री [सं] सारे ससार का पालन करनेवाली जगद्विका। उमा। दुर्गा। उ०—भज भिखारी, विश्वभरणा सदा अशरण शरण शरणा।—मर्चता, पृ० ३।

विश्वभरन^३—सन्ना पुं [सं] विश्व + भरण १. समार का पालन। उ०—विश्वभरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।—मानस० १। २. विश्वपालक। भगवान्। उ०—भजे न विश्वभरन बनवारी। अइया मनुपहुं वृ भ तुम्हारी।—सूदर० प्र०, भा० १, पृ० ३२८।

विश्वभर्ता—सन्ना पुं [सं] विश्वभर्त्ता ईश्वर।

विश्वभव—सन्ना पुं [सं] ब्रह्म जिससे सारे विश्व की सृष्टि हुई है।

विश्वभाव—सन्ना पुं [सं] १. ईश्वर। २. विष्णु का नाम (को०)।

विश्वभावन—सन्ना पुं [सं] दे० 'विश्वभाव'।

विश्वभुक्^१—सन्ना पुं [सं] विश्वभुज् दे० 'विश्वभुज्'।

विश्वभुज्^२—सन्ना पुं [सं] १. ईश्वर। २. इन्द्र। ३. अग्नि। ४. इन्द्र का पुत्र। ५. पितरों का एक गण (को०)।

विश्वभुज्^३—विं सर्वभोक्ता। सब कुछ खानेवाला। सबका भोग करनेवाला [को०]।

विश्वभुजा—सन्ना स्त्री [सं] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

विश्वभू—सन्ना पुं [सं] एक बुद्ध [को०]।

विश्वभेषज—सन्ना पुं [सं] सोठ।

विश्वभोग—सन्ना पुं [सं] वह भोग जो सारे ससार के लिये हो। सबका सुख उ०—तुम वन्य। तुम्हारा निस्व त्याग। है विश्वभोग का वर साधन।—युगात, पृ० ५४।

विश्वभोजा—सन्ना पुं [सं] विश्वभोजन १. वह जो सब कुछ भोग कर सकता हो। २. वह जो सबकी रक्षा करता हो [को०]।

विश्वमन्त्र—सन्ना पुं [सं] विश्व + मन्त्र विश्वरूपी मन्त्र। समार। दुनिया। जगत्। उ०—तुम विश्वमन्त्र पर हुए उदित, बन जगजीवन के सूत्रधार।—युगात, पृ० ५६।

विश्वमवा—सन्ना स्त्री [सं] अग्नि को सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

विश्वमय—सन्ना पुं [सं] ईश्वर। वह जिसका रूप समस्त विश्व में है। उ०—विश्वमय का जा विशद निवस, व्याप्त उपमे मेरे विर प्राण।—मधुज्वाल, पृ० ६७।

विश्वमहेश्वर—सन्ना पुं [सं] महादेव।

विश्वमाता—सन्ना स्त्री [सं] विश्वमातृ समस्त विश्व को माता, दुर्गा।

विश्वमुखी—सन्ना स्त्री [सं] पार्वती का एक नाम।

विश्वमूर्ति^१—सन्ना पुं [सं] १. विष्णु का एक नाम। २. ईश्वर (को०)। ३. शिव (को०)।

विश्वमूर्ति^२—विं सब रूपों में रहनेवाला। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वमोहन—सन्ना पुं [सं] विष्णु।

विश्वयु—सन्ना पुं [सं] वायु [को०]।

विश्वयुद्ध—सन्ना पुं [सं] विश्व + युद्ध जिसमें दुनिया के अधिकांश राष्ट्र दो गुटों में विभक्त होकर आपस में लड़े (अ० वर्ल्डवार)।

विश्वयोनि—सन्ना पुं [सं] १. ब्रह्मा। २. विष्णु (को०)।

विश्वरथ—सन्ना पुं [सं] पुराणानुसार राजा गांधि के पुत्र का नाम जो विश्वामित्र नाम से प्रसिद्ध है। विशेष दे० 'विश्वामित्र'।

विश्वरद—सच्चा पु० [स०] मग या भोजन ब्राह्मणों का एक धार्मिक ग्रंथ जिसे वे अना वेद मानते थे और जो भारतीय आर्यों के वेद का विरोध था।

विश्वराज, विश्वराट्—सच्चा पु० [म०] सारे ससार का राजा [को०]।

विश्वरुचि—सच्चा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्रकार की देवयोनि। २ एक दानव का नाम।

विश्वरुचि^२—सच्चा स्त्री० अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

विश्वरुची—सच्चा स्त्री० [स०] दे० 'विश्वरुचि' [को०]।

विश्वरूप—सच्चा पु० [स०] १ विष्णु। २ शिव। ३ पुराणानुसार त्वष्टा के एक पुत्र का नाम। ४ भगवान् श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया था।

विशेष—श्रीकृष्ण ने उस अवसर पर अर्जुन को यह दिखाया या समझाया था कि इस समस्त विश्व या ब्रह्मांड में सूर्य, चंद्रमा, तारे, ग्रह आदि जो कुछ हैं, वे सब मेरे ही स्वरूप हैं।

५ पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ६ काला अगर (को०)। ७ एक प्रकार का पुच्छन तारा। ८ देवता। उ०—भूपन को रूप धरि विश्वरूप आए है।—केशव (शब्द०)।

विश्वरूप^२—वि० सर्वत्र विद्यमान। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वरूपक—सच्चा पु० [स०] १ काला अगर। २ खिरनी।

विश्वरूपिणी—सच्चा स्त्री० [स०] आद्या शक्ति। महाशक्ति। उ०—विश्वरूपिणी तुम हो, तुम्हें मूर्ति में रचकर। पूजा की बसंत के दिन दीनता विकच कर।—अपरा पृ० १६७।

विश्वरूपी^१—सच्चा पु० [स० विश्वरूपिन्] [स्त्री० विश्वरूपिणी] विष्णु। जनार्दन।

विश्वरूपी^२—सच्चा स्त्री० अग्नि की एक जिह्वा।

विश्वरेता—सच्चा पु० [स० विश्वरेतस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु [को०]।

विश्वरोचन—सच्चा पु० [स०] १ नाडी या नारीच नामक साग। २ कचूर या पेचुक नामक साग।

विश्वलोचन—सच्चा पु० [स०] १ सूर्य। २ चंद्रमा।

विश्वलोप—सच्चा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

विश्ववयन—सच्चा पु० [स०] ससार की रचना। विश्वसृष्टि। उ०—उद्भूत शक्ति दीन हुई दिखा नवल विश्ववयन।—अर्चना, पृ० १०।

विश्ववर्ण—सच्चा स्त्री० [स०] भुईआंवला।

विश्ववसु—सच्चा पु० [स०] राजा पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

विश्ववाक्—सच्चा पु० [स० विश्ववाच्] असाधारण पुरुष [को०]।

विश्ववाद—सच्चा पु० [स० विश्व + वाद] वह मत या वाद जिसके अनुसार सारे ससार के मानवों को परस्पर भाई भाई माना जाता है। विश्ववधुक्।—उ०—यह विश्ववाद साम्राज्यवादियों के प्रभुत्व का साधन है।—आचार्य०, पृ० २२।

विश्ववार—सच्चा पु० [पु०] यज्ञ में सोम का एक संस्कार।

विश्ववारा—सच्चा स्त्री० [म०] अग्नि गोत्र की एक स्त्री जो ऋग्वेद के पाँचवें मंडल की कुछ ऋचाओं की ऋषि मानी जाती है।

विश्ववास—सच्चा पु० [स०] ससार। जगत्। दुनिया।

विश्ववाह—वि० [म०] [वि० स्त्री० विश्वोही] सबको धारण करनेवाला। सबका भरण पोषण करनेवाला [को०]।

विश्ववाहु—सच्चा पु० [स०] विष्णु [को०]।

विश्वविख्यात—वि० [स०] ससारप्रसिद्ध। विश्वविश्रुत। जगद्विख्यात।

विश्वविजयी—वि० [स० विश्वविजयिनी] जिमने समग्र ममार को जीत लिया हो। सारे दुनिया को जीत लेनेवाला।

विश्वविद्—सच्चा पु० [स०] १ वह जो विश्व का सब बातें जानता हो। बहुत बड़ा पंडित। २ ईश्वर।

विश्वविद्यालय—सच्चा पु० [स०] वह संस्था जिममें सभी प्रकार के विद्याओं की उच्च कोटि का शिक्षा दी जाती हो, परीक्षाएँ ली जाती हो और जो लोगों को विद्या सबकी उपाधियाँ आदि प्रदान करती हो। (अ० यूनिवर्सिटी)।

विश्वविधायी—सच्चा पु० [स० विश्ववेधायिन्] १. देवता। विबुध। २ ब्रह्मा [को०]।

विश्वविभावन—सच्चा पु० [स०] विश्व का विभावन या निर्माण। ससार की रचना [को०]।

विश्वविश्रुत—वि० [स०] जो ससार भर में प्रसिद्ध हो। जगद्विख्यात।

विश्वविस्व—सच्चा पु० [स०] विष्णु [को०]।

विश्वविस्ता—सच्चा स्त्री० [स०] वैशाख मास की पूर्णिमा [को०]।

विश्ववृक्ष—सच्चा पु० [स०] विष्णु।

विश्ववेदा—वि० [स० विश्ववेदस्] १ सर्वज्ञ। सब कुछ जाननेवाला। २ सत। महात्मा। तपस्वी [को०]।

विश्वव्यचा—सच्चा स्त्री० [स० विश्वव्यवस्]

विश्वव्यापक—वि० [स०] दे० 'विश्वव्यापी'।

विश्वव्यापी^१—सच्चा पु० [स० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।

विश्वव्यापी^२—वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।

विश्वश्रवा—सच्चा पु० [स० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।

विश्वश्री—वि० [स०] जो सबके लिये लाभकर हो (प्रति)। जो सबको समान रूप से उपयोगी हो [को०]।

विश्वसप्लव—सच्चा पु० [स० विश्वसप्लव] विश्व का विनाश। प्रलय [को०]।

विश्वसंभव—सच्चा पु० [स० विश्वसंभव] जिसमें समग्र ससार उत्पन्न हुआ है, ईश्वर।

विश्वसंवत्तन—सच्चा पु० [स०] समग्र विश्व का मोहन करना या हरण करना [को०]।

विश्वसंहार—सच्चा पु० [स०] महाप्रलय। विश्व का विनाश [को०]।

विश्वसख—सच्चा पु० [स०] सबका मित्र। सबका सखा।

विश्वसत्तम—सच्चा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। वासदेव। श्रीकृष्ण [को०]।

विश्वसन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जहाँ ऋषि मुनि विश्राम करते हो। २ विश्वास। एतवार।

विश्वसनीय—वि० [स०] विश्वास करने के योग्य। विश्वास उत्पन्न करने योग्य। जिसका एतवार किया जा सके। जैसे,—
(क) हमें यह सपाचार विश्वसनीय सूत्र से मिला है। (ख) आपकी सब बातें बहुत विश्वसनीय हैं।

विश्वसहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम। २ पृथ्वी (को०)।

विश्वसाक्षी—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वसाक्षिन्] वह जो सब कुछ देखता है। ईश्वर।

विश्वसाम—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वसामन्] एक वैदिक ऋषि का नाम जो आत्रेय गोत्र के थे और जो अनेक वैदिक मन्त्रों के द्रष्टा थे।

विश्वसार—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक तंत्र का नाम (को०)।

विश्वसारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] कंकारी वृक्ष। विदर वृक्ष।

विश्वसित—वि० [स०] विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय। जिसपर विश्वास किया गया हो। विश्वस्त।—उ० उनकी समिति सर्व-साधारण को विश्वसित प्रमाण रूप होती है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४४०। २ निर्भय। निडर (को०)।

विश्वसृक्—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वसृज्] १ सृष्टा। ब्रह्मा। २ मयासुर। मय नामक असुर (को०)।

विश्वसृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ससार की रचना या निर्माण।

विश्वस्त—वि० [स०] १ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। २. विश्वास करनेवाला। भरोसा करनेवाला (को०)। ३. निडर। विश्रुद्ध (को०)। ४ जिसपर विश्वास किया गया हो। निष्ठ (को०)।

विश्वस्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विधवा।

विश्वस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शतावर।

विश्वस्रष्टा—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वस्रष्ट] ब्रह्मा जो स्रष्टे का निर्माण करते हैं।

विश्वहर्त्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विश्वहर्तृ] शिव।

विश्वहृदय—सञ्ज्ञा पु० [स०] अखिल विश्व से प्रेम करनेवाला हृदय। चराचर जगत् में अनुरक्त हृदय। सर्वभूतमय हृदय। उ०—भावयोग भी सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती है, उसका हृदय विश्वहृदय हो जाता है।—रस०, पृ० २५।

विश्वहेतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] विश्व को उत्पन्न करनेवाले, विष्णु।

विश्ववाड—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्ववाण्ड] ब्रह्माण्ड (को०)।

विश्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दक्ष की एक कन्या जो धर्म को व्याही थी और जिसमें सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २ एक मान जो २० पल का होता है। ३ अतिविषा। प्रतीस। ४ अजावर। ५ पीपल। ६ सोठ। उ०—विश्वा, नागर, जगभिषक, महा औपधी नाउँ।—नद० ग्र०, पृ०

१०४। ७. शखिनी। चोरपुष्पी। ८ पृथ्वी। भूमि (को०)। ९ अग्नि की सात जिह्वा या अर्चियों में से एक जिह्वा (को०)। १०. एक नदी (को०)।

विश्वाक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] ईश्वर।

विश्वाची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. एक वैदिक अघरा का नाम। २. एक प्रकार का रोग जिसमें वायु के कारण कब्जे से उँगलियों तक सारा हाथ न तो फँसाया जा सकता है और न सिकोड़ा जा सकता है।

विश्वातिथि—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो सबका अतिथि हो। सन्यासी (को०)।

विश्वातीत—सञ्ज्ञा पु० [स०] जो सबसे परे हो, ईश्वर।

विश्वात्मवाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] सपूर्ण ससार को अपनी आत्मा समझने का सिद्धांत। उ०—अहंकारमूलक आत्मवाद का खंडन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया।—शैली, पृ० १८६।

विश्वात्मा—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वात्मन्] १ विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्मा। ४ ईश्वर। परमात्मा (को०)। ५ सूर्य (को०)।

विश्वाद्—सञ्ज्ञा पु० [स०] अग्नि जो सब कुछ भक्षण करता है।

विश्वादि—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का कषाय।

विशेष—यह कषाय जो सोठ, वाला, क्षत्रपर्पटी, मोला, लालचदन आदि से बनाया जाता है और जो ज्वर की प्यास, कै तथा दाह आदि को कम करनेवाला माना जाता है।

विश्वाधायी—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वाधायम्] देवता (को०)।

विश्वाधार—सञ्ज्ञा पु० [स०] समग्र ससार का आधार। परमेश्वर। उ०—मन का सपाहार करो विश्वाधार।—आराधना, पृ० ४६।

विश्वाधिप—सञ्ज्ञा पु० [स०] परमेश्वर

विश्वानर—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वैश्वानर'।

विश्वानुरक्त—वि० [स०] समस्त विश्व से अनुराग रखनेवाला। विश्वहितपो। उ०—विश्वानुरक्त है अनासक्त।—युगात, पृ० ५५।

विश्वाप्सु—वि० [स०] अनेक रूप धारण करनेवाला (को०)।

विश्वाभू—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इन्द्र। २ ईश्वर, जो सबव्यापक है (को०)।

विश्वामित्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाँविज, गांधेय और कौशिक भा बहे जाते हैं।

विशेष—विश्वामित्र कान्यकुब्ज के पुण्डरी महा राज गाँध के पुत्र थे, परंतु क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियों में पारंगत हुए। ऋग्वेद के अनेक मन्त्र ऐसे हैं जिनके द्रष्टा विश्वामित्र अथवा उनके वंशज माने जाते हैं। इनका विश्वामित्र नाम ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर पड़ा था, नहीं तो इनका पहला क्षत्रिय दशा का नाम 'विश्वरथ' था। ऋग्वेद में अनेक मन्त्र ऐसे मिलते हैं जिनमें सिद्ध होता है कि ये यज्ञों में पुरोहित का कार्य करते थे, और वृत्ति के संबंध में

तबसे तथा वशिष्ठ ने बहुत समय तक बराबर भगडे बखेडे होने रहते थे। पुराणों में लिखा है कि राजा गाधि को सत्यवती नाम की एक सुदरी कन्या उत्पन्न हुई थी। वह कन्या उन्होंने ऋचीक ऋषि को दे दी थी। ऋचाक ने एक बार दो अलग अलग चर तैयार करके अपनी छोटी सत्यवती को दिए थे और कहा था कि इसमें से यह एक चर तो तुम खा लेना जिसमें तुम्हें ब्राह्मणों के गुण में संपन्न एक पुत्र होगा, और एक दूसरा चर अपनी माता को दे देना जिससे उन्हें क्षत्रियों के गुणवाला एक बहुत तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। इसी बीच में राजा गाधि अपनी छोटी सत्यवती ने वे दोनों चर अपनी माता के सामने रख दिए और उनका गुण वतला दिया। माता ने समझा कि ऋचीक ने अपनी छोटी के लिये बढ़िया चर तैयार किया होगा, इसलिये उसने उसका चर तो आप खा लिया और अपना उसे खिला दिया। इससे उसके गर्भ से तो विश्वामित्र का जन्म हुआ, जिसमें क्षत्रिय होने पर भी ब्राह्मणों के से गुण थे, और सत्यवती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ जो ब्राह्मण होने पर भी क्षत्रियों के गुणों से संपन्न थे। विश्वामित्र को शुन शेष, देवगत, देवश्रवा, हिरण्याक्ष, गालव, जय, अष्टक, वच्छप, नारायण, नर आदि सौ पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनके कारण इनके कौशिक वंश की बहुत अधिक वृद्धि हुई थी। कहते हैं, एक बार जब विश्वामित्र ने बहुत बड़ा तप किया था, तब इंद्र तथा सभस्त देवताओं ने भयभीत होकर मेनका नामक अप्सरा को उनका तप भग करने के लिये भेजा था। इसी मेनका से विश्वामित्र को शकुंतला नामक कन्या उत्पन्न हुई थी जो दुष्यंत को व्याही गई थी। यह भी प्रसिद्ध है कि इक्ष्वाकु वंश के राजा त्रिशकु ने एक बार सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से एक यज्ञ करना चाहा था। परंतु उनके पुरोहित वशिष्ठ ने कहा कि ऐसा होना असंभव है। इसपर त्रिशकु ने विश्वामित्र की शरण ली और विश्वामित्र ने उन्हें सशरीर स्वर्ग पहुंचा दिया। यह भी कहा जाता है कि विश्वामित्र बहुत बड़े क्रोधी थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे। राजा हर्षिचंद्र के सत्य की सुप्रसिद्ध परीक्षा लेनेवाले भी यहीं माने जाते हैं। पुराणों में इनके मवध में इसी प्रकार की और भी अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

विश्वामित्रप्रिय—संज्ञा पुं० [मं०] १. नारियल का पेड़। २. भगवान् रामचंद्र। ३. कार्तिकेय [को०]।

विश्वामित्रसृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] तालवृक्ष, भैरव, गवा आदि जिनकी रचना विश्वामित्र ऋषि ने की थी।

विश्वामित्रा—संज्ञा स्त्री० [मं०] महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

विश्वामृत—वि० [मं०] अमर। मृत्युञ्जय [को०]।

विश्वायन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २. ब्रह्मा।

विश्वराज, विश्वाराट्—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र विश्व का शासन करनेवाला। ईश्वर।

विश्वावसु^१—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक गवर्ग का नाम। २. विष्णु। ३. एक संवत्सर का नाम।

विश्वावसु^२—संज्ञा स्त्री० रात।

विश्वावास—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्वाधार' [को०]।

विश्वाश्रय—संज्ञा पुं० [मं० विश्व + आश्रय] वह जो सबका आश्रय स्वरूप है। ईश्वर।

विश्वाश्रय—वि० विश्व में परिव्याप्त। विश्व की आश्रयभूत। उ०—जागो विश्वाश्रय महिमा घर, फिर देखा।—अपरा, पृ० २०६।

विश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धारणा जो मन में किसी व्यक्ति के प्रति उसका सद्भाव, हितैषिता, सत्यता, दृढता आदि श्रवण किंवा सिद्धांत आदि की सत्यता श्रवण उत्तमता का ज्ञान होने के कारण होता है। किसी के गुणों आदि का निश्चय होने पर उसके प्रति उत्पन्न होनेवाला मन का भाव। एतवार। यकीन। जैसे,—(क) मैं तो सदा ईश्वर पर विश्वास रखता हूँ। (ख) उन्हें आपका पूरा पूरा विश्वास है। (ग) आप विश्वास रखें, ऐसा कभी न होगा।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

मुहा०—विश्वास जमाना=किसी के मन में विश्वास उत्पन्न करना या दृढ़ करना। विश्वास दिलाना=किसी के मन में विश्वास उत्पन्न करना।

२. मन की वह धारणा जो विषय या सिद्धांत आदि की सत्यता का पूरा पूरा प्रमाण न मिलने पर भी उसकी सत्यता के सत्य में होती है। जैसे—(क) बहुत से अशिक्षित भूत प्रेत पर विश्वास रखते हैं। (ख) और धर्मों की अपेक्षा बौद्ध धर्म पर उनका कुछ अधिक विश्वास है। ३. केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ़ निश्चय। जैसे,—मेरा तो यही विश्वास है कि वह अवश्य आवेगा। ४. गुप्त भेद या समाचार।

विश्वासकारक—वि० [सं०] १. विश्वास करनेवाला। यकीन करनेवाला। २. मन में विश्वास उत्पन्न करनेवाला। जिससे विश्वास उत्पन्न हो।

विश्वासकार्य—संज्ञा पुं० [सं०] गोपनीय कार्य [को०]।

विश्वासकृत्—वि० [सं०] दे० 'विश्वासकारक' [को०]।

विश्वासघात—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया। अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना जो उसके विश्वास के निष्कुल विपरीत हो।

विश्वासघातक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी के मन में अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करके भी उसका अपकार करे। विश्वास करने पर भी धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

विश्वासघाती—संज्ञा पुं० [सं० विश्वासघातिन्] [स्त्री० विश्वासघातिनी] दे० 'विश्वासघातक' [को०]।

विश्वासन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वास। एतवार। यकीन।

विश्वासपरम—वि० [सं०] विश्वास से पूर्ण [को०]।

विश्वासपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] जिसपर भरोसा किया जाय। विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय।

विश्वासप्रद—वि० [स०] विश्वास देनेवाला । भरोसा पैदा करनेवाला ।
विश्वासभग—सच्चा पु० [स० विश्वासभद्र] विश्वासघात । विश्वास
न रचना ।

विश्वासभाजन—सच्चा पु० [स०] विश्वस्त । विश्वासपात्र । विश्वसनीय
व्यक्ति [को०] ।

विश्वासभूमि—सच्चा पु० [स०] वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया
जाय । विश्वास का स्थान या भूमि [को०] ।

विश्वासस्थान—सच्चा पु० [स०] वह जिसका विश्वास किया जाय ।
विश्वासभाजन ।

विश्वासस्थित—वि० [स०] विश्वासी । विश्वासपूर्ण । दृढ़ विश्वास-
वाला । उ०—बोले आवेगरहित स्वर से विश्वासस्थित ।—
अपरा, पृ० ४६ ।

विश्वासिक—सच्चा पु० [स०] वह जिसका विश्वास किया जाय ।
विश्वसनीय ।

विश्वासित—वि० [स०] जिसे विश्वास दिलाया गया हो [को०] ।

विश्वासी—सच्चा पु० [स० विश्वासिन्] १ वह जो किसी पर विश्वास
करता हो । विश्वास करनेवाला । २ वह जिसका विश्वास
किया जाय ।

विश्वास्य—वि० [स०] १ विश्वास करने योग्य । विश्वसनीय ।
२ जिसका विश्वास किया जाय । विश्वासभाजन ।

विश्वाह्ला—सच्चा स्त्री० [स०] सोठ ।

विश्वेक्षिता—वि० [स० विश्वेक्षितृ] सर्वदर्शी [को०] ।

विश्वेदेव—सच्चा पु० [स०] १ अग्नि । २ देवताओं का एक गण
जिसमें इंद्र, अग्नि प्रादि नौ देवता माने जाते हैं ।

विशेष—वैदिक युग में लोग इन्हें मनुष्यों के रक्षक, शुभ कर्मों के
फल देनेवाले और विश्व के अधिपति मानते थे । अग्निपुराण
में ये दस कहे गए हैं और इनके नाम इस प्रकार बतलाए गए
हैं—ऋतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव
और पुरुरवा ।

३ पुराणानुसार एक असुर का नाम । ४ एक देवता (को०) ।
५ महान् व्यक्ति । महत् पुरुष (को०) । ६ तेरह की संख्या
(को०) ।

विश्वेभोजा—सच्चा पु० [स० विश्वेभोजस्] इंद्र ।

विश्वेवेदा—सच्चा पु० [स० विश्वेवेदस्] अग्नि ।

विश्वेश—सच्चा पु० [स०] १ शिव । २ विष्णु । ३ ब्रह्मा (को०) ।
४ ईश्वर । ५ उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक
देवता माने जाते हैं ।

विश्वेशा—सच्चा स्त्री० [स०] प्रजापति दक्ष की एक पुत्री का नाम
(को०) ।

विश्वेश्वर—सच्चा पु० [स०] १. ईश्वर । २. शिव की एक मूर्ति का
नाम ।

हि० श० ६-२७

विश्वैकसार—सच्चा पु० [स०] काश्मीर के एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

विश्वोषध—सच्चा पु० [स०] सोठ ।

विषग—वि० [स० विषङ्ग] १. लगा हुआ । २ जो ल'कता हो [को०] ।

विषग^{पु}—वि० [स० विषङ्ग] विषयुक्त । विषयर । उ०—काहर
कषन कितक कितक स्वानन मुप दुट्टन । विच्छी सर्प
विषग मन्त्रवादी मिल लुट्टत ।—पृ० रा०, ६ । १०५ ।

विषगी—वि० [स० विषङ्गी] साथ लगनेवाला । सलग्न रहनेवाला
[को०] ।

विषड—सच्चा पु० [स० विषण्ड] कमल की नाल । मृगाल ।

विष—सच्चा पु० [स०] वह पदार्थ जो किसी प्राणी के शरीर में किसी
प्रकार पहुँचने पर उसके प्राण ले लेता हो अथवा उसका
स्वास्थ्य नष्ट करता हो । गरल । जहर ।

विशेष—वैद्यक में स्यावर और जगम ये दो प्रकार के विष माने
गए हैं । स्यावर विष वृद्धों, पौधों और खानों आदि में से निकला
हुआ माना जाता है, और जगम विष वह कहलाता है जो अनेक
प्रकार के जीवों के शरीर, नख, दाँत या डंक आदि में होता
है । कुछ विष कृत्रिम भी होते हैं और रासायनिक क्रियाओं से
बनाए जाते हैं । चिकित्सा में अनेक विषों का प्रयोग, बहुत थोड़ी
मात्रा में, अनेक रोगों को दूर करने और दुर्बल रोगों के शरीर
में बल लाने के लिये किया जाता है ।

मुहा०—के लिये दे० 'जहर' ।

२. वह जो किसी की सुख शांति आदि में बाधक हो ।

मुहा०—विष की गाँठ = वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और
अपकार आदि करता हो । खराबी पैदा करनेवाला ।
जैसे—यही तो विष की गाँठ हैं, सब का भगडा इन्हीं का खडा
किया हुआ है ।

३. जल । ४ पद्मकेशर । ५ कमल की नाल । ६ बोल नामक गघ-
द्रव्य । ७ वज्रनाग । वत्सनाभ (को०) । ८ अतीस । ९
कलिहारी । १० जहरीला तोर । विपाक्त वाण (को०) ।
११ तत्र में 'म' का बोधक शब्द । 'म' की घनि (को०) । १२
अनुचर (को०) ।

विषई^{पु}—वि० [स० विषयिन्] दे० 'विषयी' । उ०—विषई विषै सब
विष की खानी । ए सब कहिये जम सहदानी ।—कबीर सा०,
पृ० ८०६ ।

विषकट—सच्चा पु० [स० विषकण्ट] इ गुदी ।

विषकटक—सच्चा पु० [स० विषकण्टक] दुरालभा ।

विषकटका—सच्चा स्त्री० [स० विषकण्टका] बंध्या ककौटी । बाँझ
ककौटी ।

विषकटकी—सच्चा स्त्री० [स० विषकण्टकी] बाँझ ककौटी ।

विषकठ—सच्चा पु० [स० विषकण्ठ] शिव । महादेव ।

विषकठिका—सच्चा स्त्री० [स० विषकण्ठिका] बगला ।

विषकद—सच्चा पु० [स० विषकन्द] १. भैंसा कद । नील कंद । २.
हिगोट । इ गुदी ।

विपकन्यका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपकन्या [को०] ।

विपकन्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हो कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय ।

विशेष—प्राचीन काल में राजाओं के यहाँ वाल्यावस्था से ही कुछ कन्याओं के शरीर में अनेक प्रकार से विष प्रविष्ट करा दिए जाते थे । जिनके कारण उनके शरीर में ऐसा प्रभाव आ जाता था कि जो उनके साथ विषय करता था, वह मर जाता था । जब राजा को अपने किसी शत्रु को गुप्त रूप से मारना अभीष्ट होता था, तब वह इस प्रकार की विपकन्या उसके पास भेज देता था, जिसके साथ संभोग करके वह शत्रु मर जाता था ।

विपकुम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० विपकुम्भ] जहर का घड़ा । कुम्भ जो विष से भरा हो [को०] ।

विषकृत—वि० [सं०] विपरीत । विपयुक्त [को०] ।

विषकृमि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विष से उत्पन्न कीड़ा [को०] ।

विषकृमि न्याय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक न्याय विशेष, जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि दूसरे के लिये प्राणहारक वस्तु अपने में से उत्पन्न जीव के लिये घातक नहीं होती [को०] ।

विषक्त—वि० [स०] १ दृढतापूर्वक बसा हुआ । जडा हुआ । २. सलग्न । चिपका या चिपटा हुआ । ३ लटका हुआ । अवलंबित । ४ उत्पादित । ५ अधिभूत । ६ फैला हुआ । विस्तृत । प्रसरित [को०] ।

विषगन्धक—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषगन्धक] एक प्रकार का नृण जिसमें भीनी गंध होती है ।

विषगंधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विषगन्धा] काली अपराजिता ।

विषगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह पर्वत जिसपर उत्पन्न होनेवाले वृक्ष और पौधे आदि जहरीले होते हैं ।

विषग्रन्थि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० विषग्रन्थि] एक जहरीला क्षुप [को०] ।

विषघ्न—वि० [स०] विष का नाश करनेवाला ।

विषघटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक सौर मास का नाम [को०] ।

विषघ्ना—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गुडूच ।

विषघात—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विष का घातन करनेवाला । जहर का असर दूर करनेवाला । विषवैद्य [को०] ।

विषघातक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो ।

विषघाती—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषघातिन्] १ वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट होता हो । २ सिरिस का पेड़ ।

विषघ्न—वि० [स०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला । विषनाशक ।

विषघ्नी—सञ्ज्ञा पुं० १ सिरिस का वृक्ष । २ भिलावा । ३ चंपा का वृक्ष । भूकंद । ४ गंध तुलसी । ६ जवासा । घमासा [को०] ।

विषघ्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अतिविषा । अतीस ।

विषघ्निका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सफेद अपामार्ग या चिचडा ।

विपघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ हिलमोचिका या हिलंच नामक साग । २ वनतुलसी । बबुई तुलसी । ३ इद्रवारुणी । ४. मुई आंवला । ५ लाल पुनर्नवा । गदहपूरना । ६ हलदी । ७. महाकरज । ८ वृश्चिकाली नाम की लता । ९ देवदाली या पीतघोषा नाम की लता । १० कठकेला । ११ सफेद प्रपामार्ग । १२ रास्ना ।

विपचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चकोर पक्षी ।

विषज—वि० [स०] विष से उत्पन्न । विष से होनेवाला [को०] ।

विषजल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विषयुक्त जल [को०] ।

विषजित्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक तरह का शहद [को०] ।

विषजिह्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] देवताड नामक वृक्ष ।

विषजुष्ट—वि० [स०] १ विपाक । जहरीला । २ विष से प्रभावित । विषयुक्त [को०] ।

विषज्वर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वैद्यक के अनुसार वह ज्वर जो विष के कारण उत्पन्न हुआ हो ।

विशेष—ऐसे ज्वर में दाह होती है, दस्त आते हैं, भोजन की ओर रुचि नहीं होती, प्यास बहुत लगती है और रोगी मूर्ख हो जाता है ।

२ भैंसा । महिष ।

विषभाल—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० विष + भाल] विष की ज्वाला । विषय-रूपी विष की आग । उ०—पच चौर चितवत रहों, मया मोह विषभाल । चेतन पहरै आपणी, कर गहि खडग संभाल ।—दादू० पृ० ३८० ।

विषणि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का माँप ।

विषण्ण—वि० [स०] १ जिसका चित्त दुखी हो । जिसे विषाद, शोक या रज हो । २ दुःखपूर्ण । वेदनायुक्त । खिन्न । उ०—विफलता में भी एक निराला ही विषण्ण सौंदर्य होता है ।—रस०, पृ० ६० ।

यौ०—विषण्णचेता = खिन्न । उदास । विषण्णमना = उदास ।

विषण्मुख, विषण्णवदन = जिसके मुख पर उदासी छाई हो ।

विषण्णरूप = उदासी की दशा या अवस्था ।

विषण्णता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विषण्ण या दुःखी होने का भाव । २. मूर्खता । बेवकूफी । जड़ता ।

विषण्णाग—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषण्णाङ्ग] शिव ।

विषतत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषतन्त्र] वैद्यक के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा साँप आदि का विष दूर किया जाता है ।

विषतरु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ कुचला । २ जहरीला वृक्ष । विष-वृक्ष ।

विषता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विष का भाव या धर्म । जहरीलापन ।

विषतिदु—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषतिन्दु] १. कुच लता । २ कुपीलु ।

विषतिदुक—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषतिन्दुक] एक प्रकार का जहरीला पौधा [को०] ।

विषतुल्य—वि० [स०] प्राणहारक [को०] ।

विषतेल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो कड़ुए तेल मे गोमूत्र, हलदी, दारु हल्दी, वच, लालचदन, मजीठ आदि डालकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार कुष्ठ आदि रोग दूर करने के लिये होता है।

विषदड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषदण्ड] १ कमल की नाल। उ०—केशव कोदड विषदड ऐसी खडं अब मेरे भुजदंडन की बडी है विडवना।—केशव (शब्द०)। २. विष दूर करनेवाला ऐंद्र जालिक डडा।

विषदत—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषदन्त] १ बिल्ली। २ वह जिसके दाँतो मे जहर हो।

विषदतक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषदन्तक] साँप।

विषदश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली।

विषदष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँप का वह दाँत जिसमे जहर होता है। २. सर्पककालिका नाम की लता। ३. नागदमनी।

विषद^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा कसांस। २ सफेद रंग। ३. अतिविषा। अतीस। ४ बादल।

विषद^२—वि० निर्मल। स्वच्छ। साफ। उ०—विषद वासो के विभूषण, चरण के तल तू तरेगा।—अर्चना, पृ० ८६।

विषदमूला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माकदा नामक पौधा जिसके पत्तो का साग होता है।

विषदर्शनमृत्यु, विषदर्शनमृत्युक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चकोर पक्षी [को०]।

विषदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अतिविषा। अतीस।

विषदाता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषदातृ] वह जो किसी को मार डालने या बेहोश करने के अभिप्राय से जहर दे।

विषदायक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जहर देनेवाला।

विषदायी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषदायिन्] दे० 'विषदाता'।

विषदिग्ध—वि० [सं०] विष मे बुझाया हुआ। जहरीला। विपाक्त [को०]।

विषदुष्ट—वि० [सं०] जो जहर मिलाकर खराब कर दिया गया हो।

विषदूषण^१—वि० [सं०] विष दूर करनेवाला।

विषदूषण^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भोज्य या पेय वस्तु मे विष मिलाना [को०]।

विषद्रुम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुचला। कारस्कर।

विषद्विषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गुरुच [को०]।

विषधर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विषधरी] १. सर्प। साँप। २. जलधर। बादल।

यौ०—विषधरनिलय = पाताल। नागलोक।

विषधर^२—वि० विषला। जहरीला [को०]।

विषधरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सर्पिणी। साँपिन।

विषधर्मा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच [को०]।

विषधात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जरदकार ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

विषध्वसी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषध्वसिन्] नागरमोथा।

विषनाडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक मुहूर्त जिसमे जनन अशुभ कहा गया है [को०]।

विषनाशन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सिरिस का पेड। २. मानकंद। ३. विष को दूर करना।

विषनाशन^२—वि० जो विष को दूर करता हो। विषनाशक।

विषनाशिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. सर्पककाली नाम की लता। २. बाँभ ककोटी। ३. गंवनाकुली।

विषनुत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सानापाठा। श्योनाक [को०]।

विषन्न(पु)—वि० [सं० विषण्ण] दे० 'विषण्ण'। उ०—रोते रोते कंठरोध जब है हो जाता। उस विषन्न नीरव क्षण मे हो कहती गिरा तुम्हारी।—चिंता, पृ० १४८।

विषपत्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी जहरीले बीज का छिलका। २. कोई जहरीला पत्ता।

विषपन्नग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जहरीला साँप।

विषपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] न्यग्रोध। वट वृक्ष [को०]।

विषपादप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषवृक्ष'।

विषपीत—वि० [सं०] जिसने जहर पी लिया हो। विष पीनेवाला [को०]।

विषपुच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विषपुच्छी] विच्छ जिसकी पूँछ मे विष होता है।

विषपुट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विषपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. नीला पद्म। २. अलसी का फूल। ३. मैनफल का पेड। ४. विषयुक्त फूल [को०]।

विषपुष्पक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मदन नामक वृक्ष। मैनफल। २. विषले फूलों के खाने से होनेवाला रोग [को०]।

विषप्रदिग्ध—वि० [सं०] दे० 'विषदिग्ध' [को०]।

विषप्रयोग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दवा मे विष का उपयोग करना। २ जहर देना [को०]।

विषप्रशमनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बाँभ ककोटी।

विषप्रस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम।

विषभक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जहर खाना।

विषभद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बडी दंती।

विषभद्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लघु दंती।

विषभिषक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषभेषज] साँप आदि के विष को मंत्र द्वारा दूर करनेवाला व्यक्ति। विषवैद्य [को०]।

विषभुजग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषभुजङ्ग] जहरीला साँप।

विषभृत्—वि० [सं०] जहरीला। विषयुक्त।

विषभृत्^१—सञ्ज्ञा पुं० सर्प। साँप [को०]।

विषमजरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विष संबंधी चिकित्सापरक एक आयुर्वेद कृति [को०]।

विषमत्र—सखा पु० [स० विषमन्त्र] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २ सँपेरा। ३ माँप के विष को उतारने का मंत्र (को०)।

विषम^१—वि० [स०] १ जो सम या समान न हो। जो बराबर न हो। असमान। २ (वह सख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। सम या जूम का उल्टा। ताक। ३ जिसकी मोमासा सहज में न हो सके। बहुत कठिन। जैसे,—विषम गमस्या। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५ भीषण। विकट। जैसे,—विषम विपत्ति। उ०—हरे न मेरे पीछे स्वामी विषम कष्ट साहस के काम। यही दुखिनी सीता का मुख सुखी रहे उनके प्रिय राम,—माकेत, पृ० २८६। ६ जो समतल न हो। खुरदरा। ऊबड़ खावड़ (को०)। ७ अनियमित (को०)। ८. अगम। दुर्गम (को०) ९ मोटा। स्थूल (को०)। १० विरछा। वक्र (को०)। ११ पीडाप्रद। कष्टदायक (को०)। १२. बहुत मजबूत। उत्कट (को०)। १३ बुरा। प्रतिकूल। विपरीत (को०)। १४ अजीब। विचित्र। अनुपम। (को०)। १५ वैईमान (को०)। १६ विरामशील। विरत (को०)। १७. दुष्ट (को०)। १८. भिन्न (को०)। १९ अनुपयुक्त। अनुकूल (को०)।

विषम^२—सखा पु० [स०] १ मकट। विपत्ति। आफत। २ वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हो, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हो। ३. एक अर्थालंकार जिसमें दो विराधी वस्तुओं का सर्वप वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है। उ०—(क) कहीं मृदुल तन तीय का सिरम प्रसून महान। कहीं मदन की लाय यह अब सम दुमह समान। (ख) खडगलता अति स्याम तैं उज्ज्वी कीरति सेन। ४ मगीत में ताल का प्रकार। ५. पहली, तीसरी, पाँचवी आदि विषम सख्याओं पर पढ़नेवाली राशियाँ। ६ बंधक के अनुसार चार प्रकार की जठराग्नि यों में से एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु को अधिकता से उत्पन्न हाती है। कहते हैं, जब जठराग्नि विषम होती है, तब कभी तो भोजन बहुत अच्छी तरह पच जाता है और कभी बिल्कुल नहीं पचता। ७ विष्णु का एक नाम (को०)। ८ असमता (को०) ९ अनोखापन (को०)। १० दुर्गम स्थान। जैसे,—चट्टान, गड्ढा आदि (को०)। ११ कठिन या भयावह स्थिति। कठिनाई। दुर्भाग्य (को०)।

विषमक—वि० [स०] १ असम। २ (मोती आदि) जिसकी पालिश सर्वत्र समान रूप से न हुई हो (को०)।

विषमकर्ण—सखा पु० [स०] १ चारों समकोणोंवाले चतुर्भुज में किन्हीं दो कोणों को मिलाती हुई त्रिकोण बनानेवाली रेखा। समकोण त्रिकोण का कर्ण। २ असमान कर्णवाला चतुर्भुज।

विषमकर्म—सखा पु० [स०] असाधारण कार्य।

विषमकाल—सखा पु० [स०] प्रतिकूल समय। भयंकर समय (को०)।

विषमकोण—सखा पु० [स०] वह जो सम न हो। समकोण से भिन्न और कोई काण।

विषमखात—सखा पु० [स०] असमान खात (को०)।

विषमचक्रवाल—सखा पु० [स०] गणिता में दीपवृत्त। अटवृत्त (को०)।

विषमचतुरस्र—सखा पु० [स०] २० 'विषम चतुरकोण'।

विषमचतुर्भुज—सखा पु० [स०] २० 'विषम चतुरकोण'।

विषमचतुष्कोण—सखा पु० [स०] वह चोकोर क्षेत्र जिसमें चारों कोण समान न हो। विषम कोणवाला चतुरकोण।

विषमच्छेद—सखा पु० [स०] छतिवन का पेट।

विषमच्छाया—सखा श्री० [स०] धूपपटों के शंकु की दोपहर की छाया (को०)।

विषमज्वर—सखा पु० [स०] १. पैरों के अनुसार एक प्रकार का ज्वर जो होता तो निम्न है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। उ०—जब ज्वर छोटा दे और फिर आ जावे उसको विषमज्वर कहते हैं।—मायव०, पृ० २०।

विरोप—इस ज्वर में तापमान भी समान नहीं रहता और नाड़ी की गति भी मंदा एक ना नहीं रहती, बराबर बदलता रहता है। इसान्य हम विषमज्वर कहते हैं। ज्वर का यह रूप बिना ग चरण ज्वर का उगड़ने अथवा पुरा तरह अच्छे न होने पर कुपथ्य परने के कारण होता है। चैत्र में इस अन्व भेद कहे गए हैं। जैसे—मन्त, नन्त, तृतीयक, चतुष्प आदि। २ जाटा देकर आनेवाला ज्वर। जूरी बुखार। ३ लगे राग में होनेवाला ज्वर।

विषमता—सखा श्री० [स०] १ विषम होने का भाव। असमानता। २ बर। विरोप। द्राह। ३. अंतर। भेद। फर्क (को०)। ४ उत्कल। जटिलता (को०)। ५. भीषणता। भयंकरता।

विषमत्रिभुज—सखा पु० [स०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे बड़ हो, समान न हों।

विषमत्व—सखा पु० [स०] विषम होने का भाव। विषमता।

विषमहृष्टि—वि० [स०] खंवाताना (को०)।

विषमधातु—वि० [स०] जिसकी शरीरस्थ धातुएं अनंतुषित हो। रागी। अस्वस्थ (को०)।

विषमनयन—सखा पु० [स०] महादेव। शिव।

विषमनेत्र—सखा पु० [स०] शिव। महादेव।

विषमपत्र—सखा पु० [स०] नक्षत्रण वृत्त (को०)।

विषमपद—वि० [स०] १ जिसमें असमान पद या चरण हो। जैसे—छंद, कविता। २ असमान या अस्त्व्यस्त पर रखनेवाला।

विषमपलाश—सखा पु० [स०] छतिवन का वृत्त।

विषमवाण—सखा पु० [स०] कामदेव (को०)।

विषमद्विनिका—सखा श्री० [स०] गघनाकुली।

विषमलक्ष्मी—सखा श्री० [स०] कुसमय। दुर्दिन। दुर्भाग्य (को०)।

विषमवल्कल—सखा पु० [स०] नारंगी।

विषमवाणा—सखा पु० [स०] विषमराग। कामदेव का एक नाम।

विषम विभाजन—सखा पु० [स०] सपत्ति आदि का असमान विभाजन (को०)।

विषमविलोचन—सखा पु० [स०] शिव। त्र्यंबक (को०)।

विषमविशिख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का एक नाम ।
 विषमवृत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों । असमान पदोंवाला वृत्त ।
 विषमव्यूह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सैनिक व्यूह । समव्यूह का उलटा व्यूह विशेष दे० 'समव्यूह' ।
 विषमशर—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] कामदेव [को०] ।
 विषमशिष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रायश्चित्त आदि के लिये व्यवस्था देने के संबंध का एक दोष ।
 विशेष—यह दोष उस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हल्का प्रायश्चित्त करने की या हल्का पाप करने पर भारी प्रायश्चित्त करने की व्यवस्था दी जाती है ।
 विषमशील^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य का एक नाम [को०] ।
 विषमशील^२—वि० क्रोधी स्वभाववाला । असमान शीलवाला [को०] ।
 विषमसधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषमसन्धि] वह सधि जिसमें शक्ति के अनुसार तत्काल सहायता न दी जाय । समसधि का उलटा ।
 'तुम आगे से हमारे मित्र रहोगे' इस प्रकार की सधि ।
 विषमसाहस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उद्धतपन । उद्दता [को०] ।
 विषमस्थ—वि० [सं०] सकट में फँसा हुआ [को०] ।
 विषमस्पृहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दूसरे का घन हड़पने का लालच [को०] ।
 विषमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रूरवेरी । २. एक प्रकार का बछ्ताग ।
 विषमाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव । महादेव ।
 विषमानिनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की जठराग्नि ।
 विशेष—कहते हैं, यह अग्नि कभी तो खाए हुए पदार्थों की अच्छी तरह पचा देती है और कभी बिल्कुल नहीं पचाती ।
 विषमाधुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शृंगी विष । सींगिया ।
 विषमान्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषम + अन्न] अनियमित आहार [को०] ।
 विषमायुध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कामदेव ।
 विषमावतार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषम + अवतार] १. असमतल भूमि पर उतरना । २. खतरा मोल लेना [को०] ।
 विषमावरण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषमवर्ण] दग्धाक्षर । उ०—
 घुररूपक ज्योंही घरे, विषमावरण विशेष ।—रघु० ८०, पृ० ११ ।
 विषमाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार ठीक समय पर भोजन न करके समय के पहले या पीछे अथवा थोड़ा या अधिक भोजन करना जिसके कारण शरीर में आलस्य या दुर्बलता होती है ।
 विषमित—वि० [सं०] जो विषम किया गया हो । विषम बनाया हुआ [को०] ।
 विषमुक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषमुक्] सर्प । साँप [को०] ।
 विषमुष्कक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मैनफल ।
 विषमुष्टि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. जीवती । २. वकायन । ३. मोठी नौम । षोडा नौम । ४. कलिहारी । ५. कुचला ।
 विषमुष्टिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वकायन ।
 विषमूला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिरामलक । शिर आँवला ।
 विषमृत्यु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चकार पक्षी ।

विषमेक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महादेव ।

विषमेपु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कामदेव ।

विषय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह बड़ा प्रदेश जिसपर कोई शासन व्यवस्था हो ।

विशेष—ग्राम से बड़ा राष्ट्र और राष्ट्र से बड़ा विषय माना जाता था । कितने बड़े भूभाग को विषय कह सकते थे, इसका कोई निर्दिष्ट मान नहीं था ।

२. वह पदार्थ जिसका ग्रहण ज्ञानेंद्रियों द्वारा होता हो । रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द जिनका संवध क्रमशः आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है । इन्द्रियाथ [को०] । ३. भौतिक वस्तु [को०] । ४. कारोबार । व्यवसाय [को०] । ५. इन्द्रियसुख । वासनात्मक आनंद [को०] । ६. विभागक्षेत्र । ७. पहुँच । परिधि । विस्तार [को०] । ८. लक्ष्य । उद्देश्य [को०] । ९. प्रसंग । प्रकरण [को०] १०. वार्य । शुक्र [को०] । ११. स्वामी [को०] । १२. धार्मिक कृत्य [को०] । १३. पाँच की सख्या [को०] । १४. उपमेय । वर्ण्य पदार्थ [को०] । १५. राज्य [को०] । १६. आश्रयस्थल, शरणस्थल [को०] । १७. ग्रामों का समूह [को०] । १८. प्रेमी पति [को०] । १९. शृंगार विषयक ग्रंथ [को०] ।

यौ०—विषयकर्म = भौतिक कृत्य । सामारिक कार्य । विषय-काम = भौतिक पदार्थों या सुखों को कामना । विषयग्राम = ऐंद्रिक विषयों का समूह । विषयज्ञ । विषयज्ञान = सासारिक सुखों का ज्ञान । वासनात्मक ज्ञान । विषयनिरत । विषयनिर्धारणो समिति । विषयनिर्द्दुति । विषयपति । विषयरस । विषयसामिति । विषयसूहा ।

विषयक—अव्य० [सं०] विषय का । संबंधी । जैसे,—इस पत्र में राजनीति विषयक बातें अधिक रहती हैं ।

विषयज्ञ—वि० [सं०] विषय का ज्ञाता । किसी विशिष्ट विषय का जानकार [को०] ।

विषयता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विषय का भाव या धर्म ।

विषयनिरत—वि० [सं०] विषयासक्त । इन्द्रियासक्त [को०] ।

विषयनिरति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भोग विलास के प्रति लगाव । सासारिक उपभोग्य पदार्थों के प्रति आसक्ति । विषयासक्ति [को०] ।

विषयनिर्द्धारिणी समिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषय + निर्द्धारिणी + समिति] दे० 'विषयनिर्वाचिनी समिति' ।

विषयनिर्वाचिनी समिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषय + निर्वाचिनी + समिति] कुछ विशिष्ट सदस्यों की वह सभा जो किसी महासभा या संमेलन में उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है । (अ० 'संवज्ञेय कमिटी')

विषयनिह्नुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] किसी विषय के प्रति गपनीयता का भाव [को०] ।

विषयपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. किसी जनपद या छोटे प्रांत का राजा या शासक । उ०—श्रेष्ठे नगरशासन तथा जिले के शासन में नगरपति (जिलाधीश) की सहायता किया करता था ।—भू० म० भा०, पृ० १२७ । २. राज्यपाल [को०] ।

विषयपराङ्मुख—वि० [सं०] सांसारिक सुखों से विमुख। जो विषयो से विमुख हो [को०]।

विषयप्रवण—वि० [सं०] भोगलिप्सु। विषयामक्त [को०]।

विषयप्रसंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषयप्रसङ्ग] विषय में आसक्ति। भोगविलास में रति [को०]।

विषयरत्न—वि० [सं०] विषयासक्त [को०]।

विषयरस—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषय + रस] लौकिक भोग विलास का सुख। विषयानन्द। उ०—हुआ इस जग में ऐसा कौन विषयरस किया न जिसने पान ?—मधुज्वाल, पृ० ८४।

विषयलोलुप—वि० [सं०] विषयेच्छु। भोगेच्छु [को०]।

विषयविरत—वि० [सं०] जो लौकिक विषयो से विरक्त हो। विषयो से पराङ्मुख।

विषयसंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषयसङ्ग] विषयो में रति [को०]।

विषयममिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषयनिर्वाचिना समिति'।

विषयसुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विषयानन्द। इन्द्रिय सबधो सुख [को०]।

विषयस्नेह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विषयप्रेम। इन्द्रिय सबधो पदार्थों की कामना [को०]।

विषयस्पृहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषयस्नेह'।

विषयात्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषयात्] विषय या प्रदश की सीमा [को०]।

विषयातर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषयान्तर] १ प्रस्तुत वर्य विषय का त्याग कर अन्य विषय का ग्रहण या प्रवर्तन। २ प्रस्तुत या वर्य विषय की उपेक्षा [को०]।

विषया०—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषय] सांसारिक भोग्य पदार्थ। उ०—तनमन ताको दीजिए, जाके विषया नाहिं। आपा सबही डारि कै, राखै सहेन माहिं।—कबीर सा० सं०, पृ० २।

विषयाज्ञान—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषय + अज्ञान] १ विषय को न जानना। तद्रा [को०]।

विषयात्मक—वि० [सं०] १ विषय, प्रकरण या प्रसंगवाला। २. २ आलस्य। थकावट। इन्द्रिय सबधो।

विषयाधार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषय + आधार] विषया का आधार। उ०—आत्मा को विषयाधार बना, दिशि पल के दृश्यों को संवार। गा, गा, एकोह बहु स्याम, हर लिए भेट, भव भीति भार।—युगात, पृ० ५६।

विषयाधिकृत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय या प्रात का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी [को०]।

विषयाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी छोटे प्रात का राजा या शासक।

विषयाधिपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा। विषयाधिप [को०]।

विषयाभिरति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विषयो या सांसारिक सुखों के प्रति अनुराग [को०]।

विषयानुक्रमिका, विषयानुक्रमणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रंथादि की विषयसूची।

विषयायी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषययिन्] १ भौतिकवादी। नास्तिक। २ सांसारिक व्यक्ति। इन्द्रियसुखों में रति व्यक्ति। प्रियामी मनुष्य। ३. प्रेम का देवता। कामदेव। ४ राजा। ५ ज्ञानेंद्रिय।

विषयासक्त—वि० [सं० विषय + अ + मक्त] नागरत्न। विन सा०, पृ० १०।

विषयासक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषय + आ + मक्त] मान, रस विषया के प्रति आसक्ति होना। लोभा के प्रति लगाव या प्रेम [को०]।

विषयी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषयिन्] १ यह या भोग विनाम या विषय आदि में बहुत अधिक गाम्भीर्य है। विन, मां। कामी। २ राजा। ३. कामदेव। ४ जिसके पास बहुत अधिक विषय या धन गमते हो। धनवान। श्रमोत्तर। ५ विषय को जाननेवाला। विषयज्ञ। उ०—विषया या ज्ञाता अज्ञान चार्ग घोर उपस्थित यस्तुमो का वभा कभी अपने तत्वालीन भावों के रंग में देखता है।—चित्तमणि, भा० २, पृ० १८। ६. भौतिकवादी। ७ ज्ञानेंद्रिय (१), ८ ज्ञान (२), ९ उपभोग। (अलंकारशास्त्र)।

विषयी—वि० कामुक। इन्द्रियपरायण।

विषयीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किमा वस्तु को विचार का विषय बनाना [को०]।

विषयीय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विषय। सांसारिक पदार्थ।

विषयीय—वि० विषय सबधो [को०]।

विषयीपी—वि० [सं० विषयिन्] विषयचोनु। भागेच्छु [को०]।

विषयोपरम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विषया के उपरम या त्रिक [को०]।

विषयोपसेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विषयो के प्रति आसक्ति [को०]।

विषरूपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. अतिविषा। अतीम। २ मोठी नीम। घोडानीम। ३ ऐकसा।

विषल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष। जहर।

विषलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ इद्रवारणी नाम की लता। २ मृणाल। कमलनाल।

विषलागल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषलाङ्गल] कलिहारो।

विषवचिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विषवच्चिका] चिच्छ नामक पोवा।

विषवल्लरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषवल्ली'।

विषवल्लि, विषवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] इद्रवारणी नाम की लता।

विषविटपी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विषविटपिन्] जहरीला पेड़ [को०]।

विषविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मन्त्र आदि की महायता से झट फूँकर विष उतारने की विद्या।

विषविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषविधि'।

विषविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन व्यवहारशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की परीक्षा या दिव्य जिससे यह जाना जाता था कि प्रमुख व्यक्ति अपराधी है या नहीं। विशेष दे० 'दिव्य'।

विषवृक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गूलर। २ विष का वृक्ष। विषमय फल देनेवाला वृक्ष। उ०—मां, क्या कठोर और क्रूर हाथों से ही राज्य सुशासित होता है? ऐसा विषवृक्ष लगाना क्या ठीक होगा।—अज्ञात, पृ० २५।

विपवृक्षन्याय

विपवृक्ष न्याय—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय जिसके अनुसार श्रपनी उत्पन्न की हुई हानिकारक वस्तु भी स्वयं नष्ट नहीं करनी चाहिए [को०]।

विपवेग—सज्ञा पुं० [सं०] विप की व्याप्ति। विप की लहर। विप का प्रभाव [को०]।

विपवैद्य—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो मग्न तत्र आदि की सहायता से विप उतारता हो।

विपवैरिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विपी नामक घास।

विप व्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [सं०] १, शरीर में विप भिदने की अवस्था। २ विप का प्रभाव [को०]।

विपव्रण—सज्ञा पुं० [सं०] जहरीला फोड़ा। जहरवाद [को०]।

विपशालूक—सज्ञा पुं० [सं०] कमलकद। भसीड।

विपशूक—सज्ञा पुं० [सं०] भीमरोल नामक कीड़ा।

विपशृंगी—सज्ञा पुं० [सं० विपशृङ्ग] भीमरोल नामक कीड़ा।

विपसयोग—सज्ञा पुं० [सं०] सिद्धर। सेंदुर।

विपसूचक—सज्ञा पुं० [सं०] चकौर नामक पत्नी।

विपसृक्क—सज्ञा पुं० [सं० विपसृक्कन्] विपशूक। भृंगरोल [को०]।

विषहता—सज्ञा पुं० [सं० विपहत्तृ] सारेस का पेड।

विपहता—वि० जिससे विप का प्रभाव दूर हो। विपनाशक।

विपहत्री—सज्ञा स्त्री० [सं० विपहन्त्री] १ अपराजिता। २. निर्विपी।

विपह—वि० [सं०] जो विप का नाश करता हो। विपन्न।

विपह—सज्ञा पुं० १ देवदाली। २ निर्विपी।

विपहर—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह श्रौपव या मग्न आदि जिससे विप का प्रभाव दूर होता हो। २ भटेउर। चोरक। घनहर।

विपहरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली। बदाल। २ निर्विपी। ३ मनमादेवी का एक नाम।

विपहरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] मनसा देवी का एक नाम।

विपहा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली। बदाल। २ निर्विपी।

विपहा—सज्ञा पुं० [सं० विपहन्] १. वह जो विपघ्न हो या विप दूर करनेवाला हो। २ एक प्रकार का कदन वृक्ष। भुइँकदव [को०]।

विपहारक—सज्ञा पुं० [सं०] भुइँकदव।

विपहारिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विपी नामक घास।

विपहीन—वि० [सं०] जिसमें विप न हो [को०]।

विपहृदय—वि० [सं०] कुटिल मनवाला। कपटी [को०]।

विपहेति—सज्ञा पुं० [सं०] सर्प [को०]।

विपहय—वि० [सं० वि+नह्य (पह्य)] १ सहन करने योग्य। जो बर्षात रिया जा सके। २ जिसका निर्धारण या निश्चय किया जा सके। ३ नभय। शक्य। ४ पराभूत करने योग्य [को०]।

विपाकुर—सज्ञा पुं० [सं० विपाकुर] १ तीर जिसकी नोक विप युक्त हो। २. भाला। पुत [को०]।

विपागता—सज्ञा स्त्री० [सं० विपाङ्गना] दे० 'विपङ्गना'।

विपातक—सज्ञा पुं० [सं० विपान्तक] १. वह जिमने विप का नाश हो। २ शिव का एक नाम।

विपा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अतिविपा। अतीम। २. कलिहारी। ३. कडवी कँदूरी। ४ कडवी तरौई। ५. काकोली। ६ बुद्धि। अमल।

विपाक्त—वि० [सं०] जिममें विप मिला हो। विपयुक्त। निवपूर्ण। जहरीला।

विपाख्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।

विपाग्नि—सज्ञा स्त्री० [सं० विप+अग्नि] विप की ज्वाला या दाह विपप्रयोगजन्य शरीरदाह [को०]।

विपाग्रज—सज्ञा पुं० [सं०] कृपाण। तलवार [को०]।

विपाण—सज्ञा पुं० [सं०] १. कुट या कूट नामक ओपधि। २ हाथी दाँत। ३ पशु का सींग। ४ मेढासिंगी। ५ वाराहीकद। गेंठी। ६ ऋषभक नामक ओपधि। ७. सूपर का दाँत। ८ हमली। ९ फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का सींग का वाजा। शृंगो। उ०—खरिगन मजु विपाण हुए कई। रणित शृंग हुए बहु साथ ही।—प्रियं, पृ० २। १० चोटो। सिरा [को०]। ११ कुवाग्र। चुकुर [को०]। १२ अपने वर्ग का प्रधान। १३ तलवार या चाकू [को०]। १४. ककडे का पजा [को०]। १५ सींग जैसी शिव के सिर पर बँधी हुई जटा [को०]।

विपाणक—सज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २ सींग [को०]।

विपाणकोश—सज्ञा पुं० [सं०] सींग का खोलला भाग [को०]।

विपाणात—सज्ञा पुं० [सं० विपाणान्त] गणेश जी का दाँत।

विपाणिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेढासिंगी। २. सातला नाम का धूर। ३. काकडासिंगी। ४ आवर्तकी या भगवतवल्ली नाम की लता। ५ सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओपधि। ७ काकोली।

विपाणी—सज्ञा पुं० [सं० विपाणिन्] १ वह जिसे सींग हो। सींगवाला। २ हाथी। ३ सूअर। ४ साँड। सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओपधि।

विपाणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीर काकोली। २ ऋषभक नामक ओपधि। ३ मेढासिंगी। ४. वृश्चिकाली। बिछाती। ५ हमली। ६ सिंघाडा। ७ विप। जहर। ८ भगवतवल्ली या आवर्तकी नाम की लता।

विपाद्—सज्ञा पुं० [सं०] हलाहल विप खानेवाले, शिव।

विपाद—सज्ञा पुं० [सं०] १. वेद। दुःख। रज। २ निराशा। हवाशा। नाराय (को०)। ३ जट या निश्चेष्ट होने का भाव। ४ काम करने को बिलकुल जी न चाहना। घकना। मग्न अवस्था [को०]। ५. मूर्खता। बेफुकी। ६. एक प्रकार का सचारी भाव [को०]।

विपाद—सज्ञा पुं० [सं० विप+√अद(=मच्छ)] विप पीनेवाले शिव। शरर [को०]।

विषाद^१—वि० विपभन्ती । विप खानेवाला [को०] ।

विषादन—सज्ञा पु० [स०] १ कष्ट । दुःख । खेद । रज । २ निराशा ।
३ एक काव्यालंकार, जो वहाँ होता है जहाँ इच्छा के विपरीत
निराशा हाथ लगती है । जैसे—हाँ सोई सखि सुपन मे मन
भावन के पास । छोर छरा को छुवत ही आनि जगाओ
माम ।—मति० ग्र०, पृ० ६० ।

विषादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पलाशी नाम की लता । २.
इंद्रवारुणी ।

विपादित—वि० [स०] विपणन । विपादयुक्त । खिन्न [को०] ।

विषादिता—सज्ञा स्त्री० [स०] विषाद का धर्म या भाव ।

विषादित्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विषादिता' [को०] ।

विषादिनी^१—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पलाशी नाम की लता । २.
इंद्रवारुणी ।

विषादिनी^२—वि० स्त्री० [स०] विप पीनेवाली । उ०—विचर रही
निर्मम अवाध तुम, विश्व विषादिनी, लोकप्रसादिनी ।—
रजत०, पृ० ७६ ।

विषादी^१—सज्ञा पु० [स० विषादिन] वह जिसे विषाद हो । विषाद
युक्त । दुःखी व्याक्त ।

विषादी^२—वि० विप खानेवाला [को०] ।

विषादाश्रु—सज्ञा पु० [स०] दुःख या निराशा के कारण उत्पन्न आँसू ।

विषान्न—सज्ञा पु० [स०] साँप ।

विषान्न—सज्ञा पु० [स० विप + अन्न] विपमिश्रित भोजन [को०] ।

विषापवादिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] विप का प्रभाव दूर करने की एक
मायिक क्रिया [को०] ।

विषापवादी—वि० [स० विषापवादिन्] विप को दूर करनेवाला [को०] ।

विषापह^१—सज्ञा पु० [स०] १ मोखा न मक वृक्ष । मृगक २. वह
जिसे विप का नाश हो । ३ गरुड [को०] ।

विषापह^२—वि० विप का प्रभाव नष्ट कर देनेवाला [को०] ।

विषापहरण—सज्ञा पु० [स०] विप का प्रभाव हटाना [को०] ।

विषापहा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इंद्रवारुणी । इंद्रावन । २ निर्विपी ।
३ नागदमन । ४ अर्कपना । इसरीन । ५ सर्पकाली । ६
सर्पदण्ड । इम्पद । ७ त्रिपर्णी नामक कद ।

विषाभावा—सज्ञा स्त्री० [स०] निर्विपी [को०] ।

विषायका—सज्ञा स्त्री० [स०] निर्विपी ।

विषायुध—सज्ञा पु० [स०] १ साँप । २ वह अस्त्र जो जहर में
बुझाया गया हो । ३ विपला जलु [को०] ।

विषार—सज्ञा पु० [स०] विपला साँप ।

विषाराति—सज्ञा पु० [स०] काला धतूरा ।

विषारि^१—सज्ञा पु० [स०] १ म्हाचक्र या चैच नामक साँप । २
घोकरज ।

विषारि^२—वि० जिससे विप का नाश होता हो ।

विषाला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मछली जिसका मांस वायु
और कफ बढ़ानेवाला माना जाता है ।

विषालु—वि० [स०] विपला । जहरीला [को०] ।

विपासहि—वि० [स०] विजेता । जयी । विजयी [को०] ।

विपात्र—सज्ञा पु० [स०] १. माँ । २ जहर में बुझाया हुआ अन्न ।

विपास्य—सज्ञा पु० [स०] माँप ।

विपास्या—सज्ञा स्त्री० [स०] भिलायी ।

विपी^१—सज्ञा पु० [स० विपिन्] १ विपपूर्ण मनु । जहरीली चीज ।
२ विपघ्न सर्प । जहरीला साँप ।

विपी^२—वि० [हिं+विप ?] विपयुक्त । जहरीला ।

विपु—वि० [स०] १. समान रूप में । २ त्रिषु प्रसार में । अनेक
प्रकार से । ३. गमान । तुल्य [को०] ।

विपुण^१—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विपुत्र' ।

विपुण^२—वि० १ अनेक रूप का । बहुव्या । २ सर्वग । सर्वगन । ३
विप्रकोण । विपरा हुण । ४ पराक्रमुण [को०] ।

विपुद्रुह—सज्ञा पु० [स०] वारुण । तीर ।

विपुप—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विपुत्र' ।

विपुप्त—वि० [स०] गहरी नींद में पड़ा हुआ । विमुक्त [को०] ।

विपुव—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष के अनुसार वह समय जब सूर्य
विपुव रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर
होती हैं ।

विशेष—ऐसा समय वर्ग में दो बार आता है । एक तो मौर चैत्र
मास की नवी तिथि या अग्रजि २१ मार्च का, और दूसरा मौर
श्राश्विन की तृती तिथि या अग्रजि २२ मई के । विशेष
दे० 'विपुव रेखा' ।

यौ०—विपुवच्छाया । विपुवदिन । विपुवरेखा । विपुवनमय ।

विपुवच्छाया—सज्ञा स्त्री० [स०] दोपहर के मध्य पड़नेवाली घूँघड़ी के
शंकु की छाया [को०] ।

विपुवत्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विपुव' ।

विपुवत्तरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपुवरेखा' ।

विपुवद्वलय—सज्ञा पु० [स०] विपुवरेखा ।

विपुवद्वृत्त—सज्ञा पु० [स०] विपुवरेखा ।

विपुवदिन, विपुवद्विष—सज्ञा पु० [स०] वह दिन जब दिन और रात
बराबर हो [को०] ।

विपुवदेश—सज्ञा पु० [स०] विपुवरेखा के नीचे आनेवाले देश
या भूभाग [को०] ।

विपुवरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक
रेखा जो पृथ्वीतल पर उसके ठीक मध्यभाग में बड़े बल में या
पूर्व पश्चिम पृथ्वी के चारो माने जाते हैं ।

विशेष—यह रेखा दोनों मेरुओं के ठीक मध्य में दोनों में समान
अंतर पर है । आकाश में इस रेखा में उत्तर की ओर मेघ से
कन्या तक की पहली छह राशियाँ और दक्षिण की ओर तुला
से मीन तक की छह राशियाँ हैं । इसे 'निरक्ष वृत्त' भी कहते हैं ।

विषूचक—सज्ञा पु० [स०] विसूचिका नामक रोग ।

विषूचिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विसूचिका' । उ०—जिस अजीर्ण मे बादी देह को सूई के सहश पीड़ा देय अर्थात् सूई सी चुभे उसको वैद्य विषूचिका कहते हैं ।—माधव०, पृ० ६६ ।

विषैपु—सञ्ज्ञा पुं० [स० विषय] दे० 'विषय' उ०—विषई विषै सब विष की खानी । ए सब कहिए जम सहिदानी ।—कबीर सा०, पृ० ८०६ ।

विषैक(पु)—वि० [स० विषयक] दे० 'विषयक' । उ०—(क) सुत विषैक तब पद रति होऊ ।—मानस, ११५१ । (ख) अब सुनि कृष्ण विषैक निरोध । जदपि अनत अखडित बोध ।—नद० ग्रं०, पृ० २१७ ।

विषैला—वि० [स० विप + हि० एला (प्रत्य०)] विपवाला । जहरीला । विषौपघी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नागदंती ।

विष्कंद—सञ्ज्ञा पुं० [म० विष्कन्द] १ तितर बितर होना । बिखरना । २. जाना । गमन । दूर गमन [को०] ।

विष्कन्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कन्ध] १ वह जो गति को रोकता हो । २. बाधा । विघ्न ।

विष्कन्धाजीर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कन्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग ।

विशेष—रोग जिसमे रोगी के शरीर मे शूल के समान पीड़ा होती है, उसका पेट फूल जाता है और वह मल या अपान वायु का त्याग नहीं कर सकता ।

विष्कम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कम्भ] १ फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों मे से पहला योग ।

विशेष—आरंभ के पाँच दंडों को छोड़कर शुभ कार्य के लिये यह योग बहुत अच्छा समझा जाता है । कहते हैं, इस योग मे जन्म लेनेवाला मनुष्य सब बातों मे स्वाधीन और भाई बंधु, आदि से सदा सुखी रहता है ।

२. विस्तार । ३. बाधा । विघ्न । ४ साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक का एक प्रकार का अंक जो प्रायः गर्भों के 'समीप' होता है । उ०—प्राज अमरता का जीवित हूँ मैं वह भीषण जर्जर दंभ, आह सर्ग के प्रथम अंक का अव्यय पात्र मय सा विष्कम्भ ।—कामायनी, पृ० १८ ।

विशेष—जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमे मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है । यह दो प्रकार का होता है—शुद्ध और सकीर्ण । जब एक या अनेक मध्यम पात्र इसका प्रयोग करते हैं, तब यह शुद्ध कहलाता है । और जब मध्यम तथा नीच पात्रों द्वारा इसका प्रयोग होता है, तब इसे सकीर्ण कहते हैं । शुद्ध विष्कम्भ मे मध्यम पात्रों का वार्तालाप सस्कृत भाषा मे और सकीर्ण विष्कम्भ मे मध्यम तथा नीच पात्रों का वार्तालाप प्राकृत भाषा मे होता है । शुद्ध का उदाहरण मालतीमाधव के पाँचवें अंक मे कुडलाकृत प्रयोग और सकीर्ण का रामाभिनव मे चपराक और कापालिककृत प्रयोग है ।

५ योगियों का एक प्रकार का वय । ६ वाराहपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम । ७. वृक्ष । पेड़ । ८. अर्गल । व्योडा ।

हि० श० ६-२८

९ दे० 'बडेरा ।' बडेरी (को०) । १०. स्तंभ । खम्भा (को०) । ११ मथनदह जिसमे रस्सी लपेटकर दधिमथन करते हैं (को०) । १२ किसी वृत्त या घेरे का व्यास (को०) । १३ क्रियाशीलता । कार्य मे निरत रहना (को०) ।

विष्कम्भक—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कम्भक] दे० 'विष्कम्भ' ।

विष्कम्भन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कम्भन] १ बाधा उपस्थित करना । २ विस्तृत करना । ३. विदारण करने, खोलने या फाड़ने का उपकरण [को०] ।

विष्कम्भित—वि० [स० विष्कम्भित] १ बाधायुक्त । अवरोध २. दूरी-कृत । अस्वीकृत । ३. (किसी वस्तु से) पूर्णतः युक्त [को०] ।

विष्कम्भी^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कम्भिन्] १. शिव जी का एक नाम । २ अर्गल । व्योडा । ३. एक तांत्रिक देवी (को०) । ४ एक बोधिसत्व (को०) ।

विष्कम्भी^२—वि० बाधा डालनेवाला । बाधक [को०] ।

विष्क—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो गई हो ।

विष्कन्न—वि० [स०] १. इतस्ततः । बिखरा हुआ । २. गत । जो चला गया हो [को०] ।

विष्कन्ध—वि० [स०] स्थिर किया हुआ । जिसे टिकाया गया हो । अवलंबित [को०] ।

विष्कर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. पत्नी । चिडिया । २ अर्गल । व्योडा । ३. एक दानव का नाम । ४. युद्ध का एक ढंग (को०) ।

विष्कल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सूअर । ग्रामशूकर ।

विष्कलन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भोजन । आहार ।

विष्किर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. पत्नी । चिडिया । २. वे पत्नी जो अन्न को धर उधर छिनराकर नखों से कुरेदकर खाते हैं । जैसे,—कवूतर, मुरगा, तीतर, बटेर आदि । ३. दर्वीकर नामक जाति के साँपों के अंतर्गत एक प्रकार का साँप । ४. एक अग्निविशेष (को०) । ५. फाड़कर टुकड़े टुकड़े करना (को०) ।

विष्कुम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्कुम्भ] दे० 'विष्कम्भ' १ ।

विष्टम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्टम्भ] १ बाधा । रुकावट । २. एक प्रकार का रोग जिसमे मल रकने के कारण रोगी का पेट फूल जाता है । अनाह । बिबध । ३. आक्रमण । चढ़ाई । ४. अच्छी तरह से जमाना । ७ कदम रखना । डग भरना (को०) । ८. अवलंब आसरा । सहारा (को०) । ९ सहन । बरदाश्त (को०) ।

विष्टम्भन—सञ्ज्ञा पुं० [स० विष्टम्भन] १. रोकने या संकुचित करने की क्रिया । २ वह जो रोकता या संकुचित करता हो ।

विष्टम्भित—वि० [स० विष्टम्भित] १ मजबूती से खड़ा किया हुआ । अच- । २ (किसी वस्तु से) भरा या पूर्ण ढका

विष्टम्भी^३—[विष्टम्भिन्] वह पदार्थ जिससे पेट का मल

व-

१ देनेवाला । २ स्तमित करने म रोग युक्त । ४. विष्टंभ रोग

विष्ट—वि० [म० विश्+क्त (प्रत्य०)] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ।
 २. सहित। युक्त [को०]।
 विष्टप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १. भुवन। लोक। २. पात्र। प्याला [को०]।
 विष्टपहारी—वि० [सं० विष्टपहारिन्] भुवनमोहन। सबको लुभाने-
 वाला [को०]।
 विष्टप्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग लोक। २. जगत्। दुनिया।
 भुवन। ससार [को०]।
 विष्टप्—सञ्ज्ञा स्त्री० मिरा चोटी। ऊँचाई [को०]।
 विष्टव्व—वि० [सं०] १. अच्छी तरह से जमाया हुआ। २. टेक लगा
 हुआ। सहारा दिया हुआ। ३. रोका हुआ। अवरोध। स्तम्भित।
 गतिहीन। ५. भरा हुआ। ६. जो पचा न हो। ७. कठोर।
 कर्कश। कडा [को०]।
 विष्टव्वि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] टेक लगाना या देना। सहारा देना।
 मजबूती से स्थिर करना [को०]।
 विष्टभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोक। ससार [को०]।
 विष्टभित्त—वि० [सं०] जो घर अपनी जगह दृढतापूर्वक स्थापित किया
 हुआ हो [को०]।
 विष्टर^१—वि० [म०] विस्तृत। लंबा चौड़ा [को०]।
 विष्टर^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. आक। मदार। २. वृत्त। पेड़। ३. पीठ।
 ४. कुश का बना हुआ आसन। कुशास्तर। आसन। ५.
 मुट्ठी भर कुश [को०]। ६. यज्ञ में ब्रह्मा का आसन [को०]।
 ७. पचीस कुशाओं से बना हुआ एक आसन। ८. एक
 देवता [को०]।
 विष्टरपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्टरपडित्त] एक वैदिक छंद।
 विष्टरवृहती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद।
 विष्टरभाक्—वि० [सं० विष्टरभाज्] जो आसन पर उपविष्ट हो।
 आसन पर बैठा हुआ [को०]।
 विष्टरश्रवा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विष्टरश्रवस्] १. विष्णु। नारायण। २.
 २ कृष्ण [को०]। ३. शिव [को०]।
 विष्टरस्थ—वि० [सं०] आसन पर बैठा हुआ [को०]।
 विष्टरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गुडासिनी नामक घास।
 विष्टराश्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथु के एक पुत्र का नाम।
 विष्टरहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पीली केतकी।
 विष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विष्टा'।
 विष्टार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुश या घास का आस्तरण। २. एक
 वैदिक छंद [को०]।
 विष्टारपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्टारपडित्त] एक प्रकार का वैदिक
 छंद जिसके प्रथम और चतुर्थ चरणों में १२ वर्ण होते हैं।
 विष्टारवृहती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद का नाम जिसके
 पहले और चौथे चरणों में ८ और दूसरे तथा तीसरे चरणों में
 १० वर्ण होते हैं।
 विष्टारी—वि० [सं० विष्टारिन्] विस्तारयुक्त। विस्तृत। आयामयुक्त।
 फैला हुआ [को०]।

विष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह काम जो बिना कुछ पुरस्कार दिए
 कराया जाय। वेगार। २. वेतन। तनखाह। ३. काम। ४.
 वर्षा। ५. फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवां
 करण जिसे विष्टिभद्रा भी कहते हैं। उ०—विष्टि करण
 नाम से कही जाती है।—वृहत्०, पृ० ४४२। ६. व्याप्ति।
 फैलाव [को०]। ७. प्रेषण। भेजना [को०]। ८. दे० 'विष्टिकारी'
 [को०]। ९. नरकवाम। नरक में पड़ना [को०]।

विष्टिकर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १. प्राचीन काल में राज्य का वह बड़ा
 सैनिक कर्मचारी जिसे अपनी सेना रखने के लिये राज्य की
 ओर से जमीर मिला करती थी। २. अत्याचारी। ३. बेगारो
 या दासों का अधिकारी [को०]।

विष्टिकर्मांतिक—सञ्ज्ञा पुं० [म० विष्टिकर्मान्तिक] विष्टिकारी। वह
 जिससे बिना भूति दिए काम कराया जाय [को०]।

विष्टिकारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विष्टिकारिन्] दे० 'विष्टिकर्मांतिक' [को०]।

विष्टिकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेगार। मेवक। दास [को०]।

विष्टिभद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विष्टि'—५।

विष्टिव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत।

विष्टल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दूर का स्थान। दूरवर्ती स्थान। वह जगह जो
 निकट न हो [को०]।

विष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. मल। मैला। गूदा। पाखाना। २. पेट।
 उदर [को०]। ३. मध्यभाग। अंतर [को०]।

विष्टाभुक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूअर।

विष्टाभू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मल में उत्पन्न होनेवाला कृमि [को०]।

विष्टाभूदारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ग्रामशूकर [को०]।

विष्टारुहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पीली केतकी।

विष्टाशी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विष्टाशिन्] सूअर।

विष्टित—वि० [सं०] उपस्थित। पार्श्ववत्ता [को०]।

विष्टेष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] हल्दी।

विष्णु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े
 देवता जो सृष्टि का भरण, पोषण और पालन करनेवाले तथा
 ब्रह्मा के एक विशेष रूप माने जाते हैं।

विशेष—भारतवर्ष में विष्णु की देवता के रूप में बहुत दिनों से
 मानते चले आते हैं और इनकी उपासना बहुत अधिकता से
 होती आई है। ऋग्वेद में यद्यपि विष्णु गौण देवता माने गए
 हैं, पर ब्राह्मण ग्रंथों में इनका महत्त्व बहुत अधिक है। ऋग्वेद
 में विष्णु विशाल शरीरवाले और युवक मान गए हैं और
 कहा गया है कि ये त्रि+वि+क्रम अर्थात् तीन कदमों या
 डगों से सारे विश्व को आतिक्रमण करनेवाले हैं। पुराणों के
 वामन अवतार का यही बीज रूप है। कुछ लोगो ने इन तीनों
 डगों या कदमों का अर्थ सूर्य का दैनिक उदय और अस्त माना
 है और कुछ लोग इसका अर्थ भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक
 लेते हैं। इसके प्रतिरिक्त ये नियमित रूप, बहुत दूर तक और
 जल्दी जल्दी चलनेवाले मान गए हैं। यह भी कहा गया है कि
 ये इन्द्र के मित्र थे और वृत्र के साथ युद्ध करने में इन्होंने इन्द्र को
 सहायता दी थी। विष्णु और इन्द्र दोनों मिलकर वातावरण,

अतरिक्ष, सूर्य, उपा और अग्नि के उत्पादक माने गए हैं और विष्णु इस पृथ्वी, स्वर्ग और सब जीवों के मुख्य आधार कहे गए हैं। ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण में कुछ ऐसी कथाएँ भी हैं जो पौराणिक काल के वराह, मत्स्य तथा कूर्म अवतार का भी मूल या आरम्भिक रूप मानी जा सकती हैं। वैदिक काल में विष्णु धन, वीर्य और वन देनेवाले तथा मन्त्र लोगों का अभीष्ट सिद्ध करनेवाले माने जाते थे। पुराणों के अनुसार विष्णु ममय पर पृथ्वी का भार हलका करने के लिये, ससार में शांति और सुख की स्थापना करने के लिये और दुष्टों तथा पापियों का नाश करने के लिये अवतार धारण किया करते हैं। विष्णु के कुल चौबीस अवतार कहे गए हैं, जिनमें से दस मुख्य माने गए हैं (दे० 'अवतार')।

भिन्न भिन्न पुराणों में विष्णु के स्वयं में अनेक प्रकार की कथाएँ और उनकी उपासना आदि का बहुत अधिक माहात्म्य मिलता है। विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाते हैं। इनकी स्त्री का नाम श्री या लक्ष्मी कहा गया है। ये भुवक, श्यामवर्ण और चतुर्भुज माने गए हैं। ये चारों हाथों में शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए रहते हैं। इनके शङ्ख का नाम पाञ्चजय, चक्र का नाम सुदर्शन और गदा का नाम कौमोदकी है। इनकी तलवार का नाम नन्दक और धनुष का नाम शङ्खा है। इनका वाहन वैनतेय नामक गण्ड माना जाता है। पुराणों में इनके एक हजार नाम माने गए हैं, और उन नामों का जप बहुत शुभ फल देनेवाला माना जाता है। नारायण, कृष्ण, वैकुण्ठ, दामोदर, केशव, माधव, मुरारि, अच्युत, हृषीकेश, गोविन्द, पोतावर, जनार्दन, चक्रपाणि, श्रीपति, मधुसूदन, हरि आदि इनके प्रसिद्ध नाम हैं।

२ अग्नि । ३. वसु देवता । ४ वारह आदित्यों में से पहले आदित्य का नाम । ५ एक प्राचीन ऋषि जिनका बनाया हुआ धर्मशास्त्र प्रचलित है । ६ श्रवण नाम का नक्षत्र (को०) । ७ वह जो पुण्यदाता हो । सत (को०) ।

विष्णुऋक्ष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] श्रवण नक्षत्र का एक नाम ।

विष्णुकद—सञ्ज्ञा पु० [सं० विष्णुकन्द] एक प्रकार का बड़ा कद जो प्रायः कोकण प्रदेश में होता है। वैद्यक में यह मधुर, शीतल, रुचिकारी, तृप्तिकारक तथा दाह, पित्त और सूजन को दूर करनेवाला माना जाता है ।

पर्या०—विष्णुगुप्त । सुपुष्ट ? (सुपुष्ट) । बहुसपुष्ट । जलवासा । वृहत्कद । दीर्घपत्र । हरिप्रिय ।

विष्णुकाची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकाञ्ची] दक्षिण के एक प्राचीन तीर्थ का नाम । कहते हैं कि इसकी स्थापना शंकराचार्य ने की थी ।

विष्णुकाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकान्ता] नीली अपराजिता । नीली कोयल लता ।

विष्णुकाती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकान्ती] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

विष्णुकाक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नीला अपराजिता । नीली कोयल लता ।

विष्णुक्रात—सञ्ज्ञा पु० [सं० विष्णुक्रान्त] १ इक्ष्वाकु नामक लता या उसका फूल । २. सगोत्र में एक प्रकार का ताल ।

विष्णुक्राता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ता] १. नीली अपराजिता या कोयल नाम की लता । २ वाराहीकद । गेंठा । ३ नीले फूलवाली शखाहुली ।

विष्णुक्रान्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ति] अपराजिता या कोयल नाम की लता ।

विष्णुक्षेत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एय प्राचीन तीर्थ का नाम ।

विष्णुगंगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुगङ्गा] एक प्राचीन नदी का नाम ।

विष्णुगन्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुगन्धि] लाल फूल की शखाहुली ।

विष्णुगुप्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि और व्याकरण जो लोक में कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध थे । कहते हैं, एक बार शिव जी इनपर बहुत कुपित हुए थे । उस समय विष्णु ने इनकी रक्षा की थी । २ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम । विशेष दे० 'चाणक्य' । ३. बड़ी मूली । ४. विष्णुकद । ५ वात्स्यायन मुनि का नाम (को०) ।

विष्णुगुप्तक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] बड़ी मूली ।

विष्णुगृह—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु भगवान का मन्दिर । २ एक नगर । स्तवपुर । ताञ्जलित (को०) ।

विष्णुगोल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विषुव रेखा (को०)

विष्णुग्रन्थि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुग्रन्थि] शरीर की एक संधि (को०) ।

विष्णुचक्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विष्णु के हाथ का चक्र । सुरर्शन चक्र ।

विष्णुज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] अठारहवें कल्प का नाम (को०) ।

विष्णुज—वि० जो विष्णु नक्षत्र में उत्पन्न हो । श्रवण नक्षत्र में जन्म लेनेवाला (को०) ।

विष्णुजन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] संत । महान्मा । तपस्वी (को०) ।

विष्णुतिथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियाँ जिनके स्वामी विष्णु माने जाते हैं ।

विष्णुतैल—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल जो वातरोगों के लिये बहुत उपकार माना जाता है ।

विष्णुत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विष्णु का भाव या धर्म ।

विष्णुदत्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] राजा परोक्षिन का एक नाम (को०) ।

विष्णुदेवत—सञ्ज्ञा पु० [सं०] श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं ।

विष्णुदैवत्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. वह जिनके अविष्टाता देवता विष्णु हो । २. श्रवण नक्षत्र (को०) ।

विष्णुदैवत्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माघ के प्रत्येक पक्ष की एकादशी और द्वादशी तिथि । विष्णु तिथि (को०) ।

विष्णुद्वीप—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम ।

विष्णुधर्म—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वह धर्म जिसमें विष्णु का वैदिक उपासना होती है । २ एक प्रकार का श्राद्ध (को०) ।

विष्णुधर्मोत्तर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक उपपुराण का नाम जो विष्णु पुराण का एक अंग माना जाता है ।

विष्णुवारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्राचीन तीर्थ का नाम । २ पुराणानुसार हिमालय से निकली हुई एक नदी का नाम ।

विष्णुपंजर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विष्णुपञ्जर] पुराणानुसार विष्णु का एक कवच ।
 विशेष—कहते हैं, यह कवच धारण करने से सब प्रकार के भय दूर हो जाते हैं ।
 विष्णुपत्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु की स्त्री, लक्ष्मी । २ अदिति का एक नाम ।
 विष्णुपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कमल । २. आकाश । आसमान । विषद । ३ विष्णु का चरणचिह्न जो गया में है (को०) । ४ क्षीरसागर, दुग्ध समुद्र (को०) । ४ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम (को०) । ६ एक पर्वत (को०) । ७ भीहो का मध्य भाग । भूमध्य (को०) ।
 विष्णुपदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा नदी जो विष्णु के पैरों से निकली हुई मानी जाती है । २ वृष, वृश्चक, कुम्भ और सिंह इनमें से प्रत्येक की सक्ताते । ३ द्वारिका पुरी (को०) ।
 विष्णुपदीचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में शुभाशुभ फल का ज्ञापक एक नराकार चक्र (को०) ।
 विष्णुपरायण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का भक्त, वैष्णव ।
 विष्णुप्राणिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिव्याणां । पिठवन ।
 विष्णुपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भृङ्गैर्वावला ।
 विष्णुपीठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ताम्रिको के अनुसार एक पीठ या तीर्थ-स्थान का नाम ।
 विष्णुपुराण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अठारह प्रमुख पुराणों में से एक ।
 विष्णुपुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु के रहने का स्थान, वैकुण्ठ ।
 विष्णुप्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी का पौधा । २ लक्ष्मी ।
 विष्णुप्रीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की पूजा के निमित्त ब्राह्मण को दी जानेवाली भूमि (को०) ।
 विष्णुभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु नक्षत्र । श्रवण नक्षत्र (को०) ।
 विष्णुभक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भगवत्सेवा (को०) ।
 विष्णुमाया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।
 विष्णुमित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सार्वभौमिक नाम । अमुक । फलां (को०) ।
 विष्णुयश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुयशस् पुराणानुसार वह व्यक्ति जो ब्रह्मयज्ञ का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता होगा ।
 विष्णुयान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गरुड (को०) ।
 विष्णुरथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गरुड ।
 विष्णुराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा परीक्षित का एक नाम ।
 विशेष—कहते हैं, अश्वत्थामा ने इन्हे गर्भ में ही मार डाला था, पर विष्णु ने इन्हे फिर से जिला दिया, इसी से इनका यह नाम पड़ा ।
 विष्णुलिङ्गी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णुलिङ्गी बटेर ।
 विष्णुलोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का निवासस्थान, वैकुण्ठ । गोलोक ।
 विष्णुवल्लभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी का पौधा । २ लक्ष्मी (को०) । ३. अग्निशिखा । कलिहारो ।
 विष्णुवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गरुड ।

विष्णुवाह्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विष्णुवाहन' ।

विष्णुवृद्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गात्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

विष्णुशक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

विष्णुशिला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शालग्राम ।

विष्णुशृङ्खल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुशृङ्खल वह द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में हो । इसको गणना योग श्रीग पुराणकाल में होती है ।

विष्णुश्रुत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम । २ एक प्रकार का आशीर्वाद वचन जिसका अभिप्राय है कि यह सुनकर विष्णु तुम्हारा मंगल करें ।

विष्णुसहिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्मृति का नाम ।

विष्णुसर्वज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जो सायण के गुरु माने जाते हैं ।

विष्णुस्मृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्मृति जिसका उल्लेख याज्ञवल्क्य आदि ने किया है ।

विष्णुस्वामी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुस्वामिन् कृष्णभक्तिपरक विष्णु-स्वामी संप्रदाय के प्रवर्तक का नाम । उ०—इन विष्णु स्वामी संप्रदाय दृढ करि ताकी सार जो सेवा प्रकार ताकी प्रकास कियो है ।—दो सौ बावन०, भ० १, पृ० १४४ ।

विष्णुहिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुलसी का पौधा । २ मरुमा ।

विष्णुत्तर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह भूदान जो विष्णुपूजा के निमित्त किया जाय (को०) ।

विष्णुपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपद १. स्पन्दन । घडकन । २ आटे, धी और चीनी से बना हुआ एक व्यञ्जन (को०) ।

विष्णुपदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपदन दे० 'विष्णुपद' ।

विष्णुपत्री—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पत्ता । चडिया ।

विष्णुपर्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपर्वा, स्वर्ग ।

विष्णुपर्वा—वि० जिस किसी प्रकार की स्पर्धा या मत्सर आदि न हो ।

विष्णुपर्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्पर्धा । होड । लाग डांट (को०) ।

विष्णुपित्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कठिनता । कठिनाई । मुश्किल (को०) ।

विष्णुलिङ्गक—वि० [सं०] चिनगारी या स्फुलिग युक्त (को०) ।

विष्णुफार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ धनुष की टकार । २, विस्तार । फैलाव । विस्फार (को०) ।

विष्णुलिङ्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आग की चिनगारी । अग्निक्षण (को०) ।

विष्णुपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपद १ बूँद । विंदु । २ बहना । क्षरण । प्रवाह ।

विष्णुपदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपदन १. बहना । चूना । २. एक मिठाई । दे० 'विष्णुपद' । ३. उफनकर बहना । ४. पिघलना । तरल होना (को०) । ५. विलीन होना । मिल जाना ।

विष्णुदी—वि० [सं०] विष्णुन्दिन् प्रवाही । तरल (को०) ।

विष्णु—वि० [सं०] जो विष देकर मार डालने के योग्य हो । जहर देकर मार डालने के लायक ।

विष्णु—वि० [सं०] १. हानिकार । पीडाकर । उत्पातकारी । २. हिंसक । हिंस्र (को०) ।

विष्वक्^१—सञ्ज्ञा पु० [सं विष्वक्] १ वह जो सदा इधर उधर घूमता फिरता रहे । २ 'विपुव' ।

विष्वक्^२—क्रि० वि० सर्वत्र । चारो ओर [को०] ।

विष्वक्^३—वि० सर्वत्र जानेवाला । सर्वव्यापक । २. विभागो मे अलग अलग करनेवाला । ३ भिन्न ।

विष्वक्पर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] भुईभ्रावला ।

विष्वक्सेन—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. विष्णु का एक नाम । २ एक मनु का नाम जो मत्स्यपुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णुपुराण के अनुसार चौदहवें हैं । ३. शिव का एक नाम । ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम । ५ पुराणानुसार शंकर के एक पुत्र का नाम । ६ विष्णु का एक पार्षद (को०) ।

यौ०—विष्वक्सेनकाता = प्रियगु । विष्वक्सेनप्रिया = (१) प्रियगु । (२) लक्ष्मी ।

विष्वक्सेना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] प्रियगु ।

विष्वग्गति—वि० [सं] सर्वत्र गमन करनेवाला [को०] ।

विष्वग्लोप—सञ्ज्ञा पु० [सं] दुवधा । संभ्रम । सन्तोष । विघ्न ।

विष्वग्वात, विष्वग्वायु—सञ्ज्ञा पु० [सं] सब ओर से बहनेवाली एक प्रकार की वायु ।

विष्वाण—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. भोजन । २. वर्णित करना । शब्द उत्पन्न करना [को०] ।

विष्वाण—सञ्ज्ञा पु० [सं] भोजन । खाना [को०] ।

विसकट^१—सञ्ज्ञा पु० [सं विसङ्कट] १. इगुदी या हिगोट नामक वृक्ष । २. सिंह । शेर ।

विसकट^२—वि० विशाल । खोफनाक । बड़ा । डरावना ।

विसकुल^१—वि० [सं विमटकुल] सकुलतारहित । आकुलतारहित । धैर्यवान् । सुस्थिर ।

विसकुल^२—सञ्ज्ञा पु० अव्यग्रता । व्यग्र न होना । ध्वराहट न होना [को०] ।

विसगत—वि० [सं विसङ्गत] असगत । वेमेल [को०] ।

विसगति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विसङ्गति] असगति । अनमिलपन ।

विसचारी—वि० [सं विसञ्चारिन्] इतस्ततः भ्रमणशील । इधर उधर घूमनेवाला ।

विसञ्ज्ञ—वि० [सं] जिसे सञ्ज्ञा न हो । बेहोश ।

विसञ्ज्ञित—वि० [सं] सञ्ज्ञाहीन [को०] ।

विसधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विसन्धि] १ बुरी सधि । अभिसधि । अनभिमत सधि । २. सधि का अभाव जो साहित्य मे एक दोष है [को०] ।

विसधिक—वि० [सं विसन्धिक] जिनकी सधि न हो सकती हो ।

विसभर^१—सञ्ज्ञा पु० [सं विसम्भर] १ 'विश्वभर' । उ०—तू मेरो बालक हो नदनदन, तोहि विसभर राखै ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २३४ ।

विसभरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विसम्भरा] पत्नी । छिपकली [को०] ।

विसभोग—सञ्ज्ञा पु० [सं विसम्भोग] विरह । पार्थक्य [को०] ।

विसंमूढ—वि० [सं विमम्भूढ] पूर्णतः उन्मत्त [को०] ।

विसंयुक्त—वि० [सं] असंयुक्त । पृथक् [को०] ।

विसवाद^१—सञ्ज्ञा पु० [सं] १. विरोध । २. हाँट बपट । ३. घाखा । प्रतिज्ञाभंग [को०] । ४ असंगति । असवद्धता । असहमत [को०] । ५ निराश करना [को०] ।

विसवाद^२—वि० विलक्षण । अद्भुत ।

विसवादक—वि० [सं] १. वचन भंग करनेवाला । कहकर मुकर जानेवाला । २ छला । धोखेबाज [को०] ।

विसवादन—सञ्ज्ञा पु० [सं] प्रतिज्ञा भंग करना [को०] ।

विसवादी^१—वि० [सं विसवादिन्] १. वक्ता । धूर्त । २ वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला । ३. निराश करनेवाला । ४. खडन करनेवाला । भिन्न मत रखनेवाला । असहमत [को०] ।

विसवादी^२—सञ्ज्ञा पु० राग मे अल्पप्रयुक्त स्वर जो सवादी के विरुद्ध होता है (संगीत) ।

विसंछुल—वि० [सं] १ अस्थिर । क्षुब्ध । व्यग्र । २ जो हमवार न हो । असमतल [को०] ।

विसहत—वि० [सं] १ अलग किया हुआ । डोला किया हुआ [को०] ।

विस^१—सञ्ज्ञा पु० [सं] कमल की नाल । मृणाल ।

विस^२—सर्व० [सं युष्मद् > वस्] दे० 'उस' ।

विसकठिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं विसकण्ठिका] एक प्रकार का छोटा बगला ।

विसकुसुम—सञ्ज्ञा पु० [सं] कमल ।

विसक्ख^१—सञ्ज्ञा पु० [सं विशिख] विशिख । बाण । उ०—उभे दले उचारयं, मचे सु मार मारय । विसक्ख, पारवारण, भडाँ सनाह मारण ।—रा० रू०, पृ० ८३ ।

विसग्रथि—सञ्ज्ञा पु० [सं विसग्रन्थि] कमलकद । भसीड ।

विसज—सञ्ज्ञा पु० [सं] कमल ।

विसटी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [दे० तुल० विष्टी] १. ताँबे या पीतल का वह चक्र जिससे नागसाधु लँगोटी की तरह बाँधते हैं । उ०—कवन मेखला कवन विसटी । कवन सेली कवन किसती ।—प्राण०, पृ० ७६ । २. कोपीन । चिट । चीरा ।

विसतरना^१—क्रि० अ० [सं विस्तरण] फैलना । विस्तृत होना । उ०—विसतरी वात सारो विसव अणकारी उतपात सी ।—रा० रू०, पृ० ६४ ।

विसदृश—वि० [सं] १. जो सदृश या समान न हो । विपरीत । विरुद्ध । उलटा । २ विलक्षण । अद्भुत । अजीब ।

विसद्द^१—वि० [सं विशद] निर्मल । स्वच्छ । दे० 'विशद' । उ०—गुलिवक कर्ण राजही । विसद् हार साजहो । पदिवक सीस शोभयं रिपीस पुंज लोभयं ।—प० रासो, पृ० १० ।

विसन^१—सञ्ज्ञा पु० [सं विष्णु] दे० 'विष्णु' ।

विसनाभि—सञ्ज्ञा पु० [सं] कमलिनी । पद्मिनी ।

विसन्न^१—सञ्ज्ञा पु० [सं व्यसन, प्रा० विमन] १. आदत । दे० 'व्यसन' । उ०—बाघ डरै नह वर सु बाघा वर विमन ।—चाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १६ । २. विपत्ति । संकट । उ०—वेदा नयें विसन्न ।—रा० रू०, पृ० १३७ ।

विसप्रसून—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कमल ।—नंद० ग्रं०, पृ० ११० ।
 विसभाग—वि० [सं०] जिसका विभाग या हिस्सा न हो [को०] ।
 विसम पुं०—वि० [सं० विपम] दे० 'विपम' ।
 विसमता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विपमता] दे० 'विपमता' ।
 विसमाद पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्मय + ता] १ सशय । शका । २. दुःख । वेदना । उ०—कडिहारी श्रीर गृही को, कोई ना जाने अत । विन परचै विसमाद है, हरपत परचै सत ।—कबीर सा०, पृ० ६५ ।
 विसमावर्त—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० विस्माद] दे० 'विस्माद' ।
 विसमाधना—क्रि० अ० [हिं० विसमाध + ना (प्रत्यय)] मसूसना । दुःखी होना । शोकात् हाँसना ।
 विसमाप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] असमाप्ति । पूर्ण न होना [को०] ।
 विसमै पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वि० + समय] विकट समय । उ०—सोनागिर चाँपावत हाथ खग तोले । विसमै में द्रढ देण कोप बँए बोले ।—रा० रू०, पृ० ११४ ।
 विसमै पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्मय] अचभा । आश्चर्य । उ०—कहँ मैं विसमै सो देखे वन आवैं ।—रा० रू०, पृ० ४२ ।
 विसयना—क्रि० अ० [सं० वि० + शयन ?] डूबना । समाप्त होना । अस्त होना ।
 विसर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ आगे जाना । गमन करना । जाना । २ फँलना । बढना । विस्तृत होना । ३ भीड । समूह । भुँड । ४ राशि । ढेर [को०] ।
 विसरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फँलना । विस्तृत होना । २ खस्त होना । ढँला पडना [को०] ।
 विसराम पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्राम] दे० 'विश्राम' । उ०—तन को विसराम अराम घनो करि दीजतु है पँ न दीजतु है ।—ठाकुर०, पृ० ६ ।
 विसर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दान । २ त्याग । ३ मल का त्याग करना । शीघ्र । ४ व्याकरण के अनुसार एक वण जिसमें ऊपर नीचे दो बिंदु होते हैं और जिनका उच्चारण प्रायः अर्ध हु के समान होता है । इसका रूप यह (.) होता है । ५. सूर्य का एक अयन । ६ मोक्ष । ७ मृत्यु । ८ प्रलय । ९ वियोग । विच्छेद । १०. दीप्ति । चमक । ११ सूर्य का दक्षिणायन । वर्षा, शरद और हेमंत ये तीनों ऋतुएँ । १२ भोजना । प्रेषण । विसर्जन । [को०] । १३. गिराना । उडेलना । बूँद बूँद करके गिराना [को०] । १४ क्षेपण । डालना । फेंकना [को०] । १५. निर्माण । रचना [को०] । १६ शिशन [को०] । १७ सृष्टि का व्यापार [को०] । १८ शिव का नाम [को०] ।
 विसर्गी—वि० [सं० विसर्गिन्] दान या त्याग करनेवाला [को०] ।
 विसर्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ परित्याग । छोड़ना । उ०—अब मुझे प्राण विसर्जन करने में भी आगा पीछा नहीं है ।—राधाकृष्ण (शब्द०) । २ किसी को यह कहकर भोजना कि तुम जाकर अमुक कार्य करो । ३ विदा होना । चला जाना । प्रस्थान करना । ४. पोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार अर्थात्

आवाहन किए हुए देवता से पुन स्वस्थान गमन की प्रार्थना करना । ५ समाप्ति । अतः । उ०—कथा विसर्जन हाति है सुनौ वीर हनुमान ।—(शब्द०) । ६ दान । ७ मनत्याग [को०] । ८. डालना । गिराना [को०] । ९ चान के लिये पशुश्री का हाँकना [को०] । १० प्रतिष्ठा का जल म बहाना [को०] । ११. वृषोत्सव । साँट छोड़ना [को०] । १२ निर्माण । रचना [को०] । १३ क्षतिग्रस्त करना [को०] । १४ उत्तर देना [को०] ।

विसर्जनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गुदा के ऊपरी भाग में स्थित तीन वलयों में से एक [को०] ।

विसर्जनीय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विसर्ग' ।

विसर्जनीय—वि० विसर्जन किया जानेवाला । त्यागने योग्य [को०] ।

विसर्जयिता—वि० [सं० विसर्जयितृ] विसर्जन करनेवाला । त्यागनेवाला [को०] ।

विसर्जिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] त्रेता युग [को०] ।

विसर्जित—वि० [सं०] १ त्यागा हुआ । त्यक्त । २ प्रेषित । भेजा हुआ । ३ हटाया हुआ । च्युत । ४ प्रदत्त ।

दिसर्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रोग, जिसमें ज्वर के साथ सारे शरीर में छोटी छोटी फुमियाँ हो जाती हैं । २ रँगना । मरकना [को०] । २ इधर उधर जाना । हिलना डुलना [को०] । ४. फँलाव । संचार [को०] । ५ किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित दुःखद फल [को०] ।

विर्पघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मोम [को०] ।

विसर्पण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फँलना । फँलाव । वृद्धि । बाढ । २ फोड़े आदि का फूटना । ३ फँकना । ४ रँगना । सरकना । धीरे धीरे चलना [को०] । ५ परित्याग [को०] ।

विसर्पि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विसर्पिका' ।

विसर्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विमर्ष नामक रोग ।

विसर्पिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] यवतिका नाम की लता । विशेष दे० 'शंखिनी' ।

विसर्पी—वि० [सं० विसर्पिन्] १. प्रनरणशील । फँलनेवाला । उ०—उठ उठ ह्याँ ते भागु तो लौं अनागे । मम वचन विसर्पी सर्प जो लौं न लागे ।—केशव (शब्द०) । २ रँगने या सरकनेवाला [को०] । ३ विसर्प रोग से पीडित [को०] ।

विसल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का नया पत्ता । पल्लव । विसल ।

विसल्वकृत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भद्रवल्ली ।

विसव पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्व] जगत् । दुनियाँ । उ०—(क) विसतरी बात सारी विसव अणकारी उत्पान सी ।—रा० रू०, पृ० ६४ । (ख) विसव अवर जवनाँ वसू करे सकी मिल काज ।—रा० रू०, पृ० ३६० ।

विसवना—क्रि० अ० [सं० विश्रमण ? या, विस्रवणा] १ अस्त होना । जैसे, दिन विसवना । २. व्यतीत होना । बीतना । जैसे, बेर विसवना ।

विसवर्त्म—सज्ञा पुं० [सं० विसवर्त्मन्] वैद्यक के अनुसार आँखों का एक प्रकार का रोग जिसमें विशेष के प्रकोप के कारण पलकों में सूजन हो आती है और उममे छोटी छोटी कुँसियाँ हो आती हैं जिनमें से पानी बहा करता है।

विसवासह—सज्ञा पुं० [सं०] जाविनी।

विसवासा—सज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री।

विसशालुक—सज्ञा पुं० [सं०] कमलकद। भमीट।

विसाति^७—सज्ञा स्त्री० [अ० विसाति] १ शक्ति। हकीकत। २. गणना। उ०—मुनि मुरपती नाचि बहु भांति। नर वपुरे की काह विमाति।—जग० ज०, पृ० ६६।

विसामग्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सामग्री या माघन का अभाव। २. कारण का न होना जिससे कार्य की उत्पत्ति हो [को०]।

विसार—सज्ञा पुं० [सं०] १ मछली। २ निर्गम। निकलना। ३. विस्तार। फैलाव। ४ प्रवाह। बहाव। ५ उत्पत्ति। ६ रेंगना या सरकना [को०]। ७ लकड़ी। काष्ठ [को०]। ८. बल्ली। गहतीर [को०]।

विसारथि—वि० [सं०] जिसके पाम सारथी न हो [को०]।

विसारिणी^१—वि० [सं० विमारिन्] फैलनेवाली। प्रसरणशील [को०]।

विसारिणी^२—सज्ञा स्त्री० [सं०] मापपण्णी। मखवन।

विसारित—वि० [सं०] १ जिसका विसार किया गया हो। २. नपादित [को०]।

विसारी^१—वि० [सं० विमारिन्] १. फैलनेवाला। प्रसार करनेवाला। २. विसार करनेवाला। निकलनेवाला। ३. रेंगने या सरकने वाला। ४. विस्तृत [को०]।

विसारी^२—सज्ञा पुं० मछली [को०]।

विसारी^३—सज्ञा पुं० [सं०] वायुमंडल।

विसाल^१—सज्ञा पुं० [श०] १ मयोग। मिलाप। २ आत्मा का ईश्वर से मिलना। मृत्यु। मौन। ३ प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप।

विसाल^२—वि० [सं० विणाल] १. विणाल।

विसावण^७—वि० म० [वि०] १. 'विमाहना'। उ०—वैर हमेम विमावणा वाड बिना वसणीह।—साकी ग्र०, भा० १, पृ० २३।

विसासी^१—वि० [सं० अविवशानी] [वि० स्त्री० विमामिनी] १. 'विमासी'। उ०—तू उसी विमामी से पूछ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १४।

विसिंचित—वि० [सं० वि+हि० सिंचित (सं० मेवन)] सींचा हुआ। उ०—मुहुन के जल में विमिंचित कल्प किंचित् विश्व उपवन।—अपरा, पृ० १६५।

विसिरा^१—सज्ञा पुं० [सं० विमिच] १. 'विमिच'। उ०—वर्षा अधिक न उमे याज तेरे विरह के निसिच से मारा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७।

विसिनी^१—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमिनी। पद्मिनी। मृणाल। २. पद्म।

विसिनी^२—सज्ञा पुं० [सं० व्यसनी] १. 'व्यसनी'।

विसिल—वि० [सं०] मृणाल पदमी [को०]।

विमुकर्मा^७—सज्ञा पुं० [सं० विमुकर्म] १. 'विमुकर्म'। उ०—विमुकर्मा रुचि घटन अमन सोभा मुनि जानिय।—प० रामो, पृ० १६६।

विमुकृत—सज्ञा पुं० [सं०] घर्म के विरुद्ध कार्य। पाप। गुनाह।

विमुख—वि० [सं०] सुगहीन। आनंदरहित [को०]।

विमुघ—वि० [हि० वे+मुघ] १. 'वेमुघ'। उ०—तुममे ही आश्रय पाते, ये प्रणय विमुघ मतवाले। कितनी आहों के शोने तुमने शीतल कर डाले।—हिलोल, पृ० ६३।

विमुहद्—वि० [सं०] जिसे कोई मुहद् न हो। मित्रहीन [को०]।

विसूचन—सज्ञा पुं० [सं०] जनाने की क्रिया। सूचित करना [को०]।

विसूचिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसे हेजा मानते हैं।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसमें पहले पेट में दर्द होता है और फिर रोगी को बहुत से दस्त आते हैं। शरीर में जलन होती है और प्यास बहुत लगती है, छाती और निर में पीड़ा होती है, अम, मूर्छा और कप होता है, जंभ ठंड आती है, निर्वलता बहुत होती है, भूख बंद हो जाता है, नाटी मंद पड़ जाती है, आँखें बंद जाती हैं, शरीर का रंग पीला पड़ जाता है और आवाज बंदन जाती है। साथ ही वायु आदि के प्रकोप के कारण सारे शरीर में मुद्द्यां दुमने की भाँ पीड़ा होती है, इससे इसे विसूचिका कहते हैं। कुछ लोग इसे हेजा भी मानते हैं, पर अधिकांश डाक्टर आदि इसे हेजे में भिन्न समझते हैं। उनका मत है कि यह विसूचिका रोग अजीर्ण के कारण होता है, और हेजा एक प्रकार के विपाक जीवाणुओं के शरीर में प्रवेश करने से होता है।

विसूची—सज्ञा स्त्री० [सं०] विसूचिका नामक रोग।

विसूत—वि० [सं०] १. अव्यवस्थित। उद्विग्न। व्याकुल। २. उदाम। रागहीन। विरक्त [को०]।

विसूरण—सज्ञा पुं० [सं०] १. दुःख। रज। शोक। २. चित्त। फिक्र। ३. विरक्ति। वैराग्य।

विसूरणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'विसूरण'।

विसूरित—सज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप। व्यथा। शोक [को०]।

विसूरिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] ज्वर [को०]।

विमृज्य—वि० [सं०] १ जिसका निमर्जन किया जाय। भेजा जाने वाला। २. उद्विग्न किया जाने वाला [को०]।

विमृज्य^१—सज्ञा पुं० [सं०] सृष्टिनिर्माण। सृष्टि का उत्पादन [को०]।

विसृत—वि० [सं०] १ कहा हुआ। २. विस्तृत। फैला हुआ। ३. विस्तारित। तना हुआ [को०]।

विसृतवर—वि० [सं०] [स्त्री० विसृतवरी] १. इस उधर फैलन या व्याप्त होनेवाला। २. विनिर्माण करने, रेंगने या सरकने वाला [को०]।

विसृमर—वि० [सं०] १. फैलनेवाला। प्रसरणशील। २. निमर्जन करनेवाला। रेंगनेवाला [को०]।

विसृष्ट^१—वि० [सं०] १. जिसकी सृष्टि या रचना विशेष प्रकार से हुई हो। विशेष रूप से बनाया हुआ। २. फैला हुआ। ३. रचाया हुआ। छोटा हुआ। बनावया या रचवाया हुआ। ४.

भेजा हुआ । ५ उत्पन्न । नि.सूत (को०) । ६ जो कार्यभार से मुक्त किया गया हो (को०) । ७ दिया हुआ । प्रदत्त (को०) ।

विसृष्ट^२—सञ्ज्ञा पुं० विसर्ग जो इस प्रकार लिखा जाता है () ।

विसृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ निर्माण । रचना । २ प्रेषण । भेजना । ३ परित्याग । ४ दान । प्रदान । ५ निषेक । स्राव । क्षरण (शुक्र का) । ६ सतान । संतति (को०) ।

विसेस^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विशेष] दे० 'विशेष' । उ०—तब प्रभुन की विसेस कृपा जाननी ।—दो सौ बावन०, पृ० १५५ ।

विसेसन(उ)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विशेषण] ३० 'विशेषण' । उ०—होत विसेसन मे बहुत, समझहु कवि कुल कात ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५३५ ।

विसोटा^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वासक] अड़सा ।

विसोढ—वि० [सं०] जो सद्म हो । सहन किया हुआ (को०) ।

विसोम—वि० [सं०] चन्द्रहीन (रात्रि) । चद्रमा से रहित (को०) ।

विसौख्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुख न होना । सौख्य का अभाव । कष्ट । पीडा । दुःख (को०) ।

विस्खलित—वि० [सं०] १ भटका हुआ । २ ठीक तरह से न निकला हुआ । लडखडाता हुआ (स्वर) । ३ त्रुटिपूर्ण । गलत । ४ गिरा हुआ । पातत । च्युत (को०) ।

विस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सोना । २ एक प्रकार का परिमाण जो एक कर्ष के बराबर होता है । ३ ८० रत्ती ।

विस्तज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुदुरु ।

विस्तर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसार । फैलाव । दे० 'विस्तार' । २ प्रेम । ३ समूह । ४ अ'सन । ५ सख्या । ६ आधार । ७ शिव का एक नाम । ८ विवरण (को०) ।

विस्तर^२—वि० बहुत । अधिक । विशेष ।

विस्तरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] बहुत या अधिक होने का भाव ।

विस्तार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लम्बे या चौड़े होने का भाव । फैले होने का भाव । फैलाव । जैसे—(क) इस मकान का विस्तार कम है । (ख) तुम बातों का बहुत अधिक विस्तार करते हो । २ पेड़ की शाखा । ३ गुच्छा । ४ शिव का एक नाम । ५. विष्णु का एक नाम । ६ विवरण । पूरा व्योरा (को०) । ७ वृत्त का व्यास (को०) । ८ झाली (को०) ।

विस्तारण—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] फैलाने की क्रिया (को०) ।

विस्तारता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तार का भाव । फैलाव ।

विस्तारना(उ)—क्रि० सं० [सं० विस्तरण] फैलाना । विस्तृत या व्याप्त करना ।

विस्तारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] सगीत को एक श्रुति (को०) ।

विस्तारित—वि० [सं०] विस्तृत किया हुआ । फैलाया हुआ । बढ़ाया हुआ (को०) ।

विस्तारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्तारिन्] १ वह जिसका विस्तार अधिक हो । बड़ा । विशाल । २. वह जिसकी शक्ति अधिक हो । ३. बरगद । बड़ ।

विस्तीर्ण—वि० [सं०] १. जो दूर तक फैला हुआ हो । विस्तृत । २. विशाल । बहुत बड़ा । ३. विपुल । बहुत अधिक ।

विस्तीर्णकर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथी ।

विस्तीर्णजानु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] टेढ़े पैरोवाली लडकी । प्रगतजानु कन्या, जिसे विवाह के अयोग्य कहा गया है (को०) ।

विस्तीर्णता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तीर्ण होने का भाव । विस्तार । फलाव । उ०—क्षतिज की विस्तीर्णता का पवन अचल हिल गया है ।—कवासि, पृ० १०० ।

विस्तीर्णपण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मानकद ।

विस्तीर्णभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लालतविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम ।

विस्तुर^१—वि० [दश०] दूर । श्रोमन । बिहतुर । उ०—एकी रोवा विस्तुर होइ है, धीर धीर मुगरिन्ह पीटी ।—सत० दरिया, पृ० १२६ ।

विस्तृत—वि० [सं०] १ जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो । लंबा चौड़ा । विस्तारवाला । जैसे, वहाँ आप लोगों के लिये बहुत विस्तृत स्थान है । २ यथेष्ट विवरणवाला । जिसके सब अंग या मव बातें बतलाई गई हो । जैसे,—इस ग्रंथ में नाटक के स्वरूप का बहुत विस्तृत वर्णन है । ३ बहुत बड़ा या लंबा चौड़ा । विशाल । ४ बड़ा हुआ । विकसित (को०) । ५ प्रचुर । अधिक (को०) । ६ व्याप्त (को०) ।

विस्तृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ फैलाव । विस्तार । २. व्याप्ति । ३. लवाई, चौड़ाई और ऊँचाई या गहराई । ४ वृत्त का व्यास ।

विस्थान—वि० [सं०] १ दूधरे से सबंध रखनेवाला । २ अन्य स्थान से सबद्ध । अन्य लिंग का । जैसे, वर्ण या व्वनि (को०) ।

विस्थापन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दूधरे स्थान पर ले जाने की क्रिया (को०) ।

विस्थापित—वि० [सं०] दूधरे स्थान से लाकर बसाया गया । उ०—विस्थापित हैं, हम घरती के विस्थापित हैं ।—रजत०, पृ० २८ । २ जिन्हें उत्पीडित कर घर द्वार से रहित कर दिया गया हो ।

विस्तु(उ)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विष्णु] दे० 'विष्णु' । उ०—विस्तु, नराइन, नरपती, वनमला हरि स्थाम ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५४४ ।

विस्पद—सञ्ज्ञा पुं० [मं० विस्पन्द] १ धडकन । २ एक प्रकार का व्यञ्जन । ३. बूँद । कण (को०) ।

विस्पष्ट—वि० [मं०] १ सीधा । साफ । सुबोध । २ प्रकट । स्फुट । प्रत्यक्ष । खुला हुआ (को०) ।

विस्फार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० विस्फारित] १ धनुष की टकार । कमान का शब्द । २ धनुष की डोरी । ज्या । ३ विस्तार । फैलाव । ४ स्फूर्ति । तेजो । ५ विकास । ६ काँपना । बार बार हिलना ।

विस्फारक—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] एक प्रकार का सन्निगत ज्वर जो बहुत ही भयंकर होता है और जिसमें रोगी को खाँसी, मूर्छा, माह और कफ आदि होता है ।

विस्कारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. खोलना । २ प्रसारित करना या फैलाना (पख) [को०] ।

विस्कारित^१—वि० [सं०] १ खोला हुआ । फैलाया हुआ । २. फैला हुआ या फाड़ा हुआ । जैसे, विस्कारित नेत्र । ३ प्रकट किया हुआ । ४ जिसे कँपाया गया हो । जिसमें थरथराहट पैदा का गई हो । ५ काँपता हुआ । कपमान । थरथराता हुआ । ६ टंकारयुक्त [को०]

विस्कारित^२—सञ्ज्ञा पुं० धनुष चढ़ाना या वाण चलाना [को०] ।

विस्फीत—वि० [सं०] अधिक । प्रचुर । बहुत ज्यादा [को०] ।

विस्फुट—वि० [मं०] १ मुष्पट । खुला हुआ । व्यक्त । प्रकट किया हुआ । २ विकसित । खिला हुआ [को०] ।

विस्फुटित—वि० [सं०] दे० 'विस्फुट' ।

विस्फुर—वि० [सं०] चपल नेत्रवाला । खुली आँखोंवाला [को०] ।

विस्फुरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कंपन । २ कौटना । (विजली का) । ३. फड़कना । उ०—ठहर गए नृप वही विटप को छाँह में ।
हुआ विस्फुरण शकुन रूप वर बाँह में ।—शकु० पृ० ४७ ।

विस्फुरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिट्ठु नामक वृक्ष ।

विस्फुरित—वि० [सं०] १ कपित । काँपता हुआ । २ फड़कता हुआ । विस्तारित । चंचल । जैसे, विस्फुरित नेत्र । ३ विकसित । फूला हुआ [को०] ।

विस्फुलिङ्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्फुल्लिङ्ग] १ एक प्रकार का विप । २ आग की चिनगारी । अभिकण । उ० विस्फुलिङ्ग से जग दुख तजि तव विरह अगिन तन ताची ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५३६ ।

विस्फुलिङ्गक—वि० [सं० विस्फुलिङ्गक] दीप्तिमान । चमकीला [को०] ।

विस्फूर्ज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गर्जन । कड़क [को०] ।

विस्फूर्जथु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ दहाडना । गरजना । कड़कना । २ वादल की गरज । विजली की कड़क । ३. वज्रगत जैसा आकस्मिक आघात । ४ लहरों का आदोलित होना या उठना गिरना [को०] ।

विस्फूर्जन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पदार्थ का फैलना या बढना । विकास । २ गर्जन । कड़क ।

विस्फूर्जनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिट्ठु नामक वृक्ष ।

विस्फूर्जित^१—वि० [सं०] १ प्रस्फुटित । २ गरजता हुआ । शब्दायमान । ३ प्रसारित । फैलाया हुआ । ४ क्षुब्ध । कपित [को०] ।

विस्फूर्जित^२—सञ्ज्ञा पुं० १ दहाड । चीत्कार । २ घूर्णन । परिभ्रमण । ३ फन । परिणाम । ४ वायु का वेग । ५ मकोच । भीहों का सिकोड़ना । ६ स्फुटन [को०] ।

विस्फोट—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पडना । जैसे,—ज्वालामुखी पर्वत का विस्फोट । उ०—क्षुब्ध नक्र जैसे पानी में पर्वत में जैसे

विस्फोट । अरि समूह में विभ्रु वैसे हो क्रान्ति ये चोटो पर चोट ।—साकेत, पृ० ३६४ । २ कोई जहरीला और बहुत खराब फोडा । ३ विस्फोटक रोग । चेचक [को०] ।

विस्फोटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फोडा, विरोधतः जहरीला फोडा । २ वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भभक उठे । भभकनेवाला पदार्थ । ३ जीतला का रोग । चेचक । उ०—
डाक्टर और विद्वान् इसी विस्फोटक के नाश का उपाय टीका लगाना आदि कहेंगे ।—भारतेंदु १०, भा० १, पृ० ५७६ ।
४. एक प्रकार का कुष्ठ [को०] ।

विस्फोटन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का उबान आदि के कारण फूट बहना । २ जोरों का शब्द ।

विस्फोटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पादस्फोट । विपादिका [को०] ।

विस्फोटित—वि० [सं० विस्फुटित] गर्जन के साथ फूटा हुआ । विस्फोट-युक्त । उ०—सुनता हूँ जब, विस्फोटित है चहुँ ओर भयकर महा नाश ।—दैनिकी, पृ० २५ ।

विस्मयकर—वि० [मं० विस्मयङ्कर] आश्चर्य में डालनेवाला [को०] ।

विस्मयगम—वि० [सं० विस्मयङ्गम] आश्चर्यजनक [को०] ।

विस्मय^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ आश्चर्य । ताज्जुब । २ साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव जो अनेक प्रकार के श्लोकीक और विलक्षण पदार्थों के वर्णन के कारण मन में उत्पन्न होता है । ३ अभिमान । गर्व । शेखी । ४ ऊहापोह सदेह । शक ।

यौ०—विस्मयकर, विस्मयकारी = आश्चर्यजनक । विस्मयपद = आश्चर्य का भाजन । जिससे विस्मय हो । आश्चर्य का विषय ।

विस्मय^२—वि० १ जिसका गर्व नष्ट या चूर्ण हो गया हो । २ जो गर्वयुक्त न हो । निरभिमान ।

विस्मयन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आश्चर्य । ताज्जुब [को०] ।

विस्मयाकुल—वि० [सं०] आश्चर्य से चकित [को०] ।

विस्मयाहत—वि० [सं०] आश्चर्यचकित । आश्चर्य से आहत । दुःख मिश्रित आश्चर्य की भावना से युक्त । उ०—विस्मयाहत हो पूछा—'इस घूप में ?—भस्म वृत०, पृ० ११ ।

विस्मयी—वि० [सं०] विस्मययुक्त । आश्चर्य करनेवाला । विस्मय में पड़ा हुआ ।

विस्मरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्मरण न रहना । भूल जाना ।

विस्मापक—वि० [सं०] आश्चर्यजनक । है त अगेज [को०] ।

विस्मापन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गवर्जनगर । २ कामदेव का एक नाम । ३. बाजीगर । जादूगर । ४ चाल । छद्मता । (ग्रं०) टिक [को०] । ५. आश्चर्य पैदा करना [को०] । कोई भी आश्चर्य में डालनेवाली वस्तु [को०] ।

विस्मापन^२—वि० [वि० स्त्री० विस्मापनी] जिसे देखकर विस्मय हो । आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला ।

विस्मारक—वि० [सं०] भुला देनेवाला । विस्मरण करानेवाला ।

विस्मारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लीन हो जाना । लय हो जाना । नष्ट हो जाना ।
 विस्मारित—वि० [सं०] भुनाया हुआ । विस्मृत किया हुआ [को०] ।
 विस्मित—वि० [सं०] १ जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो । चकित ।
 उ०—सो मुरारीदास को देखि के नरायनदास और सब कोई विस्मित होइ रहे ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०० ।
 विस्मित^२—सञ्ज्ञा पुं० १ एक वृत्त का नाम । २ घमडी । अभिमानी ।
 ३ उलट पुलट । अस्तव्यस्त ।
 विस्मिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्मय । आश्चर्य । २ दे० 'विस्मरण' [को०] ।
 विस्मृत—वि० [सं०] जो स्मरण न हो जो याद न हो । भूला हुआ ।
 विस्मृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भूल जाना । विस्मरण ।
 विस्मेर—वि० [दे०] भौचक्का, आश्चर्यान्वित । चकित [को०] ।
 विस्तम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्तम्भ] १ विश्वास । यकीन । एतबार ।
 २ केलि के समय स्त्री पुरुष में होनेवाला झगड़ा । ३ वध । हत्या ।
 विस्तभालाप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेमालाप । प्रेमवार्ता । २ विश्वस्त होकर बातें करना ।
 विस्तभी—वि० [सं० विस्तम्भिन्] १ विश्वासी । विश्वस्त । २. प्रेमी । प्रणयी [को०] ।
 विस्तस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विस्तसा] १. नीचे गिरना । पतन ।
 २ क्षय । शिथिलता । दुर्बलता । ३ क्षरण [को०] ।
 विस्तसन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अथ पतन । नीचे गिरना । २ बहना । टपकना । ३ खोलना या ढीला करना । ४ रेचक । दस्त लानेवाला [को०] ।
 विस्तसन^२—वि० १ पतनशील । २ खोलनेवाला । ढीला करनेवाला ।
 जैसे,—नीचीविस्तसन [को०] ।
 विस्तसिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का उपकरण जिससे यज्ञ में आहुति दी जाती थी ।
 विस्तसी—वि० [सं० विन्न मिन्] सरक या फिसलकर गिर जानेवाला ।
 जैसे—हार [को०] ।
 विस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ी मूली । २ मास के जलने की गध ।
 चिरायेंध । ३ आमगंव । कच्चे मास की गध ।
 विस्तगध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विस्तगन्ध] १ प्याज । २. गोदती हरताल ।
 ३ वह जिसमें कच्चे घास की महक हो [को०] ।
 विस्तगधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोदती हरताल । २ प्याज । ३. हाऊरेर । हवुपा ।
 विस्तगधि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गोदती हरताल ।
 विस्तव्य—वि० [सं०] दे० 'विश्रव्य' ।
 विस्तव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहना । बूंद बूंद टपकना [को०] ।
 विस्तवण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बहना । २ झरना । क्षरण । रसना ।
 विस्तमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृद्धावस्था । बुढ़ापा । २ अशक्तता ।
 जर्जरता [को०] ।

विस्तस्त—वि० [सं०] १ ढीला किया हुआ । २ दुर्बल । कमजोर ।
 ३ विखरा हुआ [को०] ।
 यौ०—विस्तस्तचेता = उदास । खिन्न । विस्तस्तवधन = जिसके वधन खून गए हो । विस्तस्तवसन = जिसके वस्त्र अस्तव्यस्त हो गए हो ।
 विस्तस्य—वि० [सं०] ढीला किया जाने या खोला जानेवाला [को०] ।
 विस्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाऊरेर । हवुपा । २ चरबी ।
 विस्ताम पुं० - सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्राम] दे० 'विश्राम' ।
 विस्ताव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भात का माँड । पीच । २ वहना । दे० 'विस्तव' [को०] ।
 विस्तावण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रक्त का वहना । २ चूना । रिसना ।
 ३ एक प्रकार की गुड की शराव [को०] ।
 विस्तावित—वि० [सं०] बहाभा हुआ [को०] ।
 विस्तुत—वि० [सं०] बहा हुआ ।
 विस्तुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बहना । चूना । रसना ।
 विस्वर—वि० [सं०] १ स्वरहीन । २ वेमुरा । वेमेल (स्वर) । कर्कश ।
 ३ कठोर ।
 विस्वसा पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्व स] दे० 'विश्वास' । उ० सुया बात राजा हसा खिलखिला, कहा मेरे दिल का दृष्ट्या ।
 विस्वसा ।—दक्खिनी०, पृ० ३७७ ।
 विस्वा पुं०—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या' । उ०—साधु लोग कहैं घका चुगुन कहैं आदर किजिअ । बहुत प्रीति मसपरहि दानु विस्वा कहैं दिजिअ ।—अकबरी०, पृ० ३२२ ।
 विस्वाद—वि० [सं०] स्वादरहित । फीका [को०] ।
 विस्वासा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विश्वास] दे० 'विश्वास' । उ०—तब वा वंणवन ने वाही समै दडवत करी । तब वाके मन में विस्वास आयो ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६ ।
 विस्ताल पुं०—वि० [सं० विशाल] दे० 'विशाल' । उ०—मोतिमाल विस्ताल अति हीरा पौबी सुद्धरिय । जमराज सुवन अरचे अधिक मिलि माह मगल करिय ।—प० रस', पृ० १३१ ।
 विहग^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहङ्ग] १ पक्षी । चिड़िया । उ०—सुखी परेवा जगत में एकै सुही विहंग ।—विहारी (शब्द०) २ सात-मक्खी । ३ वाण । तीर । ४ मेघ । बादल । ५ चद्रमा । ६ सूर्य । ७ एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।
 विहग^२—वि० [सं०] आकाशगामी । आकाशचारी ।
 विहगक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहङ्गक] छोटी चिड़िया [को०] ।
 विहगक^२—वि० आकाशचारी [को०] ।
 विहगम^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहङ्गम] १ पक्षी । चिड़िया । २ सूर्य ।
 विहगम^२—वि० आकाश में विचरण करनेवाला । उड़नेवाला [को०] ।
 विहगमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गमा] १ सूर्य की एक प्रकार की किरण । २ ग्यारहवें मन्वन्तर के देवताओं का एक गण । ३ वहँगी में की वह लकड़ी जिसके दोनों सिरो पर बोझ लटकाया जाता है ।

विहंगमिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गमिका] दे० 'विहंगिका' ।

विहंगय ५—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहाग] दे० 'विहागराग' । उ०—भणत श्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खँभायची पटंगय वगेसरी विहंगय ।—रा० ६०, पृ० ३७६ ।

विहंगराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहङ्गराज] गरुड ।

विहंगहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहङ्गह] बहेलिया । चिडीमार ।

विहंगिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गिका] बहंगी जिसपर कहार बोझ ढोते हैं ।

विहङ्गण^७—वि० [सं० विहङ्गण] नाश करनेवाला । उच्छेद करनेवाला । उ०—सभा सिंगार सकल कुल मङ्गल । घरम सथापक पाप विहङ्गण ।—सु दर ग्र०, भा० १, पृ० ६२ ।

विहङ्गव्य—वि० [सं० विहङ्गव्य] मार डालने योग्य [को०] ।

विहङ्गना^७—क्रि० स० [सं० विहङ्गन, प्रा० विहङ्गण] १ नष्ट करना । २ खडन करना । मार डालना । ३ मथना । अस्तव्यस्त करना । हिङोरना [को०] ।

विहङ्गना—क्रि० अ० [सं० विहङ्गन] दिल खोलकर हँसना । उच्च स्वर से हँसना ।

विह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अकाश । गगन । (समस्त पद के प्रारम्भ में प्रयुक्त । जैसे, विहंग) [को०] ।

विहंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी । चिड़िया । उ०—उ०—पाहन पशु विटप विहंग अपने कर लीन्हे । महाराज दशरथ के रंकराव कीन्हे ।—तुलसी (शब्द०) । २. वाण । तीर । ३. सूर्य । ४. चंद्रमा । ५. ग्रह । ६. बादल [को०] । ७. ग्रहों की एक विशेष अवस्थिति [को०] ।

यौ०—विहंगपति = पक्षियों का स्वामी । गरुड । विहंगराज = गरुड । विहंगवेग = (१) पक्षियों के समान वेग या गतिवाला (२) एक विद्याधर का नाम [को०] ।

विहंगेद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहंगेन्द्र] गरुड [को०] ।

विहंगेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गरुड ।

विहङ्ग^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विकट] विकट या ऊँची नीची भूमि । वेहड । उ०—जमुन विहङ्ग बर विकट हक्क वज्जिय चावदिसि ।—पृ० रा०, ५५ । १२७ ।

विहत्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँझ गाय । बंध्या गौ । २. गर्भवातिनी गौ [को०] ।

विहत्^१—वि० [सं०] १ बधित । काटा हुआ । मारा हुआ । २ चुटोला । आहत । ३. प्रतिरुद्ध । ४ विदीर्ण [को०] ।

विहत्^२—सञ्ज्ञा पुं० जैन मंदिर [को०] ।

विहत्ति^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वध । २ चोट । आघात । ३. प्रतिरोध । निवारण । ४ पराजय । ५ असफलता । विफलता । ६. असह्य करना । भगा देना [को०] ।

विहत्ति—पञ्चा पुं० [सं०] सखा । मित्र । दोस्त [को०] ।

विहन्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हत्या करना । वध । चोट । २ क्षति । ३. रुकावट डालना । अवरोध । अडचन । ४ धुनिया की धुनकी [को०] ।

विहर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वियोग । विछोह । २ दे० 'विहार' ।

विहरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विहार करने की क्रिया । चलना । फिरना । घूमना । २ वियोग । विछोह । ३ खोलना । फैलाना । ४. दूर करना । ले जाना । अपहरण करना [को०] । ५. आनंद प्रमोद । मनोरंजन [को०] । ६. बाहर जाना । निकल जाना [को०] ।

विहरना^७—क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना ।

विहर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहर्तृ] १. दस्यु । लुटेरा । २ इधर उधर घूमने या विहार करनेवाला व्यक्ति । घुमक्कड़ । मौजो [को०] । विहर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विशेष हर्ष । उल्लास । २ हर्षरहित व्यक्ति [को०] ।

विहव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ । २ युद्ध । लड़ाई ।

विहसतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्मित । मुस्कान [को०] ।

विहसन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मोठी हँसी । मुस्क्रान [को०] ।

विहसित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह हास्य, जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर । मध्यम हास्य ।

विहसित—वि० १ हँसता हुआ । मुस्कराता हुआ । २ जिसपर हँसा जाय [को०] ।

विहस्त^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित । विद्वान् । २ कनीब । नपुमक [को०] ।

विहस्त^२—वि० १. षवराया हुआ । व्याकुल । २ जिसका हाथ टूटा हुआ हो । ३ कार्य करने में अशक्त । अक्षम [को०] । ४ निपुण । चतुर । कुशल [को०] । ५ बुद्धिमान । शिद्धि [को०] ।

विहस्तित—वि० [सं०] व्याकुल । षवराया हुआ [को०] ।

विहंगड़ा^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहंग + डा (प्रत्य०)] दे० 'विहंग' ।—ढोला०, पृ० ४६५ ।

विहंगा^७—सञ्ज्ञा पुं० [देश० या सं० विमानु अथवा हिं० विहान] दे० 'विहान' । उ०—ढाढी गाया निसह भरि सुणियउ साव्ह सुजाँण । ओछइ पाणी मच्छ ज्यँउ, बेलत थयड विहंगा ।—ढोला०, दू० १६२ ।

विहंगाणी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० विहाना (छोडना)] वह जो गुजरी या व्यतीत हुई हो । वारदात । घटना । उ०—हाजर बुनाए साह सुण दूत बाँणी । देखत ही फुमाया कहो सो विहंगाणी ।—रा० ६०, पृ० ११० ।

विहा—अव्य० [सं०] स्वर्ग ।

विहाई^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विहायस् > विहाय (= आकाश)] आकाश । व्योम । अनंत । उ०—माप का विहाई सा, प्रतप्त का निदान ।—रा० ६०, पृ० ६७ ।

विहाग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विभाग] १ एक राग । दे० 'विहाग' (यह वियोग का राग है) । २ वियोग । जुदाई । विछोह । (लाक्ष०) । उ०—तू अवतक सोई है आली आँखो में भरे विहाग री ।—लहर, पृ० १६ ।

विहान—सषा पु० [सं०] प्रातःकाल । मनेरा । मोर (को०) ।
 विहापित—वि० [सं०] त्यक्त करने या देने के लिये प्रेरित किया हुआ (को०) ।
 विहापित—सषा पु० दान । त्याग (को०) ।
 विहाय—सषा पु० [सं०] विहायम् । दे० 'विहायस' (को०) ।
 विहाय—अव्य० [सं०] दे० 'विना' ।
 विहायगति—सषा को० [सं०] १ आकाश में चलने की प्रिया या प्रक्ति (जैन) ।
 विहायस्, विहायस—सषा पु० [सं०] १ आकाश । व्योम । २. दान । ३ पक्षी । चिडिया ।
 विहार—सषा पु० [सं०] १. मनवृत्ताव के लिए धीरे धीरे चलना । टहलना । घूमना । फिरना । २ रतिक्रीडा । समोग । ३ रतिक्रीडा करने का स्थान । ४. बोध या जन भ्रमणा के रहने का मठ । सघाराम । ५ दूर करना । हटाना (को०) । क्रीडा । खेल (को०) । ६ गतिशीलता । गतिमयता । जैसे, चरणविहार, पाणविहार (को०) । ७ उछाट । उपवन । क्रीडोद्यान (को०) । ८ स्कय । कथा (को०) । ९ देवासय । मादर (को०) । १०. इद्र का प्रमाद (को०) । ११. इद्र की वृक्षा । वृजयत (को०) । १२ महल । प्रमाद (को०) । १३ एक प्रकार का पत्ती । विदुलक पत्ती (को०) । १४ मीमांसका के अनुसार धर्मग्रन्थ—गार्हपत्य ब्राह्मणीय और दक्षिणाग्नि (को०) । १५ यजमान का गृह (को०) । १६ विन्मार । प्रमार (को०) । १७ वागिन्द्रिय का प्रसार (को०) । १८. मगध का एक नाम । आधुनिक विहार प्रदेश (को०) ।
 यो०—विहारगृह = क्रीडाभवन । विहारदेश = मनोरजन का स्थान । विहारदासी = सन्याग्निनी । निजुणी । विहारभूमि = (१) मनोरजन का स्थान । (२) चरगागाह । विहारवन = क्रीडोद्यान । विहारवापी = क्रीडा के लिये बना हुआ तालाव । विहार-स्थली = क्रीडाभूमि ।
 विहारक—वि० [सं०] १ विहार करनेवाला विहरणशील । २. विहार या बोध मठ सवधा (को०) ।
 विहारण—सषा पु० [सं०] आमोद प्रमोद (को०) ।
 विहारवान्—वि० [सं०] विहारवत् । विहार करनेवाला (को०) ।
 विहारिका—सषा को० [सं०] सघाराम । विहार (को०) ।
 विहारी—सषा पु० [सं०] विहारिन् । १ वह जो विहार करता हो । विहार करनेवाला । २ श्रीकृष्ण का एक नाम । ३ विस्तार-शील । फैलनेवाला (को०) । ४ मनोरम । सुंदर (को०) ।
 विहारचातु—सषा पु० [सं०] व्यवहार । दे० 'व्योहरिमा' । उ०—हाट विहारचा फड़ जोवज्यो, कई जोवज्यो राजदुवारि ।—वी० रासो०, पृ० ७८ ।
 विहावणी—वि० को० [सं०] वि० + हि० भावनी (प्रत्य०) । भयावना । भयकर । उ०—सुण तू मनारे मूरसि मूठ विचार । आवै लहरि विहावणी दमै देह अपार ।—दादू०, पृ० ५८६ ।

विहास—सषा पु० [सं०] रिपत । मुखांतर ।
 विहिमक—वि० [सं०] हाँस पड़ानेवाला । हिमक (को०) ।
 विहिमन—सषा पु० [सं०] हाँस करना । बह्मन् (को०) ।
 विहिम्—वि० [सं०] क्षति या हानि करनेवाला । रिहिम् (को०) ।
 विहित—वि० [सं०] १ जिसका विधान किया गया हो । जैन,—मर नाम नामविहित है । २ दिया हुआ । ३. दिया गया । ४ प्रमथ्य । रिपर विहा हुआ । विभारित । विरोध (को०) । ५ निमित्त । मरगत (को०) । ६ रखा हुआ । रखा दिया हुआ । (को०) । ७ मुगलद्वार । मरान (को०) । ८ कागज । मरन माग (को०) । ९. विमर्श । रिहित (को०) ।
 विहित—सषा पु० [सं०] प्राशन । प्रार्थना ।
 विहिति—सषा को० [सं०] १ काई कर करने की धारा । विधान । २ मनुष्य । रिप्र वर (को०) । ३ व्यवस्था (को०) ।
 विहीन—वि० [सं०] १ रहित । बर्बर । खाली । २ इच्छा हुआ । छोड़ा हुआ । ३ प्रथम, नया (को०) ।
 यो०—विहीनवानि, विहीनानि, विहीनवर्तु = कोमल अवस्था ।
 विहीनता—सषा को० [सं०] विहीन होने का भाव या धर्म ।
 विहीनर—सषा पु० [सं०] एक प्राचातु का नाम ।
 विहीनित—वि० [सं०] पवित्र । सत् ।
 विहृत्त—सषा पु० [सं०] विहृत्ता । निद्र के एक मनुष्य का नाम ।
 विहृण, विहृणु—वि० [सं०] विहृण । वि० को० विहृण, विहृण । रहित । पवित्र । विहीन । उ०—दया बरिष विहृ मनि पगड, साँठ विहृणो अपारद रद गद ।—वी० रासो, पृ० ७६ ।
 विहृत्—सषा पु० [सं०] १ माहिष से मरणा के उपप्रकार के स्वाभाविक घटना का नाम प्रकार का घनवार । २. कटा । मेन (को०) । ३ टुलना । घूमना । नंद (को०) । ४. हिमक चाटण । रिभार (को०) ।
 विहृत्—वि० १ गेला हुआ । प्रोहित । २ फेंका हुआ । ३. टुटा हुआ । दूर किया हुआ । ४ विहारेन । विमर्श (को०) ।
 विहृति—सषा को० [सं०] १ जबरदस्ती या बलपूर्वक द्वारा ले मेरा या कोई काम करना । २ विहार । प्रोडा । ३. गालने की क्रिया । प्रसार । फेंका (को०) ।
 विहृठ—सषा पु० [सं०] १ क्षति । पीडा । दुःख । २ मरना । उत्ती-ठन (को०) ।
 विहृठक—वि० [सं०] १. उत्पीठक । सतानेवाला । २. मुर्दा करने वाला । निदक (को०) ।
 विहृठन—सषा पु० [सं०] १ हानि करना । क्षति पहुँचाना । पेयण । पीमना । २. रणजना । ३. उत्पीड़न । पीडा । कष्ट । सताना । उत्पीठन करना (को०) ।
 विहृल—वि० [सं०] १ भय या इसी प्रकार के मनोवेग के कारण जिसका चित्त ठिगाने न हो । घबराया हुआ । भ्रान्त । चुम्ब । व्याकुल । २ डरा हुआ । भय से अभिभूत (को०) । ३. उत्पन्न ।

जो आपे से बाहर हो (को०) । ४ पीडाग्रस्त । कष्ट में पटा हुआ (को०) । ५ विपादयुक्त । हतोत्साह । हताश (को०) । ६ द्रवित । तरल । पिघला हुआ (को०) ।

यौ०—विह्वलनेत्र, विह्वलचेता = व्याकुल । विह्वलननु = शिथिल शरीरवाला । विह्वलदृष्टि, विह्वलनेत्र, विह्वललोचन = अस्थिर दृष्टिवाला । जिसकी दृष्टि चंचल हो ।

विह्वलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विह्वल होने की क्रिया या भाव । व्याकुलता । घञ्जराहट । चिंता । परीक्षानी ।

विह्वलत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विह्वलता' ।

विह्वलित—वि० [सं०] विह्वलतायुक्त । विह्वल (को०) ।

यौ०—विह्वलितदृष्टि = दे० 'विह्वल दृष्टि' । विह्वलित सर्वांग = व्याकुल शरीरवाला । अत्यंत क्षुब्ध । विह्वलितानु = पीडित अंगो या अवयववाला ।

विह्वली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विह्वलिन] वह जो विह्वल हो गया हो । वह जो बहुत घबरा गया हो ।

वीखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वीडखा] १. नृत्य । नाच । २. घोड़े की एक चाल । ३. शूकशिबी । ४. सगम । सधि । ५. गति । गमन । चाल (को०) ।

वीदी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वीदणी] पति । खाविद । उ०—मह बाल मारौ चित विचारा दरी दाराँ दे सिला । सभ आय साराँ धरणी धारा विमल तारा वीद ।—रघु० ७०, पु० १४६ ।

वीक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वायु । २. पक्षी । चिड़िया । ३. मन ।

वीक^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] सप्ताह । हफ्ता ।

वीका^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की मँल । कीचड़ (को०) ।

वीकाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एकांत स्थान । २. प्रकाश । रोशनी ।

वीक्षा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दृष्टि । देखना । ताकना । २. दृश्य पदार्थ (को०) । ३. अचभा । आश्चर्य (को०) । ४. अवेक्षण । निरूपण (को०) । ५. वैदग्ध्य । ज्ञान । बोध (को०) । ६. निःपज्ञता । अनभिज्ञता (को०) ।

वीक्षाण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० वीक्षणीय] १. देखने की क्रिया । निरीक्षण । दृष्टि । उ०—वीक्षाण अराल, वज रहे जहाँ जीवन का स्वर भर छद, ताल, मीन में मद्र ।—अनामिका, पृ० १८ । २. जाँच (को०) । ३. आँख (को०) ।

वीक्षाणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीक्षाण' (को०) ।

वीक्षाणीय—वि० [सं०] १. जो देखने योग्य हो । दर्शनीय । २. विचारणीय (को०) । विवेचनीय ।

वीक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखने की क्रिया । वीक्षण । दर्शन । २. जाँच । परीक्षा (को०) । ३. ज्ञान । प्रतिभा (को०) । ४. वेमुषी । बेहोशी (को०) ।

वीक्षित^१—वि० [सं०] दृष्ट । देखा हुआ ।

वीक्षित^२—सञ्ज्ञा पुं० दृष्ट (को०) ।

वीक्षिता—वि० [सं० वीक्षितृ] दर्शक (को०) ।

वीक्ष्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विस्मय । आश्चर्य । २. वह जो बुद्धि देखा जाय । दृश्य । ३. वह जो नाचता हो । नाचनेवाला । नतक । अभिनेता । ४. घोड़ा ।

वीक्ष्य^२—वि० देखने योग्य । दर्शनीय । दृश्य । उ०—अब सी हूत न मितु वीक्ष्य वी ।—माकेत, पृ० ३३६ । २. प्रत्यक्ष । दृष्टि-गोचर । व्यक्त (को०) । ३. विस्मय (को०) ।

वीचि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. लहर । तरंग । २. बीच की खाली जगह । अवकाश । ३. सुख । आनंद । विभ्रान्ति । ४. दोष । चमक । ५. आविषेक । विचारण्यता (को०) । ६. प्रकाश की किरण (को०) । ७. अल्पता । लघुता (को०) ।

यौ०—वीचिकाक = दे० 'वीचीकाक' । वीचिचोभ = लहरो का वेग से उठना गिरना । वीचितरंगन्याय । वीचिमाली ।

वीचितरंग न्याय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय । विशेष दे० 'न्याय'—४ (६३) ।

वीचिमाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वीचिमालिन्] समुद्र ।

वीची^१—सञ्ज्ञा [मं०] तरंग । लहर । दे० 'वीचि' ।

वीची^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] छोटी राह । रथ्या । गली ।—देशी०, पृ० ३०२ ।

वीचीकाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जलकोप्रा ।

वीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मूल कारण । २. शुक्र । वीर्य । ३. तेज । उ०—मनु पावक माभ वीज आनि अनरगन जगिय ।—पृ० रा०, ६१ । १६७८ । ४. अन्न आदि का बीज । बीभा । ५. अकुर । ६. फल । ७. आवार । ८. निधि । खजाना । ९. तत्व । १०. मूल । ११. मज्जा । १२. तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार के मंत्र जो बड़े बड़े मंत्रों के मूल तत्व के रूप में माने जाते हैं । प्रत्येक देवी या देवता के लिये ये मंत्र अलग अलग होते हैं । जैसे,—ही, श्री, क्ली आदि । १३. बीजगणित ।

बीजक—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १. विजयमार या पिपासान नामक वृक्ष । २. विजोरा नीबू । ३. सफेद सहिजन । ४. बीज । बीभा । ५. दे० 'बीजक' ।

बीजकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उहद की दाल जो बहुत पुष्टिकारक मानी जाती है ।

बीजकर्कटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ककड़ी ।

बीजकसार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विजयसार के बीज । २. विजोरा नीबू का सार या सत्त ।

बीजका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मुनक्का ।

बीजकाह्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विजोरा नीबू का पेड़ ।

बीजकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] वह औषध जिसके खाने से बीर्य बढ़ता हो । बीर्य बढ़ानेवाली दवा । बीजकरण ।

बीजकोश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कमलगट्टा । २. निषाढा । ३. फल, जिनमें बीज रहते हैं ।

बीजकोशक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धडकोश ।

बीजगणित—संज्ञा पुं० [मं०] एक प्रकार का गणित, जिसमें अज्ञात राशियों का जानने के लिये उनके स्थान पर अक्षर आदि रखकर कुछ माकेतिक चिह्ना आदि की सहायता से गणना की जाता है। यह साधारण अक्षरगणित की अपेक्षा जटिल होता है, पर इसके द्वारा अज्ञात राशियों का पता लगाने में बहुत सहायता मिलती है।

बीजगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] परवल। पटोन्।

बीजगुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेम।

बीजद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार या असन नामक वृक्ष।

बीजधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] धनियाँ।

बीजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्ता अनाम। २ पत्ता। ३ चंवर। ४ चक्रा। चकार। चक्रवाक। ५ लोभ का पेड़। ६ परार्थ। चस्तु (ति०)।

बीजपाद—संज्ञा पुं० [सं०] विद्यापान। विजयमार। २, भिलावा।

बीजपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का आदि या मूल पुरुष जिससे वह वस्तु चला हो।

बीजपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ मरुपा। २ मंजकन। ३ जगर।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजारा नीबू। २, पारोतरा। ३ गलगल।

बीजपूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्रिजोरा नीबू। २, चकोतरा।

बीजपेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडकोश।

बीजकलक—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिजोरा नीबू।

बीजमन्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] बीजमन्त्र दे० 'बीज-१२'।

बीजमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलगट्टा।

बीजमार्गी—संज्ञा पुं० [सं०] बीजमार्गिन्। एक प्रकार के बंणव जो पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। ये लोग निर्गुण उपासक होते हैं और देवी देवता का पूजन नहीं करते।

बीजरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] उदर की दास।

बीजरेचक—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा।

बीजरेचन—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा।

बीजलिङ्ग—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्, प्रा० विज्ज दे० 'विज्ज'।
उ०—च्यारइ पामइ षण षणउ बीजलि तिवइ अकास।—
ढोला०, दू० २६०।

बीजवर—संज्ञा पुं० [सं०] उडद। माप।

बीजवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

बीजवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजयमार। विद्यापान। २ भिलावा।

बीजसार—संज्ञा पुं० [सं०] वायव्रिडग।

बीजसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

बीजस्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] पलाश। डाक।

बीजाकुर—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाकुर भंजुमा। अकुर।

बीजाकुरन्याय—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाकुर न्याय] एक न्याय।
विशेष दे० 'न्याय'—४ (६४)।

बीजान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जमावगाटा।

बीजाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] मृदाभा। मृदाश।

बीजाविक—संज्ञा पुं० [सं०] अंड।

बीजित—सं० [सं०] १ दिने गिना गया गया हो। २ पता लगा हुआ।
२. मिश्रित (सं०)।

बीजी—संज्ञा पुं० [सं०] बीजज। १. यह विचार होता है। २. विद्या।
३. बीजाविक का भाग।

बीजमन्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत्, प्रा० विज्ज दे० 'विज्ज'।
प्रा० अन्त। विज्जया सा बीजाविको, यद्वारा। उ०—द्वितीय
इय बीजमन्त्र इय भा पुन इय रो।—मं० अ०, दू० २६।

बीजोदक—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा।

बीज्य—सं० [सं०] १. बीजाविक का भाग। २. बीजाविक का भाग।
उत्पाद हुआ हो। बीजाविक। ३. बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा।

बीजमन्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
उ०—यद्वारा बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीजमन्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीजक—संज्ञा पुं० [सं०] (यन का) भाग। यद्वारा।

बीटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीजोप—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीजोप—संज्ञा पुं० [सं०] बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीजाविक का भाग। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीटुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीटा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।
यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा। यद्वारा।

बीटो—संज्ञा पुं० [सं०] किसी व्यवसायिका मन्त्र के अन्तर्गत प्रस्ताव
या मतव्य का अस्वीकृत करने का अधिकार। यह अधिकार
जिससे व्यवस्थापक मंडल को एक शाखा द्वारा शाखा के अन्तर्गत
प्रस्ताव या मतव्य का अस्वीकृत कर सके। अस्वीकृत या
नियेधाधिकार। नामजुगो। मनाही। रोक।

बी०—बीटोपावर = रोकने की शक्ति।

वीणा^७—संज्ञा स्त्री० [स० वीणा] दे० 'वीणा' ।

वीणा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध वाजा ।
वीन ।

विशेष—यह तत्त जातीय वाद्य है और इसका प्रचार अब तक भारत के पुराने ढंग के गवैयो में है । इसमें बीच में एक लंबा पोला दंड होता है, जिसके दोनों सिरों पर दो बड़े बड़े तूँबे लगे होते हैं और एक तूँबे से दूसरे तूँबे तक, बीच के दंड पर से होते हुए, लोहे के तीन और पीतल के चार तार लगे रहते हैं । लोहे के तार पक्के और पीतल के कच्चे कहलाते हैं । इन सातों तारों को कमने या ढीला करने के लिये सात खूंटियाँ रहती हैं । इन्हीं तारों को झनकारकर स्वर उत्पन्न किए जाते हैं । प्राचीन भारत के तत्त जाति के बाजों में वीणा सब से पुरानी और अच्छी मानी जाती है । कहते हैं, अनेक देवताओं के हाथ में यही वीणा रहती है । भिन्न भिन्न देवताओं आदि के हाथ में रहनेवाली वीणाओं के नाम अलग अलग हैं । जैसे,—महादेव के हाथ की वीणा लम्बी, सरस्वती के हाथ की कच्छपी, नारद के हाथ की महती, विश्वावसु की बृहती और तुवुरु के हाथ की कलावती कहलाती है । वत्सव उदयन की वीणा का नाम घोषवती या घोषा या । इसके अतिरिक्त वीणा के और भी कई भेद हैं । जैसे,—त्रितंत्री, किन्नरी, विपचां, रजनी, शारदी, रुद्र और नादेश्वर आदि । इन सबकी आकृति आदि में भी थोड़ा बहुत अंतर रहता है ।

पर्या०—वह्नीकी । परिवादिनी । ध्वनिमाला । वगमल्ली । घोषवती । कठकुरिवा ।

२ विद्युत् । विजली । ३ ज्योतिष में ग्रहों की एक विशेष अवस्थिति (को०) । ४ एक योगिनी का नाम (को०) ।

वीणागणकी—संज्ञा पुं० [स० वीणागणकिन्] वह जो गायक दल का प्रमुख (को०) हो ।

वीणागणिमी—संज्ञा पुं० [स० वीणागणगिन्] दे० 'वीणागणकी' ।

वीणागाथी—संज्ञा पुं० [स० वीणागाथिन्] वीणा बजानेवाला (को०) ।

वीणातत्र—संज्ञा पुं० [स० वीणातत्र] तत्रविशेष (को०) ।

वीणादंड—संज्ञा पुं० [स० वीणादंड] वीणा में का लंबा दंड या तुंबी का बना हुआ वह अंश जो मध्य में होता है । इसे प्रवाल भी कहते हैं ।

वीणानुवद्य—संज्ञा पुं० [स० वीणानुवद्य] वीणा का वह निचला भाग जहाँ तार बँधे रहते हैं । उपनाह (को०) ।

वीणापाणि^१—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती ।

वीणापाणि^२—संज्ञा पुं० [स०] नारद (को०) ।

वाणापाणि^३—वि० जिसके हाथ में वीणा हो । वीणा लिए हुए ।

वीणाप्रसेव—संज्ञा पुं० [स०] वह गिलाफ जो वीणा पर उसकी रक्षा के लिये चढ़ाया जाता है ।

वीणाभिद्—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की वीणा ।

वीणारव—संज्ञा पुं० [स०] वीणावादन की ध्वनि ।

वीणावशशलाका—संज्ञा स्त्री० [स०] उपनाह । वीणानुबंध (को०) ।

वीणावती—संज्ञा स्त्री० [स०] १. सरस्वती । २ एक अस्त्र का नाम ।

वीणावरा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मक्खी ।

वीणावाद, वीणावादक—संज्ञा पुं० [स०] वह जो वीणा बजाता हो ।
वीनकार ।

वीणावादन—संज्ञा पुं० [स०] १ वीणा बजाना । २ वीणा बजाने का कोणाकार छल्ला । मिजराव (को०) ।

वीणावादिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती (को०) ।

वीणावाद्य—संज्ञा पुं० [स०] वीणा नामक तंत्री वाद्य । वीणा वाजा ।

उ०—इंद्रजाल, आकरज्ञान, रत्नपरीक्षा, तीर्थत्रिक, वीणावाद्य, हर्षमेल, अश्ववध, मृगबंध, मीनबंध, लीनबंध, चट ।—
वर्ण०, पृ० ३ ।

वीणाविनोद—संज्ञा पुं० [स०] एक विद्याधर का नाम (को०) ।

वीणाशिल्प—संज्ञा पुं० [स०] वीणावादन की कला (को०) ।

वीणास्य—संज्ञा पुं० [स०] नारद ।

वीणाहस्त—संज्ञा पुं० [स०] शिव । महादेव ।

वीणी—वि० [स० वीणिन्] १ वीणावादक । वीणा बजानेवाला ।
२ जो वीणा लिए हो । वीणावाला (को०) ।

वीतस—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जाल, फंदा या इसी प्रकार की और सामग्री जिससे पशु और पक्षी आदि फँसाए जाते हैं । २. चिड़ियाघर । खगालय (को०) । ३ शिकार के पशुओं को पालने की जगह (को०) ।

वीत^१—संज्ञा पुं० [स०] वे हाथी, घोड़े और सैनिक आदि जो युद्ध करने के योग्य न रह गए हों । २. अकुश के द्वारा मारना । अकुश का प्रहार करना । ३ साह्य के अनुसार अनुमान के दो प्रकारों में से एक ।

विशेष—साह्य में अनुमान के तीन भेद कहे गए हैं—पूर्ववत् या केवलान्वयी, शेषवत् या व्यतिरेकी और सामान्यतः दृष्ट या अन्वय-व्यतिरेकी । इनमें से पूर्ववत् और सामान्यतोऽदृष्ट अनुमान तो 'वीन' कहलाते हैं और शेषवत् को अवीत कहते हैं । विशेष दे० 'अनुमान' ।

वीत^२—वि० जिसका पतियाग कर दिया गया हो । जो छोड़ दिया हो । २ जो छूट गया हो । मुक्त । ३ जो वीत गया हो । जो समाप्त हो चुका हो । अतहित । गत । लुप्त । ४ जो निवृत्त हो चुका हो । जो (किसी बात से) रहित हो । मुक्त । शून्य । जैसे—वीतभय, वीतराग वीतशक । ५ इच्छित अनु-मोदित । पसंद किया हुआ । सुन्दर । जिसको अलगाया गया हो (को०) । ७ जो युद्ध के योग्य न हो (को०) । ८ पालतू (को०) । ९ ओढ़ा या धारण किया हुआ । पहना हुआ (को०) ।

वीतक—संज्ञा पुं० [स०] १ घिरी हुई भूमि । बाड़ा । २ चदन और कपूर का चूर्ण रखने का पात्र (को०) ।

वीतकल्मष—वि० [स०] निष्पाप । पापमुक्त (को०) ।

वाम—वि० [स०] कामनाहीन (को०) ।

वीतघृण—वि० [स०] निर्दय [को०] ।

वीतजन्म—वि० [स०] अजन्मा [को०] ।

वीततृण—वि० [स०] तृणारहित । वासनाहीन [को०] ।

वीतत्रसरेणु—वि० [म०] निर्विकार [को०] ।

वीतदम्—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीतदम्भ] वह जिसने दम्भ या अहंकार का परित्याग कर दिया हो । जिसका अभिमान नष्ट हो गया हो ।

वीतन—सञ्ज्ञा पु० [स०] कठ के दोनों पार्श्व [को०] ।

वीतभय—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वह जिसका भय छूट गया हो । २ विष्णु । ३ शिव का एक नाम [को०] ।

वीतभीम—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम ।

वीतमत्सर—वि० [स०] मत्सरहीन [को०] ।

वीतमल—वि० [स०] १ जो कोई पाप न करे । पापरहित । २ जिसमें किसी प्रकार का कलक या मल आदि न हो । विमल ।

वीतमोह—वि० [स०] निर्मोही [को०]

वीतराग^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो । वह जो निस्पृह हो गया हो । उ०—
निर्द्वेष मेरे प्राण, दूर तक फैले उस विपुल अज्ञान में, खोजते थे प्राणों को जड़ में ज्यों वीतराग चेतन को खोजते ।—प्रना-
मिका, पृ० ७१ । २ बुद्ध का एक नाम । ३ जनों के प्रधान देवता का एक नाम ।

वीतराग^२—वि० १ वासनाहीन । इच्छारहित । शांत । ३ रागरहित । बिना रग का [को०] ।

वीतविष—वि० [स०] विशुद्ध । निर्मल [को०] ।

वीतव्रीड—वि० [स०] निर्लज्ज [को०] ।

वीतशोक—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ वह जिसने शोक आदि का परित्याग कर दिया हो । २ अशोक नामक वृक्ष ।

वीतसूत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] यज्ञोपवीत । जनेऊ ।

वीतद्रव्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जो अगिरा के वंश में थे । २ शुनक के पुत्र का नाम ।

वीतद्रव्य^२—वि० यज्ञ में आहुति देनेवाला । जो यज्ञकुंड में आहुति या हव्य देता हो ।

वीतहिरण्यमय—वि० [स०] स्वर्णपात्र से हीन [को०] ।

वीतहोत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वीतिहोत्र' ।

वीति—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] १ गति । चाल । २ दक्षिण । चमक । आभा । ३ गर्भ धारण करने की क्रिया । ४ खाने या पीने की क्रिया । ५ यज्ञ । ६ फोडा । ७ प्रजनन । उत्पादन [को०] । ८. आनन्दोपभोग [को०] । ९ सफाई । परिमार्जन [को०] । १० निवृत्ति । पार्थिव्य [को०] । ११ प्राप्ति [को०] ।

वीतिका—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ जेठी मधु । मुलेठ । २ नीलिका ।

वीतिहोत्र^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ अग्नि । २ सूर्य । ३ पुराणानुसार राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम । ४ हैहयवंश के एक राजा का नाम । ५. वह जो यज्ञ करता हो ।

वीतिहोत्रदयिता, वीतिहोत्रप्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री [म०] स्वाहा [को०] ।

वीती—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीतिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वीथि—सञ्ज्ञा स्त्री [म०, २०] वीथी [को०] ।

वीथिका—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] दे० 'वीथी' ।

वीथी—सञ्ज्ञा स्त्री [स०] १ दृश्य वाक्य या रूप के २७ भेदों में से एक भेद ।

विशेष—यह एक ही अक्षर का होता है और इसमें एक ही नायक होता है । इसमें आकाशमापित और शृंगार रस की अधिकता रहती है, प्राचीन काल में ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटकों के साथ भी । इसके नीचे लिखे १३ अंग माने गए हैं—(१) उद्घाटक, (२) अदलगत, (३) प्रपन्न, (४) त्रिगत, (५) छ्यन्न, (६) वाक्केली, (७) अधिबल, (८) गड, (९) अवश्यदित, (१०) नालिका, (११) अमत्प्रलाप, (१२) व्याहार और (१३) मृदद । घननय ने अपने दशरूपक में वीथी के उक्त तेरह अंगों का उल्लेख करके कहा है कि सूत्रधार इन वंश्यों के द्वारा अर्थ और पात्र का प्रस्ताव करके प्रस्तावना के अंत में चना जाए और तब वस्तुप्रपन्न आरंभ हो । साहित्यदर्पण के अनुसार वीथी के अंग ही प्रहसन के भी अंग हो सकते हैं । अंतर केवल यही है कि वीथी में तो झंझा होना आवश्यक है, पर प्रहसन में ऐच्छिक होता है । अतः कहा जा सकता है, वीथी और प्रहसन दोनों प्रस्तावना के ऐसे अंशों को कहते थे, जिनमें हास्य रस की अधिकता होती थी और जिनके द्वारा सामाजिक या दर्शकों के मन में अभिनय के प्रति रुचि या उत्कंठा उत्पन्न की जाती थी ।

२ मार्ग । रस्ता । सड़क । ३ वह आकाशमार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है । रविमार्ग । ४ आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं । जैसे,—नागवीथी, गजवीथी, ऐरावती वीथी, गोरीवीथी, मृगवीथी आदि ।

विशेष—आकाश में उत्तर, मध्य और दक्षिण में क्रमशः ऐरावत, जरदम्भ और वंशगनर नामक तीन स्थान माने गए हैं, और इनमें से प्रत्येक स्थान में तीन-तीन वीथियाँ हैं । इस प्रकार कुल नौ वीथियों में सत्ताईस नक्षत्र समान भागों में विभक्त हैं, अर्थात् प्रत्येक वीथी में तीन-तीन नक्षत्रों का अवस्थान माना गया है ।

५ पक्ति । कतार [को०] । ६ हाट । पर्यव्रीथिका [को०] । ७ मकान में सामने का छज्जा [को०] । ८ घुड़दौड़ का चक्राकार मार्ग [को०] । ९ चित्रों की पक्ति [को०] ।

वीथीकृत—वि० [स०] पक्ति या राशि के रूप में रखा हुआ अथवा व्यवस्थित [को०] ।

वीथ्यग—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीथ्यङ्ग] रूपक में वीथी के अंग जो १३ माने गए हैं । विशेष दे० 'वीथी—१' ।

वीदग ण्—सञ्ज्ञा स्त्री [देश०] कविता । उ०—मुख्यम पाठ पिगल मता साहित्य वीदग सार नै ।—रघु० ६०, पृ० १४ ।

वीदेस(७)—सञ्ज्ञा पु० [स० विदेश] दे० 'विदेश'। उ०—सूनी सेज वीदेस पीउ, दुइ दुख नाल्ह कहइयो कूण ।—वी० रासो, पृ० ४३ ।

वीघ्न^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. आकाश । २. अग्नि । ३. वायु ।

वीघ्न^२—वि० शुद्ध । स्वच्छ [को०] ।

वीनाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जंगला या ढकना आदि जो कुएँ के ऊपर लगाया जाता है ।

वीनाही—सञ्ज्ञा पु० [स० वीनाहिन] वह जिममे वीनाह लगा हो । कू। कुआँ [को०] ।

वीप—वि० [स०] जलहीन । निर्जल [को०] ।

वीपसा(७)—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वीप्सा] दे० 'वीप्सा' ।

वीपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विजनी ।

वीप्सा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. एक शब्दालंकार जहाँ आश्चर्य, आदर, घृणा, आदि भावों को व्यक्त करने के लिये एक ही शब्द अनेक बार प्रयुक्त होता है ।

विशेष—हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम भिखारीदास ने 'वीप्सालंकार' के नाम से इसे ग्रहण किया है ।

२. श्रिविगाप्ति (को०) । ३. पुन पुन. कथन । पुनरुक्ति (को०) ।

४. कार्य की निरंतरता सूचित करने के लिये शब्दों की की जाने-वाली द्विरुक्ति (को०) ।

वीवुकोश—सञ्ज्ञा पु० [स०] चामर । चँवर [को०] ।

वीरकरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वीरङ्गरा] पुराणानुसार एक नदी का नाम, जिसे वीरकरा भी कहते हैं ।

वीरघर—सञ्ज्ञा पु० [स० वीरन्धर] १. मयूर । मोर । २. जंगली पशुओं के साथ होनेवाला युद्ध । ३. एक प्राचीन नदी का नाम । चमड़े का कचुक या सदरी (को०) ।

वीर^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जो साहसी और बलवान् हो । शूर । बहादुर । २. योद्धा । सैनिक । मिपाही । ३. वह जो किसी विकट परिस्थिति में भी आगे बढ़कर उत्तमतापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे । ४. वह जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो । जैसे,—दानवीर, कर्मवीर । ५. पुत्र । लडका । ६. पति । खसम । ७. भाई (स्त्रियाँ) । ८. महाभारत के अनुसार दनायु नामक दैत्य के पुत्र का नाम । ९. विष्णु । १०. जिन ११ साहित्य में शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस ।

विशेष—इसमें उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है । इसका वर्ण गौर और देवता इद्र माने गए हैं । उत्साह इसका स्थायी भाव है और वृत्ति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क और रोमांच आदि इसके संचारी भाव हैं । भयानक, शात और शृंगार रस का यह रस विरोधी है ।

१२. तांत्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव ।

विशेष—कहते हैं, दिन के पहले दस दंड में पशु भाव से, बीच के दस दंड में वीर भाव से और अंतिम दस दंड में दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए । रुद्रयामल के ग्यारहवें पटल में इसका हिं० पृ० ९-३०

विवरण है । वामकेश्वर तंत्र के अनुसार कुछ लोगों का यह भी मत है कि पहले १६ वर्ष की आयु तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की आयु तक वीर भाव से और इसके उपरांत दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए ।

१३. तांत्रिकों के अनुसार वह साधक जो इस प्रकार वीर भाव से साधना करता है ।

विशेष—दिन रात मद्य पीना, प्रागलो की सी चेष्टा रखना, शरीर में भस्म लगाए रहना और अपने इष्टदेव को मनुष्य, बकरी, भेड़े या भैसे आदि का बलिदान चढाना इनका मुख्य कर्तव्य होता है ।

१४. वह जो किसी काम में बहुत चतुर हो । होशियार । १५. कर्मठ । कर्मशील । १६. यज्ञ की अग्नि । १६. सींगेया नामक विष । १८. काली मिर्च । १९. पृष्करमूल । २०. कांजी । २१. खस । उशीर । २२. आलूबुखारा । २३. पीली कटसरैया । २४. चौलाई का साग । २५. वाराहीकद । गेंठी । २६. लताकरंज । २७. कनेर । २८. अर्जुन नामक वृक्ष । २९. काकोली । ३०. सिंदूर । ३१. शालिपर्णी । सरिवन । ३२. लोहा । ३३. नरसल । नरकट । ३४. भिनावाँ । ३५. कुश । ३६. ऋषभक नामक ओषधि । ३७. तोरई । ३८. अग्नि (को०) । ३९. नट । अभिनेता (को०) । ४०. चावल का माँड (को०) ।

वीर^२—वि० १. शूर । बहादुर । २. शक्तिशाली । ताकतवर । ३. श्रेष्ठ । सर्वोत्कृष्ट [को०] ।

वीर(७)^३—सञ्ज्ञा स्त्री० सखी । सहेली । दे० 'वीर' ।

वीरकठ—सञ्ज्ञा पु० [स० वीरकण्ठ] एक प्रकार का डिंगल गीत । —रघु० सू०, पृ० १९५ ।

वीरक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सफेद कनेर । २. वह जो किसी निंदित देश का निवासी हो । ३. पुराणानुसार चाक्षुष मन्वन्तर के एक मनु का नाम । ४. योद्धा । शूर । बहादुर । विक्रांत (को०) ।

वीरकरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम । जिसे वीरकरा भी कहते हैं ।

वीरकर्मा—सञ्ज्ञा पु० [स० वीरकर्मन्] वह जो वीरों की भाँति काम करता हो । वीरोचित कार्य करनेवाला ।

वीरकाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जिसे पुत्र की कामना हो । पुत्र की इच्छा रखनेवाला ।

वीरकीट—सञ्ज्ञा पु० [स०] नगण्य सैनिक । नाम मात्र का सैनिक [को०] ।

वीरकुक्षि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो ।

वीरकेतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार पांचाल के एक राजकुमार का नाम ।

वीरकेशरी—वि० [स० वीरकेशरिन्] वह जो वीरों में सिंह के समान अथवा बहुत श्रेष्ठ हो ।

वीरकेशरी—वि० [म० वीरकेशरिन्] दे० 'वीरकेशरी' ।

वीरक्षुरिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कृपाशी । कटार [को०] ।

वीरगति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वर्ग । २ वह उत्तम गति जो वीरो को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है ।

विशेष—कहते हैं, युद्धक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़कर मरनेवाले लोग सूर्यमण्डल का भेद न कर सीधे स्वर्ग जाते हैं ।

वीरगोत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वीरो का खानदान या कुल [को०] ।

वीरगोष्ठी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] योद्धाओं की गोठ । वीरो की आपसी वार्ता [को०] ।

वीरचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ तत्र के अनुसार एक चक्र । २. वीरो का सैन्य दल । ३ विष्णु [को०] । ४ स्वतन्त्रताप्राप्ति के अनंतर भारत सरकार द्वारा सैनिकों की वीरता पर प्रसन्न होकर उन्हें प्रदान किया जानेवाला एक विशेष प्रकार का पदक ।

वीरचक्रेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

वीरचक्षुष्मान्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वीरचक्षुष्मत् [को०] ।

वीरचर्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वीरता का कार्य । शूरकर्म ।

वीरजनन—वि० [सं०] वीर को उत्पन्न करनेवाला ।

वीरजननी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीरप्रसू' ।

वीरजयंतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वीरजयन्तिका] १ युद्ध । सग्राम । २. रण में योद्धाओं का नृत्य [को०] ।

वीरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कुश, दर्भ, काँस और दूब आदि की जाति के तृण । २ उशीर । खस । ३. पुराणानुसार एक प्रजापति का नाम ।

विशेष—इनकी कन्या असिकनी का विवाह दक्ष से हुआ था । इस कन्या के गर्भ से पाँच हजार वीर पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनसे सृष्टि बढी थी ।

४ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वीरणक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महा-भारत में है ।

वीरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटाक्ष । तिरछी चितवन । २. गहरी भूमि । ३ वीणा की पुत्री और चाक्षुष की माता का नाम [को०] ।

वीरतर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शर । तीर । बाण । २. उशीर । खस ।

वीरतर^२—वि० शूरो में प्रधान । वीरश्रेष्ठ । सामर्थ्यवान् [को०] ।

वीरतरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुनवृक्ष । २. तालमखाना । ३ मिलावा । ४ शर नामक तृण । ५ पियासार या पियासाल नामक वृक्ष । ६ विल्व वृक्ष [को०] ।

वीरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वीर होने का भाव । शूरता । बहादुरी ।

वीरताडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विधारा नाम की लता [को०] ।

वीरतृण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सरकडा [को०] ।

वीरत्त^(१)—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वीरत्व] वीरत्व । वीर होने का भाव । वीरता । उ०—पाए सुमहल सामत सूर पूर्न तेज वीरत्त पूर । अनभग अग, अनभूल वान जिन दिट्ट अरिय पावै न जान । —पृ० रा०, ६।१३३ ।

वीरत्त^(२)—सञ्ज्ञा पुं० [अप०] वीरत्व । वीरता । उ०—उग्रर वपुरा को करेश्रा वीरत्त नित ठाम ।—कीर्त्ति०, पृ० ६० ।

वीरत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरता' ।

वीरदर्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वीरता का जोश । वीरता का उत्साह या समग । उ०—जहाँ आल्हा गानेवाले सँकडो सुननेवालो को घंटे वीरदर्प से पूर्ण किए रहते हैं, वहाँ भेदभूमि से परे एक सामान्य हृदयसत्ता की झनक दिखाई पडती है ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ६१ ।

वीरद्युम्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम ।

वीरद्रु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन नामक वृक्ष [को०] ।

वीरधन्वा—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] वीरधन्वन्] कामदेव का एक नाम ।

वीरनाथ—वि० [सं०] १. वीरो में श्रेष्ठ । २ जिसके सहायक शूर वीर हो [को०] ।

वीरनायक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उशीर । खस ।

वीरपट्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन धाल का एक विशेष प्रकार का पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था ।

वीरपट्टिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ललाट पर बाँधी जानेवाली सोने की पट्टी [को०] ।

वीरपत्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैदिक काल की एक नदी का नाम । २ वह जो किसी वीर की पत्नी हो ।

वीरपत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ माँग । भग । २ एक प्रकार का महाकद जिसे धारणी भी कहते हैं ।

वीरपत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक कद [को०] ।

वीरपर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मुरपर्णा । माचीपत्री ।

वीरपाण, वीरपाणक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरपान' ।

वीरपान, वीरपानक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह पान जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये करते हैं ।

वीरपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप [को०] ।

वीरपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १ महाबला । सद्देई । २ सिंदूरपुष्पी । लटकन ।

वीरप्रजायिनी, वीरप्रजावती—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] वीरप्रसू । वीर पुत्र को जन्म देनेवाली नारी । वीरमाता [को०] ।

वीरप्रमोक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वीरप्रसवा, वीरप्रसविनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीरप्रसू' [को०] ।

वीरप्रसू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो वीर सतान उत्पन्न करती हो ।

वीरबाहु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ३ एक बानर का नाम [को०] । ४ रावण के एक पुत्र का नाम ।

वीरभद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा । २ उशीर । खस । ३ प्रख्यात वीर । प्रसिद्ध योद्धा । श्रेष्ठ वीर [को०] । ४. शिव के एक प्रसिद्ध गण का नाम जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं । उ०—शिव जी के शरीर से अग्नि बहिर्गत हुई

कि मानो वह तीनो लोको को भस्म किया चाहती है और इस अग्नि मे से वीरभद्र उत्पन्न हुआ ।—कवीर म०, पृ० २१८ ।

विशेष—कहते हैं, दत्त का यज्ञ नष्ट करने लिये शिव जी ने अग्ने मुंह मे इनकी सृष्टि की थी । वीरभद्र ने बहुत मे रुद्रो की सृष्टि करके दत्त का यज्ञ नष्ट किया था ।

वीरभद्रक—सच्चा पुं० [सं०] खस । उशीर ।

वीरभद्र रस—सच्चा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सन्निपात के लिये बहुत उपकारी माना जाता है ।

वीरभव ती—सच्चा स्त्री० [सं०] बड़ी वहित [को०] ।

वीरभार्या—सच्चा स्त्री० [सं०] वीर की पत्नी [को०] ।

वीरभाव—सच्चा पुं० [सं०] १ वीरो की प्रकृति या स्वभाव । २ तत्र मे एक भाव । वीरशैव संप्रदाय का एक भाव । विशेष दे० 'वीर'—१२ ।

वीरभुक्ति—सच्चा स्त्री० [सं०] आधुनिक वीरभूम का प्राचीन नाम ।

वीरमणि—सच्चा पुं० [सं०] पुराणानुसार देवपुर के एक प्राचीन राजा का नाम ।

विशेष—इस नरेश के पुत्र रुक्पागद ने रामचंद्र जी के यज्ञ का घोड़ा पकड़ लिया था । इसार शत्रु-न और हनुमान आदि ने इससे युद्ध किया था । कहते हैं, इस युद्ध मे महादेव जी भी वीर-मणि की ओर से लड़े थे और उन्होंने शत्रु-न को अपने पाश मे बाँध लिया था । तब रामचंद्र ने आकर उन्हें और अपना घोड़ा छुड़ाया था ।

वीरमत्स्य—सच्चा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम ।

वीरमर्दन—सच्चा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम ।

वीरमर्दल, वीरमर्दलक—सच्चा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता था ।

वीरमाता—सच्चा स्त्री० [सं० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो । वीरजननी । वीरप्रसू ।

वीरमानी—वि० [सं० वीरमानिन्] अपने को वीर माननेवाला [को०] ।

वीरमार्ग—सच्चा पुं० [सं०] स्वर्ग ।

वीरमुद्रिका—सच्चा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का छल्ला जो प्राचीन काल मे पैर की बीचवाली उँगली मे पहना जाता था ।

वीररज—सच्चा पुं० [सं० वीररजस्] सिंदूर ।

वीररस—सच्चा पुं० [सं०] १ वायु के नौ रसो मे एक का नाम । विशेष दे० 'वीर'—११ । २ वीर भाव [को०] ।

वीरराघव—सच्चा पुं० [सं०] १. रामचंद्र का नाम । २. ससृष्ट का एक नाटक ।

वीररेणु—सच्चा पुं० [सं०] भीमसेन का एक नाम ।

वीरललित—सच्चा पुं० [सं०] वीरो का सा, पर साथ ही कोमल स्वभाव । वीरता के साथ ही कोमल स्वभाव ।

वीरलोक—सच्चा पुं० [सं०] १. स्वर्ग । २. वीरो का समुदाय ।

वीरवती—सच्चा स्त्री० [सं०] १. मासरोहिणी नाम की लता । २ वह स्त्री जिसके पति और पुत्र जीवित हो [को०] ।

वरवत्सा—सच्चा स्त्री० [सं०] वीरमाता [को०] ।

वीरवल्ली—सच्चा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता ।

वीरवह—सच्चा पुं० [सं०] १ वह जो घाड़ो द्वारा खोचा जाय । २. रथ । स्पदन ।

वीरवाक्य—सच्चा पुं० [सं०] ललकार [को०] ।

वीरवाद—सच्चा पुं० [सं०] वीरता के कारण प्राप्त यश । प्रतिष्ठा । ख्याति [को०] ।

वीरवाह—सच्चा पुं० [सं०] वीरवह । रथ । स्पदन [को०] ।

वीरविक्रम—सच्चा पुं० [सं०] सगीत मे एक ताल का नाम [को०] ।

वीरविप्लावक—सच्चा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो शूद्रों से धन आदि लेकर हवन करता हो ।

वीरवृक्ष—सच्चा पुं० [सं०] १. भिलावा । २ अर्जुन नामक वृक्ष । ३. महाशालि । देवचान्य । ४. तिलवातर या बलतर नामक वृक्ष । ५. सावाँ नामक धान्य । ६. शाल वृक्ष ।

वीरवेतस—सच्चा पुं० [सं०] अमलवेत ।

वीरव्यूह—सच्चा पुं० [सं०] वीरो का व्यूह । सैनिको का एक व्यूह [को०] ।

वीरव्रत—सच्चा पुं० [सं०] १. वह जो अपने सकल्प पर सदा दृढ़ रहता हो । वीरतापूर्वक अपने सकल्प का पालन करनेवाला । २. वह ब्रह्मचारी जो बहून ही निष्ठा तथा आचारपूर्वक रहता हो । ३. पुराणानुसार मधु के एक पुत्र का नाम जो मुमना के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । ४. शूरता । वीरता [को०] ।

वीरशकु—सच्चा पुं० [सं० वीरशङ्कु] तीर । बाण [को०] ।

वीरशय—सच्चा पुं० [सं०] १. वीरो के सोने का स्थान, रणभूमि । युद्धक्षेत्र । लड़ाई का मैदान । २. बाण की शय्या—जैसी पितामह भीष्म के लिये अर्जुन ने शरो से बनाई थी [को०] ।

वीरशयन—सच्चा पुं० [सं०] १ वीरो का सोने का स्थान, रणभूमि । २ तीर की शय्या ।

वीरशय्या—सच्चा स्त्री० [सं०] १. रणभूमि । २. दे० 'वीरशय' ।

वीरशाक—सच्चा पुं० [सं०] वधुआ नामक साग ।

वीरशायी—वि० [सं० वीरशायिन्] वीरशय्या पर सोनेवाला [को०] ।

वीरशैव—सच्चा पुं० [सं०] शैवो का एक भेद ।

वीरश्रेष्ठ—सच्चा पुं० [सं०] अद्वितीय योद्धा [को०] ।

वीरसू—सच्चा पुं० [सं०] १. वह स्त्री जो पुत्र को ही जन्म दे । २. वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो । वीरजननी । उ०—अब, रहे यह रुदन वीर सू तुम, व्रत पालो । ठहरो प्रस्तुत वर वल्लि पर नीर न डालो ।—साकेत, पृ० ४०४ ।

वीरसेन—सच्चा पुं० [सं०] १. राजा नल के पिता का नाम । २. आहूक या आड़ नाम की जड़ी जो हिमालय मे होता है । ३. आलूबुखारा । ४. एक दानव का नाम [को०] । ५. हस्त-बंधक ग्रंथ के लेखक का नाम जिन्हें वीरसोम भा कहत हैं [को०] ।

वीरसेनज, वीरसेनसुत—सच्चा पुं [स०] राजा नल [को०] ।

वीरसैन्य—सच्चा पुं [स०] लहमुन [को०] ।

वीरस्कन्ध—सच्चा पुं [स० वीरस्कन्ध] महिष [को०] ।

वीरस्थ—सच्चा पुं [स०] वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान हो ।

वीरस्थान—सच्चा पुं [म०] १ साधको का एक प्रकार का आसन जिसे वीरासन कहते हैं । २ स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं ।

वीरस्नाका—सच्चा स्त्री [स०] वेतस या नरसल की बनी हुई रेहल जिसपर रखकर पुस्तकें पढ़ी जाती थी [को०] ।

वीरहत्या—सच्चा स्त्री [स०] १ मनुष्य की हत्या करना । नरवध । २ पुत्रवध [को०] ।

वीरहा^१—सच्चा पुं [स० वीरहन्] १ विष्णु । २ वह अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसका अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो ।

वीरहा^२—वि० मनुष्यो या शत्रु के वीरो को मारनेवाला ।

वीरहोत्र—सच्चा पुं [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो विंध्य पर्वत पर था ।

वीरातक—सच्चा पुं [स० वीरान्तक] १ वह जो वीरो का अंत या नाश करता हो । २ अर्जुन नामक वृक्ष ।

वीरा—सच्चा स्त्री [स०] १. मुरामासी । मुरा । २ क्षीर काकोली । ३ भुईआँवला । ४ एलुवा । ५. केला । ६ विदारिकद । ७ काकोली । ८ शतावर । ९. धौकुं प्रार । १०. ब्राह्मो । ११. अतीस । अतिविषा । १२ मदिरा । शराव । १३ शीशम का पेड़ । १४ गभारी नामक वृक्ष । १५ पृथिव्याँ । पिठवन । १६ खिरँटी । १७ कुटकी । १८ जटामासी । बालछड़ । १९ आँवला । २० वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हो । २१, वीरपत्नी । वीरभार्या (को०) । २२ पत्नी (को०) । २३ माता (को०) । २४ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम ।

वीराचारी—सच्चा पुं [स० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त उपासक ।

विशेष—वीराचारी अपने इष्ट देवताओं की वीर भाव से उपासना करते हैं । ये लोग मद्य को शक्ति और मांस को शिव स्वरूप मानते हैं, और इन दोनों के भक्तों को भैरव समझते हैं । ये लोग चक्र में बैठकर पूजन करते हैं और बीच बीच में किसी स्त्री को काली मानकर उसपर मद्य, मांस आदि चढ़ाते हैं । ये लोग प्रायः शव या मृत शरीर लाकर उसकी पूजा करते और उन्हीं के द्वारा अनेक प्रकार के साधन और पूजन करते हैं ।

वीराद्रु—सच्चा पुं [स०] अर्जुन नामक वृक्ष ।

वीरान—वि० [फ्रा०] उजड़ा हुआ । जिसमें आवादी न रह गई हो । निर्जन । जैसे—यह बस्ती विलकूल वीरान हो गई है । २ जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो । श्रीहीन । ३ (भूमि) जिसमें कुछ पैदा न हो । बजर ।

वीराना—सच्चा पुं [फ्रा० वीरान्द्र] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की आवादी न हो । उजाड़ । जंगल ।

वीरानी—सच्चा स्त्री [फ्रा०] वीरान या उजाड़ होने का भाव ।

वीराम्ल—सच्चा पुं [म०] अमलवेत ।

वीरास्क—सच्चा पुं [म०] आस्क या आड नाम की जड़ी जो हिमालय में होती है ।

वीराशसन—सच्चा पुं [स०] १ वह युद्धभूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पड़ती है । युद्ध में जोखिम से भरी जगह । २ युद्ध का मैदान । रणक्षेत्र (को०) । ३ निगराना रखना (को०) ४ अगतिक वा निःबलव आशा [को०] ।

वीराष्टक—सच्चा पुं [स०] कातिक्य के एक अनुचर का नाम ।

वीरासन—सच्चा पुं [म०] १ बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार प्रायः पूजन और तांत्रिकों आदि के साधन में होता है । इसमें बाएँ पैर ओर रखने पर दाहिना जाँघ रखकर बैठते हैं । २ कोई एक जानु माड़कर बैठना (को०) । ३ युद्धक्षेत्र । रणभूमि (को०) । ४ निगरानी करने की जगह । सतरी को चौका (को०) ।

वीरिण—सच्चा पुं [स०] ईरिण भूमि । ऊसर भूमि [को०] ।

वीरिणी—सच्चा स्त्री [स०] १. वीरण प्रजापति की कन्या उसिकनी जो दक्ष का व्याह था । २ वह स्त्री जिसे पुत्र हो । पुत्रवती । ३. एक प्राचीन नदी का नाम ।

वीरी^१—सच्चा पुं [स० वीरिन्] वीरी । शत्रु । उ०—वीरी जणह न चालइ वाट ।—वा० रासा, पृ० ६७ ।

वीरुघ—सच्चा पुं [स० वाह्व, वाह्व] १. वृक्ष । २ लता और वनस्पति आदि । ३ ओषधि । ४ विस्तृता या मुलमनी नाम की लता । ५ शाख । टहना (का०) । ६ काटने पर पुन बढ जानेवाला पौधा (को०) ।

वीरुघा—सच्चा स्त्री [स०] १ दवा के रूप में काम में आनेवाली वनस्पति । ओषधि । ३. दे० 'वीरुघ' ।

वीरद्र—सच्चा पुं [स० वीरेन्द्र] श्रेष्ठ वीर [को०] ।

वीरेद्री—सच्चा स्त्री [स० वीरेन्द्रो] एक योगिनी का नाम [को०] ।

वीरेश—सच्चा पुं [स०] १ शिव । महादेव । २ श्रेष्ठ वीर । बड़ा योद्धा (को०) । ३. शिव की एक लिंगमूर्ति (को०) ।

वीरेश्वर—सच्चा पुं [स०] १ शिव । महादेव । दे० 'वीरेश' ।

यौ०—वीरेश्वर लिंग = शिव की एक लिंगमूर्ति । वीरेश ।

वीरोज्झ—सच्चा पुं [स०] वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करने में आलस्य करता हो [को०] ।

वीरोपजीवक—सच्चा पुं [स०] दे० 'वीरोपजीविक' [को०] ।

वीरोपजीविक—सच्चा पुं [स०] वह जो अग्निहोत्र के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो ।

वीर्य—सच्चा पुं [स०] १ शरीर के सात धातुओं में से एक धातु जिसका निर्माण सबके अंत में होता है और जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है ।

विशेष—वीर्य को चरम धातु भी कहते हैं। यह स्त्रीप्रसंग के समय अथवा रोग आदि के कारण यो ही मूर्त्रेद्रिय से निकलता है। कुछ लोगो का मत है कि वीर्य दो प्रकार का है—शीत और उष्ण। और कुछ लोगो का मत है कि यह आठ प्रकार का होता है—उष्ण, शीत, स्निग्ध, रुद्ध, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीव्र। विशेष दे० 'शुक्र'।

पर्या०—शुक्र। तेज। रेत। बीज। इद्रिय।

२. दे० 'रज'। ३. वैद्यक के अनुसार किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ में शक्ति रहती है। किसी वस्तु का मूल तत्त्व। ४ पराक्रम। बल। शक्ति। सामर्थ्य। ५ अन्न आदि का बीज। बीजा। ६ पुस्त्व (को०)। ७ साहस। दृढता (को०)। ८ (श्रोत्रियों की) अचूकता। प्रभाव-कारिता (को०)। ९. आभा। दीप्ति। काति (को०)। १० गौरव। महत्ता। महिमा (को०)। ११ गगल। विप (को०)। १२ सोना। सुवर्ण (को०)।

वीर्यकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] मज्जा। मेद। वसा। वपा [को०]।

वीर्यकाम—वि० [स०] पुस्त्व का अभिलाषी [को०]।

वीर्यकृत—सञ्ज्ञा पु० [स०] बलवान्। ताकतवर।

वीर्यकृत्—वि० [स०] जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक।

वीर्यज—सञ्ज्ञा पु० [स०] लडका। बेटा। पुत्र।

वीर्यतम—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत बड़ा बलवान् हो।

वीर्यघर—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप में रहनेवाले एक प्रकार के क्षत्रिय।

वीर्यपण—वि० [स०] वीरता द्वारा क्रीत या खरीदा हुआ [को०]।

वीर्यपारमिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धों के अनुसार छह सिद्धियों में एक। शक्ति की पराकाष्ठा [को०]।

वीर्यप्रपात—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीर्य का पतन। वीर्य का स्खलन [को०]।

वीर्यवत्—वि० [स०] १ बलवान्। मजबूत। प्रबल। समर्थ। २. मासल। हृष्ट पुष्ट।

वीर्यवान्—वि० [स०] वीर्यवत् दे० 'वीर्यवत्'।

वीर्यवाही—वि० [स०] वीर्यवाहिन् बीज अथवा वीर्य उत्पन्न करने-वाला [को०]।

वीर्यवृद्धिकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीर्य बढ़ानेवाली ओषधि। वाजी-करण [को०]।

वीर्यशुल्क^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वीर्यशुल्का] वह प्रतिज्ञा या प्रण जो वीर्य सबधी हो। जैसे,—यह प्रतिज्ञा करना कि जो पुस्त्व (या स्त्री) अमुक कार्य करेगा, उसके साथ इस स्त्री (या पुस्त्व) का विवाह होगा।

वीर्यशुल्क^२—वि० जिसका मूल्य वीर्य हो। शक्ति द्वारा क्रीत [को०]।

वीर्यसह—सञ्ज्ञा पु० [स०] सूर्यवंशी राजा सौदास के पुत्र कल्पावपाद का एक नाम।

वीर्यहारी—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीर्यहारिन् एक यक्ष का नाम जो दुःसह नामक यक्ष की कन्या के गर्भ से किसी चोर के वीर्य से उत्पन्न हुआ था।

विशेष—कहते हैं, जो लोग कदाचारी होते हैं, या बिना हाथ पैर बोए रसोईघर में जाते हैं, उनके घर में यह यक्ष अपने और दो भाइयों के साथ रहता है।

वीर्यहोन—वि० [म०] १ निर्वीर्य। २. कापुरुष। शक्तिहीन। ३. पुस्त्वहीन। नपुसक। क्लीब। ४ बाजरहित। जिसमें बीज न हो [को०]।

वीर्यतिराय—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीर्यतिराय जैनियों के अनुसार वह पाप कर्म जिसका उदय होने से जीव पुष्टांग होते हुए भी शक्ति-विहीन हो जाता है और कुछ पराक्रम नहीं कर सकता।

वीर्या—गण स्त्री० [स०] १ दे० 'वीर्य'। २ एक नागकन्या (को०)।

वीर्याधान—सञ्ज्ञा पु० [स०] गर्भाधान [को०]।

वीर्यान्वित, वीर्ययुक्त—वि० [स०] वीर्यवान्। शक्तिमान् [को०]।

वीर्यविदान—सञ्ज्ञा पु० [स०] किसी कार्य को वीरतापूर्वक संपन्न करना [को०]।

वीर्यविधूत—वि० [स०] वीर्य द्वारा तिरस्कृत वा कपित। शक्ति द्वारा पराजित [को०]।

वीर्यघ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. अन्न की राशि। २. भूसे का ढेर। ३ सडक। ४ राजकर। ५ शकट आदि का जुआ। ६. घट। घड़ा। ७. बोझा [को०]।

वीर्यघिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विमाती। बिसातवाने की दूकान करनेवाला। २. वह जो बहंगी आदि द्वारा बोझ ढोता हो। बहंगी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

वीर्याह(उ)—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'विवाह'।

वीश—सञ्ज्ञा पु० [स०] २० पल या २ तोले का एक परिमाण [को०]।

वीषित—वि० [स०] बिखरा हुआ। विस्तृत। फला हुआ [को०]।

वीस^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] नृत्य का एक प्रकार [को०]।

वीस पु^१—वि० सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विशति, विश दे० 'वीस'। जैसे, वीस वसा = वीस विस्वा।

वीसरना^१—क्रि० अ०, क्रि० स० [स०] विस्मरण दे० 'बिसरना'। उ०—ढोला मिलिस न वीसरसि नवि आविसि ना लेसि। —ढोला०, दू० १७५।

वीसवसा(उ)^१—क्रि० वि० [हिं वीस + विस्वा] पूरी तौर से। पूर्णतः। उ०—बेली तरलां तरां विलंबी बण हरियाली वीसवसा। —वाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२२।

वीसारना^१—क्रि० स० [स०] विस्मरण दे० 'बिसरना'। उ०—(क) सभारियां संताप, वीसारिया न वीसरइ। —ढोला०, दू० १६०। (ख) वीसारियां न वीसरइ चितारियां नावत। —ढोला०, दू० ६१२।

वीस्न(उ)—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु दे० 'विष्णु' उ०—ब्रह्मा वीस्न महादेव जानी। तिनते उपपत सकल पसारा उपजावत पालत करत सधारा। —रामानंद०, पृ० ३१।

वीहगडा—सञ्ज्ञा पुं० [सं विहङ्ग] १ पक्षी। २ विहायस। आकाश।
उ०—जे साजण वीहगडे वीहगडउ न दूरि।—ढोला०,
दू० ४६४।

वीह पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [म० भी, प्रा० वीह, वोह] दे० 'वीह'। उ०—बोलि
न सक्कूँ वोहतउ हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुडउ माल
वणी मूर्ई।—ढोला०, दू० ४०४।

वीहार—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'विहार'।

वुकूअ—सञ्ज्ञा पुं० [अ वुकूअ] १ घटिन होना। प्रकट होना। २ घटना।
वाकिया। ३ पक्षियों का नीचे उतरना [को०]।

वुकूआ—सञ्ज्ञा स्त्री० [उर्दू वुकूपह्] दे० 'वाकिया', 'वाका'।

वुकूद—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वुकूद] आग्न को दीप्त करना। जलाना [को०]।

वुकूफ—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वुकूफ] ज्ञान। जानकारी [को०]।

वुजू—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वुजू] दे० 'वजू'। [को०]।

वुजूद—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वुजू] दे० 'वजूद' [को०]।

वुडित—वि० [सं] निमग्न। निमज्जित [को०]।

वुखद—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] आगमन। आना। पधारना। २ प्रवेश [को०]।

वुर्ण—वि० [म०] वरण किया हुआ। चुना हुआ [को०]।

वुवूर्णु—वि० [म०] चुनने या वरण करने की इच्छावाला। जो चयन
करना चाहता है [को०]।

वुसूल—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ 'वपूल'। २ दे० 'उसूल' [को०]।

वुसूली—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] वमूला। प्राप्ति।

वृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृत्] १ स्तन का अगला भाग। कुचाग्र। चुचुर।
२ बीड़ी। डेढ़ा। ३ शाखा का वह अंश जिससे पुष्प, फल, पत्ते
आदि समुक्त होते हैं। प्रसववधन [को०]। ४ घटीचारा। घड़ा
रखने की तिपाई [को०]। ५ वृताक। भटा। बैगन [को०]।
६ कोशधारी एक कीट। जैस, रेशम का कीड़ा [को०]।
यौ०—वृत्तुवा = गोल कद्दू या लौंगी। वृत्तफल = बगन। भटा।
वृत्तयमक।

वृत्तक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृत्तक] डठल [को०]।

वृत्तयमक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृत्तयमक] यमक अलंकार का एक प्रकार
जहाँ एक ही कविता में अनेक यमको का प्रयोग होता है [को०]।

वृताक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृत्ताक] १ बैगन। २ पोई का साग।

वृताकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वृत्ताकी] १ वनभटा। २ बैगन।

वृतासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृत्त + आसन] वृत्तस्त्री पीहिका या आसन।
उ०—वृतासन हिलता डुलता है। इधर उधर मृदु तनु तुलता
है।—कुणाल०, पृ० ११६।

वृत्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० वृत्तिका] लघु वृत्तक। छोटा डंठल [को०]।

वृत्तिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वृत्तिता] कटुका [को०]।

वृद—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्द] १ समूह। झुंड। राशि। ढेर।

यौ०—वृदगान = समवेत गायन। कई गायको का एक साथ
गाना। वृदगायक = अनेक गायको के साथ साथ गानेवाला।
वृदगीत। वृदमाधव = चिकित्सापरक एक ग्रंथ। वृदवाद्य।
वृदसाहिता, वृदसिधु = आयुर्वेद के ग्रंथ का नाम।

२ सौ करोड की संख्या। ३ एक मुहूर्त का नाम। उ०—माघ
शुक्ल भूता दिन जानो वृद मुहूर्त में पहिचानो।—विश्राम
(शब्द०)। ४ गुच्छा। स्तवक [को०]। ५ कोरम [को०]।
सहगान। वृदगान [को०]। ६ गले का फोटा, अर्जुन या
ग्रथि [को०]। ७ आयुर्वेद के एक विद्वान् [को०]।

वृद—वि० अत्यधिक। वेशुमार [को०]।

वृदगीत—सञ्ज्ञा पुं० [म० वृन्द + गीत] समवेत गान। कोरम गीत। वह
गीत जिसे एक साथ कई गायक गाते हैं। उ०—जो वृदगीत
युत वृदवाद्य से रखते महलों को मुखरित, ले श्रमित, पीन
वीणा, मृदग आदिक वाद्य के उपादान।—भूमि०, पृ० ६५।

वृदवाद्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्द + वाद्य] कई वाद्यों का एक साथ बजने-
वाला समूह। (अ०) आर्केस्ट्रा।

वृदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वृन्दा] १ तुलसी। २. राविका के मोलह
नामो मे से एक नाम। ३ गोकुल के समीप की एक
अरण्यानी [को०]।

वृदाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दाक] परगाछा नाम का पेड़।

वृदार—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दार] १. मनोज्ञ। सुंदर। आकर्षक। २
अधिक। बड़ा। विशाल। ३ प्रमुख। उत्तम। श्रेष्ठ [को०]।

वृदारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दारक] १. देवता। २ श्रेष्ठ व्यक्ति।
समादरणीय व्यक्ति [को०]। ३ घृतराष्ट्र का एक पुत्र [को०]।

वृदारक—वि० [स्त्री वृन्दारका, वृदारिका] १. दे० 'वृदार'। २
आदरणीय। समान्य [को०]।

वृदारका पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दारक] देवता। वृदारक।—अने-
कार्थ०, पृ० ४१।

वृदारण्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दारण्य] वृदावन।

वृदावन—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दावन] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन
तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का कीड़ाक्षेत्र माना जाता है।

विशेष—कहते हैं, श्रीकृष्ण ने अपनी अघिकाश बाललीलाएँ
यहीं की थीं। पुराणों में वृदावन के सबंध में अनेक प्रकार की
विलक्षण कथाएँ आदि पाई जाती हैं। महमूद गजनवी ने
वृदावन और उसके आस पास के अनेक स्थानों को विलकुल
नष्ट भ्रष्ट कर डाला था, और बहुत दिनों तक यह उसी दशा में
पड़ा रहा। पर पीछे से चैतन्य महाप्रभु ने यमुना के किनारे
वर्तमान वृदावन नामक नगर की स्थापना की थी। इस नगर
में इस समय हजारों बड़े बड़े मंदिर हैं और दूर दूर से यात्री
लोग यहाँ दर्शनो के लिये आते हैं।

वृदावनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वृन्दावनी] तुलसी [को०]।

वृदावनेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं वृन्दावनेश्वर] श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृदावनेश्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं वृन्दावनेश्वरी] राधिका का एक नाम।

वृदिष्ठ—वि० [सं वृन्दिष्ठ] १. अत्यंत बड़ा। विशालतम। २. सुंदर-
तम। मनोज्ञतम [को०]।

वृदी—वि० [सं वृन्दिन्] वृदवाला। समूहवाला [को०]।

वृदीयान्—वि० [सं वृन्दीयस्] १. दे० 'वृदिष्ठ'। २. सुंदरतर [को०]।

वृहण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्धक द्रव्य। २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का धूम्रपान। ३ असगंध। ४ मुनक्का। ५ भुईं कुम्हड़ा। ६ चरक के अनुसार सूअर के मांस में पकाया हुआ जी का सत्तू। ७ पुष्ट करना (को०)। ८ हाथी की चिग्घाड (को०)।

वृहण—वि० [सं०] पुष्ट करनेवाला। पुष्टिकारक (को०)।

वृहणवस्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की वस्ति जिसे निरुह या निरुद्ध भी कहते हैं। विशेष दे० निरुद्ध-वस्ति।

वृहिति—वि० [सं०] परिवर्धित। पुष्ट किया हुआ (को०)।

वृहिति—सञ्ज्ञा पुं० हाथी की चिग्घाड। बीड (को०)।

वृ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सेना की एक टुकड़ी। उ०—वेद काल में 'वृ' सेना के एक गुल्म को कहते थे।—प्रा० भा० पृ० १४०।

वृक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ते की जाति का एक मामाहारी पशु। भेड़िया। उ०—महा महिष बर। वरद वृकहु बहु हनत सहित श्रम।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६४। २ शृगाल। गीदड़। ३ कौवा। ४ क्षत्रिय। ५ चोर। लुटेरा। ६ वज्र। ७ अगस्त्य का पेड़। ८ गवाविरोजा। ९ उलूक। उल्लू (को०)। १० सुगंधित द्रव्यों का मिश्रण (को०)। ११ एक राजस का नाम। १२ जठराग्नि (को०)। १३ हल (को०)। १४ सूर्य (को०)। १५ चंद्रमा (को०)। १६ कृष्ण का एक पुत्र (को०)।

वृककर्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृककर्मन्] एक असुर का नाम।

वृककर्मा—वि० भेड़िए के समान या तुल्य। अत्यंत क्रूर (को०)।

वृकखड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकखण्ड] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकगर्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

वृकग्राह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकजभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकजम्भ] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकदत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकदन्त] पुराणानुसार एक राजस का नाम। इसी की कन्या सानदिनी कुम्भकर्ण की व्याही थी।

वृकदश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकदीप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकदेव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

वृकदेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी, देवकी का एक नाम।

वृकदेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृकदेवा' (को०)।

वृकधूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह धूप जो अनेक प्रकार के सुगंधित द्रव्यों की सहायता से तैयार किया गया हो। २ सरल वृक्ष का निर्यास। तारपीन।

वृकधूमक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक लुप (को०)।

वृकधूर्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गीदड़।

वृकधूर्तक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गीदड़। २ रीछ (को०)।

वृकघोरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक पशु (को०)।

वृकनिवृत्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकप्रस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महामारत के अनुसार एक ग्राम का नाम।

वृकप्रेक्षी—वि० [सं० वृकप्रेक्षित्व] भेड़िए की तरह देखनेवाला (को०)।

वृकवधु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकवन्धु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकरथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार कर्ण के एक भाई का नाम।

वृकल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार श्लिष्टि के एक पुत्र का नाम। २ वृकल का वस्त्र या परिवान (को०)।

वृकला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नाडी।

वृकवचिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृकवञ्चिक] एक वैदिक ऋषि का नाम।

वृकवाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] द्वार के दोनों ओर लगाई जानेवाली लकड़ी। बाजू (को०)।

वृकस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] माहिष्मती नगरी (को०)।

वृका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवष्टा या पाढा नाम की लता। २. प्राचीन काल का एक परिमाण जो दो सूपों के बराबर होता था।

वृकाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ।

वृकाजिन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भेड़िए का चमड़ा। २. वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

वृकाम्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का खट्टा नीबू (को०)।

वृकायु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जगली कुत्ता। २ चोर।

वृकायु—वि० भेड़िए जैसी प्रकृतिवाला, हिंसक, क्रूर (को०)।

वृकाराति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकाश्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक ऋषि का नाम।

वृकाश्वकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वृकास्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिन्हें वृकाश्व भी कहते थे। २ वह जिसका मुँह भेड़िए जैसा हो (को०)।

वृकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा भेड़िया। २. सियारिन। ३ अवष्टा। पाढा (को०)।

वृकोदर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भीमसेन का एक नाम।

विशेष—कहते हैं, भीमसेन के पेट में वृक नाम की विकट अग्नि थी। इसी से उनका यह नाम पड़ा।

२ ब्राह्मण (को०)। ३ शिव के गणों का एक वर्ग (को०)।

वृक्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गुरदा। उ०—वृक्क जो कुत्ति गोल है सो उदर में स्थित भेद की पुष्टि करनेवाले कहे हैं।—शार्ङ्गधर०, पृ० १५३। २ हृदय (को०)।

वृक्कक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मूत्राशय। गुरदा।

वृक्का—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ हृदय। २ गुरदा (को०)।

वृक्कण—वि० वि० [सं०] १ कटा या काटा हुआ। छिन। २ विदारित। फाड़ा हुआ। ३ टुटा या तोड़ा हुआ (को०)।

वृक्त—वि० [सं०] १. निर्मल किया हुआ। २. फैलाया या बिखेरा हुआ। विकीर्ण [को०]।

वृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनस्त्राति या उद्भिज्ज के अतर्गत वह बड़ा चूष जिसका एक ही मोटा और भारी तना होता है और जो जमीन से प्रायः सीधा ऊपर की ओर जाता है। पेड़। दरहन। द्रुम। विटप।

विशेष—प्रायः लोग बोलचाल में वृक्ष और चूष अथवा वृक्ष और दूसरी छोटी वनस्त्रातियों में कोई अंतर नहीं रखते और उनमें से अधिकांश को प्रायः वृक्ष ही कहा करते हैं। पर चूष और वृक्ष में यह अंतर है कि चूष तीन चार हाथ से अधिक ऊँचा नहीं होता, और न उसमें कोई एक मुख्य तना होता है। उसकी जड़ से ही कई डालियाँ निकलकर ऊपर उबर फैल जाती हैं। परंतु वृक्ष में एक मुख्य और भारी तना होता है जो पहले कुछ ऊँचाई तक सीधा ऊपर की ओर जाता है, और तब उसमें से चारों ओर डालियाँ निकलती हैं। पर फिर भी कुछ बड़े चूष ऐसे होते हैं जो अपने आकार प्रकार के कारण ही वृक्ष कहलाते हैं। वृक्ष में कुछ ठोस काठ का रहना भी आवश्यक होता है। पर केले में काठ का कोई अंश न रहने पर भी उसे लोग प्रायः वृक्ष ही कहते हैं। कुछ वृक्ष ऐसे होते हैं जिनके मूल पत्ते वसंत ऋतु के आरंभ में झड़ जाते हैं, और तब फिर नए पत्ते निकलते हैं। ऐसे वृक्ष 'पतम्भ' वाले वृक्ष कहलाते हैं जिनमें पुगने पक्के पत्ते के गिरने से पहले ही नए पत्ते निकल आते हैं। ऐसे वृक्ष सदाबहार कहलाते हैं। वृक्षों में प्रायः अनेक प्रकार के फल लगते हैं जिन्हें लोग खाते हैं, और उसकी लकड़ी में तरह तरह की चीजें (जैसे—मेज, कुरसी, दरवाजा, हल, गाड़ी आदि) बनाई जाती हैं। इनकी पत्तियाँ आदि औषधि रूप में, रंग निकालने और चमड़ा सिक्काने के काम में आती हैं। वृक्ष प्रायः बीजों से और कभी कभी पत्ती के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं।

पर्याय—महीचूड़। शाखी। विटपी। पादप। तर। पलशो। द्रुम। आगम। स्थिर। नग। अग। कुज। क्षुनिह। महीज। जार। २ किसी प्रकार का चूष या पौधा अथवा कोई कुछ बड़ा और ऊँची वनस्त्राति। ३ वृक्ष से मिलती जुती वह आकृति जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ आदि दिखलाई गई हों। वनवृक्ष। ४ वृक्ष का तना (को०)। ५ कुटज। इद्रजव (को०)। ६ कफन। मृतबीवर (को०)।

वृक्षकद—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षकद] विदारीकद।

वृक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा पेड़। २ पेड़। दरहन। ३ कुटज का पेड़।

वृक्षकुक्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली मुर्गा।

वृक्षकोटर—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का खोडरा [को०]।

वृक्षखड—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षखड] निक्षुज। वृक्षों का समूह [को०]।

वृक्षगुल्म—वि० [सं०] जो वृक्षों में आवृत हो। वृक्षा से ढका हुआ [को०]।

वृक्षगृह—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी, जिनका निवास वृक्ष है।

वृक्षचर—संज्ञा पुं० [सं०] बदर।

वृक्षच्छाय—संज्ञा पुं० [सं०] जो वृक्ष की छाया युक्त हो, कुंज [को०]।

वृक्षच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेड़ की छाया [को०]।

वृक्षज—वि० [सं०] वृक्ष से उत्पन्न (फल, फूल, काष्ठ आदि)।

वृक्षतक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरहरी। २ वृक्ष को काटनेवाला नरुद्वारा। काष्ठक्रेता।

वृक्षदल, वृक्षपत्र, वृक्षपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] पत्ता। पेड़ का पत्ता [को०]।

वृक्षदोहद—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष को फूल लगना। विशेष ३० 'दोहद ६'।

वृक्षधूप—संज्ञा पुं० [सं०] मरल या चोंद का पेड़।

वृक्षनाथ, वृक्षनाथक—संज्ञा पुं० [सं०] बट का पेड़। बट वृक्ष।

वृक्षनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ में निकलनेवाला किसी प्रकार का रस या तरल द्रव्य।

वृक्षपाक—संज्ञा पुं० [सं०] उड़ का पेड़। बट।

वृक्षपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली भाल वृक्ष। २ वनरक्षा। वन का चक्र [को०]।

वृक्षप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृतियों आदि के अनुसार पुण्यफल की प्राप्ति के लिये अथर्व्य प्रादि के वृक्ष लगन की क्रिया।

वृक्षभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। वि० ५० 'परगाछा'। २. वदाक, वदा।

वृक्षभवन—संज्ञा पुं० [सं०] कोटर। वृक्ष का खोडरा [को०]।

वृक्षभित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] टांगा, कुल्हाड़ी आदि जिससे वृक्ष काटा जाय [को०]।

वृक्षभेदी—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षभेद] १ कुठार। कुन्हाड़ी। २ बंदई की तल्ला, रत्तानी आदि [को०]।

वृक्षमर्कटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिरहरी [को०]।

वृक्षमार्जार—संज्ञा पुं० [सं०] काष्ठ बडाल। पेड़ पर रहनेवाला एक जानवर।

वृक्षमूल—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ की जड़।

वृक्षमूलिक—वि० [सं०] वृक्ष की जड़ या मूल से संबंध रखनेवाला।

वृक्षमृद्भू—संज्ञा पुं० [सं०] पानी में उगनेवाला घेत [को०]।

वृक्षराज—संज्ञा पुं० [सं०] परजाता। पारिजात।

वृक्षराट्—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षराज] पीपल का पेड़।

वृक्षरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। २ रुद्रवती। वदशा। वदाक। ३. अमरवेल। ४ जलुका नाम की लता। ५ विदारीकद। ककही या कवी नाम का पौधा। ७ पुष्कर-मूल।

वृक्षरोपक—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्षादि को लगानेवाला व्यक्ति।

वृक्षरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष रोपना। पेड़ लगाना [को०]।

वृक्षरोपयिता—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षरोपयितृ] वह जो वृक्ष आदि लगाने का काम करता हो [को०]।

वृक्षावाटिका, वृक्षावाटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वाग । बगीचा । उपवन ।
 वृक्षावासी—वि० [स० वृक्षावासिन्] वृक्ष पर रहनेवाला । जंगली ।
 उ०—यक्ष अगुलिमाल (बौद्धकाल) पहले एक वृक्षावासी
 नरभक्षक था, परवर्ती रूप में द्वारपाल हो गया ।—प्रा० भा०
 प०, पृ० ८७ ।
 वृक्षश—सञ्ज्ञा पु० [स०] गिरगिट । प्रतिसूर्यक [को०] ।
 वृक्षशायिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] लगूर ।
 वृक्षशायिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गिलहरी ।
 वृक्षसकट—सञ्ज्ञा पु० [स० वृक्षसङ्कट] वह पगडंडी जो घने वृक्षों के
 बीच से गई हो ।
 वृक्षसारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] द्रोणपुष्पी । गुमा ।
 वृक्षसेचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] पेड़ की सिंचाई । पेड़ों में पानी देना
 [को०] ।
 वृक्षस्नेह—सञ्ज्ञा पु० [स०] पेड़ में से निकलनेवाला निर्यास या
 तरल द्रव्य ।
 वृक्षाघ्रि—सञ्ज्ञा पु० [स० वृक्षाघ्रि] पेड़ का निचला भाग या चरण ।
 वृक्षमूल [को०] ।
 वृक्षादन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुठार । कुल्हाड़ा । २ बढई का बसूला
 या रुखानी [को०] । ३ अश्वत्थ वृक्ष । ४ पियाल का पेड़ ।
 ५ मधुमक्खी का छत्ता ।
 वृक्षादनी, वृक्षादिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विदारी । २ वदा ।
 बर्मा । वदाक ।
 वृक्षाधिरूहक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का आलिंगन [को०] ।
 वृक्षाधिरूढ—सञ्ज्ञा पु० [स०] आलिंगन का एक प्रकार, जिसमें नारी
 पुरुष से उसी प्रकार लिपट जाती है जिम प्रकार लता वृक्ष से
 [को०] ।
 वृक्षाधिरूढक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वृक्षाधिरूढ' [को०] ।
 वृक्षाधिरूढि—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ लता का वृक्ष में लिपटना । २
 आलिंगन का एक प्रकार [को०] ।
 वृक्षामय—सञ्ज्ञा पु० [म०] लाख ।
 वृक्षाम्ल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इमली । २ चुक नामक खटाई । ३
 अमड़ा । ४ अमलबेल । ५ अम्लकूटा । अवलकूटा ।
 वृक्षायुर्वेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि
 की चिकित्सा का वर्णन हो ।
 वृक्षार्हा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महामेदा ।
 वृक्षालय—सञ्ज्ञा पु० [स०] पक्षी । चिड़िया ।
 वृक्षावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृक्ष + अवली] पेड़ों की कतार । वृक्षसमूह ।
 उ०—तातें वंणवन को व्रज की वृक्षावली सर्वथा तोरनी
 नाही ।—दो सी वावन०, भा० १, पृ० ३०२ ।
 वृक्षावास—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वनवासी । तपस्वी । २ पक्षी [को०] ।
 वृक्षाश्रयी—सञ्ज्ञा पु० [स० वृक्षाश्रयिन्] छोटा उल्लू । २ पक्षी [को०] ।
 वृक्षिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृक्ष] वह पुतली जो वृक्ष के आधार पर
 हो । शारभजिका । पुतली । उ०—यहाँ बौद्ध तोरणों में
 प्रयुक्त वृक्षिका यक्षिणी के प्रतीक का प्रभाव स्पष्ट दीखता है,

किंतु हिंदू शैली में निर्मित होने के कारण इनके आकार और
 विषय में परिवर्तन आ गया ।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६५ ।

वृक्षोत्थ—वि० [स०] पेड़ पर उगा हुआ । वृक्ष पर उगनेवाला [को०] ।
 वृक्षोत्पल—सञ्ज्ञा पु० [स०] कनियारी या कनकचपा का पेड़ ।
 वृक्षौका—सञ्ज्ञा पु० [स० वृक्षौकस्] वनमानुष [को०] ।
 वृक्ष्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] पेड़ का फल ।
 वृज—सञ्ज्ञा पु० [म० व्रज] दे० 'व्रज' ।
 विशेष—'वृज' शब्द के यौगिक आदि के लिये दे० 'व्रज' शब्द के
 यौगिक ।
 वृजन^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ आकाश । आसमान । २ दुष्कर्म पाप ।
 ३ लड़ाई । युद्ध । ४ निपटारा । निराकरण । ५ ताकत ।
 शक्ति । बल । ६ बाल । ७ शत्रु । दुश्मन । ८ रक्षित या
 घेरी हुई भूमि या चरागाह [को०] । ९ घुंघराले बाल [को०] ।
 १० विपत्ति । आपत्ति । दुःख । सकट [को०] ।
 वृजन^२—वि० १ कुटिल । टेढ़ा । २ शक्तिशाली । मजबूत [को०] ।
 ३ जो अचल न हो । चल । स्थायी [को०] । ४ विनम्र ।
 क्षयिण्यु [को०] ।
 वृजन्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] ग्राम में रहनेवाला बहुत ही सोचा सादा
 आदमी । वह जो परम साधु हो ।
 वृजि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्रज भूमि । २ मिथिला प्रदेश । तिरहुत ।
 वृजिन^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. पाप । गुनाह । उ०—देव अखिल मंगल
 भवन निविड ससय समन दमन वृजिनाटवी कष्टहर्ता ।—तुलसी
 (शब्द०) । २. दुःख । कष्ट । तकलीफ । ३ रक्त चर्म । लाल
 खाल या चमड़ा । ४ खून । लहू । रक्त । ५ बाल । कुचित
 केश । ६ दुष्ट व्यक्ति [को०] ।
 वृजिन^२—वि० १ कुटिल । टेढ़ा । २ पापयुक्त ।
 वृज्य—वि० [स०] जो मोड़ा जाय । जो ऎंठा या घुमाया जाय [को०] ।
 वृत्ततु—सञ्ज्ञा पु० [म० वृत्तान्त] दे० 'वृत्तांत' । उ०—इम आतम
 उद्धार करि जनम लिया भुप आई । सो वृत्त कवि चंद कहि
 बरन्यौ कवित बनाइ ।—पृ० रा०, १।५७८ ।
 वृत्त—वि० [स०] १ जो किसी काम के लिये नियुक्त किया गया हो ।
 मुकर्रर किया हुआ । २ ढका हुआ । छाया हुआ । ३ जिसके
 सबब में प्राथना की गई हो । ४ जा मजूर किया गया
 हो । स्वीकृत । ५ गोल । ६ वरण किया हुआ । चुना
 हुआ [को०] । ७ चारों ओर से घेरा हुआ । आवृत [को०] ।
 ८ जो दूषित किया गया हो [को०] । ९ सेवित [को०] ।
 वृत्तपत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुत्रदात्री नाम की लता ।
 वृत्ताक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुरगा ।
 वृत्तिकर—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्तिकर्] विकतक नाम का वृत्त ।
 वृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह जिमसे कोई चीज घेरी या ढकी जाय ।
 २. नियुक्त करने की क्रिया । नियुक्ति । ३ छिपान की क्रिया ।
 ४ वरण । चुनाव [को०] । ५. याचना । प्रार्थना [को०] ।

वृत्त'—सञ्ज्ञा पुं० [नं०] १ चरित्र। चरित। २ वेदो और शास्त्रो के अनुकुल आचार रखना। ३ आचार। चाल चलन। ४ स्वन के आगे का भाग। चूचुर्। ५ सफेद ज्वार। ६ गुडा या गुड नाम की घाम। ७ अजीर। ८ सतिवन। ९ छुआ। १० समानार। वृत्तात। हाल। उ०—अब जो वृत्त नवीन, होय कहहु सो करि कृपा।—प्रेमवन०, भा० १, पृ० ८२। ११ बडो के आदर, इद्रियनिग्रह और सत्य आदि को और होनेवाली प्रवृत्ति। १२ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। १३ जीविका का साधन। वृत्ति। १४ वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वसिक छंद। जैसे,—इंद्रवज्रा, उर्वेद्रवज्रा, मालिनी आदि। उ०—नूतन वृत्तों में कविकोविद नए गीत रच लाते हैं। नव रागों में, नव तालों में, गायक उन्हें जगाते हैं।—साकेत, पृ० २७३।

विशेष—पदों के विचार से वृत्त तीन प्रकार के होते हैं। जिस वृत्त के चारों पद समान हों, वह 'सम वृत्त' कहलाता है, जिसमें चारों पद असमान हों, वह 'विषम वृत्त' कहलाता है, और जिसके पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद समान हों, उसे 'अर्ध समवृत्त' कहते हैं।

१५ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। इसे गडका और दडिका भी कहते हैं। १६ वह चैन जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। १७ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्यबिंदु से समान अंतर पर हो। १८ दे० 'वृत्तासुर'।

वृत्त'—वि० १ बीता हुआ। गुजरा हुआ। २ हठ। मजबूत। ३ जिसका आकार गोल हो। वर्तुल। ४ मृत। मरा हुआ। ५ जो उत्पन्न हुआ हो। जात। अस्तित्वमय। विद्यमान। ६ निष्पन्न। सिद्ध। ७ ढका हुआ। आच्छादित। ८ अनुष्ठित। कृत (को०)। ९ पठित। अधीत (को०)। १० प्रसिद्ध। ख्यात (को०)। ११ घटित। समूत (को०)।

वृत्तक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह गद्य जिसमें कोमल तथा मधुर अक्षरों और छोटे छोटे समासों का व्यवहार किया गया हो। २ छंद। ३ बौद्ध या जैन गृहस्थ (को०)।

वृत्तकर्कटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा।

वृत्तकोशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता।

वृत्तकोप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पीली देवदाली।

वृत्तखंड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तखण्ड] १ किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २ मेहराव।

वृत्तगधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृत्तगन्धि] वह गद्य जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो। वह गद्य जिसमें पद्य का आनंद आना हो।

वृत्तगधी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तगन्धिन्] दे० 'वृत्तगधि'।

वृत्तगुड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तगुण्ड] दीर्घनाल या गोदला नाम की घास।

वृत्तचूट—वि० [सं०] १ मेहरावनुमा (भरोसा)। २ दे० 'वृत्तचौन' (को०)।

वृत्तचेष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ न्वभान। प्रकृति। मिजाज। २ आचरण। चानचनन।

वृत्तचौल—वि० [सं०] जिसका चूड़ाकरण मस्कार हो चुका हो (को०)। वृत्तज्ञ—वि० [सं०] गतिरिवाज, घटना, इतिहास, वृत्तांत आदि जाननेवाला (को०)।

वृत्ततटुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्ततटुल] यवनान। जवनान।

वृत्तपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुण्डरीक नाम की लता।

वृत्तपरिणाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्त की परिधि या घेरा (को०)।

वृत्तपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा। पाढा। २. बड़ी शरणपुष्पी।

वृत्तपुच्छा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चमड़ा (को०)।

वृत्तपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सारंग का पेड़। २ कदम या कदव का पेड़। ३ जलवेन। ४ मुद्दे नदर। ५ मदागुलाव। सेवती। ६ मातिया। मोगरा। मुग्दर। ७. मल्लिका। कुन्जक। मालती।

वृत्तपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागदमनी। २ मदागुलाव। सेवती।

वृत्तपूरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्त या छंद को पूरा करना। छंद की पूर्ति (को०)।

वृत्तप्रत्यभिज्ञ—वि० [सं०] धर्मवृत्तियों में अत्यंत दक्ष (को०)।

वृत्तफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कोई गोलाकार फल। २ कानी मिर्च। ३ अनार। ४ बेर। ५ कैय। कपित्थ। ६ लाल अपामार्ग। लाल चिचड़ा। ७ करज का पेड़। ८ तरबूज। ९ खरबूजा।

वृत्तफला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बैंगन। भटा। २ बड़वी ककड़ी। ३ आंवला।

वृत्तद्वय—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तद्वय] वह जो वृत्त या छंद के रूप में बांटा गया हो।

वृत्तबीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्तबीज'।

वृत्तबीजका, वृत्तबीजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तबीजका'।

वृत्तभग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तभङ्ग] १ छंदोभग। २ आचरण या व्यवहार की अष्टता (को०)।

वृत्तभोजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गडौर या गिडनी नाम का साग।

वृत्तमल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद आक। २ त्रिपुरमल्लिका।

वृत्तमाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्तांतों की माला। घटनाओं की शृंखला। उ०—भिन्न भिन्न शाखाओं के हजारों कवियों की केवल वृत्तमालाएँ साहित्य के इतिहास के अध्ययन में कर्हातक सहायता पहुंचा सकती थीं?—इतिहास, पृ० २।

वृत्तयुक्त—वि० [सं०] आचरणयुक्त। सदाचारी (को०)।

वृत्तवत्—वि० [सं०] १ जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी। २ वृत्त के समान। गोलवर्तुलाकार (को०)।

वृत्तविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्त + विधान] छंदोविधान। छंदों की योजना। उ०—श्रुतिकटु मानकर कुछ वर्णों का त्याग, वृत्त-विधान, लय, अस्यानुप्रास आदि नादमोदर्य-साधन के लिये ही है।—रस०, पृ० ४६।

वृत्तवीज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ भिभी। तरोई। २ लोविया। राजमाप।

वृत्तवीजका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. अरहर नामक दान। २ पाडुफली। पाडुरफली।

वृत्तबीजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अरहर नाम का अन्न।

वृत्तशस्त्र—वि० [स०] जो शस्त्रविद्या में निष्णात हो। शस्त्र विद्या में निपुण। धनुर्वेदज्ञ [को०]।

वृत्तशाली—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्तशालिन्] वह जिसका आचरण उत्तम हो। मदाचारी।

वृत्तश्लाघी—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्तश्लाघिन्] १ वह जिसे अपने काम का अभिमान या श्लाघा हो। २ क्षत्रिय।

वृत्तसकेत—वि० [स० वृत्तसङ्केत] जिसने अपनी सहमति या स्वीकृति दे दी हो [को०]।

वृत्तसग्रह—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्त + सङ्ग्रह] १. जीवनवृत्तांतों का सग्रह। २. ऐसा ग्रंथ जिसमें केवल जीवनी दे दी गई हो। उ०—सारे रचनाकाल को आदि, मध्य, पूर्व, उत्तर इत्यादि खंडों में आँख मूंदकर बाँट देना किसी वृत्तसग्रह को इतिहास नहीं बना सकता।—इतिहास, पृ० २।

वृत्तसपन्न—वि० [स०] आचारवान्। वृत्तयुक्त।

वृत्तसादी—वि० [स० वृत्तसादिन्] आचार व्यवहार को नष्ट करनेवाला अनाचारी। कमीना [को०]।

वृत्तस्क, वृत्तस्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। सदाचरी। २ वह जो दूसरों का उपकार करता हो। परोपकारी।

वृत्तहीन—वि० [स०] आचारहीन। आचाररहित [को०]।

वृत्तांगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृत्ताङ्गा] प्रियगुलता [को०]।

वृत्तांत—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्तान्त] १ किसी बीती हुई बात या घटी हुई घटना का विवरण। समाचार। हाल। जैसे,—(क) इस घटना का सारा वृत्तांत समाचारपत्रों में छप गया है। (ख) अब आप अपना कुछ वृत्तांत सुनाइए। २ प्रक्रिया। ३ संपूर्णता। समस्तता। ४ प्रस्ताव। ग्रंथ का अव्याय। ५. अख्यान। ६. अवसर। मौका। ७ भाव। ८. चालू विषय या प्रकरण। ९ प्रकार। किस्म [को०]। १० ढग। रीति [को०]। ११. अवस्था। दशा [को०]। १२. अवकाश [को०]। १३ गुण। प्रकृति [को०]। १४ एकांत [को०]। १५. बीती या घटी हुई स्थिति। घटना [को०]।

वृत्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ भिभरीट नाम का क्षुप। २. रेणुका। रेणुबीज। ३. प्रियगु। ४ मासरोहिणा। ५ सफेद सेम। ६ नागदमनी। ७ ननुआ।

वृत्तानुपूर्व—वि० [स०] गालाई के अनुरूप।

वृत्तानुवर्ती—सञ्ज्ञा पु० [स० वृत्तानुवर्तिन्] वह जिसका अर्थ हो। सदाचारी।

वृत्तानुसारी—वि० [स० वृत्त + अनुसरिन्] विहित रीति से कार्य करनेवाला [को०]।

वृत्ताद्ध—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृत्त का आधा भाग [को०]।

वृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कार्य जिसके द्वारा जीविकानिर्वाह होता हो। जीविका। रोजी।

क्रि० प्र०—करना।—लगना। होना।

२ वह धन जो किसी दीन, विधवा या छात्र आदि को बराबर, कुछ निश्चित समय पर उसके सहायतार्थ दिया जाय। उपजीविका।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३ सूत्रा आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये का जाती है।

विशेष—हमारे यहां सूत्रा आदि की व्याख्या के वृत्ते, भण्य, वार्तिक, टीका और टिप्पणी में पाँच भेद किए गए हैं। इनमें से वृत्ति उस व्याख्या का कहते हैं जो कुछ संक्षिप्त होती है और जिसकी रचना गंभीर होती है।

४ विवरण। वृत्तांत। हाल। ५ नटनों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली।

विशेष—यह चार प्रकार की कही गई है और भिन्न भिन्न रसों के लिये उपयुक्त माने गई है। जैसे—कोशिकों वृत्ते शृंगार रस के लिये, सात्वती वृत्ति वीर रस के लिये, आरभटी वृत्ति रौद्र और बोभत्स रस के लिये और भारती वृत्ति शेष अन्य रसों के लिये। जहाँ अच्छा वेशभूषावाला नायिका, बहुत सी स्त्रियों और न्यगीत तथा भोगविलास आदि का वर्णन हो, उसे कौशिकी, जहाँ वीरता, दानशक्ति, दया, सरलता आदि का वर्णन हो उसे सात्वती, जहाँ माया, इद्रजाल, संग्राम, क्रोध आदि का वर्णन हो, उसे आरभटी, और जहाँ संस्कृतबहुल कथोपकथन हो उसे भारती वृत्ति कहते हैं। इन चारों वृत्तियों में भी कई अवातर भेद माने गए हैं।

६ व्यवहार। ७ वह जो किसी दूसरे पर आश्रित या अवलंबित हो। आवेय। ८ याग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की माने गई है—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ९ व्यापार। कार्य। १०. स्वभाव। प्रकृति। ११ कर्तव्य। १२ सहार करने का एक प्रकार का शस्त्र। उ०—पारचि माली वृत्ति नाम पुनि अतिमाली नौ।—पद्माकर (शब्द०)। १३ अस्तित्व। सत्ता। १४ टिकना। किसी विशेष स्थिति में होना या रहना [को०]। १५. अवस्था। दशा [को०]। १६. क्रम। प्रणाली [को०]। १७ मजदूरी [को०] १८ समानपूर्ण वर्तवि [को०]। १९. चक्कर काटना। मुडना [को०]। २० किसी वृत्त या पहिए की परिधि [को०]। २१ शब्द की शक्ति—अभिधा, अन्वया और व्यजना [को०]। २२. विचार करने की प्रक्रिया। आसरणि [को०]। २३ अनुप्रास अलंकार का एक भेद। २४. रुद्र का पत्नी [को०]।

वृत्तिकर^१—वि० [सं०] वृत्ति या जीविका देनेवाला [को०] ।

वृत्तिकर^२—सञ्ज्ञा पुं० पेशे के ऊपर लगाया जानेवाला एक प्रकार का सरकारी कर । (अ० प्रोफेशन टैक्स) ।

वृत्तिकर्पित—वि० [सं०] जीविका के अभाव में दुःखी [को०] ।

वृत्तिकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी सूत्रग्रन्थ पर वृत्ति लिखी हो ।

वृत्तिकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्तिकार' ।

वृत्तिक्षीण—वि० [सं०] दे० 'वृत्तिकर्पित' ।

वृत्तिचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] क्रियाश्रो या व्यापारों का समूह । व्यवहारसमुच्चय । (अ० मिस्टम) उ०—वह एक वृत्तिचक्र है जिसके अंतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीर-धर्म सबका योग रहता है । चित्तमणि, भा० २, पृ० ८८ ।

वृत्तिच्छेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वृत्ति या जीविका से रहित होना । २. दे० 'वृत्तिच्छेदन' ।

वृत्तिच्छेदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी की वृत्ति या जीविका का अपघात करना जो एक दोष माना गया है ।

वृत्तिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्ति का भाव या धर्म ।

वृत्तिदाता—वि० [सं० वृत्तिदातृ] वृत्ति देनेवाला । जीविका चलानेवाला । आश्रयदाता [को०] ।

वृत्तिनिवधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तिनिवन्धन] जीविकाप्राप्ति का साधन [को०] ।

वृत्तिनिरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति में उपस्थित होनेवाली बाधा [को०] ।

वृत्तिभग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तिभङ्ग] जीविका की हानि [को०] ।

वृत्तिमूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोजी का सहारा । जीविका का आधार [को०] ।

वृत्तिरुशना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार रुद्र की एक स्त्री का नाम ।

वृत्तिवैकल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति की हानि । दे० 'वृत्तिभग' [को०] ।

वृत्तिसाम्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्ति+साम्य] भावानुभूति की समान स्थिति । उ०—संभवतः काल के साथ तादात्म्य करके कवि ने वृत्तिसाम्य स्थापन के द्वारा आलाचना के क्षेत्र में हमारा यह प्रयास है ।—बी० शं० महा०, पृ० 'ग' ।

वृत्तिस्थ^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अपनी वृत्ति या जीविका पर स्थित हो । २ वह जो आचारवान् या वृत्तिशुक्त हो । ३ गिरगिट ।

वृत्तिस्थ^२—वि० १ आचारवान् । २ किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहनेवाला [को०] ।

वृत्तिहता—वि० [सं० वृत्तिहन्] किसी की आजीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०] ।

वृत्तिहा—वि० [सं० वृत्तिहन्] किसी की जीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०] ।

वृत्तिहानि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तिभग' ।

वृत्तिह्लास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जीविका छूटना । वृत्ति या जीविका न रहना [को०] ।

वृत्तेवरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मरुजो भी वैन ।

वृत्त्यनुप्रास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पाठ प्रसारण व अनुप्रासों में से एक प्रकार का अनुप्रास जो काव्य में एक अदृश-रस माना जाता है । इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न स्था में पाए जाते हैं । जय, श्रुत भारी कारा घटा, कारी पागे रस । इसमें र श्रुत व य र 'व' वर्ण कई बार आए हैं, अतः यह वृत्त्यनुप्रास हुआ ।

वृत्त्युपरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज'विषा में पड़नेवाला विघ्न [को०] ।

वृत्त्युपाय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति या जीविका का आधान ।

वृत्त्य^१—वि० [सं० वृत्त्य] १. जो नियुक्त करने के योग्य हो । मुत्तर वरन के बाधित । २. वरणीय । ३. वरणीय । ४. वरणीय । ५. वरणीय । ६. वरणीय । ७. वरणीय । ८. वरणीय । ९. वरणीय । १०. वरणीय । ११. वरणीय । १२. वरणीय । १३. वरणीय । १४. वरणीय । १५. वरणीय । १६. वरणीय । १७. वरणीय । १८. वरणीय । १९. वरणीय । २०. वरणीय । २१. वरणीय । २२. वरणीय । २३. वरणीय । २४. वरणीय । २५. वरणीय । २६. वरणीय । २७. वरणीय । २८. वरणीय । २९. वरणीय । ३०. वरणीय । ३१. वरणीय । ३२. वरणीय । ३३. वरणीय । ३४. वरणीय । ३५. वरणीय । ३६. वरणीय । ३७. वरणीय । ३८. वरणीय । ३९. वरणीय । ४०. वरणीय । ४१. वरणीय । ४२. वरणीय । ४३. वरणीय । ४४. वरणीय । ४५. वरणीय । ४६. वरणीय । ४७. वरणीय । ४८. वरणीय । ४९. वरणीय । ५०. वरणीय । ५१. वरणीय । ५२. वरणीय । ५३. वरणीय । ५४. वरणीय । ५५. वरणीय । ५६. वरणीय । ५७. वरणीय । ५८. वरणीय । ५९. वरणीय । ६०. वरणीय । ६१. वरणीय । ६२. वरणीय । ६३. वरणीय । ६४. वरणीय । ६५. वरणीय । ६६. वरणीय । ६७. वरणीय । ६८. वरणीय । ६९. वरणीय । ७०. वरणीय । ७१. वरणीय । ७२. वरणीय । ७३. वरणीय । ७४. वरणीय । ७५. वरणीय । ७६. वरणीय । ७७. वरणीय । ७८. वरणीय । ७९. वरणीय । ८०. वरणीय । ८१. वरणीय । ८२. वरणीय । ८३. वरणीय । ८४. वरणीय । ८५. वरणीय । ८६. वरणीय । ८७. वरणीय । ८८. वरणीय । ८९. वरणीय । ९०. वरणीय । ९१. वरणीय । ९२. वरणीय । ९३. वरणीय । ९४. वरणीय । ९५. वरणीय । ९६. वरणीय । ९७. वरणीय । ९८. वरणीय । ९९. वरणीय । १००. वरणीय ।

वृत्त्य^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृत्ति] १. 'वृत्ति' (व्यापार) । उ०—गोन गुननि की वृत्त्य जे तन भवतौ होइ ।—मुरारि, पृ० १, पृ० १७३ ।

वृत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अंग । २. मेन । वादन । ३. शत्रु । दुरात्म । ४. पुराणानुसार रुद्र के पुत्र एवं दानव या असुर का नाम । वृत्रासुर ।

विशेष—इन्द्र ने मारा था । इसी का मारन के लिये दधीच का हृत्विष का वज्र प्रयाग गया था । वृत्रा ६, एक बार इन्द्र ने विश्वरूप पुरोहित की मार डाली थी । उसके पिता त्वष्टा ऋषि ने इसका बदला चुनाने के लिये मन्त्र करके उन उत्पन्न किया । जब इन्द्रने इन्द्र पर आक्रमण किया, तब इन्द्र देवताओं सहित इन्द्रपुरा में भाग गए । पर अतः मन्त्रिणों की समिति से इन्द्र ने दधीच ऋषि से दधीच हृत्विषों मांगी और उन्हीं हृत्विषों का वज्र बनाकर इन्द्रने लड़ना शरम्भ किया । जब इन्द्र ने इसका दोनो हाथ बाट डाले, तब यह इन्द्र की उनकी हाथी एरावत माहृत निगल गया । तब इन्द्र इसका पेट फाटकर बाहर निकले और इसका शिर काट डाला । दधीचभावतः म इसकी कथा विस्तार के साथ दी गई है । यद्यपि भी 'वृत्र असुर' का उल्लेख है, पर वृत्रा जो कुछ वरान मिलता है, उससे आलंकारिक रूप में मेघ और अघकार आदि के संबंध में हो 'वृत्र' शब्द आया हुआ जान पड़ता है ।

५. एक पर्वत का नाम । ६. ध्वनि [को०] । ७. चक्र [को०] । ८. इन्द्र [को०] । ९. पर्वत । पहाड़ [को०] । १०. पत्थर [को०] । ११. धन [को०] । १२. चर्म । चमड़ा [को०] ।

वृत्रासुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र का एक नाम, जिन्होंने वृत्र नामक असुर को मारा था ।

वृत्रघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वृत्र नामक असुर का मारनेवाला, इन्द्र । २. वैदिक काल के एक देश का नाम जो गंगा के तट पर था ।

वृत्रघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पारियात्र नामक कुलपर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम ।

वृत्रतूर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] युद्ध । लड़ाई ।

वृत्रत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वृत्र का भाव या धर्म । २. शत्रुता । दुश्मनी ।

वृत्रद्वट्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रद्वट्] इन्द्र । दे० 'वृत्रघ्न' [को०] ।

वृत्रद्विष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रद्विष्ट] इन्द्र [को०] ।

वृत्रनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाला, इन्द्र ।

वृत्रभोजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गडोर या गुँदरी नामक साग ।

वृत्ररिपु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्र के रिपु । इन्द्र ।

वृत्रवैरी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रवैरिन्] वृत्र को मारनेवाले, इन्द्र ।

वृत्रशकु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रशङ्कु] एक प्रकार का पत्थर का खभा । (वैदिक) ।

वृत्रशत्रु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र ।

वृत्रहता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रहन्तृ] इन्द्र [को०] ।

वृत्रहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रहन्] वृत्रासुर को मारनेवाले, इन्द्र ।

वृत्रारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र ।

वृत्रासुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्र'—४ ।

वृत्रा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्रन्] आकाश । आसमान [को०] ।

वृथा^१—वि० [सं०] बिना मतलब का । निष्प्रयोजन । व्यर्थ । फजूल ।

वृथा^२—क्रि० वि० १ बिना मतलब के । बेफायदा । २ अनावश्यक रूप से [को०] । ३ मूर्खता से । आलस्यपूर्वक [को०] । ४ गलत या अनुचित रूप से [को०] ।

वृथाकथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बेकार की बात । गप शप [को०] ।

वृथाकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मिथ्या रूप । खाली तमाशा [को०] ।

वृथात्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृथा होने का भाव या धर्म ।

वृथादान (ऋण)—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो चालबाज, धूर्त आदि लोगों को दिया गया हो ।

वृथापक्व—वि० [सं०] जैसे तैसे अपने लिये पकाया हुआ [को०] ।

वृथापलित—वि० [सं०] वयोवृद्ध होते हुए भी नासमर्थ [को०] ।

वृथाप्रज्ञा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह माता जिसने व्यर्थ ही सतान उत्पन्न की हो [को०] ।

वृथाप्रतिज्ञा—वि० [सं०] सहसा प्रतिज्ञा कर लेनेवाला । गभीरतापूर्वक प्रतिज्ञा न करनेवाला [को०] ।

वृथामति—वि० [सं०] न समर्थ । निर्वुद्धि [को०] ।

वृथामास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह मास जो किसी देवी या देवता को आभिप्रेत न हो या चढ़ाया न गया हो । ऐसा मास खाने का निषेध है ।

वृथार्तवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वध्या स्त्री [को०] ।

वृथालभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृथालम्भ] ओपधियों को अनावश्यक रूप से काटना [को०] ।

वृथालिग—वि० [सं० वृथालिङ्ग] जिसका मूल कारण अविदित हो [को०] ।

वृथालिगी—वि० [सं० वृथालिङ्गन्] व्यर्थ ही अनधिकारपूर्वक किसी संप्रदाय का चिह्न धारण करनेवाला [को०] ।

वृथावादी—वि० [सं० वृथावादिन्] असत्यवक्ता [को०] ।

वृथावृद्ध—वि० [सं०] बुद्धिहीन [को०] ।

वृथोक्त—वि० [सं०] निष्प्रयोजन कहा हुआ । बेकार कहा हुआ [को०] ।

वृथोत्पन्न—वि० [सं०] जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो [को०] ।

वृथोद्यम—वि० [सं०] निरर्थक उद्यम करनेवाला [को०] ।

वृद्ध^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य की तीन अवस्थाओं में से एक अवस्था जो युवावस्था के उपरांत और सबके अंत में आती है । बुढ़ापा । जरा ।

विशेष—यह अवस्था प्रायः ६० वर्ष के उपरांत आती है । इसमें मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो जाता है, उसके सब अंग शिथिल हो जाते हैं, शरीर की जातुएँ तथा इद्रियाँ आदि भी बराबर क्षीण होती जाती हैं, और इसके अंत में मृत्यु आ जाती है ।

२. वह जो इस अवस्था में पहुँच गया हो । बुढ़ा । ३. समानित व्यक्ति । पंडित । विद्वान् । ४ शैलज नामक गवद्वय । ५ वृद्धावस्था । ६ ऋषि । सन [को०] । ७ वंशज । सतान [को०] । ८. व्यकरण में वह शब्द जिसके प्रथम स्वर का वृद्धि हुई हो [को०] । ९. गुग्गुलु [को०] । १०. अस्सी साल का हाथी [को०] ।

वृद्ध^२—वि० १ बड़ा हुआ । पूर्णतः बड़ा हुआ । ३ अधिक अवस्था का । ४ बड़ा । विशाल । ५ विकामत । ६ एकत्रित । संचित । ७ पठित । बुद्धिमान् । अधीत । शिक्षित । ८. याग्य । विशिष्ट [को०] ।

वृद्धकट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृद्धकण्ट] इन्द्रो का पेड़ ।

वृद्धक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध व्यक्ति । बूढ़ा आदमी । २ आख्यान । उपाख्यान । कथा वार्ता [को०] ।

वृद्धकाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] द्रोणकाक । पहाड़ी कौवा ।

वृद्धकाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्धावस्था । बुढ़ापा । २ काशी का एक शिवलिंग । वृत्तकाल । वृद्धिकालेश्वर ।

वृद्धकावेरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम ।

वृद्धकृच्छ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कृच्छ्र रोग ।

वृद्धकेशव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सूर्य की एक मूर्ति का नाम ।

वृद्धकोश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहुत धनाढ्य व्यक्ति [को०] ।

वृद्धक्रम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृद्ध का क्रम या पद [को०] ।

वृद्धगंगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धगङ्गा] हिमालय का एक छोटी नदी का नाम ।

वृद्धगर्भा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह गर्भिणी नारी जिसका गर्भस्थ शिशु बड़ा हो गया है [को०] ।

वृद्धगोनस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप ।

वृद्धता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृद्ध का भाव या धर्म । बुढ़ापन । २. पांडित्य ।

वृद्धतित्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाठा । पाढ़ा ।

वृद्धत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध होने का भाव या धर्म । बुढ़ापा । २ पांडित्य ।

वृद्धदार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृद्धदारक' ।

वृद्धदोरक—पञ्चा पुं० [सं०] विचारा नामक क्षप ।

वृद्धदारु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विचारा [को०] ।

वृद्धद्युम्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वृद्धधूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मिरिम का पेड़ । २ सरल का वृक्ष ।

वृद्धधूमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लिमोडा ।

वृद्धनाभि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी तोड़ आगे को निकली हो ।
तोड़ल । तुदिल ।

वृद्धपराशर—पञ्चा पुं० [सं०] एक वर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धप्रधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दादा का दादा [को०] ।

वृद्धप्रपितामह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दादा का दादा । परदादा का पिता ।

वृद्धप्रमातामह—पञ्चा पुं० [सं०] परनाता का पिता ।

वृद्धवला—पञ्चा स्त्री० [सं०] १ कफड़ी या कपौ नामक पेड़ । २
महावला ।

वृद्धवृहस्पति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धवौधायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धभाव—पञ्चा पुं० [सं०] वृद्धावस्था । बुढ़ापा [को०] ।

वृद्धमत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन मत [को०] ।

वृद्धमनु—पञ्चा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धयाज्ञवल्क्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धयुवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुटनी । २ धात्री । दाई ।

वृद्धराज—पञ्चा पुं० [सं०] अमलवेन ।

वृद्धवय—वि० [सं०] वृद्धवयस् [जो अवस्था में अधिक हो [को०] ।

वृद्धवशिष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धवासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गौदटी ।

वृद्धवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ ।

वृद्धविभीतक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रमडा ।

वृद्धविष्णु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धवीथवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुरातन रुढ़ि का वधन [को०] ।

वृद्धवृष्णीय—वि० [सं०] अत्यंत शक्तिमान् [को०] ।

वृद्धवेग—वि० [सं०] ताम्र गतिवाला । जिसमें प्रचंड वेग हो [को०] ।

वृद्धशाकल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वृद्धशीली—वि० [सं०] वृद्धशीलिन [जो वृद्धों के समान शील और
स्वभाववाला हो [को०] ।

वृद्धश्रवा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृद्धश्रवस् [इंद्र] ।

वृद्धश्रावक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कापालिक ।

वृद्धसघ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृद्धसङ्घ [वृद्ध जनों की सभा [को०] ।

वृद्धसूत्रक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कपास ।

वृद्धसेवी—वि० [सं०] वृद्धसेवन् [वृद्धजनों की सेवा करनेवाला
जो वृद्ध लोगों का सेवा करता हो [को०] ।

वृद्धहारीत—पञ्चा पुं० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम ।

वृद्धागुलि—पञ्चा स्त्री० [सं०] वृद्धागुलि [१. अगुलि । अगुठा । २ पैर
का अगुठा ।

वृद्धागुष्ठ—पञ्चा पुं० [सं०] वृद्ध + अगुष्ठ [अगुठा] । उ०—महानगर
क मनोपिया न उतर प्रति वृद्धागुष्ठ प्रसजिा ररके प्रयत्न
कु कार से उन्ह उठा दिया ह ।—प्र० गा०, पृ० ३६ ।

वृद्धात—पञ्चा पुं० [सं०] वृद्धात [वृद्ध जा समान या प्रतिष्ठा करने
योग्य हो । आदरणाय ।

वृद्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो ।
बुढ़ी औरत । २ अगुठा । अगुठा । ३ महाश्रावणिका ।
४. वसजा रत्नी [को०] ।

वृद्धाचल—पञ्चा पुं० [सं०] मदराम प्रांत के एक तीर्थ का नाम ।

वृद्धाचार—पञ्चा पुं० [सं०] परपरागत प्रथा [को०] ।

वृद्धात्रि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वृद्धार्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अन्न होता हुआ सूर्य । २ भव्य । भाव-
फाल । नाक [को०] ।

वृद्धावस्था—पञ्चा स्त्री० [सं०] बुढ़ापा [को०] ।

वृद्ध—पञ्चा स्त्री० [सं०] १ बड़न या अधिक होने की क्रिया या भाव ।
बड़ना । ज्यादा । अधिकता । जैसे,—यह मान्य को बृद्ध,
समान का बृद्ध, योग का बृद्ध । २. वृज । बृद । ३.
बृह मनोव जा धर म सारा वस्त्र होने पर होता ह । ४
अभ्युदय । ममृद्धि । ५. एक प्रसिद्ध लता ।

विशेष—यह लता अष्टमं क संज्ञा मानो गई ह । कहे हैं,
यह कोशामल देश में कायन अत पर पाई जाता ह । इसका
कंद पर मकोद राई और कटो कटा देर होते हैं । इसका फल
कषाम का गोठ के समान होता ह, आजकल बृह माताये नहा
मिलती । वैद्यक में यह मधुर, स्वाद, वायव्यक, गर्म धारण
करनेवाला और रक्तपित्त, प्लीही तथा क्षय रोग का मष्ट
करनेवाला मानी गई ह ।

पर्याय—पाग्या । ऋद्ध । सिद्धि । लक्ष्मी । पुष्टिदा । वृद्धिदा ।
महत्त्व । आ । माद । जनेष्टा । भूत । भुव । जावभद्रा ।

६ राजनीति में ह्राप, वहाण्य, दुग, सतु, कुजस्वधर, बन्धार,
बलादान, और मन्यमानवेश इन आठो वग का उच्चय ।
वधन । स्फात । ७ फालत ज्ञातप त १०००० आदि १०
यागा क अतगत ग्यारहवा याग ।

विशेष—कहते हैं, इस याग में जन्म लेनेवाला व्यक्ति विनया,
धन का अच्छा उपयोग करनेवाला और मान्य सरादन तथा
वेचन में बहुत चतुर होता ह ।

८ ससृष्ट व्याकरण में साथ का एक प्रकार जिनके अनुसार अ
अथवा आ क पश्चात् दूसरे शब्द के आरंभ में ए, ऐ, तथा ओ,
औ क आने पर दाता [मलकर क्रमश ए और ओ हो जाते
हैं । जैसे,—पुत्र + एषणा से 'पुत्रपणा' तथा शुद्ध + आदान से
'शुद्धोदन' । उ०—ससृष्ट व्याकरणान् भा ससृष्ट भाषा में
धातु के स्वर में इस प्रकार के परिवर्तन का लक्ष्य करके इन
सात क्रिया का गुण, वृद्धि, एवं सञ्ज्ञाकरण नामकरण किया था ।

—भोज० भा० सा०, पृ० १०। ६ सफलता। उन्नति। (को०)। १०. धनदीलत। जायदाद (को०)। ११ ढेर। राशि। परिमाण (को०)। १२ चंद्रमा की कला का बढ़ना (को०)। १३. सुदखोरी (को०)। १४ लाभ। फायदा (को०)। १५ शक्ति या क० की वृद्धि (को०)। १६ अडकोश वृद्धि (को०)। १७ छेदन। वर्तन (को०)। १८ संपत्ति का हरण (को०)। १९ पीडा (को०)। २० ऊँचाई। उच्चता (को०)।

वृद्धिकर—वि० [स०] [वि० स्त्री० वृद्धिकरी] बढ़ानेवाला। वृद्धि। करनेवाला। परिवर्धन करनेवाला। उ०—ग्रह मूल्य की वृद्धिकरी हो।—प्रवर्चना, पृ० २४।

वृद्धिकर्म—सज्ञा पुं० [स० वृद्धिकर्मन्] नादीमुख आदि। वृद्धिआदि।

वृद्धिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वृद्धि नाम की ओपवि। २ सफेद अपराजिता। ३ अर्धपुष्पी।

वृद्धिजीवक, वृद्धिजीवन—सज्ञा पुं० [स०] वह जो वृद्धि (व्याज) से अपना निर्वाह करता हो। सुद से अपना निर्वाह करनेवाला।

वृद्धिजीविका—सज्ञा स्त्री० [स०] सुद से जीवन यापन करना (को०)।

वृद्धिद^१—सज्ञा पुं० [स०] १. जीवक नामक क्षुप। २. शूकरकद। वृद्धिद^२—वि० वृद्धि देनेवाला।

वृद्धिदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] वृद्धि नाम की एक प्रकार की ओपवि। लताविशेष। दे० 'वृद्धि'—५।

वृद्धिपत्र—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शस्त्र जो सात अंगुल का होता था और जिसका व्यवहार चौरफाड़ में छेदने आदि के लिये होता था। इसका आकार प्रायः छुरे के समान होता था।

वृद्धिमान्—वि० [स० वृद्धिमान्] १ अभिवर्धनशील। बढ़नेवाला। उन्नतिशील। २ धनाढ्य (को०)।

वृद्धियोग—सज्ञा पुं० [स०] फलित ज्योतिष के सत्ताइस योगों में से एक योग। विशेष दे० 'वृद्धि'—७।

वृद्धिआदि—सज्ञा पुं० [स०] नादीमुख नाम का आदि। विशेष दे० 'नादीमुख'।

वृद्धोक्ष—सज्ञा पुं० [स०] बूढ़ा बेल। उ०—बुढ़े बेल के लिये वृद्धोक्ष शब्द प्रचलित था।—संपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० २४८।

वृद्ध्याजीव—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृद्धिजीवक' (को०)।

वृद्ध्याजीवी—सज्ञा पुं० [स० वृद्धि + आजीविन्] कुसीदक। वृद्धि-जीवक।

वृद्ध्युदय—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसकी प्राप्ति या उदय से लाभ ही लाभ हो।

वृद्ध्युपजीवी—सज्ञा पुं० [स० वृद्धि + उपजीविन्] दे० 'वृद्ध्याजीव' (को०)।

वृद्ध्यु—सज्ञा पुं० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—कुटल कुभील हीरा जड़ कोड़ी, अधन वृद्ध खल पगु अजै।—रघु० ६०, पृ० १०२।

वृद्धसान—सज्ञा पुं० [स०] मनुष्य (को०)।

वृद्धसानु—सज्ञा पुं० [स०] १ पुष्प। आदमी। २ काम। कार्य। कृति। क्रिया। ३ पत्ता। पर्या (को०)।

वृद्धु—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक सूत्रकार जिसने भरद्वाज मुनि को बहुत सी गौर्ण मिली थी।

वृध्य—वि० [स०] बढ़ाने के लायक। वर्धनयोग्य (को०)।

वृध्य—वि० १ कटा हुआ या नष्ट किया हुआ (को०)।

वृश्य^१—सज्ञा पुं० [स०] १ अह्वय। २ अदरक। आदो (को०)। ३. वृहो। मूपक।

वृश्य^२—सज्ञा पुं० [स० वृष] दे० 'वृष'।

वृशा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ओपवि।

वृश्चन—सज्ञा पुं० [स०] १ वृश्चक। बिच्छू। २ दे० 'वृश्चन' (को०)।

वृश्चि—सज्ञा पुं० [स०] लाल गदहपूरना।

वृश्चिक—सज्ञा पुं० [स०] १ बिच्छू नामक प्रमिट्ट कीड़ा जिसके डंक में बहुत तेज जहर होता है। विशेष दे० 'बिच्छू'। २ गोबर में उत्पन्न होनेवाला कीड़ा। शूकरकोट। ३ पुनर्नवा। गदहपूरना। ४ मदन वृक्ष। मैनफल। ५ वृश्चिकालो या बिच्छू नाम की लता। ६ ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि।

विशेष—इसके सब तारों से प्रायः बिच्छू का सा आकार बनता है। विशाखा नक्षत्र के अंतिम पाद से आरंभ होकर अनुगवा और ज्येष्ठा नक्षत्रों के स्थितिकाल तक यह राशि मानी जाता है। भारतीय फलित ज्योतिष के अनुसार यह राशि शीर्षोदय, रवेतर्कण, कफ प्रकृति, जलचर, उत्तर दिशा की प्रधिपति और अनेक पुत्रों तथा स्त्रियों से युक्त मानी गई है। कहते हैं, इस राशि में जन्म लेनेवाला मनुष्य वन जन से युक्त, भाग्यवान्, खल, राजसेवा करनेवाला, सदा दूमरा के वन का प्रभिन्नापा करनेवाला, उत्साही और वीर होता है।

पर्या०—सौम्य। अगना। युग्म। सम। स्थिर। पुष्कर। सरीसृप-जाति। ग्राम्य।

७ फलित ज्योतिष के अनुसार मेष आदि बारह लगनों में से आठवाँ लगन।

विशेष—यह वृश्चिक राशि के उदय के समय माना जाता है। कहते हैं, जो बालक इस लगन में जन्म लेता है, वह बहुत मोटा ताजा, खर्चीला, कुटिल, मातापिता के लिये अनष्टक, गंभीर और स्वर प्रकृतिवाला, उग्र स्वभाव का, विश्वामनी हंसमुख, साहसी, गुरु और मित्रा से अनुता रखनेवाला, राजसेवा करनेवाला, दुखी, दाता, नीच प्रकृति और पित्तरोगी होता है।

८ अग्रहन भास जिसमें प्रायः नूतनोदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ६ कर्कट। वैकटा (को०)। १०, गोजन। कनखजूरा (को०)। ११ एक कीड़ा जो रोएंदार होता है (को०)।

वृश्चिकपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] पूतिका शक। पोय या पोई (को०)।

वृश्चिकपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग ।

वृश्चिकपर्णी - सज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली । नागदत्तिका [को०] ।

वृश्चिकप्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग ।

वृश्चिकराशि—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृश्चिक'—७ ।

वृश्चिकर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] मूलाकानी । आयुर्कर्णी ।

वृश्चिकविपापहा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ नकुलकद । २ राम्ना ।

वृश्चिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत्वा या विच्छू नाम की घास ।
२ पिठवन । ३ मफेद पुनर्नवा । ४ पैर की अंगुलियों में पन्निने का गहना । विद्युत्वा (ते०) ।

वृश्चिकाली—सज्ञा स्त्री० [सं०] विच्छू नाम की लता ।

विशेष—यह लता प्रायः सारे भारत में पाई जाती और बारहों मास हरी रहती है । इसके पत्ते ५-६ अंगुल लंबे, नुकीले और अड़ाकार होते हैं और उनपर तथा डठलो पर एक प्रकार के रोएँ होते हैं, जिनके शरार में लगने से बहुत तेज जलन होती है । इसकी जड़ का प्रयोग औषधि रूप में होता है । बंधक में यह कड़वी, चरपरी, बल तथा रुचि बढ़ानेवाली, तथा खाँसी, श्याम और ज्वर को दूर करनेवाली मानी गई है ।

वृश्चिकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] पैर के अंगूठे का एक आभूषण । दे० 'वृश्चिका'—४ [को०] ।

वृश्चिकेश—सज्ञा पुं० [सं०] १ वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता—मंगल । २ दुध गह का एक नाम [को०] ।

वृश्चिकपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पूतिका । पोई ।

वृश्चिकपत्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली । २ मेढासिंगी ।

वृश्चिकपर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली । २ मेढासिंगी ।

वृश्ची—सज्ञा स्त्री० [सं०] पुनर्नवा । गदहपूरना ।

वृश्चीक—सज्ञा पुं० [सं०] मृश्रुत के अनुसार एक विशेष प्रकार की औषधि का नाम । [को०] ।

वृश्चीर—सज्ञा पुं० [सं०] मफेद गदहपूरना ।

वृश्चीव—सज्ञा पुं० [सं०] गदहपूरना । पुनर्नवा ।

वृष—सज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का नर । साँड । २ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक प्रकार का पुरुष ।

विशेष—काम शास्त्र के अनुसार वृष जातीय पुरुष शशिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त समझा जाता है । कहते हैं, ऐगा पुरुष अनेक गुरों में युक्त, अनेक प्रकार के रतिवधों का ज्ञाता, सुंदर और सयवादी होता है ।

३ वर्म, जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड के रूप में माना जाता है । ४ पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम । ५ चूड़ा । ६ अड्डूसा । ७ श्रीगुण या विष्णु का एक नाम । ८ शत्रु । दुश्मन । बंदी । ९ काम । १०, ऋषभ नामक औषधि । ११ पति । स्वामी । १२ गेहूँ । १३ घमासा । १४ नदी में होनेवाला भिलावा । १५, ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से दूसरी राशि ।

विशेष—इस राशि में कृत्तिका नक्षत्र के नीचे पाद, पृथ्वी गोहिणो नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले रा पाद हैं । यह राशि श्वेतवर्ण, वातप्रधान, वैश्य, चार पैरवाली और दक्षिण दिशा की स्वागिनी मानी जाती है । कामे २, जो व्यक्ति इस राशि में जन्म लेता है, वह सुंदर, शला, क्षमाशील, स्वर्ण और निर्भय होता है तथा शारभिर अरण्या में भय, वधु, मत्ति आदि में रहित और अन्तिम अवस्था में २० मय जाता है मुभी रहता है ।

१६ कलित ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से दूसरा नाम ।

विशेष—यहो है, इस नाम में जन्म देनेवाले मनुष्य के छोठ और नाक मारी तथा लडाट बदन चौड़ा होता है, वह वातप्रधान प्रकृति का, नाभयान्, गर्वोक्त, मातृशक्ति को कष्ट दायक और युक्त कामों की ओर प्रवृत्ति करनेवाला होता है । ऐसे मनुष्य का पुत्र का और भयान् पक्ष होता है । इसरी मृगु किर्वा पशु या उड्डमान् व्यक्ति के द्वारा मयया जल, झूल, पर्यटन आदि के कारण प्रसन्न भूता रहने से होती है ।

१७, किमी वग का मुष या प्रधान तैल, मुत्तियु, कृषियु (को०) । १८ मुट्ट या श्यामजीर्ण रसित (को०) । १९ शिव का पुत्र, नदी (को०) । २० पुण्य । नराम (को०) । २१ कर्ण का एक नाम (को०) । २२ मुष अक्ष या पाय (को०) । २३, जल (को०) । २४ मंदिर की एक विशेष आकृति (को०) । २५ भवन्-निर्माण के योग्य भूमि (को०) । २६ नर जाति का पशु (को०) । २७, मयूरपक्ष (को०) । २८ स्वर्णक्ष । अत पुर (को०) । २९, शिव (को०) । ३०, सूर्य (को०) । ३१, अंगूठा । ३२, शुक्र । बोर्य (को०) । ३३ साँड का एक अनुचर (को०) । ३४ एक अमुर (को०) । ३५ चंद्रमा के १० घोड़ा में से एक घोड़ा (को०) । ३६ कर्ण के पीठ का नाम जो वृषभ का पुत्र था (को०) ।

वृषक—सज्ञा पुं० [सं०] १ साँड । २ महाभारत के अनुसार गांधार के एक राजकुमार का नाम । ३, एक प्रकार का आम । ४, अड्डूसा । ५, श्रृषम नामक औषधि । ६, घमासा । दुगलना । ७ भिलावा । ८ गेहूँ । ९ चूड़ा ।

वृषकणिका, वृषकर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुद्रर्शन नाम की लता । २ एक प्रकार की विभारा ।

वृषकर्म—वि० [सं०] वृषकर्मन्] परिश्रमी बल की तरह काम करने-वाला [को०] ।

वृषका—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वृषकेतन—सज्ञा पुं० [सं०] शिव । महादेव ।

वृषकेतु—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बल का चिह्न माना जाता है । २, कर्ण के एक पुत्र का नाम । ३ लाल गदहपूरना ।

यौ०—वृषकेतुमुत = शिव के पुत्र । स्कंद । परमुख ।

वृषक्रतु—सज्ञा पुं० [सं०] वर्षा करनेवाले, इन्द्र ।

वृषादि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सोमपान करता हो। २ कु डल पहननेवाला (को०)।

वृषगधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृषगन्धिका] १ ककही या कधी नाम का पौधा। २ एक प्रकार का विधारा।

वृषगधिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृषगन्धिका] दे० 'वृषगधा'।

वृषग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृषभवाहन, शिव (को०)।

वृषगण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक ऋषियों का एक गण या समूह।
उ०—वृषगण ऋग्वेद में गायक थे।—प्रा० भा० पं०, पृ० १४४।

वृषचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का चक्र जिसमें एक बेल बनाकर उसके भिन्न भिन्न अंगों में नक्षत्र आदि रखते हैं और तब उसके द्वारा खेती सबकी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

वृषण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ इद्र। २ कर्ण। ३ विष्णु। ४ साँड़। ५ घोड़ा। ६ वृद्ध। ७ पीड़ा का ज्ञान या उससे होनेवाली बेहोशी। ८. अडकोष। पोता।

वृषण^२—वि० १ सीचनेवाला। उपजाऊ बनानेवाला। २ दृढ़। कठोर (को०)।

वृषणकच्छु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अडकोष के आस पास होनेवाली वे फुसियाँ आदि जो मूल और पसीने आदि के कारण हो जाती हैं और जिसमें खुजली होती है।

वृषणश्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक राजा का नाम। २ इद्र के घोड़े का नाम। ३ एक गधर्व (को०)।

वृषणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] घोड़ी (को०)।

वृषण्वमु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र का खजाना या कोष (को०)।

वृषदत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृषदन्त] विडाल। बिल्ली (को०)।

वृषदश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली (को०)।

वृषदशक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली।

वृषदर्भ^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार कश्मीर के एक राजकुमार का नाम। २ पुराणानुसार शिव के एक पुत्र का नाम। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषदर्भ^२—वि० [सं०] इद्र के अभिमान को दूर करनेवाला। इद्र के दर्प को चूर करनेवाला (को०)।

वृषदेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वायुपुराण के अनुसार वासुदेव की एक स्त्री का नाम।

वृषद्वीप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक द्वीप का नाम।

वृषधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृषभञ्ज शिव (को०)।

वृषध्वज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ गरुड। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ४ वह व्यक्ति जो बहुत पुण्यशील हो। पुण्यात्मा।

वृषध्वजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

हि० श० ६-३२

वृषध्वक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृषध्वङ्क्षा] नागरमोथा।

वृषध्वक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृषध्वङ्क्षी] दे० 'वृषध्वक्षा'।

वृषनादी—वि० [सं० वृषनादिन्] बेल की भाँति बोलनेवाला। उच्च ध्वनि करनेवाला (को०)।

वृषनामा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृषनामन्] अडूसा।

वृषनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विडंग। वायविडंग। २ पुराणानुसार विष्णु या श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २. नपुमक। हिजडा। पंड। ३. छोड़ा हुआ साँड़ (को०)।

वृषपत्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वस्तात्री या छागलाकी नाम की ओषधि जो विधारा का एक भेद है।

वृषपर्णिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भारगी। ब्राह्मण्यधिका।

वृषपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी। २. उटुवर-पर्णी। दती। ३. सुदर्शना नाम की लता।

वृषपर्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृषपर्वन्] १ शिव। महादेव। २ महाभारत के अनुसार एक दैत्य का नाम जिसकी कन्या शर्मिष्ठा का विवाह ययाति से हुआ था। ३ विष्णु का एक नाम। ४. कसेरू। ५. एक प्रकार का तृण। ६ भँगरा। ७ एक बंदर (को०)। ८. जलपात्र। लोटा (को०)। ९. मार्कंडेयपुराण में वर्णित एक राजा (को०)।

वृषपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चूष (को०)।

वृषप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृषभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बेल या साड़। २ साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३ कान का छेद। ४ ऋषभ नाम की ओषधि। कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष जो शखिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त कहा गया है। ६ सूर्य की वीथियों में से एक वीथी का नाम। उ०—बोधा वीथी का नाम वृषभ है।—वृहत्०, पृ० ५४। ७ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ८ श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम। ९ एक यूपपति बदर का नाम जो राम रावण युद्ध में लड़ा था। १० नर जातीय या पुवर्गीय पशु (को०)। ११ वह जो अपने बर्ग में प्रधान हो (को०)। १२ वृष राशि का चिह्न (को०)। १३ हाथी का कान (को०)। १४ कान का छिद्र। कर्णरंध्र (को०)। १५. न्याय। धर्म (को०)।

वृषभकेतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

वृषभगति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. वह सवारी जो बेल द्वारा खींची जाती हो।

वृषभता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृषभत्व'।

वृषभतीर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वृषभत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृषभ होने का भाव या धर्म। वृषभता।

वृषभचुज(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [वृषभञ्ज] दे० 'वृषभञ्ज'।

वृषभञ्ज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २, एक प्राचीन पर्वत का नाम।

वृषभध्वजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बड़ी दती। बँगडेरा।

वृषभपल्लव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अड़सू।

वृषभयान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बँलगाड़ी [को०]।

वृषभवीथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की वीथियो में से एक वीथी का नाम। दे० 'वृषभ'—६।

वृषभस्कध—वि० [स० वृषभ + स्कन्ध] जिसके कंधे चौड़े और मजबूत हों। पुष्ट कंधोवाला [को०]।

वृषभाक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृषभाङ्क] शिव। महादेव।

वृषभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम।
२ मघा, पूर्वा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र [को०]।

वृषभाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ वह जिसकी आँखें बँल की तरह हों [को०]।

वृषभाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इद्रवारुणी लता। इनारु।

वृषभाद्रि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम [को०]।

वृषभानु—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृषभानु] दे० 'वृषभानु'।

वृषभानु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ श्री राधिका जी के पिता का नाम।

विशेष(१)—पुराणानुसार वृषभानु नारायण के अश से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम सुरभानु और माता का नाम पद्मावती था। ये गोकुल के बड़े सरदार थे और पहले रावल ग्राम में रहते थे, जहाँ राधिका का जन्म हुआ था। पर अत में कस के उपद्रव के कारण वहाँ से बरसाने में जा बसे थे।

(२) 'वृषभानु' शब्द के साथ 'कन्या' या उसका पर्यायवाची शब्द लगाने से उसका 'राधिका' अर्थ होता है। जैसे,—वृषभानुसुता, वृषभानुनदिनी।

२ वृष राशि का सूर्य [को०]।

वृषभानुजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वृषभानु की पुत्री, राधा।

वृषभानुनदिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृषभानुनदिनी] राधिका।

वृषभानुसुता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वृषभानु की कन्या, श्रीराधिका।

वृषभासा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इद्र की पुरी अमरावती का एक नाम।

वृषभी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विधवा स्त्री। राँड। २ कपिकच्छु। केवाँच [को०]।

वृषभेक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

वृषमन्यु—वि० [स०] वीर। हिम्मतवाला। साहसी [को०]।

वृषमूल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अड़सू की जड़।

वृषय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ आश्रय। शरण। २ आश्रम [को०]।

वृषरवि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृषभानु'।

वृषराजकेतन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वृषभध्वज शिव [को०]।

वृषराशि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बारह राशियों में से दूसरी राशि। उ०—वृषराशि में स्थित हो तो पैदा होते ही अन्न का नाश होता है।—वृहत्स०, पृ० १६३।

वृषरुक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृषरुक्षन्] शिव। महादेव।

वृषल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. शूद्र।

यौ०—वृषलपाचक = शूद्र की रमोई बनानेवाला। वृषलयात्रक = वृषल का पुरोहित। शूद्र का यज्ञादि करानेवाला।

२ वह जिसे धर्म आदि का कुछ भी ध्यान न हो। पाप और दुष्कर्म करनेवाला। ३ घोड़ा। ४ चारण्य द्वारा प्रयुक्त मन्त्राट् चद्रगुप्त का एक नाम। ५ गालर। ६ शलगम। ७. नट। नर्तक [को०]। ८ वृषम। बँल [को०]। ९ लहमून [को०]। १० वह जो जाति में बहिष्कृत हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र वर्ग का वह व्यक्ति जो अपने कर्तव्य से च्युत हो [को०]। ११ बड़ी पिप्पली [को०]।

वृषलक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] निम्न कोटि का शूद्र [को०]।

वृषलक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुरुषलक्षण में मपन्न नारी। वह स्त्री जिसका रंग रूप पुरुष की तरह हो। ऋषमी [को०]।

वृषलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वृषल होने का भाव या धर्म। वृषलमन।

वृषलत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृषलता'।

वृषलाछन—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृषलाञ्छन] शिव। महादेव।

वृषली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ स्मृतियों आदि के अनुसार वह कन्या जो रजस्वला तो हो गई हो, पर जिसका अभी विवाह न हुआ हो।

विशेष—कहते हैं, ऐसी कन्या का पिता बटा पातकी होता है और उसे उस कन्या की भ्रूणहत्या करने का पाप लगता है।

२ वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर परपुरुष में प्रेम करती हो। ३ शूद्र जाति की स्त्री। वृषल की स्त्री। उ०—सौतौ वृषलो पति भयी कुलहि लगाई गारि।—सुंदर ग०, भा० १, पृ० १६१। ४ वह स्त्री जो पाप या दुष्कर्म करती हो। ५ नीच जाति की स्त्री। ६ वह स्त्री जो मानिकधर्म में हो। रजस्वला स्त्री। ७ वह स्त्री जो मरी हुई सतान उत्पन्न करती हो। ८ बध्या स्त्री [को०]। ९ सद्य प्रसूता स्त्री [को०]।

वृषलीपति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शूद्र जाति या वर्ण की औरत का पति। २ वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या के साथ विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो। वृषली का पति।

विशेष—कहते हैं, ऐसे पुरुष को श्राद्ध आदि करने का अधिकार नहीं होता।

वृषलीफेन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शूद्रा स्त्री का अधररस [को०]।

वृषलीसेवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शूद्रा के साथ सभोग करना।

वृषलोचन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चूहा। मूसा।

वृषवत्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वृषवासी—सञ्ज्ञा पुं० [स० वृषवासिन्] केरल देश के वृष पर्वत पर बसनेवाले शिव जी। उ०—इनके घर लेहो अवतारा। वपवामी हर हृदय विचारा।—श० दि० (शब्द०)।

वृषवाह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बँल पर सवार होना [को०]।

वृषवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

वृषवीभत्स—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की कीँछ या केवाँच।

वृषवृष—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक प्रकार का साम ।

वृषशत्रु—सञ्ज्ञा पु० [म०] विष्णु ।

वृषशिशु—सञ्ज्ञा पु० [म०] वैदिक काल के एक असुर का नाम ।

वृषशील—सञ्ज्ञा पु० [म०] दे० 'वृषल' ।

वृषशुष्म—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम जो जतुर्गण के पोते थे ।

वृषपड—सञ्ज्ञा पु० [म० वृषपण्ड] एक प्रवरका ऋषि का नाम ।

वृषमव—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जिमने यज्ञ करने के लिये मगलस्नान किया हो ।

वृषसातु—सञ्ज्ञा पु० [म०] १. मानव । आदमी । २. मृत्यु । मौत । (को०) ।

वृषसार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सफेद बड़ । २. देवकुम्भी । बड़ा गुमा ।

वृषसाह्वया—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

वृषसृक्की—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषसृक्किन्] भीमरोल या भृगरोल नाम का कोड़ा ।

वृषसेन—सञ्ज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार कर्ण के एक पुत्र का नाम ।

वृषस्कव—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषस्कन्व] शिव । महादेव ।

वृषस्कव—वि० बेल की तरह पुष्ट और ऊँचे कंधेवाला (को०) ।

वृषस्यती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृषस्यन्ती] किसी व्यक्ति से सम्भोग कराने को इच्छा से आतुर । २. कामुका या लपट औरत । काम-पोड़िता स्त्री । ३. उठी हुई गाय । वृष की कामना करने-वाली गी (को०) ।

वृषाक—सञ्ज्ञा पु० [म० वृषाक] १. शिव । महादेव । २. साधु । धर्मात्मा । ३. जल में होनेवाला भिलावा । ४. नपुंसक । हिजड़ा । ५. मार ।

वृषाकज—सञ्ज्ञा पु० [म० वृषाकज] डमरू ।

वृषाचन—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषाचन] शिव । महादेव ।

वृषाट—सञ्ज्ञा पु० [म० वृषाण्ड] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम ।

वृषातक—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषान्तक] विष्णु ।

वृषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. मूमाकाना । आखुरणों । २. केवाच कैरव । ३. उदुवरपणों । दत्ती । ४. बटो दत्ती । ५. असगव । ६. मालकगनी । ७. गो ।

वृषा—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषन्] १. वृष राशि । २. साँड । ३. घोड़ा । ४. पीड़ा । व्यथा । ५. इद्र । ६. कर्ण । ७. चद्रमा । ८. अग्नि । ९. दल का मुखिया या प्रधान । १०. पीड़ा का शान न होना । ११. पुजातः पशु (को०) ।

वृषाकपायी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. जीवतो । डांडो । २. शतावरी । ३. ल. मो । ४. गोरी । ५. इद्र की पत्नी, शन्ने । ६. अग्नि की पत्नी, स्वाहा (को०) । ७. सूर्य की पत्नी, उषा (को०) । ८. इंद्र की माता (को०) ।

वृषाकपि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । २. विष्णु । ३. अग्नि । ४. इद्र । ५. सूर्य । ६. एक ऋषि का नाम । ७. ग्यारह रुद्रों में से एक । —प्रा० भा० पं०, पृ० १२७ ।

वृषाकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] उडद । माप ।

वृषाकृति—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु ।

वृषाक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु (को०) ।

वृषाण—सञ्ज्ञा पु० [म०] शिव के एक अनुचर वरण का नाम (को०) ।

वृषाणक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । महादेव । २. शिव के एक अनुचर का नाम ।

वृषाणी—सञ्ज्ञा पु० [म० वृषाणिन्] ऋषभक नाम की ओषधि जो अष्टवर्ग में है ।

वृषादनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] इद्रवारणी । इनारन ।

वृषादर्भ—सञ्ज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार शिव के एक पुत्र का नाम ।

वृषादित—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषादित्य] वृष राशि के सूर्य । उ०—विषम वृषादित को तृषा लिए मतारुनु मोधि । अमित, अगार, अगाव जल, मारौ मूढ पयावि ।—विहारी १०, दो०, ३१७ ।

वृषादित्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृष राशि के सूर्य । मौर ज्येष्ठ मास की सक्रांति के सूर्य ।

वृषाद्रि—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम जो केरल देश में है ।

वृषान्न—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुष्टकर भोजन (को०) ।

वृषायण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । महादेव । २. चटक या गोरैया नामक पक्षी ।

वृषारणी—सञ्ज्ञा पु० [स०] गंगा का एक नाम ।

वृषारव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वे जतु जिनकी बोली बहुत कर्कश हो । जंमे,—भिन्नी, मेढक आदि । २. एक प्रकार का मुगरा या ताशा, नगाडा आदि वज्रान को लकड़ी । चोत्र (को०) ।

वृषावाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का जगर्ज घान्य (को०) ।

वृषाशील—सञ्ज्ञा पु० [म०] वृषशील । दे० 'वृषल' ।

वृषाश्रिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गंगा का एक नाम ।

वृषासुर—सञ्ज्ञा पु० [म०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम जिमने शिव से वर पाकर शिव ही का भस्म करके पावेंतो को लता चाहा था । वृकासुर । विशेष दे० 'भस्मासुर' ।

वृषाहार—सञ्ज्ञा पु० [स०] चूहों का खानेवाला, बिल्लो । माजोर ।

वृषाही—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषाहन्] विष्णु ।

वृषी—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषन्] मार ।

वृषी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ऋष या ब्रह्मचारी का आसन जो कुश ने बना होता है (को०) ।

वृषद्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वृषेन्द्र] १. साँड । २. बल ।

[म०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक दृश्य । एक क इन्द्र धार्मिक दृश्य में लोग अन्न भुन निना न पर नाड पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं ।

ऐसे छोड़े हुए साँडों से किसी प्रकार का काम नहीं लिया जाता । कहते हैं, जिन पितरों के नाम पर साँड छोड़े जाते हैं, वे स्वर्ग पहुँच जाते हैं । अशौच समाप्त होने के दूसरे दिन यह कृत्य करने का विधान है ।

वृषोत्साह—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम ।

वृषोदर—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु ।

वृष्ट^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार कुकुर के एक पुत्र का नाम ।

वृष्ट^२—वि० [स०] १. बरसा हुआ । जो बरस चुका हो । २. जो बरस रहा हो । बरसता हुआ । ३. वर्षा की बूँदों की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ [को०] ।

वृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. आकाश से जल बरसना । वर्षा । बारिश । मेह । २. ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना । जैसे,—पुष्पवृष्टि । उ०—कर रही थी जो अलौकिक रूपरस की वृष्टि ।—शकु०, पृ० ६ । ३. किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना । जैसे,—उनके बैठने ही चारों ओर से कटु वचनों की वृष्टि होने लगी ।

वृष्टिकर—वि० [स०] बरसनेवाला । वर्षा करनेवाला [को०] ।

वृष्टिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शणापुष्पी । बनसनई ।

वृष्टिकाम—वि० [स०] बरसा की कामना करनेवाला [को०] ।

वृष्टिकामना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वर्षा की इच्छा [को०] ।

वृष्टिकाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्षाकाल । वर्षाऋतु [को०] ।

वृष्टिघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छोटी इलायची ।

वृष्टिजीवन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह देश जहाँ की खेतीवारी केवल वर्षा पर ही निर्भर हो । देवमातृक देश या कृपिभूमि । २. चातक पक्षी ।

वृष्टिदाता—सञ्ज्ञा पु० [स० वृष्टिदातृ] १. इन्द्र । २. मेघ । बादल । ३. असुर । उ०—सायण ने असुर का अर्थ बलवान्, शत्रुहता और वृष्टिदाता किया है ।—प्रा० भा० प०, पृ० (रा) ।

वृष्टिपात—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्षा होना । पानी बरसना [को०] ।

वृष्टिभू—सञ्ज्ञा पु० [स०] मेढक ।

वृष्टिमान^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह यत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई ।

विशेष—यह एक छोटा सा लंबा नल होता है, जिसमें वर्षा का जल भरता है । उसी जल की ऊँचाई इंचों आदि से नापकर निश्चय किया जाता है कि अमुक समय में इतने इंच वर्षा हुई ।

वृष्टिमान्—सञ्ज्ञा पु० [स० वृष्टिमान्] बादल ।

वृष्टिमान्^२—वि० बरसाऊ । बरसनेवाला [स०] ।

वृष्टिवैकृत—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृहत्संहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव आदि का सूचक समझा जाता है ।

वृष्टिसपात—सञ्ज्ञा पु० [स० वृष्टिसम्पात] पानी बरसना । वर्षा का होना [को०] ।

वृष्ट्यवु—सञ्ज्ञा पु० [स०] वर्षा का जल ।

वृष्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वृष्णि^१—सञ्ज्ञा स० [स०] १. मेघ । बादल । २. यादव वंश जिसमें श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे । उ०—वृष्णि कुल कुमुद राकेश राधारमन कस वसाटवी धूमकतू ।—तुलसी (शब्द०) । ३. श्रीकृष्ण या विष्णु । ४. इन्द्र । ५. अग्नि । ६. वायु । ७. ज्योति । प्रकाशरश्मि । ८. बल या गौ । ९. मेढा । मेघ । १०. शिव (को०) । ११. एक साम (को०) ।

वृष्णि^२—वि० १. प्रचंड, उग्र । तेज । २. पामर । नाँच । ३. बली । शक्तिशाली (को०) । ४. पाखंडी (को०) । ५. क्रुद्ध । कोपावध (को०) । ६. बरसात । वर्षणशाल (को०) ।

वृष्णिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वृष्णिगर्भ—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

वृष्णिपाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] मेघपाल । गढ़रिया [को०] ।

वृष्ण्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] वीर्य ।

वृष्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह चीज जिससे वीर्य और बल बढ़ता हो । २. वह चीज जिसके सेवन से मन में आनंद उत्पन्न होता हो । ३. ईख । ऊख । ४. उडद की दाल । ५. ऋषभ नामक आपाध । ६. आवला । ७. कमल की नाल । मृगाल । ८. शिव (को०) ।

वृष्यकदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृष्यकन्दा] १. विदारी कद । २. मूली ।

वृष्यगवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृष्यगन्धा] १. वृद्धदारक । विचार । २. वस्तात्री नाम की लता । ३. ककड़ी । अतिवला ।

वृष्यगविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृष्यगन्धिका] ककड़ी । अतिवला ।

वृष्यचडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृष्यचण्डी] मूसकानी । आखुण्णों ।

वृष्यपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद । भुईं कुम्हड़ा ।

वृष्यफला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आवला ।

वृष्यवल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद । भुईं कुम्हड़ा ।

वृष्यवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कंद ।

वृष्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. अष्टवर्ग को ऋद्धि नामक ओषधि । २. शतावर । ३. आवला । ४. केवाँच । कीछ । ५. भुईं आवला । ६. विदारी कद । ७. ककड़ी । अतिवला । ८. बड़ी दती । वंगडेरा ।

वृह—सञ्ज्ञा पु० [स० वृह, वृह] स्तवन । स्तुति । जैसे, वृहस्पति [को०] ।

वृहन्गु—सञ्ज्ञा पु० [स० वृहत्गु] महाचक्र नामक साग ।

वृहच्चक्रभेद—सञ्ज्ञा पु० [स० वृहत् + चक्र + भेद] जयती । जैत ।

वृहच्चित्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] विजोरा नीबू ।

वृहच्छेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] अखरोट ।

वृहच्छेदरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सफरी नाम की मछली ।

वृहच्छेदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] किगवा नाम की मछली ।

वृहच्छालपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महाशाल (एँ) । बड़ी सरिवन ।

वृहच्छिबी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृहच्छिम्बा] सेम ।

वृहज्जीरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मंगरूला ।

वृहज्जीवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृहज्जीवन्ती] बड़ी जीवती ।

वृहज्जीवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी जीवती ।

वृहद्वदका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का नगाडा या भेरी ।
२. पलाश भेद [को०] ।

वृहद्विका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'वृहती' । २. जपरना । उत्तरीय वस्त्र (को०) ।

वृहती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कटकारी । छाटो कटाई । २. वनभटा । बड़ी कटाई । ३. वैगन । ४. बंधक के अनुसार एक ममस्थान ।

विशेष—यह छातियों के ठीक पीछे पीठ में दोनों ओर होता है । इस ममस्थान पर आघात लगने से बहुत अधिक रक्त निकलता है और प्रायः मनुष्य मर जाता है ।

५. विश्वावसु नामक गधर्व की वीणा का नाम ।

विशेष—कुछ लोगों के अनुसार 'वृहती' नारद की वीणा का नाम है ।

६. वाक्य । ७. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और सगण होता है । जैसे,—भाव सुपूजा कारज जू । प्रातः गई सोता सरजू । कठमण्णो मध्ये सु जला । द्रष्ट परी खोजे श्रवला ।—काव्य प्र० (शब्द०) । ८. ३६ की सख्या (को०) । १०. दुपट्टा । उत्तरीय (को०) । ११. आशय । कुछ जैसे, जलाशय (को०) । १२. 'वृहती' ।

वृहतीपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृहस्पति ।

वृहतीफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वनभटा ।

वृहत्—वि० [सं०] बड़ा भारी । महान् । जैसे,—आपने यह बहुत बृहत् कार्य उठाया है ।

वृहत्कन्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहत्कन्द] १. विष्णुकन्द । २. गाजर ।

वृहत्कालशाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाकासमर्द नाम का चुप । कसीदी ।

वृहत्काश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उलूक नाम का तृण । खगडा ।

वृहत्कुक्षि—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका पेट आगे की ओर निझला हो । तोदल ।

वृहत्कोशातकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नेनुआं । तरौई ।

वृहत्खजूरिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छुहारा ।

वृहत्ताल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्रोताल या हिताल नाम का वृत्त ।

वृहत्तित्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] छोटा पाठा ।

वृहत्तित्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाठा । पाढा ।

वृहत्तृण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बांस ।

वृहत्त्रयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कृत के किराताकुर्नीय (भारवि), शिशुपालवध (मान) और नैपथ (श्रोहप) महाकाव्य । उ०—महाकाव्यों की वृहत्त्रयी (किरात, माघ, नैपथ) में इसका प्रमुख स्थान है ।—वां० शं० महा०, पृ० २३ ।

वृहत्त्वक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहत्त्वक्] सप्तपर्ण या सतिवन नामक वृत्त ।

वृहत्त्वच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नीम का पेड़ ।

वृहत्पचमूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहत्पचमूल] वेन, मोतायाठा, गमारो, पांडर, और गनिधारी इन पांचों का समूह ।

वृहत्पत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हाथीकद । २. पठानी लोच । ३. बटुप्रा नाम का साग ।

वृहत्पत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. त्रिपर्णी कद । २. कायमर्द । कसीदी ।

वृहत्पत्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिपर्णी कद ।

वृहत्पर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोच ।

वृहत्पर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] महाशरपुष्पी । बड़ी वनवनडे ।

वृहत्पाटलि, वृहत्पाटली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] धतूरा ।

वृहत्पाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वट का वृत्त । वरगद ।

वृहत्पारेवत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बड़ा पारेवत वृत्त ।

वृहत्पाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहत्पालिन्] वनजीरक । कानी जीरो ।

वृहत्पीलु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महापीलु नामक वृत्त । पहाडी अत्रगोट ।

वृहत्पुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. केला । २. सफेद कुम्हडा । पेठा ।

वृहत्पुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शरपुष्पी । वनसनई ।

वृहत्पुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सन । सनई ।

वृहत्फल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुम्हडा । २. कटहन । ३. जामुन । ४. चिचडा ।

वृहत्कला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कदू । लौली । २. कडवी लौकी । तिललीकी । ३. महेंद्रवारुणी । इनारन । ४. बड़ा जामुन । ५. सफेद कुम्हडा । पेठा ।

वृहदग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहदङ्ग] हाथी ।

वृहदम्ल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कमरख का पेड़ ।

वृहदश्ववार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृहत् + अश्ववार] अश्वमेधा का नायक । घुडमवार सेना का मचालक । अश्वमेधाधिपति ।—वां० भा०, पृ० ४४४ ।

वृहदेला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची ।

वृहद्—वि० [सं०] दे० 'वृहत्' ।

वृहद्गृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृहद्गृह या काश्य नामक प्राचीन देश ।

वृहद्गृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक देश का नाम जो विषयवर्त के पश्चिम में मालव देश के पास था । काश्य देश ।

वृहद्गोल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तरवूज ।

वृहद्दती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृहद् + दन्ती] बड़ी दती । द्रवती ।

वृहद्दल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पठानी लोच । २. मत्तपर्ण । नतिवन । ३. श्रोताल या हिताल नामक वृत्त । ४. लाल लहसुन । ५. लजालू । लज्जावती ।

वृहद्दला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जावती । लजालू ।

वृहद्द्रोणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] द्रोण नामक परिमाण ।

वृहद्दल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महालागल [को०] ।

वृहद्धान्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] यवनाल । ज्वार ।

वृहद्वदर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बड़ा बेर ।

वृहद्वला—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ पीतपुष्पा । महदेई । २ पठानी लोच । ३ लजालू । लज्जावती ।

वृहद्वीज—सञ्ज्ञा पु० [स०] आम्नात ५ । अमडा ।

वृहद्वभडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वृहद्वभण्डी] त्रायमाणा नाम की लता ।

वृहद्वभट्टारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दुर्गा का एक नाम ।

वृहद्वभानु—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ अग्नि । २ सूर्य । ३ भागवत के अनुसार मत्स्यभामा के एक पुत्र का नाम । ४ चित्रक । चाता ।

वृहद्वथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इद्र । २ यज्ञपत्र । ३ सामवेद के एक अंश का नाम । ४ भागवत के अनुसार षट्पञ्चवा के एक पुत्र का नाम । ५ देवरात के एक पुत्र का नाम । ६ एक प्रकार का मन्त्र ।

वृहद्वथ—वि० [वि० स्त्री० वृहद्वथा] जिसके पाम बहुत से रथ हों ।

वृहद्वथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वृहद्वाय—सञ्ज्ञा पु० [स०] उल्लू पक्षी ।

वृहद्वायी—सञ्ज्ञा पु० [म० वृहत् + राविन्] छोटा उल्लू [को०] ।

वृहद्वर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] सोनामक्खी ।

वृहद्वल्क—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. पठाना लोच । २ सप्तपर्ण । सतिवन ।

वृहद्वल्कल—सञ्ज्ञा पु० [म०] दे० 'वृहद्वल्क' ।

वृहद्वल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] करेना ।

वृहद्वत्त—सञ्ज्ञा पु० [म०] देववाय । पुनेरा ।

वृहद्वत्तणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महदेवास्त्री । इन रु ।

वृहद्वीज—सञ्ज्ञा पु० [को०] अमडा । आम्नातक [को०] ।

वृहद्वन्तल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बाहु । बाँह । २ अर्जुन । दे० 'वृहद्वन्तल' । ३ वृहद्वन्तल । बड़ा नरमल [को०] ।

वृहद्वन्तला—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] अर्जुन का उप समय का नाम जब वे वनवास के उरात अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहकर उसका कन्या का नाव गाना सिख लाते थे ।

वृहद्वन्तल—सञ्ज्ञा पु० [स०] नरमल । नरकट ।

वृहद्वन्तिव—सञ्ज्ञा पु० [स० वृहद्वन्तिव] महान्वि । वकायन ।

वृहद्वन्मरिच—सञ्ज्ञा पु० [स०] गाल मिर्च ।

वृहद्वन्मरीच—सञ्ज्ञा पु० [स०] काला मिर्च [को०] ।

वृहद्वलोणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] कुलफा नामक साग ।

वृहद्वस्पति—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवताओं के गुरु । विशेष दे० 'वृहद्वस्पति' । (१, और २) ।

वृही—सञ्ज्ञा पु० [स०] साठे धान्य ।

वेंक—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्क] दक्षिण भारत का एक देश और वहाँ के निवासी [को०] ।

वेंकट—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कट] द्रविड प्रदेश के एक पर्वत का नाम । वेंकटगिरि [को०] ।

वेंकटगिरि—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कटगिरि] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम जहाँ वेंकटेश्वर विष्णु का प्रसिद्ध मंदिर है ।

वेंकटाचल—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कटचल] दे० 'वेंकटगिरि' ।

वेंकटाद्रि—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कटाद्रि] दे० 'वेंकटगिरि' ।

वकटेश—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कटेश] विष्णु [को०] ।

वकटेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कटेश्वर] विष्णु [को०] ।

वेंघर—सञ्ज्ञा पु० [स० वेङ्कर] रूप यौवन का मद । सुंदरता का अभिमान [को०] ।

वे—सर्व० [हि० वह] १ वह का बहुवचन या समानवाचक रूप । जैसे,—(क) वे लोग चने गए । (ख) वे आनन आदोंगे । २ पत्नी द्वारा पति के लिये प्रयुक्त अन्य पुरुष का सर्वनाम ।

वेउ—सञ्ज्ञा पु० [स० वेद] दे० 'वेद' । उ०—मुनिवर विप्र मंडन वेउ । माननी सकन माजन तेउ ।—पृ० १०, १८ । ४३ ।

वेऊ—सर्व० [हि० वह + स० अपि, हि० भी] वह भी ।

वेक—वि० [स० एक] दे० 'एक' । उ०—जीते मरना विव ने मिला जीना जोने का फन वेक ।—दक्षिणनी०, पृ० ४४१ ।

वेकट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की मछली । भाकुर । २ पुष्क । जवान । ३ विदूषक । ममलरा । ४ जीहरी ।

वेक्षण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह ठूँढ़ना या देखना ।

वेखना—क्रि० अ० [स० वेक्षण, प्रा० वेखण > १०] देखना उ०—हुण क्या कोजै लाडिने वेखन नहि पावै ।—घनानंद, पृ० १८० ।

वेखलाना—क्रि० स० [स० वेक्षण] दे० 'देखलाना' । उ०—जिद निमाणे, तपदो, सोहणा मुख वेखलानी जाती ।—घनानंद, पृ०, ५३६ ।

वेग—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ प्रवाह । बहाव । २ शरीर में से मल मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति । ३ कपो और प्रवृत्त होने का जोर । तेजी । ४ शीघ्रता । जल्द । ५ आनंद । प्रसन्नता । खुशी । ६ कोई काम करने की दृढ़ प्रवृत्ति या पक्का निश्चय । ७ उद्योग । उद्यम । ८ प्रवृत्ति । भुलाव । ९ वृद्धि । बढ़ती । १० महाज्योतिष्मती । ११ लाल इमारत । १२ शुक्र । वीर्य । १३ व्याप के अनुसार चौबीस गुणा में से एक गुण ।

विशेष—यह गुण आकाश, जल, तेज, वायु और मन में पाया जाता है । समार में जो कुछ गत देखा जाता है, वह इसी गुण के कारण हाती है और उक्त पाँचों में से किसी न किसी के द्वारा होती है ।

१४ वायु की गति या चाल [को०] । १५ प्रेम । गाढ अनुराग [को०] । १६ रोग की तीव्रता [को०] । १७ विष आदि का संचार या फैलना [को०] । १८ आंतरिक भावों की वाइय अभिव्यक्ति । २० भावतिरेक [को०] ।

वेगग—वि० [स०] तेज चलनेवाला । तीव्रगामी [को०] ।

वेगगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेगपूर्वक चलनेवाली, नदी ।

वेगघन—वि० [स०] तीव्रता से प्रहार करनेवाला [को०] ।

वेगदड—सञ्ज्ञा पु० [स० वेगदण्ड] हाथी [को०] ।

वेगदर्शी—सञ्ज्ञा पु० [स० वेगदर्शिन] रामायण के अनुसार एक बदर का नाम ।

वेगधारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] मल, मूत्र या शरीर के इसी प्रकार के और किसी वेग को रोकना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है ।

वेगनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लेष्मा । कफ ।

विशेष—कहते हैं, शरीर से निकलनेवाला मल आदि इसी के कारण कुछ रुकना है, इसीलिये इसका यह नाम पड़ा है ।

वेगनिरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शरीर के मल मूत्र आदि वेगो को रोकना । वेगधारण ।

वेगपरिक्षय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोग के वेग या तेजी का कम होना [को०] ।

वेगरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के मल मूत्र आदि वेगो को रोकना । वेगधारण । २ गति में बाधा । रुकावट । रोक ।

वेगवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम ।

वेगवान्^१—वि० [सं० वेगवत्] [वि० स्त्री० वेगवती] वेगपूर्वक चलनेवाला । तेज चलनेवाला ।

वेगवान्^२—सञ्ज्ञा पुं० विष्णु ।

वेगवाहिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा । २ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेगवाही—वि० [सं० वेगवाहित] वेग से युक्त । वेगी [को०] ।

वेगविघात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शरीर से निकलते हुए मल मूत्र आदि वेगो को महमा रोक लेना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक समझा जाता है ।

वेगविधारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेगरोध' [को०] ।

वेगसर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ तेज चलनेवाला घोड़ा । २ खच्चर ।

वेगहरिण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मृग । वेगिहरिण [को०] ।

वेगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी मालकाँगी । महाज्योतिष्मती ।

वेगाघात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अस्मात् वेग या गति का रोकना । २ मलावरोध । कोष्ठवृद्धता [को०] ।

वेगानिल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेगयुक्त वायु । आँधी । प्रचंड पवन [को०] ।

वेगार^७—सञ्ज्ञा पुं० [फ्रा० वेगार, दे० 'वेगार'] । उ०—वाँट जाइते वेगार घर ।—कवि०, पृ० ४४ ।

वेगावतरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तीव्र गति से उतरना [को०] ।

वेगित—वि० [सं०] १ ज़िम्मे वेग हो । वेगयुक्त । २ विलोडित । मथित । क्षुब्ध । ३ जिसमें गति लाई गई हो । तेज किया हुआ [को०] ।

वेगेनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिता । नदी । २ एक प्रकार की नौका । युक्तिकल्पतरु के अनुसार १७६ हाथ लंबी, २२ हाथ ऊँची और १७३ हाथ चौड़ी नाव ।

वेगिहरिण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्रीकारी मृग ।

वेगी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेगिन्] १ वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो । २ धावन । हरकारा [को०] । ३ बाज नाम का पक्षी ।

वेगोदग्र—वि० [सं०] तीव्रता से प्रभाव फैलानेवाला (विप आदि)—शीघ्र असर करनेवाला [को०] ।

वेचा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भृति । मजदूरी । वेतन [को०] ।

वेजानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सोमराजी ।

वेजित—वि० [सं०] १ उत्तेजित । कपित । क्षुब्ध । २. बढ़ाया हुआ । वर्धित [को०] ।

वेट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] स्वाहा ।

विशेष—वैदिक काल में यज्ञो आदि में स्वाहा के स्थान में वेद शब्द का व्यवहार होता था ।

वेट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पीलु नामक वृक्ष [को०] ।

वेटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्यो की वसति या निवास । वैश्यो या वशिको की वस्ती [को०] ।

वेटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नौका । नाव [को०] ।

वेटेरिनरी—वि० [अ०] बैल, घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा संबंधी । शालिहोत्र संबंधी । जैसे,—वेटेरिनरी अस्पताल ।

वेटेरिनरी अस्पताल—सञ्ज्ञा पुं० [अ० वेटेरिनरी हॉस्पिटल] वह स्थान या चिकित्सालय जहाँ घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा की जाती है । पशु चिकित्सालय ।

वेट्टचंदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेट्टचन्दन] मलयागिरि चंदन ।

वेड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन [को०] ।

वेडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेडा । नाव [को०] ।

वेढा—सञ्ज्ञा पुं० [प्रा०] १. आसन । स्थान । पीठा । २ घेरा । लपेट । उ०—कोई सूँमारो सूँसी गयो, कचु कसण ते लरु की वेढ, रात दिवस धनी पहरीयो ।—ब्र० रामो, पृ० ६७ ।

वेढा^३—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] युद्ध । उ०—माह उजाली सपतमी, वेढ ममीसर वार ।—रा० रू०, पृ० २७२ ।

वेढकां—वि० [देश०] लडाकू । उ०—बाघ फता वेढकां वीर वीराध विजावत ।—रा० रू०, पृ० १५७ ।

वेढसिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह रोटी या कचौड़ी जिसमें उड़द की पीठी भरी हो । वेढई ।

वेढिआं—वि० [सं० वेष्टित या देशी] ढका हुआ । आवृत ।—देशी०, पृ० ३०४ ।

वेणु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्णनकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदिक माता और अवन्त पिता से मानी गई है । २ सूर्यवंशी राजा पृथु के पिता का नाम । ३ बाँर की वस्तुओं को बनाने का काम करनेवाला एक जाति । बंमोर । घरिकार [को०] ।

वेणुयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता ।

वेणुवी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेणुविन्] १ वह जिसके पास वेणु हो । २. शिव का एक नाम ।

वेणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम जिसे पर्यासा भी कहते हैं । २ उशोर । खस ।

वेणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली । बदाल । २ वेणो गूँथना या बाँधना [को०] । ३ प्रोपिनपतिका नायिका आदि को लटकनी हुई चौटी जो एक हो [को०] । ४ जल का प्रवाह । जलधारा [को०] । ५ सरित्सगम [को०] । ६ एक नदी [को०] । ७ गंगा, यमुना और सरस्वती का सगम [को०] । ८ पहले की विभक्त किंतु बाद में पुन संयुक्त की गई सपत्ति [को०] । ९ बाँध । पुल [को०] । १० मेघा । भेंड [को०] । ११. प्रपात । निर्भर । उत्स [को०] ।

वेणिक—सज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम। २ इस देश का निवासी।

वेणिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। वेणी। २ बाँस, नरमल आदि का बना वेडा (को०)। ३ पत्तन प्रवाह। झूट धारा (को०)।

वेणिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके बालों में चोटी की हुई हो (को०)।

वेणिवध—सज्ञा पुं० [सं० वेणिवध] बालों को बाँधकर बनाई गई चाटी (को०)।

वेणिमावत—सज्ञा पुं० [सं०] त्रिवेणी मगम के देवता विष्णु की मूर्ति।

वेणिवेवती—सज्ञा स्त्री० [सं०] जोक।

वेणिवेविनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] ककतिरा। कंगी (को०)।

वेणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। २ जन का प्रवाह। पानी का बहाव। ३ भीड़ भाड़। ४ देवदानी। ५ एक प्राचीन नदी का नाम। ६ भेड़। ७ पुल। बाँध। उद्या (को०)। ८ देवता। ९ 'वेणि'।

वेणी—सज्ञा पुं० [सं० वेणिन्, नागविशेष (को०)।

वेणीग—सज्ञा पुं० [सं०] खम। उशीर।

वेणीदान—सज्ञा पुं० [सं०] वेणी या बाल कटवाने का एक संस्कार जो प्रयाग आदि तीर्थों में संपन्न कराते हैं (को०)।

वेणीफल—सज्ञा पुं० [सं०] देवदाली का फल।

वेणीमूल—सज्ञा पुं० [सं०] खम। उशीर।

वेणीमूलक—सज्ञा पुं० [सं०] उशीर। खस।

वेणीर—सज्ञा पुं० [सं०] १ नीम का पेड़। २ रीठा। अग्निक वृक्ष।

वेणीमवरण—सज्ञा पुं० [सं०] वेणी को बाँधना। वेणीवधन (को०)।

वेणीसहरण—सज्ञा पुं० [सं०] चोटी बाँधना। जूड़ा बाधना (को०)।

वेणीमहार—सज्ञा पुं० [सं० वेणी + महार] १ जूड़ा बाँधना। बिखरे केसा को सुवारकर चोटी बाँधना। २ भट्ट नारायण कृत रामायण का एक नाटक (को०)।

वेणीस्कंध—सज्ञा पुं० [सं० वेणीस्कन्ध] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

वेणु—सज्ञा पुं० [सं०] १ गम। २ बाँस की बनी हुई वशी। ३ एक प्राचीन राजा का नाम। ४ 'वेणु'। ५ वेत। वेस (को०)। ५ राजा। केतु (को०)।

वेणुक—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह लठ्ठी या छड़ी जिसमें गोघ्रो, वेलो आदि की हाँसे हैं। २ अंकुश। आंकुश। ३ छोटी वशी। बाँसुरी। ४ इनायची। ५ एक जनपद (को०)।

वेणुतर्कर—सज्ञा पुं० [सं०] कनेर का पेड़। करवीर का पेड़।

वेणुता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी। वशी। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल बहुत जहरोला होता है। ३ हाथी को चराने का प्राचीन काल का एक प्रकार का अकुश या दंड जिसमें बाँस का दन्ता लगा होता था।

वेणुकार—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाँस से बाँसुरी बनाता हो। वशी बनानेवाला।

वेणुकीय—वि० [सं०] वेणुसंबंधी। वेणु का।

वेणुकीया—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह जगह जहाँ बाँस बहुत अधिक उत्पन्न हो (को०)।

वेणुगुल्म—सज्ञा पुं० [सं०] बाँसों का झुरमुट। बाँस की कोठी (को०)।

वेणुग्रव—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

वेणुजघ्न—सज्ञा पुं० [सं० वेणुजघ्न] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन मुनि का नाम।

वेणुज—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह चीज जो बाँस से उत्पन्न हुई हो। जैसे अग्नि आदि। २ बाँस के फूल में हानेवाले दाने, जो चावल कहलाते हैं और जो पीमकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाए जाते हैं। बास का चावल। ३ गोल मिच।

वेणुजमुक्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गाल दाना जो प्रायः माती कहलाता है।

वेणुजाल—सज्ञा पुं० [सं० वेणु + जाल] बाँसवारी। बाँस की कोठी। बाँसों का झुरमुट (को०)।

वेणुदत्त—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेणुदल—सज्ञा पुं० [सं०] बाँस को चीरकर बनाया हुआ फटा या बड़ो खपाची (को०)।

वेणुदारि—सज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम।

वेणुदारी—सज्ञा पुं० [सं० वेणुदारिन्] दानवविशेष (को०)।

वेणुदारी—वि० बाँस को चीरने या फाड़नेवाला (को०)।

वेणुधम—सज्ञा पुं० [सं०] वशीवादक। बाँसुरी बजानेवाला (को०)।

वेणुन—सज्ञा पुं० [सं०] मिर्च।

वेणुनिलेखन—सज्ञा पुं० [सं०] बाँस की छाल।

वेणुनिस्रुति—सज्ञा पुं० [सं०] ईख। ऊख।

वेणुनृत्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] तन के अनुसार एक देवी (को०)।

वेणुप—सज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो रेणुप भी कहलाता था। २ इस देश का निवासी।

वेणुपत्र—सज्ञा पुं० [सं०] बाँस का पत्ता।

वेणुपत्रक—सज्ञा पुं० [सं०] सर्प की एक जाति। सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।

वेणुपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वज्रपत्री। हिगुपर्णी।

वेणुपत्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वेणुपत्रिका' (को०)।

वेणुपुर—सज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक बेलगाव का प्राचीन नाम।

वेणुवीज—सज्ञा पुं० [सं०] बाँस के फूल में होनेवाले छोटे दाने जो ज्वार आदि के आटे के साथ पीमकर खाए जाते हैं। बाँस का चावल।

वेणुमंडल—सज्ञा पुं० [सं० वेणुमंडल] महाभारत के अनुसार कुशद्वीप के एक वर्ष का नाम।

वेणुमती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पाश्चिमोत्तर देश की एक नदी का नाम ।

वेणुमय—वि० [स०] बाँस का बना हुआ ।

वेणुमान्—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेणुमत्] १ पुराणानुसार एक वंश (वर्ण) का नाम । २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम । ३. ज्योतिष्मान् के एक पुत्र का नाम (को०) । ४. वह जो बाँस का बना हुआ हो (को०) ।

वेणुमुद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] तांत्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा ।

वेणुयव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बाँस के फूलों में होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पोमकर खाए जाते हैं । बाँस का चावल ।

विशेष—वैद्यक में यह रुद्ध, शीतल, कपाय और कफ, पित्त, मेद, कृमि तथा विष आदि का नाशक तथा बल और वीर्यवर्धक कहा गया है ।

वेणुयष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बाँस की लाठी या छड़ी (को०) ।

वेणुवश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक राजा का नाम ।

वेणुवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. राजगृह के पास का एक उपवन । राजा बिबिसार ने गौतम बुद्ध को बुलाकर यहीं ठहराया था । उ०—जब भगवान् बुद्ध राजगृह के वेणुवन में विहार कर रहे थे ।—गो० ज०, पृ० ६१ । २ बाँसों का जंगल ।

वेणुवाद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो वंशी बजाता हो । बाँसुरी बजानेवाला ।

वेणुवादक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बाँसुरी बजानेवाला । वंशीवादक (को०) ।

वेणुवादन, वेणुवाद्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वंशी बजाना (को०) ।

वेणुवादिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वंशी बजानेवाली स्त्री । २ बाँसुरी बजाती हुई यक्षिणी की प्रस्तरप्रतिमा । उ०—त्रिपुरी में वेणुवादिनी, सुदशना, नागी इत्यादि कई प्रकार की यक्षिणियों की प्रतिमाएँ रखी हैं ।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६४ ।

वेणुविदल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बाँस का फट्टा (को०) ।

वेणुवीणाधरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

वेणुवैदल—वि० [स०] वेणुविदल का बना हुआ । बाँस की खपाचियों का बना हुआ ।

वेणुशय्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बाँस की बनी शय्या (को०) ।

वेणुहय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक यदुवंशी का नाम (को०) ।

वेणुहोत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] घृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम ।

वेण्य—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार विंध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम ।

वेणवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम ।

वेणवातट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो वेणा या वेणवा नदी के तट पर था । २. इस देश का निवासी ।

हि० श० ९-३३

वेतंड—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेतण्ड] गज । हाथी । दे० 'वितंड' (को०) ।

वेतडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेतण्डा] देवी दुर्गा का एक रूप (को०) ।

वेतद—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेतन्द] हाथी (को०) ।

वेत—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेतस्] दे० 'वैत' ।

वेतन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय । पारिश्रमिक । उजरत । २. वह धन जो बराबर कुछ निश्चित समय तक, प्रायः एक मास तक, काम करने पर मिले । तनखाह । दरमाहा । महीना ।

क्रि० प्र०—देना । —गाना । —मिलना ।

३ चाँदी । रजत । ४ वृत्ति । जीविका (को०) ।

वेतनकल्पना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] तनखाह नियत करना ।

वेतनकालातिपातन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तनखाह देने में देर करना ।

विशेष—चाणक्य के मत से यह व्यवस्थापकों का दोष है और एतदर्थ वे दंड्य कहे गए हैं ।

वेतननाश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तनखाह या मजदूरी जव्त हो जाना ।

विशेष—चाणक्य के समय में यह राजनियम था कि जो कारीगर ठीक ढग से काम नहीं करते थे या कहा कुछ जाय और करते कुछ थे, उसका वेतन जव्त हो जाता था ।

वेतनभुक्—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेतनभुज्] दे० 'वेतनभोगी' (को०) ।

वेतनभोगी—सञ्ज्ञा पुं० [स० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो । तनखाह पर काम करनेवाला ।

वेतनादान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पारिश्रमिक न देना । वेतन न देना (को०) ।

वेतनी—वि० [स० वेतनिन्] वेतनभोगी । वेतन पानेवाला (को०) ।

वेतस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वैत । २ जलवैत । ३. बडवानल । ४. विजौग नीबू (को०) ।

वेतसक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम ।

वेतसगृह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैत की बनी भापडों या मडार (को०) ।

वेतसपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बाँस का पत्ता । २ दे० 'वेतसपत्रक' ।

वेतसपत्रक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जो प्रायः एक अंगुल मोटा और चार अंगुल लंबा होता था । इसका व्यवहार चौरफाड़ में होता था ।

वेतसपरीक्षित—वि० [स०] वैतों से घिरा हुआ । जैसे, स्थान या भूमि (को०) ।

वेतसवृत्ति—वि० [स०] वैत के समान भुक्त जाने का स्वभाव (को०) ।

वेतसाम्ल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अम्लवेत ।

वेतसिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

वेतसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वेतम' ।

यौ०—वेतसीवृत्ति = वैत के समान भुक्त जाने का स्वभाव या लचीलापन ।

वेतसु—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैदिक काल के एक अमुर का नाम ।

वेदकौलियक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

वेदगङ्गा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वेदगङ्गा] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम जो कोल्हापुर राज्य से निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है ।

वेदगत—वि० [सं०] चतुर्थ स्थान का । चौथे स्थानवाला [को०] ।

वेदगर्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा । २ विष्णु [को०] । ३ ब्राह्मण ।

वेदगर्भा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती नदी । २ रेवा नदी ।

वेदगर्भापुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेदगाभीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेदगाभीर्य] वेदों की गम्भीरता या गूढ़ अर्थ ।

वेदगाथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वेदगुप्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २. भागवत के अनुसार पराशर के एक पुत्र का नाम ।

वेदगुह्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

वेदघोष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि [को०] ।

वेदजननी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सावित्री जो वेद की माता मानी जाती है ।

वेदज्ञ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेदों का ज्ञाता हो । वेद जानने-वाला । २ वह जो ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो । ब्रह्मज्ञानी ।

वेदतत्त्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेद का प्रमुख उद्देश्य । ब्रह्मज्ञान [को०] ।

वेदतात्पर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदों का वह अर्थ जो समुचित श्रौत अभिप्रेत हो [को०] ।

वेदतीर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेदत्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेदत्रयी' [को०] ।

वेदत्रयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ऋक्, यजु तथा साम ये तीनों वेद । उ०—
उ०—वेदत्रयी अथ राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमयी है ।—
केशव (शब्द०) ।

वेदत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेद का भाव या धर्म ।

वेददक्षिणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेद विद्या पढ़ाने की दक्षिणा । वेदाध्ययन की दक्षिणा [को०] ।

वेददर्श—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन मुनि का नाम ।

वेददर्शन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो देखने में वेदों का स्वरूप जान पड़े ।

वेददर्शी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेददर्शिन] वह जो वेदों का ज्ञाता हो ।

वेददल—वि० [सं०] १ चार दलों या पत्तोंवाला । २ चार सेनाओं या समूहोंवाला [को०] ।

वेददान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेद पढ़ाना ।

वेददीप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महीधर का किया हुआ शुक्लयजुर्वेद का भाष्य ।

वेददृष्ट—वि० [सं०] वेद द्वारा प्रमाणित [को०] ।

वेदधारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदों को कंठ ग्र रखना [को०] ।

वेदध्वनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सस्वर वेदपाठ में होनेवाली ध्वनि । वेदघोष [को०] ।

वेदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेदना' ।

वेदना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुःख या कष्ट आदि का होनेवाला अनुभव । पीड़ा । व्यथा । तकलीफ । २ बौद्धों के अनुसार पाँच स्कंधों में से एक स्कंध । ३ चिकित्सा । इलाज । ४ चमड़ा । ५ ज्ञान । प्रत्यक्ष ज्ञान [को०] । ६ अनुभूति । भावना [को०] । ७ प्राप्ति [को०] । ८ सत्ति [को०] । ९ भेंट । उपहार [को०] । १० विवाह [को०] । ११ उच्च वर्ग के पुरुष के साथ शूद्रा का विवाह [को०] ।

वेदनाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि । वेदघोष [को०] ।

वेदनिन्दक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेदनिन्दक] १ वह जो वेदों की निंदा करता हो । वेदों की बुराई करनेवाला । २ नास्तिक । ३ भगवान् बुद्ध का एक नाम । ४ बौद्ध या जैन धर्म का अनुयायी ।

वेदनिंदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेदों में विश्वास न करना । वेदों की निंदा या बुराई [को०] ।

वेदनिदी—वि० [सं० वेदनिन्दन] दे० 'वेदनिन्दक' [को०] ।

वेदनिधि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी निधि वेद हो । ब्राह्मण जो वेदज्ञ हो [को०] ।

वेदनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] त्वचा । चमड़ा [को०] ।

वेदनीय—वि० [सं०] १. जानने योग्य । २. कष्टदायक । जो वेदना उत्पन्न करे । ३ वताने योग्य । ज्ञान कराने योग्य [को०] ।

वेदपठिता—वि० [सं० वेदपठितृ] वेदपाठ करनेवाला [को०] ।

वेदपथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदविहित आचरण । वेदमार्ग [को०] ।

वेदपथी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेदपथिन्] वेदपथ । वेदमार्ग [को०] ।

वेदपाठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदों का सस्वर पठन [को०] ।

वेदपाठक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदपाठी [को०] ।

वेदपाठी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेदपाठिन्] वेदपाठ करनेवाला ब्राह्मण [को०] ।

वेदपारग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदों का ज्ञाता हो । २ वह जो वैदिक कर्मों का ज्ञाता हो ।

वेदपुरय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदपाठ का कार्य । वेदाध्ययन का शुभ कर्म [को०] ।

वेदप्रदान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदाध्ययन कराना । वेददान करना [को०] ।

वेदप्लावी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेदप्लाविन्] वह जो सार्वजनिक रूप से वेद की शिक्षा दे । सार्वजनिक वेदशिक्षक [को०] ।

वेदफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह फल जो वैदिक कर्म करने से प्राप्त होता है ।

वेदवाहु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । ३ मनुर्वत के अधीन सात ऋषियों में से एक [को०] ।

वेदवाह्य—वि० [स०] १ वेद के प्रतिकूल । वेद के विरुद्ध । २. वेदों के प्रति अविश्वास करनेवाला ।

वेदवीज—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

वेदवृत्तार्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेद पढ़ने की अवस्था [को०] ।

वेदभू—सञ्ज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार देवताओं के एक गण का नाम ।

वेदभृत्—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वेदमन्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदमन्त्र] १ वेदों में आए हुए मंत्र । २ पुराणानुसार एक जनपद का नाम । ३. इस जनपद का निवासी ।

वेदमाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेदमातृ] १ गायत्री । सावित्री । २. दुर्गा । ३. सरस्वती ।

वेदमातृका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सावित्री ।

वेदमित्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम ।

वेदमुड—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदमुण्ड] एक असुर का नाम ।

वेदमुख्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का क्षुद्र कीट या खटमल [को०] ।

वेदमूर्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जो वेदों का बहुत बड़ा ज्ञाता हो । २ आदित्य । सूर्य ।

वेदमूल—वि० [स०] वेद ही जिसका मूल आधार हो । वेद पर आधारित [को०] ।

वेदयज्ञ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वेद पढ़ना । वेदपाठ करना । २. वैदिक यज्ञ यागादि ।

वेदयिता—वि० सञ्ज्ञा [स० वेदयितृ] ज्ञाता । जानने या अनुभव करनेवाला [को०] ।

वेदरक्षण—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्राह्मणों का प्रमुख कर्तव्य—वेदों की रक्षा करना ।

वेदरहस्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] उपनिषद् ।

वेदरिचा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेदरिचा] वेदों की ऋचा । वेदमन्त्र । उ०—जे वे गोप वधू ही ब्रज में तेई अब वेदरिचा भई यह । —छोत०, पृ० ७ ।

वेदल—वि० [स० विदल] विकसित । दे० 'विदल' । उ०—मिलै पद पद् सु वेदल चप ।—पृ० रा०, ६१।४३७ ।

वेदवचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदवाक्य । वेदमन्त्र [को०] ।

वेदवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा कुशवृज की कन्या का नाम । कहते हैं, यही दूसरे जन्म में सीता हुई थी । २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम । ३ अप्सरा । ४ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम ।

वेदवदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. ब्रह्मा । २ व्याकरण ।

वेदवाक्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेद का कोई वाक्य । २. ऐसी बात जो पूर्ण रूप से प्रामाणिक हो और जिसका खंडन न हो सकता हो ।

वेदवाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेदों पर होनेवाला शास्त्रार्थ । २ वेदज्ञान [को०] ।

वेदवादी—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदवादिन्] वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता हो ।

वेदवास—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्रह्मण ।

वेदवाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो वेदों का ज्ञाता हो ।

वेदवाहन—सञ्ज्ञा पु० [स०] सूर्य ।

वेदविक्रयी^१—वि० [स० वेद + विक्रयिन्] वेद को बेचनेवाला । वन लेकर वेद पढ़ानेवाला [को०] ।

वेदविक्रयी^२—सञ्ज्ञा पु० पतित वेदज्ञ [को०] ।

वेदविद्—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदवित्] १ वह जो वेदों का ज्ञाता हो । वेदज्ञ । २ विष्णु का एक नाम ।

वेदविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेद का विधान या विधि । वेद में निर्धारित विधान । उ०—प्रच्छन्न बौद्ध ज्या कहने लगे, वेद-विधि के कर्मकांड के लोप से दुखी जन वे विधि के प्रत्यागो ।—अपरा, पृ० २१४ ।

वेदविहित—वि० [स०] वेद के अनुकूल [को०] ।

वेदवृद्ध—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम ।

वेदवेनाशिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम ।

वेदव्यास—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यास' । उ०—कर्म फल तहवई लग राखा । जहँ लग वेदव्यास कछु भापा ।—कबीर सा०, पृ० ६६१ ।

वेदव्रत—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो वेदों का अध्ययन करता हो ।

वेदशिर^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. भागवत के अनुसार कृशाश्व के पुत्र का नाम । २ पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र ।

वेदशिर^२—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदशिरस्] पुराणानुसार मार्कंडेय के एक पुत्र का नाम, जो सूर्यदेव के वन में उत्पन्न हुआ था । कहते हैं, भार्गव लोगों का मूल पुरुष यही था ।

वेदशिरा—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदशिरस्] दे० 'वेदशिर' [को०] ।

वेदशीर्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

वेदश्रवा—सञ्ज्ञा पु० [स० वेदश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वेदश्री—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वेदश्रुत—सञ्ज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम ।

वेदश्रुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

वेदसम्मत—वि० [स० वेदसम्मत] वेदानुकूल [को०] ।

वेदसम्मित—वि० [स० वेदसम्मित] वेद के समान । महत्वपूर्ण । वेद के द्वारा विहित [को०] ।

वेदसार—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु ।

वेदसिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

वेदस्पर्श—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन वैदिक आचार्य का नाम ।

वेदस्मृता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

वेदस्मृति, वेदस्मृती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेदस्मृता नदी का नाम ।

वेदहीन—वि० [स०] वेद के ज्ञान से रहित । वह जिसे वेद का ज्ञान न हो [को०] ।

वेदाङ्ग—मञ्चा पुं० [स० वेदाङ्ग] १ वेदों के अंग या भाग जो छह हैं और जिनके नाम इस प्रकार हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद ।

विशेष—इनमें से व्याकरण को लोग वेदों का मुख, शिक्षा को नाक, निरुक्त को कान, ज्योतिष को आँख, कल्प को हाथ और छंद को पैर मानते हैं ।

२ सूर्य का एक नाम । ३ वारह आदित्यों में से एक आदित्य ।

वेदांत—मञ्चा पुं० [स० वेदान्त] १ उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है । ब्रह्म वेदा । अध्यात्म विद्या । अध्यात्म शास्त्र । ज्ञानकाण्ड । उ०—यद्यपि उपनिषदों को 'वेदांत' (वेद+अंत) सञ्ज्ञा दी गई है ।—सत० दरिया (भू०), पृ० ५६ । २ छह दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है, जड़ जगत् और जीव कोई अतिरिक्त या अन्य पदार्थ नहीं माने गए । उत्तर मीमांसा । अद्वैतवाद ।

विशेष—यद्यपि इस सिद्धांत का आभाव वेद के मंत्रभाग में कही कही पाया जाता है, पर आगे चलकर ब्राह्मणा, आरण्यकों में अधिक से अधिकतर होता गया है । तथापि सर्वधिक इसका आधार उपनिषद् ही हैं जिनमें जीव, जगत् और ब्रह्म आदि का निरूपण है । उपनिषदों में मुख्य वे दम कठ, केन, प्रश्न आदि उपनिषद् हैं जिनमें आद्य शंकराचार्य का भाष्य मिलता है । उनमें जिन प्रकार 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि' आदि जीवात्मा और परमात्मा का एकता प्रतिपादित करनेवाले महावाक्य हैं, उसी प्रकार पंचमहाभूतों में से पृथ्वी, जल और अग्नि ब्रह्म के भूत रूप तथा वायु और आकाश अमूर्त रूप कहे गए हैं । इस प्रकार उनमें जीवात्मा और जड़जगत् दोनों का समावेश ब्रह्म के भीतर मिलता है जो अद्वैतवाद का आधार है । आगे चलकर उपनिषद् की इस ब्रह्मविद्या का दार्शनिक ढंग से निरूपण महर्षि वदरायण के 'ब्रह्मसूत्रा' में हुआ है, जिनपर कई भाष्य [भक्त भक्त आचार्यों ने अपने अपने मत के अनुसार रचे । इनमें अनेक भाष्य अत्यंत प्रसिद्ध हैं,—शंकराचार्य (शारङ्ग), रामानुज बल्लभ आदि अनेक आचार्यों ने इसपर भाष्य लिखे इनमें से शंकर का भाष्य ही सबसे प्रसिद्ध और चिंतनपद्धति में बहुत आगे बढ़ा हुआ है । अतः 'वेदांत' शब्द से साधारणतः शंकर का अद्वैतवाद ही समझा जाता है । शेष भाष्य अनेक विद्वानों के मत से सांप्रदायिक मान जाते हैं ।

जगत्, जीव और ब्रह्म या परमात्मा इन तीनों वस्तुओं के स्वरूप तथा इनके पारस्परिक संबंध का निर्णय ही वेदांत शास्त्र का विषय है । न्याय और वैशेषिक ने ईश्वर, जीव और जगत्

(या जगत् के मूलद्रव्य परमाणु) ये तीन तत्त्व मानकर ईश्वर का जगत् का कर्ता ठहारा है, जो सर्वमाधारण को स्थूल भावना के अनुकूल है । वैशेषिक के अनुसार जगत् का मूल रूप परमाणु है जो नित्य है और जिनके ईश्वर-प्रेरित सयोग से सृष्टि होती है । इसके आगे बढ़कर सांख्य ने दो ही नित्य तत्व स्थिर किए—पुरुष (आत्मा) और प्रकृति, अर्थात् एक और असंख्य चेतन जीवात्माएँ और दूसरी और जड़जगत् का अव्यक्त मूल । ईश्वर या परमात्मा का समावेश सांख्यपद्धति में नहीं है । सृष्टि के विकास की सूक्ष्म तात्त्विक विवेचना सांख्य ने ही की है । किस प्रकार एक अव्यक्त प्रकृति से क्रमशः आपसे आप जगत् का विकास हुआ, इसका पूरा व्यास उसमें बताया गया है, और जगत् का कोई कर्ता है, नैयायिकों के इस सिद्धांत का खंडन किया गया है । पुरुष या आत्मा केवल द्रष्टा है, कर्ता नहीं । इसी प्रकार प्रकृति जड़ और क्रियामयी है । एक लैंगिका है, दूसरी अर्थात् असंख्य पुरुषों के सयोग या सान्निध्य से ही प्रकृति सृष्टि-क्रिया में तत्पर हुआ करती है ।

वेदान्त ने और आगे बढ़कर प्रकृति तथा असंख्य पुरुषों का एक ही परमतत्त्व ब्रह्म में अव्यक्त रूप से समावेश करके जड़ चेतन के द्वैत के स्थान पर अद्वैत को स्थापना की । वेदांत ने सांख्य के अनेक पुरुषों का खंडन किया और चेतन तत्व को एक और अविच्छिन्न सिद्ध करते हुए बताया कि प्रकृति या माया को 'अहंकार' गुणरूपी उपाधि में ही एक के स्थान पर अनेक पुरुषों या आत्माओं को प्रतीति होती है । यह अनेकता मायाजन्य है । सांख्यो ने पुरुष और प्रकृति के सयोग से जो सृष्टि का उपात्त कही है, वह भी असंगत है, क्योंकि यह सयोग या तो सत्य हो सकता है अथवा मिथ्या । यदि सत्य है, तो नित्य है, अतः कभी दूट नहीं सकता । इस दशा में आत्मा कभी मुक्त हो ही नहीं सकता । इसी प्रकार का युक्तिधो से पुरुष और प्रकृति के द्वैत को न मानकर वेदांत ने उन्हें एक ही परम तत्त्व ब्रह्म की विभूतियाँ बताया । वेदांत के अनुसार ब्रह्म जगत् का निमित्त और उपादान दोनों हैं ।

नामरूपात्मक जगत् के मूल में आधारभूत होकर रहनेवाले इस नित्य और निर्विकार तत्त्व ब्रह्म का स्वरूप कैसा हो सकता है, इसका भी निरूपण वेदांत ने किया है । जगत् में जो नाना दृश्य दिखाई पड़ते हैं, वे सब परिणामी और अनित्य हैं । वे बदलते रहते हैं, पर उनका ज्ञान करनेवाला आत्मा या द्रष्टा सदा वही रहता है । यदि ऐसा न होता तो भूतकाल में अनुभव की हुई बात का वर्तमानकाल में अनुभूत विषय के साथ जो संबंध जोड़ा जाता है, वह असंभव होता है (पंचदशी) । इसी से ब्रह्म का स्वरूप भी ऐसा ही होना चाहिए । अर्थात् ब्रह्म चित्स्वरूप या आत्मस्वरूप है । नाना ज्ञेय पदार्थ भी ज्ञाता के ही सगुण, सोपाधि या मायात्मक रूप हैं, यह निश्चय करके ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत वेदांत ने हटा दिया है, ब्रह्म स्वरूप का विवेचन वेदांत के पिछले ग्रंथों में व्योरे के साथ हुआ है ।

जगत् और सृष्टि के संबंध में वेदांतियों ने नैयायिकों के 'आरंभवाद' (ईश्वर सृष्टि उत्पन्न करता है) और सांख्य के 'परिणामवाद' (सृष्टि का विकास उत्तरोत्तर विकार या परिणाम द्वारा अव्यक्त प्रकृति से आपसे आप होता है) के स्थान पर 'विवर्तवाद' की स्थापना की है जिसके अनुसार जगत् ब्रह्म का विवर्त या कल्पित रूप है। रस्सी को यदि हम सर्प समझें तो रस्सी सत्य वस्तु है और सर्प उसका विवर्त या भ्रांतिजन्य प्रतीति है। इस प्रकार ब्रह्म तो नित्य और वास्तविक सत्ता है और नामरूपात्मक जगत् उसका विवर्त है। यह विवर्त अध्यास द्वारा होता है। जो नामरूपात्मक दृश्य हम देखते हैं वह न तो ब्रह्म का वास्तव स्वरूप ही है, न कार्य या परिणाम ही क्योंकि ब्रह्म निर्विकार और अपरिणामी है। अध्यास के सबब में कहा जा सकता है कि सर्प कोई अलग पदार्थ है तब तो उसका आरोप होता है। अतः इस विषय को और स्पष्ट करने के लिये 'दृष्टि-सृष्टि-वाद' उपस्थित किया जाता है जिसके अनुसार माया या नामरूप मन की वृत्ति है। इनको सृष्टि मन ही करता है और मन ही देखता है। ये नामरूप उसी प्रकार मन या वृत्तियों के बाहर की कोई वस्तु नहीं हैं, जिन प्रकार जड़ चित् के बाहर की कोई वस्तु नहीं है। इन वृत्तियों का शमन ही मोक्ष है।

इन दोनों वादों में कुछ त्रुटि देखकर कुछ वेदांती 'अवच्छेदवाद' का आश्रय लेते हैं। वे कहते हैं कि ब्रह्म के अतिरिक्त जगत् की जो प्रतीति होती है, वह एकरस या अनवच्छिन्न सत्ता के भीतर माया द्वारा अवच्छेद या परिमिति के आरोप के कारण होती है। कुछ अन्य वेदांती इन तीनों वादों के स्थान पर 'विव-प्रतिविव-वाद' उपस्थित करते हैं और कहते हैं कि ब्रह्म प्रकृति या माया के बीच अनेक प्रकार से प्रतिविविन्न होता है जिससे नामरूपात्मक दृश्यों की प्रतीति होती है। अंतिम वाद 'व्रजात वाद' है जिसे 'प्रौढिव' भी कहते हैं। यह सब प्रकार की उत्पत्ति को, चाहे वह विवर्त के रूप में कहा जाय, चाहे दृष्टि सृष्टि या अवच्छेद या प्रतिविव के रूप में—अस्वीकार करता है और कहता है कि जो जैसा है वह वैसा ही है और सब ब्रह्म है। ब्रह्म अनिर्वचनीय है, उसका वर्णन शब्दों द्वारा हो ही नहीं सकता क्योंकि हमारे पास जो भाषा है, वह द्वैत ही है, अर्थात् जो कुछ हम कहते हैं वह भेद के आधार पर ही।

यद्यपि ब्रह्म का वास्तविक या पारमार्थिक रूप अव्यक्त, निर्गुण और निर्विशेष है, तथापि व्यक्त और सगुण रूप भी उसके बाहर नहीं है। पञ्चदशी में इन सगुण रूपों का विभेद प्रतिविषाद के शब्दों में इस प्रकार समझाया गया है—रजोगुण की प्रवृत्ति से प्रकृति दो रूपों में विभक्त होती है—सत्त्वप्रधान और तम प्रधान। सत्त्वप्रधान के भी दो रूप हो जाते हैं—शुद्ध सत्त्व (जिसमें सत्त्व गुण पूर्ण हो) और अशुद्ध सत्त्व (जिसमें सत्त्व अशत हो)। प्रकृति के इन्हीं भेदों में प्रतिविविन्न होने के कारण ब्रह्म को 'जीव' कहते हैं।

वेदांत या अद्वैतवाद से साधारणतः शंकराचार्य प्रतिपादित अद्वैतवाद लिया जाता है जिसमें ब्रह्म स्वगत, सजातीय और विजातीय तीनों भेदों से परे कहा गया है। पर जैसा ऊपर कहा जा चुका है, बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर रामानुजाचार्य और शंकराचार्य के भाष्य भी हैं। रामानुज के अद्वैतवाद को 'विशिष्टाद्वैत' कहते हैं, क्योंकि उसमें ब्रह्म को चित् और अचित् इन दो पक्षों से युक्त या विशिष्ट कहा है। ब्रह्म के इसी सूक्ष्म चित् और सूक्ष्म अचित् से स्थूल चित् (जीव) और स्थूल अचित् (जड़) उत्पन्न हुए। अतः रामानुज के अनुसार ब्रह्म केवल निमित्त कारण है, उपादान है जड़ (स्थूल अचित्) और जीव (स्थूल चित्)। इस मत के अनुसार जीव को ब्रह्म का अंश कह सकते हैं। पर शंकर मत से नहीं, क्योंकि उसमें ब्रह्म सब प्रकार के भेदों में परे कहा गया है।

वल्लभाचार्य जी का अद्वैत 'शुद्धाद्वैत' कहलाता है, क्योंकि उसमें रामानुजकृत दो पक्षों की विशिष्टता हटाकर अद्वैतवाद शुद्ध किया गया है। इस मत के अनुसार सत्, चित् और आनन्द-स्वरूप ब्रह्म अपने इच्छानुसार इन तीनों स्वरूपों का आविर्भाव करता रहता है। जड़ जगत् भी ब्रह्म ही है, पर अपने चित् और आनन्द स्वरूपों का पूर्ण तिरोभाव किए हुए तथा सत् स्वरूप का कुछ अंशतः आविर्भाव किए हुए है। चेतन जगत् भी ब्रह्म ही है जिसमें सत्, चित् और आनन्द इन तीनों स्वरूपों का कुछ आविर्भाव और कुछ तिरोभाव रहता है। माया ब्रह्म ही की शक्ति है जो उसी की इच्छा से विभक्त होती है, अतः मायात्मक जगत् मिथ्या नहीं है। जीव अपने शुद्ध ब्रह्मस्वरूप को तभी प्राप्त करता है जब आविर्भाव और तिरोभाव दोनों मिट जाते ह, और यह बात केवल ईश्वर के अनुग्रह से ही, जिसे 'पुण्ड्र' कहते ह, हो सकती है।

यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए कि रामानुज और वल्लभाचार्य केवल दार्शनिक ही न थे, वे भक्तिमार्गी भी थे।

वेदांतग—संज्ञा पु० [सं० वेदांतग] वेदांत दर्शन का अनुगमन करने-वाला। वेदांत मत का अनुयायी [को०]।

वेदांतग—वि० वेदवत्ता [को०]।

वेदांतज्ञ—वि० [सं० वेदन्तज्ञ] वेदांत दर्शन का ज्ञाता। वेदांतग [को०]।

वेदांतवादी—वि० [सं० वेदांतवादन] अद्वैतवादी [को०]।

वेदांतविद्—वि० [सं० वेदान्तविद्] वेदांत दर्शन का ज्ञाता [को०]।

वेदांतवेदी—वि० [म० वेदांतवेदिन्] अद्वैत दर्शन या वेदांत का ज्ञाता। ब्रह्मवादी। वेदांती [को०]।

वेदांतसूत्र—संज्ञा पु० [सं० वेदान्तसूत्र] महर्षि बादरायण कृत सूत्र जो वेदांत शास्त्र का मूल माना जाता है। विशेष द० 'वेदांत'।

वेदांती—संज्ञा पु० [म० वेदान्तिन्] वह जो वेदांत का अर्थ ज्ञाता हो। वेदांत का पूरा पंडित। ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी—संज्ञा स्त्री० [म०] सरस्वती।

वेदात्मा—संज्ञा पु० [सं० वेदात्मन्] १ विष्णु। २ सर्व।

वेदादि—संज्ञा पु० [सं०] प्रणव या ओंकार का मंत्र।

यौ०—वेदादिवीज = प्रणव । वेदादिवर्ण = ओंकार मन्त्र । प्रणव ।
वेदादिवीज ।

वेदादिवीज—सञ्ज्ञा पु० [स०] प्रणव या ओंकार का मन्त्र ।

वेदाधिगम—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदाध्ययन [को०] ।

वेदाधिदेव—सञ्ज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण ।

वेदाधिप—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ चारों वेदों के अधिपति ग्रह जो इस प्रकार हैं—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल और अथर्ववेद के बुध । २ विष्णु का एक नाम [को०] ।

वेदाधिपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वेदाधिप' [को०] ।

वेदाध्यक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

वेदाध्ययन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदाधिगम । वेदाध्ययन । वेदों का पढ़ना [को०] ।

वेदाध्यापक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदों का अध्यापन करनेवाला [को०] ।

वेदाध्यायी—वि० [स०] वेदाध्यायिन् । वेदपाठ या वेद का अध्ययन करनेवाला [को०] ।

वेदानुवचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेद का पाठ करना । २ वेद का वचन । वेदवाक्य [को०] ।

वेदाति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेदों पर पूर्ण अधिकार होना [को०] ।

वेदार—सञ्ज्ञा पु० [स०] गिरगिट ।

वेदार्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] तीर्थविशेष [को०] ।

वेदार्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदवचन का अर्थ । वेदवाक्य का अर्थ [को०] ।

वेदाश्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] चतुष्कोण [को०] ।

वेदाश्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

वेदि^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ यज्ञ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ किसी शुभ कार्य के लिये बनाकर तैयार की हुई भूमि । ३ उँगली की एक प्रकार की मुद्रा । ४ अबष्टा । ५ वह अँगूठी जिसपर किसी का नाम अंकित हो । ६ किसी मंदिर या महल का चौकोर सहन । मंदिर या प्रासाद के प्रांगण में बना हुआ चौकोर स्थान या मंडप [को०] । ७ सरस्वती [को०] । ८ भूभाग । भूखंड [को०] । ९ कोई वस्तु रखने का आवार [को०] । १० ज्ञान । विज्ञान [को०] । ११ एक तीर्थ का नाम [को०] ।

वेदि^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विद्वान् ऋषि, २ आचार्य [को०] ।

वेदिकरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदी का निर्माण [को०] ।

वेदिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी शुभ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ जैन पुराणों के अनुसार एक नदी का नाम । ३ यज्ञभूमि [को०] । ४ चवूतरा । उच्च समतल भूमि [को०] । ५ आसन [को०] । ६ टीला । ढूहा [को०] । ७ लतामंडप । निकुंज [को०] ।

वेदिजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] द्रौपदी का एक नाम ।

वेदित—वि० [स०] १ जो कुछ बतलाया या सूचित किया गया हो । निवेदित । २ जो देखा गया हो ।

वेदितव्य—वि० [स०] जो जानने के योग्य हो । ज्ञातव्य ।

वेदिता—वि० [स०] वेदतृ चतुर । कुशल । विद्वान् । ज्ञाता । जानने-वाला [को०] ।

वेदित्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] विदित होने का भाव । ज्ञान ।

वेदिपुरीष—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदों की गौनी या ढीली मिट्टी [को०] ।

वेदिमध्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसकी कमर वेदी की भाँति हो [को०] ।

वेदिमान, वेदिविमान—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदों के लिये भूमि का परिमाण [को०] ।

वेदिश्रोणि, वेदिश्रोणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेदों का श्रोणि भाग जिसे वेदिमेखला भी कहते हैं [को०] ।

वेदिष्ठ—वि० [स०] जो सब बातें जानना हो । सर्वज्ञ ।

वेदिसभवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेदिमभवा । द्रौपदी का एक नाम [को०] ।

वेदी^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदिन् । [स्त्री० वेदिनी] १ पंडित । विद्वान् । आचार्य । २ ज्ञाता । जानकार । ३ वह जो विवाद करता हो । ४ ब्रह्मा । ५. अबष्टा । पाठा [को०] ।

वेदी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १. किसी शुभ कार्य के लिये, विशेषतः धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि । जैसे,—विवाह की वेदी, यज्ञ की वेदी । २ सरस्वती । ३. मंदिर या महल के प्रांगण में बना हुआ चौकोर स्थान या मंडप [को०] । ४ मुहर करने की अँगूठी [को०] । ५ अँगुलियों की एक विशेष मुद्रा [को०] । ६ भूखंड । भूभाग [को०] । ७ ज्ञान विज्ञान [को०] । ८ कोई वस्तु रखने का आवार [को०] । दे० 'वेदि' ।

वेदी^३—वि० १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ अनुभव करनेवाला । ३ विवाह करनेवाला । ४ सूचना देनेवाला । सूचक । ५ विद्वान् । आचार्य [को०] ।

वेदीतिथि—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

वेदीश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेदों के स्वामी, ब्रह्मा । २ अग्नि [को०] ।

वेदुक्—वि० [स०] १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ प्राप्त करनेवाला । पानेवाला । ३ जो कुछ मिला हो । प्राप्त ।

वेदेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदों के स्वामी, ब्रह्मा ।

वेदोक्त(७)—वि० [स०] वेदोक्त । दे० 'वेदोक्त' । उ०—कैसर अगर् कपूर, चोक (व), वेदोक्त चन्नण ।—रा० रु०, पृ० ३५६ ।

वेदोक्त—वि० [स०] वेदों में कहा गया । वेदविहित [को०] ।

वेदोदय—सञ्ज्ञा पु० [स०] सूर्य ।

वेदोदित—वि० [स०] वेदविहित । वेद के अनुसार । वेदोक्त [को०] ।

वेदोवकरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदाग ।

वेदोपनिषद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम ।

वेदव्य—वि० [स०] जो वेधने या छेदने के योग्य हो। वेध जाने के योग्य। वेध।

वेद्धा—वि० [स० वेद्वृ] छेदने या भेदनेवाला। वेधन करनेवाला। लक्ष्य साधनेवाला।

वेद्य—वि० [स०] १. जो जानने या समझने के योग्य हो। २ जो कहने के योग्य हो। ३. जो स्तुति करने योग्य हो। ४ जो प्राप्त करने के योग्य हो। ५ विवाह के योग्य (को०)।

वेद्यत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] ज्ञान। जानकार।

वेध^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. किसी तुकोली चीज से छेदने की क्रिया। वेधना। विद्ध करना। २ मन्त्रों आदि को महायता से ग्रहों, नक्षत्रों और तारों आदि को देखना अथवा उनका स्थान निश्चित करना।

यौ०—वेधशाला।

३ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो। जैसे,—युतवेध, पताकी-वेध। ४ गहरापन। गभीरता। ५ भगडा। रार। उ०—राण अर्न समरेम रँ, बले प्रगट्यो वेध।—रा० ८०, पृ० ३४५। ६ क्षत्र। घाव। ७ समय का एक मान (को०)। ८ गर्त। गहराई। गड्ढा (को०)। ९ ज्योतिष में परिधि का नवमाश (को०)। १० अशांति। वाधा (को०)। ११ घोंड़ों का एक रोग (को०)। १२ रसों का मिश्रण (को०)। १४ निशाना मारना। लक्ष्य भेद करना (को०)।

वेध^२—सञ्ज्ञा पु० [स० वेधस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। महादेव। ४ सूर्य। ५ पंडित। विद्वान्। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति।

वेधक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वेध करनेवाला। २ लक्ष्य साधनेवाला। ३ वह जो मणियों आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। ४ धनियाँ। ५ कपूर। ६ अम्लवेत। ७ नरक का एक विभाग (को०)। ८ वाली में लगा हुआ धान। धान्य (को०)। ९ चदन (को०)। १० सेंधा नमक (को०)।

वेधगुप्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] सगीत में एक राग का नाम (को०)।

वेधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वीधने की क्रिया। छेद कर देना। २ लक्ष्यवेध करना। ३ प्रवश। ४ प्रभावित करना। ५ गहराई। ६ खादना। खनना क्रिया (को०)।

वेधनिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह औजार जिससे मणियों आदि में छेद करते हो।

वेधनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह औजार जिसमें मणियों आदि में छेद करते हो। वेधनिका। २ हाथी का अकुश। ३ गहराई (को०)।

वेधनीय—वि० [स०] वेधने के योग्य। जो वेध जा सके (को०)।

वेधमुख्य—सञ्ज्ञा स० [स०] कचूर।

हि० श० ९-३४

वेधमुख्यक—सञ्ज्ञा पु० [स०] हलदी का पौधा।

वेधमुख्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कस्तूरी।

वेधशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ ग्रहों का वेध करने के यंत्र आदि रखे हो। वह स्थान जहाँ नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनको दूरी, गति आदि जानने के यंत्र हो।

वेधस—सञ्ज्ञा पु० [स०] ह्येची के अंगूठे की जड़ के पास का स्थान।

विशेष—इसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं। आचमन के लिये इसी गड्ढे में जल लेने का विधान है।

वेधसी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेधा पु०—सञ्ज्ञा पु० [स० वेधम्] १ ब्रह्मा। सृष्टा। उ०—सहस्र शब्द बीते तव वेधा। वरब्रूहि भाखेउ अति मेधा।—गिरधर (शब्द०)। २ विष्णु। ३ शिव। ४ सूर्य। ५ पंडित। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति। ८ एक यादव का नाम जो अंगद या अंगत का पुत्र था। ९ पुरोहित (को०)। १० चद्रमा (को०)। ११ कवि (को०)।

वेधालय—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वेधशाला'।

वेधित—वि० [स०] जो वेध गया हो। जिसमें छेद किया गया हो। बिँवा हुआ।

वेधिनी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ जलीका। जोक। २ मेथी।

वेधिनी^२—वि० वेधनेवाली। छेदनेवाली।

वेधी—सञ्ज्ञा पु० [स० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनो] १ वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला। २ अम्लवेत। ३ जो लक्ष्यभेद करता हो। वह जो निशाना मारता हो (को०)।

वेध्य^१—वि० [स०] १ जिसे वेध किया जाय। २ जो वेध करने के योग्य हो।

वेध्य^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] लक्ष्य। निशाना (को०)।

वेध्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वाध विशेष (को०)।

वेन—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वेण' (को०)।

वेनु पु०—सञ्ज्ञा पु० [स० वेणु] बाँस की वंशी। बाँसुरा।

वेनुधारी पु०—वि० [स० वेणुधारिन्] वंशी बाराण करने या बजाने-वाले। उ०—या प्रकार वृद्धावन के वृद्ध वृद्ध वेनुधारा आ गोवर्धनवर रूप हैं।—दो सौ बावन०, भा० १ पृ० ३०२।

वेनुनाद पु०—सञ्ज्ञा पु० [स० वेणुनाद] दे० 'वेणुनाद'। उ०—हमारे श्री कृष्णचंद्र जी तो वेनुनाद करि कै सब ब्रज सुंदरीन को बुलाई कै रासरमन उन सा करत हैं।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६१।

वेन्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महाभरत के अनुसार एक पवित्र नदी।

वेन्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वेन'।

वेन्य^२—वि० सुंदर। खूबसूरत।

वेप—सञ्ज्ञा पु० [स०] कपकपो (को०)।

वेपथु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] काँपने की क्रिया। काँपकाँपी। कप।
 वेपथुपरीत—वि० [सं०] कपनग्रस्त। कपायमान। काँपता हुआ [को०]।
 वेपथुभृत्—वि० [सं०] कपित। काँपता हुआ [को०]।
 वेपन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ काँपना। थरथरी। कप। २ वात रोग।
 वेपित—वि० [सं०] कपित [को०]।
 वेम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] करवा [को०]।
 वेमक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक स्वर्गीय ऋषि।
 वेमा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेमन्] करवा। वामदंड [को०]।
 वेर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। देह। बदन। २ कुंकुम। केपर।
 ३ बैंगन। भटा [को०]। ४ मुख [को०]।
 वेरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कपूर।
 वेरट^१—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ वेर नामक फल। २ निम्न वा सकर
 वर्ण का व्यक्ति [को०]।
 वेरट^२—वि० १. मिलाया हुआ। मिश्रित। २ नीच।
 वेरि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार बेंत आदि से
 बुनकर बना हुआ पहनावा या वस्त्र।
 वेरो पुं—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] कूप। कुआँ। उ०—पाहण गल बाँधे पडो,
 वेरो बावडियाँह। पिण मगण मत पारथो मुजलाँ मावडियाह।
 —बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १४।
 वेल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ उपवन। वाग। २ बौद्ध मतानुसार एक
 बड़ी सख्या। ३ ग्राम का वृक्ष [को०]।
 वेल^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० वेल] लहर। तरंग। उ०—ईडरिया
 आचार री, वीर चढै तो वेल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १,
 पृ० ७५।
 वेलज—वि० [सं०] नमकीन और चपरा या कडवा [को०]।
 वेलडी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वल्लरी] दे० 'वेल' या 'वल्लरी'। उ०—
 घर अबर विच वेलडी, तहुँ लाल सुगंधा बूल। भ्रूखर इक
 नाँ आयो, नानक नही बबूल।—सतवाणी०, पृ० ७०।
 वेलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हींग।
 वेलना—क्रि० अ० [सं० वेल्ल, प्रा० वेल्ल] काँपना। तडपना।
 झिलना। उ०—ओछइ पाँणी मच्छ ज्यऊँ, वेलत थयउ विहाण।
 —ढोला०, दू० १९२।
 वेलव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूद्र पुरुष और क्षत्रिया स्त्री के सयोग से
 उत्पन्न पुत्र [को०]।
 वेला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ काल। समय। वक्त। २ समय का एक
 विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है।
 कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं।
 ३ मर्यादा। ४ समुद्र का किनारा। ५ समुद्र की लहर।
 ६ वाक्। वाणी। ७ मसूडा। ८ भोजन। खाना। ९
 रोग। बीमारी। १० बुद्ध की स्त्री [को०]। ११ राग।
 आसक्ति [को०]। १२ अवसर। मौका [को०]। १३ विश्राम

का अवकाश [को०]। १४ आसान या कष्ट-वाधा-विहीन
 मृत्यु [को०]। १५ मृत्यु का समय [को०]।
 वेलाकूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ताम्रलिप्त देश का नाम। २ वेलामून।
 समुद्रतट [को०]।
 वेलाजल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्वार का पानी [को०]।
 वेलाज्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मरने के समय आनेवाला ज्वर।
 वेलातर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] ममु^२ का किनारा [को०]।
 वेलातिक्रम—सञ्ज्ञा पुं० [म०] निश्चित समय का अतिक्रमण।
 विलव। दे^२ [को०]।
 वेलाद्रि—सञ्ज्ञा पुं० [म०] समुद्रतटवर्ती पर्वत [को०]।
 वेलाघर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भारड या भारद्वाज नामक पक्षी [को०]।
 वेलाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] फलित ज्योतिष में दिनमान के आठवें भाग
 या वेला के अधिपति देवता।
 विशेष—रवि, शुक्र, बुध, चंद्र, शनि, वृहस्पति, और मंगल ये
 क्रमशः वेलाधिप होते हैं। जिस दिन जो वार होता है, उस
 दिन की पहली वेला का वेलाधिप उसी वार का ग्रह होता है,
 और फिर पीछे की वेलाओं के अधिपति उक्त क्रम में शेष ग्रह
 होते हैं। जैसे,—रविवार की पहली वेला के वेलाधिप रवि,
 दूसरी के शुक्र, तीसरी के बुध, चौथी के चंद्र आदि होंगे। इसी
 प्रकार बुधवार की पहली वेला के वेलाधिप बुध, दूसरी के चंद्र
 तीसरी के शनि, चौथी के वृहस्पति आदि होंगे।
 वेलान—वि० [सं०] दे० 'वेलज'।
 वेलामूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा [को०]।
 वेलायनि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।
 वलावन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्रतटवर्ती जंगल [को०]।
 वेलावलि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मगीत में एक राग। दे० 'विलावल'।
 वेलावित्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रात्रतरंगिणी के अनुसार प्राचीन काल के
 एक प्रकार के राजकर्मचारी।
 वेलाविलासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] वारवन्तिता। वेश्या [को०]।
 वेलाहीन—वि० [सं०] असमय में होनेवाला। समय के पहुँचे होनेवाला।
 वेलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ ताम्रलिप्त देश का एक नाम। २ नदी-
 तट के आस पास का प्रदेश।
 वेलिभुक्प्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित आम जिसे
 वलिभुक्प्रिय भी कहा गया है [को०]।
 वेलियो^१—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डिंगल गीत जिसके विषय
 पदों में १६ मात्रा और सम पदों में १५ मात्राएँ तथा आदि पद
 में १८ मात्राएँ और तुकात में लघु का विधान है।—रघु०
 ८०, पृ० १००।
 वेलुव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक सख्या। दे० 'वेल' [को०]।
 वेलोर्मि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ज्वार का पानी [को०]।
 वेल्लंतर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेल्लन्तर] वीरतल नाम का एक वृक्ष [को०]।

वेल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विडग । २ गमन । गति (को०) । ३ कांपना । हिलना । लहराना (को०) ।

वेलगिरिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्रियंग ।

वेल्लज—सञ्ज्ञा पु० [स०] काली मिर्च ।

वेल्लन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ घोडो का जमीन पर लोटना । २ कपन । कांपना । गतिशील होना । हिलना डोलना (को०) । ३ तरंगों का ऊपर नीचे होना या लुढ़कना (को०) । ४ तेजी से मथना । तीव्र आलोडन (को०) । ५ गुन्म (को०) । ६ वेलन । रोटी बनाने का काष्ठ का वेलन (को०) ।

वेल्लना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वेल्लन' (को०) ।

वेल्लनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्ली दूब । मालादूब । २ काली मिर्च (को०) ।

वेल्लभव—सञ्ज्ञा पु० [स०] काली मिर्च । वेल्लज । मिर्च ।

वेल्लरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. काला विधारा । २. मालादूब ।

वेल्लहल—सञ्ज्ञा पु० [स०] लपट । दुगावारी । बदचलन ।

वेल्लि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] लता । वेल ।

वेल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पोई का साग । उपोदिका ।

वेल्लिकाख्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वेन का पेड़ । २. वेल के फल का गुदा ।

वेल्लित—वि० [स०] १. हिलता डुलता हुआ । कपित । २. कुटिल । वक्र । ३. गत । गया हुआ (को०) ।

वेल्लित—सञ्ज्ञा पु० १ कपन । कांपना । हिलना डुलना । २. गमन । गति । ३. लोटना । लुठन (को०) ।

वेल्लितक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साँप ।

वेल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेल्ल] वेल । लता ।

वेल्ला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वला] सट । किनारा । ८० 'वेल' । उ०—
धण जीती प्रव हारियउ, वेल्ला मिलण करेह ।—ढोला०,
दू० ५६० ।

वेल्लहार—सञ्ज्ञा पु० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार' । उ०—उत्थि
अपन वेवहार राँक ले राअहु चप्परि ।—कीर्ति०, पृ० ५० ।

वेल्लि—वि० [स० द्वी + अवि = द्वावि] दोनों ही । उ०—वेव
समत मिलअ तवे एक वेवि सहोअर सग ।—कीर्ति०,
पृ० २२ ।

वेशत—सञ्ज्ञा पु० [स० वेशन्त] १. छोटा तालाव । उ०—बह गया है
अश्रु बनकर कालकूट ज्वलत । जा रहा भरता दया के दूध
से वेशत ।—सामधेनी, पृ० ४८ । २. अग्नि । आग ।

वेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. कपड़े लते और गहने आदि पहनकर अग्ने
आपको सजाना । २ किसी के कपड़े लते आदि पहनने का ढग ।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना = किसी के ढग के कपड़े
लते पहनना । किसी के रूप, रंग और पहनावे आदि की
नकल करना । जैसे,—(नटों आदि का) राजा का वेश धारण
करना ।

३. पहनने के वस्त्र । पोशाक । जैसे,—अब आप अपना वेश
उतारिए ।

यौ०—वेशभूषा = पहनने के कपड़े आदि । पोशाक ।

४ कपड़े का बना हुआ घर । खेमा । तबू । ५. घर । मकान ।
६ वेश्या का घर । ७ दे० 'प्रवेश'—१, २, ४ । ८. छद्म
वेश । कपट रूप (को०) । ९ मजदूरी । भुति (को०) । १०. वेश्या
जन (को०) । ११. वेश्या को दिया जानेवाला द्रव्य (को०) । १२.
प्राचुर्य । अधिकता । अतिरेक (को०) ।

वेशक—सञ्ज्ञा पु० [स०] गृह । मकान (को०) ।

वेशक—वि० घुसने या प्रवेश करनेवाला (को०) ।

वेशकुल—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुलटा स्त्री । दुश्चरित्रा स्त्री । २ वेश्या ।
रंडी । वेश्याओं का समूह (को०) ।

वेशता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश का भाव या धर्म । वेशत्व ।

वेशत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेश का भाव या धर्म । वेशता ।

वेशदान—सञ्ज्ञा पु० [स०] सूर्यमुखी फूल (को०) ।

वेशघर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जिसने किसी दूसरे का वेश धारण
किया हो । वह जो भेस बदले हुए हो । छद्मवेशी । २ जैनों
का एक संप्रदाय ।

वेशधारी—सञ्ज्ञा पु० [स० वेशधारिन्] १ वह जिसने वेश धारण
किया हो । वेश धारण करनेवाला । २. वह तपस्वी न हो,
पर तपस्वियों का सा वेश धारण करता हो । ३ पुराणानुसार
एक सकर जाति । ४ अभिनेता । नट (को०) ।

वेशन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ प्रवेश करना । २ भवन । घर (को०) ।

वेशनद—सञ्ज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल की एक नदी का नाम ।

वेशनारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या (को०) ।

वेशनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ड्योड़ी । पौरी (को०) ।

वेशभगिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती (को०) ।

वेशभाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेश्या की प्रकृति या दशा । वेश्याओं का
सा हाव भाव (को०) ।

वेशयुवती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या । रंडी ।

वेषयोषित, वेशयोपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या (को०) ।

वेशर—सञ्ज्ञा पु० [स०] खच्चर (को०) ।

वेशवधू—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या । रंडी ।

वेशवनिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या । रंडी ।

वेशवान्—सञ्ज्ञा पु० [स० वेशवत्] १. वेश्या का कमाई पर जीवित
रहनेवाला व्यक्ति । २ चकला चलानेवाला (को०) ।

वेशवार—सञ्ज्ञा पु० [स०] नमक, मिच, वनिया आदि मसाले ।

वेश—वि० [स०] वेश्या का घर । रंडी का मकान ।

वेश—वि० [स०] वेश्या । रंडी ।

वेश—वि० [स०] वेश्या । रंडी (को०) ।

वेश—वि० [स०] १. अग्नि । आग ।

(को०) ।

वैशिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिल्पविद्या । हाथ की कार्रगरी ।

वैशिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] प्रवेशद्वार [को०] ।

वैशी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैशिन] १ वह जो वेश वारण किए हो ।
वेश धारण करनेवाला । २ वह जो प्रवेश करता हो । प्रवेश करनेवाला (को०) ।

वैशीजाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री नाम की लता ।

वेश्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्मन्] १ घर । मकान । उ०—राजा किसी नगर में अवस्थित राजप्रासाद (वेश्म) में रहता था ।—
आ० भा० १०६ । २ जन्मकुडली के लग्नचक्र का चौथा स्थान (को०) ।

वेश्मकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्मकर्मन्] मकान बनाने की विद्या । गृहनिर्माण [को०] ।

वेश्मकलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्मकलिङ्ग] चटक पत्तों । गौरया ।

वेश्मकुलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्मकुलिङ्ग] गौरैया पत्तों [को०] ।

वेश्मकूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चिचिडा । चिचिडा ।

वेश्मचटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की गौरैया [को०] ।

वेश्मधूम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप या पौधा [को०] ।

वेश्मनकुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] छल्लूदर ।

वेश्मपुरोधक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार दूसरे के मकान को तोड़कर या उसमें सेंव लगाकर चोरी करनेवाला ।

वेश्मभू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जो मकान बनाने के लिये उपयुक्त हो अथवा जिसपर मकान बनाया जाय ।

वेश्मवास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रहने का घर । मकान । २ शयनकक्ष । शयनगृह ।

वेश्मस्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रडी ।

वेश्मस्थूणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मकान का मुख्य स्तम्भ या खम्भा जिस पर छाजन रहता है [को०] ।

वेश्मात—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्मान्त] घर के अंदर का वह भाग जिसमें छियाँ रहती हैं । अतः पुर । जनानखाना ।

वेश्मादीपिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार मकान में आग लगानेवाला ।

वेश्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वेश्या के रहने का मकान । रडी का घर । २ आवास । निवास । मकान (को०) । ३ पडोस (को०) । ३ वेश्यावृत्ति (को०) ।

वेश्यकामिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रडी । पुश्चली । बदचलन औरत [को०] ।

वेश्यस्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०] ।

वेश्यागना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वेश्याङ्गना] कुलटा स्त्री । बदचलन औरत ।

वेश्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो नाचती गाने और घन लेकर लोगों के साथ सभोग करती हो । गाने और कसब कमानेवाली औरत । रडी ।

पर्या—जारस्त्री । गणिका । रूपाजीवा । क्षुद्रा । शूला । वारविलासिना । लज्जिका । कुमा । कामरेखा । पश्यागना । वारवधू । भोग्या । स्मरवोधिका ।

यौं—वश्यापण—वेश्या क साथ सभोग करने के बदले दी जाने वाला रकम । वेश्यापति = जार । वेश्यावृत्ति = घन लेकर पर पुरुषों से सभोग करना । वेश्यावेश्म = वेश्यालय ।

२ दुटुका । पाडा (को०) ।

वेश्यागमन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रडीवाजी [को०] ।

वेश्याघटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्या का दलाल । भंडुआ । वेश्याचार्य [को०] ।

वेश्याचार्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेश्याग्रा के साथ रहता और उन्हें परपुरुषों से मिलाता हो । राडया का दलाल । भंडुआ ।

वेश्याजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्याग्रा का समूह [को०] ।

वेश्याजन समाश्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्याभवन । रडिया का घर [को०] ।

वेश्यापण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रडी को भोग के निमित्त दिया जानेवाला घन [को०] ।

वेश्यापति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रडी का पति । जार [को०] ।

वेश्यापुत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रडी का बेटा । दोगला [को०] ।

वेश्यायत्ता—वि० [सं०] वेश्या की कमाई खानेवाला [को०] ।

वेश्यालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्याश्रम ।

वेश्यावास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्रृंगारहाट । वेश्याग्रा का निवास [को०] ।

वेश्यावृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या की रोजी । रडी की आजीविका । कसब कमाना [को०] ।

वेश्यावेश्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वेश्यावेश्मन्] रडी का घर । वेश्यालय [को०] ।

वेश्याश्रय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्यालय [को०] ।

वेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गदहा । खच्चर ।

वेष—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १. दे० 'वेश' । २. रंगमंच में पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेशरचना करते हैं । नेपथ्य । ३. वेश्या का घर । रडी का मकान । ४. कर्म । ५. कार्यपरिचालन । काम चलाना ।

वेषकार—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] किसी चीज को लपेटने का कपडा । वेष्टन । बेठन ।

वेषण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कासमर्द्द नाम का क्षुप । कसींदी । २. परिचर्या । सेवा ।

वेषणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वनियाँ ।

वेषदान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमुखी का फूल [को०] ।

वेषधर—वि० [सं०] दूसरे का रूप या वेश धरनेवाला [को०] ।

वेषधारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेशधारी' ।

वेपवार—सञ्ज्ञा पु० [स०] नमक, मिर्च, धनियाँ आदि मसाले ।
 वेपथ्री—वि० [स०] १ (वेदमन्त्र) जिसमें सुंदर और ललित वाक्य हो । २ मनोहर रूप में अलंकृत (को०) ।
 वेषिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चमेली ।
 वेषी—सञ्ज्ञा पु० [स० वेपिन्] वेशधारी । दे० 'वेशी' ।
 वेष्क—सञ्ज्ञा पु० [स०] वलिपशुओं का गला बाँधने की फँसरी या रस्ती (को०) ।
 वेष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास । २. गोद । ३. धूप का पेड़ । धूपसरल । ४. श्रीवेष्ट । गंधाविरोजा । ५. सुश्रुत के अनुसार मुँह में होनेवाला एक प्रकार का रोग । ६. शिरोवेष्टन । दे० 'वेष्टन' । ७. बाड़ा । बाड (को०) । ८. बधन । फँसरी (को०) । ९. दाँत का खोडर या गड्ढा (को०) । १०. आकाश (को०) ।
 वेष्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. गंधाविरोजा । श्रीवेष्ट । २. गोद । ३. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास । ४. सफेद कुम्हड़ा । पेठा । ५. कुम्हड़ा । ६. छाल । बत्कल । ७. उष्णीष । पगडी । ८. प्राचीर । परकोटा । चहारदीवारी । ८ व्याकरण में पूर्वापर में लगनेवाला शब्द । जैसे, अथ, इति (को०) ।
 वेष्टक^२—वि० चारों ओर से ढकने या आवृत करनेवाला । वेष्टन करनेवाला ।
 वेष्टकापथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन शिवस्थान का नाम ।
 वेष्टन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय । वेठन । २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव । ३. मुकुट । ४. उष्णीष । पगडी । ५. गुग्गुलु । गुग्गुल । ६. कान का छेद । ७. मेखला । काची । कटिवध (को०) । ८. धाव आदि बाँधने की पट्टी (को०) । ९. नृत्य की एक विशेष मुद्रा (को०) । १०. ग्रहण करना । अधिकार में रखना (को०) । ११. विस्तृत । विस्तार (को०) । १२. एक प्रकार का अस्त्र । १३. एक नृत्यमुद्रा (को०) । १४. यज्ञ-यूप को वेष्टित करनेवाला बधन (को०) । १५. चहारदीवारी, घेरा (को०) ।
 वेष्टनक—सञ्ज्ञा पु० [स०] स्त्रीप्रसंग करने का एक प्रकार । एक तरह का रत्तिवध ।
 वेष्टनवेष्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार रत्तिवध ।
 वेष्टनीय—वि० [स०] घेरने लायक । लपेटने योग्य (को०) ।
 वेष्टवंश—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाँस जिसे वेठर बाँस कहते हैं । रघ्वंश ।
 वेष्टव्य—वि० [स०] वेष्टन करने योग्य । वेठन आदि से लपेटने लायक ।
 वेष्टसार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ श्रीवेष्ट । गंधाविरोजा । २. धूप का पेड़ । सरल काण्ड । धूपसरल ।
 वेष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हरे । हरीतकी ।

वेष्टित^१—वि० [स०] १. नदी या परकोटे आदि से चारों ओर में घिरा हुआ । २. कपड़े आदि से लपेटा हुआ । ३. रुका हुआ । रुद्ध ।
 वेष्टित^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. नृत्य की एक मुद्रा । २. घेरना । लपेटना । ३. एक रत्तिवध । ४. पहाड़ी (को०) ।
 वेष्टघ—वि० [स०] दे० 'वेष्टनीय' (को०) ।
 वेष्टप—सञ्ज्ञा पु० [स०] पानी । जल (को०) ।
 वेष्ट्य^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ परिश्रम । २. पगडी । ३. पानी । ४. कर्म । कार्य । ५. पट्टी (को०) ।
 वेष्ट्य^२—वि० नट या अभिनेता जो वेश बदलनेवाला हो (को०) ।
 वेसन—सञ्ज्ञा पु० [स०] मटर, चन आदि की दाल पीसकर तैयार किया हुआ आटा । बेसन ।
 वेसर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. गदहा । २. खच्चर । अश्वतर (को०) ।
 वेसवा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या' । उ०—साध सत क उपाध रहत वेसवा के हाथ, बड़े कुटिल हैं कुत्त चले पथ ना निहार क ।—सत तुरसी०, पृ० ३३६ ।
 वेसवार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. पीसा हुआ जीरा, मिर्च लोंग आदि मसाला । २. एक प्रकार का पकाया हुआ मांस ।
 विशेष—पहले हड्डियाँ आदि अलग करके खाली मांस पीस लेते हैं और तब गुड़, घी, पीपल, मिर्च आदि मिलाकर उसे पकाते हैं । यही पका हुआ मांस वेसवार कहलाता है ।
 वेसा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या' । उ०—ज गुणमंता अलहना गौरव लहइ भुग्नग । वेसा मादर धुम्र वसइ धुसाह रुम अन्नग ।—कीर्ति० पृ० ३४ ।
 वेसास^१—सञ्ज्ञा पु० [स० विश्वास] दे० 'विश्वास' । उ०—मइ धणी थार मिल्हीय आस, मइला राजा थारउ कासउ हो वसास ।—वी० रासो, पृ० ३७ ।
 वेस्ट—सञ्ज्ञा पु० [अ०] पश्चिम दिशा ।
 वेस्टकोट—सञ्ज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार की अंगरेजी कुरती या फतुही जिसमें बाहे नही हाती और कमीज के उपर तथा कोट के नीचे पहनी जाती है ।
 वेस्म^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वेश्म] दे० 'वेश्म' ।—नद० ग्र०, पृ० १०८ ।
 वेस्या^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या' । उ०—जा वह वेस्या के घर रहत है ।—दो सो वावन०, भा० १, पृ० ३२६ ।
 वेस्वा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या' । उ०—वेस्वा तजा सिंगार सिद्ध का गइ सिद्धाइ । रागी भूला राग जननि सुत दई विहाई ।—पलद्म०, पृ० १०४ ।
 वेह^१—सञ्ज्ञा पु० [स० वेवत्, प्रा० वेह] विधाता । ब्रह्मा । उ०—(क) जारा रजपूता, गुया, बारत दाधी वह ।—वांका० ग्र०, भाग १, पृ० ४ । (ख) सादूली साचा गुणा वेह किया वनराय ।—वांकी० ग्र०, भा० १, पृ० १५ ।
 वेहत्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. वांफ गाय । बध्या गौ । २. वह गाय जिसका गर्भ असमय में गिर गया हो (को०) ।

वहनडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० वहिन + डी (प्रत्य०)] दे० 'वहन' । उ०—
रहि रहि वेहनडी । वच न तू रोई ।—वी० रासो, पृ० ६४ ।
वेहना—सञ्ज्ञा पुं० [० वयन (= वुनना)] दे० 'वेहना' ।—में अनि
नीच जाति कर वेहना, का कहूँ वृत्ति न मना ।—पट०, पृ०
२०७ ।

वेहल—सञ्ज्ञा पुं० [व्य०] चारण । उ०—वर्ग वेहल वरराज,
दाठा जिण जिण देस ।—वाकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८४ ।

वेहला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वेला, प्रा०, गुज० और पं० राज० वेहला]
वखत । समय । उ०—सभार्यो आवे रे वाहला, वेहना एहो
जोई ठहै । साथी जी साथे थई ते, पेरी तीरे तहँ ।—दादू,
पृ० ५२२ ।

वेहानस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] आत्महनन । जैन मतानुसार एक प्रकार की
आत्महत्या [को०] ।

वेहार—सञ्ज्ञा पुं० [म०] बिहार प्रदेश का एक नाम [को०] ।

वैकि—सञ्ज्ञा पुं० [स० वङ्कि] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वैत—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० व्योत, वेवत] दे० 'व्यात' । उ०—वैत करं
नह और वचाहँ । मार सुना मिरजा नू माहँ ।—रा० उ०,
पृ० २७८ ।

वैद—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैन्द] एक जाति का नाम । निपाद [को०] ।

वैदव—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैन्दव] विदु का पुत्र [को०] ।

वैदवि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वैन्दावि] प्राचीन काल का एक जाति का नाम ।
इस जाति के लोग बहुत युद्धप्रिय होते थे ।

वैद्य—वि० [स० वैन्ध्य] १. विध्य प्रात का । २. विध्य पवत का ।

वैशतिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैशतिका] जिमका मूल्य बीस हो ।
जा बीस म क्रय किया जाय । बीस में क्रीत [को०] ।

वै०^१—अव्य० [स०] निश्चयसूचक शब्द या चिह्न । उ०—अदडमान
दीन, गव दडमान भेद वै ।—केशव (शब्द०) ।

वै^२—सर्व० [हिं० वह] वह हा । उसने । उ०—वै सब कीन्ह जहाँ
लगि काई ।—जायसी ग्र०, पृ० ३ ।

वै०^३—सञ्ज्ञा पुं० [म० पति, प्रा० वड] स्वामी । अधिपति । पति

वैकक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैकक] एक पहाड [को०] ।

वैककत—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैककत] दे० 'वककत' ।

वैककत—वि० जा विककत का लकडा आदि स बना हो । विककत का ।

वैकक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह हार या माला जो एक थार कंधे पर
और दूसरी थार हाथ का नाचे रहे । जनेऊ की तरह पहना
जानवाला हार या माला । २ इस प्रकार माला पहनने का ढंग ।
३ उत्तरीय । दुपट्टा [को०] ।

वैकक्षक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह हार जो जनेऊ की तरह पहना गया
हो । दे० 'वकक्ष' [को०] ।

वैकक्षिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैकक्षक' [को०] ।

वैकक्षकी—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैकक्षक' [स०] ।

वैकटक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] रत्नपरीक्षक । जीहरी ।

वैकटिक—वि० विकट सबया । विकट का ।

वैकट्य—सञ्ज्ञा पुं० [म०] निकट होने का भाव या धर्म । विकटता ।
भीषणता । विशालता ।

वैकतिक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वह जो रत्नों की परीक्षा करता हो ।
रत्नपरीक्षक । जीहरी ।

वैकथिक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वह जो अपने नवय में बहुत बढाकर बातें
कहा करता हो । शेवावाज । साटनेवाला ।

वैकरज—सञ्ज्ञा पुं० [म० वैक-रज] मरुत जाति का एक प्रकार का
साँप । ऐसा साँप जो फनवाले और गिना फनवाले साँपों के
योग में उत्पन्न हुआ हो ।

वैकर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वास्य मुनि का एक नाम । २ एक
प्राचीन जनपद का नाम जिसका उत्पत्त्य वेदों में है ।

वैकर्णयिन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो वैकर्ण या वात्स्य मुनि के वंश
में उत्पन्न हुआ हो ।

वैकर्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वनिपशु के शरीर का भगविशेष । २
२ वनिपशु का चय करनेवाला । ३. यज्ञ में अव्यय का
महायक । उ०—अव्यय के तीन छोटे महायक और होते थे—
यमिना, वैकर्त और जमानाव्यय ।—हिदु० सभ्यता, पृ०
११८ ।

वैकर्तन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ सून के एक पुत्र का नाम । २ कर्ण
का एक नाम । ३. सुग्राव का एक पूर्वज का नाम । ४ वह जो
सूर्यवशी हो ।

वैकर्तन^२—वि० सूर्य सत्रयी । सूर्य का ।

वैकर्तनकुल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सूर्य का वंश या कुल [को०] ।

वैकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विकर्म या अकर्म का भाव । दुष्टत्व ।

वैकल्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विकल्प का भाव । मशय । सदिग्धता ।
अनिश्चय । अममजस ।

वैकल्पिक—वि० [म०] १ जा किसी एक पक्ष में हो । एकांगी । २.
जिसमें किसी प्रकार का सदेह हो । सदिग्ध । अनिश्चित ।
अनर्थात् । ३ जा अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके ।
जा चुना जा सके । ऐच्छिक । ४. जिसका विकल्प हो ।

वैकल्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विकल होने का भाव । विकलता ।
धवराहट । २. कातरता । ३. टेढ़ापन । ४ अगहीन होने
का भाव । ५ न्यूनता । कमी । ६. अभाव । न होना ।
७ अक्षमता । शाक्तीहीनता [को०] । ८ उत्तेजना [को०] ।

वैकल्य^२—वि० अधुरा । अप्रण ।

वैकायन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन गात्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

वैकारिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैकारिकी] १. जिसमें किसी प्रकार
का विकार हुआ हो । विगडा हुआ । विदूत । २ विकार
सबधी [को०] । ३ परिवर्तनशाल [को०] । ४. सात्विक [को०] ।

वैकारिक—सञ्ज्ञा पुं० विकार । विगडा ।

वैकारिककाल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गर्भस्थ ब्रूण के बनने में या पूरा होने
में लगनेवाला काल [को०] ।

वैकारिक बंध—संज्ञा पुं० [म० वैकारिक बन्ध] माख्य दर्शन के अनुसार तीन प्रकार के बंधनों में से एक (को०)।

वैकार्य—संज्ञा पुं० [म०] १. विकार का भाव या धर्म। विकार। २. परिवर्तनशीलता।

वैकार्य—वि० जिसमें विकार हो सकता या होता हो। विकार के योग्य।

वैकाल—संज्ञा पुं० [म०; तुल० वग० विकाल] अपराह्न काल। दोपहर के बाद का काल (को०)।

वैकालिक—वि० [सं०] १. जो अपने उपयुक्त समय पर न होकर असमय में उत्पन्न हो। २. अपराह्न, सबंधी या अपराह्न काल में घटित होनेवाला।

वैकालीन—वि० [सं०] दे० 'वैकालिक' (को०)।

वैकिकट—संज्ञा पुं० [म० वैकिङ्कट] मीत। काल। मृत्यु। विकिरण (को०)।

वैकिर—वि० [सं०] क्षरित। चूषा हुआ। छना हुआ (को०)।

वैकिरवारि—संज्ञा पुं० [सं०] चुआकर या टपकाकर छाना हुआ जल आदि (को०)।

वैकुठ—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठ] १. विष्णु का एक नाम। २. पुराणानुसार विष्णु का धाम या स्थान। वह स्थान जहाँ भगवान् या विष्णु रहते हैं।

विशेष—पुराणानुसार यह वाम सत्यलोक से भी ऊपर है। यह धाम सबसे श्रेष्ठ माना गया है और कहा गया है कि जिन्हें विष्णु मोक्ष देते हैं, वे इसी धाम में निवास करते हैं। यहाँ रहनेवाले न तो बुढ़े होते हैं और न मरते हैं।

३. वैकुठ में रहनेवाले देवता। ४. स्वर्ग (व०)। ५. इद्र। ६. सफेद पत्तोवाली तुलसी। ७. अन्नक। सितार्जक (को०)। ८. ब्रह्मा के महीने का चौबीसवाँ दिन (को०)। ९. गीत में एक प्रकार का ताल (को०)।

वैकुठगति—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठगति] वैकुठ लोक की प्राप्ति (को०)।

वैकुठ चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठ चतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी (को०)।

वैकुठत्व—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठत्व] वैकुठ का भाव या धर्म।

वैकुठपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठपुरी] विष्णु नगरी (को०)।

वैकुठभुवन—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठभुवन] विष्णु लोक (को०)।

वैकुठलोक—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठलोक] विष्णु लोक (को०)।

वैकुंठीय—वि० [सं० वैकुण्ठीय] वैकुठ सबंधी। वैकुठ का।

वैकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. विकार। खराबी। २. बीभत्स रस। ३. बीभत्स रस का आलंबन। जैसे,—गूँ, गोष्ठ, हट्टी आदि। ४. विरूपता। विकृति (को०)। ५. अपशकुन या घनिष्ठमूचक घटना (को०)। ६. कपट (को०)। ७. उद्वेग (को०)। ८. अहंकार (को०)। ९. द्वेष। शत्रुता (को०)।

वैकृत—वि० [सं०] १. जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २. जो सहज में ठाँक न हो सके। दुसाध्य। ३. निम्न। विकारमय (को०)। ४. सात्त्विक (को०)। ५. अप्राकृतिक (को०)।

वैकृतज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो ऋतु के अनुसार स्वाभाविक न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो। उ०—इसके (घोताद क्रम के) विपरीत जो ज्वर हो उसको वैकृत ज्वर कहते हैं—माधव०, पृ० ३६।

विशेष—साधारणतः वर्षा ऋतु में वायु, शरद ऋतु में पित्त और वसंत ऋतु में कफ कुपित होता है। यदि वर्षा ऋतु में वायु के प्रकोप से ज्वर हो, तो वह वैकृत ज्वर कहा जायगा।

वैकृतविवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] कष्ट। पीडा। दुर्दशा (को०)।

वैकृतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैकृतिकी] १. नैमित्तिक। २. परिवर्तित (को०)। ३. विकृति सबंधी (को०)।

वैकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीभत्स रस। २. परिवर्तन। विकार। ६. अपकर्षण। अपकर्ष (को०)।

वैक्रम—वि० [सं०] विक्रम सबंधी। पराक्रम सबंधी (को०)।

वैक्रमीय—वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम सबंधी। जैसे,—वैक्रमीय सवत्।

वैक्रांत—संज्ञा पुं० [सं० वैक्रान्त] एक प्रकार की मणि जिसे चुनी कहते हैं।

वैक्रिय—वि० [सं०] १. जो विकने को हो। बेचा जाने योग्य। विक्री का। २. विकारजन्य। विकारी। परिवर्तनशील।

वैवलव—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकुलता। घबराहट। अस्तव्यस्तता। २. शोक। ३. न्यथा (को०)।

वैवलव्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैवलव' (को०)।

वैखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठ में उत्पन्न होनेवाले स्वर का एक विनिष्ट प्रकार। उच्च तथा गंभीर और बहुत स्पष्ट स्वर। वह वाणी या वाक् जिसमें स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ स्पष्ट सुनाई देनी हैं। व्याकरण दर्शन के अनुसार वाग् के चार भेदों (परा, पश्यनी, मव्यमा और वैखरी) में स्थूलतम श्रवणीय भेद। २. वक्तृत्वशक्ति। वाक्शक्ति। ३. वाग्देवी।

वैखान—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

वैखानस—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। २. प्राचीन ज्ञान के एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो प्रायः वन में रहते थे। ३. प्रजापति के नव एव लोम में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने वैखानस नामक धर्मग्रन्थ की रचना की थी। उ०—वैखानस धर्मग्रन्थ एव हिरण्यकेशिन् के धर्मग्रन्थ लगभग तीसरी ईस्वी सदी के हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४६। ४. वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा (को०)।

वैखानस—वि० वानप्रस्थ आश्रम सबंधी (को०)।

वैखानसि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गौतमवर्तक ऋषि का नाम।

वैखानसीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

वैखानसीयोपनिषद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् । दे० वैखान-
सीय स्त्री० ।

वैखारक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चरपरा और नमकीन स्वाद को० ।

वैखारक^२—वि० चरपरा और नमकीन को० ।

वैगधिक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैगन्धिका] गधक ।

वैगधिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वैगन्धिका] एक द्रूप का नाम को० ।

वैगनेट—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की हल्की वर्गी या घोडागाड़ी
जिसमें पीछे की ओर दाहिने बाएँ बैठने की लची जगह
होती है ।

वैगलेय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार भूगो का एक गण ।

वैगुण्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ गुणहीन होने का भाव । विगुणता ।
२ अपराध । दोष । उ०—धन्य, भरत बोले गद्गद हो, दूर
विकृति वैगुण्य हुआ । उम तपस्विनी मेरी माँ का आज पाप
भी पुण्य हुआ ।—साकेत पृ० ३८० । ३ नीचता । बाह्यात-
पन । ४ गुणों की भिन्नता को० । ५ अकुशलता को० ।

वैगुण^७—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैगुण्य] दे० 'वैगुण्य' । उ०—जो जिय
लोभ तो गुनी न कहिए । गुन सकर वैगुन वै रहिए ।—माधवा-
नल०, पृ० २१६ ।

वैग्रहिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विग्रह या शरीर सबधो । शरीर का ।

वैघटिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] रत्नपारखी । जौहरी को० ।

वैघसिक—वि० [स०] विघस अर्थात् जूठा खानेवाला को० ।

वैघात्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो घात करने के योग्य हो । मार डालने
लायक ।

वैचक्षण्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विचक्षण या निपुण होने का भाव ।
निपुणता । होशियारी ।

वैचित्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चित्त की आति । भ्रम । अन्यमनस्कता ।
दुःख । कष्ट ।

वैचित्र—सञ्ज्ञा पुं० [म०] विचित्रता । विलक्षणता । दे० 'वैचित्र' ।

वैचित्रवीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विचित्रवीर्य की सतान—१ धृतराष्ट्र ।
२ पांडु । ३ विदुर ।

वैचित्रवीर्यक—वि० [स०] विचित्रवीर्य का । विचित्रवीर्य सबधो को० ।

वैचित्र्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विचित्र होने का भाव । विचित्रता ।
विलक्षणता । २ विभिन्नता । भेद । फर्क । ३ सुंदरता ।
खूबसूरती । ४ शोक । दुःख । गम को० । ५ नैराश्य को० ।
६ आश्चर्य को० ।

वैचित्र्यवीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विचित्रवीर्य की सतान, धृतराष्ट्र, पांडु
और विदुर आदि ।

वैच्युत—सञ्ज्ञा पुं० [म०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वैच्युति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विच्युत होने का कार्य या भाव ।
विच्युति । पतन । गिरना ।

वैजनन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को सतान
उत्पन्न हो । प्रसवमास ।

वैजन्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विजन होने का भाव । विजनता । एकांत ।

वैजयत—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैजयन्त] १ इंद्र की पुरी का नाम । २
इंद्र । ३ धर्म । ४ अग्निमथ नामक वृक्ष । अरण्यो । ५ जैनो
के अनुसार एक लाक जो सातों स्वर्गों से भी ऊपर है । ६
स्कन्ध को० । ७ पर्वतविशेष को० । ८ इंद्र की पताका
को० । ९ पताका । झंडा को० । १० भारत द्वारा निर्मित
युद्ध में आक्रामक प्रकार विशेष के एक टैंक का नाम ।

वैजयतिक—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैजयन्तिक] वह जो पताका या झंडा
उठाता हो । झंडा उठानेवाला ।

वैजयतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वैजयन्तिका] दे० 'वैजयती' ।

वैजयती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वैजयन्ती] १ पताका । झंडा । २ जयती
नामक वृक्ष । ३ एक प्रकार की माला जो पाँच रंगों
की और घुटनों तक लटकती हुई होती थी । कहते हैं, यह
माला श्रीकृष्ण जो पहना करते थे । ४ चिह्न । लक्षण को० ।
५ विजयमाल को० । ६ अग्निमथ वृक्ष को० । ७ एक
कोश का नाम को० । ८ हार । माला को० ।

वैजयिक—वि० [स०] विजय सबधो । विजय का । २ विजय देने-
वाला । जिससे जय प्राप्त हो को० । ३ विजय का आभास
या सूचना देनेवाला को० ।

वैजयी—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैजयिन्] दे० 'विजयी' ।

वैजवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि जो एक वैदिक शाखा के
प्रवर्तक थे । पैजवन । वैजन ।

वैजात्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विजातीय होने का भाव । जातिवहि-
ष्कृति । २ विलक्षणता । अद्भुतता । ३ बदचलनी । लपटता ।
४ वर्ग या जातिगत भिन्नता । वर्णभेद । प्रकारभेद ।

वैजिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ आत्मा । २ हेतु । कारण ।

वैजिक^२—वि० १ बीजसंबंधी । बीज का । २ वीर्यसंबंधी । वीर्य का ।

वैज्ञानिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो ।
विज्ञान जाननेवाला । २ निपुण । दक्ष । होशियार ।

वैज्ञानिक^२—वि० विज्ञान सबधो । विज्ञान का । जैसे,—वैज्ञानिक
खोज ।

वैडाल—वि० [स०] विडाल का । विडाल सबधो को० ।

वैडालव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पाप और कुकर्मरत होते हुए भी ऊपर
से साधु बने रहना ।

वैडालव्रती—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैडालव्रतेन्] वह तपस्वी या साधु जो
वास्तव में पापी और कुकर्मी हो । दुष्ट और नीच धर्मध्वजी ।

वैदूर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैदूर्य' ।

वैदूर्यकांति—वि० [स० वैदूर्यकान्ति] वैदूर्य की तरह दीप्त । वैदूर्य के
समान कांतिवाला को० ।

वैदूर्यप्रभ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक नाग का नाम को० ।

वैदूर्यमणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैदूर्य नामक रत्नविशेष को० ।

वैदूर्यशिखर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम को० ।

वैष्ण^१—वि० [स०] वैष्णु संबंधी । वैष्ण का ।

वैष्ण^२—सञ्ज्ञा पुं० बाँस का कार्य करनेवाला। वंसोर या घरि-कार [को०]।

वैष्ण^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वचन, प्रा० वयण अण० एव राज० वैष्ण] दे० 'वचन'। उ०—ढोला, खीत्यौरी कहइ, सुणे कुहंगा वैष्ण।—ढोला०, दू० ४३८।

वैष्णव^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का फल। बाँस का चावल। २. बाँस का वह डडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३ वशी। वेणु। ४. वंसोरा। बाँस का काम करनेवाला (को०)। ५ वेणु नदी से प्राप्त सोना (को०)। ६ माहिष्य से उत्पन्न ब्राह्मणी का पुत्र। ७ पुराणानुसार कुशद्वीप का एक वर्ष (को०)।

वैष्णव—वि० १ वेणु सवधी। बाँस का। २. बाँस से बना हुआ (को०)। ३ बाँसुरी संबंधी (को०)।

वैष्णविक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेणु बजाता हो। वशी बजाने-वाला। वशीवादक।

वैष्णवी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वशीलोचन।

वैष्णवी^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैष्णविन्] १ वह जो वेणु बजाता हो। २ शिव का एक नाम।

वैष्णावत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धनुष [को०]।

वैष्णिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वीणा बजाता हो। वीनवादक। वीनकार। २. विष्णु सी गव। (को०)।

वैष्णुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेणु बजाने में चतुर हो। वशी बजानेवाला। २ हाथी का श्रकुस।

वैष्णुकीय—वि० [सं०] १ वेणु सवधी। वेणु का। २ वैष्णुक सवधी।

वैष्णोय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेद की एक शाखा का नाम।

वैष्ण्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा वेणु के पुत्र पृथु का एक नाम।

वैतडिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैतडिक] १ वह जो बहुत अधिक वितडा करता हो। तार्किक। तर्कप्रिय। हरेक बात में तर्क उपस्थित करनेवाला। २. तर्क का भगडा या बहम करनेवाला।

वैतडी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैतडिन्] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैतसिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो मास बेचता हो। मासिक। वृचड। कसाई। २ पक्षियों को फँसानेवाला। व्याध। वहेलिया (को०)। ३ व्याध का पेशा। पक्षियों को फँसाने का कार्य (को०)।

वैतत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विततता। फैलाव। विस्तार [को०]।

वैतथ्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विफल होने का भाव। विफलता। २ वितथ होने का भाव। श्रमत्यता।

वैतनिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। तन-खाह लेबर काम करनेवाला। कर्मचारी। नौकर। भृत्य। मजदूर।

हिं० श० ६-३५

वैतरण^१—वि० [सं०] १. नदी को पार करने का अभिलाषी। २. वैतरणी पार कराने का साधन [को०]।

वैतरण^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वितरण करने का भाव या क्रिया। उ०—सविधि हो वैतरण, सुकृत कारण करण।—अचर्ना, पृ० २६।

वैतरणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वैतरणी'।

वैतरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है।

विशेष—कहते हैं, यह नदी बहुत तेज बहती है, इसका जल बहुत ही गरम और बदबूदार है और उसमें हड्डियाँ, लहू तथा बाल आदि भरे हुए हैं। यह भी माना जाता है कि प्राणी को मरने पर पहले यह नदी पार करनी पड़ती है, जिसमें उसे बहुत कष्ट होता है। परंतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था में गोदान किया हो, तो वह उसी गौ की सहायता से सहज में इस नदी के पार उतर जाता है। पुराणों में लिखा है कि जब सती के वियोग में महादेव जी रोने लगे, तब उनके आँसुओं का प्रवाह देखकर देवता लोग बहुत डरे और उन्होंने शनि में प्रार्थना की कि तू इस प्रवाह को ग्रहण करके सोख लो। शनि ने उस धारा को ग्रहण करना चाहा, पर उसे सफलता नहीं हुई। अतः उसी धारा से यह वैतरणी नदी बनी। इसका विस्तार दो योजन माना गया है। पापियों को यह नदी पार करने में बहुत कष्ट होता है।

२ उडीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है।

वैतस^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष की मूर्च्छा। लिंग। २. अमृतवैत। ३. वैत की बनी वस्तु। ४. वैत को टोकरी (को०)।

वैतस^२—वि० १. वैत सवधी। वैत जैमा [को०]।

वैतसीवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैत की तरह फुक जाने की आदत। नम्रता की प्रवृत्ति [को०]।

वैतसेन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा पुरुरवा का एक नाम जो वीतसेन के पुत्र थे।

वैतस्त—वि० [सं०] वितस्ता नदी से सवधित या प्राप्त [को०]।

वैतस्तिक—वि० [सं०] वितस्ति परिमित (शर)। (वाण) जो एक वित्त लवा हो [को०]।

वैतस्त्य—वि० [सं०] वितस्ता नदी संवधी। वितस्ता से मिला हुआ [को०]।

वैतहव्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आर्यों का एक प्रधान समूह जो वीतिहव्य के गोत्र का था। उ०—प्रधान आर्य समूहों में ये—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य, विदर्भ।—हिंदु० सम्यता, पृ० ७६।

वैताढ्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

वैतान^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चेमा। शिविर। समूह। तब्र। २. यज्ञ की एक विशेष विधि। ३. यज्ञीय हवि। यज्ञ में प्रयुक्त हवि [को०]।

वैतान^२—वि० [वि० वी० वैतानी] १ शुद्ध । पवित्र । पुनीत । २ यज्ञ-
सवधी । यज्ञ का । यज्ञीय [को०] ।

वैतानिक^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह हवन या यज्ञ आदि जो श्रौत
विधानों के अनुसार हो । २ वह अग्नि जिसमें अग्निहोत्र
आदि कृत्य किए जायें ।

वैतानिक^२—वि० दे० 'वैतान' [को०] ।

वैतानिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'वैतान' [को०] ।

वैता-य—सञ्ज्ञा पु० [स०] निर्वेद [को०] ।

वैताल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] स्तुतिपाठक । वैतालिक ।

वैताल^२—वि० वैताल सवधी । वैताल का ।

वैतालकि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. एक प्राचीन आचार्य का नाम जो
ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक थे ।

वैतालरस—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस ।

विशेष—यह रस गन्धक, मिर्च और हस्ताल आदि के योग से
बनता है और सन्निपातिक ज्वर तथा मूर्च्छा आदि में उपयोगी
माना जाता है ।

वैतालिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ प्राचीन काल का वह स्तुतिपाठक जो
प्रातः काल राजाओं की उनकी स्तुति करके जगाया करता था ।
स्तुतिपाठक । उ०—वैतालिक विहग भाभी के, सप्रति ध्यान-
लग्न से हैं ।—पंचवटी, पृ० ६ । २ चौंसठ कलाओं में से
किसी एक में प्रवीणता (को०) । ३. बाजीगर (को०) । ४ वह
जो गाने में ताल का ध्यान न रखता हो । विताल गानेवाला ।
५ वैताल का उपासक । वैताल को पूजनेवाला व्यक्ति [को०] ।

वैतालिकव्रत—सञ्ज्ञा पु० [स०] स्तुतिपाठक की क्रिया या कार्य । वैता-
लिक का काम [को०] ।

वैताली—सञ्ज्ञा पु० [स० वैतालिन] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।

वैतालीय^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके पहले तथा तीसरे
चरणों में चौदह और दूसरे तथा चौथे चरणों में सोलह
मात्राएँ होती हैं ।

वैतालीय^२—वि० वैताल सवधी । वैताल का ।

वैतुष्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] तुषारहित करना । भूखी निकालना [को०] ।

वैतृष्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ तृष्णा से रहित होने का भाव । तृष्णा का
शमन । तृष्णाशान्ति । २ आकांक्षाओं, इच्छाओं में मुक्ति ।
निर्वेद (को०) ।

वैत्तपाल्य—वि० [स०] १ वित्तपाल सवधी । २. कुवेरसवधी [को०] ।

वैत्रक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैत्रकी] वैत का । वैत सवधी [को०] ।

वैत्रकीय—वि० [स०] वैत का । वैत्रनिमित्त । वैत सवधी [को०] ।

वैत्रासुर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक राक्षस । दे० 'वैत्रासुर' [को०] ।

वैदभ—सञ्ज्ञा पु० [स० वैदभ] शिव का एक नाम ।

वैद^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वैदी] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम
जो विदु नामक ऋषि के पुत्र थे । २ विद्वान् पुरुष (को०) ।

वैद^२—वि० विद्वान् या पंडित सवधी ।

वैद^३—सञ्ज्ञा पु० [स० वैद्य, प्रा०, वैद] दे० 'वैद्य' ।

वैदक—सञ्ज्ञा पु० [स० वैद्यक] दे० 'वैद्यक' ।

वैदग्ध्य—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव ।
पांडित्य । विद्वत्ता । २ कार्यकुशलता । पटुता । ३ चतुरता ।
धूर्तता । चात्तका । ४ रमिकता । ५. शोभा । सौंदर्य । ६
हावभाव । ७ प्रत्युत्पन्नमति-त्व । प्रतिभा (को०) ।

वैदग्धी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ चतुरता । २ प्रवीणता । ३ सुंदरता ।
४ प्रत्युत्पन्न मति-त्व । ५ रम्यता । ६ विद्वत्ता [को०] ।

वैदग्ध्य—सञ्ज्ञा पु० [म०] विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव ।
पांडित्य । विद्वत्ता । २ दे० 'वैदग्ध' ।

वैदत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जा किमा विषय का अच्छा ज्ञाता हो ।
जानकार ।

वैदनृत—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गाम ।

वैदर्भ^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक ।
२ दमयंती के पिता भीमनेन का एक नाम । ३ रुक्मिणी के
सिता भीष्मक का एक नाम । ४ वह जो बातचीत करने
में बहुत चतुर हो । ५ बातचीत करने की चतुराई ।
वाक्चतुरी । ६ एक रोग जिसमें मसूड़े फूट जाते हैं और
उसमें पीड़ा होती है ।

वैदर्भ^२—वि० १ जो विदर्भ देश में उत्पन्न हुआ हो । २ विदर्भ देश
का । ३ वाक्पटु । वार्ताकुशल (को०) ।

वैदर्भक^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो विदर्भ देश का निवासी हो ।

वैदर्भक^२—वि० विदर्भ देश का । विदर्भ से संबद्ध [को०] ।

वैदर्भी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ काव्य की एक रीति । वह रीति या शैली
जिसमें मधुर वरों द्वारा मधुर रचना होती है । कालिदास
वैदर्भी के उत्कृष्ट कवि माने जाते हैं ।

विशेष—वामन के मतानुसार जिस काव्य रीति में श्लेष, प्रसाद,
समता, माधुर्य, सौकर्य, श्रयस्वक्ति, उदारता, भोजस, काति
और समाधि आदि दस शब्दगुण रहते हैं वह काव्य रीति
वैदर्भी कहो गई है । यह सबसे अच्छी समझी जाती है ।

२ अगस्त्य ऋषि की स्त्री का एक नाम । ३. दमयंती । ४.
रुक्मिणी । ५ विदर्भ देश की राजकुमारी (को०) । ६ विदर्भ
देश की राजनगरी । कुडिनपुर (को०) ।

वैदल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मिट्टी का वह पात्र जिसमें निखमगे मोल
मांगते हैं । खप्पर । २ एक प्रकार की पीठी । ३ बेंत
या बांस की बनी डलिया या आसन (को०) । ४ एक विपैला
कीट (को०) । ५ द्विदल अन्न । दाल (को०) ।

वैदल^२—वि० १ बेंत का अथवा बांस का बना हुआ (को०) ।

वैदांतिक—वि० [स० वैदान्तिक] वेदान का शास्त्र । वेदांती (को०) ।

वैदारिक—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक प्रकार का मन्निपात ज्वर ।

विशेष—इसमें वायु का प्रकोप कम, वित्त का मध्यम और कफ
का अधिक होता है । रोगी को हड्डियों और कमर में पीड़ा
होती है, उसे भ्रम, क्लान्ति, श्वास, खांस तथा हिचकी होती
है, और सारा शरीर सुन्न हो जाता है । ऐसा मन्निपात जल्दी
अच्छा नहीं होता ।

वैदिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदों में बतलाए हुए कर्मकांड का अनुष्ठान करता हो। वेद में कहे हुए कृत्यों को करनेवाला।
२. वह जो वेदों आदि का अच्छा ज्ञाता हो। वेदों का पंडित।

वैदिक^२—वि० १ जो वेदों में कहा गया हो। वेदविहित। उ०—
करनवेव चूड़ाकरन, लौकिक वैदिक काज। गुरु आयम भूपति
करत, मंगल साज समाज।—तुलसी ग्र०, पृ० ८२। २ वेद-
संबंधी। वेद का। जैसे, वैदिक काल, ३ धर्मात्मा (को०)।
४ वेदज्ञ। वेदों का ज्ञाता (को०)। ५ पूत। शुद्ध।
पावत्र (को०)।

वैदिककर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैदिककर्मन्] वेदानुक्रम कर्म। वेदविहित
कर्म (को०)।

वैदिकपाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेदविद्या में अल्पज्ञ हो। वेद
का थोड़ा सा ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति (को०)।

वैदिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वनजामुन (को०)।

वैदिश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो विदिशा का निवासी हो।

वैदिश्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर का नाम जो विदिशा के
पास था (को०)।

वैदुरिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विदुर का नीतिसिद्धांत। विदुरनीति (को०)।

वैदुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैंत की जड़।

वैदुष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।

वैदुषी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विद्वत्ता। २. बुद्धिमत्ता (को०)।

वैदुष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विद्वत्ता। पांडित्य।

वैदूर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या
बहुमूल्य पत्थर जिसे 'लहसुनिया' कहते हैं। दे० 'लहसुनिया'।
दीर्घ खभे हैं बने वैदूर्य के, वज्रपटों में चिह्न कुलपुत्र सूर्य के।
—साकेत, पृ० १६।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार इस रत्न के अधिष्ठाता
देवता केतु माने गए हैं और कहा गया है कि जब केतु ग्रह
खराब या बिगड़ा हुआ हो, तो यह रत्न धारण करना चाहिए।
हमारे यहाँ इसको गणना महागत्नों में है। सुतार, घन,
अद्रच्छ, कलिक और व्यंग ये पाँच इसके गुण और कर्कर, कर्कश,
त्रास, कलक और देह ये पाँच इसके दोष कहे गए हैं। कुछ
लोगों का मत है कि यह रत्न विदूर पर्वत पर होता है, इसी
से वैदूर्य कहलाता है। वैद्यक के अनुसार यह अम्ल, उष्ण, कफ
तथा वायु का नाशक और गुल्म तथा शूल को शांत करनेवाला
है।

पर्या०—केतुरत्न। अभ्ररोह। विदूररत्न। विदूरज। खराव्जाकुर।

वैदेशिक^१—वि० विदेश संबंधी। विदेश का।

वैदेशिक^२—वह जो अन्य देश का रहनेवाला हो। अन्य देशवासी
व्यक्ति। उ०—प्राग्निषपुत्र, पदिकपुत्र, वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक,
वार्तिक, वक्ता, व्यसना, व्यावहारिक, विद्यामत।—वर्ण०,
पृ० १०।

यौ०—वैदेशिक नीति = विदेश संबंधी नीति। किसी राष्ट्र की वह
नीति जो अन्य राष्ट्रों अर्थात् विदेशों के साथ चरती जाती है।
उ०—उसे ठीक प्रकार से समझने के लिये हमें उसको वैदेशिक
नीति को मलो भाँति समझने का प्रयत्न करना चाहिए।
—आ० अ० रा० पृ० १०७।

वैदेश्य^१—वि० [सं०] 'वैदेशिक'।

वैदेश्य^२—सञ्ज्ञा पुं० विदेशी होना। अन्यदेशीय होने का भाव।

वैदेश्यसार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] (कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा प्रयुक्त शब्द)
विदेशी माल।

वैदेह^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ राजा निमि के पुत्र का नाम।

विशेष—कहते हैं, जब राजा निमि नि सतान मर गए, तब धर्म
का लोप हो जाने के भय से ऋषियों ने अरण्यों से मथकर इन्हें,
राज्य करने के लिये, उत्पन्न किया था।

२ वणिक्। सौदागर। ३ विदेह देश का नरेश (को०)। ४. अत-
पुर का पहरग्रा। रनिवास का प्रहरी (को०)। ५. प्राचीन काल
की एक वर्णसंकर जाति।

विशेष—इम जाति के जनो का काम अत पुर में पहरा देना था। मनु
के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति ब्राह्मणी माता और वैश्य
पिता से है।

वैदेह^२—वि० १ विदेह देश से संबंधित। विदेह देश का। २. स्निग्ध-
वर्ण और सुंदर आकृतिवाला (को०)।

वैदेहक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वणिक्। व्यापारी। २. वैदेह नामक एक
वर्णसंकर जाति। ३. विदेह देश का व्यक्ति। (को०)।

वैदेहक व्यजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैदेहकव्यञ्जन] कौटिल्य के अनुसार
वह जासूस जो व्यापारी के छद्म वेश में हो। व्यापारी के वेश
में गुप्तचर।

विशेष—ये गुप्तचर समाहर्ता के अधीन काम करते थे और व्यापा-
रियों में मिलकर उनकी काररवाइयों को सूचना दिया करते थे।

वैदेहिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैदेह'—२ और ३।

वैदेही—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदेहराज जनक की कन्या, मीता।
२. वैदेह जाति की स्त्री। ३. रोचना। ४. पीपल। पिप्पली।
५. हरिद्रा। हल्दी (को०)। ६. गाव (को०)। ७. वणिक् जाति
की स्त्री (को०)।

वैद्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पंडित। विद्वान्। २. वह जो आयुर्वेद का
ज्ञाता हो और उसके अनुसार रागियों की चिकित्सा आदि
करता हो। भिषक्। चिकित्सक। ३. वामक वृक्ष। अशूमा। ४.
एक जाति जो प्रायः वगल में पाई जाता है। इम जाति क
लाग अपने आपको 'अवण्ठमतान' कहते हैं। दे० 'अवण्ठ-२'।
५. एक जाति जिसका उत्पत्ति शूद्र पिता और वैश्य माता से
कही गई है (को०)। ६. एक ऋषि (को०)।

वैद्य^२—वि० [वि० स्त्री० वैद्यी] १ वेद संबंधी। वेद का। २. आयुर्वेद
संबंधी (को०)।

वैद्यक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद। विशेष दे० 'आयुर्वेद'। २ वैद्य। चिकित्सक (को०)।

वैद्यक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] चिकित्सा कर्म। वैदगी। डाक्टरी। वैद्य का कर्म (को०)।

वैद्यनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो सयाल परगने के अंतर्गत है। वहाँ इसी नाम का शिव का एक प्रसिद्ध मंदिर है। २ महादेव। शिव (को०)। ३ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ४ एक भैरव (को०)।

वैद्यवधु—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैद्यवन्धु] १ आरग्वध नामक वृक्ष। अमल-तास। २ वैद्य का भाई (को०)।

वैद्यमाता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं० वैद्यमातृ] १ वासक वृक्ष। अडूसा। २. वैद्य की माता (को०)।

वैद्यमानी—वि० [सं० वैद्यमानिन्] ज्ञाता न होते हुए भी अपने को वैद्य माननेवाला (को०)।

वैद्यराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अच्छा वैद्य हो। वैद्यों में श्रेष्ठ। २ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ३. शार्ङ्गधर के पिता का नाम।

वैद्यराट्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैद्यराज्] दे० 'वैद्यराज' (को०)।

वैद्यविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] आयुर्वेद। चिकित्साशास्त्र (को०)।

वैद्यशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यविद्या। आयुर्वेद (को०)।

वैद्यसिंही—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] वासक वृक्ष। अडूसा।

वैद्या—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] १ काकोली। २ वैद्य की पत्नी (को०)। ३ वैद्य का कर्म करनेवाली स्त्री (को०)।

वैद्याघर—वि० [सं०] विद्याघर नामक देवयोनि सबधी। विद्याघर का। विद्याघर सब धी (को०)।

वैद्यानि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषिपुत्र का नाम।

वैद्यावृत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फुटकर। खुदरा। थोक का उल्टा। जैसे—वैद्यावृत्य विक्रय।

वैद्युत्—वि० [सं०] [वि० स्त्री वैद्युती] विद्युत् सबधी। बिजली का। वैद्युत्—सञ्ज्ञा पुं० १. विद्युत् का देवता। २ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ३ वपुष्मान् का पुत्र (को०)। ४. वज्रग्नि। बिजली की अग्नि (को०)।

वैद्युत्गिरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वैद्योत्—वि० [सं०] क्रोधाविष्ट। क्रोध से भरा हुआ (को०)।

वैद्रुम—वि० [सं०] विद्रुम सबधी। मूँगे का।

वैद्यः—वि० [सं०] १ जो विधि के अनुसार हो। कायदे कानून के मुताबिक। कानून या विधिसमत्। जैसे—वैद्य आदोलन, वैद्य अधिकार। २ उचित। जायज। ठीक।

वैधर्मिक—वि० [सं०] धर्मविरुद्ध। विधर्म या विधर्मियों का। विधर्म सबधी (को०)।

वैधर्म्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विधर्म होने का भाव। २. वह जो

अपने धर्म के अतिरिक्त अन्योन्य धर्मों के सिद्धांतों का भी अच्छा ज्ञाता हो। ३ नास्तिकता। ४ असमानता। भिन्नता (को०)। ५ गुण, धर्म या कर्तव्य की भिन्नता (को०)। ६ वैपरीत्य। विपरीतता (को०)। ७ अवैधता (को०)।

वैधवः—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विधु अर्थात् चंद्रमा के पुत्र, वुध।

वैधवः—वि० विधु सबधी। चंद्रमा सबधी (को०)।

वैधवेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो विधवा के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। विधवा का पुत्र।

वैधव्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँडापा।

यौ०—वैधव्यलक्षण = विधवा होने का लक्षण या ग्रहयोग। वैधव्य-लक्षणोपेता = वह कन्या जिसमें विधवा हो जाने के लक्षण हो। ज्योतिष के अनुसार ऐसी कन्या विवाह के अयोग्य समझी जाती है। वैधव्यवर्णो = विधवा वा सौभाग्यहीना स्त्री की वर्णो।

वैधसः—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजा हरिश्चंद्र का एक नाम जो इक्ष्वाकुवंशी राजा वैधस के पुत्र थे।

वैधसः—वि० १ वेधा या ब्रह्मा द्वारा निर्मित। २ भाग्य या विधि द्वारा परिचालित (को०)।

वैधातकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैधात्र'।

वैधात्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सनत्कुमार, जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।

वैधात्री—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] ब्राह्मी नाम की जड़ी।

वैधानिक—वि० [सं०] १. विधान के अनुकूल। विधि के मुताबिक। २ विधान सबधी (को०)।

वैधिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री वैधिकी] विधिविहित। विधि के अनुकूल। विधिसम्मत (को०)।

वैधुरी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] १. भाग्य की प्रसन्नकूलता। विपत्ति (को०)।

वैधुर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विधुर होने का भाव। हताश या कातर हान का भाव। २. भ्रम। सदह। ३. कपित होने का भाव। ४ वियोग (को०)। ५ अनुपस्थिति। अविद्यमानता (को०)। ६ कष्ट। क्लेश। क्षाम (को०)।

वैधुमागनी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम जो शाल्व देश में थी।

वैधृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विधृति का पुत्र या सत्ता हो। २. ग्यारहवें मन्वन्तर के एक इंद्र का नाम। ३ एक अशुभ योग। वैधृति (को०)।

वैधृत् वाशिष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

वैधृति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में विष्कम्भ आदि सत्ताइस योगों में से एक योग जो अशुभ माना जाता है। इस योग में यात्रा या कोई शुभ कार्य करना वर्जित है। २ भागवत के अनुसार एक देवता, जो विधृति के पुत्र हैं।

वैधृत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ 'वैधृति'।

वैधेय—वि० [सं०] १. विधि सबधी। विधि का। २. नियमानुकूल। ३. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ।

वैद्यत—सज्ञा पु० [म०] यम के एक प्रतिहार का नाम ।
 वैत—सज्ञा पु० [स०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम ।
 वैत—वि० वेन राजा संबन्धी [को०] ।
 वैतक—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पात्र जिसमें धी रखा जाता था और जिसका व्यवहार यज्ञों में होता था ।
 वैतयेय—सज्ञा पु० [सं०] १ विनय की सतान । २ गरुड । उ०—
 वैतयेय छठे आकाश के वासी बताए गए हैं ।—प्रा० भा०
 प०, पृ० ८३ । ३ श्रृणु ।
 वैतयेयी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वैदिक शाखा का नाम ।
 वैतय—वि० [स०] जिसका स्वभाव विनीत हो ।
 वैतदी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम ।
 वैतभूत—सज्ञा पु० [म०] १. एक प्राचीन गोनप्रवर्तक ऋषि का नाम ।
 २ एक वैदिक शाखा का नाम ।
 वैतयिक—सज्ञा पु० [स०] १ विनय । प्रार्थना । २. वह जो शास्त्रों
 आदि का अध्ययन करता हो । ३ प्राचीन काल का एक
 प्रकार का रथ जिसका व्यवहार युद्ध में होता था । ४ शासन
 में नियम और अनुशासन की व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति ।
 नैतिकता का पालन करानेवाला । उ०—नियम और
 अनुशासन का अधिकारी वैतयिक कहलाता था ।—हिंदु०,
 सम्यता, पृ० १२७ ।
 वैतयिक—वि० विनय संबंधी । विनय का । शिष्टता या अनुशासन
 संबंधी ।
 वैतयिक रथ—सज्ञा पु० [स०] लड़ाई सिखाने के लिये बने हुए रथ ।
 वैतयिकवाद—सज्ञा पु० [स०] जन्ममत्त का विरोधी मतविशेष । उ०—
 इन विरुद्ध मतों को जैनो ने क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद
 और वैतयिकवाद कहा है ।—हिंदु० सम्यता, पृ० २२७ ।
 वैना—सज्ञा स्त्री० [स० वीणा] १ दे० 'वीणा' । २ दे० 'वेदा'
 या 'वेना' । उ०—सोस पाग वैना धरे, राजमंदिर पगु दीन ।
 —हि० क० का०, पृ० १६२ ।
 वैनायक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैनायकी] विनायक या गणेश
 संबंधी ।
 वैनायक—सज्ञा पु० भागवत के अनुसार भूतो का एक गण ।
 वैनायिक—वि० [स०] विनायक संबंधी ।
 वैनायिक—सज्ञा पु० १ वह जो बौद्ध धर्म का अनुयायी हो । बौद्ध ।
 २ बौद्ध संप्रदाय का एक दार्शनिक सिद्धांत [को०] ।
 वैनाशिक—सज्ञा पु० [स०] १. फलित ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से
 तेईसवाँ नक्षत्र । २. जन्मनक्षत्र से सातवा, दसवाँ और अठारहवाँ
 नक्षत्र । ये तीनों नक्षत्र अशुभ समझे जाते हैं और निधन-
 तारा कहलाते हैं । इन नक्षत्रों में यात्रा करना वर्जित है ।
 ३. बौद्ध । ४. दास । सेवक [को०] । ५ मकड़ी [को०] ।
 ६ ज्योतिषी [को०] । ७. बौद्ध संप्रदाय का दार्शनिक
 सिद्धांत [को०] ।
 वैनाशिक—वि० १. विनाश संबंधी । २. परतंत्र । पराधीन ।

वैनाशिकतंत्र—सज्ञा पु० [स० वैनाशिकतंत्र] बौद्ध दर्शन [को०] ।
 वैनाशिकसमय—सज्ञा पु० [म०] बौद्ध धर्म [को०] ।
 वैनीतक—सज्ञा पु० [सं०] ऐसी सवारी जिसे कई आत्मी मिलकर
 उठाते हो । जैसे—डोनी, पालको, तामजाम आदि । विनीतक ।
 वैनेय—सज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक शाखा का नाम । २. विनय या
 धर्म की शिक्षा प्राप्त करनेवाला छात्र [को०] ।
 वैन्य—सज्ञा पु० [स०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम ।
 वैपचमिक—सज्ञा पु० [स० वैपचमिक] वह व्यक्ति जो भविष्यकथन
 करता हो [को०] ।
 वैपथक—सज्ञा पु० [स०] विषय संबंधी [को०] ।
 वैपरीत्य—सज्ञा पु० [स०] विपरीत होने का भाव । विपरीतता ।
 असंगति ।
 यौ०—वैपरीत्य लज्जालु = एक प्रकार का लजाधुर । लजालू पोधा ।
 वैपश्चित—सज्ञा पु० [स०] तार्क्य नामक ऋषि का एक नाम जो
 विपश्चित ऋषि के वंशज थे ।
 वैपश्यत—सज्ञा पु० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम ।
 वैपादिक—वि० [स०] पैर क क्षण में व्ययित । विपादिका अर्थात्
 विवाई से पीड़ित [को०] ।
 वैपादिक—सज्ञा पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग [को०] ।
 वैपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] विपादिका नामक रोग ।
 वैपार—सज्ञा पु० [स० व्यापार] दे० 'व्यापार' ।
 वैपारी—सज्ञा पु० [स० व्यापारिन्] दे० 'व्यापारी' ।
 वैपित्र—सज्ञा पु० [स०] वे भाई बहन आदि जिनकी माता तो एक ही
 हो, पर पिता अलग अलग हो ।
 वैपुल्य—सज्ञा पु० [स०] १ विपुल होने का भाव । विपुलता ।
 आधिक्यता । २. विस्तृति । विशालता [को०] ।
 वैप्रतिसम—वि० [स०] जा समान न हो । असम । विषम [को०] ।
 वैप्रोताख्य—सज्ञा पु० [म०] एक प्रकार का नृत्य [को०] ।
 वैप्लव—सज्ञा पु० [स०] मावन का महीना [को०] ।
 वैफल्य—सज्ञा पु० [स०] १. विफल होने का भाव । विफलता ।
 नाकामयावा । २. निरयुक्तता । अनुपयोगिता [को०] ।
 वैवाघ—सज्ञा पु० [स०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का सिक्का ।
 २ वह अश्वत्थ वृक्ष जो खर के वृक्ष में स निकला हो ।
 वैवाघप्रयुक्त—वि० [स०] (वह वृक्ष) जिसके ऊपर पीपल का पेड़ उगा
 हो [को०] ।
 वैवुव—वि० [स०] देव संबंधी । विवुव संबंधी [को०] ।
 वैवोधिक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो रात के समय पहरा देना, घंटा
 बजाता और साए हुए लोगों को जगाता हो । २. पहरा ।
 पहरदार [को०] । ३. स्तुतिपाठक जो प्रातःकाल स्तुतिपाठ द्वारा
 राजा को जगाता था [को०] ।
 वैभंडि—सज्ञा पु० [स० वैभंडि] एक गानप्रवर्तक ऋषि का नाम जिन्हें
 विभांडि भी कहते हैं ।

वैभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ धनसंपत्ति। दौलत। विभव। ऐश्वर्य। २ महिमा। महत्त्व। बढप्पन। ३ सामर्थ्य। शक्ति। ताकत।
 वैभवशाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैभवशालिन्] वैभवयुक्त वह जिसके पास बहुत अधिक धन संपत्ति हो। विभववाला। मालदार।
 वैभविक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो कोई काम करने का अच्छा सामर्थ्य रखता हो। समर्थ।
 वैभाडकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वैभाण्डकि] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।
 वैभाजन—वि० [सं०] अनेक मार्गों में विभक्त। जो कई मार्गों में विभक्त हो [को०]।
 वैभाजिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो विभक्त करता हो [को०]।
 वैभाजित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विभाजन। कई भागों में कर देना। वांटना [को०]।
 वैभातिक—वि० [सं०] विभात या प्रभात सत्रधी। अरुणोदय सवधी। उष कालीन [को०]।
 वैभार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] राजगृह के पाम के एक पर्वत का नाम। इसे वैहार भी कहते थे।
 वैभावर—वि० [सं०] विभावरी सत्रधी। रात का। रात्रिसवधी [को०]।
 वैभाषिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैभाषिनी] १ विभाषा सवधी। वैकल्पिक। २ वैभाषिक नामक बौद्ध संप्रदाय के एक वर्ग का अनुगामी या तत्सवधी [को०]।
 वैभाषिक—सञ्ज्ञा पुं० बौद्धों के एक संप्रदाय का नाम।
 वैभाष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहत् भाष्य, किसी सूत्र, कारिका वा वचन की विस्तृत व्याख्या [को०]।
 वैभीत—वि० [सं०] बहेडा से बना हुआ। जिसमें बहेडे का योग हो। विभीतक से निर्मित [को०]।
 वैभीतक—वि० [सं०] दे० 'वैभीत' [को०]।
 वैभूतिक—वि० [सं०] १ विभूतिजन्य। विभूतिमत्। २ विभूतिसवधी। विभूति का।
 वैभोज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।
 विशेष—महाभारत के अनुसार द्रुह्य के वंशज वैभोज कहलाते थे। ये लोग सवारी आदि का व्यवहार करना नहीं जानते थे और न इन लोगों में कोई राजा हुआ करता था।
 वैभ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वंकुठ लोक। विष्णुधाम [को०]।
 वैभ्राज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का उद्यान या वाग। २ पुराणानुसार मेरु के पश्चिम में सुपाश्वर् पर्वत पर के एक जगल का नाम। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ४ एक लोक का नाम जो स्वर्ग माना जाता है।
 वैभ्राजक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का उद्यान। नदनवन [को०]।
 वैमत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक मत का अभाव। मतभेद। फूट। २ शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम। ३. नापसदगी। अरुचि [को०]।

वैमनस्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विमन या अन्यमनस्क होने का भाव। २ वैर। द्वेष। दुश्मनी। ३ बीमारी। अस्वस्थता [को०]।
 वैमल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विमल होने का भाव। मनराहित्य। स्वच्छता। विमलता। निर्मलता।
 वैमात्र—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैमात्रा] विमाता से उत्पन्न। सोतेला। जैसे—वैमात्र भाई।
 वैमात्र—सञ्ज्ञा पुं० सोतेला भाई [को०]।
 वैमात्रक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सोतेला भाई [को०]।
 वैमात्रा, वैमात्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सोतेली बहन [को०]।
 वैमात्रेय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। विमातृज। सोतेला।
 वैमात्रेयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सोतेली बहन [को०]।
 वैमानिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विमान पर चढ़कर अंतरिक्ष में विहार करता हो। २ वह जो आकाश में विहार करता हो। आकाशचारी। ३ वह जो उड़ सकता हो। उड्डयनशील। ४ जैनों के अनुसार वे जीव जो स्वर्गलोक में रहते हैं। ५ देवता [को०]।
 वैमानिक—वि० १. विमान द्वारा ले जाया जाता हुआ। विमानाढ। २ विमानोत्पन्न। विमानजन्य। ३ वायुयान का चालक। विमान चलानेवाला। ४. विमान सवधी [को०]।
 वैमानिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] देवागना [को०]।
 वैमित्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
 वैमुक्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति। विमुक्ति। मोक्ष [को०]।
 वैमुक्त—वि० मुक्त [को०]।
 वैमुर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विमुख होने का भाव। विमुखता। २ विपरीतता। प्रतिकूलता। ३ अप्रसन्नता। नाराजगी। ४ विमुख होना। पलायन। भागना।
 वैमूढक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक में वर्णित एक प्रकार का नृत्य। वह नृत्य जिसमें पुरुष नारी वेष में नाचते हैं [को०]।
 वैमूल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मूल्यों का अंतर [को०]।
 वैमृध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] युद्ध करनेवाला, इद्र।
 वैमृध—वि० इद्र का दिया हुआ। इद्र को अर्पित [को०]।
 वैमृध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ युद्धकर्ता—इद्र। वैमृध। २. वह जो युद्ध विद्या में बहुत निपुण हो। युद्धकुशल।
 वैमेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विनिमय। परिवर्तन। बदला।
 वैम्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।
 वैमुख—वि० [सं०] वंमुख्य। दे० 'विमुख'। उ०—प्रभु वैमुख जिएरों रिपु प्राणी। ताह न कदै सतावैं। रघु० ६०, पृ० २६।
 वैयक्तिक—वि० [सं०] व्यक्तिगत। निज। स्वगत। स्वकीय। उ०—हिंदी कविता छायावाद के रूप में हान युग के वैयक्तिक अनुभवों, ऊर्ध्वमुखा विकास की प्रवृत्तियों, ऐहिक जीवन को आकांक्षा

संबंधी स्वप्नो आदि को अभिव्यक्त करने लगी।—हि० आ० प्र०, पृ० १३३।

वैयक्तिक संपत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० वैयक्तिक सम्पत्ति] निजी जायदाद। वह धन जिसे व्यापार आदि के द्वारा कोई व्यक्ति एकत्र करता है और उसपर उसके अतिरिक्त अन्य किसी का कोई अधिकार नहीं होता। उ०—आसिर वैयक्तिक संपत्ति के स्वामी कामचोर शासको ने कानून भी तो अपने फायदे के लिये बनाए हैं।—मा० सं०, पृ० २३२।

वैयग्र—सज्ञा पुं० [सं०] १. व्यग्रता। बेकली। तन्मय होना। २. तल्लीनता। अनन्यभक्ति [को०]।

वैयग्र्य—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयग्र' [को०]।

वैयधिकरण्य—सज्ञा पुं० [मं०] व्यधिकरण का भाव। व्यधिकरणता। समानाधिकरणता का वैपरीय। अनेक स्थानों में होने का भाव। [को०]।

वैयमक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वैयर्थ्य—सज्ञा पुं० [सं०] व्यर्थ होने का भाव। निरर्थकता। व्यर्थता। अनुत्पादकता। निष्फलता।

वैयवहारिक—वि० [सं०] व्यावहारिक [को०]।

वैयशन—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैयश्व—सज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि का नाम जो विश्वमनस् के पिता थे।

वैयसन—वि० [सं०] व्यसन से उत्पन्न। व्यसनजन्य। व्यसन का।

वैया—प्रत्य० [हि० ?] एक प्रत्यय जो क्रिया के अंत में लगकर 'वाला' अर्थ सूचित करता है, जैसे—करवैया, चलवैया, पढ़वैया आदि।

वैयाकरण—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैयाकरण—वि० व्याकरण संबंधी। व्याकरण का।

यौ०—वैयाकरण खसूचि = वह वैयाकरण जो सूई से वायु में छेद करना चाहता है। व्याकरण का अंतर्ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण पाश = व्याकरण का साधारण ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण भार्य = वह व्यक्ति जिसकी गृहिणी व्याकरण की पंडिता हो।

वैयाख्य—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्याख्या'।

वैयाख्य—वि० व्याख्यायुक्त। जिसकी व्याख्या की गई हो। व्याख्या संबंधी। व्याख्याजन्य [को०]।

वैयाघ्र—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का गध जिसपर शेर या चीते की छाल मढ़ी होती थी। इसे दृष्ट भी कहते थे।

वैयाघ्र—वि० १. व्याघ्र संबंधी। व्याघ्र का। २. व्याघ्रचर्मवृत्त। व्याघ्रचर्ममांडत [को०]।

वैयाघ्रपद—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्रपद्य—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैयाघ्रपाद—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्र्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का आसन। २. व्याघ्र की अवस्था [को०]।

वैयाघ्र्य—वि० [सं०] १. जो व्याघ्र के समान हो। व्याघ्रतुल्य। २. व्याघ्र का या व्याघ्रजन्य [को०]।

वैयात्य—सज्ञा पुं० [मं०] १. दुर्विनीतता। अविनय। २. डिगई। ३. वेह्यापन। निर्लज्जता। ४. उजडुपन [को०]।

वैयावृत्य—सज्ञा पुं० [मं०] जैनमतानुसार यतियों और साधुओं आदि की सना। उ०—दूधरे प्रकार के तप में प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (मेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सग (गरीरद्वारा) की गणना हाती है—आ० भा०, पृ० १४३।

वैयास—वि० [सं०] व्यास संबंधी। व्यास का।

वैयासकि—सज्ञा पुं० [मं०] १. वह जो व्यास के गोत्र या वंश में उत्पन्न हो। २. व्यास के पुत्र। शुकदेव।

वैयासिक—वि० [सं०] व्यास का बनाया हुआ। व्यासरचित। (ग्रंथ आदि)। २. दे० 'वैयासांक'।

वैयास्क—सज्ञा पुं० [मं०] १. एक प्रकार का वैदिक छंद। २. एक आचार्य का नाम [को०]।

वैयुष्ट—वि० [मं०] उप कालीन। प्रामाणिक। ऊराकाल में होने-वाला [को०]।

वैरकर—सज्ञा पुं० [मं० वैरकर] वह जो किसी के साथ शत्रुता करता हो। दे० 'वैरकर' [को०]।

वैरकर—वि० शत्रुता करनेवाला [को०]।

वैरगिक—वि० [सं० वैरगिक] वह जिने समग्र इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया हो। इन्द्रियग्रही। विरागी। सत। २. वह जो विराग के योग्य हो [को०]।

वैरडेय—सज्ञा पुं० [वैरडेय] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैरभ—सज्ञा पुं० [मं० वैरभ] एक वायु का नाम। एक प्रकार का पवन [को०]।

वैरभक—सज्ञा पुं० [सं० वैरभक] वायु का एक भेद। एक प्रकार का पवन [को०]।

वैर—सज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध। २. घृणा [को०]। ३. शौर्य। पराक्रम [को०]।

क्रि० प्र०—करना।—मानना। रखना।—होना।

४. विपत्ती। शत्रु [को०]। ५. वह धन जो हत्या के लिये दंड के रूप में दिया जाय [को०]।

वैरक—सज्ञा पुं० [मं०] दे० 'वैर' [को०]।

वैरकर—सज्ञा पुं० [मं०] वह जो किसी के साथ वैर करता हो। दुश्मनी करनेवाला।

वैरकरण—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैरकरण'।

वैरकार, वैरकारक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैरी । दे० 'वैरकर' ।

वैरकारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] शत्रुता का कारण [को०] ।

वैरकारी—वि० [स०] वैरकारिन् शत्रुता करनेवाला [को०] ।

वैरकृत्—वि० [स०] दे० 'वैरकारी' [को०] ।

वैरक्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. विरक्त होने का भाव । विरक्तता ।
वैराग्य । २. नापसदगी । अरुचि (को०) ।

वैरखडी—वि० [स०] वैरखण्डिन् शत्रुता दूर करनेवाला [को०] ।

वैरखण्ड—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैरख, हि० वैरख] दे० 'वैरख' । उ०—
उपम तीर्थ उद्धर । कि मित्र कज्जल गिर । जु वैरख विराज-
ही । वसत वृष्ण लाजही ।—रा०, ७। ४१ ।

वैरत—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम ।

वैरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैर का भाव । शत्रुता । दुश्मनी ।

वैरथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष्मन् का पुत्र । २ एक वर्ष का नाम
जिसपर वैरथ ने राज्य किया था [को०] ।

वैरदेय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह वैर या शत्रुता जो किसी के शत्रुता
करने पर उत्पन्न हो । २ वैदिक काल के एक असुर का नाम ।

वैरनिर्यातिन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैर का बदला । वैरशोध [को०] ।

वैरपुरुष—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जिसके साथ वैर हो । शत्रु । दुश्मन ।

वैरप्रतिक्रिया—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैर का बदला [को०] ।

वैरप्रतिमोचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] दुश्मनी न रहना । शत्रुता छूटना ।
वैरभाव दूर होना [को०] ।

वैरप्रतियाचन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैरनिर्यातिन । वैरप्रतीकार [को०] ।

वैरप्रतीकार—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैरशोधन [को०] ।

वैरभाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] शत्रुता । शत्रुभाव [को०] ।

वैरमण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेद के अध्ययन की पूर्णता । ब्रह्मचर्य
आश्रम की समाप्ति [को०] ।

वैरयातना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैर का शोधन या बदला [को०] ।

वैररक्षी—वि० [स०] वैररक्षिन् वैर को दूर करनेवाला [को०] ।

वैरल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विरल होने का भाव । विरलता । २
शून्य । एकांत ।

वैरव्रत—सञ्ज्ञा पु० [स०] किसी से शत्रुता की प्रतिज्ञा । वैरभाव रूपी
व्रत [को०] ।

वैरशुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] किसी के वैर का बदला उठाना ।
दुश्मनी का बदला लेना ।

वैरस—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वैरस्य'

वैरसाधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शत्रुता का लक्ष्य या उद्देश्य । २
शत्रुता का साधन [को०] ।

वैरसेनि—सञ्ज्ञा पु० [स०] राजा वीरसेन का पुत्र, नल [को०] ।

वैरस्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विरस होने का भाव । विरसता ।
२ शत्रुता । वैपरीत्य । ३ इच्छा का न होना । अनिच्छा ।

वैराग—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'वैराग्य' ।

वैरागा—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैराग] दे० 'वैराग्य' । उ०—वीना गेडे
वजावै रागा वर विन उपजावै वरागा ।—माधवानल०,
पृ० १८६ ।

वैरागिक—वि० [स०] जिनके कारण विराग उत्पन्न हो ।

वैरागिक—सञ्ज्ञा पु० विरागी । विरक्त ।

वैरागी—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैरागिन्] १ वह जिनके मन में विराग
उत्पन्न हो । वह जिनका मन समार को ओर में हट गया हो ।
विरक्त । २ उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

विशेष—इस संप्रदाय के लोग रामानुज के अनुयायी होते हैं और
आग्रहण अथवा रामचंद्र की उपासना करते हैं । ये लोग प्रायः
भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं और अखाड़े बनाकर
रहते हैं । बगाल के कुछ वैरागी विवाह करके गृहस्थों की भाँति
भी रहते हैं ।

वैरागी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] संगीत में एक रागिनी [को०] ।

वैराग्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. मन की वह वृत्ति जिसके अनुसार समार
की विषयवामना तुच्छ प्रतीत होती है और लोग समार की
भूमि छोड़कर एकांत में रहते और ईश्वर का भजन करते
हैं । विरक्ति । २ असतृप्ति । अमतीष (को०) । ३ अरुचि ।
नापसदगी (को०) । ४ रज । शोक । अफसोस (को०) । ५
बदरग होना । विवरंता (को०) ।

वैराग्यशतक—सञ्ज्ञा पु० [स०] भर्तृहरि प्रणीत शतकत्रय (शृंगार,
वैराग्य, और नीति) में से एक का नाम [को०] ।

वैराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विराट् पुरुष । परमात्मा । २ एक मनु
का नाम । ३ एक प्रकार का साम । ४ भागवत के अनुसार
अजित के पिता का नाम । ५ सत्ताईसवें कल्प का नाम ।
६ तपोलोक में रहेवाले एक प्रकार के पितृ । कहते हैं, ये
कभी आग से नहीं जल सकते । ७ दे० 'वैराज्य' ।

वैराज—वि० विराज सबधी । ब्रह्मा सबधी [को०] ।

वैराजक—सञ्ज्ञा पु० [स०] उन्नीसवें कल्प का नाम ।

वैराज्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ प्राचीन काल की एक प्रकार की शासन-
प्रणाली जिसमें एक ही देश में दो राजा मिलकर शासन करते
थे । एक देश में दो राजाओं का शासन । २ वह देश जहाँ
इस प्रकार की शासनप्रणाली प्रचलित हो । ३ विदेशियों
का राज्य । विदेशियों का शासन ।

विशेष—वैराज्य और द्वैराज्य के गुणदोष का विचार करते हुए
कहा गया है कि द्वैराज्य में अशांति रहती और वैराज्य में देश
का धनधान्य निचोड़ लिया जाता है । दूसरी बात यह भी कही
गई है कि विदेशी राजा अपनी अधिकृत भूमि कभी कभी
वेच भी देता है और आपत्ति के समय असहाय अवस्था में छोड़
भी देता है ।

वैराट—वि० [स०] १ विराट् सबधी । २ विराट देश सबधी ।
विराट का । ३. विस्तृत । लंबा चौड़ा ।

वैराट^१—सञ्ज्ञा पुं० १. इंद्रगोप नाम का कीड़ा। वीरबहूटी। २. महाभारत का विराट पर्व। ३. एक रत्न। ४ एक रग अथवा उसी रग की चीज। ५. देश विदेश (को०)।

वैराटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार शरीर में किसी स्थान पर होनेवाली वह गाँठ जो जहरीली हो।

वैराटराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन वैराट देश का राजा। मत्स्य देश का नरेश (को०)।

वैराट्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों के अनुसार सोलह विद्यादेवियों में से एक विद्यादेवी का नाम।

वैराटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैराट्क अर्जुन या कोह नाम का वृक्ष।

वैराम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैराषित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दुश्मनी। शत्रुता (को०)।

वैरिच—वि० [सं०] वैरिञ्च विरिचि या ब्रह्मा संबंधी (को०)।

वैरिचि—वि० [सं०] वैरिञ्चि विरिचि या ब्रह्मा संबंधी। ब्रह्मा का।

वैरिच्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैरिञ्च्य ब्रह्मा के पुत्र। सनक आदि ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं।

वैरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वैर। शत्रुता। दुश्मनी। २. वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैर का भाव। शत्रुता। दुश्मनी।

वैरिपण^७—सञ्ज्ञा पुं० [हिं०] वैर + प्रा० घण, वण (प्रत्य०), हिं० वैरीपण] वैरत्व। वैरभाव। शत्रुता। उ०—किमि उँपन्नउँ वैरिपण किमि उँदरिउँ तेन।—काति० पृ० १६।

वैरिवीर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार दशरथ के एक पुत्र जिनका दूसरा नाम इलविल भी है।

वैरी^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैरिन् १ शत्रु। दुश्मन। वैरी। २. योद्धा। वीर (को०)।

वैरी^२—वि० वैरयुक्त। वैर करनेवाला। शत्रुता करनेवाला (को०)।

वैरूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम। २ पितरों का एक वर्ग (को०)। ३ एक प्रकार का साम।

वैरूपाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो विरूपाक्ष के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुआ हो।

वैरूप्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विरूप का भाव या धर्म। विरूपता। २ विकृत होने का भाव।

वैरेकीय—वि० [सं०] विरेचक (को०)।

वैरेचन—वि० [सं०] विरेचन संबंधी। विरेचन का।

वैरेचनिक—वि० [सं०] विरेचन संबंधी (को०)।

वैरोचन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३. विष्णु के एक पुत्र का नाम (को०)। ४. एक प्रकार की समाधि (को०)। ५. सूर्य के एक पुत्र का नाम।

सं० श० ६-३६

५. एक प्रकार के सिद्ध (को०)। ६. बौद्ध मतानुसार एक लोक का नाम (को०)। ७. अग्नि के एक पुत्र का नाम।

वैरोचन^२—वि० १. विरोचन संबंधी। विरोचन से उत्पन्न (को०)।

यौ० वैरोचन निकेतन = पाताल लोक। वैरोचनमुहूर्त = एक मुहूर्त जो दिन में पड़ता है। वैरोचन रश्मिप्रतिमंडित = बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

वैरोचनि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३. सूर्य के एक पुत्र का नाम। ४. अग्नि के एक पुत्र का नाम। दे० 'वैरोचन'।

वैरोचि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. राजा बलि के पुत्र बाण दंत्य का एक नाम। २. दे० वैरोचनि (को०)।

वैरोट्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों की सोलह विद्यादेवियों में से एक विद्यादेवी का नाम।

वैरोद्धार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी के वैर का बदला चुकाना। वैरशुद्धि।

वैरोधक—वि० [सं०] विरोधी या प्रतिकूल (आहार आदि)।

वैरोधिक—वि० [सं०] दे० 'वैरोधक' (को०)।

वैल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बेल नामक वृक्ष या उसका फल। २. छिद्र। विवर। बिल (को०)।

वैल^२—वि० १. बिल संबंधी। २. बेल संबंधी। ३. बिल में रहनेवाला। बिलवासी (को०)।

वैलक्षण्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विलक्षण होने का भाव। विलक्षणता। २. विभिन्न या अलग होने का भाव। विभिन्नता।

वैलक्ष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. लज्जा। संकोच। शर्म। २. विस्मय। आश्चर्य। ताज्जुब। ३. स्वभाव की विलक्षणता। ४. उलझन। गड़बड़ी (को०)। ५. अस्वाभाविकता। कृत्रिमता (को०)। ६. वैपरीत्य (को०)।

वैलस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्मशान। मरघट।

वैलिंग्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैलिङ्ग्य परिचायक चिह्न, लक्षण या लिंग का अभाव (को०)।

वैलि^७—सर्व० [देश० या व०] सं० अवार (= इधर, निकट), हिं० उरे] उरली। उरे। इधर। उ०—दादू सेख मसाहक श्रीलिया, पंगवर सब पीर। दर्शन सू परसन नहीं, अजहूँ वैली तीर।—दादू०, पृ० २७७।

वैलोम्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विलोमता। विपरीतता (को०)।

वैल्व^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विल्व या बेल नामक फल। श्रीफल।

वैल्व^२—वि० १. विल्व या बेल संबंधी। बेल का। २. विल्व वृक्ष से आच्छादित। अभिप्रेत। जिसे कहना आवश्यक हो (को०)।

वैवक्षिक—वि० [सं०] विवक्षायुक्त। कहने की इच्छावाला।

वैवधिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो अनाज आदि बेचकर अपना निर्वाह करता हो। गल्ले का व्यापारी। २. धूम धूमकर या फेरी लगाकर माल बेचनेवाला। ३. दूत। हरकारा। ४. बहंगी द्वारा बोझा ढोनेवाला। मजदूर।

वैवर्ण—सज्ञ पुं [सं] १ विवर्ण या मलिन होने का भाव । २ मर्द्व्य या लावण्य का अभाव । ३ म्रिणो के आठ प्रकार के सात्विक भावों में से एक प्रकार का भाव । ४ वह जो बिना किसी रंग के हो या जिसमें नीला, पीला आदि कोई रंग न हो (को०) ।

वैवर्णिक वि० [सं] चित्रकवर्ण । चितकवरा (मुख्यतः विद्रुम के लिये प्रयुक्त) । २ वर्णहीन । जातिच्युत । जो जाति वहिष्कृत किया गया हो ।

वैवर्ण्य—सज्ञा पुं [मं] १. विवर्ण होने का भाव । रंग परिवर्तित होना । २ बदरंग होना । मलिनता । मालिन्य । ३ विभिन्नता । भिन्नता । विलगाव । ४ लावण्य का अभाव । ५ जातिच्युत होना । जातिवहिष्कृत होना । जातिच्युति [को०] ।

वैवर्त—सज्ञा पुं [सं] किसी पदार्थ का चक्र या पहिए के समान घूमना ।

वैवश्य—सज्ञा पुं [सं] १ विवश होने का भाव । विवशता । लाचारी । २ दुर्बलता । कमजोरी ।

वैवस्वत—सज्ञा पुं [सं] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम । यम । २ एक रुद्र का नाम । ३ शर्नश्चर । ४ पुराणानुसार सातवें मनु का नाम ।

विशेष—आजकल का मन्वन्तर इन्ही मनु का माना जाता है । इक्ष्वाकु, नृग, शर्माति, दिष्ट, घृष्ट, कल्पक, नृग्यत, पृषध्र, नाभाग और कवि ये दस इनके पुत्र माने गए हैं ।

५ पुराणानुसार वर्तमान मन्वन्तर का नाम ।

विशेष—इस मन्वन्तर के अवतार वामन, देवता पुरंदर इद्र, धादित्यगण, वसुगण, रुद्रगण, मरुद्गण आदि और ऋषि कश्यप, अग्नि, वशिष्ठ विश्वामित्र आदि कहे गए हैं ।

६ अग्नि का एक नाम (को०) । ७. एक तीर्थ का नाम ।

वैवस्वत—वि० १ सूर्य सवधी । २ यम सवधी । अग्निमवधी । ४ मनु सवधी (को०) ।

वैवस्वतद्रुम—सज्ञा पुं [सं] भोगरा चावल ।

वैवस्वती—सज्ञा स्त्री [मं] १ दक्षिण दिशा जो वैवस्वत मनु की दिशा मानी गई है । २ सूर्य की एक पुत्री । यमुना । यमी (को०) ।

वैवस्वतीय—वि० [सं] वैवस्वत सवधी (को०) ।

वैवाह—वि० [मं] विवाह सवधी । विवाह का ।

वैवाहिक—सज्ञा पुं [मं] १ कन्या अथवा वर का अशुर । समधी । २. विवाह (को०) । ३ विवाह की तैयारी या उत्सव (को०) । ४ वह सवध जो विवाह के कारण हो (को०) ।

वैवाहिक—वि० विवाह सवधी । विवाह का ।

वैवाह्य—वि० [सं] १. विवाह सवधी । विवाह का । २ जो विवाह के योग्य हो ।

वैवाह्य—सज्ञा पुं वह समारोह या उत्सव जो विवाह के अवसर पर हो ।

वैविवृत्य—सज्ञा पुं [सं] विविक्तता । विभिन्नता । अलगाव । छुटकारा (को०) ।

वैविध्य—सज्ञा पुं [मं] विविधता । अनेकपता । उ०—देशीय एवं नृहुदेशीय अतविरोधो ने द्वय किननी ही प्रकृतियों को जन्म दिया है जिनमें युगीन वैविध्य और असामान्य गुणयोग हैं ।—हिं० का० प्रा०, पृ० २ ।

वैवृत्त—सज्ञा पुं [सं] उदात्त आदि स्वरो का क्रम ।

वैवृद्ध—वि० [सं नयोद्ध] दे० 'वयोवृद्ध' । उ०—आरव सेप लं नी बुलाइ । वैवृद्ध वृद्ध बुद्धी मुताइ ।—पृ० रा०, ६ । ३१ ।

वैशपायन—सज्ञा पुं [मं वैशम्पाया] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य थे । कहते हैं, महर्षि व्यासदेव की आज्ञा से इन्हीं ने जनमेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी ।

वैशफल्या—सज्ञा स्त्री [सं वैशम्फाया] सरस्वती का एक नाम (को०) ।

वैशद्य—सज्ञा पुं [सं] १ विशद होने का भाव । विशदता । २ निर्मल या स्वच्छ होने का भाव । निर्मलता । ३ उज्ज्वलता । शुभ्रता (को०) । ४ स्पष्टता (को०) । ५ मस्तिष्क की स्वस्थता ।

वैशली—सज्ञा स्त्री [मं] १ दे० 'वैशाली' । २ वसुदेव की एक पत्नी (को०) ।

वैशल्य—सज्ञा पुं [सं] १ विशल्य होने का भाव या दशा । कष्टदायक भार से मुक्ति वा छुटकारा । जैसे, गर्भभार आदि से (को०) ।

वैशस—सज्ञा पुं [सं] १ विनाश । हत्या । वध । २ युद्ध । ३ विपत्ति । ४. कष्ट । ५. एक नरक का नाम । ६ हिंसा (को०) ।

वैशस—वि० विनाशक । हिंसक । हिंसा या वध करनेवाला (को०) ।

वैशसन—सज्ञा पुं [सं] दे० 'वैजस' ।

वैशस्त्र—सज्ञा पुं [सं] १ अस्त्रहीनता । २ अधिकार । शासन । असुरक्षित होने का भाव (को०) ।

वैशस्त्र—वि० अस्त्ररहित । विना शस्त्रवाला (को०) ।

वैशाख—सज्ञा पुं [मं] १ मघनी में का ऋतु । मथनदह । २ लाल गदहपूरना । ३ पारह महीनों में से एक महीना जो चन्द्र गणना से दूसरा और सौर गणना के अनुसार पहला महीना होता है । इस मास की पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पड़ती है, इसीलिये इसे वैशाख कहते हैं । चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना । ४ एक प्रकार का ग्रह जिसका प्रभाव घोड़ों पर पड़ता है और जिसके कारण उनका शरीर भारी हो जाता है और वे कापने लगते हैं । ५ धनुष पर बाण चलाने के समय की एक मुद्रा । दे० 'विशाख' (को०) ।

यौ०—वैशाखनदन = (१) वैशाख में आनंदित होनेवाला । (२) गधा । खर । वैशाखरज्जु = मथनदह की रस्सी । नेत्र ।

वैशाखी—सज्ञा स्त्री [मं] १ वह पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त हो । २. मेघ की संक्रांति (वैशाखपूर्णिमा) के अवसर पर

इस नाम में पंजाबियों में मनाया जानेवाला एक उत्सव । वैशाख मास की पूर्णिमा । उ०—जबलो पृथ्वी है तबलो बोना और लोना मरदी गर्मी, अगहनी और वैशाखी दिन और रात बदन होगे ।—कबीर म०, पृ० १६५ । ३ लाल गदहपूरना । ४. पुराणानुसार वसुदेव की एक स्त्री का नाम ।

वैशाखी—संज्ञा पुं० [स० वैशाखिन्] हाथों के पैर का अंगना भाग [को०] ।

वैशाख्य—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वैशारद—संज्ञा पुं० [स०] वह जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो । विशारद । पंडित ।

वैशारद—वि० ० ज्ञाता । अनुभवी । २ पंडित । विद्वान् [को०] ।

वैशारद्य—संज्ञा पुं० [स०] १. विशारद या पंडित होने का भाव । २ निर्मलता । स्वच्छता । सफाई ।

वैशाल—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वैशालक—वि० [स०] वैशाली नगरी का । वैशाला मन्थी । [को०] ।

वैशालाक्षु—संज्ञा पुं० [स०] शिव जी द्वारा निर्मित शास्त्रावगेष [को०] ।

वैशालिक—वि० [स०] दे० 'वैशालक' [को०] ।

वैशाली—संज्ञा स्त्री [स०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी ।

विशेष—यह विशालनगर या विशालपुरी भी कहलाती थी । कहत है, राजा तृणविदुष का पुत्र विशाल ने यह नगरी बसाई थी । जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का जन्म यहीं हुआ था और बुद्ध भगवान् कई बार यहाँ गए थे । किसी समय यह नगरी बहुत प्रसिद्ध थी और यहाँ बौद्धों का बहुत प्रधानता थी । यहाँ का लिच्छवी राजवंश इतिहासों में प्रसिद्ध है । यहाँ जैनियों का भी तीर्थ था । विद्वानों का मन है कि प्राधुनिक मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ नामक गाँव प्राचीन वैशाली का ही अवशेष है ।

वैशालीय—संज्ञा पुं० [स०] जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का एक नाम ।

वैशालेय—संज्ञा पुं० [स०] तत्त्वज्ञ विशाल के वंशज माने जाते हैं ।

वैशिक—संज्ञा पुं० [स०] १ मातृत्व के अनुसार तान्त्रिकों के नायकों में से एक प्रकार का नायक । वह नायक जो वरमाश्रा के साथ भोग विलास करता हो । दश्यागामी नायक । उ०—भूपाल, मङ्गलोक, सामन्त, सनापात, वैशिक, राजपुत्र, राजशिष्ट, बडालश्रा ।—वरण०, पृ० ८ । २ वरमा से संबंध रखनेवाला पुरुष । ३. वैश्या की वृत्ति या कला [को०] ।

वैशिक—वि० [वि० स्त्री वैशिका] १ वैश सवधी । वैश का । २. वैश्या द्वारा व्यवहृत । ३. वरमागामी [को०] ।

वैशिक्य—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम ।

वैशिजाता—संज्ञा स्त्री [स०] पुत्रदात्री का नाम ।

वैशिष्ट—पद्या पुं० [स०] १. विशेषता । सामर्थ्य । २ पृथक्-पृथक् गुण । वैशिष्ट्य [को०] ।

वैशिष्ट्य—संज्ञा पुं० [स०] १ विशेषता । विशेषता । २ श्रेष्ठता । ३. विशेष चक्षुष्य या गुण आदि में युक्त होना । ४. अंतर । फर्क [को०] ।

वैशीपुत्र—संज्ञा पुं० [स०] वैश्या का पुत्र ।

वैशेषिक—संज्ञा पुं० [स०] १ छद्म दर्शन में से एक जो महर्षि कणाद कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है । पदार्थ विद्या ।

विशेष—महर्षि कणाद का एक नाम उलूक भा है, इसमें इसे श्रीलूक्य दर्शन भी कहते हैं । यह दर्शन न्याय के ही आगत माना जाता है । विद्वान् पक्ष में न्याय कहते हैं दाता का बोध होता है, क्योंकि गौतम में प्रमाणपक्ष प्रधान है और इसमें प्रमाण पक्ष लिया गया है । ईश्वर, जगत् जीव आदि के सबब के दातों के विद्वान् प्रायः एक ही हैं । यह दर्शन गौतम में पीछे का माना जाता है । गौतम ने मुख्यतः तर्कमूर्द्धात और प्रमाणविषय का ही निरूपण किया है, पर कणाद उनसे आगे बढ़कर द्रव्यों की परीक्षा में प्रवृत्त हुए हैं । नौ द्रव्यों का विशद-ताए बताने के ही कारण इस दर्शन का नाम वैशेषिक पड़ा । नौ द्रव्य ये हैं—पृथ्वी, जल, तज, वायु, आकाश, अणु, इन्द्रिय, आत्मा और मन । इनमें से पृथ्वी, जल, तज और वायु नित्य भी हैं और आनन्द्य भा अवात् परमाणु अवस्था में तो वे नित्य हैं और स्थूल अवस्था में आनन्द्य । आकाश, अणु, इन्द्रिय और आत्मा नित्य और सवव्यापक हैं । मन नित्य तो है, पर व्यापक नहीं, क्योंकि वह अणुरूप है । द्रव्यों का विशदता इस प्रकार कणाद ने बताया है ।

गौतम ने नालह पदार्थ माने थे, पर कणाद ने छह ही पदार्थ रखे—द्रव्य, गुण, कम, सामान्य, विशद और समवाय । अवयव आदि को इन छह के अंतर्गत प्रतीत न समझकर पाँच से एक सातवा पदार्थ 'प्रभाव' भी बढ़ाया गया । द्रव्यों के उद्ग (परिमाण), लक्षण और परीक्षा के उपरांत कणाद ने गुण और कम की लिया है जो द्रव्यों में रहते हैं । नव्या, पृथक्त्व, बुद्धि, मुक्त, दुःख इत्यादि २४ गुण गिनाए गए हैं । उत्क्षेपण, अवक्षेपण आदि पाँच प्रकार का गतार्थ कम के अंतर्गत ला गये हैं । अब रहा 'सामान्य' । नौ द्रव्य, गुण और कर्म इन्हीं तानों में सत्ता के रूप में पाया जाता है । पाँचवा पदार्थ 'विशद' पृथ्वी, जल, तज और वायु के परमाणुओं में तथा शेष पाँच द्रव्यों में पाया जाता है । 'विशद' अन्तर्हीते हैं । 'समवाय' जहाँ कहा पाया जायगा, वहाँ रहता अतः वह एक ही है ।

वैशेषिक का परमाणुवाद प्रामाण्य है । द्रव्यजड है दुःख और करत जग एगा दुःखी रह जाते हैं । जगत् और दुःख नही हो सकत, तब वह परमाणु कहलावे । परमाणु नित्य और अक्षर हैं । इन्हीं का योगना से सब पदार्थ बनते हैं और छह होता है, आकाश तो छहकर जितने प्रकार के हैं । और छह जितने ही प्रकार के परमाणु हाने हैं जिन—पृथ्वी परमाणु, जल

परमाणु, तेज परमाणु और वायु परमाणु। वैशेषिक में दो परमाणुओं के योग को द्व्यणुक कहते हैं। आगे चलकर यही द्व्यणुक अधिक सख्या में मिलते जाते हैं, जिसे नाना प्रकार के पदार्थ बनते हैं, जैसे—तीन द्व्यणुको से त्रसरेणु, चार द्व्यणुको से चतुरणुक आदि। कारणगुण पूर्वक ही कार्य के गुण होते हैं, अतः जिस गुण के परमाणु होंगे, उसी गुण के उनसे बने पदार्थ होंगे। पदार्थों में जो नाना भेद दिखाई पड़ते हैं वे सन्निवेश भेद से होते हैं। तेज के सवध से वस्तुओं के गुण में बहुत कुछ फेरफार हो जाता है।

परमाणुओं के बीच अंतर की धारणा न होने के कारण वैशेषिकों को 'पीलुपाक' नामक विलक्षण मत ग्रहण करना पड़ा। इस मत के अनुसार घड़ा आग में पड़कर इस प्रकार लाल होता है कि अग्नि के तेज से घड़े के परमाणु अलग अलग हो जाते हैं और फिर लाल होकर मिल जाते हैं। घड़े का यह बनना और बिगड़ना इतने सूक्ष्म काल में होता है कि कोई देख नहीं सकता।

परमाणुओं का संयोग सृष्टि के आदि में कैसे होता है, इस संवध में कहा गया है कि ईश्वर की इच्छा या प्रेरणा से परमाणुओं में गति या क्षोभ उत्पन्न होता है और वे परस्पर मिलकर सृष्टि की योजना करने लगते हैं। ऊपर जो नौ द्रव्य कहे गए हैं, उनमें 'आत्मा' भी है। आत्मा दो प्रकार का कहा गया है—ईश्वर और जीव। ईश्वर की सत्ता और कर्तृत्व मानने के कारण ही न्याय और वैशेषिक भक्तों एवं पौराणिकों के आक्षेपों से बचे रहे हैं।

और दर्शनों के समान इस दर्शन पर भाष्य नहीं मिलते। प्रशस्तपाद का 'पदार्थ-धर्म संग्रह' नामक ग्रंथ वैशेषिक सूत्रों का भाष्य कहा जाता है, पर वह वास्तव में भाष्य नहीं है, सूत्रों के आधार पर बना हुआ अलग ग्रंथ है।

२ कणाद का अनुयायी। वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।

वैशेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशेष का भाव। विशेषता। सर्वोत्तमता। श्रेष्ठता। २ जाति या गुणगत प्राधान्य। प्रमुखता (को०)।

वैशिमक—वि० [सं०] वैशिमवाला। घरवाला। घर में रहनेवाला (को०)।

वैश्य—संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण जो 'द्विजाति' के अंतर्गत और उसमें अंतिम है।

विशेष—'वैश्य' शब्द वैदिक विश्व से निकला है। वैदिक काल में प्रजा मात्र को विश्व कहते थे। पर बाद में जब वर्णव्यवस्था हुई, तब वाणिज्य व्यवसाय और गोपालन आदि करनेवाले लोग वैश्य कहलाने लगे। इनका धर्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है। आजकल अधिकांश वैश्य प्रायः वाणिज्यव्यवसाय करके ही जीविकानिर्वाह करते हैं। इन वैश्यों में देश और वंश आदि के भेद से अनेक जातियाँ और उपजातियाँ पाई जाती हैं जैसे,—अग्रवाल, ओसवाल, रस्तोगी, भाटिए आदि।

वैश्यकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वैश्यकर्मन्] वैश्य का कर्तव्य कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य आदि।

वैश्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैश्यता'।

वैश्यध्वमी—वि० [सं० वैश्यध्व सिन्] वैश्यों का नाश करनेवाला।

वैश्यभद्रा—संज्ञा स्त्री० [मं०] बौद्धों की वैश्या और भद्रा नाम की दो देवियाँ।

वैश्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वैश्यत्व। वैश्यकर्म (को०)।

वैश्ययज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] वैश्यों द्वारा किया जानेवाला यज्ञ (को०)।

वैश्यवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्य की जीविका का साधन। व्यापार आदि वैश्यकर्म (को०)।

वैश्यसव—संज्ञा पुं० [मं०] एक प्रकार का सव या यज्ञ।

वैश्यस्तोम—संज्ञा पुं० [मं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

वैश्या—संज्ञा स्त्री० [मं०] वैश्य जाति की। २. हलदी। ३. बौद्धों की एक देवी (को०)।

वैश्रभक—संज्ञा पुं० [सं० वैश्रभक] पुराणानुसार देवताओं के एक उत्थान या वाग का नाम।

वैश्रभक—वि० १. विश्वस्त। विश्रभयुक्त। २. जाग्रत या चेतन करनेवाला (को०)।

वैश्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर। २. शिव। महादेव। ३. रावण (को०)। ४. चोदहर्षा मुहूर्त (को०)।

वैश्रवणानुज—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का भाई रावण, कुभकर्ण आदि (को०)।

वैश्रवणालय—संज्ञा पुं० [मं०] १ कुबेर के रहने का स्थान। २. वट वृक्ष। वड का का पेड़। वरगद।

वैश्रवणावास—संज्ञा पुं० [सं०] १. वट वृक्ष। वरगद का पेड़। २. दे० 'वैश्रवणालय' (को०)।

वैश्रवणोदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वट वृक्ष। वरगद का पेड़। २. दे० 'वैश्रवणावास' (को०)।

वैश्रवण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वैश्रवण] कुबेर। वैश्रवण। उ०—पुन्य जनेश्वर वैश्रवण धनद अलविल होइ।—नंद० ग्रं०, पृ० ६०।

वैश्व—वि० [सं०] विश्वदेव संबंधी। विश्वदेव का।

वैश्व—संज्ञा पुं० उत्तरापाड़ा नक्षत्र का एक नाम।

वैश्वजनीन—वि० [सं०] विश्व भर के लोगों से सवध रखनेवाला। समस्त ससार के लोगो का।

वैश्वजनीन—संज्ञा पुं० वह जो समस्त ससार के लोगो का कल्याण करता है।

वैश्वज्योतिष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैश्वदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय। इसमें केवल पके हुए अन्न से विश्वदेव के उद्देश्य से आहुति दी जाती है और ब्राह्मणों को भोजन कराने की आवश्यकता नहीं होती है। २ उत्तरापाड़ा नक्षत्र (को०)।

वैश्वदेवत—सञ्ज्ञा पुं० [म०] उत्तरापाढा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव माने जाते हैं।

वैश्वदेविक—वि० [स०] विश्वदेव सबधी। विश्वदेव का।

वैश्वदेव्य—वि० [स०] विश्वदेव सबधी [को०]।

वैश्वदैवत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] उत्तरापाढा नक्षत्र।

वैश्वमनस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

वैश्वयुग—सञ्ज्ञा पुं० [म०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के पाँच सवत्सरो का युग या समूह।

विशेष—इन पाँच सवत्सरो के नाम क्रमशः शोमकृत, शुभकृत, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव हैं। इनमें से पहले दो सवत्सर शुभ और शेष अशुभ माने जाते हैं।

वैश्वरूप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] ससार। विश्व [को०]।

वैश्वरूप्य—वि० विविध रूपवाला। विविध प्रकार का। अनेक ढंग का [को०]।

वैश्वरूप्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विविध रूप या विभिन्न प्रकार का होने का भाव। विविधरूपता। विभिन्नता [को०]।

वैश्वस्त्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैश्व्य। विधवापन [को०]।

वैश्वानर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि। २ चित्रक या चीता नाम का वृद्ध। ३. पित्त। पित्ता। ४ परमात्मा। ५ चेतन। ६ जठराग्नि [को०]।

वैश्वानर्य—वि० १ सभी लोगों के लिये उपयुक्त। २ सार्वभौम। सार्वजनीन। सावलीकिक। ३ राशिचक्र का। राशिचक्रीय [को०]।

वैश्वानरचूर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो सेंधा नमक, अन्नवायन और हरे आदि से बनाया जाता है। यह आमवात, शूल और गुल्म आदि के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है।

वैश्वानरपथ, वैश्वानरमार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अग्निकोण या पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना जो वैश्वानर का मार्ग माना जाता है।

वैश्वानरमुख—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

वैश्वानरवटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक में एक प्रकार की गोली जो पारे, गंधक, ताम्र, लोहे, शिलाजीत, सोठ, पीपल, चित्रक तथा मिर्च आदि के योग से बनाई जाती है और जो पेट के रोग में उपकारी मानी जाती है।

वैश्वानरविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

वैश्वानरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ अग्निकाण। चद्रवीथी का एक भाग। २ प्रति वर्ष के प्रारम्भ में की जानेवाली एक प्रकार की विशेष वलि [को०]।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक—वि० [म०] विश्वामित्र का। विश्वामित्र सबधी [को०]।

वैश्वसिक—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वैश्वसिकी] वह जिसपर विश्वास किया जाय। एतदार करने के काविल। विश्वस्त।

वैश्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] उत्तरापाढा नक्षत्र।

वैष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वधकर्ता। काटनेवाला। हिंसक [को०]।

वैषम—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ परिवर्तन। [को०]।

वैषमेपत्र—वि० [म०] विषमेषु सबधी। कामदेव सबधी।

वैषम्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ सम-तल न होना। ३ अनुपातरहित होना [को०]। ४ कठिनाई। मकट। विपत्ति [को०]। ५. अन्धाय। अनौचित्य [को०]। ६. भ्रून [को०]। ७. एकाकीपन [को०]।

वैषयिक—वि० [म०] १. विषय सबधी। विषय का। २ पदार्थ सबधी [को०]।

वैषयिक—सञ्ज्ञा पुं० वह जो सदा विषय वासना में रत रहता हो। विषयी। लपट।

वैपुवत्—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैपुवत' [को०]।

वैपुवत्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विपुवत सक्ताति। २ केंद्र। मध्य।

वैपुवत्—वि० [स्त्री० स्त्री० वैपुवती] १ केंद्रवती। २ विपुव रेखा सबधी [को०]।

वैपुवतीय—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैपुवत्' [को०]।

वैष्क—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ हिंस पशु द्वारा मारे हुए पशु का मांस। २ जाल में फँसाए गए पशु का मांस [को०]।

वैष्किर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह पशु या पक्षी जो चारों ओर घूम फिरकर आहार प्राप्त करता हो।

वैष्किर्य—वि० १ जिसमें पशु पक्षी हो। २ चूजे के मांस का बना हुआ रसा [को०]।

वैष्टभ—सञ्ज्ञा पुं० [स० वैष्टम्भ] एक प्रकार का साम।

वैष्टिक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वह जिससे जबरदस्ती काम लिया जाय। बंगार में काम करनेवाला व्यक्ति [को०]।

वैष्टुत, वैष्टुभ—सञ्ज्ञा पुं० [म०] होम की भस्म। भस्म [को०]।

वैष्ट्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ स्वर्ग। २ वायु। ३ विष्णु। ४ लोक। विश्व का एक प्रभाग [को०]। ५, ससार [को०]।

वैष्णव—सञ्ज्ञा पुं० [स्त्री० वैष्णवी] १ वह जो विष्णु की आराधना करता हो। विष्णु की उपासना करनेवाला। २ हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग प्रधानतः विष्णु की उपासना करते हैं और अपेक्षाकृत बड़े आचार विचार से रहते हैं।

विशेष—भारतवर्ष में विष्णु की उपासना बहुत प्राचीन काल से चली आती है। महाभारत के समय में यह धर्म पांचरात्र या नारायणीय धर्म कहलाता था। पीछे यही भागवत धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसमें वासुदेव या कृष्ण की उपासना प्रधान हुई। नारायणीय आख्यान में लिखा है कि पहले नारायण ने इस धर्म का उपदेश ब्रह्मा को किया था। ब्रह्मा ने नारद का, नारद ने व्यास का और व्यास ने शुकदेव का यह धर्म बतलाया था, और तब शुकदेव से सर्वसाधारण में यह धर्म प्रचलित

हुआ था। शंकराचार्य ने इस मत को अवैदिक सिद्ध करना चाहा था, जिसका रामानुजाचार्य ने खंडन किया। वाच में इस धर्म का कुछ हास हो गया था, पर चैतन्य, रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्य आदि आचार्यों ने इस धर्म का फिर से बहुत अधिक प्रचार किया, और इस समय यह भारत के मुख्य संप्रदायों में से एक है। यह धर्म भक्तिप्रधान है और इसमें विष्णु ही उपास्य हैं। आजकल इस संप्रदाय की अनेक शाखाएँ और प्रशाखाएँ निकल आई हैं—चैतन्य, बल्लभ इत्यादि। अधिक संप्रदाय विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के उपासक हैं। कुछ संप्रदायवाले माथे पर के तिलक के अतिरिक्त शस्त्र, चक्र, गंगा, पद्म आदि चिह्न भा शरीर में अंकित कराते हैं।

३ यज्ञकुंड की भस्म। ४ विष्णुपुराण। ५. विष्णु का लाल। बंकुठ (को०)। ६ श्रवण नक्षत्र (को०)।

वैष्णव^३—वि० १। विष्णु सबवा। विष्णु का। २ विष्णु को इष्टदेव माननेवाला।

वैष्णवत्व—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वैष्णव होने वा भाव या धर्म। वैष्णवता।

वैष्णवस्थानक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नाटक में रंगमंच पर लगे तब डग भरना [को०]।

वैष्णवाचार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैष्णवों का आचार [को०]।

वैष्णवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की शक्ति। २ दुर्गा। ३ गंगा। ४ अपराजिता या कीयल नाम की लता। ५ शतावर। ६ तुलसी। ७. पृथ्वी। श्रवण नक्षत्र। ८ एक प्रकार का साम।

वैष्णव्य—वि० [स०] विष्णु सबधी। विष्णु का।

वैसदर^३—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैश्वानर, प्रा० हिं० वैमन्नर वैसदर^३ दे० वैश्वानर। उ०—वैसदर विकार।—गोरख० पृ० २५५।

वैस^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वयस दे० 'वस' (वयस)। उ०—यो वरुण दुष्ट वित्ति गय भइय वैस वर उच।—पृ० रा०, २५। १७६।

वैसणहार^३—वि० [हिं०] वैठना-वैसना + हार (प्रत्य०)। १. हथने-वाला। २. बैठनेवाला। उपवेशन करनेवाला। उ०—श्रीमद दरिया क्यो तिरै, वोहिय वैसणहार। दाहू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार।—दादू, पृ० ४६१।

वैसर्गिक—वि० [स०] जो विसर्जन करने या त्यागने के योग्य हो। त्याग्य।

वैसर्जन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विसर्जन करने या उत्सर्ग करने की क्रिया। २. वह जो विसर्जित या उत्सर्ग किया जाय। ३. यज्ञ की बलि।

वैसर्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विसर्प नामक रोग। २ वह जो विसर्प रोग से आक्रांत हो।

वैसा—क्रि० वि० [स०, एतादृश से व्युत्पन्न ऐसा के समान हिं० 'वह' से व्युत्पन्न रूप] १ उस प्रकार का। उस तरह का। जैसे—जैसा दुपट्टा तुमने पहले भेजा था वैसा ही एक और भेज दो। २ उस प्रकार। ३ उतना।

वैसादृश्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. असदृश या असमान होने का भाव। असमानता। विषमता। २. फर्क। भेद। अंतर।

वैसाना^३—क्रि० स० [हिं०] दे० 'विठाना', 'वैठना'। उ०—माघ पंडित ईम उचरई, चउरी कुँवर वैसाडी छई श्राणि।—बो० रासो, पृ० २१।

वैसारिण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] मछली।

यौ०—वैसारिणस्तन = मीनकेतन। कामदेव।

वैसासण^३—क्रि० स० [म०] विश्वासन, प्रा० विस्सामण, वीसासण, राज० वैमामणा। विश्वास। उ०—पयो एक सदेमणउ लग ढानइ पैहव्याइ। सावज संवल तोडस्यइ, वैसासणइ न जाइ—ढोला०, दू० १३३।

वैसूचन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नाटक में पुरुष द्वारा स्त्री का वश वनाकर अभिनय करना [को०]।

वैसृप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

वैसे—क्रि० वि० [हिं०] १ उस तरह। उस प्रकार। २ उस प्रकार के।

वैसेपिक^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक^३ दे० 'वैशेषिक'। उ०—वैशेषिक शास्त्रे पुनि कालवादी ह प्रविद्ध। पातजलि शास्त्र माहि योगवाद ह लह्या।—सन्वाणो०, २। ११६।

वैस्तारिक—वि० [स०] विस्तार सबधी। विस्तार का।

वैस्नव^३—वि० [वैष्णव] दे० 'वैष्णव'। उ०—श्री बल्लभ कुल को रही चैरी, वैस्नव जन का दास कहाऊँ।—पाटार आनं० ग्र०, पृ० २२६।

वैस्पष्ट्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्पष्टता। स्पष्ट या साफ होने का भाव। सुस्पष्टता। विस्पष्टता [को०]।

वैस्वर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ स्वर का विहृत होना। गला बैठना। विस्वर हाना। २ उच्चारण का विभिन्नता वा उतार चढ़ाव [को०]।

वैहग—वि० [सं०] वैहङ्ग^३ विहग सबधी। विहग का।

वैहग—वि० [म०] दे० 'वैहग'।

वैहस्त्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सभ्रम। व्याकुलता। व्यग्रता। मोह [को०]।

वैहायस^३—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. एक सरावर। २ आकाश। व्योम। गगन। ३ व्यामगमन करना। ४ देवता [को०]।

वैहायस—वि० १. आकाशचारा। २ विहायस सबधी। आकाश सबधी। ३ वायु या पवन सबधी। ३ आकाश में स्थित। व्योम में स्थित [को०]।

वैहार^३—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैभार^३ एक पर्वत जो मगध में राजगृह के पास है। वैभार।

वैहार^३—सञ्ज्ञा पुं० [स०] व्यवहार, हिं० व्योहार^३ दे० 'व्यवहार'। उ०—जीवन घडी तै नवि रहई। जाणसु कागली हुआ वैहार।—बो० रासो, पृ० ६३।

वैहारिक—वि० [स०] विहार के काम में प्रयुक्त। विहार के योग्य विहार करने लायक [को०]।

वैहार्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसके साथ हँसा मजाक आदि का सबध हो। जने,—साला, सरहज, साली आदि। २ हास परिहास। दिल्लगी [को०]।

वैहली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिकार । आखेट [को०] ।

वैहासिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सबको हँसाता हो । विदूषक । भांड । २ नट । अभिनेता [को०] ।

वैहल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विह्वलता । व्याकुलता । २ शक्तिहीनता । कमजोरी [को०] ।

वोट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वोट] डठल । वृत्त [को०] ।

वोटिसां—वि० [सं० ऊनविश, प्रा० ओणतिस] दे० 'उनतिस' और 'ओनतिस' ।—इद्रा०, पृ० १६१ ।

वो—सर्व० [हिं०] दे० 'वह' । उ०—वो प्रभु अविगत अविनासी । दास कहाय प्रगट भे वासी ।—कबीर सा०, पृ० ४०१ ।

वोइल—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] जमानत । जामिन । दे० 'ओल' । उ०—तुम प्रभु दीनदयाल रघुपति वोइल दिवाइय ।—कबीर सा०, पृ० १६० ।

वोई०—सर्व० [हिं० वह+ही] दे० 'वही' । उ०—फली वो वदी याँ वो तेरी अथी । हुआ वोई च हासिल जो पेरी अथी ।—दक्खिनी०, पृ० ६० ।

वोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वक्त्र, हिं० वकरा, वोकरा] वकरा । वोक । उ०—वोक निलज्ज चरत नित डोलै । वकरी सग कामरन बोलै ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३३४ ।

वोक०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ओकस्-ओक] निवास । घर । ओक ।

वोक्काण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम । २ इस देश का निवासी । ३ इस देश का अश्व । ४ दे० 'वोक्काण' ।

वोछा०—वि० [देश०] हलका । साधारण । दे० 'ओछा' ।

वोज०—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] दे० 'वोज' । अश्वविशेष । उ०—लीले लवखी लवख वोज बादामी चीनी ।—सुजान०, पृ० ८ ।

वोट—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह संमति जो किसी सार्वजनिक पद पर किसी को निर्वाचित करने या न करने, अथवा सर्वसाधारण से सबब रखनेवाले किसी नियम या कानून आदि के निर्धारित होने या न होने आदि के विषय में प्रकट की जाती है । किसी सार्वजनिक कार्य आदि के होने या न होने आदि के सबब में दी हुई अलग अलग राय । छद ।

विशेष—आजकल सभा समितियों में निर्वाचन के सबब में या और किसी विषय में मभासदों अथवा उपस्थित लोगों की समितियाँ ली जाती हैं । यह समिति या तो हाथ उठाकर या खड़े होकर या कागज आदि पर लिखकर प्रकट की जाती है । इसी समिति को वोट कहते हैं । आजकल प्रायः म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा काउंसिलों (प्रातीय विधानमभा, लोक-सभा) आदि के चुनाव में कुछ विशिष्ट अधिकारप्राप्त लोगों से वोट लिया जाता है । भारतवर्ष में प्राचीन बौद्धकाल में और उसके पहले भी इससे मिलती जुलती समिति देने की प्रथा थी, जिसे छदस् या छद कहते थे ।

क्रि० प्र०—देना ।—माँगना ।

वोट—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० ओट] १ ओट । आड । उ०—इक पट वोट वोरि सुख कीजै । आबहु बलि छिन छिन छबि छीजै ।—नद० ग्र०, पृ० १६५ । २ ओट करने का पट । दुपट्टा । चादर वा चूनरी आदि का वह अंश जिससे ओट या घूँघट किया जाता है । उ०—पहिरै कनक कडा औ बागा । वोट गै पाट उपर मनि लागा ।—इद्रा०, पृ० ११४ ।

वोट आफ सेसर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] निंदा का प्रस्ताव । निंदात्मक प्रस्ताव । जैसे,—परिपद ने बहुमत से सरकार के विरुद्ध वोट आफ सेंसर पास किया ।

वोटना पुं—क्रि० सं० [हिं० ओट+करना] आड करना । उ०—इक पट वोट वोटि मुख कीजै । आबहु बलि छिन छिन छबि छीजै । नद० ग्र०, पृ० १६५ ।

वोटर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह जिसे वोट या समति देने का अधिकार प्राप्त हो । वोट या समति देनेवाला ।

यौ०—वोटर लिस्ट ।

वोटर लिस्ट—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० वोटर+लिस्ट] वह सूची जिससे किसी विषय में वोट देने के अधिकारियों के नाम और पते आदि लिखे रहते हैं । वोट देनेवालों की सूची ।

वोटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दासी । मजदूरनी । दाई । पोटा ।

वोटिंग—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] मतदान की क्रिया । मत देने की क्रिया । चुनाव में अपना वोट देने का कार्य ।

वोड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुपारी ।

वोडना०—क्रि० सं० [हिं० ओढना] १. विस्तार करना । फैलाना । २. रोकना । सहना ।

वोडू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गोह नामक जंतु । गोनस सर्प । ३. एक प्रकार की मछली ।

वोड़ी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पण का चतुर्थांश [को०] ।

वोडू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वोडू ऋषि । २ कदम का पेड़ । कदव वृक्ष । वोडू—वि० विवाहित । जिसका उद्वाह हो चुका हो [को०] ।

वोडना—क्रि० सं० [म० आवेष्ठन या उपवृष्टन, प्रा० आवठ्ठण] दे० 'ओढना' । उ०—लाल कमली वोड़े पेनाए, वेसु हरि थे कैसे बनाए ।—दक्खिनी०, पृ० १०३ ।

वोडनी०—सञ्ज्ञा पुं० [देशी ओड्डण ओड्डणिया] ओढने का वस्त्र । ओढना । उ०—वोडनी है नरलज्जता की अपकीरति नूपुर के सुर गावत । लोभ को छोड़ धरे लडुवा मन रे नडुवा भयो भाव वतावत ।—सातसतक, पृ० ४, छंद १८ ।

वोडव्य—वि० [सं०] १ वहन करने योग्य । वाह्य । २ परित्योक्तव्य । परिणय करने योग्य । ३ वारण या सहन करने योग्य । ४ खींचने या ले जाने योग्य । ५ पूर्ण करने योग्य [को०] ।

वोडव्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह औरत जो रखने या विवाह के योग्य हो अथवा जिसका विवाह होनेवाला हो [को०] ।

वोडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] ऋषभक नाम की ओषधि ।

वोडा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वोडू] १ वहन करने, ढाने या ले जानेवाला । भारिक । भारवाहक । २ नेता । पथदर्शक । नायक । ३. पति । परिणीता । शीहर । ४ सौंड । वृषभ । ५. मूत । सारथि । ६. वर्षक अश्व । खींचनेवाला घोड़ा । ७. मूढ़ [को०] ।

वोढा^१—वि० वहन करने या धारण करनेवाला [को०] ।

वोढा(उ)^४—वि० स्त्री० [म० वोढ] वहन या धारण करनेवाली । भगी हुई । निमग्न । उ०—यहि पगकार कहै रस वोढा । सा स्वावीन वल्लभा प्रोढा ।—नद० ग्र०, पृ० १५ ।

वोढु—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह वालक जो पिता के न रहने के कारण अपनी माता के साथ ननिहाल में रहता हो । पति के न रहने से मायके में रहनेवाली स्त्री का पुत्र [को०] ।

वोढू—सञ्ज्ञा पु० [स० वोढु ?] एक प्राचीन ऋषि जिनके नाम से तपस्या के समय जल दिया जाता है ।

वोतप्रोत(उ)^५—वि० [स० ओत प्रोत] एक में एक चुना हुआ । गुथा हुआ । इतना मिला हुआ कि अलग करना असंभव सा हो । अनुस्यूत । उ०—जैसे ततुहि पट लै बाना । वोत प्रोत सा ततु समाना ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १११ ।

वोद—वि० [स०] आर्द्र । गोला ।

वोदर(उ)^६—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० उदर अथवा दश०] दे० 'उदर' । उ०—लौद लचीली लौ लचति घालत नहि सकुचात । लगि जैहै वोदर लला वहै क्रसोदर गात ।—स० सप्तक, पृ० २६१ ।

वोदार—सञ्ज्ञा पु० [स०] मुग्धासिंघी । ककुष्ठ ।

वोदारना^७—क्रि० स० [स० अवधारण] ओदारना । फाड़ना । उ०—खभ ते फारि वोदार दोहरी नख ते डारेव चीर ।—सत० दरिण, पृ० १९६ ।

वोदाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली जिसे बोधारी कहते हैं ।

वोदर(उ)^८—सञ्ज्ञा पु० [स० उदर] दे० 'उदर' ।

वोदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] कफ का एक भेद । उ०—कफ भी अवलुपक, क्लेदक, वोदक, तर्पक और श्लोपक इन पाँच भेद से रहता है ।—माधव०, पृ० ५८ ।

वोन^९—सञ्ज्ञा स्त्री० [प्रा० वोड्डिया] कपर्दिका । कोडी । उ०—अवतम इक खव सोन । बिस कक आमिय वोन ।—पृ० रा०, ६१ । १४८ ।

वोनतिसा^{१०}—वि० [स० ऊनत्रिश, प्रा० ओणतिस] दे० 'उनतीम' । उ०—वोनतिस अक्षर तापर भेजा सिर्जनहार । तेहि करता कहँ सुमिरहु मेरवै मित्र तोहार ।—इद्रा०, पृ० १६१ ।

वोपदेव—सञ्ज्ञा पु० [स०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो व्याकरण के ज्ञाता एवं ग्रन्थनिर्माता थे ।

विशेष—इनका लिखा व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ मुग्धवोध है । कविकल्पद्रुम तथा और भी इनके लिखे अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं । ये हेमाद्रि के समकालीन थे और देवगिरि के यादव राजा के दरबार के मान्य विद्वान् रहे । इनका समय तेरहवीं शती का पूर्वार्ध मान्य है ।

वोपना^{११}—क्रि० अ० [प्रा० ओप्या (= शाण), हि० ओप] चमकना । दीप्त होना । ओपना । उ०—उवटन उवटि अंगन अन्हवाई । वोपी दामिनि लोपी माई ।—नद० ग्र०, पृ० १२२ ।

वोवरा^{१२}—सञ्ज्ञा पु० [म० उपविवर, हि० ओवरी अथवा म० उपसगृह] छाटा घर । छोटा मकान । मकान का एक छोटा भाग । कोठरी । उ०—ता वोवरा महल अटारी । गइया मनुपहु वृष्णि तुम्हारी ।—पुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३२५ ।

वोम^{१३}—सञ्ज्ञा पु० [स० व्योम] आकाश । अंतरिक्ष । उ०—वोम अरावै गाजिए डोन हुआ सब दोड । आयी रंगी रामतण हाम वडी राठीड ।—रा० रु०, पृ० २८३ ।

वोर^{१४}—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० अवार (= किनारा)] तर्फ । दिशा । ओर । उ०—गैयाँ मिलवन मिस उठि भार । गहगोरी गमनी उहि वोर ।—नद० ग्र०, पृ० १७२ ।

वोर^{१५}—सञ्ज्ञा पु० ओर । अत । पार । छोर । उ०—परकाला अरु गजी गनत कहँ वोर न लहिए ।—सुदर०, ग्र०, भा० १, पृ० ७५ ।

वोरक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो लिखता हो । लेखक । २ कलाकार । चित्रकार [को०] ।

वोरट—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुद का फूल या पौधा ।

वोरता^{१६}—सञ्ज्ञा पु० [देश०] अश्वविशेष । दे० 'वोज' । उ०—नुकुरा और दुवाज वोरता है छवि दूनी ।—सुजान०, पृ० ८ ।

वोरपट्टी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गद्दा । तोसक । आस्तरण [को०] ।

वोरव—सञ्ज्ञा पु० [स०] बोरो धान ।

वोरखान—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का घोड़ा । संभवतः वोरता या वोज [को०] ।

विशेष—हेमचन्द्र के अनुसार यह लाल रंग का या हलके भूरे रंग का होता था । इसे वोरता, वोज, वोर और वेरहान भी कहते थे ।

वोल—सञ्ज्ञा पु० [स०] रमण्य । एक गव्य द्रव्य । दे० 'बोल' [को०] ।

वोलक—सञ्ज्ञा पु० [स०] जलावर्त । जलगुल्म । भव्य [को०] ।

वोल्लाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पले रंग के हों । चुनाह ।

वोष्ठ^{१७}—सञ्ज्ञा पु० [स० ओष्ठ] दे० 'ओष्ठ' ।

यौ०—वोष्ठपुठ=ओष्ठपुट । उ०—सन सहस्र सहिता भारत व्यास जी के वोष्ठपुठन तैं न्किसो है ।—पोद्दार अभि० ग्रंथ, पृ०, ४८४ ।

वोसूल^{१८}—सञ्ज्ञा पु० [अ० वसूल] दे० 'वसूल' । उ०—पाप तहसील वोसूल होने लगी ।—पल्लव०, भा० २, पृ० ३३ ।

वोहि^{१९}—सर्व० [हि० वह] दे० 'वह' । उ०—सावरो पीतम जहाँ वसै सो तित है वोहि गाँव री ।—नद० ग्र०, पृ० ३५१ ।

वोहित्य—सञ्ज्ञा पु० [म०] बड़ी नाव । जहाज ।

वौकाना^{२०}—क्रि० स० [देश०] १ देना । प्रदान करना । हवाले करना । २ भुक्ताना । लचकाना । उ०—कोई न दिखा तब अपने कलेजे से पलाश की डार मय गुच्छे के मुँह हाथ से वौका दिया ।—श्यामा० पृ० ८६ ।

वौद्ध—सञ्ज्ञा पु० [स०] बौद्ध [को०] ।

वौषट्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० अग्न्यास तथा पितरो या देवो को आहुति देने के समय प्रयुक्त होनेवाला एक उद्गार वा साकेतिक मन्त्र-विशेष [को०] ।

वौसाउ(७)र्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यवसाय] व्यवसाय । व्यापार ।
उ०—कै काहू की इच्छा पूरी । बल वौसाउ कीन्ह दुख दूरी ।
—चित्रा०, पृ० ३४ ।

व्यकुश—वि० [सं० व्यङ्कुश] दे० 'निरंकुश' ।

व्यग^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्ग] १ मंहुक । मेढक । २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें क्रोध या परिश्रम आदि के कारण वायु कुपित होने से मुँह पर छोटी छोटी काली फुसियाँ या दाने निकल आते हैं । ३ वह जिसका कोई अंग टूटा हुआ या विकृत हो । लुजा । विकलांग । ४. दे० 'व्यग' ।

मुहा०—व्यग की बौछार = बहुत से व्यगभरे वाक्य । व्यग की बहुत सी बातें । उ०—किसी ओर मे कही सम्प व्यग की बौछार आती ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६२ ।

५ एक रत्न लहसुनिया (को०) ६ लौह । इस्पात (को०) ।

व्यग^२—वि० १. शरीररहित । २ जो व्यवस्थित न हो । अव्यवस्थित ।
३ चक्रहीन । ४ लँगडा [को०] ।

व्यगक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्गक] पर्वत ।

व्यगता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यङ्गता] व्यंग का भाव ।

व्यगत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्गत्व] १ किसी अंग का न होना या खडित होना । खजता । २. दे० 'व्यगता' ।

व्यगार—वि० [सं० व्यङ्गार] अगारहीन । ज्वालारहित [को०] ।

व्यगार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्यग्य' ।

व्यगिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यङ्गिता] अगहीनता । विकलांगता [को०] ।

व्यगी—वि० [सं० व्यङ्गिन्] अगविशेष से रहित । अगहीन [को०] ।

व्यगुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्गुल] एक अगुल का माठवाँ भाग [को०] ।

व्यगुष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्गुष्ट] एक प्रकार का गुल्म ।

व्यग्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्ग्य] १ शब्द का वह अर्थ जो उसकी व्यजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो । व्यजना शक्ति के कारण प्रकट होनेवाला साधारण से कुछ विशिष्ट अर्थ । गूढ और छिपा हुआ अर्थ । विशेष दे० 'व्यजना' । २ वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ अर्थ हो । ताना । बोली । चुटकी ।

क्रि० प्र०—कहना ।—छोड़ना ।—बोलना ।—सुनना ।

व्यग्य^२—सञ्ज्ञा १. व्यजना वृत्ति द्वारा बोधित । परोक्ष सकेत द्वारा सूचित वा उपलब्धित [को०] ।

व्यग्यचित्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्ग्यचित्र] वह चित्र जो किसी व्यक्ति का परिहास करने के लिये विगाडकर इस प्रकार बनाया जाता है जिसे देखकर दर्शक को स्वभावतः हँसी आ जाय । (अं० कादंबरी) ।

व्यग्यदाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्ग्यदामन्] व्यग्य का बधन । उ०—शवरी, गज गरिकादिक, हुए कृष्ट प्रासारिक । पारिक में सासारिक अविधा हो व्यग्यदाम ।—पारावना, पृ० १४ ।

व्यग्यरूपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यङ्ग्यरूपक] वह रूपक जिसमें अप्रस्तुत योजना व्यक्त न होकर प्रच्छन्न हो । प्रच्छन्न रूपक । उ०—काव्य के वर्तमान समीक्षकों की दृष्टि में दबी हुई या प्रच्छन्न अप्रस्तुत योजना, जिसे हमारे यहाँ व्यग्यरूपक कहेंगे, बहुत उत्कृष्ट मानी जाती है ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० २२३ ।

व्यंग्योक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यङ्ग्य + उक्ति] परिहास वचन । चुभनी हुई बात । व्यंग्यपूर्वक कही गई बात [को०] ।

व्यज—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यञ्जन] १. परिचायक चिह्न । २ प्रकाशन ।
उ०—चदवधू सिर व्यंज धरे वसुमत्ति सु रज्जिय ।—पृ० रा०, २५।३५ ।

व्यजक^१—वि० [सं० व्यञ्जक] १. व्यजित करनेवाला । २ प्रकाशक [को०] ।

व्यजक^२—सञ्ज्ञा पुं० १ भावप्रकाशन की चेष्टा । २ वह शब्द जो गूढार्थ को प्रकट करे । ३ सकेत । ४ अभिनय [को०] ।

व्यंजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यञ्जन] १ व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया । २. शब्द की तीन शक्तियों में एक का नाम । विशेष दे० 'व्यजना' । ३. चिह्न । निशान । रूप । ४. अवयव । अंग । ५. मूँछ । ६. दिन । ७ पेड़ के नोचे का स्थान । उपस्थ । ८ तरकारी और साग आदि जो दाल, चावल, रोटी आदि के साथ खाए जाते हैं । ९ (साधारण बोलचाल में) पका हुआ भोजन । १०. वर्णमाला में का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो । हिंदी वर्णमाला में 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यंजन हैं । ११ गुप्तचर या गुप्तचरो का मंडल । वयस्कता । १२. उ०—जब पूर्वोक्त प्राभूप प्रकट हो जाय तब उसको रूप ऐसे कहते हैं और सस्थान, व्यंजन, लिंग, लक्षण, चिह्न और आकृति यह छह शब्द रूप के पर्याय हैं ।—माधव०, पृ० ५ । १३ निदान । लक्षण (को०) । १४ लिंगघातक या स्मारक चिह्न । जैसे, मूँछ, दाढ़ी, स्तन आदि (को०) । १५ स्मारक (को०) । १६ कपट वेश । छद्म वेश (को०) । १७ बलि पशु का सस्कार या पूजन (को०) । १८ पखा । व्यंजन (को०) ।

व्यंजनकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यञ्जनकार] रसोदया । व्यंजन बनानेवाला व्यक्ति । सूत्रकार ।

व्यंजनतालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जन + तालिका (= सूची)] विक्रेतव्य भोज्य वस्तुओं की सूची । (अ०) मेनू । व्यंजनिका ।

व्यंजनसधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनसन्धि] व्याकरण के अनुसार व्यंजन वर्णों का व्यंजन वर्ण के साथ होनेवाला संबंध ।

व्यंजनहारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनहारिका] १ पुराणानुसार एक प्रकार की अमंगलकारिणी शक्ति जो विवाहिता लक्ष्मियों के बनाए हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है । २ वह चुड़ैल जो स्त्रियों के भगस्य वाल उड़ा ले जाती है ।

व्यंजना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जना] १ प्रकट करने की क्रिया । २ शब्द की तीन प्रकार की शक्तियों या वृत्तियों में से एक प्रकार की शक्ति या वृत्ति ।

विशेष—व्यंजना शक्ति द्वारा शब्द या शब्दसमूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ का बोध होता

है। जैसे यदि कोई कहे कि 'तुम्हारे चेहरे पर पाजीपन भलक रहा है'। दूसरा व्यक्ति कहे कि 'मुझे आज ही जान पडा है कि मेरे चेहरे में दर्पण का गुण है' तो इससे यह अर्थ निकलेगा कि तुमने मेरे दर्पण रूपी चेहरे में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उसमें पाजीपन की भलक पाई है। शब्दों की जिस शक्ति से यह अभिप्राय निकला, वही व्यंजना शक्ति है। इसके शाब्दी और आर्थी ये दो भेद माने गए हैं और इन दोनों भेदों के भी कई उपभेद किए गए हैं।

व्यंजनावृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनावृत्ति] १ व्यंजनाशक्ति। २. साहित्य शास्त्र तथा अन्य शास्त्रों में स्वीकृत शब्द शक्ति का एक प्रकार जिसका बोधक शब्द व्यञ्जक कहा जाता है तथा जिससे बोध्य अर्थ व्यग्य कहा गया है। इसी शक्ति का एक रूप ध्वनि या ध्वनित अर्थ होता है। शृंगारादि रस ध्वन्यर्थ हैं। ३. व्यग्यपूर्ण लेखन वा कथन की शैली [को०]।

व्यंजनिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनिका] जिसमें व्यञ्जन हो। व्यञ्जन-तालिका।

व्यंजित—वि० [सं० व्यञ्जित] १ संकेतित। संकेत द्वारा कथित। २. चिह्नित। ३. व्यंजनावृत्ति द्वारा व्यक्त। व्यक्त [को०]।

व्यञ्जिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जिनी] १ व्यञ्जनसमूह। २. वह जो व्यञ्जन करे।

व्यम्भु(^१)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विम्ब्य, प्रा० विम्भ] दे० 'विम्ब्य'। उ०—किन्तु सकल चल अचल, अविठ अलसत चलतइ। चंदन नभ वन भवन, अंब गिरि व्यम्भ वसतइ।—पृ० रा०, २१। १५।

व्यंत—वि० [सं० व्यन्त] दूर रहनेवाला। दूरस्थ [को०]।

व्यंतर—१ सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यन्तर] जैनों के अनुसार एक प्रकार के पिशाच और यक्ष। २ अंतर। अवकाश [को०]। ३ अंतर न होना [को०]।

व्यदना(^२)—क्रि० सं० [सं० विद्] जानना। जान पडना। ज्ञात होना। उ०—मृदु मृदग धुनि संचरिय, अलि अलाप मुघ व्यद।—पृ० रा०, ६१। १७००।

व्यश देश० पुं० [सं०] पुराणानुसार विप्रचित्ति के पुत्र का नाम जो सिंहका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

व्यशक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।

व्यशुक—वि० [सं०] अशुक या वस्त्रहीन। नग्न। निर्वास्त्र [को०]।

व्यस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक राजस का नाम।

व्यस—वि० विस्तृत असवाला। चौड़े कंधेवाला [को०]।

व्यसक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ घूर्त। चालवाज। चालाक। २ ऐंद्र-जालिक। वाजीगर [को०]।

व्यसन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. ठगने या धोखा देने की क्रिया। २. वांटने की क्रिया। वितरण [को०]।

व्यसित—वि० [सं०] १. जो छला गया हो। वचित। प्रतारित। २. पराजित। पराभूत। ३. प्रभावित [को०]।

व्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ढकने या आवरण करनेवाला। आच्छादक। परदा करनेवाला [को०]।

व्यक्त—वि० [सं०] १. दिखाई देता या भलकता हुआ। प्रकट।

जाहिर। २. साफ। स्पष्ट। ३. स्थूल। बड़ा। ४. दुष्ट। पाजी। ५. विकसित [को०]। ६. विणिष्ट। प्रसिद्ध। विख्यात [को०]। ७. एकाकी। अकेला [को०]। ८. बुद्धिमान। विद्वान् [को०]। ९. विभूषित। सुसज्जित [को०]। १०. उष्ण [को०]।

व्यक्त—सञ्ज्ञा पुं० १ त्रिगुण। २ मनुष्य। आदमी। ३ कृत्य। कार्य। काम। ४ साम्प्र के अनुसार प्रचान, अहंकार, इद्रियाँ, तन्मात्र, महाभूत आदि चौबीस तत्व जो पुरुष से उद्भूत माने गए हैं।

विशेष—सात्त्विक के मत से प्रकृति अव्यक्त और पुरुष व्यक्त है। ५ उष्णता [को०]। ६ मुश्किल वा विद्वान् व्यक्ति [को०]। ७ जैन मतानुसार ग्यारह गुणाधिपों में से एक [को०]।

व्यक्तकृत्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोककार्य [को०]।

व्यक्तगधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यक्तगन्धा] १ नीली अपराजिता। २ सानजुही। ३ पिप्पली। पीपल।

व्यक्तगणित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'अकगणित'।

व्यक्तता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यक्त होने का भाव।

व्यक्ततारक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्यक्ततारका] १. जिसमें तारे चमकते हो। जैसे, आकाश। २. चमकते तारों या पुतलियोंवाला।

व्यक्तदृष्टार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो देखी हुई बात कहे। चरमदीद गवाह।

व्यक्तभुक्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यक्तभुज्] वह जो व्यक्त एवं दृश्यमान ससार को खाता हो। काल। समय [को०]।

व्यक्तभुज्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समय। वक्त।

व्यक्तराशि—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] अकगणित में वह राशि या अंक जो व्यक्त किया या बतला दिया गया हो। ज्ञात राशि।

व्यक्तरूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

व्यक्तलक्ष्म—वि० [सं० व्यक्तलक्ष्मन्] जिसके लक्ष्म प्रकट हो। व्यक्त या प्रकट चिह्नोवाला [को०]।

व्यक्तलवण—वि० [सं०] जिसमें लवण व्यक्त हो अर्थात् मात्रा से अधिक हो [को०]।

व्यक्तवाक्, **व्यक्तवाच्**—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुस्पष्ट कथन। स्पष्ट वाक्यावली।

व्यक्तविक्रम—वि० [सं०] जिसका पराक्रम सबको विदित हो [को०]।

व्यक्ताव्यक्त वि० [सं० व्यक्त + अव्यक्त] प्रकट और अप्रकट। जो इद्रियातीत हो। उ०—उपनिषदों में ब्रह्म के लिये व्यक्ताव्यक्त शब्द का प्रयोग किया गया है।—आचार्य०, पृ० ७६।

व्यक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकाशित या दृश्य होना। प्रकट होना। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का सारा शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है और जो किसी समूह या समाज का अंग समझा जाता है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। ३. मनुष्य। आदमी। जैसे,—कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सदा दूसरों का अपकार ही किया करते हैं।

विशेष—यद्यपि यह शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग है तथापि हिंदी में मनुष्य या आदमी के अर्थ में यह प्रायः बोला और लिखा जाता है।

४. भूतमात्र । ५. वस्तु । पदार्थ । चीज । ६. प्रकाश । ७. भेद । विभेद (को०) । ८. वास्तविक रूप या प्रकृति (को०) । ९. व्याकरण में लिंग तथा विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय (को०) ।

व्यक्तिगत—वि० [स०] १. स्वगत । २. निजी । एक व्यक्ति तक सीमित । उ०—इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता कम होती है ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ५५ ।

व्यक्तित्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. व्यक्ति होने का भाव । २. व्यक्ति का असामान्य गुण वा असाधारण विशेषता । किसी में असामान्य वा असाधारण रूप से पाई जानेवाली विशेषता ।

व्यक्तिमुखी—वि० स्त्री० [स०] व्यक्तिविशेष को रुचि या भावना से संबद्ध । एक व्यक्ति तक ही केंद्रित रहनेवाली । उ०—यह प्रणाली समीक्षक की व्यक्तिगत भावना या प्रतिक्रिया को व्यक्त करने का लक्ष्य रखता है, अतएव इसे व्यक्तिमुखी, भावात्मक या प्रभावाभिव्यजक शैली कहते हैं ।—नया०, पृ० ३८ ।

व्यक्तीकरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] प्रकाशन । प्रकटन । अभिव्यक्ति । उ०—साहित्य मनुष्य के विचारों, उसकी भावनाओं और कल्पनाओं का व्यक्तीकरण है ।—पा० सा० सि०, पृ० १ ।

व्यक्तीकृत—वि० [स०] जो व्यक्त किया गया हो । प्रकट किया हुआ ।

व्यक्तीभूत—वि० [स०] जो व्यक्त हुआ हो । प्रकट किया हुआ ।

व्यग्र—वि० [स०] १. घबराया हुआ । व्याकुल । २. डरा हुआ । भयभीत । ३. काम में फंसा हुआ । ४. उद्यमी । उद्योगी । ५. आसक्त । उ०—मार्ग में मिस स ठठकती ठहरती सी बार । गई व्यग्र शकुंतला नृप को निहार निहार ।—शकुं०, पृ० ६ । ६. आग्रही । ७. गातृशाल । जैसे चक्र (को०) ।

व्यग्र—सञ्ज्ञा पु० विष्णु ।

व्यग्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. व्यग्र होने का भाव । २. व्याकुलता ।

व्यग्रमना—वि० [स०] व्यग्रमनस् । व्याकुल मनवाला (को०) ।

व्यग्रहस्त—वि० [स०] जिसके हाथ किसी काम में लगे हों । काम में फंसा हुआ (को०) ।

व्यज—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यजन । पखा (को०) ।

व्यजन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. हवा करने का पखा । उ०—कभी विपिन में हमें व्यजन का पडता नहीं प्रयोजन है ।—पंचवटी, पृ० १० । २. पखे के काम में आनेवाला कोई वस्तु जिससे हवा का जा सक । ३. पखा झूलना (को०) ।

व्यजनक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यजन' (को०) ।

व्यजनक्रिया—सञ्ज्ञा पु० [स०] पखा झूलने का कार्य ।

व्यजनचामर—सञ्ज्ञा पु० [स०] चमरी गाय को वह पूँछ जो पखे की तरह झली जाता है । चवर (को०) ।

व्यजनी—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यजनेत् । वह पशु जिसकी पूँछ के बालों से व्यजन (चामर) बनता है (को०) ।

व्यज्य—वि० [स०] जिसका बोध शब्द की व्यजना शक्ति के द्वारा हो ।

व्यज्य—सञ्ज्ञा पु० दे० 'व्यग्र' ।

व्यडंवक—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यडम्बक] रेंड का पेड़ । एरंड ।

व्यडवन—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यडम्बन] रेंड का पेड़ ।

व्यड—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्याडि' ।

व्यति—सञ्ज्ञा पु० [स०] घोड़ा ।

व्यतिकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. व्यसन । २. विनाश । बरबादी । ३. मिश्रण । मिलावट । ४. व्याप्ति । संबध । लगाव । तन्मन्त्रका । ६. समूह । झुंड । ७. रगड़ । घपण (को०) । ८. अंतराय । विघ्न । रुकावट (को०) । ९. घटना । घृत्तात (को०) । १०. सुश्रवसर । सुयोग (को०) । ११. विनिमय । परिवर्तन । अदल बदल (को०) । १२. ज्ञाभ (को०) । १३. ध्यानाकर्षण (को०) ।

व्यतिकर—वि० १. पारस्परिक । २. व्यापक विस्तारवाला । ३. निकट । समीप । आसन्न (को०) ।

व्यतिकरित—वि० [स०] १. व्यतिकर युक्त । २. मिश्रित । ३. आपूर्ण । अभिव्याप्त (को०) ।

व्यतिकीर्ण—वि० [स०] १. घुला मिला । मिश्रित । २. संयुक्त । एकीभूत (को०) । ३. प्रकापित । संक्षुब्ध (को०) ।

व्यतिकृत—वि० [स०] परिव्याप्त (को०) ।

व्यतिक्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. क्रम में होनेवाला विपर्यय । सिलसेले में होनेवाला उलटफेर । २. बाधा । विघ्न । ३. उल्लंघन । अतिक्रमण (को०) । ४. उदासनाता । उपेक्षा । अवहेलना (को०) । ५. असंगति (को०) । ६. पाप । अपराध (को०) । ७. विपत्ति । दुर्भाग्य (को०) । ८. रातिभग (को०) ।

व्यतिक्रमण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. क्रम में विपर्यय करना । सिलसेले में उलट फेर करना । २. पाप या अपराध करना (को०) ।

व्यतिक्रमी—वि० [स०] व्यातिक्रमिन् । व्यतिक्रम या राति भग करनेवाला । अपराधा (को०) ।

व्यतिक्रात—वि० [स०] व्यातिक्रान्त । १. जिसमें किसी प्रकार का विपर्यय हुआ हो । २. विताया हुआ (को०) ।

व्यतिक्रात—सञ्ज्ञा पु० १. उल्लंघन । २. पाप (को०) ।

व्यातिक्राति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्यातिक्रान्ति । १. क्रम में होनेवाला विपर्यय । व्यातिक्रम । २. बुराई (को०) ।

व्यतिक्षेप—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. कहाँधुना । वाद विवाद । २. अदल बदल विनिमय (को०) ।

व्यतिगत—वि० [स०] बाता हुआ । व्यतीत (को०) ।

व्यातचार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. पाप कम करना । पाप का आवरण करना । २. दाप । ऐव ।

व्यतिपात—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. बहुत बड़ा उन्माद । भारी उपद्रव या खराबा । २. ज्यातप के अनुसार यागविशेष । दे० 'व्यापात' ।

व्यतिभिन्न—वि० [स०] जो अलग न हो सक । परस्पर मिला हुआ । पूरणतः घुला मिला (को०) ।

व्यतिभेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. प्रवेश । व्याप्ति । २. एक साथ होने वाला । स्फाट (को०) ।

व्यतिमूढ़—वि० [स०] कर्तव्यमूढ़ । अचक्काया हुआ (को०) ।

व्यतियात—वि० [स०] गत । गुजरा हुआ ।

व्यतिरिक्त^१—वि० [स०] १ भिन्न । अलग । २ अधिक । अतिशय ।
बड़ा हुआ । ३ रुद्ध । रोका हुआ (को०) । ४ मुक्त (को०) ।
५ अपवादित । जिसका अपवाद किया गया हो (को०) ।

व्यतिरिक्त^२—क्रि० वि० अतिरिक्त । सिवा । अनावा ।

व्यतिरिक्तक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की उडान (को०) ।

व्यतिरिक्तता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्यतिरिक्त होने का भाव या धर्म ।
विभिन्नता ।

व्यतिरेक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अभाव । २ भेद । अंतर । भिन्नता ।
वैषम्य । असमानता । ३ वृद्धि । बढता । ४ अतिक्रम । ५
एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में
कुछ और भी विशेषता या अविशेषता का वर्णन होता है । उ०—
(क) कहत सब वैदी दिए अक दस गुनो होत । तिय लिलार
वैदा दिए अगनित बढत उदोत । (ख) निज परताप द्रवहि
नवनीता । पर दुख द्रवहि सो सत पुनीता । ६ वियोग ।
राहित्य (को०) । ७ निष्कासन । अपवर्जन (को०) । ८ न्याय में
असंबन्ध पदार्थ । अन्वय का उलटा (को०) । ९ तुलना में
वैपरीत्य दिखाना (को०) । १० एक प्रकार का व्याप्ति (को०) ।

व्यतिरेकी—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यतिरेकिन्] १ वह जो किसी को अतिक्र-
मण करके जाता हो । २ वह जो पदार्था में विभिन्नता या
विशेषता उत्पन्न करता हो । ३. अभावात्मक (को०) । ४
भिन्न । विपरीत (को०) ।

व्यतिरेचन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दो वस्तुओं या व्यक्तियों में अंतर दिखाने
की क्रिया (को०) ।

व्यतिरोपित—वि० [स०] १ अधिकार रहित किया हुआ । २
निकाला हुआ (को०) ।

व्यतिलघी—वि० [स० व्यतिलङ्घन्] फिसलनेवाला (को०) ।

व्यतिविद्ध—वि० [स०] १ आलिंगित । गुफित । २. विद्ध । छिद्रित
(को०) ।

व्यतिव्यस्त—वि० [स०] उलभा हुआ । अत्यंत व्यस्त (को०) ।

व्यतिषग—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यतिषङ्ग] [वि० व्यतिषक्त] १ मिलाना ।
२. विनिमय । बदला । ३ सयोग (को०) । ४ परस्पर बाँधना ।
एक साथ गूँथना (को०) । ५ परस्पर भिडना (को०) । ६
अभिप्रेक्षण । शोषण (को०) ।

व्यतिपक्त—वि० [स०] १. मिला हुआ । मिश्रित । २ आसक्त ।
३ एकमेव । ओतप्रोत । अनुस्यूत (को०) । ४ जिनमें अतविवाह
हुआ हो (को०) ।

व्यतिहार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विनिमय । परिवर्तन । बदला । २.
गाली गलौज । ३ मारपीट ।

व्यतीकार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ व्यसन । २ विनाश । बरबादी । ३
मिश्रण । ४ लडना भिडना (को०) ।

व्यतीत—वि० [स०] १. बीता हुआ । गत । जैसे,—बहुत दिन व्यतीत
हो गए, वहाँ से कोई उत्तर नहीं आया । उ०—इसी प्रकार

कभी व्यतीत वर्ष में लेकर ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१ ।
२ मृत । मरा हुआ (को०) । ३ विसर्जित । परित्यक्त (को०) ।
४ उपेक्षित । अवज्ञात (को०) । ५ लापरवाह । दीधमूढ़ी
(को०) ।

व्यतीतकाल—वि० [म०] जिसका समय या अवसर बीत चुका हो ।
असामयिक (को०) ।

व्यतीतना—क्रि० अ० [स० व्यतीत + हिं० ना (प्रत्य०)] बीतना ।
गत होना । व्यतीत होना ।

व्यतीपात—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. बहुत बड़ा उत्पात । भारी उपद्रव ।
जैसे—भूकंप, उल्कापात आदि । २ अपमान । वेइजती ।
३. योगतिथि में विष्कम्भ आदि सत्ताइस योगों में से १७वाँ
४ जिसमें यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध
है । ५ एक प्रकार का योग जो अमावास्या के दिन रविवार
या श्रवण, धनष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अथवा मृगशिरा नक्षत्र
होने पर होता है । इस योग में गंगास्नान का बहुत माहात्म्य
है । ५ पूर्णतः विचलन या प्रयाण (को०) ।

व्यतीहार—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ विनिमय । परिवर्तन । बदला ।
२ आपस में गाला गलौज, मारपीट या इसी प्रकार का और
काम करना ।

व्यत्यय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्यतिक्रम' ।

व्यत्ययग—वि० [स०] विपरीतगामी । उलटा चलनेवाला (को०) ।

व्यत्यस्त—वि० [स०] १ व्यतिक्रांत । २ असगत । ३ विपरीत ।
विरोधी । ४ इस प्रकार रखी हुई दा वस्तुएँ जो एक दूसरों
को काटती हो ।

व्यत्यास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्यतिक्रम' ।

व्यथक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो व्यथा उत्पन्न करता हो । पीडा
देनेवाला ।

व्यथन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. व्यथा । पीडा । तकलीफ । २ वह जो
व्यथा उत्पन्न करता हो । पीडा देनेवाला । ३. कपन (को०) ।
४ स्वर का परिवर्तन (को०) । ५ छेदना (को०) ।

व्यथयिता—वि० [स० व्यथयितृ] १. पीडा देनेवाला । २ दंडित
करनेवाला (को०) ।

व्यथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पीडा । वेदना । तकलीफ । २ दुःख ।
क्लेश । ३ भय । डर । ४ विक्षोभ । अशांति (को०) ।
५ रोग (को०) । ६ हानि । क्षति (को०) ।

व्यथातुर—वि० [स०] पीडित ।

व्यथात्नवत्—वि० [स०] १ व्यथायुक्त । पीडायुक्त । २. भयग्रस्त ।
भीत । ३. क्षुब्ध । ४. दुःखित (को०) ।

व्यथित—वि० [स०] १ जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो ।
२ दुःखित । रजोदा । ३. जिसे किसी प्रकार का शोक प्राप्त
हुआ हो । ४. भीत । डरा हुआ ।

व्यथी—वि० [स० व्यथिन्] व्यथित (को०) ।

व्यय—वि० [सं०] १. व्यय देने योग्य । २. भय उत्पन्न करनेवाला ।
भयानक ।

व्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोट पहुँचाना । आहत करना । २. भेदन ।
छिद्र करना । ३. आघात [को०] ।

व्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेधने की क्रिया । विद्ध करना । योचना ।
२. भागेट [को०] । ३. वह जो विद्ध करता हो । वेधक [को०] ।

व्ययन—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त का गिरना या बहना । रक्तस्राव [को०] ।

व्यधिकरण—संज्ञा पुं० [सं०] भिन्न आधार पर होना ।

व्यधिकरण—वि० १. व्याकरण में अन्य कारक में संबद्ध । २. भिन्न
आधारवाला [को०] ।

व्यधिज्ञेय—संज्ञा पुं० [सं०] निदा । शिकायत ।

व्यध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रत्येक । २. लक्ष्य [को०] ।

व्यध्य—वि० वेधने योग्य । भेदन करने योग्य [को०] ।

व्यध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. गलत रास्ता । बुरी राह । कुपथ । २.
मार्ग का मध्य [को०] ।

व्यनुनाद—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्र प्रतिय्वनि । ऊँची गूँज [को०] ।

व्यपकार्प—संज्ञा पुं० [सं०] निदा । अपवाद [को०] ।

व्यपकृष्ट—वि० [सं०] १. दूर हटाया हुआ । पृथक् किया हुआ ।
२. अपवादित जिसकी निदा की गई हो [को०] ।

व्यपगत—वि० [सं०] १. बीता हुआ । गया हुआ । २. रहित । वंचित ।
३. गिराया हुआ । मुक्त । ४. हटाया हुआ । दूर किया हुआ ।

व्यपगम—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीतना । व्यतीत होना । ३. गमन ।
जाना । प्रस्थान [को०] ।

व्यपत्रप—वि० [सं०] लज्जाहीन । बेहया [को०] ।

व्यपदिष्ट—वि० [सं०] १. निदिष्ट । तिरस्कृत । २. दिखाया हुआ ।
निदिष्ट । ३. वहने या व्याज के रूप में प्रतिपादित [को०] ।

व्यपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. निदा । शिकायत । २. व्याख्या । विवरण ।
(जन) । ३. सूचना । संदेश [को०] । ४. नामकरण । नाम
रचना [को०] । ५. नाम । अर्थ । उदाहरण [को०] । ६.
परिवार । वंश [को०] । ७. रथात् । यन्त्र । प्रसिद्ध [को०] । ८.
पुत्र । पशु । चान [को०] । ९. पातलाजी । पातलाकी [को०] ।
१०. सगुप्ति । नगौरव । पितामह [को०] ।

व्यपदेशक—वि० [सं०] व्यपदेश करनेवाला । नाम का निर्देश करने-
वाला [को०] ।

व्यपदेशी—वि० [सं० व्यपदेशिन्] १. सूचक । २. नाम का उदाहि-
तवाला । ३. गवाह या निर्देशानुसार पत्रवाला [को०] ।

व्यपदेश्य—वि० [सं०] १. व्यपदेश का निदा व सामक । निघ ।
२. जिसका निर्देश किया जाय [को०] ।

व्यपदष्ट—वि० [सं० व्यपदष्ट] १. निर्देश । निर्देश करनेवाला ।
२. पत्नी । पत्नी । पत्नी [को०] ।

व्यपपाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनाश । बरबादी । २. दाह देना ।
संघात । ३. दुर्घटना । आघात [को०] । ४. हत्या । हूँ
वरण [को०] ।

व्यपपायन—संज्ञा पुं० [सं०] दाह देना । दाह ।

व्यपनीत—वि० [सं०] दूर हटाया हुआ । दूर [को०] ।

व्यपनुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] याग । दूर करना या हटाना [को०] ।

व्यपमूर्धा—वि० [सं० व्यपमूर्ध] दूर्ध्व [को०] । निर्ध्व [को०] ।

व्यपयान—संज्ञा पुं० [सं०] पत्रवाही । भानवा पत्रवा । पत्रवाही ।
हवा होना [को०] ।

व्यपरोषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० व्यपरोषित] १. घृणित । २.
घाटा । ३. जटिल कलना । ४. दूर करना । हटाना । ५.
आगत पहुँचना । पीछा पहुँचना । (अ०) ।

व्यपवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. अलग होना । अनाजन । विभाग ।
२. छोड़ना । त्याग । ३. पृथक् । अलग ।

व्यपवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० व्यपवर्जित] १. आना । आग ।
२. निराशा । ३. रण । दान ।

व्यपवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] व्यापन । लीटना [को०] ।

व्यपवृत्त—वि० [सं०] १. प्रत्येक का पृथक् किया हुआ । २. विभाजित ।
बाँटा हुआ [को०] ।

व्यपसारण—संज्ञा पुं० [सं०] दूर करना । निराकरण [को०] ।

व्यपाकृत—वि० [सं०] रचि । रचि [को०] ।

व्यपाकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूर करना । निराकरण । २.
अपहन । गोपन । छिपाना । ३. अनाजि । अनाज ।
अनाज करना [को०] ।

व्यपाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. अज । लज । समति । २. अनुसंधान ।
गमन [को०] ।

व्यपाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रयस्थान । २. आश्रय । ३.
आश्रय । ४. प्रस्थान । ५. अनुकूल । पराका । ६. करना
लेना । मारा लेना । निर्देश होना । ७. आना ।

व्यपाश्रय—वि० १. आश्रयहीन । २. आना भराता रखनेवाला [को०] ।

व्यपाश्रयणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निवृत्त । विगत [को०] ।

व्यपाश्रित—वि० [सं०] विगत आश्रय प्राप्त किया हुआ । जिसने आश्रय
या निदा हा [को०] ।

व्यपास्त—वि० [सं०] निर्गमिन् । यही [को०] ।

व्यपेक्ष—वि० [सं०] १. साक्षात् या आन्तरिक साक्षात् । साक्षात् ।
साक्षात् । २. उच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।
४. निर्पेक्ष । निर्गमिन् [को०] ।

व्यपेक्षक—वि० [सं०] नाकमार्ग । अनाहत । आश्रय [को०] ।

व्यपेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] आना । आश्रय । अनाद [को०] ।

व्यपेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साक्षात् । २. उच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।
आश्रय । ३. अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।
४. अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।
५. अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।

व्यपेक्षित—वि० [सं०] १. दिग्गोपना या अत्युच्च । अत्युच्च ।
२. दिग्गोपना या अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।
३. अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च । अत्युच्च ।

व्यपेत—वि० [स०] १. मुक्त। अलग किया हुआ। २. गत। ३. नष्ट।
४. प्रतीप। विपरीत। अमाधु। दुष्ट [को०]।

यौ०—व्यपेतकल्प = जो दोष या पापमुक्त हो। व्यपेतघृण =
द्वारहित। व्यपेतधर्म = धर्महीन। वीरवारहित। जिसे ढाढस न
हो। व्यपेतभय = निर्भय। व्यपेतभी = निडर। निर्भय।
व्यपेतमद = जिसका गर्व नष्ट हो गया हो। निरभिमान।
व्यपेतहर्ष = हर्षरहित। विगतहर्ष।

व्यपोढ—वि० [स०] १. दूरीकृत। दूर किया हुआ। २. प्रकटित।
व्यक्त। दिखाया हुआ। ३. विपरीत। अननुकूल [को०]।

व्यपोह—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. विनाश। बरवादी। २. दूर करना।
निवारण [को०]। ३. प्रत्याख्यान। अस्वीकार [को०]। ४.
समूह। निश्चय। चय [को०]।

व्यपोह्य—वि० [स०] स्वीकार न करने योग्य [को०]।

व्यभिचरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. दे० 'व्यभिचार'। २. निश्चयहीनता।
आनश्चय। सदेह [को०]।

व्यभिचार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. बुरा या दूषित आचार। दुष्कर्म।
कदाचार। बदचलन। २. स्त्रा का परपुरुष से अथवा पुरुष
का परस्त्री से अनुचित संबन्ध। छिनाला। २. व्याघ्र के
अनुसार साध्य के न होने पर भी हेतु की उपस्थिति। साध्य-
रहित हेतु [को०]। ४. अतिक्रमण। उल्लंघन [को०]। ५.
अलग होने की शक्ति। विच्छेद्यता [को०]। ६. असंगति।
अपवाद। ७. पाप। दोष [को०]।

व्यभिचारकृत्—वि० [स०] परस्त्रीगामी। व्यभिचारी [को०]।

व्यभिचारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दुराचार करनेवाली स्त्री। असती।
कुलटा। पुश्चली। २. अस्थिर बुद्धि। बुद्धि जो स्थिर न रहे
[को०]।

व्यभिचारिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्यभिचार'।

व्यभिचारित्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यभिचारी होने का भाव। दे०
'व्यभिचार'।

व्यभिचारिभाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] साहित्य में मुख्य भाव की पुष्टि
करनेवाले वे भाव जो इसके उपयोगी होकर जल के तरंगों
की भाँति उनमें संचरण करते हैं। इनकी संख्या ३३ है। दे०
'संचारी'।

व्यभिचारी—सञ्ज्ञा पु० [स० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १.
वह जो अपने मार्ग से गिर गया हो। मार्गभ्रष्ट। उ०—हे प्रभु
आविर्गत कला तुम्हारी। हम हैं कीट जीव व्यभिचारी।—कबीर
सा०, पृ० ४३६। २. वह जिसकी चालचलन अच्छी न हो।
बदचलन। ३. वह जो परास्त्रियों से संबन्ध रखता हो। पर-
स्त्रीगामी। ४. दे० 'संचारी' या 'व्यभिचारिभाव'। ५. वह जो
नियमविरुद्ध हो। असंगत [को०]। ६. असत्य। मिथ्या
[को०]। ७. वह जो स्थिर न रहे। अस्थायी [को०]। ८. वह
जो किसी व्यवस्था, नियम आदि का भंग या उल्लंघन करता हो
[को०]। ९. वह शब्द जिसके कई गौण अर्थ हो।

व्यभिहास—सञ्ज्ञा पु० [स०] उपहास। ठट्ठा। मजाक।

व्यभिचार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. अतिक्रमण। उल्लंघन। २. कुर्म।
अनैतिक आचरण। ३. परिवर्तन। दे० 'व्यभिचार' [को०]।

व्यभीमान—सञ्ज्ञा पु० [स०] आत या गलत धारणा [को०]।

व्यभ्र—वि० [स०] निर्मेष। निरभ्र। विना बादल का [को०]।

व्यम्ल—वि० [स०] अम्लरहित। जिसमें अम्लता न हो [को०]।

व्यय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. किसी पदार्थ का, विशेषतः धन आदि का, इस
प्रकार काम में आना कि वह समाप्त हो जाय। किमी चीज का
किसी काम में लगना। खर्च। सरफा। खफत। जैसे,—(क)
उनका व्यय १००) मासिक है। (ख) व्यय अपनी शक्ति व्यय
मत करो। २. नाश। बरवादी। ३. दान। ४. छोड़
देना। परित्याग। ५. वृहस्पति के चार के एक वर्ष या सवत्सर
का नाम। ६. महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ७.
रुकावट। अट्ठवन [को०]। ८. अपव्यय। फजूनखर्ची [को०]।
९. धन। संपत्ति। १०. जन्मकुंडली में लग्न से १२वाँ स्थान
[को०]। ११. व्याकरण में विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय। शब्द-
रूपांतर [को०]।

व्ययक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो व्यय करता हो। व्यय करनेवाला।

व्ययकरण, व्ययकरणक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह कर्मचारी जो वेतन
वांटने का काम करे [को०]।

व्ययगत—वि० [स०] सब कुछ व्यय कर डालनेवाला [को०]।

व्ययगामी—वि० [स० व्ययगामिन्] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लग्न
स १२ वें स्थान में गमन करनेवाला। उ०—उनका सौम्य
गृह बुध व्ययगामी होकर निर्बल हो गया है।—शुक्ल अभि०
ग्र०, पृ० ६८।

व्ययगुण—वि० [स०] सब कुछ खर्च करनेवाला।

व्ययगृह—सञ्ज्ञा पु० [स०] ज्योतिष के अनुसार लग्न से बारहवाँ स्थान
[को०]।

व्ययन—सञ्ज्ञा पु० [स०] खर्च करना। २. बर्बाद करना। नष्ट
करना [को०]।

व्ययपराङ्मुख—वि० [स०] कृपण [को०]।

व्ययमान—वि० [स०] अपव्यय करनेवाला [को०]।

व्ययशाली—वि० [स० व्ययशालिन्] खर्च करनेवाला। शाहखर्च।
अमितव्ययी [को०]।

व्ययशील—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत अधिक खर्च करता हो।
खर्चालि स्वभाव का। शाहखर्च।

व्ययसह—वि० [स०] (वह कोश या खजाना) जो रक्ति न हो [को०]।

व्ययसहिष्णु—वि० [स०] धन की हानि या अधिक व्यय को बर्दाश्त
करनेवाला [को०]।

व्ययित—वि० [स०] १. खर्च किया हुआ। व्यय किया हुआ। २.
बर्बाद। नष्ट [को०]।

व्ययी—सञ्ज्ञा पु० [स० व्ययिन्] वह जो बहुत व्यय करता हो। खूब
खर्च करनेवाला। शाहखर्च।

व्ययु—वि० [स०] १. जलरहित। जलहीन। २. सताया हुआ।
उत्पीड़ित [को०]।

व्यर्थ^१—वि० [स०] १. जिसका कोई अर्थ या प्रयोजन न हो। विना मतलब का। निरर्थक। २. जिसका कोई अर्थ या मतलब न हो। विना माने का। अर्थरहित। ३. जिसमें किसी प्रकार लाभ न हो। ४. संपत्तिहीन। धनहीन (को०)। ५. असगत (को०)।

व्यर्थ^२—क्रि० वि० विना किसी मतलब के। फजूल। यो ही। जैसे,— वह दिन भर व्यर्थ घूमा करता है।

व्यर्थक—वि० [स०] व्यर्थ। निष्फल (को०)।

व्यर्थता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्यर्थ होने का भाव।

व्यर्थनामक—वि० [स०] दे० 'व्यर्थनामा' (को०)।

व्यर्थनामा—वि० [स०] व्यर्थनामन् जिसमें नाम के अनुरूप गुण न हो। जिसका नाम व्यर्थ हो (को०)।

व्यर्थयत्न—वि० [स०] जिसके लिये प्रयत्न बेकार हो (को०)।

व्यलीक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वह अपराध जो काम के कारण किया जाय। अपराध। कसूर। ३. डाँट डपट। फटकार। ४. दुःख। कष्ट। तकलीफ। ५. पीठमर्द। विट। ६. विलक्षणता। अद्भुतता। ७. कपट। छल। उ०—भोर भयो जागहु रघुनन्दन। गत व्यलीक भगतनि उर चदन।—तुलसी (शब्द०)। ८. मिथ्यापन (को०)। ९. व्युत्क्रम। वैपरीत्य (को०)। १०. कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु (को०)। ११. कामुक। रसिक नागर (को०)। १२. वह जो अप्राकृतिक मंथन कराए। लौंडा (को०)। १३. दोष। पाप (को०)।

व्यलीक^२—वि० १ जो अच्छा न हो। अप्रिय। २ दुःख देनेवाला। कष्टदायक। ३. विना जान पहिचान का। अपरिचित। ४. विलक्षण। अद्भुत। अजीब। ५. मिथ्या। झूठा। असत्य (को०)। ६. जो असत्य या अलीक न हो (को०)। ७. अकरणीय (को०)।

व्यलीक निःश्वास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शोक का उच्छ्वास। लबी सांस (को०)।

व्यवकलन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ एक श्रक या रकम में से दूसरा श्रक या रकम घटाना। बाकी निकालना। २ अलग करना। पृथक्ता। अलगाव (को०)।

व्यवकलित^१—वि० [म०] १. घटाया हुआ। बाकी निकाला हुआ। २ पृथक् किया हुआ। वियोजित (को०)।

व्यवकलित^२—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'व्यवकलन' (को०)।

व्यवकिरणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] घालमेल। मिश्रण (को०)।

व्यवकीर्ण—वि० [स०] १. अलग किया हुआ। निकाला हुआ। जुदा किया हुआ। फैलाया हुआ। २. मिश्रित। पूरित। भरा हुआ (को०)।

व्यवक्रोशन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ निंदा। २ कहासुनी। गालीगलौज। तू तू मैं मैं (को०)।

व्यवगाढ—वि० [स०] व्यवगाढ हुआ हुआ। निमज्जित। निमग्न (को०)।

व्यवगृहीत—वि० [स०] नमोक्त। वित्त किया हुआ। भुकाया या नीचा किया हुआ (को०)।

व्यवच्छिन्न—वि० [स०] १ अलग अलग। जुदा। २ विभाग करके अलग किया हुआ। विभक्त। ३ निर्धारण किया हुआ। निर्धारित। निश्चित। ४ अवरुद्ध। वाचित (को०)। ५. विशेषित। विशिष्ट। अंकित (को०)।

व्यवच्छेद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २ विभाग। खंड। हिस्सा। ३. विराम। ठहरना। ४. निवृत्ति। छुटकारा। उ०—अपने को समझना चाहती हूँ, इससे अना ही व्यवच्छेद करती चलूँगी।—मुखदा, पृ० १३। ५ (वाण आदि) छोड़ना। चलाना। नखना (को०)। ६ नाश (को०)। ७. निर्धारण। निश्चयन (को०)। ८. ग्रथादि का अव्याय, खंड या विभाग (को०)। ९ विशेष निर्देश। विशिष्टता निर्देशन (को०)। १०. (शव आदि का) काटना। चीरफाड़। अग छेदन (को०)। ११. विशिष्टता। वैशिष्ट्य (को०)।

व्यवच्छेदक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो व्यवच्छेद या अलग करता हो। व्यवच्छेदविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शरीर विज्ञान। शरीर रचना-विज्ञान (को०)।

व्यवदात—वि० [स०] स्वच्छ। अवदात। निर्मल (को०)।

व्यवदान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] किसी पदार्थ को शुद्ध और साफ करने की क्रिया। सस्कार। सफाई।

व्यवदीर्ण—वि० [स०] १. विदीर्ण। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। छिन्न भिन्न। २. व्यग्र। विह्वल। विक्षिप्त। आत (को०)।

व्यवधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवधान। परदा। २ वह जो बीच में आ पड़े (को०)। ३ छिपाव। गोपन। दुराव (को०)।

व्यवधाता—वि० [स०] व्यवधातृ १ व्यवधान उपस्थित करनेवाला। २ अलग करनेवाला (को०)।

व्यवधान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वह चीज जो बीच में पड़कर आड करी हो। परदा। उ०—ममावि शरीर के व्यवधान को पार कर आत्मा से परमात्मा का सयोग कराने का साधन है।—ज्ञानदान, पृ० १७। २. भेद। विभाग। खंड। ३. विच्छेद। अलग होना। ४. खतम होना। समाप्ति। ५. बाधा (को०)। ६. अंतराल। अवकाश (को०)। ७. छिपाव। दुराव (को०)। ८. ढकना। आवरण (को०)। ९. व्याकरण में किसी मात्रा या अक्षर का बीच में आ पड़ना (को०)।

व्यवधायक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ वह जो आड में जाता हो। छिपने-वाला। गायब होनेवाला। २ वह जो किसी को ढकता या छिपाता हो। आड करने या छिपानेवाला। ३ वह जो मध्य में स्थित हो। मध्यवर्ती।

व्यवधारण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह अवधारण या निश्चय करना।

व्यवधि—सञ्ज्ञा पुं० [म०] व्यवधान। परदा। आड। ओट।

व्यवधूत—वि० [स०] वीतराग (को०)।

व्यवभासित—वि० [स०] प्रकाशित किया हुआ (को०)।

व्यवलोकि—वि० [स०] देखा हुआ। दृश्य (को०)।

व्यवशाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ छोड़ देना । २ त्याग । ३ पीछे की ओर गिरना या हटना ।

व्यवसर्ग—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ का विभाग करने की क्रिया । बाँट । २ मुक्ति । छुटकारा । ३ देना (को०) । ४. त्याग । परित्याग (को०) ।

व्यवसाय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह कार्य जिसके द्वारा किसी की जीविका का निर्वाह होता है । जीविका । जैसे,—दूमरो की सेवा करना ही उसका व्यवसाय है । २ रोजगार । व्यापार । जैसे—आजकल कपड़े का व्यवसाय कुछ मदा है । ३ कोई कार्य आरंभ करना । ४ निश्चय । ५. प्रयत्न । उद्योग । कोशिश । ६ उद्यम । काम धन्दा । ७ इच्छा । विचार । कल्पना । ८ अभिप्राय । मतम्ब । ९ विष्णु का एक नाम । १० शिव का एक नाम । ११ अवस्था । परिस्थिति (को०) । १२. आचरण । १३ कौशल । कृत्युक्ति (को०) । १४ डींग । शेखी (को०) । १५. प्रथम अनुभूति (को०) । १६ धर्म के एक पुत्र का नाम जो दक्ष की एक कन्या वपुस्त्र से उत्पन्न हुआ था (को०) ।

व्यवसायबुद्धि—वि० [स०] पक्के इरादावाला । दृढनिश्चयी (को०) ।

व्यवसायवर्ती—वि० [स० व्यवसायवर्तिन्] पक्के इरादे से काम करनेवाला (को०) ।

व्यवसायात्मक—वि० [स०] १ सकल्पयुक्त । निश्चयात्मक । दृढ । २ उत्साहयुक्त (को०) ।

व्यवसायात्मिका—वि० स्त्री० [म०] सकल्पमय । दृढ (को०) ।

व्यवसायात्मिकाबुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह बुद्धि जो निश्चयात्मक या दृढ हो । निश्चयात्मिका बुद्धि (को०) ।

व्यवसायी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० व्यवसायिन्] १ वह जो किसी प्रकार का व्यवसाय करता हो । व्यवसाय करनेवाला । २ रोजगार करनेवाला । रोजगारी । ३ वह जो किसी कार्य का अनुष्ठान करता हो ।

व्यवसायी^२—वि० १ उत्साही । उद्यमी । परिश्रमी । २ दृढ सकल्पवाला । धैर्यशाली । ३ किसी कार्य में सलग्न (को०) ।

व्यवसित^१—वि० [स०] १ जिसका अनुष्ठान किया गया हो । व्यवसाय किया हुआ । २ जो कोई काम करने के लिये तैयार हो । उद्यत । तत्पर । ३ जो निश्चय किया जा चुका हो । निश्चित । ५ धैर्यवान् । ६ ठगा हुआ । वचित (को०) । ७ उत्तरदायित्व लेनेवाला (को०) ।

व्यवसित^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ निश्चय । निर्धारण । २ छल । वचना (को०) ।

व्यवसिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवसाय । रोजगार । २ सकल्प । निश्चय (को०) । ३ प्रयास । प्रयत्न । उद्यम (को०) ।

व्यवस्तक—सञ्ज्ञा पु० [स०] किसी उक्ति या रचना के क्रम को बदल देना । उ०—किसी अन्य कवि की उक्ति के पहले और पीछे आनेवाले क्रम को बदलकर ग्रहण करना व्यवस्तक है ।—संपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २६३ ।

व्यवस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ है ।

मुहा०—व्यवस्था देना = पड़ितो आदि का यह बतलाना कि अमुक विषय में शास्त्रों का क्या मत अथवा आज्ञा है । किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना ।

२ चीजों को अलग अलग सजाकर या ठिकाने से रखना । ३ प्रवृद्ध । इतजाम । जैसे,—विवाह की सब व्यवस्था अपने ही हाथ में है । ४ स्थिर होने का भाव । स्थिरता । स्थिति । ५ कानून । जैसे—भारत सरकार के व्यवस्था सदस्य । ६ दृढता । दृढ आचार (को०) । ७ सहमति (को०) । ८ अवस्था । दशा (को०) । ९ सन्ध । स्थिति (को०) । १० पृथक्ता । अलगव (को०) । ११ निश्चित सीमा (को०) । १२ अव्यवसाय (को०) । १३ शर्त (को०) ।

व्यवस्थाता—सञ्ज्ञा पु० [स० व्यवस्थातृ] १ वह जो व्यवस्था करता है । व्यवस्था या इतजाम करनेवाला । २ निश्चय करनेवाला । वह जो किसी व्यवस्था का निश्चय करे । ३ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय में शास्त्रों की क्या आज्ञा है । शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला ।

व्यवस्थान—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ उपस्थित या अस्थिर होना । व्यवस्थिति । २ व्यवस्था । इतजाम । प्रवृद्ध । ३ विष्णु का एक नाम । ४ विधान (को०) । ५ दृढता (को०) । ६ अव्यवसाय (को०) । ७ पार्थक्य (को०) । ८ अवस्था (को०) ।

व्यवस्थानप्रज्ञप्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी सख्या का नाम ।

व्यवस्थापक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय में शास्त्रों का क्या मत है । व्यवस्था देनेवाला । २ वह जो किसी कार्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो । ३ वह जो व्यवस्था या इतजाम करता हो । प्रवचकर्ता । इतजामकार । मैनेजर (आधुनिक प्रयोग) । ४ व्यवस्थापिका सभा का सदस्य (को०) । ५ निश्चय करनेवाला (को०) ।

व्यवस्थापक मंडल—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह समाज या समूह जिसे कानून कायदे बनाने और रद्द करने का अधिकार प्राप्त हो ।

व्यवस्थापक सभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विधान सभा । व्यवस्थापिका सभा । उ०—स्वयं, राज्य करने को अचाचक प्रस्तुत हो गई थी, या व्यवस्थापक सभाओं को तोड़ स्वयं, व्यवस्था करने को उठ खड़ी हुई थी ।—प्रेमधन०, भा० २, पृ० २७० ।

व्यवस्थापत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या यह विधान लिखा हो कि अमुक विषय में शास्त्र की क्या आज्ञा या मत है ।

व्यवस्थापन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ किसी विषय में शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना । यह बतलाना कि अमुक विषय में शास्त्रों का क्या आज्ञा अथवा मत है । २ किसी विषय में कुछ निश्चय, निर्धारण या निरूपण करना ।

व्यवस्थापनीय—वि० [सं०] व्यवस्थापन करने के योग्य ।

व्यवस्थापिका परिपद—सज्ञा स्त्री० [सं०] अंग्रेजी शासनकाल की वह सभा या परिपद जिसमें देश के लिये कानून कायदे आदि बनते थे । देश के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा । वही व्यवस्थापिका सभा । (अ०) 'लेजिस्लेटिव एसेंबली', 'लोअर चेंबर', 'लोअर हाउस' ।

विशेष—ब्रिटिश भारत भर के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा व्यवस्थापिका परिपद या लेजिस्लेटिव कहलाती थी । इसके सदस्यों की संख्या १४३ होती थी, जिनमें से १०३ लोक निर्वाचित और ४० सरकार द्वारा मनोनीत (२५ सरकारी और १५ गैर सरकारी) सदस्य होते थे ।

व्यवस्थापिका सभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह सभा जिसमें किसी प्रदेश-विशेष के लिये कानून कायदे आदि बनते थे । कानून कायदे बनानेवाली सभा । लेजिस्लेटिव कांसल ।

व्यवस्थापित—वि० [सं०] १ जिसके सबंध में कुछ निश्चय या निरूपण किया गया हो । व्यवस्था किया हुआ । जो नियमपूर्वक लगाया, रखा या किया गया हो । ३. जो नियम के अनुसार हो । नियमित ।

व्यवस्थाप्य—वि० [सं०] जो व्यवस्थापन करने के योग्य हो ।

व्यवस्थावादी—वि० [सं० व्यवस्थावादिन्] व्यवस्था को माननेवाला । मर्यादावादी । उ०—तुन्सी यदि चार व्यवस्थावादी थे तो वह प्रेम को सारे नियमों के, समूची व्यवस्था के, ऊपर क्यों मानते हैं ।—आचार्य०, पृ० १०६ ।

व्यवस्थित—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो । जो ठीक नियम के अनुसार हो । कायदे का । जैसे,—वे सभी काम व्यवस्थित रूप से किया करते हैं । २ व्यवहृत (को०) । ३ स्थिर (को०) । ४ अलग या एक आर रखा हुआ । (को०) । ५ (रस आदि) निकाला हुआ (को०) । ६ आचार्य । अवलंबित । (को०) ।

व्यवस्थित विभाषा—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण शास्त्र के अनुसार निश्चित विकल्प (को०) ।

व्यवस्थित विषय—वि० [सं०] सीमित क्षेत्रवाला (को०) ।

व्यवस्थिति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपस्थित या स्थिर होना । व्यवस्था । इतजाम । ३. दे० व्यवस्थान (को०) ।

व्यवहरण—सज्ञा पुं० [सं०] अभियोगों आदि का नियमानुसार विचार । मुकदमे की सुनवाई या पेशी । व्यवहार ।

व्यवहर्ता—सज्ञा पुं० [सं० व्यवहर्तृ] वह जो व्यवहार शास्त्र के अनुसार किसी अभियोग आदि का विचार करता हो । न्यायकर्ता ।

व्यवहार—सज्ञा पुं० [सं०] १. क्रिया । कार्य । काम । २. आपस में एक दूसरे के साथ बरतना । बरताव । जैसे,—हमारा उनका इस तरह का व्यवहार नहीं है । ३. व्यापार । रोजगार ।

हि० श० ६-३८

४. लेनदेन का काम । महाजनी । ५. झगडा । विवाद । ६. न्याय । ७. शर्त । परा । ८ स्थिते । ९. दो पक्षा में होने-वाला वह झगडा जिसका फैसला अदालत में हो । मुकदमा । १० प्रयोग (को०) । ११. आचरण (को०) । १२. रीति । प्रथा । रिवाज (को०) । १३. पेशा । धंधा (को०) । १४ राय । मेलजोल (को०) । १५ कामधाम सम्हालने की योग्यता (को०) । १६ पद (को०) । १७ तलवार । खड्ग (को०) । १८. अभियोग या मामले की छानबीन (को०) । १९ दंड (को०) । २०. एक वृत्त (को०) ।

व्यवहारक—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका जीविका व्यवहार से चलती हो । वह जो न्याय या अदालत आदि करता हो । २. वह जो वयस्क हो गया हो । बालिग ।

व्यवहारजीवी—सज्ञा पुं० [सं० व्यवहारजीविन्] वह जो व्यवहार या अदालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाता हो ।

व्यवहारज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता हो । २ व्यवहार या तौर तरीका जाननेवाला । ३. वह जो पूर्ण वयस्क हो गया हो । बालिग ।

व्यवहारतंत्र—सज्ञा पुं० [सं० व्यवहारतन्त्र] आचार शास्त्र (को०) ।

व्यवहारत्व—सज्ञा पुं० [सं०] व्यवहार का भाव या धर्म ।

व्यवहारदर्शन—सज्ञा पुं० [सं०] किसी अभियोग में न्याय और अन्याय अथवा सत्य और मिथ्या का निर्णय करना ।

व्यवहारद्रष्टा—सज्ञा पुं० [सं० व्यवहारद्रष्टृ] न्यायाधीश (को०) ।

व्यवहारपद—सज्ञा पुं० [सं०] विवाद का विषय । मुकदमे का मामला ।

व्यवहारपाद—सज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तर, क्रिया-पाद और निर्णय इन चारों का समूह । २. इन चारों में से कोई एक जो व्यवहार का एक पाद या अंश माना जाता है ।

व्यवहारप्राप्त—वि० [सं०] बालिग । वयस्क (को०) ।

व्यवहारमातृका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वे क्रियाएँ जिनका व्यवहार में उपयोग होता है । व्यवहार शास्त्र के अनुसार होनेवाली कारर-वाइयाँ । जैसे,—मुकदमा दायर होना, पेश होना, गवाहों का बुलाया जाना, उनकी गवाही होना, जिरद और वहस होना, फैसला होना, आदि । मिताक्षरा के अनुसार ऐसी क्रियाएँ संख्या में तीस हैं ।

व्यवहारमार्ग—सज्ञा पुं० [सं०] मुकदमे का विषय ।

व्यवहारमूल—सज्ञा पुं० [सं०] अकरकरा । अकरकरहा ।

व्यवहारलक्षण—सज्ञा पुं० [सं०] व्यवहार या मुकदमे की जाँच विषयक विशेषता (को०) ।

व्यवहारविधि—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह शास्त्र जिसमें व्यवहार संबंधी बातों का उल्लेख हो । वह शास्त्र जिसमें व्यवहार या मुकदमों आदि का विधान हो । धर्मशास्त्र ।

व्यवहारविषय—सज्ञा पुं० [सं०] मुकदमे की कार्यवाही का क्रम (को०) ।

व्यस्यक—वि० [स०] अस्थिहीन [को०] ।

व्यह्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कल का बीता हुआ दिन ।

व्याकरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है। भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र ।

विशेष—व्याकरण में वर्णों, शब्दों और वाक्यों का विचार होता है, इसीलिये इसके वर्णविचार, शब्दसाधन और वाक्यविन्यास, ये तीन मुख्य विभाग होते हैं। व्याकरण के नियम प्रायः लिखी हुई और प्रचलित भाषा के आधार पर निश्चित किए जाते हैं, क्योंकि बोलने में लोग प्रायः प्रयोगों की शुद्धता पर उन्ना अधिक ध्यान नहीं रखते। व्याकरण में शब्दों के अलग भेद कर लिए जाते हैं, जैसे, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम आदि, और तब इस बात का विचार किया जाता है कि इन शब्दभेदों का ठीक ठीक और शुद्ध प्रयोग क्या है। हमारे यहाँ व्याकरण की गणना वेदांग में की गई है ।

२ विग्रह । विश्लेषण (को०) । ३ व्याख्या । स्पष्ट करना । प्रकाशन (को०) । ४ अंतर । विभेद । भेद (को०) । ५ घनुष की टकार (को०) । ६ भविष्यकथन । अनागत कथन (को०) । ७ विस्तार (को०) ।

व्याकरणक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हीन कोटि का व्याकरण (को०) ।

व्याकरणप्रक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] शब्द की व्युत्पत्ति (को०) ।

व्याकरणसिद्ध—वि० [स०] व्याकरण के नियमानुसार व्युत्पन्न (को०) ।

व्याकरणोत्तर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव (को०) ।

व्याकर्त्ता—सञ्ज्ञा पुं० [स०] व्याकर्त्ता १ सृष्टि की रचना करनेवाला, परमेश्वर । २ व्याख्या या विश्लेषण करनेवाला ।

व्याकर्षण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विशेष रूप से अपनी ओर खींचना । आकृष्ट करना (को०) ।

व्याकार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विकृत वा परिवर्तित आकार । किसी पदार्थ का विगड्डा या बदला हुआ आकार । २, व्याख्या ।

व्याहारिकजीव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ जो चारों ओर अच्छी तरह फैलाया गया हो । अस्तव्यस्त (को०) । ३, जूझ । घबड़ाया जो ज्ञानेंद्रिय के (को०) ।

व्याहारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्याकुञ्चित १ मुड़ा हुआ । सिमटा हुआ । व्यवहार या टेढ़ामेढ़ा । वक्र (को०) ।

व्याहारी—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जो भय या दुःख के कारण इतना डरता हो कि कुछ समझ न सके । बहुत घबड़ाया हुआ । (को०) । २ जिसे किसी बात की बहुत अधिक उत्कण्ठा या चिन्ता हो । ३ कातर । ४ वह जो इधर उधर चलता, दमकता या हिलता डुलता हो । (को०) । ५ वह जो किसी से आवृत्त वा प्रेरित हो (को०) ।

यौ०—व्याकुलचित्त = व्याकुलचेता । व्याकुलमना । व्याकुललोचन ।

व्याकुलचेता—वि० [म०] व्याकुलचेतस् । व्याकुल चित्तवाला । घबराया हुआ (को०) ।

व्याकुलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्याकुल होने का भाव । विकलता । घबराहट । २ कातरता ।

व्याकुलमना—वि० [स०] व्याकुलमनम् । व्यग्रचित्त । उद्विग्नहृदय (को०) ।

व्याकुलमूर्ध्वज—वि० [स०] विन्वरे हुए कर्णोंवाला (को०) ।

व्याकुललोचन—वि० [स०] मद दृष्टेवाला (को०) ।

व्याकुलात्मा—वि० [स०] व्यकुलात्मन् । उद्विग्न । चित्त कुन (को०) ।

व्याकुलित—वि० [म०] १ व्याकुल चित्तवाला । २, डरा हुआ (को०) ।

यौ०—व्याकुलितचित्त, व्याकुलितमना, व्याकुलितहृदय = (१) आक्रान्त । अभ्यभूत । (२) भयभीत । (३) घबराया हुआ ।

व्याकुलितद्रिय—वि० [स०] व्याकुलितेन्द्रिय । व्यग्रचित्त (को०) ।

व्याकुलद्रिय—वि० [स०] व्याकुलेन्द्रिय । २० 'व्याकुलितेन्द्रिय' ।

व्याकूत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चिता । खेद (को०) ।

व्याकृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छन । वाखा । फरेव ।

व्याकृत—वि० [स०] १ विश्लेष । विग्रह किया हुआ । २ व्याख्या किया हुआ । व्याख्यात । ३ अभिव्यक्त । प्रकाशित । ४ परिवर्तित । बदला हुआ । विकृत । उ०—प्राज्ञा अभिमानो जु व्याकृत तम गुण रुपा । ईश्वर तहँ देवता भोग आनद स्वत्पा । —सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६८ ।

व्याकृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रकाश में लाने का काम । २ व्याख्या करने का काम । व्याख्यान । ३. व्याकरण (का०) । ४ रूप में परिवर्तन करने का काम ।

व्याकोच—वि० [स०] प्रफुल्लित । पूर्ण विकसित (को०) ।

व्याकोप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विरोध । प्रत्याख्यान (को०) ।

व्याकोश, व्याकोप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विकास । २ स्फुटित होना । खिलना ।

व्याक्रान्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] व्याकरण, प्रा० वांगरणा अ० वांगरणा । २० 'व्याकरण' । उ०—त कवि आस कव पहि सँसते । गुह व्याक्रान्त कहै मन मत्ते । —पृ० २१०, ६१४६७ ।

व्याक्रान्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] व्याकरण । व्याकरण विद्या या शास्त्र । उ०—व्याक्रान्त कथा नाटक छद । —पृ० २१०, १७३६ ।

व्याक्रोश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ किसी का तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना । २ चिल्लाना । चिल्लाहट ।

व्याक्रोशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] २० 'व्याक्रोश' (को०) ।

व्याक्षिप्त—वि० [म०] १. व्याकुल । हतबुद्धि । घबड़ाया हुआ । २ फैलाया हुआ । विकार्य । ३, भरा हुआ । आवृत्त (को०) ।

व्याक्षेप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ विलव । देर । २. व्याकुल होने का भाव । घबराहट । ३ अवरोध । बाधा । रुकावट । विघ्न (को०) । ४ इतस्तत् । क्षण । जैसे, कटाक्षव्याक्षेप (को०) । ५. तिरस्कार । भत्सना (को०) ।

व्याक्षेपी—वि० [स०] व्याक्षेपिन् । हटानेवाला । दूर करनेवाला (को०) ।

व्याक्षोभ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] क्षोभ । अशांति । मानसिक विक्षोभ (को०) ।

व्याख्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल पद या वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। किसी बात को समझाने के लिये किया हुआ उसका विस्तृत और स्पष्ट अर्थ। टीका। व्याख्यान।

विशेष—शास्त्रों या सूत्रों आदि की जो व्याख्या होती है, उसके वृत्ति, भाष्य, वातिक, टीका, टिप्पणी आदि अनेक भेद माने गए हैं।

२ वह ग्रंथ जिसमें इस प्रकार अर्थविस्तार किया गया हो।
३ कहना। वर्णन।

व्याख्यागम्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [म०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार वादी के अभियोग का ठीक ठीक उत्तर न देकर इधर उधर की बातें कहना।

व्याख्यागम्य^२—वि० जो व्याख्या अथवा टीका आदि की सहायता से समझा जा सके।

व्याख्यात—वि० [स०] १ जिसकी व्याख्या की गई हो। २. कथित। वर्णन (को०)। ३. आक्रांत। अभिभूत। आकुल (को०)। ४ पराजित। वशीकृत (को०)।

व्याख्यातव्य—वि० [म०] जो व्याख्या करने के योग्य हो या जिसकी व्याख्या की गई हो।

व्याख्याता—सञ्ज्ञा पुं० [म० व्याख्यातृ] १ वह जो किसी विषय की व्याख्या करता हो। व्याख्या करनेवाला। २ वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यात्मक—वि० [म०] व्याख्या विषयक। जिसमें मूल विषय को व्याख्या की गई हो। उ०—रचनात्मक और व्याख्यात्मक आलोचनाओं के प्रतिपादन में भी जो दूसरे और तीसरे प्रकरणों के विषय हैं, मैं बराबर उनकी तुलना निर्णयात्मक आलोचना से करता रहा हूँ।—पा० सा० मि०, पृ० ४।

व्याख्यान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. बोलकर कोई विषय समझाने का काम। भाषण। ३ वह जो कुछ व्याख्या रूप में या समझाने के लिये कहा जाय। भाषण। वक्तृता।

व्याख्यानशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता है। २ स्कूल या विद्यालय जहाँ विषय को व्याख्या करके समझाया जाता है (को०)।

व्याख्यास्थान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्याख्यानशाला'।

व्याख्यास्वर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह स्वर जो न बहुत ऊँचा हो और न बहुत नीचा। मध्यम स्वर।

व्याख्येय—वि० [म०] जो व्याख्या करने के योग्य हो। वर्णन करने या समझाने लायक।

व्याघट्टन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अच्छी तरह रगड़ने का काम। संवर्षण। रगड़। २ मथना। त्रिलोना।

व्याघात—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. विघ्न। खलबल। बाधा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—होना।

२ आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष के विष्कम्भ आदि सत्ता-हम योगों में से तेरहवाँ योग जिसमें किसी प्रकार का शुभ कार्य करना वर्जित है।

विशेष—कुछ लोगों का मत है कि इसके पहले रङ्ग दंडों को छोड़कर शेष समय में शुभ काम किए जा सकते हैं। कहते हैं, इस योग में जो बालक जन्म ग्रहण करता है, वह माधुग्री के काम में विघ्न करनेवाला, कठोर, भूखा और निर्दय होता है।

४ काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय के द्वारा अथवा एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के हाने का वर्णन होता है। उ०—(क) जामा काटत जगन के प्रथम दीन दयाल। ता चितवान सो लियन के मन बाँचे गोपाल। (ख) नाम प्रभाव जान। शव नीके। कालकूट फल दीन शर्मा क। (ग) रण से हूवे को अमर भाग्य कादर कू। यह चाह चित कार नहीं विचलत सचे सूर। (घ) मिलत एक दाहन दुख देही। विद्युत एक प्रान हरि लेही। ५. विप्रतिपेक्ष। वचनविरोध। ६. विरोधी आचरण (को०)। ७ पराजय। हार (को०)। ८. क्षोभ (को०)।

व्याघातक—वि० [स०] १ बाधक। विरोधी। २ आघात या प्रहार करनेवाला (को०)।

व्याघातिम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] आघात से हानेवाली तार्कालिक मृत्पु (को०)।

व्याघाती—वि० [स० व्याघातिन्] दे० 'व्याघातक'।

व्याघारण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] छींकना। छोटा देना। वधारना (को०)।

व्याघारित—वि० [स०] क्षधारा हुआ। तेल या घा का गरम करके उसमें छींका हुआ (को०)।

व्याघुटन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] परावर्तन। मोड़ना। वापस हाना (को०)।

व्याघुष्ट—वि० [स०] व्वनित। गुंजता हुआ। शब्दन (को०)।

व्याघूर्णित—वि० [स०] १ चक्कर खाया हुआ। २ गिरा हुआ (को०)।

व्याघ्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जन्तु। विशेष—'शेर'। २. लाल रेंड। ३. कज्ज। ४ एक राजस का नाम (को०)।

व्याघ्र^२—वि० सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। प्रधान।

विशेष—इसका प्रयोग समासात् में ही मिलता है; जैसे, नरव्याघ्र, पुरुषव्याघ्र।

व्याघ्रकंड—सञ्ज्ञा पुं० [म०] लाल रेंड।

व्याघ्रखड्डा—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बाघ या शेर का नागून जो प्रायः बालकों के गले में उन्हे नजर लगन से बचाने के लिये पहनाया जाता है।

व्याघ्रगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणवर्णित एक पर्वत का नाम (को०)।

व्याघ्रग्रीव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. इस देश का निवासी।

व्याघ्रघटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्याघ्रघटा] किंकिणी या गोविंदी नाम की लता जो कोकरण प्रदेश में अधिकता से होती है। वैद्यक के अनुसार यह पित्तवर्धक, उष्ण, रुचिकर और विष तथा कफ की नाशक मानी गई है।

व्याघ्रघटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्याघ्रघटी] दे० 'व्याघ्रघटा'।

व्याघ्रचर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रचर्म] बाघ या शेर की खाल जिसपर प्रायः लोग बैठते हैं, या जो शोभा के लिये कमरों आदि में लटकाई जाती है।

व्याघ्रतरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लाल रेंड।

व्याघ्रतल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रेंड। २. नखी या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रतला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नख या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। बगनहा।

व्याघ्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्याघ्र का भाव या वर्म।

व्याघ्रदंष्ट्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुल्म।

व्याघ्रदल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. नख या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। बगनहा। २. लाल रेंड।

व्याघ्रदला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्याघ्रदल'।

व्याघ्रनख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बाघ या शेर का नाखून जो प्रायः बच्चों के गले में उन्हे नजर से बचाने के लिये पहनाया जाता है। २. नख या बगनहा नामक प्रसिद्ध गंधद्रव्य। विशेष दे० 'नख'। ३. थूहर। ४. बाघ के नख का आघात (को०)। ५. एक प्रकार का कद। ६. एक प्रकार का शस्त्र। वधनख।

व्याघ्रनखक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. व्याघ्रनख। २. नाखून के द्वारा लगी हुई चोट। एक प्रकार का नखचूत।

व्याघ्रनखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नख या बगनहा नामक गंधद्रव्य। वशप दे० 'नख'।

व्याघ्रनायक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गीदड़।

व्याघ्रपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता में वर्णित एक प्रकार का पेड़।

व्याघ्रपद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का गुल्म। २. वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। ३. वह जिसके पैर व्याघ्रवत् हों। व्याघ्रपाद।

व्याघ्रपाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विककत या कटाई नामक वृक्ष। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्रपादपी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विककत। गर्जहिल।

व्याघ्रपाद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विककत या कटाई नामक वृक्ष। २. विककत। गर्जहिल। ३. एक प्राचीन ऋषि का नाम। ४. वह जिसके पैर व्याघ्र से हों (को०)।

व्याघ्रपुच्छ, व्याघ्रपुच्छक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. रेंड। २. बाघ की पूँछ (को०)।

व्याघ्रपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नख या बगनहा नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रपुष्पि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

व्याघ्रभट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक राजस का नाम।

व्याघ्रमुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विल्ली। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ३. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। ४. इस देश का निवासी। ५. वास्तुशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का मकान जो अशुभ होता है।

व्याघ्ररुपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वण्ण कर्कटी। वन ककोडा।

व्याघ्रलोम—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रलोम] १. ऊपरी आठ पर के बाल। मूँछ। २. बाघ के शरीर का रंग (को०)।

व्याघ्रवक्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. विल्ली। २. शिव का एक नाम। ३. शिव के एक गुण। द० 'व्याघ्रमुख'।

व्याघ्रवक्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रवक्त्र] दे० 'व्याघ्रास्या'।

व्याघ्रश्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रश्व] बाघ जैसा कुत्ता (को०)।

व्याघ्रसेवक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शृगाल। गीदड़।

व्याघ्रहस्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लाल रेंड।

व्याघ्राक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २. पुराणानुसार एक राजस का नाम।

व्याघ्राक्ष—वि० बाघ जैसी आँखोंवाला (को०)।

व्याघ्राजिन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्राट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लवा नामक पक्षी। अग्नि चिडिया। विशेष द० 'लवा'।

व्याघ्राण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूँघने की क्रिया (को०)।

व्याघ्रादनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] निसोय।

व्याघ्रादिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] निसोय। त्रिवृता (को०)।

व्याघ्रायुध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रास्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बाघ का मुख (को०)। २. वह जिसका मुँह बाघ सदृश हो। ३. विल्ली।

व्याघ्रास्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक देवी (को०)।

व्याघ्रिस्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक देवी का नाम।

व्याघ्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कटकारी। छोटी कंटाई। २. एक प्रकार की कौड़ी। ३. नखों नामक गंधद्रव्य। ४. बाघिन (को०)। ५. एक बौद्ध देवी। व्याघ्रिस्त्री (को०)।

व्याघ्रीयुग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहती या वनभटा और कटकारी, इन दोनों का समूह।

व्याज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मन में कोई और बात रखकर ऊपर से कुछ और करना या कहना। कपट। छल। धोखा।

यौ०—व्याजनिदा। व्याजस्तुति। व्याजोक्ति।

२. बाधा। विघ्न। खलल। ३. विलव। दे०। ४. बहाना। व्यपदेश। उ०—जब तक वह अपने कुटीर में बैठता किसी न किसी व्याज से मैं उसे देख लेती।—श्यामा०, पृ० ५६। ५. कला। कौशल (को०)। ६. युक्ति। चाल। कुट-युक्ति (को०)।

व्याज^१—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'व्याज' ।

व्याजउत्कृति^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्याजोक्ति] एक अलकार । दे० 'व्याजोक्ति' । उ०—व्याज उत्कृति तासो कहत, भूपन सुकवि अनूप ।—भूपण ग्र०, पृ० ७० ।

व्याजखेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वनावटी खिन्नता [को०] ।

व्याजगुरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वनावटी गुरु [को०] ।

व्याजतपोवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नकली तपस्वी [को०] ।

व्याजनिन्दा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्याजनिन्दा] १ वह निन्दा जो व्याज अर्थात् छल या कपट से की जाय । निन्दा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निन्दा न जान पड़े । २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार निन्दा की जाती है ।

व्याजव्यवहार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कण्ठपूर्ण वर्तव्य [को०] ।

व्याजसुप्त—वि० [सं०] मोने का बहाना बनानेवाला [को०] ।

व्याजस्तुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े । २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार स्तुति की जाती है, वह ऊपर से देखने में निन्दा भी जान पड़ती है ।

व्याजहत—वि० [सं०] छल द्वारा मारा हुआ [को०] ।

व्याजोह्वय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वनावटी नाम [को०] ।

व्याजिह्वा—वि० [सं०] कुटिल । टेढ़ा [को०] ।

व्याजी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विक्री में माप या तौल के ऊपर कुछ थोड़ा सा और देना । घाल । घलुवा ।

व्याजीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] घूर्तता । चालवाजी । प्रवचना [को०] ।

व्याजोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कथन जिसमें किसी प्रकार का छल हो । कपटमयी बात । २ एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट को छिपाने लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है । छेकापहुनुति से इसमें यह अंतर है कि छेकाप-हुनुति में निपेक्षपूर्वक बात छिपाई जाती है और इसमें बिना निपेक्ष किए ही छिपाई जाती है । उ०—(क) भूय प्रतापभानु अवनीसा । तामु सचिव मैं सुनहु मुनीसा । (ख) बहुरि गौरि कर ध्यान करेहु । भूपकिशोर देखि किन लेहु ।

व्याडव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्याडव] लाल रेंड ।

व्याड^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ माँप । २ बाघ । शेर । ३. इद्र का एक नाम । ४ शिकार करनेवाला और उसका मांस खानेवाला कोई पशु । जैसे, चीता, सिंह आदि [को०] ।

व्याड^२—वि० घूर्त । बचक । २ दुष्ट । खन । निन्दा या बुराई करनेवाला ।

व्याडायुध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नख नामक गव्य द्रव्य ।

व्याडि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था ।

विशेष—ये महाभाष्यकार पतञ्जलि के पूर्ववर्ती महावैयाकरण थे । परंपरागत मान्यतानुसार इन्होंने 'संग्रह' नामक महाग्रंथ लिखा था जो संभवतः लक्षश्लोकात्मक था और उसमें व्याकरण के दार्शनिक पक्ष का भी विस्तृत विवेचन था ।

२. एक कोशकार का नाम [को०] ।

व्यात्त^१—वि० [सं०] खुला हुआ या फैलाया हुआ [को०] ।

व्यात्त^२—सञ्ज्ञा पुं० फैलाया हुआ मुख [को०] ।

व्यात्तानन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका मुख खुला हो [को०] ।

व्यात्तास्य—वि० [सं०] दे० 'व्यात्तानन' [को०] ।

व्यात्युक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जलक्रीडा ।

व्यादन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० व्यादान] खोलना । उ०—वदन व्यादन पूर्वक प्रेतिनी । भय प्रदर्शन थी करती महा । निकलती जिससे अविराम थी । अनल की अति त्रासकरी शिखा ।—प्रिय०, पृ० २३ ।

व्यादान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव । विस्तार । २. उद्घाटन । खोलना ।

व्यादिश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम ।

व्यादिष्ट—वि० [सं०] १ जिसे आदेश दिया गया हो । २ पूर्वकथित । ३ निश्चित । ४ व्याख्यात [को०] ।

व्यादीर्ण—वि० [सं०] खुला या फैलाया हुआ [को०] ।

व्यादीर्णस्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सिंह [को०] ।

व्यादेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विशेष आज्ञा [को०] ।

व्याघ^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जंगली पशुओं आदि को मारकर अपना निर्वाह करता हो । शिकारी । २ प्राचीन काल की एक जाति जो जंगली पशुओं को मारकर अपना निर्वाह करती थी । ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार इसकी उत्पत्ति सर्वस्वी माता और क्षत्रिय पिता से है । ३ प्राचीन काल की शबर नामक नीच जाति । ४ नीच या कमीना आदमी [को०] ।

व्याघ^२—वि० दुष्ट । पाजी । लुच्चा ।

व्याघक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिकारी । बहेलिया [को०] ।

व्याघभीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मृग । हिरन ।

व्याघाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वज्र ।

व्याघाव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वज्र [को०] ।

व्याधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोग । बीमारी । २. आफत । भ्रष्ट । ३. कुड या कट्ट नाम की ओषधि । ४ साहित्य में एक सवारी भाव । विरह या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार रोग होना । ५ कोढ़ । कुष्ठ [को०] । ६ कष्ट पहुँचानेवाली वस्तु [को०] । ७ वह जो आधि वा मानसिक रोग से मुक्त हो [को०] ।

व्याधिकर—वि० [सं०] रोग उपजानेवाला । बीमारी पैदा करनेवाला [को०] ।

व्याधिखड्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नख नामक गव्यद्रव्य ।

व्याधिग्रस्त—वि० [सं०] रोगी [को०] ।

व्याधिघात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अमलतास । २ वाराही कद । गेंठो [को०] ।

व्याधिघातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अमलतास वृक्ष । आरम्बव । २ वाराही कद [को०] ।

व्याधिघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिससे किसी प्रकार की व्याधि का नाश होता हो । २ वाराही कद । गेंठो [को०] । ३. अमलतास ।

व्याधिजित्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अमननाम ।
 व्याधित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे किसी प्रकार की व्याधि हुई हो।
 रोगी । बीमार ।
 व्याधिनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चोत्रचीनी ।
 व्याधिनिग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोग को दवाना । रोग की रोक ।
 धाम [को०] ।
 व्याधिनिर्जय—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रोग को वश में करना [को०] ।
 व्याधिवहुल—वि० [सं०] (स्थान, ग्राम आदि) जहाँ रोगों की अधिकता
 है । [को०] ।
 व्याधिमंदिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तन । शरीर । जिस्म । देह, जो रोग का
 स्थान है [को०] ।
 व्याधिरिपु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अमलतम । २ एक प्रकार का
 अमनतास मिने कणारे कहते हैं ।
 व्याधिद्विपरीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ऐसी ओषधि जो व्याधि के विपरीत
 गुण करनेवाली हो । जैसे,—दस्त लाने के समय कठिनायत
 करनेवाली दवा ।
 व्याधिसमुद्देशीय—वि० [सं०] रोग का स्वरूप और लक्षण बताने-
 वाला [को०] ।
 व्याधिस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शरीर । बदन । जिस्म ।
 व्याधिहृता—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] व्याधिहृत् वाराही कद । शूकर कद ।
 गेंठी ।
 व्याधिहृता—वि० जिससे रोग का नाश हो । रोगनाशक ।
 व्याधिहर—वि० [सं०] व्याधि को दूर करनेवाला । जिससे रोग नष्ट
 होता हो ।
 व्याधी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्याधि दे० 'व्याधि' ।
 व्याधी—वि० [सं०] व्याधिन् १ आखेटको से सबद्ध (स्थान) । २
 रोगी । ३ भेदक । भेदन करनेवाला [को०] ।
 व्याधूत—वि० [सं०] कपिता हुआ । कपित [को०] ।
 व्याध्मातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फूला हुआ शव [को०] ।
 व्याध्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।
 व्याध्य—वि० १ व्याधि सबधी । व्याधि का । २ (नस आदि) जिसका
 भेदन किया जाय [को०] ।
 व्याध्यार्त—वि० [सं०] रोगी । रोगग्रस्त । व्याधि पीडित ।
 व्याध्युपशम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोग का शांत होना ।
 व्याध्युपशमन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करना । व्याधि को शांत
 करना ।
 व्यान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शरीर में रहनेवाली पाँच वायुओं में से एक
 वायु जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है ।
 विशेष—कहते हैं, इसी के द्वारा शरीर की सब क्रियाएँ होती
 हैं, सारे शरीर में रस पहुँचता है, पसीना बहता है और खून
 चलता है आदमी उठता, बैठता और चलता फिरता है और
 आँखें खोलता तथा बंद करता है । भावप्रकाश के मत से जब

यह वायु कुपित होती है, तब प्रायः सारे शरीर में एक न एक
 रोग हो जाता है ।

व्यानत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रतिवध का एक प्रकार [को०] ।
 व्यानत—वि० भुका हुआ । नत [को०] ।
 व्यानतकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रतिवध का एक भेद [को०] ।
 व्यानदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जो व्यान वायु प्रदान करती है ।
 व्यानभृत्—वि० [सं०] व्यान वायु को भरनेवाला । जिससे उक्त वायु
 बनी रहे [को०] ।
 व्यापक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्यापिका] १ जो बहुत दूर तक
 व्याप्त हो । चारों ओर फैला हुआ । जैसे,—यह एक मव-
 व्यापक मिट्टा है । २ जा ऊपर या चारों ओर से घेरे हुए
 हो । घेरने या ढकनेवाला । आच्छादक । ३ किसी में हमेशा
 एक भाव से स्थित रहनेवाला [को०] । ४. वाद के समग्र
 विचारणीय विषयों से युक्त । जिसमें विवाद सबधी सभी
 विचारणीय विषय आ गए हो [को०] । ५ तर्क शास्त्र के
 अनुसार व्याप्य में अधिक [को०] ।
 व्यापक—सञ्ज्ञा पुं० १ पदार्थ में सर्वदा विद्यमान रहनेवाला गुण या
 वर्म । २ नित्य सहवर्ती [को०] ।
 व्यापकन्यास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार का
 अग्न्यास । इसमें किसी देवता का मूल मंत्र पढ़ते हुए सिर में
 पैर तक न्यास करते हैं ।
 व्यापत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु । मौत । २ विपत्ति में पड़ना ।
 सकट में पड़ना [को०] । ३ क्षति । हानि । ४ विनाश । वरगदो
 [को०] । ५ असफलता [को०] । ६ व्याकरण के अनुसार
 स्थानापन्नता । किसी वर्ण का लोप या उसके स्थान में दूसरे
 का आगम [को०] ।
 व्यापद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु । मौत । विनाश । २ सकट ।
 दुर्दिन । विपत्ति [को०] । ३ रोग । व्याधि [को०] । ४ चित्त-
 विक्षेप [को०] ।
 व्यापन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव । विस्तार । २ दूर तक फैलना ।
 विस्तृत होना । ३ चारों ओर से या ऊपर से घेरना या
 ढकना । आच्छादन करना ।
 व्यापना—क्रि० प्र० [सं०] व्यापन किसी चीज के अंदर फैलना ।
 व्याप्त होना । जैसे,—(क) तुम्हें भी इस समय मोह व्यापता
 है । (ख) ईश्वर घट घट में व्यापता है । (ग) उसके सारे
 शरीर में विप व्याप गया है ।
 सयो० क्रि०—जाना ।—रहना ।
 व्यापनीय—वि० [सं०] व्यापन करने या व्याप्त होने के योग्य ।
 व्यापन्न—वि० [सं०] १ जो किसी प्रकार की विपत्ति में पड़ा हुआ
 हो । आफत में फँसा हुआ । २ मरा हुआ । मृत । ३
 विनष्ट । लुप्त [को०] । ४. स्वरादि के आगम के कारण परि-
 वर्तित [को०] । ५ विफल [को०] । ६ घायल [को०] ।
 ८, विक्षिप्त । विक्षुब्ध [को०] ।

व्यापाद—सज्ञा पु० [सं०] १ मन में दूसरे के अपकार की भावना करना । किसी की बुराई सोचना । २ मार डालना । ३. नष्ट करना । बरवाद करना । ४. बौद्धमतानुसार दस पापों में से एक पाप (को०) ।

व्यापादक—वि० पु० [सं०] १. वह जो दूसरों की बुराई करने की इच्छा रखता हो । २ वह जो हत्या या विनाश करता हो । ३. वह (व्याधि) जो घातक हो ।

व्यापादन—सज्ञा पु० [सं०] १. किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय सोचना । २ मार डालना । वध । हत्या । ३ नष्ट करना । बरवाद करना ।

व्यापादनीय—वि० [सं०] मार डालने या नष्ट करने योग्य ।

व्यापादित—वि० [सं०] १ हत । २ अपकार बुद्धि से चिंतित । ३. विनष्ट । स्वस्त (को०) ।

व्यापाद्य—वि० [सं०] दे० 'व्यापादनीय' ।

व्यापार—सज्ञा पु० [सं०] १ कर्म । कार्य । काम । जैसे,—(क) संसार में दिन रात अनेक प्रकार के व्यापार होते रहते हैं । (ख) सोचना मस्तिष्क का व्यापार है । २ न्याय के अनुसार विषय के साथ होनेवाला इन्द्रियों का संयोग । पदार्थों अथवा धन के बदले में पदार्थ लेना और देना । क्रय विक्रय का कार्य । रोजगार । व्यवसाय जैसे—(क) आजकल कपड़े का व्यापार बहुत चमक रहा है । (ख) वे रुई, मोने, चाँदी आदि कई चीजों का व्यापार करते हैं । ४ सहायता । मदद । ५ कार्यपद्धति । प्रक्रिया (को०) । ६ उद्योग । प्रयत्न । चेष्टा (को०) । ७. प्रभाव । दखल (को०) । ८ अभ्यास । कौशल (को०) । कारबार । पेशा (को०) । ९ प्रयोग (को०) ।

यौ०—व्यापारचिह्न = निर्माताओं द्वारा अपने माल की पहचान के लिये अंकित विशेष चिह्न जिसका प्रयोग अन्य निर्माता द्वारा करना अपराध है [ग्र० ट्रेड मार्क] । व्यापारमंडल = व्यापारियों का मंडल । व्यापारियों की संस्था । व्यवसायियों का प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था या समाज (अ० चेंबर आफ कामर्स) ।

व्यापारक—वि० [सं०] व्यवसाय करनेवाला (को०) ।

व्यापारगर्त—सज्ञा पु० [सं०] सामारिक क्रियाकलापों या व्यापारों का भूकट या गड्ढा । दुनियाँ की भूकट । काम धवा । उ०—इसमें स्पष्ट है कि मनुष्य को उसके व्यापारगर्त से बाहर प्रकृति के विनाश और विस्तृत क्षेत्र में ले जाने की शक्ति फारस की परिमित काव्यपद्धति में नहीं है—भारत और योरोप की पद्धति में है ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ८ ।

व्यापारण—सज्ञा पु० [सं०] १ आज्ञा देना । २ किसी काम में नियुक्त करना ।

व्यापारिक—वि० [सं०] व्यापार संबंधी । व्यावसायिक ।

व्यापारित—वि० [सं०] १ किसी कार्य में नियोजित । २ किसी स्थान पर स्थापित (को०) ।

हि० सं० १-३६

व्यापारी—सज्ञा पु० [सं० व्यापारिन्] १. वह जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो । २. व्यवसाय या रोजगार करनेवाला । व्यवसायी । रोजगारी । ३. अभ्यास करनेवाला (को०) ।

व्यापारी—वि० [सं० व्यापार + ई (प्रत्य०)] १ जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो । २ व्यवसाय या रोजगार करनेवाला । व्यवसायी । रोजगारी ।

व्यापारी—वि० [सं० व्यापार + हि० ई (प्रत्य०)] व्यापार मचयी । व्यापार का । जैसे,—व्यापारी बोलचाल, व्यापारी भाव ।

व्यापित—वि० [सं०] जो व्याप्त कराया गया हो (को०) ।

व्यापी—वि० [सं० व्यापिन्] [वि० स्त्री० व्यापिनी] १. चारों ओर फैलनेवाला । छा जानेवाला । २. व्याप्त करने या होनेवाला । ३. आच्छादन करनेवाला । आवृत करनेवाला (को०) ।

व्यापी—सज्ञा पु० १ आवृत करने या व्याप्त होनेवाला पदार्थ । २. विशुद्ध का एक नाम (को०) ।

व्यापीत—वि० [सं०] जो एकदम पीला हो । गहरे पीले वर्ण का (को०) ।

व्यापृत—वि० [सं०] १ किसी कार्य में लगा हुआ । संलग्न । २. स्थिर किया हुआ । स्थापित । जमाया हुआ (को०) ।

व्यापृत—सज्ञा पु० वह जो कार्य करता हो । कर्मचारी । सचिव । मंत्री (को०) ।

व्यापृत—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवसाय । व्यापार । २. जीविका । पेशा । ३. अभ्यास । ४. उद्योग । क्रिया ।

व्याप्त—वि० [सं०] १. पूरित । भरा हुआ । २. ढका हुआ । आच्छादित । ३. सर्वत्र फैला हुआ या प्रसृत । ४. परिवेष्टित । ५. स्थापित । ६. प्राप्त । अधिकृत । ७. समिलित । ८. प्रसिद्ध । विख्यात । ९. अतर्भूत । नितात ससक्त । १०. फैलाया हुआ (को०) ।

व्याप्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव । चारों ओर या सब जगह फैला हुआ होना । २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना । एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अथवा उसके साथ मिला पाया जाना । जैसे—आग में घूँट की या तिल में तेल की व्याप्ति है ।

यौ०—व्याप्तिज्ञान ।

३ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक प्रकार का ऐश्वर्य ।

विशेष—शेष सात ऐश्वर्यों के नाम ये हैं—अणिमा, लघिमा, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व और कामावसायिता ।

४. सार्वजनिक नियम । सर्वव्यापक नियम (को०) । ५. पूर्णता (को०) । ६. प्राप्ति (को०) ।

व्याप्तिकर्मा—सज्ञा पु० [सं० व्याप्तिकर्म्म्] वह जिसका कर्म व्याप्ति विशिष्ट हो । वह जो व्यापन क्रिया में युक्त हो (को०) ।

व्याप्तिग्रह—सज्ञा पु० [सं०] विशेष बातों के आधार पर लोकसामान्य नियमों का निर्धारण (को०) ।

व्याप्तिज्ञान—सज्ञा पु० [सं०] न्याय के अनुसार वह ज्ञान जो साध्य को देखकर साध्यमान् के अस्तित्व के संबंध में अथवा

साध्यवान् को देखकर साध्य के अस्तित्व के सवध में होना है ।

जैसे, घूर्ण को देखकर यह समझना कि यहाँ आग भी होगी

व्याप्तित्व—सञ्ज्ञा पु० [म०] व्याप्ति का धर्म या भाव ।

व्याप्तिनिश्चय—सञ्ज्ञा पु० [स०] सर्वतः व्याप्त पदार्थ को निश्चयन [को०] ।

व्याप्तिलक्षण—सञ्ज्ञा पु० [म०] नित्य सहचर भाव या प्रमाण [को०] ।

व्याप्य^१—वि० [स०] व्याप्त करने योग्य । व्यापनीय ।

व्याप्य^२—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ जिसके द्वारा कोई काम हो । साधन । हेतु । २ कुट या कुड़ नामक औषधि । ३ दे० 'व्याप्ति' ।

व्यावाघ—सञ्ज्ञा पु० [स०] बीमारी । रोग [को०] ।

व्याभाषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] बोलने या भाषण की शैली [को०] ।

व्याभुग्न—वि० [स०] भुका हुआ । टेंडा [को०] ।

व्याभ्युक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] जलक्रीडा । जलक्रीडा [को०] ।

व्याम^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] लवाई की एक नाप ।

विशेष—दोनों हाथों को जहाँ तक हो सके, दोनों दगल में फैलाने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे में दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक जितनी दूरी होती है, वह व्याम कहलानी है ।

व्याम पुं^२—सञ्ज्ञा पु० [म०] व्याम । दे० 'व्यागम' ।

उ०—व्याम करत पुट्मी जो हली । पीठि न लाइ सकै कोउ बली ।

—चित्रा०, पृ० १२३ ।

व्यामन—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्याम' ।

व्यामर्श—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ धैर्यहीनता । ओत्सुक्य । व्यग्रता । २. उच्छेद या मार्जन करना । रगड़कर साफ करना [को०] ।

व्यामर्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यामर्श' ।

व्यामिश्र^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] दो प्रकार के पदार्थों या कार्यों को एक में मिलाने की क्रिया ।

व्यामिश्र^२—वि० १ मिला हुआ । मिश्रित । २ विभिन्न प्रकार का । ३ सदेहास्पद [को०] । ४ अस्थिर । पीडित । क्षुब्ध [को०] ।

व्यामिश्रक—सञ्ज्ञा पु० [स०] अथ, पुस्तक आदि, मुख्यतः रूपक जिसमें विभिन्न भाषाओं का मिश्रण हो [को०] ।

व्यामिश्रवान—सञ्ज्ञा पु० [स०] मोटा वस्त्र जिसमें सूत्र, ऊर्ण, तंतु आदि मिश्रित हो [को०] ।

व्यामिश्रव्यूह—सञ्ज्ञा पु० [स०] मिला जुला व्यूह । वह व्यूह जिसमें पंदल के अतिरिक्त हाथी घोड़े और रथ भी समिलित हो ।

विशेष—कौटिल्य ने इसके दो भेद कहे हैं—मध्यभेदी और अतभेदी । मध्यभेदी वह है जिसके अंत में हाथी, इधर उधर घोड़े, मुख्य भाग या केंद्र में रथ तथा उरस्य में हाथी और रथ हो । इससे भिन्न अतभेदी है ।

व्यामिश्रसिद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य के अनुसार शत्रु और मित्र दोनों की स्थिति का अपने अनुकूल होना ।

व्यामूढ—वि० [स०] बहुत घबड़ाया हुआ [को०] ।

व्यामृष्ट—वि० [स०] रगड़कर मिटाया हुआ [को०] ।

व्यामोक—सञ्ज्ञा पु० [स०] छुटकारा । मुक्ति [को०] ।

व्यामोह—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ मोह । २ अज्ञान । २. व्याकुलता । घाडाहट [को०] ।

व्याय—सञ्ज्ञा पु० [स०] वाण चलाने के समय धनुष की प्रत्यंचा को तानने की पद्धति वा क्रिया [को०] ।

व्यायत—वि० [उ०] १ लम्बा । फैला या फैलाया हुआ । २ खुला हुआ । ३ कार्य में लगा हुआ । व्यम्न । ४ कठोर । दृढ़ । ५ वृताभ्यास । जिसमें अन्त्याम किया हो । अन्त्याम । ६ प्रवर । प्रचंड । तीव्र । ७ शक्तशाली । ८ गह्वर । गभीर [को०] ।

व्यायतत्व—सञ्ज्ञा पु० [म०] व्यायत होने का भाव । शरीर की पेशियों का विकसन या फैलाव [को०] ।

व्यायतपाती—वि० [स०] व्यायतपातिन् । दूर तक दौड़नेवाला । विस्तृत मार्ग को तय करनेवाला । जंमे, अश्व आदि [को०] ।

व्यायाम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह शारीरिक श्रम जो केवल शरीर का बल बढ़ाने के उद्देश्य में किया जाता है । कमरत । जाग । जमे,—उड़, बंठकर करना या मुगदर, डबन आदि हिलाना । २ पोषण । ३ परिश्रम । मेहनत । ४ व्यागार । काम । ५. युद्ध की तैयारी । ६ मना की कवायद आदि । ७ विन्मार्ज करना । फैलाना [को०] । ८. व्यायाम । प्रयत्न । चेष्टा [को०] । ९ युद्ध । कलह । विवाद । मर्ष [को०] । १०. कठिनाई । ११ लंबाई की एक नाप । व्याम [को०] । १२ क्वाति । धकान [को०] । १३ अभ्यास । कौशल [को०] । १४ दुर्गम मार्ग

यौ०—व्यायामकशित = व्यायाम के कारण दुर्बल । व्यायामभूमि = व्यायाम करने की जगह । व्यायामयुद्ध । व्यायामयोग । व्यायामशाला = व्यायाम करने की जगह । व्यायामशील = कमरती । (२) परिश्रमी । [को०] । व्यायामशोपी ।

व्यायामयुद्ध—सञ्ज्ञा पु० [म०] आमने सामने की लड़ाई ।

विशेष—अर्थशास्त्र में चाणक्य का मत है कि व्यायामयुद्ध अर्थात् आमने सामने की लड़ाई में दोनों ही पक्षों की बहुत हानि पहुँचती है । जो राजा जीत भी जाता है, वह भी इतना कमजोर हो जाता है कि उसमें एक प्रकार से पराजित हो समझना चाहिए । [को०] ।

व्यायामयोग—सञ्ज्ञा पु० [म०] शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास ।

व्यायामशोपी—वि० [म०] व्यायामशोपिन् । जो अत्यंत कमरत या श्रम करने से क्षीणकाय हो गया हो । उ०—व्यायामशोपी (अत्यंत दब कमरत आदि से क्षीण) मनुष्य लस्तगतदियुक्त होय है ।—मावव०, पृ० ८६ ।

व्यायामिक—वि० [स०] व्यायाम का । व्यायाम संबंधी ।

व्यायामी—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यायामिन् । १ वह जो व्यायाम करता हो । कमरत करनेवाला । कमरती । २ वह जो बहुत परिश्रम करता हो । परिश्रमी । मेहनती ।

व्यायुक्त—वि० [स०] भाग निरुलनेवाला [को०] ।

व्यायुक्त—वि० [स०] १ अलग अलग किया हुआ । २ मिला जुला । उ०—लोहित, श्वेत (शोदात्त) या मिश्रित (व्यायुक्त) वर्णों की

व्यायुध

वेशभूषा और साजसज्जा धारण करते थे।—हिंदु० सभ्यता,
पृ० २०१।

व्यायुध—वि० [स०] शस्त्ररहित। नि शस्त्र [को०]।

व्यायोग—पञ्चा पु० [स०] साहित्य में दस प्रकार के रूपको में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

विशेष—इसकी कथावस्तु किसी ऐसे ग्रंथ से ली जानी चाहिए, जिससे सब लोग भली भाँति परिचित हों। इसके पात्रों में स्त्रियाँ कम और पुरुष अधिक होते हैं। व्यायोग में स्त्री के कारण युद्ध नहीं होता और इसमें गर्भ और विमर्ष सवि नहीं होती। इसमें एक ही अरु रहता है और कशिकी वृत्ति का व्यवहार नहीं होता है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध राजपि, दिव्य और धीरोदात्त होना चाहिए। इसमें शृंगार, हास्य और शात के सिवा और सब रसों का वर्णन होता है। जैसे, भास कवि का मध्यम व्यायोग।

व्यायोजिम—वि० [स०] (बधन या पट्टी) जो खुली हुई या ढीली हो गई हो [को०]।

व्यारव्य—वि० [स०] समुचित ढंग से रक्षित [को०]।

व्यारोप—सञ्ज्ञा पु० [स०] क्रोध। गुस्सा।

व्यार्त वि [स०] विशेष रूप से आर्त या दुःखी। क्लेशग्रस्त [को०]।

व्यालव—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यालम्ब [लाल रेंड]।

व्यालवी वि० [म०] व्यालम्बिन् जो लटक रहा हो। लटकता हुआ। अवलंबी [को०]।

व्याल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ साँप। २ दुष्ट या पाजी हाथी। ३ बाघ। शेर। ४ वह बाघ जो शिकार करने के लिये मचाया गया हो। ५ राजा। ६ विष्णु का एक नाम। ७ दडक छद का एक भेद। ८ कोई हिंसक जंतु। ९ चीता [को०]। १० ठग। धूर्त [को०]। ११ आठ की सख्या [को०]।

व्याल^२—वि० १ दूसरों का अपकार करनेवाला। २ दुष्ट। पाजी। ३ बुरा। पापिष्ठ [को०]। ४ क्रूर। भीषण [को०]।

व्यालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ दुष्ट या पाजी हाथी। २ हिंसक जंतु। ३ सर्प। व्याल [को०]।

व्यालकरज—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालखड्ग—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालगधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्यालगन्धा। नाकुली नामक कद।

व्यालग्राह—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो साँपों का पकड़ता हो। सँपेरा।

व्यालग्राही—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो साँप पकड़ने का काम करता हो। मदारी। सँपेरा।

व्यालग्रीव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यालजिह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कँगही या कधी नामक पीवा। महा-समगा।

व्यालता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्याल का भाव या धर्म। व्यालत्व। व्यालपन।

व्यालत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्याल का भाव या धर्म। व्यालपन।

व्यालदष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] गोखरू का पीवा।

व्यालदष्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यालदष्ट' [को०]।

व्यालनख—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] खेतपापडा।

व्यालपत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] खेतपापडा।

व्यालपाणिज—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालप्रहरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालवल—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालमृग—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ व.घ। शेर। २ शिकारी चीता [को०]। ३ जंगली जानवर [को०]।

व्यालरूप—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव [को०]।

व्यालवल—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यालवल'।

व्यालसूदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] गरुड। उ०—जयति भीमार्जुन व्यालसूदन गवहर वनजय रथवान केतू।—नुलती (शब्द०)।

व्यालाद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जो सर्पों का खाता हो। गरुड। २. मोर। मयूर [को०]।

व्यालायुध—सञ्ज्ञा पु० [स०] नख या वगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालारि—सञ्ज्ञा पु० [स०] गरुड। उ०—पुनः व्यालारि, कराल कलि, बिनु प्रयास निस्तार।—भक्तमाल (प्रि०), पृ० ५७६।

व्यालि—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्याडि नामक एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था।

व्यालिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो साँपों को पकड़कर अपनी जीविका चलाता हो। सँपेरा।

व्यालिनि पु०—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्यालो] सर्पिणी। सर्पिणी। उ०—सरित की लहरें असु लेहिनी, लहरने खलु व्यालिनी भी लगी।—वी० श० महा०, पृ० २०१।

व्याली^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यालिन् शिव [को०]।

व्याली^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] व्याल + ई] सर्पिणी। उ०—ओ चिता की पहली रेखा, अरी विश्व वन का व्याली—रामायण, पृ० ५।

व्यालीढ—सञ्ज्ञा पु० [स०] साँप के काटने का एक प्रकार। साँप का वह काटना जिसमें केवल एक या दो दाँत लगे हों और घाव में से खून न बहा हो।

व्यालीन—वि० [स०] सश्लिष्ट। विपका हुआ। घना [को०]।

व्यालुप्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] साँप के काटने का एक प्रकार। साँप का वह काटना जिसमें दाँत भरपूर बैठे हों और घाव में से खून भी निकला हो।

व्यालू^१—सञ्ज्ञा पु० स्त्री० [स०] वला] रात के समय का भोजन। रात का खाना। उ०—जा कुछ वन पडा व्यालू करक लंबा तान अपने बिछोना म जा पडा।—श्यामा०, पृ० ५।

व्यालून—वि० [स०] छिन्न। कटा हुआ [को०]।

व्यालीक—सञ्ज्ञा पु० [स०] प्रकाश। उ०—प्रकस्मात् उस त्रिडकी म स एक मुदर पुन तरुता। व्यालीक डालकर दवा कि रासमा एक पात्र हाय म लई है और कुछ कह रहा है।—श्यामा०, पृ० ३८।

व्यालोल—वि० [सं०] १ चंचल । २ परिक्रात । चक्कर खाता हुआ । ३ अरतव्यस्त । बिचरा हुआ । जैसे, व्यालोलकेश ।
४ काँपता हुआ [को०] ।

व्यालोलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर हिलना । कापना [को०] ।

व्यावकलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्यवकलन' [को०] ।

व्यावक्रोशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कहा सुनी । चादविवाद । भगडा [को०] ।

व्यावचर्ची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में कही हुई प्रथा सामान्य बात, पुनश्चि [को०] ।

व्यावचोरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में होनेवाली चोरी [को०] ।

व्यावभाषी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में अपशब्दों का व्यवहार । कहासुनी [को०] ।

व्यावर्त्ता—वि० [हिं० विद्याना, विद्याउर] व्यानेवाली । उत्पन्न करनेवाली । उ०—दादू कापा व्यावर गुणमयी, मनमुख उपज ज्ञान । चौरासी लख जीवकी, इम माया का ध्यान ।—दादू०, पृ० ४१८ ।

व्यावर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विभाग करना । हिस्सा लगाना । विभक्त करना । बाँटना । २ हिस्सा । विभाग [को०] ।

व्यावर्जित—वि० [सं०] आवर्जित । भुक्त । नत । भुग्न या लटका हुआ [को०] ।

व्यावर्त्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवर्द्ध । चक्रमर्द्ध । २ घेरना । लपेटना । परिवेष्टित करना [को०] । ३ चारों ओर भ्रमण करना । चक्कर खाना [को०] । ४ अलग करना । चुनना [को०] । ५ आगे का ओर निकली हुई नाभि । नाभिकटक ।

व्यावर्त्ति—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० व्यावर्त्तिनी] १. वह जो व्यावर्त्तन करता है । चक्कर खानेवाला । पाछे का ओर लोटानेवाला । २ दूर हटानेवाला । अलग करनेवाला [को०] । ३. भेदक । अंतर करनेवाला [को०] ।

व्यावर्त्तिनी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जा पराङ्मुख किया गया है । २ पाछे का ओर लोटाया या मोड़ा हुआ । ३. सर्प का कुंडला [को०] । ४. घुमाव । मोड़ । जस, पथ का व्यावर्त्तन [को०] । ५ पारवर्त्तन [को०] ।

व्यावर्त्तनीय—वि० [सं०] जिसका व्यावर्त्तन किया जा सक । व्यावर्त्तन क योग्य [को०] ।

व्यावर्त्तित—वि० [सं०] १ पराङ्मुख किया हुआ । लोटाया हुआ । जिस चक्कर दिया गया है । २ पारवर्त्तित [को०] ।

व्यावर्त्तिगत—वि० [सं०] उज्जी या ऋटक से चलता हुआ [को०] ।

व्यावहारिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार । २ वह जो व्यवहार यास्त्र के अनुसार अभ्यासा का विचार करता है । ३ राजा या वह अमात्य या मंत्री जिसके अधिकार में नागरिकों और बाहरी सब तरह के काम हैं । ४ व्यापार । कारबार [को०] ।

व्यावहारिक—वि० १ व्यवहार संबंधी । व्यवहार या वस्तुत्व का । २. व्यवहार शास्त्र संबंधी । व्यवहार शास्त्र का । ३. प्रचलित ।

४ व्यवहारपटु । मिलनसार । ५ व्यापारिक । प्रातिभासिक । अमात्मक [को०] ।

व्यावहारिक ऋण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो किसी वाग्यार के मकस में लिया गया हो ।

व्यावहारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवहार संबंधी प्रधान । आपसी व्यवहार-जन्य लेनदेन [को०] ।

व्यावहार्य—वि० [सं०] १ व्यवहार में जाने योग्य । २ शक्त । क्षम । समर्थ [को०] ।

व्यावहासी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में होनेवाली हँसी [को०] ।

व्यावाच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रोग । व्याधि [को०] ।

व्यादिद्ध—वि० [सं०] १ परस्पर विरुद्ध । २ प्रविष्ट या घुग हुआ । बेग हुआ । ३ फँका हुआ । द्रिष्ट । ४ घूर्णित । ५ विगाड़ा हुआ [को०] ।

व्याविध—वि० [सं०] तहर तरफ का । अनेक प्रकार का [को०] ।

व्यावृत्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रघनता । २. विरमण । विमान । ३ अंतर । फर्क । भेद [को०] ।

यौ०—व्यावृत्ताम = जो प्रघनता पाने की इच्छा रखता हो ।

व्यावृत्—वि० [सं०] १ जो आवृत्त न हो । सुखा हुआ । २ 'व्यावृत्' । २ आच्छादित । आवृत्त । ३ छटाया या अन्न रिया हुआ । ४ अनावृत्त । अपवाद रिया हुआ [को०] ।

व्यावृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ चयन करना । छांटना । चुनना । २. आवृत्त या आच्छादित करना । ३. अनावृत्त करना । अनाच्छादित करना [को०] ।

व्यावृत्त—वि० [सं०] छटा हुआ । मुक्त । निवृत्त । २ मना किया हुआ । निषिद्ध । ३ हटा हुआ । खंडित । ४ अलग किया हुआ । विभक्त । ५ जो मन में पनद रिया गया है । मनोनीत । ६ चारों ओर से घेरा हुआ । ७ ऊपर से ढका हुआ । आच्छादित । ८ अस्तगत [को०] । ९ जा विद्यमान न हो [को०] । १० लोटा हुआ [को०] । ११ चक्कर खाता हुआ [को०] । १२ जिसका प्रशंसा या स्तुति का गड़ है ।

यौ०—व्यावृत्तगति = भेद गति । घूमो चाल । व्यावृत्तचेता = जिसका मन किसी ओर से पराङ्मुख है । व्यावृत्त दह = पर्वत आदि जो फट गए हैं ।

व्यावृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ खंडन । २ आवृत्ति । ३ मन से चुनने या पसंद करने का काम । ४. चारों ओर से घेरना । ५ स्तुति । प्रशंसा । तारीफ । ६ मनाही । निषेध । ७. बाधा । खलल । ८ निराकरण । निर्णय । मीमांसा । ९ नियाग । १०. एक प्रकार का यज्ञ [को०] । ११ पृथक्ता । भिन्नता [को०] । १२ स्पष्टता [को०] । १३ (नाद) घुमाना [को०] । १४. अविद्यमान होना [को०] । १५ घेरना [को०] । १६ ढकना [को०] ।

व्याशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] विदिशा । दिशाओं का कोण या मध्यवर्ती भाग [को०] ।

व्याश्रय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ सहारा । आश्रय । साहाय्य । २. वह जो दूसरे का सहारा लेता हो [को०] ।

व्यासग—सञ्ज्ञा पु० [सं० व्यासङ्ग] । २ बहुत अधिक आसक्ति । ३ आसक्तिपूर्ण अध्ययन (को०) । ४ पाथक्य । अलग होना (को०) । ५ योग (को०) । ६ घबड़ाने की स्थिति या भाव (को०) । ७. घनिष्ठ संबंध वा संपर्क (को०) । ८ मनोयोग ।

व्यासगी—वि० [सं० व्यसङ्गिन्] १. विशेष रूप में आसक्त । २ जो मनोयोगपूर्वक सलग्न हो [को०] ।

व्यास—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था । कहा जाता है, शठारहो पुराणों महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्होंने की थी ।

विशेष—इनके जन्म आदि की कथा महाभारत में बहुत विस्तार के साथ दी है । उसमें कहा गया है कि एक बार मत्स्यगवा सत्यवती नाव खे रही थी । उसी समय पराशर मुनि वहाँ जा पहुँचे और उसे देखकर आसक्त हो गए । वे उससे बोले कि तुम मेरी कामना पूरी करो । सत्यवती ने कहा—महाराज नदी के दोनों ओर ऋषि, मुनि आदि बैठे हुए हैं और हम लोग को दख रहे हैं । मैं कैसे आपकी कामना पूरी करूँ । इसपर पराशर मुनि के अपने तप के बल से कुहरा खड़ा कर दिया जिससे चारा और अवेरा छा गया । उस समय सत्यवती ने फिर कहा महाराज, मैं अभी कुमारी हूँ, और आपकी कामना पूरी करने से मेरा कौमार नष्ट हो जायगा । उस दशा में मैं किस प्रकार अपने घर में रह सकूँगी । पराशर ने उत्तर दिया नहीं, इससे तुम्हारा कौमार्य नष्ट नहीं होगा । तुम मुझसे वर मागो । सत्यवती ने कहा कि मरे शरीर से मछली की जो गव आती है, वह न आवे । पराशर ने कहा कि ऐसा ही होगा । उसी समय से उसके शरीर से सुगंध निकलने लगी और तबसे उसका नाम गंधवती या योजनगवा पड़ा । इसके उपरांत पराशर मुनि ने उसके साथ सभाग किया जिससे उसे गर्भ रह गया और उस गर्भ से इन्होंने व्यासदेव की उत्पत्ति हुई । इनका जन्म नदी के बीच के एक टापू में हुआ था और इनका रंग बिलकुल काला था, इसलिये इनका नाम कृष्ण द्वैपायन पड़ा । इन्होंने वचन से ही तपस्या आरम्भ की और बड़े हान पर वडा का संग्रह तथा विभाग किया, इसलिये ये वेदव्यास कहलाए । पीछे से जब शातनु से सत्यवती का विवाह हुआ, तब अपने पुत्र वाचश्रवाय के मरने पर सत्यवती ने इन्हें बुलाकर वाचश्रवाय के मरने पर सत्यवती ने इन्हें बुलाकर वाचश्रवाय का विधवा पालना (आवका और श्रमालका) के साथ नियोग करने का आज्ञा दी जिससे धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ । विदुर भी इन्हीं के वार्य से उत्पन्न हुए थे । ये पाराशर्य, कानन, बादरायण, सत्यभारत, सत्यव्रत और सत्यरत भी कहलाते हैं ।

२ पुराणानुसार वे ऋषि हैं, जिन्होंने भिन्न भिन्न कर्मों में जन्म ग्रहण करके वेदों का संग्रह और विभाग किया था ।

विशेष—ये सब ब्रह्मा और विष्णु के अवतार माने जाते हैं, और इनके नाम इस प्रकार हैं—स्वयम्भुव, प्रजापति या मनु, उग्रना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु या यम, इन्द्र, वसिष्ठ, मारुत, त्रिवाम, ऋषभ या विष्टप, सुनेजा या मारुद्वाज, अतरिन्ध या वर्म, वृषवन् या सुचक्षु, त्रय्यारणि, धनजय, कृतजय, ऋतजय, भरद्वाज, गौतम, उत्तम या हर्यश्म, वाचश्रवा या नारायण (इन्हें वेण भी कहते हैं), सोममुख्यायन या तृणविदु, ऋक्ष या वाल्मीकि, शक्ति, पराशर, जातुकण और कृष्ण द्वैपायन ।

३ वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथाएँ लोगों को सुनाता हो । कथावाचक । उ०—तो कभी व्यास वन पुराणों प्रयोजनीय वृत्तांतों की कथा कह सुनाती है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१ । ४ वह रेखा जो किसी बिल्कुल गोल रेखा या वृत्त के विसा एक बिंदु से बिल्कुल सीधी चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिरे तक पहुँचो हो । ५. विस्तार । प्रसार । फैलाव । ६ वितरण । विभाजन (को०) । ७ समासयुक्त पदों का विश्लेषण या विग्रह (को०) । ८ पृथक्ता । अलगवा (को०) । ९ चौड़ाई । १० उच्चारण का एक दाप (को०) । ११ व्यवस्थापक । सकलन करनेवाला । वह जो सकलन करता हो (को०) । १२ व्यवस्था । सकलन करने का काम (को०) । १३. विस्तारयुक्त विवरण । विस्तृत विवरण (को०) । १४ एक प्रकार का धनुष जिसकी तौल या वजन १०० पल का होती थी (को०) ।

व्यासकूट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ महाभारत से आए हुए वेदव्यास के कूट श्लोक । २ वे कूट श्लोक जो सीताहरण हान पर रामचंद्र जी ने माल्यवान् पर्वत पर कहे थे और जिनसे उन्हें कुछ शांति मिला था ।

व्यासक्त—वि० [सं०] १ जो आसक्त हुआ हो । जिसका मन बेतरह आ गया हो । २ सबद्ध । लगा हुआ । जुड़ा हुआ (को०) । ३. पृथक्कृत । अलग किया हुआ । ४ व्याकुल । पराशान (को०) । ५. आलिंगित । आलिंगनबद्ध (को०) । ६. अनासक्त (को०) ।

व्यासगीता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम ।

व्यासता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास का भाव या धर्म । व्यासत्व ।

व्यासतार्थ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक तार्थ का नाम ।

व्यासत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] व्यास का भाव या धर्म ।

व्यासदेव—सञ्ज्ञा पु० [सं०] कृष्ण द्वैपायन । वेदव्यास (को०) ।

व्यासपीठ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पुराणा के व्याख्याता का आसन । व्यास-सन (को०) ।

व्यासपूजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. आपाद मास का पूर्णिमा का हाने-वाली गुरु को पूजा जिसे व्यासपूजा भी कहते हैं ।

व्यासमाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० व्यासमातृ] व्यास की माता, सत्यवती (को०) ।

व्यासमूर्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम ।

व्यासयति—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक तीर्थ का नाम जिसे व्यासतीर्थ भी कहते हैं [को०] ।

व्यासराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक तीर्थ [को०] ।

व्यासवन—सञ्ज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन वन का नाम ।

व्यास समास—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु और सत्त्व [को०] ।

व्यास सरोवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार वह सरोवर जिसमें युद्ध के अनन्तर मृगयुवक छिपा था [को०] ।

व्याससू—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सत्यवती [को०] ।

व्याससूत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेदान्तसूत्र ।

व्यासस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन पवित्र तीर्थ का नाम ।

व्यासस्मृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक स्मृति का नाम [को०] ।

व्यासारण्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यासवन नामक प्राचीन वन ।

व्यासार्द्ध—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यास का आधा भाग । किन्हीं वृत्त के केंद्र से उसके किन्हीं छोर तक की रेखा ।

व्यासासन—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह आसन जिसपर कथा कहनेवाले व्यास बैठकर कथा कहते हैं । व्यासीठ ।

व्यासिद्ध—वि० [स०] १ मना किया हुआ । विजित । निषिद्ध (माल आदि) । २ रक्षा हुआ । अवरुद्ध ।

व्यासीय—वि० [स०] व्यास सबको । व्यास का ।

व्यासेव—सञ्ज्ञा पु० [स०] निषेव । वजन । प्रतिव्यव [को०] ।

व्याहतव्य—वि० [स०] व्याहृतव्य [उल्लघन करने योग्य [को०] ।

व्याहत—वि० [स०] १ मना किया हुआ । निवारित । निषिद्ध । २. व्यथित । ३. हताश । निराश [को०] । ४. अमृत । व्याकुल । चक्राया हुआ [को०] । ५. जिसपर चोट की गई हो [को०] । ६. परस्पर विरुद्ध । परस्पर विरोधी [को०] । ७. रोका हुआ । बाधित । विफल या निष्फल किया हुआ । ८. भयभीत । भयालु । भययुक्त [को०] ।

व्याहृतार्थता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य के अनुसार एक रचनागत दोष जिसमें उत्तरवर्ती कथन से पूर्ववर्ती कथन को हीनता वा व्यर्थता व्यक्त हो । पहले कही हुई बात का आगे कही हुई बात से उत्तर न रहना ।

व्याहृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] खलल पहुँचाना । बाधा डालना । २. व्यास में परस्पर असंगति या वचन विरोध [को०] ।

व्याहनृत्य—वि० [स०] [वि० स्त्री० व्याहनृत्पा] अत्यंत अश्लील [को०] ।

व्याहरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. कथन । उक्ति । २. उच्चारण [को०] ।

व्याहार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वाक्य । जुमला । वचन । कथन । २. ध्वनि । स्वर । आवाज [को०] । ३. हास परिहास । मजाक । परिहास भरी उक्ति [को०] । ४. पक्षियों का चहचहाना । कलरव [को०] ।

व्याहाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यक्त वा परिस्फुट ध्वनि । स्फुट पुकार [को०] ।

व्याहित—वि० [स०] व्याधिग्रस्त । रोगयुक्त [को०] ।

व्याहृत—वि० [स०] १. कहा हुआ । कथित । उक्त । २. खादित । भक्षित [को०] । ३. जिसने कुछ कहा हो । जिसने ध्वनि की हो [को०] ।

व्याहृत—सञ्ज्ञा पु० १. बोलना । कहना । वार्ता करना । २. अस्पष्ट कथन । कल कूजन । अस्पष्ट ध्वनि (विशेषतः पशुपक्षियों की) । ३. निर्देश । नियोग । वाचन । व्यापन [को०] ।

व्याहृत सदेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्याहृत सन्देश वह जो सूचना या समाचार कहे । सन्देशहारक । दूत [को०] ।

व्याहृति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. कथन । उक्ति । २. उच्चारण । वचन [को०] । ३. भू, भुव, स्वः इन तीनों का मन्त्र ।

विशेष—कहते हैं, जहाँ और कोई मन्त्र न हो, वहाँ इसी व्याहृति मन्त्र से काम लेना चाहिए । कुछ विद्वानों के मतानुसार व्याहृति सात हैं—भू, भुव, स्व, मह, जन, तप और सत्यम् । इनमें प्रारम्भिक तीन महाव्याहृति कही गई हैं और ये सविन और पृथिवी की कन्या मानी जाती हैं ।

व्युदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्युन्दन अच्छी तरह तर करना । आर्द्र करना । गीला करना [को०] ।

व्युच्चरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अत्यय । उल्लघन । अतिक्रमण [को०] ।

व्युच्छित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विनाश । वरवादी । उन्मूलन ।

व्युच्छेत्ता—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] व्युच्छेत् १. विनाश करनेवाला । वरवाद करनेवाला । २. (वह) जो काटा गया हो । (वह) जिसे उन्मूलित किया गया हो [को०] ।

व्युच्छेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] विनाश । पूर्णतः उन्मूलन । व्युच्छित्ति [को०] ।

व्युत्—वि० [स०] १. बुना हुआ । व्युत् । गुँथा हुआ । २. जो समतल किया गया हो । जैसे, मार्ग [को०] ।

व्युत्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. दे० 'वृत्ति' । २. बुनाई की मजदूरी । बुनाई । सिलाई [को०] ।

व्युत्क्रम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. क्रम में उलटफेर होना । व्यतिक्रम । गड़बड़ी । २. निश्चित वा उचित का परित्याग करना [को०] । ३. अतिक्रमण । उल्लघन [को०] । ४. अस्तव्यस्त होना [को०] । ५. मृत्यु । मरण [को०] ।

व्युत्क्रमण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. अलग होना । अलगवाव । २. अतिक्रमण । उल्लघन । [को०] ।

व्युत्क्रात—वि० [स०] व्युत्क्रान्त १. लाँघा हुआ । लघित । उल्लघित । २. गत । गया हुआ । प्रस्थित । ३. तिरस्कृत । निरादृत । उपेक्षित । ४. विपरीत दिशा में जानेवाला । प्रतिकूल पथगामी [को०] ।

यौ०—व्युत्क्रात जोवित = मृत् । निर्जिव । गतप्राण । व्युत्क्रातधर्म = कृतव्यवसाय का उद्देश्य करनेवाला । व्युत्क्रातवर्मा । व्युत्क्रातवर्मा ।

व्युत्क्रातरजा—वि० [स० व्युत्क्रान्तरजस] १ रजोगुण से रहित । वासनाहीन । २ निष्पाप । अकलुष [को०] ।

व्युत्क्रातवर्त्मा—वि० [स० व्युत्क्रान्तवर्त्मन्] सत्य से च्युत । विहित एवं उचित मार्ग का परित्याग करनेवाला [को०] ।

व्युत्क्रातसमापत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्त समापत्ति] १ बौद्ध मता-नुसार अनन्यमनस्कता की स्थिति । समाधि या एकाग्रता की अवस्था । २ एकीकरण वा एकत्र समाहरण की स्थिति [को०] ।

व्युत्क्राता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्ता] एक प्रकार की प्रहेलिका । पहेली का एक भेद । पहेली ।

व्युत्त—वि० [स०] आर्द्र या तर किया हुआ । जिसका व्युदन किया गया हो [को०] ।

व्युत्थान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ स्वतंत्र या स्वाधीन होकर काम करना । २ किसी के विरुद्ध आचरण करना । खिलाफ चलना । ३ रुकावट डालना । रोकना । ४ समाधि । ५ एक प्रकार का नृत्य । ६ योग के अनुसार चित्त की क्षिप्त, मूढ और विक्षिप्त ये तीन अवस्थाएँ या चित्तभूमियाँ जिनमें योग का साधन नहीं हो सकता । इन भूमियों में चित्त बहुत चंचल रहता है । ७ महत् सक्रियता । सचेष्टता (को०) । ८ हाथी को उठने के लिये प्रेरित करना (को०) । ९. किसी से दबना या नीचा देखना (को०) । १० खडन । विरोध (को०) ।

व्युत्थापित—वि० [स०] उठाया हुआ । जगाया हुआ । जिसे उठने या जगने के लिये प्रेरित किया गया हो [को०] ।

व्युत्थित—वि० [स०] १ कर्तव्य मार्ग से विचलित । उच्छास्नवर्ती । २ जिसकी बुद्धि स्थिर न हो । ३. जो बहुत क्षुब्ध हो [को०] ।

व्युत्पत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी पदार्थ आदि की विशिष्ट उत्पत्ति । किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान । २ शब्द का मूल रूप । वह शब्द जिससे कोई दूसरा शब्द निकला हो । ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अन्ध्या ज्ञान वा प्रगाढ़ पांडित्य । जैसे, —दर्शन शास्त्र में उनको अन्ध्या व्युत्पत्ति है । ४ विद्वत्ता । ज्ञान (को०) । ५ व्रति या उच्चारण की भिन्नता (को०) । ६ बाढ । विकास (को०) ।

व्युत्पन्न—वि० [स०] १ जिसका संस्कार हो चुका हो । संस्कृत । २. जिसका किसी विज्ञान या शास्त्र में अन्ध्या प्रवेश हो । जो किसी शास्त्र आदि का अन्ध्या ज्ञाता हो । ३ उत्पादित । पैदा किया हुआ (को०) । ४ अव्युत्पन्न का विपरीतार्थबोधक । जिसकी व्युत्पत्ति की गई हो (को०) । ५ जो निरुक्ति या निर्वचन द्वारा निर्मित हो (को०) । ६ पूर्ण किया हुआ । संपन्न (को०) ।

व्युत्पादक—वि० [स०] १ व्युत्पत्ति या निर्वचन । करनेवाला । २ उत्पन्न करनेवाला ।

व्युत्पादन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ व्युत्पत्ति । मूल रूप या शब्द का निर्वचन । २ निर्देशन । शिक्षण (को०) ।

व्युत्पाद्य—वि० [स०] जिसकी निरुक्ति हो जा सके । व्युत्पत्ति के योग्य (को०) ।

व्युत्सर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जैनो के अनुसार शरीर का मोह या चित्त का परित्याग । उ०—दूसरे प्रकार के तप में प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीरत्याग) की गणना होती है ।—आ०, भा०, पृ० १४३ । २ विरक्ति । त्याग (को०) ।

व्युत्सेक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चारों ओर छिड़कना या उड़ेलना [को०] ।

व्युद, व्युदक—वि० [स०] उदकविहीन । जलरहित [को०] ।

व्युदस्त—वि० [स०] १ फेंका हुआ । दूर किया हुआ । क्षिप्त । २ अस्वीकृत किया हुआ । ३ विकीर्ण [को०] ।

व्युदास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ हटाना । निकाल देना । निरसन । परि-त्याग । (व्याकरण) । २. हत्या । विनाश । वध । ३ प्रतिपेध । निपेध । ४. उदासीनता । उपेक्षा । ५ फेंकना । दूर करना । अस्वीकृत करना । ६ अत । समाप्ति । विराम [को०] ।

व्युदित—वि० [स०] जिसपर वाद विवाद किया गया हो [को०] ।

व्युन्मिश्र—वि० [स०] मिलाया हुआ । मिश्रित किया हुआ । सकीर्ण [को०] ।

व्युप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो अपने हाथों को स्वयं चबाता या खाता हो [को०] ।

व्युपदेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ठगने या धोखा देने का काम । ठगी । व्यपदेश ।

व्युपद्रव—वि० [स०] जो भाग्य के फेर से या दुर्दिन से अशांत एवं क्षुब्ध न हो ।

व्युपपत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] फिर से जन्म होना । पुनर्जन्म [को०] ।

व्युपरत—वि० [स०] शांत । निश्चल । रुढ़ [को०] ।

व्युपरम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शांति । विराम । समाप्ति । २ छुटकारा । निवृत्ति । ३ स्थिति ।

व्युपवीत—वि० [स०] उपवीतरहित । यज्ञोपवीत विहीन [को०] ।

व्युपशम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अशांति । २ विराम का अभाव (को०) । ३. पूर्ण विराम, शांति या समाप्ति (को०) ।

व्युस—वि० [स०] १ विकीर्ण किया हुआ । बिखेरा हुआ । २ कटाया हुआ । क्षीर किया हुआ । मुडित [को०] ।

व्युसकेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शिव का एक नाम । २ अग्नि । ३ वह जिसने क्षीर कराया हो । ४ वह जिसके बाल बिखरे हो । अस्तव्यस्त केशोवाला [को०] ।

व्युष—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य के उदय होने का समय । भोरहरी प्रात-काल । सबेरा ।

व्युषित—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्युष्ट' [को०] ।

व्युषिताश्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

व्युष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ प्रभात । तड़का । सबेरा । २ दिन । दिवस । ३ फल । परिणाम । ४ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार श्रावण में नए वर्ष का प्रथम दिवस (को०) ।

व्युष्टि—वि० १ जला या भुनसा हुआ। २ चोतित, प्रकाशयुक्त या जो स्पष्ट हो गया हो (को०)। ३ व्यतीत। बीता अथवा गुजरा हुआ (को०)। ४ उपकालीन प्रकाश से युक्त। प्राभातिक सूर्य किरणों से युक्त। प्रभातीभूत। ५ बिताया हुआ। गुजारा हुआ। रहा हुआ। निवाम द्वारा गुजारा हुआ (को०)।

व्युष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फल। नतीजा। परिणाम। २ समृद्धि। ३ स्तुति। प्रशंसा। ४ प्रकाश। उजाला। ५ प्रभात। तड़का। ६ दाह। जलन। ७ इच्छा। कामना। चाहिण। ८ सौंदर्य। सुंदरता (को०)। ९ आठवें दिन भोजन करना (को०)।

व्यूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यूह बनाकर खड़ा हो। २ वह जिसका विवाह हो चुका हो।

व्यूह—वि० १ स्थूल। मोटा। २ उत्तम। बढ़िया। ३ तुल्य। समान। ४ दृढ़। मजबूत। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। जैसे, सेना (को०)। ६ विवाहित। ७ अव्यवस्थित। क्रमहीन। ८ विकसित (को०)। ९ फैला हुआ। विशाल (को०)।

यौ०—व्यूहककट=वर्म आदि को धारण किए हुए। जिमने कच आदि पहना हो।

व्यूढि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विन्यास। सजावट। २ स्थूलता। मोटाई। ३ सैन्यविन्यास। दे० 'व्यूह' (को०)।

व्यूढोरस्क—वि० [सं०] विजाल या चौड़ी छातीवाला (को०)।

व्यूत—वि० [सं०] १ बुना हुआ। २ समतल या बराबर किया हुआ (को०)।

व्यूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कांडे आदि बुनने की क्रिया। बुनाई। २ बुनने की मजदूरी (को०)।

व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३ तर्क। ४ शरीर। वदन। ५ सेना। फौज। ६ परिणाम। नतीजा। ७ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। लड़ाई के समय की अलग अलग उपयुक्त स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की नियुक्ति। सेना का विन्यास। बलविन्यास।

विशेष—प्राचीन काल में युद्धक्षेत्र में लड़ने के लिये पैदल, अश्वारोही, रथ और हाथी आदि कुछ सास ढंग से और खाम खाम मौकों पर रखे जाते थे, और सेना का यही स्थापन व्यूह कहलाता था। आकार आदि के विचार से ये व्यूह कई प्रकार के होते थे। जैसे,—दंड व्यूह, शकटव्यूह, वराहव्यूह, मकरव्यूह, सूचीव्यूह, पञ्चव्यूह, चक्रव्यूह, वज्रव्यूह, गरुडव्यूह, श्येनव्यूह, मंडलव्यूह, धनुर्व्यूह, सर्वनाभद्रव्यूह आदि। राजा या सेना का प्रधान सेनापति प्रायः व्यूह के मध्य में रहता था, और उसपर सहसा आक्रमण नहीं हो सकता था। जब इस प्रकार सेना के सब

अंग स्थापित कर दिए जाते थे, तब जन्तु सहसा उन्हें छिन्न भिन्न नहीं कर सकते थे।

८ किसी प्रकार के व्यवस्था या विनियम आदि से रक्षित रहने के लिये की हुई ऊपर योजनाएँ। ९ उपजीव। अन्वय। भाग। अंग (को०)। १०. अलग अलग करना। विभाग करना (को०)। ११. अस्वस्थ बनना (को०)। १२ स्थान बदलना (को०)। १३, निम्नृत व्याख्या (को०)। १४ अंग प्रशंसा (को०)।

यौ०—व्यूहवाणि, व्यूहपृष्ठ—सेना का पिछला भाग। चक्रव्यूह, व्यूहभेद=सैनिका का नियति या क्रम हटाना। मानका की व्यूहस्थिति का छिन्नभिन्न होना। व्यूहचक्र, व्यूहराज, व्यूहविभाग=सेना की एक विभागत अथवा पृथक् पक्ति।

व्यूहक—संज्ञा पुं० [सं०] आचार। रूप (को०)।

व्यूहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध के लिये भिन्न भिन्न स्थानों पर सैनिकों का नियुक्ति करना। सेना का स्थापित करना। व्यूह रचना। २ मिनाना। ३ जंगल के अंगों की वनाभट (को०)। ४ स्थानपरिवर्तन (को०)। ५ (भूगण का) विभाग (को०)।

व्यूहमति—संज्ञा पुं० [सं०] अनित्यवृत्त के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

व्यूहरचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैनिकों की योजनानुसार उपयुक्त स्थान पर रखा करना। मोरनेवृत्ति (को०)।

व्यूहराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बोधिमत्त्व का नाम। २. सर्वोत्कृष्ट व्यूह। श्रेष्ठ व्यूह (को०)। ३ एक प्रकार की नमाधि (को०)।

व्यूहित—वि० [सं०] १ समूहबद्ध। २ व्यूह के आकार में स्थित। व्यूहबद्ध (को०)।

व्यूट्ट—वि० [सं०] १ दुर्बल। नमृद्विहीन। नमृद्विहीन वा वचन। दुर्माय-गन्त। बदविश्वस्त। २ तिनो वस्तु न पृथक् किया हुआ। पृथक्कृत या वचित। ३ योग्य। उपयुक्त। प्रपूर्ण। ४ निष्फल किया हुआ। विमनीहृत। ५ मारग्राह (को०)।

व्यूद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यथावय। उदत्तिस्मयी। २ न्यूनता। दुर्नभता। जग्राव (को०)।

व्येक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्येका] जिनमें एक की कमी हो। एक से ऊपर। ऐकोन (को०)।

व्येनस्—वि० [सं०] दापरहित। अतपराध (को०)।

व्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जिसमें अनेक रंग हो। उपा, जिनमें विविध रंग होते हैं (को०)।

व्योक्तस्—वि० [सं०] अलग रहनेवाला। जो संपृक्त न हो (को०)।

व्योकार—संज्ञा पुं० [सं०] लोकार। तोहार (को०)।

व्योम—संज्ञा पुं० [सं०] व्यामन्। १ आकाश। अंतरिक्ष। आसमान। २ मेघ। बादल। ३ जल। पानी। ४ अवकाश। अंतर (को०)। ५ सूर्य का मंदिर। सूर्यमंदिर (को०)। ६ अन्नक (को०)। ७ शरीरस्थ वायु (को०)। ८ एक बड़ी मत्स्या का सूचक शब्द (को०)। ९ कल्याण। सुख (को०)। १०. हार।

विष्णु (को०) । ११. एक एकाह कृत्य (को०) । १२. वर्षदेवता अथवा प्रजापति का नाम (को०) । १३ हरिवंश पुराण में वर्णित दशार्ह के एक पुत्र का नाम (को०) ।

व्योमक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बौद्ध मतानुसार एक आभूषण (को०) ।

व्योमकेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम ।

व्योमकेशी—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योमकेशिन्] शिव का एक नाम ।

व्योमगगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्योमगङ्गा] आकाशगगा ।

व्योमग—वि० [स०] आकाशचारी (को०) ।

व्योमगमनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो । आसमान में उड़ने की विद्या ।

व्योमगमनीविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्योमगमनी' ।

व्योमगामी—वि० [स० व्योमगामिन्] आकाशचारी (को०) ।

व्योमगुण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शब्द (को०) ।

व्योमचर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो आकाश में विचरण करता हो । आकाशचारी ।

व्योमचारी—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योमचारिन्] १ देवता । २ पक्षी । चिड़िया । ३ वह जो आकाश में विचरण करता हो । ४ सत (को०) । ५ आकाशीय पिंड (को०) । ६ ब्राह्मण (को०) ।

व्योमदेव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव (को०) ।

व्योमधारण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पारा (को०) ।

व्योमधूम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मेघ । बादल ।

व्योमघ्वनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आकाशवाणी (को०) ।

व्योमनाशिका, व्योमनासिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भारती नामक पक्षी ।

व्योमपचक—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योमपचक] शरीर में रहनेवाले पाँच छिद्र (को०) ।

व्योमपाद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम ।

व्योमपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] असमय पदार्थ । आकाशकुमुप (को०) ।

व्योममजर—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योममजर] दे० 'व्योममडल' (को०) ।

व्योममडल—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योममण्डल] १ आकाश । आसमान । उ०—व्योममण्डल में—जगतीतल में सोती शात सरोवर पर उस अमल कमलिनी दल में ।—अनरा, पृ० १४ । २ पताका । ध्वजा । झंडा ।

व्योममाय—वि० [स०] आकाशचुवी (को०) ।

व्योममुद्गर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह शब्द जो हवा के बहुत जोर से चलने से होता है । हुका ।

व्योममृग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा के दसवें घड़े का नाम ।

व्योमयान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह यान या सवारी जिमपर चढकर मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो । विमान । २ हवाई जहाज ।

व्योमरत्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सूर्य ।

व्योमवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आकाशवल्ली या अमरवेल नाम की लता ।

हि० श० ६-४०

व्योमवृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अंतरिक्ष, आकाश से होनेवाली वर्षा । उ०—मजरित प्रकृति, मुकुलित दिगत, कूजन गु जन की व्योम-वृष्टि ।—युगात, पृ० ६ ।

व्योमस भवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्योमसम्भवा] विचित्रवर्ण की गौ । चिनकवरी गाय (को०) ।

व्योमसद्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ देवता । सुर । २. एक देवयोनि । गवर्ग । ३ भूत, प्रेत (को०) ।

व्योमसरित्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आकाशगगा (को०) ।

व्योमसरिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्योमसरित्] आकाशगगा । मदाकिनी ।

व्योमस्थल—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] आकाश । उ०—विद्युन्मयी घटा है धन की । छिपा रत्नदीपक अञ्जल में, शोभित है वह व्योमस्थल में, ज्योति भनकती है पल पल में, वर्षा ऋतु ने दिखलाई है ज्योतिर्मयी विभूति गगन की ।—प्रभाजलि, पृ० ११६ ।

व्योमस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी । जमीन ।

व्योमाख्या—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अबरक अश्रक । २ मूल या आदि कारण (को०) ।

व्योमाधिप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव (को०) ।

व्योमाभ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गौतम बुद्ध का एक नाम ।

व्योमारि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विषदेवता ।

व्योमी—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्योमिन्] चंद्रमा के दस घोड़ों में से एक का नाम (को०) ।

व्योमोदक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वर्षा का जल । बरसात का पानी ।

व्योमिनक—वि० [स०] व्योम सबधी । व्योम या आकाश का ।

व्योरना—क्रि० स० [हि० व्योरा] दे० 'व्योरना'

व्योरा पु—सञ्ज्ञा पुं० [स० विवरण] दे० 'व्योग' । उ०—मैं हूँ जीव मती का भरा । कहँ जानूँ चौका कँ व्योरा ।—कवीर सा०, पृ० ५४८ ।

व्योरेवार—अव्य० [हि० व्योग] तकमील के साथ । व्योरेवार । सविस्तर । उ०—इन तमाम ग्रंथों की रचना काल का ठीक ठीक पता लग सकता तो हिंदुस्तान का धार्मिक, सामाजिक, और आर्थिक इतिहास अमपूर्वक व्योरेवार लिखा जाता ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४३ ।

व्योष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सोठ, पीपल और मिर्च इन तीनों का समूह । त्रिकटु ।

व्योहरनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० व्यवहारणीय] व्यवहार । वर्तवि । उ०—कहै मित्र की बात करै दुसमन को करनी । ना कीजै विस्वास करै कैसी व्योहरनी ।—बलदू०, पृ० ६७ ।

व्योहार—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार' । उ०—देखा चाह जग व्यवहार ।—रामानंद०, पृ० ४६ ।

व्योपारी—सञ्ज्ञा पुं० [स० व्यापारिन्] दे० 'व्यापारी' । उ०—तब वह वैष्णवन वा व्योपारी के साथ घर रह्यो ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०४ ।

व्योरना—कि० म० [म० विवरण] दे० 'व्योरना'। उ०—आदित्य वार व्योरि ले आप। आपा व्योरत पुनि न पाप। गोरख०, पृ० २४४।

व्योहार—सज्ञा पुं० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—श्रीरमाविक चढ सो प्रभु कहे, जो तुम व्योहार करो,—दा मी वावन०, भा० १, पृ० १६५।

वृद्ध—सज्ञा पुं० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—भिक्षुक वृद्ध दान तिहि दिन्व।—प० रामो, पृ० १५६।

वृच्छ—सज्ञा पुं० [म० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ०—सावरा आयउ साहिवा पगइ विलवी गार। वृच्छ विलगी वेलझ्या, नरा विलवी नार।—ढोला०, पृ० २६६।

व्रज—सज्ञा पुं० [म०] १ जाना या चलना। व्रजन। गमन। २. समूह। भुड ३ मथुरा और वृंदावन के आसपास का प्रांत जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र है और जो इसी कारण बहुत पवित्र माना जाता है। पुराणों आदि के अनुसार मथुरा से चारों ओर ८४-८४ कोस तक की भूमि व्रजभूमि कही गई है, और इसकी प्रदक्षिणा का बहुत अधिक माहात्म्य कहा गया है। ४ अहीरो का टोला या बाड़ा। उ०—नयननि को फल लेति निराख खग मृग सुग्मी व्रजवधू अहीर—तुलसी (शब्द०)। ५ गोष्ठ। गोकुल। गोशाला (को०)। ६ आवास। विश्राम करने की जगह (को०)। ७ पथ। सड़क। मार्ग (को०)। ८ बाटल (को०)।

व्रजक—सज्ञा पुं० [स०] भिक्षा के निमित्त भ्रमणशील सन्यासी (को०)।

व्रजकिशोर—सज्ञा पुं० [स०] कृष्ण (को०)।

व्रजन—सज्ञा पुं० [स०] १ चलना। जाना। गमन। २ निवासन। देशनिकाला (को०)। ३ मार्ग। सड़क (को०)। ४ आकाश (को०)। ५ अजामीन के एक पुत्र का नाम (को०)।

व्रजनाथ—सज्ञा पुं० [म०] श्रीकृष्ण।

व्रजपर्यग्र—सज्ञा पुं० [स०] पशुओं की गणना।

विशेष—चद्रगुप्त के समय में अर्धवृद्ध को राजकीय पशुओं की घुरे निशान आदि के साथ वही में (गनती रखनी पड़ती थी)।

व्रजभापा—सज्ञा स्त्री० [स०] मथुरा, आगरा, इटावा और इनके आसपास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा, जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। उक्त जिलों के पश्चिम या दक्षिण में यही राजस्थानी का रूप धारण कर लेती है।

विशेष—इस भाषा का प्राचीन साहित्य बहुत उच्च और बड़ा है और इधर चार पाँच सौ वर्षों में उत्तर भारत के अविश्वकवियों ने प्रायः इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमें से सूर, तुलसी, बिहारी आदि अनेक कवियों ने तो बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। यह भाषा बहुत ही कर्णमधुर मानी जाती है। खड़ी बोली में जो सझाए, विशेषण और भूतकृदंत आदि आकार होते हैं, वे इस भाषा में प्रायः ओकारांत हो जाते हैं।

श्रीर कारकचिह्न भी प्रायः ओकारांत ही होते हैं जैसे,—घोड़ो, चल्थो, को सों, मो आदि। इसके कारकचिह्न निज के हैं, जो न खड़ी बोली में मिलते हैं और न अरबी में। भाषा-विज्ञान की दृष्टि में यह भाषा अंतरंग समुदाय की मय भाषाओं में मुख्य मानी जाती है।

व्रजभू—सज्ञा स्त्री० [स०] व्रजमंडल की भूमि (को०)।

व्रजभू—सज्ञा पुं० एक प्रकार का कदव (को०)।

व्रजभू—वि० व्रज में होनेवाला (को०)।

व्रजभूमिक—सज्ञा पुं० [म०] प्राचीन भारत में धर्म महामात्र का एक पद। उ०—ये धर्म महामात्र कई प्रकार के थे, श्री अर्धवृद्ध-महामात्र, व्रजभूमिक, अतमहामात्र आदि।—पा० भा०, पृ० २५२।

व्रजमंडल—सज्ञा पुं० [म० व्रजमण्डल] व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।

व्रजमोहन—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजयुवती—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपिका (को०)।

व्रजराज—सज्ञा पुं० [म०] १ श्रीकृष्ण। नंद महर। २ नंदजी। उ०—कुँवर कन्दाई दगनि सुखदाई नखमिख मनि गननि अलवृत्त राजत श्री व्रजराज के निकट।—घनानंद, पृ० ५५६।

व्रजरामा—सज्ञा स्त्री० [स०] व्रज की गोपी (को०)।

व्रजलाल—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजलीला—सज्ञा स्त्री० [स०] कृष्णलीला। व्रज में की गई कृष्ण भगवान् की लीला। उ०—सो इनकी जा प्रकार व्रजलीला में प्राप्ति भई सो ऊपर कहि आए हैं।—दो सो वावन०, भा० २, पृ० ८६।

व्रजवधू, व्रजवनिता—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी (को०)।

व्रजवर—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण (को०)।

व्रजवल्लभ—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजवीर(पु)—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजसान—सज्ञा पुं० [स०] मनुष्य (को०)।

व्रजमुंदरी—सज्ञा स्त्री० [स० व्रजमुंदरी] गोपी (को०)।

व्रजस्त्री—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी (को०)।

व्रजम्पति—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजागन—सज्ञा पुं० [स० व्रजाङ्गन] गोशाला। गोष्ठ (को०)।

व्रजागना—सज्ञा स्त्री० [स० व्रजाङ्गना] गोपिका। व्रजवनिता।

व्रजाजिर—सज्ञा पुं० [स०] गोष्ठ। गोशाला (को०)।

व्रजावास—सज्ञा पुं० [स०] गोपी की बस्ती। ग्वालों का गाँव (को०)।

व्रजित^१—सज्ञा पुं० [स०] गमन। जाना। घूमना (को०)।

व्रजित^२—वि० गत। प्रस्थित। गया हुआ (को०)।

व्रजी—वि० [स० व्रजिन] समूह के रूप में एकत्र (को०)।

व्रजेंद्र—सज्ञा पुं० [स० व्रजेंद्र] १ नंदराय। २, श्रीकृष्ण।

द्वेष्ट—सङ्घा पुं० [सं०] शत्रुत्व। प्रजेद्र [को०]।

द्वेष्टर—सङ्घा पुं० [सं०] शत्रुत्व।

द्वय—वि० [सं०] गोशाला या गोठ न संज्ञितेन [को०]।

द्वया—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ घूमना। २ फटना। ३ घटना। ४ घटना।

उ०—पुरलोका जहाँ नगण्य ह वह प्रया प्रत धन्य वन्य ह।—

माकेत, पु० ३५८। २ गमन। जाना। ३, आक्रमण। नहारे।

४ एक हा तरह की बहुत ता बाजे एक जगह पगत्र बरता।

५ दन। ६, रगभूमि। नाट्यशाला। ७ जात। वग

धरती (का०)।

द्वय—सङ्घा पुं० [सं०] १, शरीर में होनेवाला कोड़ा। २ पाव।

जलम। चाट (का०)। ३ धरवभग (का०)। ४ दान।

छिद्र। रध (का०)।

द्वय—प्रणष्ट। प्रणकेतुन्ती = दुग्धकेती नाम का पीना। प्रणप्रति।

प्रणवितक। प्रणजना। प्रणद्विद्व = (१) ब्राह्मणवाद्यना

नाम का रूप। (२) प्रण का शत्रु। जगत्त धाव ठाक हो

जाय। प्रणधुरन = वाक्यसार्थ प्रण का भाष से उपचार।

प्रण का वाक्य द्वारा उपचार करना। प्रणपट्ट, प्रणपट्टक, प्रण-

पट्टिका = धाव बांधन का चीग या पट्टा। प्रणभृत् = पाठन।

भाहूत। प्रणयुक्त = जिम धाव लगा हा काड प्रारोप्युक्त।

प्रणरोपण। प्रणवास्तु। प्रणविरोपण = २० 'प्रणरोपण'।

प्रणशोषन। प्रणशोष। प्रणशोषी = धाव, काटा आदि के

कारण दुर्बल या क्षाण होनेवाला। प्रणरोहण = २०

'प्रणरोहण'। प्रणह। प्रणहा। प्रणहृत्।

प्रणहृत्—सङ्घा पुं० [सं०] भिनावी।

प्रणहृत्—वि० १ धाव करनेवाला। २, घुसनेवाला। धीर धार क्ष

करनेवाला [को०]।

प्रणप्रथि—सङ्घा स्त्री० [सं०] प्रणप्रथि वह गाठ जा काटे क ऊपर हो

जाती है। वंछक में इसका गणना रागा में होता है।

प्रणचितक—सङ्घा पुं० [सं०] प्रणचितक शस्त्राक्रमा या चोरकाट

करनेवाला जराह [को०]।

प्रणजिता—सङ्घा स्त्री० [सं०] गोरक्षपु डी।

प्रणन—सङ्घा पुं० [सं०] वेपन। भेदना। प्रण करना [को०]।

प्रणरोपण—सङ्घा पुं० [सं०] १, वंछक के अनुसार कोड़े में से दुग्ध

मांस आदि निकल जान पर एता क्रिया करना जिससे पट भर

जाय। काटे का धाव भरन का क्रिया। २, वह धाव न जिससे

क्षत्र या काटा ठाक हो जाय।

प्रणवास्तु—सङ्घा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ काटा हो [को०]।

प्रणशोषन—सङ्घा पुं० [सं०] शोषना।

प्रणशोष—सङ्घा पुं० [सं०] काट या धाव में हाइकता वह धूना

जिससे धाव न बाधा हो हो।

प्रणहृत्—सङ्घा पुं० [सं०] रेंद का धूना।

प्रणहृत्—सङ्घा स्त्री० [सं०] घुसने।

प्रणहृत्—सङ्घा पुं० [सं०] धाव करने वाला [को०]।

प्रणायाम—सङ्घा पुं० [सं०] धाव के मध्यम से धाव करने का

विधि जिसमें धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धारा हो जाती है। धाव करने का धाव करने का धाव करने का

प्रणारि—सङ्घा पुं० [सं०] १ धाव करने का धाव करने का धाव करने का

नामक धूना।

प्रणित—वि० [सं०] प्रणयुक्त। धाव करने का धाव करने का

प्रणित—वि० [सं०] (धूना) जिसे धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

प्रणी—सङ्घा पुं० [सं०] प्रणित। वह जिसे धाव करने का धाव करने का

प्रणीय—वि० [सं०] प्रणयुक्त। धाव करने का धाव करने का

प्रणय—वि० [सं०] काटे को धाव करने का धाव करने का

प्रत—सङ्घा पुं० [सं०] १, धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

प्रत—सङ्घा पुं० [सं०] १, धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

विशेष—धाय हिंदू लोग धाव करने का धाव करने का धाव करने का

धूना [को०]।

व्रतचर्या—सद्या स्त्री० [सं०] किसी प्रकार का व्रत करने या रहने का काम ।

व्रतचारिता—सद्या स्त्री० [सं०] व्रतचारी होने का भाग या धर्म ।

व्रतचारी—सद्या पुं० [सं० व्रतचारिन्] वह जो किसी प्रकार के व्रत का आचरण या अनुष्ठान करता हो । व्रत करनेवाला ।

व्रतति—सद्या स्त्री० [सं०] १ विस्तार । २ लता । उ०—डोनेने लगी मधुर मधुवात, हिला वृण, व्रतति कुज, तरु पात ।—गुज, पृ० ४७ ।

यौ०—व्रततिवलय = (१) लताओं का कण्ठ । (२) लताओं का घेरा वा आवेष्टन ।

व्रतती—सद्या स्त्री० [सं०] १ विस्तार । फैलाव । २ लता ।

व्रतदंडी—सद्या पुं० [सं० व्रतदण्डिन्] वह जो दंडधारण वा व्रत पालन करता हो ।

व्रतदान—सद्या पुं० [सं०] व्रत के निमित्त किया हुआ दान । वह दान जो व्रत सबधी हो । (को०) ।

व्रतधर—सद्या पुं० [सं०] वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो । व्रत करनेवाला ।

व्रतधारण—सद्या पुं० [सं०] किसी धार्मिक अनुष्ठान को विधिवत् करना या विधिवत् व्रत रखना । (को०) ।

व्रतपक्ष—सद्या पुं० [सं०] १. भाद्रपद मास का शुक्लपक्ष । २ एक प्रकार का साम ।

व्रतपारण—सद्या पुं० [सं०] [स्त्री० व्रतपारणा] व्रत या उपवास की विधिवत् समाप्ति । (को०) ।

व्रतप्रतिष्ठा—सद्या स्त्री० [सं०] किसी व्रत की प्रतिष्ठा करना । व्रत का पालन करना । (को०) ।

व्रतवध—सद्या पुं० [सं० व्रत + वन्ध] यज्ञोपवीत । जनेऊ । उ०—सुदिन सोधि मंगल किए, दिर भूप व्रतवध ।—तुलसी ग्र० पृ० ८२ ।

व्रतभग—सद्या पुं० [सं० व्रतभङ्ग] व्रत, नियम वा प्रतिज्ञा का हट जाना । (को०) ।

व्रतभिक्षा—सद्या पुं० [सं०] वह भिक्षा जो बालक को यज्ञोपवीत के समय माँगनी पड़ती है ।

व्रतरुचि—वि० [सं०] व्रत में आनंद लेनेवाला । (को०) ।

व्रतलुप्त—वि० [सं०] अपना व्रत तोड़नेवाला । (को०) ।

व्रतलोपन—सद्या पुं० [सं०] व्रतभग । (को०) ।

व्रतविसर्ग, व्रतविसर्जन—सद्या पुं० [सं०] व्रत की समाप्ति ।

व्रतवैकल्य—सद्या पुं० [सं०] व्रत पूरा न होना ।

व्रतसग्रह—सद्या पुं० [सं० व्रतसङ्ग्रह] वह दीक्षा जो यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाती है ।

व्रतसपादन—सद्या पुं० [सं०] व्रत पूरा करना । (को०) ।

व्रतसरक्षण—सद्या पुं० [सं०] व्रतपालन । (को०) ।

व्रतसमापन—सद्या पुं० [सं०] व्रत पूरा होना । व्रतसपादन । (को०) ।

व्रतस्थ—सद्या पुं० [सं०] १. वह जिसने किसी प्रकार व्रत धारण किया हो । २ ब्रह्मचारी ।

व्रतस्नात—वि० [सं०] व्रत पूरा करने के बाद स्नान करनेवाला । (को०) ।

व्रतस्नातक—सद्या पुं० [सं०] तीन प्रकार के व्रतचारियों में से एक प्रकार का ब्रह्मचारी । वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के यहाँ गृह-कर व्रत का मंगल कर लिया हो पर जिना बद ममान किए ही घर लौट आया हो ।

व्रतस्नान—सद्या पुं० [सं०] वह स्नान जो व्रतसमाप्ति के बाद किया जाता है । (को०) ।

व्रतहानि—सद्या स्त्री० [सं०] व्रत का त्याग करना । व्रत छोड़ देना । (को०) ।

व्रताचरण—सद्या पुं० [सं०] व्रत का पालन । (को०) ।

व्रताचारी—वि० [सं० व्रताचारिन्] व्रत का पालन करनेवाला । (को०) ।

व्रतादान—सद्या पुं० [सं०] कोई व्रत ग्रहण करना । व्रत लेना । (को०) ।

व्रतादेश—सद्या पुं० [सं०] उनका नामक सम्कार । यज्ञोपवीत ।

व्रतादेशन—सद्या पुं० [सं०] वेदों का वह उद्देश या उपनयन सम्कार के बाद ब्रह्मचारी की दिया जाता है ।

व्रतापत्ति—सद्या स्त्री० [सं०] व्रत छोड़ना । व्रत का त्यागना । (को०) ।

व्रतिक—सद्या पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो । व्रत का आचरण करनेवाला । २ ब्रह्मचारी । (को०) । ३. मन्थामो (रं०) । ४ यजमान । (रं०) ।

व्रतिनी—सद्या स्त्री० [सं०] उपव्रिती । (को०) ।

व्रती—सद्या पुं० [सं० व्रतेन्] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो । व्रत का आचरण करनेवाला । २ वह जो यज्ञ आदि करता हो । यजमान । ३ ब्रह्मचारी । ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम । ५ सन्वासी । (को०) ।

व्रतेयु—सद्या पुं० [सं०] पुराणानुसार रौद्राक्ष के एक पुत्र का नाम ।

व्रतेश—सद्या पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

व्रतोपनयन—सद्या पुं० [सं०] यज्ञोपवीत सम्कार । (को०) ।

व्रतोपवास—सद्या पुं० [सं०] व्रत के निमित्त किया जानेवाला उपवास । व्रत सबधी उपवास । (को०) ।

व्रतोपायन—सद्या पुं० [सं०] व्रत का प्रारम्भ । (को०) ।

व्रतोपोह—सद्या पुं० [सं०] एक प्रकार का साम ।

व्रतामन पुं०—सद्या पुं० [सं० वर्तमान] दे० 'वर्तमान' । उ०—भूतह भविष्य अरु व्रतामन इह अपुत्र मे कय चुनिय ।—पृ० रा०, २४।४ ।

व्रत्य—सद्या पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो । २ ब्रह्मचारी । ३ व्रत के उपपुत्र आहार । (को०) ।

व्रध्न—सद्या पुं० [सं०] दे० 'वध्न' । (को०) ।

व्रध्म पुं०—सद्या पुं० [सं० ब्रह्मा, प्रा० ब्रम्ह] दे० 'ब्रह्मा' । उ०—गंगा ब्रम्ह कमडली, पावनता विणपार ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ११५ ।

व्रश्चन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सोना, चाँदी आदि काटने की छेनी।
२ वह बुरादा जो लकड़ी आदि चीरने पर गिरता है। ३
कुल्हाड़ी। ४ छेदने या काटने की क्रिया। ५ छोटी आरी
(को०)। ६ पेड़ में छेद करने से उसमें से निकलनेवाला
निर्याम (को०)।

व्रश्चन^२—वि० काटनेवाला। जिससे काटा जाय या जो काट सके।

व्रहासन^७—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ब्रह्म, अण० ब्रह्म (ब्रह्म = अर्थात् दे ता) +
अशन (= भोजन) या सं० वर्ह (= अंश, अग्र) + अशन (= भोजन)]
दे० 'अग्राशन'। उ०—किय भोजन सब सध्य ब्रहासन ग्रास
दिय।—पृ० रा०, १६१। १६३।

ब्रह्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] दे० 'ब्रह्म'।

ब्रह्मपुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम।
—बृहत्०, पृ० ८६।

ब्रह्ममणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक रत्न का
नाम।—बृहत्०, पृ० ३७७।

ब्रह्मानन्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मानन्द] दे० 'ब्रह्मास्वाद'। उ०—इसका
आस्वाद ब्रह्मानन्द के समान होता है।—रस० क०, पृ० ३३।

ब्रह्मास्वाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मास्वाद] ब्रह्मसाक्षात्कार करने का
आनन्द।

ब्राचट, ब्राचड—सञ्ज्ञा स्त्री० [अण०] १ अपभ्रंश भाषा का एक भेद
जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत
में था। २. पेशाचिका भाषा का एक भेद।

ब्राज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ता। २. दल। समूह। ३. जाना। गमन।
४. कुक्कट। मुर्गा (को०)।

ब्राजपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दल या समूह का नायक।

ब्राजि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बवंडर। तूफान। आंधी (को०)।

ब्राजिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सन्ध्यासिंधो का एक ब्रह्मोपवास जिसमें वे
केवल दूध पीते हैं (को०)।

ब्रात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दल। समूह। २. मनुष्य। आदमी। ३. वह
परिश्रम जो जीविका के लिये किया जाय। ४. वह जिसकी
कोई निश्चित वृत्ति न हो या जो चोरी, डाके से निर्वाह करता
हो। जरायम पेशा। दुर्जोवी। ५. बराती (को०)। ६. दैनिक
मजदूरी। ७. यदाकदा कार्य में नियुक्ति (को०)। ७. जातिच्युत
ब्राह्मण की संतति (को०)।

ब्रातजाति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दल के रूप में इधर उधर रहनेवाली
जाति (को०)।

ब्रातजीवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो शारीरिक परिश्रम करके अपना
निर्वाह करता हो।

ब्रातपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी समूह या सघ का अध्यक्ष (को०)।

ब्रातिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य (को०)।

ब्रातीन—वि० [सं०] १. श्रमजीवी मजदूर। २. लूट मार करनेवाला।
जो लूटमार द्वारा जीविकार्जन करता हो। ३. संघबद्ध होकर
रोजी कमानेवाला (को०)।

ब्रात्य^१—वि० [सं०] व्रत संधी। व्रत का।

ब्रात्य^२—सञ्ज्ञा पुं० १. वह जिसके दस सस्कार न हुए हो। सस्कार
हीन। उ०—अथर्ववेद में मगव के निवासियों को ब्रात्य कहा
गया है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ६६। २. वह जिसका उपनयन
या यज्ञोपवीत सस्कार न हुआ हो।

विशेष—ऐसा मनुष्य पतित और अनार्य समझा जाता है और
उसे वैदिक कृत्य आदि करने का अधिकार नहीं होता। शास्त्रों
में ऐसे व्यक्ति के लिये प्रायश्चित्त का विधान किया गया है।
प्राचीन वैदिक काल में 'ब्रात्य' शब्द प्रायः परब्रह्म का
वाचक माना जाता था, और अथर्ववेद में 'ब्रात्य' की बहुत
अधिक महिमा कही गई है। उसमें वह वैदिक कार्यों का अधि-
कारी, देवप्रिय, बाह्यगो और क्षत्रियों का पूज्य, यहाँ तक की
स्वयं देवाधिदेव कहा गया है। परंतु परवर्ती काल में यह शब्द
सस्कारभ्रष्ट, पतित और निकृष्ट व्यक्ति का वाचक हो गया है।

३. नीच या वदमाश व्यक्ति। ४. वह मनुष्य जो अपवर्ण माता
पिता से उत्पन्न हो। दोगला। वर्णसंकर।

यौ०—ब्रात्यगण = इधर उधर घूमनेवाली जाति या वर्ग,
ब्रात्यचर्या = नीचतापूर्ण आचार व्यवहार। ब्रात्यों का सा रहन
सहन। खानाबदोश व्यक्ति का आचार विचार। ब्रायवुव = वह
व्यक्ति जो अपने को ब्रात्य कहता हो। ब्रात्ययज्ञ = एक प्रकार
का यज्ञ। ब्रात्ययाजक। ब्रात्यस्तोम।

ब्रात्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रात्य का भाव या धर्म। ब्रात्यत्व।

ब्रात्यत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ब्रात्य का भाव या धर्म। ब्रात्यता।

ब्रात्ययाजक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो ब्रात्यों का यज्ञ कराता हो।

ब्रात्यस्तोम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ
जो ब्रात्य या सस्कारहीन लोग किया करते थे।

ब्रात्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रात्य की कन्या। जातिच्युत व्यक्ति की कन्या
(को०)।

ब्रिद^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० विरद] विरद। सुजस। उ०—मछ कवे कहे
पुन मरन सधार ब्रिद याही ते सरन लयो रावरे चरन को।
—रघु० ६०, पृ० २८५।

ब्राख^१—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] कदम। डग। उ०—भागा लार भरतनह,
ब्रीखाँ वाँकडियाँह।—बाँकी० प्र०, भा० १, पृ० २८।

ब्रीड—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लज्जा। शर्म।

ब्रीडन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. लज्जा। शर्म। हया। २. शिष्टता।
विनम्रता। ३. निम्नता। श्रवणति। अपकर्ष (को०)।

ब्रीडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. लज्जा। शर्म। २. नम्रता। शिष्टता।
संकोच (को०)।

यौ०—ब्रीडानत, ब्रीडान्वित = (१) विनम्र। लज्जित। संकुचित।
ब्रीडादान = नम्रता के कारण मिलनेवाला पुरस्कार।

ब्रीघ^७—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धि] दे० 'वृद्धि'। उ०—बाँका हरप न
ब्रीघ सूँ हाया हुवाँ नहँ सोक। हरि सतोष दियो हिए तिरणूँ
दीध ब्रिलोक।—बाँकी० प्र०, भा० ३, पृ० ६३।

ब्रीडित^१—वि० [सं०] लज्जित। शर्मित। २. विनीत। नम्र (को०)।

श्रीडित—सञ्ज्ञा पु० १ लज्जा । शर्म । २ विनय । नम्रता [को०] ।
 श्रील—सञ्ज्ञा पु० [सं०] लज्जा । शर्म [को०] ।
 श्रीलस—वि० सं०] नज्जित [को०] ।
 श्रीहि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ धान । २ चावल । ३ अन्न (को०) ।
 ४ धान का खेत (को०) । ५ चावल का बीज या दाना (को०) ।
 श्रीहिक—वि० [सं०] १ जिनके पास धान हो । २ धान रोपनेवाला [को०] ।
 श्रीहिकाचन—सञ्ज्ञा पु० [सं० श्रीहिकाचन] मसूर ।
 श्रीहितुदिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० श्रीहितुन्दिका] देवधान्य ।
 श्रीहिद्रोण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का गुल्म ।
 श्रीहिर्पाणिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शालिपर्णी ।
 श्रीहिर्पाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शालिपर्णी [को०] ।
 श्रीहिभेद—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चेना धान ।
 श्रीहिमय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] यज्ञ में आहुति के लिये निर्मित चावल का खार । पुगाडाश [को०] ।
 श्रीहिमुख—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का जस्त्र जिसका व्यवहार शस्त्रचि कत्सा में होता था ।
 श्रीहिराजिक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चेना धान ।
 श्रीहल—वि० [सं०] दे० 'ब्राह्म' [को०] ।
 ब्राहीवाप—सञ्ज्ञा पु० [सं०] धान की बुवाई । धान रोपना [को०] ।
 श्रीहिवापी—वि० [सं० श्रीहिवापन्] धान रोपनेवाला । धान बाने-वाला [को०] ।
 श्रीहिध्रष्ठ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शालि धान्य ।
 श्रीही—सञ्ज्ञा पु० [सं० ब्राह्मन्] वह खेत जिसमें धान बोया गया हो ।
 श्रीही—सञ्ज्ञा पु० दे० 'ब्राह्म' ।
 श्रीह्यगार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ पर बहुत सा धान रखा जाता हो । धान का गादाम ।
 श्रीह्यपूप—सञ्ज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ जो चावल का पासकर बनाया जाता था ।

श्रीह्यगार—सञ्ज्ञा पु० [म०] दे० 'श्रीह्यगार' ।
 श्रीह्यग्रयण—सञ्ज्ञा पु० [सं०] श्रीहि का अग्रभाग वा अंगीगा [को०] ।
 श्रीह्यर्वरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह खेत या भूमि जो धान से उर्वर हो । धान का खेत [को०] ।
 वृडित—वि० [सं०] १ हुआ हुआ । निमग्न । २ भूना वा भटका हुआ [को०] ।
 व्रैह—वि० [सं०] चावल का बना हुआ [को०] ।
 व्रैहिक—वि० [सं०] धान के साथ उत्पन्न किया हुआ [को०] ।
 व्रैह्य' वि० [सं०] १ जो धान के साथ बोया गया हो । २ धान बोने योग्य [को०] ।
 व्रैह्य' सञ्ज्ञा पु० [म०] १ धान का खेत । शालि का खेत । धान बोने योग्य भूमि [को०] ।
 व्लीन—वि० [म०] १ सँभाला हुआ । सहारा वा भरोसा दिया हुआ । २ कुचला हुआ । पददर्शित । ३ गया हुआ । निगत । गत [को०] ।
 व्लेक्क—सञ्ज्ञा पु० [सं०] जाल । फंदा [को०] ।
 यौ०—व्लेक्कहत = जो फंदा द्वारा हत हो ।
 व्हाँ—क्रि० वि० [हि० वहाँ] दे० 'वहाँ' । उ०—चले मजल दर मजल आया वेदर के ममल । वहाँ हुई वो नक्कन सो सरल तुम सुनो ।—वक्खिनी०, पृ० ४५ ।
 व्हाला—सञ्ज्ञा पु० [दे०] १. प्यारा । प्रिय । २ ज्वाला । ३ बर-साती नाला । उ०—भामाक पइठा भाल, सुदार दोठा सासविण । जिमि व्हाला विच वाल, प्रिव जाई मारु नही ।—ढाला०, दू० ६०४ ।
 व्हिस्की—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] एक अंग्रेजी शराब । उ०—इसके बाद उसने मुझसे पूछा—'कहाँ, क्या पत्राये ? शेर, शपेन, व्हिस्की, ब्राडा या और कोई दूरा' ।—सत्यासी, पृ० २३६ ।
 व्हे—सर्व० [हि० वह] दे० 'वह' । उ०—पय असदे पूगणा, अलगो घणा अकथ्य । व्हे वण जाणया हालणा, सबल (जा) वण सथ्य ।—वोंका० ग्र०, भा० २, पृ० ४५ ।

श

श—हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तासवीं वर्ण । इसका उच्चारण प्रधानतया तालु का सहायता से होता है, इससे इस तालव्य श कहते हैं । यह महाप्राण है और इसका उच्चारण में एक प्रकार का घण्टा होता है, इसलिये इसे ऊँभ भा कहते हैं । आभ्यन्तर प्रयत्न के विचार से यह इषत्सृष्ट है, और इसमें बाह्य प्रयत्न श्वास और घाप होता है ।
 श—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. कल्याण । मंगल । २. मुख । ३. शांति । ४. राग का अभाव । बाह्य वस्तुओं से वैराग्य । ५. शास्त्र ।
 श'—वि० शुभ ।
 शक'—सञ्ज्ञा पु० [सं० शङ्क] १. बेल, जा छरड़ा खोवता है । २. भय । डर । आशंका ।
 शक'—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] सदेह । खटका । आशंका ।

शकन—सञ्ज्ञा पु० [सं० शङ्कन] १ वह जा भयकारक हो । वह जिससे सभ्रात या विस्मयानुत्पन्न हो । २. भय, शंका या सदेह उत्पन्न करने की क्रिया ।
 शकना उ—क्रि० अ० [सं० शङ्का या शङ्कन] १. शंका करना । २. भय करना । डरना । उ०—(क) सौंसति शंक चला, डरपेहु ते किकर से करना मुख मार ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) शक्या शम्भु शलजा समत दत्त मरा शल शक्रद दत्त हा सुशक्या मुरपाल है ।—भक्तमाल (शब्द०) ।
 शकनीय—[सं० शङ्कनाय] १ शंका करने योग्य । सदेहासद । २. भय के योग्य । ३. अनुमान के योग्य । जिसका अनुमान किया जा सक ।
 शकर'—वि० [सं० शङ्कर] १. मंगल करनेवाला । २. शुभ । ३. लाभदायक ।

शंकर—संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम जो कन्याण करनेवाले माने जाते हैं। महादेव। शम्भु।

यौ०—शंकर की लकड़ी = कहारो की परिभाषा में ऊँछ।

विशेष—जब कहार पालकी लेकर चलते हैं और रास्ते में उन्हें ऊँछ पड़ी हुई मिलती है, तब आगेवाला कहार पाछेवाले कहार को सचेत करने के लिये इस पद का प्रयोग करता है।

२. दे० 'शंकर चार्य'। ३. भंमसेनी कपूर। ४. कबूतर। ५. एक छंद का नाम जिनके प्रत्येक चरण में १६ और १० के विश्राम से २६ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु होता है। ६. एक राग जो मेघ राग का आठवाँ पुत्र कहा गया है।

विशेष—कहते हैं कि इसका रंग गोरा है, श्वेत वस्त्र धारण किए हुए है, तीक्ष्ण त्रिशूल इसके हाथ में है, पान साए और अरगजा लगाए स्त्री के साथ विहार करता है। शास्त्रों में यह संपूर्ण जाति का कहा गया है। रात्रि का प्रथम पहर इसके गाने का समय है, और यो रात्रि में किसी समय गाया जा सकता है।

शंकर—संज्ञा पुं० [सं० मङ्कर] दे० 'संकर' सं०—शंकर वरण पशु पक्षी में ही पाइयत अलकही पारत अरु भग निरधारही।—गुमान (शब्द०)।

शंकर का फूल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर + हि० फूल] शम्भोदी। गुलपरी।

शंकरकिंकर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करकिङ्कर] शंकर का दास। शिवभक्त।

शंकरचूर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करचूर (< सं० चूड = चूड़ा)] एक प्रकार का सर्प।

विशेष—कहते हैं, इसकी उत्पत्ति पातराज और दूधराज सर्प के जोड़े से होती है। यह कभी कभी ६, १० हाथ लम्बा होता है। इसके जहर के दाँत बड़े होते हैं, इसी से इसका काटना साधारण होता है, यह बहुत कम देखने में आता है और वग देश में केवल सुंदरवन में होता है। यह बहुत ही भयंकर होता और इसका पकड़ना बड़ा कठिन है।

शंकरजटा—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करजटा] १ रुद्रजटा। जटाधारी नाम का पीवा। २ मातृदाना। मातृदाना। ३ एक प्रकार की पिठवन।

शंकरताल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करताल] सगीत में एक प्रकार का ताल। इसमें ११ मात्राएँ होती हैं। इसमें ६ आघात और २ खाली होते हैं। इसके मुद्रा की दोल इस प्रकार है—
धा धिन ता देत खूँसा केटे ताग धाधिन ता, देत खूँसा तेदे केटे नागू देत तटे कता गर्दि धेने। धा।

शंकरतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करतीर्थ] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शंकरप्रिय—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करप्रिय] १ तीतर पक्षी। २. थलूरा। ३. गुमा। द्रोणपुष्पी। गोम।

शंकरमत्त—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करमत्त] एक प्रकार का लोहा जिसे शंकरलोह भी कहते हैं।

शंकरवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करवाणी] शंकर का वाक्य अर्थात् ब्रह्मवाक्य जिसका सत्य होना परम निश्चित माना जाता है। सदा ठीक घटनेवाली बात।

शंकरशुक्र—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करशुक्र] पाग। पारद।

शंकरशैल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करशैल] महादेव जी का पर्वत, कैलास। उ०—शंकरशैल शिला तल मध्य किधौं शुरु की अवली फिरि आई।—केशव (शब्द०)। (ख) शंकरशैल चढ़ी मन मोहति। सिद्धन की तनया जनु सोहति।—केशव (शब्द०)।

शंकरश्वशुर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करश्वशुर] हिमवान् पर्वत।

शंकरस्वामी—संज्ञा पुं० [शङ्करस्वामिन्] दे० 'शंकराचार्य'।

शंकरा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर] १. एक प्रकार का राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगने हैं। यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। विशेष दे० 'शंकर'-७ और 'शंकराभरण'। २. शमी। सफेद कीकर। ३. मजीठ। ४. शिवा। भवानी। पार्वती।

शंकरा—वि० स्त्री० [सं० शङ्करा] कल्याण करनेवाली। मंगल करनेवाली।

शंकराचारी—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शङ्कराचारिन्] श्रीशंकराचार्य द्वारा संस्थापित शैव धर्म का अनुयायी।

शंकराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

विशेष—इनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में कालपी अथवा कापल नामक ग्राम में नवदरीपाद ब्राह्मण के घर हुआ था, और ये ३२ वर्ष की अल्प आयु में सन् ८२० ई० में वेदान्ताथ के समीप स्वर्गवासी हुए थे। इनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम सुभद्रा था। बहुत दिनों तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के अनंतर शिवगुरु ने पुत्ररत्न पाया था, अतः उसका नाम शंकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे, तब इनके पिता का देहांत हो गया था। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था में ही ये प्रकांड पंडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने सन्यास ग्रहण किया था। इनके सन्यास ग्रहण करने के समय की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं, माता अपने एकमात्र पुत्र को सन्यासी बनने की आज्ञा नहीं देती थी। एक दिन जब शंकर अपनी माता के साथ किसी आत्मीय के यहाँ से लौट रहे थे, तब नदी पार करने के लिये वे उसमें धुमे। गले भर पानी में पहुँचकर इन्होंने माता को सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा न देने पर ह्व मरने की धमकी दी। इससे भयभीत होकर माता ने तुरंत इन्हें सन्यासी होने की आज्ञा प्रदान की और इन्होंने गोविंद स्वामी से सन्यास ग्रहण किया।

शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्रों की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है। पहले ये कुछ दिनों तक काशी में रहे थे और तब इन्होंने विजिलविदु के तालवन में मठन मिश्र को सपत्नीक

शास्त्रार्थ में परास्त किया। इन्होंने समस्त भारतवर्ष में भ्रमण करके बौद्ध धर्म को मिथ्या प्रमाणित करके वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित किया था। उपनिषदों और वेदान्तसूत्र पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने भारतवर्ष में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रवचन तथा गद्दों के अधिकारी शंकराचार्य कहे जाते हैं। वे चारों स्थान निम्नलिखित हैं—(१) बद्रिकाम्भ, (२) करवीरपीठ, (३) द्वारिकापीठ और (४) शारदापीठ। इन्होंने अनेक विधियों को भी अपने धर्म में दीक्षित किया था। ये शंकर के अवतार माने जाते हैं।

शंकरादि—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करादि] सफेद आक। सफेद मदार।

शंकराभरण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कराभरण] मूर्खों जाति का एक प्रकार का राग जो नटनारायण राग का पुत्र माना जाता है। इसके गाने का समय प्रभात है, और किसी किसी के मत से सायंकाल में १६ दंड से २० दंड तक भी गाया जा सकता है। उ०—गाऊँ कैसे शंकराभरण, दरसाऊँ घैसे स्वर लक्षण।—कवामि, पृ० ७३।

शंकरालय—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करालय] कैलाश।

शंकरावास—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करावास] १ कैलाश। २ कर्पूर (को०)।

शंकरावास कर्पूर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करावास कर्पूर] भीममेनी कर्पूर। बरास।

शंकराह्वी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कराह्वी] शमी का वृक्ष।

शंकरी^१—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करी] १. शिव की पत्नी पार्वती। २ मजिष्ठा। मजीठ। ३ शमी का वृक्ष। ४ एक रागिनी जो मालकोश राग को सहचरी मानी जाती है।

शंकरी^२—वि० कल्याण करनेवाली। मंगल करनेवाली।

शंकरपुण्य—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करपुण्य] १. विष्णु का एक नाम। २ रोहिणी के पुत्र का नाम। ३ 'सदपुण्य'।

शंकव—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कव] सकुची मछली। विशेष दे० 'सकुची'।

शंकय—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कय] १ वह वस्तु जो शकु या कील के योग्य हो। जैसे, काष्ठ आदि। २ वह जिसके सवध में शका या सदेह किया जा सके (को०)।

शका—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] १ मन में होनेवाला अनिष्ट का भय। डर। खोफ। खटक। उ०—(क) टेढ़ जान शका सत्र काहू। वक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) शका है दशानन को हूँ मैं सुनका वीर, डका मैं विजय को कपि क्रूढ़ परधो लका मे।—पद्माकर (शब्द०)। २ किसी विषय की सत्यता या असत्यता के सवध में होनेवाला सदेह। आशंका। सशय। शक। उ०—(क) नृप विलोक शका उपजावा। सजल नयन मुख वचन न आवा।—सबल (शब्द०)। (ख) तुमहि वरण चाहत हों आपहि। पै हिडव शका मन आवहि।—सबल (शब्द०)। ३. साहित्य के अनुसार एक

गद्यगी भाव। अने किमी अनुचित व्यवहार अथवा किमी और कारण से होनेवाला झटझाट की भाँसा। ४ आन विषयास। ५. नर्कवितर्क या वादाववाद में आगति का करना (को०)। ६ परिकल्पना। भावना (को०)।

शौ०—शकाजनक = मदेह उत्पन्न करनेवाला। शकानिवाह = मदेह, भय आदि का दूर होना। शकानिर्मुक्त = मदेह दूर होना। शकल मिटना। शकाशकु = मदेह का काँटा। शकाशील = प्रत्येक बात में मदेह करनावाला। शकाशु।

शका अतिचार—संज्ञा पुं० [सं० शङ्काअतिचार] अनियोजित अनुहार एक प्रकार का पाप या आचार जो जावचन में गड़बड़ करने से होता है।

शकाकुल—वि० [सं० शङ्काकुल] शक्ति। मदेहयुक्त। उ०—तब शकाकुल हो गए अनुनयन सपनयन। खिच गए हृदय म सीता के राममय नयन।—अनामिका, पृ० १२२।

शकान्वित—वि० [सं० शङ्कान्वित] १. 'शकाकुल'।

शकाभियोग—संज्ञा पुं० [सं० शङ्काभियोग] मदेह या शका का दोषा राक्षण (को०)।

शकालु—वि० [सं० शङ्कालु] जो प्रायः शका या सदेह करता हो। शकाशील।

शकासमाधान—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कासमाधान] शका या मदेह का निवारण या निराकरण। २ शंका और समाधान। मदेह और उसका निवारण (को०)।

शकास्पद—वि० [सं० शङ्कास्पद] सदेह, गटका वा भय का विषय (को०)।

शक्ति^१—वि०—[सं० शक्ति] [वि० स्त्री० शक्ति] १ टरा हुआ। भयभीत। चस्त। जिस मदेह हुआ हो। ३ अनेकवचन। सदेहयुक्त। मदेह्य। उ०—इतन धरि धरन चिक्करत दिग्गज कमठ, डेर सकुचित, शारुन पिनाह।—तुलसी (शब्द०)। ४ विचलत। अटढ़। आन्धर (को०)।

शौ०—शक्तचित्त, शक्तिमन्त्र = (१) शकाकुल। सदाशु। (२) भीरु। कातरहृदय। उरपीक। (३) नदम्य। शक्तिवर्ण। शक्तवर्णक।

शक्ति^२—संज्ञा पुं० भटेउर या चोरक नाम का गद्यव्यंज।

शक्तिवर्ण—संज्ञा पुं० [सं० शक्तिवर्ण] दे० 'शक्तिवर्णक'।

शक्तिवर्णक—संज्ञा पुं० [सं० शक्तिवर्णक] तस्कर। चोर।

शक्तिनी—वि० स्त्री० [सं० शक्तिनी] शकापुत्र। मदेशस्वद। उ०—प्रिये, ठीक कहती हो तुम यह, मदा शक्तिनी आशा है।—साकेत, पृ० ३६६। २ सदेह करनेवाली। शका करनेवाली।

शकी—वि० [सं० शक्तिन्] [वि० स्त्री० शक्तिनी] १ शका या सदेह करनेवाली। शका से पूर्ण (को०)। २ खतरनाक।

शकु—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १ कोई नुकीली वस्तु। २ मेख। कील। ३ खूँटी। ४ भाला। बरछा। ५. गीसी। फल।

६ लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक संख्या । शख । ७ एक प्रकार की मन्त्री । सकुची मछली । ८ काम-देव । ९ शिव । १०. राक्षस । ११ विष । १२ हम । १३ वल्मीक । बाँधी । १४ कलुष । पाप । १५ प्राचीन काल का एक प्रकार का राजा । १६ बारह अंगुल की एक नाप । १७ बारह अंगुल की एक खूँटी, जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सूर्य या दीए की छाया आदि नापने में होता था । १८ वृद्धों में की रस खींचने की शक्ति । १९ गावदुन खभा जिसके ऊपर का हिस्सा नुकीला और नीचे का मोटा हो । २० पुराणानुसार उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्न पंडितों में से एक । २१. उग्रसेन का एक पुत्र । २२ दाँव । २३ पत्तों की नसें । २४ नखी नामक गंधद्रव्य । २५ लिंग । २६ शिव के अनुचर एक गधर्व का नाम । २७ कटे हुए वृक्ष का तना । डूँठ (को०) । २८ वाण का अग्रभाग । तीर की गाँधी (को०) । २९ साल का वृक्ष (को०) । ३० (ज्योतिष में) लव रेखा या ऊँचाई (को०) ।

शंकुक—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुक] १ संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जिनका मत रसविवेचन के मंत्र में समाहित साहित्यशास्त्रों में है । २ छोटी खूँटी ।

शंकुकर्ण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुकर्ण] १ वह जिसके कान शंकु के समान लगे और नुकीले हो । २ गदहा । ३ एक नाग का नाम ।

शंकुकर्णी—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुकर्णिन्] शिव । महादेव ।

शंकुचि—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुचि] सकुची मछली ।

शंकुच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुच्छाया] १ शंकु की छाया । २. प्राचीन काल की बारह अंगुल की एक नुकीली खूँटी जिसका ऊपरी भाग नुकीला होता था । इसकी छाया से समय का परिमाण मालूम किया जाता था ।

शंकुजीवा—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुजीवा] ज्योतिष के अनुसार शंकु की ज्या या ज्यामिड ।

शंकुतरु—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुतरु] शाल का वृक्ष । साखू का पेड़ ।

शंकुद्वार—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुद्वार] गुजरात के समीप के एक छोटे टापू का नाम । यहाँ शंकु नारायण की मूर्ति है ।

शंकुधान—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुधान] वह सुराख जिसमें शंकु बँठाई जा जड़ी जाय (को०) ।

शंकुनारायण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुनारायण] नारायण की वह मूर्ति जो शंकुद्वार टापू में है ।

शंकुपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुपुच्छ] भीरे आदि का डंक (को०) ।

शंकुफणी—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुफणिन्] जल में रहनेवाले जंतु । जलचर ।

शंकुफलिका, शंकुफली—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुफलिका, शङ्कुफली] सफेद कीकर । शमी ।

शंकुमती—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुमती] एक वैदिक छंद जिसके पहले पाद में पाँच और शेष तीनों में छह छह या इससे कुछ न्यून-अधिक वर्ण होते हैं ।

शंकुमुख—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुमुख] १ मगर । २. चूहा ।

शंकुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुमुखी] जोक ।

शंकुमूली—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुमूली] अगहन मास के शुक्ल पक्ष का १५वाँ दिन (को०) ।

शंकुयंत्र—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुयन्त्र] एक यंत्र जिसके द्वारा सूर्य चंद्र के दिग्ग और उन्नतांश का ज्ञान होता है (ज्योतिष) ।

शंकुर'—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुर] पुराणानुसार एक दानव का नाम ।

शंकुर'—वि० भयकर । भीषण ।

शंकुला—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुला] १ सुगारो काटन का सरीता । २. एक प्रकार का चाकू या शलाका । उत्पलपत्र । उत्पल-पात्रका (को०) ।

शंकुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुवृक्ष] शाल का वृक्ष ।

शंकुशिर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुशिरस्] भागवत के अनुसार एक असुर का नाम ।

शंकुश्रवण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कुश्रवण] दे० 'शंकुकर्ण' ।

शकोच, शकोचि—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कोच, शङ्कोचि] सकुची मछली ।

शकोशिक—वि० [सं० शङ्कोशिक] नैमित्तिक । (साख्य) ।

शक्य—वि० [सं० शङ्क्य] दे० 'शकनीय' ।

शख - संज्ञा पुं० [सं० शङ्ख] १ एक प्रकार का बड़ा घोषा जो समुद्र में पाया जाता है ।

विशेष—इसे एक प्रकार का जनजंतु, जिसे शख कहते हैं, अपने रहने के लिये तैयार करता है । लोग इस जंतु को मारकर उसका यह कलेवर बजाने के उपयोग में लाते हैं । यह बहुत पवित्र समझा जाता है और देवता आदि के सामने तथा लड़ाई के समय मुँह से फूँककर बजाया जाता है । पुराणों के अनुसार विष्णु भगवान् के चारों हाथों में से एक हाथ में शख भी रहता है । इसके दो भेद होते हैं । एक दक्षिणावर्त्त और दूसरा वामावर्त्त । इनमें से दक्षिणावर्त्त बहुत कम मिलता है । वैद्यक के अनुसार यह नेत्रों को हितकारी, पित्त, कफ, रुधिरविकार विषविकार, वायुगोला, शूल, श्वास, अजीर्ण, सग्रहणी और मुँहासे को नष्ट करनेवाला माना गया है । दक्षिणावर्त्त में इसमें भी अधिक गुण होते हैं । कहते हैं, जिसके घर में यह रहता है, उसके धन की अधिक वृद्धि होती है । वामावर्त्त ही अधिक मिलता है और यही औषध के काम आता है । जो शख उज्ज्वल और चमकदार होता है, वह उत्तम समझा जाता है । इसको विधिपूर्वक शुद्ध कर भस्म बनाकर देने से सब प्रकार के ज्वर, सब प्रकार की खाँसी, श्वास, अतिसार आदि रोगों में उचित अनुपान से अत्यंत लाभकारी है । यह स्तम्भ और वाजीकरण भी है । इसकी मात्रा चार रत्ती से डेढ़ माशे तक है ।

मुहा०—शख वजना = विजय प्राप्त होना । सफलता मिलना
शख वजाना = (१) सफल होने पर शयना कृतकार्य होने पर
आनंद मनाना । (२) किसी की बुराई या हानि देखकर आनंद
मनाना । (३) असफल एवं श्रुतकार्य होने पर दुखो होना ।
भखना (व्यग्य) ।

यौ०—शख का मोती = एक प्रकार का कल्पित मोती । कहते हैं,
यह समुद्र के अतर्गत दुग्म स्थानों में शख के अंदर उत्पन्न
होता है ।

पर्या०—रुद्र कंबोज पावनःशनि अत कुटिल । सुनाद ।
महानाद । मुखर । वहनाद । दीर्घनाद । हरिप्रिय ।

२ दस खर्व की एक सख्या । एक लाख करोड । ३ कनपटी ।
४ हाथी का गड्ढल, शयवा दाँनों के बीच का भाग ।
५ चरणचिह्न । ६ एक दंत्य का नाम जो देवताओं को
जीतकर वेदों को चुरा ले गया था और जिसके हाथों से वेदों
का उद्धार करने के लिये भगवान् को मत्स्यावतार धारण
करना पड़ा था । शखामुर ७ नखी नाम का सुगन्धित द्रव्य ।
८ एक निधि । उ०—शख खर्व नीलाठए नवई निद्धि जु कुद ।
विश्राम (शब्द०) । ९ राजा विराट् का पुत्र जिसे द्रोण चाय ने
मारा था । इसका भाई का नाम उत्तर था । उ०—उत्तर शख
नृपनि मुख वीरा । औरा सजे अमित रणवीरा ।—सबल
(शब्द०) । १० एक राजमयी का नाम । उ०—सुरति सुधन्वा
जु सो दोष के करत मरे शख ग्री लिखित विप्र भयो मैलो मन
है ।—नाभादास (शब्द०) । ११ कुवेर की निधि के देवता
१२ चंपकपुरी के राजा हसध्वज का उपरोहित और लिखित
का भाई जो स्मृतिकार थे । उ०—शख लिखित उपरोहित दोई ।
रहे तहाँ जानत सब कोई ।—सबल (शब्द०) । १३ धारा
नगर के राजा गवर्वसेन का बड़ा लडका और राजा विक्रमादित्य
का बड़ा भाई जिसे मारकर विक्रम ने गद्दी प्राप्त की थी ।
१४ छप्पय के ७१ भेदों में से एक भेद । इसमें १५२ मात्राएँ
या १४६ वण होते हैं, जिनमें से ३ गुरु और शेष १४३ लघु
होते हैं । १५ दंडक वृत्त के अतर्गत प्रचित का एक भेद ।
इसमें दो नगण और चौदह रगण होते हैं । १६ कपाल ।
लिलार । १७ पवन के चलने में होनेवाला शब्द । १८ मस्तक
की हड्ड (को०) । १९ सैनिक डोल या मारु बाजा (को०) ।
२० नागों के आठ नायकों में से एक का नाम (को०) । २१
शख का बना हुआ वलय (को०) ।

शखकंद — मन्वा पुं० [सं० शखकंद] शखालु । साँक ।

शखक — मन्वा पुं० [सं० शखक] १ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का
असाध्य रोग । शखनात ।

विशेष—इस रोग में बहुत गरमी होती है और त्रिदोष विगडने
से कनपटी में दाह सहित लाल रंग की गिल्टी निकल आती है,
जिससे सिर और गला जकड़ जाता है । कहते हैं, यह
असाध्य रोग है और तीन दिन के अंदर इसका इलाज संभव है,
इसके बाद नहीं ।

२ हग के चलने का शब्द । ३ हीरा कमीम । ४ मस्तक ।
माथा । ५ नौ निधियों में से एक निधि । ६ शख का बना
कराया या वलय ।

शखकुर्ण — मन्वा पुं० [सं० शखकुर्ण] शिव के एक अनुचर का नाम ।
शिव का एक गण ।

शखकार शखकारक — मन्वा पुं० [सं० शखकार, शखकारक] पुराणा-
नुसार एक वर्णसंकर जाति जिमका उत्पत्ति शूद्र माता और
विश्वकर्मा पिता से माना गई है । इस जाति के लोग शख की
चाँई बनाने का काम करते हैं ।

शखकुसुमा — मन्वा स्त्री० [सं० शखकुसुमा] १ शखपुष्पो । २ सफेद
अपराजिता । सफेद कोयल लता ।

शखकूट — मन्वा पुं० [सं० शखकूट] १ एक नाग का नाम । २.
पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शखक्षीर — मन्वा पुं० [सं० शखक्षीर] शख का दूध अर्थात् कोई
अपभ्रंश और अनहोनी बात ।

शखचरी, शखचर्ची — मन्वा स्त्री० [सं० शखचरी, शखचर्ची] १ चदन
का तिलक (लगाट पर का) । २ भाल । मस्तक । ललाट ।

शखचूड — मन्वा पुं० [सं० शखचूड] १ एक राजपूत का नाम जिसे कस
न कृष्ण को मारने के लिये भेजा था ।

विशेष—कहते हैं, यह सुदामा नामक गोप था जो राधा के
शाप से असुर हो गया था इसका विवाह तुलसी से हुआ था ।
ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि इसका संहार महादेव जी ने
अपने शूल से किया था ।

२ कुवेर के दूत और सखा का नाम । ३ एक यक्ष का नाम ।
४ पुराणानुसार द्वारिका निवासी एक गृहस्थ का नाम जिसके
पुत्र उत्पन्न होकर अदृश्य हो जाने थे । ५ एक नाग का नाम ।
६ एक तीर्थस्थान ।

शखचूर्ण — मन्वा पुं० [सं० शखचूर्ण] शख की बुकनी । शख का
चूरा (को०) ।

शखज — मन्वा पुं० [सं० शखज] बड़ा मोती जो शख से निकलता है ।

शखजीरा — मन्वा पुं० [सं० शखजीरा] सग जगहृत ।

विशेष—जान पड़ना है, यह शब्द फारसी सग जराहत का
बनाया हुआ संस्कृत रूप है ।

शखण — मन्वा पुं० [सं० शखण] रामायण के अनुसार प्रवृद्ध के लडके
का नाम ।

शखतीर्थ — मन्वा पुं० [सं० शखतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

शखदारक — मन्वा पुं० [सं० शखदारक] एक वर्णसंकर जाति । दे०
'शखकार' ।

शखद्राव' — मन्वा पुं० [सं० शखद्राव] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का
अर्क जिसमें शख भी गल जाता है ।

विशेष—द्राव सेर हीरा कपीस, सेर भर सेंधा नमक और सेर भर
शीरा चूर्ण करके ढेकनी यंत्र से रम निकाल लिया जाता है, जो
शखद्राव कहलाता है । कहते हैं, इसके सेवन से शूल, गुल्म

अर्श, प्लीहा, उदररोग, अजीर्ण और वातरोग सब दूर होते हैं, इसे काँच या चीनी की गोशो में रखना चाहिए, अन्यथा पात्र गल जायगा। इसके सेवन के समय मुँह में घी लगा देना चाहिए, नहीं तो जिह्वा और दाँतो को हानि पहुँचेगी।

शखद्राव—वि० कोई ऐसा तैल रम या चार जिममें डालने से शख गल जाय।

शखद्रावक—सञ्ज्ञा पु० वि० [स० शखद्रावक] दे० 'शखद्राव'।

शखद्रात्री—सञ्ज्ञा पु० [स० शखद्रात्रिन्] अमलवेत। चुक।

शखद्वीप—सञ्ज्ञा पु० [स० शखद्वीप] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। (सम्भवत यद्वाधुनिक अफ्रीका है)

शखधर—सञ्ज्ञा पु० [स० शखधर] १ शख को धारण करनेवाले, अर्थात् विष्णु। २ आकृष्ण। उ०—गिरिधर वज्रधर धरनीधर पीताम्बरधर मुकुटधर गोपधर शखधर सारगधर चक्रधर रस धरें अवर सुवाधर।—सूर (शब्द०)।

शखधरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखधरा] दुरदुर का साग। हिनमोविका।

शखधवना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखधवना] जूही। यूथिका।

शखधम, शखधमा—सञ्ज्ञा पु० [स० शखधम, शखधमा] शखवाक। वह जो शख बजावे [को०]।

शखध्वनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखध्वनि] शख की आवाज जो विजय, सफ लता या कभी कभी आतंक और निराशा व्यक्त करती है।

शखन—सञ्ज्ञा पु० [स० शखन] १. अयोध्या के राजा कल्माषपाद के एक पुत्र का नाम। २. वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

शखनक—सञ्ज्ञा पु० [स० शखनक] छोटा शख। घोघा [को०]।

शखनख—सञ्ज्ञा पु० [स० शखनख] १. घोघा। छोटा शख। २. व्याघ्रनख। नखी नाम का गवद्रव्य।

शखनखा, शखनखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखनखा, शखनखी] १. घोघा। छोटा शख। २. नखा नामक गवद्रव्य।

शखनाभि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखनाभि] १. एक प्रकार का शख। २. एक प्रकार का गवद्रव्य।

शखनाम्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखनाम्नी] शखाहुली। शखपुष्पी।

शखनारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखनारी] एक वृत्त का नाम जिसमें छह वर्य होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इस सोमराजी वृत्त भी कहते हैं।

शखनी पु०—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखनी] दे० 'शखिनी'।

शखपलीता—सञ्ज्ञा पु० [स० शख + हि० पलीता] एक प्रकार का रेशमर खनिज पदार्थ जो ज्वालामुखा पर्वतों से निकलता है।

विशेष—इसका रंग सफेद या हरा होता है और इसमें रेशम की सा चमक होती है। इसका विशेष गुण यह है कि यह जल्दी जलता नहीं, इसी लिये गैस के भट्ट बनाने में इसका बहुत उपयोग होता है। आग से न जलनेवाले कपड़े तैयार करने में भी यह काम में लाया जाता है। गरमों और बिजली का प्रवेश इसमें बहुत कम हाता है, इसी से यह बिजली के तार आदि लपेटने में भी काम आता है। इजिप्टो के जोड़ इसी से

भरे या बंद दिए जाते हैं। यह कारसिका, स्काटलैंड कनाडा, इटली आदि देशों में अधिक मिलता है।

शखपाणि—सञ्ज्ञा पु० [स० शखपाणि] हाथ में शख धारण करनेवाले विष्णु।

शखपाल—सञ्ज्ञा पु० [स० शखपाल] १ शकपारा नाम की मिठाई। विशेषतः 'शकरपारा'। २. एक प्रकार का साँप। ३. एक नाग का नाम। ४. कर्दम के पुत्र का नाम। ५. सूर्य का एक नाम (को०)।

शखपाषाण—सञ्ज्ञा पु० [स० शखपाषाण] संखिया।

शखपुष्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखपुष्पिका] दे० 'शखपुष्पी'।

शखपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखपुष्पी] १ सफेद अपराजिता श्वेत-अपराजिता। सफेद कायल लता। २ जूही यूथिका। ३. शंखाहुली। शखाहुली।

शखप्रस्थ—सञ्ज्ञा पु० [स० शखप्रस्थ] चद्रमा का कर्लक।

शखभस्म—सञ्ज्ञा पु० [स० शखभस्म] १ चूना। २ शख का वैद्यक विधि से निर्मित भस्म।

शखभृत्—सञ्ज्ञा पु० [स० शखभृत्] शख धारण करनेवाले विष्णु

शखमालिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखमालिनी] शखाहुली। शखपुष्पी।

शखमुक्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखमुक्ता] शखज नाम का बड़ा मोती।

शखमुख—सञ्ज्ञा पु० [स० शखमुख] कुभीर। घ डयाल। ग्राह।

शखमूलक—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखमूलक] मूली।

शखयूथिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखयूथिका] जूही। यूथिका।

शखरी—सञ्ज्ञा पु० [स० शखरी] वह जो शख की चूड़ों बनाने का व्यवसाय करता हो।

शंखलिखित—वि० [स० शखलिखित] निर्दोष। दोषरहित। वेदों।

शखलिखित—सञ्ज्ञा पु० १ न्यायगील राजा। २ शंख और लिखित नाम के दो ऋषि जिन्होंने एक स्मृति बनाई थी।

शंखलिखित—सञ्ज्ञा स्त्री० शख और लिखित ऋषियों द्वारा लिखी हुई स्मृति। उ०—मचिव मुधन्वं चह्यो जरावा। शखलिखित फल आपुइ पावा—रघुनाथ (शब्द०)।

शखवटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शखवटी] वैद्यक में एक प्रकार की बटी या गोली।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की प्रणाली यह है—नीबू के रस में बुझाई हुई शख की भस्म टके भर और जवाखार, सेंका हींग, पाँचो नमक, सोठ, काली मिच, पिप्पली, शुद्ध सिगा मुहरा शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक की फजली ये सब दस दस टक एक में मिलाकर सबका चूर्ण करके नाबू के रस में खरल करके चने के बराबर गोले बनाते हैं। कहते हैं, लौंग के जल के साथ इसको एक गाली संवन करने से सप्रण्ण, शूल और वायुमाला आदि रोग दूर होते हैं।

शखवटी रस—सञ्ज्ञा पु० [स० शखवटी रस] वैद्यक में एक प्रकार का बटा या गोली जो शूल राग का तत्काल दूर करनेवाला मानी जाती है।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की विधि यह है,—बड़े शख को तपा तपाकर ग्यारह बार नीबू के रस में बुझाते हैं, और इस शख के चूर्ण में टके भर इमली का खार, ५ टक साचर नमक, टके भर सेंधा नमक, टके भर विड नोन, ६ माशे सोठ, ६ माशे काली मिर्च, ६ माशे पिप्पली, टके भर सेकी हींग, टके भर शुद्ध गंधक, टके भर शुद्ध पारा, १ टक शुद्ध सिंगी मुहरा, इन सबको मिलाकर जल के साथ घोटकर छोटे बर के बराबर गोलियाँ बना लेते हैं।

शखवात—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खवात] सिर की पीड़ा। विशेष दे० 'शखक'—१।

शखविष—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खविष] सखिया।

शखवेदान्याय—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खवेदान्याय] एक प्रकार का न्याय जिसमें किसी एक कार्य के होने से किसी दूसरी बात का बँसे हो ज्ञान होता है, जैसे शख बजने से समय का ज्ञान होता है।

शखशुक्तिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खशुक्तिका] सीप।

शखसकाश—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खसङ्काश] सखालु। सफेद शकरकंद।

शखस—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खस] शख की चूड़ी या कड़ा।

शखस्वन—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खस्वन] शख का शब्द या ध्वनि [को०]।

शखातर—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खातर] ललाट। मस्तक [को०]।

शखाख्य—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खाख्य] वृहन्नखी या वधनखा नामक गंधद्रव्य।

शखार, शखालु—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खार, शङ्खालु] शखालुक। शखकंद। सफेद शकरकंद।

शखालुक—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खालुक] शखालु। सफेद शकरकंद।

शखावर्त—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खावर्त] एक प्रकार का भगदर रोग जिसे श बुकावर्त भी कहते हैं। विशेष दे० 'श बुकावर्त'।

शखामुर—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खामुर] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र के गर्भ में जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। उ०—बहुरो किलाल बैठ मारयो जिन शखामुर ताते वेद अनेक विधाता को दिख है।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २ दैत्य का पिता। उ०—शखामुर सुत पितु वध जान्यो। तब वन जाइ तहाँ तप ठान्यो।—रघुनाथ (शब्द०)।

शखास्थि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खास्थि] १ सिर की हड्डी। २ पीठ की हड्डी।

शखाहुली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खपुष्पी या शङ्खफुल्ल] १ शखाहुली। शखपुष्पी। विशेष दे० 'कौडियाला'—४। २. सफेद अपराजिता या कोयल लता।

शखाहोली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शखपुष्पी, शङ्खफुल्ल, हि० शखाहुली] शखपुष्पी। कौडियाला। कौडेना।

शखाह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खाह्वा] शखपुष्पी [को०]।

शखिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खिका] शंखाहुली। चोरपुष्पी।

शखिन—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खिन] सिग्म। शिष्प का वृद्ध।

शखिनिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खिनिका] ग्रथिपर्णी। गठित्रन।

शखिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खिनी] १ एक प्रकार की वनौतवि।

विशेष—इसकी लता और फल शिवालिंगी के समान होते हैं। अंतर केवल यही है कि शिवालिंगी के फल पर सफेद छीट होते हैं जो शखिनी के फल पर नहीं होते। इसके बीज शख के समान होते हैं जिनका तेल निकलता है। दंष्टक में यह चरपरी, स्निग्ध और कड़वी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निदीपक, बलकाक, रुचिकारी और विपविकार, श्रामदोष, क्षय रुधिरविकार तथा उदरदोष आदि को नाश करनेवाली मानी जाती है।

पर्या०—यवतिका। महातिका। भद्रतिका। मुष्मपुष्पी। दृढ़पादा। विसर्पिणी। नाकुली। नन्मलीला। अक्षनीया। माहेश्वरी। तिक्ता। यावी।

२ पद्मनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद। उ०—होइ शखिन युत रोप दया विन वेग प्रचार।—विग्राम (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, ऐसी स्त्री कोशिल, कोविद, सलाम शरीरवाली, बड़ी बड़ा और सजल आवावाली, देखने में सुंदर, लज्जा और शकारहित, अघार, रतिप्रिय, क्षार गंधयुक्त और श्रुण नखवाली होती है, यह वृषभ जाति के पुरुष के लिये उपयुक्त होती है।

३ गुदाद्वार की नम। ४ मुँह की नाडी। उ०—मुख अस्यान शंखिनो केरा। ये नाडिन क नाम निवेरा।—विग्राम (शब्द०)।

५ एक देवी का नाम। ६ सीप। ७ एक शक्ति जिसकी पूजा बौद्ध लोग करते हैं। ८ एक तीर्थस्थान का नाम। ९. एक प्रकार की अस्त्रा। १० शखाहुली।

शखिनी डकिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शङ्खिनी] एक प्रकार का उन्माद।

विशेष—इस उन्माद रोग के लक्षण इस प्रकार कहे गए हैं—सर्वांग में पीड़ा होना, नेत्र बहुत दुखना, मूर्छा होना, शरीर कांपना, रोना, हँसना, बकना, भोजन में अरुचि, गला बँठना, शरीर के बल तथा भूख का नाश, ज्वर चढ़ना और बिर में चक्कर आना, आदि।

शखिनी फल—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खिनीफल] सिरस का वृद्ध।

शखिनीवास—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खिनीवास] शाखोट वृद्ध। सहोरा।

शखिया—सञ्ज्ञा पु० [हि०] दे० 'सखिया'।

शखी—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खिनी] १. विष्णु। २ समुद्र। ३ एक प्रकार का साँप। ४ शख बजानेवाला।

शखोदक—सञ्ज्ञा पु० [सं शङ्खोदक] शख में भरा हुआ जल जो पवित्र माना जाता है।

शखोदधिमल—सञ्ज्ञा पु० [सं] समुद्रफेन।

शखोदरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] मध्यम आकार का एक प्रकार का बीज जो बागों में शाभा के लिये लगाते हैं। गुलपरी। गुलतुरी। सिद्धेकर।

विशेष—इसके पत्ते चक्रवर्द्ध के पत्ते के समान होते हैं। पीले और लाल फूलों के भेद से यह वृद्ध दो प्रकार का होता है।

इसकी कलियाँ जंगली के समान मोटी, चिपटी तथा चार पाँच अंगुल लंबी होती हैं और इसमें ७-८ दाने होते हैं। इसके फूल गुच्छों में लगते हैं जो बारहो महीने रहते हैं, परन्तु और महीनों की अपेक्षा आषाढ में अधिक फूल लगते हैं। फूलों में गंध नहीं होती। इसकी लकड़ी मजबूत होती है। इसके वृक्ष बीज और कलम दोनों से ही लगते हैं। कई प्रकार के रागा में इसका वनाथ भी दिया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह गरम, कफ, वात, शूल, आमवात और तंत्ररोग को दूर करने वाला है।

शंजराहत—संज्ञा पुं० [सं० शङ्ख, फा० सग + जराहत] दे० 'सग जराहत'।

शंजर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जो मदरास और सुदरवन में अधिकता से होता है।

विशेष—इसकी लकड़ी लाल और मजबूत होती है और मकान तथा गाड़ी आदि बनाने के काम में आती है। इसके पत्तों से रंग भी निकाला जाता है।

शंजरफ—संज्ञा पुं० [फा० शंजरफ, शंजरफ] ईंगुर। शिंजरफ [को०]।

शंजरफ—वि० ईंगुर के रंग वा लाल [को०]।

शंजरफ—संज्ञा पुं० [फा० शंजरफ शंजरफ] दे० 'शिंजरफ'।

शठ—संज्ञा पुं० [सं० शण्ड] १. अविवाहित। २. नपुंसक। होजड़ा। ३. मूर्ख। देवकूप। उ०—मुख मूढ जड मूक नर अज्ञ अयुध वद शठ।—नददास (शब्द०)।

शठ—संज्ञा [सं० शण्ड] १. नपुंसक। होजड़ा। २. वह पुरुष जिसे सतान न हाती है। वध्या पुरुष। ३. सडि। ४. उन्मत्त। पागल। ५. कमालनी। पछिनी। ६. दही (को०)। ७. प्राचीन काल में अतःपुर का पारचारक जो होजड़ा हाता था (को०)। ८. एक दैत्य का नाम। ९. पद्म आदि का समूह वा राश (को०)।

शठता—संज्ञा स्त्री० [सं० शण्डता] शठ का भाव या धर्म। नपुंसकत्व। होजड़ापन।

शठो—संज्ञा पुं० [सं० शण्डा] १. फटा हुआ खट्टा दूध अथवा दही। २. शुभ्राचार्य का पुत्र जा अथुरा वा पुरोहित था। ३. एक यक्ष का नाम।

शठोकी मद्य—संज्ञा स्त्री० [सं० शण्डाकी मद्य] अर्कप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की शराब जो राई, मूला और सरसों के पत्तों का रस चावलों की पीठी में मिलाकर अकालिन से तैयार होती है।

शठोमर्क—संज्ञा पुं० [सं० शण्डामर्क] शठ और मर्क नाम के दो दैत्य जिनका नाम साथ ही साथ लिया जाता है। उ०—शठोमर्क से कहियो जाय।—शब्दावली (शब्द०)।

शडिल—संज्ञा पुं० [सं० शण्डिल] एक ऋषि। दे० 'शडिल' (को०)।

शडिल—संज्ञा पुं० [सं० शण्डिल] एक प्राचीन गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग शडिल्य कहलाते हैं।

शठ—संज्ञा पुं० [सं० शण्ड] १. नपुंसक। वध्या पुरुष। २. वृष। सडि। ३. उन्मत्त। सडि। ४. राजाओं के अतःपुर का वह सेवक जो पुस्तकविहीन हिजड़ा होता था। ५. उन्मत्त पुरुष। पागल व्यक्ति (को०)।

शतनु—संज्ञा पुं० [सं० शतनु] दे० 'जातनु'।—(क) यन्त्री शतनु को कथा, पुनि यमाति कर भोग।—रघुनाथ (शब्द०)। (ख) विष्णुसुता मृत्यु मुक्त माही। तानु पुन जननु नृप आही।—मवल (शब्द०)।

शतनुसुत—संज्ञा पुं० [सं० शतनुसुत] गंगा के गर्भ में उत्पन्न शतनु के पुत्र, भाष्म पितामह। विशेष २० 'भीम'।

शपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शप्ता] १. विजली। उ०—उन्नत सिर पर जब तक हो शपा का प्रहार। मोओ तब तक जाज्वल्यमान मेर विचार।—सामवेनी, पृ० ५२। २. कमरवद। मेखला। करधनी।

शपाक, शपात—संज्ञा पुं० [सं० शप्ताक, शप्तात] आरम्भ वृद्ध। अमलतान।

शव—संज्ञा पुं० [सं० शम्भ] १. इद्र का वज्र। २. लोहे की जजीर जो कमर के चारों तरफ पहनी जाय। ३. प्राचीन काल की एक मण। ४. नयामन हार में हल जोतने का क्रिया। ५. दुहरी जुताई। दुवारा हल चलाने की क्रिया। ६. मुमल के सिरे पर लगी हुई लाहे की गोल पट्टी। माम (को०)।

शव—वि० १. सुखी। भाग्यवान्। २. दरिद्र। अनाया [को०]।

शवपाणि—संज्ञा पुं० [सं० शम्भपाणि] इद्र जिनका आयुध वज्र है [को०]।

शवर—संज्ञा पुं० [सं० शम्भर] १. एक दैत्य जो वेद के अनुसार दिवोदास का बड़ा शत्रु था। दिवोदास की रक्षा के लिये इंद्र ने इसे पहाड़ पर से नीचे गिराने का आदेश दिया था। २. एक दैत्य जो रामायण और महाभारत में कामदेव का शत्रु कहा गया है। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ४. युद्ध। समर। लड़ाई। ५. एक प्रकार का मृग। ६. मछली। ७. एक पर्वत का नाम। ८. जल। पानी। ९. चीना नामक पेड़। चितउर। १०. लोभ। वृत्त। ११. अजुन वृद्ध। १२. ताल वृद्ध। १३. सावर हिरन। १४. मुश्क जमी। १५. एक जिन देव (को०)। १६. वोडो का एक व्रत (को०)। १७. एक प्रकार का व्रत (को०)। १८. मेघ। बादल (को०)। १९. चित्र। तस्वीर (को०)। २०. वन। सपत्ति (को०)। २१. एक प्रकार के शैव (को०)।

शौं—शम्भर, शवरदारण, शवररिपु = कामदेव या प्रचुम्न।

शवर—वि० १. अति उत्तम। बहुत बढ़िया। २. भाग्यवान्। ३. सुखी।

शवरकद—संज्ञा पुं० [सं० शम्भरकद] बाराही कद। शूकर कद।

शवरघ्न—संज्ञा पुं० [सं० शम्भरघ्न] दे० 'शवरारि' (को०)।

शंवरचंदन—संज्ञा पुं० [सं० शम्भर चन्दन] एक प्रकार का चंदन जिसे किराठ, बहलगांध और गवकाष्ठ भी कहते हैं।

शंवरमाया—सच्चा स्त्री० [सं० शंवरमाया] १ इन्द्रजाल । जादू । २ शक्ति ।

शंवरसूदन—सच्चा पुं० [सं० शंवरसूदन] १ कामदेव । २ प्रद्युम्न ।

शंवरहा—सच्चा पुं० [सं० शंवरहन्] दे० 'शंवरारि' ।

शंवरारि—सच्चा पुं० [सं० शंवरारि] १ शंवर का शत्रु अर्थात् काम-देव । मदन, उ०—शंवर ज्यो शंवरारि दुख देह को वहै ।—केशव (शब्द०) । २ प्रद्युम्न जो कामदेव के अवतार कहे जाते हैं । उ०—मुखि मुखि गिरावो भूमि पर शंवरारि ललकारि ।—गर्गसाहेता (शब्द०) ।

शंवरसुर—सच्चा पुं० [सं० शंवरसुर] शंवर नाम का दैत्य [को०] ।

शंवरारि—सच्चा पुं० [सं० शंवरारि] भरवेरी । भूवदग ।

शंवरी—सच्चा [सं० शंवरी] भूमाकानी । आखुर्शी लना । २ बड़ी दती । बगरेंडा । ३ माया । ४ मायाविनी । जादू-गरनी [को०] ।

शंवरीगधा—सच्चा स्त्री० [सं० शंवरीगन्धा] बनतुलसी । बर्वरी ।

शंवरोद्भव—सच्चा पुं० [सं० शंवरोद्भव] सफद लोघ ।

शंवल—सच्चा पुं० [सं० शंवल] १ यात्रा के समय रास्ते के लिये भोजनसामग्री । सवल । पाथेय । २ तट । किनारा । ३ कूल । ४ ईर्ष्या । द्वेष । ५ द० 'शंवर' ।

शंवली—सच्चा स्त्री० [सं० शंवली] शंभली । कुटनी [को०] ।

शंवसादन—सच्चा पुं० [सं० शंवसादन] वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक दैत्य जिसे वंशरी वानर ने मारा था ।

शंवा—सच्चा पुं० [अ० शंवा] १ शनिवार । शनैश्चरवार । २ वार । दिन [को०] ।

शंवाकृत—सच्चा पुं० [सं० शंवाकृत] वह खेत जो दो बार जोता गया हो । वह खेत जिसकी दुहरी जुलाई हुई हो [को०] ।

शंवु—सच्चा पुं० [सं० शंवु] सीपा । घोषा ।

शंवुक, शंवुक—सच्चा पुं० [सं० शंवुक, शंवुक] १ घोषा । २. छाटा शख ।

शंवुकपुष्पी—सच्चा स्त्री० [सं० शंवुकपुष्पी] दे० 'शंवुपुष्पी' ।

शंवुकावर्त—वि० [सं० शंवुकावर्त] घोषे या छाटे शख की भँवरी के सदृश घूमा हुआ ।

शंवुकावर्त—सच्चा पुं० पाँच प्रकार के भगदरो में से एक प्रकार का भगदर ।

विशेष—इसका कई प्रकार का वर्ण होता है और इसमें सदैव पीव बहा करता है । इसके फोडने से अनक प्रकार की पीडा होती है । इसका फाडा गी के थन के आकार का हो जाता है और उसका छिद्र घोषे के घेरे के समान घूमता हुआ होता है । इसे शंवावर्त भी कहते हैं ।

शंवुक—सच्चा पुं० [सं० शंवुक] १ एक तपस्वी शूद्र ।

विशेष—शूद्र होने के कारण इसकी कठोर तपस्या के प्रभाव से अथायुग में रामराज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल मृत्यु को

प्राप्त हुआ था, अतः इमे राम ने मारकर मृत ब्राह्मणपुत्र को पुनर्जन्म दिला था ।

२ घोषा । ३ शख । ४ एक दैत्य का नाम । ५ हाथी के सूड का अग्रभाग ।

शंवुकपुष्पी—सच्चा स्त्री० [सं०] दे० 'शंवुपुष्पी' ।

शंवुका—सच्चा स्त्री० [सं० शंवुका] सीपी ।

शंभ—सच्चा पुं०, वि० [सं० शंभ] दे० 'शंभ' [को०] ।

शंभली—सच्चा स्त्री० [सं० शंभली] कुटनी । शंभली [को०] ।

शंभु—सच्चा पुं० [सं० शंभु] १. शिव । महादेव । २ ग्यारह रुद्रों में से एक का प्रधान रुद्र है । विशेष दे० 'महादेव' और 'रुद्र' । ३ रामायण के अनुसार एक दैत्य का नाम । ४. एक वृत्त का नाम । जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होने हैं, और उनका क्रम इस प्रकार होता है—स, त, य, म, म, म और ग (11S, SSI, ISS, SII, SSS, SSS, S) । ५ ब्रह्मा । ६ विष्णु । ७ सफेद आक । ८ पारा । ९ ऋषि । सन । तपस्वी [को०] । १०. एक प्रकार के सिद्ध [को०] । ११ बुद्ध [को०] । १२ अग्नि [को०] ।

शंभु पुं०—सच्चा पुं० [सं० स्वायम्भुव] दे० 'स्वायम्भुव' । उ०—कह शौनक शंभु मनु पाछे । कीन्ह राज्य कोहि कहिए आछे ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

शंभुकाता—सच्चा स्त्री० [सं० शंभुकाता] १ शंभु की स्त्री, पार्वती । २. दुर्गा ।

शंभुगिरि—सच्चा पुं० [सं० शंभुगिरि] शंभु का पर्वत, कैलास ।

शंभुतनय—सच्चा पुं० [सं० शंभुतनय] १ कार्तिकेय । २ गणेश [को०] ।

शंभुतेज—सच्चा पुं० [सं० शंभुतेजस्] पारा । पारद ।

शंभुनदन—सच्चा पुं० [सं० शंभुनदन] दे० 'शंभुतनय' ।

शंभुबीज—सच्चा पुं० [सं० शंभुबीज] पारा । पारद ।

शंभुप्रिया—सच्चा स्त्री० [सं० शंभुप्रिया] १ दुर्गा । शंभुकाता । २. आमलकी [को०] ।

शंभुभूषण—सच्चा पुं० [सं० शंभुभूषण] महादेव जी का भूषण, चंद्रमा ।

शंभुमनु पुं०—सच्चा पुं० [सं० स्वायम्भुव मनु] स्वायम्भुव मन्वतर जो सबसे पहला मन्वतर है । विशेष दे० 'स्वायम्भुव' और मनु ।

शंभुलोक—सच्चा पुं० [सं० शंभुलोक] महादेव जी का लोक, कैलास ।

शंभुवल्लभ—सच्चा पुं० [सं० शंभुवल्लभ] श्वेत कमल जो शिव को विशेष प्रिय है [को०] ।

शंयु—वि० [सं०] प्रसन्न । शुभान्वित । सुखी [को०] ।

शंयु—सच्चा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार यज्ञ के अधिष्ठाता देव अग्नि जो बृहस्पति के पुत्र रूप कहे गए हैं [को०] ।

शंव—सच्चा पुं०, वि० [सं०] दे० 'शंभ' [को०] ।

शंस—सच्चा पुं० [सं०] १ प्रतिज्ञा । इकरार । २ शपथ । कसम । ३, जादू । ४. प्रशंसा । तारीफ । ५. इच्छा । स्वाह्वा । ६.

चापलूसी । चाटुता । ७ घोषणा । ८ वक्तृता । ९ किसी के प्रति शुभ वा मंगल की कामना (को०) ।

शंसन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कथन । कहना । वर्णन करना । २ प्रशंसा करना । प्रशसन । ३. पाठ करना (को०) ।

शसनीय—वि० [सं०] कथन या प्रशंसा के योग्य (को०) ।

शसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ प्रशंसा । २ अभिलाषा । आशा । इच्छा । ३. वर्णन । कथन । ४ दुहराना । ५ पाठ करना । ६ अनुमान । कल्पना (को०) ।

शसित—वि० [सं०] १ कथित । घोषित । २. प्रशसित । ३ इच्छित । काम्य । ४ निश्चित किया हुआ । निर्धारित । ५ जिसपर झूठा दोष मढ़ा गया हो । कलकित । ६ अनुष्ठित (को०) ।

शसित—शसितव्रत = व्रत करनेवाला । व्रत अनुष्ठित करनेवाला ।

शसी—वि० [सं० शंसित्] १ कहनेवाला । २ प्रशंसक । ३ सकेन करनेवाला । सूचक । व्यञ्जक । ४ भविष्यसूचक । भविष्यवक्ता (को०) ।

शंस्ता—सञ्ज्ञा पुं०, वि० [सं० शस्तृ] १ स्तुति करनेवाला । प्रशंसक । स्तुतिपाठक । २. ऋचाओं का पाठ करनेवाला । मंत्र-पाठक (को०) ।

शस्य^१—वि० [सं०] १. प्रशंसा के योग्य । २. इच्छित । चाहा हुआ । ३ उच्च स्वर से पाठित (को०) । ४. कहने योग्य (को०) ।

शस्य^२—सञ्ज्ञा स्त्री० अग्नि ।

श—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २. कन्याण । मंगल । ३. शस्त्र । हथियार । ४ विनाशक । काटनेवाला (को०) । ५ शास्त्र (को०) । ६ आनन्द । सौख्य (को०) ।

शश्रवान—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शश्रवान्] शरवीं अठवाँ महीना जिसकी चौदहवीं तारीख को मुसलमानों का शवरात नामक त्योहार होता है । यह रजव के बाद आता है ।

शऊर—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शऊर] १ किसी चीज की पहचान या जानकारी । २ काम करने की योग्यता । ढग । ३. बुद्धि । श्रवण । ४. सम्यता । तमीज (को०) ।

क्रि० प्र०—आना । —सीखना ।

मुहा०—शऊर पकडना = ढग सीखना । श्रवण सीखना । बुद्धिमान होना ।

शऊरदार—सञ्ज्ञा वि० [अ० शऊर + फा० दार (प्रत्यय)] [सञ्ज्ञा स्त्री० शऊरदारी] जिसमें शऊर हो । काम करने की योग्यता रखनेवाला । हुनरमंद । समर्थदार ।

शक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति ।

विशेष—पुण्यो में इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यत से कही गई है । राजा सगर ने राजा नरिष्यत को राज्यच्युत तथा देश से निर्वासित किया था । वणाश्रम आदि के नियमों का पालन न करने के कारण तथा ब्राह्मणों से अलग रहने के कारण वे म्लेच्छ हो गए थे । उन्हीं के वंशज शक कहलाए ।

आधुनिक विद्वानों का मत है कि मध्य एशिया पहले शकद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था । यूनानी इस देश को सीरिया कहते थे । उसी मध्य एशिया के रहनेवाला शक बड़े जाते हैं । एक समय यह जाति बड़ी प्रतापशालिनी हो गई थी । ईसा से दो सौ वर्ष पहले इसने मथुरा और महाराष्ट्र पर अपना अधिकार कर लिया था । ये लोग अपने को देवपुत्र कहते थे । इन्होंने १६० वर्ष तक भारत पर राज्य किया था । इनमें कनिष्क और हविष्क आदि बड़े बड़े प्रतापशाली राजा हुए हैं ।

२. वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत् चले । ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था । ४. शालिवाहन के अनुयायी अथवा उसके वंशज । ५ संवत् ।

यौ० शककर्ता, शककृत् = दे० 'शककारक' । शककाल = दे० 'शक संवत्' । शक संवत् = राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् । दे० 'शक'—३ ।

६. तातार देश । ७. जल । ८. मल । गोमय । ९ एक प्रकार का पशु । १० सदेह । आशका । भय । त्रास । डर ।

शक^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] शका । सदेह । द्विविधा ।

क्रि० प्र०—करना ।—डालना ।—निकालना ।—पडना ।—मिटना ।—मिटाना ।

शककारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने कोई नया संवत् (शक) चलाया हो । संवत् का प्रवर्तक ।

शकट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ छकड़ा । बैलगाड़ी । २ भार । बोझ । ३ शकटामुर नामक द्रव्य जिसे कृष्ण ने मारा था । ४ तिनिश वृक्ष । ५ धव का वृक्ष । धौ । ६ शरीर । देह । ७ दो हजार पल की तौल । ८. रोहिणी नक्षत्र, जिसकी आकृति शकट या छकड़े के समान है । ९ शकट के आकार का सैनिक व्यूह । दे० 'शकट व्यूह' (को०) । १० एक गाड़ी भार । बोझ जो दो हजार पल के बराबर होता है (को०) । ११ अन्न सिद्ध करने का एक उपकरण (को०) ।

शकटकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गाड़ी या और कोई सवारी हाँकने का काम । २ गाड़ी आदि सवारियों की सामग्री बनाने और बेचने का काम ।

शकटधूम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गोबर या उपले आदि का धूआँ । २ एक नक्षत्र का नाम ।

शकटभिद्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शकटामुर को मारनेवाले, श्रीकृष्ण । २ विष्णु (को०) ।

शकटभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किमी ग्रह द्वारा शकट अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का विभाजन । यदि यत्र भेदन शनि ग्रह द्वारा हो तो १२ वर्ष अनावृष्टि होती है (को०) ।

शकटविल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जलकुक्कुट (को०) ।

कट० पुं० १. शकट के आकार का सेना का निवेश । २. खना कि आगे का भाग पतला और पीछे

का मोटा हो, और वह देखने में शकट के आकार का जान पड़े। २ कौटिल्य के अनुसार वह भोग व्यूड जिसके अंदर उरस्थ में दोहरी पकितियाँ हो और पक्ष स्थिर हो।

शकटव्रत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक विशेष प्रकार का व्रत [को०]।

शकटसार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गाड़ियों का गारवाँ [को०]।

शकटहा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शकटहन्] शकटासुर नामक दैत्य के मारने-वाले, श्रीकृष्ण।

शकटाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गाड़ी का घुरा।

शकटाख्य, शकटाख्यक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धौ या धव का वृक्ष।

शकटार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ राजा महानंद का प्रधान मंत्री।

विशेष—इसने अपने अपमान का बदला चुकाने के लिये चारण्य से मिलकर पड्यत्र रचा था और इस प्रकार नदवश का नाश किया था।

२ एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

शकटारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शकट दैत्य के शत्रु, श्रीकृष्ण।

शकटाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शकटार'।

शकटासुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था और जो स्वयं ही कृष्ण द्वारा मारा गया था।

शकटाह्ला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रोहिणी नक्षत्र [को०]।

शकटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी बेलगाड़ी। २ बच्चों के खेलने की गाड़ी।

शकटोर्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कोई चौरस भूभाग [को०]।

शकटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी गाड़ी।

शकठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शकट] मचान। उ०—कृष्णवद्र के समय में भी वृंदावन वन गिना जाता था, और गोन लोग उसमें शकठों पर रहते थे।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

शकर^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०, मि० सं० शर्करा] कच्ची चीनी। शर्करा। शक्कर।

यौ०—शकरकद। शकरखोरा। शकरखवाज = मीठी नींद। शकर-गुड। शकरपा। शकरपाग। शकरपूरा। शकरवादाम। शकर-रगी, शकररजी = नाराजी। मनमुटाव। शकररेज = (१) न्योछावर। (२) खुशी का रोना। शकरलव = (१) मीठे अदर-वाला। (२) मिष्टभाषी। (३) माशूक (लाज्जु)।

शकर^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] टुकड़ा। खड। शकन [को०]।

शकरकद—सञ्ज्ञा पुं० [हि० शकर + सं० कन्द] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।

विशेष—इसकी खेती प्रायः सारे भारत में होती है। यह साधारणतः सूखी जमीन में बोया जाता है। इसका कंद दो प्रकार का होता है—एक लाल दूसरा सफेद। लाल शकरकद रतालू या पिंडालू कहलाता है और सफेद का शकरकद या फंद कहते हैं। यह भूनकर वा उवालकर खाया जाता है। प्रायः हिंदू लोग व्रत के दिन फलाहार रूप में इसका व्यवहार करते हैं। यह कंद बहुत मीठा होता है और इसमें से एक प्रकार की चीनी

निकलती है। अनेक पाश्चत्य देशों में इसमें चीनी भी मिलाती जाती है, और इसी लिये इसकी बहुत अधिक खेती होती है। वनस्पति शास्त्र के आधुनिक विद्वानों का अनुमान है कि यह मूलतः अमेरिका का कंद है, और वहीं में माने ममार में फैला है।

शकरखोरा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शकर + खोर (= खानेवाला)] एक प्रकार का छोटा सुंदर पक्षी।

विशेष—इसकी गमाई प्रायः एक सालान में भी कम होती है और यह भारत, फारस तथा चीन में पाया जाता है। इसका रंग नीला और चोच काली होती है और यह पेड़ों में लटकता हुआ घोंसला बनाता है। यह प्रायः खेतों में रहता और खेतों की हानि पहुँचानेवाले कीड़े मकोड़े आदि खाता है, यह सफेद रंग के दो या तीन अंडे एक साथ देता है पर इसके अंडा देने का कोई निश्चित समय नहीं है।

शकरख्वारा—वि० [फा० शकरखवाज] १ मीठी चीजें खानेवाला। तर माल खानेवाला। २ रस लेनेवाला। आनंद लेनेवाला। रमगाही [को०]।

शकरपा—वि० [फा०] जिसका एक पाँव टेढ़ा हो। नंगड़ा [को०]।

शकरपारा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शकरपाज] १ एक प्रकार का फल जो नींबू से कुछ बड़ा होता है।

विशेष—इसका वृक्ष नींबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नींबू से कुछ बड़े होते हैं। फूल कुछ लाल रंग के होते हैं, फल सुगंधित और खट्टा मीठा होता है।

२. एक प्रकार का प्रसिद्ध पक्षवान जो बरफी की तरह खोखोर कटा हुआ होता है।

विशेष—यह मीठा भी बनता है और नमकीन भी। इसके बनाने के लिये पहले मँदे में मोघन डालकर उसे दूध या पानी से भूँथते हैं और तब उसे माटी रोटी की तरह बेनकर सूखी आदि से छाटे छाटे चौकार टुकड़ा में काटकर घों में तल लेते हैं। यदि नमकीन बनाना होता है तो मँदा भूँथते समय ही उसमें नमक, अजवायन आदि डाल देते हैं और यदि मीठा बनाना होता है, तो कटा हुई टुकड़ियाँ तो तलने के बाद चीनी के शारे में पाग लेते हैं।

३. रईशर कपड़े पर की एक प्रकार की मिलाई जो शकरमारे के आकार की चौकार हाती है। ४. माशूक, जिसकी अदाएँ मीठी लगती हैं [को०]।

शकरपाला—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शकर पारा] दे० 'शकरपारा'।

शकरपीटन—सञ्ज्ञा पुं० [देशी] एक प्रकार की कैंटोली भाड़ी।

विशेष—यह हिमालय पर्वत की पयरीनी और सूखी, जमीन में कुमायूँ और उसके पश्चिम और बाईं जाती है। यह थूहर का ही एक भेद है, पर साधारण सेण्ड या थूहड के वृक्ष से कुछ भिन्न होता है।

शकरपूरा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शकरपूर] मीठा समोसा। पिराक। गुफिया [को०]।

शकरवादाम—सब्बा पु० [फा० शकर + वादाम] खूबानी या जर्दआलू नामक फल जो पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत में होता है।

शकरवार—वि० [फा०] १ शकर बरसानेवाला, बहुत मोठा। २ मिष्टभाषी [को०]।

शकरवूजा—सब्बा पु० [फा० शकरवूजट्] दे० 'शकरपूरा' [को०]।

शकरी^१—सब्बा पु० [फा० शकर] फालसा नामक फल।

शकरी^२—वि० शकर सबधी। शकर की [को०]।

शकल^१—सब्बा पु० [स०] १ त्वचा। चमड़ा। २ छाल। छिलका। दालचीनी। ४. आँवला। ५. कमल को नाल। कमलदंड। ६. खाँड। शक्कर। ७. खड। टुकड़ा। ८. मनु के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ९. घड़े या पात्र का एक अंश [को०]। १०. स्फुलिंग। चिनगारी [को०]। ११. मछली की चोइयाँ। मछली के शरीर के ऊपर का छिलका [को०]। १३. अधाँश। आधा भाग। जैसे, चंद्रशकल [को०]।

शकल^२—सब्बा स्त्री० [अ० शकल] १ मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। जैसे,—शकल न सूरत, गवे की मूरत।

मुहा०—शकल बिगाडना = मारते मारते चेहरे का रूप बिगाडना। बहुत मारना।

यौ०—सूरत शकल = चेहरे की बनावट। आकृति।

२ मुख का भाव। चेष्टा। ३ किसी चीज की बनावट। गढ़न। ढाँचा।

मुहा०—शकल बनाना = कोई चीज बनाकर उसका स्वरूप तैयार करना। रूपरेखा या ढाँचा तैयार करना।

४ किसी चीज का बनाया हुआ आकार। आकृति। स्वरूप। ५ उपाय। तरकीब। ढव। जैसे—अब इस मुकदमे से पीछा छुडाने की कोई शकल निकाननी चाहिए।

क्रि० प्र०—निकलना। निकालना।

६ मूर्ति।

शकलित—वि० [स०] खड खड किया हुआ। जो टुकड़ों में विभक्त किया गया हो [को०]।

शकली—सब्बा स्त्री० [स० शकलिन्] १. सकुची मछली। २. मछली।

शकलीकृत—वि० [स०] विभक्त। टुकड़े टुकड़े किया हुआ [को०]।

शकव—सब्बा पु० [स०] राजहंस।

शकातक—सब्बा पु० [स० शकान्तक] शक जाति का अंत करनेवाला, विक्रमादित्य।

शकाकुल—सब्बा पु० [अ० शकाकुल] शतावर की जाति की एक प्रकार की वनस्पति। शकाकुल मिस्रो। धुवली। दुधली। गर्सदस्ती।

विशेष—यह प्रायः मिस्र देश में अधिकता से होती है और भारत के भी कुछ स्थानों, विशेषतः काश्मीर और अफगानिस्तान में पाई जाती है। यह प्रायः नम जमीन में वृद्धि के नीचे उगती है। यह बारह मास रहती है। इसके डठन डेढ़ दो हाथ

स० श० ६-४२

ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते प्रायः तीन अंगुल चौड़े और एक बालिशत लंबे होते हैं। इसके पीछे की प्रत्येक गाँठ पर पत्ते होते हैं। इसमें नीले या लाल रंग के छोटे छोटे फूल गुच्छों में होते और काले रंग के फल लगते हैं। इसकी जड़ कंद के रूप में होती और बाजार में प्रायः 'शकाकुल मिस्रो' के नाम से मिलती है। यह जड़ कामोद्दीपक तथा स्नायुषो के लिये बलकारक मानो जाती है और विविध प्रकार का पौष्टिक औषधी में डाली जाती है। क्वार में इसके बीज औषधि के काम में आते हैं। इसकी राख का चार (नमक) अर्श रोग में लाभदायक समझा जाता है। यह जड़ प्रायः काबुल से आती है और वही सबसे अच्छी भी होती है।

शकाब्द—सब्बा पु० [म०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक सवत्।

विशेष—ईसवी सन् सवत् में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।

शकार—सब्बा पु० [स०] १ शकवशीय व्यक्ति। वह जो शक वंश का हो। २ संस्कृत नाटको की परिभाषा में राजा का वह साना जो नीच जाति का हो।

विशेष—नाटक में इस पात्र को वेवकूफ, चंचल, घमडी, नीच तथा कठोर हृदयवाला दिखलाया जाता है। जैसे,—मृच्छकटिक में संख्यानक।

शकारि—सब्बा पु० [स०] शक जाति का शत्रु विक्रमादित्य।

शकील—वि० [अ०] [वि० स्त्री० शकीला] अच्छी शकलवाला। खूब-मूरत। सुंदर।

शकुंत—सब्बा पु० [स० शकुन्त] १ पत्नी। चिडिया। उ०—जिस पर निज पत्नी को छाया रखी शकुंत द्विजवर ने। मृदु कोपल, सी वह मुनिकन्या देखा कएव मुनाश्वर ने।—शकुं, पृ० २। २ एक प्रकार का कीड़ा। ३ विश्वामित्र के लडके का नाम। ४ नीला चाप पद्मा। नीलकंठ [को०]। ५. मास नाम का पक्षीविशेष [को०]।

शकुंतक—सब्बा पु० [स० शकुन्तक] १ एक प्रकारकी छोटी चिडिया। २ पत्नी। चिडिया।

शकुंतला—सब्बा स्त्री० [स० शकुन्तला] १ राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की कन्या थी।

विशेष—महाभारत में लिखा है कि शकुंतला का जन्म विश्वामित्र के वीर्य से मेनका अप्सरा के गर्भ से हुआ था जो इसे वन में छोड़कर चली गई थी। वन में शकुंतला (पक्षियों) आदि ने हिसक पशुओं से इसकी रक्षा की थी इसी से इसका नाम शकुंतला पड़ा। वन में से इसे कश्यप ऋषि उठा लाए थे और अपने आश्रम में रखकर कन्या के समान पालते थे। एक बार राजा दुष्यंत अपने साथ कुछ सैनिकों को लेकर शिकार खेलने

निकले और घूमते फिरते कश्यप ऋषि के आश्रम में पहुँचे। ऋषि उस समय वहाँ उपस्थित नहीं थे, इससे युवती शकुन्तला ने ही राजा दुष्यत का आतिथ्य सत्कार किया था। उसी अवसर पर दोनों में पहले प्रेम और फिर गर्व विवाह हो गया। कुछ दिनों के बाद राजा दुष्यत वहाँ से अपने राज्य की चले गए। कश्यप मुनि जब लौटकर अपने आश्रम में आए, तब वे यह जानकर बहुत प्रमत्त हुए कि शकुन्तला का विवाह दुष्यत से हो गया। शकुन्तला उस समय गर्भवती हो चुकी थी अतः समय पाकर उसके गर्भ से बहुत ही बलवान् और तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम भरत रखा गया। कहते हैं, इस देश का भागवर्ष नाम इसी के कारण पड़ा। कुछ दिनों बाद शकुन्तला अपने पुत्र को लेकर राजा दुष्यत के दरबार में पहुँची। परत शकुन्तला को बीच में रुकना ऋषि का शाप मिल चुका था, इससे राजा न बिलकुल न पहचाना और स्पष्ट कह दिया कि न तो मैं तुम्हें जानता हूँ और न तुम्हें अपने यहाँ आश्रय दे सकता हूँ। परन्तु उसी अवसर पर एक आकाश वाणी हुई जिससे राजा को विदित हुआ कि यह मेरी ही पत्नी है और यह पुत्र भी मेरा ही है। उसी समय उन्हें कश्यप मुनि के आश्रम का भी सब बातें स्मरण हो आईं और उन्होंने शकुन्तला को अपनी प्रधान रानी बनाकर अपने यहाँ रख लिया।

२ महाकवि कालिदास का लिखा हुआ एक प्रसिद्ध नाटक जिसमें राजा दुष्यत और शकुन्तला के प्रेम, विवाह, प्रत्याख्यान और ग्रहण आदि का वर्णन है।

शकुन्ति—सङ्घा पुं० [सं० शकुन्ति] १ भास नाम की चिडिया। २ चिडिया। पक्षी [को०]।

शकुंतिका—सङ्घा स्त्री० [सं० शकुन्तिका] १ छोटी चिडिया। २ रिखाया। प्रजा। ३ एक प्रकार का पक्षी (को०)। ४ टिड्डी। भोगुर (को०)।

शकुद—सङ्घा पुं० [सं० शकुन्द] सफेद कनेर।

शकुची—सङ्घा स्त्री० [सं० शकुचि] दे० 'सकुचो'।

शकुन—सङ्घा पुं० [सं०] १ किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबन्ध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। वे चिह्न आदि जो किसी काम के संबन्ध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं।

विशेष—प्रायः लोग कुछ घटनाओं को देखकर उनका शुभ या अशुभ फल होना मानते हैं, और उन घटनाओं को शकुन कहते हैं। जैसे,—कहीं जाते समय रास्ते में विल्ली का रास्ता काट जाना अशुभ शकुन समझा जाता है और जलपूर्ण कलश या मृत्तक आदि का मिलना शुभ शकुन माना जाता है। इस प्रकार अगो का फडकना, विशिष्ट पशुओं या पक्षियों आदि का बोलना या कुछ विशिष्ट वस्तुओं का दिखाई पड़ना भी शकुन समझा जाता है। हमारे यहाँ इस विषय का एक अलग शास्त्र ही बन गया है; और उसके अनुसार दही, घी, दूध, चंदन, शीशा, शख,

मछली, देवमूर्ति, फल, फूल, पान, चोना, चाँदी, रत्न, बेरया आदि का दिखाई पड़ना शुभ और नाप, चमड़ा, नमक, खानी चरतन आदि दिखाई पड़ना अशुभ समझा जाता है। प्रायः लोग अशुभ शकुन देखकर ताम रोम या टल देते हैं। साधारणतः बोलचाल में लोग शकुन ने प्रायः शुभ शकुन का ही अतिशय लेते हैं, अशुभ शकुन को अपशकुन, अनगुन म्हते हैं।

मुहा०—शकुन विचारना या देखा = बौद्ध कार्य करने में पहले किसी उपाय में लक्षण आदि देखना यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं, अथवा काम अभी करना चाहिए या नहीं।

२. शुभ मूर्त या उसमें होनेवाला कार्य। ३ पक्षी। चिडिया।

४ गड्ड नामक शिकारी पक्षी। ५ मंगल अवसरों पर गाए जानेवाले गीत (का०)।

शकुनक—सङ्घा पुं० [सं०] पक्षी। खग [को०]।

शकुनज्ञ—सङ्घा पुं० [सं०] वह जो शकुनों का शुभाशुभ फल जानता हो।

शकुनज्ञा—सङ्घा स्त्री० [सं०] गिरगिट। गृहगोष्ठा [को०]।

शकुनज्ञान—सङ्घा पुं० [सं०] शकुन की जानकारी [को०]।

शकुनद्वार—सङ्घा पुं० [सं०] शकुन शास्त्र के अनुसार एक नाग ही शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के शकुन होना जो यात्रा आदि के लिये बहुत शुभ माना जाता है।

शकुनशास्त्र—सङ्घा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो। शकुन पतनेवाला शास्त्र।

शकुनाहत—सङ्घा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का चावल जिसे दाऊद-खानी कहते हैं। २ एक प्रकार की मछली। ३ एक प्रकार का बालरोग। शकुनी गह। विशेष दे० 'शकुनी—१'। ४. वह पदार्थ जो चिडियों द्वारा लाया गया हो।

शकुनाहता—सङ्घा स्त्री० [सं०] १. चिडियों द्वारा लाई हुई वस्तु। २ एक प्रकार का चावल।

शकुनि—सङ्घा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिडिया। २ गिद्ध पक्षी। ३. एक नाग का नाम। ४ एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र और वृक का पिता था। ५ पुराणानुसार दुसह के आठ पुत्रों में से एक जो निर्माष्ट के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ६. पुराणानुसार विकुक्षि के पाँच पुत्रों में से एक। ७ गावारी का भाई और कौरवों का मामा जो सुवलराज का पुत्र था और इसी लिये सोवल कहलाता था।

विशेष—यह बहुत ही दुष्ट और पापाचारी था। दुर्योधन ने इसे अपना मंत्री बना रखा था और इसके परामर्श से उसने पांडवों के साथ अनेक कपटपूर्ण व्यवहार किए थे। कौरव कुल के नाश का मुख्य कारण यही शकुनि था। यह अपने पुत्र सहित सहदेव के हाथ से मारा गया था।

८. बड़ा भारी दुष्ट और पाजी आदमी। ९ फलित ज्योतिष के अनुसार वव आदि ग्यारह करणों में से आठवाँ करण।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस करण में जन्म लेता है, वह बड़ा भारी धूर्त, ठग, क्रूर, कृतघ्न, क्रोधी और लाट हाता है।
१० चल पक्षा (को०)। ११. मुर्गा (को०)।

शकुनिका—सन्ना स्त्री [स०] पुराणानुसार स्कन्द को अनुवरी एक मातृका का नाम।

शकुनिग्रह—सन्ना पु० [स०] १ पुराणानुसार स्कन्द के एक अयुध का नाम। २ एक बालग्रह। शकुना।

शकुनिप्रपा—सन्ना स्त्री [स०] चिड़ियों के पानी पीने का बर्तन या स्वान (को०)।

शकुनिवाद—सन्ना पु० [स०] उषा काल के ममय चिड़िया का चहचहाना।

शकुनी—सन्ना स्त्री [स०] १ शमामा पक्ष। २ गोदया पक्षों को मादा। ३. पुराणानुसार एक पूतना का नाम जो बहुत क्रूर और भयकर कहो गई है। ४ मुशुना के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह।

विशेष—कहते हैं, जिस बालक पर इसका आक्रमण होना है, उसके अंग शिथिल पड़ जाते हैं, शरीर में जनन होती है, फोड़े फुंसियाँ आदि निकल आती हैं शरीर से पक्षियों की सा गंध आने लगती है और वह रह रहकर चौंक उठता है।

शकुनी—सन्ना पु० [स० शकुन + ई (प्रत्य०)] वह जो शकुनी का शुभ और अशुभ फल जानता हो। शकुनज्ञ।

शकुनी^३—सन्ना पु० [स० शकुन] दुर्ग्वन का मामा सौबल। विशेष दे० 'शकुने'। उ०—वे दुर्ग्व जासन और शकुनी वन गए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३०७।

शकुनीमातृका—सन्ना स्त्री [स०] बालकों की एक प्रकार की व्याधि।

विशेष—यह बालका के जन्म से छठे दिन, छठे मास या छठे वर्ष होती है और इसमें उन्हें ज्वर तथा कफ होता है, दाढ़ उद्धर्ष हो जाती है और हरदम बहुत कष्ट बना रहता है।

शकुनीश्वर—सन्ना पु० [स०] पक्षियों का स्वामी, अर्थात् गरुड।

शकुर—वि० [स०] पालतू (पशु आदि) (को०)।

शकुल, शकुलगड—सन्ना पु० [स० शकुल, शकुलगड] सौरी मछली।

शकुला—सन्ना स्त्री [स०] कुटकी। कटुकी।

शकुलाक्ष—सन्ना पु० [स०] १ सफेद दूब। श्वेत दूर्वा। २ गाँडर दूब। गडदूर्वा।

शकुलाक्षका, शकुलाक्षा—सन्ना स्त्री [स०] दे० 'शकुनाक्ष'।

शकुलाक्षी—सन्ना स्त्री [स०] गाँडर दूब।

शकुलादनी—सन्ना स्त्री [स०] १. कुटकी। कटुकी। २. जलपिप्पली। जन चौलाई। कचट जाक। ४ कायफल। कंठफल। ५ गजपीपल। गजपिप्पली। ६. गाँडर दूब। गडदूर्वा। ७. जटा-मासी। बालछड। ८. केतुप्रा। गड्ढद।

शकुलार्भक—सन्ना पु० [स०] एक प्रकार की मछली। गड्ढई मछली।

शकुलाहनी—सन्ना स्त्री [स०] जलपीपल।

शकुली—सन्ना स्त्री [स०] १. सकुची मछली। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शकुत्—सन्ना पु० [स०] १. विष्टा। गुह। २. गोवर गोमय।

शकुत्करि—सन्ना पु० [स०] गाय का वच्चा। बछड़ा।

शकुत्करी—सन्ना स्त्री [स०] बछिया। वत्सतरी (को०)।

शकुत्कीट—सन्ना पु० [स०] १. मल का कीड़ा। विटकीट। २. गुबरैला।

शकुत्पिड, शकुत्पिडक—सन्ना पु० [स०] शकुत्पण्ड, शकुत्पण्डक मल का पिड। लेंड। लेंडो (को०)।

शकुद्देश—सन्ना पु० [स०] मलद्वार। गुदा।

शकुद्द्वार—सन्ना पु० [स०] मलद्वार। गुदा।

शकुद्दूद—सन्ना पु० [स०] अतिसार। ग्रहणी रोग (को०)।

शक्क—सन्ना पु० [स०] संदेह। शका। दे० 'शक' (को०)।

शक्कर^१—सन्ना स्त्री [स०] शर्करा, प्रा० सक्कर सक्करा, मि० फा० शकर (= चीनी)। १ चीनी। २. कच्चा चीनी। खंड।

शक्कर^२—सन्ना पु० [स०] बैल। वृष।

शक्करि—सन्ना पु० [स०] बैल। वृष।

शक्करी—सन्ना स्त्री [स०] १ वर्णवृत्त के अतर्गत चौदह अक्षरों-वाले छंदों की सन्ना जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसततिलका, असंवाधा, अपराजिता, ग्रहणकलिका, वासती, मजरी, कुटल, इदुदना, चक्र नादीमुख, लाली और अनद। इनमें से वसततिलका सबसे अधिक प्रसिद्ध है। २. मेखला। ३. एक प्राचीन नदी का नाम। ४. अंगुली। उंगली (को०)। ५. निम्न वर्ण की महिला। नीच जाति की स्त्री (को०)।

शक्की—वि० [अ० शक्क + ई (प्रत्य०)]। जैसे हर बात में संदेह होना हो। सदा शक करनेवाला। उ०—इसका मिजाज निहायत शक्की है, ये सबको बेवफा समझते हैं।—अनिवास ग्र० पृ० ११५।

शक्त^१—सन्ना पु० [स०] वह जिसमें शक्ति हो। शक्तिसंपन्न। समर्थ। ताकतवर। २. वह जो प्रिय बातें कहता हो। मिष्टभाषी।

शक्त^२—वि० १ योग्य। काबिल। समर्थ। २. शक्तपन्न। ताकतवर। ३. धनाढ्य। समृद्धियुक्त। ४. अर्थ का आभर्व्यजक या अर्थद्योतक, जैसे कोई शब्द। ५. प्रियभाषा। मिष्टभाषी। ६. चतुर। चालाक। पटु (को०)।

शक्तव—सन्ना पु० [स०] भुन हुए अनाज का आटा। सत्तू।

शक्ति^१—सन्ना स्त्री [स०] १. वह शारीरिक गुण या धर्म जिसके द्वारा अंगों का संचालन तथा दूसरे काम होते हैं। बल। पराक्रम। ताकत। जोर। जैसे—(क) उसमें दो मन बोक उठाने की शक्ति है। (ख) अब तो उनमें उठन बैठने का भा शक्ति नहीं रह गई। (ग) दुर्बलो पर शक्त का प्रयाग नहीं करना चाहिए।

क्रि० प्र०—देखना।—रखना। लगना।—लगाना।

२. किसी प्रकार का बल या ताकत जिससे कोई काम हो। जैसे,—मानासिक शक्त, स्मरण शक्ति, सौमिक शक्ति, शब्द शक्ति, ३. किसी पदार्थ के संयोजक अंग या द्रव्यों आदि का प्रकट

होनेवाला वन। दूसरे पंदायों पर प्रभाव डालनेवाला वन। जैसे,—(क) इस ओषध में ऐसी शक्ति है कि मृत्यु को भी कुछ देर के लिये रोक देती है। (ख) इस इजन में बीस घोड़ों की शक्ति है। (ग) पानी के बहाव में बड़ी बड़ी चट्टानों तक को तोड़ने की शक्ति होती है। ४ वश। अधिकार। जैसे,—इसकी रक्षा करना मेरी शक्ति के बाहर है। ५ राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है।

विशेष—हमारे यहाँ राजाओं की तीन प्रकार की शक्ति कही गई है—प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, और उत्साहशक्ति। कोश और दंड आदि के सबध की शक्ति प्रभुशक्ति, सधि, विग्रह आदि के सबध की शक्ति मंत्रशक्ति और पराक्रम प्रकट करने तथा विजय प्राप्त करने की शक्ति उत्साहशक्ति कहलाती है।

६ बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। जैसे,—इस समय युरोप में इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, और रूस आदि कई बड़े बड़ी शक्तियाँ हैं। ७ न्याय के अनुसार वह सबध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करानेवाले शब्द में होता है। इस शब्द का यह अर्थ बाह्यव्य है—इस प्रकार का अनादि सकेत। जैसे घट शब्द के कहने मात्र से श्रोता को, घट शब्द के रूपाकार आदि का ज्ञान हो जाता है। ८ ईश्वर की वह कल्पित माया जो उसकी आज्ञा से सब काम करनेवाली मानी जाती है। प्रकृति। माया। ९ किसी देवता का पराक्रम या बल जो कुछ विशिष्ट कार्यों का साधक माना जाता है। जैसे,—रोद्री शक्ति, वैष्णवा शक्ति।

विशेष—हमारे यहाँ पुराणों में भिन्न भिन्न देवताओं की अनेक शक्तियों की कल्पना की गई है और ये शक्तियाँ बहुधा देवी के रूप में और भूतिमती मानी गई हैं। जैसे, विष्णु की कीर्ति, कांति, तुष्टि, पुष्टि, शांति, प्रीति आदि शक्तियाँ, रुद्र का गुणादरी, गोमुखी, दीर्घजिह्वा, ज्वालामुखी, लवोदरी, खेचरी, मजरी आदि शक्तियाँ, देवी की इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणा, कामांगी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और सर्वमंगला आदि शक्तियाँ।

१० तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवा।

विशेष—इनकी उपासना करनेवाले शाक्त कह जाते हैं। ऐसी शाक्त समस्त सृष्टि की रचना करनेवाला और सब तरह की सामर्थ्य रखनेवाला माना जाता है।

११. दुर्गा। भगवती। १२. गौरी। १३. लक्ष्मी। १४. तांत्रिकों की पारम्भा में वह नटी, कापालिका, वध्या, धाबिनी, नाउन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन जा युवती, रूपवती और सौभाग्यवता हो। ऐसी स्त्रियों का विधिवत पूजन। सांध्य और मातृदायक माना जाता है। १५ स्त्रियों का सूत्रैर्द्वय। भग। (तांत्रिक)। १६ एक प्रकार का शस्त्र। साग। १७. तलवार। १८ क्षमता। योग्यता (को०)। १९ साहित्य में शब्द के अर्थ की बोधक शक्ति। आभवा, लक्षणा और व्यञ्जना नाम की शब्दशक्ति (को०)। २०. काव्यादि निमाण की क्षमता। रचनाशक्ति। कवित्वशक्ति (को०)। २१ द्यूतक्रांदा का उपकरण वा यंत्र (को०)।

शक्ति—संज्ञा पु० प्राचीन ऋषि का नाम जो पराशर के पिता थे।

शक्तिक—संज्ञा पु० [सं०] १ धक।

शक्तिकुठन—संज्ञा पु० [सं० शक्तिकुठन] शक्ति का दब जाना। नरम पड़ जाना (को०)।

शक्तिग्रह^१—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। महादेव। २ कार्तिकेय। ३. शब्द का अर्थ बतलानेवाली शक्ति या वृत्ति का ज्ञान। ४ वह जो भाला या बरछी चलाता हो। भालावरदार।

शक्तिग्रह^२—वि० १ शक्ति या अर्थ को ग्रहण करनेवाला। २ बर्छाधारी (को०)।

शक्तिग्राहक^१—वि० [सं०] शब्दार्थ का निश्चय अथवा निर्धारण करने वाला (को०)।

शक्तिग्राहक^२—संज्ञा पु० [सं०] कार्तिकेय।

शक्तिता—संज्ञा स्त्री [सं०] शक्ति का भाव या धर्म, शक्तित्व।

शक्तित—अव्य० [सं० शक्तितस्] यथाशक्ति। शक्ति के अनुसार (को०)।

शक्तित्रय—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शक्ति'—५।

शक्तिधर^१—संज्ञा पु० [सं०] १ स्कंद। कार्तिकेय। उ०—शक्ति शक्तिधर पासहि पासी।—गर्गसहिता (शब्द०)। २ भालावरदार। बर्छाधारी (को०)।

शक्तिधर^२—वि० शक्तिशाली। ताकतवर। मजबूत (को०)।

शक्तिध्वज—संज्ञा पु० [सं०] १ कार्तिकेय। स्कंद। २. वह जो शक्ति नामक अस्त्र धारण करता हो (को०)।

शक्तिनाथ—संज्ञा पु० [सं०] शिव (को०)।

शक्तिपूर्ण—संज्ञा पु० [सं०] छतिवन। सतिवन। सप्तपूर्ण वृक्ष।

शक्तिपाणि—संज्ञा पु० [सं०] १. कार्तिकेय। स्कंद। २ शक्ति नामक अस्त्र या बर्छा धारण करनेवाला व्यक्ति (को०)।

शक्तिपात—संज्ञा पु० [सं०] शक्ति का क्षय। पराजय। २ योग दर्शन में एक आध्यात्मिक प्रक्रिया जिसके द्वारा गुरु अपना आध्यात्मिक शक्ति शिष्य में स्थापित करता है (को०)।

शक्तिपूजक—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शाक्त। २ तांत्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा—संज्ञा स्त्री [सं०] शक्ति का शाक्तों द्वारा होनेवाला पूजन।

शक्तिपूर्व—संज्ञा पु० [सं०] पराशर का एक नाम।

शक्तिबोध—संज्ञा पु० [सं०] शब्दशक्ति का ज्ञान। शब्द के अर्थ का बोध।

शक्तिभृत्—संज्ञा पु० [सं०] १. कार्तिकेय। स्कंद। २. सांग या भाला धारण करनेवाला पुरुष (को०)।

शक्तिमत्ता—संज्ञा स्त्री [सं०] शक्तमान होने का भाव या धर्म।

शक्तिमत्य—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शक्तिमत्ता'।

शक्तिमान्—वि० [सं० शक्तिमत्] [वि० स्त्री शक्तिमती] १ बलवान्। बालिष्ठ। ताकतवर। २ सामर्थ्य वा योग्यता का अतिक्रमण करनेवाला (को०)। ३. बाणधारी (को०)।

शक्तिवन—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक वन का नाम जो तीर्थ कहा गया है।

शक्तिवादी—संज्ञा पुं [शक्तिवादिन्] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शक्त।

शक्तिवीर—संज्ञा पुं [सं] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। वाममार्गी।

शक्तिवैकल्य—संज्ञा पुं [सं] १. शक्ति का नाश। दीर्घत्व कमजोरी। २. असमर्थता।

शक्तिशोघन—संज्ञा पुं [सं] शक्तों का एक संस्कार जिसमें वे किसी स्त्री को शक्ति की प्रतिनिधि बनाने से पहले कुल विशिष्ट क्रियाएँ करके उसे शुद्ध करते हैं।

शक्तिष्ठ—वि० [सं] जिसमें शक्ति हो। शक्तिशाली। मजबूत। ताकतवर। बलवान्।

शक्तिसंपन्न—वि० [सं शक्तिसम्पन्न] शक्ति से युक्त। बलवान्। ताकतवर। मजबूत।

शक्तिहीन—वि० [सं] १ जिसमें शक्ति का अभाव हो। निर्बल। बलहीन। असमर्थ। नाताकत। २. हीजडा। नष्ट। नामर्द।

शक्ती—संज्ञा पुं [सं शक्ति] एक प्रकार के मायिक छंद का नाम। विशेष—इसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं और इसकी रचना ३ + ३ + ४ + ३ + ५ होती है। अतः में सगण, रगण, या नगण म से कोई एक और आदि में एक लघु होना चाहिए। इसकी १, ६, ११ और १७वीं मात्रा लघु रहती है। यह भुजगी और चंद्रिका वृत्त की चाल पर होता है। अतः यह है कि वे गणवद्ध होते हैं और यह स्वतंत्र है। यह छंद फारसी के 'करीमा बद्रुशाय वर हाल मा। कि हस्तम् असोरे कमदे हवा' की बहुर से मिलता है। जैसे, उ०—शिवा शम्भु के पाँव पकड़ गहो। विनायक सहायक सदा दिन चहो।—काव्य प्र० (शब्द०)।

शक्ती—संज्ञा पुं [सं शक्ति] शक्तिवाला। शक्तिशाली। बलवान्।

शक्ती—संज्ञा स्त्री [सं शक्ति] दे० 'शक्ति'।

शक्तु—संज्ञा पुं [सं] भुने हुए जो चने आदि का आटा। सत्तू।

शक्तुक—संज्ञा पुं [सं] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बृहत् तीव्र और उग्र विष जो भसोड़ के समान होता है। पीसन से यह सहज ही में पिसकर सत्तू के समान हो जाता है।

शक्तुफला—संज्ञा स्त्री [सं] शमी वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर का पेड़।

शक्तुफलिका, शक्तुफली—संज्ञा स्त्री [सं] शमी का वृक्ष।

शक्त्यपेक्ष दायन—संज्ञा पुं [सं] ऋणों की सामर्थ्य के अनुसार ऋण थोड़ा थोड़ा करके चुकता कराना।

शक्तिवृ—संज्ञा पुं [सं] वशिष्ठ मुनि के सबसे बड़े लड़के का नाम।

विशेष—महामारत में लिखा है कि एक बार रास्ते में राजा कल्पापपाद से इनको कहा सुनी हो गई, जिसपर राजा ने इन्हे एक कोड़ा जमा दिया। इसपर इन्होंने राजा को शाप दिया

कि तुम राजस हो जाओ। तदनुसार राजा राजस हो गया और पहले उसने इन्ही को भक्षण कर लिया।

शक्न, शक्नु—वि० [सं] प्रिय बोलनेवाला, प्रियवद [को०]।

शक्मा—संज्ञा पुं [सं शक्मन्] १. पराक्रम। शक्ति। सामर्थ्य। २. इद्र। सक्रदन। ३. कर्म।

शक्य—वि० [सं] १ किया जाने योग्य। जो किया जा सके। सभव। क्रियात्मक। २. जिसमें शक्ति हो।

शक्य—संज्ञा पुं शब्दशक्ति के द्वारा प्रकट होनवाला अर्थ। जैसे—'अग्नि' पद में अगार रूप की शक्ति है अतः अग्निपद का अगार शक्य अथवा वाच्य है। (व्याकरण)।

शक्यता—संज्ञा स्त्री [सं] १ शक्य होने का भाव या धर्म। क्रियात्मकता। २. क्षमता। समर्थता [को०]।

शक्यत्व—संज्ञा पुं [सं] दे० 'शक्यता' [को०]।

शक्यप्रतीकार—वि० [सं] जिसका प्रतीकार किया जा सके [को०]।

शक्यप्राप्ति—संज्ञा स्त्री [सं] न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाता के वे प्रमाण जिनसे प्रमेय सिद्ध होता है।

शक्यसामतता—संज्ञा स्त्री [सं शक्यसामन्तता] पड़ोसी राजाओं को जीतने योग्य क्षमता [को०]।

शक्यार्थ—संज्ञा पुं [सं] वह अर्थ जो शब्द को अभिधाशक्त द्वारा व्यक्त हो। अभिवेयार्थ [को०]।

शक्र—संज्ञा पुं [सं] १ दैत्यों का नाश करनेवाले, इद्र। उ०—भरत शोक बरन्यो नहि जाई। मनहु शक्र द्विज हत्या पाई।—लवकुश-चरित्र (शब्द०)। २. कुटज वृक्ष। कोरैया। ३. अर्जुन वृक्ष। कोह वृक्ष। ४. इंद्रजी। कुटज बीज। ५. रगण के चौथे भेद अर्थात् (SAS) की संज्ञा, जिसमें छह मात्राएँ होती हैं। जैसे—लोकवती। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र, जिसके अविष्टता देवता इद्र है। ७. उलूक पक्षी [को०]। ८. चौदह की सख्या [को०]। ९. शिव का एक नाम [को०]। १०. स्वामी। राजा [को०]।

शक्र—वि० समर्थ। योग्य।

शक्रकामुक—संज्ञा पुं [सं] इद्रवनुष।

शक्रकाष्ठा—संज्ञा स्त्री [सं] प्राची दिशा। पूर्व दिशा जिसका आधिपति इद्र है [को०]।

शक्रकुमारिका—संज्ञा स्त्री [सं] दे० 'शक्रमातृका'।

शक्रकंतु—संज्ञा पुं [सं] इद्रवज।

शक्रक्रीड़ाचल—संज्ञा पुं [सं शक्रक्रीडाचल] इद्र के क्रीड़ा करने का पर्वत अर्थात् सुमेरु पर्वत।

शक्रगोप, शक्रगोपक—संज्ञा पुं [सं] इद्रगोप नामक कीड़ा। बीरबहूटो।

शक्रचाप—संज्ञा पुं [सं] इद्रधनुष।

शक्रज, शक्रजात—संज्ञा पुं [सं] कौश्रा। काक पक्षी।

शक्रजा—संज्ञा स्त्री [सं] इद्रवर्णों लता। इद्रायण। इतरान।

शक्रजानु—संज्ञा पुं [सं] रामायण के अनुसार एक वानर का नाम।

शक्रजाल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'इद्रजाल'।

शक्रजित्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ वज्र जिसने इद्र पर विजय प्राप्त की हो।
२ इद्र को जीतनेवाले मेघनाद का एक नाम।

शक्रतरु—सञ्ज्ञा पुं० [म०] भाँग का पेड़।

शक्रत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शक्र का भाग या धर्म।

शक्रदारु—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ देवदारु। २ साखू का पेड़। शाल।

शक्रदिक्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शक्रदिग्] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इद्र माने जाते हैं।

शक्रदेव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ हरिवंश के अनुसार शृगाल के एक पुत्र का नाम।

शक्रदेवत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ज्येष्ठा नामक नक्षत्र जिसके स्वामी इद्र माने जाते हैं।

शक्रद्रुम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. देवदारु। २ मौलसिरी। बकुल वृक्ष।
३ साखू का पेड़, शाल वृक्ष।

शक्रधनु, शक्रधनुष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्रधनुष।

शक्रवज्र—सञ्ज्ञा पुं० [म०] दे० 'इद्रवज्र'।

शक्रनन्दन—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रनन्दन] इद्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन।

शक्रनेमी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रनेमिन्] १ देवदार का वृक्ष। २ मेढा-
सिगी। मेघशृंगी। ३ कुडा। कोरैया। कुटज वृक्ष।

शक्रपर्याय, शक्रपादप—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ कुडा। कुटज वृक्ष।
२ देवदार का पेड़।

शक्रपुर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] इद्र के रहने की पुरी, अमरावती।

शक्रपुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शक्रपुर। अमरावती।

शक्रपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्रजी। कुटज बीज।

शक्रपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शक्रपुष्पिका'।

शक्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ अग्निशेखा नाम का
वृक्ष। २ कलिहारी। लागली। ३ नागदमनी। नागदौन।

शक्रप्रस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक नगर जिसे पांडवों ने खाडव वन
जलाकर बसाया था। इद्रप्रस्थ। उ०—उठे सुनत हरि उद्धव
बानी। भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी।—सबल (शब्द०)।

शक्रबीज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्रजी।

शक्रभवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्वर्ग।

शक्रभिद्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] इद्र को दवानेवाला, मेघनाद। इद्रजित्।

शक्रभुवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्वर्ग।

शक्रभूभवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इद्रवारुणी नाम की लता। इनाहन।
इद्रायण।

शक्रभूरुह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कुटज वृक्ष। कुडा। कोरैया।

शक्रमाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शक्रमातृ] इद्र की माता अर्थात् भागी।

शक्रमातृका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्रवज्र। २ भागी।

शक्रमूर्द्धा—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रमूर्द्धन्] वल्मीक। बाँधी।

शक्रयव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्रजी। कुटज बीज।

शक्रलोक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] इद्रलोक, स्वर्ग।

शक्रवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इद्रवारुणी नाम की लता। इनाहन।
इद्रायण।

शक्रवापी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रवापिन्] महाभारत के अनुसार एक नाग
का नाम।

शक्रवास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्वर्ग। शक्रभवन (को०)।

शक्रवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्र का वाहन अर्थात् मेघ। बादल।

शक्रवृक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कुटज। कोरैया।

शक्रशरासन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्रधनुष।

शक्रशाखी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रशाखिन्] कुडा। कुटज वृक्ष।

शक्रशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] यक्षभूमि में वह स्थान जहाँ इद्र के
उद्देश्य से बलि दी जाती हो।

शक्रशिर—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रशिरम्] बाँधी। वल्मीक।

शक्रसारथी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रसारथि] इद्र का सारथा अर्थात्
मातल।

शक्रसुत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] इद्र का पुत्र बान्ति, जिसे राम ने मारा था।
२ जयत (को०)। ३ अर्जुन (को०)।

शक्रसुधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कुंदरू। गुदवरोसा।

शक्रसृष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हरीतकी। हर्ई।

शक्राख्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] उल्लू। पेचक पत्नी।

शक्राग्नि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विशाखा नक्षत्र जिसके स्वामी इद्र और
अग्नि माने जाते हैं।

शक्राणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इद्र की पत्नी शची। इद्राणा।
२ निर्गुंडी। शेफालिका। सेनुप्रार।

शक्रात्मज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अर्जुन। २ जयन (को०)।

शक्रादन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भाँग। भग।

शक्रानिल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष में प्रभव आदि साठ सवत्सरो के
बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति। इनके युग में ये पाँच
सवत्सर होते हैं,—परिधावी, प्रमादी, आनंद, गच्छस और
अनल।

शक्रावर्त्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ
का नाम।

शक्राशन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. भाँग। विजया। भग। २. कुडा।
कुटज। कोरैया। ३. इद्रजी। कुटज बीज।

शक्रासन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ इद्र का आसन। २ सिंहासन।

शक्राह्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ इद्रजी। कुटज बीज। २. कुटज वृक्ष।

शक्राह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शक्राह्व'।

शक्रि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मेघ। बादल। २ वज्र। ३. हाथी।
४. पर्वत। पहाड़।

शक्रुक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का विप (को०)।

शक्रुद्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० शक्रुद्र] वीरवहूटो या इद्रगाप नाम का कीड़ा।

शक्रोत्थान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] इन्द्रवज्र नाम का उत्सव जो भाद्र शुक्ल द्वादशी को होता था । दे० 'इन्द्रवज्र'—२, ३ ।

शक्रोत्सव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शक्रोत्थान' ।

शक्ल—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शक्ल' ।

मुहा०—शक्ल चिड़ियों की नाज परियों का = हैसियत के बाहर गुमान रखना । उ०—ऐसी तो सूरत भी नहीं पाई है वीवी, शक्ल चिड़ियों की नाज परियों का ।—किमाना०, भा० ३, पृ० १६ । शक्ल दिखाना = (१) मिलना । (२) सामने आना । शक्ल देखते रह जाना = (१) चकित होना । (२) मुग्ध होना । शक्ल देखा करना = दे० 'शक्ल देखते रह जाना' । शक्ल न दिखाना = (१) न मिलना । (२) मुँह छिगाना । शक्ल पकड़ना = मूर्त होना । आकार ग्रहण करना । शक्ल पहचानना = (१) रूपरेखा से परिचित होना । (२) देखकर चारित्र्य की बारीकियाँ जानना । शक्ल बनाना = असुंदर या विचित्र हो जाना । शक्ल बिगाड़ना = (१) चेहरे की कुत्थ या विचित्र कर लेना । (२) पीटने पीटते मुँह चुजा देना ।

शक्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथी [को०] ।

शक्वर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ बल । २. आकाश ।

शक्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ उँगली । २ एक प्राचीन नदी का नाम । ३ मेखला । ४ गी । गाय । ५ अंगूठी । मुद्रिका [को०] । ६ एक साम [को०] । ७ शक्वरी नामक छद्म । विशेष दे० 'जक्वरी' ।

शक्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शक्वन्] १. हाथी । गज । २. शिल्पी । निर्माता [को०] ।

शक्वा—वि० शक्तिमान् । ताकतवर । मजबूत [को०] ।

शक्वस—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शक्व] दे० 'शक्म' ।

शक्वस—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शक्व] व्यक्ति । जन । मनुष्य । आदमी ।

शक्वसयत्—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शक्वसयन्] शक्वस का भाव या धर्म । व्यक्तित्व । व्यक्तित्व ।

शक्सी—वि० [अ० शक्सी] शक्म का । मनुष्य का । व्यक्तिगत ।

शगल—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शगल, शगल, शुगल] १ व्यापार । काम-धंधा । जैसे,—कहिए आजकल क्या शगल है । उ०—शगल बेहतर है इश्कवाजी का । क्या हकीकी व क्या मजाजी का ।—कविता को०, भा० ४, पृ० ४ । २ वह काम जो यो ही समय बिताने या मन बहलाने के लिये किया जाय । मनानिर्दोष । उ०—मनियर को एक नये शगल में तल्लीन देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई ।—जिप्सी, पृ० ११६ ।

शगुन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शकुन (मि० फा० शगून, शुगुन, शुगून)] १ किसी काम के समय होनेवाले लक्षणों का शुभाशुभ विचार । शकुन । विशेष दे० 'शकुन' ।

मुहा०—शगुन लेना या विचारना = कोई काम करने से पहले कुछ विशिष्ट क्रियाओं द्वारा यह जानना, कि यह काम होगा कि नहीं ।

२ किसी काम के आरंभ में होनेवाले शुभ लक्षण । ३ एक प्रकार की रसम जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है । इसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों के यहाँ कुछ मिठाई और नगद आदि भेजते हैं । तिलक । टीका ।

क्रि० प्र०—देना ।—भेजना ।—लेना ।

४ नजराना । भेट । [को०] । ५ वहला में वह स्थान जहाँ बैन हाँकनेवाला बैठता है ।

शगुनियाँ—सञ्ज्ञा पुं० [हि० शगुन + इयाँ (प्रत्यय)] वह जो ज्योतिष या रमल आदि के द्वारा शुभाशुभ शगुनों आदि का विचार करता हो । साधारण कोटि का ज्योतिषी । रम्माल ।

शगून—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शगून] दे० 'शगुन' ।

शगुनियाँ—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शगून + हि० इयाँ] दे० 'शगुनियाँ' ।

शगूफा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शिगूफ] १ बिना खिला हुआ फूल । कली । २ पुष्प । फूल । ३. बोई नई और विलक्षण घटना । ४. कसीदा । बेलवृत्ता [को०] ।

मुहा०—शगूफा खिलना = कोई नई और विलक्षण घटना होना ।

शगूफा खिलाना = कोई ऐसी नई और विलक्षण बात कर बैठना जिससे सब लोग चकित हो जायें । शगूफा छोड़ना = भगड़े फपादवाली बात करना ।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्रायः ऐसी बातों के सवध में ही होता है जिनमें कोई लड़ाई भगडा या भभट आदि पैदा हो ।

शचि, शची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] इन्द्र की पत्नी, इंद्राणी जो दानवराज पुलोमा की कन्या थी ।

पर्या०—सची । ऐंद्री । पुनोमजा । माहेद्री । जयवाहिनी ।

२. सतावर । शतावरी । शतमूली । ३ स्पृक्का । असवरण । ४ वक्तृत्व शक्ति । गरिमता । ५ प्रज्ञा । बुद्धि । शक्ल । ६. बल । शक्ति [को०] । ७ क्षिप्रकामिता । क्रियात्मकता [को०] । ८. भक्ति । प्रीति [को०] । ९ पवित्र क्रिया [को०] ।

शचीतीर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [म०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

शचीपति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शची के पति, इन्द्र ।

शचीपती—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अश्विनोक्कमार ।

शचीवल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] नाटक में वह पात्र जो इन्द्र के समान वेश-भूषा धारण करता हो ।

शचीभर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [म० शचीभर्त] शची के पति, इन्द्र [को०] ।

शचीश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शची के पति, इन्द्र ।

शजर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] दरख । वृक्ष । पेड़ ।

शजरा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शज ह्, शज्जह] १ वह कागज जिसमें किसी की वशपरंपरा लिखी हो । वशवृत्त । पुषतनामा । कुर्सीनामा । वशावली । २ वृक्ष । पौधा । ३ पटवारी का तैयार हुआ खेतों का नक्शा ।

शट^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ खटाई । अम्न रस । ३. एक प्राचीन देश का नाम ।

शट^२—वि० [सं०] अम्ल । खट्टा [को०] ।

शटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ जटा । २ शेर की गर्दन का वाल । सटा । केसर (को०) ।

शटि, शटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कचूर । कचूर । २ गधपलाशी । कपूरकचरी । ३ अमिगा हृदी । आम्रहरिद्रा । आम्रा हलदी । ४ सुगंधवाला । नेत्रवाला ।

शटुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] धी और पानी में सना हुआ चावल का आटा जिसका व्यवहार वैद्यक में होता है ।

शठ'—वि० [सं०] १ घूर्त । चालाक । धोखेवाज । २ पाजी । लुन्वा । बदमाश ।

शठ^२—सञ्ज्ञा पुं० १ तगर का फूल । २ केसर । कुंकुम । जाफरान । ३ लोहा । ४ इस्पात । फोलाद । ५ धतूरे का वृक्ष । ६ चीता चित्रक । चितउर । ७ ताम्रवृक्ष । ८ अमला का वृक्ष । ९ साहित्य में पाँच प्रकार के पतियो या नायको में से एक प्रकार का पति या नायक । वह नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर और किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का बहाना करता हो । उ०—सहित काज मधुरै मधुर, वननि कहै बनाय । उर अतर घट कपटमय, सो शठ नायक आय । —(शब्द०) । १० छलिया वा घूर्त जन (को०) । ११ वेवकूक । जडबुद्धि । १२ आलसी । १३ वह जो दो आदमियों के बीच में पड़कर उनके झगड़े का निपटारा करता हो । मध्यस्थ ।

यौ०—शठघी, शठबुद्धि, शठमति = जिसकी बुद्धि शठतापूर्ण हो । शठ या दुष्ट व्यक्ति । घूर्त आदमी ।

शठता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ शठ का भाव या धर्म । घूर्तता । २. बदमाशी । पाजीपन ।

शठत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शठ का भाव या धर्म । शठता ।

शठागा, शठान्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शठाङ्गा, शठान्वा] ब्राह्मणी लता । अंबुषा । पाढा ।

शठावा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शठाम्बा] अंबुषा । पाढा (को०) ।

शठिका, शठी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ कचूर । २ गधपलाशी । कपूरकचरी । ३ वन अदरक । पेठ ।

शठीरूपा - सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कद गिलोय । कद गुडूची ।

शठोदरक—वि० [सं०] शठोदरक] अत में धोखा देनेवाला । धोखेवाज । घूर्त ।

शडाप—सञ्ज्ञा पुं० [पनुव्व०] कोड़े, चाबुक आदि के मारने से होनेवाली ध्वनि ।

मुहा०—शडाप शडाप कोड़े जमाना = तेजी से कोड़ा मारना । उ०—और आदमी इधर उधर से शडाप शडाप से कोड़े जमाते जाते हैं ।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४ ।

शाणु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सन नामक पीवा । विशेष दे० 'सन' । २ भग । विजया । ३ शणपुष्पी । वनसनई ।

शाणुई—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शाण + हि० ईं दे० 'सन' ।

शाणुकद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शाणकद] चर्मकपा नाम का सुगंधि द्रव्य ।

शाणुकदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शाणकदा] एक प्रकार का झूड़ जिसे सातला कहते हैं ।

शाणुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम । सनम ।

शाणुघटा, शाणुघटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शाणघटा, शाणघटिका] शाणपुष्पी नाम की लता । विशेष दे० 'शाणपुष्पी' ।

शाणुचूर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सनई का वह बचा हुआ भाग जो उसे कूट कर सन निकाल लेने के बाद रह जाता ।

शाणुतातव—वि० [सं०] शाणुतातव] [वि० स्त्री०] शाणुतातरी] सन के रेशे का बना हुआ (को०) ।

शाणुपट्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सन का बना हुआ वस्त्र वा पट्ट (को०) ।

शाणुपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पटमन । अशनपर्णी (को०) ।

शाणुपुष्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शाणपुष्पी' ।

शाणपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वनस्पति जो नावारणत वनसनई कहलाती है ।

विशेष—यह छोटी और बड़ी दो प्रकार की होती है । छोटी शाणपुष्पी प्रायः सब प्रातों में पाई जाती है । इसका क्षुप, पत्ते, फूल इत्यादि सन के ही समान होते हैं, किन्तु क्षुप सन से छोटा होता है । इसके फूल पीले, फलियाँ मटर के समान गोल और लंबी होती हैं । यह कड़वी, वमनकारक और पारे को बाँधनेवाली कही गई है । इसके फल सूख जाने पर अदर के बीजों के कारण भ्रन भ्रन शब्द करते हैं, इसी से इसे भ्रनभ्रनियाँ कहते हैं । बड़ी शाणपुष्पी प्रायः वाटिकाओं में लगाने हैं । इसका क्षुप, पत्ते आदि छोटी शाणपुष्पी से बड़े होते हैं और फूल सफेद रंग के होते हैं । यह कसैली, गरम और पारे को बाँधनेवाली कही गई है और मोहन, स्तभन आदि में व्यवहार की जाती है ।

१ अरहर । आढकी । रहर ।

शाणुशिफा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सनई या सन की जड़ । शाणमूल ।

शाणसमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वनसनई । शाणपुष्पी ।

शाणसूत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुश आदि की बनी हुई पवित्री जो आद, तर्पण आदि कृत्यों के समय कनिष्ठिका की बगलवाली उँगली में पहनी जाती है । पवित्रक । पवित्री । पैंती ।

शाणाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शाणालुक' ।

शाणालुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अमलतास का वृक्ष ।

शाणिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शाणपुष्पी । वनसनई ।

शापीर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सोन नदी के मध्य का उपजाऊ स्थल । २ सरयू नदी की शाखाओं से घिरा हुआ छपरे के समीप का एक द्वीप । दर्दरी तट ।

शत'—वि० [सं०] दस का दस गुना । सौ ।

शत^२—सञ्ज्ञा पुं० १ सौ की सरग । दस की दस गुनी सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०० । २ कोई बड़ी सख्या । जैसे, शतपत्र ।

शतक'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह । २. एक ही तरह की सौ चीजों का समूह । जैसे,—नीतिशतक, रहस्य

शतक^१ । ३ वह जिसमें सौ भाग या अवयव हो । ४ सौ वर्षों का समूह । शताब्दी । ५ विष्णु का एक नाम ।

शतक^२—वि० १ सौ । दस का दस गुना । २ जिसमें सौ का समावेश हो । सौ की सख्या से संबद्ध [को०] ।

शतकपालेश—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव की एक मूर्ति का नाम ।

शतकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० शतकर्मन्] शनि ग्रह ।

शतकिरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि ।

शतकीर्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] जैन पुगणानुसार एक भावी अर्हत् का नाम ।

शतकुत, शतकुन्द—सञ्ज्ञा पु० [स० शतकुन्त, शतकुन्द] सफेद कनेर । करवीर ।

शतकुम्भ—सञ्ज्ञा पु० [स० शतकुम्भ] १ एक प्राचीन पर्वत का नाम । २ सफेद कनेर । शतकुत । ३ सुवर्ण । सोना ।

शतकुम्भा—पञ्चा स्त्री० [स० शतकुम्भा] महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम ।

शतकुलीरक—सञ्ज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा ।

शतकुसुमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शतपुष्पा । सौंफ ।

शतकेसर—सञ्ज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार एक वर्षपर्वत का नाम ।

शतकोटि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सौ करोड़ की सख्या । अबुद । २. इद्र का वज्र । ३ हीरा । हीरक ।

शतकौम्भ, शतकौम्भक—सञ्ज्ञा पु० [शतकौम्भ, शतकौम्भक] स्वर्ण । सोना ।

शतक्रतु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इद्र । २ वह जिसने सौ यज्ञ किए हो ।

शतक्रतुद्रुम—सञ्ज्ञा पु० [स०] काली कुड़ा । कृष्ण कुटज ।

शतकातुयव—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुटज । बीज इद्रजी ।

शतखड—सञ्ज्ञा पु० [स० शतखण्ड] १ सोना । स्वर्ण । २ सोने की बनी हुई कोई चीज । ३. सौ भाग । सौ टुकड़ा ।

शतगु—वि० [स०] मनु के अनुसार सौ गौप्रो का स्वामी । सौ गायों का रखनेवाला ।

शतगुण, शतगुणित—वि० [स०] सौगुना ।

शतग्रथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शतग्रन्थि] १ सफेद दूब । दूर्वा । २ नीली दूब ।

शतग्रीव—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक प्रकार की भूतयोनि ।

शतघ्न—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०] ।

शतघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र ।

विशेष—किसी बड़े पत्थर या लकड़ी के कुँदे में बहुत से कीलकाँटे ठोककर यह शस्त्र बनाया जाता था और इसका व्यवहार युद्ध के स० ४० ६-४३

समय शत्रुप्रो पर फेंकने में होता था । लोग इसे तोप या गकैट जैसा शस्त्र कहते हैं जिसमें सैकड़ों व्यक्ति मारे जा सकते थे ।

२ वृषिकाली । निछाती । ३. एक प्रकार की घास । ४. करंज या कजे का पेड़ । ५ भावप्रकाश के अनुसार गले में होनेवाला एक प्रकार का रोग ।

विशेष—इसमें त्रिदोष के कारण गले में वस्ती के समान लज्जी और मोटी तथा कठ को रोकनेवाली, मांस के अंकुरों से भरी हुई और बहुत पीड़ा देनेवाली मूजन हो जाती है । यह रोग पाणनाशक कहा गया है ।

शतचद्र—सञ्ज्ञा पु० [स० शतचन्द्र] महाभारत के अनुसार वह तलवार या चर्म (ढाल) जिसपर चद्रमा के समान चमकते हुए आकार बने हो [को०] ।

यौ०—शतचद्रवर्त्म = (१) तलवार चलाने की एक विधि या पद्धति । (२) तलवार की बार ।

शतचरणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कनखजूरा । गोजर । शतपरी [को०] ।

शतच्छद—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कठफोडवा या काठ ठोका नामक पत्ती ।

२ सौ पत्तों या पखडियोंवाला कमल । शतदल पद्म ।

शतजटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सतावर । शतमूली ।

शतजित्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु का एक नाम । २ भागवत के अनुसार विराज के एक पुत्र का नाम । ३ एक यज्ञ का नाम ।

शतजिह्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।

शततम—वि० [स०] [वि० स्त्री० शततम] सौवाँ । सौ की सख्या पर पड़नेवाला [को०] ।

शततारका, शततारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शतभिषा नाम का नक्षत्र जिसमें सौ तारे हैं । विशेष दे० 'शतभिषा' ।

शतदतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शतदन्तिका] नखी नामक गवद्रव्य । हाथी-शुडी । नागदती ।

शतदल—सञ्ज्ञा पु० [स०] पद्म । शनपत्र ।

शतदला—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] सेवती । शनपत्री ।

शतद्रु—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पजाव की सतनज नाम की नदी ।

विशेष—यह नदी हिमालय पर्वत के दक्षिण पश्चिमी भाग में बहती हुई व्यास या विपासा से मिलकर मुस्तान के दक्षिण ओर सिंधु में मिलती है ।

२. गंगा नदी का एक नाम [को०] ।

शतधन्वा—सञ्ज्ञा पु० [स० शतधन्वन्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

२ एक योद्धा जिसे कृष्ण ने सत्राजित के मारने के आराध में मारा था ।

शतधा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दूध । दूर्वा ।

शतधा—क्रि० वि० [स०] सौ टुकड़ों में । सौ पत्तों में । सौ प्रकार से । सैकड़ों बार । ३०—मूर्त प्रेरणा सौ लहराती नभ में शतधा विद्युत् ।—प्रतिमा, पृ० १६६ ।

शतधामा—सञ्ज्ञा पु० [स० शतधामन्] विष्णु का एक नाम ।

शतधारः—सङ्ख्या पुं [सं०] वज्र ।

शतधारः—वि० सैकड़ों धाराओं में प्रवहमान । २ जिसमें सौ कोण वा धाराएँ हो [को०] ।

शतधार वन—सङ्ख्या पुं [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

शतधृति—सङ्ख्या पुं [सं०] १ इन्द्र । २. ब्रह्मा । ३. स्वर्ग ।

शतधौत—वि० [सं०] सैकड़ों बार धोया हुआ । पूर्णतः स्वच्छ [को०] ।

शतनेत्रिका—सङ्ख्या स्त्री [सं०] शतावर ।

शतपति—सङ्ख्या पुं [सं०] सौ मनुष्यों का मालिक या सरदार ।

शतपत्रः—वि० [सं०] १ सौ दलों या पत्तोंवाला । २ सौ पक्षोंवाला ।

शतपत्रः—सङ्ख्या पुं १ कमल । २ सेवती । शतपत्री । ३ मोर नामक पक्षी । ४ कठफोड़वा नामक पक्षी । ५ सारस पक्षी । ६ मैना । शाकिा । ७ वृद्धस्पति । ८ सोता या सोते की जाति का एक पक्षी (को०) ।

शतपत्रक—सङ्ख्या पुं [सं०] १. कठफोड़वा नाम का पक्षी । २ एक प्रकार का विप्लवा कीड़ा । ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शतपत्रनिवास—सङ्ख्या पुं [सं०] ब्रह्मा ।

शतपत्रभेदन्याय—सङ्ख्या पुं [सं०] दे० 'न्याय'—४ (६७) ।

शतपत्रयोनि—सङ्ख्या पुं [सं०] ब्रह्मा ।

शतपत्रा—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ दूब । दूर्वा । २. नारी । स्त्री (को०) ।

शतपत्रिक, शतपत्री—सङ्ख्या स्त्री [सं०] एक प्रकार का गुलाब । श्वेत गुलाब ।

शतपत्री केसर—सङ्ख्या पुं [सं०] गुलाब का जीरा । गुलाबकेसर ।

शतपथ—वि० [सं०] १. असंख्य मार्गोंवाला । २ बहुत सी शाखाओंवाला ।

शतपथ ब्राह्मण—सङ्ख्या पुं [सं०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ।

विशेष—इसके कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं । इसकी माध्यमिन् और काण्व शाखाएँ मिलती हैं । इनमें से पहली की विशेष प्रतिष्ठा है । एक प्रणाली के अनुसार इसमें ६८ प्रपाठक हैं, और दूसरी के अनुसार यह १५ कांडों और १०० अध्यायों में विभक्त है । चार्गे ब्राह्मणों में से यह अधिक क्रमपूर्ण और रोचक है । इसमें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यंत कर्मकांड का बड़ा ही विशद और सुंदर वर्णन है ।

शतपथिक—वि० [सं०] १ बहुत में मतों का अनुगामी । २ शतपथ ब्राह्मण का जानने या पढ़नेवाला ।

शतपद् वि० [सं०] सैकड़ों पैरोंवाला [को०] ।

शतपद्—सङ्ख्या पुं [सं०] १ कनखजुरा, गोजर । २ चूँटी ।

शतपद् चक्र—सङ्ख्या पुं [सं०] ज्योतिष में सौ कोष्ठोंवाला एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से नक्षत्रों का ज्ञान सुगमतापूर्वक हो जाता है ।

शतपदी—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १. कनखजुरा । गोजर । २ सतावर । शतमूली । ३. मरसे की जाति का एक पौधा जिसके ऊपर

कैलंगी के आकार के नाल फूल लगने हैं । जटाघर । ४. नीली क्रोयल नाम की लता ।

शतपद्म सङ्ख्या पुं [सं०] १ सफेद कमल । श्वेतकमल । २ सौ पखुंडेय वाला कमल [को०] ।

शतपरिवार सङ्ख्या पुं [सं०] समाधि का एक भेद ।

शतपर्वः—सङ्ख्या पुं [सं०] शतपर्वन् १ वाँस । वण । २ पौंडा । गन्ना । केतारा ।

शतपर्वी—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ दूर्वा घास । दूब । २ वृक्ष । ३ कुटकी । ४ मुग्घिद्रव्य । ५ भार्गव की पत्नी का नाम । ६ कलवा । करमू का साग । ७ वधार या आश्विन की पूर्णिमा । कोजागर पूर्णिमा (को०) ।

शतपर्विका—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ दूब । २ दक्ष । ३ यव । जी ।

शतपर्वेश—सङ्ख्या पुं [सं०] भार्गव या शुक ग्रह [को०] ।

शतपाद्—वि० [सं०] सैकड़ों पैरोंवाला । जिसे सैकड़ा पैर हो [को०] ।

शदपाद—सङ्ख्या पुं [सं०] दे० 'शतपद' ।

शतपादिका—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ काकोली नामक अष्टवर्गिय ओषधि । २ कनखजुरा । गोजर ।

शतपादी—सङ्ख्या स्त्री [सं०] दे० 'शतपादिका' [को०] ।

शतपाल—सङ्ख्या पुं [सं०] सौ गाँवों का अध्यक्ष वा अधिकारी [को०] ।

शतपुत्रिका, शतपुत्री—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ सप्तपुत्रिया । तरौई । २ सतावर । शतावरी ।

शतपुष्प—सङ्ख्या पुं [सं०] १. साठो घाँस । २ किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता संस्कृत कवि 'भारवि' का एक नाम । इनका शतलु पक और शतलु नाम भा प्राप्त होता है (को०) ।

शतपुष्पा—सङ्ख्या स्त्री [सं०] १ मोआ नाम का माग । २ सोफ । ३ गवैधुक ।

शतपुष्पादल—सङ्ख्या पुं [सं०] १ सोंफ का साग । शताह्व ।

शतपुष्पिका—सङ्ख्या स्त्री [सं०] दे० 'शतपुष्पा' ।

शतपोद, शतपोदक—सङ्ख्या पुं [सं०] १ एक प्रकार का वातजन्य भगदर ।

विशेष—इसमें गुदा के समीप फाड़ा उत्पन्न होता है जिसके पकने पर बहुत से छेद हो जाते हैं और उनमें से मल, मूत्र, वीर्य निकलता है ।

२. एक प्रकार का रोग जिसमें वात और रक्त के कुपित होने से लिंग पर अनेक छेद हो जाते हैं ।

शतपोन—सङ्ख्या पुं [सं०] चलनी । छनना [को०] ।

शतपोरक, शतपौर—सङ्ख्या पुं [सं०] 'पौंडा । गन्ना ।

शतप्रसूना—सङ्ख्या स्त्री [सं०] दे० 'शतपुष्पा' ।

शतप्रास—सङ्ख्या पुं [सं०] कनेर का वृक्ष । करवीर वृक्ष ।

शतफल—सङ्ख्या पुं [सं०] वाँस ।

शतफली—सङ्ख्या पुं [सं०] शतफलन् वाँस । शतफन [को०] ।

शतवला—सङ्ख्या स्त्री [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम ।

शतबलाक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम ।

शतबलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. मछली । २. रामायण के अनुसार एक बदर का नाम ।

शतबाहु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा । २. भागवत के अनुसार एक रुपुर का नाम । ३. बौद्धों के अनुसार मार के पुत्र का नाम ।

शतभिष—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शतभिषा' ।

शतभिषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अश्विनी आदि मत्तादय नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र ।

विशेष—यह सौ तारों का समूह है और इसकी आकृति मडलाकार है । इसके अधिष्ठाता देवता वरुण कहे गए हैं, और यह ऊर्ध्वमुख माना गया है । कहते हैं, जो बालक इस नक्षत्र में जन्म लेता है, वह साहसी, निष्ठुर, चतुर और अपने वरी का नाश करनेवाला होता है ।

शतभीरु—सञ्ज्ञा पु० [स०] मल्लिका । चमेनी ।

शतमख—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. इद्र । शतक्रतु । २. उल्लू । कौशिक ।

शतमन्यु—वि० [स०] १. क्रोधी । गुस्मावर । २. उत्साही ।

शतमन्यु—सञ्ज्ञा पु० १. इद्र । २. उल्लू ।

शतमयूख—सञ्ज्ञा पु० [स०] चद्रमा ।

शतमल्ल—सञ्ज्ञा पु० [स०] सखिया नामक विष ।

शतमान—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सुवर्ण की कोई वस्तु जो तीन में सौ मान की हो । २. सोना या चाँदी तौलने के लिये सौ मान की तौल या बाट । ३. चाँदी का एक पल । ४. आढक नाम की प्राचीन काल की तौल जो प्रायः पीने चार सेर की होती थी । ५. रुपामाखी या तारमाखिक नाम की उपधातु ।

शतमार्ज—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो अस्त्र आदि बनाता या उन्हें ठीक करता हो ।

शतमुख^१—वि० [स०] जिसमें सैकड़ों मार्ग हो । सैकड़ों मुख या निकास रखनेवाला [को०] ।

शतमुख^२—क्रि० वि० [स०] सौ खंडों या धाराओं में । अनेक ओर से । चारों ओर से । उ०—ताम्रपर्ण पोपल से, शतमुख भरते चंचल स्वस्तिम निर्भर —ग्राम्या, पृ० ६३ ।

शतमुखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] क्लृप्तिका । मार्जना । भाडू [को०] ।

शतमूर्धा—सञ्ज्ञा पु० [स०] शतमूर्धनृ । विमोह । बाँवो [को०] ।

शतमूला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. बड़ी सतावर । २. बच । ३. नीली दूर्वा । नीली दूब ।

शतमूलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. आखुपर्णी नाम की लता । २. बड़ी दती । बंगरेडा ।

शतमूली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. शतावरी नाम की ओषधि । २. तालमूली । मूसला । ३. बच ।

शतयज्वा—सञ्ज्ञा पु० [स०] शतयज्वन् । शतक्रतु । इद्र [को०] ।

शतयष्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह हार जिसमें सौ लड़ हो ।

शतयातु—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम ।

शतरज—सञ्ज्ञा पु० [फा०, मि० स०] चतुरङ्ग एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौमठ खानों की विसात पर खेला जाता है ।

विशेष—यह खेल दो आदमी खेलते हैं जिनमें से प्रत्येक के पास १६-१६ मुहरे होते हैं । इन सोलह मुहरों में एक बादशाह, एक वजीर, दो ऊँट, दो घोड़े, दो हाथी या शिश्तया तथा आठ प्यादे होते हैं । इनमें से प्रत्येक मुहरे का कुछ विशिष्ट चाल होती है, अर्थात् उसके चलने के कुछ विशिष्ट नियम होते हैं । उन्हीं नियमों के अनुसार विपक्ष का मुहर मार जाते हैं । जब बादशाह किसी ऐसे घर में पहुँच जाता है जहाँ से उसके चलने की जगह नहीं रहती, तब बाजा मार समझी जाती है । इसको विसात में आठ आठ खानों की आठ पंक्तियाँ होती हैं । विशेष दे० 'चतुरंग' शब्द ।

शतरजवाज—सञ्ज्ञा पु० [फा० शतरज + वाज] शतरज का खिलाड़ी । शातर ।

शतरजवाजी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शतरज + वाजी] १. शतरज खेलने का व्यवसाय । २. शतरज खेलने का काम या भाव ।

शतरजी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] वह दरी जो शतरज की विसात की तरह कई प्रकार के रंग बिरंग सूतों से बनी हो । २. शतरज खेलने की विधा । ३. वह रोटों जो कई प्रकार के अनाजों को मिलाकर बनाई गई हो । मिस्सा रोटो । ४. वह जो शतरज का अच्छा खिलाड़ी हो ।

शतरथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक राजा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

शतरात्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का यज्ञ जो सौ रातों में समाप्त होता था ।

शतरुद्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुँह माने जाते हैं । २. शैव दर्शन के अनुसार एक शक्ति जो आत्मा की उत्पादक कही गई है ।

शतरुद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हिमालय की एक नदी का नाम ।

शतरुद्रिय, शतरुद्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. यज्ञ की हवि । २. यजुर्वेद का एक अण जिसमें रुद्र के स्तोत्र हैं । ३. महाभारत में वर्णित शिव को एक स्तुति [को०] ।

शतरूप—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शतरूपा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मा का मानसा कन्या तथा पत्नी का नाम ।

विशेष—इसी के गर्भ से स्वयंभुव मनु का उत्पाद हुआ था । पर विश्वगुप्तराज ने लिखा कि शतरूप स्वयंभुव मनु का स्त्रा थी, न कि माता ।

शतर्चि—सञ्ज्ञा पु० [स०] शतर्चिन् । ऋग्वेद के प्रथम मंडल के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की उपाधि ।

शतलुपक—सञ्ज्ञा पु० [म०] शतलुम्पक । भारवि का एक नाम ।

शतलुप—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शतलुपक' ।

शतलोचन'—वि० [स०] सौ नेत्रोंवाला ।

शतलोचन'—संज्ञा पुं० १ स्कन्द के एक गण या अनुचर का नाम ।
२ पुराणानुसार एक असुर का नाम । ३ महाभारत के अनुभार
इन्द्र का एक नाम (को०) ।

शतवनि—संज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शतवर्ष—संज्ञा पुं० [स०] १ सौ वर्ष । एक शताब्दी । २ वह जो
सौ वर्ष पुराना हो । ३ वह जो सौ वर्ष तक चिकित्सक रहे । सौ
वर्ष तक रहनेवाला (को०) ।

शतवल्ली—संज्ञा स्त्री० [स०] १ नीली दूध । २ काकोली नामक
अष्टवर्गीय ओषधि ।

शतवादन—संज्ञा पुं० [स०] बहुत स बाजों का एक साथ बजना ।

शतवार—संज्ञा पुं० [स०] एक कवच का नाम जो अथर्ववेद में है ।

शतवार्षिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शतवार्षिकी] १ प्रति सौ वर्ष पर
हानेवाला । २ सौ वर्ष तक रहने या हानेवाला ।

शतवार्षिकी—संज्ञा स्त्री० [स०] १. पानों न बरसना । अनावृष्टि ।
२ वह उत्सव जो सौ वर्ष बोलने पर मनाया जाय (को०) ।

शतवाही—संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो मैके से बहुत सा धन साथ
लेकर समुराल छाई हो ।

शतविध—वि० [स०] सौ या अनन्त प्रकार का । उ०—शकर, जय
कृष्ण, राम, शतविध नामानुबध, वावव हे निराकार ।—
आराधना, पृ० ६७ ।

शतवीर—संज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम ।

शतवीर्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १. सफेद दूध । सतावर । शतमूली ।
३ मुनक्का । कपिलद्राक्षा । ४ सफेद मूसली । ५ किसमिश ।

शतवृषभ—संज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष में एक मुहूर्त का नाम ।

शतवेधिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] चूका या चुक्रिका नामक साग ।

शतवेधी—संज्ञा पुं० [स० शतवेधिन्] १. अमलवैत । २ चूका या
चुक्रिका नामक साग ।

शतश.—क्रि० वि० [स० शतशस्] १ सैकड़ों । २ सौ बार । ३.
वैविध्यपूर्ण । अनेकानेक । उ०—अधिकत बाधता वह ध्यान
था । अजविभूषण हं शतश बने ।—प्रिय प्र०, पृ० १६३ ।

शतशत—वि० [स० शत का द्वित्व प्रयोग] सैकड़ों । अनन्त । उ०—
जग के सर से सरस्वता शतशत रूपों की निकला क्षिप्र, मद,
गाँत रको की, भूषों की ।—अपरा, पृ० १६४ ।

शतशलाका—संज्ञा स्त्री० [स०] छत्र ।

शतशाख—वि० [स०] १ सैकड़ों । २ शताधिक । जिसमें सैकड़ों शाखाएँ
हो । ३. अनेक प्रकार का । वैविध्यपूर्ण (को०) ।

शतशीर्ष—संज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु का एक नाम । २ रामायण के
अनुसार एक प्रकार का अभिमन्त्रित अस्त्र ।

शतशीर्षा—संज्ञा स्त्री० [स०] वासुकी देवी का एक नाम ।

शतशृंग—संज्ञा पुं० [स० शतशृङ्ग] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

विशेष—यह पर्वत महाभद्र के उत्तर में अवस्थित बतलाया गया
है । अनुमान है कि यह वर्तमान मैसूर राज्य के एक पर्वत का
प्राचीन नाम है ।

शतसख्य—संज्ञा पुं० [स० शतसदृश्य] विष्णुपुराण के अनुसार दमवें
मन्वन्तर के एक देवता का नाम ।

शतसहस्र—संज्ञा पुं० [स०] १ सौ हजार की संख्या । एक लाख की
संख्या । २ कई सौ का संख्या अर्थात् एक बड़ी संख्या (को०) ।

शतसहस्रक—संज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन
तार्थ का नाम ।

शतसाहस्र—वि० [स०] [वि० स्त्री० शतसाहस्री] १ सौ हजार से युक्त
वा सौ हजार गवधों । २ सौ हजार अर्थात् एक लाख मूल्य
द्वारा क्रीत वा प्राप्त (को०) ।

शतसुख—संज्ञा पुं० [स०] अतर्हीन आनन्द । अनन्त सुख (को०) ।

शतसुता—संज्ञा स्त्री० [स०] सतावर । शतमूली ।

शतहृद—संज्ञा पुं० [स०] हरिवंश के अनुसार एक असुर का नाम ।

शतहृदा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ बघुत् । विजली । २ वज्र । ३.
दक्ष का एक कन्या का नाम जो बृहस्पति का स्नेहा था । ४
। वराह राक्षस का माता का नाम ।

शताग—संज्ञा पुं० [स० शताङ्ग] १ रथ । युद्ध का रथ । २
तानश । तारख वृक्ष । ३. हारवश के अनुसार एक दानव का
नाम (को०) ।

शताग—वि० सौ अंगों या अवयवोंवाला ।

शतागुल—संज्ञा पुं० [स० शताङ्गुल] १. ताल या ताड़ का बुट्टा । २
वह जो माप में सौ अंगुल हो ।

शताश—संज्ञा पुं० [स०] सौ भाग में से एक भाग । १००वाँ हिस्सा ।

शता—संज्ञा स्त्री० [स०] सत वर ।

शताकरा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक कनरा का नाम ।

शताकारा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक गवध का स्त्रा का नाम ।

शताक्ष—संज्ञा पुं० [स०] हारवश के अनुसार एक दानव का नाम ।

शताक्षी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा । रात । २ शतपुष्पा नामक
वनस्पति । लोफ । ३. पावता । ४ दुगा ।

शतानन्द—संज्ञा पुं० [स० शतानन्द] १ ब्रह्मा । २. विष्णु । ३ विष्णु
का रथ । ४ कृष्ण । ५. गतिम मुनि । ६ राजा जनक के एक
पुराहित का नाम । उ०—शतानन्द तब बाद प्रभु बैठ गुरु
पह जाय ।—तुलसा (शब्द०) ।

शतानदा—संज्ञा स्त्री० [स० शतानन्दा] १. कार्तिक्य का एक मातृका
का नाम । २. पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

शतानक—संज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ भुरद जलाए जाते हो ।
मसान । मयसान । मरधत ।

शतानन—संज्ञा पुं० [स०] बेल । शीफल ।

शतानना—संज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम ।

शतानीक—संज्ञा पुं० [स०] १ वृद्ध पुरुष । बुढ़ा आदमी । २. एक
मुनि का नाम जो व्यास के शिष्य थे । ३. श्वसुर । ससुर । ४.

पुराणानुसार चौथे युग में चंद्रवश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ५ भागवत के अनुसार सुदास २ का पुत्र। ६. महाभारत के अनुसार नकुल के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। एक असुर का नाम। ८ सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्दी^१—वि० [सं०] सौ वर्षवाला।

शताब्दी^२—संज्ञा पुं० सौ वर्ष। शताब्दी। सदी।

शताब्दी^३—संज्ञा स्त्री० [मं०] १ सौ वर्षों का समय। २ किसी सवत् में सैकड़ों के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय। जैसे,—ईसवी पाँचवीं शताब्दी अर्थात् ई० सन् ४०१ से ५०० तक का समय।

शतामघ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का एक नाम।

शतायु—संज्ञा पुं० [सं० शतायुस्] १ वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो। सौ वर्षों तक जीवित रहनेवाला। २ महाभारत के अनुसार पुरुरवा के एक पुत्र का नाम। ३ विष्णुपुराण के अनुसार उशना के एक पुत्र का नाम।

शतायुध—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रवाला।

शतायुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक किन्नरी का नाम।

शतार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वज्र। २ सुदर्शन चक्र।

शतारु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कोठ।

विशेष—इस रोग में खाल पर लाल, काली और दाहयुक्त फुसियाँ हो जाती हैं।

शतारुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतार'।

शतावधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सौ बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

विशेष—कुछ मेधावी लोग ऐसे होते हैं जो एक साथ बहुत से काम करने का अभ्यास करते हैं। जैसे,—एक आदमी रह रहकर कुछ सख्या या अंकों का नाम लेता है। दूसरा आदमी रह रहकर घड़ियाल बजाता है। तीसरा आदमी किसी ऐसी भाषा के वाक्य के शब्द बोलता है जिससे शतावधान करनेवाला मनुष्य अपरिचित होता है। एक आदमी पूर्ति के लिये कोई समस्या देता है। एक आर शतरंज का खेल हाता रहता है। शतावधान का यह कर्तव्य होता है कि वह सख्यायाँ और अपरिचित भाषा के वाक्य के शब्द याद रख, समस्या का पूर्ति करे और शतरंज खेलता चले, और इसा प्रकार और जितने काम होते हो, उन सबमें समिलित, और अंत में सबका ठीक ठीक उतार दे और सब काम ठीक ठीक पूरे उतारे।

२. शतावधान का काम।

शतावधानी^१—संज्ञा पुं० [सं० शतावधानिन्] दे० 'शतावधान'।

शतावधानी^२—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावधान] शतावधान का काम।

शतावर—संज्ञा पुं० [सं० शतावरी] शतावर नाम की ओपवि। सफेद मूसली।

शतावरी^१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतमूली। सतावर। सफेद मूसली। २. कबूतर। शटा। ३. इद्र की भार्या, इद्राणा।

शतावर्त्त^१—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. महादेव। ३. हरिवंश के अनुसार एक पवित्र वन का नाम।

शतावर्त्ति^१—संज्ञा पुं० [सं० शतावर्त्तिन्] विष्णु।

शताशिन—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र।

शताह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौफ। २. सोआ। मधूरिका। ३. सतावर।

शताह्वा^१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौफ। २. सतावर। ३. अजपादा। ४ एक प्राचीन नदी का नाम। ५. एक तीर्थ का नाम।

शक्तिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शक्ति] १. सौ सबको। सौ का। २. सौ म क्रीत (को०)। ३. जिसमें या जिसके पास सौ हो। सौ वाला (को०)। ४ सौ के बदल में परिवर्तित हुआ या प्राप्त (को०)। ५ (राशि) जिमपर प्रतिशत व्याज या कर निर्धारित हो (को०)। ६. सौ या सौ का प्राप्ति का द्योतक (को०)।

शक्ती^१—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्तन्] सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे,—दुर्गासप्तशती। २. दे० 'शताब्दी'।

शक्ती^२—वि० १. सौ गुना। शतगुणित। २. सहातीत। असंख्य (को०)।

शक्ता^१—संज्ञा पुं० वह जो सौ का स्वामी हो। सौ का स्वामी (को०)।

शक्तेर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। २. बाव। जहम। ३. हिंसा।

शतोदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रामायण के अनुसार एक अस्त्र का नाम।

शतोदरी—संज्ञा स्त्री० [मं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शतौदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ में होनेवाला एक प्रकार का कृत्य।

शत्य—वि० [सं०] दे० 'शक्ति' (को०)।

शत्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ गज। हाथी। २. बल। ताकत। ३ एक राजपि का नाम।

शत्रुजय—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुजय] १. काठियावाड़ प्रांत का एक प्रासन्न पर्वत जो विमलाद्रि भा कहलाता है। यह जैनियों का एक प्रासन्न तीर्थ है। अगरतार। २. रामायण के अनुसार एक नाग (हाथी) का नाम। ३. परमेश्वर।

शत्रुजय—वि० शत्रुओं को जीतनेवाला।

शत्रुतप—वि० [सं० शत्रुतप] शत्रुओं को परास्त करने नष्ट करनेवाला (को०)।

शत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके साथ भारी विराव या वमनस्य हो। २. शत्रु। दुश्मन। २. एक असुर का नाम। ३. नाग-द्वन या मारछावा नाम का वनस्पात।

शत्रुकटक—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुकटक] पुगीफल। सुपारा।

शत्रुकटका—संज्ञा स्त्री० [सं० शत्रुकटका] सुपारा।

शत्रुक—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रि। शत्रु। शत्रु (को०)।

शत्रुकर्षण—वि० [सं०] दे० 'शत्रुदमन' (को०)।

शत्रुकुल—पद्या पु० [म०] वैरो का घर। शत्रु का निवासस्थान [को०]।
 शत्रुगृह—सद्या पु० [स०] ज्योतिष में लग्न से छठा स्थान [को०]।
 शत्रुघात—वि० [म०] शत्रुघाती। शत्रुहता [को०]।
 शत्रुघाती—पद्या पु० [म० शत्रुघातिन्] राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक पुत्र।

शत्रुघाती—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।
 शत्रुघ्न—सद्या पु० [म०] १ राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनका भरत के साथ वैसा ही प्रेम था जैसा लक्ष्मण का राम के साथ। २ श्वफल्क का एक पुत्र। ३ देवश्रवा के एक पुत्र का नाम।

शत्रुघ्न—वि० शत्रु को मारनेवाला। अरि को नष्ट करनेवाला।
 शत्रुघ्नी—सद्या स्त्री [म०] हथियार।
 शत्रुजित्—पद्या पु० [स०] १ शिव। २ क्रतुव्रज या कुवलयश्व के मित्र का नाम।

शत्रुजित्—वि० शत्रु को जीतनेवाला।
 शत्रुतपन—पद्या पु० [स०] १ शिव। २ एक दैत्य का नाम। कहते हैं, यह राग फैलाता है।

शत्रुता—सद्या स्त्री [स०] शत्रु का भाव या धर्म। दुश्मनी। वैर भाव।
 क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—रखना।—होना।

शत्रुताई—सद्या स्त्री [म० शत्रुता + हि० ई (प्रत्य०) या म० शत्रु + ताति (प्रत्य०) ?] दे० 'शत्रुता'।

शत्रुतापन—वि० [स०] शत्रुओं को जलानेवाला। शत्रुहता।
 शत्रुत्व—पद्या पु० [स०] शत्रु का भाव या धर्म। शत्रुता। दुश्मनी।
 शत्रुदमन—वि० [स०] दुश्मनों को वश में करनेवाला।
 शत्रुदमन—पद्या पु० दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।
 शत्रुद्रुम—सद्या पु० [स०] अमलवेत।
 शत्रुनिर्वहण—वि० [स०] शत्रुओं का नाश करनेवाला [को०]।
 शत्रुपक्ष—सद्या पु० [म०] १ शत्रु का दल या दिशा। २ दुश्मन। वैरी। विरोधी [को०]।

शत्रुभग—सद्या पु० [स० शत्रुभङ्ग] मूँज नामक वृक्ष।
 शत्रुभूमिज—सद्या पु० [स०] आँखों में लगाने का सुरमा।
 शत्रुमर्दन—सद्या पु० [म०] १ शत्रुघ्न का एक नाम। २ कुवलयश्व के पुत्र का नाम।

शत्रुमर्दन—वि० शत्रुओं का मर्दन या नाश करनेवाला।
 शत्रुलात्र—वि० [स०] शत्रुओं को मारनेवाला [को०]।
 शत्रुविग्रह—पद्या पु० [स०] शत्रु की चढ़ाई या आक्रमण [को०]।
 शत्रुवनाशन—सद्या पु० [स०] शिव का एक नाम।
 शत्रुशाल—वि० [स० शत्रु + शल्य] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला। उ०—नृप शत्रुशाल नदन नवल भावसिंह भूबाल मान।—मातराम (शब्द०)।

शत्रुसह, शत्रुसाह—वि० [म०] शत्रु से लड़ने या भिड़नेवाला। शत्रु का सामना करनेवाला [को०]।
 शत्रुसूदन—पद्या पु० [स०] शत्रुघ्न का एक नाम।
 शत्रुसेवी—वि० [स० शत्रुसेवन] शत्रु राजा की सेवा करनेवाला [को०]।
 शत्रुहता—वि० [स० शत्रुहृत्] शत्रु का नाश करनेवाला।
 शत्रुहत्या—सद्या स्त्री [स०] शत्रु का वध या हनन। दुश्मन को मार डालना [को०]।
 शत्रुहा—पद्या पु० [स० शत्रुहृन्] दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।
 शत्रुहा—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।
 शत्रुवरी—सद्या स्त्री [स०] रात्रि। रात।
 शद—पद्या पु० [स०] १. फन मूलादे। २. कर। महसूल। लगान। ३. तरकारी।
 शदक—सद्या पु० [स०] वह अनाज जिसकी भूसा न निकाली गई हो।
 शदीद—वि० [अ०] बहुत ज्यादाह। जार का। भारी। सख्त। जड़,—उसका चोट शदाद है।
 शदेवी—सद्या स्त्री [हि०] दे० 'सहदेवा'।
 शद्—पद्या पु० [स० शब्द, प्रा० सद, तुल० अ० शद, शद्] आवाज ध्वनि। शब्द। उ०—सन्मुख सारस शद्। आह जीवनों फामद्।—१० रासा०, पृ० ५८।
 शद्—पद्या पु० [अ०] १ किसी अक्षर को दुहराकर या दो बार पढ़ना। हठ करना। मजबूत करना। २ स्वर का ऊँचा करना। आवाज पर जोर देना। ३ स्वर का आरोहोहारी या उतार चढ़ाव [को०]।
 यो०—शद् व सद, शद्दोमद = (१) ध्रुमवाम। (२) जोर शोर। तेजी।
 शद्द—सद्या पु० [अ०] १ वह व्यक्ति जो बहुत अत्याचारी हो। २ एक प्राचीन शाक्तशाली सम्राट् जिमने ईश्वरत्व का दावा किया और खुद को ईश्वर कहलवाता था। इसी एक कृत्रिम स्वर्ग भी बनावाया था परन्तु उसमें प्रवेश करते समय घोड़े से गिरकर इसकी मृत्यु हो गई [को०]।
 शद्रि—सद्या पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ हाथी। ३. अर्जुन का का एक नाम [का०]।
 शद्रि—सद्या स्त्री [स०] १ खड्ग। टुकड़ा। २ विजली। दामिनी। तड़ित। सादामना। ३. घनाभूत शकरा। जमाई हुई चीनी। मिस्त्रा। खडमादक [का०]।
 शद्रु—वि० [स०] १ गिरानेवाला। नष्ट करनेवाला। पतन करनेवाला। २ जानेवाला। चलनेवाला। गातशाल [को०]।
 शद्रु—सद्या पु० [स०] १ वष्पु।
 शद्रुवला—सद्या स्त्री [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।
 शन—पद्या पु० [स०] १ शांति। २ चुप्पी। खामाशी। मौनता।
 शन—सद्या पु० [स० शण] दे० 'सन' (पीठा)।
 शनई—अव्य० [स० शनैः] दे० 'शनैः'।

शनई शनई—क्रि० वि० [स० शनैः शनैः] शनैः शनैः । धीरे धीरे ।

उ०—शनई शनई ताहि चढावै । चक्कर चक्कर मे पहुँचावै ।

—अष्टांग योग, पृ० ७६ ।

शनक—सखा पु० [स०] हरिवंश के अनुमार शबर के एक पुत्र का नाम ।

शनकावलि—सखा स्त्री० [स०] गजगीपल ।

शनपणी—सखा स्त्री० [स०] कटुकी नाम की ओषधि ।

शनपुष्पी—सखा स्त्री० [स०] वन सनई ।

शनवा—वि० [फा०] ओता । सुननेवाला [को०] ।

शनवाई—सखा स्त्री० [फा० शनवा + ई] सुनवाई [को०] ।

शनहली—सखा स्त्री० [स० शरापुष्पी] १. दे० 'शनपुष्पी' २ अरहर ।

शनाख्त—सखा स्त्री० [फा० शनाख्त] पद्मचान । परख । दे० 'शिनाख्त' ।

उ०—जो इनको आदमी की ही शनाख्त होती तो नुकस क्या था ।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ११८ ।

क्रि० प्र०—करना—पहचानना । परखना ।

शनावर—वि० [फा० शनावर, शिनावर] तैराक । तैरनेवाला [को०] ।

शनावर—सखा स्त्री० [फा० शनावरी, शिनावरी] तैराकी । तैरने का काम ।

शनास—वि० [फा० (प्रत्य०)] पहचाननेवाला । भले बुरे का विवेक करनेवाला । पारखी ।

विशेष—यह समास वा शब्द के अंत में आता है जैसे—मर्दुम-शनास, हकशनास । उ०—निहायत किसी ने कहा शाह पास, है यहाँ एक मेहराँ इसम हकशनास ।—दक्खिनी०, पृ० ३०० ।

शनासा—वि० [फा०] १ पहचाननेवाला । जानकार । २ परिचित । वाकिफ [को०] ।

शनासाई—सखा स्त्री० [फा०] जान पहचान । परिचय [को०] ।

शनि—सखा पु० [म०] १ सौर जगत् के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह । शनैश्चर ।

विशेष—सूर्य से इस ग्रह का अंतर ८८३,०००,००० मील अथवा पृथ्वी के अंतर से ६३ गुना है । इसका व्यास ७५८०० मील का है । प्रति सेकेंड ६ मील की चाल से सूर्य की परिक्रमा में इसको २९ वर्ष और १६७ दिन अर्थात् कुल १०७५९ दिन लगते हैं । इसका ताप १५° सें० है । वृहस्पति को छोड़कर यह सबसे बड़ा ग्रह है पृथ्वी से इसका व्यास ९ गुना, विस्तार ६६७ गुना और मान ९३ गुना है । इसके साथ नौ उपग्रह या चंद्रमा हैं । जिनमें एक उपग्रह 'टाइटन' बुध ग्रह से भी बड़ा है । वृहस्पति से छोटा होना पर भी यह सब ग्रहों से अधिक चमकदार है, जिससे इसका आकार सबसे बड़ा प्रतीत होता है । यह ३७८ दिन में एक बार अपनी धुरी पर घूमता है । यह ग्रह विचित्र आकार का है । इसके बाहर चारो ओर कम से कम ३ एककेंद्रीय बहुत बड़े वलय हैं, और उस बाह्य वलय से इसके पिंड की दूरी ५,६०० मील है । इसके बाह्य वलय की चौड़ाई ११,२०० मील है । उस वलय का व्यास १,७२,८०० मील और मोटाई सौ मील से कुछ कम है । इस ग्रह पर पृथ्वी जैसा जीवन संभव नहीं है ।

फलित ज्योतिष के अनुसार यह ग्रह काले रंग का, शुद्ध वर्ण और सूर्यमुख है तथा इसका वाहन श्वेत है । यह सौराष्ट्र

देश का स्वामी, नपुंसक (मदगामी) और तमोगुण से युक्त तथा कषाय रस का अधिपति है । यह मकर और कुमराशि तथा नीलकान्त मणि (नीलम) का भी अधिपति है । यह चतुर्भुज है और इसके हाथों में बाण, शूल, वनुष और भल्ल है । इसके अधिपति देवता यम और प्रत्यधिदेवता प्रजापति है । इसका परिमाण चार अंगुल है । पञ्चाराण के अनुसार सूर्य की स्त्री छाया के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी । अपनी स्त्री के नाप में इसको दृष्टि कूर हो गई और पार्वती के शाप के कारण यज्ञ खंज हो गया । इसे ऋषय मुनि की सतान भी मानते हैं । फलित के अनुसार शनि का फल इस प्रकार है यह पापग्रह और अशुभ फल का देनेवाला है, परंतु राशि और स्थानविशेष में शुभ फल भी प्रदान करता है । शनि और मंगल दोनों ग्रह स्थानविशेष पर एक साथ होने से राजयोग कारक होते हैं । यह भी माना जाता है कि लोगों पर जो भारी विपत्तियाँ आती हैं, वे प्रायः इसी की कुदृष्टि के कारण होती हैं । इसका फल साढ़े सात दिन, साढ़े सात मास या साढ़े सात वर्ष तक रहता है ।

पर्या०—सौर । शनिश्चर । नीलवास । मद । छायात्मज । पातंगि । ग्रहनायक । छायासुत । भास्करी । नीलाचर । आर । क्रोड । वक्र । कोल । सप्ताशु । पगु । काल । सुयपुत्र । असित । २ शिव का एक नाम (को०) । ३. दुर्भाग्य । अभाग्य । बद-किस्मती । ४. दे० 'शनिवार' ।

शनिचक्र—सखा पु० [म०] फलित ज्योतिष में मनुष्य के शरीर के आकार का एक प्रकार का चक्र ।

विशेष—इसमें शनिभोग्य नक्षत्र से आरंभ करके चक्ररूपी मनुष्य के भिन्न भिन्न अंगों में २७ नक्षत्रों की स्थापना करके शुभाशुभ फल जाने जाते हैं ।

शनिज—सखा पु० [म०] काली मिर्च ।

शनिप्रदोष—सखा पु० [स०] एक प्रकार का प्रदोष (पर्व) जो शनिवार के दिन किसी मास के वृष्णपक्ष की त्रयोदशी पड़ने पर होता है । इन दिन व्रत रहते हैं और शिव का पूजन किया जाता है ।

शनिप्रसू—सखा स्त्री० [स०] शनि की माता छाया जो सूर्य की पत्नी कही गई है ।

शनिप्रिय—सखा पु० [स०] नीलमणि । नीलकान्त मणि । नीलम ।

शनिरुह—सखा पु० [स०] १ शनिग्रह का वाहन । २ भैंसा । महिष ।

शनिरुहा—सखा स्त्री० [स०] भैंस । महिषी ।

शनिर्भावि—सखा पु० [म०] १ मदता । शिथिलता । २ क्रमवद्धता । क्रमिकता [को०] ।

शनिवार—सखा पु० [म०] वह वार जो रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद पड़ता है ।

शनिश्चर—सखा पु० [स० शनिश्चर] दे० 'शनि' ।

शनैः—अव्य० [स०] १ धीरे । आहिस्ता । होले । २. उत्तरोत्तर । ३. क्रमशः । क्रमानुसार (को०) । ४. धीमे धीमे । मृदुता या मुला-

यमित से (को०) । ५ शिथिलता से (को०) । ६ स्वतंत्र या स्वच्छंद रूप से (को०) ।

यौ०—शनैः शनैः = धीरे धीरे । आहिस्ते आहिस्ते ।

शनैः^२—सञ्ज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शनिवार' ।

शनैः प्रमेह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह रोग ।

विशेष—इस प्रमेह में रोगी को धीरे धीरे, थमकर और बहुत पतली वार में थोड़ा थोड़ा पेशाब आता है ।

शनैर्मैह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शनैः प्रमेह' ।

शनैर्मैही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शनैर्मैहिन] वह रोगी जिसे शनैः प्रमेह का रोग हो ।

शनैश्चर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शनि' ।

शनैश्चर^२—वि० धीरे धीरे गमन करनेवाला को० ।

शन्न—वि० [सं०] १ पतित । गिरा हुआ । २ परित्याग । छोड़ा । ३ मुरझाया हुआ । कुम्हलाया हुआ को० ।

शन्नाह—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] एक ढोरी में बँधी हुई दो तुलियाँ अथवा मशक जिसके सहारे तरना सीखते हैं को० ।

शप्—[सं०] पाणिनि द्वारा प्रयुक्त एक विकरण जो भ्वादि गण में प्रयुक्त होता है । धातुओं के बाद और तिङ्ग प्रत्ययों के पूर्व इसका प्रयोग होता है जिसका रूप 'अ' शेष रहता है । जैसे, $\sqrt{\text{भू}} + \text{शप्} + \text{ति} = \sqrt{\text{भू}} + \text{अ} + \text{ति} = \text{भवति}$ ।

शप्—अव्य० [सं०] स्वीकरणसूचक शब्द । स्वीकार को० ।

शप^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शाप । निर्भयता । २ शपथ । कसम को० ।

शप^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० अनुव्व०] १ बेल, छड़ी, चाबुक आदि के मारने की आवाज । २ कोई गाढ़ा और तंग पदार्थ तेजी से सुड़कते हुए निगलने की ध्वनि । ३ कुत्ते, बिल्ली आदि के द्वारा किसी वस्तु के चाटने की आवाज ।

शप^३—क्रि० वि० जल्दी से । ऋतपट । तुरत ।

यौ०—शपशप, शप से, शपाशप = शीघ्रतापूर्वक । जल्दी से ।

शपथ—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कथन जिसके अनुसार कहनेवाला इस बात की प्रतिज्ञा करता है कि यदि मेरा कथन असत्य हो, मैंने अमुक काम किया हो, मैं अमुक काम करूँ या न करूँ इत्यादि, तो मुझपर अमुक देवता का शाप पड़े अथवा मैं अमुक पाप का भागी होऊँ आदि । कसम । दिव्य । सौम्य । उ०—दुर्बलता का ही चिह्नविशेष शपथ है ।—साकेत, पृ० २२६ ।

क्रि० प्र०—खाना ।—देना ।—लेना ।

मुहा०—दे० 'कसम' शब्द के मुहा० ।

२ दिव्य । विशेष दे० 'दिव्य'—२१ । ३ अभिशाप । शाप को० ।

४ प्रतिज्ञा या दृढ़तापूर्वक कोई काम करने या न करने आदि के संबन्ध में कथन । काल । वचन ।

यौ०—शपथपथ = हलफनामा ।

शपन्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शपथ । कसम । २ गाली । कुवाच्य ।

शपशप शपाशप—सञ्ज्ञा स्त्री० [अनुव्व०] दे० 'शप^१' का योगिक ।

शपित—वि० [सं०] दे० 'शप्त' ।

शप्त^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ उलूक अथवा उन्मत्त नामक वृक्ष । २ वह व्यक्ति जिसे शाप दिया गया हो ।

शप्त^२—वि० १ शापग्रस्त । अभिज्ञत । २ भस्मिन् । जिनकी भर्त्सना की गई हो को० ।

शफ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष की जड़ । २ पशुओं का गुग्गुलु । ३ नखी नामक गन्धद्रव्य ।

शफक—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शफक] प्रातःकाल या मायकाल आकाश में दिखाई पड़नेवाली लज्जा, विशेषतः मन्था के समय दिखने पड़नेवाली तालिमा जो बहुत ही मनाहर होती है ।

उ०—चड़ा शाम का वाम पर गरजता माह । शफक का नया रंग लाई घटा ।—भारतेंदु प्र०, भा० २, पृ० ४६० ।

मुहा०—शफक फूटना = प्रातःकाल या मन्था के समय आकाश में तालिमा फैलना ।

शफकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शफकत] १. वृषा । दया । मेहग्वानी । २ प्यार । मुहूर्त । प्रेम । उ०—जो बात माने ता ऐन शफकत न माने तो ऐन हुस्ने तूरी ।—भारतेंदु प्र०, भा० २, पृ० ८५७ ।

क्रि० प्र०—खिलाना ।—रताना ।

शफगोल—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं०] हिं० 'इमवगोल' ।

शफतालू—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शफन ल] एक प्रकार का बड़ा आड़ू जिसे ससालुक या मतानू भी कहते हैं । विशेष दे० 'सनालू' ।

शफर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पोठी या पोठिया नाम की मछली । उ०—भरत मिहरे शफरवाँ समान ।—पाकेत, पृ० १७१ ।

शफराधिप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हिलना मछली ।

शफरी—सञ्ज्ञा सञ्ज्ञा [सं०] एक प्रकार की छोटी मछली । पोठी या पोठिया । उ०—शफरी, अरी, उता तू तहप रहो क्यों निमग्न भो इस सर मे ? जो रम निरगागर मे मा रम गोस नही स्वय सागर मे ।—साकेत पृ० २७८ ।

शफरुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सटूक । वक्त्र । २ पाँव । बरतन ।

शफह—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शफह] ओठ । ओठ । अवर को० ।

शफा—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शफा] शरीर का स्वस्थ होना । निरोगता । आरोग्यता । तदुद्देश्य । उ०—जो पीएगा दो दिन की बीमारी मे शफा पाएगा ।—पिजरे, पृ० ७६ ।

क्रि० प्र०—(रिक्त को) शफा देना = किसी का रोग दूर करना । अच्छा करना । आराम देना । निरोग करना ।

शफाखाना—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शफा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा होती है । चिकित्सालय । अस्पताल ।

शफायत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शफायत] सिकारिश को० ।

शफीक—वि० [अ० शफीक] १ कृपालु । दयालु । मित्र । दोस्त को० ।

शफोर^१—वि० [सं०] जिसकी जाँघ गाय के खुर के समान हो ।

शफोर^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ गाय के खुर के समान जाँघवाली स्त्री । २ वह स्त्री जिसकी जाँघ पर खुर का चिह्न हो को० ।

शफफाफ—वि० [अ० शफफाफ] १. निर्मल। शुद्ध। २. उज्ज्वल। चमकदार। ३. पारदर्शी [को०]।

शव—सच्चा स्त्री० [फा०] रात। रात्रि। रजनी। निशा। उ०—मौका पाकर एक शव उसको सोते हुए गिरफ्तार कर लाना।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५२१।

शवकोर—वि० [फा०] जिसे रात में दिखाई न दे। रतीधी का रोगी [को०]।

शवकोरी—सच्चा पु० [फा०] रतीधी [को०]।

शवखून—सच्चा पु० [फा० शवखून] सेना का रात के अँधेरे में अचानक हमला। वह आक्रमण जो रात को असावधान शत्रु पर किया जाय [को०]।

शवख्वाँ—सच्चा पु० [फा० शवख्वाँ] बुलबुल नाम का पक्षी [को०]।

शवगर्द—वि० [फा०] रात को घूमने या पहग देनेवाला [को०]।

शवगिर्द—सच्चा पु० [फा०] १ चद्रमा। २ पहरेदार। चौकीदार। ३ कोतवाल। ४ चोर [को०]।

शवगीर—१. वि० [फा०] रात को जागनेवाला। उ०—सो आशक के नालए शवगीर में देखो।—कवीर म०, पृ० ४६७।

शवगीर—सच्चा पु० १ पिछली रात की यात्रा। २. भोगुर।

शवचिराग—सच्चा पु० [फा० शवचिराग] १ एक बहुमूल्य रत्न जो रात में दीप सा चमकता है। २. रात में चमकनेवाला या प्रकाशित होनेवाला, चाँद [को०]।

शवताव—सच्चा पु० [फा०] १. रात का प्रकाश। २ खद्योत। कुगुनू। ३. दीपक। ४ चद्रमा। ५. वह जो रात में चमकता हो। ६. काली बिल्ली।

शवनम—सच्चा स्त्री० [फा०] १ ओस। तुपार। २. एक प्रकार का सफेद रंग का बहुत ही बारीक कपड़ा।

मुहा०—शवनम का रोना = ओस गिरना।

शवनमी—सच्चा स्त्री० [फा०] १ चारपाई के ऊपर का वह ढाँचा जिसपर रात के समय ओस से बचने के लिये मसहरो टाँगी जाती है। मसहरी। छपरखट। २. दे० 'शवनम'।

शवनमी—वि० [फा०] शवनम या ओस जैसी। उ०—पुलकित पलकों की प्रिय पाँखुरियों पर, लो महसा ढनक गई शवनमी नजर, अँगड़ाई ली वह चले पवन, गूँज भँवरो के गान।—ठंडा०, पृ० ३२।

शववरात—सच्चा स्त्री० [फा०] मुसलमानों के आठवें मास की चौदहवीं अथवा पंद्रहवीं रात।

विशेष—इस रात को मुसलमानों के विश्वास के अनुसार फरिश्ते परमात्मा की आज्ञा से भोजन बाँटते और आयु का हिसाब लगाते हैं। इस दिन मुसलमान अपने मृत पूर्वजों के उद्देश्य से प्रार्थना करते, हलुआ पूरी बाँटते, रोशनी करते और आतिश-बाजी छोड़ते हैं।

हि० श० ६-४४

शववाश—वि० [फा०] १ रात में ठिकने या निवास करनेवाला। २. सहवास करनेवाला [को०]।

शववेदारी—सच्चा स्त्री० [फा०] [वि० शववेदार] रतजगा [को०]।

शवमेराज—सच्चा स्त्री० [फा० शव + अ० मेराज] वह रात जब हजरत पैगंबर साहब ने अर्श पर जाकर अल्लाह का साम्राज्य स्वीकार किया था। यह समय अरबी रजब महीने की २६ और २७ तारीखों के बीच पड़ता है [को०]।

शवरग—सच्चा पु० [फा०] वह जो रात के रंगवाला अर्थात् काला हो। सिगाह। काला। २ काला घोड़ा [को०]।

शवर—सच्चा पु० [स०] १ दक्षिण में रहनेवाली एक जंगली या पहाड़ी जाति। २ जंगली। वहशी। ३ शूद्र तथा भोल से उत्पन्न सतान। ४. लोब नामक वृक्ष। ५ शिव। ६ हस्त। हाथ [को०]। ७ मोमाग के एक प्रसिद्ध आचार्य [को०]। ८ जल [को०]।

शवर—वि० १ चितकवरा। २ रंग विरंगा।

शवरकद—सच्चा पु० [स० शवरकद] एक प्रकार का मीठा कंद।

शवरक—सच्चा पु० [स०] [स्त्री० शवरिका] जंगली। वहशी।

शवरचदन—सच्चा पु० [स० शवर + चदन] एक प्रकार का चदन जो लाल और सफेद दोनों मिले हुए रंगों का होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह शीतल तथा कड़वा, और वात, पित्त कफ, विस्फोटक, खुजली, कुण्ड, मोहादि को नष्ट करनेवाला माना जाता है।

शवरजबु—सच्चा पु० [स० शवरजम्बु] एक प्राचीन नगर का नाम।

शवरबल—सच्चा पु० [म०] पर्वतीय जातियों की सेना [को०]।

शवरलोघ्न—सच्चा पु० [स०] सफेद लोघ।

शवरालय, शवरावास—सच्चा पु० [स०] शवर लोगों का निवास। पवराण [को०]।

शवरी—सच्चा स्त्री० [स०] १. शवर जाति की स्त्री। २ रामायण में वर्णित शवर या किरात जाति की एक रामभक्त स्त्री [को०]।

शवल—वि० [स०] १. चितकवरा। २ रंग विरंगा। विचित्र विचित्र। २ अनेक हिस्सा में विभक्त [को०]। ३ किसान की अनुकृति पर बना हुआ। अनुकृत [को०]। ३. घालमेल किया हुआ। मिश्रित [को०]। ४ विकृताकार। विकृत। विवर्ण [को०]। ५. आत। दुःख। पीड़ित [को०]।

शवल—सच्चा पु० १ एक नाग का नाम। २. बौद्धों का एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। ३ अगिया घास। गवतृण। ४ चित्रक। चितउर वृक्ष। ५ अनेक प्रकार का रंग। विवर्ण वर्ण [को०]। ६ जल [फा०]।

शवलक—वि० [स०] १ चितकवरा। २ रंग विरंगा। चित्र विचित्र।

शवलचेतन—सच्चा पु० [स०] वह जो किसी प्रकार की पीड़ा या कष्ट आदि के कारण बहुत ध्वराया हुआ हो। जो संतप्त या व्यथित होने के कारण अन्वयमनस्क हो।

शबलत्व—सङ्घा पुं० [म०] १ शबल का भाव या धर्म । २. रग-विग्नगान । ३ मिलावट ।

शबलहृदय—सङ्घा पुं० [सं०] दे० 'शबलचेतन' [को०] ।

शबला सङ्घा स्त्री० [सं०] १. चितकवरी गी । २. कामधेनु ।

शबलाक्ष सङ्घा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम ।

शबलाश्व—सङ्घा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम । २. दक्ष के एक पुत्र का नाम ।

शबलिका—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पत्ती ।

शबलित—[सं०] चितकवरी । रग विरगा ।

शबलिमा—सङ्घा स्त्री० [सं० शबलिमन्] रग विरगा या शबल होने की क्रिया या भाव [को०] ।

शबली—सङ्घा स्त्री० [सं०] १. कामधेनु । २. चितकवरी गाय ।

शवान—सङ्घा पुं० [फा०] वह जो डोर चराता हो । चरवाहा [को०] ।

शवाना—वि० [फा० शव नहु] १ रात का । रातवाला । २ राति संबंधी । ३ वासी । पयुषित [को०] ।

यौ०—शवाना रोज = अर्हतिश । रात दिन ।

शवाव सङ्घा पुं० [अ०] १ यौवन काल । जवानी । २. किसी वस्तु को वह मध्य की अवस्था जिसमें वह बहुत अच्छा या सुंदर जान पड़े । ३. बहुत अधिक सौंदर्य ।

क्रि० प्र०—भाना ।—उतरना ।—चढ़ना ।—जाना ।

मुहा०—शवाव फट पठना = जवानी का पूरी तरह खिल उठना या जोर पर होना ।

शवाहत—सङ्घा स्त्री० [अ०] १ समानता । अनुसूपता । २ मूल्य । शक्ति । श्रान्ति ।

शवीना—वि० [फा० शवीनहु] १ रात संबंधी । रात का । २ जो ताजा न हो । वामी । दे० 'शवाना' [को०] ।

शवीह—सङ्घा स्त्री० [अ०] १ वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत शबल के ठीक अनुसूप बना हो ।

क्रि० प्र०—खीचना ।—बनाना ।

२ समानता । अनुसूपता ।

शवेइतजार—सङ्घा स्त्री० [फा० शवे इतजार] प्रतीक्षा की रात [को०] ।

शवेअविल—सङ्घा स्त्री० [फा०] सुहागरात [को०] ।

शवेकद्र—सङ्घा स्त्री० [फा०] रमजान की २७ वी रात जो अति पवित्र मानी जाती है [को०] ।

शवेजवानी—सङ्घा स्त्री० [फा०] युवावस्था का उन्माद [को०] ।

शवेतार, शवेतारीक, शवेदैजूर—सङ्घा स्त्री० [फा०] तमिस्त । सुह-निशा । अंधेरी रात [को०] ।

शवेवरात सङ्घा स्त्री० [फा०] दे० 'शव बरात' ।

शवेमहताव, शवेमाह—सङ्घा स्त्री० [फा०] ज्योत्स्ना या राकायुक्त रात्रि । चाँदनी रात [को०] ।

शवेवस्ल—सङ्घा स्त्री० [फा०] नायिका और नायक के मिलने की रात ।

शवेहिज्र—सङ्घा स्त्री० [फा०] वियोगरात्रि । जुदाई की रात [को०] ।

शवेशवादत—सङ्घा स्त्री० [फा०] मुस्लिम की नयी रात जिसमें बीत जाने पर इमाम हुमेन मारे गए [को०] ।

शबोगेज—अव्य० [फा० शब = (रात) + गेज (= गिन)] १ अर्धदिन । रातदिन । २ हर ममन । हरसम । ३ विरतर । नगातर ।

शब्द सङ्घा पुं० [न०] १ वायु में होकर गता सर पर जो किसी पदार्थ पर आया रातों के कारण मयत मयत वायु पर आयात पत्तन के कारण उत्पन्न होकर वात या अर्थोद्विष तब पहुँचता और उभन एक विशेष प्रकार का ज्ञान उत्पन्न करता है । ध्वनि । आवाज ।

विशेष—वायु सभी पदार्थों में, उपर आयात प्रादि करते या उनमें जन्म उत्पत्ति गति उत्पन्न करते, सब उत्पन्न किया जा सकता है । उदाहरणार्थ, दृश्य, श्रवण, घटा, फुट, गुग्गु, गिनाद, कर्म, धात्री, जूना, तरीका आदि । जब किसी पदार्थ पर हमारा कोई पदार्थ आयात मिरता है अथवा किसी पदार्थ में बार-बार गति उत्पन्न की जाती है, तब वायु में एक पदार्थ की छेद लगती है जो सब ओर कुछ दूर तक जाती है, यौ० जहाँ नाव या अर्थोद्विष होती है, वहाँ वह उसे पत्तन का-के मन्त्रि-पक्ष का उभरी सुचना देती है । वायु का शब्द ता पत्तन करता ही है, पर इसके अति रक्त और अन्तर प्रसार भी गये जन्म तथा अनेक तत्त्वों के ओग पदार्थों की शब्द बना करते हैं । पर हमने में सुन पाहक वायु ही है । जो भी वायु की अपेक्षा जग में शब्द बहुत अधिक दूर तक जाता है । जिस स्थान में वायु विनशुन नहीं होती, वहाँ शब्द का बहुत भी किसी प्रकार नहीं हो सकता । वायु की अपेक्षा जग में शब्द की गति और भी अधिक होती है । शब्द घीमा या हलता भी होता है, और भारी या तेज भी । यदि वायु में कप बहुत अधिक होता है तो शब्द भी तेज या कौन्ना होता है । यदि वायु या शब्द के वाहक दूरे मायन का घनत्व कम हो, तो भी शब्द हलता या कौन्ना हो जाता है । इसके अतिरिक्त दूरी भी शब्द को हलता या घीमा कर देती है । प्रकाश की भाँति शब्द का भी परावर्तन होता है । अर्थात् शब्द एक स्थान में उत्पन्न होकर किसी ओर जाता है, और मार्ग में अवरोध पाकर फिर पीछे की ओर लौट आता है । पहाड़ के नीचे या गुग्गु आदि में बोलना क समय शब्द की जो गूँज या प्रतिध्वनि होती है, वह इसी परावर्तन के कारण होती है । यदि वातावरण का तापमान ६२° हा तो शब्द की गति प्रति मकंड ११२५ फुट या प्रति मिण्ट प्राय १२ मील होती है । यदि प्राय एक ही तरह के वजुत से शब्द लगातार रह रहकर हो, तो उनसे 'मोर' पैदा होता है ।

शब्द के दो मुख्य भेद होते हैं, -व्यक्तिक और ध्वन्यात्मक । ध्वन्यात्मक शब्द वह है जो कठ और वायु आदि की सहायता से उत्पन्न होता है । इसको भी दो भेद हैं—व्यक्त और अव्यक्त । जो शब्द सुनने में स्पष्ट हो और जिसका कोई अर्थ हो वह व्यक्त कहलाता है, (दे० 'शब्द'—२) और जो स्पष्ट सुनाई न दे और जिसका कोई अर्थ न हो, वह अव्यक्त कहलाता है । जैसे, हाँ,

ऊँ, खो। वर्णात्मक शब्द के अतिरिक्त और जितने प्रकार के शब्द होते हैं, वे ध्वन्यात्मक कहलाते हैं। जैसे, मृदंग या घंटे आदि से अथवा जोर न हवा चलने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। 'मीमांसाकार' ने शब्द को नित्य और साध्यकार ने उसे आकाश का गुण माना है। न्याय आदि ने शब्द को आकाश का गुण माना है। भारतीय वैयकरणों ने उस द्रव्य माना है। व्याकरण दर्शन में शब्द को नित्य, कूटस्थ—यहाँ तक कि शब्दब्रह्म भी कहा है जो स्फोटोत्पन्न है। विशेष दे० 'ध्वनि'।

पर्या०—निनाद। रव। राव। निर्घोष। नाद। घोष। निनद। ध्वनि। ध्वान। स्वन। स्वान। निर्हाद। आरव। आराव। निस्वम। निस्वान। सरव। सराव। विराव।

२ वह स्वतंत्र, व्यक्त और सार्थक ध्वनि जो एक या अधिक वर्णों के संयोग से, कठ और तालु आदि के द्वारा, उत्पन्न हो और जिससे सुननेवाले को किसी पदार्थ, कार्य या भाव आदि का बोध हो। लफज। जैसे, मैं, क्या, सोना, घाड़ा, मोटाई, काला आदि। ३ अमृतोपनिषद् के अनुसार 'ओऽम्' जो परमात्मा का मुख्य नाम है। ४ किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद या गीत आदि। जैसे, गुरु नानक के शब्द, कबीर के शब्द। ५ नाम। सज्ञा (को०)। ६ व्याकरण (को०)। ७ ख्यात। मशहूर (को०)। ८ केवल नाम। शुद्ध नाम। जैसे, शब्दपति में (को०)।

शब्द अतीत—सज्ञा पु० [स० शब्दातीत] जिसका वर्णन शब्दों के द्वारा न हो सके। शब्दातीत। उ०—शब्द अतीत शब्द सा अपना बूझ बिना कोई।—कबीर श०, भा० १, पृ० ५४।

शब्दकार—वि० [स०] १ वह जो सार्थक शब्दों को किसी छंद के लय ताल पर क्रमबद्ध करता है। गीतकार या काव्य। उ०—हृत्त्व दीर्घ को घट बढ़ के कारण पूर्ववर्ती गवर्ण शब्दकारों पर जो लाछन लगता है, उससे भा वचन का प्रत्यय किया है।—गीतिका (भू०), पृ० ६। २ वह जो शब्द या ध्वनि उत्पन्न करे। शब्द करनेवाला।

शब्दकारी—वि० [स० शब्दकारिन्] शब्द करनेवाला (को०)।

शब्दकोश, शब्दकोष—सज्ञा पु० [न०] ऐसा ग्रंथ जिसमें शब्दों की वर्तना, उनका व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का सानवश है। अभिधान। लुगत। (अ०)। डक्शनरी।

शब्दगत—वि० [स०] शब्द में निहित या स्थित (को०)।

शब्दग्रह—सज्ञा पु० [स०] १ कान, जिससे शब्द का ग्रहण होता है। २ एक प्रकार का कल्पनात्मक बाण।

शब्दग्रह—वि० शब्द को ग्रहण करनेवाला।

शब्दग्राम—सज्ञा पु० [स०] शब्दसमूह (को०)।

शब्दचतुर्थ—सज्ञा पु० [स०] शब्दों के प्रयोग करने की चतुरता। बाल बाल का प्रवीणता। वाग्मता।

शब्दचालि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दचित्र—सज्ञा पु० [स०] १ अनुप्रास नामक अलंकार। २ एक शब्दालंकार जिसमें प्रयुक्त वर्णों का इस प्रकार स रखते हैं कि किसी न किसी वस्तु का रूप बन जाता है। ३ काव्य के तान

भेदों में अंतिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक जिसे मम्मट ने अवर या अधम माना है। इस प्रकार के काव्य में सौंदर्य उन शब्दों या अक्षरों के बारंबार प्रयोग करने में होता है और वे अनुमधुर होते हैं। ४ शब्दों के माध्यम से किसी स्थान, व्यक्ति, घटना आदि का ऐसा वर्णन प्रस्तुत करना जिससे उसका रूप-चित्र भासित हो उठे। (अ० स्केच)।

शब्दचोर—सज्ञा पु० [स०] दूसरों की कविता में प्रयुक्त विशिष्टता-मूलक शब्दों या पदों को अपनी कविता में रख लेनेवाला कवि या रचनाकार। राजशेखर, चूमेन्द्र आदि ने अपने ग्रंथ में इस प्रकार के कवियों की कई श्रेणियाँ निर्धारित की हैं (को०)।

शब्दता—सज्ञा स्त्री० [स०] १० 'शब्दत्व'।

शब्दत्व—सज्ञा पु० [स०] शब्द का भाव या धर्म। शब्दता।

शब्दन—वि० [स०] शब्द या ध्वनि करनेवाला। ध्वननशील।

शब्दन—सज्ञा पु० शब्द या ध्वनि करना। २ ध्वनि। ३ शब्द। ४. नाम लेना। ५ पुकारना। बुलाना। आह्वान (को०)।

शब्दनृत्य—सज्ञा पु० [] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दनेता—सज्ञा पु० [स० शब्दनेतृ] पाणिनि का एक नाम (को०)।

शब्दपति—सज्ञा पु० [स०] नाम मात्र का नेता। वह नेता जिसके अनुयायी न हों। जिसमें शब्द के अलावा पति या राजा का कोई भाव न हो।

शब्दपाती—वि० [स० शब्दपातिन्] किसी प्रकार के शब्द या ध्वनि का सुनकर उसी के आधार पर दिशा और दूरी का अंदाज करत हुए शब्द करनेवाले पर निशाना मारनेवाला। विशेष दे० 'शब्दवेधा' (को०)।

शब्दप्रमाण—सज्ञा पु० [स०] वह प्रमाण जो किसी के केवल शब्दों या कथन के ही आधार पर हो। आप्त या विश्वासपात्र पुरुषों की बात जो प्रमाणस्वरूप मानी जाती है। विशेष दे० 'प्रमाण'। मौखिक प्रमाण।

शब्दप्राण—सज्ञा पु० [स०] शब्द के अर्थों का अनुसंधान। शब्दाय का जिज्ञासा।

शब्दविरोध—सज्ञा पु० [स०] वह विरोध जो वास्तविक या भाव में न हो बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो।

शब्दबोध—सज्ञा पु० [स०] शब्दों के साक्षात् द्वारा प्राप्त ज्ञान। वह ज्ञान जो जवाना गवर्ण से प्राप्त है।

शब्दब्रह्म—सज्ञा पु० [स०] १. वेद जो अपारंपरिक और ईश्वर की कहे हुए माना जाता है। २. ब्रह्मज्ञान जो शब्दरूप में (को०)। ३. शब्द का एक गुण। जतका सज्ञा स्फोट है (को०)।

शब्दभेद—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण के अनुसार शब्द का वह विवचन जो उनके कार्य, स्थाति और सवय आदि के आधार पर किया गया हो। इससे शब्दों के सज्ञा, सवनाम, विशेषण, क्रिय, क्रय, विशेषण, सबधसूचक, अव्यय, सहायक, विस्मयादवाचक आदि रूपा का ज्ञान होता है।

शब्दभेदी—वि० [स० शब्दभेदिन्] दे० 'शब्दवेधी'।

शब्दभेदी^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम (को०)। २ एक प्रकार का वाण (को०)। ३ गुदा। मलद्वार।

शब्दमहेश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव।

विशेष—कहते हैं, पाणिनि को व्याकरण का आदेश शिव ने ही किया था। आरम्भिक चौदह सूत्रों को महेश्वर सूत्र (इति माहेश्वराणि अर्थात् महेश्वरप्रणीत सूत्र) कहा गया है। इसी से शिव का यह नाम पड़ा।

शब्दमाधुर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्द + माधुर्य] शब्द की मधुरता। शब्दों की विशेष योजना से निष्पन्न सौंदर्य या माधुर्य। उ०—रूप-सौंदर्य से मध्यम कोटि की वस्तु नादसौंदर्य या शब्दमाधुर्य है।—रस०, पृ० ७२।

शब्दमाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पोला चाँस।

शब्दयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ जड़। मूल। २ वातु। ३ शब्द की उत्पत्ति। ४ वह शब्द जो अपने मूल अथवा प्रारम्भिक रूप में हो।

शब्दरोचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की घास।

शब्दवारिधि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का सागर। शब्दकोश (को०)।

शब्दविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण। शब्दशास्त्र।

शब्दविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्द + विधान] शब्दों की क्रमबद्ध योजना। पदयोजना। उ०—हृदय की इसी मुक्ति का साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।—रस०, पृ० ६।

शब्दवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ साहित्य में शब्द का कार्य या प्रयोग। २ शब्द की शक्ति। द्योतक शक्ति। अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना आदि (को०)।

शब्दवेध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्द + वेधस] शब्द सुनकर ही निशाना लगाना। उ०—देखा चाहो शब्दवेध तुम, तो कहो।—साकेत, पृ० १३८।

शब्दवेधी^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दवेधिन्] १ वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु का वाण से मारता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्राचीन काल में ऐसे घनुषर हुआ करते थे जो आँखों पर पट्टी बाँधकर किसी व्यक्ति का शब्द सुनकर या लक्ष्य पर की हुई टकार सुनकर ही यह समझ लेते थे कि वह व्यक्ति अथवा वस्तु अमुक आर है, और तब ठीक उसी पर वाण चलते थे।

२ अर्जुन। ३ दशरथ। ४ एक प्रकार का वाण (को०)। ५ घनुषक। घनुषर व्यक्ति (को०)।

शब्दवेधी^२—वि० दे० 'शब्दपाती'।

शब्दशक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।

विशेष—जब शब्द किसी वाक्य या वाक्यांश का अंग होता है, तब उसका अर्थ या तो साधारण और या वाक्य के तात्पर्य के अनुसार और अपने साधारण अर्थ से कुछ भिन्न होता।

उसकी जिम शक्ति के अनुसार वह साधारण या उसमें कुछ भिन्न अर्थ प्रकट होता है, वह शब्दशक्ति कहलाती है। यह शब्दशक्ति तीन प्रकार की मानी गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना। विशेष दे० ये तीनों शब्द इन तीनों स प्रकट होनवाले अर्थ क्रमशः वाक्य, लक्ष्य और व्यञ्ज्य कहे गए हैं तथा इन्हें प्रकट करनेवाले शब्द वाचक, लक्षक और व्यञ्जक कहलाते हैं।

शब्दशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें भाषा के भिन्न भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाय। व्याकरण।

शब्दज्ञ—प्रव्यं० [सं०] अक्षर अक्षर। किसी के कहे या लिखे हुए प्रत्येक शब्द के अनुसार। किसी के शब्दों का ठीक ठीक अनुकरण करते हुए। जैसा किसी ने कहा या लिखा हो ठीक वैसा ही। अक्षरशः।

शब्दश्लेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लेषा अलंकार का एक भेद। वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में प्रयुक्त किया जाय।

विशेष—साहित्यशास्त्रियों ने श्लेषालंकार के दो भेद कहे हैं। एक शब्दश्लेष और दूसरा अर्थश्लेष। शब्दश्लेष में श्लेष शब्द को समानार्थक शब्द रखकर हटाया नहीं जा सकता। वह परिवृत्तिसह नहीं होता क्योंकि इसमें उसकी शिष्टता नष्ट हो जाती है। अर्थश्लेष शब्द की परिवृत्ति सह सकता है अर्थात् समानार्थ शब्द द्वारा हटाया भी जा सकता है।

शब्दसंग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दसङ्ग्रह] शब्दों का सचयन। शब्द-काश (को०)।

शब्दसम्भव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दसम्भव] वायु जो शब्द की उत्पत्ति का कारण है, अथवा जिससे शब्द का अस्तित्व सम्भव होता है।

शब्दसाधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है। शब्दों के सञ्ज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, सर्वनाम आदि जो भेद होते हैं, वे भी इसी के अंतर्गत हैं।

शब्दसौंदर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दसौन्दर्य] शब्दों के उच्चारण की सुगमता। दे० 'शब्दसौष्ठव'।

शब्दसौकर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शब्दों के उच्चारण की सुगमता।

शब्दसौष्ठव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी लेख या शैली आदि में प्रयुक्त किए हुए शब्दों का कामलता या सुंदरता।

शब्दहीन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का वह रूप या प्रयोग जिसे आचार्यों ने न प्रयुक्त किया हो।

शब्दहीन^२—वि० [सं०] शब्दरहित। नि शब्द। (को०)।

शब्दांतर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दान्तर] शब्द का ही अंतर या परिवर्तन। ऐसा उक्ति या रचना जो किसी उक्ति या रचना को समानार्थक शब्द सबंधी परिवर्तन करके रखती हो।

शब्दांतरकरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शब्दान्तर + करण] शाब्दिक परिवर्तन करना। उ०—डान्टे की 'डिवाइना कामेडिया' तो सेंट टामस को कथोलिक नीति पर कही कही तो केवल शब्दांतर-करण है।—पा० सा०।सं०, पृ० ८।

शब्दाक्षर—सच्चा पु० [म०] ध्वनिपूर्वक उच्चरित 'ओम्' शब्द ।

शब्दाख्येय—वि० [स०] १ जोर से या चिल्लाकर कहा जानेवाला ।
२ शब्द द्वारा कहा जाने योग्य । जिसे शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सके । ३. (सदेश या समाचार आदि) जो मौखिक वा शाब्दिक हो (को०) ।

शब्दाडवर—सच्चा पु० [स० शब्दाडम्बर] बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो । केवल शब्दों की सहायता से खड़ा किया जानेवाला आडवर । शब्दजाल ।

शब्दाढ्य—सच्चा पु० [स०] काँसा नाम की धातु ।

शब्दातिग—सच्चा पु० [स०] विष्णु ।

शब्दातीत^१—सच्चा पु० [स०] वह जो शब्द से परे हो, अर्थात् ईश्वर ।

शब्दातीत^२—वि० शब्दों द्वारा जिसका वर्णन न हो सके । जो शब्दों द्वारा व्यक्त न हो सके । वर्णनातीत [को०] ।

शब्दात्मक—वि० [स०] शब्द सबधी । शाब्दिक । उ०—केवल शब्दात्मक साम्य को लेकर यदि हम किसी पहाड़ को कहे कि वह बैल है क्योंकि इसे भी 'शृंग' है, तो वह काव्यकला नहीं होगी ।—आचार्य०, पृ० १२४ ।

शब्दाधिष्ठान—सच्चा पु० [स०] कर्ण । कान ।

शब्दाध्याहार—सच्चा पु० [स०] वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें अपनी ओर से शब्द जोड़ना ।

शब्दानुकरण—सच्चा पु० [स०] शब्द या पदयोजना का अनुकरण करना [को०] ।

शब्दानुकृति—सच्चा स्त्री० [स०] दे० 'शब्दानुकरण' ।

शब्दानुशासन—सच्चा पु० [स०] व्याकरण । जैसे, हिंदी शब्दानुशासन ।

शब्दायमान—वि० [स०] शब्द करता हुआ । शब्दित । शब्द या ध्वनियुक्त [को०] ।

शब्दार्थ—सच्चा पु० [स०] शब्द का अर्थ या अभिप्राय । वाच्य । मानी [को०] ।

शब्दालकार—सच्चा पु० [स० शब्दालङ्कार] साहित्य में वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाय । जैसे,—अनुप्रास, यमक आदि ।

शब्दाल—वि० [स०] ध्वनिकारक । शब्द करनेवाला [को०] ।

शब्दावली—सच्चा स्त्री० [स०] किसी कथन या रचना में प्रयुक्त होनेवाला शब्दसमूह [को०] ।

शब्दित^१—वि० [स०] १ ध्वनियुक्त । शब्दायमान । ध्वनित । उ०—
(क) सतत शब्दित गेह समूह में, विजयता परिवर्धित थी हुई ।
—प्रिय०, पृ० २२ । (ख) मुझे प्रेम का नीरव मानस सुंदर शब्दित करने दो ।—वीणा, पृ० २७ । २. वजाया हुआ या वज्रता हुआ । ३. पुकारा हुआ । आहूत । ४. व्याख्या किया हुआ । व्याख्यात । ५. घोषित । प्रचारित [को०] ।

शब्दित^२—सच्चा पु० कोलाहल । शोर । हल्ला [को०] ।

शब्दी(पु)—सच्चा स्त्री० [स० शब्द] १ सवद । आध्यात्मिक भजन या पद । २. उपदेश । शिक्षा । उ०—मतगुरु शब्दी मेल है सहै धमका साध ।—चरण० बानी, पृ० ३ ।

शब्देंद्रिय—सच्चा स्त्री० [स० शब्देन्द्रिय] कर्ण । कान ।

शब्दोद्भावक—वि० [स०] शब्दों की उद्भावना करनेवाला । शब्द का निर्माता । शब्दस्रष्टा । उ०—इस दिशा में समालोचक ही न रहकर वे शब्दोद्भावक भी हुए ।—आचार्य०, पृ० २०६ ।

शम—सच्चा पु० [स०] १ शांति । उ०—सतिगुरु शरन महाँ शम पाई अँसो आकुल रिदै पियारा ।—प्राण०, पृ० २३२ । २. मोक्ष । ३. कर । हस्त । हाथ । ४. उपचार । रोगमुक्ति । सुस्थता । ५. अतःकरण तथा अंतर डाढ़्य को वश में करना । ६. बाह्य इंद्रियों का निग्रह । ७. निवृत्ति । निःसंगता । निरपेक्षता । ८. साहित्य में शांत रस का स्थायी भाव । ९. क्षमा । १०. तिरस्कार । ११. मन स्वैर्य । मन की स्थिरता । मानसिक स्थिरता [को०] ।

शमई^१—वि० [अ० शमग्र] १ शमा सबधी । शमा का । मोमवत्ती या दीपक सबधी । २. शमा के रंग का [को०] ।

शमई^२—सच्चा स्त्री० दीपाधार । शमादान । उ०—सप्तशती के पाठ के लिये १४ ब्राह्मण, दुर्गा के मादर में चाँदी की शमईयों में घा के दिए जलाए ।—भांसी०, पृ० ३२२ ।

शमक—वि० [स०] १ शांत या शांति करानेवाला । २. सवि या समझौता करनेवाला [को०] ।

शमठ—सच्चा पु० [स०] १. एक प्रकार का तूत या शहतूत । २. गडार नामक शाक ।

शमता—सच्चा स्त्री० [स०] शम का भाव या धर्म । शमत्व ।

शमत्व—सच्चा पु० [स०] दे० 'शमता' ।

शमथ—सच्चा पु० [स०] १ शांति । मन शांति । २. वह जो मन्नया वा सलाह देता हो । मंत्री ।

शमन—सच्चा पु० [स०] १ यज्ञ के लिये होनेवाला पशुओं का वलिदान । २. यम । ३. एक प्रकार का मृग । ४. हवन । हिंसा । ५. शम । शांति । जैसे,—रोग का शमन । ७. अन्न । ८. मटर । ९. वह ओषधि जो वातादि दोषों का वमन, विरेचनादि द्वारा दूर करे । जैसे—गिलोय । १०. तिरस्कार । ११. आघात । चोट । १२. वैद्यक में एक प्रकार का घृष्टपान ।

विशेष—इस घृष्टपान में इलायची, तगर, कुडा, जटामासी, गधवृण, दालचीनी, तेजपत्ता, नागकेशर, नखो, सरल, वाला, शिलारस आदि कई ओषधियों का मिश्रण किया जाता है, इसका घृष्टा नली या सटक आदि के द्वारा पीते हैं । इससे वात आदि दोषों का नाश होता माना जाता है ।

१३. एक प्रकार का वस्त्र कर्म जो मोया और रसाजन आदि मिले हुए दूध से किया जाता है । १४. रात्रि । रात । १५. शांत करना । बुझाना [को०] । १६. प्रसन्न करना [को०] । १७. अंत ।

ठहराव । समाप्ति । विनाश (को०) । १८. निगल जाना । चवाना (को०) ।

शमनवस्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का वस्ति कर्म जिसमें फूट प्रयुग मु० ठा, नागरमाथा और रसीत को दूब में पीसकर मलद्वार से पचकारो देते हैं ।

शमनस्वसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० शमनस्वस] यम को भगिनो अर्थात् यमुना ।

शमनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] रात । रात्रि ।

शमनीय—वि० [स०] शमन करने योग्य । दवाने या शांत करने योग्य ।

शमनीषद्, शमनीसद—सञ्ज्ञा पु० [स०] निशाचर । राक्षस ।

शमघर—वि० [स०] शांतिपरायण । शांत (को०) ।

शमप्रधान—वि० [स०] जिसमें शम की प्रधानता हो । जो शम को ही मुख्य मानता हो । शांत । विषयराग से रहित (को०) ।

शमर पु०—सञ्ज्ञा पु० [अ० समर] फल । उ०—सरसज्ज हुआ फज्जे सनम से शमर आया ।—कबीर म०, पृ० ३८६ ।

शमल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ विष्ठा । मल । गुह । २ पाप । गुनाह । ३ अशुचिता । अपवित्रता (को०) । ४ अभाम्य । बदकिस्मती । दुर्भाग्य (को०) ।

शमल^२—वि० पापात्मा । पापी (को०) ।

शमला—सञ्ज्ञा पु० [प्र०] १ एक छोटी शाल जिसे कंधो पर डालते या सिर पर लपेटकर पगडी की तरह बाँधते हैं । उ०—मुशी जी की सज धज निराली । सिर पर एक हरा शमला था, देह पर एक प्रवा ।—काया०, पृ० १३२ । २ पुराने वकीलो के पहनने की पगडी जिसे वे गारून के ऊपर पहन लेते थे । ३ तुरी । पगडी का सिरा या छोर । ४ एक प्रकार की बनी हुई गोल पगडी जिसे सिर पर टापी की तरह पहना जाता है ।

शमशम—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम ।

शमशाद—सञ्ज्ञा पु० [फा०] सब या सरो का वृक्ष जो सीधा होता है और अपनी लंबाई और सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है, इसकी उपमा माशूक के कद से दी जाती है । उ०—चमन पर देख कर उस दुख का पहाड, दिया है खोल वालों सब शमशाद ।—दक्खिनी०, पृ० १६१ ।

शमशीर—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शमशेर' । (क) उधर शमशीर खीची हो इधर गर्दन झुकाई हो ।—श्यामा०, पृ० ७३ । (ख) जानता हूँ पशुरो, शमशाद का भी, जानता हूँ प्यार, उसको पीर का भी ।—मिलन०, पृ० ४८ ।

शमशेर—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह हथियार जो शेर की पूँछ अथवा नख के समान हो अर्थात् तलवार, खड्ग आदि । २. तलवार ।

मुहा०—शमशेर का खत = युद्धक्षेत्र ।

यौ०—शमशेरजन = तलवार चलानेवाला । असिवाही । शमशेर-जनी = (१) सिपाही का पेशा । (२) तलवार की लड़ाई । असियुद्ध । शमशेरदम = तलवार की तरह बाढ़ रखनेवाला ।

तलवार जमी काट करनेवाला । शमशेरजग = वीरतामूचक उपाधि । शमशेर वक्फ = शस्त्रपाणि । जिसके हाथ में तलवार हो । शमशेर बहादुर = तलवार चलाने में कुशल ।

शमश्रु (श्रु) —सञ्ज्ञा पु० [स० शमश्रु] दाढ़ी । शमश्रु । उ०—अरु शमश्रु जा दाढ़ी है सा चौदीवत चमत्कार करती है ।—प्राण०, पृ० २६२ ।

शमातक—सञ्ज्ञा पु० [म० शमान्तक] वह जो शम को, मन शांति को नष्ट कर दे, अर्थात् कामदेव ।

शमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [प्र० शमश्रु] १ मोम । २. मोम या चर्वी की बनी हुई वस्ती जो जलाने का काम में आती है । मोमवस्ती । उ०—भिलमिलाकर और जलाकर तन शमा दो, अब शलम की गोद में आराम से सोई हुई ।—ठंडा० पृ० १२ । ३. दीपक । दीया । उ०—सुबह तक शमा सर को धुनती रही । क्या पतंग न इतना शमा किया ।—कावता की०, भा० ४, पृ० १७२ ।

यौ०—शमादान ।

शमादान—सञ्ज्ञा पु० [फा०] वह धावार जिसमें मोम की वस्ती लगाकर जलाते हैं । यह प्रायः धातु का बना हुआ अनेक आकार प्रकार का होता है ।

शमामचा—सञ्ज्ञा पु० [फा० शमामचद्] सूँघने का कोई सुगंधित पदार्थ (को०) ।

शमामा—सञ्ज्ञा पु० [अ० शमामद्] सुगंध । सुशब्द । महक (को०) ।

शमारुख, शमारुखसार—वि० [फा० शमारुख, शमारुखसार] १. शमा की तरह प्रकाशमान चेहरा । २. सुंदर । उ०—शमारुख का तेरे ये गुन कोई परवाना नहीं, और अगर हूँ तो मही ।—श्यामा०, पृ० १०२ ।

शमारू—वि० [फा०] द० 'शमारुख' ।

शमि'—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शिवी धान्य ।

विशेष—इस धान्य में मूँग, मसूर, माठ, उडद, चना, अरहर, मटर, कुलथा, लोबया इत्यादि के अन्न आते हैं, जिनमें छीमियाँ लगती हैं ।

२. सफेद काकर । विशेष द० 'शमी' ।

शमि'—सञ्ज्ञा पु० १. भागवत के अनुसार उद्योतर के पुत्र का नाम । २. यज्ञ ।

शमिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शमिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शमी वृक्ष ।

शमिज—सञ्ज्ञा पु० [स०] लाल कुलथी ।

शमिजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. लाल कुलथी । २. शिवी धान्य ।

शमित—वि० [स०] १ जिसका शमन किया गया हो । २. शांत । ठहरा हुआ । ३. विश्रामित । आराम किया हुआ (को०) । ४. मारा हुआ । नष्ट या विध्वस्त किया हुआ (को०) ।

शमिता^१—सञ्ज्ञा पु० [स० शमितृ] वह जो यज्ञ में पशु का बलिदान करता हो ।

शमिता—सब्बा स्त्री० [सं०] चौरैठा। चावल का चूर्ण [को०]।

शमिपत्र—सब्बा पुं० [सं०] पानी में होनेवाली लजालू नाम की लता।

शमिपत्रा—सब्बा स्त्री० [सं०] दे० 'शमिपत्र'।

शमिर—सब्बा पुं० [सं०] १. शमी वृक्ष। २. नकुची। सोमराजी।

शमिरोह—सब्बा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शमिला—सब्बा स्त्री० [सं०] चमेली की जाति का एक प्रकार का पौधा।

शमी—सब्बा स्त्री० [सं०] १. कर्म। क्रिया (को०)। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर। छोकर।

विशेष—शमी का वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, और दक्षिण के प्रांतों में पाया जाता है। इसे बागों में भी लगाते हैं। इसका वृक्ष ३०-४० फुट तक ऊँचा होता है, परंतु सिंध में यह ६० फुट का भी होता है। इसकी शाखें पतली खाकी रंग की, चित्तीदार और भूमे की ओर लटकती हुई होती हैं। इसकी जड़ कही कही ६० फुट तक भूमि के भीतर नीचे चली जाती है, और चारों ओर बहुत दूर तक बढ़ती है, जिससे नए अंकुर निकलकर और पौधे उत्पन्न होते हैं। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इसके वृक्ष पर काँटे होते हैं। बालियों पर विषमवर्ती सीके रहते हैं। इन सीकों पर ७ से १२ जोड़े तक छोटे छोटे पत्ते रहते हैं। शाखों के अंत में ३-४ इंच लंबे सीकों पर नन्हे नन्हे पीले तथा गुलाबी रंग के फूल आते हैं। इसकी फलियाँ ५ से १० इंच तक लंबी और चिपटी होती हैं। प्रत्येक फली में १०-१५ बीज रहते हैं जो अंडाकार और भूरे रंग के होते हैं। इसकी छाल और फलियाँ औषधि के काम में आती हैं। लोग इसकी फलियों का अचार और साग बनाकर खाते हैं। दुर्भिक्ष के समय इसकी छाल के आटे की रोटी बनाकर भी खाई जाती है। इसका मसम बुद्धि, केश तथा नखों का नाश करनेवाला होता है। अतिसार में इसका काढ़ा लाभदायक होता है। गठिया पर इसकी छाल पीसकर गरम करके लगाने से लाभ होता है। लोग विजयादशमी आदि कुछ विशिष्ट अवसरों पर इसका पूजन भी करते हैं।

पर्या०—शक्तुफला। शिवा। केशहृत्ती। शाता। हविर्गवा। मेव्या। ईशानी। लक्ष्मी। तपनतनया। शुभदा। पवित्रा। बागुजि। पापनाशिनी। शकरी। पापशमनी। इष्टा। तुगा। शिवाफला। सुपत्रा। सुखदा।

शमी—वि० [सं० शमिन्] शात।

शमीक—सब्बा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि का नाम।

विशेष—कहते हैं, परीक्षित ने उनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया, परंतु ये कुछ न बोले। इनके लड़के भृगी ऋषि ने अपने पिता की दुर्दशा देखकर क्रुद्ध हो शाप दिया कि आज के सातवें दिन मेरे पिता के गले में सर्प डालने वाले को तत्क्षक नाम डलेगा। कहा जाता है, इसी शाप के द्वारा तत्क्षक के काटने से राजा परीक्षित की मृत्यु हुई थी।

शमीगर्भ—सब्बा पुं० [सं०] १. ब्राह्मण। २. अग्नि।

शमीजाति—सब्बा स्त्री० [सं०] शमीधान्य।

शमीधान, शमीधान्य—सब्बा पुं० [सं०] शिबी धान्य। मूँग, मसूर, उड़द आदि।

शमीपत्रा—सब्बा स्त्री० [सं०] लजालू नाम की लता।

शमीम—सब्बा स्त्री० [अ० शमीमह्] सूँघने की वस्तु। सुगंध। उ०—मगजे जाँ को जँवतो राहत का शमीम। याद उसका दिल के गुचे को नसोम।—दक्खिनी०, पृ० २०१।

शमीम—सब्बा पुं० [अ०] सुगंध। खुशबू।

शमीर—सब्बा पुं० [सं०] शमी वृक्ष।

शमीरकद—सब्बा पुं० [सं०] शमीरकन्द] बाराही कद। चमार आलू। शूकर कद।

शमीरमा—सब्बा स्त्री० [सं० शमी + रमा] लक्ष्मीदेवी जो शमी वृक्ष में निवास करती है। उ०—शमी वृक्ष में शमीरमा रानी की पूजा कीरपूजा ही का जाववत्य प्रमाण है।—प्रेमवन०, भा० २, पृ० २०६।

शमीरोह—सब्बा पुं० [सं०] शिव [को०]।

शम्मा—सं० पुं० [अ०] किञ्चिन्मात्र वस्तु। बहुत थोड़ा सामान।

शम्या—सब्बा स्त्री० [सं०] १. लगुड। यष्टि। लाठी। २. काठ का स्तम्भ। ३. ३६ अंगुल लंबा एक परिमाण या मानदंड। ४. जुए का सैला। ५. भाँफ। ६. एक यज्ञपात्र। ७. बंदों का एक यंत्र या औजार। ८. संगीत में तालविशेष [को०]।

यौ०—शम्याक्षेप। शम्याग्राह = भाँफ बजानेवाला। भालर बनानेवाला। शम्यापात = दे० 'शम्याक्षेप'।

शम्याक—सब्बा पुं० [सं०] आरग्वध वृक्ष। अमलतास।

शम्याक्षेप—सब्बा पुं० [सं०] १. वह दूरी जहाँ तक घुमाकर तेजी से फेंकी हुई छड़ी गिरे। २. एक यज्ञ जिसका मंडप बलिष्ठ पुरुष द्वारा छड़ी गिरने की दूरी तक हो [को०]।

शमश(पु)—सब्बा पुं० [अ० शमश] १. सूरज, रवि, सूर्य। उ०—तकरीम को शमशी महे अनवार भुका।—कवीर म०, पृ० ४६८।

शमशी(पु)—वि० [अ० शम्मी] १. सूर्य का। सौर। २. सूर्य संबंधी। उ०—आखिर कुछ धन माह न दीना, शमशी कमरी घटा महीना।—दक्खिनी०, पृ० ३११।

शमस—सब्बा पुं० [अ०] १. सूर्य। जैसे, शमस-उल उलेमा अर्थात् विद्वानों में सूर्यवत्। २. सुमिरनी का फुंदना जो तमबीह (माला) में लगाया गया हो। [को०]।

शमसा—सब्बा पुं० [अ० शमसह्] गवाक्ष। अरोखा। रोशनदान [को०]।

शमसी—वि० [अ०] दे० 'शमशी'।

शमसी—सब्बा स्त्री० छमाही वेतन।

शयंड—सब्बा पुं० [सं० शयण्ड] १. एक प्राचीन जलपद का नाम। २. इस देश का निवासी।

शयंड—वि० सोनेवाला। मिट्टालु [को०]।

शयङक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शयङक] गिरगिट ।

शय'—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ शय्या । २. सर्प । साँप । ३ निद्रा । नीद ।
उ०—हगों मे ज्योति है, शय है, हृदय मे स्पन्द है, भय है ।—
अर्चन', पृ० १०७ । ४ परा । ५ हाथ । ६ लवाई की एक
मार (को०) । ७ वद्धुषा । शाप (को०) । ८ भर्त्सना (को०) ।

शय'—वि० लेटनेवाला । सोनेवाला (विशेषतः समाम मे, जैसे दिवा-
शय, उत्तानशय) ।

शय'—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०, क' शं] १ वस्तु । पदार्थ । चीज । २ भूत ।
प्रेत । आमेव । जैसे,—इस मकान मे कोई शय है ।

शय'—सञ्ज्ञा स्त्री० [क्रा० शह] दे० 'शह' ।

शयत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रालु व्यक्ति । वह जिसे नीद आई हो ।
२ चद्रमा (को०) ।

शयतान—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शैतान] दे० 'शैतान' ।

शयतानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शैतानी] दे० 'शैतानी' ।

शयय'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ साँप । सर्प । अजगर । २ सूपर । सूकर ।
वागह । ३ मछली । मीन । ४ गाढो नीद । ५ मृत्यु ।
मौत । ६ यम । ७ शयनीय स्थल (को०) ।

शयय'—वि० सोया हुआ । सुपुत (को०) ।

शयन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रा लेने या सोने की क्रिया । सोना ।
२ शय्या । बिछौना । ३ मैथुन । स्त्रीप्रसंग । सभोग ।

शयनआरती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शयन + आरती] । देवताओं की वह
आरती जो रात को सोने के समय होती है ।

शयनकक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमरा या घर । शयनागार ।

शयनगृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान । शयनमंदिर । शयनागार ।

शयनतलगत—वि० [सं०] शय्या पर लेटा हुआ (को०) ।

शयनपाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] निद्राकाल में पहरा देनेवाला व्यक्ति या
अंतरंग अग्ररक्षक ।—उर्ण०, पृ० ६ ।

शयनपालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो शय्या की रक्षिका हो
शयनकक्ष की रक्षा करनेवाली । (को०) ।

शयनवाधिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अग्रहण मास के कृष्ण पक्ष की
एकादशी । उ०—अग्रहण असित एकादसि केरा । शयनवाधिना
नाम निवेरा —रघुनाथ (शब्द०) ।

शयनभूमि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शयनमंदिर । शयन का स्थान (को०) ।

शयनमंदिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शयनमन्दिर] सोने का स्थान । सोने का
कमरा । शयनगृह । शयनागार ।

शयनरचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शयनरचना] ६४ कलाओं में से
एक कला । सेज तैयार करना या सजाना (को०) ।

शयनवाम—सञ्ज्ञा पुं० [म० शयनवामस्] वे कपड़े जो सोने के समय
पहने जायें ।

शयनशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शयनगृह । शयनागार । उ०—इन
क्षत्रियों को आलम्ब की शयनशाला से उठाओ ।—प्रेमघन०,
भा० २, पृ० ६६ ।

शयनसखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शय्या पर साथ सोनेवाली महेली (को०) ।

शयनस्थ—वि० [सं०] बिछौने पर बैठा या सोया हुआ (को०) ।

शयनस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [म०] सोने की जगह (को०) ।

शयनागार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान । शयनमंदिर । शयनगृह ।

शयनीय'—वि० [मं०] सोने के योग्य ।

शयनीय'—सञ्ज्ञा पुं० १ सेज । शय्या । २ शयनगृह । शयना-
गार (को०) ।

शयनीयक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शयनीय' ।

शयनैकादशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की
एकादशी ।

विशेष—विष्णु भगवान् के शयन का प्रारंभ इसी दिन से माना
जाता है ।

शयाड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शयाण्ड] १ एक प्राचीन देश या जनपद का
नाम । २. इस देश का निवासी ।

शयाडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शयाण्डक] गिरगिट । कृकलास ।

शयातीन—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शैतान का बहु व०] शैतान । उ०—वस
है यह उसको अज उफूरे अयाल, के शयातीन हो उसके माला-
माल ।—दक्खिनी०, पृ० २१६ ।

शयान'—वि० [सं०] सोया हुआ । स्थित । पडा हुआ । उ०—कुद के
शेष पूज्यार्घदान, मल्लिका प्रथमयौवन शयान ।—अना-
मिका, पृ० २२ ।

शयान'—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'शयानक' ।

शयानक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प । साँप । अजगर । २. गिरगिट ।
कृकलास ।

शयालु'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे नीद आई हो । निद्रालु ।

२ अजगर । ३ कुत्ता । ४ शृगाल । गीदड़ । सियार ।

शयालु'—वि० निद्रालु । निद्राशील । शयित (को०) ।

शयित'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अजगर । २ लिसोडा । श्लेष्मातक । ३
निद्रा । नीद (को०) । ४ सोने का स्थान (को०) ।

शयित'—वि० १ सोया हुआ । निद्रित । २ लेटा हुआ (को०) ।

शयिता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शयितृ] वह जो सोया हुआ हो । सोनेवाला ।

शयु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अजगर । २. एक प्राचीन वैदिक ऋषि
का नाम ।

शयुन—सञ्ज्ञा पुं० [म०] अजगर । साँप ।

शय्यात—सञ्ज्ञा पुं० [म० शय्यान्त] शयनकक्ष (को०) ।

शय्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह बिछी हुई वस्तु जो सोने के काम मे
लाई जाय । विस्तर । बिछौना । बिछावन । २ पलंग । खाट ।
खटिया । ३ वाँचना । नत्थी करना (को०) ।

शय्याकाल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] सोने का समय । शय्या पर जाने का
काल (को०) ।

शय्यागत—वि० [सं०] १ जो बीमार होने मे कारण खाट पर पडा
हो । रोगी । २. सोया या लेटा हुआ (को०) ।

शय्यागृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शयनगृह । शयन का कक्ष या स्थान [को०] ।

शय्याच्छादन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पलंग पर बिछाने की चादर ।

शय्याद—वि० [अ०] छनी । घूर्त । मक्कार । बंचक [को०] ।

शय्यादान—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] मृत्यु के अनंतर मृतक के सवधियों का महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना । सज्जादान ।

शय्याध्यक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शय्यापाल' ।

शय्यापाल, शय्यापालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजाओं के शयनागार की व्यवस्था करता हो ।

शय्यामूत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जो प्रायः बालकों को होता है । इसमें उन्हें निद्रावस्था में ही शय्या पर पड़े पड़े पेशाब हो जाता है ।

शरड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शरद] १ पक्षी । बिहग । चिड़िया । २ कामुक । ३. घूर्त । चालाक । ४ एक प्रकार का गहना । ५. छिपकली । ६ गिरगिट । ७ चतुष्पद । चतुष्पाद । चौपाया [को०] ।

शर'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वाण । तीर । नाराज । २ सरकड़ा । सरई । ३. सरपत । रामशर । ४. दूध को मलाई । ५ दही की मलाई । ६. मामुद्रक के अनुसार शरीर में का एक चिह्न । ७. उशीर । खस । ८ भाले का फल । उ०—मूआ है मरि जाहुगे, बिन शर थोये भाल ।—कबीर (शब्द०) । ९ चिता । उ०—पूही पैन्हि पी सँग सुहागिन बधू ह्वै लीजो सुख के समूहै बैठि सेज पै कि शर पै ।—देव (शब्द०) । १. हिमा । ११ पाँच की संख्या । १२ पुराणानुसार एक असुर का नाम । १३ जल [को०] । १४ कुश नाम की घास [को०] ।

शर'—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ उपद्रव । शरारत । झगडा । बखेडा । २ बंदी । बुराई । उ०—रहो कायम अपस इकरार ऊपर, खयाले कतल मे लिए दीन का शर ।—दखिनी०, पृ० ३४० ।

शरश्र—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शरश्र] १ वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने सक्तों के लिये बतलाया हो । २. सीधा राह । राजमार्ग [को०] । ३ कुरान में दी हुई आज्ञा । ४ दीन । मजहब । धर्म । ५ दस्तूर । तीर । तरीका । ६ मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।

शरई'—वि० [अ०] शरश्र के अनुसार । मुसलमानी धर्म के अनुसार ।

यौ०—शरई पैजामा = ऊँचा पैजामा । शरई दाढी = बहुत लंबी दाढी । शरई शादी = बिना बाजे गाजे का विवाह (मुसल०) ।

शरई'—सञ्ज्ञा पुं० शरश्र पर चलनेवाला मनुष्य ।

शरकाड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शरकाण्ड] १ सरपत । सरकड़ा । २ वाण की लकड़ी ।

शरकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो तीर बनाता हो ।

शरक्षेप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वाण का लक्ष्य स्थान । वाणप्रहार । तीर का चलाना । उ०—देखता रहा मैं सदा अपल वह शरक्षेप, वह रणकोशल ।—अनामिका, पृ० १२० ।

शरखगक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शरखङ्गक] उलूक वृण । उलप ।

हि० श० ६-४५

शरगा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शरगा] वादामी रंग का घोडा [को०] ।

शरगुल्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सरकड़ा । २ रामायण के अनुसार एक गूथरति बंदर का नाम ।

शरधात—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] वाण चलाने का कार्य । तीरदात्री [को०] ।

शरच्चन्द्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शरत् + चन्द्र] शरद ऋतु का चंद्रमा ।

शरच्चंद्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं० शरत् + चन्द्रिका] शरत् की चाँदनी ।

शरज'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मक्खन । मक्खनीत । २ कार्तिकेय । शरजन्मा [को०] ।

शरज'—वि० सरकड़े में उत्पन्न या बना हुआ ।

शरजन्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शरजन्मन्] कार्तिकेय ।

शरजाल, शरजालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाणों का जाल । वाणममूह [को०] ।

शरज्ज्योत्स्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शरत् + ज्योत्स्ना] शरद ऋतु की चाँदनी । शरद का जुन्हाई [को०] ।

शरट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कुमुभ नाम का माग । २. कृकनास । गिरगिट । ३ करज । ४ प्रागैतिहासिक काल का एक भयावना जानवर ।

शरटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] लज्जालुक । लाजवती । लजाधुर ।

शरट्ट—वि० [मं०] भयानक । भीषण । रौद्र [को०] ।

शरण'—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १ रक्षा । आड । आश्रय । पनाह । जैसे,—अब तो मैं आपकी ही शरण में आया हूँ । उ०—(क) वपु कृष्ण कृष्ण कक्षना करण जग व्यापक हम तब शरण ।—गिरधर (शब्द०) । (ख) जिनकी शरण विश्व बुध जिनको निरभिलाप बतलाते हैं ।—द्विवेदी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—मे आना ।—जाना ।—पाना ।—लेना ।

२ आश्रय का स्थान । बचाव की जगह । ३ घर । मकान । ४ जो शरण में आवे, उसके बँरी को मारना । ५ अघीन । मत्हत । ६ शाहाबाद के उत्तर सारन नाम का जिला ।

शरण'—वि० [मं०] दे० 'शरण' [को०] ।

शरणद—वि० [सं०] शरण देनेवाला । रक्षा करनेवाला । रक्षक ।

शरणदाता—वि० [सं० शरणदातृ] दे० 'शरणद' [को०] ।

शरणप्रद—वि० [मं०] दे० 'शरणद' ।

शरणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गवप्रसारिणी नाम की लता ।

शरणागत'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शरण में आया हुआ व्यक्ति । किसी के भय से अपने पान रक्षा के लिये आया हुआ मनुष्य । २. शिष्य । चेला ।

शरणागत—वि० शरण में आया हुआ ।

शरणागति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शरण में जाने का कार्य या स्थिति [को०] ।

शरणापन्न—वि० [मं०] शरण में आया हुआ । शरणागत ।

शरणीय'—वि० [सं० शरणीय] १ शरण माँगनेवाला । अपनी

रक्षा की प्रार्थना करनेवाला । २ विस्थापित । एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जा बसनेवाला । उ०—शरणार्थी, नवभू जीवन के शरणार्थी हैं ।—रजत०, पृ० ८ ।

शरणार्पक—वि० [न०] शरणापन्न । शरणागत [को०] ।

शरणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ रास्ता । मार्ग । पथ । २ पृथ्वी । जमीन । ३ हिमा । ४ पक्ति [को०] ।

शरणि' सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ गवप्रनारिणी नाम की लता । २ पथ । मार्ग । रास्ता । ३ जयन्ती लता । ४ पृथ्वी [को०] । ५ पक्ति । श्रवली [को०] । ६ इन्द्र की पुत्री, जयन्ती [को०] ।

शरणी ७—वि० शरण देनेवाली ।

शरण्य' वि० [स०] १, शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला । उ०—रक्षणा करिहैं अवशि हमारा । प्रभु ब्रह्मण्य शरण्य उदारा ।—भक्तमाल (शब्द०) । २ रक्षणीय । शरण देने योग्य [को०] । ३ दुःखी । अवलम्बनी [को०] ।

शरण्य' सञ्ज्ञा पुं० १ आश्रयस्थान । २ रक्षा । आरा । ३ हिंसा । ४ वह जो रक्षा कार्य करे । ५ शिव [को०] ।

शरण्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शरण्य का भाव ।

शरण्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा ।

शरण्यु'—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मेघ । बादल । २ वायु । हवा । ३ वह जो पालन वा रक्षण करे अथवा शरण दे । रक्षक । ४ दे० 'भरण्यु' ।

शरण्यु'—सञ्ज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी ।

शरण्यु'—वि० [स०] रक्षक । पालक । दाता ।

शरत् सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ वर्ष । साल । २. एक ऋतु जो आश्विन आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है । पहले वैदिक काल में यह ऋतु भाद्रपद और आश्विन मास में मानी जाती थी । उ०—वर्षा विगत शरत् ऋतु आई ।—तुलसी (शब्द०) ।

पर्या०—शारदा । कालप्रभात । मेघात । वर्षावसान ।

शरत्'—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शर्त' ।

शरत्'—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शरत्] दे० 'शरत्' ।

शरत्तल्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बाणों की शय्या । शर पजर ।

शरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] बाण फेंकने की क्रिया । तीरदाजी ।

शरत्कामी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरत्कामिन्] कुत्ता । कुक्कुर । श्वान ।

शरत्काल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] 'वर्षा सक्कालि मे तुला सक्कालि तक का अथवा आश्विन और कार्तिक का समय । शरद् ऋतु ।

शरत्त्रियामा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शरत् ऋतु की रात [को०] ।

शरत्पद्म सञ्ज्ञा पुं० [म०] श्वेत पद्म ।

शरत्पर्व—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरत्पर्वन्] आश्विन मास की पूर्णिमा । कोजागर । शरदपूर्णिमा ।

शरत्पुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक क्षुप । आह्वय ।

शरदङ्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरदङ्ग] १ चावुक । २. सरकंडा ।

शरदंडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शरदङ्गा] १. एक प्राचीन नदी का नाम । २. एक प्राचीन देश का नाम ।

शरदत्—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरदत्] शरद ऋतु का अंत अर्थात् हेमन्त ऋतु ।

शरद—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० शरद] दे० 'शरत्' ।

शरदई—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'सरदई' ।

शरदपूर्णिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० शरदपूर्णिमा] कुआर मास की पूर्णमासी । शरद पूर्णिमा ।

शरदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शरद ऋतु । २. वर्ष । साल ।

शरदिन्दु—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरदिन्दु] शरद ऋतु का चंद्र । उ०—प्रतनु शरदिन्दु वर ।—गीतिका, पृ० १२ ।

शरदिज—वि० [स०] जो शरत् ऋतु में उत्पन्न हो ।

शरदुद्भव—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वृत्तपत्र नाम का साग ।

शरदुदिन—सञ्ज्ञा पुं० [म०] बाणों की वर्षा या झड़ी [को०] ।

शरदुदु—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरदिन्दु, हि० शरद + ईदु] शरद ऋतु का चंद्रमा । शरच्चंद्र ।

शरद्वन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शरद ऋतु के मेघ । शरत्काल के बादल [को०] ।

शरद्वचंद्र—सञ्ज्ञा पुं० [म० शरच्चंद्र] शरद ऋतु का चंद्रमा । उ०—शरद्वचंद्र की चांदनी मंद परत सी जान ।—यक्षाकर (शब्द०) ।

शरद्वत्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] शरत् ऋतु । २ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शरद्वसु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शरद्वीप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम जो जलद्वीप भी कहलाता है ।

शरधा ७—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा' । उ०—यदि शरधा हो तो ।—मैला०, पृ० ८८ ।

शरधान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम । २ इस देश का निवासी ।

शरवि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] तीर रखने का चोरा । तूणीर । तरकम ।

शरनाई ७—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शरण] दे० 'शरण' । उ०—यहि मुर्दा का लेहु हँकराई । हम सब तब रहें तुव शरनाई ।—केशर ना०, पृ० १५१५ ।

शरनी ७—वि० स्त्री० [स० शरण] शरण देनेवाली । उ०—अशरण शरनी भवभय हरनी वेद पुरान बखानी ।—पूर (शब्द०) ।

शरनी ७—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शरण] दे० 'शरण' । उ०—तीरथ ब्रत कीन्ह बहू करनी । रूपदास गुरु को गहि शरनी ।—कबीर सा०, पृ० ४२० ।

शरन्मुख—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शरद ऋतु का आरंभ ।

शरन्मेघ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शरत्काल के बादल ।

शरपख—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरपख] जवासा । हिंगुआ । बमासा ।

शरपट्टा ७—सञ्ज्ञा पुं० [स० शर + हि० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र । उ०—असि शर भिडिपाल शरपट्टा ।—गिरधर (शब्द०) ।

शरपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा ।

शरपुख—सञ्ज्ञा पुं० [स० शरपुख] १ नील की तरह का एक प्रकार

का पोवा । सरफाँका । २. वाण या तीर से लगा हुआ पंख ।
३ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यंत्र ।

शरपुखा—सच्चा स्त्री० [स० शरपुखा] दे० 'शरपुख' [को०] ।

शरप्रवेग—सच्चा पु० [स०] तीव्रगामी या तीक्ष्ण वाण [को०] ।

शरफल—सच्चा पु० [स०] वाण का फल या नोक [को०] ।

शरवत—सच्चा पु० [अ०] १ पीने की मीठी वस्तु । रस । २. चीनी
आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क या दवा के काम
आता है । जैसे,—शरवत बनफशा, शरवत आगर । ३ पानी
में घोली हुई शक्कर या खॉड । ४. मुसलमनो को एक रस्म
जो विवाह के पश्चात् शरबन मिलाकर पूरी की जाती है
और उसके बदले में वधू के पक्षियों का कुछ धन दिया जाता
है । ५ सगाई की रस्म । (मुसल०) ।

मुहा०—शरवत पिलाना=व्याह के पहले या बाद में शरवत
पिलाने की रीति । शरवत के प्याले पर निकाह पढ़ाना या
करना=बिना कुछ भी खर्च किए व्याह करना ।

शरवत पिलाई—सच्चा स्त्री० [हि० शरवत + पिलाना] वह वन जो
वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरवत पिलाकर
देते हैं । (मुसल०) ।

शरवती^१—सच्चा पु० [हि० शरवत + ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का
हल्का पाला रंग जिसमें साधारण लाला भी होती है । यह
प्रायः हरसिंगर के फून और शहाव मिलाकर बनाया जाता
है । २. एक प्रकार का नगीना या पालापन लिए लाल रंग का
होता है । ३. एक प्रकार का नीवू जिसे माठा नीवू भी करते हैं ।
ज्वर में लोग प्रायः इसका रस चूमते हैं । चकोतरा । मधुक-
कंटी । ४. एक प्रकार का बढ़िया कड़ा जो तनजब से कुछ
मोटा और अट्टी से कुछ पतला होता है । ५. एक प्रकार का
फालसा जो बड़ा और मोठा होता है ।

शरवती^२—वि० १ रसीला । रसदार । रस भरा हुआ । २. हल्का
गुलाबी ।

शरवती डाँक—सच्चा पु० [हि० शरवती + डाँक] नगीने के नीचे रखने
का शरवती रंग का बहुत पतला चाँदी या तंबी का पत्तर
विशेष दे० 'डाँक' ।

शरवती नीवू—सच्चा पु० [हि० शरवत + नीवू] १. चकोतरा । २.
गलगल । ६. जंबारी नावू । मीठा नावू ।

शरवती फालसा—सच्चा पु० [हि० शरवती + फालसा] एक प्रकार
का फालसा जो बड़ा और मोठा होता है ।

शरवान—सच्चा पु० [स० शर + वान] भूतृण । अग्न्या घास ।

शरबीज—सच्चा पु० [स०] १. सरपत्त के बीज । चारक । २. भद्रपुज ।

शरभग—सच्चा पु० [स० शरभङ्ग] एक प्राचीन महर्षि जो दाक्षिण में
रहते थे । वनवास के समय रामचन्द्र इनके दर्शन करने गए थे ।

शरभ—सच्चा पु० [स०] १. राम का सेना का एक युव-
पति बदर । उ०—ऋषभ शरभ अब नील गवाक्ष
गंधमादन हू पाँचो ।—रघुराज (शब्द०) । २. दिड्ढा ।

३ हाथी का बच्चा । ४ विष्णु । ५ ऊँट । ६ एक
प्रकार का पक्षी । ७ आठ पैरोंवाला एक कलित मृग । कहते
हैं, यह सिंह से भी अधिक बलवान् होता है । ८. एक वृत्त
का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता
है । इसे 'शशिकला' और 'पशुपुण्ड्र' भी कहते हैं । ९ दोहे का
एक भेद जिसमें बौस गुरु और आठ लघु मात्राएँ होती हैं
१०. शेर । सिंह । ११. दनुज के एक पुत्र का नाम । १२.
महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम ।

शरभता—सच्चा स्त्री० [स०] शरभ का भाव या धर्म । शरभत्व ।

शरभलील—सच्चा पु० [स०] सगीत में ताल का एक भेद [को०] ।

शरभा—सच्चा स्त्री० [स०] १ शुक्र अवयववाली और विवाह के
अयोग्य कन्या । २ लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र ।

शरभू—सच्चा पु० [स०] कार्तिकेय ।

शरभृष्टि—सच्चा स्त्री० [स०] वाण की नोक [को०] ।

शरभेद—सच्चा पु० [स०] वाण का घाव [को०] ।

शरभेश्वर—सच्चा पु० [स०] एक शिवलिंग का नाम ।

शरम—सच्चा स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा । हया । गैरत ।

क्रि० प्र०—आना ।—करना ।—रखना ।—होना ।

मुहा०—शरम से गडना=मारे लज्जा के दवे या झुके जाना ।
बहुत लज्जित होना । शरम से पानी पानी होना=बहुत लज्जित
होना ।

२ लिहाज । सकोच । ३ प्रतिष्ठा । इज्जत ।

मुहा०—शरम रखना=इज्जत रखना । लाज रखना । शरम
रहना=प्रतिष्ठा रहना । आबरु रहना ।

शरमनाक—वि० [फा० शर्मनाक] लज्जाजनक । शर्मनाक ।

शरमल्ल—सच्चा पु० [स०] १ शारिका पक्षी । मैना । २. वह जो
तीर चलाने में निपुण हो । धनुर्धारी ।

शरमसार—वि० [फा० शर्मसार] १. जिसे शर्म हो । लज्जावाला ।
हयादार । २. लज्जित । शरमिदा । ३ पछतानवाला [को०] ।

शरमसारी^१—सच्चा स्त्री० [फा० शर्मशारा] १. शरमिदा होने का भाव
या क्रिया । २. लज्जा । शरामदग । ३. पछतावा ।
पश्चात्ताप [को०] ।

शरमसारी^२—सच्चा पु० वह जो वास्तव में लज्जा या मुरब्बत न करता
हा, कवल किता के सामने आ जान पर लज्जा या मुरब्बत
करता हो । मुँह देख का लज्जा करनेवाला ।

शरमहुजूरी—सच्चा स्त्री० [अ० शर्म + फा० हुजूर] ऐसा लज्जा या
मुरब्बत जो वास्तविक न हा, कवल किता के सामने आ जान
से उत्पन्न हो । मुँह देख का लाज ।

शरमाऊँ—वि० [हि० शरम + आऊँ (प्रत्य०)] जित बहुत लज्जा
मालूम होता हो । शरमोला ।

शरमाना—क्रि० अ० [अ० शर्म + हि० आना (प्रत्य०)] शरमिदा होना ।
लाज्जित होना । लाज करना । हया करना । जैसे,—व तुम्हारा

सामने शरमाते हैं। उ०—वह न शरमावे कब तलक आखिर ।
दोस्ती यारी आशनाई है।—कविता को०, भा० ४, पृ०, १६६।

शरमाना^१—क्रि० सं० शरमिदा करना। लज्जित करना। जैसे—अप
उन्हे ज्यादा मत शरमाओ।

शरमालू^१—वि० [फा० शर्म+आलू (प्रत्य०)]
दे० 'शरमाऊ'।

शरमा शरमी—क्रि० वि० [फा० शर्म] लज्जा के कारण। शरमिदा
होकर। जैसे,—आप शरमा शरमी साथ हो लिए हैं।

शरमिदगी—सब्बा स्त्री० [फा०] शरमिदा या लज्जित होने का भाव या
धर्म। नदामत। लाज। भय।

मुहा०—शरमिदगी उठाना=ऐसा काम करना जिसमें लज्जित
होना पड़े।

शरमिदा वि० [फा० शरमिदह] जिसे शरम या लज्जा आई हो।
लज्जित।

शरमीला—वि० [फा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शरमीली]
जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। शरम करनेवाला। लज्जालु।

शरयत्रक—सब्बा पु० [सं० शरयत्रक] वह डोरी जिसमें प्राचीन काल
में लिखे हुए ताडपत्रों को ग्रथित किया जाता था। लिखे हुए
ताडपत्रों को नत्थी करने की डोरी [को०]।

शरयू, शरयू—सब्बा स्त्री० [सं०] दे० 'सरयू'।

शरर—सब्बा स्त्री० [अ०] अग्निकण। चिनगारी। स्फुलिंग। उ०—
क्या आग की चिनगारियाँ सीने में भरी हैं। जो आँसू
मेरा आँख से गिरता है शरर है।—कविता को०, भा० ४,
पृ० १६४।

शररवार—सब्बा पु० [अ० शरर+फा० वार] चिनगारी बरसाने-
वाला। उ०—दरवार में वह तेरे शररवार न चमके।—
भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५२२।

शरल^१—सब्बा पु० [सं०] दे० 'सरल'।

शरल^२—वि० १ वक्र। टेढ़ा। कुटिन। २ दे० 'सरल'।

शरलक—सब्बा पु० [सं०] जल। पानी।

शरलोमा—सब्बा पु० [सं० शरलोमन्] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने
कई ऋषियों के साथ भारद्वाज जी से आयुर्वेद संहिता लाने के
लिये प्रार्थना की थी।

शरवण—सब्बा पु० [सं०] दे० 'शरवन' [को०]।

शरवणी^१—सब्बा स्त्री० [सं० श्रवण+ई] कान में पहनी जानेवाली छोटे
छोटे दानों की माला। उ०—माला ताहि गले मई दीन्हा।
श्रवण शरवणी बाँधन लीन्हा।—कवीर सा०, पृ० २७०।

शरवन—सब्बा पु० [सं०] १ नरसल या नरकुलो का भुरमुट। २
बृश की चटाई [को०]।

शरवनोद्भव—स्त्री० पु० [सं०] कार्तिकेय।

शरवर्ष—सब्बा पु० [सं०] वाणवृष्टि। वाणों की वीछार [को०]।

शरवाणि—सब्बा पु० [सं०] १ शर का अगला भाग। तीर का

फल। २ वह जो शर चलाकर जीविका निर्वाह करता हो।
तीर चलानेवाला सिपाही। ३ पैदल सिपाही। ४ वाण
बनानेवाला [को०]।

शरवारण—सब्बा पु० [सं०] चर्म या ढाल जिममें तीरों की वीछार
राकी जाती है।

शरवृष्टि^१—सब्बा स्त्री० [सं०] वाणों की वर्षा [को०]।

शरवृष्टि^२—सब्बा पु० [सं०] एक मख्वान् [को०]।

शरव्य—सब्बा पु० [म०] वह जिसपर शर का सबान किया जाय। वह
जो तीर का निशाना बनाया जाय। लक्ष्य।

शरव्यीकरण—सब्बा पु० [सं०] निशाना ठीक करना [को०]।

शरव्रात—सब्बा पु० [म०] वाणों का समूह [को०]।

शरगोर—सब्बा पु० [अ० शर, शर+फा० शार] भगडा। कपाद।
शोर गुन। उ०—फिर न बाकी रहे कोई शरशार। मेह कर
जब कवीर वदियोर।—कवीर म०, पृ० ३७४।

शरसधान—सब्बा पु० [१० शरमन्वान] निशाना लगाना [को०]।

शरसदाव—वि० [सं० शरसम्बाव] वाणों से ढँका हुआ [को०]।

शरस्तव—सब्बा पु० [सं० शरस्तम्ब] १ महाभारत के अनुसार एक
प्राचीन स्थान का नाम। २ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का
नाम। ३ नरकुलो का सचय वा समूह [को०]।

शरह—सब्बा स्त्री० [अ०] १ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को
स्पष्ट करने के लिये किया जाय। २ टीका। भाष्य।
व्याख्या।

यौ०—शरहनवीस, शरहनिगार=व्याख्य कार। टीकाकार।

३ दर। भाव। ४ दे० 'शरह लगान'।

यौ०—शरहनामा=दर या भाव की सूची। निखनामा।
शरहवदी=दर या भाव निश्चित करना। मूल्य पर कटौत
करना। शरह मुख्यन। शरह लगान।

शरहमुग्रयन, शरहमुग्रयन—सब्बा पु० [अ०] वह काश्तकार जा
दामी वदोवस्त क समय से मुकरर एक ही लगान देता हो।
विशेष दे० 'काश्तकार'।

शरह लगान—सब्बा स्त्री० [अ० शरह+हि० लगान] भूकर की दर।
जमीन की पडतो। विधोती।

शरा^१—सब्बा स्त्री० [अ० शरय, या शरीयत का बहु व० 'शराए'] दे०
'शरय'। उ०—शरा का खेल मुहम्मद से कर कहें, यही विष
तुरक तकरीर लावा।—तुरसी० श०, पृ० १५।

शराकत—सब्बा स्त्री० [फा०] १ शरीक या सम्मिलित होने का भाव।
२ साझा। हिस्सेदारी।

यौ०—शराकतनामा=हिस्सेदारी की शर्तवाला दस्तावेज।

शराटि—सब्बा स्त्री० [सं०] टिटिहरी।

शराटिका, शराति—सब्बा स्त्री० [सं०] १ टिटिहरी। २ लज्जालुक।
लजालू। लाजवती।

शराडि, शराति—सब्बा स्त्री० [म०] टिटिहरी। टिटिम।

शराध—सब्बा पु० [सं० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'।

शरापा—सच्चा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप' ।

शरापना(पुं०)—क्रि० सं० [सं० शाप + ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना । शरापना ।

शराफ—सच्चा पुं० [अ० सराफ, गुज० आफ] दे० 'सराफ' ।

शराफत—सच्चा स्त्री० [अ० शराफत] १ शरीफ या सज्जन होने का भाव । भलमनसी । सज्जनता । २ कुलीनता । कुल की शुद्धता (को०) ।

यौ०—शराफत पनाह = शराफत की रक्षा करनेवाला । शरीफ जनों को शरण देनेवाला । शराफत पेशा = उच्च वंश का । कुलीन । शरीफ ।

शराफा—सच्चा पुं० [अ० सराफह] दे० 'सराफा' ।

शराफी—सच्चा स्त्री० [अ० सराफी] दे० 'सराफी' ।

शराब—सच्चा स्त्री० [अ०] १. मदिरा । सुरा । वारुणी । मद्य । दारु । विशेष दे० 'मदिरा' ।

क्रि० प्र०—खीचना ।-ढालना ।-पिलाना ।-पीना ।

मुहा०—शराब का दौर चलना = मदिरा पीने का क्रम चालू रहना । शराब पीते जाना ।

२ हकीमी की परिभाषा में, शरबत । जैसे—शराब बनफशा ।

शराबखाना—सच्चा पुं० [अ० शराब + फा० खानह] शराब बनने तथा बिकने की जगह । वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो ।

शराबखोर—वि० [अ० शराब + फा० खोर] शराब पीनेवाला । मद्यप (को०) ।

शराबखोरी—सच्चा स्त्री० [अ० शराब + फा० खोर + ई (प्रत्य०)] १ शराब पीने का कृत्य । मदिरापान । २ शराब पीने की लत ।

शराबखवार—सच्चा पुं० [अ० शराब + फा० खवार] वह जो शराब पीता हो । मदिरा पीनेवाला । मद्यप । शराबी ।

शराबस्वारी—सच्चा स्त्री० [अ० शराब + फा० स्वारी] शराब पीने की लत (को०) ।

शराबजदा—वि० [अ० शराब + जदह] मत्त । मत्तवाला ।

शराबी—सच्चा पुं० [हिं० शराब + ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो । शराब पीनेवाला । मद्यप ।

शराबेतहूर—सच्चा स्त्री० [अ०] स्वर्ग की पवित्र शराब (को०) ।

शराबोर—वि० [फा०] जल आदि से बिल्कुल भागा हुआ । लथपथ । तरबतर । जैसे—रंग से शराबोर, पानी से शराबोर ।

शरायुध—सच्चा पुं० [सं०] धनुष (को०) ।

शरारत—सच्चा स्त्री० [अ०] शरीर या पाजी होने का भाव । पाजीपन । दुष्टता । बदमाशी । नटखटी ।

शरारती—वि० [अ० शरारत + ई (प्रत्य०)] पाजी । दुष्ट । नटखट ।

शरारि—सच्चा पुं० [सं०] १. राम की सेना का एक द्यूथति बंदर । २ 'शरारिमुख' ।

शरारिमुख—सच्चा पुं० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया जो जलाशयों के पास रहती है ।

शरारी—सच्चा स्त्री० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया ।

शरारीमुखी—सच्चा स्त्री० [सं०] कैची जैसा एक प्राचीन शीजार ।

शरारु—वि० [सं०] १ हानिकारक । २. आघात या चोट पहुँचानेवाला (को०) ।

शरारु—सच्चा पुं० [सं०] चोट या हानि पहुँचानेवाला जानवर (को०) ।

शरारोप—सच्चा पुं० [सं०] जिसपर शर चढ़ाया जाता है, धनुष । जिसपर रखकर तीर चलाते हैं, कमान ।

शरालि, शराली—सच्चा स्त्री० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया ।

शराव—सच्चा पुं० [सं०] १ मिट्टी का एक प्रकार का पुराण । कुल्हड़ । २ वैद्यक में एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौंसठ तोले या एक मेर की हाती थी । (वैद्यक में सेर चौंसठ तोले का ही माना जाता है) । ३ ढक्कन । ढक्कन (को०) ।

शरावक—सच्चा पुं० [सं०] ढक्कन । ढक्कन (को०) ।

शरावती—सच्चा स्त्री० [सं०] १ एक नदी जो आजकल वाणगंगा कहलाती है । २ एक प्राचीन नगरी जो लव की राजधानी थी ।

शरावर—सच्चा पुं० [सं०] १ ढाल । २. कवच । वर्म । ३ तरकश । भाथा । तूणीर (को०) ।

शरावरण—सच्चा पुं० [सं०] ढाल जिससे तीर का वार रोकते हैं ।

शरावाप—सच्चा पुं० [सं०] धनुष । कमान । ३. तूणीर । भाथा (को०) ।

शराविका—सच्चा स्त्री० [सं०] १ वह फुमी जो ऊपर से ऊँचा और बीच में गहरी हो । २. एक प्रकार का कोढ़ ।

शराश्रय—सच्चा पुं० [सं०] तरकश । भाथा । तूणीर (को०) ।

शरास—सच्चा पुं० [सं०] धनुष । उ०—दीखते उनसे विचित्र तरंग है, कोटि शक्रशरास होते भग हैं ।—पाकेत, पृ० ६ ।

यौ०—शक्रशरास = इन्द्रधनुष ।

शरासन—सच्चा पुं० [सं०] १. धनुष । कमान । चाप । २. महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

शरास्य—सच्चा पुं० [सं०] धनुष । कमान ।

शरियत—सच्चा स्त्री० [अ० शरीअत] दे० 'शरीअत' । उ०—उसको छोड़ राह विचार शरियत जिसई कहना । इन्साफ़ उपर सभी काम फरमूद के सूँ रहना ।—दक्कनी, पृ० ५५ ।

शरिका—सच्चा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्रासाद ।

शरिष्ठ(पुं०)—वि० [सं० श्रेष्ठ > शरिष्ठ (वरिष्ठ के वजन पर)] दे० 'श्रेष्ठ' । उ०—कन्या कहउ सुनौ मतिमता । जो शरिष्ठ सोई मम कता ।—सबल (शब्द०) ।

शरी—सच्चा स्त्री० [सं०] एरका या मोथा नाम का तृण ।

शरी—वि० [सं० शरिच्] वाणधारी । वाणयुक्त (को०) ।

शरीअत—सच्चा स्त्री० [अ० शरीअत] १ मुसलमानों के अनुसार वह पथ जो परमात्मा ने अपने भक्तों के लिये निश्चित किया हो । २. धर्मशास्त्र । (मुसल०) । ३. खुला हुआ और चौड़ा रास्ता । राजमार्ग (को०) ।

यौ०—शरीकते मुहम्मदी = मुहम्मद साहब के चलाए हुए नियम वा कानून ।

शरीक^१—वि० [अ०] शामिल । समिलित । मिला हुआ ।

शरीक^२—सब्बा पु० १ वह जो किसी बात में साथ रहता हो । साथी । २ साथी । हिस्सेदार । पट्टेदार । ३ सहायक । मददगार । ४ रिश्तेदार । सबबी । (पश्चिम) ।

यौ०—शरीके जलसा = सभा में उपस्थित लोग । शरीके राय = सहमत । शरीके ह'ल सुख दुख का साथी ।

शरीफ^१—सब्बा पु० [प्र० शरीफ] १ ऊँचे पुराने का व्यक्ति । कुलीन मनुष्य । २ सम्म पुरुष । भना मानुष । भना आदमी । ३ मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि ।

शरीफ^२—वि० १ पाक । पवित्र जैसे,—मिजाज शरीफ । कुरान शरीफ । २ भला । नेक (को०) । ३ शिष्ट । सम्म (को०) । ४. प्रतिष्ठित । सम्मानित (को०) ।

यौ०—शरीफजादा = कुलीन व्यक्ति । शिष्ट एवं कुलीन परिवार का । शरीफजादी = कुलान महिला । ऊँचे खानदान की स्त्री ।

शरीफ^३—सब्बा पु० [अ० शेरिफ] ब्रिटिश शासनकाल में कलकत्ते, बंबई और मद्रास में सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अचैतनिक अधिकारी ।

विशेष—प्रायः नगर के बड़े बड़े रईस और प्रतिष्ठित व्यक्ति कुछ नाश्वर्य के लिये 'शरीफ' बनाए जाते हैं । इनके सुपुत्र शास्त्रज्ञ तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते हैं । यूरोप और अमेरिका आदि में भी इस प्रकार के अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं जिन्हें कुछ शासन संबंधी कार्य भी सौंपे जाते हैं । इनके अधिकार प्रायः माजस्ट्रेटो से कुछ मिलते जुलते होते हैं ।

शरीफा—सब्बा पु० [स० श्रीफल या सीताफल] १. मझाले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध फलवाला वृक्ष ।

विशेष—यह वृक्ष प्रायः सारे भारतवर्ष में फल के लिये लगाया जाता है और मध्य तथा पश्चिमो भारत के जंगली प्रदेशों में बहुत अधिकता से पाया जाता है । कहते हैं, यह वृक्ष बस्ट-इंडोस से यहाँ आया है । इस वृक्ष की छाल पतली और खाकी रंग का, और लकड़ा कुछ मटमैलापन लिए सफेद रंग की होता है । इसका फल अमरुद के फल के सदृश, अंडाकार तथा अनादार होता है । इसमें एक प्रकार के त्रिदल फूल लगते हैं जो नाच का आरंभ हुए होते हैं । ये फूल तरकारी बनाने के काम में आते हैं । यह वृक्ष गरमा के दिना में फूलता है और कार्तिक अग्रहन में इसमें अमरुद के आकार के खाकी रंग के गोल फल लगते हैं । यह वृक्ष बीजों से उगता है और बहुत जल्दी बढ़कर फूलने लगता है । इसके पौधे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तब उखाड़कर दूसरे स्थान पर रोपे जाते हैं । इसका छाल, जड़ और पातों का व्यवहार औषधों में होता है । इसकी छाल बहुत दस्तावर होती है । इसके बीजों में से एक प्रकार का तेल भी निकलता है और इसमें तीन तरह के गोद भी लगते हैं ।

२ इस वृक्ष का फल जो अमरुद के सदृश गोल और खाकी रंग का होता है । श्रेफल । सीताफल । रामसीता ।

विशेष—इसके तल पर आँख के आकार के बड़े बड़े दाने होते हैं जिनके अंदर सफेद गूदा में निपटे हुए कानि लंबोतरे बीज होते हैं । इसका गूदा बहुत माठा होता है, और इसी के लिये यह फल खाया जाता है । अकाल के दिना में गराव लागे प्रायः जंगली शरीफों के फल खाकर निर्वाह करते हैं । वैद्यक में इसे मधुर, हृदय के लिये हितकारी, बलवर्धक, वातकारक, शक्तिवर्धक, वृत्तकारक, सामवर्धक और दाह, पित्त, रक्तापत्त, प्यास, वमन, रुचिरावकार आदि के लिये लाभदायक माना है ।

शरीर^१—सब्बा पु० [स०] मनुष्य या पशु आदि के समस्त अंगों की समष्टि । सिर से पर तक के नव अंगों का समूह । देह । तन । बदन । जिस्म ।

विशेष—'शरीर' शब्द से प्रायः आत्मा से भिन्न और सब अंगों या अवयवों का ही भाव ग्रहण किया जाता है । पर हमारे यहाँ शास्त्रों में शरीर के दो भेद किए गए हैं—सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर । बुद्धि, अहंकार, मन, पांचा ज्ञानेंद्रिया, पाँचों कर्माद्रिया और पंच तन्मात्रों का समूह का सूक्ष्म या लिङ्गशरीर कहते हैं । और, हाथ, पैर, मुँह, सिर, पेट, पाँठ आदि अंगों का समूह स्थूल शरीर कहलाता है । इसी स्थूल शरीर में सूक्ष्म या लिङ्गशरीर का वास होता है । कहते हैं, जब जोव मर जाता है, तब उसका सूक्ष्म शरीर या लिङ्ग शरीर उसके स्थूल शरीर में से निकलकर परलोक का जाता है ।

पर्या०—श्लेवर । गात्र । विग्रह । काय । मूर्ति । तनु । चत्र । पिंड । स्कन्ध । पञ्जर । करण । बन्ध । मुद्गल ।

२ शारीरिक शक्ति (को०) । ३. जीवात्मा (को०) । ४ शव (को०) ।

शरीर^२—वि० [अ०] [सब्बा शरीर] पाजी । दुष्ट । नटखट ।

शरीरक—सब्बा पु० [स०] १ शरीर । तन । गात्र । २ लघु या छोटा शरीर । ३. आत्मा (को०) ।

शरीरकर्ता—सब्बा पु० [स० शरीरकर्तृ] १. शरीर को बनानेवाला, परमेश्वर । सृष्टिकर्ता । २ पिता । जनक (को०) ।

शरीरकृत—सब्बा पु० [म०] १ परमेश्वर । २ पिता (को०) ।

शरीरग्रहण—सब्बा पु० [स०] शरीरयुक्त होना या जन्म लेना (को०) ।

शरीरज—सब्बा पु० [स०] १ राग । बीमारो । २. कामदेव । ३. कामवासना । कामेच्छा (को०) । ४ पुत्र । लडका । बेटा ।

शरीरज—वि० शरीर से उत्पन्न ।

शरीरता—सब्बा को० [स०] शरीर का भाव या वर्म ।

शरीरत्याग—सब्बा पु० [स०] मृत्यु । मौत ।

शरीरत्व—सब्बा पु० [स०] शरीर का भाव या वर्म । शरीरता ।

शरीरदंड—सब्बा पु० [स० शरीरदण्ड] १ शारीरिक दंड । काय-वलेश (को०) ।

शरीरदेश—सज्ञा पु० [स०] शरीर का कोई अवयव या अंग [को०] ।

शरीरधर्म—सज्ञा पु० [अ० शरीर + धर्म] चेष्टा । शरीरगत लक्षण । अनुभाव । (अ० विम्वस्व) । उ०—वह एक वृत्तिचक्र है, जिसके अतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीरधर्म सबका योग रहता है ।—चित्तामणि, भा० २, पृ० ८८ ।

शरीरधातु—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर का घटक एक मुख्य तत्व ।
२. बुद्ध के शरीर का अवशेष (जैसे दात, हड्डी, बाल आदि) ।

शरीरनिपात—सज्ञा पु० [स०] मृत्यु [को०] ।

शरीरपतन—सज्ञा पु० [स०] १. शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना ।
२ मृत्यु । मौत ।

शरीरपाक—सज्ञा पु० [स०] शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना ।

शरीरपात—सज्ञा पु० [स०] देह का अंत या नाश । शरीरात । देहा-
वसान । मृत्यु । मौत ।

शरीरप्रभव—सज्ञा पु० [स०] पिता । जनक [को०] ।

शरीरवध—सज्ञा पु० [स० शरीरवन्ध] शरीर की बनावट शरीर का
गठन या ढाँचा [को०] ।

शरीरवन्धक—सज्ञा पु० [म० शरीरवन्धक] ओल या प्रतिभू [को०] ।

शरीरवद्ध—वि० [स०] शरीरधारी [को०] ।

शरीरभाज्—वि० [स०] शरीरी । शरीरधारी । जीवधारी ।

शरीरभृत्—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो शरीर धारण किए हो ।
शरीरी । २. विष्णु । ३. जीवात्मा ।

शरीरभेद—सज्ञा पु० [स०] (आत्मा या जीव का) शरीर से भिन्न या
अलग होना । मृत्यु [को०] ।

शरीरयष्टि—सज्ञा पु० [म०] १ शरीर का आकार । २ पतला या
क्षीण शरीर [को०] ।

शरीरयाना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवननिर्वाह के साधन । वे साधन
जिससे जीवन का पोषण हो । उ०—वहाँ वे शरीरयाना के स्थूल
स्वायं से सश्लिष्ट होकर क्लृप्त नहीं होते ।—रस०, पृ०
१४८ । २ जीवन । त्रिदश ।

शरीररक्षक—सज्ञा पु० [स०] वह जो राजा आदि के साथ उनके
शरीर की रक्षा करने के लिये रहता हो । अंगरक्षक ।

शरीररत्न—सज्ञा पु० [स०] भव्य एवं आकर्षक शरीर [को०] ।

शरीरवान्—सज्ञा पु० [स० शरीरवत्] शरीरवाला । देहधारी ।

शरीरविज्ञान—सज्ञा पु० [स० शरीर + विज्ञान] शरीररचना के सभी
अंगों और उपांगों के विवेचन से सबब रखनेवाला विज्ञान ।
शरीरशास्त्र । (अ० एनाटमी) । उ०—पशुओं के शरीर
विज्ञान को भी वे भली भाँति जानते थे ।—पू० म० भा०,
पृ० २७१ ।

शरीरविमोक्षण—सज्ञा पु० [स०] आत्मा का शरीर से अलग होना ।
शरीरत्याग [को०] ।

शरीरवृत्त—सज्ञा पु० [स०] वे पदार्थ जो शरीर का सौंदर्य बढ़ाने के
लिये आवश्यक हों ।

शरीरवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवन निर्वाह करने की वृत्ति ।
जीविका । २. दे० 'शरीरारूपति' ।

शरीरवेग—सज्ञा पु० [स० शरीर + वेग] शरीर की प्राकृतिक आवश्यक-
कता या माँग । उ०—'भाव' मन को वेगयुक्त अवस्थाविशेष
है वह क्षुत्पिपासा कामवेग आदि शरीरवेगों से भिन्न है ।—
रस०, पृ० १६४ ।

शरीरवैकल्य—सज्ञा पु० [म०] शरीर की विकलता । अश्वस्थता [को०] ।

शरीरशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों
नसों, नाड़ियों आदि का विवेचन होता है और जिसमें यह
जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या
काम करता है । शरीरविज्ञान ।

शरीरशुश्रूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] शरीर की सेवा करना । अपनी देह
का सेवा करना । व्यक्तगत सेवा [को०] ।

शरीरशोधन—सज्ञा पु० [स०] वह औषध जो कुपित मल, पित्त,
तथा कफ हो हटाकर उद्ध्वंश अथवा अव्योमार्ग से निकाल दे ।

शरीरसंपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० शरीरसम्पत्ति] शरीर की समृद्धि ।
अच्छा स्वास्थ्य ।

विशेष—शरीरसंपत्ति के भीतर शरीर का सौंदर्य, गठन, उसकी
महाप्राणता, स्वास्थ्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व आदि शरीररचना
के सभी उत्तमोत्तम गुण आते हैं ।

शरीरसंबन्ध—सज्ञा पु० [स० शरीरसम्बन्ध] १ विवाह का संबंध ।
२ नरनारी का परस्पर लैंगिक संबंध [को०] ।

शरीरसंस्कार—सज्ञा पु० [स०] १. गर्भावस्था से लेकर अत्येष्टि तक के
मनुष्य के वेदविहित सोलह संस्कार । २ शरीर की शोभा तथा
मार्जन । नाना प्रकार के अनुष्ठानों द्वारा शरीर को निर्मल
करना [को०] ।

शरीरसाद—सज्ञा पु० [स०] शरीर की कृत्रिमता या धकान । शारीरिक
धकावट [को०] ।

शरीरस्थ—वि० [स०] १ शरीर में रहनेवाला । २. जीवित । जीता
हुआ ।

शरीरस्थान—सज्ञा पु० [स०] शरीर सबंधी मित्रता या तत्त्व [को०] ।

शरीरस्थिति—सज्ञा स्त्री० [म०] १ शरीर का पालन पोषण या
वृत्ति । २ भोजन करना । खाना [को०] ।

शरीरात—सज्ञा पु० [म० शरीरान्त] १ देह का अंत अथवा नाश ।
मृत्यु । देहात । मौत । २ राय । बाल । केण [को०] ।

शरीरांतर—सज्ञा पु० [स० शरीरान्तर] १ दूसरा शरीर । दूसरा जन्म
लेना । २ शरीर का भीतरी भाग [को०] ।

शरीराधीन—वि० [म०] देह के वश में रहनेवाला । शरीर का वश-
वर्ती उ०—रघु वह किस दिग्भक्त में लीन । रघु ध्वनि सी न
शरीराधीन ।—अपरा, पृ० १२१ ।

शरीरार्पण—सज्ञा पु० [म०] किसी कार्य के निमित्त अपने शरीर को
इस प्रकार लगा देना मानों उ० पर अपना कोई स्वत्व ही न
हो । उ०—विद्यो शरीरार्पण परमजा । मत्तन सेवन कियो
बराजा ।—रघुराज (शब्द०) ।

शरीरावरण—सङ्घा पुं० [म०] १ खाल। चमड़ा। २ वर्म। ढाल।
३ शरीर को ढकने की कोई चीज।

शरीरास्थि—सङ्घा पुं० [सं० शरीर + अस्थि] कंकाल। पिंजर।

शरीरी—सङ्घा पुं० [म० शरीरिन्]। [वि० स्त्री० शरीरिणी] १ वह जो शरीर धारण किए हो। शरीरवाला। शरीरवाद्। २ आत्मा। जीव। ३ प्राणी। जीवधारी। ४ मनुष्य (को०)।

शरीरी—वि० १ शरीरधारी। शरीरयुक्त। २ जीवित, जीता हुआ (को०)।

शरीष्ठ—सङ्घा पुं० [सं०] ग्राम का पेड़।

विशेष—संस्कृत व्याकरण के अनुसार यह शब्द साम्प्र नहीं है। इसका साधु रूप शरैष्ठ है।

शरु—सङ्घा पुं० [सं०] १ क्रोध। गुस्सा। २ वज्र। ३ बाण। तीर। ४ प्रायुध। शस्त्र। हथियार। ५ हिंसा। हत्या। मार डालना। ६ वह जो हिंसा करता हो। हिंसक। ७ महाभारत के अनुसार एक गधर्व का नाम। ८ विष्णु (को०)। ९ बाण चलाने का अभ्यास (को०)।

शरु—वि० १ वृत्त पतला। २ जिसका अग्रला भाग बहुत ही छोटा या नुकीला हो।

शरेज—सङ्घा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

शरेष्ट—सङ्घा पुं० [सं०] ग्राम। ग्राम।

शरेष्टपु—वि० [सं० श्रेष्ठ] दे० 'श्रेष्ठ'।

शरैः(७)—सङ्घा स्त्री० [अ० शरअ] दे० 'शरअ'। उ०—परदे पैगवर की सुगी, कायम करी सावित शरै—तुरसी० श०, पृ०, २६।

शर्क—सङ्घा पुं० [अ० शर्क] पूर्व। पूर्व दिशा।

शर्कर—सङ्घा पुं० [सं०] १ कण्ड। २ बालू का कण। ३ जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का प्राणी। ४ पुराणानुसार एक देश का नाम। ५ इस देश का निवासी। ६ दे० 'शर्करा'। ७ एक तरह का ढोल (को०)।

शर्करक—सङ्घा पुं० [सं०] मोठा नीबू। शरवती नीबू।

शर्करकद—सङ्घा पुं० [सं० शर्करकन्] दे० 'शकरकद'।

शर्करजा—सङ्घा स्त्री० [सं०] चीनी।

शर्करा—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ शक्कर। चीनी। खाँड। २ बालू का कण। ३ पथरी नामक रोग। ४ कण्ड। ५ ठीकरा। ६ ककरोली मट्टी। कण्ड से युक्त मट्टी (को०)। ७ खड। टुकड़ा (को०)। ८. पुराणानुसार एक देश का नाम जो कुर्म चक्र के पुच्छ भाग में है। ९. एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें त्रिदोष के कारण मम, शिरा और स्नायु में गाँठ उत्पन्न होती है। गाँठ के फूटने से शहद, घी और चर्बी के समान पद निकलता है और वायु के बढ़ने से अनेक गाँठें उत्पन्न होती हैं।

शर्कराकर्षी—वि० [म० शर्कराकर्षिन्] बालुकायुक्त। बालू, कण्ड आदि को उड़ाने या खींचनेवाला (को०)।

शर्कराक्ष—सङ्घा पुं० [सं०] चरक के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्कराचल—सङ्घा पुं० [म०] पुराणानुसार चीनी का वह पहाड़ जो दान करने के लिये लगाया जाता है।

शर्कराधेनु—सङ्घा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार चीनी की वह गी जो दान करने के लिये बनाई जाती है।

शर्कराप्रभा—सङ्घा स्त्री० [सं०] जंतों के अनुसार एक नरक का नाम।

शर्करा प्रमेह—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र का रंग मिस्री का सा हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा निकलती है।

शर्करावृद्ध—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग। विशेष दे० 'शर्करा'—९।

शर्कराल—वि० [सं०] जो कण्ड से भरी हुई हो (हवा)। ककड़ीलो (आँवी) (को०)।

शर्करावत्—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग। विशेष दे० 'शर्करा'—९।

शर्करावृत्—वि० कँकरीला। कर्क से युक्त। बालुकामय (को०)।

शर्करा सप्तमी—सङ्घा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला सप्तमी।

विशेष—पुराणानुसार उस दिन सुवर्ण का पूजन किया जाता है और उसके आगे घड़े में चीनी भरकर रखी जाती है।

शर्करासव—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार का मद्य या शराब।

विशेष—यह चीनी से तैयार की जाती है। चरक के अनुसार यह स्वादिष्ट, सुगन्धित, पाचक और वायुरोगनाशक है।

शर्करासुरभि—सङ्घा पुं० [सं०] दे० 'शर्करासव'।

शर्करिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शर्करिकी] १ शर्करायुक्त। शर्करा सहित। २ कँकड़ीला (को०)।

शर्करिल—वि० [सं०] दे० 'शर्करावत्'।

शर्करी—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरों का एक वृत्त। इसके कुल १६, ३८४ भेद होते हैं जिनमें १३ मुख्य हैं। २ नदी। दरिया। ३ मेखला। ४ लिखने की कचम। लेखनी।

शर्करी—वि० [म० शर्करिन्] पथरी नामक रोग से आक्रांत। शर्करा रोग से ग्रस्त (को०)।

शर्करीय—वि० [सं०] शर्करा संबंधी। चीनी का।

शर्करोदक—सङ्घा पुं० [सं०] १ चीनी घोला हुआ पानी। शरबत। २ वह शरबत जिसमें इनायची, लौंग, कपूर और गोल मिर्च मिली हो।

विशेष—वैद्यक में इसे दलवर्धक, रुचिकारक, वायु, पित्त तथा रक्तदोष का नाशक और वमन, मूर्च्छा, दाह और तृष्णा आदि को शमन करनेवाला माना गया है।

शर्की—वि० [अ० शर्की] पूरव का। पूर्वोय (को०)।

शर्कर—वि० [स०] तरुण । युवक । जवान [को०] ।

शर्कोटि—सज्ञा पु० [स०] सर्प । सर्प ।

शर्जा—सज्ञा पु० [फा० शर्जह] चीता । शेर । उ०—कमर के ब्यो कहुँ इसके यो शर्जा । कमर को किए सामने शर्जा भी हुर्जा । -दक्खिनी०, पृ० २८० ।

शर्त—सज्ञा स्त्री० [अ०] पहनने का सिला हुआ एक कपड़ा । कमीज ।

शर्तचापिलि—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शर्त—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दो व्यक्तियों या दलों में होनेवाली ऐसी प्रतिज्ञा कि अमुक बात होने या न होने पर हम तुमको इतना धन देंगे, अथवा तुमसे इतना धन लेंगे । बाजी जिसमें हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो । बाजी । दाँव । बदान ।

क्रि० प्र०—जीतना ।—बदना ।—बाँधना ।—रहना ।—लगना ।—हारना ।

२. किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित होनेवाली बात या कार्य जिसके न होने से उस काम में बाधा उपस्थित हो । जैसे,—मैं चलने के लिये तैयार हूँ, पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ चले । (ख) हम इस शर्त पर रुपया देंगे कि आप उसके जिम्मेदार हो । (ग) उन्होंने कई ऐसी शर्तें लगाई हैं कि जिनके कारण काम होना बहुत कठिन है । ३. सधि या समझौता आदि के अग्रभूत नियम । जैसे,—भारत और रूस की सधि की शर्तें इस प्रकार हैं ।

क्रि० प्र०—रखना ।—लगाना ।

मुहा०—शर्त बदकर सोना = देर तक या लंबी नींद सोना । शर्त बदना या बाँधना = बाजी रखना या लगाना । शर्त होना = शर्त या बाजी करना ।

शर्तवद—वि० [अ० शर्त + फा० वद] १. शर्त से युक्त या बँधा हुआ । २. प्रतिज्ञापत्र के अनुसार निश्चित समय तक अनिवार्य मजदूरी करनेवाला । दे० 'गिरमिटिया' ।

शर्तिया—क्रि० वि० [अ० शर्तियह] शर्त बदकर । बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक । जैसे,—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आपका काम जरूर हो जायगा ।

शर्तिया—वि० १ विलकुल ठीक । निश्चित । जैसे,—यह तो इस बीमारी की शर्तिया दवा है । २. अनिवार्य । लाजिम ।

शर्ती—वि० [अ०] १ शर्तवाला । २ शर्तसंबंधी [को०] ।

शर्ती—क्रि० वि० दे० 'शर्तिया' ।

शर्दि—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन नगर का नाम ।

शर्दजह, शर्दजह—सज्ञा पु० [स० शर्दजह] १. वह जो वायुकारक हो । २ माप । उरद [को०] ।

शर्द, शर्द—सज्ञा पु० [स०] १ तेज । शक्ति । २. सेना । फौज । ३ अपान वायु का त्याग करना । पादना ।

शर्दन, शर्दन—सज्ञा पु० [स०] १ अघोवायु । पाद । २ पादने की क्रिया । पादना [को०] ।

हि० अ० ९-४६

शर्बत—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'शरबत' ।

शर्बती—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'शरवती' ।

शर्म^१—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शरम' । उ०—मुद्रा संतीष शर्म पति भोली । गुरुमुखि जोगी तत्तु विरोली ।—प्राणा०, पृ० १०६ ।

मुहा०—शर्म आना, शर्म करना = लाज या लिहाज करना ।

शर्म की बात = लज्जाकारक कार्य । शर्म से गठरी हो जाना = (१) नई बहू का लाज से सिकुड़कर बैठना । (२) लज्जा से गड जाना । शर्म और दया भून खाना = शर्म को जान बूझकर छोड़ देना । उ०—उस छोकरी ने तीखी चितवन करके कहा—ओ मरदूये शर्म और हय भून खाई । ओखें बंद कर ले ।—फिमाना०, भा० ३, पृ० १४६ ।

यौ०—शर्मगाह = (१) गोपनीय या आवृत किए जानेवाले अंग । भग । योनि । शमनाक = लज्जाजनक । शर्मिदा करनेवाला । उ०—प्रत्येक शर्मनाक और जलील स्थिति में वह मनुष्य की निकृष्ट से निकृष्ट भावनाओं का एक कलाकार की पेंती दृष्टि से विश्लेषण करता था ।—प्रेम० और गोकी, पृ० १० । शर्मसार = लज्जित । शर्मिदा । उ०—हूवा और होर आदम कहे यू पुकार । हमे तो मेरे मुक सू है शर्ममार ।—दक्खिनी०, पृ० ३३४ । शर्महजूर, शर्महुजूर = दे० 'शरम हजूरी' ।

शर्म^२—सज्ञा पु० [स०] १. सुख । आनंद । २. वह जो सुखी हो । ३ गृह । घर । ४ आशीर्वाद । दुआ । (को०) । ५ रक्षण । रक्षा । आश्रय (को०) ।

शर्मरय—वि० [स०] भाला । रक्षक । शरण देनेवाला [को०] ।

शर्मद, शर्मप्रद^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला । सुखदायक । उ०—कृष्णचंद को प्रिय अधिकारी । शर्मद घरा धर्म धुरधारी ।—कबीर (शब्द०) । (ख) तीर शर्मदा नर्मदा करत भयो नृप वास ।—(शब्द०) ।

शर्मद, शर्मप्रद^२—सज्ञा पु० विष्णु का एक नाम ।

शर्मन्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शर्मा' ।

शर्मर—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का वस्त्र वा पहनावा ।

शर्मरा, शर्मरी—सज्ञा स्त्री० [स०] दारु हल्दी ।

शर्मा—सज्ञा पु० [स० शर्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि । जैसे,—ब्रह्मदेव शर्मा ।

शर्मा^२—वि० आनंदित । प्रसन्न । सुखी ।

शर्माङ्गि—वि० [फा० शर्म + हि० आङ्ग (प्रत्य०)] शर्मनेवाला । शर्मोत्ते स्वभाव का ।

शर्मख्य—सज्ञा पु० [स०] मसूर ।

शर्मना—क्रि० अ०, क्रि० स० [फा० शर्म + हि० आना] दे० 'शरमाना' ।

शर्मलू—वि० [फा० शर्म + हि० आल् (प्रत्य०)] शर्मनेवाला । शरमिला ।

शर्माशर्मी—क्रि० वि० [फा० शर्म] लज्जावश । लज्जापूर्वक ।

शर्मिदा—वि० [फा० शर्मिदह] दे० 'शरमिदा' ।

शर्मिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] दंत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या का नाम

जो शुक्राचार्य की 'न्या देवयानी' की सखी थी। विशेष दे० 'देवयानी'।

शर्मिला—वि० [फा० शर्म + हि० ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शर्मिली] दे० 'शरमीना'।

शर्यं—वि० [स०] हिंन्व। हिंन्क। घातक [को०]।

शर्यं^२—सञ्ज्ञा पुं० १ शत्रु। योद्धा। २ बाण।

शर्यण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वैदिक काल के एक जनपद का नाम जो कुश्चेत्र के अन्तर्गत था।

शर्यणावत्—सञ्ज्ञा पुं० [म०] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।

शर्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ राति। रात। २ उँगली। अँगुली। ३ तीर। इपु। बाण।

शर्याति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मनुष्य। आदमी।

शर्याति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ एक राजा का नाम जिमकी कन्या 'सुन्या' महर्षि च्यवन को व्याही गई थी। २ भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

शरं—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ ऋगडा। कलह। २ दुष्टता। बुराई [को०]। यौ०—शरौफसाद = कलह। भगडा।

शर्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शिव। शकर। महादेव। उ०—यो थल के विनु कष्ट सो नाचत शर्व हरी दुख सर्व तुम्हारे।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० १३५। २ विष्णु।

शर्वक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्वपत्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पार्वती। २. लक्ष्मी।

शर्वपर्वत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कैलास।

शर्वर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अश्वकार। अँवेरा। २ कामदेव। ३ सव्या।

शर्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ रात। रात्रि। निशा। २ साँझ। सव्या। शाम। ३ हन्दी। दरिद्रा। ४ स्त्री। औरत।

शर्वरी^२—सञ्ज्ञा पुं० [स० शर्वरिन्] वृहस्पति के साठ सवत्सरो में से चौतीसवाँ सवत्सर। कहते हैं, इस सवत्सर में दुर्भिक्ष का भय होता है।

शर्वरीक—वि० [स०] नुकसान करनेवाला। हानिकारक।

शर्वरीकर—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ विष्णु। २ चद्रमा [को०]।

शर्वरीदीपक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

शर्वरीनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चद्रमा [को०]।

शर्वरीपति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ चद्रमा। २ शिव। महादेव।

शर्वरीश, शर्वरीश्वर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

शर्वला, शर्वली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] तोमर नामक अस्त्र। लीहदंड [को०]।

शर्वक्षि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वचल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कैलास।

शर्वाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शर्शरीक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. हिंसक। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. घोडा। ४. अग्नि।

शर्शरीक^२—वि० दुष्ट [को०]।

शलकट—सञ्ज्ञा पुं० [स० शलङ्कट] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलकु—सञ्ज्ञा पुं० [म० शलङ्कु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलग—सञ्ज्ञा पुं० [म० गलङ्ग] १ लोकपाल। राजा। प्रभु। २ एक प्रकार का नमक।

शलदा—सञ्ज्ञा पुं० [म०] पाताल गारुडी। जन जमुनी। छिरेंटा। छिरेंटा।

शल^१—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ कस के एक मल्ल का नाम। उ०—और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गए सब भाज।—सूर (शब्द०)। २ ब्रह्मा। ३ ऊँट। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ शल्यराज का एक नाम। विशेष दे० 'शल्यराज'। ६ भाला। ७. साही का काँटा। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोड़कर शल गया। नाम रहे पर काम बराबर चल गया।—साकेत, पृ० १३७। ८ श्रुगी या भृगी जो शिव के पारिवर्तक हैं। ९ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ११ वामुकी के वंश के एक नाग का नाम।

शल^२—वि० [अ० शल] निश्चेष्ट। सुन्न। जो हिलाया न जा सके। उ०—हाथ नट जाय, शल हयेलो हो। उँगलियाँ पोर पोर कट जावें।—चुभते०, पृ० ३६।

शलक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मकड़ी। २ ताल। ताड़ वृक्ष। ३. साही का काँटा। ४ पत्ती [को०]।

शलकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शलगम—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शलगम] दे० 'शलजम'।

शलजम—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक प्रकार का कद शलगम।

विशेष—यह कद प्रायः सारे भारत में जाड़े के दिनों में होता है यह गाजर से कुछ बड़ा और प्रायः गोल होता है और तरकारी, अचार और मुरखे आदि बनाने के काम आता है यूरोप में इससे चीनी भी निकाली जाती है।

शलजमी—वि० [फा० शलगम] १ शलगम जैसा या शलगम से मिलता जुलता। २ शलगम के समान (रंग)।

यौ०—शलजमी आँखें = बड़ी आँखें।

शलभ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ टीडी। टिड्डी। शरभ। २ एक असुर का नाम। ३. पतंगा। फर्तंगा। उ०—किन्तु शलभवर। उसे न छेड़ो, सोने दो उगको उम पार। वही स्वप्न में पा लेगी वह अपने प्रियतम का उपहार।—वीणा, पृ० ३३।

विशेष—कविता में यह प्रेमी का प्रतीक माना जाता है।

४ छप्पय के ३१ वें भेद का नाम। इसमें ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या १५० मात्राएँ होती हैं।

शलभता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] शलभ का भाव या धर्म।

शलभत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शलभ का भाव या धर्म। शलभता।

शलल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ साही। २ साही का काँटा।

शललचंचु—सञ्ज्ञा पुं० [स० शललचञ्चु] शल्लकीलोम या साही काँटी की लेखनी [को०]।

शलाकधूर्त—शला पु० [स०] १, वह जो जलाकाग्रो आदि की महा-
यत्ता से पक्षियों को पकड़ता हो। बिडीमार। बहेलिया। २
वेईयन जुग्राडी (को०)।

शलाका—शला स्त्री० [स०] १ तोहे या लच्छा आदि की लरी सलाई।
सलाख। मोख। २ वह सलाई जिसमें घाव की गहराई आदि
नापी जाती है। ३. बाण। शर। तार। ४ अस्त्र। हड्डी।
५. मदनवृद्ध। मैनफल। ६ निनका। तृण। ७ शारिका
पक्षी। मैना। ८ सलाई। शलाका वृद्ध। ९ सुरमा लगाने की
सलाई। १० खेलने का पामा। ११ वच। वचा। १२
रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगरी का नाम। १३ नली
की हड्डी। १४ मतदान के लिये पत्निया की भाँति काम में
आनेवाली लकड़ी को सलाईयाँ।—उ०—एक पुरुष सदस्यों
को रग रग के लकड़ी की सलाकाएँ बाँट देता था और समझा
देता था कि प्रत्येक रग का अर्थ क्या है।—हिंदु० स०, पृ०
२५६। १५ साँग। नेजा। भाला (को०)। १६।
तीली। जैसे, छत्रशलाका (को०)। १७ तुलिका। कुँचो
(को०)। १८, साही नामक जानवर (को०)। १९ अकुर।
अँबुना (को०)। २० उँगली। जैसे, शलाकानख (को०)। २१.
दात साफ करने की कुँची (को०)। २२ शासक। शास्ता
(को०)। २३ कील। खूँटो (को०)। २४ पिजड़े या खिड़की
आदि का छड़ (को०)। २५ रेखा खींचने की नोकदार
सिलाई (को०)।

शलाका ग्राहपक—सञ्ज्ञा पु० [स०] मतदान के लिये बाँटी हुई शला-
काओं को एकत्रित करनेवाला अधिकारी। उ०—जो
अधिकारी शलाकाग्रो को फिर एकत्रित करते थे उनका
नाम शलाका ग्राहपक होता था।—हिंदु० स०, पृ० २१०।

शलाकाधूर्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शलाकधूर्त'।

शलाका परीक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विद्यार्थी की वह परीक्षा जिसमें
ग्रथ में शलाका डालने से जो पृष्ठ सामने आ जाय उसी की
परीक्षा ली जाती थी।

शलाकापुरुष—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वीरों जैनों के तिरसठ अवतारी
पुरुष। देवपुरुष। जैसे, त्रिपञ्च शलाकापुरुष चरित्र। उ०—
कभी किसी शलाकापुरुष ने ब्राह्मण कुल में जन्म नहीं लिया।
—हिंदु० स०, पृ० २७३।

विशेष—इन शलाकापुरुषों में १२ चक्रवर्ती, २४ जिन, ६ वासु-
देव, ६ बलदेव और ६ प्रतिवासुदेव माने जाते हैं। इस
प्रकार ६३ शलाकापुरुष माने गए हैं।

शलाकायन्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स० शलाकायन्त्र] एक नोकदार शल्योप-
करण (को०)।

शलाख—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] दे० 'सलाख'।

शलाट—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार दो हजार पल का परि-
माण। शकट।

शलाटु—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ कच्चा फल। २. बेल। बिल्व। ३ एक
प्रकार का कद (को०)।

शलाटु—वि० जो पका न हो। कच्चा। अपक्व (को०)।

शलातुर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जनपद का नाम जो पाणिनि
का निवासस्थान था।

शलाथल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलाभोलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] ऊट।

शलालु—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक प्रकार का सुगन्धिद्रव्य।

शली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] साही नामक जंतु जिसके सारे शरीर पर
काँटे होते हैं।

शलीता—सञ्ज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र। दे० 'सलीता'।

शलूका—सञ्ज्ञा पु० [फा०] आधो या पूगे बाँह की एक प्रकार की कुरती
जो प्रायः स्त्रियाँ पहना करती हैं।

शलक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ टुकड़ा। खड। २ छिलका। ३ वृद्ध की
छाल। बत्कल। ४ मछली के ऊपर का छिलका।

शलकल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मछली का छिलका। २ वृद्ध की छाल।
३ छिलका। ४. खड। टुकड़ा।

शलकली—सञ्ज्ञा पु० [स० शलकलिन्] मछली। मत्स्य। मीन।

शलकी—सञ्ज्ञा पु० [स० शलकिन्] मत्स्य। मीन (को०)।

शलप—सञ्ज्ञा पु० [लश०] १ बाढ़। २. वीछार। भरमार। ३.
घडाका। कडाका।

शलपदा, शलपपाँएका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] मेदा नामक अष्टवर्गिय
आप ध।

शलमलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] शालमली वृद्ध। सेमल।

शलमली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शालमली वृद्ध।

शल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मद्र देश के एक राजा का नाम।

विशेष—राजा पांडु की दूसरी स्त्री माद्री (जिसके पुत्र नकुल और
सहदेव थे) के ये भाई थे और इस सबब से ये पांडवों के
मातुल होते थे। द्रौपदी के स्वयंवर के समय ये भीमसेन के
साथ मल्लयुद्ध में हार गए थे। कुल्चेत्र के युद्ध में ये पांडवों
की ओर से लड़ने के लिये जा रहे थे पर दुर्योधन ने अपनी
चातुरी से इन्हें अपनी ओर कर लिया था। फलस्वरूप इन्होंने
दुर्योधन का ही पक्ष ग्रहण किया था। युद्ध के १६ वें और
१७ वें दिन महावीर कर्ण के ये सारथी हुए थे। कर्ण की मृत्यु
के अनंतर १८ वें दिन ये सेनापति बनाए गए थे और युधिष्ठिर
द्वारा मारे गए थे।

२ एक प्रकार का वाण। ३. अस्त्रचिकित्सा। चौरफाड़ का
इलाज। (ग्रँ०) सर्जरी। उ०—सुश्रुत में शल्यचिकित्सा का
चरम उत्कर्ष देखने को मिलता है।—पृ० म० भा०, पृ० २६७।
४ छप्पय के ५६ वें भेद का नाम। इसमें १५ गुह और
१२२ लघु, कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५.
हड्डी। आस्थ। ६ अंजन लगाने की सलाई। शलाका। ७.
मैनफल। मदा वृद्ध। ८. सफेद खर। ९. शिलिः मछना।
१०. लोव। लोघ्र वृद्ध। ११ बेल। बिल्व वृद्ध। १२ साहा
नामक जंतु। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोड़कर शल

गया। नाम रहै पर काम बराबर चल गया।—साकेत, पृ० १३७। १३ साँग नामक अस्त्र। १४ दुर्वाक्य। १५ पाप। १६ जमीन में गड्ढी हुई जानवरो आदि की हड्डियाँ जो मकान बनाने के समय निकालकर फेंकी जाती हैं। १७ जैन सिद्धांत के अनुसार वे भ्रमात्मक धारणाएँ जिनमें वचना धर्माचरण के लिये अनिवार्य माना गया है। उ०—व्रत या धर्म के पालन के लिये तीन तीन शल्यो का अभ्यास आवश्यक है।—हिंदु० स०, पृ० २३२। १८ वे पदार्थ जिनसे शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा या रोग आदि उत्पन्न होता है।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार ये शल्य दो प्रकार के होते हैं—शरीर और आगत। यदि वात, पित्त आदि के दोष से रोएँ, नाखून, शरीर के घातु, अन्न, मल आदि कुपित होकर पीड़ा या रोग उत्पन्न करें तो उसे आगीर शल्य कहते हैं। और इनके अतिरिक्त जो और बाहरी पदार्थ (लोहा, लकड़ी, सींग आदि) शरीर में पीड़ा या रोग उत्पन्न करें, तो उन्हें आगत शल्य कहते हैं।

१९ काँटा। खपची। २० कील। मेख। खूँटी (को०)। २१ घेरा। वाड (को०)।

शल्यकठ—सञ्ज्ञा पु० [स० शल्यकण्ठ] साही नामक जंतु।

शल्यक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ साही नामक जंतु। २ मैनफल। मदन वृक्ष। ३ सफेद खैर। ४ लाल खैर। ५ एक प्रकार की मछली। ६ लोध वृक्ष। ७ वेल। विल्व। ८ भाला (को०)। ९ काँटा (को०)। १० व्याघ्र। बहेलिया (को०)।

शल्यकर्तन—सञ्ज्ञा पु० [स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

शल्यकर्त्ता—सञ्ज्ञा पु० [स० शल्यकर्तृ] वह जो शस्त्रचिकित्सा करता है। चीरफाड़ का इलाज करनेवाला।

शल्यकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी ? या स० शल्यक (= साही) + ई (स्त्री० प्रत्यय)] साही नामक जंतु। उ०—रोम राम वेध्या तनु बाणन। भया शल्यकी सारस दशानन।—रघुराज (शब्द०)।

शल्यक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड़ का इलाज। शस्त्रचिकित्सा।

शल्यचिकित्सा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यज—वि० [स०] व्रण या घाव आदि से उत्पन्न।

शल्यज नाडीव्रण—सञ्ज्ञा पु० [स०] नाडी में होनेवाला एक प्रकार का व्रण या घाव।

विशेष—जब किसी घाव में काँटा या ककड़ आदि पड़कर किसी नाडी में पहुँच जाता और वही रह जाता है, तब जो व्रण होता है, वह शल्यज नाडीव्रण कहलाता है। इसमें घाव में से गरम खून के साथ मवाद निकलता है।

शल्यज मूत्रकुच्छ्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का मूत्रकुच्छ्र। विशेष दे० 'मूत्रकुच्छ्र'।

शल्यतन्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स० शल्यतन्त्र] सुश्रुत के अनुसार आठ प्रकार के तन्त्रों में से एक तन्त्र जिसमें चीरफाड़ के यंत्रों, शस्त्रों, चारों और अग्निर्कर्म आदि के प्रयोगों का वर्णन होता है।

शल्यदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्णिका, शल्यपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्व—सञ्ज्ञा पु० [स० शल्यपर्वन्] महाभारत का नवाँ पर्व (को०)।

शल्यप्रोत—वि० [स०] जिसके शरीर में बाण घुसा हो।

शल्यलोम—सञ्ज्ञा पु० [स० शल्यलोमन्] साही नामक जंतु का काँटा।

शल्यविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड़ की चिकित्सा। सर्जरी।

शल्यशालक—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] फोड़ो आदि की चीरफाड़ का काम।

शल्यशास्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ चिकित्सा शास्त्र का वह अंग जिसमें शरीर में गड़े हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। २ दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यहृत्—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जो कुश कटक आदि की काटकर साफ कर दे। २ शल्यचिकित्सक। चीरफाड़ करनेवाला चिकित्सक। (अं०) सजन।

शल्य्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ मेदा नाम की ओषधि। २. नागवल्ली नाम की लता। ३ विककत वृक्ष। ४ एक प्रकार का नृत्य (को०)।

शल्यारि—सञ्ज्ञा पु० [स०] शल्य को मारनेवाले युधिष्ठिर।

शल्यहरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्यित—वि० [स०] शल्ययुक्त। विद्ध (को०)।

शल्योद्धारण—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्योद्धार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शरीर में लगे हुए बाण या काँटे आदि निकालने की क्रिया। २ वास्तुविद्या के अनुसार नया मकान बनवाने के समय जमीन को साफ करना और उसमें की हड्डियाँ आदि निकलवाकर फेंकवाना।

शल्ल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. चमड़ा। २ वृक्ष की छाल। ३ मेढक।

शल्ल^१—वि० [अ०] १ (अंग) जो दुर्बलता या थकावट आदि के कारण विल्कुल शिथिल, सुस्त या सुन्न हो गया हो। २. काहिल। आलसी (को०)।

शल्लक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शोण वृक्ष। सलई। २ साही नामक जंतु। ३. चमड़ा।

शल्लकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. साही नामक जंतु। २. सलई का वृक्ष।

शल्लकीद्रव—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिलारस। सिल्हक।

शल्लकीरस—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिलारस। सिल्हक।

शल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नाव। नौका।

शल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ साही नामक जंतु। २. शल्लकी का वृक्ष। सलई।

शल्व^(७)—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शल्व'। उ०—निराकरन जब भीष्म किय, तब आँवका उदास। लौट गई अपने भवन, शल्व भूप के पास।—रघुराज (शब्द०)।

शव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मृत शरीर। प्राणरहित देह। लाश। मुर्दा।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के मृत शरीर के लिये होता है।

२ जल । पानी ।

शवकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० शवकर्मन्] मृतक कर्म । दाह आदि मृतक सरकार ।

शवकाम्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कुक्कुर । कुत्ता ।

शवकृत्—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

शवता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] निष्प्राणता । निर्जीवता । उ०—जि० मे सब कुछ ले लेना हो हत । वची क्या शवता ।—वी० श० महा०, पृ० १७३ ।

शवदहन, शवदाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव ।

यौ०—शवदहन स्थान, शवदाह स्थान = मरघट । मसान ।

शवधान—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्रदेश का नाम जिसे शरधान भी कहते हैं ।

शवभस्म—सञ्ज्ञा पु० [स०] चिता का भस्म । मरघट की राख । उ०—शवभस्म विभूषित भूरि गण ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

शवमंदिर—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्मशान । मरघट ।

शवयान—सञ्ज्ञा पु० [स०] अरथी जिसपर शव ले जाते हैं । टिकठी ।

शवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शवरी] १ एक पहाड़ी जंगली जाति ।

विशेष—इस जाति के लोग मोरपख से अपने को सजाते हैं । ये लोग अब तक मध्यप्रदेश और हजारीबाग आदि जिलों में रहते और 'सौर' कहलाते हैं ।

२. शव । ३ जल ।

शवरथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] शवयान । अरथी । टिकठी ।

शवरलोघ्न—सञ्ज्ञा पु० [स०] सफेद लोव ।

शवरालय—सञ्ज्ञा पु० [स०] शवरो का गृह । पक्कण [को०] ।

शवरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी ।

विशेष—सीता जी को ढूँढते हुए रामचंद्र जी इस तपसी के आश्रम में पहुँचे थे । इसने राम की अभ्यर्थना की थी और उन्हीं की अनुमति से उनके सामने ही चिता में प्रविष्ट होकर यह स्वर्ग को सिवारी थी ।

२ शवर जाति की स्त्री ।

शवल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. चीता । चित्रक । २ जल । पानी ।

शवल^२—वि० [वि० स्त्री० शवली] चितकवरी । चित्तल । चीतल ।

शवला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चितकवरी गाय ।

शवलित—वि० [स०] १. मिश्रित । मिला हुआ । २ चित्रविचित्र । चित्रकर्तुर । चितकवरी ।

शवली^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चितकवरी गाय ।

शवली^२—वि० चितकवरी । उ०—अथवा मधुकरो की शवली शवली नवली नलनी के चारों ओर गूँजती जान पड़ती थी ।—श्यामा०, पृ० २५ ।

शवशय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कमल [को०] ।

शवशयनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०] ।

शवशयन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] श्मशान । मरघट ।

शवशिविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अरथी [को०] ।

शवस्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शक्ति । बल । ताकत [को०] ।

शवसमाधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शव को मिट्टी में गाड़ना या पानी में डुबो देना ।

शवसावन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [सञ्ज्ञा स्त्री० शवसाधना] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का सावन ।

विशेष—यह तांत्रिक साधन है जो श्मशान में किसी व्यक्ति के शव या मृत शरीर पर बैठकर अथवा उसे सामने रखकर किया जाता है । कहते हैं, इस प्रकार के साधन से साधक को सिद्धि और अनंत पद प्राप्त होता है ।

शवसान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पथिक । यात्री । २ मार्ग । पथ [को०] । ३ श्मशान । कवरिस्तान [को०] । ४ अग्नि [को०] ।

शवाग्नि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चिता की आग [को०] ।

शवाच्छादन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कफन [को०] ।

शवान्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वह अन्न जो विलकुल खराब हो गया हो और किसी काम का न रह गया हो । २ मनुष्य के शव या मृत शरीर का मांस ।

शवाश—वि० [स०] शव का मांस खानवाली । शवभक्षी [को०] ।

शव्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह कृत्य या उत्सव जो शव को अत्येष्टि क्रिया के लिये ले जाने के समय होता है ।

शव्य^२—वि० शव संबंधी [को०] ।

शव्वाल—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] मुगलमानों का दसवाँ महीना । हिजरी का दसवाँ महीना ।

शश^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ खरहा । खरगोश । २ चंद्रमा का लाछन या कलक । ३ लाघवृक्ष । लोव । ४ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में एक भेद ।

विशेष—रातमजरी के अनुसार जो मनुष्य मृदु वचन बोलता हो, सुशाल, कामलाग, सुंदर केशवाला, सत्यवादी और सकल-गुण-नवान हो, वह शश जाति का माना जाता है ।

५ बाल नामक गंध द्रव्य । गंध रस । ६. मृग । हरिण [को०] ।

शश^२—वि० [फा०] छद्म । पद ।

यौ०—शशखाना = मकान जिसमें छह कोठरियाँ हैं । शशदर = (१) चौसर के खेल में एक घर जहाँ गोटी बंद हो जाती है । (२) चाकत । शशपज = सकाच । उधेड़वुन । शशपहलू = पट्कोण । शशपाया = जिसमें छह पाए हों । शशमाहा = छह मास का । शशमाही = पारमासक । छमाही ।

शशक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. खरगोश । खरहा । २. कामशास्त्रानुसार पुष्प का एक भेद । विशेष दे० 'शश' [को०] ।

शशागानी—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] शश (= छद्म + गानी) चाँदी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य में प्रचलित था । यह लगभग दुग्रन्ती के बराबर होता था ।

शशघातक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शशघाती' ।

शशघाती—सञ्ज्ञा पुं [सं शशघातिन्] बाज या श्येन नामक पक्षी ।
हरगोला ।

शशदर—वि० [फा०] हवका बवका । चवित । आश्चर्यपूर्ण । उ०—
देख लेगा अगर वह हव की तजल्ली तेरे, आइना खानए
मायूसी मे शशदर होगा ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५७ ।

शशघर—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ चद्रमा । २ कपूर । कपूर ।

यौ०—शशघरमुखी = चद्रमा की तरह नुदर मुखवाली । चद्रमुखी ।
शशघरमौलि = शिव । शकर [को०] ।

शशपद—सञ्ज्ञा पुं [सं] खरगोश के पैरों का चिह्न [को०] ।

शशप्लुतक—सञ्ज्ञा पुं [सं] नखत्त [को०] ।

शशविदु—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशविन्दु । १ विष्णु । २ चित्ररथ के एक
पुत्र का नाम । ३ चद्रमा [को०] ।

शशभृत्—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ चद्रमा । २ कपूर ।

यौ०—शशभृत्भुव = शिव । चद्रमौलि ।

शशमाही—वि० [फ०] हर छह महीने पर होनेवाला । छमाही ।
अधवार्षिक ।

शशमुड—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशमुण्ड । वैद्यक में एक प्रकार का रस ।

शशमौलि—सञ्ज्ञा पुं [सं] शिव, जिनके मौलि पर चद्रलाछन है ।

शशयान—सञ्ज्ञा पुं [सं] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम ।

शशरज—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशरजस् । एक प्रकार की विशेष माप ।

शशलक्षण, शशलक्ष्मण—सञ्ज्ञा पुं [सं] चद्रमा ।

शशलाछन—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशलाञ्छन । १ चद्रमा । २. कपूर [को०] ।

शशविदु—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशविन्दु । दे० 'शशविदु' ।

शशविषाण—सञ्ज्ञा पुं [सं] दे० 'शशशृङ्ग' ।

शशशिविका—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] शशशिविका जीवती । डोडी ।

शशशृङ्ग—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशशृङ्ग । कोई असभव और अनहोनी बात ।
बंसा ही असभव कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है ।
आकाशकुसुम की सी असभव बात ।

शशस्थली—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश ।
दोआब ।

शशाक—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्क । १ चद्रमा । २ कपूर । ३. हर्षवर्धन
का समकालीन गुप्तवंशीय एक प्रतापी राजा जो गौड देश का
अधिपति था ।

शशाकज—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कज । वृष जो चद्रमा का पुत्र माना
जाता है ।

शशाकमुकुट—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कमुकुट । शिव । महादेव ।

शशाकमूर्ति—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कमूर्ति । चद्रमा का एक नाम [को०] ।

शशाकलेखा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] शशाङ्कलेखा । चद्रमा की रेखा या
कला [को०] ।

शशाकशत्रु—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कशत्रु । राहु [को०] ।

शशाकशेखर—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कशेखर । महादेव । शिव ।

शशाकसुत—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कसुत । वृष ग्रह जो शशाक या
चद्रमा का पुत्र माना जाता है ।

शशाकार्ध—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कार्ध । १ शिव । २. अर्ध चद्र ।

शशाकार्धमुख—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कार्धमुख । अर्धचद्र के आकार
का वाण [को०] ।

शशाकित—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कित । १ वह जिसमें शश का चिह्न हो ।
चद्रमा । २. वह जो शशाक से युक्त हो ।

शशाकोपल—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्कोपल । चद्रकात मण ।

शशाङ्गुलि, शशाङ्गुली—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] शशाङ्गुलि, शशाङ्गुली
कङ्करी ककडा ।

शशाङ्गु—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशाङ्क । दे० 'शश' ।

शशाद—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ बाज । श्येन पक्ष । २. भागवत के
अनुसार इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम ।

शशादन—सञ्ज्ञा पुं [सं] बाज नाम का पक्षी ।

शशि—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशिन । १ चद्रमा । इदु । २ छप्पय के ५४वें
भेद का नाम । इसमें १७ गुरु और ११८ लघु, कुल १३५ वर्ष
या १५२ मात्राएँ होती हैं । ३ रमण के दूसरे भेद (1155) की
संज्ञा । ४. मोती । ५ एक की संज्ञा । उ०—एहि भाति
कीन्द्या युद्ध शिव शशि मास तब हहरयो हियो ।—रघु-
नाथ (शब्द०) ।

शशिक—सञ्ज्ञा पुं [सं] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन
जनपद का नाम । २. इस जनपद में रहनेवाली जाति ।

शशिकर—सञ्ज्ञा पुं [सं] चद्रमा की रश्मि या किरण ।

शशिकला—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] १ चद्रमा की कला । २. एक प्रकार
का वृत्त । इसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण
होता है । इसका 'मणिगुण' और 'शरम' भी कहते हैं ।

शशिकांत—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशिकान्त । १ चद्रकात मणि । २. कुमुद ।
कोई । बयाला ।

शशिकुल—सञ्ज्ञा पुं [सं] चद्रवश । उ०—शशिकुल छत्र शिरोमणि
आही ।—गर्गसंहिता (शब्द०) ।

शशिकेतु—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक बुद्ध का नाम ।

शशिकोटि—सञ्ज्ञा पुं [सं] द्वितीया के चद्रमा के दोनों नुकासे कोण
या कोटि । चद्रशृंग [को०] ।

शशिक्षय—सञ्ज्ञा पुं [सं] द्वितीया का नया चाँद [को०] ।

शशिखड—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशिखण्ड । १ शिव । महादेव । २.
चद्रमा की कला । ३ एक विद्याधर का नाम ।

शशिखडिक—सञ्ज्ञा पुं [सं] शशिखण्डिक । पुराणानुसार एक देश
का नाम ।

शशिगुह्या—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] मुलेठी ।

शशिग्रह—सञ्ज्ञा पुं [सं] चद्रग्रहण [को०] ।

शशजि—सञ्ज्ञा पुं [सं] चद्रमा का पुत्र, वृष ग्रह । उ०—पथम शुक्र
दूजे रवि शशजिद्व राहु चतुर्थ गवाई ।—रघुराज (शब्द०) ।

शशितनय—सञ्ज्ञा पु० [स०] बुध ग्रह [को०] ।
 शशितिथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पूर्णिमा । पूर्णमासी ।
 शशिदेव—सञ्ज्ञा पु० [स०] राजा रतिदेव का एक नाम [को०] ।
 शशिदेव—सञ्ज्ञा पु० [स०] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता चंद्रमा माने जाते हैं ।
 शशिधर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । २. एक प्राचीन नगर का नाम ।
 उ०—शशिधर नगर जाहु प्रियकारी ।—श० दि० (शब्द०) ।
 शशिध्वज—सञ्ज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक असुर का नाम ।
 शशिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक का नाम [को०] ।
 शशिपर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] परवल । पटोल ।
 शशिपुत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] बुध ग्रह जो चंद्रमा का पुत्र माना जाता है ।
 शशिपुष्प—सञ्ज्ञा पु० [स०] कमल । पद्म ।
 शशिपोषक—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रमा का पोषण करनेवाला, शुक्ल पक्ष ।
 शशिप्रभ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जिसकी प्रभा चंद्रमा के समान हो । २. कुमुद । कोई । ३. मुक्ता । मोती ।
 शशिप्रभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ज्योत्सना । चाँदनी ।
 शशिप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. कुमुद । कोई । २. मुक्ता । मोती ।
 शशिप्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सत्ताइसो नक्षत्र जो चंद्रमा की पत्नियाँ माने जाते हैं ।
 शशिभागा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] राजा मुचकुंद की कन्या का नाम ।
 उ०—सुनत कहेउ पति ते शशिभागा ।—रघुनाथ (शब्द०) ।
 शशिमाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले, शिव । महादेव । उ०—जय सज्जन त्रिपु काल, जयति पाल शशिमाल अज । रघुराज (शब्द०) ।
 शशिभूषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।
 शशिभृत्—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।
 शशिमंडल—सञ्ज्ञा पु० [स० शशिमण्डल] चंद्रमा का घेरा या मंडल ।
 उ०—सब नक्षत्र को राजा दीन्हो शशिमंडल मे छाप ।—सूर (शब्द०) ।
 शशिमणि—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रकांत मणि ।
 शशिमुख—वि० [स०] [वि० स्त्री० शशिमुखी] (वह व्यक्ति) जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो । अति सुंदर, उ०—(क) गग सुनि भक्तन को भयो, अनुराग वश शशिमुख लाल जू को जाइके सुनाइये ।—नाभादास (शब्द०) । (ख) शशिमुख पर धूँधट डाले ।
 शशिमौलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।
 शशिरस—सञ्ज्ञा पु० [स०] अमृत ।
 शशिरेखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चंद्रमा की एक कला ।
 शशिलेखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. चंद्रमा की कला । २. बकुची । सोमराजी । ३. गिलोय । गुरुच ।

शशिवदना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण (॥) और एक यगण (॥५) होता है । इसे चौवसा, चडरसा और पादाकुलक भी कहते हैं । उ०—पिक द्विज देखे । कुपित विधेये । नयन निराते । वचन निवाते ।—गुमान (शब्द०) ।

शशिवदना—वि० स्त्री० चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाली । शशिमुखी ।
 शशिवाटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पुनर्नवा । गदःपूरना ।

शशिगाला (पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शीशा + स० गाला (=आलय)] वह घर जो बहुत से शीशों का बना हुआ हो या जिसमें बहुत से शीशे लगे हुए हों । शीशमहल । उ०—(क) अति उत्तंग मुदग शशिगाला सात मरातिब वोर ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) पूरित सस्य प्रमोद मही सब शशि भूपति शशिगाला ।—रघुराज (शब्द०) । (ग) शशिगाला अत पुरगाला गाला सभा सदन के ।—रघुराज (शब्द०) ।

शशिशेखर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । महादेव । उ०—(क) शिला एक बिच लसत चिह्न तहँ पद शशिशेखर ।—लक्ष्मण (शब्द०) । (ख) शवर मे हुए दिगम्बर अर्चित शशिशेखर ।—अपरा, पृ० ८० । २. एक बुद्ध का नाम ।

शशिशोपक—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रमा को क्षीण करनेवाला, कृष्ण पक्ष ।

शशिसुत—सञ्ज्ञा पु० [स०] चंद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह ।

शशिहासिनी—वि० स्त्री० [स० शशि + हासिनी] चंद्रमा की तरह हँसनेवाली या हासयुक्त (स्त्री) । उ०—मेरा मानस तो शशि-हासिनि तेरी क्रीडा का स्थल है ।—वीणा, पृ० ८ ।

शशिहीरा (पु)—सञ्ज्ञा पु० [स० शशि + हिं० हीरा] चंद्रकांत मणि ।
 उ०—शशिहीरा की एक बात । कलीन कील तब लजानों गत ।—रत्नपरीक्षा (शब्द०) ।

शशी—सञ्ज्ञा पु० [स० शशि] चंद्रमा । उ०—सहजी दसवें दार की कथा सुनीजै सत । तहँ प्रगाम अति घना तहँ शशी अर सुर अनत ।—प्राण०, पृ० १८ ।

शशीश्वर (पु)—सञ्ज्ञा पु० [स० शशिधर] चंद्रमा ।

शशीकर—सञ्ज्ञा पु० [स० शशिकर] चंद्रमा की किरण ।

शशीश—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिव । महादेव । २. कार्तिकेय ।

शश्वत्—अव्य० [स०] १. सर्वदा । हमेशा । अनादि काल से । २. पुनः पुनः । बार बार [को०] ।

शश्वत्—वि० [स० शश्वत्] दे० 'शश्वत' ।

शष्कुल—सञ्ज्ञा पु० [स०] करज ।

शष्कुलि, शष्कुली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. पूरी, पन्वान्न आदि । २. कान का छेद । ३. मीरी मछली । ४. माँड (को०) । ५. करज (को०) । ६. कर्णरोग । कान का रोग (को०) ।

शष्प—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. नई वास । नीली दूब । ३. बौद्धिक चेतना न रहना । प्रतिभाक्षय (को०) । ४. पशम । रोयाँ (बोलचाल) । यौ०—शष्पवृत्ति = कुश की चटाई । शष्पभुक्, शष्पभोजन = घास खानेवाला । पशु ।

शसन—सहा पुं० [मं०] १ यज्ञ के लिये पशुओं की हत्या करना ।
२ वह स्थान जहाँ पशुओं का बलिदान होता हो । ३ वव ।
हिमा । हत्या (को०) ।

शसा(पु)—सहा पुं० [सं० गजक] खगोश । खरना ।

शसि(पु)—सहा पुं० [सं० शशि] दे० 'शशि' ।

शसी(पु)—सहा पुं० [सं० शशि] दे० 'शशि' ।

शस्कुली—सहा स्त्री० [२] दे० 'शकुली' (को०) ।

शस्त—सहा पुं० [मं०] १ शरीर । वदन । जिस्म । २ कन्याएँ ।
मगल । भलाई । ३ अगुनित्राण (को०) । ४ उत्कृष्टता ।
प्रशस्तता । उत्तमता (को०) । ५ बाधक । हथारा (को०) ।

शस्त^१—वि० १ जिमकी प्रशंसा की गई हो । २ अच्छा । उत्तम ।
श्रेष्ठ । ३ प्रशस्त । ४ जो मार डाला गया हो । निहृत ।
५. धायल । जल्मी । चुटैल (को०) । ६ कल्याणयुक्त । मगल-
युक्त । ७ बार बार कहा गया (को०) ।

शस्त^२—सहा पुं० [फा०] १. वह हड्डी या बालो का छन्दा जो तीर
चलाने के समय श्रृंगूठे में पहना जाता है । श्रृंगुलित्राण ।
२ वह जिमपर तीर या गोली आदि चलाई जाती है । लक्ष्य ।
निशाना ।

मुहा०—शस्त बाँधना या लगाना = निशाना बेधने के लिये नीच
या ताक लगाना ।

३ जमीन की पैमाइश करनेवालों की दूरबीन के आकार का वह
यंत्र जिसकी सहायता से जमीन की सीध देखी जाती है ।
४ मछली पकड़ने का काँटा ।

शस्तक—सहा पुं० [सं०] हाथ में पहनने का चमड़े का दस्ताना ।
अगुलित्राण ।

शस्तर(पु)—सहा पुं० [सं० शस्त्र] शस्त्र । हथियार । उ०—दरिया
शस्तर बाँधकर बहुत कहाँ सूर ।—दरिया० बानी, पृ० ११ ।

शस्ति—सहा स्त्री० [मं०] १ स्तुति । स्तोत्र । २ पशमा । तारीफ ।
३ अगुलित्राण (को०) ।

शस्त्र—सहा पुं० [सं०] १ हथियार । आयुध । लोहा । २ उपकरण ।
ओजार । ३ इस्पात । ४ स्तोत्र । ५ बार बार बथन ।
पाठ (को०) ।

शस्त्रक—सहा पुं० [सं०] १ लोहा । लोह । २ इस्पात । चित्रायम ।
पिडायम । मारलोह (को०) । ३ ओजार । शस्त्र (को०) ।

शस्त्रकर्म—सहा पुं० [सं० शस्त्रकर्मन्] धाव या फोड़े में नश्वर
लगाना । फोड़ो आदि की चीर फाड़ का काम ।

शस्त्रकार—सहा पुं० [सं०] हथियार बनानेवाला । शस्त्रों का निर्माण
करनेवाला कारीगर (को०) ।

शस्त्रकेतु—सहा पुं० [सं०] एक प्रकार का केतु जो पूर्व में उदय होता
है । कहते हैं, इसके उदय होने पर महामारी फैलती है ।

शस्त्रकोप—सहा पुं० [सं०] युद्ध । लड़ाई ।

शस्त्रकोश—सहा पुं० [मं०] म्यान (को०) ।

शस्त्रकोशतरु—सहा पुं० [सं०] बड़ा मैनफल ।

शस्त्रकोप—सहा पुं० [सं०] हथियार रखने का खाना । म्यान (को०) ।

शस्त्रक्रिया—सहा स्त्री० [मं०] फोड़ो आदि की चीरफाड़ । नश्वर
लगाने की क्रिया ।

शस्त्रक्षार—सहा पुं० [पुं०] सोहागा (को०) ।

शस्त्रगृह—सहा पुं० [मं०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के शस्त्र आदि
रहते हो । शस्त्रशाला । हथियार घर । मिलहखाना ।

शस्त्रग्रह—सहा पुं० [सं०] युद्ध । लड़ाई (को०) ।

शस्त्रग्राही—वि० [मं० शस्त्रग्राहिन्] हथियार धारण करनेवाला ।
शस्त्रपाणि (को०) ।

शस्त्रचिकित्सा—सहा स्त्री० [मं०] शस्त्र द्वारा उपचार करना ।

शस्त्रचूर्ण—सहा पुं० [मं०] मडूर ।

शस्त्रजीवी—सहा पुं० [सं० शस्त्रजीविन्] योद्धा । सैनिक । सिपाही ।

शस्त्रत्याग—सहा पुं० [सं०] आयुधों का परित्याग । हथियार
डालना (को०) ।

शस्त्रधर—वि०, सहा पुं० [सं०] दे० 'शस्त्रधारी' (को०) ।

शस्त्रधारी—वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र
धारण करनेवाला । हथियारधर ।

शस्त्रधारी^२—सहा पुं० १ योद्धा । सिपाही । सैनिक । २ एक प्रकार
का जंतु जिसे सिलहपोश भी कहते हैं । ३ एक प्राचीन देश
का नाम ।

शस्त्रनिपातन—सहा पुं० [सं०] शल्यक्रिया । चीरफाड़ (को०) ।

शस्त्रन्यास—सहा पुं० [सं०] शस्त्रत्याग । हथियार डाल देना (को०) ।

शस्त्रपाणि^१—वि० [सं०] हथियारधर (को०) ।

शस्त्रपाणि^२—सहा पुं० योद्धा । सिपाही ।

शस्त्रपूत—वि० [सं०] शस्त्रों द्वारा पवित्रकृत । युद्ध क्षेत्र में मारे जाने
से मुक्त (को०) ।

शस्त्रप्रहार—सहा पुं० [मं०] हथियार की चोट (को०) ।

शस्त्रवल—सहा पुं० [मं०] शस्त्र, सेना आदि की शक्ति । सैन्यबल ।
उ०—अगर हम आपको स्वेच्छा से गृह करोड़ों रुपया न दें तो
आप हमसे शस्त्रवल के जरिये छीन सकते हैं ।—अखबार ।

शस्त्रभृत्—सहा पुं० [मं०] वह जो शस्त्र धारण करता हो ।
शस्त्रधारी ।

शस्त्रमार्ज—सहा पुं० [सं०] वह जो हथियार की सफाई करता हो ।
सिक्लीगर (को०) ।

शस्त्रवार्त—सहा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम ।

शस्त्रवार्त^२—सहा पुं० [सं०] शस्त्रजीवी । दे० 'शस्त्रवृत्ति' (को०) ।

शस्त्रविद्या—सहा स्त्री० [सं०] १. हथियार चलाने की विद्या । २
यजुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमें सब प्रकार के शस्त्र
चलाने की विधियों और लड़ाई के मपूर्ण भेदों का वर्णन
दिया गया है ।

शस्त्रविधान—सञ्ज्ञा पु० [स० शस्त्र + विधान] सुरक्षा के लिये शरीर के किसी अंग का शस्त्र जैसा होना । प्रकृतिदत्त आगिक शस्त्रयुक्तता या शस्त्र जैसी स्थिति । उ०—जिन क्षुद्र से क्षुद्र जीवों के शरीर में वचाव के लिये शस्त्रविधान होता है वे बाधा पहुँचने पर आपसे आप सस्कारवश जिधर से बाधा आती हुई जान पड़ती है उस ओर झपट पड़ते हैं ।—रस०, पृ० १६२ ।

शस्त्रवृत्ति—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो शस्त्र आदि चलाकर अपना निर्वाह करता हो । योद्धा । सैनिक । सिपाही ।

शस्त्रशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ बहुत से शस्त्र आदि रखे हो । शस्त्रगृह । शस्त्रागार । सिलहखाना ।

शस्त्रशास्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह शास्त्र जिसमें हथियार चलाने आदि का निरूपण हो । २ धनुर्वेद ।

शस्त्रहत—सञ्ज्ञा पु० [म०] वह जिसकी हत्या शस्त्र द्वारा हुई हो ।

शस्त्रहत चतुर्दशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी ।

विशेष—इन दोनों चतुर्दशियों को उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रों द्वारा हुई रहती है ।

शस्त्रहस्त—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शस्त्रधारी' ।

शस्त्रागा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शस्त्राङ्गा] खट्टी लोनी या अमलोनी जिसका साग होता है । चागेरी ।

शस्त्राख्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु । २. लोह । लोहा (को०) ।

शस्त्रागार—सञ्ज्ञा पु० [स०] शस्त्रों के रखने का स्थान । शस्त्रशाला । शस्त्रालय । सिलहखाना ।

शस्त्राजीव—सञ्ज्ञा पु० [स०] शस्त्रजीवी । योद्धा (को०) ।

शस्त्राभ्यास—सञ्ज्ञा पु० [स०] शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास । सैनिक शिक्षा में निपुणता (को०) ।

शस्त्रायस—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह लोहा जिससे शस्त्र बनाए जाते हैं । इस्पात । फौलाद । २ लोहा (को०) ।

शस्त्रास्त्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] हाथ में रहनेवाले (शस्त्र) और फेंककर मारे जानेवाले (अस्त्र) हथियार ।

शस्त्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छुरिका । कृपाणी । असिपुत्रिका (को०) ।

शस्त्री—सञ्ज्ञा पु० [स० शस्त्रिन्] १. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो । २ वह जिसके पास शस्त्र हो । शस्त्रसज्ज व्यक्ति ।

शस्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] छुरी । चाकू ।

शस्त्रीकरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] सैनिकों को विविध शस्त्रास्त्रों से सज्जित करना । युद्ध वा शांति के नाम पर सेना और युद्ध सामग्री की प्रवृद्धि । उ०—आज के शस्त्रीकरण में वे भी धीमे धीमे लोप हो रही हैं ।—अखबार ।

शस्त्रोपजीवी—सञ्ज्ञा पु० [स० शस्त्रोपजीविन्] दे० 'शस्त्रजीवी' (को०) ।

शस्त्रप—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शष्प' (को०) ।

शस्त्रय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. नई घास । कोमल वृक्ष । २ वृक्षों का हि० श० ६-४७

फल । ३ खेती । फसल । ४. प्रतिभा की हानि या नाश । ५. धान्य । अन्न । ६ मद्गुण ।

शस्त्रय—वि० १ उत्तम । श्रेष्ठ । अच्छा । २ प्रशंसा के योग्य । तारीफ के लायक । ३ काटकर गिराने योग्य (को०) ।

शस्त्रयक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का रत्न । २. असि । तलवार (को०) ।

शस्त्रयक्षेत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] अनाज का खेत (को०) ।

शस्त्रयन्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] चोरहुली । चोर पुष्पी ।

शस्त्रयन्त्री—सञ्ज्ञा पु० [स० शस्त्रयन्त्रिन्] तून का पेड़ । तूर्णवृक्ष ।

शस्त्रयन्त्री—वि० जिससे शस्त्र का नाश हो ।

शस्त्रयपाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] खेत का रखवाला (को०) ।

शस्त्रयमक्षक—वि० [स०] अनाज या खेत खानेवाला (को०) ।

शस्त्रयमजरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० शस्त्रयमजरी] १ गेहूँ, जौ आदि अनाज की वाली । २. फल का वह अंश जिससे वे डाल से लगे रहते हैं । वृत्त । फल । कांड (को०) ।

शस्त्रयमारी—सञ्ज्ञा पु० [शस्त्रयमारिन्] एक प्रकार का बड़ा मूषक या चूहा (को०) ।

शस्त्रयमाली—वि० [स० शस्त्रयमालिन्] फसल से हरा भरा । लहलाता हुआ (को०) ।

शस्त्रयमक्षक—सञ्ज्ञा पु० [स०] खेती का रखवाला । शस्त्रयपाल (को०) ।

शस्त्रयवेद—सञ्ज्ञा पु० [स०] कृषि संबंधी ज्ञान । कृषि शास्त्र (को०) ।

शस्त्रयशाली—वि० [स० शस्त्रयशालिन्] अन्न से युक्त । धान्य से परिपूर्ण (को०) ।

शस्त्रयश्रुक—सञ्ज्ञा पु० [स०] धान, यव की वाली का नुकीला अंगला भाग (को०) ।

शस्त्रयसपन्न—वि० [म० शस्त्रयसम्पन्न] दे० 'शस्त्रयशाली' (को०) ।

शस्त्रयसपद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शस्त्रयसम्पद्] शस्त्र वा अन्न रूपी संपत्ति । धान्य की अधिकता (को०) ।

शस्त्रयसवर—सञ्ज्ञा पु० [स० शस्त्रयसम्बर] १ शालवृक्ष । २ अश्वकर्ण वृक्ष ।

शस्त्रयहता—वि० [स० शस्त्रयहन्तृ] फसल या खेती को नष्ट करनेवाला (को०) ।

शस्त्रयहता—सञ्ज्ञा पु० एक दैत्य का नाम (को०) ।

शस्त्रयहा—वि०, सञ्ज्ञा पु० [म० शस्त्रयहन्] दे० 'शस्त्रयहन्ता' ।

शस्त्रया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वेद की ऋचा (को०) ।

शस्त्रयागार—सञ्ज्ञा पु० [स०] खलिहान (को०) ।

शस्त्रयारु—सञ्ज्ञा पु० [स०] छोटी शमी ।

शहशा—सञ्ज्ञा पु० [स०] राजाधिराज । शाहशाह ।

शहशाह—सञ्ज्ञा पु० [फा०] बादशाहों का बादशाह । सम्राट् । महाराजाधिराज । शाहशाह ।

शहंशाही—वि० [फा०] शाहों का सा । शाही । राजसी ।

शहंशाही—सच्चा स्त्री० १ शाहशाह का भाव या धर्म । २ शाहशाह का पद । ३ लेने देने में खरापन । (बाजारू) ।

क्रि० प्र०—दिखलाना ।—रखना ।

शह—सच्चा पुं० [फा० शाह का रूढ़ि रूप] १ बहुत बड़ा राजा । बादशाह । २. वर । दुल्हा ।

यौ०—शहवाला ।

शह^२—वि० बड़ा चढ़ा । श्रुतनर ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने के समय उसके आरम्भ में होता है । जैसे,—शहजोर, शहबाज, शहसवार ।

शह^३—सच्चा स्त्री० १ शतरज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से विपक्षी बादशाह उसकी मार में हो । किशन । उ०—राजा पील देइ शह माँगा । शह दै चाहि मरे रथ खागा ।—जायसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—खाना ।—देना ।—बचाना ।—लगाना ।

२ गुप्त रूप से किसी के भडकाने या उभारने की क्रिया या भाव । बढ़ावा । हुशकारी । जैसे,—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते हैं ।

क्रि० प्र०—देना = बढ़ावा देना । उभारना । उ०—मिर्जा साहब ने मुहम्मद अस्करी को अब मैदान खाली पाकर और भी शह दी और चंग पर चढ़ाया ।—सैर०, भा० १, पृ० २३ ।—पाना ।—मिलना ।

३ गुड्डी, पतंग या कनकौवे आदि को धीरे धीरे, डोर ढीली करते हुए, आगे बढ़ाने की क्रिया या भाव ।

क्रि० प्र०—देना ।

शहकार—सच्चा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्कृष्ट कृति [को०] ।

शहकारा—सच्चा स्त्री० [फा०] वदचलन औरत ।

शहखर्च—वि० [फा०] बहुत अधिक व्यय करनेवाला । शाह की तरह खर्च करनेवाला [को०] ।

शहचाल—सच्चा स्त्री० [फा० शह + हिं० चाल] शतरज में बादशाह की वह चाल जो और मोहरो के मारे जाने पर चली जाती है ।

शहजादगी—सच्चा स्त्री० [फा० शहजादगी] शहजादा होने का भाव । राजकुमारपन [को०] ।

शहजादा—सच्चा पुं० [फा० शहजादह] [स्त्री० शहजादी] १. राजपुत्र । राजकुमार । २ राज्य का उत्तराधिकारी । गुबराज ।

शहजादी—सच्चा स्त्री० [फा० शहजादी] दे० 'शाहजादी' । उ०—आज न बस मे, विह्वल रस मे, कुछ ऐसा बेकाबू मन, क्या जादू कर गया नया किस शहजादी का भोलापन ।—ठंडा०, पृ० २५ ।

शहजोर—वि० [फा० शहजोर] बली । बलवान । ताकतवर ।

शहजोरी—सच्चा स्त्री० [फा० शहजोरी] बल । ताकत । जबरदस्ती ।

शहत—सच्चा पुं० [हिं०] दे० 'शहद' ।

शहतारा—सच्चा पुं० [फा०] पितपापड़ा । शाहतरा [को०] ।

शहतीर—सच्चा पुं० [फा०] लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्रायः इमारत के काम में आता है ।

शहतूत—सच्चा पुं० [फा०] तूत नाम का पेड़ और उसका फल । विशेष दे० 'तून' ।

शहद—सच्चा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढ़ा, तरल पदार्थ जो कई प्रकार के कीड़े और विशेषतः मधु-मक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलों के मकरंद से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं । मधु ।

विशेष—शहद अनेक रंग के होते हैं । यह जब अपने शुद्ध रूप में रहता है, तब इसका रंग सफेदी लिए कुछ लाल या पीला होता है । यह पानी में सहज में घुल जाता है । यह बहुत बलवर्धक माना जाता है और प्राण शोधन के माध्यम, दूध में मिलाकर श्रवण या योही खाया जाता है । इसमें फल आदि भी रक्षित रखे जाते हैं, अथवा उनका मुरब्बा ढाला जाता है । योरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि अनेक देशों में इसका जलपान के साथ पर्याप्त प्रयोग होता है । कभी कभी ऐसा शहद भी मिलता है जो मादक या विष होता है । वैद्यक में यह शीतवीर्य, लघु, रुच, धारक, आँखों के लिये हतकारी, अग्निदीपक, स्वास्थ्यवर्धक, वणप्रसादक, चित्त को प्रमत्त करनेवाला, मेवा और वीर्य बढ़ानेवाला, रुचिकारक और कोढ़, ववासीर, खाँसी, कफ, प्रमेह, प्यास, कँ, हिचकी, अतीसार, मलरोध और दाह को दूर करनेवाला माना गया है ।

मूहा०—शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को योही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना । (व्यग्य) । जैसे—उसका दिवाला हो गया, अब आप अपना तमस्सुक शहद लगाकर चाटिए । शहद लगाकर अलग होना = उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना । प्राण लगाकर दूर होना ।

यौ०—शहद की छुरी = जो जवान का मीठा पर दिल का बुरा हो । शहद की मक्खी = (१) मधुमत्सिका । (२) वह जो लोभ के कारण पीछे लगा रहे ।

शहनगी—सच्चा पुं० [अ० शहनग + गी] १. शस्त्ररक्षक का कार्य । २. वह धन या चौकीदार को देने के लिये असामियों से वसूल किया जाता है । चौकीदारी ।

शहना—सच्चा पुं० [अ० शहनह] १. खेत की चौकसी करनेवाला । शस्त्ररक्षक । २. वह व्यक्ति जो जमींदार की ओर से असामियों को बिना पीत दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिये नियुक्त किया जाता है । ३. कोतवाल । नगररक्षक ।

शहनार्ई—सच्चा स्त्री० [फा०] बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का वाजा जो प्रायः रोशनचौकी के साथ बजाया जाता है । नफीरी । २. दे० 'रोशनचौकी' ।

शहनाज—वि० [फा० शहनाज] दुल्हन । नवविवाहिता ।

शहनामा—सच्चा पुं० [फा० शाहनामह] दे० 'शाहनामा' ।

शहर—सब्बा पुं० [फा०] पक्षी का डैना जिसमें पंख या पर होते हैं [को०]।

मुहा०—शहर भाडना = कमजोर और खराब पर गिराने के लिये पक्षियों का अपने डैनों को हिलाना।

शहवाज—सब्बा पुं० [फा० शहवाज] एक प्रकार का शिकारी राज। बड़ा बाज। उ०—किस पर छाड़े निगाह का शहवाज, क्या कर है शिकार को बातें।—कावता को०, भा० ४, पृ० २४। २ वीर। बहादुर। योद्धा।

शहवाजी—सब्बा स्त्री० [फा० शहवाजी] वीरता। बहादुरी।

शहवाला—सब्बा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसका पीछे घाड़ पर बैठकर जाता है। यह प्रायः घर का छोटा भाई या उसका कोई निकट संबंधी हुआ करता है।

शहबुलबुल—सब्बा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—इसका सारा शरीर लाल होता है, कवल कठ काला होता है, और सिर पर सुनहले रंग की चाटा होती है।

शहमात—सब्बा स्त्री० [फा०] १. शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

विशेष—इसमें बादशाह का कमल शह या फिर देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलन के लिये और कोई घर ही नहीं रह जाता। उ०—राजा वह बुद्धि भा, शाह चढ़े शहमात।—जायसी। २. निरुत्तर या चुन कर देनेवाली बात।

शहर—सब्बा पुं० [फा० शहर, शह] मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, जहाँ हर पक्ष के लोग रहते हों और जिसमें अधिकतर पक्के मकान हों। उ०—रघुराज गराव नवाज दोऊ अवलोकन काज चले शहर।—रघुराज (शब्द०)।

मुहा०—शहर की दाई = सबके घर का हाल चाल जानने या रखनेवाला स्त्री।

शहरग—सं० पुं० [फा० शहरग का सन्निहित रूप] शरीर का सबसे बड़ी रंग या नाडा जो हृदय में मिलता है। सुषुम्ना। मुखमना। उ०—यथा भटकता। फिर रहा तू है तलाश पार में। रास्ता शहरग में है। दिलवर पे जान के लय।—तुस्सा० श०, पृ० ५।

यौ०—शहरखबरा = घर घर की या पूरे नगर का हाल चाल रखनेवाला। शहरगघत, शहरगिर्द = (१) पतराज। (२) शहर में घूमनेवाला। शहरदार = नगर का निवासी। शहरपनाह। शहरबद। शहरबदर = दे० 'शहर बशल'। शहर व शहर = (१) एक से दूसरे नगर तक। (२) स्थान स्थान में। जगह जगह। शहरबाश = शहरी। नागरिक। शहरवार। शहरवारी। शहरशमला = जहाँ न्याय का जगह अन्याय होता हो। भँवर नगरी।

शहरपनाह—सब्बा स्त्री० [फा०] नगर के चारों ओर बनी हुई पक्की दीवार। वह दीवार जो किसी नगर के चारों ओर रक्षा के

लिये बनाई जाय। शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगर-कोटा। उ०—गमनत बरात नुहात ऐहि त्रिधि निकट शहरपनाह के।—रघुराज (शब्द०)।

शहरबद—सब्बा पुं० [फा०] १. जेल। कारा। २. दुर्ग। कोट। किला। ३. वह व्यक्ति जिसे राज्य की ओर से शहर में बाहर जाने की आज्ञा न हो। ४. किसी शुभ प्रथम पर होनेवाली शहर की सजावट [को०]।

शहरबदल वि० [फा०] जिसे शहर ने निकाले जाने का दंड मिला हो। निर्वासित।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

शहरयार—सब्बा पुं० [फा०] नृपति। बादशाह। शामर। उ०—तो फिर उसका क्या पूछना है ऐ यार। ओ दोनो जहाँ का हुमा शहरयार।—दक्खिनी०, पृ० २३२।

शहरयारी—सब्बा स्त्री० [फा०] बादशाहत। शहगाही। शाही दबदबा [को०]।

शहराती—वि० [फा० शहर + हि० आती (प्रत्य०)] नागरिक। शहर का निवासी। शहरी। उ०—आज हम शहरातिया को, पालतू मालच पर मँवरो जुझे के फून से।—हरी रास०, पृ० ५८।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर से सम्बन्ध रखनेवाला। शहर का। २. शहर का रहनेवाला। नगर का निवासी। नागरिक। ३. नन्य शिष्ट [को०]।

शहवत—सब्बा स्त्री० [फा०] १. कामानुरता। काम का उद्रेक। स्वा-प्रसंग की प्रबल आकांक्षा। उ०—ना जोर ना मर्द है ना शहवत ना साख। ना माय ना बाप है ना वेदा ना आज्ञ।—दक्खिनी०, पृ० ३८४।

क्रि० प्र०—उठना।—होना।

२. भोग। बलाव। विषय। मँथन।

यौ०—शहवतरस्त = कामुक। भागा। विरगा। शहवतरस्ता = कामुकता। एवासी।

शहवात—सब्बा स्त्री० [फा० शहवत का बहुवचन] इच्छाएँ। काम-वासनाएँ। उ०—यह कहन का हा ह मम आदमे जाद।। क्या शहवात न अकल उनका बरबाद।—स्वार म०, पृ० २०८।

शहसवार—सब्बा पुं० [सं०] वह जो घाट पर अच्छा तरह मवार कर सकता हो। अच्छा सवार। सवारों में चतुर। उ०—यह अच्छे शहसवारों का मात करता है।—फजाना०, भा० ३, पृ० २।

शहादत—सब्बा स्त्री० [फा०] १. गवाही। साक्ष्य।

क्रि० प्र०—गुजरना।—दना।—मिलना।—लना।

२. सबूत। प्रमाण। ३. धर्म या दंत के लिये लड़ाई आदि में मारा जाना। शहाद होना (मुमल०)।

यौ०—शहादतनामा, शहादतगाह = शहाद होने का स्थान। शहादतनामा = (१) वह प्रमाण जिनमें धर्म के लिये शहाद होना का वर्णन हो। (२) शहादत का कर्तना या बलि पर लिखा रहता और कतब के साथ रखा जाता है। (३) प्रमाणपत्र। यमद।

शहाना' - सञ्ज्ञा पु० [दे० या फा० शाह] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

विशेष - यह राग फरोदस्त और कान्हडा को मिलाकर बनाया गया है और इसका व्यवहार प्रायः उत्सवों तथा रम्य संबंधी कार्यों में होता है। शास्त्र के अनुसार यह मालकाश राग की रागिनी है। इसके गाने का समय ११ दंड से १५ दंड तक है।

शहाना^२—वि० [फा० शहानह] शाही या बादशाही का सा। राजाओं के योग्य। शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहाना^३—सञ्ज्ञा पु० वह जोड़ा जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है।

यौ०—शहाना जोड़ा = (१) लाल रंग का पहन वा या पोशाक। (२) दूल्हे का जोड़ा जामा जो लाल रंग का होता है। शहाना वक्त = मायकाल। मुहावता समय। शहानी चूड़ो = विवाह के समय दुल्हन के हाथ की लाल रंग की चूड़ियाँ। शहानी मेहंदी = गहरे लाल रंग की मेहंदी। विवाह के अवसर पर दुल्हन के हाथों में लगाई मेहंदी।

शहाना कान्हडा—सञ्ज्ञा पु० [हिं० शहाना + कान्हडा] संपूर्ण जाति का एक प्रकार का कान्हडा राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शहाव—सञ्ज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। उ०—त्योरी में बल वालों के ताव के बदले। खून में रंगना कपडा शहाव के बदले।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० २०३।

विशेष—यह रंग कुसुम के खूब अच्छे और गहरे लाल रंग में आम या इमली की छाल मिलाकर बनाया जाता है।

शहावा—सञ्ज्ञा पु० [फा० शहाव = (गहरा लाल)] दे० 'अगिया बैताल'—२।

शहावी—वि० [फा० शहाव + ई (प्रत्य०)] शहाव के रंग का। गहरा लाल।

शहाबुद्दीन (गोरी)—सञ्ज्ञा पु० [फा०] गजनी का एक शाह जिसने चौहान नरेश पृथ्वीराज (११९७ ई० में) को पराजित कर भारत में मुसलिम साम्राज्य कायम किया।

शहिजदा^७—सञ्ज्ञा पु० [फा० शाहजादह] [खी० शहेजादी] दे० 'शहजादा'। उ०—(क) पट्यों कवरु नाम जह, शाहजादा को शाह।—रघुराज (शब्द०)। (ख) रहा शाह का एक शाहजादी। लखि सा मूरत छवि मरयादा।—रघुराज (शब्द०)।

शही—वि० [फा०] शाही। राजा का। राजा संबंधी [को०]।

शहीद—सञ्ज्ञा पु० [अ०] वह व्यक्ति जो धर्म या इसी प्रकार के और किसी शुभ कार्य के लिये युद्ध आदि में मारा गया हो। न्योत्रावर या वलिदान देनेवाला व्यक्ति।

शहीद मर्द—सञ्ज्ञा पु० [अ० शहीद + फा० मर्द] धर्म या ईश्वर के नाम पर जान देनेवाला [को०]।

शहीदाना—वि० [फा० शहीदानह] शहीद के ढग का। शहीदों जसा। उ०—शहीदाना तनुओं से भरा हुआ, विषयकता से रहित व्यक्ति, अपना शहीद प्रवृत्ति के लिये, काल और पात्र

की उपयुक्तता अनुपयुक्तता के लिये नहीं ठहरता।—शुक्ल अभि० ग्र० (जी०), पृ० ५५।

शहीदी—वि० [फा०] १ जो शहीद होने को तैयार हो। रक्त (वर्ण)। लाल।

यौ०—शहीदी जत्था = शहीद होने को तैयार लोगों का समूह। शहीदी तरवूज = एक प्रकार का गहरा लाल तरवूज। उ०—तुम आप जाओ और एक अच्छा सा शहीदी तरवूज देख कर लाओ।—कविता को०, भा० ४, पृ० २६१।

शहीदेकर्वला—सञ्ज्ञा पु० [फा०] कर्वला के युद्ध में शहीद होनेवाले, हज़रत इमाम हुसैन।

शहना—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ चौकोदार। २ कोनवाल। ३ शस्यपाल [को०]।

शहनाई—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शहनगी'।

शाकर—वि० [स० शाङ्कर] १ शंकर संबंधी। २ शंकराचार्य का। जन्म,—शाकर भाष्य, शाकर व्रत।

शाकर^२—सञ्ज्ञा पु० १ वृष, साँड़। ३ शंकराचार्य का अनुयायी। ३ आर्द्रा नक्षत्र, जिसके देवता शिव जी माने गए हैं। ४ एक छंद का नाम। ५ सोमलता का भेद।

शाकरि—सञ्ज्ञा पु० [स० शाङ्करि] १ शिव के पुत्र, गणेश। २. कार्ति-केय। ३ अग्नि। ४ एक मुनि का नाम। ५ शमी का पेड़।

शाकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्करी] शिव द्वारा निर्धारित अक्षरों का क्रम। शिवसूत्र। माहेश्वर सूत्र।

शाकित—सञ्ज्ञा पु० [स० शाङ्कित] चोरक नामक गंधद्रव्य।

शाकुची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्कुची] शकुची मछली।

शाख^१—सञ्ज्ञा पु० [स० शाख] शख की ध्वनि।

शाख^२—वि० शख संबंधी। शख बा बना हुआ।

शाखायन—सञ्ज्ञा पु० [स० शाङ्खायन] एक गृह्य और श्रौत सूत्रकार ऋषि जिनका कोशातकी ब्राह्मण भी है।

शाखारि—सञ्ज्ञा पु० [स० शाङ्खारि] शख वेचनेवाली जाति।

शाखिक^१—वि० [स० शाङ्खिक] [वि० स्त्री० शाखिकी] १ शख संबंधी। २ शख का बना हुआ।

शाखिक^२—सञ्ज्ञा पु० १ शख बनाने और वेचनेवाला। शाखारि। २ शख बजानेवाला व्यक्ति। ३ एक सकर जाति (को०)।

शाख्य—वि० [स० शाङ्ख्य] १ शख का। शख संबंधी। २ शख का बना हुआ।

शागुष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गुष्ठा] गुफा। दे० 'सागुष्ठा'।

शाची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गी] एक प्रकार का शाक।

शाङ्गदूर्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गदूर्वा] एक प्रकार की दूब। पाक दूर्वा।

शाङ्गकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गकी] एक प्रकार का पशु।

शाङ्गिक—सञ्ज्ञा पु० [स० शाङ्गिक] माँद में रहनेवाला साँड़ नामक जंतु।

शाङ्गिली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गिली] एक ब्राह्मणी जो अग्नि की माता मानकर पूजी जाती थी। (महाभारत)।

शांति—सञ्ज्ञा खी० [स० शान्ति] १. वेग, क्षाम या क्रिया का अभाव । किंसा प्रकार की गति, हलचल या उपद्रव का न होना । स्थिरता । २. नारवता । स्तब्धता । सन्ताटा । ३. चित्त का ठिकाने होना । स्वस्थता । चैन । इनमानान । आराम । ४. रोग आदि का दूर होना । मनावेग, पाड़ा, शारीरिक उपद्रव या विकार आदि का न रह जाना । जैसे—रागशांति, तापशांति, क्रोधशांति । ५. जीवन का चेष्टा का रुक जाना । मृत्यु । मरण । ६. चंचलता का अभाव । धोरता । गभीरता । सम्यता । ७. रागादि की निवृत्ति । वासनाप्राप्त छुटकारा । तृष्णा का क्षय । विराग । ८. एक गार्वा का नाम । ९. दुर्गा । १०. अशुभ या अनिष्ट का निवारण । अमंगल दूर करने का उपचार । जैसे—ग्रहशांति, पापशांति, मूनजाति । ११. क्षुधावृत्ति । क्षुधानिवृत्ति (को०) । १२. सोभाग्य (को०) । १३. युद्धादि का रुक जाना या न होना (को०) । १४. सात्वता । वाक् (को०) ।

शांतिक^१—वि० [म० शान्तिक] शांति संबन्धी । शांति का । शांतिकर ।
 शांतिक^२—सञ्ज्ञा पुं० विपत्ति एव दुष्ट ग्रहों की शांति के लिये किया जानेवाला यज्ञ, पूजन आदि । शांति कर्म ।
 शांतिकर—वि० [स० शान्तिकर] शांति करनेवाला ।
 शांतिकरणीक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिकरणीक] राजाओं में शांति या संधि करानेवाला व्यक्ति ।—वर्ण०, पृ० ८ ।
 शांतिकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिकर्म] बुरे ग्रह, प्रेतवाधा, पाप आदि द्वारा होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार ।
 शांतिकलश—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिकलश] किमो मांगलिक उत्सव या पूजा आदि के समय स्थापित जलपूरा घट [को०] ।
 शांतिकाम—वि० [म० शान्तिकाम] शांति का इच्छुक [को०] ।
 शांतिकारी—वि० [स० शान्तिकारिन्] [वि० स्त्री० शांतिकारिणी] दे० 'शांतिकर' ।
 शांतिकार्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शांतिकर्म' ।
 शातिगृह—सञ्ज्ञा पुं० [शान्तिगृह] यज्ञ के अंत में पाप तथा अशुभ आदि की शांति के लिये, स्नान करने का स्नानागार ।
 शातिघट—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तघट] दे० 'शांतिकलश' ।
 शातिजल—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तजल] यज्ञ, पूजा आदि में शांतिदायक मंत्रपूत जल, जिससे अभिषेक किया जाता है [को०] ।
 शातिद^१—वि० [स० शान्तिद] [वि० स्त्री० शातिदा] शांति देनेवाला ।
 शातिद^२—सञ्ज्ञा पुं० विष्णु ।
 शातिदाता—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिदातृ] [स्त्री० शातिदात्री] शांति देनेवाला ।
 शातिदायक—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिदायक] [स्त्री० शातिदायिका] शांति देनेवाला ।
 शातिदायी—वि० [स० शान्तिदायिन्] [वि० स्त्री० शातिदायिनी] शांति देनेवाला ।
 शातिनाथ—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिनाथ] जैनो के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम ।
 शातिनिकेतन—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्ति + निकेतन] १ शांतिदायक स्थान । २. पश्चिम बंगाल का बोलपुर स्थान जहाँ विश्वकवि ने अंतर-राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना की थी ।
 शातिपर्व—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तपर्व] महाभारत का बारहवाँ और सबसे बड़ा पर्व जिसमें युद्ध के उपरांत युवावृद्धों की चित्तशांति के लिये कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञानवचा हैं ।
 शातिपात्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तपात्र] वह पात्र जिसमें ग्रह, पाप आदि का शांति के लिये जल रखा जाय ।
 शातिप्रद—वि० [स० शान्तप्रद] शांति देनेवाला ।
 शातिप्रिय—वि० [स० शान्तप्रिय] शांति का आभलाषी [को०] ।
 शातिभग—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तभङ्ग] १ शांति का नाश । शारंगुल २. उपद्रव [को०] ।
 शातिमय—वि० [स० शान्तमय] [वि० स्त्री० शातिमयी] शांति से पूरा । शांति से भरा हुआ ।
 शातिमार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तमार्ग] मोक्ष की ओर ले जानेवाला पथ [को०] ।

शांतिवाचन—पद्या पुं० [म० शान्तिवाचन] ग्रह, प्रेतवाधा, पाप आदि से होनेवाले अमंगल का दूर करने के लिये मंत्रपाठ ।
 शांतिवादी—वि० [स० शान्ति + वादिन्] विश्व के राष्ट्रों में परस्पर व्यवहार में शांति का मनकर चलनेवाला । उ०—युद्ध के समय में हमारा दृष्टकाण मद्धातिक दृष्टि ने पूजीवादा, शांतिवादी, अथवा अराजकतावादों से भिन्न है ।—आ० अ० रा०, पृ०, २२ ।
 शातिसंधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शान्ति + सन्धि] परस्पर शांत रहने या संधि न करने का संधि । उ०—शांतिसंधियों और समझौतों में, जिनमें महासगर का अंत होगा ।—आ० अ० रा०, पृ० ८ ।
 शातिसन्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स० शान्तिसन्ध] दे० 'शांतगृह' ।
 शातिहोम—सञ्ज्ञा पुं० [म० शान्तिहोम] अमंगल, पाप, दोषादिके निवारणार्थ किया जानेवाला होम [को०] ।
 शात्वति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शान्त्वति] भारगी । बमनेटी । ब्राह्मण-यष्टिका ।
 शाव—सञ्ज्ञा पुं० [म० शाम्ब] १ एक राजा का नाम । २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । विशेष दे० 'साव' ।
 शावर^१—वि० [म० शाम्ब] १ शवर दंत्य सबंधी । २. सभिर मृग का ।
 शावर^२—सञ्ज्ञा पुं० १ लोच वृक्ष । लोच । २. एक प्रकार का चदन [को०] ।
 शावरशिल्प—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाम्बर शिल्प] इद्रजाल । जादू ।
 शावरिक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाम्बरिक] जादूगर । मायावी ।
 शावरी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाम्बरी] १ माया । इद्रजाल ।
 विशेष—कहते हैं, शवर दंत्य ने पहले इसका प्रयोग किया था, इसी कारण इसका नाम शावरी पड़ा ।
 २ जादूगरनी । मायाविनी ।
 शावरी^२—सञ्ज्ञा पुं० [स० शावरिन्] १ एक प्रकार का चदन । २ लाघ । लाघ । ३ मूसकाना नाम का खता ।
 शावविक—सञ्ज्ञा पुं० [म० शाम्बविक] शव का व्यवसाय करनेवाला ।
 शावव्य—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाम्बव्य] गृह्यसूत्रों में से एक सूत्र । उ०—शावव्य सूत्र और अश्वलायन गृह्यसूत्र में भारत एवं महाभारत का उल्लेख है ।—हिंदु० सं०, पृ० १५३ ।
 शावुक—सञ्ज्ञा पुं० [म० शाम्बुक] घाघा ।
 शावूक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाम्बूक] घाघा ।
 शाभर^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाम्बर] राजपूताने की एक भोल जिसमें साँभर नामक होता है । साँभर भाल ।
 शाभर^२—सञ्ज्ञा पुं० साँभर नामक ।
 शाभव^१—वि० [स० शाम्भव] शम्भु सबंधी । शिव का ।
 शाभव^२—सञ्ज्ञा पुं० १ देवदार वृक्ष । २ कपूर । ३. शिवमल्लिका का पौधा । वसु । ४ गुग्गुल । गुग्गुल ।
 शाभवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाम्बवी] १ नीला दूब । २. दुर्गा । ३. ब्रह्मरथ [को०] । ४. तत्र के अनुसार एक प्रकार का मृदा

जिसमे नेत्र अपलक खुले रहते हैं किंतु बाह्य विषयो के ज्ञान से वे शून्य होते हैं [को०] ।

शाम्भवीय—वि० [स० शाम्भवीय] शिव से संबंधित [को०] ।

शाहर—सञ्ज्ञा पुं० [श्र०] [खी० शाहरा] दे० 'शायर' । उ०—कई तो शाहर जो शेर और गजल बनाते हैं ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७ ।

शाहरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [श्र०] दे० 'शायरी' ।

शाइस्तगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिष्टता । सम्यक्ता । तहजीब । २. भलमनसी । आदमीयत । मनप्यत्व । ३. योग्यता । पात्रता [को०] । ४. सस्कृति । सस्कार [को०] ।

शाइस्ता—वि० [फा० शाइस्तह] १. शिष्ट । सम्यक् । तहजीबवाला । २. विनीत । नम्र । ३. जो अच्छी चाल सीखा हो । अदब कायदा जाननेवाला । शिक्षित । जैसे,—शाइस्ता घोड़ा । ४. उत्तम । श्रेष्ठ [को०] । ५. योग्य । काबिल । पात्र ।

शाकट—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाकट] वधुआ नाम का साग ।

शाकम्भरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शाकम्भरी] १. दुर्गा । २. सांभर नामक प्रदेश या नगर ।

शाकम्भरीय—वि० [स० शाकम्भरीय] सांभर भील से उत्पन्न ।

शाकम्भरीय—सञ्ज्ञा पुं० सांभर नामक ।

शाक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. पत्ती, फूल, फल आदि जो पकाकर खाए जायें । भाजी । तरकारी । साग ।

विशेष—शाक छद्म प्रकार का कहा गया है—(१) पत्रशाक—खोलाई, वधुआ, मेथी आदि, (२) पुष्पशाक—केले का फूल, अगस्त का फूल आदि, (३) फलशाक—बैंगन, करेला आदि, (४) नालशाक—करेमू आदि, (५) कंदशाक—जमीरद, कच्चा आदि, (६) सस्वेदज शाक—डिगरी, भुईंफोड, गोबर-छत्ता आदि । ये शाक अनुक्रम से एक दूसरे में भारी होते हैं । सब प्रकार के पत्रशाक विष्टभकारक, भारी, दृढे, मलकारक, अघोगत, वातकारी तथा शरीर, हड्डी, नेत्र, रुधिर, वीर्य, बुद्धि, स्मरणशक्ति और गति शक्ति का नाश करनेवाले तथा समय से पहले वालो को मफेज करनेवाले कहे गए हैं । परंतु जीवती, वधुआ और खोलाई हानिकारक नहीं हैं ।

२. सागीन का पेड़ । ३. भोजपत्र । भूर्ज वृक्ष । ४. मिरिस का पेड़ । ५. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप । विशेष दे० 'शाकद्वीप' । ६. एक प्राचीन जाति । विशेष दे० 'शक' [को०] । ७. शक राजा शानिवाहन का सम्वत् । ८. शक्ति । बल । ताकत ।

शाक—वि० [स०] १. शक जाति संबंधी । २. शक राजा का । जैसे,—शाक संवत् ।

शाक—वि० [अ० शाक] १. भारी । दूभर । कठिन ।

मुहां—शाक गुजरना = कटकर होना । खलना ।

२. दुष्ट देनेवाला । कडा । [फाम] ।

शाककलंवक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शाककलम्बक] १. प्याज । २.

शाकचुक्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. अमलोनी का माग । नोनिया । २. इमली ।

शाकट—वि० [स०] १. शकट या गाड़ी संबंधी । गाड़ी का । २. गाड़ी में लदा हुआ या जाता हुआ [को०] ।

शाकट—सञ्ज्ञा पुं० १. गाड़ी का रेल या जानवर । २. गाड़ी का वोभ । ३. लिसोडा । लगेरा । ४. धव वृक्ष । ५. खेत । क्षेत्र । जैसे,—शाकशाकट ।

शाकटपोतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पेई या पोय का पीघा ।

शाकटायन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. शकट का पुत्र । २. एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि एवं निरुक्तकार यस्क ने किया है । ३. एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैन में है ।

शाकटिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. गाड़ीवाला । २. गाड़ीवान ।

शाकटिक—वि० [वि० स्त्री० शाकटिकी] दे० 'शाकट' [को०] ।

शाकटीन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. गाड़ी का वोभ । २. प्राचीन काल की एक तौल जो बीम तुला या दो महस्र पल की होती थी ।

शाकतरु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शाकद्रुम' [को०] ।

शाकदीक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] केवल शाक के आशार पर रटना ।

शाकद्रुम—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. वरण वृक्ष । २. सागीन का पेड़ ।

शाकद्वीप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप ।

विशेष—इसमें एक बहुत बड़ा शाक या सागीन का पेड़ माना गया है और यह चारों ओर क्षीरसमुद्र से घिरा हुआ कहा गया है । कहते हैं, इसमें ऋतुव्रत, सत्यव्रत, दानव्रत और अनुव्रत बसते हैं ।

२. ईरान और तुर्किस्तान के बीच में पड़नेवाले उस प्रदेश का नाम जिसमें होकर बलू नदी या आक्मस नदी बहती है । इस प्रदेश में आर्य और शक जातियाँ बसती थी ।

शाकद्वीपीय—वि० [स०] शाकद्वीप का रहनेवाला ।

शाकद्वीपीय—सञ्ज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद । मग ब्राह्मण ।

विशेष—शाकद्वीपीय ब्राह्मणों के जवूद्वीप में पाने की कथा हरिवंश में इस प्रकार मिलती है—एक बार ब्रह्मा के पुत्र माव ने सूर्य का मंदिर बनवाया और नीर यज्ञ करना चाठा । जब उन्हें यह माखून हुआ कि सूर्य को उग्रामनाविधि के अच्छे जाननेवाले शाकद्वीप में मिलेंगे, तब उन्होंने वहाँ में कुछ ब्राह्मण बुनवाए । यह उन समय की बात है जब भारत और ईरान में एक ही आर्य सभ्यता प्रचलित थी और एक देश के ऋत्विज दूसरे देश में जाकर उगावर यज्ञ कराया करते थे । फारस में यज्ञ करनेवाले पुरोहित 'मग' कहलाते थे, इसी से इन शाकद्वीपीय ब्राह्मणों को 'मग ब्राह्मण' भी कहते थे ।

॥ ३० पुं० [स०] १. एक मुट्ठी का पन्चमाण । २. एक मुट्ठी या सज्जी [को०] ।

॥ ३० पुं० [स०] सहिजन । सोभान्न वृक्ष ।

शाकपार्थिव—सञ्ज्ञा पु० [म०] सवत् चलाने का इच्छुक एक राजा ।

शाकपूर्णि, शाकपूर्णि—सञ्ज्ञा पु० [स०] वेद का भाष्य करनेवाले एक प्राचीन ऋषि ।

शाकवालेय—सञ्ज्ञा पु० [म०] ब्रह्मयष्टि । भारगी [को०] ।

शाकविल्व, शाकविल्वक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैगन । भटा । भांटा ।

शाकभक्ष—वि० [स०] याम न खानेवाला । शाकाहारी ।

शाकयोग्य—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] धनिया । धान्याक ।

शाकराज—सञ्ज्ञा पु० [स०] वथुग्रा । वास्तूक साग ।

विशेष—निर्दोष होने के कारण वथुग्रा शाको का राजा कहा गया है ।

शाकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'शाकारी' ।

शाकल^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाकली] १ शाकल नामक द्रव्य से रंगा हुआ । २ खड या अश सबधी ।

शाकल^२—सञ्ज्ञा पु० १ खड । टुकड़ा । चिप्पड । २ एक प्रकार का साँप । ३ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता । ४ लकड़ी का बना हुआ ताबीज । ५ मद्र देश का एक नगर । ६ पातजलि महाभाष्य के अनुसार वाहीक (पञ्जाब) देश का एक ग्राम । ७ उक्त ग्राम या नगर का निवासी । ८ एक प्रकार का पीताम्ब चदन (को०) । ९ हवन की सामग्री जिसमें जौ, तिल, धी, मधु आदि का मेल रहता है ।

शाकल प्रातिशाख्य—सञ्ज्ञा पु० [म०] ऋग्वेद का एक प्रातिशाख्य ।

शाकल शाखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ऋग्वेद का वह शाखा या संहिता जो शाकल्य ऋषि के गौतमों में चली ।

विशेष—अजकन ऋग्वेद की यही शाखा मिलती और प्रचलित है ।

शाकलहोम—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का हवन [को०] ।

शाकलि—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शाकली' ।

शाकलिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाकली] १ टुकड़ा या खड सबधी । अश सबधी । २ शाकल से सबध रखनेवाला [को०] ।

शाकली—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली ।

शाकल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक बहुत प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक थे और जिन्होंने पहले पहल उसका पदपाठ ठीक किया था ।

शाकवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] जीवशाक ।

शाकवरा—सञ्ज्ञा पु० [स०] जीवती या डोडी नामक लता ।

शाकवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] लताकरज । सागर । गोटा ।

शाकवालेय—सञ्ज्ञा पु० [स०] बभनेटी । भारगी । ब्राह्मणयष्टिका ।

शाकवाट, शाकवाटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शाकवाटो, शाकवाटिका] साग सब्जी आदि के लगाने का घेरा हुआ क्षेत्र [को०] ।

शाकविंदक—सञ्ज्ञा पु० [स०] शावविन्दक] वेल का पेड़ ।

शाकवीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वथुग्रा । वास्तूक शाक । २ पुनर्नवा । गदहपूरना । ३ जीवशाक ।

शाकवृक्ष—सञ्ज्ञा पु० सागौन । शाकद्रुम [को०] ।

शाकशाकट, शाकशाकिन—सञ्ज्ञा पु० [स०] शाकसब्जी का खेत । शाकवाट [को०] ।

शाकशाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] वकायन । महानिब वृक्ष ।

शाकश्रेष्ठ—सञ्ज्ञा पु० [म०] वथुग्रा । वास्तूक शाक ।

शाकश्रेष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ जीवती । डाही शाक । २ डोडी । ३ भटा । वैगन । ४ पेठा । भतुग्रा । ५ तरबूज ।

शाकाग—सञ्ज्ञा पु० [स०] शाकाङ्ग] गोल मिर्च । काली मिर्च ।

शाका^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] हरीतकी । हड । हर्द ।

शाका^२—सञ्ज्ञा पु० [म०] शाक (= शक सबधी) शाक सबध । उ०—जिमका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका शाका और सबध है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २२६ ।

शाकाख्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] सागौन का पेड़ ।

शाकाम्ल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ महादा । वृक्षाम्ल । २ इमली ।

शाकाम्लभेद, शाकाम्लभेदक—सञ्ज्ञा पु० [म०] चूक । चुक ।

शाकारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शको अथवा शकारो की भापा, जो प्राकृत का एक भेद है । इसका प्रयोग मृच्छकटिक में द्रष्टव्य है ।

शाकाष्टका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी ।

विशेष—इस दिन पितरो के उद्देश्य से शाक दान किया जाता है ।

शाकाष्टमी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शाकाष्टका' ।

शाकाशन—सञ्ज्ञा पु० [स०] 'शाकाहार' ।

शाकाहार—सञ्ज्ञा पु० [स०] अनाज अथवा, फल, फूल, पत्ते आदि का भोजन । मासहार का उलटा ।

शाकाहारी—वि० [स०] शाकाहारिन्] [वि० स्त्री० शाकाहरिणी] केवल अनाज या साग भाजी खानेवाला । मास न खानेवाला ।

शाकिन—सञ्ज्ञा पु० [स०] खेत । बाड़ी । जैसे, शाकशाकिन = साग का खेत ।

शाकिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वह भूमि जिसमें शाक बोया हुआ हो । साग की ब्यारी । २ एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणों में समझी जाती है । डाइन । चुडैल ।

शाकिर—वि० [अ०] १ कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला । शुक्रगुजार । २ मतोपखनेवाला ।

शाकी—वि० [अ०] १ शकायत करनेवाला । २ नालिश करनेवाला । ३ चुगली खानेवाला ।

शाकुतल—वि० सञ्ज्ञा पु० [स०] शाकुन्तल] दे० 'शाकुन्तलेय' । जैसे अभिज्ञान शाकुतल ।

शाकुतलेय^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] शाकुन्तलेय] १ शकुतला का पुत्र, भरत । २ कालिदासविरचित एक नाटक का नाम ।

शाकुन्तलेय^२—वि० शकुतला सबधी । शकुतला का ।

शाकुंतिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] शाकुन्तिक] चिडीमार । बहेलिया ।

शाकुण—वि० [स०] [स्त्री० शाकुणी] १. अनुतापयुक्त। अनुतप्त।
२. हमरे को पीड़ित करने या ताप देनेवाला। परीपतापी।
परतापक [को०]।

शाकुन—वि० [स०] १ पक्षी सवधी। चिड़ियों का। २ शुभाशुभ
लक्षण सर्वधी। सगुनवाला।

शाकुन—सञ्ज्ञा पु० १ चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया। २ यात्रा
आदि में कुछ विशेष पक्षियों जतुग्रो या और पदार्थों के मिलने से
शुभाशुभ का निर्णय। शकुन। सगुन। ३. शुभाशुभ निर्णय
या सगुन विचार करनेवाला शकुनज (को०)।

शाकुनि—सञ्ज्ञा पु० [म०] बहेलिया।

शाकुनी—सञ्ज्ञा पु० [स० शाकुनिन्] १. मछवाहा। मछली पकड़ने-
वाला। २. एक प्रकार का प्रेत। ३. सगुन विचारनेवाला।

शाकुनेय—वि० [स०] पक्षी सवधी।

शाकुनेय—सञ्ज्ञा पु० १ एक प्रकार का छोटा उल्लू। २ वकासुर
नामक दैत्य। ३. एक मुनि का नाम।

शाकुल—वि० सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'शाकुलिक' [को०]।

शाकुलिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मछवाहा। ५. मछलियों का समूह।

शाकुलिक—वि० मछली सवधी। मछली का [को०]।

शाकद्र—सञ्ज्ञा पु० [स० शाक्रेड] शाकाप्रवर्तक। दे० 'शाकेश्वर' [को०]।

शाक्रेडु—सञ्ज्ञा पु० [स०] ईश्वर का एक भेद।

शाकेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह राजा जिसके नाम से संवत् चले।
जैसे,—युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवहन।

शाकोल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की लता।

शाक्कर—सञ्ज्ञा पु० [स०] बेल। वृष। १० 'शाक्कर'।

शाक्की—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पाँच विभागाएँ।

शाक्त—वि० [स०] १ प्रभाव, प्रताप या शक्ति सवधी। २. दैविक
शक्ति (देवी) सवधी।

शाक्त—सञ्ज्ञा पु० शक्ति का उपासक। तत्रपद्धति से देवी की पूजा
करनेवाला।

विशेष—शाक्तों के पूजन का विधान वैदिक पूजनविधि से भिन्न
होता है। ये ईश्वर का शक्ति का शिव की पत्नी दुर्गा के रूप में
उपासना करते हैं। यह उपासनापद्धति दो प्रकार की है—
दक्षिणाचार। और वामाचार। वामाचारियों या वाममार्गियों की
पूजा में मद्य, मांस, स्त्री आदि पचमकार का व्यवहार होता
है। स्त्रियों की जननेन्द्रिय की शक्ति का प्रतीक मानकर ये लोग
उसकी विशेष रीति से पूजा करते हैं।

शाक्तमत—सञ्ज्ञा पु० [स०] शक्ति के उपासकों का मत या सिद्धांत।
विशेष दे० 'शाक्त'।

शाक्तागम—सञ्ज्ञा पु० [स०] तत्रशास्त्र।

शाक्तिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शक्ति का उपासक। शाक्त। २. शक्ति
नाम का अस्त्य या भाला बाँधनेवाला।

स० श० ६-४८

शाक्तीक—वि० [स०] शक्ति या भाला सवधी।

शाक्तीक—सञ्ज्ञा पु० भाला चलानेवाला।

शाक्तेय, शाक्त्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शक्ति का उपासक। २
पराशर ऋषि का एक नाम (को०)।

शाक्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नेपाल की
तर्गई में बसती थी और जिसमें गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

विशेष—बौद्ध ग्रंथों में शाक्य इक्ष्वाकुवंशी कहे गए हैं। जिस
स्थान में वे रहते थे, उसमें 'जाक' या सागौन के पेड़ अधिक
थे, इसी से उसका 'शाक्य' नाम पड़ा। विद्वानों का अनुमान है
कि लिच्छवियों के समान शाक्य भी व्रात्य क्षत्रिय थे।

२. बुद्ध का एक नाम (को०)। ३. शाक्यवंश शुद्धोदन जो बुद्ध
के पिता थे (को०)। ४. बौद्ध भिक्षु (को०)।

यौ०—शाक्यकेतु = बुद्ध। शाक्यपुंगव = दे० 'शाक्यमुनि'। शाक्य-
पुत्रोय = बौद्ध यति। शाक्यभिक्षु, शाक्यभिक्षुक = बौद्ध मता-
नुयायी सन्यासी। शक्यमुनि। शाक्यसिंह। शाक्यशामन = बुद्ध
का उपदेश।

शाक्य मुनि, शाक्य सिंह—सञ्ज्ञा पु० [स०] गौतम बुद्ध।

शाक्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ज्येष्ठा नक्षत्र जिमके अधिपति इन्द्र हैं।
२. इन्द्र के निमित्त अर्पित हवि आदि (को०)।

शाक्र—वि० शक्र सवधी। इन्द्र सवधी। शक्र का [को०]।

शाक्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २. इन्द्राणी। शक्रपत्नी। शची।

शाक्वर—वि० [स०] शक्तिशाली। पराक्रमी। बलवान्।

शाक्वर—सञ्ज्ञा पु० १ इन्द्र। २. इन्द्र का वज्र। ३. साँड़। बेल।
४. प्राचीन काल की एक रीति या सस्कार।

शाख—सञ्ज्ञा पु० [म०] १ कृत्तिग का पुत्र कार्तिकेय। २. भाग।
३. करज।

शाख—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शख] १ टहनो। डाल। टाली।

मुहा०—शाख लगाना = (१) रुजम लगाना। टहनो लगाना।
(२) सिंगो लगाना। (३) पद बढ़ाना। समान करना।
शाख लगाना = घमंड होना। इतराना। शाख निकालना =
दोष देना। कलक लगाना। नुकताचीनी करना। ऋगडा खड़ा
करना। शाख निकालना = ऐश निकालना। ऋगडा निकालना।
वखेडा निकालना।

२. सींग। ३. लगा हुआ टुकड़ा। खड। फाँक। ४. कमान की
लकड़ी (को०)। ५. एक पकवान (को०)। ६. वश। कुल-
परंपरा। ७. नदी आदि की बड़ों धारा में से निकली हुई
छोटी धारा।

शाखचा—सञ्ज्ञा पु० [फा० शाखचद्] छोटी जाखा। टहनो। टाली।
कौंचा (को०)।

यौ०—शाखचावंदी = (१) लाइन लगाना। दोपारोपरा। २.
पेड़ की कलम लगाना।

शाखदार—वि० [फा० शाखदार] १. जिसमें बहुत सी शाखाएँ हों।
टहनोदार। २. सींगवाला। सींगदार।

शाखदार—सच्चा पुं० वह व्यक्ति जो स्त्री की कमाई खाय [को०] ।

शाखशाना—सच्चा पुं० [फा० शाखशानह] १ बाबा । अडचन । पख ।
२ बात में बात । बात का ढग । ३. वहस मुवाहिमा ।
४. एक प्रकार के फकीर जो अपने को घायल कर देने की
घमकी देकर भीख मांगते हैं [को०] ।

शाखा^१—सच्चा स्त्री० [सं०] १ पेड़ के घड़ से चारों ओर निकली हुई
लकड़ी या छड़ । टहनी । डाल । २ शरीर का अवयव । हाथ
और पैर । ३ उँगली । ४ चौखट । वृहत्, पृ० २८१ ।
५ घर का पाख । ६. किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके
भेद । प्रकार । ७ विभाग । हिस्सा । ८. अंग । अवयव । ९.
किसी शास्त्र या विद्या के अंतर्गत उसका कोई भेद । १०.
वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद जो कई ऋषियों ने
अपने गोत्र या शिष्यपरंपरा में चलाए ।

विशेष—शौनक ने अपने 'चरणव्यूह' में वेदों की जो शाखाएँ
गिनाई हैं, उसके अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं—
शाकल्य, वाष्कल, आश्वलायन, शाखायन और माह्वस्य । वायु
पुराण में यजुर्वेद की ८६ शाखाएँ कही गई हैं जिनमें ४३ के
नाम चरणव्यूह में आए हैं । इन ४३ में माध्यदिन और कण्व
को लेकर ३७ शाखाएँ वाजसनेयी के अंतर्गत हैं । सामवेद की
सहस्र शाखाएँ बही जाती हैं जिनमें १५ गिनाई गई हैं ।
इसी प्रकार अथर्ववेद की भी बहुत सी शाखाओं में से पिप्पलादा-
शौनकीया आदि केवल नौ गिनाई गई हैं ।

११ सप्रदाय । पंथ (को०) । १२ ग्रंथ का परिच्छेद । अध्याय
(को०) । १३ पक्षतर । प्रतिपक्ष (को०) । १४ भुजा । बाहु ।
हस्त (को०) ।

शाखा^२—सच्चा पुं० [फा० शाखहू] अपराधी को दंड देने का काष्ठ
का एक यंत्र (को०) ।

शाखाकंट—सच्चा पुं० [सं० शाखाकण्ट] थूहर । स्नुही वृक्ष ।

शाखाचक्रमण—सच्चा पुं० [सं० शाखाचक्रमण] १ एक डाल पर
से दूसरी डाल पर कूद जाना । २ एक विषय अधूरा छोड़कर
दूसरा विषय हाथ में लेना । एक विषय पर स्थिर न रहना ।
३ कोई विषय पूरा अव्ययन न करके थोड़ा यह, थोड़ा वह
पढ़ना ।

शाखाचद्र न्याय—सच्चा पुं० [सं० शाखाचन्द्रन्याय] एक न्याय या कहा-
वत जो ऐसी बात के सवय में कही जाती है जो केवल देखने में
जान पड़ती है, वास्तव में नहीं होती ।

विशेष—चंद्रमा कभी वभी देखने में ऐसा जान पड़ता है मानो
पेड़ की डाल पर है । इसी से इस कहावत या न्याय की
रचना हुई है ।

शाखादंड—सच्चा पुं० [सं० शाखादण्ड] दे० 'शाखारंड' ।

शाखाद—सच्चा पुं० [सं०] पेड़ों की डाल या टहनी खानेवाले पशु ।
जैसे—गो, बकरी, हाथी ।

शाखानगर, शाखानगरक—सच्चा पुं० [सं०] बड़े नगर का वसातिस्थान
या मुहल्ला । उपनगर । उ०—शाखानगर शृगाटक आक्री-
ढते ।—कीर्ति०, पृ० २८ ।

शाखापित्त—सच्चा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें हाथ और पैर में जलन
और सूजन होती है ।

शाखापुर—सच्चा पुं० [सं०] [सच्चा स्त्री० जाम्बापुरी] किसी नगर के
आसपास फैली हुई बस्ती ।

शाखाप्रकृति—सच्चा स्त्री० [सं०] मनु के अनुनाद अपने राज्य के कुछ
दूर पर के आठ प्रकार के राजा जिनका विचार किसी राजा
को युद्ध के समय रखना चाहिए ।

शाखावा—सच्चा पुं० [फा० शाखावहू] खाटी (को०) ।

शाखावाहु—सच्चा पुं० [सं०] १ शाखा के समान बाहु या भुजा ।
२ वह जिसकी भुजा शाखा के समान हो ।

शाखाभृत्—सच्चा पुं० [सं०] वृक्ष । शाखी (को०) ।

शाखामृग—सच्चा पुं० [सं०] १ वानर । बदर । २ गिलहरी ।

शाखाम्ल—सच्चा पुं० [सं०] जलवैत ।

शाखाम्ला—सच्चा स्त्री० [सं०] हमली ।

शाखायन—सच्चा पुं० [सं०] ऋग्वेद के एक ब्राह्मण ग्रंथ का नाम ।
उ०—ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण के पहले पाँच भाग और
कौपीतिक या शाखायन ब्राह्मण बने—हिंदु० सं०, पृ० ७६ ।

शाखारंड—सच्चा पुं० [सं० शाखा'ण्ड] वह ब्राह्मण जो अपनी शाखा
को छोड़कर दूसरा शाखा का अव्ययन करे । शाखादंड ।

शाखारथ्या—सच्चा स्त्री० [सं०] छोटी गली या सड़क जो बड़ी सड़क
से मिलती हो (को०) ।

शाखाल—सच्चा पुं० [सं०] जलवैत ।

शाखावात—सच्चा [सं०] हाथ पैर में होनेवाला वातरोग ।

शाखाशिका—सच्चा स्त्री० [सं०] वह डाल जो नीचे की ओर बढ़कर
जड़ पकड़ ले और एक अलग पेड़ के धड़ के रूप में हो जाय ।
जैसे—बट की जटा या बरोह ।

शाखिमूल—सच्चा पुं० [सं०] रधि वृक्ष ।

शाखी^१—वि० [सं० शाखिन्] शाखाओं से युक्त । शाखावाला ।

शाखी^२—सच्चा पुं० १ पेड़ । वृक्ष । २. वेद । ३. वेद को किसी शाखा
का अनुयायी । ४. पीछू का पेड़ । ५. तुर्किस्तान का निवासी ।

शाखुल—सच्चा पुं० [फा० शाखुल] अरहर नाम से प्रसिद्ध द्विदल
अन्न (को०) ।

शाखोच्चार—सच्चा पुं० [सं०] विवाह के समय वशावली का कथन ।

शाखोट, शाखोटक—सच्चा पुं० [सं०] सिहोर का पेड़ । पीत वृक्ष ।

विशेष—वैद्यक में यह कडुआ, गरम पित्तकारक और वातहारी
माना गया है ।

शाख्य—वि० [सं०] १. शाखा के समान । शाखा तुल्य । २. शाखा
संबंधी (को०) ।

शागर, शोर्ग—सच्चा पुं० [सं० सागर] सागर । उ०—हकुमिनिहरन सुने
जो हूँ विचारइ । आप तर भव सागर कुल निसारइ ।—
अकबरी०, पृ० १५० ।

शागिर्द—सच्चा पुं० [फा०] १ किसी से विद्या प्राप्त करने का संबंध
रखनेवाला । विद्यार्थी । २. शिष्य । चेला ।

मुहा०—शागिर्द करना = किसी को कुछ सिखाने का काम अपने ऊपर लाना । चेला बनाना ।

शागिर्दपेशा—सञ्ज्ञा पु० [फा० शागिर्दपेशद्] १ मातहत । उ०—विशेषतः अंगरेजों के शागिर्दपेशे लोग ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३८३ । २ अहलकार । कर्मचारी । ३. खिदमतगार । सक्क । ४ शागिर्द । विद्यार्थी ५. बड़ी काठों के पास नीकरो के लिये अलग बने हुए घर ।

शागिर्दाना—वि० [फा० शागिर्दानद्] १ शिष्योचित । २ शागिर्द होने के एवज में गुरु को दिया जानेवाला (द्रव्य) ।

शागिर्दी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त किसी गुरु के अधीन रहने का भाव । शिष्यता । २. सेवा । टहल ।

शाचि—सञ्ज्ञा पु० [स०] दलकर भूमी निकाला हुआ जो ।

शाचि—वि० १ प्रासद्ध । विख्यात । विश्रुत । २ प्रतापी । शक्ति-शाली [को०] ।

शाट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. कपड़े का टुकड़ा । २. वह कपड़ा जो कमर में लपेटकर पहना जा सके । ओती । परदनी । ३ एक प्रकार की कुरती । ४. ढीलाढाला पहनावा ।

शाटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वस्त्र । पट । २. दे० 'शाट' ।

शाटिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ साड़ी । ओती । २. कचूर ।

शाटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] साड़ी । ओती ।

शाट्घायन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम । २. एक प्रकार का कृत्य जिस यज्ञकार्य में हुए दोषों की निवृत्ति के निमित्त करने का विधान है (को०) ।

शाट्घायनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम ।

शाठ्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शठता । दुष्टता । बदमाशी । २ कपट । धम । छल ।

शाड्वल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. 'शद्वन' ।

शाणु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. हथियारों को धार तेज करने का पत्थर । सान । उ०—कृष्ण हाकर भो अग वीर के सुगाठत शाण चढ़े से थे ।—साकत, पृ० २७२ । २. कसौटी । कपपाट्टका । ३ चार माशे का एक तौल । ४. आरा । करपत्र (को०) ।

शाणु—वि० [स०] १. सन के पोत्रे से सबब रखनेवाला । २. सन का बना हुआ ।

शाणु—सञ्ज्ञा पु० १. सन के रेशे का बना हुआ कपड़ा । भँगरा । २. मोटा कपड़ा (को०) ।

शाणुक—सञ्ज्ञा पु० [स०] पटसन का बना कपड़ा । भँगरा [को०] ।

शाणवास—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जा सन का बना हुआ वस्त्र पहने । २. एक मुतह का नाम ।

शाणाजीव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वह जो शस्त्रों पर सान देने का काम करके जीविकार्जन करता हो । हथियार की सफाई का काम करनेवाला व्याक्ति [को०] ।

शाणारमा—सञ्ज्ञा पु० [स० शाणाश्मन्] सान चढ़ाने का पत्थर [को०] ।

शाणि—सञ्ज्ञा पु० [स०] पट्टा ।

शाणित—वि० [स०] १. सान रखा हुआ । तीखा या तेज किया हुआ । २ कसौटी पर कसा हुआ ।

शाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. सन के रेशों से बुना हुआ कपड़ा । भँगरा । २ फटा हुआ वस्त्र । चीथड़ा । ३. वह छोटा कपड़ा जो यज्ञापवीत के समय ब्रह्मचारों को पहनने के लिये दिया जाता है । ४. सान । ५. कसौटी । ६. छोटा खेमा या पर्दा । ७. चार माशे की तौल (को०) । ८ आरा (को०) । ९ हाथ या आँख आदि से सकेत करना (को०) ।

शाणीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] शोण (सोन) नदी का किनारा या उसका भूभाग [को०] ।

शाणोपल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ सान चढ़ाने का प्रस्तर । २. कसौटी [को०] ।

शात—वि० [स०] १. सान रखा हुआ । तेज किया हुआ । २. दुबला पतला । क्षीण । कृश । जैसे,—शातादरो = कृशादरो । ३. दुर्बल । कमजोर (को०) । ४ सुदर । मनाहर (को०) । ५ प्रसन्न । प्रफुल्ल (को०) । ६ गिरा हुआ । पतित (को०) । ७ दीप्तिशाली । चमकदार (को०) ।

शात^३—सञ्ज्ञा पु० १ धतूरा । २ खुशी । आनंद । प्रसन्नता (को०) ।

शातकर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक ऋषि । २. सातवाहन राजाओं का एक नाम । उ०—सातवाहनों ने अपने अभिलेखों में अपने को 'सातवाहन' अथवा 'शातकर्ण' कहा है ।—भादि०, पृ० २८६ ।

शातकुम्भ—सञ्ज्ञा पु० [स० शातकुम्भ] १ कवनार का वृक्ष । २. कनक । धतूरा । ३ कनेर का वृक्ष । ४. सोना । स्वर्ण ।

शातकौम्भ—सञ्ज्ञा पु० [स० शातकौम्भ] सोना । सुवर्ण ।

शातकौम्भ^३—स० स्वर्णनिर्मित । साने का बना हुआ [को०] ।

शातक्रतव^३—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. इन्द्रवज्र । २. इन्द्र । वह जिसने शत-क्रतु पद प्राप्त किया हो । उ०—मधुरतर से मधुरतम होता हुई, रूप से गुण, पुण्य से मधु को तरह, साय, शातक्रतव के पायेय का ।—आराधना, पृ० ६१ ।

शातक्रतव^३—वि० देवराज इन्द्र का या इन्द्र संबंधी । इन्द्र से सबब रखनेवाला [को०] ।

शातन—सञ्ज्ञा पु० [स०] [वि० शातनीय, शातित] १ सान पर धार तेज करना । चोखा करना । २. कटवाना । (पेड़ आदि) । ३. नष्ट करना । काट गिराना । जैसे,—पञ्चशातन । ४. काटना । तराशना । छीलना । ५ क्षीण या लघु होना (को०) । ६. वच्छेद । विलगाव । भङ्गना (को०) । ७. सतह बराबर करना । रदना ।

शातपत्रक—सञ्ज्ञा पु० [स०] [सञ्ज्ञा स्त्री० शातपत्रकी] चद्रिका । चांदनी ।

शातभिष—वि० [स०] शतभिषा नक्षत्र सबंधी या उसमें उत्पन्न [को०] ।

शातभारु—सञ्ज्ञा पु० [स०] भद्रवस्त्र । मदनमाला ।

शातमन्थव—वि० [स०] शतमन्थु अर्थात् इन्द्र से सबब रखनेवाला [को०] ।

शातमान—वि० [स०] [वि० स्त्री० शातमानी] जो सौ के मूल्य से क्रीत हो। एक शत में खरीदा हुआ [को०]।

शातला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का थूहर का वृक्ष। विशेष दे० 'सातला'।

शातवाहन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक राजा का नाम। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

शातहृद—वि० [स०] विद्युत् सवधो, वैद्युतिक। विद्युत्जन्य [को०]।

शातातप—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक स्मृतिकार ऋषि का नाम।

शातित—वि० [स०] जो नष्ट या ध्वस्त किया गया हो। जो काटकर गिराया हुआ हो [को०]।

शातिर^१—वि० [अ०] १ चालाक। चतुर। उस्ताद। काइयाँ। २ चपल। चंचल [को०]। ३. पृष्ठ [को०]। ४. निपुण। दक्ष।

शातिर^२—सञ्ज्ञा पुं० १ दूत। २ शतर्ज का खिलाडी।

शातिराना—वि० [फा०] धूर्ततापूर्ण। शातिरो जैसा [को०]।

शात्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सोढो। सोपान। निःश्रेणी [को०]।

शातोदर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० स्त्री० शातोदरी] १ पतली कमरवाला। २ चौर। पतला।

शात्रव^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ शत्रुत्व। शत्रुता। २ शत्रु। ३ शत्रुओं का समूह।

शात्रव^२—वि० १ शत्रु संवेधी। २ शत्रुतापूर्ण। विरोधी [को०]।

शात्रवीय—वि० [स०] दे० 'शात्रव'।

शाद^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पतन। गिरना। पडना। २ कर्दम। कीचड़। ३ घास। दूब।

यौ०—शादहरित = जमी हुई दूब के कारण हरा भरा भूखंड या भूमि। हरे घास से भरी हुई भूमि। हरी भरी जमीन।

शाद^२—वि० [फा०] खुश। प्रसन्न। २ परिपूर्ण। भरा पूरा।

यौ०—शादकाम = (१) प्रसन्न। खुश। (२) कामयाब। सफल-मनोरथ। शादकामी = (१) खुश। प्रसन्नता। (२) कामयाबी। सफलता। शादगूना = (१) गायिका। डोमनी। (२) तोशक। शादमाँ = हर्षित। शादमान, शादमानी।

शादमान—वि० [फा०] प्रसन्न। खुश। हर्षित। उ०—जवाँ पर उसे याद है सब कुरान। फसाहत पर उसके हुआ शादमान।—दक्खिनी०, पृ० ७८।

शादमानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्नता। खुशी।

शादा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ईंट।

शादाव—वि० [फा०] १ हरा भरा। सरसज्ज। तरोताजा। २. सींचा हुआ। सिक्त [को०]। ३. प्रफुल्ल [को०]।

शादावी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ तरोताजगी। हरियाली। २. प्रफुल्लता [को०]।

शादियाना—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शादियानह] १. खुशी का वाजा। आनन्द-मगल सूचक वाद्य।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

२. वह धन जो किसान जमींदार को ब्याह के अवसर पर देने है।

३. बधावा। बधाई।

क्रि० प्र०—देना।

४. सुर्गा या शादी के मौके पर गाया जानेवाला मांगलिक गीत।

शादी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १. सुर्गा। प्रसन्नता। हर्ष। आनन्द। २. आनन्दोत्सव।

यौ०—शादीगमी।

३. विवाह। ब्याह।

शादल^१—वि० [म०] १ हरित कृष्ण या दूर्गा में युक्त। २. हरी हरी घाम से ढँका हुआ। हरा भरा। ३. हरा [को०]।

शादल—सञ्ज्ञा पुं० १ हरी घाम। दूब। २. सट। बल। ३. रेगिस्तान के बीच की वह थोड़ी सी हरियाली जहाँ कुछ हलका वस्ती भी हो। नवलिस्तान। ओमिम।

यौ०—शादलस्वली = हरीभरी भूमि। दूर्गा=छादित भूमि।

शादलाभ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का हरा कीड़ा।

शादलित—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दूब से भरा हुआ होना। रूब हरा भरा होना [को०]।

शान^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ तडक भटक। ठाट बाट। मजाबट। जँने,—कल बड़ी शान से सवारी निकली थी।

यौ०—शान व शौकत = दे० शानशौकत। उ०—वह उनको शान व शौकत का कायल होगा।—प्रेमचन्द०, भा०, २, पृ० १७६। शान शौकत।

२. गर्वोली चेष्टा। ठसक। जँने,—यह घोड़ा बड़ी शान से चलता है। ३. भव्यता। विशालता। चमत्कार। ४. शक्ति। करामात। विभूति। ऐश्वर्य। जँने—गुदा की शान। ५. श्रेष्ठता। बुजुर्गी। गौरव [को०]। ६. प्रतिष्ठा। इज्जत। मानमर्यादा।

मुहा०—शान जाना = अप्रतिष्ठा होना। मान भग होना। शान घटना = इज्जत में कमी होना। बडप्पन में कमी होना। शान बरसना = गौरव व्यक्त होना। शान मारी जाना = दे० 'शान जाना'। शान में बट्टा लगना = दे० 'शान घटना'। किसी की शान में = किसी बड़े के मध्य में। किसी के प्रति या किसी के विषय में। जँसे,—उनकी शान में ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

शान^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शरण। सान। २. कसौटी। निकपोपल [को०]। शानच्—प्रत्यय [स०] एक वृद्ध प्रत्यय जो पाणिनि व्याकरण में प्रयुक्त है।

शानदार—वि० [अ० शान + फा० दार] १. भड़कीला। तडक भड़कवाला। ठाट बाट का। जो बड़ी सजावट और तैयारी के साथ हो। २. भव्य। विशाल। चमत्कारपूर्ण। ३. ऐश्वर्ययुक्त। वैभव से पूर्ण। ४. गर्वोली चेष्टा से युक्त। ठसकवाला।

शानपाद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ चदन घिसने का पत्थर। २. पारियात्र पर्वत।

शानशौकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] तडक भटक। ठाट बाट। तैयारी। सजावट।

शाना—सञ्ज्ञा पुं [फा० शानह्] १, कंधा । कधी । उ०—हो परेशानी सरेमू भी न जुलैयार को । हमलिये भेरा दिले सद चाक शाना हो गया ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५१ । २ मोटा । कधा । खवा । ३ जुनाहो का राछ । कधी (को०) । ४ एक हाथियार (को०) ।

शानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] इनारुन । इद्रवारुणी ।

शानी—वि० [अ०] शत्रुता करनेवाला । वैर करनेवाला । वैरी (को०) ।

शानी^१—वि० [अ० शान] शानवाला । शानदार ।

शानीला^१—वि० [अ० शान] दे० 'शानो' ।

शानेश्वर—वि० [स०] [वि० स्त्री० शानेश्वरी] १ शनिग्रह सवधी । शनि का । २ शनिवार को पडने या होनेवाला (को०) ।

शाप—सञ्ज्ञा पुं [स०] १. अहित-कामना सूचक शब्द । तुम्हारा कुछ अनिष्ट हो, इस प्रकार का वचन । फोसना । बद दुआ । जैसे,—ऋषि के शाप से वह राक्षस हो गया । २. धिक्कार । फटकारना । भर्त्सना ।

क्रि० प्र०—देना ।

३. ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय । बुरी वसम । ४. प्रतिषेध । प्रत्याख्यान । वर्जन (को०) । ५. कठिनाई । बाधा । उपद्रव (को०) ।

शापग्रस्त—वि० [स०] जिसे शाप दिया गया हो । शापित ।

शापज्वर—सञ्ज्ञा प्र० [स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता, पिता, गुरु आदि बडो के शाप के कारण कहा गया है ।

शापटिक, शापठिक—सञ्ज्ञा पुं [स०] मयूर । मोर ।

शापना^१—क्रि० स० [स० शाप से नाम घा०] आप देना । शाप देना ।

शापनिवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा या मुक्ति (को०) ।

शापप्रद—वि० [स०] आप देनेवाला (को०) ।

शापमुक्त—वि० [स०] जिसका शाप छूट गया हो । जिसके ऊपर से शाप का बुरा प्रभाव हट गया हो ।

शापमुक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा । शापनिवृत्ति (को०) ।

शापमोक्ष—सञ्ज्ञा पुं [स०] दे० 'शापनिवृत्ति' (को०) ।

शापयन्त्रित—वि० [स० शापयन्त्रित] शाप के कारण नियन्त्रित या बंधा हुआ (को०) ।

शापात—वि० [स० शापान्त] शाप का अंत या परिसमाप्ति (को०) ।

शापाबु—सञ्ज्ञा पुं [स० शापाम्बु] वह जल जिसे हाथ में लेकर शाप दिया जाय ।

शापावसान—सञ्ज्ञा पुं [स०] शाप की निवृत्ति या अंत (को०) ।

शापात्—सञ्ज्ञा पुं [म०] १. वह व्यक्ति जिसके पास असूत्री के स्थान पर शाप ही हो । २. एक मुनि का नाम । दुर्वासा

शापित—वि० [म०] १. जिसे शाप दिया गया हो । शापग्रस्त । २. शपथयुक्त । सौम्य से बंधा हुआ । जिसने शपथ से ली हो (को०) ।

शापोत्सर्ग—सञ्ज्ञा पुं [म०] शाप का उच्चारण । शाप छोड़ना । शाप देना ।

शापोद्धार—सञ्ज्ञा पुं [स०] शाप या उसके प्रभाव में छुटकारा । शापमुक्ति ।

शाफरिक्—सञ्ज्ञा पुं [स०] मछुपा । बीवर ।

शाफी—वि० [अ० शाफी] १ रागमुक्त करनेवाला । २ भरोसा या सत्त्वना देनेवाला (को०) ।

शाफेय—सञ्ज्ञा पुं [म०] यजुर्वेद की एक शाखा ।

शावर^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० शावरी] १ दुष्ट । कपटो । २ अप्रमत्त । जगली (को०) । ३ नीच कर्मीना । अधम (को०) ।

शावर^२—सञ्ज्ञा पुं १. बुराई । हानि । दुःख । २ लोभ वृद्ध । लोभ का पेड । ३ ताँवा । ४. अधकार । ५. एक प्रकार का चदन । ६ अपराध । दोष । पाप (को०) । ७ दुष्टता (को०) । ८ जैमिनिमीमांसा सूत्रों के एक भाष्यकार का नाम (को०) ।

शावर भाष्य—सञ्ज्ञा पुं [स०] मीमांसासूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या जिसके कर्ता शवर स्वामी थे ।

शावरभेदाक्ष, शावरभेदाख्य—सञ्ज्ञा पुं [म०] ताँवा ।

शावरिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की जोक ।

शावरी—सञ्ज्ञा पुं [स०] शररो की भापा । एक प्रकार की प्राकृत भापा ।

शावल्य—सञ्ज्ञा पुं [स०] १ कई रंगों का मेल । शबलता । त्वरा-पन । चिन्तकवरापन । २. एक साथ भिन्न भिन्न कई वस्तुषा का मेल ।

शावस्त—सञ्ज्ञा पुं [स०] भागवत के अनुसार राजा युवनाश्व का एक पुत्र जिसने शावस्ती या श्रावस्ती नगर बसाई था ।

शावस्ती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती' ।

शावान—सञ्ज्ञा पुं [अ०] मुसलमाना का आठवां महीना (को०) ।

शावाश—प्रव्य० [फा०] 'शादवाश' का साक्षेय रूप । एक प्रशमा-सूचक शब्द । खुश रहा । वाह वाह । वय हा । क्या कहना ।

शावाशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] कोई कार्य करने पर प्रशंसा । वाह-वाही । साधुवाद ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

शब्द^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० शब्दी] १ शब्द सवधी । शब्द का । २ शब्द विशेष पर निर्भर । ३. शब्दमय (को०) । मौखिक । वाचाकथित या उक्त (को०) । ५. मुखर । वनियुक्त (को०) ।

शब्द^२—सञ्ज्ञा पुं शब्दशास्त्री । वैयाकरण ।

शब्दबोध—सञ्ज्ञा पुं [स०] शब्दों के प्रयोग द्वारा अर्थ का ज्ञान । वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान ।

शब्द व्यजना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शब्दव्यञ्जना] दे० 'शब्दी व्यजना' ।

शाब्दिक^१—वि० [स०] १. शब्द सवधी । शब्द का । २. मौखिक । जवानी (को०) । ३. नितादी (को०) ।

शाब्दिक^२—सञ्ज्ञा पुं १. शब्दशास्त्र का जाननेवाला । वैयाकरण । ३. अभिधान बनानेवाला । शब्दकोष का निमाता ।

शाब्दी—वि० स्त्री० [स०] १ शब्द सवधिनी । २ केवल शब्दविशेष पर निर्भर रहनेवाली । जैसे,—शाब्दी व्यजना ।

शाब्दी व्यजना—सब्बा स्त्री० [स० शाब्दी व्यञ्जना] साहित्य में व्यजना के दो भेदों में से एक । वह व्यजना जो शब्दविशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो । अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय । अर्थी व्यजना का उलटा ।

शाम^१—सब्बा स्त्री० [फा०] सूर्य अस्त होने का समय । रात्रि और दिवस के मिलने का समय । साँझ । सायम् । सव्या ।

मुहा०—शाम फूलना = सव्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना ।

यौ०—शामगाह = सव्याकाल ।

शाम^२—वि०, सब्बा पुं० [स० श्याम] दे० 'श्याम' ।

यौ०—शामकरण ।

शाम^३—वि० [स०] शम सवधी । शम का ।

शाम^४—सब्बा पुं० [स० शामन्] शम गान ।

शाम^५—सब्बा स्त्री० [दश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ में ली जानवाली लकड़ियों या छड़ियों के निचले भाग में अथवा ओजारों के दस्ते में लकड़ी को घिसने या छीजने से बचाने के लिये लगाया जाता है ।

क्रि० प्र०—जड़ना ।—लगाना ।

शाम—सब्बा पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है । कहते हैं, यह देश हजरत नूह के पुत्र शाम ने बसाया था । इसका राजधानी का नाम दमिश्क है । आजकल यह प्रदेश सारिया कहलाता है ।

शामकरण^१—सब्बा पुं० [स० श्यामकर्ण] वह घोंडा जिसका कान श्याम रंग का हो ।

शामल—सब्बा स्त्री० [अ०] १ वदकस्मृती । दुर्भाग्य । २. विपत्ति । आफत । ३. दुर्दशा । दुरवस्था ।

क्रि० प्र०—आना ।—में पड़ना या फँसना ।

मुहा०—शामत का घेरा या मारा = जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ है । जिसकी दुर्दशा होने की हो । शामत की मार = अभाग्य । वदकस्मृती । कमवस्था । शामत सवार होना या सिर पर खलना = शामत आना । दुर्दशा का समय आना ।

शामतजदा—वि० [अ० शामत + फा० जदह] कमवस्था । बदनसोव । अभाग्य ।

शामती—वि० [अ० शामत + फा० ई (प्रत्य०)] जिसको शामत आई हो । जिसकी दुर्दशा होने की हो । शामत का मारा ।

शामन—सब्बा पुं० [स०] १ शमन । २. शांति । ३. मारण । हत्या करना । ४. यमराज (को०) । ५. समाप्ति । अंत (को०) ।

शामनी—सब्बा स्त्री० [स०] १ दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए हैं । २. शांति । स्तब्धता । ३. अंत । समाप्ति । ४. वध । हत्या ।

शामा^१—सब्बा स्त्री० [?] एक प्रकार का पीवा, जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ रोग के लिये लाभदायक मानी जाती हैं ।

शामा^२—सब्बा स्त्री० [स० श्यामा] दे० 'श्यामा' ।

शामित्र^१—सब्बा स्त्री० [स०] १ यज्ञ में मांस पकाने के निमित्त प्रज्वलित की हुई अग्नि । २ वह स्थान जहाँ ऐसी अग्नि प्रज्वलित की जाय । ३ यज्ञ । ४ यज्ञपात्र । ५ यज्ञ के लिये पशुओं को हत्या । ६ व्यवस्थान । बलि करने की जगह (को०) । ७ बलि के निमित्त गूपकाष्ठ में पशुबधन (को०) । ८ घातक प्रहार या चोट (को०) ।

शामित्र^२—वि० यज्ञबलि करनेवाले से संबद्ध (को०) ।

शामियाना—सब्बा पुं० [फा० शामियानहू] एक प्रकार का बड़ा तट्टा । उ०—खाकसारी ने दिखाया बाद मुर्दन भी उज्ज । आमर्मा तुरवत पे मेरे शामियाना हो गया ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५० ।

विशेष—इसमें प्राय ऊपर की ओर लंबा चौड़ा कपड़ा होता है जो वासों पर तना रहता है । इसके नीचे चारों ओर प्राय. खुला ही रहता है । पर कभी कभी इसके चारों ओर कनात भी खड़ी की जाती है ।

क्रि प्र०—खड़ा करना ।—गाड़ना ।—लगाना ।

शामिल—वि० [फा०] १ जो साथ में हो । मिला हुआ । ममिलित । जैसे,—(क) ये कागज मिलिल में शामिल कर दो । (ख) अब तो तुम भी उन्हीं लोगों में शामिल हो गए । २ भागीदार । साझा (को०) । ३. मददगार । सहकारी (को०) । ४ एकत्र । इकट्ठा (को०) ।

यौ०—शामिल हाल ।

शामिल हाल—वि० [अ० शामिल + हाल] जो दुःख सुख आदि सब अवस्थाओं में साथ रहे । साथी । शरीक ।

शामिलात—सब्बा स्त्री० [अ० शामिल] १ हिस्सेदारी । साझा । शराकत । दे० 'शामिल' । २ धन संपत्ति, जायदाद आदि जो साझे की हो ।

शामिली—सब्बा स्त्री० [स०] लुवा (को०) ।

शामी^१—सब्बा स्त्री० [दश०] लोहे या पातल का वह छल्ला जो लकड़ियों आदि के नीचे के भाग में अथवा ओजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है, शाम ।

क्रि० प्र०—खड़ना । लगाना ।

शामी^२—वि० [अ० शाम (देश)] शाम देश का । शाम देश संबंधी । जैसे,—शामी कबाब ।

शामी कबाब—सब्बा पुं० [हि० शामी + कबाब] एक प्रकार का कबाब जो मांस को मसाले के साथ भूनने के उपरांत पोंसकर गोलियों या टिकियों के रूप में बनाया जाता है ।

शामीन—सब्बा पुं० [स०] १. भस्म । २. यज्ञ करने का एक उपकरण । लुवा (को०) ।

शामील—सब्बा पुं० [स०] भस्म । खाक । राख ।

शामीली—सब्बा स्त्री० [स०] लहू । मांसा ।

शामुल्य—सब्बा पुं० [स०] गले में पहनने का कोई ऊनी कपड़ा ।

शामूल—सद्वा पु० [सं०] ऊनी कपडा ।

शामेय—सद्वा पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शाम्य—सद्वा पु० [सं०] १ शम का भाव । २ वधुत्व । भाई चारा । ३ शांति ।

शाम्य—वि० शमसवधी [को०] ।

शाम्यप्रास—सद्वा पु० [मं०] यज्ञ की वलि ।

शाय—सद्वा पु० [सं०] जयन करना । लेटना । सोना [को०] ।

शायक—सद्वा पु० [मं०] १ बाण । तीर । शर । २ खड्ग । तलवार ।

शायक—वि० [अ० शायक] [बहु० शायकीन] १. शौक करने या रखनेवाला । शौकीन । २. स्वाहिंशमद । इच्छुक । आकाक्षी ।

शायद—अव्य० [फा०] कदाचन । कदाचित् । संभव है । स्यात् ।

जैसे—शायद वह आज आएगा ।

शायर—सद्वा पु० [अ०] [सद्वा स्त्री० शायरा] वह जो शेर आदि बनाता हो । काव्य करनेवाला । कवि ।

शायराना—वि० [अ० शायर + फा० आनह] १. कवियों जैसा । कवियों के लहजेवाला । २. कवित्वमय अतिरिजित ।

शायरी—सद्वा स्त्री० [अ०] १ कविता करने का कार्य या भाव । २. काव्य । कविता । ३. अतिरिजना ।

शायी—वि० [अ०] योग्य । तुल्य । मुनासिब [को०] ।

शायी—वि० [अ०] १. प्रकट । जाहिर । २. प्रकाशित । छपा हुआ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

शायिक—सद्वा पु० [सं०] [सद्वा स्त्री० शायिका] वह जो शय्यारचना का जानकार हो । वह जो शय्या द्वारा अपनी जीविता का निर्वाह करता हो ।

शायिका—सद्वा स्त्री० [सं०] १ नीद । निद्रा । २. लेटने की क्रिया । शयन [को०] ।

शायित—वि० [सं०] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ । उ०—अशनिपात से शायित उन्नत शत शत वीर, क्षत्र विद्वत् हत अचल शरीर ।—अपरा, पृ० २१ । २ गिरा हुआ । पतित । ३. सोया हुआ । लेटा हुआ । उ०—शायित जन जने सकल । कला के सुले उत्पल ।—वेला, पृ० ७२ ।

शायिता—सद्वा स्त्री० [सं०] शयन । सोना ।

शायिनी—वि० स्त्री० [सं० शायिन् = शायी का स्त्री०] शयन करनेवाली । उ०—वह नहीं, पर्यन्त, पिय की अक की जो शायिनी थी ।—मिह्री, पृ० १३४ ।

शायी—वि० [सं० शायिन्] [वि० स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला । सोनेवाला ।

शारग—सद्वा पु० [मं० शारङ्ग] दे० 'शारंग' ।

शारगक—सद्वा पु० [सं० शारङ्गक] एक प्रकार का पक्षी ।

शारगधनुष—सद्वा पु० [सं० शारङ्ग धनुष] शारंग नामक धनुष से सुशोभित, अर्थात् विष्णु । उ०—विष्णु के हाथ में गदा कौमदी

श्रीर चक्र सुदर्शन श्रीर शारगधनुष श्रीर शंख आदि रहता है । कबीर म०, पृ० ४१ । २. कृष्ण ।

शारगपाणि—सद्वा पु० [सं० शारङ्गपाणि] १ हाथ में शारग नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु । २ कृष्ण । ३ राम ।

शारगपानी पु०—सद्वा पु० [सं० शारङ्गपाणि] दे० 'शारगपाणि' ।

शारंगभृत—सद्वा पु० [सं० शारङ्गभृत] १ शारग नामक धनुष धारण करनेवाले, विष्णु । २ कृष्ण ।

शारंगवत—सद्वा पु० [मं० शारङ्गवत] कुशवर्ष नामक देव ।

शारंगष्टा—सद्वा स्त्री० [सं० शारङ्गष्टा] १ काकजंघा । २ मकोय । ३ गुंजा । चोटली । करजनी ।

शारंगष्टा—सद्वा स्त्री० [सं० शारङ्गष्टा] १. मकोय । २. कठकरंज । लताकरंज ।

शारंगी—सद्वा स्त्री० [सं० शारङ्गी] शारंगी नामक बाजा । विशेष दे० 'शारंगी' ।

शारंगेष्टा—सद्वा स्त्री० [सं० शारङ्गेष्टा] दे० 'शारंगष्टा' ।

शारंगर—सद्वा पु० [सं० शारङ्गर] राजतरंगिणी के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम ।

शार^१—वि० [सं०] १. चितकवरा । कई रंगों का । २ पीला । ३. नीले, पीले और हरे रंग का ।

शार^२—सद्वा पु० १. एक प्रकार का पासा । अक्ष । २ वायु । हवा । ३ हिंसा । ४. चितकवरा रंग [को०] । ५. हरा रंग [को०] ।

शारणिक^१—सद्वा पु० [मं०] वह जो शरण में आए हुए की रक्षा करता हो । रक्षक ।

शारणिक^२—वि० शरण चाहनेवाला । रक्षा चाहनेवाला । शरणार्थी [को०] ।

शारतत्पिक—सद्वा पु० [सं०] वारणों की शय्या पर गोनेवाले भीष्म पितामह [को०] ।

शारद^१—वि० [सं०] १ शरदकाल सवधी । शरदकाल का । २. नवीन । नया । ३. लज्जावान । शालीन । ४. वापिक । वर्ष से सवध रखनेवाला [को०] । ५. अभिनव । ६. वायव्य । चतुर [को०] ।

शारद^२—सद्वा पु० १ वर्ष । साल । २. मेघ । बादल । ३. नकेल । कमल । ४. मौलसिरी का वृक्ष । काम वृक्ष । ६. हरा मृग । ७. एक प्रकार का रोग । ८. शरत् का समय [को०] । ९. शरत् की धूप [को०] । १०. शरत्कालान्तर [को०] ।

शरी—शारदचन्द्र = शरद ऋतु का निमल चन्द्र । शारद-ज्योत्स्ना = शरत्काल की शुभ्र चाँदी । शारदनिगा = शरद ऋतु की रात । शारदभूषिमा = शरत्भूषिमा । आश्विन महान की पूनी । शरदमेघ = जलरहित होने से निर्मल और श्वेत बादल । शारदयामिनी । शारदगानि, शारदशर्वरी = शरद ऋतु की आहुतादक रात्रि ।

शारदक—सद्वा पु० [सं०] एक प्रकार का कुश [को०] ।

शारदावा—सद्वा स्त्री० [सं० शारदावा] सरस्वती ।

शारदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की वीणा । २ ब्राह्मी । ३ अनंतमूल । शारिवा । ४ सरस्वती । ५ दुर्गा । ६ प्राचीन काल की एक प्रणाली की लिपि ।

विशेष—कश्मीर देश की अधिष्ठात्री देवी शारदा मानी जाती हैं जिन्से वह देश 'शारदादेश' या 'शारदमंडल' कहलाता है और इसी से वहाँ का लिपि को 'शारदालिपि' कहते हैं । पीछे से उसको (कश्मीर की) 'देवदेश' भी कहते थे । मूल शारदा लिपि ईश्वरी सन् की दमनी शताब्दी के ग्राम पास कुटिल लिपि से निकली है और उसका प्रचार कश्मीर तथा पञ्जाब में रहा । उस में परिवर्तन होकर वर्तमान शारदा लिपि बनी जिन्का प्रचार अब कश्मीर में बहुत कम रह गया है । उसका स्थान बहुधा नागरी, गुरुमुखी या टाकरी ने ले लिया है ।

शारदिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शरद ऋतु में होनेवाला ज्वर । २ रोग । बीमारी । ३ शरद ऋतु में होनेवाला अथवा वार्षिक आह । ४. शरद ऋतु की धूँ (को०) ।

शारदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल । २ छत्तिवन । सप्तपर्णा । ३ आश्विन मास की पूर्णिमा । कोजागर पूर्णिमा । ४ कार्तिक मास की पूर्णिमा (को०) ।

शारदी^१—वि० शरदकाल का । शरद काल संबंधी ।

शारदी^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शारदिन्] १ अपराजिता । कोयल । २ सफेदा कमल । ३ अन्न या फल आदि ।

शारदीय—वि० [सं०] शरदकाल का । शरद ऋतु संबंधी ।

शारदीयपूजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शारदीय महापूजा । शरद ऋतु में नवरात्र की दुर्गापूजा । उ०—नहीं तो वे स्वदेशाचारानुसार प्रायः शारदीय पूजा ही में हंस लिया करते थे ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५७ ।

शारदीय पूर्णिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन पूर्णिमा । कोजागर पूर्णिमा ।

शारदीय महापूजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शरदकाल में होनेवाली दुर्गा की पूजा । नवरात्र की दुर्गापूजा ।

शारद्व^१—वि० [सं०] शरदकाल का । शरद ऋतु संबंधी ।

शारद्व^२—सञ्ज्ञा पुं० शरद ऋतु में होनेवाला अन्न (को०) ।

शारद्वत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कृपाचार्य का एक नाम । २ गौतम (को०) ।

शारद्वती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कृपाचार्य की पत्नी । कृती (को०) ।

शारि^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पासा आदि खेलने की गोठ । २ शतरंज का मुद्रा (को०) । ३ छाटी गोल गेंद (को०) ।

शारि^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ मैना । २. कपट । छल । धोखा । ३. एक प्रकार का गीत । ४ हाथी की भूल (को०) ।

शारिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मैना नाम की चिड़िया । २ शतरंज या चौमंड खेलने की क्रिया । ३. सारंगी आदि बजाने की कमानों । ४ वीणा या सारंगी आदि बजाने की क्रिया । ५ दुर्गा देवी का एक नाम । शतरंज की मोटी (को०) । ६ कोण । मिजराब (को०) ।

शारिकाकवच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रधामल तंत्र में है ।

शारित्त—वि० [सं०] रंगीन । चित्रविचित्र ।

शारिपट्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शतरंज या चौमंड आदि खेलने की विसात ।

शारिपुत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के एक प्रधान शिष्य (को०) ।

शारिकल, शारिकलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शारिपट्ट' ।

शरिवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनंतमूल । सालसा । दुर्गलभा । २ जवासा । वपासा ।

शारिश्चुग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शारिश्चुङ्ग] जुआ खेलने का एक प्रकार का पासा या गोठ ।

शारी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुशा नाम की घास । २ एक प्रकार का पक्षी । ३. मूँज । काँडा ।

शारी^२—सञ्ज्ञा पुं० १ शतरंज की गोठ । २ गेंद ।

शारीर^१—वि० [सं०] १ शरीर संबंधी । शरीर का । २. शरीर से उत्पन्न ।

शारीर^२—सञ्ज्ञा पुं० १. शरीर को होनेवाले दुःख जो आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, तीन प्रकार के होते हैं । २. वृष । साँड । ३. जीवात्मा । आत्मा (को०) । ४ मल (को०) । ५ शरीररचना (को०) । ६ एक प्रकार की ओषधि (को०) ।

शारीरक^१—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शारीरकी] १ शरीर से उत्पन्न । २ शरीर से संबंधित (को०) । ३ मूर्तिमान् । शरीरधारी (को०) ।

शारीरक^२—सञ्ज्ञा पुं० १ मूर्तिमान् जीव । २ दे० 'शारीरक भाष्य' । शारीरक भाष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य ।

शारीरक सूत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास का बनाया हुआ वेदातसूत्र ।

शारारकीय—वि० [सं०] मूर्तिमान् । शरीरधारी (को०)

शारीरतत्त्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शरीर के तत्त्वों और रचना आदि का विवेचन होता है ।

शारीर विद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शारार विद्या' ।

शारीर विद्यान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं । २ वह शास्त्र जिसमें जीवों के शरीर के भिन्न भिन्न अंगों और उनके कार्यों का विवेचन होता है ।

शारीर ब्रण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग ।

विशेष—यह बात, पित्त कफ और रक्त से उत्पन्न होता है । परंतु रक्त के संबंध से द्विदोषज और त्रिदोषज होने के कारण आठ प्रकार का हो जाता है—(१) वातव्रण, (२) पित्तव्रण, (३) कफव्रण, (४) रक्तव्रण, (५) वातपित्तज व्रण, (६) वातकफज व्रण, (७) कफपित्तज व्रण, और (८) संनिपातज व्रण ।

शारीर शास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शारीर विद्यान' ।

शारीरिक

शारीरिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शारीरिक] १ शरीर संबंधी।
कालेवरिक। कायिक। दैहिक। जिस्मानी। जैसे, शारीरिक कष्ट।
२. आध्यात्मिक (की०)।

शास्त्र—वि० [स०] १ हत्या या नाश करनेवाला। २ कष्ट देने-
वाला। दुष्ट।

शार्ङ्ग^१—सब्बा स्त्री० [म० शारि] मैना। उ०—वो शार्ङ्ग के मूँ ते
सुने यो वैन। नसीहत पर उसकी गजब मे हो ऐन।
—दक्खिनी०, पृ० ८४।

शार्क^१—सब्बा पुं० [म०] १ चीनी। शर्करा। २ एक प्रचीन गोत्र
प्रवर्तक ऋषि का नाम।

शार्क^२—सब्बा पुं० [अ०] एक विशालकाय मछली।
विशेष—यह शिकारी मछली है जो समुद्र में रहती है। इसका
शिकार करना बहुत खतरनाक होता है। यह समुद्री जीवों को
खाती है। कभी कभी छोटी मोटी नावों को उलट देती है।
इसके गरीर का तेल दवा के काम आता है।

शार्कक—सब्बा पुं० [स०] १. दूध का फेन। दुग्धफेन। मलाई। २
चीनी का ढेला। शर्करापिंड। ३ गोश्त का टुकड़ा।

शार्कर^१—सब्बा पुं० [म०] १ दूध का फेन। २ दूध को पपड़ी या
मलाई। ३ लोघवृक्ष। ४ कंकरीली और पथरीली जगह।

शार्कर^२—वि० [वि० स्त्री० शार्करी] १ कंकरीला। २ शक्कर या
चीनी का बना हुआ।

शार्करक—सब्बा पुं० [स०] १ वह स्थान जो ककरो और पत्थरो से
भरा हो। कंकरीली या पथरीली जगह। २ वह स्थान जहाँ
चीनी बहुत होती हो।

शार्करक^३—वि० कंकरीला। पथरीला।

शार्कर मद्य—सब्बा पुं० [म०] प्राचीन काल का एक प्रकार का मद्य जो
चाँनी और घी से बनाया जाता था।

शार्करिक—सब्बा पुं०, वि० [स०] दे० 'शार्करक'।

शार्करी—वि० [स० शार्कगिन्] मधुमेह या पथरी रोग से ग्रस्त [की०]।

शार्करीवान—सब्बा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक देश जो उत्तर
दिशा में था।

शार्करीय—सब्बा पुं०, वि० [स०] दे० 'शार्करक'।

शार्गाल—वि० [स०] शृगाल संबंधी। शृगाल का [की०]।

शार्ङ्ग^१—सब्बा पुं० [स०] १ धनुष। कमान। २ विष्णु का धनुष।
विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष। ३ अदरक। आदी। ४
एक प्रकार का साम। ५. शार्ङ्गक। पक्षी। चिडिया [की०]।

शार्ङ्ग^२—वि० १ शृग संबंधी। २ शृग का। शृगनिर्मित। २
धनुर्धर। धनुष धारण करनेवाला [की०]।

शार्ङ्गक—सब्बा पुं० [स०] पक्षी। चिडिया।

शार्ङ्गधन्वा—सब्बा पुं० [शार्ङ्गधन्व] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह
जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गधर—सब्बा पुं० [स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. कमनैत।

शार्ङ्गपाणि—सब्बा पुं० [स०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण ३ वह जो
धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गभृत्—सब्बा पुं० [स०] दे० 'शार्ङ्गपाणि'।

शार्ङ्गवैदिक—सब्बा पुं० [स०] एक प्रकार का स्थावर विप जो देखने
में सोठ के समान होता है।

शार्ङ्गष्टा—सब्बा स्त्री० [स०] १. काकजंघा। २. घुँघची।

शार्ङ्गष्ठा—सब्बा स्त्री० [स०] १ महाकरज। २ लताकरज।

शार्ङ्गायुध—सब्बा पुं० [स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह जो
धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गिक—सब्बा पुं० [स०] दे० 'शार्ङ्गक'।

शार्ङ्गी—सब्बा स्त्री० [स० शार्ङ्गिन्] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण ३.
धनुर्धारी। कमनैत।

शार्टकट—वि० [अ०] सक्षित या छोटा रास्ता। उ०—रास्ते तो कई
हो सकने हैं, और शार्टकट होते नहीं।—नदी०, पृ० ३८।

शार्दूल^१—सब्बा पुं० [स०] १ चीता। २ व्याघ्र। बाघ। ३ राजपू।
४ शर्म नामक जंतु। ५ एक प्रकार का पक्षी। ६ यजुर्वेद
की एक शाखा। ७. दोहे का एक भेद जिसमें ६ गुरु और
३६ लघु मात्राएँ होती हैं। ८. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।
९. सिंह।

शार्दूल^२—वि०। सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

विशेष—इस अर्थ में इसका प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने में
उनके अंत में होता है। जैसे,—नरशार्दूल।

शार्दूलकद—सब्बा पुं० [स० शार्दूलकन्द] जंगली प्याज।

शार्दूलकर्ण—सब्बा पुं० [स०] त्रिशंकु के एक पुत्र का नाम।

शार्दूलचर्म—सब्बा पुं० [स० शार्दूलचर्मन्] बाघ का चमड़ा। व्याघ्र-
चर्म [की०]।

यौ०—शार्दूलचर्माम्बर = व्याघ्रचर्म धारण करनेवाले, शिव।

शार्दूलज—सब्बा पुं० [स०] व्याघ्रनाख नामक गंधद्रव्य।

शार्दूलललित—सब्बा पुं० [स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका
पद अठारह अक्षरों का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार
है—म + स + ज + स + त + त + स। इसका दूसरा नाम शार्दूल-
लसित भी है।

शार्दूललसित—सब्बा पुं० [स०] दे० 'शार्दूलललित'।

शार्दूलवाहन—सब्बा पुं० [स०] जैनियों के अनुमार पचीस पूर्व जिनों में
से एक जिन का नाम।

शार्दूलविक्रीडित—सब्बा पुं० [म०] १ एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका
चरण उन्नीस अक्षरों का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार
है—म + स + ज + स + त + त + एक गुरु। २ बाघ की
क्रीड़ा।

शार्मण्य^१—जर्मनी देश का नाम [की०]।
जर्मनी।

शायति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वैदिक काल के एक प्राचीन राजपि का नाम । २ एक प्रकार का साम ।

शार्व—वि० [सं०] शर्व अर्थात् शिवसम्बन्धी [को०] ।

शार्वादिक—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शार्वादिक] पूर्व दिशा [को०] ।

शार्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक अधकार । अधतमस ।

शार्वर—वि० १ रात का । रात्रि से सर्वध रखनेवाला । रात्रिकालीन ।
२ घातक । हिसक । दुर्मति [को०] ।

शार्वरिक—वि० [सं०] रात्रि सम्बन्धी । रात का ।

शार्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात । रात्रि । २. लोभ ।

शार्वरी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शार्वरिन्] वृहस्पति के साठ सवत्सरो में से चौतीसवाँ सवत्सर ।

शार्वरीक—वि० [सं०] रात्रि सम्बन्धित [को०]

शालकटकट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शालङ्कटङ्कट] सुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामनपुराण के अनुसार विद्युत्केशी और शालकटकटा का पुत्र था ।

शालकायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शालङ्कायन] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम । २ नदी ।

यौ०—शालकायन जीवसू = व्यास की माता । सत्यवती ।

शालकायनजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शालङ्कायनजा] शालंकायन की पुत्री सत्यवती जो व्यास की माता थी ।

शालकायनि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शालङ्कायनि] एक प्राचीन गोश्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शालंकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शालङ्कि] पाणिनि ऋषि का नाम ।

शालकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शालङ्की] १ गुड़िया । २ कठपुतली ।

शाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष । सखुग्रा । साखू । सालू ।

विशेष—यह हिमालय पर्वत पर सत्लज से आसाम तक, मध्य भारत के पूरव प्रांत में पश्चिम बंगाल की पहाड़ियों पर और छोटा नागपुर के जंगलों में उत्पन्न होता है । इसका वृक्ष बहुत बड़ा और विशाल होता है । छोटे वृक्षों की छाल प्रायः दो इंच मोटी खुरदरी, काले रंग की और रेशदार होती है । कच्ची लकड़ी सफेद रंग की और जल्दी बिगड़नेवाली होती है । सार भाग जब ताजा होता है तब कुछ पीलापन लिए हुए भूरे रंग का होता है परंतु सूखने पर काला हो जाता है । पत्तें चिकने चमकीले, अंडाकार, ६ से १० इंच तक लंबे और ४ से ६ इंच तक चौड़े होते हैं । डालियों के अंत में फूलों के गुच्छे लगते हैं । पुष्पदल लंबे और हलके पीले रंग के आते हैं, और किंचित् अंडाकार तथा अनीदार होते हैं । फल गोल और आध इंच लंबा होता है । वसंत में यह फूलता है और वर्षा के प्रारंभ में इसके फल पक जाते हैं । इसकी लकड़ी मकान आदि बनाने में अधिकता से काम में आती है । इससे एक प्रकार का लाल रंग निकलता है । इसके बीजों का तेल निकालकर जलाने के काम में लाया जाता है । दुग्ध में फलों का आटा खाने के

काम में आता है । यह दो प्रकार का होता है—एक बड़ा गान और दूसरा पीतफाल या विजयमार । वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कड़वा, स्या, स्निग्ध, गरम, कर्षणा, कातिजनक तथा कफ, पित्त, धाव, प्लीहा, वृमिर्ग, वीरिर्ग, प्रमेह, कुष्ठ, चिम्फोटक आदि रोगों को दूर करनेवाला है । इसके पत्त और गोद प्रायः औषधि के काम में आते हैं ।

पर्या०—गाल । अश्ववण शकुवृक्ष । तत तप । यक्षधूर । आदि ।

२. एक प्रकार की मछली । ३. वृक्ष । पेड़ । ४. एक नदी का नाम । ५. वृक्ष के एक पुत्र का नाम । ६. राजा पालिवाहन का एक नाम । ७. रान । दूना । ८. घेरा । प्राडा । बाड (को०) ।

शाल—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रजनी चादर जिम्मे किनारे पर प्रायः बेल बूटे आदि बने होते हैं । दुशाला ।

यौ०—शालदुशाला । शालदोज । शालमाण ।

शाल(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शाला] घर । कक्ष । कमरा । उ०—ऊँचे मंदिर शाल रमोई । एक घरी पुनि रहत न होई ।—सुत रवि०, पृ० १३४ ।

शाल—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] एक प्रकार की वृक्ष ।

शालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पटुग्रा । नाडी शाक । २. ममक्षरा । दिलगोवाज । मोड़ । ३. एक प्रकार का राग [को०] ।

शालकटकट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शालकटङ्कट] महाभारत के अनुसार एक राक्षस का नाम जिसे घटोत्कच ने मार डाला था ।

शालकल्याणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रुखा मधुर, शीतवीर्य और पुरोपभेदक होता है ।

शालग्राम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति जो पत्थर की होती है और नारायणी नदी में पाई जाती है ।

विशेष—यह मूर्ति प्रायः पत्थर की गोमियों या बटियों आदि के रूप में होती है और उसपर चक्र का चिह्न बना होता है जिसे लोग साधारण बोलचाल की भाषा में जठ्ठ कहते हैं । जिस शिला पर यह चिह्न नहीं होना वह पूजन के लिये उपयुक्त नहीं मानी जाती । लोग अन्य देवमूर्तियों की भाँति इसकी भी पहले प्रतिष्ठा करते हैं । और तब इसका पूजन करते हैं । अनेक पुराणों में इसकी पूजा का माहात्म्य मिलता है ।

२. बड़ी गंडकी या नारायणी नदी के किनारे का एक गाँव ।

विशेष—इस गाँव के समीप शाल के वृक्ष बहुत अधिकता से हैं । इस गाँव के पास ही नदी में शालग्राम शिला भी पाई जाती हैं । वैष्णव लोग इस गाँव को बहुत पवित्र मानते हैं ।

शालग्रामगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जहाँ शालग्राम की मूर्तियाँ मिलती हैं ।

शालज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली जिसे शाल भी कहते हैं । २. सर्ज रस । शाल वृक्ष का निर्यास ।

शालदोज—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शालदोज] वह जो शाल के किनारे पर बेल बूटे आदि बनाता है ।

शाखावत् ३६ प्राचान् श्रुति का नाम ।

शालावृक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. बदर। वानर। कपि। २. कुत्ता। कुक्कुर। ३. लोमड़ी। भृगाल। ४. बिल्ली। विडाल। ५. हरिण। भृग। ६. भेडिया (को०)।

शालासद—वि० [स०] घर पर रहनेवाला (को०)।

शालिच—सञ्ज्ञा पु० [स० शालिञ्च] एक प्रकार का साग जिसे शालच या शाचि साग भी कहते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा दीपन, तथा प्लीहा, बवाभीर और कफ पित्त का नाश करने वाला माग्न गया है।

शालिची—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शालिञ्ची] दे० 'शालिच'।

शालि—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वैद्यक के अनुसार पाँच प्रकार के धानो में से एक प्रकार का धान जो हेमन्त ऋतु में होता है। जड़हन।

विशेष—वैद्यक में इसके रक्तशालि, कलम, पाडुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाडक, पुडरीक, महिष मस्तक, दीर्घशूक, काचनक, हायन, लोध्रपुष्पक आदि अनेक भेद कहे गए हैं। यद्यपि वैद्यक के अनुसार भिन्न भिन्न देशों में उत्पन्न होनेवाले के भिन्न भिन्न गुण कहे गए हैं, तथापि साधारणतः सभी शालि धान्यों के गुण इस प्रकार माने गए हैं—मधुर, कषायरस, स्निग्ध, बलकारक, स्वरप्रसादक, शुक्रवर्धक, कुछ कुछ वायु और कफवर्धक, शीतवीर्य पित्तनाशक और मूत्रवर्धक।

पर्याय—मधुर। रुच्य। ब्रीहिश्रेष्ठ। नृपप्रिय। धान्योत्तम। कैदार। सुकुमारक।

२. वासमती चावल। ३. काला जीरा। ४. गन्ना। पौंदा। ५. गधविलाव। गधमार्जार। ६. पक्षी (को०)। ७. एक यज्ञ का नाम।

शालिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह जो शाला या भवन सबधी हो। २. वह जो शाल वृक्ष सबधी हो। ३. तनुवाय। जुलाहा। ४. एक प्रकार का कर या महसूल। राजस्व। ५. कारीगरो का गाँव (को०)।

शालिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. विदारी कद। २. मीना। शारिका। ३. शालपर्णी। ४. घर। मकान। ५. आधार। स्थान (को०)।

शालिगोप—सञ्ज्ञा पु० [स०] [सञ्ज्ञा स्त्री० शालिगोपी] वह जो खेतों की, विशेषतः धान के खेतों की, रखवाली करता हो।

शालिचूर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] चावल का आटा (को०)।

शालिधान—सञ्ज्ञा पु० [स० शालिधान्य] वासमती चावल।

विशेष—यह धान जेठ मास में बोया जाता है और अग्रहन के अत या पूस के आरम्भ में पककर तैयार हो जाता है। इसे अग्रहनी या हेमन्तिक शालिधान्य भी कहते हैं। इसका पौधा मिट्टी तथा देश के अनुसार दो हाथ से लेकर तीन हाथ तक ऊँचा होता है। इसके पत्तों साधारण धान के समान होते हैं पर उनकी अपेक्षा कुछ कड़े और चिकने होते हैं। यह छोटा और बड़ा दो प्रकार का होता है। भेद इतना ही है कि छोटा पहले पकता है और बड़ा कुछ देर में। यह धान बिना

कुटे हुए सफेद होता है और बहुत बारीक तथा मुँदर होता है। चावलो में यह सबसे उत्तम माना जाना है।

शालिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त। इसमें क्रम से एक यगण दो तगण और अत में दो गुरु होते हैं। २. भसीड। पद्मकद। ३. मेथी। ४. गृहिणी। गृहस्वामिनी (को०)।

शालिपाणििका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक ओषधि। दे० 'एकांगी'—३।

शालिपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. मेदा नामक अष्टवर्ग्य ओषधि। २. पिठवन। गृहिनपर्णी। ३. वनउरदो। ४. शालपर्णी। सरिवन।

शालिपिड—सञ्ज्ञा पु० [स० शालिपिण्ड] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शालिपिष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. स्फटिक। विल्लोर पत्थर। २. चावल का आटा (को०)।

शालिभवन—सञ्ज्ञा पु० [स०] धान से भगा हुआ स्नेह।

शालिराट्—सञ्ज्ञा पु० [स०] हमराज चावल।

शालिवाह—सञ्ज्ञा पु० [स०] चावल ढोनेवाला बैल (को०)।

शालिवाहन—सञ्ज्ञा पु० [स०] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा।

विशेष—इमने शाक नामक संवत् चलाया था। टाड के राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि यह गजनी के राज गज का पुत्र था। पिता के मारे जान पर यह पंजाब चला आया और उसपर अपना अधिकार जमा लिया। इसने शालिवाहन पुर नामक नगर भी बसाया था। इसकी राजधानी गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठानपुर में थी। कही कही इसका नाम सातवाहन भी मिलता है। कथा सरि-सागर में लिखा है कि इसे सात नामक गृह्यक उठाकर ले चला करता था, इसी से इसका नाम सातवाहन पड़ा।

शालिहोत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. घोड़ा। २. बोंडो और पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। अश्ववैद्यक। ३. पुराणानुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। ४. अश्वचिकित्सा शास्त्र का लेखक। अश्ववैद्यक का प्रणेता (को०)।

शालिहोत्री—सञ्ज्ञा पु० [स० शालिहोत्रिन्] १. वह जा पशुओं और विशेषतः घोड़ा आदि की चिकित्सा करता हो। अश्ववैद्य। २. अश्व। घोड़ा (को०)।

शाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. काला जीरा। २. मेथी। ३. शालपर्णी। ४. दुरालभा।

शाली—वि० [स० शालिन] १. (प्रायः समास में प्रयुक्त) युक्त। सहित। २. घरेलू। गृह सबधी। ३. अच्छे आचार व्यवहारवाला। शालीन। यत्नवान् (को०)।

शालीक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शालीन'—वि० [स०] १. जो घृष्ट या उद्दण्ड हो। विनीत। नम्र। २. जिसे लज्जा आती हो। सलज्ज। ३. सदृश। समान। तुल्य। ४. अच्छे आचार विचारवाला। ५. शाला सबधी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

न्यायः । ६ संनिधौ । समवायः । समीपः । ७ जी
व्यवसायः । सुखः । ददः । चतुः ।

नानीदा—महा शू. प्रथमः । मन्त्रः । नानिदम् । नानिदम् ।
= यह जा धव निरुत हो गये ।

शालीनता—एक को [१०] १. जातीय होने का भाव या धर्म।
२. सज्जा। नाज। शर्म। ३. नम्रता। उ०—मैं वही को
प्रवृत्ति लज्जा हूँ। मैं शालीनता मिचारी हूँ। गतगत को
गुस्सना कम मे नूपुर से निवृत्त मनाती हूँ।—शालीनता,
पृ० १०३। ४. धर्मनता।

गालीनसर्व—मन्त्र ५० [म०] १ मीर । जतपुत्रा । २ मोरा नामक
गग । ३. लज्जाशीवता । विसमता (१०) ।

जालीना सधा श्री० [नं०] २० मिश्रवा' ले० ।

शालीनीकरण—सहा प्र० [मं०] १. नम्र वा तिष्ठ बनाना २
दुष्प्रवृत्ति । निदा । धिक्कार (को०) ।

गालीय'—प्रि० [म०] तात्ता या पर नवने । २ सात वृद्ध का ।

शालीयः—सज्ञा पुं० एक वैदिक आचार्य का नाम ।

शालु—मया पुं० [म०] १ भमीड । कमलकद । २ भटेउर या चोरक नामक ओषधि । ३ कषाय द्रव्य । ४ मेदक । भेरु । ५ एक प्रकार का फल ।

मालुका—जग पुं [सं] १. भसीड । पशुपद । २. जायफल ।

पालुर—मछा पुं० [मं०] मल्लक । भेरु । मदक [को०] ।

जानूक—सद्य ५० [मं०] १ महुक । मडक । २ जागफल ।
पातोफल । ३ २० 'जागुक' । ४ भसीड । ५ एक प्रकार
का रोग ।

शालूबिनी—सदा स्त्री० [म०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम ।

शानूर—सखा पुं० [स०] भेक । मेढक ।

जालूरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पीटाणु जो श्वेतवर्ण में पीटा उत्पन्न करता है।

शास्त्रेय'—तथा पुं० [मं०] १. शोक । मधुशिका । २. शान्ति मान वा
चेत । ३. भूमी ।

मालेय—वि० १. शासक मन्त्री । माता पृथ्वी का । २. माला मन्त्री
(को०) ।

शालिया—मया श्री० [म०] मेयो । मिथ्रेया ।

जालोत्तरीय—सदा प्र० वा. ताराव सन १८ क (नवम्बो, मार्गशिर्ष १८७०) ।

पाश्चिम—आ पु० [पु०] १. ग. ग. पु. १. नमन का पद। २.
नमन। ३. पु. ग. का नाम। ४. २० ग. १. १. २. ३.
४. पु. नमन। ५. २० 'नमन'—४।

५. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

[illegible][illegible]

विशेष—पृ. १२, दसम अंश का नाम, पृ. १३ व १४ के अंशों पर
नाम पड़ना जाति है।

शास्त्रमिति—सद्यः पुनः [५०] १. गीता ॥ २. गीता ॥ ३. गीता ॥
पदम् वा ६. पदम् वा ७. पदम् ()

शात्मलिनो—॥५॥ भा० [५०] नमो भगवते वासुदेवाय ।

शास्त्रमालिपि । ॥—महा शुभ [मं०] मलिन । मलिन शुभ ।

शास्त्रमितिस्थ—^१ ३० [१०] ६. ग२- ५। ए५ गाम । x. गाम । ५६।
[६००] ।

प्रातःकाली—महा श्री [१०] १. प्रताप । २. मेघना । ३. एव नर
का नाम । ४.—[१०] नदी का नाम है । ५. प्रातः काली
नदी का नाम है । ६.—प्रताप । ७. ८९० । ८. प्रातः काली
एक नदी का नाम (१०) ।

आत्मली—महा १२ [मो. भाग्यमाला] भाग्य १. ५५५ ।

शाल्मलीकद—आ ५० [१० भागमापन]। इस मन्त्र की अक्ष, ती
थरा के अनुसार मधुर, धातव, रमक, घोर किता, बाह तथा
मध्य भागक भागो जाया है।

शास्त्रमन्त्रिका—मन्त्र ५० [मन्त्र] मन्त्रन्याय मन्त्रिका मन्त्र ५०।

शास्त्रमन्त्रिका—मन्त्र पुं० [मन्त्र] मन्त्र का समुदाय समग्र मन्त्रों का यह संग्रह जिसपर समग्र मन्त्रों का अर्थ की व्याख्या की जाती है।

शात्मनीक्षीप—महा शुभ (१०) पुराणाभ्याम् ००० द्वाप । (पञ्चम द्वाप
‘पञ्चम’ १-२ ।

शात्मनीयेष्ट, शात्मनीयेष्टम् — १०० प्र० (१०) गणपति ५। गणपति ५। गणपति ५।

१. शास्त्रनिर्वाचन—पृ. १० [१०] पुस्तकानुसार एक रूप । विषय
को 'शास्त्रनिर्वाचन'—१ ।

शास्त्र—महा शु० [म०] १ मीन राज्य ६ ७४ मदा वा नाम ।

[illegible]

1. 1944年10月1日，在柏林举行的第11次国际劳工大会，通过了《国际劳工公约第102号》，即《社会保障最低标准公约》。该公约是国际劳工组织历史上最重要的公约之一，旨在确立社会保障的最低标准，以保护工人及其家属在失业、疾病、工伤、年老和丧失劳动能力时的基本生活。

[illegible]

शाल्वगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत का नाम ।

शाल्वण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह लेप जो फोड़े पकाने के लिये उसपर चढ़ाया जाता है । पुलटिस । २ भरता । चोखा ।

शाल्वसेनी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम । २ इस देश का निवासी ।

शाल्विक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी जिसे चूड़चूड़ भी कहते हैं ।

शाल्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वच्चा, विशेषतः पशुओं आदि का वच्चा । २. मृतक । मुरदा । ३ भूरा रंग । ४. सूतक जो किसी के मर जाने पर उसके मवधियों को लगता है । ५. मरघट । शमशान ।

शाल्व—वि० १ शवसवधी । शव का । २. भूरे रंग का (को०) । ३ मरा हुआ । मुरदा (को०) ।

शाल्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वच्चा । विशेषतः पशु या पक्षी का वच्चा । २ भाऊ ।

शाल्वक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पाप । गुनाह । २ अपराध । कसूर । ३ लोव वृद्ध । ४ शवर स्वामीकृत भाष्य । ५ एक तत्र ग्रंथ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है ।

शाल्वर—वि० शवर सवधी । शवर का ।

शाल्वरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोव ।

शाल्वरचन्दन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शाल्वर चन्दन] एक प्रकार का चन्दन ।

शाल्वरभेदाक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ताँवा ।

शाल्वरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ । केवाँच ।

शाल्वरोत्सव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार शाल्वर या मनेच्छो का एक उत्सव जो होली के सदृश कथित है (को०) ।

शाल्वरत—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाश्वती] १ जो सदा स्थायी रहे । कभी नष्ट न होनेवाला । नित्य । २ संपूर्ण । समस्त । सब (को०) ।

शाल्वरत—सञ्ज्ञा पुं० १ वदव्यास । २ शिव । ३ स्वर्ग । ४ अतरिक्ष । ५ सूर्य (को०) । ६ एक कोशकार का नाम (को०) । ७. नित्यता । निरंतरता (को०) ।

शाल्वरतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाश्वतिको] स्थायी । नित्य । शाश्वत ।

शाल्वरती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

शाल्वकुल—वि० [सं०] मास या मछली खानेवाला । मासाहारी । गोश्तखार ।

शाल्वकुलिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सैंकी या पकी हुई रोटियाँ, पूड़ी, कचौड़ो आदि । शाल्वकुला का समूह या ढेर (को०) ।

शास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति । स्तव । २. अनुशासन ।

यौ०—शासानुशास ।

शासक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शासिका] १ वह जो शासन करता हो । २. वह जिसके हाथ में किसी नगर, प्रांत या देश आदि

की राजकीय व्यवस्था हो । दहाधिकारी । हाकिम । ३ कौटिल्य के अनुसार जहाज का कप्तान ।

शासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. आज्ञा । आदेश । हुक्म । २ किमी को अपने आधिकार या वश में रखना । ३ लिखित प्रतिज्ञा । पट्टा । ठोका । ४ राजा की दान की हुई भूमि । मुआफी । ५ वह परवाना या परमान जिनके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय । ६ शास्त्र । ७ इद्रियानुग्रह । ८. किसी के कार्यों आदि का नियंत्रण । ९. किसी नगर, प्रांत या देश आदि की राजकीय व्यवस्था करने का काम । हुक्मत । १० दंड । सजा । ११ शिक्षण । अध्यापन (को०) ।

यौ०—शासनकर्ता । शासनतंत्र । शासनदूपक = राजाज्ञा का उल्लंघन करनेवाला । शासनप्रणाली । शासनव्यवस्था ।

शासन—वि० १ शिक्षा देनेवाला । शिक्षक । बोधक । २. दंड देनेवाला । मारक (को०) ।

विशेष—योगिक शब्दों के अंत में प्रयुक्त होने से इस शब्द के उक्त अर्थ होते हैं । जैसे, पाकशासन, स्मरशासन, शिष्यशासन आदि ।

शासनकर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शासनकर्तृ] शासन । शास्ता ।

शासनतंत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शासन तन्त्र] हुक्मत का तोर तरीका । राज्यशासन का रीति या पद्धति ।

शासनदूपक—वि० [सं०] शासन को न माननेवाला । राज्यादेश को न माननेवाला (को०) ।

शासनदेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों का एक देवी का नाम ।

शासनधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शासक । २ राजदूत । एलची ।

शासनपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह ताम्रपत्र या शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखा या खोदा हुई हो । २. शुक्रनात के अनुसार राजाज्ञा का वह पत्र जिसपर राजा का हस्ताक्षर हो । फरमान ।

शासनप्रणाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शासन की रीति या पद्धति । हुक्मत का तोर तरीका ।

शासनवाहक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो राजा की आज्ञा लोगों के पास पहुँचाता हो । २ राजदूत । एलचा ।

शासनव्यवस्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शासनप्रणाली' ।

शासनशिला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखा हो ।

शासनसत्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शासन + सत्ता] शासन या नियमन की स्थिति या अधिकार । उ०—यहाँ जहाँ राजनीतिक दलों के हाथ में शासनसत्ता रहेगी जो रूस के प्रति मित्रता रखेंगे ।—आ० अ० रा०, पृ० १२५ ।

शासनहर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. राजदूत । २ वह जो राजा की आज्ञा लोगों तक पहुँचाता हो ।

शासनहारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शासनहारक] दे० 'शासनहर' ।

शासनहारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शासनहारिन्] राजदूत । एलची । शासनहर ।

शासनातर्गत—वि० [म० शासन + अन्तर्गत] १ शासन के भीतर या अर्धीन । २. अर्धीन । वशीकृत ।

शासना—सच्चा स्त्री० [स० शासन] आज्ञा ।—उ० दास होइ पुत्र होइ शिष्य होइ कोई भाइ, शासना न मानई तौ कोटि जन्म नर्क जाइ ।—राम चं०, पृ० ४८ ।

शासना—क्रि० स० [स० शासन] हुक्मत करना । शासन करना । उ०—या विधि शासन जीवन देई । हरिहर नाम न कबहूँ लेई ।—कबीर सा०, पृ० २५५ ।

शासनाधीन वि० [स०] दे० 'शासनातर्गत' ।

शासनानिवृत्ति—सच्चा स्त्री० [स०] राजकीय आज्ञा का उल्लंघन [को०] ।

शासनी सच्चा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो लोगो को धर्म का उपदेश करती हो ।

शासनीय—वि० [स०] १ शासन करने के योग्य । २ सुधारने के योग्य । ३ दंड देने के योग्य । सजा देने के लायक ।

शासनुशास—सच्चा पुं० [स० शासन + अनुशास] राजा । नरेश । शाह-शाह । उ०—जब उन्होंने एथेस के वीरो के साथ मिलकर पशुपुरी के शासानुशास से युद्ध करके असाधारण शौर्य प्रकट किया था ।—वंशाली०, पृ० १२४ ।

शासित—वि० [स०] [वि० स्त्री० शासिता] १ जिसका शासन किया जाय । शासन किया हुआ । २ समयित । निग्रहित [को०] । ३. जिसे दंड दिया जाय । दंडित ।

शासित—सच्चा पुं० १. प्रजा । २. निग्रह । समय ।

शासिता—सच्चा पुं० [स० शासितृ] १ शासक । शास्ता । २ दंडविधान करनेवाला । दंड देनेवाला । ३. शिक्षक । उपदेशक [को०] ।

शासी—सच्चा पुं० [स० शासिन] शासन करनेवाला । शासक ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः योगिक शब्द बनाने में, उसके अंत में किया जाता है ।

शास्—सच्चा पुं० [स०] वक्ता । उद्घोषक । जैसे,—उक्थशस् = सूक्तो को उद्घोषित करनेवाला [को०] ।

शास्तर—सच्चा पुं० [स० शास्त्र] दे० 'शास्त्र' । उ०—ब्रह्मा विध वेद कीन शास्तर मुन मथन काठ, कर कर अठरा पुरान गाई ज्ञान गँलो ।—सत तुरसी०, पृ० १५६ ।

शास्ता—सच्चा पुं० [स० शास्त्र] १ शासक । २ राजा । ३. पिता । ४ उपाध्याय । गुरु । उ०—देवताओं और मनुष्यों के शास्ता हैं ।—वंशाली०, पृ० ३३ । ५ वह मनुष्य जिसे कोई काम करने का पूरा अधिकार हो । प्रधान नेता या पथप्रदर्शक । ६. वह मनुष्य जिसे शासन की अबाधित सत्ता प्राप्त हो । निरकुश शासक । दे० 'डिक्टेटर' । ७ बुद्ध [को०] । ८. जिन [को०] । ९ बौद्धों या जैनो का पूज्य उपदेश [को०] ।

शास्त्र—सच्चा स्त्री० [स०] १. शासन । २ दंड । सजा । उ०—शिक्षा समेत बहुधा वह शास्त्र देते ।—प्रिय०, पृ० १६७ । ३ आदेश । आज्ञा [को०] । ४ राजदंड । उ०—अटल शास्त्र नित करने पालन ।—पल्लव, पृ० १३० । ५ शासन का चिह्न [को०] ।

शास्त्र—सच्चा पुं० [स०] १ हिंदुओं के अनुसार ऋषिगण और मुनियों आदि के बनाए हुए वे प्राचीन ग्रंथ जिनमें लोगो के हित के

लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाए गए हैं और अनुचिन कृत्यों का निषेध किया गया है । वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगो के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं ।

विशेष—हमारे यहाँ वे ही ग्रंथ शास्त्र माने गए हैं जो वेदमूलक हैं । इनकी संख्या १८ कही गई है और नाम इस प्रकार दिए गए हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गायत्रवेद और अर्थशास्त्र । इन अठारहों शास्त्रों को अठारह विद्याएँ भी कहते हैं । इस प्रकार हिंदुओं की प्राय सभी धार्मिक पुस्तकें शास्त्र की कोटि में आ जाती हैं । साधारणतः शास्त्र में बतलाए हुए काम निषेध माने जाते हैं, और जो बातें शास्त्रों में वर्जित हैं, वे निषिद्ध और त्याज्य समझी जाती हैं ।

२. किसी विशिष्ट विषय या पदार्थसमूह के मन्व का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो । विज्ञान । जैसे,—प्राणिशास्त्र, अर्थशास्त्र, विद्युत्शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र । ३ आज्ञा । आदेश [को०] । ४ धर्मशास्त्र की आज्ञा [को०] । ५ पुस्तक । ग्रंथ [को०] । ६. सिद्धांत [को०] । ७. ज्ञान [को०] ।

शास्त्रकार—सच्चा पुं० [स०] १ वह जिसने शास्त्रों का प्रणयन या रचना की हो । शास्त्र बनानेवाला । २. ग्रंथलेखक [को०] । ३. ऋषि । मुनि [को०] ।

शास्त्रकृत्—सच्चा पुं० [स०] शास्त्र बनानेवाले, अर्थात् ऋषि, मुनि । २ आचार्य ।

शास्त्रकोविद—वि० [स०] जो शास्त्रों में निष्णात हो [को०] ।

शास्त्रगंड—सच्चा पुं० [स० शास्त्रगण्ड] साधारण पाठक । बहुत हल्का अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी [को०] ।

शास्त्रचक्षु—सच्चा पुं० [स० शास्त्र चक्षुः] १ शासन की आँख, अर्थात् व्याकरण । २. वह जिसे शास्त्ररूपी नेत्र प्राप्त हो । ज्ञानी । पंडित ।

शास्त्रचर्चा—सच्चा पुं० [स०] शास्त्र सबंधी विचारविमर्श, अध्ययन, मनन आदि [को०] ।

शास्त्रचारण—सच्चा पुं० [स०] वह जो शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता हो । शास्त्रदर्शी ।

शास्त्रज्ञ—सच्चा पुं० [स०] वह व्यक्ति जो शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता हो । शास्त्रों का जानकार । शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्रतत्त्व—सच्चा पुं० [स०] शास्त्रों में वर्णित नृत्य । परम मत्त [को०] ।

शास्त्रतत्त्वज्ञ—सच्चा पुं० [स० शास्त्रतत्त्वज्ञ] गणक । ज्योतिषी ।

शास्त्रत्व—सच्चा पुं० [स०] शास्त्र का भाव या धर्म ।

शास्त्र—[स० शान्मदृष्टि] वह जिन शास्त्रों का अच्छा ज्ञान ।

शास्त्र—[स०] शास्त्रों या धर्मग्रंथों में 'वि' [को०] ।

शास्त्रदृष्टि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शास्त्रों का ज्ञाता हो।
शास्त्रज्ञ। २ ज्योतिषी (को०)।

शास्त्रदृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की दृष्टि। शास्त्रीय दृष्टिकोण।
शास्त्रानुसार विचारपद्धति (को०)।

शास्त्रप्रवक्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्रप्रवक्तृ] दे० 'शास्त्रवक्ता'।

शास्त्रप्रसंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्रप्रसङ्ग] १ शास्त्र का विषय।
२ किसी भी प्रकार का धार्मिक विवाद (को०)।

शास्त्रमति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रवेत्ता। शास्त्रविद् (को०)।

शास्त्रमीमांसक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्र + मीमांसक] शास्त्र की मीमांसा
या व्याख्या करनेवाला व्यक्ति।—शास्त्र मीमांसक या तत्त्व
निरूपक को किसी सामान्य तथ्य या तत्त्व तक पहुँचने की जल्दी
रहती है।—रस०, पृ० ४३।

शास्त्रमीमांसा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शास्त्र + मीमांसा] तत्त्वविचार।
उ०—आधुनिक पश्चिमी शास्त्रमीमांसा को विदेशी कहकर
त्यग भी नहीं।—रस०, पृ० ५।

शास्त्रयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्रों का उद्गम स्थान (को०)।

शास्त्रवक्ता—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्रवक्तृ] वह जो लोगों को शास्त्रों का
उपदेश देता हो।

शास्त्रवर्जित—वि० [सं०] शास्त्रों द्वारा निषिद्ध (को०)।

शास्त्रवाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय का शास्त्रीय विवेचन (को०)।

शास्त्रविद्—वि० पुं० [सं०] शास्त्रों का जाननेवाला। शास्त्रदर्शी।
शास्त्रज्ञ।

शास्त्रविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय आज्ञा। वेदाज्ञा (को०)।

शास्त्रविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शास्त्रविधान' (को०)।

शास्त्रविमुख—वि० [सं०] शास्त्रों का अध्ययन न करनेवाला (को०)।

शास्त्रविरुद्ध—वि० [सं०] शास्त्रों के कथन के प्रतिकूल। अशास्त्रीय।
अवैधानिक (को०)।

शास्त्रविप्रतिषेध, शास्त्रविरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शास्त्रीय विषयों
का परस्पर अन्वय। विधि विधान की असंगति। २ शास्त्रय
विधिके विरुद्ध आचरण (को०)।

शास्त्रविहित—वि० [सं०] जो शास्त्र द्वारा कथित, अनुमोदित हो।
शास्त्रसमत।

शास्त्रव्युत्पत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्रों का अन्तर्गत ज्ञान। शास्त्रों
में प्रवीणता (को०)।

शास्त्रशिल्पी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्रशिल्पिन्] १ काश्मीर देश
का एक नाम। २ भूमि। जमीन।

शास्त्रसंगत, शास्त्रसमत—वि० [सं० शास्त्रसङ्गत, शास्त्रसम्मत]
शास्त्र के अनुकूल। शास्त्रमिद।

शास्त्रसिद्ध—वि० [सं०] शास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित (को०)।

शास्त्रस्थिति संपादन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शास्त्र + स्थिति + सम्पादन]
शास्त्र में निदिष्ट विधियों का पालन। उ०—पर रावण यदि राम

के प्रति क्रोध या घृणा की व्यक्तता करेगा तो रस के तीनों
अवयवों के कारण 'शास्त्रस्थिति संपादन' चाहे जो हो जाय
पर उस व्यंजित भाव के साथ पाठक के भाव का तादात्म्य
कभी न होगा।—रस०, पृ० ६६।

शास्त्राचरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्र विधियों का पालन। २. शास्त्र
का अध्ययन। ३ वह जो शास्त्रादेश का पालन करता हो।
४ वेदाध्यायी वदु (को०)।

शास्त्राज्ञा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की आज्ञा। शास्त्र का आदेश।
उ०—धर्मावम तथा शास्त्राज्ञा का कुछ भी विचार करते।—
प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७।

शास्त्रातिक्रम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय विधियों का उल्लंघन (को०)।

शास्त्रातिग—वि० [सं०] शास्त्रों को न माननेवाला (को०)।

शास्त्रानुशीलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों का मनन (को०)।

शास्त्रानुष्ठान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय नियमों का पालन (को०)।

शान्त्रान्वित—वि० [सं०] शास्त्रीय नियमों के अनुसार (को०)।

शास्त्राभिज्ञ—वि० [सं०] शास्त्रों में निष्णात। शास्त्रज्ञ (को०)।

शास्त्राभ्यासी—वि० [सं०] शास्त्र का अभ्यास या अध्ययन करनेवाला।

उ०—भारतीय शास्त्राभ्यासी रसमीमांसा में आत्मा को भी
ग्रहण करते हैं।—रस० (भू०), पृ० ३।

शास्त्रार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ किसी शास्त्रीय विषय पर वादविवाद
करना। उ०—उसने अनेक पंडितों को शास्त्रार्थ में जीता है।—
भारतेंदु ग्र०, भा०, १, पृ० १०। २ शास्त्रविधिया या
वचनों का अर्थ (को०)।

शास्त्रालोचन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के तत्त्व का विचार या
आलोचना। शास्त्रार्थ। उ०—मध्यम उमय भारती हुई,
शास्त्रालोचन, शकर से हुआ प्रसर जिसमें, हारे महन।
—अपरा, पृ० २१३।

शास्त्रावर्तलिपि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार प्राचीन
काल का एक प्रकार की लिपि।

शान्त्रिक—वि० [सं०] शास्त्रों का ज्ञाता। शास्त्री।

शास्त्री—वि० [सं० शास्त्रन्] [वि० स्त्री० शास्त्रिणी] १. शास्त्र का
जाननेवाला शास्त्रज्ञ। शास्त्रविद्।

शास्त्री—सञ्ज्ञा पुं० १ वह जो शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञाता हो।
शास्त्रज्ञ। २ वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो। ३ एक
उपाधि जो कुछ विद्यालयों आदि में, इसी नाम की परीक्षा में
उत्तीर्ण होने पर प्राप्त होती है। ४ वह जो धार्मिक शिक्षा देता
हो (को०)।

शास्त्रीय—वि० [सं०] १ शास्त्र सवधा। शास्त्र का। २. शास्त्रसमत।
(को०)। ३ वैज्ञानिक (को०)।

शास्त्रोक्त—वि० [सं०] जो शास्त्र में लिखे या कहे के अनुसार हो।
शास्त्रों में कहा हुआ। वैधानिक।

शास्य—वि० [सं०] १ शासन करने योग्य। २ दंड देने के योग्य।
दंडनीय। ३. सुधारने योग्य।

शाहशाह—सज्ञा पुं० [फा०] बादशाहो का बादशाह । बहुत बड़ा बादशाह । महाराजाधिराज ।

शाहशाही—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शाहशाह का कार्य या भाव । २. व्यवहार का खरापन । (बोलचाल) ।

क्रि० प्र०—जताना ।—दिखलाना ।—बघारना ।

शाह^१—सज्ञा पुं० [फा०] १ बहुत बड़ा राजा या महाराज । बादशाह । (अन्य अर्थ के लिये दे० 'बादशाह') । २ मुसलमान फकीरो को उपाधि ।

शाह^२—वि० बड़ा । भागी । महान् । जैसे,—शाहशाह ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग केवल योगिक शब्द बनाने में उनके आदि में होता है ।

शाहकार—सज्ञा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्तम कृति [को०] ।

शाहखर्च—वि० [फा० शाहखर्च] बादशाहो की तरह बहुत अधिक खर्च करनेवाला [को०] ।

शाहगाम—सज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े की एक चाल [को०] ।

शाहजहाँ—सज्ञा पुं० [फा०] १. दुनिया या विश्व का राजा । ससार का स्वामी । २ सम्राट् अकबर का पौत्र जिसने ताजमहल बनवाया था ।

शाहजादा—सज्ञा पुं० [फा० शाहजादहू] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लड़का । महाराजकुमार ।

शाहजादी—सज्ञा स्त्री० [फा० शाहजादी] १ बादशाह की कन्या । राजकुमारी । २ कमल के फूल के अदर का पीला जीरा ।

शाहतरा—सज्ञा पुं० [फा० शाहतरहू] पित्त पापडा ।

शाहतीर—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'शहतीर' [को०] ।

शाहतूत—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'शहतूत' [को०] ।

शाहदरा—सज्ञा पुं० [फा० शाहदरहू] १ वह आवादी जो किसी महल या किले के नाचे बसी हो । २ राजमार्ग । आम रास्ता [को०] । ३. दिल्ली के पास यमुना के उस पार बसा हुआ एक कस्बा ।

शाहदाना—सज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का भाँग का बीज जो दवा के काम आता है [को०] ।

शाहदापरस्ती—सज्ञा स्त्री० [अ० शोहदा + फा० परस्ती] विषय वासना । उ०—बानीस वरस भए ये मस्ती । यो शेर को शाहदापरस्ती । —दक्खिनी०, पृ० १६२ ।

शाहनशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बादशाहो के बैठने का बहुमूल्य आसन । २ राजमहल के भरोखे के आने का वह स्थान जहाँ बैठकर मुगल बादशाह प्रजा को दर्शन देते थे । ३ बैठने की ऊँची जगह [को०] ।

शाहनामा—सज्ञा पुं० [फा० शाहनामहू] १ वह काव्यग्रन्थ जिसमें किसी राज्य विशेष के बादशाहो का वर्णन हो । २. फिरदौसी द्वारा रचित एक काव्य ग्रन्थ, जिनमें ईरान के बादशाहो का वर्णन है [को०] ।

हि० श० ६-५०

शाहबलूत—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'बलूत' ।

शाहवाज—सज्ञा पुं० [फा० शाहवाज] १ सफेद रंग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी । २ शूर । योद्धा [को०] ।

शाहवाला—सज्ञा पुं० [हि०] दे० 'शहवाला' ।

शाहमियाना—सज्ञा पुं० [हि०] दे० 'जामियाना' । उ०—बड़ा भारी देश और शाहमियाना खड़ा है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १२० ।

शाहराह—सज्ञा स्त्री० [फा०] बड़ी सड़क । बड़ा रास्ता । राजमार्ग ।

शाहखी—सज्ञा पुं० [फा० शाहखी] एक सिक्का । उ०—उन्होंने लूटपाट नहीं किया और चार अरब शाहखी लेकर सधि कर ली ।—हुमायूँ०, पृ० १६ ।

शाहाना—वि० [फा०] बादशाहो के योग्य । राजाओ का ना । राजसी ।

शाहाना^२—सज्ञा पुं० १ विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है । यह प्रायः लाल रंग का होता है । जामा । २ दे० 'शहाना' । (राग) ।

शाहिद^१—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह मनुष्य जो आँखों देपी घटना का न्यायाधीश के समक्ष वर्णन करे । सक्षी । गवाह । २ नायिका । प्रेमिका [को०] ।

शाहिद^२—वि० १ सुंदर । मनोहर । खूबसूरत । २ श्रेष्ठ । उत्तम । उम्दा ।

शाही—सज्ञा पुं० [फा०] १. वाज पक्षी । श्येन । २ तुलादंड । तराजू की डाँडी [को०] ।

शाही—वि० [फा०] शाही या बादशाहो का । राजसी । जैसे—शाही दरवार । शाही महल । शाही । मकारी ।

शाहिन—सज्ञा पुं० [फा०] १ दे० 'शाहनाज' । २ वह मुई जो तराजू की डाँडी के मध्य भाग में लगी होती है और जिसके विस्फुल्ल सीधे रहने से तौल बराबर और ठीक मानी जाती है ।

शिगरफ—सज्ञा पुं० [फा० शगर्फ] ईगुर । हिगुल । विशेष दे० 'ईगुर' ।

शिगरफी—वि० [फा० शिगरफ] शिगरफ के रंग का लाल । सुख ।

शिघाण—सज्ञा पुं० [सं० शिघ्राण] १ नायिकापुत्र । रेंट । २ दाढी [को०] ।

शिघाण—सज्ञा पुं० [सं० शिघ्राण] १ लोहमत्त । मडूर । २ नाक के अदर का चप जिसमें फिन्नी तर रहती है । ३ काँच का बरतन । ४ दाढी । ५ फुना हुआ श्रद्धांश । ६ फेन । माग [को०] । ७ बलगम । कफ या श्लेष्मा [को०] ।

शिघाणक—सज्ञा पुं० [सं० शिघ्राणक] [स्त्री० शिघ्राणिका] १ नाक के अदर का चप । २. कफ । वनस्पति ।

शिघाणी—सज्ञा पुं० [सं० शिघ्राणि] नाक ।

शिघान—सज्ञा पुं० [सं० शिघ्राण] दे० 'शिघाण' ।

शिघित—वि० [सं० शिघ्रित] नुंवा हवा । आघ्रात ।

शिघिनी—सज्ञा स्त्री० [सं० शिघ्रिनी] नाक ।

शिजजिका—सज्ञा स्त्री० [सं० शिजजिका] कुरघनी ।

शिज—सज्ञा पुं० [सं० शिज] कठार । कनकनाट्ट । व्वनि (विशेष-फर गहनो को) ।

शिजन—सझा पुं० [सं० शिञ्जत] [वि० शिजित] १ घातुरांड का परस्पर बजना। भकार करना। भनकारना। किंकिनी, नूपुर आदि गहनो को पहनकर चलने फिरने या उाके हिलने आदि से होने-वाली मधुर ध्वनि। २ भकार (को०)।

शिजा—सझा स्त्री० [सं० शिञ्जा] १ करधनी, नूपुर आदि आभूषणों की भनकार। २ घातुरांड के बजने का शब्द। भनभनाहट २. घनुप की बोरी। प्रत्यचा। ज्या।

यौ०—शिजालता = प्रत्यचा। ज्या।

शिजित—वि० [सं० शिजित] १ भनकार करता हुआ। मृदु। २ बजता हुआ।

शिजित—सझा पुं० ध्वनि। भनकार। आवाज।

शिजिनी—सझा स्त्री० [सं० शिजिनी] १ घनुप की बोरी। चित्ला। पतचिका। २. करधनी या नूपुर के घुंघरू।

शिजी—वि० [सं० शिजिन्] १ मधुर भनकार करता हुआ। २ आभूषणों की भनकार में युक्त (को०)।

शिडाकी—सझा स्त्री० [सं० शिडाकी] एक प्रकार की कांजी।

विशेष—यह मूली के पत्तों के रस में राई और नमक डालकर अथवा सरसों के रस में चावल का चूर्ण डालकर बनाई जाती है। वैद्यक के अनुसार यह रुचिकारी, कफनाशक, पित्त करने-वाली और भारी होती है।

शिव—सझा पुं० [सं० शिम्ब] १. फली। छीमी। २. चक्रमर्द। चक्रमर्द।

शिवा—सझा स्त्री० [सं० शिम्बा] १. छीमी। फली। २. सेम। ३. शिवी धान्य।

शिवि—सझा स्त्री० [सं० शिम्बि] दे० 'शिवी'।

शिविक—सझा पुं० [सं० शिम्बिक] १ मूँगफली। २ वृष्ण मुद्ग। काली मूँग (को०)।

शिविका—सझा स्त्री० [सं० शिम्बिका] १ फली। छीमी। २. सेम।

शिविजा—सझा स्त्री० [सं० शिम्बिजा] द्विदल अन्न। दाल।

शिविनी—सझा स्त्री० [सं० शिम्बिनी] १ श्यामा चिड़िया। कृष्ण चटक। २ बड़ी सेम।

शिविपर्णिका—सझा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णिका] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

शिविपर्णी—सझा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णी] वनमूँग।

शिवी—सझा स्त्री० [सं० शिम्बी] १ छीमी। फली। बोड़ी। २. सेम। ३. कौछ। केवाँच। कपिरुच्छु। वनमूँग।

शिवीधान्य—सझा पुं० [सं० शिम्बीधान्य] वह अन्न जिसके दानों में दो दल हों। द्विदल अन्न दाल। जैसे,—मूँग, मसूर, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया आदि।

शिवीफल—सझा पुं० [सं० शिम्बीफल] तरवट या आहुत्व नामक क्षुप।

शिश—सझा पुं० [सं०] एक प्रकार का फलदार वृक्ष।

शिशपा—सझा स्त्री० [सं०] १ शीघ्रता का पत्र। २ अशोक वृक्ष।

शिशुपा—सझा स्त्री० [सं० शिशुपा] दे० 'शिशुपा'।

शिशुमार—सझा पुं० [सं०] मूँस नामक जलजंतु।

शि—सझा पुं० [सं०] १ शिव। २ गुप्त। मोमाय। ३. जाति। ४ धीरता। धैर्य।

शिकजवी, शिकजवीन—सझा पुं० [सं०] दे० 'शिकजवीन'।

शिकजा—सझा पुं० [सं० शिकजवीन] १ रसायन, जमने या निबोढ़ने का यंत्र। २ पेंच बनने का यंत्र या औजार जिसमें तिलवट फिनावेँ दयाते और उनके बीच दाटने हैं। ३ यह तागा जिनमें जुलाहे घुमावदार दंड बनाते हैं पत्रिक बांधते हैं। (जुलाहे)। ४ प्राचीन यान का घण्टाघरों की जड़ों दंड दो के निम्ने एक यंत्र जिसमें उभारा टांग कम से जानी थी। ५ पेरने का यंत्र। कोट्ट। ६ यह उबाने की बत्ती। पेंच। ७. यंत्रणा (को०)। ८ परट। दयाव (को०)।

मूहा०—शिकजे में चिनवाता = घोर संवसा दिखाना। साँजन कराना। शिकजे में खीना = रूत काट देना। घोर संवसा पहुँचाना।

शिक—सझा स्त्री० [सं० शिक] १ पक्षी। छोटा। तरफ। २ एक और का जोर। ३. खट। दुर्गता विभाग। ४ क्षेत्रविभाग। तहसील। ५ पत्त। बाधा। अश्वचन (को०)।

यौ०—शिकदार = फिमी विशेष अधिविभाग का छोटाधिकारी। तहसीलदार।

शिकन—सझा स्त्री० [सं० शिकन] सिकुटने से पड़ी हुई धारी। मुठकर दबने से पड़ी हुई लकीर। शिन्वट। बनी। बाल। बल।

क्रि० प्र०—शिकाना।—जानना।—निकालना।

शिकन—वि० तोड़नेवाला। भंजक। (समागत में प्रयुक्त) जैसे, चुनचिन्न।

शिकम—सझा पुं० [सं०] १. पेट। उदर।

मूहा०—शिकम पालना = पेट पालना।

यौ०—शिकमपारा = सूपार्त। भूला। शिकमपरस्त, शिकमपरवर, शिकमवशा = पेटार्थी। पेट पालनेवाला। पेटू। शिकमवदनी = पेटपूजा। शिकमसेर = वृत्त। भरे पेटवाला। अघाया हुआ।

२ आमाशय। पाकस्थली। भेरा (को०)।

शिकमी—वि० [सं०] १. पेट संबंधी। निज का। अपना। २ भीतरी (को०)। ३. बड़े पेटवाला (को०)। ४ दे० 'शिकमी काश्तकार' (को०)।

शिकमी काश्तकार—सझा पुं० [सं०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये सेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

विशेष—इसका हक खास काश्तकार के हक से बहुत कम होता है।

शिकरा—सझा पुं० [सं० शिकर] एक प्रकार का बाज पक्षी। उ०—कोई शिकरा बाज उड़ाता है कोई हाथ में रखे सुतली है।—नजीर (शब्द०)।

शिकरम—सञ्ज्ञा पुं० [?] एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

शिकवा—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] शिक यत्। उलाहना। उ०—मुझको तुमसे नहीं कुछ बाकी है करना शिकवा।—भारतेंदु प्र०, भा० २, पृ० ५६०।

शिकस्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ हार। पराजय। मत्त। २. भग। टूटना। शिकस्तगी। ३. विफल्ता। अमिद्वि।

मुहा०—शिकस्त देना=पराजित करना। हराना। शिकस्त खाना=पराजित होना। हारना।

शिकस्तगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शिकस्त] टूटा हुआ। भग्न। खडित।

शिकस्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० उर्दू या फारसी की घमीट लिखावट।

यौ०—शिकस्ता नवीस=घसीट लिखनेवाला। शिकस्ता दिल=भग्न हृदय। शिकस्ता हाल=जिसकी आर्थिक दशा खराब हो। शिकस्ता हिम्मत=पस्त हिम्मत। हतोत्साह।

शिकायत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुगई करना। गिला। शिकवा। चुगली। २. किसी भूल, त्रुटि, दोष आदि की बात जो मन में हो। जैसे,—उनसे अब मुझे कोई शिकायत नहीं है। ३. उपालम्भ। उलाहना। ४. किसी के गलत काम की उसके अधिकारी को सूचना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५. शारीरिक अस्वस्थता। रोग। बीमारी। जैसे,—उसे दस्त की शिकायत है।

मुहा०—शिकायत रफा करना=रोग दूर करना। मांदगी हराना।

शिकायती—वि० [अ० शिकायत] शिकायत करनेवाला। २. जिसमें शिकायत हो।

शिकार—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १ जंगल पशुओं को मारने का कार्य या क्रीडा। आखेट। मृगया। अहेर। जैसे,—शेर का शिकार।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२. वह जानवर जो मारा गया हो। ३. गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। जैसे,—विल्ली का शिकार चूहा। ५. कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने या वश में होने से बहुत लाभ हो। अत्तमी। जैसे,—बहुत दिनों पर आज एक शिकार फँसा है, कुछ मिल ही जायगा।

मुहा०—शिकार आना=(१) मारने के लिये कोई जानवर मिलना। (२) किसी ऐसे आदमी का मिलना जिससे कुछ लाभ हो। शिकार करना=(१) कोई जानवर मारना। (२) किसी से कोई लाभ उठाना। (३) लूटना। शिकार खेलना=शिकार करना। किसी का शिकार होना=(१) किसी के द्वारा या कारण मारा जाना। जैसे,—न जाने किनने आदमी प्लेग के शिकार हुए। (२) वश में आना। फँसना। (३) किसी पर मोहित होना।

शिकारगड़हा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शिकार+हि० गड़हा] वह बड़ा गड़हा जहाँ शिकारी जानवरों को फँसने के लिये खादें दे।

शिकारगाह—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारवद—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] वह तस्मा जो घाड़े का दुम क पाम चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक मामान बाँधने के लिये लगाया जाता है।

शिकारा—सञ्ज्ञा पुं० [?] काश्मीर में सवारी के लिये उपयोग में आनेवाली एक प्रकार की नाव। उ०—मेरा शिकारा वह सडा है।—पिजरे०, पृ० २१।

शिकारी—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] आखेट करनेवाला। शिकार करनेवाला। अहेरी।

शिकारी—वि० १ शिकार करनेवाला। जंगली पशुओं को पकड़ने या मारनेवाला। जैसे,—शिकारी कुत्ता। २. शिकार में काम आनेवाला। जैसे,—शिकारी कोट। शिकारी खेमा।

मुहा०—शिकारी व्याह=गर्भव्य विवाह जो क्षत्रियों में अबतक कहीं कहीं होता है।

शिकोह—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १. भय। त्राम। डर। २. दबदबा। रोवदाव [को०]।

शिकाल—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १. वह घेडा जिसका अगला दाहिना ओर पिछला बाँया पैर सफेद हो। (यह दोष माना जाता है)। २. छल। धोखा। फरेव [को०]।

शिककु—वि० [स०] निरुम्मा। सुस्त। आलसी [को०]।

शिक्य—सञ्ज्ञा पुं० [म०] मोम। मँन। मधुमक्खी के छत्ते का मोम या सीठी। मधुशेष।

शिक्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिक्या'।

शिक्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. बहँगे के दोनों छोरों पर बंधा हुआ रस्सी का जाल जिसपर बोझ रखने हैं। २. छन में लटकता हुआ रस्सी का जालीदार मण्डप जिसपर दूध, दही आदि का मटका रखने हैं। छोका। झोका। मिक्कर। ३. तराजू की रस्सी। ४. बहँगे पर लटकाकर ले जाया जानवाला बोझ [को०]।

शिक्रियत—वि० [स०] सिकहर पर रखा हुआ या स्थापित।

शिक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गधवों का एक नायक। रोहित।

शिक्षक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० शिक्षिका, शिक्षिका] १ शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद। २. साखनवाला [को०]।

शिक्षण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पढ़ाने का काम। तानाम। शिक्षा। २. शिक्षा प्राप्त करना सीखने का काम। सीखना [को०]।

यौ०—शिक्षणकला=शिक्षा देने, पढ़ाने का कला या हुनर।

शिक्षणीय—वि० [स०] [स्त्री० शिक्षणीया] जहाँ शिक्षा देने का योग्य हो। जिसे शिक्षा दी जा सके।

शिक्षमाण—वि० [म०] [स्त्री० शिक्षमाणा] नागने का स्थापित रहनेवाला छात्र। उ०—यह भ्राता शिक्षमाण है या भिक्षुणा नहीं हुई थी।—इरा०, पृ० १७।

शिक्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. कला। विद्या का साधन या निखान का क्रिया। पढ़न पढ़ाने का क्रिया। साध। उच्चोम।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।—लेना ।

२ गुरु के निकट विद्या का अभ्यास । विद्या का ग्रहण । ३ दक्षता । निपुणता । ४ उपदेश । मंत्र । सलाह । ५ छद्म वेदांगों में से एक जिसमें वेश के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण रहता है, मंत्रों के ठीक उच्चारण का विषय ।

विशेष—यह विषय कुछ नागार्जुन भाग में आया है और कुछ प्रातिशाख्य सूत्रों में । ऋग्वेद का शिक्षा का ग्रंथ शौनक का प्रातिशाख्य सूत्र है । यजुर्वेद के प्रातिशाख्य के दो ग्रंथ मिलते हैं—एक तो आत्रेय महर्षि और वररुचि संकलित त्रिभाष्यरत्न, जो तैत्तिरीय शाखा का है और दूसरा कात्यायन जी का आठ अध्यायों का वाजसनेयी प्रातिशाख्य । पाणिनि आदि के व्याकरण से सबद भी शिक्षा विषयक ग्रंथ है जिनकी संख्या पचासों से ऊपर है ।

६ शासन । दबाव । ७ किसी अनुचित कार्य का दुरा परिणाम । सबक । दंड । जैसे,—अच्छी शिक्षा मिली, अब कभी ऐसा काम न करेंगे । ८ विनय । विनम्रता । शिष्टता । सुजनता (को) । ९ विज्ञान । बला । प्रायोगिक शिक्षा । जैसे, रणशिक्षा, सैनिक शिक्षा (को) ।

शिक्षाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यास । उपदेशक । २ शिक्षक । शिक्षा देनेवाला । अध्यापक (को) ।

शिक्षाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा के अनुसार उच्चरित ध्वनि (को) ।

शिक्षाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है ।

शिक्षागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ानेवाला गुरु । ज्ञानदाता गुरु । दीक्षागुरु का विलोम ।

शिक्षाग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा प्राप्त करनेवाला व्यक्ति । पढ़नेवाला । विद्यार्थी । छात्र ।

शिक्षाचार—वि० [सं०] शिक्षा के अनुकूल आचरण करनेवाला (को) ।

शिक्षात्मक—वि० [सं०] उपदेशात्मक । उपदेशप्रद (अ० प्रडिडेक्विक्) । उ०—इसे स्वीकार कर लेने पर भारतीय काव्य की प्रकृति के निरूपण के लिये आदर्शात्मक, शिक्षात्मक आदि रस और भाव के क्षेत्र के बाहर के शब्दों के व्यवहार को आवश्यकता नहीं रह जाती ।—रस०, पृ० ६२ ।

शिक्षादंड—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षादण्ड] वह दंड जो किसी चाल को छुड़ाने के लिये दिया जाय ।

शिक्षानर—संज्ञा पुं० [सं०] इद्र का एक नाम (को) ।

शिक्षापद—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपदेश । २ बौद्धों के 'विनयपिटक' का एक प्रकरण ।

शिक्षापद्धति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिक्षा देने का ढंग । शिक्षण की प्रणाली (को) ।

शिक्षापरिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैदिक काल की शिक्षा संस्था या विद्यालय जो एक ऋषि या आचार्य के अधीन रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था । २ शिक्षा या पढ़ाई का प्रवर्ध करनेवाली सभा या समिति ।

शिक्षाप्रद—वि० [सं०] जिससे शिक्षा प्राप्त हो । शिक्षा या सीख देनेवाला । जैसे, शिक्षाप्रद ग्रंथ ।

शिक्षामंत्री—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + मन्त्रिन्] [स्त्री० शिक्षामन्त्रिणी] राज्य का शिक्षा सबंधी सर्वोच्च अधिकारी (अ० एड्युकेशन मिनिस्टर) ।

शिक्षारस—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय में शक्ति या प्रवीणता प्राप्त करने की कामना (को) ।

शिक्षार्थी—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति । विद्यार्थी । तालिब इल्म ।

शिक्षालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाय । विद्यालय । पाठशाला ।

शिक्षावल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तैत्तिरीय उपनिषद् का पहला अध्याय ।

शिक्षावाद—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + वाद] उपदेशात्मकता । उपदेश वृत्ति । उ०—मंगल और अमंगल के द्वंद्व में कवि लाग अत में मंगल शक्ति को जो सफलता दिला दिया करते हैं उसमें सदा शिक्षावाद या अस्वाभाविकता की गंध समझकर नाक में सिकोड़ना ठीक नहीं ।—रस०, पृ० ६१ ।

शिक्षाविभाग—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + विभाग] वह सरकारी विभाग जिसका द्वारा शिक्षा का प्रवर्ध होता है । सरिश्ता तालीम ।

शिक्षाव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] जैन धर्म के अनुमान ग्राह्य धर्म का एक प्रधान अंग जो चार प्रकार का होता है, (१) सामयिक, (२) देशावकाशिक, (३) पोष और (४) अतिथि सविभाग ।

शिक्षाशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति । मेधा ।

शिक्षाशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + शास्त्र] वह शास्त्र, ग्रंथ आदि जिसमें शिक्षा की विधि, प्रणाली, अध्यापनपद्धति आदि तत्संबंधी विधानों का विवेचन मिलता है । (अ० एड्युकेशन) ।

शिक्षाहीन—वि० [सं०] जिसे शिक्षा न मिली हो । अशिक्षित । वेपढ़ा । गंवार ।

शिक्षित—वि० पुं० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षिता] १ जिसने शिक्षा पाई हो । पढ़ा लिखा । २ विद्वान् । पंडित । ३ पालतू (को) । ४. निपुण । कुशल (को) । ५ विनीत । लज्जाशील (को) । ६ प्रशिक्षित । अनुशासित (को) । उ०—जोवन रण में सक्षम, सबंधों से शिक्षित ।—ग्राम्या, पृ० २० ।

शिक्षिताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने विद्या पढ़ी हो । शिक्षित । २ शिक्षा देनेवाला । शिक्षक (को) । ३ लेखक । मुहंरिर (को) ।

शिक्षितायुध—वि० [सं०] जो आयुधों के प्रयोग में पटु हो । हथियार चलाने में निपुण (को) ।

शिखंड—संज्ञा पुं० [सं० शिखण्ड] १ मोर की पूंछ । मयूरपुच्छ ।—उ०—(क) कुटिल कच भुव तिलक रेखा शोश शिखंड शिखंड ।—सूर (शब्द०) । (ख) सिरनि शिखंड सुमन दल महल लाल सुभाय बनाए ।—तुलसी (शब्द०) । २ चोटी । शिखा । चूटिया । उ०—पोभित केश विचित्र भाति दुति शिखि शिखंड हरनी ।—सूर (शब्द०) । ३. काकपक्ष । काकुल ।

यी०—शिखंडखडिका = चूड़ाकरण का उत्सव । चूड़ाकरण ।

शिखंडक—सञ्ज्ञा पु० [स० शिखण्डक] १ काकपुत्र । काकुल । २ मयूरपुच्छ । ३. चोटी । शिखा । चूटिया (को०) । ४ नितव के नीचे का मामल भाग (को०) । ५ वह जिसने शैव मतानुसार मुक्ति की एक विशेष अवस्था प्राप्त कर ली हो (को०) ।

शिखंडिक—सञ्ज्ञा पु० [स० शिखण्डिक] १. कुक्कुट । मूर्गा । २ एक प्रकार का मानिक (रत्न) ।

शिखंडिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिका] शिखा । चोटी । ३० 'शिखंड' ।

शिखंडिनी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिनी] १ मोरनी । मयूरी । २ जूही । यूथिका । ३ गुजा । करजनी । चोटली । ४ मूर्गा । ५ द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी ।

विशेष—कहते हैं, पूर्व जन्म में यज्ञ काशिराज की बड़ी कन्या अथा य जिसे भोग्म हर लाए थे । भोग्म से बदला लेने के लिये यह पुरुष रूप में हो गई और महाभारत के युद्ध में लड़ी थी । विशेष ६० 'शिखंडी' ।

६ कश्यप की पुत्री दो अप्सराएँ जो ऋग्वेद के मन्त्र की द्रष्टा मानी जाती हैं ।

शिखंडिनी^२—वि० स्त्री० शिखंड से युक्त । शिखंडवाली ।

शिखंडी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० शिखण्डिन्] १ पीली जूही । स्वर्णयूथिका । २ गुजा । चिरमिटो । धुँवचो । ३ मोर । मयूर पक्षी । ४ मूर्गा । ५ मोर की पूँछ । ६ वाण । ७. विष्णु । ८ कृष्ण । ९ शिव । १०. शिखा । बालों की चोटी । उ०—शिखंडी शीश मुख मुरली बजावत वन्यो तिलक उर चदन ।—सूर (शब्द०) । ११ द्रुपद का एक पुत्र ।

विशेष—यह पहले कन्या के रूप में उत्पन्न हुआ था, पर इसे पुत्र के रूप में प्रसिद्ध किया गया और शिक्षादीक्षा भी पुत्र के समान दी गई । कालांतर में हिरण्यवर्मा की कन्या से इसका विवाह भी हुआ । यह जानकर कि मेरी कन्या का विवाह एक स्त्री से हुआ है और द्रुपद ने मुझे धोखा दिया है, हिरण्यवर्मा ने द्रुपद पर आक्रमण करने की तैयारी की । इस बीच शिखंडी न बन में घाट तप किया और एक यज्ञ को प्रसन्न कर अपना स्त्रीत्व उसे दे देने के पीछे पुरुष के रूप में हो गया । इसी को आगे करके महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने युद्ध के दसवें दिन पितामह भोग्म का वध किया था । भोग्म की प्रतिज्ञा थी कि हम किसी स्त्री पर बाण न चलावेंगे । अश्वत्थामा के हाथ इसका वध हुआ था । विशेष ६० 'शिखंडिनी' ।

१२ राम के दल का एक बदर । उ०—धुवमाल गिरि पुनि गए मिले शिखंडी नाम ।—विश्राम (शब्द०) । १३. वृहस्पति । देवगुरु ।—अनेक (शब्द०) ।

शिखंडी—वि० शिखंडयुक्त । शिखावाला (को०) ।

शिखण्डु^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखा] ३० 'शिखा' । उ०—फूलो फिरत रोहिणी मैया नख शिख कर सिंगार ।—सूर (शब्द०) ।

शिखर^१—वि० [स०] जिसे शिखा हो । शिखावाला । (ममामात में प्रयुक्त) जैसे विशिख, पंचशिख ।

शिखक—सञ्ज्ञा पु० [स०] लेखक । मुद्रारि ।

शिखर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ सबसे ऊपर का भाग । सिरा । चोटी । २ पहाड़ की चोटी । पर्वतशृंग । ३ अग्रभाग । ४ मंदिर या मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा । कगूरा । कलश । ५ मंडप । गुंबद । ६ जैनियों का एक तीर्थ । ७ एक अस्त्र का नाम । ८ एक रत्न जो अनार के दाने के समान सफेद और लाल होता है । उ०—श्रीफन सकुचि रहे दुरि कानन शिखर हियो बिहगन ।—सूर (शब्द०) । ९ कुद का कली । १० लीग । ११ काँख । बगल । १२ पुलक । रोमांच । १३. उँगलियों की एक मुद्रा जो तांत्रिक पूजन में बनाई जाती है । १४ तलवार की नोक (को०) । १५. सूखा तिनका (को०) ।

शिखरणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखरिणी] ३० 'शिखरिणी' ।

शिखरदशना—वि० स्त्री० [स०] जिसके दाँत कुद की कली के समान हो ।

शिखरन—सञ्ज्ञा पु० [स० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा पेय पदार्थ या शरबत जिसमें केसर, कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते हैं । शिखंड ।

शिखरवासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिखर पर बसनेवाली, दुर्गा ।

शिखरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [] १ मूर्वा । मरोड़फली । मूर्वा । २ एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी ।

शिखराद्रि—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम ।

शिखरिचरण—सञ्ज्ञा पु० [स०] चिचड़े की जड़ । अपामार्ग का मूल ।

शिखरिणी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ रसाल । २ नारीरत्न । स्त्रियों में श्रेष्ठ । ३ रोमावली । ४ मल्लिका । बेला । मोतिया । ५. नेवारी का पीथा । ६ किशमिश । लघु द्राक्षा । ७. मूर्वा । मरोड़फली । मुरहरी । ८ दही और चीनी का रस या शर्बत । ९ सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु होते हैं तथा छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है । जैसे,—शिला पं गुरुतें कुपित ललना तोहि लिख कै ।

शिखरिणी — वि० स्त्री० १ शिखर या चूड़ावाली । २. नोकदार । अनीदार (को०) ।

शिखरी^१—सञ्ज्ञा पु० [स० शिखरिन्] १ पर्वत । पहाड़ । २. पहाड़ी दुर्ग । ३. वृक्ष । पेड़ । ४. अपामार्ग । चिचड़ा । ५ वदाक । बाँदा । ६. कुदरु नामक गंधद्रव्य । ७ लावान । ८ काकडा-सिंगी । ९ ज्वार । मक्का । १०. एक प्रकार का मृग ।

शिखरी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखर] चोटी । चूड़ा । उ०—जिस दिन शैल शिखरियाँ उनको रजत मुकुट पहनान आएँ ।—हिम कि०, पृ० २ ।

शिखरी^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी । शिखरा । उ०—शिखरी कौमोदकी गदा युग दीपति भरी सदाई ।—रघुराज (शब्द०) ।

शिखरी*—वि० [सं०] १ शिखरवाला। शिखरयुक्त। २ नोकदार।
नुकीला (को०)।

शिखलोहित—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुकुरमुत्ता।

शिखाडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिखाण्डक] क कपट।

शिखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुडन के समय सिर के बीचोबीच छोड़ा हुआ बालो का गुच्छा जो फिर कटाया नहीं जाता और हिंदुओं का एक चिह्न है। चोटी। चूटया।

यौ०—शिखा सूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के चिह्न हैं और जिनका त्याग केवल सन्यासियों के लिये विधेय है।

२ मोर, मुर्गा आदि पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी या पखो का गुच्छा। चोटी। कलगी। ३ आग की लपट। ज्वाला। ४ दीपक की लो। टेम। उ०—(क) केशोदास तामें दुरो दीप को शिखा सो दौरि दुगवति नोलवास दुति अग अग की।—केशव (शब्द०)। (ख) दीप शिखा सम जुवति जन मन जनि होसि पतग।—तुलसी (शब्द०)। ५ प्रकाश का किरण। ६ नुकीला छोर या सिर। नोक। ७ ऊपर को उठा हुआ भाग। चोटी। शिखर। ८ पैर के पंजे का मिरा। ९ स्तन का अग्रभाग। चुचक। १० पेड़ की जड़। ११ शाखा। डाली। १२ अधिपात नायक। १३ श्रेष्ठ पुरुष। १४ कलियारी विप। लागला। १५. मूर्वा। मरोडफलो। १६ जटामासी। बालछड़। १७. बच। १८ शिफा। १९ तुलसी। २० कामज्वर। २१ एक वणवृत्त जिसके विषम पादों में २८ लघु मात्राएँ और अत में एक गुरु होता है और सम पादों में ३० लघु मात्राएँ और अत में एक गुरु होता है।

शिखाकद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिखाकन्द] शलजम। शलगम।

शिखातरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दीपवृक्ष। दीवट। दीपट।

शिखावर*—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मयूर। मोर। २ मजुघोष नाम के एक पूर्व जिन (को०)।

शिखाघर*—वि० १ शिखाधारा। २ नोकदार। नुकीला (को०)।

शिखाधार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मयूर। मोर। २. वह जिसे शिखा हो। चूड़ा या चाटीवाला।

शिखापाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चोटी। चुट्टी।

शिखापित्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर की उँगलियों में सूजन और जलन होती है।

शिखावधन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिखावन्धन] सिर के बालों को मिलाकर बाँधने की क्रिया। चोटी बाँधना।

शिखाभरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सिर का आभूषण। मुकुट।

शिखामणि*—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह रत्न जो सिर पर पहना जाय। २ श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिखामणि*—वि० सर्वश्रेष्ठ। प्रधान। शिरोमणि। जैसे,—चौरचार शिखामणि। = आकृष्ण।

शिखामूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह कद जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो। २ गाजर। गुजन (को०)। ३ शिखाकद। शलगम। शलगम (को०)।

शिखालु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मयूरशिखा। मोर के सिर पर को कलंगा (को०)।

शिखावती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्वा। मरोडफलो।

शिखावर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कटहल का वृक्ष। पनस।

शिखावर्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ। (महाभारत)।

शिखावल*—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मोर। मयूर। २. कटहल।

शिखावल*—वि० १. नुकीला। नोकवाना। २. चोटीवाला (को०)।

शिखावला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मयूरशिखा नामक वृक्ष (को०)।

शिखावली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मोरनी। मयूरी (को०)।

शिखावान*—वि० [सं० शिखावत्] [वि० स्त्री० शिखावती] १ शिखावाला। २ लपटवाला। ज्वालायुक्त (को०)। ३. नुकीला। नोकदार (को०)।

शिखावान*—सञ्ज्ञा पुं० १ अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ केतु ग्रह। पुच्छल तारा। ४ मोर। मयूर। ५. दीपक (को०)।

शिखावृक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दीवट। दीपट।

शिखावृद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह व्याज जो प्रति दिन बढ़ता जाय। सूद-दर-पूद। २ पराशर स्मृति के अनुसार वह व्याज जो रोजाने के हिसाब से नित्य वसूल किया जाता है। रोजही।

शिखासूत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चोटी और जनेऊ जो द्विजों का चिह्न है।

शिखि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मोर। मयूर। उ०—चौर फारि करिहीं भगीहीं शिखिनि शिखि लवलेस।—पूर (शब्द०)। २. तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३ कामदेव। ४ अग्नि। ५ तीन की सख्या।

शिखिकठ*—वि० [सं० शिखिकण्ठ] मोर के कंठ के समान। मोर के कंठ मा।

शिखिकठ*—सञ्ज्ञा पुं० तूतिया। नीला थोथा।

शिखिकण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चित्तगारी। स्फुलिंग (को०)।

शिखिकुद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिखिकुन्द] कुदर। विरोजा।

शिखिग्राव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ नाला यावा। २. एक प्रकार का नीला पत्थर। कात पाषाण।

शिखिध्वज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वज। २ कार्तिकेय। ३ वह जिस पर अग्नि या मार का चिह्न बना हा। ४. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ५ मयूरध्वज नामक राजा। उ०—नृति शिखिध्वज पोडशें जीतिगो ससार।—केशव (शब्द०)।

शिखिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मयूरी। २ मुर्गा। ३. मुर्गकेश। जटाघारी का पौधा।

शिखिपिच्छ, शिखिपुच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मयूरपक्ष। मोरपक्ष। मोर की पूँछ (को०)।

शिखिप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जगली बेर।

शिखिभू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय का एक नाम। स्कंद (को०)।

शिखिमंडल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिखिमण्डल] वरुण वृक्ष। तपिया।

शिखिमोदा—सच्चा स्त्री० [स०] अजमोदा । अजवायन ।
 शिखिमृत्यु—सच्चा पुं० [स०] मदन । कामदेव [को०] ।
 शिखियूप—सच्चा पुं० [स०] श्रीकारी नाम का मुग ।
 शिखिवर्द्धक—सच्चा पुं० [स०] १ गोल कद्दू । गोल घीया । २. कूमाड । कोहड़ा [को०] ।

शिखिवाहन—सच्चा पुं० [स०] कार्तिकेय ।
 शिखीव्रत—सच्चा पुं० [स०] गरुडपुराण में वर्णित एक प्रकार का व्रत [को०] ।

शिखिशिखा—सच्चा स्त्री० [स०] १ आग की लपट । लौ । २. मोर की कलेंगी [को०] ।

शिखिशृंग—सच्चा पुं० [स० शिखिशृङ्ग] चित्रमृग । चित्तीवाला हिरन ।
 शिखिशेखर—सच्चा पुं० [स०] मयूरशिखा । मोर की कलेंगी ।
 शिखिहिंटी—सच्चा स्त्री० [स० शिखिहिण्टी] सहदेई । महाबला ।
 शिखीद्र—सच्चा पुं० [स० शिखीन्द्र] १. तेंदू का पेड़ । तिंदूक । २. आबनूस का पेड़ ।

शिखी^१—वि० [स० शिखिन्] [वि० स्त्री० शिखिनी] १ शिखावाला । चोटीवाला । २ नुकीला । नोकदार [को०] । ३. ज्ञान की चोटी पर पहुँचनेवाला [को०] । ४ अभिमानी । घमंडी [को०] ।

शिखी^२—सच्चा पुं० १. मोर । मयूर । उ०—कुटिल कच तिलक रेखा सीस शिखी शिखड ।—सूर (शब्द०) । २ मुर्गा । ३ एक प्रकार का सारस । ४ बैल । साँड । ५ घोड़ा । ६. चित्रक । चीते का पेड़ । ७. अग्नि । उ०—आखडल और दहधर, शिखी वरुण दिगपाल ।—गुमान (शब्द०) । ८ तीन की सख्या (अग्नि तीन प्रकार की होने के कारण) । ९ दीपक । १० पित्त । ११. पुच्छल तारा । वेतु । १२ मेथी । १३ पर्वत । १४ वृक्ष । १५. ब्राह्मण । १६. सतावर । १७. वाण । १८. जटावारी साधु या भिक्षु । १९. एक नाग का नाम । २०. इद्र । २१. बगला । बक । २२. अपामार्ग । श्रोगा । चिचडा । २३. एक प्रकार का विप । २४ अजमोदा [को०] ।

शिखीश्वर—सच्चा पुं० [स०] कार्तिकेय [को०]

यौ०—शिखीश्वर मास = कार्तिक मास ।

शिगाफ—सच्चा पुं० [फा० शिगाफ] १ चीरा । नशतर । २ दरार । दर्ज । ३. कलम के बीच का चिराव । ४. छेद । सूराख ।

मुहा०—शिगाफ देना या लगाना = (१) कलम की चीरना । (२) चीरा लगाना । नशतर लगाना ।

शिगाल—सच्चा पुं० [फा० । तुल० स० शृगाल] जवुक । शृगाल [को०] ।

शिगिपत—सच्चा पुं० [फा० शिगिपत] अचभा । आश्चर्य । हैरत ।

शिगुपत, शिगुपतगी—सच्चा स्त्री० [फा० शिगुपत, शिगुपतगी] विकास । खिलना । २. प्रसन्नता । आह्लाद [को०] ।

शिगुप्ता—वि० [फा० शिगुप्ताह] १. मुकुलित । विकसित । खिला हुआ । २ प्रसन्न । आह्लादित [को०] ।

शिगूडी—सच्चा स्त्री० [देश०] एक जंगली द्रुप या पीवा जो दवा के काम में आता है ।

विशेष—यह वनस्पति चरपरी, गरम तथा वात और पृष्ठशूल का नाश करनेवाली तथा दूमरी ओषधियों के योग से रसायन और शरीर को दृढ करनेवाली कही गई है ।

शिगूफा—सच्चा पुं० [फा० शिगूफह] १ बिना खिला हुआ फूल । कली । २ फूल । पुष्प । ३ किसी अनोखी वात का होना । अचभे की वात । चुटकुला ।

मुहा०—शिगूफा खिलना = कोई ऐसी वात या भगडा खडा होना जिससे मनोरंजन हो । शिगूफा खिलाना = वात खड़ी करना । तमाशे के लिये कोई मामला पैदा कर देना । शिगूफा छोड़ना = (१) कोई नई या अनोखी बात कहना । (२) तमाशा देखने के लिये कोई मामला खडा कर देना । शिगूफा फूलना = (१) अनोखी वात निकलना । (२) मामला खडा होना ।

शिग्रू—सच्चा पुं० [स०] १. सहिजन का वृक्ष । शोभाजन । २ शाक । साग ।

यौ०—शिग्रुबीज = शिग्रुज ।

शिग्रुक—सच्चा पुं० [स०] दे० 'शिग्रु' । सहिजन ।

विशेष—मनु ने वानप्रस्थ आश्रमी लोगों के लिये इसके मक्षण का निषेध किया है । मेधातिथि और कुल्लुक ने इसे वाल्मिक देशोद्भव कहा है ।

शिग्रुज—सच्चा पुं० [स०] सहिजन का बीज ।

शिच्—सच्चा स्त्री० [स०] [कर्त्ता का० शिक्] १. जुए की रस्सी । २. वहँगी का छोका या जाल जिसपर बोझ रखा जाता है ।

शिचि—वि० [स०] काला या सफेद [को०] ।

शित^१—वि० [स०] १ कृश । दुर्बल । २. कमजोर । निर्वल [को०] । नुकीला । पतला । ४ चोखा । धारदार ।

यौ०—शितधार = तीक्ष्ण धारवाला । शिनशुक = (१) यव । जौ । (२) गेहूँ । गोधूम ।

शित^२—सच्चा पुं० विश्वामित्र के गोत्र के एक ऋषि का नाम ।

शित^३—वि० [स० श्वेत या मित] दे० 'मित' ।

शितद्रु—सच्चा स्त्री० [स०] १ शतद्रु । सतलज नदी । २. क्षीर मोरट । मोरट ।

शितनिगुंडी—सच्चा स्त्री० [स० शितनिगुण्डो] थेफालिका ।

शितपर्णी—सच्चा पुं० [स०] मोघा ।

शितवर, शितवार—सच्चा पुं० [स०] शिरियागे नामक नाग ।

शिताशाक—सच्चा पुं० [स०, शालिच शाक] शाति शाक ।

शिताग्र—सच्चा पुं० [स०] कटक । काँटा [को०] ।

शिताद्रिकर्णी—सच्चा स्त्री० [स०] विष्णुकाता लता । अपराजिता । कोयल ।

शिताफल—सच्चा पुं० [स०] शरीफा । सीताफल ।

शिताव^१—वि० [फा०] १ जल्द । शीघ्र । उ०—दिए घोस्क उसे इप वजा बेहिस व । उड्या बाँते दरहाल तोना शिताव ।—दक्खिनी०, पृ० ६१ । २ तेज । फुर्तीला । तीव्र (को०) ।

शिताव^२—सञ्ज्ञा स्त्री० शीघ्रता । जल्दी (को०) ।

शितावी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १ शीघ्रता । जल्दी । २ तेजी । हड़बड़ी ।

शितावर—सञ्ज्ञा पुं० [म० शितावर] १ बकुची । सोमराजी । २ शिरियारी । सतावर ।

शितावरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शितावरी] दे० 'शितावर' ।

शिति^१—वि० [स०] १ सफेद । शुक्ल । श्वेत । २ काला । कृष्ण । ३. नील । नीला । ४ कबुर । चितकबरा (को०) ।

यी०—शितिकठ । शितिकुभ ।

शिति^२—सञ्ज्ञा पुं० भोजपत्र । भूर्ज तह ।

शितिकठ—सञ्ज्ञा पुं० [म० शितिकठ] १ दात्यूह पक्षी । मुर्गावी । जलकाक । २ पपोहा । चातक । ३ मोर । मयूर । ४ नाग देवता । ५ शिव । महादेव ।

शितिकुभ—सञ्ज्ञा पुं० [स० शितिकुम्भ] कनेर का पेड़ । करवीर वृक्ष ।

शितिकेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्कन्ध के एक अनुचर का नाम ।

शितिचन्दन—सञ्ज्ञा पुं० [स० शितिचन्दन] कस्तूरी ।

शितिचार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिरियारी नामक साग ।

शितिच्छेद—सञ्ज्ञा पुं० [म०] हस ।

शितिपक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हम ।

शितिपृष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [म०] एक नाग जो एक यज्ञ में मैत्रावरुण बना था ।

शितिमास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मज्जा । मेद । चर्वी (को०) ।

शितिमूलक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] खस । उशीर ।

शितिरत्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नील मणि । नीलम ।

शितिवासा—सञ्ज्ञा पुं० [स० शितिवासस्] बलदेव । बलराम (को०) ।

शितिसार, शितिसारक—सञ्ज्ञा पुं० [म०] तिदुक्त वृक्ष । तैद ।

शितीक्षु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैदिक देवता उषाना के एक पुत्र का नाम ।

शित्पुट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ विलनी की जाति का एक जानवर । २ एक प्रकार का काला मोरा ।

शियिल^१—वि० [स०] १ जो कसा या जकड़ा न हो । जो खूब बँधा न हो । ढोला । २ मुस्त । मद । धीमा । ३ जिसमें और शक्ति न रह गई हो । थका हुआ । हारा हुआ । श्रात । उ०—देह शियिल भई उछ्यो न जाई ।—सूर (शब्द०) । ४ जो कार्य में पूर्ण तत्पर न हो । जो पूरा मुस्तैद न हो । आलस्ययुक्त । जैसे,—कार्य में शियिल पडना । ५ जो अपनी बात पर खूब जमा न हो । अहठ । ६ जिमका पालन कड़ाई के साथ न हो । जिसकी पूरी पाबंदी न हो । जैसे,—नियम शियिल होना । ७. जो साफ सुनाई न दे । अस्पष्ट (शब्द) ।

न जो पूरे दवाव में न रखा गया हो । छोड़ा हुआ । ६. निष्क्रिय । निरर्थक (को०) । १० अभाववान (को०) । ११. डाल से गिरा या टूटा हुआ (को०) । १२ दुर्बल । कमजोर (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—पडना ।—होना ।

शियिल^२—सञ्ज्ञा पुं० १ ढोलापन । शिथिलता । सुम्नी । २ वजन जो बसा न हो । ३ छोड़ना । डालना । ४ त्याग देना । त्यजन (को०) ।

शियिलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ कमे या जकड़े न रहने का भाव । ढालापन । ढिलाइ । २ थकावट । थकान । श्राति । ३ मुस्तैदी का न होना । अतःपरता । आलस्य । ४ नियम पालन की कड़ाई का न होना । ५ शक्ति की कमी । सामर्थ्य की टुट । ६ व तथा में शब्द का परस्पर गठा हुआ अर्थसमय न होना । ७. तर्क में किसी अवयव का अभाव ।

शियिलाई(पुं०)—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शियिल + हि० आई (प्रत्य०)] दे० 'शियिलता' ।

शियिलाना पुं०—क्रि० अ० [स० शियिलायने ? या स० शियिल + हि० आना (प्रत्य०)] १ शियिल होना । ढाला पडना । २ थकना । श्रात होना । उ०—करत सिंगार परस्पर दोऊ प्रति आलस शियिलाने ।—सूर (शब्द०) ।

शियिलित—वि० [स०] १ जो शियिल हो गया हो । ढीला पडा हुआ । २ विश्रात । थका हुआ । उ०—मृग डाल दिया, फिर धनु को भी, मनु बैठ गए शियिलित शरीर । दिखरे थे सब उपकरण वहीं आयुध, प्रत्यचा, शृंग, तीर ।—कामायनी, पृ० १४१ । ३ घुला हुआ । प्रविलीन (को०) ।

शियिलीकरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० शियिलीकृत] शियिल करना । ढाला करना ।

शियिलीकृत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जो शियिल किया गया हो ।

शियिलीभूत—वि० [स०] जो शियिल हो गया हो । शियिलित पडा हुआ । शनय ।

शिद्द—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १. तेजी । जोर । उग्रता । प्रचंडता । २ अधिकता । ज्यादा । जैम,—शिद्द को गरमी या बुखार । ३ कठिनाई (को०) । ४ कष्ट । तकलीफ (को०) ।

शिना—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भुईं आवना ।

शिनाख्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शिनाख्त] १ गृह निश्चय कि अमुक व तु या व्यक्ती यही है । पहचान । जैसे,—तुम अपने माल की शिनाख्त कर लो । २ स्वरूप या गुण का बोध । अवलोकन, अच्छा बुरा, जान लेने की बुद्धि । परख । तमीज । जैसे,—तुम्हे आदमी की शिनाख्त नहीं है ।

शिन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम । २ क्षत्रियो का एक भेद । ३ एक यादव वीर का नाम ।

विशेष—इन्होंने वसुदेव के लिये देवकी का बलपूर्वक हरण किया था । इस कारण इनका मोमदत्त के साथ भयकर युद्ध हुआ था । इनके पुत्र का नाम सत्यक और पौत्र का सात्यकि था जो पांडवों की ओर से महाभारत में लड़ा था ।

शनिवाहु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण मे वर्णित एक नदी का नाम ।

शनिवास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड का नाम [को०] ।

शिनूसा—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] छिन्का । छीक [को०] ।

शिपविष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिपिविष्ट' [को०] ।

शिपि^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रश्मि । किरण । २. जल (को०) ।

शिपि^२—सञ्ज्ञा स्त्री० चमडा । खाल ।

शिपिविष्ट^३—वि० [सं०] १ किरणों से व्याप्त । किरणाच्छादित ।
२ गजे मिरवाला । ३ कुष्ठ रोगवाला [को०] ।

शिपिविष्ट^४—सञ्ज्ञा पुं० १. कुट्टी । कोढी । २ खट्वाट व्यक्ति । वह जिमकी खोपडी गंजी हो (को०) । ३ शिव (को०) । ४ विष्णु (को०) । ५ वह व्यक्ति जिसके शिश्नाग पर चमडा न हो (को०) ।

शिपुराड्डी—सञ्ज्ञा स्त्री० [तं०] एक प्रकार का पौग जिमकी डाल के रेजे बुरश बनाने के काम मे आते है ।

शिप्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लोहे या ताँवे का टोप । शिरस्त्राण । उ०—
भ्रिनम टोप (शिप्र) यह लोहे या ताँवे का बनता था ।—हिंदु०
सं०, पृ० ८५ । २ हिमालय पर्वत का एक मरोवर (को०) ।
३ कपोल । गाल (को०) । ४ चिबुक । ठुहरी (को०) । ५ नाक ।
नासिका (को०) ।

शिप्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मध्यप्रदेश की एक नदी का नाम जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन नाम उज्जयिनी) स्थित है । यह हिमालय के 'शिप्र' सरोवर से निकली है । उ०—आर्य, आपकी वीरता की लेखमाला शिप्रा और सिंधु की लोल लहरियों से लिखी जाती है ।—स्कंद०, पृ० ३ । २ टोप । शिरस्त्राण (को०) ।

शिप्रावात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिप्रा से आनेवाला पवन । उ०—वह शिप्रावात, प्रिया से प्रिय ज्यो चाटुकार ।—अपरा, पृ० २१० ।

शिप्री—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिप्रिन्] शिरस्त्राणधारी योद्धा । उ०—शिरस्त्राण पहने हुए योद्धा शिप्री कहलाता था ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ८५ ।

शिफ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिफा' [को०] ।

शिफर(फ़)^१—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शिफर] ढाल । उ०—सतएँ शिफर सुमरस बनाई । तान वृष्टि तिन सबै बचाई ।—हुनुमन्नाटक (शब्द०) ।

शिफा^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृक्ष की रेशेदार जड जिममे प्राचीन काल मे कोडे बनते थे । २. कोडे की फटकार । चाबुक की मार । ३ माता । ४ हृदिद्रा । हृन्दी । ५ कमल की जड । पद्मकद । भसीड । ६ लता । ७ नदी । ८ एक प्राचीन नन्दी का नाम । ९ मानिका । जटामासी । १० शिखा । चोटी । ११ जड । मूल (को०) । १२ दे० 'शतपुष्पा' (को०) । १३. कोडा । वेत ।

यौ०—शिफादड = कोडे मारने का दड ।

हिं० श० ६-५१

शिफा^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] आरोग्य । तंदुरुस्ती । दे० 'शफा' । उ०—
उस मसीहा को दिखा दो तो कुछ आजार नही, अभी हो जाय
शिफा ।—श्यामा०, पृ० १०१ ।

यौ०—शिफाखाना = अस्पताल । दवाखाना ।

शिफाकंद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिफाकन्द] कमल की जड । भसीड ।

शिफाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पद्ममूल । भसीड ।

शिफाघर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] डाल । शाखा ।

शिफारूह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बरगद का पेड ।

शिवि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिवि' [को०] ।

शिविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिविका' ।

शिविर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] 'शिविर' [को०] ।

शिमाल—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा ।

शिमूडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] चगोनी या चिगोनी नाम का पौधा ।

शिया—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शीया] १ मददगार । सहायक । २ अनुयायी ।
३ मुसलमानों के दो प्रधान और परस्पर विरोधी संप्रदायों मे से एक । हजरत अली को पैगम्बर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला संप्रदाय ।

विशेष—उमर, अबूबक्र आदि जो चार खलीफा मुहम्मद साहब के पीछे हुए हैं उन्हें इस संप्रदाय के लोग अनधिकारी मानते हैं तथा पैगम्बर के बाद अली और उनके बेटों हसन और हुसेन को ही आदर का स्थान देते हैं । मुहर्रम के महीने मे ये अब तक हसन और हुसेन के वीरगति को प्राप्त होने के दिनों मे शोक मनाते हैं ।

शिर.—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिरस्] शिरस् शब्द का समासगत रूप ।
शिरस् शब्द के कर्ताकारक का एकवचन ।

शिर कपाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कापालिक सन्यासी ।

शिर कृतन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिर कृन्तन] शिर काटना । शिरच्छेद ।

शिर खड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिर खण्ड] माथे की हड्डी । कपालस्थि ।

शिर पीडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मिर का दर्द । माथे की पीडा ।

विशेष—आयुर्वेद मे ११ प्रकार के और यूनानी मे १६ प्रकार के शिररोग कहे गए हैं । परंतु कोई कोई २१ प्रकार के शिरदर्द बताते हैं । आयुर्वेद के अनुसार वातज, पित्तज, कफज, सनिपातज, रक्तज, क्षयज, कृमिज, मूयवर्त, अनतवात, अर्द्धविभेदक और शलक ये ११ प्रकार के शिररोग होते हैं ।

शिर फल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नारिकेल वृक्ष । नारियल ।

शिर शूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिर की पीडा ।

शिर स्थ—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिरस्थ' ।

शिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिर, शिरस्] १. मिर । कपाल । मुँड । खोपडा । २. मस्तक । माथा । ३ किसी वस्तु का सबसे ऊँचा भाग या सिरा । चोटी । ४ शिखर । ५. सेना का अग्र भाग । ६ पथ के चरण का आरम्भ । टोका । ७. मुखिया । प्रधान ।

अगुआ । ८ पिप्पली मूल । पिपरा मूल । ९ शय्या । १० विस्तर । विस्तर । ११ अजगर ।

शिरकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के अधिकार में भाग । समिलित अधिकार । साझा । हिस्सा । २ किसी कार्य में योग । किसी काम या व्यवसाय में शामिल होना । जैसे,—उनकी शिरकत से यह काम होगा ।

यौ०—शिरकतनामा = दे० 'शिराकतनामा' ।

शिरकती—वि० [अ० शिरकत] शिरकत करनेवाला ।

शिरखिस्त—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शीरखिस्त] एक वृद्ध का गोद जो श्रौष्य के काम में आता है और जिसे साधारणतः लोग उबार से बनी चीनी मानते हैं ।

शिरगोला—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] दुग्धपापाण नामक वृद्ध ।

शिरज—सञ्ज्ञा पुं० [म०] केश । बाल । शिरपिज ।

शिरत्रान(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिरस्त्राण] खोद । दे० 'शिरस्त्राण' । उ०—दूटत धुजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिरत्रान ।—सूर (शब्द०) ।

शिरनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई । उ०—इतनी सुनी हर्ष धर्मदासा । शिरनी पान लाई घरे पामा ।—कवीर सा०, पृ० ८२ ।

शिरनेत—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] १ गढवाल या श्रीनगर के आस पास का प्रदेश । उ०—मुनि सिधाय शिरनेतन देशू । तहँ विवाह किय ब्रह्मनरेशू ।—कवीर (शब्द०) । २ क्षत्रियों की एक शाखा ।

शिरपेंच—सञ्ज्ञा पुं० [हि०] दे० 'सिरपेंच' ।

शिरफूल—सञ्ज्ञा पुं० [हि० शिर + फूल] सिर में पहनने का खियों का आभूषण । सीसफूल । उ०—माँग फूल शिरफूल सब देगी फूल वनाव ।—केशव (शब्द०) ।

शिरमौर—सञ्ज्ञा पुं० [म० शिरम् + स० मुकुट, प्रा० मउड] १ शिरो-भूषण । मुकुट । २ श्रेष्ठ व्यक्ति । मुख्य व्यक्ति । प्रधान । उ०—हम खेलत तब साथ, होइ नीच सब भति जो । कछो बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमौर मम ।—सबल (शब्द०) । २ अविपति । नायक ।

शिरश्चन्द्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिरश्चन्द्र] महादेव, शिव ।

शिरश्छेद, शिरश्छेदन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सिर काटना । शिर कृतन [को०] ।

शिरसिज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] केश । बाल ।

यौ०—शिरसिज पाश = केशवध ।

शिरसिरुह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] केश । बाल ।

शिरस्क—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. शिरस्त्राण । २ पगड़ी । शिरोवेष्टन [को०] ।

शिरस्का—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नरयान । पालकी । शिविका [को०] ।

शिरस्तापी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिरस्तापिन्] हाथी । हस्ती [को०] ।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ युद्ध आदि के समय सिर के वचाव के लिये पहनी जानेवाली लोहे की टोपी । कूड । खोद । उ०—उसके पटदाँव (पीछे की ओर) एक लवी पुरुष मूर्ति है जो उरस्त्राण, कञ्ज और शिरस्त्राण पहने हुए है ।—हिंदु० सम्यक्ता, पृ० २६० । २, पगड़ी । मुरेठा । शिरोवेष्टन [को०] ।

शिरस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मुगिया । अग्रणी । नायक । २. वह जो वाद या अभियोग लगावे । वादी । अभियोक्ता [को०] ।

शिरस्थ—वि० उपस्थित । आमन्त्रित । उपनत [को०] ।

शिरस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [म०] मुख्य स्थान । प्रधान कक्ष [को०] ।

शिरस्थ—वि० [स०] शिर सवधी । शिर का । शिर पर स्थित ।

शिरस्थ—सञ्ज्ञा पुं० माफ एव म्वच्छ वाल [को०] ।

शिरहन(पु)†—सञ्ज्ञा पुं० [हि० शिर + आधान] १ उमोसा । तकिया । २ सिरहाना । मुडगरी । उ०—(क) शिरहन और चरण की सोवन लगी श्रवधि नहि जानी ।—गुरुराज (शब्द०) । (ख) ताके हृदय गर्व नहि धोरा । बँडेज जाह शिरहने श्रोरा ।—सबल (शब्द०)

शिरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ रक्त की छाटी नाडी । रून की छोटो नली । विशेष दे० 'नाडी' । २ पानी का सोना या धारा । ३ जाल के समान गुथी हुई रेखाएँ । ४ पानी खींचने का ढोल । ५ पृथ्वी के भीतर भीतर बहनेवाला पानी का मोता ।

विशेष—आठ दिशाओं के स्वामियों के नाम से आठ गिराएँ प्रसिद्ध हैं जैसे,—आग्नेयी, ऐंद्र, याम्या, आदि । बीच में सबसे बड़ी शिरा या महाशिरा है । इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी शिराएँ हैं ।

शिरा—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] भूरे रंग का एक प्रकार का पक्षी ।

विशेष—इस पक्षी का सिर गिरमिजी रंग का तथा पूँछ सफेद होती है । इसकी लंबाई १२ अंगुल के लगभग होता है । यह कुमाऊँ, काशमीर और अफगानिस्तान में होता है तथा भटकटैया के बीज खाता है ।

शिराकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] १ नाझा । हिस्सेदारी । २. कार्य में योग ।

शिराकतनामा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शिराकत + फा० नामह] वह कागज जिमपर साझे की शर्तें लिखी हो ।

शिराकती—वि० [अ० शिराकत] १. साझेदार । हिस्सेदार । २ सहायक । सहयोगी ।

शिराग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वातरोग जिममें वायु रुधिर के साथ मिलकर गले की नसों को काला कर देती है ।

शिराज—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] हिंदुओं की एक जाति जो चमड़े का काम बहुत अच्छा करती है ।

शिराजाल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ छोटी रक्तनाडियों का समूह । २. आँख का एक रोग जिसमें लाल डोरे मोटे और कड़े पड़ जाते हैं ।

शिरापत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पीपल का पेड़ । २ एक प्रकार का खजूर । हिताल । ३ कंय का पेड़ । कपित्थ ।

शिरापिडिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिरापिडिका] आँख का एक रोग जिममें पुतली के पास एक फुँसी निकल आती है । २ प्रमेह-पिडिका । शिराविका पिडिका ।

शिराप्रहर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का नेत्ररोग ।

शिराफल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. नारियल । २. अजीर ।

शिरामूल—सब्जा पुं० [सं०] नाभि ।

शिरामोक्ष—सब्जा पुं० [सं०] रक्तस्राव । रक्त का निकलना [को०] ।

शिरायु—सब्जा पुं० [सं०] रीछ । भालू ।

शिराल^१—वि० [सं०] १ शिरायुक्त । जिसमें शिराएँ हो । २ शिरा-संबन्धी [को०] ।

शिराल^२—सब्जा पुं० कर्मरग । कमरख [को०] ।

शिरालक^१—वि० [सं०] बद्ध नसो या नाडियोवाला ।

शिरालक^२—सब्जा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा जिसे हाडा भाँग कहते हैं । अस्थिभग वृक्ष ।

शिरालक^३—सब्जा पुं० [?] एक प्राचीन जाति का नाम ।

शिराला—सब्जा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा । २ कमरख ।

शिराविकापिडिडिका—सब्जा स्त्री० [सं०] शिराविका पिडिका वह घातक फुसी जो बहुमूत्र के रोगियों को निकलती है । प्रमेह पीडिका ।

शिरावृत्त—सब्जा पुं० [सं०] सीसा नामक वातु ।

शिराहर्ष—सब्जा पुं० [सं०] १ नसो का भनभनाना । २ आँख का एक रोग जिसमें आँख तारों के समान लाल हो जाती है और दिखाई नहीं पड़ता ।

शिरि—सब्जा पुं० [सं०] १ खज्ज । तलवार । २ शर । ३ वध करने वाला व्यक्ति । घातक [को०] । ४. शलभ । पत्तिया । ५. टिड्डी ।

शिरि^२—वि० उग्र । क्रूर । रौद्र [को०] ।

शिरियारी—सब्जा स्त्री० [देश०] एक जंगली वृद्धी या शाक जो औषध के काम में आता है । सुसना । सुनिपण्णक ।

विशेष—यह जंगली शाक हर जगह होता है । इसमें चोंगेरी के समान एक साथ चार चार पत्ते होते हैं जो एक अगुल चौड़े और नोकदार होते हैं । पत्तों के बीच में कली लगती है । फलों में दो चिमटे बाज हाते हैं जो कुछ रोएदार हाते हैं । ये बीज सूजाक में दिए जाते हैं । शिरियारी पजाव और सिंध में अधिक होती है । वैद्यक में यह कसैली, रूखी, शीतल, हलकी, स्वादिष्ट, शुक्लजनक, रुचिकारी, मेवाजनक और त्रिदोष-नाशक कही गई है । इसका साग भी लोग खाते हैं ।

शिरिष—सब्जा पुं० [सं०] १ सिरिस का पेड़ । २ शिरिष का पुष्प [को०] ।

शिरिषक—सब्जा पुं० [सं०] १. सिरिस का पेड़ । २. एक नाग का नाम ।

शिरिषपत्रिका—सब्जा स्त्री० [सं०] सफेद कटभी का पौधा ।

शिरिषी—सब्जा पुं० [सं०] शिरिषीन् विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

शिरुग्रारी—सब्जा स्त्री० [हिं०] दे० 'शिरियारी' ।

शिरोगद—सब्जा पुं० [सं०] शिर का रोग [को०] ।

शिरोगुहा—सब्जा स्त्री० [सं०] शरीर के तीन घटो या कोठों में से एक जिसमें मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी का सिरा रहता है । सिर के भीतर का भाग ।

शिरोगृह—सब्जा पुं० [सं०] चन्द्रशाला । अट्टालिका । कोठा ।

शिरोगेह—सब्जा पुं० [सं०] अट्टालिका । कोठा ।

शिरोग्रह—सब्जा पुं० [सं०] सिर का एक वातरोग । समलवाई ।

शिरोज—सब्जा पुं० [सं०] बाल । केश ।

शिरोदाम—सब्जा पुं० [सं०] शिरोदामन् पगड़ी । साफा ।

शिरोधरा—सब्जा स्त्री० [सं०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधाम—सब्जा पुं० [सं०] चारपाई का सिरहाना ।

शिरोधार्थ—वि० [सं०] १. सिर पर धरने योग्य । आदरपूर्वक मानने योग्य । सादर अंगीकार करने योग्य ।

मुहाम्—शिरोधार्थ करना = (१) सिर पर धारण करना । मिर माथे चढ़ाना । (२) आदरपूर्वक स्वीकार करना । आदर के साथ मानना, जंमे—आज्ञा शिरोधार्थ करना ।

शिरोधि—सब्जा स्त्री० [सं०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधिजा—सब्जा स्त्री० [सं०] शिरा । नस । नाड़ी ।

शिरोध्र—सब्जा पुं० [सं०] गरदन [को०] ।

शिरोनाप—सब्जा पुं० [सं०] शिरस् + हिं० नाप । सिर का परिमाण । सिर का नाप । उ०—प्रोर भी कई भेद हैं जिनका नरदेह-शास्त्र में विस्तार से अध्ययन होता है । एक प्रमुख भेद का नाम है शिरानाप, यदि किसी के सिर की लंबाई 'क' और चौड़ाई 'ख' है तो उसका शिरानाप क/ख × १०० हुआ । आयो०, पृ० ७ ।

शिरोपाव—सब्जा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव' । उ०—अच्छे खिलमृत और शिरापाव दन का कृपा की । —हुमायूँ, पृ० १८३ ।

शिरोभूषण—सब्जा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना । जैसे,—सास फूल । २. मुकुट । ३. शिरोमाण । श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोभूषा—सब्जा स्त्री० [सं०] शिर का अलकरण, शीशफूल, कलंगा आदि । उ०—कुछ उदाहरणों में शिरोभूषा पर कमलपुष्प भी जड़े हैं ।—संपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० ४५० ।

शिरोभ्यग—सब्जा पुं० [सं०] शिरोभ्यङ्ग सिर में तेल लगाने की क्रिया ।

शिरोमणि^१—सब्जा पुं०, स्त्री० [सं०] सिर पर का रत्न । चुडामणि । २. श्रेष्ठ व्यक्ति । सबसे उत्तम मनुष्य । सिरताज । मुखिया । प्रधान । ३. माला में सुमेरु ।

शिरोमणि^२—वि० सर्वप्रधान । सर्वश्रेष्ठ [को०] ।

शिरोमर्मा—सब्जा पुं० [सं०] शिराममन् जंगली सूअर । शूकर ।

शिरोमाली—सब्जा पुं० [सं०] शिरामालन् मुंड का माला धारण करनेवाला, शिव । महादेव ।

शिरोमोलि—सब्जा पुं० [सं०] १ सिर का रत्न । २. श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोरक्षी—सब्जा पुं० [सं०] शिरोरक्षन् सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक । वाढागार्ड ।

शिरोरत्न—सब्जा पुं० [सं०] शिरामणि ।

शिरोरुजा—सब्जा स्त्री० [सं०] सप्तपण वृक्ष । सातवन । २. मस्तक का पांढा [को०] ।

शिरोरुह—सब्जा पुं० [सं०] सिर के ऊपर के बाल । केश ।

शिरोरेखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नागरी अक्षरो पर लगाई जानेवाली शीर्ष रेखा । उ०—शिरोरेखा ने नागरी की वैज्ञानिकता और कलापूर्णता दोनों को बढ़ाया है ।—भाषा शि०, पृ० ५८ ।

शिरोवर्ती—वि० [सं० शिरोवर्तिन्] अग्रवर्ती । मुखिया । प्रधान । नायक । शीर्षस्थ [को०] ।

शिरोवल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मोर या मुग्गे की चोटी । कलंगी ।

शिरोवस्ति सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वातज सिर के दर्द का एक उपचार ।

विशेष—उर्द के सने हुए आटे से सिर पर आठ या सोलह अंगुल की बाढ बाँधकर बीच में गरम तेल भर दे और चार घड़ी रखकर निकाल डाले । इससे वातज शिरोरोग, कर्णरोग, ग्रीवा रोग, और दाढ़ के रोग ४, ५ दिन के सेवन से अच्छे हो जाते हैं ।

शिरोवृत्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गोल मिर्च । काली मिर्च ।

शिरोवृत्ताफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लाल श्रोगा । रक्त अपामार्ग । लाल चिचडा ।

शिरोवेष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उष्णोष्ण । पगडी । साफा ।

शिरोवेष्टन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पगडी [को०] ।

शिरोहृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सिर की पीडा । सिर का दर्द ।

शिरोहर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नेत्ररोग जो शिरोरूपात को चिकित्सा न करने से हो जाता है ।

शिरोहारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिरोहारिन्] १ शिरो की माला पहनने-वाले, शिव । महादेव ।

शिरोर्जति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सिर का दर्द । सिर की पीडा [को०] ।

शिरोस्थि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खोपडी की हड्डी । करोटि [को०] ।

शिक—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] अनेकेश्वरवादी होना । ईश्वर में द्वैत भाव रखना [को०] ।

शिकर्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शिरक्त', 'शिराक्त' [को०] ।

यौ०—शिकर्तनामा ।

शिलडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घाम । बीड ।

विशेष—यह सिध, बलोचिस्तान, दक्षिण, मलाबार और लका आदि के रेतीले स्थानों में बहुतायत से पाई जाती है । भारत से बाहर यह अरब और उत्तरी तथा मध्य अफ्रीका में भी होती है । यह घास जिस स्थान पर होती है उस स्थान पर जमीन में चावल की तरह के एक प्रकार के दाने भी होते हैं । गरीब लोग इन दानों को उबालकर अथवा इनका आटा बनाकर खाते हैं ।

शिलधिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलन्धिर] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शिलव—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलम्ब] १ जुलाहा । तनुवाय । २. दुद्धि-मान् । समझदार । ३. तपस्वी । साधु । सत [को०] ।

शिल'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ खेत कट जाने और कृषक द्वारा उसे छोड़ देने के बाद भूमि में पड़ा हुआ एक एक दाना बीनना । दे० 'उछ' । २. पारियात्र के एक पुत्र का नाम ।

शिल'—सञ्ज्ञा स्त्री० १. दे० 'शिला' । २. दे० 'सिल' ।

शिलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम ।

शिलगर्भज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पापाणभेद । पखानभेद ।

शिलज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जन्म । भूमि चुरीला ।

शिलरत्ति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो उछ वृत्ति के द्वारा जोरिका निर्वाह करता हो । उद्यमी ।

शिलवट—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'मिनाट' ।

शिलवाहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिलावहा] एक प्राचीन नदी का नाम । दे० 'शिलावहा' ।

शिलाजनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिलाजनी] कालाजनी वृक्ष । काली कपान ।

शिलात—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलान्त] प्रथमतः वृक्ष ।

शिला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाषाण । पत्थर । २ पत्थर का बड़ा चोटा टुकड़ा । चट्टान । मिल । ३. मन जिना । मनमिन । ४ कपूर । ५. शिलाजीत । ६ गेरु । ७ नाग का पोधा । ८ हरीतकी । हरे । ९. गाराचन । १० दूध । ११ पत्थर की ककड़ी अथवा वटिया । १२ भूमि में पड़ा हुआ एक एक दाना बीनने का काम । उछवृत्ति । उ०—बीन्थो शिला क्षुयावज छीना ।—रघुराज (शब्द०) । १३ दे० 'जिरा' । १४ चक्की के नीचे का पाट [को०] । १५ चौपट के नीचे की लकड़ी [को०] । १६ स्तम्भ का ऊपरी सिरा [को०] ।

शिलाकर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शलकी वृक्ष । मलई ।

शिलाकुट्टक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पत्थर तोड़ने की छेती ।

शिलाकुसुम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत ।

शिलाक्षर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तरपत्र पर अक्षर उत्कीर्ण करना । शिलालेखन । शिलालेख । २ लीचोग्राफी (अंग०) । पत्थर की छपाई [को०] ।

शिलाक्षार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चूना ।

शिलागृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गृह । गुहा । कदरा [को०] ।

शिलाघन—वि० [सं०] शिला की तरह कठोर ।

शिलाचक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शालग्राम की मूर्ति । २. प्रस्तर पर उत्कीर्ण कोई चक्र ।

शिलाचय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पर्वत । पहाड़ ।

शिलाज'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला । पत्थर का फूल । २. लोहा । ३. शिलाजीत । ४ पेट्रोल [को०] । ५ कोई भी शिलाभूत पदार्थ [को०] ।

शिलाज'—वि० खनिज [को०] ।

शिलाजतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शिलाजीत । २. गैरिक धातु । गेरु [को०] ।

शिलाजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मफेद रंग का पत्थर । सगमरमर ।

शिलाजित्—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिलाजीत' ।

शिलाजीत—सञ्ज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० शिलाजित्] काले रंग की एक प्रसिद्ध ओषधि जिसे कुछ लोग मोमियाई भी कहते हैं ।

विशेष—पुश्रुत के अनुसार यह ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणों में तपी हुई शिलाओं का रस है। 'नघटु' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है—एक पर्वता से निकलता है और दूसरा खारी जमीन में मिट्टी और पानी के योग से बनता है। 'रसरत्नकर' इसकी उत्पत्ति मोने, चाँदी, लोहे और ताँबे में मानता है। परन्तु यह प्रायः पहाड़ों पर या लोहे की खानवाले गड्ढों में ही मिलता है। शास्त्रों के अनुसार यह छह प्रकार का होता है। 'रसरत्न' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है। एक वह जिसमें से गोमूत्र के समान गंध आती है। यह माधुर्यात् बहुत मिलता है। और दूसरा और के समान सफेद होता है। इसमें से किसी प्रकार की गंध नहीं आती। इसका रस कई प्रकार का होता है। विध्याचल का शिलाजीत सबसे उत्तम कहा जाता है। इसको रासायनिक रीति में शुद्ध करके आपथि के काम में लाते हैं। यह बड़ा ही गुणकारी और शक्तिवर्धक होता है। अनुपानभेद के अनुसार नाना प्रकार के रोगों के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। वद्यक के अनुसार यह कड़वा, चरपरा, गरम, रसायन, छेदन, यागवाहो, कफ, मद, पथरी, शर्करा, सूजाक, क्षय, श्वाम, वातरक्त, ववासार, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, खासी, इत्यादि रोगों का नाश करने वाला माना गया है।

पुराणों के अनुसार देवासुर संग्राम के समय जब अमृत निकालने के लिये देवताओं और राक्षसों ने समुद्र का मदराचल पर्वत को मथानी बनाकर मथा, तब शेषनाग के भ्राता और मयन का गरमी से पर्वत के भीतर की धातुएँ पिघल गईं और पसीने के रूप में बहने लगी। उसी स्राव का नाम शिलाजीत, गिरस्वेद या शिलामल हुआ। पीछे से देवताओं ने ब्रह्मा और इन्द्र का पूजनकर मनुष्यों के कल्याणार्थ मदराचल का वही पसीना अन्य पर्वतों को दे दिया।

पर्याय—अगज। अद्रिज। शिलाज। शीतपुष्पक। शैल। शैलेय। अशमलाक्षा। जत्वश्मक। गौरय। अय्ये। गिरज। अश्मज। अश्मोत्थ। शिलाव्याधि। अश्मजतुलु।

शिलाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा मकान। अट्टालका। २. मकान के सबसे ऊपरी भाग में बना हुआ छाटा कमरा। चौवारा। ३. किसी इमारत के चारों ओर बना हुआ बड़ा घेरा। चहारदीवारा। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त। बिल। सुराख।

शिलाठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

शिलातल—संज्ञा पुं० [सं०] शिला। पाषाणमृष्ट।

शिलात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] लाहा।

शिलात्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोना या चाँदी गलाने की धारिया।

शिलात्व—संज्ञा पुं० [सं०] शिला का भाव या धर्म।

शिलात्वच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला या वत्स नाम की आवधि।

शिलाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शिलादद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १. शैलेय नामक गंधद्रव्य। छरीना। २. शिलाजीत।

शिलादान—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणों के अनुसार वह दान जिसमें किसी ब्राह्मण को शालग्राम की मूर्ति दी जाती है। २. शिला का गृहण करना। चेत में ले जाने चुनना।

शिलादित्य—संज्ञा पुं० [सं० शिलादित्य] कान्धकुज का एक नरेश। विशेष दे० 'हर्षवर्धन'।

शिलाद्वद्र—संज्ञा पुं० [सं० शिलाद्वद्र] शैलेय नामक गंधद्रव्य। छरीला।

शिलावातु—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोनारेल। २. खरिया। मिट्टी। ३. चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'शिलार्जित'।

शिलानीड—संज्ञा पुं० [सं० शिलानीड] गरुड।

शिलान्यास—संज्ञा पुं० [सं०] नींव की शिला रखना। नवीन भवन-निर्माण के समय नींव में पूजनादि करके शिला का स्थापन करना।

शिलापट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर की चट्टान। उ०—घरों तरे ही काज यह शिलापट्ट बिधि लाय।—सीताराम (शब्द०)। २. मसाला आदि पामन की सिल।

शिलापट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिलापट्ट (को०)।

शिलापुत्र, शिलापुत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] द्रष्टा जिसमें सिल पर कोई चीज पीसा जाती है।

शिलापुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। शैलेय। पत्थर का फूल। पथरफूल। २. दे० 'शिलार्जित'।

शिलापेप—संज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तर का चक्की या बिल आदि (को०)।

शिलाप्रातकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला पर उकेरी मूर्ति या शिलान्तक प्रतीक (को०)।

शिलाप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार लड़ाई में पत्थर फेंकना या लुटकाना।

शिलाप्रवालक—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार एक प्रकार का साधारण रत्न (को०)।

शिलाप्रमून—संज्ञा पुं० [सं०] शैलेय या छरीला नामक गंधद्रव्य। शिलाजुनुम।

शिलाफलक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर की पट्टिया। पत्थर का पाटा।

शिलावव—संज्ञा पुं० [सं० शिलावव] बट्ट प्राकार या परकाटा का पत्थर का टुकड़ा से बना हो।

शिलामव—संज्ञा पुं० [सं०] छरीला। शैलेय।

शिलाभप्यद—संज्ञा पुं० [सं० शिलाभप्यद] शिलाजीत।

शिलाभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाषाणभेद वृक्ष। पक्षानभेद। २. पत्थर तोड़ने का छेना।

शिलामल—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलायु—संज्ञा पुं० [सं०] गले में हाजिरा एक प्रकार का रत्न।

विशेष—इनमें कफ और रक्त के कुछ पद हान से गले में आविर्भूत होने से समान गति उत्पन्न होता है जिसमें बहुत पाड़ा हाजिरा

है। इसके कारण खाया हुआ अन्न गले में अटकता है। इसको गिलायु भी कहते हैं।

शिलायुप—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] महाभारत के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शिलारभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिलारम्भा] कठकेला। काष्ठ कदली।

शिलारस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोहवान की तरह का एक प्रकार का सुगन्धित गोद।

विशेष—कुछ लोग इसे खनिज भी मानते हैं, पर वास्तव में यह एक वृक्ष का गोद अथवा जमा हुआ दूध है। इसका वृक्ष पूरबी बंगाल, आसाम, भूटान, पेशावर, चीन, म्यामा, मेरगुई, जावा और यूनान में पाया जाता है। इसका वृक्ष ६० से १०० फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते ४२ इंच तक लंबे, जड़ की ओर गोलाकार, अनीदार और किंचित्त वारीक कंगूरेदार होते हैं। शाखाओं के अंत में छुड़ीदार फूल होते हैं। फल गोलाकार होते हैं जिनमें बीजों की घबकता होती है। वैद्यक के अनुसार यह कड़वा, चरपरा, स्वदिष्ट, स्निग्ध, गरम, सुगन्धित, वर्षा को मुंदर करनेवाला और शिवाय आदि को शांत करनेवाला होता है।

शिलारोपण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलान्यास।

शिलारोहण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विवाह का एक विधि। अशमारोहण। उ०—अब तक विवाह को तीन विधियाँ थी। एक अग्निप्रदक्षिणा, दूसरी, सप्तपदी लाजाहाम, तीसरी शिलारोहण।—बैशाली, पृ० ३४५।

शिलालिपि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिलालेख

शिलाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलालन्] एक अति प्राचीन नाट्यशास्त्र का आचार्य।

शिलालेख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख। पुराने लेख जो पत्थरों पर लिखे हुए पाए जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का अनुशासन या दान आदि उल्लिखित होता है।

शिलावर्षी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलावर्षिन्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शिलावर्षी—[सं०] पत्थर बरसानेवाला।

शिलावल्कल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [सञ्ज्ञा स्त्री० शिलावल्कला] एक प्रकार का आपवि। शिलावल्का।

शिलावल्का—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की विधि जिसे शिलजा और श्वता भी कहते हैं। राजानघट्ट के अनुसार यह ठंडी, स्वादु, क्षुब्धमेह, मूत्रावराध, अश्वमरी, शूलज्वर और पित्त का नाश करनेवाली है।

शिलावह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस जनपद का निवासी।

शिलावहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

शिलावृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २, उपलवृष्टि। पथराव।

शिलावेश्म—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शिलावेश्मन्] १. कंदरा। गुफा। २. पत्थर का बना हुआ मकान।

शिलाव्याधि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलासन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शैल्य नामक गंधद्रव्य। २ पत्थर का बना हुआ आसन। ३ शिलाजीत।

शिलासार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोहा।

शिलास्वेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलाहरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शालिग्राम की मूर्ति। उ०—भृगु मुनि कहा शिलाहरि धोई। करहु पान कछु दोष न होई।—विश्राम (शब्द०)।

शिलाहारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलाहारिन्] वह जो शिला या उद्य वृत्ति से अपना निर्वाह करता हो। उद्यशील।

शिलाह्व, **शिलाह्वय**—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलिग—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] इंग्लैंड में चन्ननेवाला चांदी का एक सिक्का जो प्रायः पुराने बारह आने मूल्य का होता है।

शिलिद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलिन्द] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है और रोगभावघक, हृद्य और वात-पित्त नाशक माना जाता है।

शिलि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।

शिलि—सञ्ज्ञा स्त्री० चोखट के नीचे का लकड़ी। डेहरो। देहली।

शिलिन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शिलीघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलीघ्न] १ कले का फूल। २ ओला। बनोरी। ३. शलिद नामक मछली। ४. मुईछता। कुकुरमुत्ता। ५ ककला।

शिलीघ्नक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलीघ्नक] कुकुरमुत्ता। खुमी।

शिलीघ्नो—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिलीघ्नो] १. केतुघ्रा। गड्डपदी। २। मटो। ३. एक प्रकार का चिड़िया।

शिली—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १. देहलाज। २. केतुघ्रा। गड्डपदी। ३. भाजपत्र। ४. वाण। ५. भाला। ६. खभे का ऊपरी भाग। स्तभशीर्ष (की०)। ७. महुक। मेढक।

शिलीपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फीलपाँव नामक रोग। श्लोपद।

शिलोभूत—वि० [सं०] शिला बना हुआ। उ०—शिलोभूत सौंदर्य, ज्ञान, आनंद अनश्वर। शब्द शब्द में तेरे उज्ज्वल जडित हिम शिखर।—गुगुण, पृ० ६२।

शिलीमुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अमर। भोरा। उ०—(क) कुँवरि आसत ओखड आह अम चरण शिलीमुख लाम।—सूर (शब्द०)। २. वाण। तोर। उ०—न डगे न भगे जिय जानि शिलीमुख पच घरे रतिनायक है।—तुलसा (शब्द०)। ३. युद्ध। समर। लड़ाई। ४. मूर्ख। वेवकूफ।

शिलु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लिसाडा। बहुवार वृक्ष।

शिलूष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि जो नाट्यशास्त्र के आचार्य माने जाते हैं। २. बेल का वृक्ष।

शिलेय—वि० [सं०] शिला संबंधी। शिला का।

शिलेय^१—सञ्ज्ञा पुं० शिलाजीत ।

शिलोच्छ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलोच्छ्र] फमल कट जाने पर खेत में गिरे पड़े दाने चुनकर जीवन निर्वाह करने की वृत्ति । शिल और उच्छ्रवृत्ति ।

यी०—शिलोच्छ्रवृत्ति = दे० 'शिलोच्छ्र' । शिलोच्छ्र वृत्ति(७) = दे० 'शिलोच्छ्र' । उ०—करि शिलोच्छ्र वृत्ति मन लावै । स्वामी को परसाद करावै ।—राम० धर्म०, पृ० ३४४ ।

शिलोच्छन—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शिलोच्छन] शिल और उच्छ्रवृत्ति ।

शिलोच्छी—वि० [सं० शिलोच्छीन्] शिलोच्छ्र वृत्तिवाला । अल्पसग्रही ।

शिलोच्चय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पर्वत । पहाड़ ।

शिलोत्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला या शैलेय नामक गवद्रव्य । २. शिलाजीत ।

शिलोद्भव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शैलेय । छरीला । २. पीला चदन । ३. सोना । स्वर्ण (को०) ।

शिलोद्भिदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पाषाणभेद । पत्थरफोड़ ।

शिलोका—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिलोक्स्] १. वह जो पर्वत पर होता हो । २. गरुड ।

शिल्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम । दस्तकारी । कारीगरी । हुनर । जैसे, बरतन बनाना । कपड़े सीना । गहने गढ़ना आदि । २. कला सबधी व्यवसाय, जैसे—अब इस नगर में के कई शिल्प नष्ट हो गए हैं । ३. दक्षता । पाटव । कौशल । चातुर्य (को०) । ४. निर्माण । सर्जन । सृष्टि । रचना (को०) । ५. आकार । आवृत्ति । रूप (को०) । ६. अनुष्ठान । क्रिया । धार्मिक कृत्य (को०) । ७. यज्ञादि में प्रयुक्त स्तुवा (को०) ।

शिल्पक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अष्टादश उपरूपको में एक उपरूपक जिसमें चारों वृत्तियाँ, चार अक्ष, शात और हास्य के अलावा कोई भी रस, ब्राह्मण नायक, उपनायक हीन पुरुष और इन्द्रजाल, श्मसानादि का वर्णन होता है । इसके २७ अंग कहे गए हैं ।

शिल्पकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिल्पकार' ।

शिल्पकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दस्तकारी । शिल्पकला । हस्तकला (को०) ।

शिल्पकला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से चीज बनाने की कला । कारीगरी । दस्तकारी । उ०—तो सो लहि आदर्श बढत कर शिल्प-कला सब ।—श्रीधर (शब्द०) ।

शिल्पकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाकर तैयार करता हो । शिल्पी । कारीगर । दस्तकार । उ०—नए नए साजो पाजो को शिल्पकार करते हैं सृष्टि ।—साकेत, पृ० ३७४ । २. राज । मेमार ।

शिल्पकारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिल्पकारिका] हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनानेवाला कारीगर । शिल्पकार ।

शिल्पकारी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्पकारिन्] वह जो शिल्प का कार्य करता हो । कारीगर ।

शिल्पवैशल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिल्पकार्य में पटुता या दक्षता ।

शिल्पगृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर चीजें बनाते हो । कारखाना ।

शिल्पगेह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिल्पगृह' ।

शिल्पजीवी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्पजीविन्] वह जो शिल्प के द्वारा जीविका निर्वाह करता हो । कारीगर । दस्तकार ।

शिल्पज्ञ—वि० पुं० [सं०] शिल्प जाननेवाला । कारीगरी को जानने-वाला ।

शिल्पता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पत्व ।

शिल्पत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पता ।

शिल्पप्रजापति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विश्वकर्मा का एक नाम ।

विशेष—विश्वकर्मा ही समस्त शिल्पो के आविष्कर्ता और शिल्पियों के मूलपुरुष माने जाते हैं ।

शिल्पलिपी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पत्थर या ताम्र आदि पर अक्षर खोदने की विद्या ।

शिल्पविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाने की विद्या । २. गृहनिर्माण कला । मकान आदि बनाने की विद्या । ३. यांत्रिक विज्ञान (को०) ।

शिल्पविधान—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्प + विधान] साहित्य में रचना या निर्माण का ढंग । रीति या पद्धति । उ०—अतएव कामायनी अपना स्वतंत्र आदर्श और स्वतंत्र शिल्पविधान रखती है ।—वी० शं० महा०,—पृ० ३४८ ।

शिल्पशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर तरह तरह की चीजें बनाते हो । कारखाना । शिल्पगृह ।

शिल्पशास्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें हाथ से चीजें बनाने का नित्य हो । शिल्पविद्या । २. शिल्पशास्त्र । वास्तु शास्त्र ।

शिल्पसमाह्वय—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] कारीगरी का मुकादमा ।

शिल्पस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिल्पकला में निपुण शिल्पज्ञ व्यक्ति (को०) ।

शिल्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नाई की दुकान (को०) ।

शिल्पाजीवी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्पाजीविन्] दे० 'शिल्पजीवी' ।

शिल्पालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिल्पगृह । कारखाना ।

शिल्पिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १. वह जो शिल्पकला में निपुण कारीगर । दस्तकार । २. शिल्पिक । ३. शिल्पिक । एक भेद । दे० 'शिल्पिक' । ४. शिल्पिक ।

शिल्पिक^२—वि० हाथ मधवी अक्षर लिखने वाला ।

शिल्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] शिल्पिक का काम ।

ए। में लिखने का काम ।

शिल्पिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पो होने का भाव । उ०—रत्न, अङ्गुलिम कला शिल्पिता के ध्वनिगूढ निदर्शन, रंगों की रचि के स्वर करते दृष्टि मरणि को विस्मित ।—अतिम, पृ० १०३ ।

शिल्पिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पो का स्त्रीलिंग रूप । २ एक प्रकार की घास ।

शिल्पिशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पशुद्ध । कारवाना ।

शिल्पी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्पिन्] १ शिल्पकार । कारीगर । २ राज । धवई । ३ चित्तेरा । चित्रकार । ४ नवो नामक गव-द्रव्य । ५ वह जो किसी भी कला में प्रवीण हो (ने०) ।

शिल्पी—वि० १ ललितकला या यात्रिक कला सम्बन्धी (को०) ।

शिल्ह—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्ह] दे० 'शिलारम' ।

शिल्हक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिल्हक] दे० 'शिलारस' ।

शिवकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिवङ्कर] १ मंगल करनेवाले, शिव । २ तलवार । ३ शिव का एक गण । ४ रोग फैलानेवाले एक असुर का नाम । ५ एक प्रकार का बालग्रह ।

शिवतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिवन्तिका] गुलदाउदो ।

शिवंसा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिव+अण] शम्भ का वह अश जो जैव साधुआ के लिये अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है ।

शिव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल । कन्याण । क्षेम । २ जल । पानी । ३ सैवा नामक । ४ शृगाल । मियार । गीदड । ५ खूँटा । ६ पारा । ७. गुग्गुलु । ८ पुडोरक वृद्ध । ९ मोक्ष । १०. काला घनूरा । ११ वेद । १२ देव । १३ कोतक ग्रह । शुभग्रह । १४ रुद्र । काल । १५ वन । १६ एक प्रकार का मृग । १७. एक प्रकार की गुड की शराब । १८ पल्ल द्वीप तथा जवू द्वीप के एक वर्ष का नाम । १९ विंग । २०. एक प्रकार का नृत्य । २१ एक छंद का नाम । इसके प्रत्येक चरण में ५, ६ वचन से ११ मात्राएँ और अंत में सगण, रगण, नगण, में से कोई एक होता है । इसकी तीसरी, छठी और नवी मात्राएँ लघु रहती हैं । २२ परमेश्वर । भगवान् । २३ विक्रम आदि सत्ताइस योगों के अंतर्गत एक योग । २४ समुद्रोत्थ । २५ सुहागा । २६ श्रावला । २७ कदम । कदम । २८ फिटकरी । २९ सिंदूर । ३० मिर्च । ३१ तिल का फूल । ३२ चंदन । ३३ लोहा । ३४ बावू । ३५ नीलकण्ठ पक्षी । ३६ कौवा । ३७ मौलसरी का पेड़ । ३८ हिंदुओं के प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का सहार करनेवाले और पौराणिक विमूर्ति के अंतिम देवता कहे गए हैं ।

विशेष—वैदिक काल में यही रुद्र के रूप में पूजे जाते थे । पर पौराणिक काल में ये शक्र, महादेव और शिव आदि नामों से प्रसिद्ध हुए । पुराणानुसार इनका रूप इस प्रकार है,— इनके सिर पर गंगा, माथे पर चंद्रमा तथा एक और तीसरा नेत्र, गले में साँप तथा नरमुंड की माला, सारे शरीर में भस्म, व्याघ्रचर्म ओढ़े हुए और बाएँ अंग में अपनी स्त्री पार्वती को लिए हुए । इनके पुत्र गणेश तथा वासिदेव, गण भूत और

प्रेत, प्रधान अम्ब त्रिशूल और वाहन बैल है जो नदी उहताता है । इनके घनूप का नाम पिनाक है जिसे धारण करने के कारण ये पिनाकी बने जाते हैं । इनके गम पाशुपत नामक एक प्रसिद्ध अस्त्र था जो उन्होंने अर्जुन को डरकी तपस्या में प्रमत्त होकर दे दिया था । पुराणों में इनके समय में बहुत सी कथाएँ हैं । ये महादेव का दूसरा रूप थे और दक्ष का यज्ञ नष्ट करनेवाले माने जाते हैं । कर्तव्य है, समुद्रमंथन के समय ना विप निकला था, वह रुकने पर किया था, वह विप रुकने अपने गले में ही रगा और नीचे फेंक में नहीं उतारा, इसलिये इनका गला नीचा हो गया और ये नीलकण्ठ कहलाने लगे । परशुराम ने अन्धविद्या की जिन्ना इन्हीं ने पाई थी । मर्ग और नृप के भी ये प्रधान आचार्य और परम ताम्यों तथा योगी माने जाते हैं । इनके नाम में एक पुराण भी है जो शिव-पुराण कहलाता है । इनके उपनाम 'शैव' कहलाते हैं । इनका नियमस्थान कैलास माना जाता है और लोक में इनके लिंग का पूजन होता है ।

पर्याय—जम्बु । महादेव । ईश्वर । ईश । गणेश । लक्ष्मिता । ईशान । पञ्चानन । विविध । अर्धतारुण । भर्ग । त्रिशनाथ । गिरीश । मृत्युंजय । शिवोचन । हर । भैरव । उमापति । भूतनाथ । काजीनाथ । नदीश्वर । रुद्र । महाकाल । वामुदेव । जटावर । पशुपति । पुष्प । वृत्तिवासा । पिनाकी । धूर्जटि । नीलनोहित । उग्र । कपर्दी । लोकेश । नातकेश । शूनी ।

शिव—वि० १ कन्याण करनेवाला । मंगल करनेवाला । २ सुखी । प्रसन्न (को०) ।

शिवक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ काँटा । कील । २ खूँटा । बड़ी मेल । ३ वह खभा जिसमें पन् अपना शरीर गच्छता है । ४ शिव-मूर्ति (को०) ।

शिवकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जैनो के चौरों में जिना में से एक जिन का नाम ।

शिवकर—वि० मंगलकारी । कन्याणकारी (को०) ।

शिवकर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कर्णिकेय की एक मातृका का नाम ।

शिवकाची—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिवकाञ्ची] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध नगर ।

विशेष—कृष्ण और पोलर नदी के बीच में स्थित वारोमंडल के एक भाग की राजधानी काची थी । इसके दो हिस्से हैं । एक विष्णुकाची और दूसरा शिवकाची । शिवकाची उत्तर की ओर है । दक्षिण भारत के शैवों का यह एक प्रधान तीर्थ और सप्तपुरियों में से एक है ।

शिवकाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिवकाता] शिव की पत्नी, दुर्गा ।

शिवकारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम ।

शिवकारी—वि० [सं० शिवकारिन्] मंगल करनेवाला । कन्याण करनेवाला ।

शिवकिंकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिवकिङ्कर] शिव का गण या दूत ।

शिवकीर्त्तिन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शिव का कीर्त्तन करता हो ।

शैव । २ विष्णु । ३ शिव के द्वारपाल । भृगरीट । भृंगी ।
४ शिव की स्तुति (को०) ।

शिवकेसर—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म । बकुल ।

शिवक्षेत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] कैलास ।

शिवगग—सञ्ज्ञा पु० [म० शिव + गङ्गा] मैसूर राज्य के एक पर्वत का नाम ।

शिवगगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिवगङ्गा] वह नदी या जलाशय जो शिव जी के मंदिर के समीप हो ।

शिवगति^१—सञ्ज्ञा पु० [म०] जैनो के अनुसार एक अर्हत् का नाम ।

शिवगति^२—वि० सुखी । प्रसन्न । समृद्ध (को०) ।

शिवगिरि—सञ्ज्ञा पु० [स०] कैलास पर्वत ।

शिवगुरु—सञ्ज्ञा पु० [म०] शंकराचार्य के पिता का नाम जो विद्याधिराज के पुत्र थे ।

शिवघर्मज—सञ्ज्ञा पु० [स०] मंगल ग्रह ।

विशेष—मत्स्यपुराण के अनुसार दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिये क्रुद्ध शिव के ललाट से गिरे हुए पसीने की बूँद से मंगल ग्रह की उत्पत्ति हुई है ।

शिवचतुर्दशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शिवरात्रि' ।

शिवजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिवलिंगी लता । पंचगुरिया ।

शिवज्ञ—वि० [स०] १. जो शिव का भक्त हो । शैव । २. शुभ को जाननेवाला (को०) ।

शिवज्ञा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिवभक्त महिला ।

शिवज्ञान—सञ्ज्ञा पु० [स०] शुभाशुभ-काल-बोधक शास्त्र (को०) ।

शिवता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ शिव का भाव या धर्म । उ०—शिव शिवता इनही सो लही ।—सूर (शब्द०) । २ मनुष्य के शिव में लीन होने की अवस्था । मोक्ष ।

शिवताति^१—सञ्ज्ञा स्त्री० शुभता । शुभत्व (को०) ।

शिवताति^२—सञ्ज्ञा पु० [स०] सगीत में एक ताल का नाम जिसे रुद्रताल भी कहते हैं (को०) ।

शिवतीर्थ—सञ्ज्ञा पु० [स०] काशी नामक स्थान जो शिव का प्रधान तीर्थ माना जाता है ।

शिवतेज—सञ्ज्ञा पु० [स० शिवतेजस्] पारा । पारद ।

शिवदत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] विष्णु का चक्र । सुदर्शन चक्र ।

शिवदारु—सञ्ज्ञा पु० [स०] देवदारु वृक्ष ।

शिवदिक्, शिवदिशा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव माने गए हैं ।

शिवदूतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

शिवदूती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ आठ योगिनियों में से अंतिम योगिनी का नाम ।

शिवदैव—सञ्ज्ञा पु० [स०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव माने जाते हैं ।

शिवद्रुम—सञ्ज्ञा पु० [म०] बिल्व वृक्ष । बेल का पेड़ ।

शिवद्विष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] केतकी । केवडा ।

विशेष—केतकी का फूल शिवजी पर चढ़ाने का निषेध है, इसी से इसका यह नाम पड़ा है ।

शिवघातु—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पारद । पारा । २ गोदती नामक मणि ।

शिवनन्दन—सञ्ज्ञा पु० [म० शिवनन्दन] शिव जी के पुत्र गरुडेश जी । उ०—विष्णुहरण गणनाथ शिवनन्दन कदन कुमति । तुव पद नाळ माथ, करहु पुर सतन सुपण ।—रघुराज (शब्द०) ।

शिवनाथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।

शिवनाभि—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का शिवलिंग जो और सब शिवलिंगों में श्रेष्ठ माना जाता है ।

शिवनारायणी—सञ्ज्ञा पु० [स०] हिंदुओं का एक संप्रदाय ।

शिवनिर्मल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह पदार्थ जो शिव जी को अर्पित किया गया हो । शिव पर चढ़ा हुआ नैवेद्य आदि ।

विशेष—पुराणों में ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है ।

२. वह चीज जो किसी प्रकार ग्रहण न की जा सकती हो । परम त्याज्य वस्तु । जैसे,—हमारे लिये तुम्हारी यह संपत्ति शिव-निर्मल्य है ।

शिवनृत्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] गतिभेद के अनुसार एक प्रकार का नृत्य ।

शिवपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] लाल कमल ।

शिवपुत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पारा । पारद । २. शिव के पुत्र, कार्तिकेय और गरुडेश ।

शिवपुर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ जैनियों का स्वर्ग जहाँ वे जैनसिद्धांतानुसार मुक्ति का सुख भोगते हैं । मोक्षशिला । २ शिवपुरी । काशी (को०) ।

शिवपुराण—सञ्ज्ञा पु० [स०] अठारह पुराणों में से एक पुराण जो शैवपुराण भी कहा जाता है ।

विशेष—यह पुराण शिवप्रोक्त माना जाता है और इसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है । अन्य पुराणों के अनुसार इसमें बारह संहिताएँ और २४,००० श्लोक हैं । पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमें केवल चार संहिताएँ और ७,००० श्लोक पाए जाते हैं । इसीलिये कुछ लोगों का मत है कि शिवपुराण और वायुपुराण दोनों एक ही हैं । विष्णु, पद्म, मार्कण्डेय, कूर्म, वराह, लिंग, ब्रह्मवैवर्त, भागवत और स्कन्दपुराण में तो शिवपुराण का नाम है पर मत्स्य, नारद और देवीभागवत में शिवपुराण के स्थान पर वायुपुराण का नाम मिलता है । कहते हैं, शंखधर्म का प्रकाश करने के लिये शिव जी ने यह पुराण रचा था । इसमें निम्नलिखित बारह संहिताएँ हैं—विद्येश्वर, रौद्र,

विनायक, भौम, मातृका, रुद्रकादश, कैलास, शतरुद्र, कोटिरुद्र, महत्कोटिरुद्र, वायवीय और धर्मसहिता । इसके रचयिता भगवान् वेदव्यास जी कहे जाते हैं । पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमें केवल ज्ञान, विद्येश्वर, कैलास, वायवीय, और धर्म आदि सहिता ही पाई जाती हैं । किसी किसी शिवपुराण में सनत्कुमारसहिता और गया माहात्म्य भी मिलता है ।

शिवपुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिव जी की पुरी, वाराणसी । काशी ।

शिवपुष्पक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आक का वृक्ष । मदार ।

शिवप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रुद्राक्ष । २ अग्रस्त । वक्रवृक्ष । ३ घटूरा । ४ भाँग । ५ स्फटिक । विन्लौर ।

शिवप्रिय—वि० जो शिव को प्रिय हो ।

शिवप्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

शिवप्रीति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खेल का वृक्ष । विल्व ।

शिववीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है ।

शिवब्राह्मी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सखाहुली । शखपुष्पी ।

शिवभक्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिव का उपासक हो । शैव ।

शिवभक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिवोपासना । शिवार्चन या पूजन आदि के प्रति भक्तिभावना ।

शिवभारत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिवा जी छत्रपति (१६३०-१६८०) पर कवि परमानन्द लिखित एक ऐतिहासिक काव्य ।

शिवमल्लक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन वृक्ष ।

शिवमल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वसु या वसूक नामक पुष्पवृक्ष । २ मदार । आक । ३ अग्रस्त वृक्ष । ४ शिवलिंगी । ५ श्रीवल्ली नामक कँटोला पेड़ ।

शिवमल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाशुपति । मौलसिरी । २. मदार । आक । ३ वक्र नामक वृक्ष । ४ लिंगिनी नाम की लता ।

शिवमात्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी सख्या का नाम ।

शिवमार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कल्याण मार्ग । मोक्ष । मुक्ति [को०] ।

शिवमौलिसुता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा का एक नाम । उ०—वह विष्णुपदी शिवमौलिसुता वह भीष्मप्रसू और जह्नुसुता । —ग्राम्या, पृ० ४२ ।

शिवरस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उबले हुए चावल का पानी जो तीन दिन का हो [को०]

शिवराई—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिव + हि० राई] महादेव । शिव । उ०—राजयोग कीना शिवराई । गोरा सग अनग न जाई । सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० १०३ ।

शिवराजी—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० शिव + राज] एक प्रकार का बहुत बड़ा कबूतर ।

शिवरात्रि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिव + रात्रि] दे० 'शिवरात्रि' ।

शिवरात्रि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन वदी चतुर्दशी । शिवचतुर्दशी ।

विशेष—इस दिन लोग शिव जी का पूजन करते और उनके उद्देश्य से व्रत रखते हैं ।

शिवरानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिव + हि० रानी] शिव जी की पत्नी, पार्वती । उ०—शिवरानी यो रति समुझाई । तब तनु धरि शबर धर आई ।—लल्लू (शब्द०) ।

शिवलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शिवलिंग] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है ।

शिवलिंगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० लिङ्गिनी] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता जो चौरासे में जगली और झाड़ियों में बहुत अधिकता से मिलती है । पचगुरिया । विजगुरिया ।

विशेष—इसकी डडियाँ बहुत पतली और पत्ते करेले के पत्तों के समान ३ से ५ इंच के घेरे में गोलाकार, गहरे, कटे किनारे-वाले और ५७ भागों में विभक्त रहते हैं । पत्रदंड की जड़ में ५-६ फूलों के छोटे छोटे गुच्छे लगते हैं । ये फूल पीले होते हैं । इसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है । बंधक के अनुसार यह चरपरी, गरम, दुर्गन्धयुक्त, पौष्टिक, शोथक, गर्भ-धारण करनेवाली और कुष्ठ आदि का नाश करनेवाली होती है । इसके फलने पर इसका सर्वांग ओषधि के निमित्त सग्रह किया जाता है ।

पर्या०—लिंगिनी । ईश्वरलिंगी । चित्रफला । बहुपत्रा । शिव वल्लिका ।

शिवलिंगी—वि० [सं०] शैव । शिवलिंग की पूजार्चा करनेवाला ।

शिवलोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव जी का लोक, कैलास । उ०—सोने मंदिर सँवराई और चंदन सब लीप । दिया जो मन शिवलोक महँ उपना सिंहलद्रोप ।—जायसी (शब्द०) ।

शिववल्लभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आश्रित वृक्ष [को०] ।

शिववल्लभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. सेवती । शतपत्री । ३. श्वेत गुलाब [को०] ।

शिववल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिवलिंगी' ।

शिववल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिवलिंगी' ।

शिववाहन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव का वाहन, बैल । नदी ।

शिववीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है ।

शिववृषभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव जी की सवारी का बैल । उ०—विराजेंगे जो तू अमहरन ताकी शिखर पै । दिपेंगे ज्यो गोरे शिववृषभ खोदी कलिल है ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०) ।

शिवशंकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शिवशङ्करा] देवी की एक मूर्ति का नाम ।

शिवशेखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वक्र वृक्ष । अग्रस्त वृक्ष । २. चद्रमा [को०] । ३. घटूरा । ४. शिव का मस्तक । ५. सफेद मदार ।

शिवशैल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कैलास पर्वत ।

शिवसंप्रदाय—संज्ञा पुं [सं शिव + सम्प्रदाय] दे० 'शैव' । उ०—
केवल दो संप्रदाय इस ससार में हैं । एक विष्णुसंप्रदाय तथा
दूसरा शिवसंप्रदाय ।—कवार म०, पृ० ५९ ।

शिवसायुज्य—संज्ञा पुं [सं] १ शैवों के अनुसार वह मोक्ष जिसमें
मनुष्य शिव में लीन हो जाता है । २. मृत्यु । मौत ।

शिवसुंदरी—संज्ञा स्त्री [सं शिवसुंदरी] दुर्गा ।

शिवाक—संज्ञा पुं [सं शिवाङ्क] अगस्त का वृक्ष । वकवृक्ष ।

शिवा—संज्ञा स्त्री [सं] १ दुर्गा । २ पार्वती । गिरिजा । उ०—
जेहिरस शिव सनकादि भगन भए शुभु रहन दिन साषा ।
सोरस दिए सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ।—सूर
(शब्द०) । ३ मुक्ति । मोक्ष । ४ शृगाली । सियारिन । उ०—
शिवा यज्ञशाला में बोली । ढहे भवन धरणी जब डोली ।—
सवल (शब्द०) । ५. हड । हर्से । हरीतकी । ६ सोआ नामक
साग । ७ शमी । सफेद कीकर । ८ आंवला । ९. हलदी ।
१० दूब । ११. गोरोचन । १२. श्यामा नाम की लता ।
१३ एक बुद्धशक्ति का नाम । १४ घौ । बव । १५. अनत-
मूल । १६. सोभाग्यवती स्त्री । भाग्यशालिनी स्त्री (को०) ।
१६. पीत वर्ण का एक भेद । एक प्रकार का पीला रंग (को०) ।

शिवाकु—संज्ञा पुं [सं] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शिवाक्ष—संज्ञा पुं [सं] रुद्राक्ष ।

शिवाख्या—संज्ञा स्त्री [सं] बल्ली दूब ।

शिवाघृत—संज्ञा पुं [सं] वैद्यक में एक प्रकार का तैयार किया
हुआ घृत ।

विशेष—इसको प्रस्तुत करने के लिये गोदड़ का मांस, बकरी का
दूध, मुलेठी, मजीठ, कुडा, लाल चंदन, पदम काष्ठ, हर्से, बहेडा,
आंवला, विडंग, देवदार, दतीमूल, श्यामा लता, काकोनी, हलदी,
दारु हलदी, अनतमूल, इलायची, आदि पदार्थों को घा में डाल-
कर घृतपाक विधि से पकाते हैं । यह घृत पागलपन के लिये
बहुत उपकारी माना जाता है । इसके अतिरिक्त वात, अपस्मार,
मेह आदि में भी इसका व्यवहार होता है ।

शिवाची—संज्ञा स्त्री [सं] वशपत्नी ।

शिवाजी—संज्ञा पुं [हिं०] महाराष्ट्र राज्य के संस्थापक तथा भारत
को विदेशी दासता से मुक्त करने के लिये आजीवन मुगल
साम्राज्य से लड़नेवाले एक महान् योद्धा । 'छत्रपति' इनकी उपाधि
थी । इनके पिता का नाम शहूजी भोसला और माता का
नाम जीजा बाई था । इनका जन्म सन् १६२७ में और मृत्यु
सन् १६८० ई० में हुई थी ।

शिवाटिका—संज्ञा स्त्री [सं] १ वशपत्नी नामक वृक्ष । २ सफेद
पुनर्नवा । ३. लालपुनर्नवा । गदहपूरना । ४ हिमपत्नी । ५.
कहूबर ।

शिवात्मक—संज्ञा पुं [सं] सैवात्मिक ।

शिवादेशक—संज्ञा पुं [सं] १. वह जो शुभ समाचार लाए । २.
भविष्यवक्ता (को०) ।

शिवाघृत—संज्ञा स्त्री [सं] दे० 'शतद्रु' ।

शिवानो—संज्ञा स्त्री [सं] १. दुर्गा । २. जयती वृक्ष ।

शिवापर—संज्ञा [मं] निर्दय । निष्ठुर (को०) ।

शिवापीड—संज्ञा पुं [मं शिवापीड] अगस्त या वक नामक वृक्ष ।

शिवाप्रिय—संज्ञा पुं [सं] १. शिवा के पति, शिव । २ बकरा
जिसके बलिदान से दुर्गा का प्रसन्न होना माना जाता है ।

शिवाफला—संज्ञा स्त्री [सं] शमी वृक्ष । सफेद काकर ।

शिवाबलि—संज्ञा पुं [सं] तान्त्रिकों के अनुसार वह नैवेद्य जो रात के
समय देवी के सामने रखा जाता है और जिसमें मांस की
प्रधानता होती है ।

शिवायतन—संज्ञा पुं [सं] दे० 'शिवालय' ।

शिवाराति—संज्ञा पुं [सं] १. कुत्ता जो गोदड़ (शिवा) का शत्रु
हाता है । २ शिव का विरोधी या शत्रु, कामदेव (को०) । ३.
शिवद्रोही ।

शिवास्त—संज्ञा पुं [सं] गोदड़ के बोलने का शब्द, जिसे यात्रा आदि
के समय शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है ।

शिवालय—संज्ञा पुं [सं] १. वह मंदिर जिसमें शिव जी की मूर्ति या
लिंग स्थापित हो । शिव जी का मंदिर । २ कोई देवमंदिर ।
(को०) । ३. लाल तुलसी । ४. शमशान । मसान । मरघट ।

शिवाला—संज्ञा पुं [सं शिवालय] १. शिव जी का मंदिर । शिवा-
लय । २. देवमंदिर (को०) । ३. कोयला जलाने की भट्टों ।
(बाजारू) ।

शिवालु—संज्ञा पुं [सं] शृगाल । सियार । गोदड़ ।

शिवा विद्या—संज्ञा स्त्री [सं] शृगाल की बोली से शकुन विचारने
की विद्या (को०) ।

शिवास्मृति—संज्ञा स्त्री [सं] जयती वृक्ष ।

शिवाह्लाद—संज्ञा पुं [सं] अगस्त या वक नामक वृक्ष ।

शिवाह्वय—संज्ञा पुं [सं] १ पारद । पारा । २. बरगद । बट
वृक्ष । ३. मदार । आक ।

शिवाह्वा—संज्ञा स्त्री [सं] रुद्रजटा । शकरजटा ।

शिवि—संज्ञा पुं [सं] १ हंसक पशु । शिकारी जानवर । २ भोज-
पत्र । ३, राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दोहित्र एक
राजा का नाम जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिये
प्रसिद्ध है । उ०—शिव बरौ शिव भूप की कथा परम रमणीय ।
शरणागत पालन कियो दै निब तनु कसनीय ।—रघुराज
(शब्द०) ।

विशेष—कहते हैं, एक बार देवताओं ने इनकी परीक्षा लेने
का विचार किया । आग्न ने कवूर का रूप धारण किया
और इंद्र ने बाज पक्षी का । कवूर उड़ता उड़ता राजा शिव
को गोद में जा छिपा और कहन लगा कि यह बाज मर रहा
लेना चाहता है । आप इससे मेरा रक्षा करें । इन में बाज
भी वहाँ आ पहुँचा और कहन लगा कि यह कवूर मर रहा
है । आप यह मुझे दे दोजिए । शिव ने और कुछ भावन दकर

बाज को सतुष्ट करना चाहता, पर बाज किसी प्रकार नहीं मानता था। अतः राजा ने अपनी जाघ से मांस काटकर और क्वत्तर के बराबर तौलकर बाज को देना चाहा। पर ज्यों ज्यों राजा अपने शरीर से मांस काटकर तराजू पर रखते जाते थे, त्यों त्यों, क्वत्तर भारी होता जाता था। अतः राजा विवश होकर स्वयं तराजू के पलड़े पर बैठ गए। इसपर बाज ने सतुष्ट होकर क्वत्तर को भी छोड़ दिया और राजा का मांस भी नहीं लिया। तब से ये बहुत दानी और धर्मात्मा प्रसिद्ध हैं।

४ पुराकाल में प्रायों का एक प्रधान वर्ग या समूह। उ०—प्रधान आर्य समूहों में ये—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य और विदर्भ आदि।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७।

शिविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. पालकी या डोली नाम की सवारी। उ०—देखि पुष्ट पकरधो तिनकाही। ल्याय लगायो शिविका माही।—रघुराज (शब्द०)। २. शव को श्मशान ले जाने की अरथी (को०)। ३. कुबेर का अस्त्र (को०)। ४. चवूतरा (को०)।

शिविकागर्भ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गृह का वह भाग जहाँ पालकियाँ आदि वाहन ठहरें। डण्डी का छायादार बरामदा।—हिंदु०, सभ्यता, पृ० २८८।

शिविपिष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महादेव।

शिविर—सञ्ज्ञा पुं० [स०], १. डेरा। खेमा। निवेश। २. फौज के ठहरने की जगह। पड़ाव। छावनी। ३. किला। कोट। उ०—राम शिविर अंगरेज नृप तहँ आए जिहि वार। तब हौं हू हाजिर रख्यो आदर सहित उदार।—मतिराम (शब्द०)। ४. चरक के अनुसार एक प्रकार का तृण वान्य।

शिविरगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम।

शिवीरथ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पालकी। शिविका।

शिवेत्तर—वि० [स०] अमंगल। अशुभ। दुर्भाग्य (को०)।

शिवेश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शृगाल। गोटड़। सियार।

शिवेष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अगस्त का वृक्ष। बक वृक्ष। २. वेल। श्रीफल।

शिवेष्टा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दूब। दूर्वा।

शिवोद्भव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शिवोपनिषद्—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

शिशन^१—सञ्ज्ञा पुं० [अ० सेशन] दे० 'सेशन'।

शिशन^२—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिशन] दे० 'शिशन'।

शिशिर^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। उ०—गोपी गाइ खाल गोमुत वै मलिन वदन कृम गात। परम दीन जनु शिशिर हिमी हत अबुज गत विन पात।—सूर (शब्द०)। २. जाड़ा। शीतकाल। ३. हिम।

४. विष्णु। ५. एक प्रकार का अस्त्र। ६. सूर्य का एक नाम। ७. लाल चदन। ८. प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष (को०)।

शिशिर^२—वि० शीतल। ठंडा।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के बनाने में उनके आरंभ में होता है। जैसे—शिशिरकर।

२ शिशर सबधी। शिशिर का (को०)। ३ जो ठंडक पहुँचावे। गर्मी हटाने या दूर करनेवाला (को०)।

शिशिरकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा, जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शिशिरकिरण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा (को०)।

शिशिरकाल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] जाड़ा या शिशिर ऋतु (को०)।

शिशिरगु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।

शिशिरघन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अग्नि। आग (को०)।

शिशिरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिशिर का भाव या वर्म।

शिशिरदीधिति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा (को०)।

शिशिरधौत—वि० [स० शिशिर+धौत] शिशिर से धुला हुआ। ओस से आर्द्र। उ०—सजल शिशिरधौत पुष्प ज्यों प्रात में देखता है एकटक किरण कुमारी को।—अपरा०, पृ० १४४।

शिशिरपीडित—वि० [स० शिशिर+पीडित] ठंड में त्रस्त। जाड़े से आक्रांत। उ०—चिर शून्य शिशिर पीडित जग में निज अमर स्वरो से भरो प्राण।—युगांत, पृ० १०।

शिशिरमथित—वि० [स०] दे० 'शिशिरपीडित'।

शिशिरमयूख—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।

शिशिरयामिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिशिर+यामिनी] जाड़े की रात। उ०—विरह परी सी खडी कामिनी, व्यर्थ वह गई शिशिरयामिनी।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरर्तु, शिशिरसमय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिशिरकाल'।

शिशिरसमीर—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिशिर+समीर] शिशिर या जाड़े की हवा। उ०—वह चली अब अलि शिशिरसमीर।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरात—सञ्ज्ञा पुं० [स० शिशिरान्त] शिशिर ऋतु के अंत में होने वाली ऋतु, वसंत। उ०—शिशिरात की लक्ष्मी का दिया हुआ कलियों का गुच्छा पलास में शोभायमान हुआ।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

शिशिराशु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।

शिशिराक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो सुमेरु के पश्चिम ओर बतलाया गया है।

शिशिरात्यय—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिशिरात। वसंत (को०)।

शिशिरित—वि० [स०] शीतल किया हुआ।

शिशु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा। छोटा लड़का। उ०—माथे मुकुट सुमग पीतावर उर साभित शृंगु रेखा हा। शख चक्र भुज चारि विराजत अति प्रताप शिशु भेपा हो।—सूर (शब्द०)। २. पशुओं

आदि का वच्चा । जैसे, हरिणशिशु । ३ कार्तिकेय का एक नाम । ४. बालक जो ८ से १६ वर्ष तक का हो (को०) । ५. शिष्य । छात्र (को०) । ६. करभ जो ६ साल का हो (को०) ।

शिशुक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ शिशुमार या सूँस नामक जलजतु । २ शिशु । वच्चा । बालक । ३ एक प्रकार का वृक्ष । ४ सूँस के आकार का एक मत्स्य (को०) । ५. पशुशावक (को०) । ६ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप ।

शिशुकृच्छ्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे 'शिशु चाद्रायण' या 'स्वल्प चाद्रायण' भी कहते हैं ।

शिशुकुन्द, शिशुकुन्दन—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशुकुन्द, शिशुकुन्दन] वच्चे का रोना । शिशु का रुदन ।

शिशुकुदीय—सञ्ज्ञा पु० [स०] बालको के रोग और उनको चिकित्सा संबंधी एक प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रंथ ।

शिशुगन्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शिशुगन्धा] मल्लिका । मोतिया ।

शिशुचाद्रायण—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशुचाद्रायण] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे स्वल्प चाद्रायण या कृच्छ्र चाद्रायण भी कहते हैं । इस व्रत में प्रातः काल चार ग्रास और सायंकाल चार ग्रास भोजन करके निर्वाह किया जाता है ।

शिशुता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिशु का भाव या धर्म । वचपन । शिशुत्व ।

शिशुताई—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशुता + हि० ई (प्रत्यय)] दे० 'शिशुता' । उ०—यशुपति भाग सुहागिनी हरि को सुत जानै । मुख मुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै ।—सूर (शब्द०) ।

शिशुत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिशु का भाव या धर्म । शिशुता । शैशव । शिशुनाग—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. एक राक्षस का नाम । २. भागवत के अनुसार एक राजा का नाम । ३. दे० 'शैशुनाग' । ४. करभ । हाथी का वच्चा (को०) । ५. संपोला । साँप का वच्चा (को०) ।

शिशुनामा—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशुनामन्] ऊँट ।

शिशुपन—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशु + हि० पन्] दे० 'शिशुता' ।

शिशुपाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था । उ०—देश देश के नृपति जुरे सब भीष्म नृपति के घाम । स्वम कह्यो शिशुपालहिं दैहीं नहीं कृष्ण सो काम ।—सूर (शब्द०)

विशेष—महाभारत में लिखा है कि दमघोष के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके तीन आँखें और चार हाथ थे और जो जनमते ही गधे की तरह रेंकने लगा था । इससे डरकर माता-पिता ने इसका त्याग करना चाहा था, पर इतने में आकाश-वाणी हुई कि यह शिशु बहुत ही बलवान् और वीर होगा, तुम लोग इस शिशु का पालन करो । (इसीलिये इसका नाम शिशुपाल रखा गया था) । इसका नाश करनेवाला भी पृथ्वी पर उत्पन्न हो चुका है । आकाशवाणी सुनकर शिशुपाल की माता ने आकाश की ओर देखकर पूछा कि इसका नाश कौन करेगा ? फिर आकाशवाणी हुई कि जिस आदमी की गोद में जाते ही इसकी तीसरी आँख और अतिरिक्त दोनो बाँहें जाती

रहेंगी, वही इसका प्राण लेगा । दमघोष ने बहुत से राजाओं आदि को बुलाकर उनकी गोद में अपना पुत्र दिया, पर उसकी तीसरी आँख और दोनो अतिरिक्त भुजाएँ ज्यों की त्यों बनी रही । अंत में जब श्रीकृष्ण ने उसे गोद में लिया, तब उसके दो हाथ भी गिर गए और तीसरा नेत्र भी अदृश्य हो गया । इसपर शिशुपाल की माता ने श्रीकृष्ण से कहा कि तुम इसके सब अपराध क्षमा करना । श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसके सौ अपराध तक क्षमा करूँगा ।

बड़ा होने पर शिशुपाल बहुत पराक्रमी हुआ और अकारण ही श्रीकृष्ण से बहुत अधिक द्वेष रखने लगा । जब युधिष्ठिर ने अपने राजसूय यज्ञ के समय लोगों से पूछा कि यज्ञ का अर्घ्य किसें दिया जाय, और भीष्म ने उत्तर दिया—'श्रीकृष्ण को', तब शिशुपाल बहुत विगड़ा और सब राजाओं को सवाधन करके श्रीकृष्ण को निंदा करने और उन्हें कुवाच्य कहने लगा । श्रीकृष्ण उसके कुवाच्य गिनते जाते थे । जबतक उसने सौ गालियाँ दी, तबतक तो श्रीकृष्ण विलकुल चुप थे, क्योंकि वे उसकी माता के सामने उसके सौ अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा कर चुके थे । पर जब वह इतने पर भी शांत न हुआ और उसने एक और कुवाच्य कहा, तब श्रीकृष्ण ने तुरंत उसका सिर काट डाला । विष्णुपुराण के अनुसार यह पूर्व जन्म में हिरण्यकशिपु था, दूसरे जन्म में यह रावण हुआ और तीसरे जन्म में यह शिशुपाल था । संस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्य माघ कवि कृत शिशुपालवच में भी उसके तीन जन्म भी घटना सक्षेप में उल्लिखित है ।

शिशुपालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. दमघोष का पुत्र शिशुपाल । २. केलि कदम्ब । नोम ।

शिशुपालनिपूदन—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

शिशुपालवध—सञ्ज्ञा पु० [स०] महाकवि माघ कृत एक प्राचीन संस्कृत महाकाव्य जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के मारे जाने की कथा वर्णित है । उ०—ग्रान्द की सावनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलनेवाले काव्यों के उदाहरण हैं—रामायण, महाभारत, रघुवंश और शिशुपालवध (महाकाव्य) ।—रस०, पृ० ५८ ।

शिशुपालहा—सञ्ज्ञा पु० [स० शिशुपालहन्] शिशुपाल को मारनेवाले, श्रीकृष्ण ।

शिशुप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. राव । शीरा । २. कुमुदिनी । कोई [को०] ।

शिशुमार—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. सूँस नामक जलजतु । २. मगर की आकृतिवाला, नक्षत्रमंडल । ३. दे० 'शिशुमार चक्र' । उ०—(क) मेरी रूप चक्र शिशुमारा । जामे सकल वैद्यो ससारा ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) बहुत काल में सुरति करि, जब डोल्हो शिशुमार । तब सव्या भैं भानु किय, अस्तावल सचार । रघुराज (शब्द०) । ४. कृष्ण । ५. विष्णु ।

शिशुमार चक्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] सब ग्रहों सहित सूर्य । सौर जगत् । उ०—अवध अनद निहारि मगन रुके भानु गति भूली । स्वयो

चक्र शिशुमार वार तेहि राम जन्म सुख फूनी '—रघुराज (शब्द०) ।

शिशुमारमुखी—सच्चा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

शिशुमारशिर—सच्चा पुं० [स० शिशुमारशिरस्] ईशान कोण । पूर्वोत्तर दिक् [को०] ।

शिशुल—सच्चा पुं० [स०] दे० 'शिशूल' [को०] ।

शिशुवाहक—सच्चा पुं० [स०] जगली बकरा ।

शिशुवाहक—सच्चा पुं० [स०] शिशुवाहक । जगली बकरा ।

शिशुशाला—सच्चा स्त्री० [स०] वह गृह जहाँ घाई बच्चे की देखरेख करती हो ।

शिशुहत्या—सच्चा स्त्री० [स०] शिशु की हत्या या वध ।

शिशूल—सच्चा पुं० [स०] दे० 'शिशु' ।

शिशुभर—वि० [स० शिशुभर] कामी । लपट । छिनरा [को०] ।

शिशुन—सच्चा पुं० [स०] पुरुष की उपस्येन्द्रिय । लिंग ।

शिशुनदेव—सच्चा पुं० [स०] वह जो शिशुन को ही देवता माने । लंपट वा कामी व्यक्ति [को०] ।

शिशुनोदरपरायण—३० [स०] जो पेट और शिशुन की बुभुक्ष-शांति का ही सब कुछ मानता हो । कामी और पेटू [को०] ।

शिशुनोदरवाद—सच्चा पुं० [स० शिशुनोदर + वाद] पेट की भूख और कामात्तेजनापरक विचारधारा । फ्रायड और मार्क्स की विचारधारा ।

शिष्य^१—सच्चा पुं० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य' । उ०—(क) रामानुज के शिष्य हरि भयऊ । यह यश त्रिभुवन महुँ भरि गयऊ । —रघुराज (शब्द०) । (ख) तुम गुरु सतगुरु ब्रह्म समाना । मैं शिष्य आहुँ महा अज्ञाना । —कबीर मा०, पृ० १०१४ ।

शिष्य^२—सच्चा स्त्री० [स० शिष्या] सीख । शिष्या । सिखावन । उ०—कहेउ सुभग शिष्य धर्म कुमारा । कोन्ह सबन मिलि अगोकारा । —सबलसिंह (शब्द०) ।

शिष्य^३—सच्चा स्त्री० [स० शिष्या] वाल जो मुडन के समय सिर पर छोड़े जाते ह । उ०—कटि पट पीत पिछोरी बांधे कागपच्छ शिष्य शीश । शर क्रीडा दिन देखत आवत नारद सुर तैतीम । —सूर (शब्द०) ।

शिष्य^४—सच्चा पुं० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य' । उ०—काल गिरिक शिष्य अस्मन, द्रोणपर्व उक्त घटोत्कच अइसन । —वर्ण०, पृ० १८ ।

शिष्य^५—सच्चा पुं० [स०] शिष्या । शिष्या । चिचडा ।

शिष्य^६—वि० [स० शिष्य + ई (प्रत्यय)] शिष्य से युक्त । शिष्य-वाला । उ०—कोपि शिष्यो गदा तव लव हन्यो ताके गात मैं । मोहि कपिपति गिरयो श्रीहत यथा कुमुदिन प्रात मैं । —श्याम-विहारी (शब्द०) ।

शिष्या^७—सच्चा स्त्री० [स० शिष्या] दे० 'शिष्या' । उ०—स्तुति वेद शिष्या प्रभु केरी । एकादश मन लेहु निवेरी । —रघुराज (शब्द०) ।

शिष्य^८—सच्चा पुं० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य' । उ०—(क) जहँ शिषि तहँ ते गुरु पर्यता । प्रगटे पद्मिनि पत्र अनता । —रघुराज (शब्द०) । (ख) अरु विचारि शिषि करी न तोही । बाट न रोकु जान दे मोही । —विश्राम (शब्द०) ।

शिष्य^९—सच्चा पुं० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य' । उ०—यह कीन आवत है सखी मलपक अकित अग । शिर केश लुंचित नग्न हाथ शिषी शिखड सुरंग । —केशव (शब्द०) ।

शिष्ट^१—वि० पुं० [स०] १ जो अच्छी तरह धर्म का आचरण करता हो । धर्मशील । २ शांत । धीर । ३ अच्छे स्वभाव और आचरणवाला । सुशील । ४ बुद्धिमान् । शिष्टिन् । ५ सम्य । सज्जन । भला आदमी । ६ भला । उत्तम । श्रेष्ठ । ७ आचार व्यवहार में निपुण । शालीन । ८ आज्ञाकारी । विनीत । विनम्र । ९ प्रसिद्ध । मशहूर । १० छोड़ा हुआ । बचा हुआ । बाकी [को०] । ११ आदिष्ट । आज्ञित । समादिष्ट [को०] । १२ सचाया हुआ । पालतू । वश्य [को०] ।

शिष्ट^२—सच्चा पुं० १. मन्त्री । वजीर । २ मन्थ । सभासद । ३. श्रेष्ठ व्यक्ति । चतुर मनुष्य [को०] ।

शिष्टता—सच्चा स्त्री० [स०] १ शिष्ट होने का भाव या धर्म । २ सम्यता । सज्जनता । भद्रता । ३. उत्तमता । श्रेष्ठता । ४ अधीनता ।

शिष्टत्व—सच्चा पुं० [स०] दे० 'शिष्टता' ।

शिष्टप्रयुक्त—वि० [स०] सम्य एव शिष्ट जनो द्वारा व्यवहृत ।

शिष्टयोग—सच्चा पुं० [स०] वह जो शिष्टजनो द्वारा व्यवहार में लाया गया हो [को०] ।

शिष्टमंडल—सच्चा पुं० [स० शिष्ट + मण्डल] राज्य या किसी सघटन द्वारा चुना हुआ अधिकारयुक्त प्रतिनिधिवर्ग जो किसी कार्य में कही भेजा जाय ।

शिष्टविगर्हण—सच्चा पुं० [स०] वह जो शिष्ट जनो द्वारा निन्दित हो [को०] ।

शिष्टविगर्हण—सच्चा स्त्री० [स०] दे० 'शिष्टविगर्हण' [को०] ।

शिष्टसभा—सच्चा स्त्री० [स०] १ राजसभा । राज्यपरिषद् । २ शिष्ट एव सम्य जनो की गोष्ठी ।

शिष्टसमत—वि० [स० शिष्टसम्मत्] शिष्ट जना द्वारा अनुमोदित या स्वीकृत [को०] ।

शिष्टसमाज—सच्चा पुं० [स०] वह समाज जिसमें पढ़े लिखे तथा सदा चारी व्यक्ति हो । अने आदमियों का समाज । सम्य समाज ।

शिष्टाचार—सच्चा पुं० [स०] १ सम्य पुरुषो के योग्य आचरण । भले आदमियों का सा बरताव । माधु व्यवहार । २. आदर । संमान । खातिरदारी । ३ विनय । नम्रता । ४ वह अच्छा बरताव जो केवल दिखलाने के लिये किया जाय । दिखावटी सम्य व्यवहार । जैसे—शिष्टाचार की बात छोड़कर अपने आन का अभिप्राय कहा । ५ आवगत । जैसे—शिष्टाचार के अनंतर उन्होंने वार्तालाप प्रारंभ किया ।

शिक्षाचारी—वि० [स० शिक्षाचारिन्] शिक्षाचारयुक्त । सदाचारयुक्त । विनम्र । शालीन ।

शिक्षादिष्ट—वि० [स०] शिष्ट जनो द्वारा कथित, समर्थित या मान्य ।
शिक्षातुमोदित—वि० [स०] सम्य एव शिष्ट जनो द्वारा समर्थित । शिष्टसमत ।

शिष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ आज्ञा । अनुशासन । हुक्मत । ३. दंड । सजा । ४. सुधार । ५. सहायता । मदद ।

शिष्टधर्म—क्रि० वि० [स०] अनुशासन या सुधार के लिये [को०] ।

शिष्टा—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिष्ट' ।

शिष्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ समय । काल । २. दे० 'शिल्प' [को०] ।

शिष्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० शिष्या] १. वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो । २. वह जो विद्या पढ़ने के उद्देश्य से किसी गुरु या आचार्य आदि के पास रहता हो । विद्यार्थी । श्रतेवासी । चेला । ३.—तीर चलावत शिष्य सिखावत घर निगान देखरावत । कवहुँक सवे अश्व चढि आपुन नाना भक्ति नचावत ।—सूर (शब्द०) । ३. (शिक्षक या गुरु के सबध से) वह जिसने किसी से शिक्षा प्राप्त की हो । शिष्य । ४ (गुरु के सबध से) वह जिसने किसी धार्मिक आचार्य से दोस्ती या मत्र आदि ग्रहण किया हो । गुरीद । चेला । ५. वह जो हाल में श्रावक बना हो (जैन) । ६ क्रोध । दोष । आवेश (को०) । ७ हिंसा । बलात्कार (को०) ।

शिष्य—वि० शासनीय । शिक्षणीय ।

शिष्यक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] छात्र । विद्यार्थी [को०] ।

शिष्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिष्य होने का भाव या धर्म । शिष्यत्व ।

शिष्यत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिष्य होने का भाव या धर्म । शिष्यता ।

शिष्यपरंपरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिष्यों की क्रमागत परंपरा या सरणि ।

शिष्यशिष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शिष्य का शासन करना । शिष्य या छात्र का सुधार [को०] ।

शिष्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं । इसका दूसरा नाम 'शीर्षरूपक' भी है । २. छात्रा । विद्यार्थिनी ।

शिस्त—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १. मछली पकड़ने का काँटा । २. निशाना । लक्ष्य ।

मुहा०—शिस्त बाँधना = ताक लगाना । निशाना बाँधना ।

३. दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यंत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है । ४ अंगूठा । ५. दे० 'अगुलिवाण' (को०) । दे० 'अगुस्ताना' (को०) ।

शिस्तबाज—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शिस्तबाज] १ निशाना लगानेवाला । निशानेबाज । २. शिस्त लगाकर मछली पकड़नेवाला ।

शिल्ल, शिल्लक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिलारस नाम का गंधद्रव्य ।

शा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. शांति । २ शयन । सोना । नींद । ३ भक्ति ।

शीघ्रा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शीघ्र] दे० 'शिया' [को०] ।

शीकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ गधा विरोजा । २ तुपार । ओस । शवनम । ३. हवा । वायु । ४ जलकण । पानी की बूँद । ५ शीत । जाड़ा । ६ वर्षा की छोटी छोटी बूँदें । फुहार । ७ सरल नाम का वृक्ष (को०) । ८ धूप । (जलाने का) ।

यीं—शीकरकण = वर्षा या जल की फुहार । शीकरवर्षा = फुहारें बरसानेवाला ।

शीकरी—वि० [स० शीकरिन्] बूँदें या फुहार बरसानेवाला [को०] ।

शीघ्र—क्रि० वि० [स०] बिना विलंब । बिना देर के । चटपट । तुरंत । जल्द ।

शीघ्र—सञ्ज्ञा पुं० १. लामज्जक या लामज नामक तृण । २ भागवत के अनुसार कुरुवंशीय अग्निवर्ण के पुत्र का नाम । ३. वायु । हवा । ४ वह अक्षर जो पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानों से ग्रहों के देखने में होता है । ५ चक्राग ।

शीघ्र कर्म—सञ्ज्ञा पुं० [स०] ग्रह संयोग की गणना [को०] ।

शीघ्रकारी—वि० [स० शीघ्रकारिन्] १ जल्दी से काम करनेवाला । शीघ्र कार्य करनेवाला । ३. तीव्र । कडा । (पीडा आदि के लिये) ।

शीघ्रकारी—सञ्ज्ञा पुं० एक प्रकार का सनिपात ज्वर जिसमें मूर्च्छा, तंद्रा, प्यास, श्वास और पाश्वर्क में पीडा होती है । यह असाध्य और मृत्यु का पूर्वरूप माना जाता है ।

शीघ्रकृत्—वि० [स०] शीघ्र काम करनेवाला [को०] ।

शीघ्रकेन्द्र—सञ्ज्ञा पुं० [स० शीघ्रकेन्द्र] ग्रहसंयोग से दूरी [को०] ।

शीघ्रकोपी—वि० [स० शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी गुस्सा होनेवाला व्यक्ति । २ चिड़चिड़ा ।

शीघ्रग—वि० [स०] शीघ्र चलनेवाला । द्रुतगामी ।

शीघ्रग—सञ्ज्ञा पुं० १ सूर्य । २. वायु । ३ खरगोश । ४ अग्निवर्षा के पुत्र का नाम ।

शीघ्रगामी—वि० [स० शीघ्रगामिन्] शीघ्र चलनेवाला । जल्दी या तेज चलनेवाला ।

शीघ्रचेतन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह जो किसी बात को बहुत शीघ्र समझे । जल्दी बात समझनेवाला । चतुर । २ कुत्ता । कुकुर ।

शीघ्रचेतना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] अतिबला नाम की ओषधि [को०] ।

शीघ्रजन्मा—सञ्ज्ञा पुं० [स० शीघ्रजन्मन्] कट करज ।

शीघ्रजीर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चौलाई का साग ।

शीघ्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शीघ्र का भाव या धर्म । जल्दी । तेजी । फुरती ।

शीघ्रत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शीघ्र का भाव या धर्म । जल्दी । तेजी । फुरती ।

शीघ्रपतन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] स्त्रीमहवास के समय वीर्य का शीघ्र स्खलित हो जाना । स्तननशक्ति का अभाव ।
 विशेष—वैद्यक में इसकी गणना एक प्रकार के नपुंसकत्व में की जाती है ।
 शीघ्रपरिधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रह सयोग का अधिचक्र [को०] ।
 शीघ्रपाणि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायु ।
 शीघ्रपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य वृक्ष ।
 शीघ्रफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ग्रहसयोग का समीकरण [को०] ।
 शीघ्रबुद्धि—वि० [सं०] कुशाग्रबुद्धि । तीक्ष्ण बुद्धिवाला [को०] ।
 शीघ्रबोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जल्दी समझ में आ जाय ।
 २ ज्योतिष विषयक संस्कृत का एक गथ ।
 शीघ्रवेधी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता से वाण चलानेवाला । लघुदस्त ।
 शीघ्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम । २ दत्ती वृक्ष ।
 उदुवरपर्णी ।
 शीघ्रिय^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ शिव । २ विष्णु । ३ बिल्विलो का लडना ।
 शीघ्रिय^२—वि० शीघ्र । तेज । क्षिप्र [को०] ।
 शीघ्री—वि० [मं०] शीघ्रिन् १ गतिशील । शीघ्रगामी । २ कोई काम शीघ्र या तुरत करनेवाला । ३ उच्चारण में जल्दी करनेवाला [को०] ।
 शीघ्रीय—वि० [सं०] जल्दी । तीव्र । तेज [को०] ।
 शीघ्र्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता [को०] ।
 शीत^१—वि० [सं०] १ ठंडा । सर्द । शीतल । २. शिथिल । मुस्त ।
 निद्रालु । झपकी लेता हुआ । ३ क्वथित [को०] ।
 शीत^२—सञ्ज्ञा पुं० १ जाड़ा । सर्दी । ठंड । २ दालचीनी । ३ बेंत ।
 ४ लिसोडा । ५ नीम । ६ कपूर । ७ एक प्रकार का चदन ।
 ८ ओम । तुपार । ९ पित्तपापडा । १० शीतकाल । जाड़े का मौसम । अग्रहन, पूस और माघ के महीने । ११ जुकाम ।
 सरदी । प्रनिश्याय । १२ पटसन । अशनपर्णी [को०] ।
 १३. जल । पानी ।
 शीतक^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शीत काल । जाड़े का मौसम । २ विच्छू । ३ वनमनई । ४ वह जो हर काम में बहुत देर लगाता हो । दीर्घसूत्रो । ५ वृद्धसंहिता के अनुसार एक देश का नाम । ६ एक प्रकार का चदन । ७ आलसी । सुस्त ।
 काहिल । ८ कोई शीतल वस्तु । ठंडी चीज [को०] । ९. सतोषी पुरुष ।
 शीतक^२—वि० ठंडा । शीतल । सर्द [को०] ।
 शीत कटिबंध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतकटिबन्ध पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं । इन विभागों में जाड़ा बहुत अधिक पड़ता है । ये दोनों विभाग उष्ण कटिबंध के उत्तर और दक्षिण में कर्क और मकर रेखा के बाद पड़ते हैं ।

शीतकण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जोरा ।

शीतकर^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] २ ठंडी किरणोवाला, चंद्रमा । २ कपूर ।
 शीतकर^२—वि० शीतल करनेवाला । ठंडा करनेवाला ।
 शीतकपाय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में किमें काष्ठोपघ आदि का वह कपाय या रस जो उसे छहगुने ठंडे पानी में रात भर भिगो रखने से तैयार होता है ।
 शीतकाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ हेमंत ऋतु । अग्रहन और पूस के महीने । २ जाड़े का मौसम । हेमंत और शिशिर ।
 शीतकालीन वि० [सं०] शीत ऋतु में होनेवाला । शीतकाल का [को०] ।
 शीतकिरण—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] शीत किरणोवाला, चंद्रमा ।
 शीतकुम्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतकुम्भ कनेर । कर्नल ।
 शीतकुम्भिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शीतकुम्भिका कुम्भोरिका नाम की लता । जनकुम्भी । कुम्भी ।
 शीतकुम्भी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शीतकुम्भी जन में उत्पन्न होनेवाली एक प्रकार की लता जिसे शीतली जटा भी कहते हैं ।
 शीतकूर्चिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बरियारा । बला । खिरौटी ।
 शीतकृच्छ्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मिताला के अनुसार एक प्रकार का ऋतु जिसमें तीन दिन तक ठंडा जल, तीन दिन तक ठंडा दूध और तीन दिन तक ठंडा घी पीकर और तीन दिन तक बिना कुछ खाए पीए रहना पड़ता है ।
 शीतक्षार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध सोहागा ।
 शीतगव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतगन्ध चदन । सदल ।
 शीतगात्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सर्पिणत ज्वर ।
 विशेष—इस ज्वर में रोगी का शरीर बहुत ठंडा रहता है, इसे श्वाम, खामी, हिचकी, मोह, कप, अतर्दाह और कं होती है, उसके शरीर में बहुत पीडा रहती है, उसका स्वर बिलकुल बदल जाता है और वह बरुजा भ्रुकुना है ।
 शीतगु—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ चंद्रमा । २ कपूर ।
 शीतचपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतचम्पक १. दर्पण । शीशा । आदना ।
 २ प्रदोष । दीया ।
 शीतच्छाय, शीतच्छाया^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] वट वृक्ष या वग्गद, जिसकी छाया बहुत शीतल होती है ।
 शीतच्छाय, शीतच्छाया^२—वि० शीतल छायावाला ।
 शीतज्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जाड़ा देहर मानेवाला बुखार । जूढो ।
 जड़िया ।
 शीतता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शीत का भाव या धर्म । शीतत्व । ठंडक ।
 शीतत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीत का भाव या धर्म । शीतता । ठंडापन ।
 शीतदन्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतदन्त ठंडी वायु या ठंड जल का दाँवों से लगना या एक प्रकार की वेदना उत्पन्न करना जो वैद्यक के अनुसार दाँतों का एक रोग माना गया है ।
 शीतदंतिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शीतदन्तिका नागदन्ती । हाथीशुद्धी ।

शीतदोषिति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा जिसको किरणें शीतल होती हैं।

शीतदोष्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद जीरा।

शीतदूर्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] सफेद दूब।

शीतद्युति—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] चंद्रमा।

शीतद्रु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'मोरट'।

शीतपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शीतपङ्क] आसव। मंरेय [को०]।

शीतपत्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद लज्जालू। सफेद लाजवती।

शीतपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] अर्धपुष्पी। अर्धाहुली।

शीतपल्लवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जामुन। भूमि जवु।

शीतपाकिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकोली नामक अष्टदूर्गोय ओषधि। २. गुजा। चोटली। घुँघची। ३. ककही। अतिबला।

शीतपाकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकोली। २. गुजा। ३. वाट्यालक। अतिबला [को०]।

शीतपित्त—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] जुड़पित्ती नामक रोग।

विशेष—इसमें वात की अधिकता से सारे शरीर की त्वचा में चकत्ते पड़ जाते हैं और उनमें सूई चुभने की सी पीड़ा होती है। इसमें वमन, ज्वर और दाह भी होता है।

शीतपाणि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके पाणि या कर शीतल हो।

शीतपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। शैलेय। २. केवटी मोथा। ३. सिरिस। शिरीष वृक्ष।

शीतपुष्पक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. आक। अर्क। मदार। २. केवटी मोथा। ३. छरीला। शैलेय।

शीतपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अतिबला। ककही। महासमगा।

शीतपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अतिबला। ककही। कधी।

शीतपूतना—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

विशेष—इस रोग में बालक कांपता और खाँसता है, उसकी आँखें दुखती हैं और शरीर दुबला पड़ जाता है, शरीर से दुर्गंध आती है और उसे वमन तथा अतिसार होता है।

शीतप्रधान—वि० [सं०] १. जहाँ शीत अधिक हो। जैसे,—शीतप्रधान चक्र। २. जिसमें शीतत्व की प्रधानता हो। जैसे, शीतप्रधान वस्तु।

शीतप्रभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

शीतप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] पित्तशपड़ा। पर्पटक।

शीतफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. गूलर। २. पीछू। ३. सखरोट। ४. आंवला। ५. लिसोड़ा।

शीतवला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। महासमगा।

शीतभानु—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] चंद्रमा।

शीतभीरु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। मोतिया। २. दे० 'निर्गुंडी'। ३. वह जो शीत से डरे।

हिं० श० ६-५३

शीतभीरुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मल्लिका। २. एक प्रकार का शालि-धान्य। ३. काली निर्गुंडी।

शीतमजरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शीतमञ्जरी] शेफालिका। निर्गुंडी।

शीतमयूख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

शीतमरीचि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

शीतमूलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

शीतमेह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शीतमेही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शीतमेहिन्] वह जिसे शीतप्रमेह रोग हो।

शीतयुद्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शीत + युद्ध] संदेह और तनातनी की वह स्थिति जिसमें शस्त्रीकरण और अपने पोषक राष्ट्रों से परस्पर सहायता की सधियाँ हो। (अ० 'कोल्ड वार')।

शीतरम्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रदीप। दीपक।

शीतरश्मि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

शीतरस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ईख के कच्चे रस की बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

शीतरुच्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शीतरुचि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चाँद। चंद्रमा [को०]।

शीतरुह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल।

शीतल^१—वि० [सं०] १. ठंडा। सर्द। गरम का उल्टा। २. क्षोभ या उद्देगग्रहित। जिसमें आवेश का अभाव हो। शांत। ३. प्रसन्न। सतुष्ट। तृप्त।

शीतल^२—सञ्ज्ञा पुं० १. कसीस। २. छरीला। शैलेय। पत्थरफूल। ३. चंदन। ४. मोती। मुक्ता। ५. उशीर। खस। ६. बन-सनई। ७. लिसोड़ा। ८. चंपा। ९. राल। १०. पद्मकाष्ठ। ११. पीतचंदन। १२. भीमसेनी कपूर। १३. शाल वृक्ष। १४. बर्क। हिम। १५. केराव। मटर। १६. चंद्रमा। १७. जंनों का एक प्रकार का व्रत।

शीतलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मरुआ। मरुवक। २. कुमुद।

शीतलचीनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + चीन (देश)] कच्चा चीनी।

शीतलच्छद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चपा। चपक।

शीतलजल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल [को०]।

शीतलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. ठंडापन। सर्दी। २. अमृतवल्ली। ३. जड़ता।

शीतलताई(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता + हिं० ई] दे० 'शीतलता'।

शीतलत्व—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] दे० 'शीतलता'।

शीतलपाटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] दे० 'शीतलपाटी'।

शीतलप्रद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शीतलता प्रदान करनेवाला, चंदन।

शीतलवात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ठंडा हवा। शीतलता भरी वायु।

शीतलवातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अपराजिता। कोयल लता। विष्णुक्राता।

शीतला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्फोटक रोग। चैचक। २. एक देवी

जो विस्फोटक की अविष्टाओं मानी जाती हैं। ३ आराम शीतला। ४ नीली दूब। ५ अर्कपुष्पी। ६ बालू। ग्रेत (को०)। ७ कुट्टु बिनी वृक्ष (को०)। ८ दे० 'शीतली' (को०)।

शीतलापूजा—सद्या स्त्री० [सं०] शीतला देवी की पूजा जो फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को होती है [को०]।

शीतलावाहन—सद्या पुं० [सं०] गवा [को०]।

शीतलाषष्ठी—सद्या स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल पक्ष की छठी तिथि।

शीतलाष्टमी—सद्या स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी। इसी दिन शीतला देवी की पूजा होती है।

शीतलासप्तमी—सद्या स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल सप्तमी को होनेवाला देवोत्सव [को०]।

शीतली—सद्या स्त्री० [सं०] जल में होनेवाला एक पौधा। शीतली जटा। पातडी। २ श्रीवल्लो। ३ चेचक। विस्फोटक।

शीतवर—सद्या पुं० [सं०] शिरियारी। गुठवा।

शीतवरा, शीतवला—सद्या स्त्री० [सं०] ककड़ी। कधी नाम का पौधा।

शीतवल्क—सद्या पुं० [सं०] गूलर। उदुवर।

शीतवल्लभ—सद्या पुं० [सं०] पित्तपापडा। शाहतरा।

शीतवल्ली—सद्या स्त्री० [सं०] नीली दूब।

शीतवासा—सद्या स्त्री० [सं०] जूही। यूथिका।

शीतवीर्य—सद्या पुं० [सं०] १. पड़ुम काठ। २. पापाणभेद। पखानभेद। ३. पित्तपापडा। ४. पाकड। पकडी। ५. नीली दूब। ६. वष। वचा।

शीतवीर्य—वि० खाने में जिसका प्रभाव ठंडा हो। जिसकी तासीर सर्द हो।

शीतवीर्यक—सद्या पुं० [सं०] पाकर। प्लक्ष वृक्ष।

शीतवृक्षा—सद्या स्त्री० [सं०] दुरदुर का पेड़।

शीतवृष्टि—सद्या स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का रत्न [को०]।

शीतशिव—सद्या पुं० [सं०] १. सेंधा नमक। २. छरीला। पयरफूल। ३. सोआ। ४. शकुफला वृक्ष। सौफ। मधुरिका (को०)। ५. शमी का पेड़। सफेद कीकर। ६. कपूर।

शीतशिवा—सद्या स्त्री० [सं०] १. सफेद कीकर। शमी। २. सौफ।

शीतशूक—सद्या पुं० [सं०] जी। यव।

शीतसवासा—सद्या स्त्री० [सं०] जूही। शीतवासा।

शीत सन्निपात—सद्या पुं० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें शरीर सुन्न और ठंडा हो जाता है। पक्षाघात। अर्द्धांग।

शीतसह—सद्या पुं० [सं०] पीलू। भल्ल वृक्ष।

शीतसहा—सद्या स्त्री० [सं०] १. निर्गुंडी। शेफालिका। २. नेवारी। वासती का पौधा। ३. मोतिया बेला। मल्लिका का एक भेद। ४. चमेली। ५. भल्ल वृक्ष। पीलू

शीतस्पर्श—वि० [सं०] जो स्पर्श करने में ठंडा हो। शीतल [को०]।

शीताग—सद्या पुं० [सं०] शीताङ्ग शीत सन्निपात।

शीताग्री—सद्या स्त्री० [सं०] शीताङ्गी हृमपदी लता।

शीतावु—सद्या स्त्री० [सं०] शीताम्बु दुद्रो नाम की घास।

शीताशु—सद्या पुं० [सं०] १. कर्पूर। कपूर। २. चद्रमा।

यी०—शीताशु तैल = कर्पूर का तैल।

शीता—सद्या स्त्री० [सं०] मरदी। ठंड। २. एक प्रकार की दूब। ३. शिल्पिका घाम। ४. तसर की छाल। ५. अमलताम। ६. दे० 'सीता' (को०)।

शीताकुल—वि० [सं०] शीत से व्याकुल। जाड़े में ठिठुरा हुआ।

शीतातपत्र—सद्या पुं० [सं०] छाता। छत्र। छतरी।

शीताद—सद्या पुं० [सं०] दात के ममूटो का एक रोग जिसमें ममूटों जगह जगह पक जाते हैं और उनमें से दुर्गंध निकलने लगती है।

शीताद्रि—सद्या पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

शीताद्य—सद्या पुं० [सं०] शीतज्वर। जूडी।

शीतावला—सद्या स्त्री० [सं०] ककड़ी। महाममगा।

शीतारु—सद्या पुं० [सं०] १. कपूर। २. चद्रमा।

शीतास—वि० [सं०] जो जाड़े के कारण ठिठुरा हुआ हो [को०]।

शीतार्त्ति—वि० [सं०] शीत से पीड़ित। शीतालु।

शीताल—सद्या पुं० [सं०] हिताल वृक्ष।

शीतालु—वि० [सं०] दे० 'शीतार्त्ति' [को०]

शीताश्म—सद्या पुं० [सं०] शीताश्मन् चद्रकात मणि।

शीतिका, शीतिमा—सद्या स्त्री० [सं०] शीतिमन् ठंडक। शैत्य।

शीतीभाव—सद्या पुं० [सं०] १. शीतलता। २. मनोविकारों के वेग का न रह जाना। शांति। शम। ३. मोक्ष। मुक्ति।

शीतेतर—वि० [सं०] शीत से भिन्न। गरम। उष्ण [को०]

शीतोत्तम—सद्या पुं० [सं०] जल। पानी [को०]।

शीतोदक—सद्या पुं० [सं०] १. एक नरक का नाम। २. ठंडा जल।

शीतोष्ण—वि० [सं०] ठंडा और गरम। मातदिल [को०]।

शीत्कार—सद्या पुं० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

शीत्य—वि० [सं०] १. शीतल करने योग्य। २. घान्य। ३. जोता हुआ या जोतने योग्य।

शीघ्र—सद्या पुं० [सं०] १. पकी हुई ईंस के रस से बनी हुई मदिरा। सीधु। २. मद्य। शराब [को०]।

शीघ्रगघ—सद्या पुं० [सं०] १. मद्य गघ। २. वकुल वृक्ष। मौलसिरी।

शीघ्रप—सद्या पुं० [सं०] मद्यप। शराबी [को०]।

शीन^१—सद्या पुं० [सं०] १. मूर्ख। २. हिम। बर्फ। ३. अजगर।

शीन^२—वि० जमा हुआ।

शीन^३—सद्या पुं० [सं०] अरबी का १२वाँ, फारसी का १५वाँ, उर्दू का अठारहवाँ और देवनागरी का तीसरा वर्ण। तालव्य श।

मुहा०—शीन काफ दुरस्त होना = (१) उच्चारण ठीक होना। (२) सजकर तैयार होना (व्यय)।

श्रीकर—वि० [स०] आनन्ददायक । सुन्दर । मनोहर [को०] ।
 श्रीकालिका—सच्चा स्त्री० [स०] निर्गुण । शेषकालिका ।
 श्रीमर—सच्चा पुं० [स०] मेह की झडी ।
 श्रीमर—वि० आनन्दप्रद । मनोहर [को०] ।
 श्रीभव—सच्चा पुं० [स०] सीकर । फुहारा [को०] ।
 श्रीम्य—सच्चा पुं० [स०] १. शिव । २. वृष । बैल ।
 श्रीर—वि० [स०] तुकीला । तेज ।
 श्रीर—सच्चा पुं० १. अजगर । २. दे० 'सीर' ।
 श्रीर—सच्चा पुं० [फा०; मि० स० क्षीर] क्षीर । दूध ।
 मुहा०—श्रीर शकर या श्रीरक्षकर हो जाना = (१) धुलमिल जाना । (२) गाढ स्नेह या प्रेम होना ।
 श्रीरखाना—सच्चा पुं० [फा० श्रीरखानह] १. दुग्धकेंद्र । दुग्धालय ।
 २. मदिरालय [को०] ।
 श्रीरखार—वि० [फा० श्रीरखार] श्रीरखोरा । दूध पीता (वच्चा) ।
 उ०—उजो की अक्ल होर लायक के माफिक फरमाते हैं क्या वास्ते सिपले श्रीरखार .. ।—दक्खिनी०, पृ० ४२५ ।
 श्रीरखिरत—सच्चा पुं० [फा० श्रीरखिरत] हकीमी में एक रेचक औषधि ।
 विशेष—कहते हैं, यह औषधि खुरासान में पेड़ों और पत्थरों पर ओस की बुँदों की तरह जमा हुई मिलती है ।
 श्रीरखोरा—सच्चा पुं० [फा० श्रीरखार] १. दूध पीता वच्चा ।
 २. अनजान बालक ।
 श्रीरवा, श्रीरविरंज—सच्चा स्त्री० [फा०] पायस । खीर [को०]
 श्रीरमाल—सच्चा स्त्री० [फा०] १. चीनी मिला हुआ पानो । शर्वत ।
 २. चीनी या गुड़ को पकाकर अहद के समान गाढा किया हुआ रस । चाशनी । ३. अटि को दूध में गूँधकर बनाई जानेवाली रोटी [को०] ।
 श्रीरा—सच्चा पुं० [फा० श्रीरह] १. शकर की चाशनी । २. फलों का निचोड़ा हुआ रस । ३. पीसो हुई औषधियों का रस ।
 दे० 'सीरा' ।
 श्रीराज—सच्चा पुं० [फा०] ईरान का एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध नगर ।
 श्रीराजा—सच्चा पुं० [फा० श्रीराजह] १. वह चुना हुआ रंगीन या सफेद फीता जो कलावा को सिलाई का छार पर शोभा और मजबूती के लिये लगाया जाता है । २. पुस्तक और पुट्टों पर की गई सिलाई । ३. प्रबन्ध । इंतजाम । ४. क्रम । सिलासला ।
 ५. टुकड़ा । जर्ज़ा । कण । उ०—उन्नीसवीं सदा में बिखरे श्रीराजे के एकत्रित करने का जो प्रयत्न हुआ था, वह नगण्य सा था ।—भा० ई० ६०, पृ० ३३६ ।
 यौ०—श्रीराजाब्द = (कितान) जिसको सिलाई हो चुकी हो या जिल्द बाँध गई हो ।

श्रीरा—श्रीराजा खुलना या टूटना = (१) टाँका टूटना । सिलाई खुल जाना । (२) प्रबंध का बिगड़ जाना । इंतजाम सराव होना ।

श्रीराजा बँवना = (१) कितान के जुजों की सिलाई होना ।
 (२) बिखरी चीजों का क्रम लगाना या सिलासला बँधाना ।
 श्रीराजा बिखरना = बेतरतीब होना । क्रमहीन होना ।

श्रीराजी—सच्चा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का कजूर । २. घोड़े का एक भेद । शराज का घोड़ा । दे० 'सराजी' ।

श्रीरि—सच्चा स्त्री० [स०] रक्तनाड । शरा ।

श्रीरिका—सच्चा स्त्री० [स०] वंशपत्री नामक वृक्ष ।

श्रीरी—वि० [फा०] १. मोठा । मधुर । २. प्रिय । प्यारा ।

श्रीरी—सच्चा स्त्री० फरहाद की प्रेयसी एक रमणी । (श्रीरी फरहाद की प्रेमकथा बहुत ही प्रसिद्ध है ।)

श्रीरी जवाई—वि० [फा० श्रीरीजवा] मधुभाषी । उ०—तू लाती आई मन कवन । कहा यूँ जा ए तू है श्रीरी जवा ।—दक्खिनी०, पृ० ८४ ।

श्रीरी—सच्चा पुं० [स०] १. कुश । कुशा । हरिदर्भ । २. मूँज । ३. कलिहारी । लागली ।

श्रीरीनी—सच्चा स्त्री० [फा०] १. मिठास । मीठापन । २. खाने की वस्तु जिसमें ख़ूब चीनी या मीठा पड़ा हो । मिठाई । मिष्ठान । ३. बताशा । सिरनी ।

क्रि० प्र०—चढाना ।—बाँटना ।—मानना ।

श्रीर्ण—वि० [स०] १. छितराया हुआ । टूटा फूटा हुआ । खंड खंड । २. गिरा हुआ । च्युत । ३. जीर्ण । फटा पुराना । ४. मुरझाया हुआ । सूखकर सिकुड़ा हुआ । ५. चुचका हुआ । ६. कुश । दुबला पतला ।

श्रीर्ण—सच्चा पुं० एक गंधद्रव्य । स्वीयेयक । धुनेर ।

श्रीर्णक—वि० [स०] श्रीर्ण वा च्युत पत्तों को खानेवाला [को०] ।

श्रीर्णकाय—वि० [स०] दुर्बल शरीरवाला । कृशकाय [को०] ।

श्रीर्णता—सच्चा स्त्री० [स०] श्रीर्ण होने का भाव । श्रीर्णत्व ।

श्रीर्णत्व—सच्चा पुं० [स०] दे० 'श्रीर्णता' [को०] ।

श्रीर्णदंत—वि० [म० श्रीर्णदन्त] जमके दाँत गिर गए हो [को०] ।

श्रीर्णदल—सच्चा पुं० [स०] नीम ।

श्रीर्णनाला—सच्चा स्त्री० [स०] पृश्निपर्णी । पिठमन [को०] ।

श्रीर्णपत्र—सच्चा पुं० [स०] १. कर्षिकार । कनियारी । २. पत्रा नील । ३. नीम । ४. वृक्ष स गिरा हुआ पत्ता [को०] ।

श्रीर्णपर्ण—सच्चा पुं० [स०] १. निब । नाम । २. वृक्ष स गिरा हुआ या कुम्हलाया हुआ पत्ता [को०] ।

यौ०—श्रीर्णपर्ण फल = जिसके पत्ते और फल मुरझाए, सूखे या भ्रष्ट गए हो ।

श्रीर्णपर्णी—सच्चा स्त्री० [स०] एक वृक्ष का नाम [को०] ।

श्रीर्णपाद—सच्चा पुं० [स०] १. यमराज ।

विशेष—पुराणों में कहा है कि माता क पाप से यमराज के पैर शीण हो गए थे ।

२. शनिग्रह । ३. भयवृक्ष के पैर [को०] ।

शीर्षपुष्पिका—सङ्घा खी० [स०] १ सौफ। मधुरिका। २ सोआ।

शीर्षपुष्पी—सङ्घा खी० [स०] सौफ।

शीर्षमाला—सङ्घा खी० [स०] पिठवन। पृष्ठिनपर्णी।

शीर्षरोमक—सङ्घा पुं० [स०] एक प्रकार का गठिवन।

शीर्षवृत्—सङ्घा पुं० [स० शीर्षवृत्त] तरवृज।

शीर्षाभि—सङ्घा पुं० [स० शीर्षाभि] यम। विशेष दे० 'शीर्षपाद'।

शीर्षि—सङ्घा खी० [स०] दे० 'शीर्षि' [को०]।

शीर्षि—सङ्घा खी० [स०] तोडने फोडने की क्रिया। खडन।

शीर्षि—वि० [स०] १ टूटने फूटने योग्य। मपुर। २ नाशवान्।

शीर्षि—सङ्घा पुं० एक प्रकार की दूव या घास जिसका प्रयोजन यज्ञों में पडता था।

शीर्षि—वि० [स०] १ अपकारक। २ हिंसक। ३ वर्चर। जगली।

शीर्षि—सङ्घा पुं० [स०] १ सिर। मुड। कपाल। २ माथा। ३ सत्रसे ऊपर का भाग। सिरा। चोटी। ४. सामना। अग्र भाग। ५ कालागुह। काला अग्रर। ६ एक पर्वत का नाम। ७ एक प्रकार की घास।

शीर्षक—सङ्घा पुं० [स०] १. सिर। मुड। २. माथा। ३. चोटी। सिरा। ४. राहु ग्रह। ५. सिर में लपेटने की माला। ६ अग्रर। ७ नारिकेल वृक्ष। ८ टोप। शिरस्त्राण। कूंड। ९ व्यवहार या अभियोग का निर्णय। फसला। १०. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख या प्रबंध के ऊपर लिखा जाय। ११. सिर की हड्डी। शिरोस्थि (को०)। १२. पगडी। शिरोवेष्टन। मुरेठा (को०)।

शीर्षघाती—वि०, सङ्घा पुं० [स० शीर्षघातिन्] सिर काटनेवाला। जल्लाद (को०)।

शीर्षच्छेद, शीर्षच्छेदन—सङ्घा पुं० [स०] सिर काटना (को०)।

शीर्षच्छेदिक, शीर्षच्छेद्य—वि० [स०] शिरच्छेद करने योग्य। वध करने योग्य। वध्य (को०)।

शीर्षणी—सङ्घा खी० [स०] शय्या का सिरहाना (को०)।

शीर्षण्य—सङ्घा पुं० [स०] १ टोप। कूंड। २. सुलभे हुए साफ वाल। ३ सिर पर बाँधी जानेवाली कोई वस्तु (को०)। ४ सिर पर लपेटने की रज्जु (को०)। ५ चारपाई का सिरहाना।

शीर्षण्य—वि० शीर्षांकित। श्रेष्ठ (को०)।

शीर्षत्राण—सङ्घा पुं० [स०] शिरस्त्राण। टोप। कूंड (को०)।

शीर्षपट्ट, शीर्षपट्टक—सङ्घा पुं० [स०] १ सिर में लपेटने का कपडा। २ पगडी। मुरेठा। साफा।

शीर्षविन्दु—सङ्घा पुं० [स० शीर्षविन्दु] १ सिर के ऊपर और ऊँचाई में सब से ऊपर का स्थान। २. मोतियाबिंद।

शीर्षरक्ष, शीर्षरक्षक—सङ्घा पुं० [स०] दे० 'शीर्षत्राण' (को०)।

शीर्षवर्त्तन—सङ्घा पुं० [स०] अभियोग चलानेवाले का उस दशा में दंड सहने के लिये तैयार होना जब कि अभियुक्त ने दिव्य परीक्षा देकर अपने को निर्दोष प्रमाणित कर दिया हो। शिरोपस्थायी।

शीर्षवेदना, शीर्षव्यथा—सङ्घा खी० [म०] शिरोवेदना। गिर का दर्द। शीर्ष शोक (को०)।

शीर्षशोक—सङ्घा पुं० [म०] शिरोवेदना। मिग्दद (को०)।

शीर्षस्थ—वि० [म०] दे० 'शीर्षांकित' (को०)।

शीर्षस्थान—सङ्घा पुं० [म०] १ उत्तपाम। गिर। शीर्ष। २ ललाट। मस्तक। ३ मवाच्च स्थान या पद (को०)।

शीर्षस्थानीय—वि० [स०] दे० 'शीर्षांकित' (को०)।

शीर्षांकित—वि० [स० शीर्षांकित] शीर्षस्थानीय। श्रेष्ठ। सर्वोच्च।

शीर्षोदय—सङ्घा पुं० [म०] ज्योतिष में मिथुन, मिह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशि (को०)।

शील—सङ्घा पुं० [उ०] १ ज्ञान व्यपहार। आचरण। वृत्ति। चरित्र। २ स्वभाव। प्रवृत्ति। आदत। मिजाज। ३. श्रद्धा चाल-चलन। उत्तम आचरण। सद्गुण। उ०—'भाव' ही कर्म का मूल प्रवर्तक और शील के मन्त्रावरुह।—रम०, पृ० १६१।

विशेष—श्रीदत्ताश्रम में दत्त शील बहे गए हैं—हिमा, सधन, व्यभिचार, मिथ्याभाषण, प्रमाद, अपराह्न भोजन, गृह्य गोतादि, मालागवादि, उच्चासन शय्या और द्रव्यग्रह इन सब का त्याग। कही कही पचशील हा रहे गए हैं। यह शील छद्म या दत्त पारमिताओं में से एक है और तीन प्रकार का बता गया है—सभार, कुशलसगाह और सत्त्वार्थ द्रिया। ४ उत्तम स्वभाव। श्रद्धा प्रकृति। श्रद्धा मिजाज। ५ दूसरे का जो न दुखे, यह भाव। कोमल हृदय। ६ भोदर्थ। मुदरता। नोन्वता (को०)। ७ सकोच का स्वभाव। मुरीवत।

मुहा०—शील तोडना = हमारे के जो दुखने न दुखने का ध्यान न रखना। मुरीवत न रखना। आँखों में शील न होना = द० 'श्राल' के मुहा०।

८ अजगर।

शील—वि० प्रवृत्त। तत्पर। प्रवृत्तिवाला। स्वभावयुक्त। जैसे—दान-शील, पुण्यशील।

शीलक—सङ्घा पुं० [म०] १ एक कवि का नाम। २ ज्ञान की जड़। कर्णमूल (को०)।

शीलकीर्ति—सङ्घा खी० [म०] गुणों की स्थाति, शुचिता और सदाचार की प्रशस्ति (को०)।

शीलखडन—सङ्घा पुं० [स०] शुचिता, सदाचार या नैतिकता का उल्ल-घन (को०)।

शीलगुप्त—वि० [स०] चतुर। मक्कार। प्रवचक (को०)।

शीलज्ञ—वि० [स०] सदाचार एवं नैतिकता का ज्ञाता।

शीलता—सङ्घा खी० [स०] दे० 'शीलत्व'।

शीलत्याग—सङ्घा पुं० [स०] सदाचार का त्याग (को०)।

शीलत्व—सङ्घा पुं० [स०] शीलयुक्त होने का भाव या क्रिया। शीलता। शालीनता (को०)।

शीलदशा—सङ्घा खी० [स० शील + दशा] किसी विशेष भाव का किसी की प्रकृति या स्वभाव का लक्षण बनने की अवस्था। जैसे,

तुनकमिजाजी, हंसोड़पन, भीस्ता आदि । उ०—भाव के इस प्रकार प्रकृतिस्थ हो जाने की अवस्था को हम शील दशा कहेंगे ।
—रस०, पृ० १८२ ।

शीलवारी—वि० [स० शीलधारिन्] सद्वृत्तिवाला । शीलवान् [को०] ।

शीलवारी—सद्वा पु० शिव [को०] ।

शीलन—सद्वा पु० [स०] १. बारबार अभ्यास करना । जैसे, शास्त्र आदि का । २. निरंतर प्रयोग में लाना । आधिक्य । ३. समान या सेवा करना । ४. वस्त्र पहिनना [को०] ।

शीलभंग—सद्वा पु० [स० शीलभङ्ग] १. दे० 'शीलखंडन' । २. (आधुनिक प्रयोग) किसी भी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रसंग करना । बलात्कार ।

शीलभ्रश—सद्वा पु० [स०] सदाचार का विनाश [को०] ।

शीलवंचना—सद्वा स्त्री० [स० शीलवञ्चना] १. सतीत्व या इन्द्रियनिग्रह का अतिक्रमण । २. शुचिता या शील का उल्लंघन [को०] ।

शीलवर्जित—वि० [स०] दुराचारी । शील से रहित [को०] ।

शीलवान्—वि० [स० शीलवत्] [वि० स्त्री० शीलवती] १. अच्छे आचरण का । सात्विक वृत्ति का । २. अच्छे या कोमल स्वभाव का । मुरीबतवाला । सुशील ।

शीलवृत्त—वि० [स०] अच्छे आचरणवाला । सदाचारी [को०] ।

शीलवृत्ति—सद्वा पु० अच्छा आचरण । सदाचार [को०] ।

शीलवृत्ति—सद्वा स्त्री० [स०] सुशीलता । सदाचार । भलमनसी [को०] ।

शीलवृद्ध—वि० [स०] संगमन्य । सदाचारी [को०] ।

शीलसौंदर्य—सद्वा पु० [स० शीलसौन्दर्य] उत्कृष्ट एवं सत् आचरण की सुंदरता । शील की सुंदरता । उ०—किसी को रूपसौंदर्य और शीलसौंदर्य का पहले पहल साक्षात्कार या परिचय होते ही सबसे पहली अनुभूति आनंद की होती है । सबसे पहले हृदय विकसित और लुब्ध होता है ।—रस०, पृ० ७५ ।

शीला—सद्वा स्त्री० [स०] कौण्डिन्य मुनि की पत्नी का नाम ।

शीलित—वि० [स०] १. बारबार किया हुआ । अभ्यस्त । प्रयुक्त । २. धारण किया हुआ । पहना हुआ । ३. कृत । संपादित । ४. कुशल । निपुण । ५. युक्त । सहित । संपन्न ।

शीलित—सद्वा पु० अनवरत क्रिया । अभ्यास [को०] ।

शीली—वि० [स० शीलिव] १. सदाचारी । सुशील । २. बार-बार किया हुआ । अभ्यस्त । प्रयुक्त [को०] ।

शीव④—सद्वा पु० [स० शिव] दे० 'शिव' । उ०—ब्रह्मा विष्णु शीव त्रिमूर्ति । तीन की आशा जगत महँ भारी ।—कबीर सा०, पृ० ४६८ ।

शीवल—सद्वा पु० [स०] १. छरीला । शैल्य । पक्कड़ । २. सेवार ।

शीवा—सद्वा पु० [स० शीवन्] अजगर ।

शीवा⑤—सद्वा पु० [स० शिव] शिव । ब्रह्मा । उ०—सब की प्रेरक कहिए जीवा । सो क्षेत्र निरंतर शीवा ।—मुरारि प्र०, भा० १, पृ० ११० ।

शीश(प्र)ि—सद्वा पु० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष' ।

यी०—शीशकूल ।

शीश—सद्वा पु० [क्रा० शीशद्] शीशा । काँच । (प्रारंभ समाप्त में प्रयुक्त) । जैसे,—शीश ए-दिल, शीश महल [को०] ।

यी०—शीश-ए-दिल = कोमल हृदय । नाजुक दिल । शीशगर = काँच के मामान बनानेवाला । शीशवाज = घूर्त । मयकार । शीशमहल । शीश-ए-साग्रत, शीश-ए-साग्रा = बालू की घड़ी ।

शीशकूल—सद्वा पु० [स० शीर्ष + कूल] मिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का गहना विशेष । उ०—मिर पर हैं चंदवा शीशकूल, कानों में झुमके रहे झूल ।—ग्राम्या, पृ० ४० ।

शीशम सद्वा पु० [फा०] एक प्रकार का पेट जिम्मा तना भारी, गुंदर और मजबूत होता है ।

विशेष—यह पेट बहुत ऊँचा और सीधा होता है । इसकी पत्तियाँ छाटी और मोन होती हैं । लफड़ी लाल रंग की होती हैं और मजबूती तथा सुंदरता के लिये प्रसिद्ध हैं । इससे पलग, कुर्सा, मेज आदि सजावट के सामान बढिया बनते हैं ।

शीशमहल—सद्वा पु० [फा० शीश + श्र० महल] १. वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारों में सर्वत्र शीशे जड़े हों । काँच का मकान ।

मुहा०—शीश महल का कुत्ता = पागल कुत्ता की तरह बकने या उछलने कूदनेवाला । (शीशे में अपना ही प्रतिबिम्ब देखकर कुत्ता घबराता और भौंकता है ।)

शीशा—सद्वा पु० [फा० शीशद्] १. एक मिश्र धातु, जो बालू या रेह या पारो मिट्टी को प्राग में गलाने में बनती है ।

विशेष—यह पारदर्शक होती है और खरी होने के कारण थोड़े आघात से टूट जाती है । काँच ।

२. काँच का वह खंड जिसमें गामने की वस्तुओं का ठीक प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है और जिसका व्यवहार चंद्रा देखने के लिये किया जाता है । दर्पण । आइना । ३. भाड फानूस आदि काँच के नये सजावट के सामान ।

मुहा०—शीशे की पत्थर के हवाले करना = जान बूझकर किसी को मकड़ में डालना । उ०—वे नुबहा राना की जो दिल उस वुन से लगाया । खुद हमने किया शीशे की पत्थर के हवाले ।—फिमाना०, भा० ३, पृ० २६ । शीशा बाया = बहुत नाजुक चीज । शीशे में उतारना = (१) भूत छुड़ाना । प्रतयाषा शांत करना । वश में करना । मोहृत करना । उ०—दाकी भड़क कोई नहीं मिटा सकता मगर हमने दस शीशे में उतारा है ।—फिमाना०, भा० ३, पृ० ४ ।

शीशी—सद्वा स्त्री० [फा० शीशद्, शीशा] शीशे का छोटा पात्र जो तेल, दूध, दवा आदि रखने के काम में आता है । काँच की लंबी कुप्पी ।

मुहा०—शीशी सुंधाना = बलोरोगान्न सुंधाना । दवा सुंधकर बेहोश करना ।

विशेष—अस्त्रचिकित्सा आदि के समय रोगी इस प्रकार क्लोरो-
फार्म सुँघाकर बेहोश किए जाते हैं।

शीस^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं शीर्ष] दे० 'शीर्ष'। उ०—शीस भुकाकर चली
गई वह माँदर मे निज हृदय हिलो।—साकेत, पृ० ३६८।

शीस^२—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] एक पैगवर। आदम का तीसरा पुत्र [को०]।

शुग—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुङ्ग] १ वट वृक्ष। २ आँवला। ३. पाकड़।
पकड़ी। ४. नव पल्लव। ५ फूल के नीचे का आधार या
कटोरी। ६ एक राजवंश जो मौर्य के पीछे मगध के
सिंहासन पर बैठा था।

विशेष—इस वंश का स्थापक मौर्य का सेनापति पुष्यमित्र था
जिसने मौर्यवंश के आतम राजा वृहद्रथ का मारकर ईसा से
१८५ वर्ष पूर्व उसका साम्राज्य पर अपना अधिकार जमा
लिया था। विशेष दे० 'पुष्यमित्र' शब्द।

७. जो या अन्न का ढूँड। किशोर। शूक (को०)।

शुगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुङ्गा] १ पकड़ी का पेड़। २ कली का रत्नक
आवरण। ३ गहूँ जो आद का ढूँड। शूल [को०]।

यौ०—शु गाकर्म = पु सवन नाम का एक संस्कार विशेष।

शुगी—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुङ्गिन्] १ पकड़ का पेड़। पाकर। २.
वट वृक्ष।

शुठि, शु ठी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० शुठि, शुठि] सोठ।

शुठ्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुठ्य] सूखी आदी। सोठ [को०]।

शुड—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुड] १. हाथी की सूँड। २ हाथी का मद
जो उसकी कनपटी से बहता है।

शुडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडक] १ एक प्रकार का रणनाथ। भेरी।
२ युद्धगान। युद्धगीत (को०)। ३ मद्य उतारने या
बेचनेवाला।

शुडमूपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुडमूपिका] छद्मदर [को०]।

शु डरोह—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडरोह] अग्न्या घास। भूतृण।

शु डा—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडा] १. सूँड। २. मद्यपान करने का स्थान।
होली। ३ शराब। ४. वेश्या। ५ कुटनी। ६ कमलनाल।
नलिनी। कमल की डडी (को०)। ७. चिबुक। हनु (को०)।

यौ०—शु डादड। शु डापान।

शु डादड—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडादड] हाथी की सूँड।

शु डापान—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडापान] मद्यशाला। मद्यपानगृह [को०]।

शु डार—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडार] १ हाथी की सूँड। २. साठ वर्ष का
हाथी। ३. मद्य उतारने या बेचनेवाला।

शु डाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडाल] हाथी।

शु डिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडिक] १ मद्य बिकने का स्थान।
कलवरिया। २ एक प्राचीन जाति का नाम जिसका व्यवसाय
मद्य उतारना और बेचना था।

शुडिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुडिका] १. अलिखित्वा। गले का कौवा।
घाटी। २. ग्रंथि में आनेवाली सूजन। ३. दे० 'शु बा' [को०]।

शु डिमूपिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुडिमूपिका] छद्मदर।

शुडी^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुडिन्] १ (सूँडवाला) हाथी। २ मद्य
बनानेवाला। कलवार।

यौ०—शु डिमूपिका।

शु डी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० १ हाथीनू की का पौधा। २. गले का कौवा।
घाटी।

शु ध्यु^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुध्यु] १. वायु। २. अग्नि। ३. एक पक्षी।
४. आदित्य [को०]।

शु ध्यु^२—सञ्ज्ञा स्त्री० बड़वा। घोड़ी [को०]।

शु व्यु^३—वि० पवित्र। विमल। मृत्ति [को०]।

शु भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुम्भ] एक अमर जिने दुर्गा ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार यह प्रह्लाद का पौत्र श्रीर
गवैठे का पुत्र था। इसके माई का नाम निशु भ था। वामनपुराण
में इसे कश्यप की दनु नामक भार्या से उत्पन्न कहा गया है।

यौ०—शु भवातिनी। शु भपुर। शु भपुरी। शु भमयनी। शु भ-
मदिनी। शु भहननी = दुर्गा।

शु भवातिनी, शु भमदिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुम्भवातिनी, शुम्भमदिनी]
दुर्गा।

शु भपुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं शुम्भपुर] दे० 'शु भपुरी'।

शु भपुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शुम्भपुरी] शु भ राज्ञ को पुरी।
एकचक्रा पुरी। हरिगृह।

विशेष—विद्वानों का अनुमान है कि मध्य प्रदेश में गोखाना के
अंतर्गत सभलपुर ही प्राचीन शु भपुरी है।

शु शुमार—सञ्ज्ञा पुं० [म०] शिशुमार का आभास रूप। सूँस [को०]।

शु—क्रि० वि० [सं] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित। जल्दी [को०]।

शुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. तोता। सुगा। २. एक प्रकार की गठिवन।
३. सिरिस का पेड़। ४. सोना पाठा। ५. लोव का वृक्ष।
६ तालीशपत्र। ७. भरभंडा। भरभंड। ८. रावण के एक
दूत का नाम। ९. व्यासदेव के पुत्र। विशेष दे० 'शुकदेव'। १०.
वस्त्र। कपड़ा। ११. कपड़े का आंचल। १२ शिरस्त्राण।
सोद [को०]। १३ पगडो। साफा। १४. महाभारत के अनुसार
एक पौराणिक अस्त्र [को०]। १५. एक वीर योद्धा [को०]।
१६ गवर्गों का एक राजा

शुककर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] एक प्रकार का पौधा।

शुककीट—सञ्ज्ञा पुं० [सं] हरे रंग का एक कर्तिका जा खेतों में दिखाई
पड़ता है।

शुककूट—सञ्ज्ञा पुं० [सं] दो खभा के बाच में शोभा के लिये लटकाई
हुई माला।

शुकच्छद—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १ तोते का पर। २. ग्रंथिपर्ण।
गठिवन। ३. तेजपत्ता।

शुकजिह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] शुकुडो। सुप्राठाठी नामक पौधा।

शुकतर—सञ्ज्ञा पुं० [सं] शिरोप वृक्ष।

शुकता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] दे० 'शुकत्व' [को०]।

शुकतुंड—सज्ञा पुं० [सं० शुकतुण्ड] १. तोते की चोंच । २. हाथ की एक मुद्रा जो तांत्रिक पूजन में बनाई जाती है ।

शुकतुंडी—सज्ञा स्त्री० [सं० शुकतुण्डी] शुकजिह्वा या सूआठोठी नामक पौधा ।

शुकत्व—सज्ञा पुं० [सं०] शुक होने का भाव । सुगापन । शुकता [को०] ।

शुकदेव—सज्ञा पुं० [सं०] कृष्णार्द्रपायन व्यास के पुत्र जो पुराणों के भारी वक्ता और ज्ञानी थे ।

विशेष—इन्होंने राजा परीक्षित को उनके मरने के पहले मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था । कहा जाता है, वही उपदेश भागवत पुराण है ।

शुकद्रुम—सज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष ।

शुकनलिका न्याय—सज्ञा पुं० [सं०] तोता जिन प्रकार फँसाने की नली (नलनी) में लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की रीति ।

विशेष—सूर, तुलसी आदि हिंदी के कवियों ने भी 'नलनी के सुअटा' पद का व्यवहार किया है ।

शुकनामा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुकजिह्वा या सूआठोठी नामक पौधा ।

शुकनाशन—सज्ञा पुं० [सं०] चकवँड । चक्रमर्द ।

शुकनास^१—सज्ञा पुं० [सं०] १. कपिकच्छु । केवाँच । काँछ । २. शुकजिह्वा । सूआठोठी । ३. गमारी । ४. नलिका । ५. श्योनाक वृक्ष । छोकर । ६. सोनापाठा । ७. अगस्त का पेड़ । ८. वास्तुशास्त्र के अनुसार गृह की सजावट (को०) । ९. कादंबरी में वर्णित तारापीड का एक अमृत्य (को०) ।

शुकनास^२—वि० जिसकी नाक सुग्गे के समान झुकी हुई हो [को०] ।

शुकनासा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शुकनास^१ ।

शुकनासिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुक की तरह झुकी हुई नासिका [को०] ।

शुकपुच्छ—सज्ञा पुं० [सं०] गधक ।

शुकपुच्छक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की गठिवन । धुनेर ।

शुकपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] १. धुनेर । २. सिरिस का पेड़ । ३. गधक । ४. अगस्त का पेड़ ।

शुकपोत्र—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विपरहित वा अहानिकर मर्प [को०] ।

शुकप्रिय—सज्ञा पुं० [सं०] १. सिरिस का पेड़ । २. कमरस ।

शुकप्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीम । २. जामुन ।

शुकफल—सज्ञा पुं० [सं०] १. आक । मदार । २. सेमर ।

शुकवर्ह—सज्ञा पुं० [सं०] गठिवन ।

शुकरान—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल कड़ए होते हैं ।

शुकराना—सज्ञा पुं० [अ० शुक्र] १. शुक्रिया । व्रतज्ञता । २. वह धन जो कार्य हो जाने के पश्चात् धन्यवाद के रूप में किसी को दिया जाय । जैसे,—वकीलों का शुकराना, जमींदारों का शुकराना इत्यादि ।

शुकलोचन—वि० [सं० शुक (= तोता) + लोचन (= चमन)] तोताचम । तोते के समान आँख फेर लेनेवाला । धेगुरीवत । (व्यंग्य में) । उ०—ए निर्दयी क्या तुझे दया का नाम भी भूल गया जो ऐसे शुकलोचन से पाला डाला ।—प्रेमधन०, भा० २, पृ० १५ ।

शुकवल्लभ—सज्ञा पुं० [सं०] अनार । दाडिम ।

शुकवाक्—वि० [सं० शुकवाच्] जिनकी बोली सुग्गे की तरह मोठी हो [को०] ।

शुकवाह, शुकवाहन—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव, जिसका वाहन शुक या तोता माना गया है ।

शुकशालक—सज्ञा पुं० [सं०] वकायन ।

शुकशिवा, शुकशिबी—सज्ञा स्त्री० [सं० शुकशिम्व, शुकशिम्वि] कपिकच्छु । किवाँच ।

शुकशीर्षा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. धुनेर । स्थीरोपक । २. तानीस । तेजपत्ता ।

शुकसप्तति—सज्ञा स्त्री० [सं०] इस नाम की एक पुस्तिका जिसमें शुक ने ७० कहानियाँ कही हैं ।

शुकाख्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुकजिह्वा नामक पौधा ।

शुकादान—सज्ञा पुं० [सं०] अनार ।

शुकानता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुकाख्या नामक पौधा ।

शुकायन—सज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्ध । २. अर्हत ।

शुकाह्न, शुकाह्नय—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोया ।

शुकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. मादा तोता । सुग्गी । २. कश्यप की पत्नी का नाम ।

शुकेष्ट—सज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष । सिरिस ।

शुकोदर—सज्ञा पुं० [सं०] तालीश वृक्ष ।

शुकोह—सज्ञा स्त्री० [फा०] रोबदार । जान शीरत ।

यौ०—शुकोहे अलकाज = शब्दाडवर । उत्कलिका ।

शुक्त^१—वि० [सं०] १. सड़ाकर खट्टा किया हुआ । खमीर उठाया हुआ । २. खट्टा । अम्ल । ३. रुखा । कठोर । ४. अप्रिय । नापसंद । ५. निर्जन । सुनमान । उजाड़ । ६. श्लिष्ट । मिला हुआ । ७. पूत । शुद्ध । स्वच्छ । नाफ (को०) ।

शुक्त^२—सज्ञा पुं० १. अम्लता । खटाई । २. वमिष्ठ के एक पुत्र का नाम । ३. मटाकर खट्टी की हुई कोई वस्तु । ४. कांजी । ५. सिरका । ६. चुक । ७. मान । ८. उठोर वचन ।

शुक्तरु—सज्ञा पुं० [सं०] खट्टी टकार [को०] ।

शुक्तपाक—सज्ञा पुं० [सं०] आमाशय या पक्वाशय का खट्टापन [को०] ।

शुक्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. चुन्नी का पौधा । चुन्नी । २. कांजी ।

शुक्ताम्ल—सज्ञा पुं० [सं०] चुन्नी का शर्करा । चुक का नाम ।

शुक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीप । नीवी । २. नाल की नीवी । मुनुही । ३. शव । ४. दो कर्प या चार तोंग की एक तीन । ५. वेर । ६. नखी नामक गधद्रव्य । ७. अर्त । प्रधागोर । ८. म्रिय का एक रोग जिसमें मस्तिष्क के ऊपर नाप को एक बिंदी की

निरुप आती है। ९ कनान जो कानी या कापालिको के हाथ में रहता है। १०. हड्डों। ११ घोड़े का गर्दन अथवा छाती को एक भाँगी। १२ छोटा सख। शरनख (को०)।

यो०—शुक्तिकर्ण=जिनके कान सीपी के समान हो। शुक्ति मूलति=पूर्णतः सत्वाट। पूरी तरह गजा। शुक्तिचूर्णक। शुक्तिपरी=८० शुक्तिपुट। शुक्तिवीज। शुक्तिवधू।

शुक्तिरु—सङ्गा पु० [सं०] १ एक प्रकार का नेत्ररोग। २ गवक।

शुक्तिका—सङ्गा स्त्री० [सं०] १. सीप। सीपी। २. चुक्रिका शाक। चुक्र नाम का साग। ३. आँख का शुक्ति नामक रोग।

शुक्तिचूर्णक—सङ्गा पु० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का घटिया किस्म का रत्न जो देखने में सीपी की खोल जैसा होता है।

शुक्तिज—सङ्गा पु० [सं०] सुवता। मोती।

शुक्तिपत्र, शुक्तिपर्ण—सङ्गा पु० [सं०] छतिवन। मत्तपर्ण वृक्ष।

शुक्तिपुट—सङ्गा पु० [सं०] सीपी का खोल (को०)।

शुक्तिवीज, शुक्तिमणि—सङ्गा पु० [सं०] मोती।

शुक्तिमती—सङ्गा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ चेदि की राजधानी।

शुक्तिमान्—सङ्गा पु० [सं० शुक्तिमत्] एक पर्वत जो आठ कुलपर्वतों में से है।

शुक्तिवधू—सङ्गा स्त्री० [सं०] सीप। सीपी।

शुक्तिरपर्ण—सङ्गा पु० [सं०] मोती पर पड़ा हुआ मटमैला घव्वा (को०)।

शुक्ल्यगी—सङ्गा पु० [सं० शुक्ल्यगिन्] सभाषू। सिद्धवार। मेठडी।

शुक्ल्युदभव—सङ्गा पु० [सं०] मोती (को०)।

शुक्र—वि० [सं०] १ देवीप्रमान। चमकीला। २ स्वच्छ। उज्ज्वल।

शुक्र^२—सङ्गा पु० १. अग्नि। २ एक बहुत चमकीला गड़ या तारा जो पुराणानुसार देवता का गुरु कहा गया है।

विशेष—प्राधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार इसका व्यास ७०० मील है। यह पृथ्वी से सबसे अधिक निकट है, एक करोड़ कोम से कुछ ही अधिक दूर है। सूर्य से इसकी दूरी तीन करोड़ पैंतीस लाख कोम है। इसका घूर्णन-काल २२५ दिनों का है अर्थात् इसका एक दिन रात हमारे २२५ दिनों के बराबर होता है। सूर्य के समान यह ग्रह भी प्रचलन युक्ति के पीछे पश्चिम में निकलता है और पूर्व की ओर बढ़ता हुआ लघु युक्ति के समय लुप्त हो जाता है। इसमें वायु और जल दोनों का होना अनुमान किया गया है। इसका पृष्ठ बादलों से ढका रहता है। फलित ज्योतिष में इसका वर्ण जल के समान प्रामाण्य कहा गया है और यह वायु का स्वामी, जनभूमिचारी और स्निग्ध रचिवाला माना गया है।

पुराणों में शुक्र दैत्यों के गुरु और भृगु के पुत्र बड़े हुए हैं। ऐसी वधा है कि दैत्यराज वालि जब बामन की पृथ्वी दान करने लगे,

तब वे उन्हें रोकने के विचार से उस जलपात्र की टोटी में जा बैठे जिसमें सकल करने का जल था। उस समय सीक से गोदने पर इनकी एक आँख फूट गई। इसी कारण काने आदमी को लोग हँसों में शुक्राचार्य कह दिया करते हैं। विशेष दे० 'शुक्राचार्य'।

पर्या०—दैत्यगुरु। काव्य। उशना। भार्गव। कवि। सित। भृगु। षोडशाचि। श्वेतरथ।

३. ज्येष्ठ मास, जेठ (यह कुवेर का भडारी कहा गया है)।

४. स्वच्छ और शुद्ध साम। ५. चित्रक वृक्ष। चीता। ६.

सार। रस। सत। ७. नर जीवों के शरीर का वह धातु जिसमें

माता के अंड की गर्भित करनेवाले घटक या अणु रहते हैं।

वीर्य। मनी। ८ बल। सामर्थ्य। पोषण। शक्ति। ९. सप्ताह

का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले

पड़ता है। १०. आँख की पुतली का एक रोग। फूला। फुली।

११. एरंड वृक्ष। अंडी का पेड़। रेंड। १२. स्वर्ण। साना।

१३. धन। दौलत। सक्ति। १४. जल (को०)। १५. चमकीला-

पन (को०)। १६. गायत्री मंत्र में आनेवाली प्रथम तीन (भू.

भुव स्व) व्याहृतियाँ (को०)। १७. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम

(को०)। १८. तीसरे मनु के एक पुत्र का नाम (को०)। १९.

सत्कार्य। सत्कर्म (को०)।

शुक्र^३—सङ्गा पु० [अ०] धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश। जैसे,—खुदा का शुक्र है।

शुक्रकर^१—सङ्गा पु० [सं०] मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है।

शुक्रकर^२—वि० वीर्य को बढ़ानेवाला (को०)।

शुक्रकृच्छ्र—सङ्गा पु० [सं०] मूत्रकृच्छ्र रोग। सूबाक।

शुक्रगुजार—वि० [अ० शुक्र + फा० गुजार] एहसान माननेवाला। धन्यवाद देनेवाला। आभारी। कृतज्ञ।

शुक्रगुजार^२—सङ्गा स्त्री० [अ०] एहसानमंदी। किए हुए उपकार का मानना। कृतज्ञता।

शुक्रज—सङ्गा पु० [सं०] १ पुत्र। बेटा। २ देवताओं का एक भेद (जैन)।

शुक्रद—सङ्गा पु० [सं०] गेहूँ। गोधूम।

शुक्रदोष—सङ्गा पु० [सं०] बलीवर्त। नपुंसकता।

शुक्रपुष्प—सङ्गा पु० [सं०] १. कटमर्या। २. सफेद अपराजिता।

शुक्रप्रमेह—सङ्गा पु० [सं०] वातुक्षीणता। घातु का गिरना जो एक

रोग है।

शुक्रभुज्—सङ्गा पु० [सं०] मयूर। मोर।

शुक्रभू—सङ्गा पु० [सं०] मज्जा।

शुक्रमाता—सङ्गा स्त्री० [सं०] बभनेटी। भारणी।

शुक्रमेह—सङ्गा पु० [सं०] दे० 'शुक्रप्रमेह'।

शुक्रल—वि० [सं०] २. जिसमें शुक्र या वीर्य हो। २ वीर्य उत्पन्न करनेवाला।

शुक्रला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] उटगन के बीज । उच्चटा । ओकडा ।

शुक्रवर्ण—वि० [सं०] उज्ज्वल । चमकीला । दीप्तियुक्त (को०) ।

शुक्रवार, शुक्रवासर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सप्ताह का छठा दिन जो जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार के पहले पड़ता है ।

शुक्रशिष्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दैत्य । असुर ।

शुक्रस्तम्भ—सञ्ज्ञा पु० [सं० शुक्रस्तम्भ] ध्वजभग या नपुसकता का एक भेद जो बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है ।

शुक्राग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शुक्राङ्ग] मयूर । मोर ।

शुक्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वसलोचन ।

शुक्राचार्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु और महर्षि भृगु के पुत्र थे ।

विशेष—इनकी कन्या का नाम देवयानी था और पुत्रों का नाम पड तथा अमर्क था । देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच ने इनसे सजीवनी विद्या सीखी थी । दे० । 'शुक्र' ।

शुक्राना—सञ्ज्ञा पु० [फा० शुक्राना] दे० 'शुक्राना' ।

शुक्राश्मरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अश्मरी रोग का एक भेद । वह पथरी जो वीर्य को स्थलित होते समय रोकने से उत्पन्न होती है ।

शुक्रिय—वि० [सं०] १. शुक्र सबवी । शुक्र का । २. शुक्र को बढ़ानेवाला । शुक्रल । ३. जिसमें शुद्ध रस हो ।

शुक्रिया—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शुक्रिय] घन्यवाद । कृतज्ञता प्रकाश ।

क्रि० प्र०—अदा करना ।

शुक्ल^१—वि० [सं०] १. सफेद । उज्जला । धवल । श्वेत । स्वच्छ । २. निष्कलक । वेदाग (को०) । ३. सात्विक (को०) । ४. यशस्कर (को०) । ५. तेजोमय । प्रकाशदीप्त (को०) ।

शुक्ल^२—सञ्ज्ञा पु० १. ब्राह्मणों की एक पदवी । २. शुक्ल पक्ष । ३. सफेद रेंड का वृक्ष । ४. आँखों का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद मल या डेने पर होता है । ५. कुद नामक पुष्पवृक्ष । ६. सफेद लोव । ७. नवनीत । मक्खन । ८. चाँदी । रजत । ९. धव वृक्ष । घौ । १०. एक योग । ११. विष्णु का एक नाम । १२. श्वेत रंग (को०) । १३. शिव (को०) । १४. कपिल मुनि का नाम (को०) । १५. खट्टी काजी । १६. उज्ज्वलता (को०) । १७. सफेद घट्टा (को०) । १८. वैशाख मास (को०) । १९. एक सवत्सर (को०) । २०. बलभद्र । बलगम (को०) ।

शुक्लकण्ठ, शुक्लकण्ठक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुक्लकण्ठ, शुक्लकण्ठक] मुर्गा । जलकाक ।

शुक्लकंद—सञ्ज्ञा पु० [सं० शुक्लकन्द] १. भैंसाकद । २. शंखालू । ३. अतीस ।

शुक्लकदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शुक्लकदा] १. सफेद अतीस । २. विदारि कंद ।

शुक्लक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शुक्ल पक्ष । २. श्वेत वर्ण (को०) । ३. खिरनी का वृक्ष ।

सं० शं० ६-५४

शुक्लकर्कट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] सफेद रंग का बेंकड़ा ।

शुक्लकर्मा—वि० [सं० शुक्लकर्मन] सात्विक कर्मोंवाला । सुकर्मा (को०) ।

शुक्लकुष्ठ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह कोढ़ जिसमें शरीर पर सफेद चकत्ते पड़ जाते हैं ।

शुक्लक्षीरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] लाली ।

शुक्लक्षेत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पवित्र स्थान । तीर्थस्थान ।

शुक्लक्षीरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. लाली । २. वह जो श्वेत दुग्ध-युक्त हो (को०) ।

शुक्लजीव—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वज्री नामक पौधा (को०) ।

शुक्लता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल का भाव या धर्म । २. सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लतीर्थ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसे विष्णु-तीर्थ भी कहते हैं ।

शुक्लत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. शुक्ल का भाव या धर्म । शुक्लता । २. सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लदुग्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मिघाडा ।

शुक्लदेह—वि० [सं०] १. शुद्ध शरीरवाला । २. शरीर की तरह जिसका मन भी शुद्ध हो (को०) ।

शुक्लधातु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] खरिया नाम की मिट्टी ।

शुक्लध्यान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] योग । उ०—जैन शास्त्रों में शुक्ल ध्यान या योग के भी चार भेद हैं ।—हिंदु० सम्प्रदाय, पृ० २३४ ।

शुक्ल पक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष, जिसमें चंद्रमा की कला प्रतिदिन बढ़ती जाती है जिससे रात उजेली होती है । चांद्रमास में कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष ।

शुक्लपुष्प—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. क्षत्रक वृक्ष । २. कुद नामक फूल का पौधा । ३. मरुगा । सफेद तालमखाना । ५. पिंडार । ६. मैनफल ।

शुक्लपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथीगुडी नामक जलप । २. जीत-कु भी । जीतली लता । ३. कुद ।

शुक्लपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागदती । २. कुद नामक फूल का पौधा ।

शुक्लपृष्ठक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] मेउडो । मंभालू । मिधुप्रार ।

शुक्लफल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मदार । आरु ।

शुक्लफला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. शमी । छींकुर । २. अर्क । मदार ।

शुक्लफेन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] समुद्रफेन ।

शुक्लवल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार एक जिन देव का नाम

शुक्लम

[सं० शुक्लमञ्जरी] सफेद निगुं डी ।

शुक्ल

[सं० शुक्लमण्डल] आँखों का सफेद भाग जो ता है ।

शुक्लमेह—सज्ञा पुं० [सं०] नरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग ।

शुक्ल रोहित—सज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत रोहितक का वृक्ष । २ श्वेत रोहित या रोह नाम की मछली [को०] ।

शुक्लल—वि० [सं०] श्वेत । शुभ्र [को०] ।

शुक्लला—सज्ञा स्त्री० [सं०] उच्चटा । शुक्ला [को०] ।

शुक्लवर्ग—सज्ञा पुं० [सं०] उच्चटा वस्तुओं का समूह । वैद्यक में श्वेत वस्तुओं का वर्ग । जैसे, शङ्ख, शुक्ति, कौडी आदि [को०] ।

शुक्लवस्त्र—वि० [मं०] स्वच्छ वस्त्रधारी । श्वेत वस्त्रवाला [को०] ।

शुक्लवायस—सज्ञा पुं० [सं०] वक । वगुला ।

शुक्लवृक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] धौ या धव का वृक्ष ।

शुक्लवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवनयापन की शुद्ध पद्धति या विद्या । २ वह वृत्ति या आजीविका जो ब्राह्मण को ब्राह्मण द्वारा प्राप्त हो [को०] ।

शुक्लशाल—सज्ञा पुं० [मं०] १ गिरिनिव । २ सफेद शाल का वृक्ष ।

शुक्लाग—सज्ञा पुं० [सं०] शुक्लाङ्ग । चोवचीनी ।

शुक्लागा—सज्ञा स्त्री० [मं०] शुक्लाङ्गा । निर्गुंडी । शेफालिका ।

शुक्लागी—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्लाङ्गी । निर्गुंडी । शेफालिका ।

शुक्ला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती । २ शर्करा । शक्कर । चीनी ।

३ काकोली । ४ विदारी । ५ शूकरफंद । ६ श्वेत वर्ण की या श्वेत मुखरागवाली स्त्री [को०] । ७ निर्गुंडी । शेफालिका ।

शुक्लाक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी ।

शुक्लाचार—वि० [सं०] जिसका आचार व्यवहार शुद्ध हो [को०] ।

शुक्लापाग—सज्ञा पुं० [मं०] शुक्लापाङ्ग । मयूर पक्षी । मोर ।

शुक्लाम्ल—सज्ञा पुं० [सं०] चूका या चुक्रिका नामक साग ।

शुक्लायन—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शुक्लार्क—सज्ञा पुं० [मं०] सफेद मदार ।

शुक्लार्म—सज्ञा पुं० [सं०] शुक्लार्मन् आँखों का एक प्रकार का रोग ।

विशेष—इसमें आँखों के सफेद भाग में एक प्रकार का सफेद मस्सा हो जाता है जो धीरे धीरे बढ़ता रहता है ।

शुक्लाहिफेन—सज्ञा पुं० [सं०] पोस्ते का पेड़ ।

शुक्लोदन—सज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम ।

शुक्लोपला—सज्ञा स्त्री० [मं०] चीनी । शर्करा ।

शुक्लौदन—सज्ञा पुं० [सं०] अरवा चावल । भुजिया का उलटा ।

शुक्षि—सज्ञा पुं० [सं०] १ वायु । हवा । २ तेज । ३ अग्नि [को०] । ४ चित्र । तसवीर ।

शुगुन—सज्ञा पुं० [फ्रा०] शकुन । सगुन [को०] ।

शुचा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोक । दुःख । रज । २ दे० 'शुचि' ।

शुचि—सज्ञा पुं० [मं०] १ अग्नि । आग । २ चित्रक या चोता नामक वृक्ष । ३ गोम ऋतु । गरमी । ४ ज्येष्ठ मास । ५ आपाद

मास । ६ चंद्रमा । ७ शुक्र । ८ ब्राह्मण । ९ श्वेत वर्ण । सुफेद रंग [को०] । १०. शुद्ध बुद्धिवाला मंत्री या सलाहकार [को०] । ११ सूर्य की ऊष्मा । सौराग्नि [को०] । १२. भागवत के अनुसार अश्वक के एक पुत्र का नाम । १३ कानिकेय । १४ शृंगार रस जिसका वर्ण श्वेत कहा गया है [को०] । १५ अर्क का वृक्ष । मदार [को०] । १६ निष्कपट मित्र या सखा [को०] । १७. अन्नप्राशन के समय होनेवाला हवन [को०] । १८ वह जो सद्वृत्तिवाला हो । सदाचारी व्यक्ति [को०] । १९ आकाश । व्योम । नभ [को०] ।

शुचि—सज्ञा स्त्री० १ पवित्रता । सफाई । स्वच्छता । शुद्धता । २ पुराणानुसार कश्यप की पत्नी ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या का नाम ।

शुचि—वि० १ शुद्ध । पवित्र । २ स्वच्छ । माफ । ३ निरपराध । निर्दोष । ४ दीप्तिमान् । चमकीला [को०] । ५ उज्ज्वल । धवल [को०] । ६. जिसका अतःकरण शुद्ध हो । स्वच्छ हृदयवाला ।

शुचिकर्मा—वि० [सं०] शुचिकर्मन् पवित्र कार्य करनेवाला । सदाचारी । कर्मनिष्ठ ।

शुचिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम ।

शुचिकापुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] केवडा । केतकी ।

शुचित—वि० [सं०] विपणन । सतत । दुःखित । अवसन्न [को०] ।

शुचितम—वि० [मं०] अतिशय पवित्र । उ०—बिस्तर चुको थी अवर तल में, मोरम की शुचितम सुल धूल ।—भरना, पृ० १४ ।

शुचिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुचि का भाव या धर्म । उ०—मैं शुचिता सरल समृद्धि ।—अपरा, पृ० ७० ।

शुचिद्रुम—सज्ञा पुं० [सं०] पीपल । अश्वत्थ वृक्ष ।

शुचिप्रणी—सज्ञा पुं० [सं०] आचमन ।

शुचिमणि—सज्ञा स्त्री० [मं०] १ स्फटिक मणि । २. शिरोमणि । वह मणि जो सिर पर धारण की जाय [को०] ।

शुचिमल्लिका—सज्ञा स्त्री० [मं०] नेवारी । नवमल्लिका ।

शुचिरोचि—सज्ञा पुं० [सं०] शुचिरोचिन् चंद्रमा ।

शुचिवाच्—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शुचिवृक्ष—सज्ञा पुं० [मं०] एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम ।

शुचिन्नत—वि० [सं०] जिसका सकल या कार्य शुद्ध हो । पुण्यात्मा [को०] ।

शुचिश्रवा—सज्ञा पुं० [सं०] शुचिश्रवम् विष्णु का एक नाम ।

शुचिष्मान्—वि० [सं०] शुचिष्मत् चमकीला । श्रुतिमान् ।

शुचिष्मान्—सज्ञा पुं० अग्नि [को०] ।

शुचिस्—सज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश । ज्योति । दीप्ति [को०] ।

शुचिस्मित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुचिस्मिता] जिसकी हँसी प्रसन्न और निश्चल हो [को०] ।

शुची—वि० [स० शुचिन्] १. शुद्ध । पवित्र । २. स्वच्छ । साफ ।

शुचीरता—सञ्ज्ञा स्त्री०, पुं० [स०] वीर्य ।

शुचीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वीर्य । शुक्र ।

शुजा—वि० [अ० शुजाअ] बहादुर । शूरवीर । दिलेर ।

शुजाअत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] वीरता । बहादुरी । शूरता । दिलेरी ।

शुजात—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शुजाअत] दे० 'शुजाअत' । उ०—देखे माँ जिनो की है मरियम शुजात । ओ वीवियाँ मे वीवी अहै पाकजात ।—दक्खिनी०, पृ० ३५० ।

शुटीर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वीर व्यक्ति । योद्धा [को०] ।

शुटीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शुक्र । वीर्य ।

शुठि—अव्य० [हि०] दे० 'सुठि' । उ०—पहप वाटिका प्रेम सोहावन । वह शोभा सुंदर शुठि पावन ।—कबीर सा०, पृ० ३६८ ।

शुतर—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शुतर] दे० 'शुतुर' । उ०—था उसके ऊपर लिवास मोटा, वालों से शुतर के ऐ ।—दक्खिनी, पृ० २२८ ।

शुतरी—वि० [फा०] ऊँट का सा या भूरा । उ०—आज शाल के बदले वह शुतरी रंग का ओवरकोट पहने थी ।—पिजरे०, पृ० १४ ।

शुतुद्रि, शुतुद्रु—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु नदी । सतलज ।

शुतुर—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] ऊँट [को०] ।

यौ०—शुतुरगाव । शुतुरदिल = डरपोक । बुजदिल । शुतुरनाल = एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर लादी जाती थी । शुतुरमुर्ग । शुतुर सवार = साडनी सवार । ऊँटनी का सवार ।

शुतुरगाव—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] जिराफा नामक जंतु । विशेष दे० 'जिराफा' ।

शुतुरमुर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] अमेरिका, अफ्रिका और अरब के रेगिस्तान में होनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी ।

विशेष—यह प्रायः तीन गज तक ऊँचा होता है । इसको गरदन ऊट की तरह बहुत लंबी होती है । यह उड़ तो नहीं सकता, पर रेगिस्तान में घोड़े से भी अधिक तेज दौड़ सकता है । यह घास और अनाज खाता है । कभी कभी कंकड़ पत्थर भी खा जाता है । इसके पर बहुत दाम पर बिकते हैं । यह एक बार में तीस से कम अंडे नहीं देता ।

शुतुर्मुर्ग—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शुतुरमुर्ग] दे० 'शुतुरमुर्ग' ।

शुद'—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'सुदी' ।

शुद'—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि०] सुध या सुधि दे० 'सुध' । उ०—अबस जग के धधे में तू शुद गँवाया । नहीं काम आएगा अपना पराया ।—दक्खिनी०, पृ० २५४ ।

शुदनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] वह वात जिसका होना पहले से ही किसी देवी शक्ति से निश्चित हो । भावी । होनहार । नियति ।

शुदा—वि० [फा०] जो हो चुका हो । जैसे, शादीशुदा । (शब्दात् मे प्रयुक्त) ।

शुद्ध'—वि० [स०] १. जिसमें किसी प्रकार की मेल या खोट आदि न हो । पवित्र । साफ । स्वच्छ ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग प्रायः यौगिक बनाने में शब्दों के आरंभ में होता है । जैसे,—शुद्धबुद्धि, शुद्धमति ।

२. सफेद । उज्ज्वल । ३. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो । जा गलत न हो । ठीक । सही । ४. दोषरहित । निर्दोष । बेऐत्र । ५. जिसमें किसी तरह की मिलावट न हो । खालिस । ६. निष्कल । वेदांग (को०) । ७. ईमानदार (को०) । ८. चुकया हुआ ऋण (को०) । ९. केवल । मात्र । १०. अद्वितीय (को०) । ११. अधिकृत (को०) । १२. अनुनासिक (को०) । १३. संपूर्ण । निरा । पूरा (को०) । १४. भोलाभाला । सीधा सादा (को०) । १५. जाँचा हुआ । परीक्षित (को०) । तादृश । तेज किया हुआ (को०) ।

शुद्ध'—सञ्ज्ञा पुं० १. सेंधा नमक । काली मिर्च । ३. चाँदी । रूपा । ४. गुडा नाम की घास । ५. सगोत में राग के तीन भेदों में से एक भेद । वह राग जिसमें और किसी राग का मेल न हो । जैसे,—भैरव, मेघ । ६. शिव का एक नाम । ७. चौदहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक । ८. शुद्ध वस्तु (को०) । ९. शुक्ल पद्म । सुदा (को०) । १०. वह मकान जो किसी एक ही वस्तु से निर्मित हो और जिसमें नाममात्र के लिये लकड़ी, ईंट, प्रस्तर का उपयोग किया हो (को०) ।

शुद्धकर्मा—वि० [स० शुद्धकर्मन्] जिसके कर्म शुद्ध हो । पवित्र आचार, विचार, व्यवहारवाला [को०] ।

शुद्धकोटि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह त्रिभुज जिसके कोण सम हो । सम-कोण त्रिभुज [को०] ।

शुद्धचैतन्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शुद्ध आत्मा या चेतना [को०] ।

शुद्धजघ—सञ्ज्ञा पुं० [स० शुद्धजङ्घ] गर्दभ । गदहा ।

शुद्धजड़—सञ्ज्ञा पुं० [स० शुद्धजड] चौपाया । चतुष्पद [को०] ।

शुद्धता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. शुद्ध होने का भाव या धर्म । पवित्रता । २. निर्दोषता ।

शुद्धत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शुद्ध होने का भाव या धर्म । शुद्धता । पवित्रता ।

शुद्धदंत'—वि० [स० शुद्धदन्त] श्वेत हाथीदाँत का बना हुआ । शुद्ध हाथीदाँत का । २. दे० 'शुद्धरत्न' [को०] ।

शुद्धदत्त'—वि० [स०] जिसके दाँत श्वेत हो [को०] ।

शुद्धधी—वि० [स०] पवित्र विचारोवाला । सच्चा । ईमानदार [को०] ।

शुद्धनिसाणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शुद्ध + हि० निसाणी] एक प्रकार का डिगल छद्म जिसमें पहले तेरह मात्राएँ और फिर दस मात्राएँ इस प्रकार २३ मात्राएँ प्रत्येक पद में हाती हैं और तुकात में दो गुरु होते हैं । उ०—कल तेरह फिर दशकला, दे माहरे गुरु दोय । कली एक ते बीस कल, शुद्ध निसाणा साय ।—रघु० ६०, पृ० २६६ ।

शुद्धनेरि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य [को०] ।

शुद्धपक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अभावस्था के उभरात की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष । शुक्ल पक्ष ।

शुद्धपुरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत के एक पवित्र तीर्थ का नाम ।
 शुद्धप्रतिभास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि [को०] ।

शुद्धबटुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दुर्भुजोपादक [को०] ।

शुद्धबुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुद्धबो' ।

शुद्धबोध—वि० [सं०] (वेदान्त) विशुद्ध ज्ञान से युक्त [को०] ।

शुद्धभाव—वि० [सं०] पवित्र विचारोवाला [को०] ।

शुद्धमति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुद्धबो' [को०] ।

शुद्धमास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार वह पकाया हुआ मास जिसके साथ में हड्डी आदि न लगें हो ।

शुद्धमुख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भली भाँति सिखाया हुआ घोड़ा [को०] ।

शुद्धवश्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुद्धवश्या] शुद्धवश में उत्पन्न होनेवाला । पवित्र कुल का [को०] ।

शुद्धवल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गिलोय । गुडूच ।

शुद्धवासा—वि० [सं० शुद्धवासस] स्वच्छ वस्त्राभूषणादि धारण करनेवाला [को०] ।

शुद्धविष्कम्भक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धविष्कम्भक] विष्कम्भक का एक भेद जिसमें केवल संस्कृत बोलनेवाले पात्र ही हो [को०] ।

शुद्धव्यूह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सेना का वह व्यूह जिसमें उरस्य में हाथी, मध्य में तेज घोड़ा और पक्ष में चाल (मतवाले हाथी) हो ।

शुद्धशुक्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आँख की पुतली में होनेवाला एक दोष [को०] ।

शुद्धहार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह हार जिसमें एक शीर्षक मोती का हो ।

शुद्धात—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धान्त] १ अत पुर । रनिवास । जनानखाना । २ राजमहिषी । रानी [को०] ।

यौ०—शुद्धातचर, शुद्धातचारी, शुद्धातरक्षक = दे० 'शुद्धातपालक' ।

शुद्धातपालक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धान्तपालक] वह जो अत.पुर के द्वार पर पहरा देता हो । गृहदीवारिक ।

शुद्धाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शुद्धान्ता] रानी । राज्ञी ।

शुद्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] इन्द्रजव । कुटज बीज ।

शुद्धाचार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उत्तम व्यवहार । उ०—रखती थी प्रेमार्द्र सभी को वह अपने व्यवहारों से । पशु पक्षी भी सुख पाते थे उसके शुद्धाचारों से ।—शकु० (आमुक्) ।

शुद्धात्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धात्मन्] १ शिव का एक नाम । २ वह जिसका हृदय पवित्र हो [को०] । ३ निखालिस या बिना मिली हुई शराव [को०] ।

शुद्धानुमान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अनुमान का एक भेद । केवलान्वयी । विशेष दे० 'अनुमान' ।

शुद्धापह्लुति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्रकृत अर्थात् उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान

की मत्तता स्थापित की जाती है । अपह्लुति । उ०—शुद्धा-पह्लुति झूठ लट्टि, माँची दान दुराहि । नैन नहीं ये मीन युग, छवि सागर के आहि ।—मानु (शब्द०) ।

शुद्धाभ—वि० [सं०] पवित्र आभा में युक्त [को०] ।

शुद्धाशय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुद्धाशया] जिसके विचार शुद्ध हो । जिसका हृदय पवित्र है [को०] ।

शुद्धाशुद्धीय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम ।

शुद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध होने का कार्य । २ सफाई । स्वच्छता । ३ वैदिक धर्म के अनुसार वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुच व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है । जैसे—अज्ञात की समाप्ति पर शुद्ध होने के समय का कृत्य या किसी धर्मग्रन्थ व्यक्ति के शुद्ध होकर पुन अपने धर्म में आने के समय होनेवाला कृत्य या संस्कार । ४ दुर्गा का एक नाम । ५ दीप्ति । चमक । कांति [को०] । ६ पवित्रता । पुरयशीलता [को०] । ७ ऋण आदि का परिशोधन [को०] । ८ प्रतिहिंसा । प्रतिशोध [को०] । ९ चुटका [को०] । १० सचाई । यथार्थता [को०] । ११ समाधान । सशोधन [को०] । १२ व्यवकलन [को०] ।

शुद्धिकद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धिकन्द] लहसुन ।

शुद्धिकर—वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला । पवित्र करनेवाला [को०] ।

शुद्धिकरण—वि० [सं० शुद्धि + करण] शुद्ध या पवित्र करनेवाला । उ०—पापों के शुद्धिकरण चारु, चरण धोए ।—वेला, पृ० ४५ ।

शुद्धिकृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रजक । घोड़ी [को०] ।

शुद्धिपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यवस्थापत्र जो प्रायश्चित्त के पीछे शुद्धि के प्रमाण में पढ़िने की ओर से दिया जाता था । (शुक्नोति) २ वह पत्र जिसमें छपने के समय पुस्तक में रही हुई अशुद्धियाँ बतलाई गई हो । वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है ।

शुद्धिवोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शुद्धि (= शुद्ध) + बोध] शुद्धि या पवित्रता का ज्ञान । उ०—शतशुद्धिवोध सूक्ष्मात्तिमूक्षम मन का विवेक ।—अप०, पृ० ४७ ।

शुद्धोद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मधुद्र । सागर ।

शुद्धोदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो भगवान् बुद्धदेव के पिता थे और जिनकी राजधानी कपिलवस्तु में थी ।

विशेष—इस शब्द के साथ पुत्र या उसका वाचक कोई शब्द लगने से 'बुद्धदेव' अर्थ होता है ।

शुद्धोदनि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम ।

शुन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शुनम् (= श्वान) शब्द का समासप्रयुक्त रूप ।

शुन पुच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. अजीर्ण का एक पुत्र जो शुन शेष का भाई था । २ कुत्ते की पूँछ [को०] ।

शुन शेष, शुन.शेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे ।

विशेष—रामायण के अनुसार ये महाराज अंबरीष के यज्ञ में बलि के लिये लाए गए थे। विश्वामित्र ने दयावश इनको अग्नि की स्तुति बतला दी थी। अग्निदेव इनकी स्तुति से इतने प्रसन्न हुए थे कि जब ये यज्ञकुंड में डाले गए, तब उसमें से अद्भुत शरीर बाहर निकल आए। इसके उपरांत ये महर्षि विश्वामित्र के यहाँ उनके पुत्रतुल्य होकर रहने लगे। देवीभागवत आदि कुछ पुराणों में इनके सबंध में कई कथाएँ आई हैं। ऐतरेय ब्राह्मण (हरिश्चंद्रोपाख्यान) के अनुसार ये अजीर्ण के पुत्र थे और हरिश्चंद्र के यज्ञ में वरुणदेव की बलि के लिये लाए गए थे। २ कुत्ते का लिंग [को०]।

शुनःसख—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जिनका उल्लेख महाभारत में है।

शुनःस्कर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुन'—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुत्ता। २. वायु। ३. सुख। आराम।

शुन(७)'—सञ्ज्ञा पु० [स० शून्य] दे० 'शून्य'। उ०—रामा हरिजन अगम गति रामनाम सब टेक। एक माँहि अनेक है एक बिना शुन देक।—राम० धर्म०, पृ० २४१।

शुनक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुत्ता। कुक्कुर। श्वान। २ छोटा श्वान। कुत्ते का वच्चा। पिल्ला (को०)। ३ महाभारत के अनुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शुनकचचुका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शुनकचञ्चुका] चैंच नाम का साग।

शुनकचिल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वधुआ।

शुनकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कुत्ते की मादा। कुतिया [को०]।

शुनहोत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ भरद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा है।

शुनामुख—सञ्ज्ञा पु० [स०] हिमालय के उत्तर ओर के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। अनुमान है कि यह नेपाल के उत्तर का प्रदेश है।

शुनाशीर, शुनासीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ इद्र। २ वायु और सूर्य। ३ इद्र और वायु। ४. उल्लू। कौशिक [को०]।

शुनासीरी—सञ्ज्ञा पु० [स० शुनासीरिन्] इद्र।

शुनासीरीय—वि० [स०] १ इद्र संबंधी। इद्र का। २ वायु देवता के सबंध का। ३. सूर्य देवता के सबंध का।

शुनि—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री शुनी] कुत्ता।

शुनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. कुम्माड़ी। २. कुतिया [को०]।

शुनीर—सञ्ज्ञा पु० [स०] कुतियों का समूह [को०]।

शुनीलागूल—सञ्ज्ञा पु० [स० शुनीलागूल] देवीभागवत के अनुसार शुन शेफ के छोटे भाई का नाम।

शून्य'—वि० [स०] खाली। शून्य। रिक्त [को०]।

शून्य'—सञ्ज्ञा पु० १ कुतियों का दल या समूह। २. दे० 'शून्य' [को०]।

शुबहा—सञ्ज्ञा पु० [अ० शुब्हह] १. सदेह। शक। २. घोखा। वहम। भ्रम।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

शुभकर—वि० [स० शुभङ्कर] १ शुभ या मंगल करनेवाला। मंगलकारक। शुभकारी। २. प्रसन्न करनेवाला [को०]।

शुभकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शुभङ्करी] १ कल्याण करनेवाली, पावता। २ शमा वृक्ष।

शुभंयु—वि० [स०] १ मंगलान्वित। मंगलमय। २. शुभ।

शुभ भावुक—वि० [स० शुभभावावुक] सज्जित। भूषित। द्योतित। अलंकृत [को०]।

शुभ'—वि० [स०] १. अच्छा। भला। उत्तम। सुखप्रद। जैसे—शुभ शकुन, शुभ समाचार, शुभ कार्य। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद। ३ सुंदर। लावण्ययुक्त। लोना (को०)। ४ दीप्तियुक्त चमकीला (को०)। ५ भाग्यवान्। भाग्यशाली। ६ वेदप्रवरण। वेदविद् (को०)। ७ जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

शुभ'—सञ्ज्ञा पु० १ मंगल। कल्याण। भलाई। २ विष्णुभादि सत्ताईस योगों के अंतर्गत एक योग।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस योग में जन्म लेता है, वह सब लोगों का कल्याण करनेवाला, पंडितों का सत्संग करनेवाला और बुद्धिमान् होता है।

३ पट्टमाख। एक सुगंधित लकड़ी। पदमकाठ। ४ चाँदी। ५. वकरा। ६ वह जो अजन्मा हो। सर्वशक्तिमान् (को०)। ७ जल (को०)। ८ एक प्रकार का आभूषण (को०)।

शु'भक—सञ्ज्ञा पु० [स०] सरसों का बीज। सर्षप [को०]।

शु'भकथ—वि० [स०] कल्याणप्रद बातें कहनेवाला। अच्छी बात कहनेवाला।

शुभकर—वि० [स०] शुभ या मंगल करनेवाला।

शुभकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शुभकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शुभ काम। सत्कर्म। २. वह वृत्ति या आचार जो आदरणीय ही। [को०]।

शुभकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० शुभकर्मन्] १ वह जो शुभ कर्म करता हो। २. स्कंद का एक अनुवर [को०]।

शुभकाम—वि० [स०] शुभ या कल्याण की कामना करनेवाला [को०]।

शुभकूट—सञ्ज्ञा पु० [स०] सिंहल द्वीप या लंका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरणचिह्न बने हुए हैं। ईसाई इन्हें हजरत आदम के चरण चिह्न और बौद्ध महात्मा बुद्ध के चरणचिह्न मानते हैं।

शुभकृत्—वि० [स०] शुभकर। मंगल करनेवाला।

शुभकृत्स्न—सञ्ज्ञा पु० [म०] बौद्ध देवताओं का एक वर्ग।

शुभगन्धक—सञ्ज्ञा पु० [स० शुभगन्धक] बोल नामक गंधद्रव्य। गंधवाला।

शुभग—वि० [स०] १. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। २. सुंदर। सौंदर्ययुक्त [को०]।

शुभग—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक शक्ति का नाम [को०]।

शुभग्रह—संज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार वृहस्पति और शुक्र ।

विशेष—ये दोनों ग्रह सौम्य और शुभ माने जाते हैं । इनके अतिरिक्त बुध ग्रह भी, यदि पापयुक्त न हो तो, शुभ माना जाता है । आगे से अधिक चंद्र भी शुभ कहा गया है ।

शुभचित्तक—वि० [सं० शुभचित्तक] शुभ या भला चाहनेवाला । भलाई की इच्छा रखनेवाला । हितैषी । खैरखवाह ।

शुभजानि—वि० [सं०] जिसकी स्त्री सुंदर हो [को०] ।

शुभताति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्याण । मंगल । शुभ [को०] ।

शुभदत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभदत्ता] पुराणानुसार पुण्यदत्त नामक हाथी की हथिनी का नाम ।

शुभदत्ती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके दांत सुंदर हो [को०] ।

शुभद—संज्ञा पु० [सं०] अश्वत्थ वृक्ष । पीपल का पेड़ ।

शुभद^१—वि० शुभप्रद । शुभदायक ।

शुभदर्श, शुभदर्शन—वि० [सं०] १ जिसका मुँह देखने से कोई शुभ या मंगल बात हो । २. सुंदर । खूबसूरत ।

शुभदायी—वि० [सं० शुभदायिन् शुभ या मंगल करनेवाला । शुभप्रद । शुभद ।

शुभदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभ+दृष्टि] १. शुभदर्शन । २. मुँह देखना । मुँह दिखाई । उ०—विवाह के बाद जब दूल्हा वधू के मुख से शुभदृष्टि के अवसर पर पहली बार घूँघट हटाता है ।—जनानी०, पृ० ४३० ।

शुभनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी मास के शुक्ल पक्ष की पचमी, दशमी या पूर्णिमा तिथि ।

शुभपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिवन । शालपर्णी ।

शुभप्रद—वि० [सं०] शुभ या मंगल करनेवाला । शुभद । मंगलकारी ।

शुभफलप्रद—वि० [सं०] सुफल देनेवाला । उ०—मकल शुभफल-प्रद एक विधान, बाघ माँ, तंत्री के से गान ।—गीतिका, पृ० ३५ ।

शुभमंगल—संज्ञा पु० [सं० शुभमङ्गल] सौभाग्य । कल्याण [को०] ।

शुभर^७—संज्ञा पु० [?] गड़वा । उ०—नउसर शुभर दशवै चढिआ ।—प्राण०, पृ० ८० ।

शुभलक्षण—वि० [सं०] जिसके लक्षण शुभ हो । अच्छे लक्षणों से युक्त [को०] ।

शुभलग्न—संज्ञा पु० [सं०] शुभ समय । शुभ मुहूर्त [को०] ।

शुभवक्त्रमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

शुभवार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुभ समाचार [को०] ।

शुभवासन—संज्ञा पु० [सं०] मुख को सुवासित करनेवाली वस्तु [को०] ।

शुभविमलगर्भ—संज्ञा पु० [सं०] बोधिसत्व का नाम ।

शुभव्रत—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो कार्तिक शुक्ला पचमी का किया जाता है ।

शुभशरी—वि० [सं० शुभशमिन्] शुभ करनेवाला । मंगल को सूचित करनेवाला [को०] ।

शुभशैल—संज्ञा पु० [सं०] तन के अनुसार एक कल्पित पर्वत का नाम ।

शुभसूचक—वि० [सं०] २० 'शुभशर्मा' [को०] ।

शुभसूचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्याया की सूचना [को०] ।

शुभसूचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देरी का नाम जिनकी पूजा का सकल किसी शुभ काम के होने की आशा से किया जाता है, और वह शुभ काम हो जाने पर जिनकी पूजा की जाती है । इनकी पूजा प्रायः स्त्रियाँ ही करती हैं ।

शुभसूत्र—संज्ञा पु० [सं०] २० 'मंगलसूत्र' [को०] ।

शुभस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंगल भूमि । पवित्र स्थान । २ यज्ञभूमि ।

शुभस्त्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

शुभाग—वि० [सं० शुभाङ्ग] सुंदर । नलाना । लावण्ययुक्त [को०] ।

शुभागी—संज्ञा स्त्री० [१० शुभाङ्गी] १ कुवेर की पत्नी का नाम । २ कामदेव की पत्नी, रति । ३ महाभारत के अनुसार राजा कुरु की पत्नी का नाम । ४ सुंदरी स्त्री [को०] ।

शुभाजन—संज्ञा पु० [सं० शुभाञ्जन] २० 'शोभाजन' ।

शुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोभा । गति । छवि । २ इच्छा । ३. वशलोचन । ४ गारोचन । ५ शमी । मफेद कीकर । ६ प्रियगु । वनिता । ७ मफेद दूब । ८ वरुणी । ९ अरारोट । १० पुरइत की पत्ता । ११ सोया । १२. सफेद बब । १३ अस्त्ररग । १४ पार्वती की एक सखी का नाम । १५ देवताओं की सभा । १६ प्रकाश । दीप्त [को०] । १७. पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

शुभाकाक्षी—वि० [सं० शुभाकाक्षिन्] शुभ की कामना करनेवाला । हत चाहनेवाला । हतैषी ।

शुभाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमान्वाता ।

शुभाक्ष—संज्ञा पु० [सं०] शिव [को०] ।

शुभागमन—संज्ञा पु० [सं०] सुख या मंगलसूचक आगमन या भवाई ।

शुभाचल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक कल्पित पर्वत का नाम ।

शुभाचार—वि० [सं०] पवित्र आचरणवाला । सदाचारी [को०] ।

शुभाचारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम ।

शुभानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री [को०] ।

शुभातुष्टान—संज्ञा पु० [सं०] मंगल सबंधी कार्य ।

शुभान्वित—वि० [सं०] कल्याणयुक्त । मंगलयुक्त [को०] ।

शुभापाया—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभापाङ्गा] वह स्त्री जिसके नेत्रकोण शुभद हो । सुंदर स्त्री [को०] ।

शुभावह—वि० [सं०] मंगलमय । मंगलजनक [को०] ।

शुभाशसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुभ या भला कहना । २. सहिचार । सुविचार । उ०—प्रापकी शुभाशसा से ही मैंने वह सब लिखा था ।—नदी०, पृ० १०० ।

शुभाशीर्वाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मंगलकारक आशीर्वचन [को०] ।
 शुभाशीष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुभाशीर्वाद' ।
 शुभाशुभ—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ भला और बुरा । २ पवित्र और अपवित्र [को०] ।
 शुभिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्पमाला । पुष्पहार । फूलों का हार [को०] ।
 शुभेक्षण—वि० [सं०] शुभ दृष्टि या नेत्रोंवाला [को०] ।
 शुभेक्षणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री ।
 शुभेतर—वि० [सं०] १ बुरा । खराब । २ अशुभ । अमागलिक [को०] ।
 यौ०—शुभेतरक्षति = अशुभ का दूरीकरण या मागलिकता ।
 शुभैषिणी—वि० [सं०] शुभ चाहनेवाली । उ०—वह रचनात्मक साहित्य को प्रिय सखा, शुभैषिणी सविका और हृदय स्वामिनी कहो जा सकती है ।—नया०, पृ० २७ ।
 शुभोदय—वि० [सं०] भाग्यवाला । सौभाग्यपूर्ण [को०] ।
 शुभोदक—वि० [सं०] जिसका अत आनन्ददायक हो ।
 शुभ्र^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अबरक । २ सांभर नमक । ३. चाँदी । रूपा । ४ कसीस । ५ पद्माक्ष । पद्मकाष्ठ । ६ खम । उशीर । ७ चरवी । ८ रूपामवल्ली । ९ सेंधा नमक । १० बसलोचन । ११ फिटकरी । १२ चीनी । १३ सफेद विवारा । १४ श्वेत वर्ण । श्वेत रंग [को०] । १५ चंदन [को०] । १६ स्वर्ग [को०] ।
 शुभ्र^२—वि० १ श्वेत । सफेद । उ०—शोभजति दतरुचि शुभ्र उर भानिए ।—केशव (शब्द०) । २ चमकता हुआ । चमकीला । देदीप्यमान [को०] ।
 शुभ्रकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा । २ कपूर [को०] ।
 शुभ्रतरु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सिरिस का वृक्ष ।
 शुभ्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शुभ्र का भाव या धर्म । सफेदी । श्वेतता ।
 शुभ्रत्व—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] दे० 'शुभ्रता' [को०] ।
 शुभ्रदंत—वि० [सं० शुभ्रदन्त] [वि० स्त्री० शुभ्रदन्ती] दे० 'शुभ्रदत्' [को०] ।
 शुभ्रदंती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शुभ्रदन्ती] पुराणानुसार पुष्पदंत नामक दिग्गज की हथनी का नाम । दे० 'शुभ्रदती' । २. सार्वभौम दिग्गज की हस्तिनी [को०] ।
 शुभ्रदत्—वि० [मं०] [वि० स्त्री० शुभ्रदती] चमकीले दाँतवाला [को०] ।
 शुभ्रपूर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद पान ।
 शुभ्रपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] खस । उशीर ।
 शुभ्रभानु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।
 शुभ्ररश्मि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।
 शुभ्रवेष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शाल्मली । सेमल ।
 शुभ्राशु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा । २ कपूर ।
 शुभ्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ बसलोचन । २ फिटकरी । ३ गंगा [को०] । ४ स्फटिक [को०] । ५ शर्करा । शिता । चीनी [को०] ।

शुभ्रालु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भैंसा कट । महिष कंद । २ शखालु ।
 शुभ्रि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा । २. सूर्य [को०] ।
 शुभ्रिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गृह से तैयार की हुई चीनी । मधुशर्करा ।
 शुमार—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १. गिनती । गणना । २ तखमीना । अदाज । ३ जोड़ । मोजान । ४ आतक या भय [को०] ।
 यौ०—शुमारकुनिदा = दे० 'शुमारिदा' । शुमारनवीस = हिसाब किताब करनेवाला ।
 शुमारिदा—वि० [फा० शुमारिदह] शुमार करनेवाला । गणना करनेवाला । गणक [को०] ।
 शुमारी—प्रत्य० [फा०] गणना का काम । गिनने की स्थिति या क्रिया । जैसे, मर्दुमशुमारी ।
 शुमाल—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] १. एक जाति । दे० 'सुमाली' । २ उत्तर दिशा । २. वायाँ हाथ [को०] ।
 शुमाली—वि० [फा०] उत्तरी । उत्तर का [को०] ।
 शुरफा—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शरीफ का बहु व०] शरीफ लोग । उ०—शुरफा व रुजला एक है दरबार मे मेरे । कुछ खाम नही फँज तो इक ग्राम है मेरा ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ७६१ ।
 शुरवा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा' ।
 शुरू—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शुरू] १ किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन । आरंभ । प्रारंभ । जैसे,—अब तुम यह काम जल्दी शुरू कर डालो । २ वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो । जैसे,—शुरू से आखीर तक ।
 शुरूआत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ०] आरंभ । प्रारंभ [को०] ।
 शुल्क—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ वह महसूल जो घाटों और रास्तों आदि पर राज्य की ओर से वसूल किया जाता है । २ वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले में उसका पिता वर के पिता से लेता है ।
 विशेष—शास्त्र में इस प्रकार का धन या शुल्क लेने का बहुत अधिक निषेध किया गया है ।
 ३ विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज । दायजा । वैवाहिक उपहार । ४ वाजी । शर्त । ५ किराया । भाड़ा । ६ मूल्य । दाम । ७ वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया या दिया जाय । फीस । जैसे,—प्रवेश शुल्क । ८ फागदा । लाम [को०] । ९ किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अग्रिम धन [को०] । १० दूल्हे द्वारा दुल्हिन को दी हुई भेंट [को०] । ११ श्वान [को०] । १२ कर । टैक्स । महसूल [को०] ।
 यौ०—शुल्कग्राहक, शुल्कग्राही = कर या शुल्क एकत्र करनेवाला । शुल्कखंडन = शुल्क मोपण । शुल्कद = (१) वैवाहिक उपहार देनेवाला । (२) विवाहार्थी । शुल्कमोपण = वह जो करग्राहक को कर देने में धोखा दे टैक्सचोर । कर चोर शुल्कशान्ना । शुल्कस्थान ।
 शुल्कता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शुल्क का भाव या धर्म ।

शुल्कशाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहाँ पर घाट या मार्ग आदि का महसूल चुकाया जाता है। महसूल अदा करने की जगह।

शुल्कस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ आने जानेवाले को शुल्क देना पड़ता हो।

शुल्काध्यक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्रानुसार कुंजी का अध्यक्ष।

शुल्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुल्क'।

शुल्ल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ रस्सी। २ ताँवा।

शुल्व—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १ ताँवा। २ रज्जु। रस्सी। ३ यज्ञकर्म। ४ आचार। ५ नियम। विधि (को०)। ६ जल का सामीप्य। जल की निकटता (को०)।

शुल्वज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पीतल (को०)।

शुल्वल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सत। ऋषि (को०)।

शुल्वसूत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक सूत्रग्रन्थ जिसमें श्रौत कर्मकाण्डों से संबंधित गणितीय आकलन दिए गए हैं।

शुल्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुल्व'।

शुल्वारि—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] गधक।

शुल्वी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुल्व' (को०)।

शुश्रू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बालक की सेवा शुश्रूषा करनेवाली, माता। माँ। जननी।

शुश्रूषक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो शुश्रूषा करता हो। सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। जैसे,—शिष्य, दास, अधीनस्थ कर्मचारी आदि।

शुश्रूषण—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] [सञ्ज्ञा स्त्री० शुश्रूषणा] १ शुश्रूषा। शुश्रूषा करने का कार्य। सेवा करना। खिदमतगुजारी। २ सुनने की इच्छा (को०)। ३ कर्तव्यनिष्ठता। आज्ञा कारिता (को०)।

शुश्रूषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १ सेवा। टहल। परिचर्या। २ खुशामद। ३ कथन। ४ किसी से कुछ सुनने की इच्छा। ५ समान (को०)। ६ कर्तव्यनिष्ठता (को०)।

यौ०—शुश्रूषा पद्धति। शुश्रूषा प्रणाली=सेवा की रीति या ढंग।

शुश्रूषिता—वि० [सं० शुश्रूषितृ] सेवक। आज्ञापालक (को०)।

शुश्रूषी—वि० [सं०] शुश्रूषक।

शुश्रूषु—वि० [मं०] १ सुनने को उत्सुक। अवरोच्छ्रु। २ सेवा करने के लिये इच्छुक। नौकरी चाकरी चाहनेवाला। ३ आज्ञा पालन करनेवाला। हुक्म माननेवाला (को०)।

शुप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ छिद्र। विवर। गर्त। २. शुष्क होना। शोष। सूखना (को०)।

शुपि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूखना। २ गर्त। बिल। ३ ऐंठन। बल। मरोड़। शिकन। ४ सर्प के विष के दाँत का सूराख (को०)।

शुषिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शुष्कता। खुश्की। प्यास (को०)।

शुषिर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लींग। २ अग्नि। ३. मूत्र। चूड़ा। ४ बिल। गड्ढा। विवर। ५ आकाश। ६ वह वाजा जो मुँह से फूँकर बजाया जाता हो। जैसे, बंजी, अलगोजा, शहनाई आदि।

शुषिर—वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। मूत्राशदार (को०)।

शुषिरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। दरिया। २ घरणी। ३ नलिका या नली नाम का गंधद्रव्य।

शुषिल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा (को०)।

शुषेण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'नुषेण'।

शुष्क—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी या गोलापन न रह गया हो। जो किसी प्रकार मुखा लिया गया हो। आर्द्रता-रहित। सूखा। खुश्क। जैसे,—शुष्क काष्ठ। २ जिसमें जल या और किसी तरल पदार्थ का व्यवहार न किया गया हो। ३. जिसमें रस का अभाव हो। नीरस। रसहीन। ४ जिसमें मनोरजन न होता हो। जिसमें मन न लगता हो। जैसे,—शुष्क विषय। ५ जिसका कुछ परिणाम न निकलता हो। निरर्थक। व्यर्थ। जैसे,—शुष्क वादविवाद। ६ जिसमें सौहार्द आदि कोमल मनोवृत्तियाँ न हो। स्नेह आदि से रहित। निर्मोही। ७ जो बिल्कुल पुराना और बेकाम हो गया हो। जीर्ण जीर्ण। ८ निराधार। निष्कारण (को०)। ९ भुर्रादार। सिकुड़न वाला। कृश (को०)।

शुष्क—सञ्ज्ञा पुं० १ काला अगर। कालागुरु। २. कोई भी सूखी हुई वस्तु या पदार्थ (को०)।

शुष्कक—वि० [सं०] शुष्क। सूखा हुआ। क्षीण (को०)।

शुष्ककलह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ व्यर्थ या निराधार झगडा। अकारण सघर्ष। २ छद्म सघर्ष (को०)।

शुष्ककास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूखी खाँसी (को०)।

शुष्कक्षेत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वितस्ता नदी के किनारे के एक पर्वत का नाम।

शुष्कगर्भ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वंशक के अनुसार स्त्रियों का एक रोग जिसमें वायु के प्रकोप से स्त्रियों का गर्भ सूख जाता है।

शुष्कगान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] किसी भी प्रकार के उपवाद्य या सह ध्वनि के साथ गाना (को०)।

शुष्कगोमय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कड़ा। उपला (को०)।

शुष्कचर्चण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] निरर्थक बातचीत (को०)।

शुष्कता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुष्क होने का भाव या धर्म। सूखापन।

शुष्कतर्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मात्र वहस। बेकार वहस।

शुष्कतोय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुष्कतोया] जिसका जल सूख गया हो।

शुष्कपाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० शुष्काक्षिपाक (को०)।

शुष्कमत्स्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूखी या सुखाई हुई मछली (को०)।

शुष्कमास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सुखाया हुआ मास।

शुष्करुदित—सज्ञा पुं [म०] इस प्रकार रोग जिसमें आँख से आँसू न गिरे [को०] ।

शुष्करेवती—सज्ञा स्त्री [स०] १ पुराणानुसार एक मातृका का नाम । २ एक प्रकार का बालग्रह जिसके प्रकोप से बालको के अंग सूखने या क्षीण होने लगते हैं ।

शुष्कल—सज्ञा पुं [स०] १ मास । गोष्ठ । २ वह जो मास खाता हो । मासभक्षी । ३, सूखा मास (को०) ।

शुष्कली—सज्ञा स्त्री [स०] १ मास । गोष्ठ । २ सूखा मास (को०) ।

शुष्कवृक्ष—सज्ञा पुं [स०] घव का वृक्ष । धौ ।

शुष्कवैर—सज्ञा पुं [स०] अकारण वैर । निराधार शत्रुता [को०] ।

शुष्कव्रण—सज्ञा पुं [स०] १ स्त्रियो का योनिकद नामक रोग । विशेष दे० 'योनिकंद' । २ सूखा हुआ घाव (को०) ।

शुष्काग^१—सज्ञा पुं [स० शुष्काङ्गो] घव का वृक्ष । धौ ।

शुष्काग^२—वि० कृश शरीरवाला । दुबला पतला [को०] ।

शुष्कागी—सज्ञा स्त्री [स० शुष्काङ्गी] १. प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी । २ गोह । गोधिका ।

शुष्का—सज्ञा स्त्री [म०] स्त्रियो का योनिकंद नामक रोग ।

शुष्काक्षिपाक—सज्ञा पुं [स०] आँखों का एक प्रकार का रोग ।

विशेष—इसमें आँखों की पलकें कठोर और रूखी हो जाती हैं और उनके खोलने वद करने में पीडा होती है, आँखों में जलन होती है और साफ नहीं देख पड़ता ।

शुष्कार्द्र—सज्ञा पुं [स०] सूखा अदरक । सोठ ।

शुष्कार्द्रक—सज्ञा पुं [स०] दे० 'शुष्कार्द्र' [को०] ।

शुष्कान्न—सज्ञा पुं [स०] भूसा मिला हुआ अन्न [को०] ।

शुष्कार्श—सज्ञा पुं [स० शुष्कार्शस्] आँखों का एक प्रकार का रोग जिसमें आँख की पलकों के भीतर खरखरी और कठिन फुसियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।

शुष्काशुष्क—सज्ञा पुं [स०] समुद्रफेन ।

शुष्ण—सज्ञा पुं [स०] १ सूर्य । २ अग्नि । ३. बल । शक्ति । तावत । ४ एक राक्षस (को०) ।

शुष्म—सज्ञा पुं [स०] १ तेज । पराक्रम । २ अग्नि । ३ सूर्य । ४ वायु । ५. पक्षी । चिड़िया । ६ प्रकाश । काति (को०) । ७. लौ । लपट (को०) ।

शुष्मा—सज्ञा पुं [स० शुष्मन्] १ अग्नि । २ चीता । चित्रक । ३. तेज । पराक्रम । ४ प्रकाश । काति (को०) ।

शुष्मी—वि० [स० शुष्मिन्] १. शक्तिशाली । बलवान् । २ बहुत जल्दी-भडक जानेवाला । जैसे, घोडा, साँड, हाथी । ३. प्रतिभाशाली । मेधावी [को०] ।

शुहदा—वि० [अ० शहीद का बहुव०] गुडा । वदमाश । चरित्रहीन । ऐश अश्याशी में रुपया उड़ानेवाला । दे० 'शोहदा' । उ०—महा-ग्राससी भूठे शुहदे बेफिकरे वदमासी ।—भारतेंदु ग०, भा० १, पृ० ३३३ ।

हि० श० ६-५५

यौ०—शुहदापन, शुहदापना = शोहदापन ।

शुहरत—सज्ञा स्त्री [अ०] १ शोहरत । प्रसिद्धि । ख्याति । २ दे० 'शोहरत' ।

यौ०—शुहरतपसंद, शुहरतपरस्त = प्रसिद्धि का भूखा । नामवरी का इच्छुक । यशोलोभ ।

शूडल—सज्ञा पुं [दश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष ।

विशेष—इसके हीर की लकड़ी मजबूत, कड़ी और लाली लिए होती है और अच्छे दामों पर विक्रती है । यह इमारतों और पुलों के बनाने के काम में आती है । इसकी छाल बहुत पतली होती है और उतारने से वारीक कागज के बरकों की तरह उतरती है । बगल के मुदरवन में यह पेड़ बहुत होता है ।

शूक—सज्ञा पुं [स०] १ अन्न की बाल या सीका जिसमें दाने लगते हैं । २ यव । जौ । ३. एक प्रकार का कीड़ा । ४. एक प्रकार का तृण जिसे शूकडी कहते हैं और जो दुर्बल पशुओं के लिये बहुत बलकारक माना जाता है । ५. एक प्रकार का रोग जो लिगवर्धक औषधों के सेप के कारण होता है ।

विशेष—इसमें लिग पर कई प्रकार की फुसियाँ और घाव आदि हो जाते हैं । यह रोग १८ प्रकार का माना गया है । यथा—सर्पिका, अष्टीलिका, ग्रथित, कुम्भिका, अलजी, मृदित, समूठ-पीडका, अधिमथ, पुष्करिका, स्पर्शहानि, उत्तमा, शतपोतका, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मासार्बुद, मासपाक, विद्रवि और तिलकालक ।

५. यवादि की बाल का अगला, नुकीला भाग, दूँड । ६ रेशा या रोआँ जो नुकीला हो (को०) । ७ नोक । नुकीला अग्रभाग (को०) । ८. मृदुता । कृष्ण । कोमलता (को०) । ९ शमश्रु । दाढ़ी (को०) । १० शोक । दुःख (को०) ।

शूकक—सज्ञा पुं [स०] १. शरीर का रस नामक धातु । २ दूँड (को०) । ३. दया । दयालुता (को०) । ४. एक प्रकार का अन्न (को०) । ५. पावस । प्रावृट् । वर्षा (को०) ।

शूककीट, शूककीटक—सज्ञा पुं [स०] एक प्रकार का रोएँदार कीड़ा ।

शूकज—सज्ञा पुं [म०] जवाखार । यवक्षार ।

शूकतृण—सज्ञा पुं [स०] एक प्रकार की घास जो दुर्बल पशुओं के लिये बहुत बलकारक मानी जाती है । इसे शूकडी या चोरहुली भी कहते हैं ।

शूकदोष—सज्ञा पुं [स०] शूक नामक रोग । विशेष दे० 'शूक'-५ ।

शूकधान्य—सज्ञा पुं [स०] वह अन्न जिसके दाने बालों या सीकों में लगते हैं । जैसे, मेहूँ, जौ आदि ।

शूकपत्र—सज्ञा पुं [स०] वह साँप जिसमें विष न होता हो । जैसे,—पानी का साँप या डेडहा ।

शूकपाक्य—सज्ञा पुं [स०] जवाखार । शूकज ।

शूकपिंडि, शूकपिंडी—सज्ञा स्त्री [स० शूकपिण्डि, शूकपिण्डी] कपि-कच्छु । किवाछ । कीछ ।

शूकर—सद्या पुं० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १ सूअर। वाराह। उ०—
भजन विनु कूकर शूकर जैसो।—सूर (शब्द०)। २ विष्णु का
तोसरा अवतार। वाराह अवतार। विशेष दे० 'वाराह'।

शूकरकद—सद्या पुं० [सं० शूकरकन्द] वाराहो कद।

शूकरक्षेत्र—सद्या पुं० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है।
उ०—मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा जो शूकरखेत। समुझो
नहि तस बालपन तब अति रहेउ अचेत।—तुलसी (शब्द०)।
विशेष—कहते हैं, भगवान् विष्णु ने वाराह अवतार धारण करने
पर हिरण्यकेशी (हिरण्याक्ष) को यही मारा था। आजकल यह
स्थान सोरो नाम से प्रसिद्ध है।

शूकरदण्ड—सद्या पुं० [मं०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअरडाढ़
कहते हैं।

विशेष—यह रोग प्रायः बालकों को होता है। इसमें दाढ़ सहित
सूजन हो जाते हैं, जो पकती, पीटा करती और खुजलाती है,
और इसके विकार से ज्वर उत्पन्न होता है।

शूकरपादिका—सद्या स्त्री० [सं०] कोलशिवा। सेम की फली।

शूकरशिवा—सद्या स्त्री० [सं० शूकरशिम्बी] सेम की फली।

शूकराक्राता—सद्या स्त्री० [सं० शूकराक्राता] वराहक्राता। खैरी साग।

शूकरी—सद्या स्त्री० [सं०] १ सूअर की मादा। सपरी। वाराही।
२ खैरी साग। वाराहक्राता। वाराहीकंद। गेंठो। ४ सुई
या सूँस नामक जलजंतु। ५ विधारा।

शूकरेष्ट—सद्या पुं० [सं०] १ कसेरू। २ मोथा। मुस्तक।

शूकरोग—सद्या पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'-५।

शूकल—सद्या पुं० [सं०] वह घोड़ा जो जल्दी चौक या भडक
जाता हो।

शूकवती—सद्या स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। किवांच। कीछ।

शूकवान् - वि० [सं० शूकवत्] १ तुकीला। ढँडवाला। २ दाढी-
वाला [को०]।

शूकशिवा—सद्या स्त्री० [मं० शूकशिम्बी] कपिकच्छु। किवांच। कीछ।

शूकशिबिका, शूकशिबी—सद्या स्त्री० [सं० शूकशिम्बिका, शूकशिम्बी]
कीछ। केवांच।

शूकशिखा—सद्या स्त्री० [सं०] शूकशिवा। केवांच [को०]।

शूका—सद्या स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवांच। कीछ।

शूकाक्ष—सद्या पुं० [सं०] सिरिस। शिरीष।

शूकाट्य—सद्या पुं० [सं०] शूक या शूकरी नामक वृक्ष।

शूकापट्ट—सद्या पुं० [सं०] कहूवा नामक गोद जो बरमा की स्त्रियों से
निकलता और औषध के काम आता है। वृणामणि। विशेष दे०
'कहूआ-१'।

शूकामय—सद्या पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'-५।

शूकी—वि० [मं० शूकिन्] शमश्रुल। शकवाला। ढँडदार [को०]।

शूकुल—सद्या पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार की
सुगंधित घास।

शूक्त—सद्या पुं० [मं० शूक्त] सिरका।

शूद्धम(पु) - वि० [मं० शूद्धम] १० 'शूद्धम'।

शूची—सद्या स्त्री० [मं० शूची] सूई। उ०—भक्ति मार तब करत भे,
भकर सो परिहाम। शूची छिद्र समानवर, देहु नाथ कैलास।
—चुराज (शब्द०)।

शूट—

शूटिंग—१ फिन्म की शूटिंग। २ गोलियाँ आदि चलना। शूट करना।
लक्ष्य बनाना।

शूटिंग स्टिक—सद्या स्त्री० [अ०] छापेखाने में काम आनेवाली एक
लकड़ी जो प्रायः एक बालिश्वन लगी होती है।

विशेष—इसके मुँह पर एक गज्जदार पीतल की सामी होती है।

इसी में गुल्ली भड़ाकर ठोक्ने हैं जिनमें यह मूँजे पर चढ़कर
टाइप को कम देती है। किसी किसी में स्टिक सामी नहीं भी
होती।

शूति—सद्या स्त्री० [मं०] अभिवृद्धि। बढनी [को०]।

शूतिपाण—सद्या पुं० [सं०] अमलताम। आरवध वृत्त। घनरहेडा।

शूद्र—सद्या पुं० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्रो] १ प्राचीन आर्यों के
लोकस्थान के अनुसार चार वर्णों में से चौथा और
अंतिम वर्ण।

विशेष—इनका कार्य अन्य तीन वर्णों की सेवा करना और गिल्प-
कला के काम करना माना गया है। यजुर्वेद में शूद्रों की
उपमा ममाजखूपी शरीर के पैरों से दी गई है, इसीलिये कुछ
लोग इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के पैरों से मानते हैं। इनके लिये
गृहस्थाश्रम के अनिर्गुण और किसी धार्मिक में जाने का
निषेध है। आजकल इनमें से कुछ लोग अछूत और अंत्यज
ममके जाते हैं। साधारण कोई इन वर्णों के लोगों का अन्न
ग्रहण नहीं करता।

पर्याय—अवर वर्ण। वृषल। दाम। पादज। अंत्यजन्म। जघन्य।
द्विजमेवक। अत्यवर्ण। द्विजदाम। उरामक। जघन्यज।

२. शूद्र जाति का पुरुष। ३ नैऋत्य कोण में स्थित एक देश का
नाम। ४ बहुत ही खराब। निष्ठुर। ५ सेनक। दास।

शूद्रक—सद्या पुं० [सं०] १. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छ
कटिक' का रचयिता महाकवि। २ शूद्र। (डि०)। ३ शूद्र
जाति का एक व्यक्ति जिसका नाम शूद्रक था।

विशेष—कहते हैं, यह रामचंद्र के राजत्व काल में था। एक
बार एक ब्राह्मण का पुत्र इसकी तपस्या के कारण मर गया।
उसने जाकर रामचंद्र जी के यहाँ प्रार्थना की। नारद आदि
ऋषियों ने कहा कि इस राज्य में कोई शूद्र तपस्या कर रहा
है, उसी के फलस्वरूप इस ब्राह्मण का पुत्र इसके सामने मरा
है। इसपर रामचंद्र जी ने इसका पता लगवाया और तब
इसका सिर कटवा डाला।

शूद्रवल्प—वि० [सं०] शूद्र के समान। शूद्र तुल्य [को०]।

शूद्रकृत्य—सद्या पुं० [सं०] शूद्र का कार्य। शूद्रों के लिये विहित
कर्तव्य [को०]।

शूद्रकेशवर—सद्या पुं० [सं०] एक शिवलिंग का नाम।

शूद्रचैत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह भूमि जिसका रंग काला हो और जिसमें अनेक प्रकार की घास, तृण, बबूर के वृक्ष तथा नाना प्रकार के घान उत्पन्न हो।

शूद्रघ्न—वि० [सं०] शूद्र की हत्या करनेवाला [को०]।

शूद्रजन्मा—वि० [सं०] शूद्रजन्मन्। शूद्र से उत्पन्न होनेवाला [को०]।

शूद्रता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का भाव या धर्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।

शूद्रत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्र होने का भाव या धर्म। शूद्रता। शूद्रपन।

शूद्रद्युति—सञ्ज्ञा पु० [सं०] नीला रंग जो रंगों में शूद्र वर्ण का माना जाता है। उ०—वैश्य श्वेत मिलि पीत होत घृत वरुण रुचिर अति। हरित श्याम मिलि होइ शूद्रद्युति तरु तमाल प्रति।—गुरुदास (शब्द०)।

शूद्रपति—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्रों का सरदार। उ०—आयसु दीन्हैउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई।—सवलसिंह (शब्द०)।

शूद्रप्रिय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पलाहु। प्याज।

शूद्रप्रेष्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो।

शूद्रभूयिष्ठ—वि० [सं०] जहाँ शूद्रों की संख्या अधिक हो। (राष्ट्र) जो अत्यधिक शूद्रों से युक्त हो [को०]।

शूद्रभोजी—वि० [सं०] शूद्रभोजिन्। शूद्र के यहाँ भोजन करनेवाला [को०]।

शूद्रवर्ग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्रश्रेणी या सेवक वर्ग [को०]।

शूद्रवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का आचरण या पेशा [को०]।

शूद्रशासन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ शूद्र राज्य। २ शूद्रों के लिये निर्धारित आचार व्यवहार। ३ शूद्र द्वारा लिखा गया प्रतिज्ञापत्र [को०]।

शूद्रसेवन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्र की सेवा।

शूद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

यौ०—शूद्रापरिणयन = दे० 'शूद्रावेदन'। शूद्राभार्य = जिसकी भार्या शूद्र जाति की हो। शूद्रावेदन। शूद्रावेदी। शूद्रासुत।

शूद्राणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री।

शूद्रान्न—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. शूद्र से प्राप्त होनेवाली जीविका। २. शूद्र वर्ण के व्यक्ति द्वारा दिया हुआ अन्न आदि [को०]।

शूद्रार्त्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियगु वृक्ष। वनिता।

शूद्रावेदन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करना [को०]।

शूद्रावेदी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्रावेदिन्। उच्च वर्ण का वह व्यक्ति जिसने शूद्र जाति की किसी स्त्री के साथ विवाह कर लिया हो। मनु के अनुसार ऐसा व्यक्ति पतित माना जाता है।

शूद्रासुत—सञ्ज्ञा पु० [सं०] वह व्यक्ति जो किसी उच्च वर्ण के व्यक्ति के वीर्य से शूद्रा माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो।

शूद्राक्षिक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूद्र का दैनिक कृत्य [को०]।

शूद्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री। शूद्रा। उ०—सो शूद्री पुनि जन्मो कुमार। नाम तासु कनि कृष्ण उचारा।—रघुराज (शब्द०)।

शून—वि० [सं०] १ शून्य। २ मूजा हुआ। शोथयुक्त। फूला हुआ [को०]। ३ वर्धित। बड़ा हुआ [को०]।

शूनकचचु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शूनकचञ्चु। शूद्रचञ्चु या छोटा चंच नाम का साग।

शूना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अन्नजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे,—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।

विशेष—इन स्थानों में जीवों की जो हत्या होती है, उसी के दोष के परिहार के लिये ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ और पितृयज्ञ करने की आवश्यकता होती है। विशेष दे० 'पंचसूना' और 'पंच महायज्ञ'।

२ तालू के ऊपर की छोटी जीभ। छोटी जीभ। गलशुंड़ी। ३ थूहर। स्नुही। ४ वधस्थान। बूचखाना [को०]।

शून्य—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ वह स्थान जिसमें कुछ भी न हो। खाली स्थान। २ आकाश। ३ एकांत स्थान। निर्जन स्थान। ४. विदु। विदी। सिपर। ५ अभाव। राहित्य। कुछ न होना। जैसे,—तुम्हारे हिरसे में शून्य है। ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८ ईश्वर। उ०—कहै एक तासा शिवे शून्य एकै। कहै काल एकै महा विष्णु एकै। कहै अर्थ एकै परब्रह्म जानो। प्रभा पूर्ण एकै सदा शून्य मानो।—केशव (शब्द०)। ९ कान का एक आभूषण [को०]।

शून्य—वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. निराकार। उ०—रूप रेख कछु जाके नाही। ती का करब शून्य के माही।—विश्राम (शब्द०)। ३ जो कुछ न हो। अस्त। ४ विहीन। रहित। जैसे,—संज्ञाशून्य।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग योगिक शब्द बनाने में अत मे होता है। जैसे, विवेकशून्य।

५. एकांत। निर्जन [को०]। ६ सिद्ध। उदास। उत्साहहीन [को०]। ७. तटस्थ। निरपेक्ष [को०]। ८. निर्दोष [को०]। ९. अर्थहीन। निरर्थक [को०]।

शून्यगर्भ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पपीता नामक फल।

शून्यगर्भ—वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। २ जिसमें कुछ भी सार या तत्व न हो। ३ बेवक्रुफ। मूर्ख।

शून्यता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यत्व।

शून्यत्व—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यता।

शून्यदृष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सूनी निगाह। उदास दृष्टि [को०]।

शून्यपथ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १ अंतरिक्ष। आकाश। व्योम। २. सूना रास्ता। निर्जन मार्ग [को०]।

शून्यपदवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मरथ।

शून्यपाल—सज्ञा पु० [स०] वह जो किसी के रिक्त स्थान पर अस्थायी रूप से काम करता हो। एवजी।

शून्यवहरी—सज्ञा स्त्री० [स० शून्य + वहरी?] पाँव का मुन्न हो जाना या उसमें झुनझुनी चढ़ना।

शून्यमध्य—सज्ञा पु० [स०] वह पदार्थ जिसके बीच का भाग खाली हो। जैसे,—नल, नरसल नरकट।

शून्यमनस्क—वि० [स०] शून्यमनस्क। अनमता [को०]।

शून्यमना—वि० [स० शून्यमनस्] दे० 'शून्यमनस्क' [को०]।

शून्यमय—वि० [स०] निर्मल। व्यर्थ [को०]।

शून्यमूल—सज्ञा पु० [स०] सेना की एक प्रकार की सजावट।

शून्यमूल—वि० कौटल्य के अनुसार (सेना) जिसका वह रैंड नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते-हैं।

शून्यवाद—सज्ञा पु० [स०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी—सज्ञा पु० [स० शून्यवादिन्] १ शून्यवाद का माननेवाला, अर्थात् वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो।—हिंदु० सम्प्रदाय, पृ० २२७। २ बौद्ध। ३ नास्तिक।

शून्यहर—सज्ञा पु० [स०] १ प्रकाश। उजाला। २ मोता। स्वर्ग।

शून्यहस्त—वि० [स०] जिसका हाथ खाली हो। रिक्तपाणि [को०]।

शून्यहृदय—वि० [स०] १ अनमता। शून्यमना। २ खुले हृदयवाला। विशाल हृदय का। सदेहरहित [को०]।

शून्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नलिका या नली नाम का गवद्रव्य। २ वध्या स्त्री। बाँझ औरत, जिसे कोई सतान न होती हो। ३ नरकट। नरसल [को०]। ४ धूहर या स्नुही का वृक्ष।

शून्यालय—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ कोई न हो। एकांत स्थान।

शून्याशून्य—सज्ञा पु० [स०] जीवन्मुक्ति।

शूप—सज्ञा पु० [स० शूर्प] बेंत, सीक या चाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा चौड़ा पात्र जिसमें रखकर अन्न आदि पछोड़ा जाता है। सूप। फटकनी। उ०—तेहि बन शूप बनावनहारे। बेंत लेन इक समय सिवारे।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—इसकी लंबाई के बल में एक सिरे पर कुछ ऊँची लंबी बाँध होती है, और दूसरा सिरा बिलकुल खाली रहता है। चौड़ाई के बल में दोनों ओर कुछ ऊँची ढालुआँ बाँध होती हैं जो बिलकुल आगे के सिरे पर पहुँचकर खतम हो जाती हैं।

शूपकार—सज्ञा पु० [स० शूर्पकार] दे० 'शूपकार'।

शूम—सज्ञा पु० [अ०] 'सूम'।

शूरगम—सज्ञा पु० [स० शूरङ्गम] १. एक प्रकार का समाधि। २ एक बोधिसत्व [को०]।

शूरमन्य—वि० [स० शूरम्भन्य] अपने आपको वीर समझनेवाला [को०]।

शूर'—सज्ञा पु० [स०] १ वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। भट। सिपाही। ३. सूर्य। ४. सिंह। ५. सुभर। शूकर। ६. चीता।

७ शाल। सायू। ८ बटहर। लज्जु। ९ मसुर। मातल्य। १० चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ११ आक। मदार। १२. वृष्ण के पितामह का नाम। १३ विष्णु का एक नाम। १४ जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक दश का नाम। १५ शयान। कुत्ता (को०)। १६ कुक्कुट। मुर्गा (को०)।

शूर—वि० [स०] योद्धा। बहादुर। शौर्यशक्तियुक्त। [को०]।

शूरकीट—सज्ञा पु० [स०] कमजोर या नाचारण काटि का वीर।

शूरण—सज्ञा पु० [स०] १ मूरन। ओल। जमीकद। विदेय दे० 'मूरन'। २ शयोनाक वृक्ष।

शूरणोद्भुज—सज्ञा पु० [स०] हरियल या हरिल नाम का पक्षी।

शूरता—सज्ञा स्त्री० [स०] शूर होने का भाव या धर्म। शौर्य। बहादुरी। वीरता।

शूरताई—सज्ञा स्त्री० [स० शूरता + हि० ई (प्रत्यय)] दे० 'शूरता'।

शूरतन—सज्ञा पु० [स०] शूर होने का भाव या धर्म। शूरता। वीरता। बहादुरी।

शूरदेव—सज्ञा पु० [स०] जैनियों के अनुसार भविष्य में होनेवाले चौबीस अर्हंतों में से एक अर्हंत का नाम।

शूरन—सज्ञा पु० [हि०] दे० 'सूरन'।

शूरपुत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] अदिति का एक नाम।

शूरवल—सज्ञा पु० [स०] बौद्धों के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

शूरभू—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शूरभूमि'।

शूरभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] उपरसेन की एक कन्या का नाम।

विशेष—भागवत में लिखा है कि वसुदेव के छोटे भाई श्यामक ने इसके साथ विवाह किया था, और उनके बीच से इसके गर्भ से हरिकेश और हिरण्यक नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे।

शूरमान—सज्ञा पु० [स०] अभिमान। अहंकार [को०]।

शूरमानी—सज्ञा पु० [स० शूरमानिन्] वह जिसे अपनी शूरता का बहुत अभिमान हो। अपनी बहादुरी पर बहुत भरोसा रखनेवाला।

शूरवाणेश्वर—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

शूरवाद—सज्ञा पु० [स०] बौद्धों का शून्यवाद का सिद्धांत [को०]।

शूरवादी—वि० [स०] शूरवादिन् १. बौद्ध। २. नास्तिक [को०]।

शूरविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] युद्ध आदि करने की विद्या।

शूरवीर—सज्ञा पु० [स०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।

शूरवीरता—सज्ञा स्त्री० [स०] शौर्य। बहादुरी।

शूरश्लोक—सज्ञा पु० [स०] वीरों के वीरतापूर्ण कृत्यों की कहानी। वीरगाथा।

शूरसेन—सज्ञा पु० [स०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २ मथुरा और उसके आस पास के प्रदेश का प्राचीन नाम जहाँ राजा शूरसेन का राज्य था।

शूरसेनप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूरवीरों को सेना का पालन करनेवाले, कार्तिकेय ।

शूरसेना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूरसेन राजा का पुरो । मथुरा नगरी एक का नाम [को०] ।

शूरा^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] क्षीरकाकोली नामक अष्टवर्गीय अ.षधि ।

शूरा^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूर] सामत । वीर । उ०—पैठि गुफा मे सब जग देखै, बाहर बछू न सूँझै । उलटा वान पारयिव लागे, शूरा होय सो बूझै ।—कबोर (शब्द०) ।

शूरा^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूर (=सूर्य) अथवा सूर्य] सूर्य । उ०—जहाँ चंद न शूरा, तारा नहि जहाँ मोरनिया ।—कबोर (शब्द०) ।

शूरिमृग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वाराह आदि जंगली पशु ।

शूर्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गेहूँ, चावल आदि अन्न पछोड़ने के लिये बना हुआ बोंस या सीक का पात्र । सूप । २ एक प्राचीन तौल जो २०४८ तोले या ३२ सेर की होनी थी ।

शूर्पक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जो किसी किसी के मत से कामदेव का शत्रु और किसी किसी के मत से उसका पुत्र था ।

शूर्पकर्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी, जिसके कान सूप के समान होते हैं । २. गणेश । ३. एक प्राचीन देश का नाम । ४. इस देश का निवासी । ५. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शूर्पकाराति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूर्पक राजस का शत्रु, कामदेव ।

शूर्पकारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूर्पक नामक राजस का शत्रु, कामदेव ।

शूर्पखारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की तौल जो १६ द्रोण की होती थी [को०] ।

शूर्पणखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राजसी जो रावण की बहिन थी ।

विशेष—कहते हैं, इसके नख सूप के समान थे । राम के वनवास के समय काम से पीड़ित होकर यह राम के पास उनके साथ विवाह करने की इच्छा से गई थी । वहाँ राम के इशारे से लक्ष्मण ने इसकी नाक और कान काट लिए थे । इसी का बदला लेने के लिये रावण सीता को हर ले गया था ।

शूर्पणखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूर्पणखा' ।

शूर्पणाय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम ।

शूर्पनखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूर्पणखा' ।

शूर्पपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वन मूँग । वन उर्द ।

शूर्पवात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सूप की हवा । अनाज फटकने के समय शूर्प से उत्पन्न हवा [को०] ।

विशेष—बच्चों को सूप की हवा लगना अशुभ माना जाता है ।

शूर्पश्रुति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हस्ती । हाथी ।

शूर्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शूर्य या शूर्पा] बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना ।

शूर्पाद्रि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणी भारत के एक पर्वत का नाम । इसे कुछ लोग सूर्याद्रि भी कहते हैं ।

शूर्पारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बवई प्रान्त के थाना जिले के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम ।

शूर्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा सूप । सपेली । २ शूर्पणखा का एक नाम । ३ बच्चों के खेलने का एक खिलौना [को०] ।

शूर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूर्मि] १ लोहे की बनी हुई मूर्ति । २. निहाई ।

शूर्मि, शूर्मिका, शूर्मी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूर्म' [को०] ।

शूल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो प्रायः बरछे के आकार का होता था । २ सूली जिससे प्राचीन काल के लोगों को प्राणदंड दिया जाता था । ३ दे० 'त्रिशूल' । ४ कोई बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा । ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द ।

विशेष—यह दर्द प्रायः पेट, पसली, कलेजे या पेड़ आदि में होता है । वैद्यक के अनुसार बहुत अधिक व्यायाम या मंथन करने, घाड़े पर चढ़ने, रात के समय जागने, बहुत अधिक ठंडा जल पीने, रुखे द्रव्यों का सेवन करने, सूखा मांस खाने, विरुद्ध भोजन करने, शारीरिक वेगों को रोकने, बहुत अधिक शोक या उपवास करने अथवा बहुत अधिक हँसने के कारण वायु का प्रकोप होता है जिससे पेट में या उसके आस पास बहुत तीव्र पीड़ा होती है । इस पीड़ा में ऐसा अनुभव होता है कि कोई अदर से बहुत नुकीला काँटा या शूल गड़ा रहा है, इसी से इसे शूल कहते हैं । यह रोग आठ प्रकार का—वातज, पित्तज, कफज, सनिपातज, आमज, वातश्लेष्मिक, पित्तश्लेष्मिक और वात-पैतिक—कहा गया है, और इसे शांत करने के लिये स्वेद, अभ्यंग, मर्दन और स्निग्ध तथा उष्ण द्रव्यों के सेवन का विधान है ।

६. किसी नुकीली वस्तु के चुभने के समान होनेवाली पीड़ा । कोच । टीस । ७. पीड़ा । क्लेश । दुःख । दर्द । उ०—(फ) तुम लछिमन निज पुरहि सिधारो विछुरन मेट देहु लघु वधु जियत न जैहै शूल तुम्हारो ।—सूर (शब्द०) । (ख) मन तोसों कोटिक बार कही । समुझ न चरण गहत गोविंद के उर अष शूल सही ।—सूर (शब्द०) । ८ ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों के अंतर्गत नवाँ योग ।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस योग में जन्म लेता है, वह डरपोक, दरिद्र, मूर्ख, विद्याहीन, शूलरोगी, दूसरों का अनिष्ट करनेवाला और अपने वधु वाधव को शूल के समान खटकनेवाला होता है । इस योग में किसी प्रकार का शुभ काम करने का निषेध है ।

९. छड़ । सलाख । सीख । उ०—खाने को बहुधा गूल पर भुना हुआ मांस मिलता है, सो भी कुसमय ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०) । १० मृत्यु । ११. ऋषि । पताका । १२. पोस्ते की पत्तियों की वह वह जो अफीम की चक्की जमाने के समय उसका चारों

शूल और शूल ऊपर नीचे लगाई जाती है। (वंगाल)। १३ ग्रंथि वात। गठिया (को०)।

शूल^१—वि० वंष्टि की तरह नोचवाला। नुकीला।

शूलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २. दुष्ट या पाजी घाड़ा। शकल।

शूलकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक नीच जाति का नाम।

शूलगजकेसरी रस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—यह रस शुद्ध गन्धक, पारे, कटववेधी, तन्त्रि के पत्र आदि के योग से तैयार किया जाता है और शूल रोग के लिये गुणकारी माना जाता है।

२. वैद्यक में एक प्रकार की घटी या गोली।

विशेष—इसके लिये कौड़ियों की राख, शुद्ध सिंगी मुहरा, मँधा नमक, काली मिर्च, पिप्पली इन सब का चूर्ण कर पान के रस में एक रत्ती के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। ये गालिया शूल का नाश करती हैं।

शूलगव—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] शिव का एक नाम।

शूलगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] मदरास प्रांत के एक पर्वत का नाम।

शूलग्रथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं० शूलग्रन्थि] माला दूब।

शूलग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथ में त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव।

शूलग्राही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूलग्राह्य] शिव। महादेव।

शूलघातन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मट्टर। लौहकट्ट।

शूलघ्न^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तुलु वृक्ष।

शूलघ्न^२—वि० शूल को शमन करनेवाला [को०]।

शूलघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. सज्जी मिट्टी। सज्जिखार। २. नरसल जैसा एक पौधा (को०)।

शूलदावानल रस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—यह दो तरह से बनता है—(१) शुद्ध पारा, शुद्ध सींगी मुहरा, काली मिर्च, पिप्पली, मोठ, भुनी हींग, पाँचो नमक, इमली का खार, जभीरी का खार, शखभस्म और नीबू के रस के योग से बनता है और शूल रोग का तरफाल दूर करता है। (२) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सिंगी मुहरा, पिप्पली, भुनी हींग, पाँचो नमक, इमली के खार और नीबू के रस में भुने हुए शख की राख तथा नीबू के रस से बनता है और शूल, अजीर्ण, उदररोग और मदाग्नि को दूर करता है।

शूलद्विट्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूलद्विष्ट] हींग। हिंगु।

शूलधन्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूलधन्वन्] शिव। महादेव।

शूलधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव। शंकर। उ०—गगाधर हर शूलधर, ससिधर शंकर बाम। सर्वस्वर भव शम्भु शिव, रुद्र कामरिपु नाम।—नंद (शब्द०)।

शूलधरा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शूलधारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। शूलधरा।

शूलधारी—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शूलधारिन्] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव। महादेव। उ०—मध्यावन्ति पूजन जब होइ शूलधारी को, दुर्गम की ओर दीजो गरज मुनाइ कै।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

शूलधृक्^१—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] शिव।

शूलधृक्^२—सञ्ज्ञा स्त्री० दुर्गा [को०]।

शूलना^१—क्रि० अ० [हिं० शूल + ना (प्रत्यय)] १. शूल के समान गढ़ना। २. दुख देना। पीटा देना। मृष्ट देना। उ०—(क) सो युधि यदुनदन नहि भूलत। मुमिर मुमिर अजहूँ, उर शूलत।—सरल (शब्द०)। (ख) लै लै पय की नाम ठाँव हमरो नहि छाई। कठिन तुम्हारी त्रोल जाइ हिरदं मे शूलं।—गिरधर (शब्द०)।

शूलनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] १. मोवर्चल लवण। २. हींग। ३. पुष्करमूल। ४. वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण।

विशेष—यह चूर्ण शखभस्म, कज्जमूल, भुनी हींग, मोठ, काली मिर्च, पीपल और सेंधा नमक के योग से बनाया जाता है और इसका व्यवहार प्रायः शूलरोग में किया जाता है।

शूलनाशिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शूलरोग का नाश करनेवाली, हींग।

शूलनाशिनी घटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की घटी या गोली।

विशेष—इसके लिये हड का छिलका, मोठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध तुचला, शुद्ध गन्धक, भुनी गन्धक, भुनी हींग, सेंधा नमक जल से खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। कहते हैं कि प्रातः काल इसे गरम जल के साथ सेवन करने से संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मदाग्नि आदि दूर होती है।

शूलनाभी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूलनाभिन्] हींग।

शूलनिर्मूलन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दुख का नाश करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपाणि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हाथ में शूल धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपानि^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शूलपाणि] शिव। महादेव। उ०—दारिद्र्यदमन, दुखदोष दाह—शिवानल, दुनि न दयालु दूजो दानि शूलपानि सो।—तुलसी (शब्द०)।

शूलपाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेश्यालय का रक्षक [को०]।

शूलप्रोत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] नरक के एक भाग का नाम।

शूलभृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शूलधारी शिव [को०]।

शूलमर्दन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

शूलयोग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के २७ योगों में से एक योग। विशेष दे० 'शूल'—८।

शूलशत्रु—सञ्ज्ञा पुं० पुं० [म०] रेंड का पेड ।

शूलशब्द—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पेट की गडगडाहट के कारण होनेवाला शब्द ।

शूलस्थ—वि० [स०] शूलो पर चढा हुआ [को०] ।

शूलहन्त्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शूलहन्त्रो] शूल का नाश करनेवाली, अजवाइन । यवानी ।

शूलहर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पुष्कामूल ।

शूलहस्त—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हाथ में शूल धारण करनेवाले, शिव । महादेव ।

शूलहृत्—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हिगु । हीग ।

शूलाक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शूलाङ्क] शिव । महादेव ।

शूला—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ वेश्या । रडी । २. सूली जिसके द्वारा प्राचीन काल में लोगो को प्राणदण्ड दिया जाता था । ३ छड़ । सीख । सलाख ।

शूलाकृत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] लोहे की सीख में खोंसकर भूना हुआ मास । सीख पर भूना हुआ मास । कबाब आदि ।

शूलारि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हिगोट । इगुदी वृक्ष ।

शूलि^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम । महादेव ।

शूलि^२—वि० शूल या कुत धारण करनेवाला [को०] ।

शूलि^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूली' ।

शूलिक^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ खरगोश । खरहा । २. सीख में गोदकर पकाया हुआ मास । कबाब । ३ फाँसी देनेवाला । सूली देनेवाला । उ०—इन मघादि तीसरे मडल के दैत्यगुरु यदि और किसी ग्रह से एक जाँय तो पेडों के समूह, शबर, शूद्र, पुङ्ग, पश्चिम की सीमा का अन्त, शूलिक, वनवासी, द्रविड, समुद्र के पुरुषों का नाश हो जाता है ।—वृहत्संहिता (शब्द०) । ४ कुक्कुट । मुर्गा [को०] । ५ ब्राह्मण या क्षत्रिय की वह जारज सतति जो शूद्रा से उत्पन्न हो [को०] ।

शूलिक^२—वि० १ प्रासधारी । शूल धारण करनेवाला । २ सलाख पर भूना हुआ [को०] ।

शूलिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सीख में गोदकर भूना हुआ मास । कबाब । २ वह सीख जिसमें गोदकर मास भूना जाता है [को०] ।

शूलिकाप्रोत—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ भाडीर वृक्ष । बट का वृक्ष । २. गूलर का पेड । उदुवर ।

शूलिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा का एक नाम जो त्रिशूल धारण करनेवाली मानी जाती है । २ पान । नागवल्ली । ३ पुत्रदात्री नाम की लता ।

शूली^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० शूलिन्] १ त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव । महादेव । उ०—शृंगी शूली धूरजटो, कुडलीश त्रिपुरारि । वृषा वपरी मानहर, मृत्युजय कामारि ।—सबल (शब्द०) । २.

खरगोश । शशक । खरहा । ३ शूलरोग से पीडित व्यक्ति । वह जिसे शूलरोग हुआ हो । ४. एक नरक का नाम । उ०—(क) तेरहो शूली नरक कहावे । शूली सम दुख तामे पावे । जो नर पाप करै अधिकाई । करि शिकार मृग मारै जाई ।—विश्राम (शब्द०) । (ख)—लाहू को शस्त्रन ते मारै । तेहि यम शूली नरक में डारै ।—विश्राम (शब्द०) । ५ कुतवारी व्यक्ति । वह जो शूल धारण किए हो [को०] ।

शूली^२—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० 'सूली' । उ०—नाहक नर शूली वरि द न्हो । जिन वन माहि ठगाही कीन्हो ।—विश्राम (शब्द०) । (ख) कौन पाप मैं ऐसो कियो । जाते मोकूँ शूली दियो ।—सूर (शब्द०) ।

शूली^३—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शूल] पीडा । शूल । उ०—सा सुवि भूप हिये महँ भूली । अजहँ उठन जामु ते शूली ।—सबल (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—उटना ।

शूली^४—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की घास । शूलीपत्री ।

विशेष—इस घास को पशु बड़े चाव से खाते हैं और इसका व्यवहार ओषध रूप में भी होता है । वंशज के अनुसार यह किंचित उष्ण गुण, वलकारक, पित्त तथा दाहनाशक और गोश्रो तथा भैसो का दूध दढानेवाली मानी जाती ।

शूलोत्खा, शूलोत्था—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सोमराजी लता । वकुची ।

शूल्य^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सीख में वेवकर पकाया हुआ मास । कबाब ।

शूल्य^२—वि० १. सीख पर भूना हुआ । २ शूली पर चढाए जाने या शूली पाने योग्य [को०] ।

शूल्यपाक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कबाब ।

शूल्यमास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कबाब ।

शूल्यवाण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि जिसका मान वैदिक काल में होना था ।

शूप^१—वि० [स०] १ गुचायमान । २ साहमी [को०] ।

शूष^२—सञ्ज्ञा पुं० १ गुजित होता हुआ स्वर । २ साहस । शक्ति । वेग [को०] ।

शृंखल—सञ्ज्ञा पुं० [स० शृङ्खल] १ एक प्रकार का आभरण जो प्राचीन काल में पुरुष लोग कपड़ों में पहनते थे । मेखला । २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जंजीर । साँकल । सिक्कड । उ०—अंकुश घट मुशृंखल जेळ । चौदह सहस्र महा गज लेळ ।—पद्माकर (शब्द०) । ३ हथकडी वेडी । ४ नियम । ५ मापने की जंजीर [को०] । ६ परपरा । मिलमिला [को०] । ७ वधन [को०] ।

शृंखलक—सञ्ज्ञा पुं० [स० शृङ्खलक] १ ऊँट । २. दे० 'शृंखल' । ३ वह जानवर जिसके पैर बाँधे हो [को०] ।

शृंखलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खलता] मिलमिलेवार या क्रपवद्ध होने का भाव ।

शृंखलवद्ध—वि० [स० शृङ्खलवद्ध] १. नियमवद्ध । २. वधन या जंजीर से बाँधा हुआ [को०] ।

शृ खला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] १ क्रम । सिलसिला । २ जजीर । साँकल । ३ पुष्प का कटिवन वत्त । मेखला । ४ चाँदी का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं । करधनी । तागडी । श्रेणी । कतार । ६ एक प्रकार का अलङ्कार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन शृ खला के रूप में सिलसिलेवार किया जाता है ।

शृखलावद्ध—वि० [सं० शृङ्खलावद्ध] १. जो क्रम से हो । मिलसिले-वार । २ जो शृखला से बाँधा हुआ हो ।

शृ खलि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्खलि] कोकिलाक्ष । तालमखाना ।

शृ खलित—वि० [सं० शृङ्खलित] १ क्रमवद्ध । श्रेणीबद्ध । सिलसिले-वार । २ पिरोया हुआ । ३ निगडित । शृ खलावद्ध (को०) ।

शृ खली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खली] कोकिलाक्ष ।

शृ ग'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत का ऊपरी भाग । शिखर । चोटी । २ गो, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग । उ०—भक्ति बिन बँल बिराने हूँ हो । पाउ चारि सिर शृग गुग मुख तब कैसे गुण गँहो ।—सूर (शब्द०) । ३ कँगूरा । उ०—जो काचनीय रथ शृग मधुर माली । जाके उदार उर परममुख शक्तिशाली ।—केनव (शब्द०) । ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है । सिंगी वाजा । उ०—कस ताल करताल बजावत शृग मधुर मुहचग । मधुर खजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभग ।—सूर (शब्द०) । ५ कमल । पद्म । ६ जीवक नामक अष्टवर्गिय श्लेषवि । ७ सोठ । ८ अदरक । आदी । ९ अग्रर । १० प्रभुत्व । प्रधानता । ११ काम की उत्तेजना । १२ चिह्न । निशान । १३ स्तन । छाती । १४ एक प्राचीन ऋषि का नाम । वि० दे० 'ऋष्यशृग' । १५ पानी का फौवारा या पिचकारी । १६ कूर्चशीपक वृक्ष (को०) । १७ उत्तु गता । ऊँवाई (को०) । १८ चटचूड़ा । चाँद की नोक (को०) । १९ किसी वस्तु का अग्रभाग । नोक (को०) । २० कोटि । चाप के सिर का नुकीला अंश (को०) । २१ अभिमान । आत्मश्लाघा (को०) । २२ बाण का नुकीला दंड । बाणकांड (को०) । २३ एक प्रकार का सेना का द्यूह (को०) । २४ हाथी का दाँत (को०) । २५ उत्कर्ष । अभ्युदय (को०) ।

शृ ग^२—वि० नुकीला । तीक्ष्ण । तेज ।

शृ गकद—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गकन्द] मिषाडा ।

शृ गक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गक] १ जीवक वृक्ष । २ सिंगिया नामक विप । ३ सींग (को०) । ४ चद्रमा की नोक । चद्रचूड़ा (को०) । ५ कोई भी नुकीला पदार्थ (को०) । ६ पिचकारी (को०) ।

शृ गकूट—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गकूट] एक पर्वत का नाम ।

शृ गगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गगिरि] दे० 'शृगकूट' ।

शृ गग्राहिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ उचित मार्ग । सीधा मार्ग । सरल विधि । २ एक न्याय । दे० 'शृ गग्राहिता न्याय' ।

शृ गग्राहिता न्याय—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गग्राहिता न्याय] एक न्याय जिसका उपयोग उस समय होता है, जब किसी कठिन काम का एक अंश हो जाने पर शेष अंश का मपादन उसी प्रकार सहज हो जाता है, जिस प्रकार सींग मारनेवाले बँल का एक सींग पकड़ लेने पर दूसरा सींग भी पकड़ लेना सहज हो जाता है ।

शृ गज'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गज] १ अग्रर । अग्रह । २ शर । तीर ।

शृ गज^२—वि० १. शृ गनिर्मित । २ शृ ग से उत्पन्न (को०) ।

शृ गधर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गधर] पर्वत । पहाड़ (को०) ।

शृ गनाभ—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गनाभ] एक प्रकार का विप ।

शृ गनाम्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गनाम्नी] काकडासिंगी । कर्कटशृंगी ।

शृ गपुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गपुर] दे० 'शृंगवेरपुर' ।

शृ गप्रहारी—वि० [सं० शृङ्गप्रहारिन्] सींग से प्रहार करने-वाला (को०) ।

शृ गप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गप्रिय] शिव (को०) ।

शृ गभेदी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गभेदिन्] गुंदा नामक वृक्ष ।

शृ गमूल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गमूल] मिषाडा ।

शृ गमोही—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गमोहिन्] चंपक वृक्ष । चंपा ।

शृ गरुह—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गरुह] मिषाडा ।

शृ गला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गला] मेढासिंगी ।

शृ गवत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवत्] पुराणानुसार कुरुवर्ष की सीमा पर के एक पर्वत का नाम ।

शृ गवाद्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवाद्य] सिंघा । सींग का बना वाजा । सिंगी ।

शृ गवान्—वि० [सं० शृङ्गवत्] शिखरयुक्त । शृगयुक्त । चोटीवाला (को०) ।

शृ गवान्—सञ्ज्ञा पुं० १ पर्वत । २ शृगवत् नामक गिरि (को०) ।

शृ गवृष—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवृष] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शृ गवेर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेर] १ आदी । अदरक । २ सोठ । ३ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम । ४. दे० 'शृगवेरपुर' ।

शृ गवेरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेरक] १ अदरक । आदी । २. सोठ ।

शृ गवेरपुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेरपुर] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम । उ०—(क) ता दिन शृगवेरपुर आए । राम सखा ते समाचार सुनि बारि विलोचन छाए ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) छलि पुरवासिन को आए शृगवेरपुर खबरि निषाद राजै कोऊ कही जाइकै ।—रघुराज (शब्द०) ।

विशेष—रामचंद्र के समय में यह निषाद राजा गुह की राजधानी थी । सम्बन्ध प्रतापगढ़ जिले का सिंगरीरा (आधुनिक इलाहाबाद जिले का गंगातट पर बसा हुआ सिंगरीर) नामक गाँव हो प्राचीन शृगवेरपुर है । गोस्वामों तुलसीदास कृत रामचरितमानस में इसका एक नाम सिंगरीर भी आया है ।

शृंगवेराभमूल—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गवेराभमूल] गुदा नामक वृण ।

शृंगवेरिका—सङ्घा स्त्री० [सं० शृङ्गवेरिका] गोभी ।

शृंगसुख—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गसुख] सिंगी या मिठा नामक बाजा ।

शृंगाट—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गाट] १. सिंघाडा । २. गोखरू । ३. कंटाई । विककत । ४. कामरूप देश के एक पर्वत का नाम । ५. चौराहा । चौमुहानी ।

शृंगाटक—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गाटक] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था । २. एक मर्मस्थान जो मस्तक में उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से मवध रखनेवाली चारों शिराएँ मिलती हैं ।

विशेष—कहते हैं, यह मर्मस्थान चार अंगुण का होता है और इसके चारों ओर से चारों शिराएँ निकलती हैं, इसी से इसे शृंगाटक कहते हैं । यह भी माना जाता है कि इस स्थान पर चोट लगने से तुरन्त मृत्यु हो जाती है ।

३. सिंघाडा । ४. 'शृंगाट' । ५. तीन चोटियोंवाला पहाड़ (को०) । ६. द्वार । दरवाजा (को०) । ७. एक प्रकार का सिंघाडे के आकार का पकवान । समोसा (को०) । ८. चौराहा (को०) । ९. कंटा । कटक (को०) ।

शृंगाटिका—सङ्घा स्त्री० [सं० शृङ्गाटिका] चौमुहानी । चौराहा ।

शृंगाटी—सङ्घा स्त्री० [सं० शृङ्गाटी] जीवती ।

शृंगार—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गार] १. साहित्य के अनुसार नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है और प्रधान माना जाता है । उ०—जाकी यायी भाव रस, सो शृंगार सुहोत । मिलि विभाव अनुभाव पुनि सचारिन के गोत ।—पद्माकर (शब्द०) ।

विशेष—इसमें नायक नायिका के परस्पर मिलन के कारण होनेवाले सुख की परिपुष्टता दिखलाई जाती है । इसका स्थायी भाव रति है । आलवन विभाव नायक और नायिका है । उद्दीपन विभाव सखा, सखी, वन, वाग आदि, विहार, चंद्रचंदन, भ्रमर, भ्रंकार, हाव भाव, मुसकयान तथा विनोद आदि हैं । यही एक रस है जिसमें सचारी विभाव, अनुभाव सब भेदों सहित होता है, और इसी कारण इसे रसरज कहते हैं । इसके देवता विष्णु अथवा कृष्ण माने गए हैं और इसका वर्ण श्याम कहा गया है । यह दो प्रकार का होता है—एक सयोग और दूसरा वियोग या विप्रलभ । नायक नायिका के मिलने को सयोग और उनके विछोड़ को वियोग कहते हैं ।

२. स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित और चित्ताकर्षक बनाना । सजावट । सग सखी मोहें विधि बारा । कीन्हें तन पोढस शृंगारा ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

विशेष—शृंगार १६ कहे गए हैं—अंग में उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना, सेंदुर से माँग भरना, महावर देना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक

पर तिल बनाना, मेहदी लगाना, अर्गजा आदि सुगंधित वस्तुओं का प्रयोग करना, आभूषण पहनना, फूलों की माला धारण करना, पान खाना, मिस्सी लगाना । जंमे—अंग गुची मंजन वसन, माँग महावर केश । तिलक भाल तिल चिबुक में भूषण मेहदी वेश । मिस्सी काजल अर्गजा, वीरो और सुगंध । पुष्प कनी यत होय कर, तब नव सप्त निवध ।

३. किसी चीज को दूसरे सुंदर उपकरणों से सुसज्जित करना । सजावट । बनाव चुनाव । ४. भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमें भक्त अपने आप को पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं । उ०—शात दास्य सख्य वात्सल्य और शृंगार चार पाँचो रस सार विस्तार नीक गए हैं ।—नामादास (शब्द०) । ५. वह जिसे किसी चीज की शोभा बढ़ती हो । उ०—यशुमति कोखि सराहि बलैया लेन लगी ब्रजनार । ऐसी सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रज को शृंगार ।—सूर (शब्द०) । ६. लींग । ७. सेंदुर । ८. अदरक । ९. चूर्ण । चूरन । १०. काला अंगूर । ११. मोना । १२. रति । मंथुन । १३. हाथी की सूँड़ पर निजित सिंदूर की रेखाएँ (को०) ।

शृंगारक^१—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारक] १. सेंदुर । २. लींग । ३. अदरक । आदी । ४. काला अंगूर ।

शृंगारक^२—वि० सींग का बना हुआ । शृंग से निर्मित । सींग सबी (को०) ।

शृंगारगर्व—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारगर्व] १. प्रेम का गर्व । २. सजाव-बनाव का अभिमान ।

शृंगारचेष्टा—सङ्घा स्त्री० [सं० शृङ्गारचेष्टा] शृंगारजन्य क्रिया । काम-चेष्टा । अनुराग, रात, सभोग आदि को व्यक्त करना (को०) ।

शृंगारचेष्टित—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारचेष्टित] दे० 'शृंगारचेष्टा' ।

शृंगारजन्मा—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारजन्मन्] कामदेव या मदन का एक नाम ।

शृंगारण—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारण] १. किसी रूपवती स्त्री को देखकर उसपर अपनी कामवासना प्रकट करने की क्रिया, प्रेम प्रदर्शन । मुहवत जतलाना । २. शृंगार करना । सजाना । सिंगारना ।

शृंगारधारी—वि० [सं० शृङ्गारधारिन्] जिसका शृंगार हुआ हो । जो सजाया गया हो । रंगविरंगे रेखाओं और भूषणों से शोभित ।

शृंगारना—वि० सं० [सं० शृङ्गार से नाम०] आभूषण आदि से या और किसी प्रकार सँवारना । शृंगार करना । सजाना ।

शृंगारभाषित—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारभाषित] प्रेमानाव । प्रणय-वार्ता । केलिसलाप (को०) ।

शृंगारभूषण—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारभूषण] १. सेंदुर । सिंदुर । २. हडताल ।

शृंगारमंडल—सङ्घा पुं० [सं० शृङ्गारमण्डल] १. ब्रज का एक स्थान जहाँ पर श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था ।

२ वह न्यान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलकर कामक्रीडा करते हो। क्रीडास्थल।

शृंगारयोनि—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गारयोनि] मदन या कामदेव का एक नाम।

शृंगाररस—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गाररस] साहित्य शास्त्र के ६ रसों में पहला रस। विशेष दे० 'शृंगार'—१।

शृंगारलज्जा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गारलज्जा] प्रेम वा कामजन्य अनुक्ति के कारण उत्पन्न लज्जा [को०]।

शृंगारविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गारविधि] दे० 'शृंगारवेश'।

शृंगारवेश—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गारवेश] वह सुंदर वेश जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।

शृंगारसहाय—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गारसहाय] नायक नायिका के प्रेम व्यापार में सहायता देनेवाला व्यक्ति। प्रेम व्यापार में मध्यस्थ रहनेवाला व्यक्ति। नर्मसचिव [को०]।

शृंगारहाट—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गार + हि० हाट] १ वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हो। चकला। उ०—पुनि शृंगारहाट मल देसा। किए सिंगार बैठि तहँ वेसा।—जायसी (शब्द०)। २ वह बाजार जहाँ शृंगार की वस्तुएँ विकती हो।

शृंगारिक—वि० [सं शृङ्गारिक] शृंगार संबंधी। न०—ललित लताओं को पहले के अपने सब शृंगारिक भाव। हरिण, नारियो को नयनों की चंचलता का सहज स्वभाव।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

शृंगारिणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गारिणी] १ शृंगार करनेवाली स्त्री। शृंगारप्रिय। २ एक वृक्ष का नाम जिसके प्रत्येक पाद में चार रंग (SS) होते हैं। इसको 'सन्निवृणा', 'कामिनी', 'मोहन', 'लक्ष्मीवारा' और 'लक्ष्मीधर' भी कहते हैं।

शृंगारित—वि० [सं शृङ्गारित] १ जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ। सँवारा हुआ। २ भूषित। सज्जित। सजा हुआ [को०]। ३ प्रेमाभिभूत। कामाभिभूत [को०]। ४ चित्रित। रंगा हुआ [को०]।

शृंगारिया—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गार + हि० इया (प्रत्य०)] १. वह जो देवताओं आदि का शृंगार करता हो। २ नाटक, लीला आदि में भेक अप करनेवाला। वह जो लीला की मूर्तियों का शृंगार करता हो। ३. वह जो तरह तरह के भेस बनाता हो। बहुवचन।

शृंगारी—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गारिन्] १ सुपारी। २ मानिक। चुन्नी। ३ हाथी। ४ शृंगारयुक्त वा कामोत्तेजनायुक्त व्यक्ति [को०]। ५ वेशभूषा। सजावट [को०]। ६ पान का बीड़ा बनाना [को०]। ७ सुंदर वेशभूषा वाला या सजा हुआ व्यक्ति [को०]।

शृंगारी—वि० १. प्रेमासक्त। २. शृंगार या प्रेम संबंधी। ३. सिंहर या गेरु से चित्रित [को०]।

शृंगारहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गारहा] सिंघाडा। शृंगारक।

शृंगालिका, शृंगाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गालिका, शृङ्गाली] विदारिकद।

शृंगारहा—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गारहा] १ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ सिंघाडा।

शृंगारहा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गारहा] १. जीवक। शृंगारहा। २. सिंघाडा।

शृंगि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गि] सिंगी मछली।

शृंगि—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गि] आभूषण में प्रयुक्त वा आभूषण तैयार करने का सोना [को०]।

शृंगि—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गि] वह पशु जिसके सिर पर सींग हो। सींगवाला जानवर। उ०—नखी, नदी और शृंगे जो घरत शस्त्र निज पास। राजवस श्री नारि में कर न कवहुँ विश्वास।—सीताराम (शब्द०)।

शृंगिक—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गिक] १ सिंगिया विष। २ एक प्रकार का वाद्य। सिंगी [को०]।

शृंगिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गिका] १ बहुत प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँड से फूँककर बजाया जाता था। सिंगी। २ अतीस। अतिविष। ३ काकडासिंगी। ४ मेढा सिंगी। ५ पिप्पली। पीपल।

शृंगिए—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गिए] १ जंगली मेढा। मेप। २ वह जो सींगवाला हो [को०]।

शृंगिए—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गिए] १ गाय। गी। २ मल्लिका। मोतिया। ३ मालकगनी। ज्योतिष्मती लता। ४ अतीस। अतिविष।

शृंगी—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गिन्] १ हाथी। हस्ती। २. वृक्ष। पेड़। ३ पर्वत। पहाड़। ४ एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्हो के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तत्त्व ने डसा था। उ०—(क) शृंगी ऋषि तब कियो विचार। प्रजा दुख कर नृपत गुहार।—सूर (शब्द०)। (ख) जहँ शृंगी ऋषिवर तप करही। चर्म नयन सो देखि न परही।—राधा-कृष्ण (शब्द०)। ५ वरगद। ६ पाकड। ७. अमडा। ८ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९. सींगवाला पशु। जैसे,—गौ, बैल, बकरी आदि। १० जीवक नामक ओषधि। ११ सिंगिया नामक विष। १२ सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। उ०—शृंगी शब्द वधरी करा। जरँ सो ठाठ जहाँ पग घरा।—जायसी (शब्द०)। १३ महादेव। शिव। उ०—शृंगी शूली घूरजटि, कुंडलीश त्रिपुरारि। वृषा कपदों मानहर, मृत्युंजय कामारि।—सबल (शब्द०)। १४ एक प्राचीन देश का नाम। उ०—शृंगी सिंधु कच्छ के राई। आए सकल समेत सहार्ई।—सबल (शब्द०)। १५. मेप। मेडा [को०]। १६. वृष। बैल [को०]। १७ शिव का एक राग [को०]।

शृंगी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शृङ्गी] १ अतीस। २ काकडासिंगी। ३ सिंगी मछली। ४ मजीठ। मजिष्ठा। ५ आँवला। ६ पोई का साग। ७ ऋषभक नामक ओषधि। ८ पाकर। ९ बट। बट। १० विष। जहर। ११ वह सोना जिससे गहने बनाए जाते हैं।

शृंगीक—सञ्ज्ञा पु० [सं शृङ्गीक] काकडासिंगी।

शृंगीकनक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गीकनक] वह मोना जिमने गहने बनाए जाते हैं ।

शृंगीगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शृङ्गीगिरि] एक प्राचीन पर्वत का नाम जिसपर शृंगी ऋषि तप किया करते थे । उ०—पूरण काम ज्ञान गन राजा । शृंगी गिरि गवने यति राजा । जह शृंगी ऋषि वर तप करही । चर्म नयन सा देखि न परही ।—राघ कृष्ण (शब्द०) ।

शृंगेरी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गेरी] १ मैसूर (दक्षिण भारत) का एक पर्वत । २ शकराचार्य के मतानुयायी मन्थासिया का एक प्रसिद्ध मठ ।

विशेष—यह स्थान मैसूर (दक्षिण भारत) में है । इसके प्रधान अधीश्वर शकराचार्य कहलाते हैं । आद्य शकराचार्य द्वारा भारत में स्थापित चार पीठों में यह एक है । शृंगीगिरि पर स्थित होने से इसे शृंगेरी कहते हैं ।

शृंगोन्नति—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं० शृङ्गोन्नति] ग्रहों और नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति ।

शृंगोष्णीश—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शृङ्गोष्णीश] सिंह । मृगेंद्र । पचास्य [को०] ।

शृङ्गाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शृङ्गाल' ।

शृङ्ग पुं०—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाल] दे० 'शृङ्गाल' । उ०—बहुतन कक काक शृङ्ग श्वाना । भक्षत करन कटकटी नाना ।—विश्राम (शब्द०) ।

शृङ्गाल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ गीदड़ नामक जंगली जंतु । सियार । जवुक । विशेष दे० 'गीदड़' । उ०—व्याघ्र कुरग शृङ्गाल शशादी । कानन नर वानर चित्तादी ।—सबल (शब्द०) । २ एक दैत्य का नाम । ३. वासुदेव । कृष्ण ।

शृङ्गाल^२—वि० १ कायर । भीरु । डरपोक । २ क्रूर । निष्ठुर । निर्दय । ३ खल । दुष्ट ।

शृङ्गालकटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गालकटक] भरभांड या सत्यानासी नाम का कंटोला क्षुप ।

शृङ्गालकोलि—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] उन्नाव । कर्क धु

शृङ्गालघटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गालघटी] तालमखाना । कोकिलान्त ।

शृङ्गालजवु—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शृङ्गालजम्बु] १ गोडुवा । गोमा ककडी । २. कर्कधु । उन्नाव । ३ तरबुज ।

शृङ्गालजंबू—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शृङ्गालजम्बू] दे० 'शृङ्गालजवु' [को०] ।

शृङ्गालयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरे जन्म में शृङ्गाल रूप में जन्म लेना [को०] ।

शृङ्गालरूप—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] शिव का एक नाम [को०] ।

शृङ्गालविन्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन । पृश्निपर्णी ।

शृङ्गालवृत्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गालवृत्ता] पृश्निपर्णी [को०] ।

शृङ्गालका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदारो वद । २. पृश्निपर्णी । पिठवन । ३. सियारिन । गीदड़ी । ४. लोमड़ी । ५. भय से पलायन की क्रिया ।

शृङ्गाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. तालमखाना । २. विदारो वद । ३. गीदड़ की मादा । गीदड़ी । ४. भयजन्य पलायन [को०] ।

शृङ्गि—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १ गजवाग । भ्रुकुश । अकुम । २ पैना ।

शृङ्ग^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वराध । काढा । २. श्रीटा हुआ दूध ।

शृङ्ग^२—वि० १. उद्वेलित । खौलाया हुआ । २. पकाया हुआ [को०] ।

शृङ्गपाक—वि० [मं०] पूर्णतः पक्व । पूरी तीर से पकाया हुआ [को०] ।

शृङ्गशीत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्रीटाया हुआ पानी जो प्रायः ज्वर के रोगियों को दिया जाता है और वैद्यक के अनुसार रक्तविकार, वमन, ज्वर और सनिपात आदि रोगों का नाशक माना जाता है ।

शृङ्गदर—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] सर्प । साँप [को०] ।

शृङ्गद्व—वि० [मं०] १ आर्द्र । गोला । २. शरीर के भीतर से नीचे की ओर निकाला हुआ (वायु) । जैसे, अपान [को०] ।

शृङ्गु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मलद्वार । गुदा । २. बुद्धि ।

शृङ्गु^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गुदा । मलद्वार ।

शृङ्गु^२—वि० कुत्सित । दुरा । खराब ।

शृङ्गिटि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कम के आठ भाइयों में से एक । उ०—शृङ्गिटि सुनामा फक सुहु राष्ट्रपाल न्यग्रोव । शकु तुष्टि ए शस्त्रवर योधा पूरित क्रोध ।—गोपाल (शब्द०) ।

शेख^१—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शेख] [स्त्री० शेखानी] १. पंगवर मुहम्मद के वंशजों का उपाधि । २. मुसलमानों के चार वर्गों में सबसे पहला वर्ग । ३. मुसलमान उपदेशक । इमलाम धर्म का आचार्य । ४. पोर । बड़ा वूडा ।

शेख पुं^२—सञ्ज्ञा पुं०, वि० [मं० शेख] वि० 'शेख' ।

शेख^३—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शेख] पतित ब्राह्मण का मान्ति । शेख ।

शेखचिल्ली^१—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शख + हि० चिल्ली] १. एक कहिरत मूर्ख व्यक्ति जिसके सबब में बहुत सा विलक्षण और हँसानेवाली कहानियाँ कही जाती हैं । २. बड़े बड़े बड़े बड़े मसूबे बाँवने-वाला । झूठमूठ बड़ी बड़ी बातें हाँकनेवाला । ३. मूल मनसरा ।

शेखचिल्ली^२—वि० चंचल । शरारती । नटखट ।

शेखड़ा—सञ्ज्ञा पुं० [मं० शेख + हि० डा (पत्य०)] शेख का छाकड़ा । पतित ब्राह्मण का पुत्र ।

शेखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शीर्ष । सिर । माथा । २. सिर का आभूषण । मुकुट । किरोट । ३. सिर पर धारण की जानेवाली माला । ४. सिरा । चोटा । शिखर (पर्वत आदि का) । ५. शृंगनावाचक शब्द । मक्कड़ श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु । ६. टण्डुल के पाँववें भेद की सजा (Hs) । यथा, प्रजनाथ । ७. लग्न । लोग [को०] । ८. सिन्धु मूल । सहिजन की जड़ [को०] । ९. सगोत्र में ध्रुव या स्वाया पद का एक भेद ।

शेखरापीठ योजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शेखरापीठयोजन] चौखंड कवामा में से एक कला का नाम । सिर पर या कंठा में फूना अनेक प्रकार की रचना करना ।

शेखरित—वि० [सं०] १ शेखरयुक्त। चूड़ायुक्त। २ जिमसे शेर या चूड़ा निमित्त हो। शेर या चूड़ा के लिये उपयुक्त [को०]।
 शेखरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वड़ा। वड़ाक। २ लींग। देवी पुष्प ३. सहिजन की जड़।

शेखसहो—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शेख + देश० सहो] मुसलमान नियो के उपास्य एक पीर जो कभी कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते हैं।

शेखावत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शेख ?] क्षत्रियों की एक जाति। कदवाहे राजपूतों की एक शाखा। उ०—शेखावत राजा रह्यो, रत्ना पुरोहित तास। करमती दुहिता रही, ताही की छत्रिगम।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, किमी मुसलमान शेर या फकीर की दुआ से इस वंश के प्रवर्तक उत्पन्न हुए थे जिनका नाम इसी कारण शेखाजी पड़ा। जयपुर राज्य के अंतर्गत शेखावाटी नामक स्थान में इस शाखा के राजपूत बसते हैं।

शेखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शेखा] १. गर्व। अहंकार। घमट। २. शान। ऐंठ। प्रकट। ३. अभिमान भरी बात। डींग।

मुहा०—शेखी बघारना, हँसना या मारना = बड़ बड़कर बातें करना। अभिमान से भरी बातें बोलना। डींग मारना। शेखी झडना या निकलना = गर्व चूर्ण होना। मान ध्वस्त होना। ऐसा दड पाना या हानि सहना कि अभिमान दूर हो जाय। शेखी की बोलना = दे० 'शेखी बघारना'। उ०—प्रच्छा घच्छा, बस बहुत शेखी को न बोली।—फिमाणा०, भा० २, पृ० ३४।

शेखीबाज—वि० [फा० शेखी + बाज] १. अभिमानी। घमटी। २. डींग मारनेवाला (व्यक्ति)।

शेजा—सञ्ज्ञा पुं० [दख०] अवीरी नामक वृक्ष। (बुदेल०)।

शेठा—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० सेठ] १. 'सेठ'। उ०—तब ही शेठ शाम जो आए। प्रेमभाव से शीश नवाए।—कशीर सा०, पृ० ४७४।

शेड—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ छाया। छाजन। जैसे, टिन का शेड। २. लैप का ढक्कन। उ०—पास ही टेबिल पर रखे हुए लैप का नीलवर्ण 'शेड' उतारकर, चिमनी निकालकर, जयती एक झाडन से उसे साफ करने लगी।—सन्वासी, पृ० २७।

शेणघटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शेणघटा] दती। उदुन्नरपर्णी।

शेप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष की इन्द्रिय। लिंग। शिश्न। २ अट-कोश। फोता (को०)। ३. दुम। पूँछ। लागूल (को०)।

शेपाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मेवार। शंवाल।

शेफ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. लिंग। शिश्न। २. मुष्क। अडकोश (को०)। ३. पुच्छ। दुम (को०)।

शेफालि, शेफालिका, शेफाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] निर्मुंडी। नील सिधुवार का पौधा।

शेयर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ हिस्सा। भाग। साझा। बाँट। २ किसी कारवार में लगी हुई पूँजी का हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हर एक आदमी लगावे।

शेयर होल्डर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके पास ममिन्सित मूल्य या पूँजी में चलनवाले विभाज्य भाग या कपनों के 'शेयर' या 'हिस्से' हों। हिस्सादार। अर्थात्, जैसे, बैंक के 'जयर होल्डर', कपनों के 'शेयर होल्डर'।

शेर—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. शेरनी की जाति का सनम भयकर प्रसिद्ध हिमक पशु। बाघ, व्याघ्र, नाहर।

यो०—शेरबजर, शेरबच्चा, शेरमर।

मुहा०—शेर का पान = भाँग छानना या बपटा। (भगत)। (चिगाग) शेर पाना = उत्ती बड़ाकर शेरनी नज करना। शेर का पान = पिह की मूँछ के पान। शेर की गाँगा या मोगा = किल्ला। माजार। शेर क मुँह में जाना = प्राणमरट की बगल जाना। शेर के मुँह में जिहवा रखना = अत्यंत बड़ाबुद्धि करके अपने में प्रवल न जाई पस्तु जबरन ले लेना। शेर पकरी या एक घाट पर या एक नाथ पानी पीना = गरीब शेर सब साध नमान त्याग करना। ठाक ठाक दुगाफ करना। शेर हाना = निजय श्रीर पृष्ठ होना। शेर या दाँव में न रहना। स्वच्छाचारो श्रीर उद्भूत होना।

२. अत्यंत वीर श्रीर मादगी पुण्य। बड़ा बहादुर आदमी। (लाक्ष्मीपुत्र)।

शेर—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] फारसी, उर्दू आदि की पविता क दो चरण।

शेर गुलाबी—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] गहरा गुलाबी रंग।

शेरदरवाजा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शेरदरवाजा] गिहदार।

शेरदर्हा—वि० [फा०] १ जिसका मुँह शेर का सा हो। २. जिसके छोत्रों पर शेर का मुँह बना हो।

शेरदर्हा—सञ्ज्ञा पुं० १. वह जिसकी पुँडा शेर के मुँह के आकार की बनी हो। २. वह मान जो आग की धोर चौड़ा और पीछे की ओर पतला और मकरा हो। ३. पुराने उग की एक प्रकार की बहक।

शेरदिल—वि० [फा०] बहादुर। साहसी। निर्भय [अ०]।

शेरनर—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शेर + नर] वीर पुरुष। उ०—नेकपक्ष दिलपाक सभी जवाँमर्द शेरनर।—अकबरी०, पृ० २५।

शेरपजा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शेर + हिं० पजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।

शेरबकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं०] बच्चों का एक खेल।

शेरबच्चा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शेरबच्चा] दे० 'शेरबच्चा'।

शेरबच्चा—सञ्ज्ञा पुं० [फा० शेर + हिं० बच्चा] १. शेर का बच्चा। २. वीरपुत्र। पराक्रमी पुरुष। बहादुर आदमी। ३. एक प्रकार की छोटी बहक।

शेरबवर—सञ्ज्ञा पुं० [फा०] सिंह। केसरी। उ०—बूहा शेरबवर से विरहता कर नके ऐसे ही ये मूल मनुष्या के ध्यान हैं।—कबीर म०, पृ० २०६।

शेरमर्द—वि० [फा०] बहादुर। वीर।

शेरमर्दी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] बहादुरी। वीरता।

शेरवानी—सच्चा स्त्री० [देश०] अग्नेजी ढग की काट का एक प्रकार का अग्रा ।

विशेष—यह घुटनो तक लवा होता है। इसमें बालाबर, कली और चौबगले काट काटकर नहीं लगाए जाते। आगे जिस ओर बटन लगाया जाता है, उसके नीचे का आधा भाग अधिक चौड़ा होता है जिसमें बंद या हुक लगाकर दूसरे भाग के नीचे करके बाँधते या बंद करते हैं। मुमलमानो में इसका रवाज अधिक है।

शेल(७)—सच्चा पुं० [स० शल्य] दे० 'सेल' ।

शेलक—सच्चा पुं० [स०] लिसोडा । लिभेरा । बहुवार वृत्त ।

शेलमुख—सच्चा पुं० [म०] १. श्रीफल । विल्व वृत्त । २. एक प्रकार का फल ।

शेलु—सच्चा पुं० [स०] १. लिसोडा । लभेरा । २. वनमेथी नामक शाक ।

शेलुक—सच्चा पुं० [स०] १. लिसोडा । २. मेथी । ३. लोघ्र वृत्त ।

शेलुका—सच्चा पुं० [स०] वनमेथी ।

शेलुष—सच्चा पुं० [स०] एक प्रकार का लिसोडा ।

शेवतिका—सच्चा स्त्री० [स०] गुलदाउदी ।

शेव^१—सच्चा पुं० [स०] अभ्युदय । उन्नति । वृद्धि । २. ऊँचाई । ३. धन संपत्ति । ४. शिक्षण । लिंग । ५. मछली । ६. सर्प । ७. अग्नि का एक नाम । ८. सोम का एक नाम (को०) ।

शेव^२—सच्चा पुं० [अ०] हजामत बनाने का काम । चौर कर्म ।

क्रि० प्र०—करना ।—कराना ।—होना ।

शेवधि—सच्चा पुं० [स०] १. निधि । खजाना । २. कुवेर की नौ निधियों में एक का नाम (को०) ।

शेवल—सच्चा पुं० [स०] सेवार । शैवाल ।

शेवलनि, शेवलनी—सच्चा स्त्री० [स०] (जिसमें सेवार हो) नदी । शैवालनी ।

शेवा^१—सच्चा स्त्री० [स०] लिंग का आकार । लिंग (को०) ।

शेवा^२—सच्चा पुं० [फा० शेवह] ढग । तरीका । उ०—ये मातम की खिजाँ का देख शेवा । उरुसे बाग हो गई आज बेवा ।—दक्खिनी०, पृ० १६१ ।

शेवाल—सच्चा पुं० [स०] सेवार । शैवाल ।

शेवाली—सच्चा स्त्री० [स०] आकाशमाती । जटामासी का एक भेद ।

शेष^१—सच्चा पुं० [स०] १. वह जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो । बची हुई वस्तु । बाकी । २. वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय । अध्याहार । ३. बड़ी सख्या में से छोटी सख्या घटाने से बची हुई सख्या । बाकी । ४. समाप्ति । अंत । खातमा । ५. परिणाम । फल । ६. स्मारक वस्तु । यादगार की चीज । ७. मरण । नाश । ८. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जो पाताल में है और जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है ।

विशेष—ये 'अनंत' कहे गए हैं और विष्णु भगवान् चार सागर में इन्हीं के ऊपर शयन करते हैं । विष्णुपुराण में शेष, वासुकि

और तक्षक तीनों कद्रु के पुत्र माने गए हैं । पाताल के राजा कही वासुकी कहे गए हैं और कही शेष । कुछ पुराणों के अनुसार गर्ग ऋषि ने ज्योतिष विद्या इन्हीं से पाई थी । लक्ष्मण और बलराम शेष के अवतार कहे गए हैं ।

६. लक्ष्मण । उ०—सोहत शेष सहित रामचंद्र कुशलव जाति के समर सिंधु संचिह्न सुवारचो है ।—केशव (शब्द०) । १०. बलराम । ११. एक प्रजापति का नाम । १२. दिग्गजों में से एक । १३. अनन । परमेश्वर । १४. पिगल में टमण के पाँचवें भेद का नाम । १५. छप्पय छंद के पचोसवें भेद का नाम जिसमें ४६ गुरु, ६० लघु, कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । १६. हनन । घातन । वध (को०) । १७. प्रसाद (को०) । १८. हाथी । १९. जमालगोटा ।

शेष^२—वि० १ जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो । बचा हुआ । बाकी । उ०—यह जीवन का निमेष था, पर आगे यह काल शेष था ।—साकेत, पृ० ३४६ । २. अंत को पहुँचा हुआ । समाप्त । खतम । जैसे,—कार्य शेष होना । उ०—(क) बातें करत शेष निश आई ऊधो गए असनान ।—सूर (शब्द०) । (ख) कर स्नान शेष, उन्मुक्त केश, साजु जा रह्य । स्मृत सुवेश, आई करने को बातचात ।—अनामिका, पृ० १२५ । ३. अतिरिक्त । और दूसरे ।

शेषक—सच्चा पुं० [स०] शेषनाग (को०) ।

शेषकाल—सच्चा पुं० [म०] अंतिम समय । मृत्युकाल (को०) ।

शेषजाति—सच्चा स्त्री० [स०] गणित में बचे हुए अंक को लेन की क्रिया ।

शेषता—सच्चा स्त्री० [स०] शेष का भाव या क्रिया । शेषत्व (को०) ।

शेषत्व—सच्चा पुं० [स०] १. उपकारिता । २. दे० 'शेषता' (को०) ।

शेषवर—सच्चा पुं० [स०] (शेष अर्थात् सर्प को वारण करनेवाले) शिव जी । उ०—शेषवर नाग मुख ब्रह्म विष्णु इनका कलेवर तो काल को कवर है ।—केशव (शब्द०) ।

शेषनाग—सच्चा पुं० [स०] सर्पराज । शेष । विशेष दे० 'शेष'—८ ।

शेषपति—सच्चा पुं० [स०] व्यवस्थापक । मैनेजर (को०) ।

शेषभुक्—वि० [स०] उच्छिष्टभोजी । भोजन से बचे अन्न को खानेवाला ।

शेषभूषण—सच्चा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम (को०) ।

शेषभोजन—सच्चा पुं० [स०] उच्छिष्ट वस्तु का भक्षण (को०) ।

शेषर(७)†—सच्चा पुं० [स०] शेखर । दे० 'शेखर' ।

शेषराज—सच्चा पुं० [स०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं । विद्युल्लेखा ।

शेषरात्रि—सच्चा स्त्री० [स०] रात का पिछला पहर । रात्रि का अंतिम याम ।

शेषव—सच्चा पुं० [स०] कार्य द्वारा कारण का निश्चय । एक अनुमान (को०) ।

शेषवत्—सच्चा पु० [सं०] शेष में अनुमान का एक भेद। कार्य को देखकर कारण का निश्चय। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशयन—सच्चा पु० [सं०] दे० 'शेषशायी'। उ०—लक्ष्मण काकुल हो गए श्रुतुन वन शेषशयन।—अपरा०, पृ० ४१।

शेषशायी—सच्चा पु० [सं०] शेषशायिन्, शेष नाग पर शयन करनेवाले विष्णु।

विशेष—पुराणों के अनुसार प्रलय काल में विष्णु भगवान् तीनों लोकों को अपने पेट में धारण कर चौर मागर में शेषनाग की शैया बनाकर उसपर शयन करते हैं। दुष्ट काल के उपरांत उनको नाभि से एक कमल निकलता है जिसपर ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है और सृष्टि का क्रम फिर से चलता है।

शेषाश—सच्चा पु० [सं०] १ वचा हुआ अश। अयगिष्ठ भाग। २ अंतिम अश। आखिरी भाग।

शेषा—सच्चा स्त्री० [सं०] देवता का चढ़ी हुई वस्तु या दर्शको या उपासकों को बांटी जाय। प्रसाद।

शेषाचल—सच्चा पु० [सं०] दक्षिण का पर्वत। उ०—मुरि मुनीश शेषाचल माहो। वंटे आगे धरि पटकाही।—रघुराज (अब्द०)।

शेषावस्था—सच्चा स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था (की०)।

शेषाहि—सच्चा पु० [सं०] शेषनाग (की०)।

शेषोक्त—वि० [सं०] अंत में कहा या लिखा हुआ।

शेष्य—वि० [सं०] उपेक्षणीय। त्याज्य (की०)।

शेष—सच्चा स्त्री० [अ०] १. चोज। बन्तु। पदार्थ द्रव्य। उ०—(क) सत्र करामत उस कँकर ते है मुझे। जे मँगूँ सा होवे राजिर मैं मुझे।—दक्खिनी०, पृ० १८४। (ज) लगा के बर्क में साकी सुगहिए मैं ला। जिंगर की आग बुझे जल्द जिससे वह शैला।—कविता की०, भा० ४, पृ० २६६। २. वात (की०)। ३. अभिवृद्धि। बढ़ती (की०)।

शैक्य—सच्चा पु० [सं०] १ शिक्य। २ शोका। मिकहर। छोका। २ वर्तन जो छोके पर लटकया हुआ हा (की०)।

शैक्य—वि० १ जो मिकहर पर लटक या हो। २. धारदार। चोखा। नोकदार। नुकीला (की०)।

शैक्यायस—सच्चा पु० [सं०] श्वपात लोहा।

शैक्ष—सच्चा पु० [सं०] १. आचार्य के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला अनुष्य। २ शिक्षा देने योग्य। वह शिष्य जो प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहा हो।

शैक्ष—वि० शिष्यशास्त्रादि शिक्षा संपन्न। शिक्षा के अनुकूल व्यवहार-युक्त (की०)।

शैक्षिक—सच्चा पु० [सं०] शिक्षा विषय को जाननेवाला। 'शिक्षा' का ज्ञाता।

शैक्ष्य—सच्चा पु० [सं०] पाठित्य। पाठ्य। नैपुण्य (की०)।

शैख—सच्चा पु० [सं०] पवित्र ब्राह्मण की सतान। ब्राह्म (स्मृति)।

शैख—सच्चा पु० [अ०] दे० 'शैख' (की०)।

शैखरिक, शैखरेय—सच्चा पु० [सं०] शोका। श्रयानार्ग। चिचटा। लटजारा।

शैखिन—वि० [सं०] शि शि तथै। मयूरमयै। मयूर का (की०)।

शैरय—वि० [सं०] जिनमें जिगा अर्धे नोक है। नोकदार। नुकीला (की०)।

शैग्रव—सच्चा पु० [सं०] सड़जन के बीज। जिम्बुबीज।

शैघ्र, शैघ्र—सच्चा पु० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

शैघ्र, शैघ्र—वि० ज्वोष्ण के योग। तथै रगतवाता।

शैतान—सच्चा पु० [प०] १ ईश्वर के समान तन्मार्ग का विरोध करनेवाली शक्ति या देवता। तन्मार्गमय देवता जो मनुष्य की प्रवृत्तियों के समान में प्रवृत्त कराने के प्रयत्न में रहता है।

विशेष—यह, ईश्वर और इमनाम तीनों परिवारों में दो परस्पर विरुद्ध शक्तियाँ मान्य हैं—एक नव दूरी अन्तः। सम्बन्ध ईश्वर के मगनीयमान में, अन्तः शक्ति सदा विरुद्ध तन्मार्ग में तन्मार्ग रहता है। यदि ईश्वर तन्मार्ग में 'तोरित' में विरुद्ध है कि पृथ्वी आदम और तीनों ईश्वर की शक्तियों में रहकर बड़े शक्तियों में स्वर्ग के उत्थान में रहता करते हैं। शैतान न तीनों की वृत्तियों ज्ञान का वह फल मानने के लिए कहा जिसका ईश्वर न विरोध किया था। इन अपराध पर आदम और तीनों स्वर्ग में शैतान विरुद्ध और इन पृथ्वी पर आग। ईश्वर ने यह मनुष्यसृष्टि की। ऐसा लिखा है कि शैतान भी पहले ईश्वर का गुप्त का एक कर्मिना (पारिपद) था। जब ईश्वर ने आदम या मनुष्य उत्पन्न किया, तब वह ईश्वर ईश्वर से विरुद्ध हो गया और उनकी सृष्टि में उत्पात करने लगा। ईश्वर ने उस स्वर्ग में निवास करने नरक में भेज दिया जहाँ का यह राजा हुआ। मन् और अन्तः इन दो विरुद्ध शक्तियों को भावना वृत्तियों के परस्पर मूलों को गतिविधियों (भावनाशक्तियों) और पारिपदों आदि प्राचीन सम्बन्ध जातिवियों में माना था। परस्पर ने भी भवन्ता में अद्वैतमय (नव शक्ति) और अद्वैतमय (अन्तः शक्ति) दो शक्तियाँ कही हैं।

मुहा.—शैतान का कान में फूँकना = शैतान का बहलाना। शैतान का घबका = दुश्चिन्त। बुरा प्रेरणा। शैतान का बन्ना = बहुत दुष्ट आदमी। शैतान का आत = बहुत लंबा वस्तु। शैतान का आला = बहुत दुष्ट या पाजी शरीर। (गाली)। शैतान की सूरत = अंध रूप। राक्षस की आदत का।

२ दुष्ट देवमान। भूत। प्रेत।

मुहा.—शैतान उत्तरना = (१) भूतप्रेतादि का आवेश जात होना। (२) क्रोधावेश दूर होना। (३) शरास्तापन न रहना। शैतान चढना या लगना = (१) भूत प्रेत का आवेश होना। प्रेत का भाव पडना। (२) क्रोधावेश से आगबलूला हो जाना। शैतान का कान फाटना = शैतान से भी बड़ जाना। (सिर पर) शैतान

सवार होना । (१) किसी का अत्यंत क्रुद्ध होना । (२) किसी बात की हठ पकड़ना । जिद चढ़ना । (३) शैतानी करना ।

यौ०—शैतानपीरत = शैतान की प्रकृतिवाला । महादुष्ट । शैतान सूरत = शैतान की आकृति का । डरावना ।

३ बहुत ही दुष्ट या क्रूर मनुष्य । धीर अत्याचारी । (लाक्षणिक) ।
४ बहुत ही नटखट मनुष्य । बहुत शरारती आदमी । (लाक्षणिक) । ५ क्रोध । तामस । गुस्सा । ६ भगडा । टटा । फसाद । उपद्रव ।

मुहा०—शैतान उठाना = भगडा खडा करना । उपद्रव मचाना ।

शैतानी^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता । शरारत । पाजोपन ।

शैतानी^२—वि० १ शैतान सबधी । शैतान का । जैसे,—शैतानी गोल ।
२ नटखटी से भरा । दुष्टतापूर्ण । जैसे,—शैतानी हरकत ।
३ निकृष्ट । बुरा । पापमय (को०) ।

शैत्य — सञ्ज्ञा पु० [स०] शीत । ठंडक ।

शैथिलिक—वि० [स०] आलसी । मद । ढीलाढाला (को०) ।

शैथिल्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिथिल होने का भाव । शिथिलता । ढिलाई । २ तत्परता का अभाव । फुरती का न होना । सुस्ती । ३. दीर्घसूत्रता (को०) । ४. दुर्बलता । भीरुता (को०) । ५. अस्थिरता । चंचलता (को०) । ६ दृष्टि की शून्यता या रिक्तता (को०) । ७. अवहेला । अवज्ञा । उपेक्षा (को०) ।

शैदा—वि० [फा०] आशिक । आसक्त । मुग्ध । उ०—तुझ हुषन आलमताव का जो आशिको शैदा हुआ । हर खूवरू के हुसन के जलवा सूँ वेपरदा हुआ ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ८ ।
२. बहुत अधिक इच्छुक या आतुर (को०) । ३. उन्मत्त । पागल (को०) ।

यौ०—शैदाए इल्म = ज्ञान प्राप्त करने का अभिलाषी । शैदाए वतन = देशभक्त । शैदाए हुसन = सौंदर्य प्रेमी ।

शैनेय—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिनि का पुत्र सात्यकि नामक वीर यादव, जो कृष्ण का सारथी था ।

विशेष—यह अर्जुन का शिष्य था और महाभारत की लड़ाई में भूरिश्रवा को इसी ने मारा था । यादवों के पारस्परिक मुमलयुद्ध में यह मारा गया था ।

शैन्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिनि के वंशज जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए थे ।

शैव्य—वि० सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शैव्य' (को०) ।

शैरस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पलग या चारपाई का सिरहाना (को०) ।

शैरिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] नीले फूल की कटसरैया ।

शैरीयक, शैरेयक सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'शैरिक' (को०) ।

शैल^१—वि० [स०] १. शिला सबधी । पत्थर का । २. पथरीला । चट्टानी । ३. बडा । कठोर ।

शैल^२—सञ्ज्ञा पुं० १. पर्वत । पहाड । उ०—दीन्हो डारि शैल ते भू पर पुनि जन भीतर डारयो ।—सूर (शब्द०) । २ चट्टान । शिला । ३ छरीला । शैलेय । ४. रसीत । रसवत । ५. शिला-जीत । ६. लिसोडा । बहुवार । ७. बाँध । बधा (को०) ।

८ एक प्रकार का अजन । सुरमा (को०) । ९. पत्थरो का ढेर । प्रस्तरनिचय । प्रस्तरसमूह (को०) । १० सान की सख्या का बोधक शब्द (को०) ।

शैलकंपी—सञ्ज्ञा पुं० [स० शैलकम्पिन्] १. स्कंद का एक अनुचर ।

शैलक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ छरीला । शैलेय । २ गुगुल (को०) ।

शैलकटक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पहाड की ढाल ।

शैलकन्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती ।

शैलकुमारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] पार्वती । उ०—पुनि चढि नदी चले पुरारो । पाणि जोरि तब शैलकुमारो ।—रघुराज (शब्द०) ।

शैलकूट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पहाड की चोटी (को०) ।

शैलगग, (पु) शैलगगा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शैलगङ्गा] गोवर्धनपर्वत की एक नदी जिसमें श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों का अवाहन किया था ।
उ०—इन्हहि आदि तीरथ सकल शैलगग प्रति आहि । जेहि दरसे परसे परम गति कहँ मानव जाहि ।—गोपाल (शब्द०) ।

शैलगन्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स० शैलगन्ध] शबर चंदन । बर्बर चंदन ।

शैलगर्भाह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सिंहली पीपल । २ पखानभेद । पत्थरचूर ।

शैलगुरु^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हिमालय (को०) ।

शैलगुरु^२—वि० पहाड जैसा भारी (को०) ।

शैलज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पथरफूल । छरीला । २ शिलाजतु । शैलाज ।

शैलजन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पहाडी मनुष्य (को०) ।

शैलजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. पर्वत से उत्पन्न । पार्वती । दुर्गा । २. सिंहपिप्पली । ३ गजपिप्पली । ४ पाषाणभेद ।

शैलजात—सञ्ज्ञा पुं० [स०] छरीला । पथरफूल ।

शैलजाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] १ गोल मिर्च । काली मिर्च । २ गज-पिप्पली ।

शैलतटी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] पहाड की तराई । उ०—जब वह मरे साथ टहलने शैलतटी में जाता था । अपनी अमृतमय वाणा में प्रेमसुवा बरसाता था ।—श्रीधर (शब्द०) ।

शैलतनया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती (को०) ।

शैलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'शैलत्व' ।

शैलत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शैल होने का भाव (को०) ।

शैलदुहिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शैलदुहितृ] पार्वती ।

शैलधन्वा—सञ्ज्ञा पुं० [स० शैलधन्वन्] महादेव । शिव ।

शैलधर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] गिरिधर । श्रीकृष्ण ।

शैलघातु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] खनिज द्रव्य । धातु (को०) ।

यौ०—शैलघातुज = शिलाजतु ।

शैलघातुक, शैलघातुज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिलाजतु । शिलाजीत ।

शैलनदिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शैलनन्दिनि] पार्वती ।

शैलनिर्यास—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शिलाजतु । शिलाजीत ।

शैलपति—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हिमालय पहाड ।

शैलपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेत। विल्व वृक्ष।

शैलप्रतिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शिला पर चित्रित, अंकित वा टंकित आकृति [को०]।

शैलपुत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. नी दुर्गाओं में से एक दुर्गा का नाम। ३ गंगा नदी।

शैलपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलवाला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा भरना। निर्भरिणी। निर्भरी।

शैलवीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलावां। शिला।

शैलभित्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पत्थर की तोड़ने या काटने का औजार। दाँकी। छेनी [को०]।

शैलभेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पत्थानभेद।

शैलमल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] गुटज। कोरैया।

शैलमृग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जंगली बकरा [को०]।

शैलरत्न—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलरत्न। गुफा।

शैलराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

शैली—शैलराजतनया, शैलराजपुत्री, शैलराजमुता = पार्वती।

शैलरोही—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मोगरा चावल।

शैलवल्कला—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पापाणभेद। श्वेत पापाण।

शैलशिखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पर्वत की चोटी [को०]।

शैलशिविर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

विशेष—कहते हैं, जब इन्द्र ने पर्वतों पर चढ़ाई की थी, तब कुछ पर्वत समुद्र में जा छिपे थे। इसी से समुद्र का यह नाम पड़ा है।

शैलशेखर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी।

शैलशृंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलशृङ्ग] दे० 'शैलशृङ्ग' [को०]।

शैलसवि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शैलमन्त्रि] पर्वत के बीच की संधि। दर्रा। घाटी [को०]।

शैलसम्भव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलसम्भव] शिलाजीत।

शैलसम्भूत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलसम्भूत] गेहूँ।

शैलसार—सि० [सं०] पर्वत के समान अवन वा स्थिर। दृढ़ [को०]।

शैलसुता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ ज्योतिष्मती [को०]।

शैलसेतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तर निर्मित पुल या बाँध [को०]।

शैलाश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम [को०]।

शैलात्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पथरफूल। छरीला। २ शिलाजीत।

शैलाग्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी [को०]।

शैलाज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शैलज'।

शैलाट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़ी आदमी। परवतिया। २ किरात। ३ मिह। ४ देवलक। देवल का पुजारी [को०]। ५, रफटिक। बिल्लौर।

शैलादि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव के गण, नदी।

शैलाचारा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वतों का आचार, धृति [को०]।

शैलाविष, शैलाविराज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

शैली—शैलाधिपति, शैलानिराजतनया = पार्वती।

शैलाम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विश्वेश्वर में से एक।

शैलाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाली। नट।

शैलामन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बैठने का एक ढग। २. चरखे या पत्थर का बना हुआ एक प्रकार का पात्र [को०]।

शैलामा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शैलपुत्री। पार्वती [को०]।

शैलाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शैलिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शैलिवय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सत्वर्णि। यह व्यक्ति जिसे मन, वक्ता, कर्म में लय न हो। पारसही व्यक्ति।

शैली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल। ढंग। २. परिपाटी। प्रणाली। तर्ज। तरीका। ३. रीति। प्रथा। रम्य विचार। ४. निम्न का ढग। वात्सल्यता का प्रकार। निजार्थों का भाषा की अभिव्यक्त करने की रीति या कीमत। ५—शैली श्रेष्ठ बड़ी तो, गुह का गुह २ जोन। भाषा चरित कथानिष्ठ, बड़े होय मति तीन।—चुराज (नन्दन)। ५. गडाँडा। कडाई। मर्जी। ६ व्याकरण मन्थी का व्याकरण के रूप का बचनों की संहिता विवृति [को०]। ७. प्रस्तरमूर्ति। शिला-प्रतिमा [को०]।

शैलीकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलीकार] कला, साहित्य में विनिष्ट शैली का निमाणा या उनकी विशेष ढंग से अभिव्यक्त करने वाला व्यक्ति।

शैलू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लिमोहा। लमेरा।

शैलू—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चटाई जिसका व्यवहार दक्षिण और गुजरात में होता है।

शैलूक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ बटुआ वृक्ष। लिमोहा। लमेरा। २ कमलफूल। भगीर।

शैलूकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कमलफूल। भगीर।

शैलूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ अभिनय करनेवाला। नाटक निरूपक। सूत्रधार। नट। २ गयरा का स्वामी, रोहित। (रामायण)। ३ धूर्त। ४ विरय वृक्ष। वेन। ५ वह जो मर्गत में ताल देता हो [को०]। ६ तालवाक (को०)।

शैलूपभूषण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हरताल।

शैलूपिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री०] शैलूपिकी] नट वृत्ति से जीवन निर्वह करनेवाली एक जाति। शिलानी। नट।

शैलूपिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] नटी। शैलूप जाति की स्त्री [को०]।

शैलेंद्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलेंद्र] हिमालय।

शैली—शैलेंद्रजा, शैलेंद्रपुत्रिता, शैलेंद्रमुता—(१) हिमालय की पुत्री। पार्वती। (२) गंगा।

शैलेंद्रस्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शैलेंद्रस्य] भोजपत्र। भूर्जपत्र का वृक्ष।

शैलेय'—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैलेयी] १ पत्थर का । पथरीला ।
२ पहाड़ी । ३ पत्थर से उत्पन्न । ४ शिलातुल्य । पत्थर को
तरह कठोर (को०) । ५ जो डिगाया न जा सके । अचल ।

शैलेय'—सञ्ज्ञा पु० १. दे० 'छरीला' । २ शिलाजोत । ३. मूसलो ।
तालपर्णी । ४ सेधा नमक । ५ मिह । ६ भ्रमर ।

शैलेयक—सञ्ज्ञा पु० [म०] दे० 'शैलेय' ।

शैलेयी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती । शैलपुत्री ।

शैलेश्वर—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।

शैलोदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वाल्मीकि रामायण और महाभारत में
वर्णित उत्तर दिशा की एक नदी ।

शैलोद्भूता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पावाणभेद । क्षुद्र पापाण ।

शैल्य'—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैल्या] १ पत्थर का । २ पथरीला ।
३ कड़ा । कठोर ।

शैल्य'—सञ्ज्ञा पु० शिलापन । कड़ापन । कठोरता [को०] ।

शैव'—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैवी] शिव सबधी । शिव का । जैसे,—
शैव दर्शन ।

शैव'—सञ्ज्ञा पु० १ शिव का अनन्य उपासक । महादेव का भक्त ।

विशेष—उपासनाभेद में आधुनिक हिंदू धर्म में तीन मुख्य संप्रदाय
प्रचलित हैं—शैव, शाक्त और वैष्णव । शैव लोग परमेश्वर की
शिवरूप ही मानते हैं । उनके अनुसार शिव ही सृष्टि की उत्पत्ति,
पालन और सहार दोनों करते हैं । पूजा के लिये शिव की
प्रतिमा नहीं बनाई जाती, लिंग ही उनका प्रतीक माना जाता
है । (विशेष दे० 'लिंग') । शैव लोग शरीर में भस्म लगाते,
गले में रुद्राक्ष की माला पहनते और माथे पर त्रिपुंड्र (तीन
आड़ी रेखाएँ) लगाते हैं । शैवों के अनेक भेद हैं जो अधिकतर
दक्षिण में पाए जाते हैं । काश्मीर में भी शैव मत का विशेष
रूप से प्रचार था । शंकराचार्य के अनुयायी अद्वैतवादी भी
उपासनाक्षेत्र में शैव ही होते हैं । शिव की उपासना भारत
तथा उसके निकटवर्ती देशों में बहुत प्राचीन काल में भी
प्रचलित थी । नेपाल, तिब्बत आदि में बौद्ध धर्म के साथ
उसमें मिली हुई शिव की उपासना बहुत दिनों से प्रचलित
चली आती है । ईसा के पूर्व के सिक्की में भी त्रिशूल, नंदी
आदि पाए जाते हैं । ऐसे सिक्के खुरामान तक में पाए गए हैं ।
शको और हूणों में भी शैव धर्म प्रचलित था ।

२ पाण्डुपत अस्त्र । ३ घटूरा । ४ वासक । अडूमा । ५ शुभ ।
कल्याण । शुभता (को०) । ६ आचारभेद तंत्र के अनुसार देवी
की उपासना का एक विशेष आचार (को०) । ७ शिवपुराण
(को०) । ८ त. का एक ग्रंथ (को०) । ९ शैवाल । १०
पाँचवें कृष्ण । वासुदेव । (जैन) ।

शैवपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] बिल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढ़ती
हैं । बेल ।

शैवपुराण—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिवपुराण ।

हि० श० ६-५७

शैवमल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] लिंगिनी नाम की लता । पंचगुरिया ।
शैवल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पद्माक्ष । पद्मकाष्ठ । पद्माल । २.
सेवार । ३ एक पर्वत । ४ एक नाग का नाम । (बौद्ध) ।

शैवलिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] नदी ।

शैवाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] सवार । सेवार ।

शैवी'—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ पार्वती । २ मनसा नाम की देवी ।
३ कल्याण । मंगल ।

शैवी'—वि० स्त्री० शिव सबधिनो । शिव की । जैसे,—शैवी उपासना,
शैवी शक्ति ।

शैव्य'—वि० [स०] १. शिव संबंधी । २ शिवी नरेश या जनपद
सबधी ।

शैव्य'—सञ्ज्ञा पु० १ पांडवों का एक सेनापति । २ श्रीकृष्ण का एक
बोड़ा । ३ अश्व । घोड़ा (को०) ।

शैव्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. चंडकोशिक के अनुसार अयोध्या के सत्य-
व्रती राजा हरिश्चंद्र की रातों का नाम । २ महाभारत के
अनुसार प्रतीन नरेश की पत्नी का नाम (को०) । ३ सूर्यवंशी
राजा सगर की पत्नी जिमका पुत्र असमज या (को०) ।

शैशव'—वि० [म०] शिशु सबधी । बच्चा का । २. बाल्यावस्था
सबधी ।

शैशव'—सञ्ज्ञा पु० १ अनजान बालक की अवस्था । बचपन । २
बच्चों का मा व्यवहार । लडकपन ।

शैशिर'—वि० [म०] १ शिशिर सबधी । २ शिशिर में उत्पन्न । ३.
वर्ष में युक्त । हिमय । बर्फोला (को०) ।

शैशिर'—सञ्ज्ञा पु० १. ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि का
नाम । २ कृष्ण चातक पत्र । काले रंग का पपीहा ।

शैशिरीय—वि० [स०] दे० 'शैशिर' ।

शैशिरीय (शाखा)—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] ऋग्वेद की साकल शाखाओं
में से एक ।

शैशुनाग—सञ्ज्ञा पु० [स०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का
वंशज ।

शैशुमार—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिशुमार सबधी ।

शैश्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] समोग । मैथुन । रति [को०] ।

शैष—सञ्ज्ञा पु० [स०] शिशिर ऋतु । ठंड का मौसम [को०] ।

शैपिक—वि० [स०] शेष या शेषांश सबधी [को०] ।

शैसीक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जाति का नाम ।

शोक—सञ्ज्ञा पु० [स०] इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से उत्पन्न
मनोविकार । किसी प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा आदि से
अथवा दुःखदायी घटना से उत्पन्न क्षोभ । रंज । गम ।

विशेष—साहित्य में 'शोक' नौ स्थायी भावों में से एक है और
करुण रस का मूल है । पुराणों में 'शोक' मृत्यु का पुत्र कहा
गया है ।

यौ०—शोककषित । शोकचर्या । शोकनाश । शोकनिहित, शोक-
परायण, शोकपङ्क्तुत, शोकपीडित, शोकविकल, शोकविह्वल,
शोकवर्ण, शोक संतप्त = शोक से ग्रस्त । शोक से व्याकुल ।

शोककषित—वि० [स०] शोक से पीडित । शोक से दुखी [को०] ।

शोककारक—वि० [स०] शोक उत्पन्न करनेवाला ।

शोकघ्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] अशोक वृक्ष ।

शोकचर्चा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] शब्द की चरचा करना । शोक व्यक्त
करना [को०] ।

शोकनाश, शोकनाशक, शोकनाशन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अशोक
वृक्ष । २ वह जिससे शोक का नाश हो ।

शोकसारण—वि० [स०] शोक + सारण शोक या दुःख को दूर करने-
वाला । उ०—शोकसारण करण कारण, तरण तारण विष्णु
शंकर ।—अर्चना, पृ० ८८ ।

शोकसूचक—वि० [स०] शोक या दुःख को बतानेवाला । शोक को
व्यक्त करनेवाला ।

शोकस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शोक का कारण [को०] ।

शोकहर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक छंद का नाम जिसके प्रत्येक पद में ८,
८, ८, ६ के विश्राम से (अंत गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती
हैं । प्रत्येक पद से दूसरे, चौथे और छठे चौकल में जगण न
पड़े । इसको शुभांगी भी कहते हैं ।

शोकहारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वन बर्वरी । अजगधा ।

शोकाकुल—वि० [स०] शोक से व्याकुल ।

शोकातुर—वि० [स०] शोक से विह्वल वा व्याकुल ।

शोकापनोद, शोकापनोदन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] शोक को दूर करना ।
शोक का निवारण करना [को०] ।

शोकाभिभूत—वि० [स०] शोकांत । शोकातुर ।

शोकारि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कदम । कदव वृक्ष ।

शोकार्त—वि० [स०] शोक से शर्त । शोक से विकल ।

शोकाविष्ट—वि० [स०] जो शोक में अत्यंत सतत और व्याकुल हो ।

शोकावेग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बार बार या रह रहकर शोक का अनुभव
होना [को०] ।

शोकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] रात्रि । रात ।

शोकोपहत—वि० [स०] शोक से विकल ।

शोख—वि० [फा० शोख] १ ढोठ । घृष्ट । प्रगल्भ । २ शरीर । नट-
खट । ३. चंचल । चपल । ४. जो मद या धूमिल न हो । गहरा
और चमकदार । चटकीला । जैसे,—शोख रंग ।

यौ०—शोखवयानी = चटपटा या घृष्टपूर्ण वयान । उ०—
चरब जुवानी हाय हाय । शोखवयानी हाय हाय ।—भारतेंदु
ग्र०, भा० २, पृ० ६७८ ।

शोखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० शोखी] १. घृष्टता । ढिठाई । १. नटखटपना ।
३. चंचलता । चपलता । ४. तेजी । चटकोलापन । जैसे,—रंग
की शोखी ।

शोग^१—सञ्ज्ञा पुं० [स० शोक] दे० 'सोग' । उ०—आज्ञा भई फिरघो
मव लोगा । सब कहँ भयो राम कर शोगा ।—कदोर सा०,
पृ० ३६ ।

शोच—सञ्ज्ञा पुं० [स० शोचन] १ दुःख । रंज । शोक । अफमोस । २
पीडा । वेदना (को०) । ३. चिंता । फिर । खटका ।

शोचन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १ शोक
करना । रंज करना । २. चिंता करना । ३. शोक । रज ।

शोचनीय—वि० [म०] १. शोक करने योग्य । जिसकी दशा देखकर
दुःख हो । २. जिससे दुःख उत्पन्न हो । दुःखोत्पादक । ३. जो
बहुत हीन या बुरा हो ।

शोचि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ ली । लपट । २ दीप्ति । चमक । ३.
वर्ण । रंग ।

शोचितव्य—वि० [स०] दे० 'शोचनीय' [को०] ।

शोचिष्केश—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि । २ सूर्य । ३. चित्रवृक्ष ।
चीता ।

शोच्य—वि० [म०] दे० 'शोचनीय' [को०] ।

शोटीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बल वीर्य । पराक्रम ।

शोठ—वि० [स०] १. मूर्ख । बेवकूफ । २. नीच । खोटा । ३.
आलसी । निकम्मा । ४. घूर्त । ठग ।

शोए^१—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ लाल रंग । २. लाली । अरुणता । ३.
अग्नि । आग । ४. सिंदूर । सेंदुर । ५. रक्त । रश्मि । खून ।
६. पद्मराग मणि । मानिक । ७. रक्त पुनर्नवा । लाल गदह-
पूरना । ८. सोना पाठा । ९. लाल गन्ना । १०. एक नद का
नाम । विशेष दे० 'सोन' । ११. ललाई लिए भूरे रंग का, मिग
वर्ण का घोडा (को०) । १२. मंगल ग्रह (को०) ।

शोए^२—वि० १ लाल । गहरा लाल । २. लाख के रंग का । लालिमा
युक्त भूरा । ३. पीत । पीला [को०] ।

शोएक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. सोनापाठा । २. लाल गदहपूरना । ३.
लाल गन्ना ।

शोएगिरि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक पहाड़ी का नाम जिसपर मगध देश
की पुरानी राजधानी 'राजग्रह' थी ।

शोएभिटिका, शोएभिट्टी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० शोएभिट्टिका, शोए-
भिट्टी] पोली कटसरैया ।

शोएपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] रक्त पुनर्नवा । लाल गदहपूरना ।

शोएसन्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] लाल कमल ।

शोएपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कचनार । कोविदार वृक्ष ।

शोएपुष्पक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. दे० 'शोएपुष्प' । २. वह जिसके फूल
शोए वर्ण के हों [को०] ।

शोएपुष्पी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सिंदूरपुष्पी । सेंदुरिया ।

शोएसद्र—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सोन नदी ।

शोएमणि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पद्मराग मणि । मानिक [को०] ।

शोएरत्न—सञ्ज्ञा पुं० [स०] मानिक । लाल ।

शोणसंभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं शोणसंभव] पिपलामूल । पिप्पलोलू ।
शोणहय—सञ्ज्ञा पुं० [सं] महाभारत के अनुसार द्रोणाचार्य का एक नाम । [को०] ।

शोणावु—सञ्ज्ञा पुं० [सं शोणाम्बु] प्रलय काल के मेघों में से एक मेघ का नाम ।

शोणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १ वह स्त्री जिसका वर्ण शोण हो [को०] ।
२ सोन नदी । ३ लाल कटसरैया । ४, श्योनाक । सोना-पाठा [को०] ।

शोणाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] श्योनाक वृक्ष [को०] ।

शोणाश्म—सञ्ज्ञा पुं० [मं शोणाश्म] १. लाल पत्थर । २. पद्मराग । मानिक [को०] ।

शोणित^१—वि० [सं] लाल । रक्त वर्ण का ।

शोणित^२—सञ्ज्ञा पुं० १ रक्त । रुधिर । खून । उ०—आहत जन के शोणित पर ही गिरी भरत रोदन धारा ।—साकेत, पृ० ३८१ ।
२. पीधो का रस । ३. केसर । जाफरान । ४. ई गुर । शिगरफ । ५. ताम्र घातु । ताँबा । ६. तृणकेशर ।

शोणितचदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं शोणितचन्दन] लाल चदन ।

शोणितप—वि० [मं] रक्त पीनेवाला [को०] ।

शोणितपारणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] उपवास आदि के बाद खून या मांस का भोजन [को०] ।

शोणितपित्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं] एक प्रकार का रोग जिसमें रक्तवाहिनो [शराएँ] फट जाती हैं और रक्तस्राव होने लगता है [को०] ।

शोणितपुर—सञ्ज्ञा पुं० [सं] बाणासुर की राजधानी ।

शोणितभृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं] शरीरधारी । शरीरवाला । शरीरी [को०] ।

शोणितमेह—सञ्ज्ञा पुं० [सं] लाल प्रमेह ।

शोणितमेहो—सञ्ज्ञा पुं० [सं शोणितमेह] शोणित मेह का रागी । प्रमेह का रक्त रोगी [को०] ।

शोणितशर्करा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] शहद की चीनी ।

शोणितशोण—वि० [सं] खून से लाल ।

यौ०—शोणितशोणपाणि = खून से लाल लाल हाथवाला ।

शोणितार्बुद—सञ्ज्ञा पुं० [सं] एक प्रकार का शूक रोग जिसमें लिंग पर फुसियाँ निकलती हैं ।

शोणितार्श—सञ्ज्ञा पुं० [सं] अर्श की पलक का एक रोग जिसमें पलकों की कोर पर कोमल और लाल रंग का मांस का अकुर उत्पन्न होता है ।

शोणितार्ह्वय—सञ्ज्ञा पुं० [सं] केसर । कुंकुम ।

शोणितोत्पल—सञ्ज्ञा पुं० [सं] लाल कमल । कोकनद [को०] ।

शोणितोपल—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. मानिक । लाल । शोणाष्म । २. लाल वर्ण का पत्थर [को०] ।

शोणिमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं शोणिमन्] अरुणिमा । लालिमा [को०] ।

शोणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १. वह स्त्री जिसके शरीर का रंग लाल कमल के समान हो । रक्तोत्पल वर्ण की स्त्री । २. शाण वर्ण की बढवा [को०] ।

शोणोपल—सञ्ज्ञा पुं० [मं] १. मानिक । लाल । २. लाल वर्ण का पत्थर [को०] ।

शोथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. किसी अंग का फूटना । सूजन । वरम ।
२. अंग में सूजन होने का रोग । वरम ।

विशेष—जब दूषित रक्त, पित्त या कफ कुपित वायु ने नमो में रुद्ध हो जाता है, तब सूजन होती है । शोथ तीन प्रकार का कहा गया है—वातज, पित्तज और कफज । आमाशय में दोष होने से छाती के ऊपर, पक्वाशय में होने से छाती के नीचे और मलाशय में होने से कमर से पैर तक सारे शरीर में शोथ होता है । शरीर के मध्य भाग या सर्वांग का शोथ कष्टसाध्य कहा गया है । जो शोथ केवल अर्वांग में उत्पन्न होकर ऊपर की ओर बढ़ता हो, वह प्रायः घातक होता है । पर पांडु आदि रोगों में पैर से ऊपर की ओर बढ़नेवाला शोथ घातक नहीं होता । स्त्रियों को कुक्ष, उदर, गर्भस्थान या गले का शोथ असाध्य होता है । जो शोथ बहुत भारी और कड़ा हो और जिसमें श्वास, प्यास, दुर्बलता, अरुचि आदि उद्भव भा उत्पन्न हो, वह भी असाध्य कहा गया है ।

शोथक—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. दं 'शाय' । २. मुरदासग ।

शोथघ्न—सञ्ज्ञा पुं०, वि० [सं] दे० 'शोथजित्' [को०] ।

शोथघ्नो—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं] १. गदहपूरना । पुनर्नवा । २. शालपर्णी । सरिवन ।

शोथजित्^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. भिलावाँ । भल्लातक । २. पुनर्नवा ।

शोथजित्^२—वि० शोथ दूर करनेवाला । जिससे शोथ रोग दूर हो ।

शोथजिह्वा—सञ्ज्ञा पुं० [सं] पुनर्नवा । गदहपूरणा ।

शोथरोग—सञ्ज्ञा पुं० [सं] शोथ या सूजन का रोग ।

शोथहृत्—सञ्ज्ञा पुं० [सं] भिलावाँ । भल्लातक ।

शोथारि—सञ्ज्ञा पुं० [मं] पुनर्नवा । गदहपूरना ।

शोद्धव्य—वि० [सं] जिसे शुद्ध करना हो । शोधने योग्य ।

शोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. शुद्धि सस्कार । सफाई । २. ठीक किया जाना । दुरुस्ती । ३. चुकता होना । अदा होना । बेदाक होना । जैसे,—ऋण का शोध होना । ४. जाँच । परीक्षा । ५. प्रतिकार । प्रतिशोध । बदला [को०] । ६. खोज । ढूँढ़ । तलाश । अनुमधान । अन्वेषण । उ०—करते हैं शानो विज्ञानो नित्य नए सत्यो का शोध ।—साकेत, पृ० ३७३ ।

शोधक^१—वि० [वि० स्त्री० शोधका, शोधिका] शोध करनेवाला । शुद्ध करनेवाला ।

शोधक^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं] १. शोधनेवाला । शुद्ध या साफ करनेवाला । उ०—ससार को बटुषा विरोध कुचित शोधक जानि । ठाढ़ी भई तह शाति सो करुणा सखी सुख मानि ।—केशव (शब्द०) । २. सुवार करनेवाला । सुवारक । सशोधक । ३. ढूँढ़नेवाला । खोजनेवाला । अनुसंधान करनेवाला । ४. गणित में वह सख्या जिसे घटाने से ठीक वर्गमूल निकल । ५. रेचक । रेचन करनेवाला । जैसे, मलशोधक [को०] ।

शोधन—सखा पुं० [मं०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य, शोध्य]।

१ शुद्ध करना। साफ करना। २. दुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। जैसे,—लेखशोधन। ३ धातुधातु का शोधन रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। जैसे,—पाद या पाषाण। ४ छाननी। जंच। ५ राजना। हूँटना। तलाश करना। अनुसंधान करना। ६ हृष्टा चुराया। अया करना। बेयाक करना। ७ किसी पाप से मुक्त होने का संस्कार। प्रायश्चित्त। ८ चाल सुधारने के लिये दंड। मजा। ९ टटार साफ करना। मफाई के लिये दूर करना। साफ करना। १० दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन। ११ मुरसम। कुपुष्ट। १२ मल। बिछा। १३ घटाना। निराशा। (गणित)। १४ नीबू। १५ हीरा समीप। १६ उन्नत। उत्पादन। हटाना। दूर करना। जैसे,—कटजनीवा। १७ ज्योतिष के अनुसार जिस शुभ कार्य का समय शुभ शुभ दिन, मास योगादि का विचार। जैन,—त्यजनीवा (श्री०)। १८ बदला। प्रतिशोध। जैन,—वीथोन (को०)।

शोधन'—वि० शुद्ध करनेवाला। साफ करनेवाला (को०)।

शोधनक—सखा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल के व्यापार या पर्यटन का स्थान साफ और ठीक करनेवाला यथाराज, नमचारि।

शोधना—क्रि० सं० [सं० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ करना। मैला आदि निकालकर स्वच्छ करना। २ दुस्त करना। ठीक करना। घुटि या दाप दूर करना। सुधारना। जैसे,—लेख शोधना। ३ शोधक के लिये धातु का तैयार करना। जैसे,—पाद शोधना। ४ हूँटना। गोजना। अन्वेषण करना। तलाश करना। उ०—रहल, लग्न, मन्त्र शाधि नीनी वेदध्वनि।—सूर (शब्द०)।

शोधनी—सखा स्त्री० [सं०] १ मार्जनी। मट्टू। पुत्राग। २ ताम्रवल्ली। ३ नील। ४ हृष्टि नामक अष्टवर्गोप शोधनी।

शोधनीवीज—सखा पुं० [सं०] जमानगोटे का बीज।

शोधनीय—वि० [सं०] १ शुद्ध करने योग्य। २. पुत्रान योग्य। ३ हूँटने योग्य।

शोधवाना—क्रि० सं० [मं० शोधना का प्रे० रूप] १ शोधने का काम करना। शुद्ध करना। दुस्त करना। २ हूँटना। तलाश करना।

शोधवैया—सखा पुं० [हि०] दे० 'शोधया'।

शोध—वि० [सं० शोधक] धातु शोधन करनेवाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधित—वि० [सं०] १. शुद्ध किया हुआ। स्वच्छ। संस्तर। ३ छाना हुआ। ४ मशोधित। जिसका सुधार किया गया हो। ५ जो चुकता कर दिया गया हो। जैसे, कर्ज। ६ जिसे अन्वेषण किया गया हो। अन्वेषित। ७ हटाया हुआ। दूर किया हुआ (को०)।

शोधैया—सखा पुं० [हि० शोध+ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला। सुधारक। उ०—मगल मदा ही करे राम मुगलेश करे राम रसिकावली शोधैया श्री शोधैया को।—रघुराज (शब्द०)।

शोध्य'—वि० [सं०] शोधन करने योग्य (वि०)।

शोध्य'—सखा पुं० १. तैयार। जो शोधन द्वारा तैयार हो या शोधन द्वारा तैयार हो। २. जिसका शोधन किया गया हो। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोध्य'—सखा पुं० [सं०] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधनी—सखा स्त्री० [सं०] १ मार्जनी। मट्टू। पुत्राग। २ ताम्रवल्ली। ३ नील। ४ हृष्टि नामक अष्टवर्गोप शोधनी।

शोधनीय'—सखा पुं० [सं०] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधनान्न'—सखा पुं० [सं०] १ शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ४. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ५. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधर'—सखा पुं० [सं० शोधन] शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ४. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ५. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधन'—वि० [सं०] १ शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ४. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ५. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ६. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

शोधन'—सखा पुं० १ शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। २. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ३. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ४. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ५. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ६. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ७. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ८. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। ९. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)। १०. शोधन करने योग्य। यन्त्रिपुरा (वि०)।

कमल । १० रंगा । ११ आभूषण । गहना । १२ मंगल ।
कल्याण । शुभ । १३. धर्म । पुण्य । १४ दीप्ति । सौंदर्य । १५
मिदूर । सँदूर । १६ ककुट । १७ अच्छे फन की प्राप्ति के
लिये अग्नि में दी हुई आहुत (को०) ।

शोभनक—सञ्ज्ञा पु० [स०] सहिजन या शाभाजन का वृक्ष ।

शोभनतम—वि० [स० शोभन + तम (प्रत्य०)] अत्यंत सुंदर । उ०—
अचल हिमालय का शोभनतम, लता कलित श्रुचि सानु शरीर ।
—कामायनी, पृ० २६ ।

शोभना—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सुंदरी स्त्री । २. हलदी । हरिद्रा ।
३ गौराचन । ४ स्कंद की अनुचरी एक मातृका ।

शोभना पुं^२—क्रि० म० [म० शोभन] शोभित होना । सोहना ।
उ०—फूल की झालर बनी हूँ शोभती, गव सौरभ वायु
मडल की तहे ।—भरना, पृ० ३५ ।

शोभनिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का नट या अभिनयकर्ता ।

शोभनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी जो मालकोश राग की स्त्री
कही जाती है ।

शोभनीय—वि० [म०] सुंदर । मनोहर [को०] ।

शोभनीया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गोरखमुंडा ।

शाभाजन—सञ्ज्ञा पु० [स० शोभाजन] सहिजन का पेड़ ।

शोभा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ दीप्ति । कांति । चमक । २ छवि ।
मुंदरता । छटा । सजीलापन । रुचिरता ।

मुहा०—शोभा देना = प्रच्छा लगना । सुंदर लगना । शोभा
बरसना = शोभा या सौंदर्य की अधिकता होना ।

३ सजावट । ४. उत्तम गुण । ५ वर्ण । रंग । ६ बीस अक्षरों का
एक वर्णवृत्त जिसमें क्रम से यगण, मगण, दो नगण, दो तगण
और दो गुरु हाते हैं तथा ६, ७ और ८ पर यति होती है ।
७ हलदी । हरिद्रा । ८ गौराचन । ९ फारसी संगीत में
सुकाम की स्त्रियाँ जो चौबीस होती हैं । १०. काव्य के दस
गुणों में से एक (को०) । ११ एक काव्यालंकार (को०) ।

शोभाकर^१—वि० [स०] सौंदर्यकारक । शोभित करनेवाला ।

शोभाकर^२—सञ्ज्ञा पुं० १. शोभा की खान । २. अत्यंत सुंदर व्यक्ति ।
सौंदर्य का आकर ।

शोभातिशायी—वि० [स० शोभा + अतिशायिन्] शोभावर्धक ।
सौंदर्य बढ़ानेवाला । उ०—आचार्यों ने भी अलंकारों को
काव्यशोभाकर, शोभातिशायी आदि ही कहा है ।—रस०,
पृ० ५२ ।

शोभाघर—वि० [स०] मनोहर [को०] ।

शोभाघायक—वि० [स०] उपकारक । जिससे सौंदर्य में वृद्धि हो । शोभा-
कर । उ०—किंतु वामन ने उस व्यंग्यार्थ को भी वाच्यार्थ का
उपकारक (शोभाघायक) बनाकर अलंकारों की कुच्छि (कोख)
में ही रख दिया था ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४४२ ।

शोभाघारक—वि० [स०] दे० 'शोभाघर' [को०] ।

शोभानक—सञ्ज्ञा पु० [स०] शोभाजन वृक्ष । सहिजन ।

शोभान्वित—वि० [स०] शोभा से युक्त । सुंदर । मजीला ।

शोभामय—वि० [स०] सुंदरता से पूर्ण [को०] ।

शोभायमान—वि० [स०] सोहता हुआ । सुंदर ।

शोभित—वि० [स०] १ शोभा में युक्त । सुंदर । सजीला । २ अच्छा
लगता हुआ । मजा हुआ । ३ विद्यमान । उपस्थित । विराजता
हुआ । जैसे,—सिंहासन पर शोभित होना ।

शोभिनी—वि० [स०] शोभा देनेवाली । मुंदरी [को०] ।

शोभी—वि० [स० शोभिन्] १. दीप्तिमान् । कांतिमान् । २ शोभा-
युक्त । सुंदर । मनोहर [को०] ।

शोर—सञ्ज्ञा पु० [फा०] १ जोर की आवाज । हल्ला । गुल गपाड़ा ।
कोलाहल । उ०—(क) जहाँ तहाँ शोर भारी भीर नर नारिन
की सबही की छूटि गई लाज यहि भाई कै ।—केशव (शब्द०) ।
(ख) घननि की घोर सुनि मोरनि के शोर नुनि नुनि केशव
अलाप आली जन को ।—केशव (शब्द०) । २. धूम ।
प्रसिद्धि । जैसे,—उसके बड़प्पन का शोर हो गया है । उ०—
आप द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जा । प्रद्युम्न
लरे सप्त दश दो दिन रच हार नहि माने ।—सूर (शब्द०) ।

क्रि० पु०—करना ।—मचना ।—मचाना ।

यौ०—शोरगुल = हल्ला । कोलाहल । घमाचोड़ ।

३. खारी नमक (को०) । ४. ऊसर भूमि (को०) । ५ उन्माद ।
पागलपन (को०) ।

शोरवा—सञ्ज्ञा पु० [फा०] १ किमी उवाली हुई वस्तु का पाना ।
भोल । जूस । रमा । २. पके हुए मांस का पाना ।

शोरा—सञ्ज्ञा पु० [फा० शोर] एक प्रकार का चार जो मिट्टी से
निकलता है ।

विशेष—यह बहुत ठंडा होता है और इसीलिये पाना ठंडा करने के
काम में आता है । वातद में भी इसका योग रहता है और
सुनार इससे गहने भी साफ करते हैं । खारी मिट्टी में क्यागियाँ
बनाकर इसे जमाते हैं । साफ किए हुए बड़िया शोर को कलमों
शारा कहते हैं ।

मुहा०—शोरे की पुतली = बहुत गोरी स्त्री ।

शोरा आलू—सञ्ज्ञा पु० [हि० शोरा + आलू] बन आलू ।

शोरापुस्त—वि० [फा०] लडाका । भगडा लू । फमादी ।

शोरिश—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा०] १. खलबली । हलचल । २ बलवा ।
बगावत । उपद्रव । दगा ।

शोरी—सञ्ज्ञा पु० [फा० शोर] १. फारसी संगीत में एक मुकाम का
पुत्र । २. एक पंजाबी प्रसिद्ध गवैया जिसने टप्पा नाम का गीत
निकाला था ।

शोला—सञ्ज्ञा पु० [दिश०] एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हल्की
होती है ।

विशेष—पानी पर तैरनेवाले जाल में इसकी लकड़ी लगाई जाती
है । लकड़ी का सफेद हीर फूट, खिलोने तथा विवाह के मुकुट
बनाने के काम में आता है ।

शीला^१—संज्ञा पुं० [प्र०] आग की लकड़। ज्वाल।

शी०—शीलागर्ग=अग्निवर्षा। आग बरसना। शीतामिजाज=अत्यधिक शीतोत्पन्नता का। गुरुत्व। शीलाह्वय, शीलाह्व=लाल लाल गातावाला। रक्तभक्त शीलावाला।

शीली—संज्ञा स्त्री० [सं०] उनहलदी। वनहिरिद्रा।

शीलेप—संज्ञा पुं० [सं०] वातात्मिक रागावस्था में वर्णित एक प्रकार का अन्न।

शीशा—संज्ञा पुं० [का० शोशरु] १ निकला हुई नोक। २. अरबी फारसी के सोन या शान अक्षर का बदना या नोक (शी०)। ३. अद्भुत या अलौकिक वात। बुद्धि। ४. भगवान् सदा करनेवाला वात। ५. लगती बात। व्यंग्य।

क्रि० ०—छाज्वा।

६ खड। दुकडा (की०)। ७ मोन या चाँदी का टला (की०)।

शोष—संज्ञा पुं० [मं०] १ सूखन का भाग। सुख होना। रम या गोलापन दूर होने का भाव। २. छीजन का भाव। क्षय। ३. शरीर का घुलना या क्षीण होना। ४. एा रोग जिसमें शरीर सूखता या क्षीण होता जाता है। राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी।

विशेष—वस्तु में शोष रोग के छद्म कारण बताए गए हैं—आवक शोष, जरायत्वा, अग्नि मार्ग चयना, अग्नि व्यापान, अधिक स्तोत्रप्रण और हृदय में चोट लगना। इस रोग में शरीर क्षीण होता जाता है, मल ज्वर और खाँसी रहती है, पतली, छाती और कमर में पीछा रहती है तथा अतिथार भा हो जाता है।

५. उच्चों का सुखही रोग। ६. नुशही। सूखापन।

शोषक—संज्ञा पुं० [मं०] [श्री० शोषित] १. जन, रम या तरी खीचनवाला। सासनावाला। २. सुखानेवाला। सुख करवावाला। ३. घुमानवाला। क्षीण करनेवाला। ४. नाश करनेवाला। ५. दूर करनेवाला। ६. समाज का वह व्यक्ति या वग जो स्वल्पतम मूल्य देकर परिश्रम करनेवालों के परिश्रम का फल भोगता हो।

विशेष—मानवमांस के अनुसार समाज दो वर्गों में विभक्त है। शोषक और शोषित। शोषक वह वर्ग है जो पैसा लगाकर दूसरा से काम कराकर मुनाफा कमाता है और सभी सुविधाओं का उपभोग करता है। जो वर्ग मजदूर है, मेहनत करता है और सुविधा से वंचित रहता है वह शोषित वर्ग है।

शोषकवर्ग—संज्ञा पुं० [मं० शोषक + वर्ग] शोषको का समूह। १० 'शोषक'—५।

शोषघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] उनप्याज।

शोषण^१—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोषी, शोषित, शोषणीय] १. जल या रस खीचना। सापना। २. मुखाना। सुख करना। तरी या गोलापन दूर करना। ३. हरापन या ताजापन दूर करना। ४. घुमाना। क्षीण करना। क्षय करना। ५. नाश करना। दूर करना। न रहने देना। ६. कामदेव के एक बाण का

नाम। ७. मोठ। श्रुति। ८. शोषात्त मुख। शोषावात। ९. पिप्पली। पीपल। १०. एक प्रकार की अग्नि (१०)। ११. शिरीष के बीज का घृतिरा नाम पडाया (१०)।

शोषण^२—वि० शोष करनेवाला, शोषण करनेवाला।

शोषणीय—वि० [मं०] शोषनीय। शोषनीय।

शोषयितव्य—वि० [मं०] १. शोषनीय। शोषनीय। २. जिसे सुखाना है।

शोषयिता—वि० [मं०] शोषयितृ। शोषयिता।

शोषयितृ—संज्ञा पुं० [सं०] शोष (१०)।

शोषननय—संज्ञा पुं० [मं०] शोषननय। शोषननय।

शोषहा—संज्ञा पुं० [मं०] शोष (१०) [शोष रोग का एक प्रकार]। शोष। शोषा। शोषा। शोषा।

शोषापहा—संज्ञा पुं० [मं०] शोष (१०)।

शोषिणी—संज्ञा स्त्री० [मं०] शोष (१०)। शोष (१०)।

शोषित—वि० [मं०] १. शोषित। शोषित। २. शोषित। शोषित। ३. शोषित। शोषित। ४. शोषित। शोषित। ५. शोषित। शोषित।

शोषितवर्ग—संज्ञा पुं० [मं०] शोषितवर्ग। शोषितवर्ग। शोषितवर्ग। शोषितवर्ग। शोषितवर्ग। शोषितवर्ग।

शोषी—वि० [मं०] [मं०] शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)।

शोषु—संज्ञा पुं० [मं०] शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)।

शोष्य—वि० [मं०] शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)। शोष (१०)।

शोहदा—संज्ञा पुं० [मं०] शोह (१०)। शोह (१०)। शोह (१०)। शोह (१०)। शोह (१०)। शोह (१०)।

शोहदापन—संज्ञा पुं० [वि० शोहदा + पन (परि०)] १. शोहपन। २. शोहपन।

शोहरत—संज्ञा पुं० [मं०] १. शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत।

शोहरा—संज्ञा पुं० [मं०] शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत। शोहरत।

शींग—संज्ञा पुं० [सं०] शोङ्ग। शोङ्ग। शोङ्ग। शोङ्ग। शोङ्ग। शोङ्ग।

शींगिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शोङ्गपुत्र। शोङ्गपुत्र। शोङ्गपुत्र। शोङ्गपुत्र। शोङ्गपुत्र। शोङ्गपुत्र।

शींगेय—संज्ञा पुं० [सं०] शोङ्गेय। शोङ्गेय। शोङ्गेय। शोङ्गेय। शोङ्गेय। शोङ्गेय।

शौड'

शौड'—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्ड] १. मुर्गा। कुक्कुट पक्षी। २. पुनेरा।
देवधान्य। ३. वह जो मद्य पीकर मतवाला हुआ हो। मस्त।
मत्ता।

शौड'—वि० १ मद्यप। शरावी। २ उत्तेजित। नशे में चूर। ३
(समास में) कुशल। दक्ष [को०]।

शौडता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डता] मत्तता। बदमस्ती।

शौडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डा] मद्य। शराव [को०]।

शौडायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डायन] प्राचीन काल की एक योद्धा
जाति का नाम।

शौडि—वि० [सं० शौण्डि] १ चतुर। दक्ष। कुशल। २. आसक्त।
अनुरक्त [को०]।

शौडिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डिक] [स्त्री० शौण्डिकी] १ प्राचीन काल
की एक प्रसिद्ध जाति जिसका व्यवसाय मद्य बनाना और
वेचना था।

विशेष—पराशरपद्धति में इस जाति की उत्पत्ति कवर्त पिता
और गांधिका माता से लिखी है, और मनु ने कहा है कि इस
जाति के आदमी के घर भोजन नहीं करना चाहिए।

२ पिप्पलीमूल।

शौडिकप्रिय—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डिकप्रिय] ग्राम।

शौडिकागार—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डिकागार] शराव की दूकान।
शरावखाना। होली। कलवरिया।

शौडिकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डिकी] शौडिक जाति की स्त्री [को०]।

शौडिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डिनी] दे० 'शौडिकी'।

शौडी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डि] प्राचीन काल की शौडिक नामक
जाति।

शौडी^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डी] १ पीपल। पिप्पली। २. चव्य।
चविका। कटभी वृक्ष। ३. मिर्च।

शौडिर—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डिर] दे० 'शौडीर'।

शौडीर^१—वि० [सं० शौण्डिर] १ बहुत घमंड करनेवाला। प्रहकारी।
अभिमानी। २ उत्तुंग। उन्नत [को०]। ३ समर्थ [को०]।

शौडीर^२—सञ्ज्ञा पुं० अभिमान। गर्व। घमंड [को०]।

शौडीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शौण्डीर्य] १. शूरत्व। नायकत्व। २ अभि-
मान। घमंड। गर्व। शान [को०]।

शौक—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शौक] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या निरंतर
भोग के लिये अथवा कोई कार्य करत रहने के लिये होनेवाली
तीव्र अभिलाषा या कामना। प्रबल लालसा। जैसे,—मोटर का
शौक, सफर का शौक, खाने पीने का शौक, जूए का शौक,
किताबों का शौक।

क्रि० प्र —करना।—रखना।—होना।

मुहा०—शौक करना = किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना।
जैसे,—तबाकू आ गया, शौक कीजिए। शौक चराना या पैदा
होना = मन में प्रबल कामना होना। तीव्र लालसा होना।

जैसे—अब आप को भी घोंटे पर चटने का शौक चरगिया है।
शौक पूरा करना या मिटाना = किसी बात की प्रबल इच्छा
की पूर्ति करना। जैसे,—जाइए, आप भी शतरंज का शौक
पूरा कर (मिटो) लीजिए। शौक फरमाना = दे० 'शौक करना'।
शौक से = प्रसन्नतापूर्वक। आनंद से। जैसे—हाँ हाँ, आप भी
शौक से चलिए।

२ आकाक्षा। लालसा। हौसिला। जैसे,—मुझे आज तक इस
बात का शौक ही रहा कि लोग तुम्हारी तारीफ करते।
३ व्यसन। चमका। चाट। जैसे—(क) आजकल उमें
शराव का शौक हो गया है। (ख) आपका गंगास्नान का शौक
कब से हुआ ?

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।—होना।

४ प्रवृत्ति। झुकाव। जैसे,—जरा आपका शौक तो देखिए, पेड़
पर चढ़ने चले हैं।

शौक^२—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ जुक्समूह। तोतो का झुंड। २ रतिवध
का एक प्रकार [को०]। ३ शौक की अवस्था। शौक-
दशा। शौकपूर्णता [को०]।

शौकत—सञ्ज्ञा स्त्री० [अ० शौकत] ठाठ वाट। शान। उ०—हृशमत व
शौकत धिर नहीं मत देख हो मगर।—चरण० बानो,
पृ० ११४।

यौ०—शान शौकत।

२. आतंक। दबदबा। वि० दे० 'शान'।

शौकर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वाराहीकद। गेंठी।

शौकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि
का नाम।

शौकिया^१—क्रि० वि० [अ० शौकियह] शौक के कारण। शौक पूरा करने
के लिये। प्रवृत्ति के वश होकर। जैसे,—(क) मुझे तमाकू पीने
की आदत तो नहीं है, पर हाँ कभी कभी शौकिया पी लिया
करता हूँ। (ख) उन्हें कोई जरूरत तो न थी, मिरफ शौकिया
फारसी सोख ला थी।

शौकिया^२—वि० शौक से भरा हुआ। जैसे,—शौकिया सलाम।

शौकीन—सञ्ज्ञा पुं० [अ० शौक + हि० ईन (प्रत्य०)] १ वह जिस किसी
बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। चाव रखने-
वाला। जैसे,—आप गाने बजाने के बड़े शौकीन हैं। २ वह
जो सदा छेला बना रहता हो। सदा बना ठना रहनेवाला।
३. रडोवाज। ऐयाश। तमाशबान।

शौकीनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [हि० शौकीन + ई (प्रत्य०)] १. शौकीन होने
का भाव या काम।

क्रि० प्र०—करना।—छोटना।—दिनाना।—बघारना।

२. तमाशबान। रडोवाजी। ऐयाशी।

३. शौक पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शौक्ल'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

शौक्ल'—वि० १ अम्लयुक्त । क्षारयुक्त । तेजावी । २ शुक्ति का बना हुआ (को०) ।

शौक्लिक'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न, मोती । मुक्ता ।

शौक्लिक'—वि० १ सीपी से या मोती से सवधित । २ क्षार या अम्ल युक्त । तेजावी (को०) ।

शौक्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सीप ।

शौक्लिकेय, शौक्लेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मोती, जो शुक्ति या सीपी से उत्पन्न होता है ।

शौक्ल—वि० [सं०] १ शुक्ल यह सवधी । शुक्ल का । २ वीर्य सवधी (को०) ।

शौक्ल'—वि० [सं०] शुक्ल सवधी । शुक्ल का ।

शौक्ल'—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'शौक्ल' ।

शौक्लिकेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हलका विष (को०) ।

शौक्ल्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेदी । उज्वलता (को०) ।

शौक्ल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सिंग्र, सहिष्णु का बीज ।

शौच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ शुचि होने का भाव । शुद्धता । पवित्रता । पाकीजगी । २ शास्त्रीय परिभाषा में पवित्रतापूर्वक धर्माचरण करना, शरीर और मन शुद्ध रखना, सत्य बोलना और निषिद्ध पदार्थों तथा कार्यों आदि का त्याग करना । सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना ।

विशेष—मनु के अनुसार यह धर्म के दम लक्षणों में से पाँचवाँ लक्षण है, और योगशास्त्र के पाँच नियमों में से पहला नियम है । कुछ लोगो ने इसके बाह्य और आभ्यन्तर ये दो भेद माने हैं । शरीर का बाह्य शौच मिट्टी और जल आदि से होता है, और अग्ने चित्त का भाव सब प्रकार से शुद्ध रखने से आभ्यन्तर शौच होता है । जैनों के अनुसार समयवृत्ति को निष्कलक रखना शौच कहलाता है ।

३ वे कुर्या जो प्रातः काल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं । जैसे,—पाखाने जाना, मुँह हाथ धोना, नहाना, सव्या वदन करना आदि । ४ पाखाने जाना । जगल जाना । टट्टी जाना । ५ दे० 'अशौच' । ६ खरापन । ईमानदारी (को०) । ७ तर्पण का जल (को०) ।

शौचकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लोकव्यवहार या शास्त्रानुसार शुद्ध होने की क्रिया (को०) ।

शौचकल्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शौचकर्म' (को०) ।

शौचकूप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शौचगृह । सङ्घस (को०) ।

शौचगृह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पाखाना (को०) ।

शौचविधि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का त्याग करना । शौच आदि से निवृत्त होना । निपटना ।

शौचागार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शौचगृह । पाखाना ।

शौचाचार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शौचकार्य' (को०) ।

शौचादिरय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शौचालय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शौच + आलय] शौचगृह । शौचागार ।

शौचिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल को एक वर्णमकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौचिक पिता और कर्तृ माना ने कही गई है । २ शुद्ध, पवित्र या साफ करनेवाला (को०) ।

शौची—वि० [सं०] शौचिन् । विगुह । पवित्र ।

शौचेय—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रजक । धोत्री ।

शौटीर'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वीर । बहादुर । २ वीर्य । पराक्रम । साहस (को०) । ३. सम्पत्ती वा त्यागो व्यक्ति । ४ अभिमान । मनुष्य ।

शौटीर'—वि० १ गर्वयुक्त । गर्वीला । प्रगल्भ । २ उदार (को०) ।

शौटीरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ शौटीर का भाव या धर्म । २ वीरता । बहादुरी । ३ त्याग । ४ अभिमान । अहंकार । गर्व ।

शौटीर्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वीर्य । शूर । २ गर्व । अभिमान । ३ वीरता । बहादुरी ।

शौत पु—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० शौत] दे० 'शौत' । उ०—पेरे आगे की यह गढ़ी । अब भई गीत वदन पर चढ़ी ।—लल्लूदान (शब्द०) ।

शौद्धोदनि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव, जो शुद्धोदन के पुत्र थे ।

शौद्र'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ग्राहण, क्षत्रिय या वैश्य के वीर्य ने शूद्रा ने उत्पन्न पुत्र ।

विशेष—यह ब्राह्मण प्रकार के पुत्रा में से एक प्रकार का पुत्र माना जाता है । ऐसा पुत्र अपने पिता के गोत्र का नहीं होता और न उसकी संपत्ति का अधिकारी हो हो सकता है ।

शौद्र'—वि० शूद्र या शूद्र जाति से सम्बन्धित (को०) ।

शौच पु'—वि० [सं०] शुद्ध निर्मल । पवित्र (को०) । उ०—कटि काती पगवतिका नामि द्वारिण शोध । हृदमाया कंठ मधुरो काशि घ्राण शिर श्रौव ।—विश्राम (शब्द०) ।

शौध पु'—सञ्ज्ञा स्त्री० दे० 'शुध' ।

शौधिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तशृंगु । लाल कोंगनी ।

शौन'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] बवाल्य में रखा हुआ मास । वह मास जो बिक्री के लिये रखा हो ।

शौन'—वि० शून सवधी । कुत्ते का ।

शौनक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे ।

विशेष—ये नैमिषा-रण में तपस्या करते थे और इन्होंने एक बार एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था जो बारह वर्षों तक होता रहा । ये बड़े तदस्त्री थे । इनके नाम से ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य कई ग्रंथ प्रसिद्ध हैं ।

शौनकायन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह जो शुनक ऋषि के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो ।

शौनकीपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन आचार्य का नाम ।

शौनायण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

शौनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मास वेचनेवाला । कसाई । २ शिकार । षाखेट । मृगया । ३ शिकारी । व्याघ्र । वहेलिया (को०) ।

शौनिकशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शिकार खेलने, घोड़ों आदि पर चढ़ने और पशुओं आदि को लड़ाने की विद्या का वर्णन हो ।

शौभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्नी सुपारी । २. देवता । ३ राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी जाती है ।

शौभनेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोभना अर्थात् सुंदरी स्त्री का पुत्र । २ वह जो शोभन सबंधी हो (को०) ।

शौभाजन—संज्ञा पुं० [सं० शौभाञ्जन] सहिजन नामक वृक्ष । शोभाजन । विशेष दे० 'महिजन' ।

शौभायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक थोड़ा जाति का नाम ।

शौभिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्रजाल का तमाशा करनेवाला । इंद्रजालिक । जादूगर । २. शिकारी । व्याघ्र (को०) । ३ यज्ञ का मूष या स्तभ (को०) ।

शौभ्रायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल के एक देश का नाम । २. इस देश के निवासी ।

शौभ्रैय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शुभ्र वस्तु वा व्यक्ति से संबद्ध हो । २ एक युद्धक जाति ।

शौर^७—संज्ञा पुं० [फा० शोर] शोर । चखचख । उ०—ऋषि शोर सुनी जब काना । मन में उपज्यो तब जाना ।—मुद्गर० ग्र०, भा० १, पृ० १३६ ।

शौरसेन^१—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक ब्रजमंडल का प्राचीन नाम जहाँ पहले राजा शूरसेन का राज्य था ।

शौरसेन^२—वि० शूरसेन संबंधी । शूरसेन का ।

शौरसेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शौरसेनी' ।

शौरसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा जो शूरसेन (वर्तमान ब्रजमंडल) प्रदेश में बोली जाती थी ।

विशेष—यह मध्य देश की प्राकृत थी और शूरसेन देश में इसका प्रचार होने के कारण यह शौरसेनी कहलाई । मध्यदेश में ही साहित्यिक संस्कृत का अभ्युदय हुआ था और यही की बोलचाल की भाषा से साहित्य की शौरसेनी प्राकृत का जन्म हुआ । इसपर संस्कृत का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था और इसी लिये इसमें तथा संस्कृत में बहुत समानता है, यह अपेक्षाकृत अधिक पुरानी, विकसित और शिष्ट समाज की भाषा थी । वर्तमान हिंदी का जन्म शौरसेनी और अर्धमागधी प्राकृतों तथा शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से हुआ है ।

हि० श० ६-५८

२. प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध अपभ्रंश भाषा जिसका प्रचार मध्यदेश के लोगों और साहित्य में था । यह नागर भी कहलाती थी ।

शौरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ कृष्ण । ३ उल्लस । ४ शनैश्चर ग्रह ।

शौरिप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा ।

शौरिरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम ।

शौरिप—वि० [सं०] [वि० श्री शौरिप] १ मूष संबंधी । मूष ने नापा हुआ । मूष के बराबर (को०) ।

शौरिपरिक—संज्ञा पुं० [सं०] काले रंग का एक प्रकार का हीरा जो प्राचीन काल में शूरिपरिक प्रदेश में पाया जाता था ।

शौरिपिक—वि० [सं०] दे० 'शौरिप' (को०) ।

शौरिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव । शूरता । पराक्रम । वीरता । बहादुरी । शूर का धर्म । ३ नाटक में आरम्भ की नाम की वृत्ति । विशेष दे० 'आरम्भटी'—२ ।

शौल—संज्ञा पुं० [सं०] हल के एक भाग का नाम (को०) ।

शौलायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम जो कौलायन भी कहलाते थे ।

शौलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल के एक देश का नाम जो शूलिक भी कहलाता था । २. इस देश का निवासी ।

शौलिकि—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार धौति, नेति आदि छह प्रकार के कर्मों में से एक कर्म । इसमें दाहिने नथने से धीरे धीरे साम खींचते हुए बाएँ नथने से छोड़ते हैं, और फिर बाएँ नथने में खींचते हुए दाहिने नथने से छोड़ते हैं । कहते हैं, इस क्रिया द्वारा कफ के दोष का शमन होता है ।

शौलिक—वि० [सं०] शुल्क संबंधी । शुल्क का ।

शौलिक—संज्ञा पुं० एक साम का नाम ।

शौलिकशालिक—संज्ञा पुं० [सं०] वे अधिकारी जो प्रत्येक मान की सख्या, परिमाण, गुण आदि की जाँच पड़ताल करते थे । उ०—रात्रि के समय भी शौलिकशालिक अधिकारी नियुक्त रहते थे ।—हिंदु० मन्त्रता, पृ० १६६ ।

शौलिकायनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो वेददर्श के गिण्य थे और जिनका उल्लेख भागवत में आता है ।

शौलिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अधिकारी जो लोगों से शुल्क लेता हो । कर या महसूल आदि वसूल करनेवाला अफसर । शुल्काध्यक्ष ।

शौलिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष ।

शौलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौफ । शतमुष्पा । २. तुलका नाम का साग ।

शौलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की एक वर्णान्तर जाति का नाम । २. ठेहरा । पसेरा ।

शौव'—वि० [स०] [स्त्री० शौवी] १ कुक्कुर सबधी २ पर या उत्तर दिवस सबधी । आगामी कल का । आनेवाले कल से सबध रखनेवाला [को०] ।

शौव' सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुत्ते का समूह । २ कुत्ते की प्रकृति, स्वभाव या स्थिति [को०] ।

शौवन'—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ कुत्ते का मास । २ कुत्ते का झुड । ३ कुत्ते का पिल्ला [को०] । ४ कुत्ते की प्रकृति या स्वभाव [को०] ।

शौवन'—वि० [वि० स्त्री० शौवनी] १. श्वान सबधी । कुत्ते का । २ जिसकी प्रकृति या स्वभाव कुत्ते की तरह हो [को०] ।

शौवस्तिक'—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शौवस्तिकी] वह पदार्थ जो भविष्य में व्यवहार करने के विचार से संग्रह करके रखा गया हो ।

शौवस्तिक'—वि० १ जो दूसरे दिन तक टिक सके या खराब न हो । २. परेछु सबधी [को०] ।

शौवापद—वि० [स०] [वि० स्त्री० शौवापदी] १. श्वापद या वन्य पशु से सबध रखनेवाला । २ जगली ।

शौकल—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मास का विक्रेता । मास बेचनेवाला । २ जिसका स्वभाव मास खाने का हो । मासभक्षी । मत्स्य-मास भक्षी । ३ सूखे मास का मूल्य [को०] ।

शौहर'—सञ्ज्ञा पु० [फा०] स्त्री का पति । स्वामी । खाविद । मालिक । विशेष दे० 'पति—२' ।

श्चोत, श्चोतन, श्च्योत, श्च्योतन—सञ्ज्ञा पु० [स०] निकलना । बहना । रिसना [को०] ।

श्नाभ—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम ।

श्नुष्टि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. वैदिक काल का 'समय' का एक परिमाण । २ छोटी ढेरी या अन्न नापने का छोटा नाप [को०] ।

श्नीष्ट—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम ।

श्म—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मन्] १ मुख । आनन । २. देह । शरीर । ३. मृत शरीर । शव । मुर्दा [को०] ।

श्मशान—सञ्ज्ञा पु० [स० श्म (=शव) + शान (=शयन)] १ वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हो । शवदाह करने का स्थान । मसान । मरघट ।

पर्यां—पितृवन । शतानक । रुद्राक्रोड । दाहसर । अंतश्च्युता । पितृकानन ।

२ पितरो के लिये दी जानेवाली वलि या पिंड [को०] ।

श्मशान कालिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की काली जिनका पूजन मास, मछली खाकर, मद्य पीकर और नये होकर श्मशान में किया जाता है ।

श्मशान काली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्मशान कालिका' [को०] ।

श्मशानगोचर—वि० [स०] मसान में घूमनेवाला [को०] ।

श्मशाननिलय—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्मशान में रहनेवाले, महादेव । शिव ।

श्मशाननिवासी'—वि० [स० श्मशाननिवासिन्] श्मशान में रहने-वाला (चाडाल) ।

श्मशाननिवासी'—सञ्ज्ञा पु० १ शिव । २ भूत प्रेत [को०] ।

श्मशानपति—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. श्मशान के स्वामी, शिव । २ एक प्रकार के ऐंद्रजालिक ।

श्मशानपाल—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्मशान का रक्षक, चाडाल ।

श्मशानभाक्—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मशानभाज्] शिव [को०] ।

श्मशान भैरवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ तांत्रिकों के अनुसार वे देवियाँ जो श्मशान में रहती हैं । २ दुर्गा का एक नाम ।

श्मशानवर्ती—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मशानवर्तिन्] दे० 'श्मशानवामी' [को०] ।

श्मशानवाट—सञ्ज्ञा पु० [स०] मसान का घेरा [को०] ।

श्मशानवासिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] काली ।

श्मशानवासी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मशानवासिन्] १ महादेव । शिव । २. चाडाल । ३ भूत प्रेत आदि [को०] ।

श्मशानवेताल—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि ।

श्मशानवेश्म—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मशानवेश्मन्] महादेव । शिव । २ भूतप्रेत [को०] ।

श्मसानवैराग्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्मशान में शरीर की नश्वरता को देखकर होनेवाला क्षणिक वैराग्य [को०] ।

श्मशानशूल—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्मशान भूमि में स्थित सूली जिससे प्राचीन काल में प्राणदंड दिया जाता था ।

श्मशानसाधन—सञ्ज्ञा पु० [स०] भूत प्रेतों को वश में करने के लिये श्मशान भूमि में शव पर बैठकर का जग्नेवाली तांत्रिक क्रिया [को०] ।

श्मशानाग्नि—सञ्ज्ञा पु० [स०] मरघट की आग [को०] ।

श्मशानालय—सञ्ज्ञा पु० [स०] मरघट । ममान ।

यी०—श्मशानालयवासिनी = काली ।

श्मशानक—वि० [स०] श्मशान में रहनेवाला [को०] ।

श्मशानी—वि० [स० श्मशानिक्] मरघट पर रहनेवाला । श्मशान का । श्मशान संबधी । उ०—यह जिसके मन में प्रवेशित होता है वह जीवित श्मशानी भूत है । —कबीर म०, पृ० १८७ ।

श्मश्रु—सञ्ज्ञा पु० [स०] होठो, गालो और ठोढ़ी आदि पर होनेवाले बाल । मुँह पर के बाल । दाढ़ी मूँछ ।

श्मश्रुकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] दाढ़ी की सफाई करनेवाला, हज्जाम । नापित ।

श्मश्रुकर्म—सञ्ज्ञा पु० [स० श्मश्रुकर्मन्] दाढ़ी बनवाना । हजामत बनवाना । क्षीर कर्म ।

श्मश्रुघर—वि० [स०] दाढ़ीवाला [को०] ।

श्मश्रुधारी—वि० [स० श्मश्रुधारिन्] श्मश्रुयुक्त । मूँछ दाढ़ीवाला ।

श्मश्रुप्रवृद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दाढ़ी का बढ़ना [को०] ।

श्मश्रुमुखी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसके गालो और ऊपरी होठ पर दाढ़ी और मोछ के बाल हो ।

विशेष—ऐसी स्त्री क्रूर, कुलङ्गणी और दुश्चली समझी जाती है ।

शमश्रुल—वि० [म०] दाढी मूँछ से युक्त [को०] ।

शमश्रुवट्टक—सञ्ज्ञा पु० [स०] हज्जाम ।

शमश्रुशेखर—सञ्ज्ञा पु० [स०] नारियल का वृक्ष ।

शमोलन—सञ्ज्ञा पु० [स०] आँख भ्रपकाना या मुलकाना [को०] ।

शमीलत^१—वि० [स०] निमीलित । आँख भ्रपकाया हुआ । मुलकाया हुआ [को०] ।

शमीलित^२—सञ्ज्ञा पु० पलक भ्रपकाना, गिराना या मारना [को०] ।

शयश्मनाक्षी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] एक देवी का नाम । उ०—[वनायक, फल्गुचंडी, शयश्मनाक्षी और मंगला की गया चूत्र में उपसना होती थी]—प्रा० भा० पृ० ४२० ।

शयान^१—वि० [स०] १. गया हुआ । गत । २. जमा हुआ । गाढा । ३. क्षीण । क्षाम । सिकुड़ा हुआ । ४. घनीभूत । साद्र । चिक्कण [को०] ।

शयान^२—सञ्ज्ञा पु० घुम्रा [को०] ।

शयाना १) —वि० [हिं० सयाना] वयस्क । दे० 'सयाना' । उ०—
कितक दिन कूँ ओ ज्यो के शयाना हुआ । ओ हर एक हुनर-मन
मे दाना हुआ —दक्खिनी०, पृ० ३६० ।

शयापीय—सञ्ज्ञा पु० [म०] एक वैदिक शाखा का नाम ।

श्याम^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारण पड़ा था । उ०—एक बार हरि निज पुर छए । हलधर जी वृदावन गए । यह देखत लोगन सुख पाए । जान्यो राम श्याम दोड आए ।—सूर (शब्द०) । २. प्रयाग के अक्षयवट का नाम । ३. साँवा नामक घान्य (डि०) । ४. एक राग जो श्रीराग का पुत्र माना जाता है । यह राग उत्सवो आदि के समय गाया जाता है, और हास्य रस क लिये भी उपयुक्त होता है । इसके गान का समय सक्या के समय १ दड से ५ दड तक है । इसे श्यामकल्याण भा कहते हैं । उ०—नित मलार जु मलार सुनाई । श्याम गूजरी पुनि भल गाई ।—जायसी (शब्द०) । ५. सेंधा या समुद्री नमक । ६. धतूरा । ७. विधारा । ८. मेघ । बादल । ९. दोना का क्षुप । दमदक । १०. एक प्रकार का तृण । गवतृण । ११. गाल मर्च । छाटा या काली मर्च । १२. पालू वृक्ष । १३. कायब । कोकिल । १४. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नोज के पश्चिम ओर था । १५. श्याम नामक देश । वि० दे० 'स्याम' । १६. काला रंग [को०] । १७. गहरा हरा रंग [को०] ।

श्याम^२—वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग) । गहरा हरा । २. काला । साँवला । उ०—अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार । जयत मरत भुक्ति मुक्त परत, जेहि चितवत एक बार । (शब्द०) । ३. घुसर । भूरा [को०] । ४. विवर्ण । उदास । जैसे, श्याम मुख ।

श्यामकठ—सञ्ज्ञा पु० [स० श्यामकण्ठ] १. मोर । मयूर । २. नीलकंठ नामक पक्षी । ३. शिव का एक नाम ।

श्यामकटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्यामकटा] अतीस । अतिविषा ।

श्यामक—सञ्ज्ञा पु० [म०] १. साँवा का चावन । २. गंधनृण नामक तृण । रामकपूर । ३. श्याम नामक देश । ४. भागवन कथनुसार शूर के एक पुत्र और वसुदेव के भाई का नाम ।

श्यामकर्ण—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला होता है । उ०—श्यामकर्ण हय चान्त आवै ।—चमर छत्र तापर छवि छावै ।—मवलसिंह (शब्द०) ।

विशेष—अश्वमेध यज्ञ में यही श्व मर्कण अश्व रखा जात था ।

श्यामकांडा, श्यामकाता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्यामकांडा, श्यामकान्ता] गाँडर दूब ।

श्यामग्रथि—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्यामग्रन्थि] गाँडर दूब ।

श्यामचटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्यामा नामक पक्षी ।

श्याम चिरैया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्याम + हि० चिरैया] एक विशेष पक्षी । श्यामा पक्षी । उ०—एक सूखे पेड़ की टहनियों पर श्यामचिरैया का जोड़ा प्रणयकुल हो रहा था ।—
भस्मावृत०, पृ० ११ ।

श्यामचूड़ा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्यामचूड़ा] कृष्ण चटक या श्यामा नामक पक्षी ।

श्यामजीरा—सञ्ज्ञा पु० [स० श्याम + जीरक] १. एक प्रकार का घान जो अगहन में तैयार होना है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रखा जा सकता है । २. काला जीरा । कृष्ण जीरक ।

श्याम टीका—सञ्ज्ञा पु० [स० श्याम + हि० टीका] वह ताल टीका जो वच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है । दिठौना । उ०—पठवहि मातु भूप दरवार टीका श्याम लगाई ।—रघुराज (शब्द०) ।

श्यामता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. श्याम का भाव या धर्म । २. कालापन । साँवनापन । कृष्णता । ३. मलनता । उदास । जैसे,—यह बात सुनते ही उसके मुँह पर श्यामता छा गई । ४. एक प्रकार का राग जिसमें शरीर का रंग काला होना लगता है ।

श्याम तीतर—सञ्ज्ञा पु० [स० श्याम + हि० तीतर] प्रायः डेढ़ बालशत लग एक प्रकार का पक्षी जो अकेला रहता है और पाला भा जा सकता है ।

विशेष—यह काश्मीर, भूटान और दक्षिण हिमालय में पाया जाता है । ऋतुभेदानुसार यह स्थानपरिवर्तन करना रहता है । इसकी चाच लवा हाती है और यह बहुत तेज उड़ता है । इसका शब्द घामा पर विचित्र होता है । इसका मास स्वादिष्ट होता है, इसलिए इनका शिकार भा किया जाता है ।

श्यामत्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'श्यामता' ।

श्यामपट्ट—सञ्ज्ञा पु० [स० श्याम + पट्ट] कक्षाओं में लगा हुआ वह काला तख्ता जिसपर खडिया से लिखकर अध्यापक छात्रों को समझाता है (अ० नैक बोर्ड) ।

श्यामपत्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] तमाल वृक्ष ।

श्यामपत्रा—मन्त्रा स्त्री० [स०] जामुन का वृक्ष ।

श्यामपर्णा—सन्ना पु० [स०] सिरिस का पेड़ । शिरीष का वृक्ष ।

श्यामपर्णी—सन्ना स्त्री० [स०] दे० 'चाय' ।

श्यामपूरबी—सन्ना पु० [स० श्याम + हि० पूरबी] एक प्रकार का सकर राग । इसमें और सब तो शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है ।

श्यामभूपण—सन्ना पु० [स०] मिर्च ।

श्याम मजरी—सन्ना स्त्री० [स० श्याम + मज्जरी] काले रंग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे वैष्णव लोग माथे पर तिलक लगाते हैं यह मिट्टी प्रायः जगन्नाथ जी के आसपास की भूमि में पाई जाती है ।

श्यामल^१—सन्ना पु० [स०] १ पीपल । अश्वत्थ वृक्ष । २ सिरिस का पेड़ । शिरीष । ३. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला विच्छेद, ४ भौंरा । अमर (को०) । ५ काली मिर्च (को०) । ६ काला रंग । श्याम वर्ण (को०) । ७. दे० 'पुतिका' (को०) ।

श्यामल^२—वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो । काला । साँवला ।

श्यामलचूड़ा—सन्ना स्त्री० [स०] गुजा । घुँघची ।

श्यामलता—सन्ना स्त्री० [स०] श्यामल या काले रंग के होने का भाव । साँवलापन । कालापन ।

श्यामला—सन्ना स्त्री० [स०] १ अश्वगध । असगध । २. कटभी । ३ जामुन । ४. कस्तूरी । मुग्गमद । ५ पार्वती का एक नाम ।

श्यामलिका—सन्ना स्त्री० [स०] नीली ।

श्यामलित—वि० [स०] श्याम या काला किया हुआ (को०) ।

श्यामलिया—सन्ना स्त्री० [स० श्यामलियन्] श्यामता । कालापन । श्यामलता (को०) ।

श्यामली^१—सन्ना स्त्री० [स०] दे० 'श्यामला' ।

श्यामली^२—वि० स्त्री० [स० श्यामल] श्याम वर्ण की । साँवली ।
उ०—काढ़ूँ कैसे हृदय तल से श्यामली मूर्ति न्यारी ।—
प्रिय०, पृ० २४६ ।

श्यामलेक्षु—सन्ना पु० [स०] काले रंग की ईख ।

श्यामवर्त्म—सन्ना पु० [स० श्यामवर्त्मन्] एक प्रकार का नेत्ररोग ।

विशेष—इसमें आँख की पलकें बाहर तथा भीतर से काली होकर फूल जाती हैं और उनमें पीड़ा होती है ।

श्यामवल्ली—सन्ना स्त्री० [स०] काली मिर्च (को०) ।

श्यामशबल—सन्ना पु० [स०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो उनके द्वार पर पहरा देने का काम करते हैं ।

विशेष—ये चार आँखोंवाले कहे गए हैं । इन्हें सतुष्ट करने के लिये एक प्रकार का व्रत करने का भी विधान है ।

श्यामशर—सन्ना पु० [स०] एक प्रकार की ईख जो बहुत अच्छी और गुणवाली मानी जाती है ।

श्यामशालि—सन्ना पु० [स०] काला शालिधान्य ।

श्यामसार—सन्ना पु० [स०] कृष्ण खदिर का वृक्ष ।

श्यामसुन्दर—सन्ना पु० [स० श्यामसुन्दर] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।
उ०—लिये उठाय श्यामसुन्दर को धन गहि कै मुख लीन्हो ।—
मूर (शब्द०) । २ एक प्रकार का वृक्ष ।

विशेष—यह वृक्ष कद में बहुत ऊँचा होता है । इसकी छाल प्रारम्भ में उज्ज्वल होती है, परन्तु ज्यों ज्यों यह पुराना होता जाता है, त्यों त्यों छाल काली होती जाती है । इसके हीरे की लकड़ी चमकदार होती है । पहाड़ों पर यह चार हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है । इसकी लकड़ी प्रायः बहिया चीजों के बनाने में काम आती है । इससे खेती के औजार भी बनाए जाते हैं ।

श्यामाग^१—सन्ना पु० [स० श्यामाङ्ग] बुध ग्रह, जिसका वर्ण दूर्वा की तरह या प्रियङ्गुलिका की तरह श्याम माना गया है ।

श्यामाग^२—वि० जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो । काले या साँवले रंगवाला ।

श्यामागी—सन्ना स्त्री० [स० श्यामाङ्गी] नीली दूर्वा ।

श्यामा^१—सन्ना स्त्री० [स०] १ राधा या राधिका का एक नाम, जो श्याम या श्रीकृष्ण के साथ उनका प्रेम होने के कारण पड़ा था । उ०—मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ ।
श्याम श्यामा गुप्त लोला ।—मूर (शब्द०) । २ एक गोपी का नाम । उ०—श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुखा सुमदा नारि ।—मूर (शब्द०) । ३. प्रायः सवा या डेढ़ बालिशत लंबा एक प्रकार का पत्ता ।

विशेष—इसका रंग काला और पैर पीले होते हैं । यह पञ्जाव के अतिरिक्त सारे भारत में मिलता है । यह एक ही स्थान पर स्थिर रूप से रहता है और पहाड़ पर नहीं जाता । यह प्रायः घने जंगलों में रहता है । इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है । यह पत्ती और घास से घोंसला बनाता है और एक बार में चार अड़े देता है ।

४ सोलह वर्ष की तरुणी । पोडशी । ५ काले रंग की गाय । ६ कवूतरी । मादा कवूतर ।—वृहत्स०, पृ० ४१० । ७ काला अनन्तमूल । श्यामा लता । ८ काली निसोध । ९ प्रियगु । वनिता । १० वकुची । सोमराजी । ११ नील । १२. गुगुल । १३ सोम लता । सोमवल्ली । १४ भद्रमोया । १५ गुडुच । गिलोय । १६ वदा । बंदाक । बन्ना । १७. कस्तूरी । मुश्क । १८. वटपत्री । पापाणभेदी । १९. पीपल । पिप्पली । २० हल्दी । हरिद्रा । २१ हरी दूब । २२. तुलसी । मुरसा चूप । २३ कमलगट्टा । २४ विघारा । २५ शिशपा वृक्ष । शीशम । २६ सावा नामक अन्न । २७ काली गदहपूरना । २८. गोलोचन । गोरोचन । २९. एरका या गुदा नामक घास । ३०. लता कस्तूरी । मुश्क दाना । ३१ मेढासिणी । ३२. हरीतकी । हरें । ३३. कोयल नामक पक्षी । ३४ यमुना । ३५ रात । रात्रि । ३६ स्त्री । औरत । ३७. श्याम वर्ण की स्त्री । साँवली औरत (को०) ।

३८ वह स्त्री जिमको मँतान न हुई हो । अ० सूता स्त्री (को०) ।
३९ तपे हुए सोने के वर्ण की एक विशिष्ट प्रकार की स्त्री ।
वह स्त्री जो शीतऋतु से सुखद ऋणायुक्त और ग्रीष्म में
सुखद शीतल हो (को०) । ४० छाया । ४१ कालिका देवी
का एक नाम ।

श्यामा^२—वि० १. तपाए हुए सोने के समान वर्णवाली । २. श्याम
रंगवाली । काली ।

श्यामाक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ साँवा नामक अन्न । २ एक देश ।
—वृहत्०, पृ० ८६ ।

श्यामाढकी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] काले फूल की अरहर ।

विशेष—यह वैद्यक के अनुसार दीपन और पित्त तथा दाह की
नाशक मानी जाती है ।

श्यामायन—सञ्ज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम जो
गोत्रप्रवर्तक ऋषि थे ।

श्यामायनि—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम ।

श्यामायनी—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वंशपायन के शिष्यों का संप्रदाय ।
वह जो इस संप्रदाय में हो ।

श्यामायमाना—वि० स्त्री० [स०] १ श्यामतायुक्त । हरीभगी ।
हरीतिमायुक्त । २ श्याम अर्थात् कृष्ण के न रहने पर भी
जो श्यामयुक्त सी प्रतीत होती हो (लान्छ०) । उ०—वे आए
जिस काल कात व्रज में देखा महा गुग्गु ही, श्रीवृंदावन की
मनोज मधुरा श्यामायमाना मही ।—प्रिय०, पृ० ६८ ।

श्यामालता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] काला अमृतमूल । कृष्ण शारिवा ।

श्यामाह्वा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पिप्पली । पीपल ।

श्यामिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ काला रंग । कृष्ण वर्ण । २
कालापन । श्यामता ३ मलिनता । उदासी । ४ अपवित्रता
(को०) । ५ खाटाई । खोटापन । ६. मेल या किट्ट जो किसी
धातु पर हो (को०) ।

श्यामित—वि० [स०] काला बनाया या किया हुआ (को०) ।

श्यामेक्षु—सञ्ज्ञा पु० [स०] काला ईख । कजली ईख ।

श्यार(पुं०)†—सञ्ज्ञा पु० [फा० शहर] दे० 'शहर' । उ०—श्यार के वो
पापी पावाँ मुज पो आ सकते नई । मैं तो मैं मेरी गरद को
वो वो पा सकते नई ।—दक्खिनी०, पृ० २६६ ।

श्याल^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पत्नी का भाई । साला । उ०—बार बार
सत्कार करि, कह्यो श्याल निहाल ।—रघुगज (शब्द०) ।
वहन का पति । वहनोई । भगिनीपति । (ब्रह्मवैवर्त) ।

श्याल^२—सञ्ज्ञा पु० [स० शृगाल] गीदड़ । सियार । उ०—रोव वृषभ
तुरग अरु नाग, श्याल दिवस निशि बोले काग ।—सूर
(शब्द०) ।

श्यालक—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० श्यालिका] पत्नी का भाई ।
साला ।

श्याल कांटा—सञ्ज्ञा पु० [श्याल ? + हिं० कांटा] स्वर्णक्षीरी । सत्वा-
नाशी । भरभाँड़ ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी की वहन ।
साली ।

श्याव^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्यावा, श्यावी] कृष्ण और पीले
मिश्रित (वर्ण) । काला और पीला मिला हुआ (रंग) । अप्रिय ।

श्याव^२—सञ्ज्ञा पु० १ काला पीला मिला हुआ रंग । कपिश वर्ण ।
२ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मिच्छू जिसका विष ब्रह्म
तेज नहीं होता ।

श्यावक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन राजपि
का नाम ।

श्यावता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्याव (वर्ण) का भाव या वर्म । कपि-
शता ।

श्यावतैल—सञ्ज्ञा पु० [स०] आम का पेड़ ।

श्यावदन्त—सञ्ज्ञा पु० [स० श्यावदन्त] १. दाँतों का एक प्रकार का
रोग ।

विशेष—इसमें रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या
नीले हो जाते हैं ।

२. वह जिसके दाँत स्वभावतः काले रंग के हों । ३. वह व्यक्ति
जिसके आगे के दो दाँतों के बीच छोटा सा दाँत हो या उनके
ऊपर दाँत हों (को०) ।

श्यावदन्तक—सञ्ज्ञा पु० [स० श्यावदन्तक] दे० 'श्यावदन्त' ।

श्यावनाथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

श्यावरथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

श्याववर्त्म—सञ्ज्ञा पु० [स० श्याववर्त्मन्] आँखों का श्यामवर्त्मन् नामक
रोग । वि० दे० 'श्यामवर्त्म' ।

श्यावाश्व—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

श्यावास्य—वि० [स०] जिसका मुख श्याम रंग का हो (को०) ।

श्येत^१—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्येता, श्येती] श्वेत । सफेद । शुक्ल ।
(वर्ण) ।

श्येत^२—सञ्ज्ञा पु० सफेद रंग । श्वेतवर्ण ।

श्येतकीलक—सञ्ज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली ।

श्येत्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. शिकरा या बाज नामक प्रसिद्ध पक्षी जो
प्रायः छोटे छोटे पक्षियों का शिकार किया करता है । उ०—
शून्याश्रम से इधर दशानन, मानो श्येन कपोती को । हर ले
चला विदेहसुता को, भय से अबला रोती को ।—गाकेत,
पृ० ३८४ ।

पर्या०—शशाघातन । शशाद । शशादन । कपोतारि । क्रूर । वेगी ।
खगातक । करग । ग्राहक । लवकर्ण । नीलपिच्छ । रसुप्रिय ।
रसपक्षी । भयकर । स्थूलनील । पिच्छनाथ । मारक ।
घातिपक्षी ।

२. दोहों के चौथे भेद का नाम । इसमें १६ गुण और १० लघु
मात्राएँ होती हैं । ३. पीला रंग । पाटुर वर्ण । ४. श्वेत वर्ण ।
सुफेद रंग (को०) । ५. घबलमा । श्वेतता (को०) । ६. हिवा ।

हिमन (को०) । ७ अश्व । घोड़ा (को०) । ८ एक प्रकार का सैनिक ब्यूह । श्येन ब्यूह (को०) ।

श्येनकरणा—सङ्घा पुं० [मं०] १ किसी काम को उतनी ही तेजी और दृढ़ता से करना जितनी तेजी और दृढ़ता से बाज भपटकर अपने शिकार को पकड़ता है । २ जल्दबाजी । शीघ्रता । उतावलापन । हड़बड़ी (को०) ।

श्येनकरणिका—सङ्घा स्त्री० [सं०] दे० 'श्येनकरणा' (को०) ।

श्येनगामी—सङ्घा पुं० [मं० श्येनगामिन्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम ।

श्येनघटा—सङ्घा स्त्री० [मं० श्येनघट्टा] दती वृक्ष । उदुवरपर्णी । विशेष दे० 'दती' ।

श्येनचित्—सङ्घा पुं० [मं०] १ यज्ञ आदि में अग्नि स्थापित करने की वह वेदी जिसका आकार श्येन या बाज पक्षी के समान होता है । २ श्येनजीवी (को०) ।

श्येनचित्त—सङ्घा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की अग्नि । २ 'श्येनचित्'—१ (को०) ।

श्येनजीवी—सङ्घा पुं० [सं० श्येनजीविन्] वह जो श्येन या बाज पक्षी और वेचकर जीविका निर्वाह करता हो ।

विशेष—मनु ने ऐसे आदमियों के साथ एक पक्षि में बैठकर खाने पीने का निषेध किया है ।

श्येनपात्—सङ्घा पुं० [सं०] १ बाज की तरह भपटना या भपट्टा मारना । २ ऐंद्रजालिकों का अनुकूल अद्भुत कार्य (को०) ।

श्येनभूत—सङ्घा पुं० [सं०] श्येन द्वारा लाया हुआ, सोम (को०) ।

श्येनब्यूह—सङ्घा पुं० [मं०] कौटिल्य के अनुसार वह दंडब्यूह जिसमें पक्षी और कछु को स्थिर रखकर उरस्थ को आगे बढ़ाया जाय ।

श्येनहृत्, श्येनाहृत—सङ्घा पुं० [मं०] सोम लता ।

श्येनिका—सङ्घा स्त्री० [मं०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं, और मात्रा के अनुसार उनका क्रम इस प्रकार होता है—र, ज, र, ल, ग (SIS, ISI SS, S) । इसका दूसरा नाम 'श्येनी' भी है ।

श्येनिका—सङ्घा स्त्री० बाज पक्षी की मादा ।

श्येनी—सङ्घा स्त्री० [सं०] १. दे० 'श्येनिका' । २. मार्कंडेयपुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या का नाम ।

विशेष—यह दक्ष की पुत्री ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी । कहते हैं, बाज, तोते, कनूतर आदि पक्षी इसी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ।

श्यैनपात—सङ्घा पुं० [सं० श्यैनम्पात] १ श्येन छोड़ने का उपयुक्त स्थान । २ दे० 'श्यैनम्पाता' (को०) ।

श्यैनपाता—सङ्घा स्त्री० [सं० श्यैनम्पाता] १ मृगया । शिकार । श्येन पक्षी द्वारा शिकार करना (को०) । २. श्येन छोड़ने की उपयुक्त भूमि (को०) ।

श्यैन—वि० [सं०] श्येन वा बाज संबंधी (को०) ।

श्यैनिक—सङ्घा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का याग, जो एक दिन में होता था ।

श्यैनिक शास्त्र—सङ्घा पुं० [मं०] मृगया करने का इस वृत्तान्तवाता ग्रंथ (को०) ।

श्येनेय—सङ्घा पुं० [सं०] जटायु का एक नाम ।

श्योणक, श्योनाक—सङ्घा पुं० [सं०] १ मोनावाड़ा वृक्ष ।—वृहत्संहिता, पृ० ३५६ । २ तोष । तोष ।

श्योरा—सङ्घा पुं० [लघ०] बड़ी मेघ ।

क्रि० प्र०—ठोंकना ।—मारना ।

श्रग्—सङ्घा पुं० [मं० श्रज्] गमन । जाना ।

श्रग—सङ्घा पुं० [मं० श्रृज्] शृंग । (दि०) ।

श्रथ—सङ्घा पुं० [सं० श्रथ] १. मगर के बघन में छुड़ा-वाने, रिपु । २ बघन । ३ माध । ४ डीना वा निधिन करना (को०) । ५ जियलता । डीनावा (को०) । ६ ओढ़ना वा मृक्त करना (को०) ।

श्रथन—सङ्घा पुं० [सं० श्रथन] १ योचना । सोचना । डीना करना । २ हिमन । घातन । ३. नष्ट या विध्वंस करना । ४ बांधना । अच्छी तरह सवद्ध करना । ५. प्रपन्न करना । रचना । जैत, गद्य या पद्यात्मक कृति (को०) ।

श्रथित—वि० [सं० श्रथित] १ बांधा हुआ । एक साथ बांधा हुआ । २ शिथिलित । ढांचा दिया हुआ । ३. मुक्त । ४ एक दूसरे से गवद्ध । परस्पर सवद्ध । ५ क्षोभित । पाट गया हुआ । घायल (को०) । ६ विनष्ट । ध्वस्त (को०) । ७. अभिभूत । पराभूत (को०) । ८ प्रगल्भ । हवि । गुज ।

श्रसन—सङ्घा पुं० [मं०] बड़ घावधि जा पट में जमे हुए मन या गाँठ का बाहर निकालनी हो । जैसे, प्रमत्तता का दूरा ।

श्रकु—सङ्घा स्त्री० [मं० स्रक्] माता । उ०—माता श्रकु श्रज गुनवती यह तु नाम की दाम ।—प्रनेकार्य०, पृ० ७८ ।

श्रगु—सङ्घा पुं० [सं० रगर्ग > गर्ग > श्रग] २० 'रगर्ग' । उ०—शङ्ख श्रग पयाल में, माचा लेने गाँव । मरुत लाक गिरि देखे, परगट सबही ठोव ।—शङ्ख बानी, पृ० ५२ ।

श्रगु—सङ्घा पुं० [सं० स्रक्] माता ।

श्रजु—सङ्घा स्त्री० [मं० स्रज्, स्रक्] माता ।—प्रनेकार्य०, पृ० ७८ ।

श्रथन—सङ्घा पुं० [सं०] १ मार डालना । बघ । हत्या । २ प्रलपन करना । बघन से मुक्त करना । सोचना । ३ निधिल या डीना करना (को०) । ४. यत्न । कोशिश । ५ बांधना । बघन में डालना (को०) । ५ बारबार प्रसन्न करना (को०) ।

श्रद्धान—वि० [मं०] विश्वास रखनेवाला । आस्थावान् । श्रद्धापूर्ण (को०) ।

श्रद्धान—सङ्घा पुं० [सं०] आस्था । विश्वास (को०) ।

श्रद्ध—वि० श्रद्धा या विश्वास करनेवाला । श्रद्धालु । आस्थावान् (को०) ।

श्रद्धाजलि—सङ्घा पुं० [मं० श्रद्धाजलि] श्रद्धावुक्त प्रणाम । श्रद्धा सहित किसी के समान में विलयपूर्वक कुछ कथन या निवेदन । उ०—श्रद्धाजलि स्वाकार करें गुरुदेव शिष्य को, आज श्रद्धा बासर के वाष्प नयन भवतर पर ।—युगस्य, पृ० १०६ ।

श्रद्धा—सच्चा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की मनोवृत्ति, जिसमें किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता है। बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। उ०—(क) महिमा वेद पुराण सब बहु भाँति बखानत। यथा सहित सब करत सहित श्रद्धा गुण गानत।—केशव (शब्द०)। (ख) पूजत श्रद्धा भक्ति बु कोई। ताके वश्य जगत हम दोई।—सबलविह (शब्द०)। २. बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध, धर्म और सध में विश्वास। ३. वेदादि-शास्त्रों और आस पुरुषों के वचनों पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ४. शुद्धि। ५. चित्त की प्रसन्नता। ६. कर्म मुनि की कन्या का नाम।

विशेष—भागवत के अनुसार श्रद्धा कर्म की पत्नी देवहूति के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और अत्रि ऋषि की पत्नी थी। इन्हें मनु की पत्नी भी कहा गया है। आस्था, विश्वास, दृढता, सत्यता की देवी के रूप में इसका प्राचीन ग्रंथों में अनेक जगह अनेक रूपों में उल्लेख आया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्रजापति की कन्या, शतपथ में सूर्य की पुत्री, महाभारत में दक्ष की कन्या और धर्म की पत्नी के रूप में इनका उल्लेख आया है और मार्कण्डेय-पुराण में श्रद्धा काम की माता कही गई है। ७. घनिष्ठता। परिचय (को०)। ८. गर्भिणी महिला का दोहद (को०)। ९. प्रवल या उत्कट इच्छा (को०)।

श्रद्धाकृत—वि० [सं०] श्रद्धावान् होकर किया हुआ। जो श्रद्धायुक्त होकर किया गया हो (को०)।

श्रद्धाजाड्य—सच्चा पु० [सं०] श्रद्धा के कारण उत्पन्न जडता। अध-विश्वास (को०)।

श्रद्धातट्य—वि० स्त्री० [सं०] जिसपर श्रद्धा की जा सके। श्रद्धा करने के योग्य।

श्रद्धादेय—सच्चा पु० [सं०] विश्वास। विश्रम। प्रत्यय (को०)।

श्रद्धादेव—वि० [सं०] जो श्रद्धा पर पूर्ण विश्वास करता हो। श्रद्धालु (को०)।

श्रद्धादेही—वि० स्त्री० [सं० श्रद्धा + देही] श्रद्धास्वरूपिणी। श्रद्धारूपी देहवाली। उ०—श्रद्धादेही आशागेही, स्नेही रूपलता। श्री लाई तुम, शोभा लाई, लाई मधुमयता।—अग्नि०, पृ० २३।

श्रद्धान—सच्चा पु० [सं०] श्रद्धा।

श्रद्धान्वित—वि० [सं०] श्रद्धावान्। श्रद्धायुक्त।

श्रद्धामय, श्रद्धायुक्त—वि० [सं०] श्रद्धा से पूर्ण। श्रद्धावान्। श्रद्धालु (को०)।

श्रद्धारहित—वि० [सं०] जो श्रद्धायुक्त न हो। श्रद्धाविरहित (को०)।

श्रद्धालु—वि० [सं०] १ जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धा रखनेवाला। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्। २. (स्त्री) जिसके मन में, गर्भावस्था की अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ हो। दोहदवती।

श्रद्धावान्—सच्चा पु० [सं० श्रद्धावत्] १. वह जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु पुरुष। २. जिसके मन में धर्म के प्रति निष्ठा हो। धर्मनिष्ठ।

श्रद्धाविरहित—वि० [सं०] दे० 'श्रद्धारहित' (को०)।

श्रद्धासमन्वित—वि० [सं०] श्रद्धान्वित। श्रद्धायुक्त (को०)।

श्रद्धास्पद—वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धापात्र। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धी—सच्चा पु० [सं० श्रद्धन्] जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धावान्।

श्रद्धेय—वि० [सं०] [सच्चा श्रद्धेयत्व] जिसपर श्रद्धा की जाय। श्रद्धा करने के योग्य। श्रद्धा का पात्र। श्रद्धास्पद।

श्रद्धेयता—सच्चा पु० [सं०] श्रद्धेय होने का भाव वा कर्म।

श्रद्धेयत्व—सच्चा स्त्री० [सं०] दे० 'श्रद्धेयत्व'। श्रद्धेय होने की पात्रता या भाव।

श्रपण—सच्चा पु० [सं०] गार्हपत्य या आहवनीय अग्नि जिसके द्वारा चर पकाया जाय। उबालना चर आदि पकाने की क्रिया।

श्रपणा—सच्चा स्त्री० [सं०] दे० 'श्रपण'।

श्रपित—वि० [सं०] पका हुआ। पक्का। सिझाया वा उबाला हुआ।

श्रपित—सच्चा पु० [सं०] पकाया या उबाला हुआ मांस आदि (को०)।

श्रपिता—सच्चा स्त्री० [सं०] १. काँजी। काजिक। २. चावल की माँड।

श्रप्प—सच्चा पु० [सं० सर्प] दे० 'सर्प'। उ०—अगति होत्र वरमेद, मध्य जग मेघ श्रप्प वर।—पृ० २१०, ५५।४०।

श्रव(७)—वि० [सं० सर्व] दे० 'सर्व'। उ०—षवरि श्रव घृमान दिन्नं नृप आदि सूर सामंत। अनगपाल तप सरन दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं।—पृ० २१०, १६।६५।

श्रव्वदा—अव्य० [सं० सर्वदा] दे० 'सर्वदा'। उ०—वही तत्त त्रैलोक संसार सारं। वही तारनं सत्त भौसिष पार। जगत्त अघारं निराधार वोही। वही श्रव्वदा सपदा नित्य सोही।—पृ० २१०, १७७२।

श्रव्वर(७)—सर्व० [सं० सर्व] दे० 'सर्व'। उ०—वटि दियो प्रथिराज भाग किन्ने सह श्रव्वर।—पृ० २१०, २४।६५४।

श्रम—सच्चा पु० [सं०] १ किसी कार्य के संपादन में होनेवाला शारीरिक श्रम्यास। शरीर के द्वारा होनेवाला उद्यम। परिश्रम। मेहनत। मशकत। उ०—दूर तीर्थन श्रम करि जाहि। जहाँ रहैं तहँ लखो न ताहि।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पडना।—होना।

२. थकावट। क्लान्ति।

मुहा०—श्रम पाना=परिश्रम करना। मेहनत करके थम्ना। उ०—आजु कहा उद्यम करि आए। कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए।—सूर (शब्द०)।

३. साहित्य में संचारी भावों के अतर्गत एक भाव। कोई कार्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना। ४. क्लेश। दुःख। तकलीफ। ५. दौड धूप। परेशानी। ६. पसीना। स्वेद। ७. व्यायाम। कसरत। ८. शस्त्रों का अभ्यास। सैनिक कवायद। ९. चिकित्सा। इलाज। १०. खेद। ११. तप। १२. प्रयास। १३. (शास्त्रादि का) अभ्यास।

श्रमकण—सच्चा पु० [सं०] पसीने की वूँटें, जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। स्वेदविदु।

श्रमकन(५)—सञ्ज्ञा पुं० [म० श्रमकण] स्वेदविदु। श्रमकण। उ०—
(क) श्यामल तन श्रमकन राजन ज्यो नवघन मुखा सरोवर
पारे।—बुलसा (शब्द०)। (ख) मुके व्यजन सा हिलकर
श्रविरल शीतलता सरमाने दो। अपने मुता से जगन्निता के
श्रमकन सदय ! सुखाने को।—वीणा, पृ० २०।

श्रमकर—वि० [म०] खेदकारक। थकानेवाला (को०)।

श्रमकपित्त—वि० [स०] मेहनत में थका हुआ (को०)।

श्रमकलात—वि० [म० श्रमकलात] मेहनत से थका हुआ। श्रम में शिथिल
(को०)।

श्रमघ्न—वि० [स०] जिससे श्रम दूर हो। थकावट दूर करनेवाला।

श्रमघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म०] मोठा कटू या कुम्हड़ा। मोठी लोही (को०)।

श्रमजर्जर—वि० [म० श्रम + जर्जर] परिश्रम से थका हुआ या चूर।
उ०—वे ढात ढाल कर उर अपने, है वरमा रही मधुर सपने।
श्रमजर्जर विधुर, चराचर पर, गा गीत स्नेह वेदना-सने।
—युगात, पृ० १६।

श्रमजल—सञ्ज्ञा पुं० [म०] पसीना। स्वेद। प्रस्वेद। उ०—(क) श्रमजन
विदु इहु आनन पर राजत अति सुकुमार। मानो विविध भाग
मिल विलसत मगन मित्र रम सार।—मूर (शब्द०)। (ख)
कुपकुम आठ श्रवत श्रमजल मिल मधु पेंवत छवि छोट चली
री।—मूर (शब्द०)।

श्रमजित्त—वि० [म० श्रम + म० जित् या हिं जीतना] जो मनमाना
परिश्रम करने पर भी न थके। श्रम को जीत लेनेवाला।
उ०—स्वामि भक्त श्रमजित्त मुधी, नेनापति सु श्रमीत। अनालमी
जन प्रिय जमी, सुख सप्राप्त श्रजित।—केशव (शब्द०)।

श्रमजीवी—वि० [स० श्रमजीविन्] १ शारीरिक परिश्रम करनेवाला।
मेहनत करके पेट पालनेवाला। उ०—बीटी है प्राणी सामाजिक
यत्न श्रमजीवी, वह मुनागरिक।—युगवाणी, पृ० २२। २
बीछक परिश्रम करके जाविका चलानेवाला। जैसे, श्रमजीवी
पत्रकार, श्रमजीवी लेखक।

श्रमजीवी—सञ्ज्ञा पुं० मजदूर। कुली। उ०—ये नाव रहे निज घर का
मग, कुछ श्रमजीवी घर डगमग पग, भारी है जीवन भारो
पग।—युगात, पृ० २०।

श्रमण—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ बौद्ध या जैन मतावलंबी सन्यासी।
२ यति। मुनि। ३ वह जो नीच कर्म करके जीविका निर्वाह
करता हो। नीच। घृणित। ४ श्रमजीवी। मजदूर।
५ भिक्षुक (को०)।

श्रमण—वि० १ श्रम करनेवाला। २ नीच। निम्न कोटि का।
३ नगा (को०)।

श्रमणक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बौद्ध या जैन भिक्षु (को०)।

श्रमणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ सदृशना नामक श्लोपधि। २ जटा।
मासी। बालछड़। ३ मुड़ी। घुड़ी। आवणिका। ४, शबर
जाति की एक स्त्री का नाम। ५ सन्यासिनी। ६ लावण्यमयी
स्त्री (को०)। ७, कठिन परिश्रम करनेवाली स्त्री (को०)।

श्रमणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भिक्षुनी। बौद्ध सन्यासिनी। उ० 'श्रमण'
(को०)।

श्रमदान—सञ्ज्ञा पुं० [म०] सावजनिक कार्य में स्वेच्छया दिया मजदूरी
लिए शारीरिक मेहनत करना (को०)।

श्रमविदु—सञ्ज्ञा पुं० [म० श्रमविदु] पसीना। स्वेद। उ०—जो परिश्रम करने
पर शरीर में निकलती है। श्रमण। स्वेद।

श्रमभजिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [म० श्रमभजिनी] मजदूरी देना, जो
थकावट दूर करनेवाली मांगे जाती है। थान। नागभजनी।

श्रममोहित—वि० [स०] श्रम श्रम का कारण जितनी दृष्टि व्यर्थ होता
न हो (को०)।

श्रमवारि—सञ्ज्ञा पुं० [स०] परिश्रम के कारण जितनी विद्वत्तमयता
पसनेवा। श्रमण।

श्रमविदु—सञ्ज्ञा पुं० [म० श्रमविदु] स्वेद। श्रमण।

श्रमविनयन—वि० [स०] थकान को दूर करनेवाला। (को०)

श्रमविनोद—सञ्ज्ञा पुं० [म०] वह कार्य जिससे थकान दूर हो सके
(को०)।

श्रमविभाग—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ किसी कार्य के निम्न निम्न श्रमों के
संपादन के लिये, श्रम श्रम व्यवस्था की विधि। परिश्रम
या काम का विभाग। जंग,—किसी का रूई छोड़ना, किसी का
सूत काटना, किसी का कपड़ा बुनना, किसी का अनाज पीसना,
किसी का रोटी पकाना। २, श्रमिका के श्रम श्रम से संबंधित
मासिकी की देयमान करनेवाला सहायक मजदूर।

श्रमशीकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] श्रम में होनेवाला पसीना। श्रमण।

श्रमशील—वि० [म०] मेहनती। परिश्रम करनेवाला (को०)।

श्रमसहिष्णु—वि० [म०] जो थोड़ा थकान सहन करे। मेहनती।
परिश्रमी।

श्रमसाध्य—वि० [म०] जिसके संपादन में श्रम करना पड़े। जो श्रम
में या श्रम पर परिश्रम करना पड़े।

श्रमसीकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] पसीना। श्रमविदु। उ०—(क) श्रम
मकर कपोलनि भवकत श्रमसीकर ते राग।—मूर (शब्द०)।
(ख) मुझे श्रमसीकर ये, छवि के निर्मल अरे नयना मे, दात
शिरार्ये रक्तवाह त।—अनामिका, पृ० १६७।

श्रमस्थान—सञ्ज्ञा पुं० [म०] १ श्रम करने का स्थान। व्यापारभूमि।
कारखाना (को०)।

श्रमावु—सञ्ज्ञा पुं० [म० श्रमावु] पसीना। स्वेद (को०)।

श्रमार्त—वि० [म०] श्रम से थका हुआ या चूर। उ०—हमारे देश में
मे भी नाट्याचार्य ने नाटक की विशेषता बताते हुए लिखा कि
यह दुखी, श्रमार्त, शोर्त को विश्वासिदायक होता है।—
सं० शास्त्र, पृ० १६।

श्रमि—वि० [स० श्रम] जो श्रम में शिथिल हो गया हो। थका।
थका हुआ। उ०—चारों भातन श्रमि जानि की जननी तब
पीड़ाए। चापत चरण जननि अर श्रमनी कडुका मधुर स्वर
गाए।—मूर (शब्द०)।

श्रमितचरण—वि० [स० श्रमित + चरण] जिसके पाँच थक गए हो ।
उ०—श्रमित चरण लौटे गृहिजन निज निज द्वार ।—अपरा, पृ० ३५ ।

श्रमी—वि०, सञ्ज्ञा पु० [स० श्रमिन्] १ मेहनती । परिश्रमी । उ०—
थके श्रमी जीवों के पसीने भरे सीने लग, जीने को सफल करने
के लिये सोते चलो ।—भरना, पृ० ४१ २ दे० । 'श्रमजीवी' ।

श्रय—सञ्ज्ञा पु० [स०] आश्रय । श्रयण [को०] ।

श्रयण—सञ्ज्ञा पु० [स०] आश्रय ।

श्रयणा०—वि० स० [स० स्रवण] श्रयण करना । आश्रय करना या
लेना । उ०—इकै श्रय कीरति श्रमृत एक । कलूक कवित्त सुघारै
विसेक ।—पृ० १०, १२ ३३४ । २ गिराना । बहाना ।
दे० 'श्रवना' ।

श्रवन्तिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्रवन्तिनी] नदी ।

श्रव'—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. जिससे सुना जाय, कान (डि०) ।

यौ०—श्रवपत्र = एक आभूषण । कर्ण फूल ।

२. जो सुना जाय, शब्द । ३. श्रवण करना । सुनना जैसे, सुखश्रव
(को०) । ४. त्रिभुज का कर्ण (को०) । ५. स्रवित होना । क्षरण
(को०) । ६. कीर्ति । यश (को०) । ७. अन्न । धान्य (को०) ।
८. धन । संपत्ति (को०) ।

श्रव०^१—सर्व० [स० सर्व] सब । उ०—राजकुँवर श्रव वरुणिया,
सयल सभा लाभलो हो सजोग ।—बी० रासा, पृ० १०० ।

श्रवण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता
है । कान । कर्ण । श्रुति । २. वह ज्ञान जो श्रवणेंद्रिय द्वारा
होता है । ३. सुनना । श्रवण करने की क्रिया । श स्त्रीय परिभाषा
में शास्त्रों में लिखी हुई बातें सुनना और उनके अनुसार कार्य
करना अथवा देवताओं आदि के चरित्र सुनना । उ०—श्रवण
कीर्तन सुमिरन करै । पद सेवन अर्चन उर धरै ।—सूर
(शब्द०) । ४. नौ प्रकार की भक्तियों में से एक प्रकार की
भक्ति । उ०—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पद रत, अरचन, वदन
दास । सख्य और आत्मा निवेदन प्रेम लक्षण जास ।—सूर
(शब्द०) । ५. वैश्य तपस्वी अधक मुनि के पुत्र का नाम ।
६. राजा मेघवज्र के पुत्र का नाम । उ०—ता सगति नव सुत
नित जाए । श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाए ।—सूर (शब्द०) ।
७. अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों में से बाईसवाँ नक्षत्र,
जिसका आकार शर या तीर का सा माना गया है ।

विशेष—इसमें तीन तारे हैं, और इसके अविपति देवता हरि कहे
गए हैं । फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस नक्षत्र में
जन्म लेता है, वह शास्त्रों से प्रेम रखनेवाला, बहुत से लोगों से
मित्रता रखनेवाला, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाला और
अच्छी संतानवाला होता है ।

८. किसी त्रिभुज का कर्ण (को०) । ९. अध्ययन (को०) । १०. यश ।
कीर्ति (को०) । ११. धन । संपत्ति (को०) । १२. बहना ।
क्षरण । स्रवित होना (को०) ।

हि० श० ६-५६

श्रवणकातरता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सुनने की लालसा (को०) ।

श्रवणगोचर—वि० [स०] १. जो सुना जा सके । २. जहाँ से
सुनाई पड़े (को०) ।

श्रवण द्वादशी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] भादो मास के शुक्ल पक्ष की वह
द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र से युक्त हो । उ०—अस कहि शुभ
दिन शोधि ब्रह्म ऋषि तुल्य सुमत बोलायो । भ'दौ मास श्रवण
द्वादशि को सुदिवस सुखद सुनायो ।—रघुराज (शब्द०) ।

विशेष—यह बहुत पुराने तिथि मानी जाती है । इसे वामन द्वादशी
भी कहते हैं । कहते हैं, वामनावतार इसी दिन हुआ था ।

श्रवणपथ—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रवणेंद्रिय । कान ।

श्रवण पक्ष—वि० [स०] जो सुनने में कठोर हो । श्रवणकटु ।

श्रवणपालि, श्रवणपाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कान की ललरी (को०) ।

श्रवणपुट, श्रवणपुटक—सञ्ज्ञा पु० [स०] कर्णरंध्र (को०) ।

श्रवण पूरक—सञ्ज्ञा पु० [स०] कान का आभूषण ।

श्रवण फूल—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रवण + हि० फूल] करनफूल ।—पोद्दार
अभि० ग्रं०, पृ० १६३ ।

श्रवणभूषण—सञ्ज्ञा पु० [स०] कान का आभूषण ।

श्रवणविद्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जो श्रवण इंद्रिय के संपर्क
से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है । जैसे, सगीतशास्त्र ।

श्रवणविवर—सञ्ज्ञा पु० [स०] कान का छेद (को०) ।

श्रवणविषय—[स०] १. दे० 'श्रवणपथ' । २. श्रवण की सीमा में
आनेवाला विषय, वस्तु आदि ।

श्रवणवृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्रवण + वृत्ति] सुनने की वृत्ति । श्रवण ।
सुनने की ललक । उ०—जिस प्रकार दर्शन वृत्ति की बोध दशा
और रागात्मिका दशा ये दो दशाएँ होती हैं, उसी प्रकार श्रवण
वृत्ति की भी ।—रस०, पृ० ७२ ।

श्रवणशीर्षिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्रावणी वृद्ध । गोरखमुंडी । बड़ी
मुंडी ।

श्रवणसुभग—वि० [स०] कर्णेंद्रिय को सुख देनेवाला । जो सुनने
में अच्छा लगे (को०) ।

श्रवणहारी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रवणहारिन्] वह जो कानों को भला
लगे । सुनने में अच्छा जान पड़नेवाला । कर्णमधुर ।

श्रवणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. बड़ी मुंडी । २. पु (मुं०) डेरी । ३. अश्विनी
आदि सत्ताइस नक्षत्रों के अंतर्गत बाईसवाँ नक्षत्र । विशेष दे०
'श्रवण'—७ ।

श्रवणाधिकारी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रवणाधिकारिन्] वह जो बोल रहा
हो । वक्ता (को०) ।

श्रवणावभास—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रुतिपथ । कर्ण-श्रवण-पथ (को०) ।

श्रवणाह्वया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. निर्विषी नामक तृण । २. जल
चौलाई ।

श्रवणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. पु (मुं०) डेरी । २. गोरखमुंडी । महामुंडी ।

श्रवणीय—वि० [स०] सुवने लायक। श्रवण करने योग्य।
 श्रवणोद्भय—सञ्ज्ञा पुं० [स० श्रवणोद्भय] कान। कर्ण।
 श्रवणोत्पल—सञ्ज्ञा पुं० [स०] आभूषण की दृष्टि से कान में लगाया हुआ कमल [को०]।
 श्रवणोदर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] कर्णोद्घ। कर्णविवर। कान [को०]।
 श्रवती(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्रवन्तिनी या हिं०] नदी।—नद० ग्रं० पृ०, ६८।
 श्रवन्(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [स० श्रवण] १ श्रवण। कान। उ०—(क) नयन वैन औ श्रवण ये सबही तोर प्रसाद। सेवा मोर यही नित बोलौ आसिरवाद।—जायसी (शब्द०)। (ख) नैन राच्यो रूप सो श्रवन् राच्यो नाद।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १८०। २ दे० 'श्रावण'। उ०—श्रवण मास नौमी तिथि लगिय।—प० रासो, पृ० १५६। ३. आकर्णन। श्रवण करना। सुनना।
 श्रवना(पु)—क्रि० प्र० [स० स्त्राव] बहना। चूना। रसना। उ०—राति दिवस रस श्रवत सुधा मे कामधेनु दरसाई। लूट लूट दधि खात सखन संग तैसो स्वाद न पाई।—सूर (शब्द०)।
 श्रवना^२—क्रि० स० गिराना। बहाना। उ०—खर भर लक सशक, दशानन गर्भ श्रवहि अरि नारि।—तुलसी (शब्द०)।
 श्रवनी(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरनी] दे० 'सुमिरनी'। उ०—हस दशा धरि पय चलावे। श्रवनी कठी तिलक लगावे।—कबीर सा०, पृ० २२१।
 श्रवस्यु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ प्रसिद्धि। यश। ख्याति। २ ख्यातिदायक कार्य [को०]।
 श्रवाप्य, श्रवाप्य^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वलिपशु [को०]।
 श्रवाप्य, श्रवाप्य^३—वि० प्रशसनीय [को०]।
 श्रवित(पु)—वि० [स० स्त्राव] बहा हुआ। रसा या चूसा हुआ। उ०—काचे घट में जल जथा श्रवित होत अति जाय।—दीन ग्र०, पृ० ७६।
 श्रविष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।
 श्रविष्ठा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] घनिष्ठा नक्षत्र।
 श्रविष्ठाज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।
 श्रविष्ठामण—सञ्ज्ञा पुं० [स०] चंद्रमा।
 श्रविष्ठामू—सञ्ज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।
 श्रव्य—वि० [स०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे,—संगीत।
 यौ०—श्रव्य काव्य = वह काव्य जो केवल सुना जा सके। वह काव्य जो अभिनय आदि के रूप में देखा जा न सके। इसके तीन भेद हैं—(१) गद्य, (२) पद्य और (३) गद्य-पद्य-मय। विशेष दे० 'काव्य'।
 श्रात—वि० [स० श्रान्त] १ जितेंद्रिय। शांत। ३. जो अधिक श्रम करने के कारण थक गया हो। परिश्रम से थका हुआ। ४. दुःखी। खिन्न। रजिदा। ५. निवृत्त। ६. जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो।

यौ०—श्रातचित्त, श्रातमना श्रातहृदय = दुःखी। उदास। श्रानसंवाह, श्रातसंवाहना = थके व्यक्ति को आराम देना।

श्राति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० श्रान्ति] १, श्रम। परिश्रम। मेहनत। २ थकावट। उ०—सध्या पर्यंत मार्ग में चलती रही, इससे श्रत्यत श्राति मालूम हुई।—प्रतापनारायण (शब्द०)। ३. खेद। दुःख। ४. विश्राम। आराम।

श्राण^१—वि० [स०] १ घी, दूध या जल में पका हुआ। सिद्ध। पक्का। भूना हुआ [को०]। ३. उबाला या पकाया हुआ। ४. आर्द्र। तर [को०]।

श्राण^२—सञ्ज्ञा पुं० [स०] उबाला हुआ मांस [को०]।

श्राणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मांड की कांजी जिसका व्यवहार पथ्य रूप में होता है। यवागू। विशेष दे० 'यवागू'।

श्राणिक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वे भृत्य जिनको केवल—भाजी (या यवागू) दी जाती थी।—संपूर्ण अभि० ग्र०, पृ० २४६।

श्राद्ध—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। श्रद्धा से किया जानेवाला काम। २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे पितरों के उद्देश्य से तर्पण और पिंडदान करना तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। उ०—श्राद्ध करत पितरन को तर्पण करि बहु भांति। कहूँ विप्रन को देत दक्षिणा कहूँ भोजन की पांति।—सूर (शब्द०)।

विशेष—कुछ लोगों के मत से श्राद्ध पांच प्रकार का है—नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण और कुछ लोग इन पांच प्रकार के श्राद्धों के अतिरिक्त नीचे लिखे सात प्रकार के और भी (कुल बारह प्रकार के) श्राद्ध मानते हैं—सपिंडन, गोष्ठी, शुद्धचर्थ, कर्मांग, दैविक, यात्रार्थ और पुष्ट्यर्थ।

३. आश्विन कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों के उद्देश्य से विशेष रूप से पिंडदान किया और ब्राह्मणभोजन कराया जाता है। पितृ-पक्ष। ४. विरवास। ५. प्रीति।

श्राद्धकर्म—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. अत्येष्टि क्रिया। २. मृत की वार्षिक तिथि पर पिंडदान आदि करना [को०]।

श्राद्धकर्ता—सञ्ज्ञा पुं० [स० श्राद्धकर्तृ] श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति। श्राद्ध-कारक।

श्राद्धकृत्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धक्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धत्व—सञ्ज्ञा पुं० [स०] श्राद्ध का भाव या धर्म।

श्राद्धद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'श्राद्धकर्ता'।

श्राद्धदिन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] श्राद्धकृत्य करने का दिन। मृत व्यक्ति की वह वार्षिक तिथि जिस दिन मृत का श्राद्धकर्म किया जाय।

श्राद्धदेव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १. धर्मराज। २. यमराज। ३. श्राद्ध में निमंत्रित ब्राह्मण। ४. मार्कंडेय पुराण के अनुसार वैवस्वत मनु का एक नाम। ५. एक वैश्वदेव [को०]। ६. वह लोक जहाँ मरने पर पितर लोग जाते हैं। पितृलोक। ७. प्रजापति। पितर [को०]।

श्राद्ध पक्ष—सञ्ज्ञा पु० [स०] तर्पण, पिंडदान आदि के लिये निश्चित आश्विन मास का कृष्ण पक्ष । पितृपक्ष ।

श्राद्धभुक्—सञ्ज्ञा पु० [स० श्राद्धभुज्] पितर [को०] ।

श्राद्धभुक्—वि० श्राद्धान्न भोजन करनेवाला [को०] ।

श्राद्धभोक्ता—सञ्ज्ञा पु० [स० श्राद्धभोक्तृ] पितर [को०] ।

श्राद्धमित्र—सञ्ज्ञा पु० [स०] मनु के अनुसार वह व्यक्त जो श्राद्धकर्म के अवसर पर मित्र बनावे या मित्रता करे [को०] ।

श्राद्धशाक—सञ्ज्ञा पु० [स०] नाडी शाक । कालशाक ।

श्राद्धसूतक—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्राद्ध के उद्देश्य से बनाया हुआ भोजन । पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को खिलाने के लिये बनाया हुआ भोजन ।

श्राद्धिक—वि० [म०] श्राद्ध सबधी । श्राद्ध का ।

श्राद्धिक—सञ्ज्ञा पु० १ वह जो श्राद्ध के अवसर पर पितरों के उद्देश्य से भोजन करता हो । श्राद्ध में दी हुई वस्तु को स्वीकार करनेवाला । २ श्राद्ध में दी हुई वस्तु [को०] ।

श्राद्धी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्राद्धिन्] श्राद्ध में भोजन करनेवाला । श्राद्धिक ।

श्राद्धीय—वि० [स०] श्राद्ध सबधी । श्राद्ध का ।

श्राद्धेय—वि० [स०] श्राद्ध के योग्य । श्राद्ध में प्रयुक्त होने योग्य । जैसे, श्राद्धेय अन्न [को०] ।

श्राप—सञ्ज्ञा पु० [स० शाप] दे० 'शाप' । उ०—राखसन मारि विश्वामित्र सा करायो यज्ञ तारी रिषि नारी सिला श्राप सो भई रहा ।—रघुनाथ बदीजन (शब्द०) ।

श्रापी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रापिन्] वह जो भोजन बनाता हो । रसोदया ।

श्राम—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. मास । महीना । २ मङ्ग । छाजन । घर । ३. काल । समय ।

श्रामणेर श्रामणिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जो नया बौद्धभिक्षु हुआ हो [को०] ।

श्राय—सञ्ज्ञा पु० [स०] आश्रय ।

श्रावती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] धर्मपत्न । धर्मपुत्र । दे० 'श्रावस्ती' [को०] ।

श्राव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. श्रवण । कान । २. गवाविरोजा । ३. दे० 'स्रवण' ।

श्रावक—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध धर्म को माननेवाला सन्यासी । २. जैन धर्म को माननेवाला सन्यासी । ३. वह जो जैन धर्म का अनुयायी हो । ४. नास्तिक । पाखंडी । उ०—यह नरक को कोउ जीव है जिनि याहि देखि डेराहि । निज जानियै यह श्रावका आत दूर ते तजि ताहि ।—केशव (शब्द०) । ५. दूर की आवाज । दूर का शब्द । ६. कोश । काक । ७. छाव । शिष्य ।

श्रावक—वि० श्रवण करनेवाला । सुननेवाला ।

श्रावग—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रावक] दे० 'श्रावक' । उ०—अज्ञहूँ, श्रावग ऐसी करै । ताही को मारग अनुसरै ।—सूर (शब्द०) ।

श्रावगी—सञ्ज्ञा पु० [स० श्रावक] जैन धर्म को माननेवाला । जैनी ।

श्रावण—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. चैत आदि महीनों में से एक महीने का नाम । असाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना ।

विशेष—गणना में यह पाँचवाँ महीना होता है और वर्षा ऋतु में पड़ता है । इस मास की पूर्णमासी श्रवण नक्षत्र से युक्त होती है इसी लिये इसे श्रावण कहते हैं । सावन ।

२ एक प्रकार का वर्ष ।

विशेष—यदि श्रवण अथवा धनिष्ठा नक्षत्र में बृहस्पति उदय हो तो उस दिन से एक वर्ष तक का समय श्रावण कहलाता है । कहते हैं, इस वर्ष में धान्य खूब पकने है, मज लोग बहुत सुखी होते हैं, पर पाखंडी मनुष्य तथा उनके अनुयायी पीड़ित होते हैं ।

३. श्रावण मास की पूर्णिमा । ४. शब्द, जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय द्वारा होता है । आवाज । ५. श्रवण करने से प्राप्त ज्ञान । श्रवणजन्य ज्ञान [को०] । ६. श्रवण नामक तपस्वी [को०] । ७. नास्तिकता । पाखंड । ८ वचक । पाखंडा [को०] । ९. माकडेय पुराण के अनुसार । योगियों के याग में होनवान पांच प्रकार का वधन या उपसर्ग जिसमें यागों हजार याजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयगम करता है ।

श्रावण—वि० १. श्रवण नक्षत्र मन्वा । श्रवण नक्षत्र का । २. श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न [को०] । ३. श्रवणेंद्रिय या कान से संचालित [को०] । ३. वेदविहित वेदाक्त । वैदिक [को०] ।

यौ०—श्रावण ज्ञान, श्रावण प्रत्यक्ष = श्रवणेंद्रिय द्वारा प्राप्त ज्ञान वा अनुभूति ।

श्रावणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. भुँइ कदव । २. सुदर्शना नामक वृक्ष ।

श्रावणिक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १. श्रावण मास । सावन । २. एक प्रकार की आग ।

श्रावणिक—वि० श्रावण सबधी । श्रावण का ।

श्रावणिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] मुंडी ।

श्रावणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा । सावन मास की पूर्णमासी ।

विशेष—इस दिन ब्राह्मणों का प्रसिद्ध त्याहार 'रक्षावधन' या 'सलोनो' तथा कुछ और कृत्य या पूजन आदि होते हैं । इस दिन लोग यज्ञोपवीत का पूजन करते और नवोन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं ।

२. मुंडी । घुडा । ३. भुँइ कदव । ४. वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि । ५. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि ।

श्रावना—सञ्ज्ञा पु० [स० लाव (= बहाना), हि० लवना] गिराना । बहाना । उ०—सचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल साचि व्यान भर लागी । ताके प्रेम सुफल मुनिश्रावन श्याम सुरैग अनुरागो ।—सूर (शब्द०) ।

श्रावन—सञ्ज्ञा पु० ढरकाने या बहाने या द्रवित करने की क्रिया या भाव ।

श्रावस्त—सञ्ज्ञा पु० [स०] हरिवंश के अनुसार राजा श्राव के पुत्र का नाम, जिन्होंने श्रावस्तकी नगरी बसाई थी।

श्रावस्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती'।

श्रावरती—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] उत्तर कोशल में गंगा के तट पर बसी हुई एक बहुत प्राचीन नगरी।

विशेष—यह अब एक छोटे से गाँव के रूप में रह गई है और सहेत महेत कहलाती है। आजकल यह स्थान बलरामपुर राज्य के अंतर्गत है। यहाँ श्रीरामचंद्र के पुत्र लव की राजधानी थी। जैनी इसे 'सावस्थी' कहते हैं और अपने नवें तीर्थंकर सुद्धनाथ का कल्याणक बतलाते हैं। यह राजा प्रसेनजित् की राजधानी भी कही जाती है। यहाँ एक बार कुछ दिनों तक भगवान् बुद्ध ने भी निवास किया था, इसलिये बौद्धों की दृष्टि में यह एक बहुत पण्यस्थल है। बुद्ध के समय में और उनसे पहले भी यह नगरी बहुत आसन्न थी।

श्रावा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] माँड। पसावन। पीच।

श्रावित^१—वि० [स०] कहा हुआ। बताया हुआ। सुनाया हुआ [को०]।

श्रावित^२—सञ्ज्ञा पु० १ पुकार। गृहार। २. निवेदन [को०]।

श्राविता—वि० [स०] श्रावितृ] श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता [को०]।

श्राविष्ठ, श्राविष्ठीय—वि० [स०] १. श्राविष्ठ या श्रवण नक्षत्र सवधी। २. श्राविष्ठा में उत्पन्न या जात [को०]।

श्रावी^१—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्राविन्] सज्जी। स्वजिका क्षार।

श्रावी^२—वि० श्रवण करनेवाला।

श्राव्य—वि० [स०] १. सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य। २. स्फुट। व्यक्त। श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा ग्राह्य [को०]।

श्रित—वि० [स०] १. आश्रय में पहुँचा हुआ। २. चिपका, लगा हुआ। सहारा लिया हुआ। अधिष्ठित। ३. मीलित। सवद्ध। ४. रक्षित। बचाया हुआ। ५. समानित। मेवित ६. अनुजीवी। सहकारी। ७. आच्छादित। ८. पूरित। ९. एकत्रित। समवेत। १०. संपन्न। ११. पकाया हुआ [को०]।

यौ०—श्रितक्षम = श्रक्षुष्य। शातमना। स्वस्थ। श्रितसत्त्व = धैर्ययुक्त। साहस युक्त।

श्रीतवान—वि० [स०] श्रवत्] १. आश्रय लेनेवाला। सेवक।

श्रिति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्रवलव। सहारा [को०]।

श्रियमन्य—वि० [स०] श्रियम्मन्य] [वि० स्त्री० श्रियमन्या] अपने को श्रीयुक्त माननेवाला। अभिमानी। घमडी [को०]।

श्रिय^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्रिया] मंगल। कल्याण। उ०—लक्ष्मी जोति जो बाम्हन लोग। तिनके वचन न ससय जोग। इनकी बानि सग श्रिय रहही। ये नहि कबहुँ मृपा कछु कहही। —सीताराम (शब्द०)।

श्रियु^२—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] श्री] शोभा। प्रभा। उ०—दुहन बीच सकेत राधिका नवकुँवर की। सो श्रिय की कहि सकै भेदु पिय प्यारी घर की। —सूदन (शब्द०)।

श्रिया—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी।

श्रियावास—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह जिसके पास यथेष्ट लक्ष्मी हो। धनवान्। अमीर।

श्रियावासी—सञ्ज्ञा पु० [स०] श्रियावासिन्] महादेव। शिव।

श्री^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। उ०—तजि वैकुंठ गरुड तजि आ तजि निकट 'दास के आयो।—मुर (शब्द०)। २. सरस्वती। ३. धूप। सरल वृद्ध। ४. लवग। लौग। ५. कमल। पद्म। ६. वेल्। विल्व वृद्ध। ७. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओपवि। ८. सफेद चंदन। सवल। ९. धर्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। १०. संपत्ति। वन। दौलत। ११. विभूति। ऐश्वर्य। १२. उपकरण। १३. अधिकार। १४. कीर्ति। यश। १५. प्रभा। शोभा। १६. काति। चमक। १७. वृद्धि। १८. सिद्धि। १९. एक प्रकार का पद-चिह्न। उ०—स्वस्तिक अष्टकोण ओ केरा। हल मूसन पन्नग शर हेरा।—विश्राम (शब्द०)। २०. स्त्रिया का वैदो नामक आभूषण। उ०—श्री जो रतन माँग वैठारा। जानहु गगन दूट निस तारा।—जायसी (शब्द०)। २१. ऊर्ध्व पुद्ग के बीच की लंबी नोकदार लाल रंग की रेखा। २२. चंद्रमा की बारहवीं कला [को०]। २३. सजावट। रचना [को०]। २४. उक्ति। वार्ता [को०]। २५. ऋक्, साम और यजुर्वेद। वेदत्रयी [को०]। २५. पक्व करना। एकदिल करना। पकान। [को०]। २६. समझ। ज्ञान। बुद्धि [को०]। २७. आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में लिखा जाता है।

विशेष—सन्यासी, महात्माओं के नाम के आगे श्री १०८ लिखा जाता है। माता, पिता और गुरु के लिये श्री के साथ ६, स्वामी के लिये ५, शत्रु के लिये ४, मित्र के लिये ३, नौकर के लिये २ और शिष्य, सुत और स्त्री के लिये श्री के साथ १ लिखने की प्राचीन प्रणाली है।

श्री^२—सञ्ज्ञा पु० १ कुवेर। (डि०)। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ वैष्णवों का एक संप्रदाय। ५ एक वृत्त का नाम। यह एकाक्षरा वृत्ति है। इसके प्रत्येक पद में एक गुरु होता है। यथा—गो। श्री। धी। ही। ६ संपूर्ण जाति का एक राग, जो हनुमत् के मत से छद्म रागों के अंतर्गत पाँचवाँ राग है।

विशेष—यह धैवत स्वर की संतान और पृथ्वी की नाभि से उत्पन्न माना गया है। इसकी ऋतु शरद और वार शुक्र है। कहते हैं, इस राग को शुद्धपूर्वक गाने से सूखा वृद्ध भी हरा हो जाता है। शास्त्र के अनुसार इस राग की रागि-नियाँ ये हैं—गौरी, पूरवी, मालवी, मुलतानी, और जयती। इसका सहचर मंगलराग और सहचरी चंद्रावती रागिनी है। श्यामकल्याण, मारु, एमन, मोन ध्यान और गौड इसके पुत्र हैं। भीमपलाश्री, धनाश्री, मालश्री, वारवा, चित्राचकोरी इमकी पुत्रवधुएँ हैं। हनुमत् के अनुसार मारवा, पूरवा, श्याम, हेम, क्षेत्र, हविरिक, भूपाल, जेतवा, कल्याण, ध्यानकल्याण इसके पुत्र हैं। इसकी स्त्रियाँ मालवी, त्रिवेणी, गौरी, गौरा

और पूरबी है, तथा इसकी प्रियाएँ एमनि, टकी, माली, गौरा, नागध्वनि और चेतकी हैं।

श्री^३—वि० १. योग्य। २. सुंदर। श्रेष्ठ। ४ मिश्र। मिश्रित। ५ शुभ।
श्रीकठ—सच्चा पु० [स० श्रीकण्ठ] १. महादेव। उ०—श्रीकठ उर वासुकि लमत सर्वमगला गार।—केशव (शब्द०)। २ हस्तिना-पुर के उत्तर पश्चिम का कुरु जागल देश। ३ सस्कृत के नाटक-कार भवभूति का एक नाम।

यौ०—श्रीकठपदलाञ्छन = श्रीकठ नामवाला, भवभूति का एक नाम।
४ एक राग का नाम (को०)। ५ सुंदर कठवाला एक पक्षी (को०)।

श्रीकठसखा—सच्चा पु० [स० श्रीकण्ठसखा] कुबेर का एक नाम।

श्रीकदा—सच्चा स्त्री० [स० श्रीकन्दा] बघ्या कर्कोटकी, खेखसा। वन-परवल।

श्रीकर^१—सच्चा पु० [न०] १ विष्णु। २ लाल कमल। ३. नौ उपनदों में से एक।

श्रीकर^२—वि० १. शोभा बढ़ानेवाला। सौंदर्य बढ़ानेवाला। २ कल्याण करनेवाला।

श्रीकरण—सच्चा पु० [स०] १ कलम। लेखनी। २ कायस्थों की शाखा या उपजाति का नाम। १ उत्तर कोशल की राजधानी का नाम (को०)।

श्रीकर्ण—सच्चा पु० [स०] एक प्रकार का पक्षी। (वृहत्संहिता)।

श्रीकांत—सच्चा पु० [स० श्रीकान्त] लक्ष्मी के पति, विष्णु।

श्रीकाम—वि० [स०] कीर्ति या यश चाहनेवाला। अभ्युदय की आकांक्षा करनेवाला।

श्रीकाम—सच्चा स्त्री० [स०] राधिका का एक नाम (को०)।

श्रीकारो—सच्चा पु० [स० श्रीकारिन्] एक प्रकार का मृग। कुरग।

पर्या०—महायव। शिखिपुष्प। यवन। जघाल।

श्रीकीर्ति—सच्चा पु० [स०] संगीतदामोदर के अनुसार ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक भेद। इसमें दो गुरु और दो लघु मात्राएँ होती हैं (संगीतदामोदर)।

श्रीकुज—सच्चा पु० [स० श्रीकुञ्ज] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम, जो सरस्वती नदी के तट पर था।

श्रीकुड—सच्चा पु० [स० श्रीकुण्ड] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीकुच्छ—सच्चा पु० [स०] एक व्रत जिसमें केवल श्रीफल (वेल) खाकर रहते हैं।

श्रीकृष्ण—सच्चा पु० [स०] दे० 'कृष्ण'—१।

यौ०—श्रीकृष्णस्मरण = पुष्टिमार्गीय जनों का नमस्कार। उ०—तब उन वैष्णवों को श्रीकृष्णस्मरण करि बोहोत आदर करि बैठा रे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७७।

श्रीक्षेत्र—सच्चा पु० [स०] जगन्नाथ पुरी तथा उसके आसपास के प्रदेश का नाम, जो पुरय क्षेत्र माना जाता है।

श्रीखंड—सच्चा पु० [स० श्रीखण्ड] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का

चंदन जो हरिचंदन भी कहलाता है। मलयागिरि चंदन। उ०—मुकता माल नद नदन उर घर्घ सुधा घट काति। तनु श्रीखंड मेघ उज्ज्वल अति देखि महाबल भाँति।—सूर (शब्द०)। २ एक पेय पदार्थ। दे० 'श्रीखरण'। उ०—कलिया अरु कवाव वर स्वादू। तिमि श्रीखंड करन अहलादू।—रघुराज (शब्द०)। ३ वैश्यों की एक जाति।

श्रीखंड शैल—सच्चा पु० [स० श्रीखण्ड शैल] मलय पर्वत, जहाँ श्रीखंड (चंदन) होता है।

श्रीखंडा—सच्चा पु० [हि०] दे० 'श्रीखंड'।

श्रीगघ—सच्चा पु० [स० श्रीगन्ध] सफेद चंदन। संदल।

श्रीगणेश—सच्चा पु० [स०] आरंभ। प्रारंभ। शुभआत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

श्रीगदित—सच्चा पु० [स०] उपरूपक के प्रठारह भेदों में से एक भेद।

विशेष—इसकी रचना प्रायः किसी पौराणिक घटना के आधार पर होती है। इसका दूसरा नाम श्रीरामिका भी है।

श्रीगर्भ—सच्चा पु० [स०] १. विष्णु। २. खड्ग। तलवार। ३. राजा का शयनकक्ष (को०)।

श्रीगुरु—सच्चा पु० [स०] वैश्यों की एक जातिविशेष।

श्रीगेह—सच्चा पु० [स०] कमल। पद्म।

श्रीगोड—सच्चा पु० [स० श्री + हि० गोड] वैश्यों की एक जाति विशेष।

श्रीग्रह—सच्चा पु० [स०] वह स्थान जहाँ चिड़ियों के पानी पीने का प्रबंध हो।

श्रीग्रामर—सच्चा पु० [स०] नारायण। विष्णु (को०)।

श्रीघन—सच्चा पु० [स०] १. दही। दधि। २. बुद्धदेव का एक नाम। ३. बौद्ध यति या संन्यासी।

श्रीचंदन—सच्चा पु० [स० श्रीचन्दन] सफेद चंदन। संदल।

श्रीचक्र—सच्चा पु० [स०] १. तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार का चक्र या यंत्र।

विशेष—इसका व्यवहार देवी के पूजन में, विशेषतः त्रिपुरामुदरी देवी के पूजन में होता है।

२. भूमंडल। ३. इंद्र के रथ का एक चक्र (को०)।

श्रीचमरी—सच्चा स्त्री० [स०] एक प्रकार का हिरन।

श्रीज—सच्चा पु० [स०] १. कामदेव। मदन। २. शाव का एक नाम।

श्रीटंक—सच्चा पु० [स० श्रीटङ्क] संगीत में एक प्रकार का राग, जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

श्रीणा—सच्चा स्त्री० [स०] रात। रात्रि।

श्रीतरु—सच्चा पु० [स०] सर्ज वृक्ष। साल का पेड़। शाल।

श्रीताल—सच्चा पु० [स०] विष्णुपुराण के अनुसार एक नरक का नाम।

श्रीताल—सच्चा पु० [स०] ताड़ या ताल के वृक्ष से मिलता जुलता एक प्रकार का वृक्ष जिसे हिताल भी कहते हैं।

विशेष—यह मलाया देश में उत्पन्न होता है। वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कुछ कुछ खट्टा, कफकारक, किंचित् वायु को कु करनेवाला तथा पित्त का नाश करनेवाला माना गया है।

पर्यां—मृदुगाल । लक्ष्मीनाल । मृदुच्छद । विशालपत्र । मसो-
लेखनल । शिरालपत्रक ।

श्रीतीर्थ—सञ्ज्ञा पुं [सं] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ
का नाम ।

श्रीतेज, श्रीतेजा—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रीतेजस् ललितविन्तर के अनुसार एक
बुद्ध का नाम ।

श्रीद'—सञ्ज्ञा पुं [सं] धन देनेवाले, कुपेर ।

श्रीद'—वि० १. श्री बढानेवाला । २. शोभा बढानेवाला ।

श्रीदयित—सञ्ज्ञा पुं [सं] विष्णु का एक नाम ।

श्रीदामा—सञ्ज्ञा पुं [सं] आदामन् । श्रीकृष्ण के एक खाल सखा का
नाम, जिन्हें मुदामा भी कहते हैं । उ०—हूँमि हसि तारी देत
मखा सत्र भर श्रीदामा चोर । मूरदाम हसि कहति यशोदा
जीरयो है सुन मोर ।—पूर (शब्द०) ।

श्रीदेवा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] वसुदेव की पत्नी सुदेवा का एक नाम ।

श्रीद्रुम—सञ्ज्ञा पुं [सं] दे० श्रीवृक्ष' को० ।

श्रीधन्वी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

श्रीधर'—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. विष्णु का एक नाम । उ०—धनि धनि
नद धन्य निवेशासर वान यशुपति जिन अवर जाए ।—सूर
(शब्द०) । २. शालग्राम शिलाचक्र को० । ३. जैनियों के
चौवास तीर्थकरा म मे मातर्वे तीर्थकर का नाम । ४. श्रीधर
स्वामी । श्रीमद्भागवत के एक स्थाननाम टाकाकार ।

श्रीधर'—वि० तेजस्वी । तेजवान् ।

श्रीधाम—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. लक्ष्मी का निवासस्थान । २. पद्म ।

श्रीनन्दन—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रीनन्दन । २. कामदेव । २. एक ताल का
नाम को० ।

श्रीनगर—सञ्ज्ञा पुं [सं] काश्मीर राज्य की आधुनिक राजधानी ।
२. राजतरंगिणी में उल्लिखित दा नगर जिनमें एक कानपुर
और दूसरा बुदेलखंड में था को० ।

श्रीनाथ—सञ्ज्ञा पुं [सं] विष्णु का एक नाम ।

श्रीनाथजी द्वार—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रीनाथ+हि० जी+सं द्वार]
वल्लभ मतानुयायियों का एक पवित्र तीर्थ जो उदयपुर में है ।
उ०—ऐसे करत कछुक दिन में श्री गुसाईंजी द्वारिकाजी तें
श्रीनाथजी द्वार पधारे ।—दो सौ बावन०, भा० २,
पृ० १० ।

श्रीनिकेत—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुण्ठ ।
उ०—श्रीनिकेत समेत सब मुख रूप प्रगट निधान । अवर सुधा
पिप्प्राइ विद्युरे पठै दीना ज्ञान ।—सूर (शब्द०) । २. गवा-
विरोजा । सरल निर्यास । ३. लाल कमल । ४. स्वर्ण । सोना ।

श्रीनिकेतन—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. विष्णु । २. लक्ष्मी का निवासस्थान,
वैकुण्ठ । ३. गवाविरोजा । सरल निर्यास ।

श्रीनितवा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] श्रीनितम्बा राधा का एक नाम ।

श्रीनिधि—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. विष्णु का एक नाम ।

श्रीनिवास—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. विष्णु का एक नाम । २. श्री या
लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुण्ठ । उ०—श्रीनिवास पुर ते
अधिक रचना विविध प्रकार ।—मानम, १।१२६ ।

श्रीनिवासक—सञ्ज्ञा पुं [सं] कटसरैया ।

श्रीपचमी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] श्रीपञ्चमी माघ शुक्ल पचमी । वसंत
पचमी ।

श्रीपत पुं—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रीपति विष्णु । (हिं०) ।

श्रीपति—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. विष्णु । नारायण । हरि । उ०—
(क) श्रीपति निज मया तब प्रेरो ।—मानम, १।१२६ । (ख)
जाके सखा श्यामसुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता ।
—पूर (शब्द०) । २. रामचंद्र । उ०—बार बार आपते कइ
केवट नहि माने ।—पूर (शब्द०) । ३. कृष्ण । उ०—जो हम
कछु न बसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै ।—सूर०,
१।२७५ । ४. कुबेर । ५. पृथ्वीपति । नृप । राजा ।

श्रीपथ—सञ्ज्ञा पुं [सं] बड़ी और चौड़ी सड़क । राजमार्ग । राजपथ ।

श्रीपदी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] वार्षिकी पुष्पवृक्ष । मल्लिका । बेला ।

श्रीपद्म—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

श्रीपर्ण—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. कमल । पद्म । २. अग्निमय वृक्ष ।
अरनी । गनियारी ।

श्रीपर्णिका—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] १. कटफल । कायफल । २. गंभारी ।
३. गनियारी । अरनी । ४. पृश्निपर्णी । पिठरद । ५. सेमल
का पेड़ । शालमलि ।

श्रीपर्णी—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] १. कायफल । कायफल । २. गंभारी ।
३. गनियारी । अरनी । ४. पिठवन । ५. सेमल का पेड़ ।

श्रीपर्वत—सञ्ज्ञा पुं [सं] एक पर्वत का नाम ।

श्रीपा—वि० [सं] श्री की रक्षा करनेवाला । समृद्धि का रक्षण
करनेवाला ।

श्रीपाद—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. वह जो चरण पूजने योग्य हो । पूज्य ।
श्रेष्ठ । २. धनवान् । संपन्न ।

श्रीपिष्ट—सञ्ज्ञा पुं [सं] सरल वृक्ष का रस । गवाविरोजा ।

श्रीपुत्र—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. अश्व । घोड़ा । २. कामदेव । ३. चंद्रमा
(को०) । ४. इन्द्र का अश्व (को०) ।

श्रीपुर—सञ्ज्ञा पुं [सं] दक्षिण का मणिद्वीप नामक स्थान ।

विशेष—यह वाममार्गी शाक्तों का प्रधान स्थान है । यही ये
लोग मुक्ति का सुख अनुभव करते हैं ।

श्रीपुष्प—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. लौंग । लवंग । २. पद्मकाष्ठ । पदुमाख ।
३. पुडैरी । ४. सफेद कमल ।

श्रीप्रद—सञ्ज्ञा पुं [सं] वह जो श्री या सोभाग्य प्रदान करता हो ।

श्रीप्रदा—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] राधा का एक नाम ।

श्रीप्रसून—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] लौंग । लवंग ।

श्रीप्रिय—सञ्ज्ञा पुं [सं] हरताल ।

श्रीफल—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. बेल । २. नारियल । उ०—(क)
श्रीफल मधुर चिरोजी आनी । सफरी चिरप्रा अर नय बाणा ।

—सूर (शब्द०) । (ख) हिया थार कुच कनक कचूरा । जानहुँ
दोऊ श्रीफल जूरा ।—जायसी (शब्द०) । ३. खिरनी ।
राजादनी वृक्ष । ४ आँवला । ५ कच्ची चिकनी सुपारी ।
६ द्रव्य । धन । उ०—श्रीफल को अभिलाप प्रगट कवि कुल
के जी मे ।—केशव (शब्द०) ।

श्रीफला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नीली । नील का पौधा । २ करेली ।
क्षुद्र कारवेली । ३ आँवला ।

श्रीफलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ क्षुद्र कारवेली । करेली । २.
महानीली का पौधा ।

श्रीफली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आँवला । २. नील । ३ बड़ी
मालकँगनी । महाज्योतिष्मती लता ।

श्रीवधु—सज्ञा पुं० [स० श्रीवधु] १. अमृत । २ चद्रमा ।—अनेकार्थ०,
पृ० ३० ।

श्रीवन—सज्ञा पुं० [स० श्री + वन] वृंदावन । उ०—प्रीतम के शृ गार
के अर्थ श्रीवन (निधि वन) की लताओं मे गु जा एकत्रित कर
उसकी माला परोवै ।—पोद्दार अभि० ग्र० पृ० १६६ ।

श्रीवीज—सज्ञा पुं० [स०] ताड़ । ताल वृक्ष ।

श्रीभक्ष—सज्ञा पुं० [स०] मधुपर्क जो देवताओं के सामने रखा जाता या
दान किया जाता है । विशेष दे० 'मधुपर्क'—१ ।

श्रीभद्र—सज्ञा पुं० [स०] मुस्तक । मोथा ।

श्रीभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] भद्रमोथा । भद्रमुस्तक ।

श्रीभाव—सज्ञा पुं० [स०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का
नाम, जिनका जन्म सत्यभामा के गर्भ से हुआ था ।

श्रीभ्राता—सज्ञा पुं० [स० श्रीभ्रातृ] अश्व, चद्र, अमृत आदि चौदह
रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी या श्री के
भाई कहे जाते हैं ।

श्रीमगल—सज्ञा पुं० [स० श्रीमङ्गल] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

श्रीमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीमञ्जरी] तुलसी । सुरसा ।

श्रीमजु—सज्ञा पुं० [स० श्रीमञ्जु] एक पर्वत का नाम ।

श्रीमडप—सज्ञा पुं० [स० श्रीमण्डप] एक पर्वत का नाम ।

श्रीमत्—सज्ञा पुं० [स० श्रीमन्त] १. एक प्रकार का शिरोभूषण ।
उ०—शीश सचिक्कन केश हो विच श्रीमत् सँवारि ।—सूर
(शब्द०) । २ स्त्रियों के सिर के बीच की माँग ।

श्रीमत्—वि० १. श्रीमान् । धनवान् । धनाढ्य । धनी । २ सुंदर ।
सौंदर्यशाली ।

श्रीमकुट—सज्ञा पुं० [स०] सोना । स्वर्ण [को०] ।

श्रीमत्—सज्ञा पुं० [स०] १ तिल पुष्प । २ पीपल । अश्वत्थ वृक्ष ।
३ विष्णु का एक नाम । ४ शिव का एक नाम । ५ कुवेर ।
६ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि । ७ हल्दी का पौधा ।
८ शुक । सुग्गा (को०) । ९ प्रजनन कराने के लिये रखा हुआ
वृष (को०) । १० पुरुष एवं ग्रंथादि के नाम के आदि मे
प्रयुक्त शब्द ।

श्रीमत्—वि० १ जिसके पास बहुत अधिक धन हो । धनवान् ।
अमीर । २ जिसमे श्री या शोभा हो । ३. सुंदर । खूबसूरत ।
४ प्रसिद्ध । ख्यात । आदरणीय (को०) ।

श्रीमती—सज्ञा स्त्री० [स०] १. 'श्रीमान्' का स्त्रीलिंग वाचक शब्द ।
स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द । जैसे,—श्रीमती सुभद्रा देवी ।
२ लक्ष्मी । ३ राधा का एक नाम । ४ मुडिका । मुडी ।
५ पत्नी (को०) ।

श्रीमत्कुभ—सज्ञा पुं० [स० श्रीमत्कुम्भ] सोना ।

श्रीमत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ 'श्रीमत्' या 'श्रीमान्' होने का भाव या
धर्म । २ सपन्नता । अमीरी ।

श्रीमद—सज्ञा पुं० [स०] धनमद । संपत्ति का गर्व । उ०—(क)
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि प्रभूना वधिर न काहि । मृगलोचन
के नैनसर को अस लाग न जाहि ।—मानस, ७।७० । (ख) ऐ
परि यह श्रीमद है जैसे । बड़ अनर्थकर अवर न ऐसी ।
—नद० ग्र०, पृ० २५२ ।

श्रीमय—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु ।

श्रीमलापहा—सज्ञा स्त्री० [स०] तमाखू । तमाकू ।

श्रीमस्तक—सज्ञा पुं० [स०] १ लहसुन । २ लाल आलू ।

श्रीमहिमा—सज्ञा पुं० [स० श्रीमहिम्न] शिव । महादेव ।

श्रीमान्—वि० [स० श्रीमत्] १ लक्ष्मीवान् । धनवान् । अमीर ।
२ शोभायुक्त । शोभावान् । ३ सुंदर । ४ यशस्वी । प्रसिद्ध
(को०) । ५ प्रसन्न । भाग्यशाली (को०) ।

श्रीमान्—सज्ञा पुं० १. तिल पुष्पी । २ पीपल । अश्वत्थ वृक्ष ।
३ हल्दी । हरिद्रा । ४ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि ।
५ विष्णु । ६ शिव । ७ कुवेर । ८ सुग्गा । शुक (को०) ।
९ साँड (को०) ।

श्रीमान—सज्ञा पुं० [स० श्रीमत्] आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि
मे रखा जाता है । उ०—जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय
जगत अवार ।—सूर (शब्द०) ।

श्रीमाल—सज्ञा पुं० [देश०] वश्यों की एक जाति ।

श्रीमाल—सज्ञा स्त्री० [स० श्री + माला] गले मे पहनने का एक
आभूषण । कठायी । उ०—चिबुक तर कठ श्रीमाल मोतीन
छवि कुच उचनि हेग गिरि अतिहि लाज ।—सूर (शब्द०) ।

श्रीमुख—सज्ञा पुं० [स०] १ शांभित या मुद्गर मुख । उ०—ग्रागम
कल्प रमण तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान ।—सूर (शब्द०) ।
२ बृहस्पति के साथ सवत्सरो मे मे सातवाँ सवत्सर । ३.
विष्णु का मुख, वेद । ४ सूर्य । उ०—व्योम मे मुनि
देखिए अति लाल श्रीमुख साजही ।—केशव (शब्द०) । ५.
वह पत्र लेख आदि जिनके प्रारंभ मे स्वतिवाचक शब्द श्री
लिखा हुआ हो ।

श्रीमुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वैष्णवों का तिलक जो मस्तक पर लगाया
जाता है ।

श्रीमूर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की मूर्ति । २ लक्ष्मी की प्रतिमा ।
प्रतिमा । मूर्ति (को०) ।

श्रीवृक्षक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. घोड़े की छाती पर की एक भेंवरी जो शुभ मानी जाती है । २. एक व्रत का नाम ।

श्रीवृद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. बोधिद्रुम पर की एक देवी । (ललित-विस्तर) । २. समृद्धि । वृद्धि । संपन्नता । उ०—अत्यंत प्रसन्नता का अंगसर है कि इधर हमारी भाषा और हमारे साहित्य की उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि होती जा रही है —रस क० (पा०), पृ० १ ।

श्रीवेष्ट, श्रीवेष्टक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. सरल द्रव । गवाचिरोजा । २. तारपीन का तेल । सरल वृक्ष ।

श्रीवैष्णव—सञ्ज्ञा पु० [सं०] रामानुज के अनुयायी वैष्णव । वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

श्रीश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विष्णु ।

श्रीसज्ञ—सञ्ज्ञा पु० [सं०] लींग । लवण ।

श्रीसपदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्रीसम्पदा] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि ।

श्रीसभूता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्रीसम्भूता] ज्योतिष में कर्म मास की छठी रात्रि ।

श्रीसदा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] रजनी । निशि । रात्रि । उ०—निसि श्रीसदा विभावरी, रात्रि त्रिजामा सोय ।—अनेकार्थ (शब्द०) ।

विशेष—इस अर्थ में यह शब्द संस्कृत कोशों में नहीं मिलता ।

श्रीसमाध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक राग जो श्री, शुद्ध, मालश्री, भोम पलाश्री और टक को मिलाकर बनाया जाता है ।

श्रीसहोदर—सञ्ज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा । (चंद्रमा और लक्ष्मी दोनों समुद्र से उत्पन्न हैं) ।

श्रीसिद्धि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के अनुसार सोलहवां योग [को०] ।

श्रीसूक्त—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ऋग्वेदोक्त एक सूक्त का नाम [को०] ।

श्रीहट्ट—सञ्ज्ञा पु० [सं०] एक नगर का नाम । सिलहट्ट ।

श्रीहृत—वि० [सं०] १. शोभारहित । २. निस्तेज । निष्प्रभ । प्रभाहीन । उ०—(क) नमित सीस सोचहि सलज्ज सब श्रीहृत सरोर ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) वे शेर हो गए आज रण भए मे श्रीहृत खडित ।—अपरा, पृ० ४७ ।

श्रीहरि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विष्णु [को०] ।

श्रीहर्ष—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. नैपथ्य काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि जो कान्यकुब्ज के गहवार राजा के आश्रित थे । २. रत्नावली, गंगानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवतः कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे ।

श्रीहस्तिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. हस्तिशुडी । नागदती । २. सूर्य-मुखी का पौधा ।

श्रुगुण—सञ्ज्ञा पु० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग' । उ०—मुवर सूर मामत गुन, श्रुग मत्त मति भोग ।—पृ० २०, २५।६६२ ।

श्रुगार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विककत । कटाई । फज वृक्ष ।

सं० श० ६-६०

श्रुद्धिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] मज्जीखार ।

श्रुतवर—सञ्ज्ञा पु० [सं० श्रुतन्वर] वास्तुविद्या में एक प्रकार का मंडप ।

श्रुत—वि० [सं०] १. सुना हुआ । जो श्रवणगोचर हुआ हो । २. जिस परंपरा से सुनते आते हो । ३. शान । प्रसिद्ध । स्थात । ४. सीखा हुआ । समझा हुआ (को०) । ५. प्रतिज्ञात ।

श्रुत^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. सुनने का निषय । श्रुतिविषय शब्दादि । २. वेद । ३. विद्या । ४. सुनने की क्रिया [को०] ।

श्रुतकाम—वि० [सं०] वेदादि पवित्र ज्ञान का इच्छुक ।

श्रुतकीर्ति^१—वि० [सं०] जिसकी कीर्ति प्रसिद्ध हो । कीर्तियुक्त ।

श्रुतकीर्ति^२—सञ्ज्ञा पु० १. अर्जुन के एक पुत्र का नाम । २. उदार चरित व्यक्ति (को०) । ३. सत । ऋषि (को०) ।

श्रुतकीर्ति^३—सञ्ज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशव्रज की कन्या, जो शत्रुघ्न की व्याही थी ।

श्रुतकेवली—सञ्ज्ञा पु० [सं० श्रुतकेवलिन] एक प्रकार के अर्हत् जो छद्म कहे गए हैं । (जैन) ।

श्रुतदेवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती ।

श्रुतवर^१—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. कान । २. पुराणानुसार शात्मलि द्वीप के ब्राह्मणों की सञ्ज्ञा ।

श्रुतवर^२—वि० सुनी हुई बात का स्मरण रखनेवाला (को०) ।

श्रुतनिगदी—वि० [सं० श्रुतनिगदिन्] जो एक बार सुने हुए पद्य आदि को ज्यों का त्यों कह सके ।

श्रुतनिष्क्रय—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शिक्षा प्राप्त करने के बदले दिया जाने-वाला धन । शिक्षा शुल्क । (अ० व्युत्पन्न फीस) ।

श्रुतपूर्व—वि० [सं०] जो पहले सुना गया हो । जानाबूझा ।

श्रुतर्षि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ऋषि विशेष (को०) ।

श्रुतवास—वि० [सं० श्रुत + वाम] वेदज्ञ । विद्वान् । उ०—सिद्धि श्री श्रीनिवास, पाम, श्रुतवास महायक ।—नद० ग्र०, पृ० २०५ ।

श्रुतविज्ञ—वि० [सं०] वेदज्ञ । वेद शास्त्र का पंडित (को०) ।

श्रुतवित्त—वि० [सं०] वेदिक । वेदज्ञ । श्रुताढ्य (को०) ।

श्रुतवृद्ध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] विद्वान् ।

श्रुतशील^१—वि० [सं०] विद्वान् और सदाचारी ।

श्रुतशील^२—सञ्ज्ञा पु० विद्या और सदाचार (मनु०) ।

श्रुतश्रुवा—सञ्ज्ञा पु० [सं० श्रुत श्रुत्] शिशुपाल के पिता का नाम (को०) ।

श्रुतश्रुवानुज—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शनिग्रह (को०) ।

श्रुतश्रीणी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृपाकानी । २. नदी (को०) ।

श्रुता—वि० स्त्री० [सं० श्रुत] उपात । प्रसिद्ध । श्रुत । उ०—वह देव निम्नगा, स्वर्गगा, वह सगर पुत्र तारिणी, श्रुता ।—साम्बा, पृ० ४२ ।

श्रुतादान—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ग्रहवाद (को०) ।

श्रेणीभुक्त

श्रेणीभुक्त—वि० [स०] जो श्रेणी या पक्ति में कर लिया गया हो।
श्रेणी में आया या मिला हुआ (को०)।

श्रेणीसंघर्ष—सङ्घा पु० [स० श्रेणी + संघर्ष] समानवर्गियों के एक वर्ग या श्रेणी का दूसरे से संघर्ष वर्गसंघर्ष। (अ० क्लास वार)। उ०—वे लोग सुधारवादी ढंग के विरोधी थे और श्रेणीसंघर्ष के द्वारा श्रमजीवियों की अवस्था को सुधारना चाहते थे।—मा० वि०, पृ० ७२।

श्रेणीहित—सङ्घा पु० [म०] वर्ग का हित। वर्गीय स्वार्थ। (अ० क्लास इंटरेस्ट)। उ०—मजदूरों के दृष्टिकोण को—उनके श्रेणीहित के साधनों का—न अपना मके।—‘ग्राज’, पृ० ३, (३११०५१)।

श्रेय^१—वि० [स० श्रेयम्] [वि० स्त्री श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। प्रशस्त। ३ मंगल-दायक। शुभ। कल्याणकारी। ४. यश देनेवाला। कीर्तिकर। ५ अधिः सौभाग्यशाली (को०)। ६ अत्यंत प्रिय। प्रियतर (को०)। ७ उपयुक्त (को०)।

श्रेय^२—सङ्घा पु० १ अच्छापन। २ भलाई। बेहतरी। कल्याण। मंगल। ३ धर्म। पुण्य। सदाचार। ४. एक साम का नाम। ५ ज्योतिष में दूसरा मुहूर्त। ६ वर्तमान अवसरपिणी के ग्यारहवें अह्वं (जैन)। ७ मुक्ति। मोक्ष (को०)। ८ शुभ अवसर (को०)। ९ सुख (को०)।

श्रेयसी^१—सङ्घा स्त्री [स०] १ हरीतकी। हरें। २ पाठा। पाठी। ३ गज पीपल। ४ रास्ता। ५ प्रियपु।

श्रेयसी^२—वि० स्त्री कल्याणमयी। श्रेययुक्ता (को०)।

श्रेयस्कर—वि० [स०] [वि० स्त्री श्रेयस्करी] कल्याण करनेवाला। शुभदायक।

श्रेयस्त्व—सङ्घा पु० [स०] उत्तमता। श्रेष्ठता (को०)।

श्रेयासनाथ—सङ्घा पु० [स०] वर्तमान अवसरपिणी के ग्यारहवें अह्वं या तीर्थकर (जैन)।

श्रेष्ठ^१—वि० [स०] [वि० स्त्री श्रेष्ठा] १ सर्वोत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २ मुख्य। प्रधान। प्रथम। ३. पूज्य। बड़ा। ४ बृद्ध। ज्येष्ठ। ५ कल्याण भाजन। ६ प्रियतम। अत्यंत प्रिय (को०)।

श्रेष्ठ^२—सङ्घा पु० १. कुवेर। २. विष्णु। ३. द्विज। ब्राह्मण। ४ राजा। नृप (को०)। ५ गोदुग्ध। गाय का दूध (को०)। ६ ताँवा (को०)। ७ शिव। महादेव (को०)।

श्रेष्ठकाष्ठ—सङ्घा पु० [स०] १ सागौन। सागवान का पेड़। २ घर में लगा प्रधान स्तंभ।

श्रेष्ठतम—वि० [स०] सबसे श्रेष्ठ। सबसे बड़ा या ज्येष्ठ। सर्वोत्तम।

श्रेष्ठता—सङ्घा स्त्री [स०] १ उत्तमता। २ प्रधानता। गुफता। बड़ाई। वडप्पन।

श्रेष्ठवाक्—वि० [स० श्रेष्ठवाच्] वावदूक। मुखर। श्रेष्ठ वक्ता (को०)।

श्रेष्ठवेधिका—सङ्घा स्त्री [स०] वस्तूरी। मृगमद (को०)।

श्रेष्ठा—सङ्घा स्त्री [स०] १ बहुत उत्तम स्त्री। २ स्थल कमल। ३. मेदा नामक अष्टवर्गीय श्रोपधि। ४ त्रिफला।

श्रेष्ठांश—सङ्घा पु० [स०] इमली (को०)।

श्रेष्ठाश्रम—सङ्घा पु० [स०] १ गृहस्थाश्रम। २ गृहस्थ (को०)।

श्रेष्ठिकन्या—सङ्घा स्त्री [स०] व्यवसायी की पुत्री। सेठ मंजान की कन्या। उ०—चवराओ मत श्रेष्ठिकन्ये।—स्कंद०, पृ० ८४।

श्रेष्ठित्तर—सङ्घा पु० [म०] नगर का वह भाग जहाँ बड़े बड़े व्यापारी रहते हैं (को०)।

श्रेष्ठी—सङ्घा पु० [म० श्रेष्ठिन्] १ व्यापारियों या बणिकों का मुखिया। प्रतिष्ठित व्यवसायी। मंजान। सेठ। २ बड़ा व्यापारी। श्रेष्ठ व्यापारी।—हिंदु० मन्थता, पृ० ७८।

श्रेष्ठ्य—सङ्घा पु० [स०] सर्वोत्कृष्टता। सबसे श्रेष्ठ होने का भाव (को०)।

श्रोण^१—वि० [स०] पगु। खंज।

श्रोण^२—सङ्घा पु० [स०] एक प्रकार का रोग (को०)।

श्रोण^३—सङ्घा पु० [स० श्रोण] दे० ‘शोण’। उ०—श्रोण की सरिता दुरत अनंत रूप सुनत।—केशव (शब्द०)।

श्रोणा—सङ्घा स्त्री [स०] १ कांजी। भात का मांड। २ श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि—सङ्घा स्त्री [स०] १ कटि। कमर। २. नितंब। चूतड़। ३ यज्ञ की वेदी का किनारा। ४ पथ। मार्ग।

श्रोणि—आणितट = नितंब की उतार या ढाल। श्रोणिफल, श्रोणिफलक = बड़ा नितंब। कटिप्रदेश। श्रोणिविव = (१) कटिसूत्र। (२) गोलाकार नितंब। श्रोणिसूत्र।

श्रोणिका—सङ्घा स्त्री [स०] दे० ‘श्रोणि’।

श्रोणित^१—सङ्घा पु० [स० श्रोणिन्] दे० ‘श्रोणित’।

श्रोणिसूत्र—सङ्घा पु० [स०] १. कंधनी। मेखला। खड्गवधन का सूत्र परतला। तलवार का पट्टा (को०)।

श्रोणी—सङ्घा स्त्री [स०] १ कटि। कमर। २ चूतड़। नितंब। ३ मध्य भाग। कटि प्रदेश। ४ पथ। मार्ग (को०)।

श्रोत. आपत्ति—सङ्घा स्त्री [स०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्त या निर्वाणसाधना की प्रथम अवस्था जिसमें वधन ढीले होने लगते हैं।

विशेष—बौद्ध शास्त्र में पाँच प्रतिबंध माने गए हैं—आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा और मोह। श्रोत. आपन्न को ये पाँचों वधन छोड़ते तो नहीं पर क्रमशः ढीले होते जाते हैं। इस अवस्था को प्राप्त साधक को केवल सात बार और जन्म लेना पड़ता है। इस अवस्था के उपरांत ‘संक्रदागामी’ की अवस्था है जिसमें प्रथम तीन वधन सर्वथा छूट जाते हैं और एक ही जन्म और लेना रह जाता है।

श्रोत आपन्न—वि० [म० श्रोतस् + आपन्न] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्ति या निर्वाण की साधना में प्रथम अवस्था को प्राप्त जिसमें क्रमशः वधन ढीले होने लगते हैं।

श्रोत—मञ्जु पुं [सं श्रोतम्] १ श्रवणेंद्रिय । कान । २ हाथी की सूँड (को०) । ३. इन्द्रिय । ज्ञानेंद्रिय (को०) । ४ घारा । प्रवाह (को०) ।

श्रोतक—वि० [सं] १ सुनने योग्य । श्रवणीय । २. जिससे सुनना हो ।

श्रोतव्य—वि० [सं] १ सुनने के योग्य । उ०—श्रोत्र सु श्रव्यातम प्रगट श्रोतव्य अधिभूत । दिशा तत्र है देवता यह त्रिपुटी इहि सूत —सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ६८ ।

श्रोता—सञ्ज्ञा पुं [सं श्रोतृ] १ सुननेवाला । श्रवणार्त्ता । २. कथा या उपदेश सुननेवाला । शिष्यार्थी ।

श्रोत्र—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. श्रवणेंद्रिय । कान । २ वेदज्ञान । वेद में निपुणता । वेद सबको प्रवीणता । ३ वेद । श्रुति (को०) ।

यौ०—श्रोत्रपदवी = श्रवणगोचरता । श्रवण की सीमा । श्रोत्रपदानुग = श्रुतिप्रिय । श्रोत्रपालि = कान की लीर या ललरी । श्रोत्रपुट = (१) कर्णपुट । (२) कान की ललरी । श्रोत्रपेय = कानों द्वारा पान करने योग्य । सुननेयोग्य । श्रवणीय । श्रोत्रमार्ग = कर्ण । कन श्रोत्रमूल = कान की जड़ । कर्णमूल । श्रोत्रवर्त = कर्ण । कान । श्रोत्रवादा = ग्राज्ञापालक । ग्राज्ञाकारी । सुनने के साथ ही ग्राज्ञापालन करनेवाला । श्रोत्रमुख = कानों को सुखद । श्रवणमधुर । श्रुतिमधुर । श्रोत्रहीन = कर्णरहित । श्रवणशक्ति विहीन । बधिर । बहरा ।

श्रोत्रकाता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं श्रोत्रकान्ता] एक पोथा जो श्रोत्र के काम में आता है ।

श्रोत्रिय^१—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. वह जो वेद वेदांग में पारगम हो । वेदज्ञ । २. ब्राह्मणों का एक वर्तमान भेद । (को०) ।

श्रोत्रिय^२—वि० १ वेदज्ञ । वेद में पारगम । २ विवेक । अनुशासनीय । वश्य । ३. सत्य । शिष्ट । सुसंस्कृत (को०) ।

श्रोत्रियता—सञ्ज्ञा स्त्री [सं] श्रोत्रिय होने का भाव या धर्म ।

श्रोत्रियत्व—सञ्ज्ञा पुं [सं] श्रोत्रियता (को०) ।

श्रोत्री - सञ्ज्ञा पुं [सं श्रोत्रिय] दे० 'श्रोत्रिय' ।

श्रोत्रु—सञ्ज्ञा पुं [सं श्रोण, हि० श्रोण] दे० 'श्रोण' । उ०—लिए नृकपाल नृदेह कराल । करे नर मुडनि की उर माल । पिए नर श्रोत्र मित्यो मदिरा सो । कपालि कु देखिए भीम प्रभा सो ।—केशव (शब्द०) ।

श्रोनित्रु—सञ्ज्ञा पुं [सं श्रोणित] दे० 'श्रोणित' । उ०—श्रोनित्र श्रवत लर्म तनु कैसे । परम प्रफुल्लित किमुक जैसे ।—मधुसूदन (शब्द०) ।

श्रीत^१—वि० [सं] [वि० स्त्री श्रीती] १. श्रवण सबको । कर्ण सबको । २ श्रुति या वेद सबको । ३ श्रुतिविहित । वेद प्रतिपादित । जो वेद के अनुसार हो । ४ यज्ञ नञ्धी । जैसे,—श्रीतकर्म, श्रीतसूय । ५ श्रोत्र साध । जो श्रुत्पुट न हो (को०) ।

श्रीत—सञ्ज्ञा पुं १ तीनों प्रकार की अग्नि । गार्हपत्य, ग्राहवनीय और दक्षिण नाम की अग्नि । २. वेद प्रतिपादित धर्म । ३. यज्ञाग्नि का रक्षण वा भरण (को०) ।

यौ०—श्रीतकर्म = दे० 'श्रीतकर्म' । श्रीतजन्म = यज्ञाग्नी मस्कार । श्रीतजन्म । श्रीतमार्ग = (१) अनुविहित मार्ग । (२) श्रवण । कर्णपथ । श्रीतसूय ।

श्रीतश्रव - सञ्ज्ञा पुं [सं] शिशुपान का एक नाम ।

श्रीतसूत्र—सञ्ज्ञा पुं [सं] यज्ञादि के विधानवाले सूत्र । काय त्रय का वह श्रज जिसमें पीर्णमान्योष्टि में लेकर अस्त्रमेघ पर्यंत यज्ञों का विधान है ।

विशेष—दो प्रकार के वैदिक सूत्रों में मिलते हैं—श्रीतसूत्र और गृह्यसूत्र । श्रीत सूत्रों में यज्ञों का विधान है । सूत्रकार ऋतु हैं । जैसे,—प्राश्वलायन, आपस्तम्ब, कान्वायन, आत्रेय ।

श्रीतहोम—सञ्ज्ञा पुं [सं] सामयज्ञ का एक पन्थिकाट ।

श्रीत^२—वि० [सं] श्रवणेंद्रिय सबको । श्रवण सभ्य ।

श्रीत^३—सञ्ज्ञा पुं १ वेद में दक्षता । वेदज्ञाता । वैदिक चाण्डन्य या कार्य में पारगम होता । २. श्रवण । कर्ण (को०) ।

श्रीतकर्म—सञ्ज्ञा पुं [सं] वेदविहित यागादि कर्म । यज्ञ ।

श्रीतजन्म—सञ्ज्ञा पुं [सं श्रीतजन्मन्] द्विजों का उपनयन मस्कार जिसमें वे वेद के अधिकारी होकर द्वितीय जन्म प्राप्त करते हैं ।

श्रीतु—सञ्ज्ञा पुं [सं श्रवण] दे० 'श्रवण' । उ०—पीनम श्रीन समीप सदा वज्रो यो कहूँ पहिल पहिराया ।—गतिराम (शब्द०) ।

श्रीह्व—सञ्ज्ञा पुं [सं] १. कमल । पद्म । २. गवाविरोजा । सरल द्रव्य ।

श्लक्ष्ण^१—वि [सं] १. कोमल । मुटु । सीमा । जैन, जद । २. चिकना, चमकदार । ३ स्वल्प । पतला । सूक्ष्म । ४ मुरर । लावण्यमय । ५ मच्छा । इमानदार । निश्ठल । तरा (को०) ।

यौ०—श्लक्ष्णत्वक् = (१) वृद्ध की चिकनी छाल या चमक । (२) श्रमस्तक नामक वृद्ध । कचनार । श्लक्ष्णत्वक् = श्रावदूष या कोविदार । श्लक्ष्णपिष्ट = दूध महीन या चिकन । पासा हुआ । श्लक्ष्णवाक् = मधुर वचन । श्लक्ष्णवादी = दूध या मधुर बोलनेवाला ।

श्लक्ष्णक^१—वि० [सं] १. कोमल । चिकन । २ सुंदर । (को०) ।

श्लक्ष्णक^२—सञ्ज्ञा पुं सुपारी । पूगफन (को०) ।

श्लथ—वि० [सं] १ निथिल । ढीला । उ०—श्रीता स्तम्भ ज्यों चित्त म्लान, छाया शनव ।—तुलसी पं०, पृ० ५ । २ मंद । धीमा । ३ दुर्बल । अगत । ४ गिरा हुआ । च्युत (को०) । ५. न बंधा हुआ । बिपरा हुआ । दूरा हुआ । जैसे, श्लथ ।

श्लथगात—वि० [सं] शिथिल शरीरवाला । उ०—श्लथगात, तुम में ज्यो रही म श्लथ हा ।—भारता, पृ० १८५ ।

श्लथवचन—वि० [सं श्लथवचन] जिसके वचन शिथिल हैं, गल्गल ।

श्लथग—वि० [सं श्लथग] जिसके वचन शिथिल हैं । श्लथवात ।

श्लयोद्यम—वि० [सं] चेष्टा या उद्यम को विश्राम देने या शिथिल करनेवाला (को०) ।

श्लोघन^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लोघित, श्लोघी, श्लोघनीय, श्लोघ्य]
१ प्रशंसा करना। प्रशस्ति गान। २ खुशामद या चाटुकारिता।
चापलूसी। ३ अपनी प्रशंसा करना। डोग हाँकना।

श्लोघन^२—वि० अपनी प्रशंसा करनेवाला।

श्लोघनीय—वि० [सं०] १ प्रशंसा के योग्य। प्रशमनीय। तारीफ के
लायक। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लोघा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। बड़ाई।
३ खुशामद। चापलूसी। ४ इच्छा। चाह। उ०—अच्छा तो
ज्ञात हुआ कि कदाचित् तुम्हारी श्लोघा है कि मैं तुमको इनमे
भी नीचतर समझूँ।—अयोध्यासिंह (शब्द०)। ५ आज्ञा-
पालन। सेवा। ६ आत्मप्रशंसा (को०)।

यौ०—श्लोघाविपर्यय = आत्म प्रशंसा या चापलूसी का अभाव।

श्लोघित—वि० [सं०] १ जिसका तारीफ हुई हो। प्रशंसित। २.
अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लोघी—वि० [सं०] श्लोघिन्। १ सदर्प। साहकार। मदोद्धत। २
अभिमानो। प्रगल्भ। धृष्ट। डोग हाँकनवाला। ३ प्रख्यात।
प्रसिद्ध (को०)।

श्लोघ्य—वि० [सं०] १ सराहने योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के
लायक। २. श्रेष्ठ। अच्छा। ३ आदरणीय। श्रद्धेय (को०)।

श्लिकु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ लपट। कामुक। २ सेवक। दास।
३ आश्रित। ४ नक्षत्र विद्या। फलित ज्योतिष (को०)।

श्लिक्यु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ कामुक। लपट। २. आश्रित। दास।
सेवक।

श्लिषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। संयुक्त होना। २.
परिरभण। आलिगन।

श्लिष्ट—वि० [सं०] १ मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। सटा हुआ।
लगा हुआ। २ अच्छी तरह जमा हुआ। चिपका हुआ। खूब
बँठा हुआ (वस्त्र आदि)। ३ आलिगित। भँटा हुआ। ४
(साहित्य में) श्लेषयुक्त। जिसके दोहरे अर्थ हो। ५ टिका
हुआ। भुका हुआ (को०)।

श्लिष्ट रूपक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रूपक अलंकार का एक भेद। जहाँ
शब्दों द्वारा रूपक का विधान किया जाय। जैसे,—देखत ही
सुबरन हीरा हरिखे का पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे
हैं।—भिखारी प्र०, भाग २, पृ० १००।

श्लिष्टवर्त्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लिष्टवर्त्मन्। एक नेत्र रोग, पलकों की
बरोनियाँ का आपस में चिपक जाना (को०)।

श्लिष्टि^१—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. जोड़। मिलान। लगाव। २ आलि-
गन। परिरभण।

श्लिष्टि^२—सञ्ज्ञा पुं० ध्रुव के एक पुत्र का नाम।

श्लिष्टोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वह उक्ति कथन जो श्लेषयुक्त हो। द्वच-
र्थक उक्ति।

श्लोपद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] टाँग भूतने का रोग। फोतपाव।

विशेष—इस रोग में प्रथम पेट, अउरोप और जवा की सविभा
में फोडासहित और ज्वरयुक्त मूजन होकर पाय में उतर आतों
है और पैर हाथों के पैर के समान मोटा हो जाता है। वैद्यक
के अनुसार यह रोग हाथ, नाक, कान, आंग, लिग और हाठ
में भी होता है। यह चार प्रकार का होता है, अर्थात् वातज,
पित्तज, श्लेष्मज और सन्निपातज। एक वर्ष बाद यह रोग
असाध्य हो जाता है।

यह रोग तागाव आदि का पुराना जल पीने, शीत देश में अधिक
निवास करने तथा जिन स्थानों में मरदा पुराना पानी बना
रहता है, वहाँ रहने से उत्पन्न होता है।

श्लोपदप्रभव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] आम का पेट (को०)।

श्लोपदापह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पुत्रनीय वृक्ष।

श्लोपदो—वि० [सं०] श्लोपदिन्। जिसे श्लोपद रोग हो गया हो।

श्लोल—वि० [सं०] १ उत्तम। नफीम। श्रेष्ठ। २. जो पश्चिम न
हो। जो भूदा न हो। नद्र या नन्व नमाज म रनी, पुष्प,
वच्चे आदि समा क बोलने, पठन या दिनाग जान योग्य।
३ भाव्यशाली। मंगलदायक। पुन। २० 'आल' (ति०)।

श्लेष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। एक में सटने या समने
का भाव। २. सयाग। जाड़। मिलान। ३. आलिगन।
परिरभण। भँटना। ४ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक
शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं। दो अर्थवाले शब्दों
का प्रयोग। ५. मैथुन। सम्भोग (को०)। ६ राह। जलन
(को०)। ७. व्याकरण में बुद्धि या प्रागम (को०)।

श्लेषक^१—वि० [सं०] मिलानेवाला। जोड़नेवाला।

श्लेषक^२—सञ्ज्ञा पुं० १ दं 'श्लेष'। उ०—केशव दशम पभाव में,
श्लेषक कवित्त विनास। वरुण के मिथु प्रगट्ही, वरपा सरद
प्रकाश।—केशव (शब्द०)। २. कफ का एक भेद।

विशेष—कफ के अवलुपक, वलेदक, वाधक, तर्पक और श्लेषक
पाँच भेद हैं।

श्लेषण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १.
मिलाना। जोड़ना। एक में सटाना। संयुक्त करना। २
परिरभण। आलिगन।

श्लेषभित्तिक—वि० [सं०] जो श्लेष पर आधारित हो (को०)।

श्लेषा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] आलिगन। भँटना।

श्लेषार्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग (को०)।

श्लेषो—वि० [सं०] श्लेषित। श्लेषण करनेवाला। आलिगन करने
वाला (को०)।

श्लेषोक्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] श्लेषयुक्त कथन। द्वार्थक वचन।
श्लिष्टोक्ति (को०)।

श्लेषोपमा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक अनकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों
का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में
लग जाते हैं। उ०—सगुन, सरस, सब अग रागरजित हूँ

सुनहु सुभाग । बडे भाग बाग पाइए । चातुरी की शाला मानि
आतुर हूँ, नदलाल । चपे की माला वाला उर उरभाइए ।
—केशव (शब्द०) । यहाँ सगुन (गुणयुक्त, सूत्रयुक्त), सरस
आदि शब्द वाला और चपकमाला दोनों में लग जाते हैं ।

श्लेष्म, श्लेष्मक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लेष्मा ।

श्लेष्म कटाहक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] निष्ठीवन का पात्र । पीकदान [को०] ।

श्लेष्मघन—सञ्ज्ञा पुं० [नं०] १. केतकी । २. चमेली या जूही ।

श्लेष्मघ्ना—सञ्ज्ञा स्त्री० [मं०] १. त्रिपुर मल्लिका । २. मल्लिका ।
मोतिया का एक भेद । ३. केतकी । केवडा । ४. महाज्योतिष्मती
लता । ५. तीन कडवे मसाले । त्रिकटु ।

श्लेष्मघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्लेष्मघ्ना' ।

श्लेष्मज अर्श—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लेष्मा (कफ) से उत्पन्न बवासीर
रोग ।—माधव०, पृ० ५४ ।

श्लेष्मण—वि० [सं०] १. कफवाला । कफ प्रकृतिवाला । २. कफ
संबंधी । श्लेष्मल ।

श्लेष्मणा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा ।

श्लेष्मघातु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कफ प्रकृति । कफ स्वभाव [को०] ।

श्लेष्मभू—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] फुफ्फुस [को०] ।

श्लेष्मल^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लिसोडा । बहुवार वृक्ष ।

श्लेष्मल^२—वि० कफयुक्त । श्लेष्मयुक्त । श्लेष्मण । कफ संबंधी ।

श्लेष्मह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लेष्मा को हरनेवाला । कायफल ।
कटफल ।

श्लेष्महर—वि० [सं०] श्लेष्मा का हरण करनेवाला । बलगम दूर
करनेवाला [को०] ।

श्लेष्मातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मान्तक] लिसोडा । लभेरा । बहु-
वार वृक्ष ।

श्लेष्मा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मन्] १. वैद्यक के अनुसार शरीर की
तीन घातुओं या विकारों में से एक । कफ । बलगम । २.
रस्सी । बघन । बाँधने की रस्सी । ३. लिसोडे का फल ।
लभेरा ।

श्लेष्मात, श्लेष्मातक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] लिसोडा । लभेरा ।

श्लेष्मातक वन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गोकर्णतीर्थ के पास का जंगल
जिसमें शिव एक बारहसिधे के रूप में छिपे थे । (पुराण) ।

श्लेष्मातिसार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कफ के विकार से होनेवाला सग्रहणी
या पेचिश का रोग [को०] ।

श्लेष्मिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० श्लेष्मिकी] १. कफ संबंधी ।
श्लेष्मल । २. कफ बढ़ानेवाला । बलगम पैदा करनेवाला ।
कफकारक [को०] ।

श्लेष्मी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मिन्] १. गधा विरोजा । २. लोवान ।

श्लेष्मोज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कफप्रकृति । दे० 'श्लेष्मघातु' [को०] ।

श्लेष्मोदर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उदर रोग । उ०—
श्लेष्मोदर रोग में हाथ पैर आदि अंगों में शून्यता होय और
जकड़ जाय ।—माधव०, पृ० १६४ ।

विशेष—इसमें कफ के विकार के कारण हाथ, पैर आदि में
शून्यता आ जाती है । पेट चिकना, सफेद, कड़ा तथा ठंडा
मालूम पड़ने लगता है ।

श्लैष्मिक—वि० [सं०] श्लेष्म संबंधी । कफवाला ।

श्लोक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द । ध्वनि । आवाज । २. पुकार ।
आह्वान । ३. स्तोत्र । स्तुति । ४. पद्यबद्ध कीर्तिगान या
प्रशंसा । ५. स्तवन या प्रशंसा का विषय वा आस्पद (को०) ।
६. नाम । कीर्ति । यश । जैसे,—पुण्यश्लोक । ७. संस्कृत का
सबसे अधिक व्यवहृत छंद । अनुष्टुभ छंद । ८. संस्कृत का कोई
पद्य । ९. किवदनी । कहावत (को०) । १०. इष्टमित्र (को०) ।

यौ०—श्लोककार = कवि । छंदबद्ध कविता करनेवाला । श्लोक-
निबद्ध, श्लोकबद्ध = छंदबद्ध । पद्यबद्ध । श्लोकभू = ध्वनि या
शब्द से उत्पन्न होनेवाला ।

श्लोकत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्लोक होने का भाव या धर्म ।

श्लोक्य—वि० [सं०] स्तुत्य । प्रशंस्य [को०] ।

श्लोण—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] लँगडा मनुष्य [को०] ।

श्व—अव्य० [सं० श्वस्] आनेवाले दूसरे दिन । कल । २. (समास
में) भविष्यत् काल में (को०) ।

यौ०—श्वश्रेयस = (१) प्रसन्न । समृद्ध । (२) प्रसन्नता ।
समृद्धि । (३) ब्रह्म या परमात्मा ।

श्वकटक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वकटक] त्रात्य और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न
पुरुष (स्मृति) ।

श्वक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भेडिया । वृक ।

श्वक्रीडी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वक्रीडिन्] करतबी या खिलाडी कुत्ता पालने-
वाला व्यक्ति [को०] ।

श्वगण—सञ्ज्ञा पुं० [मं०] कुत्ते का झुंड [को०] ।

श्वगणिक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शिकारी । २. कुत्ता पालनेवाला
व्यक्ति [को०] ।

श्वग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. बालग्रह या रोग । २. बच्चों को कष्ट
देनेवाला एक प्रेत । वह जो कुत्तों को पकड़ता है (को०) ।

श्वचिल्ली—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुकुरबदा ।

श्वजु—अव्य० [सं० स्वयम्] स्वयम् । खुद । उ०—विन पत्त मत्त जनु
डड डक, रभ बंम कर कटिय श्वज ।—पृ० रा०, ५।५१ ।

श्वजीविका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुत्तों की जीविका । दासता । गुलामी
[को०] ।

श्वदंष्ट्रक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ते का दाँत । २. गोखरु ।

श्वदंष्ट्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुत्ते की दाढ़ । २. गोखरु ।

श्वदयित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हड्डी जो कुत्तों को प्रिय है [को०] ।

श्वधूर्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शृगाल । गौदड़ ।

श्वन्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता । कुक्कुर ।

विशेष—समास में इस शब्द का पूर्वपद केवल 'श्व' रह जाता है ।
जैसे,—श्वकर्ण, श्वपच ।

श्वनर—सखा पु० [स०] नीच व्यक्ति । कमीना आदमी [को०] ।

श्वनिश—सखा पु० [स०] वह रात्रि जिस दिन कुत्ते भौंकते हैं अथवा नहीं खाते । कृष्ण चतुदशी की रात्रि । उ०—वर्तमान काल में भी यत्र तत्र इस प्रकार के कुत्ते सुने गए हैं जो उक्त तिथि को नहीं खाते । इस तिथि के लिये श्वनिश तथा श्वनिशा (२।४। ५) शब्द प्रचलित थे ।—मयूरी, अभि० ग्र०, पृ० २४८ ।

श्वनिशा—सखा स्त्री० [स०] दे० 'श्वनिश' ।

श्वपक्ष, श्वपच—सखा पु० [स०] [स्त्री० श्वपचा, श्वपचो] १ कुत्ते का मांस पकाकर खानेवाला । २ एक प्रकार का चाडाल । डोम ।

विशेष—भिन्न भिन्न स्मृतियों में इसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न कही गई है । जैसे,—कही चाणल और ब्राह्मणों से, कही निष्य और किरातों से, कही क्षत्रिय और उग्र जाति की स्त्री से, कही श्वण्ड और ब्राह्मणों से इत्यादि ।

३ कुत्ते को खिलानेवाला (को०) । ४ बविक । जल्लाद (को०) ।

श्वपति—सखा पु० [स०] कुत्ते का मालिक [को०] ।

श्वपद—सखा पु० [स०] १ कुत्ते का पैर । २ कुत्ते के पदचिह्न का निशान [को०] ।

विशेष—मनु ने इसे चोगे के पिर पर लगाने के लिये कहा है ।

श्वपाक—सखा पु० [स०] [स्त्री० श्वपाकी] दे० 'शपाक' । चाडाल ।

श्वपामन—सखा पु० [स०] पपरी नाम का पीवा जिसकी कड़वी जड़ रेचक होती है और औषध के काम में आती है । काकचूड़ ।

श्वपुच्छ—सखा पु० [स०] १ वृश्चिक । विच्छू । २ कुत्ते की पूँछ (को०) ।

श्वपुच्छा—सखा स्त्री० [स०] वृष्णिगर्णी । पिठवन ।

श्वफल—सखा पु० [स०] विजौरा नीबू । बीजपूर वृक्ष ।

श्वफल्क—सखा पु० [स०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता ।

श्वभीरु—सखा पु० [स०] वह जो कुत्ते से डरता हो, शृगान । गोदड ।

श्वभ्र—सखा पु० [स०] १ दरार । छेद । गड्ढा । २ एक नरक ।

३ वसुदेव के एक पुत्र का नाम । ३ गुहा । कदरा (को०) ।

श्वभ्रित—वि० [स०] छिद्रों से भरा हुआ [को०] ।

श्वमुख—सखा पु० [स०] एक जगती जाति ।

श्वथ—सखा पु० [स०] शोथ । सूजन ।

श्वयथु—सखा पु० [स०] शोथ । सूजन ।

श्वयीचि—सखा पु० [स०] चंद्रमा [को०] ।

श्वयीची—सखा स्त्री० [स०] बीमारी । रोग [को०] ।

श्वयूथ्य—सखा पु० [स०] कुत्ते का भुङ्ग [को०] ।

श्ववृत्ति—सखा स्त्री० [स०] १ नीच सेवा की वृत्ति । निष्ठुर नीकरी द्वारा निर्वाह । २ कुत्ते की सी जीवन वृत्ति (को०) ।

श्वव्याघ्र—सखा पु० [स०] १ हिरण्यपशु । २ व्याघ्र । ३ चीता ।

श्वहन्—सखा पु० [स०] शिकारी [को०] ।

श्वगुर—सखा पु० [स०] १ पति या पत्नी का पिता । समुर । २. आदरणीय व्यक्ति (को०) ।

श्वसुरक—सखा पु० [स०] समुर [को०] ।

श्वशूर्य—सखा पु० [स०] पति या पत्नी का भाई । देवर या साला ।

श्वथू—सखा स्त्री० [स०] पति या पत्नी की माता । सस ।

श्वसन—सखा पु० [स०] [वि० श्वसनोय, श्वसिन, ? गान लेना । दम लेना । २ हाँफना । ३ फूँकना । फुँह म हवा छोड़ना । ४. फूँकार करना । कुककारना । ५. लगी सोंम खीचना । आह भरना । ६. वायु दबना । पवन । ७. एक वसु का नाम । ८. मैनफन । मदनफन । ९. एक राक्षस का नाम जिस इद्र ने मारा था (को०) ।

श्वसनरथ—सखा पु० [स०] श्वसनरथ नामक । नामिका [को०] ।

श्वसनव्यापार—सखा पु० [स०] श्वसन + व्यापार] श्वसन लेने और छोड़ने की क्रिया । उ०—श्वसन व्यापार, जीम की क्रियाएँ, शुद्ध उच्चारण सुनने का अभ्यास आदि की सहायता भी लेनी चाहिए ।—भा० शिखा, पृ० ४७ ।

श्वसनसमीरण—सखा पु० [स०] श्वसन [को०] ।

श्वसनाशन—सखा पु० [स०] वायु भक्षण करनेवाला, सर्प । मोंप ।

श्वसनेश्वर—सखा पु० [स०] अर्जुन वृक्ष ।

श्वसनोत्सुक—सखा पु० [स०] मोंप । सर्प ।

श्वसनोर्मि—सखा स्त्री० [स०] हवा का भाका [को०] ।

श्वसान—वि० [स०] मोंम लेता हुआ । जीवित [को०] ।

श्वसित—वि० [स०] १ श्वसनमय । श्वसनयुक्त । उ०—चित्रित से उपवन में श्वत रंगों में श्वतप छाया, सुरभि श्वनित मासत, पुनक्ति कुसुमों की कपित काया ।—ग्राम्या, पृ० ७६ । २ सोंस लेनेवाला । जीवित (को०) । ३ आह भरने वाला (को०) ।

श्वसित^२—सखा पु० [स०] १ मोंम । २. ऊँची सोंस लेना । आह भरना [को०] ।

श्वसुत, श्वसुन—सखा पु० [स०] कुकुर । कुकुरोंवा नामक पीवा ।

श्वस्तन—वि० [स०] आनेवाले दिन का । कल का ।

श्वस्तन^२—सखा पु० कल का दिन । आनेवाला दूसरा दिन ।

श्वस्तनी—सखा स्त्री० [स०] कल का दिन । आनेवाला दूसरा दिन ।

श्वस्त्य—वि०, सखा पु० [स०] दे० 'श्वस्तन' [को०] ।

श्वहा—सखा पु० [स०] श्वहन् आखेटक । शिकारी [को०] ।

श्वस्थि—सखा स्त्री० [स०] एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो कान्ति, रूपे, जल, कुमुद आदि के रंग का कहा गया है । (रत्नपरीक्षा) ।

श्वा—सखा पु० [स०] श्वन् कुक्कुर । कुत्ता [को०] ।

श्वार्क—सखा पु० [स०] कुत्ते का कान [को०] ।

श्वगणिक—सखा पु० [स०] दे० 'श्वगणिक' [को०] ।

श्वाग्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते की पूँछ [को०] ।

श्वाघ्निक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शिकारी । २. कुत्ता पालनेवाला [को०] ।

श्वाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वानभक्षक । श्वपाक ।

श्वान—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता । कुक्कुर । उ०—
गोकुल चले प्रेम आतुर ह्वै खुलि गए कपट कपाट । सोए श्वान,
पहरा सोए, सबै मुक्त भई वाट ।—सूर (शब्द०) । २. दोहे
का इक्कीसवाँ भेद । इसमें दो गुरु और ४४ लघु होते हैं । ३
छप्पय का पंद्रहवाँ भेद । इसमें ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण,
१५२ मात्राएँ होती हैं ।

श्वानचिल्लिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बधुआ न मक शाक ।

श्वाननिद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी नींद जो थोड़े खटके से भी चट
खुल जाय । हलकी नींद । भ्रपकी ।

श्वानवैखरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] कुत्ते की गुराहट [को०] ।

श्वानी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शुनी । कुतिया ।

श्वान्तति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] भारंगी । बमनेटी । ब्राह्मणयष्टिका ।

श्वापद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हिंसके पशु । व्याघ्र आदि ।

श्वापद—वि० खौफनाक । जगनी । बर्बर [को०] ।

श्वापुच्छ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते की पूँछ ।

श्वाचित्, श्वाविद्, श्वाविष्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] साही नामक जतु ।
शल्य ।

श्वास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. नासिका के मार्ग से प्राणवायु के भीतर
जाने और बाहर निकलने की क्रिया । प्राणियों का नाक से
हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार । साँस । दम ।
उ०—ताती ताती श्वासन विनास्यो रूप होठन ।—शकुन्तला,
पृ० १०६ ।

क्रि० प्र०—लेना ।—छोड़ना ।—निकलना ।—खीचना ।—
—रोकना ।

मुहा०—श्वास रहते = प्राण रहते । जीते जी । श्वास खीचना या
चढ़ाना = साँस रोके रहना । श्वास छूटना = मृत्यु होना ।

२. व्यजनों के उच्चारण के प्रयत्न में मुँह से हवा छूटना । ३
जल्दी जल्दी साँस लेना । हाँफना । ४. वायु । हवा (को०) ।
५. निश्वास लेना । आह भरना (को०) । ६. एक रोग जिसमें
साँस अधिक वेग से और जल्दी जल्दी चलती है । दम फूलने
का रोग । दमा ।

यो०—श्वासकास ।

विशेष—आयुर्वेद में श्वास रोग पाँच प्रकार का कहा गया है—
महाश्वास, ऊर्ध्व श्वास, छिन्न श्वास, तमक श्वास और क्षुद्र
श्वास । इनमें से प्रथम तीन असाध्य, चौथा कष्टसाध्य और
पाँचवाँ साध्य कहा गया है ।

श्वासकष्ट—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] साँस लेने में होनेवाला कष्ट । श्वास-
कास ।

हिं० श० ६-६१

श्वासकास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. दमा और खाँसी । २. दमे की
खाँसी । दमा ।

श्वासकुठार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वास रोग में उपकारी एक रबीष ।

विशेष—इसे बनाने के लिये शुद्ध पाग, शुद्ध गवक की कजली,
मिर्गो मुहरा, चूना, सोहागा, मैन्सिन, काली मिर्च, सोठ
और पिप्पली के चूर्ण को अदरक के रस की एक पुट देकर
सिद्ध करते हैं ।

श्वासधारण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] कात्यायन श्रौतमूत्र के अनुसार श्वास
को रोक रखना । साँस रोकने की क्रिया ।

श्वासप्रश्वास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] साँस लेने की क्रिया । श्वास की रेचक
और पूरक क्रिया । साँस लेना और निकालना ।

श्वासरोग—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वास + रोग] दे० 'श्वास-४' ।—
माचव०, पृ० १४ ।

श्वासरोध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. साँस रोकना । साँस को बाहर
निकलने से रोके रहना । २. दम घुटना । साँस भीतर न
समाना ।

श्वासहिक्का—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की हिक्का [को०] ।

श्वासहीन—वि० [सं०] जो श्वासग्रहण की क्रिया से रहित हो ।
मृत । मुर्दा ।

श्वासहेति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] (दमा को हटानेवाली) निद्रा । नींद ।

श्वासा पु—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] श्वास] १. साँस । दम । जैसे,—जब तक
श्वासा तब तक आशा । उ०—श्वासा तामु भए श्रुति चार ।
करि सो स्तुति या परकार ।—सूर (शब्द०) । २. प्राण ।
प्राणवायु ।

श्वासारि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पुष्कर मूल । २. कुष्ठ नामक
पौधा । कूट ।

श्वासी—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वासिन्] १. श्वास लेनेवाला जीव । जीवित
प्राणी । २. वायु । हवा ।

श्वासोच्छ्वास—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वेग से साँस खीचना और निकालना ।
क्रि० प्र०—लेना ।

श्वित्—वि० [सं०] श्वेत । श्वेत । धवल ।

श्वित—सञ्ज्ञा पुं० श्वेत्य । धवलिमा । सुफेदी [को०] ।

श्वितान—वि० [सं०] धवल । श्वेत [को०] ।

श्विति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] धवलिमा । उज्ज्वलता [को०] ।

श्वितन, श्वितन्य, श्वित्य—वि० [सं०] श्वेत । सफेद । धवल [को०] ।

श्वित्र—वि० [सं०] १. सफेद । श्वेत । २. सफेद कोढ़वाला ।

श्वित्र—सञ्ज्ञा पुं० १. श्वेत कुष्ठ । सफेद कोढ़ । सफेद दागवाला
कोढ़ ।

विशेष—इस रोग में शरीर के चमड़े के ऊपर सफेद दाग पड़
जाते हैं । यह रुधिर, मांस और मेद में रहता है । अन्य प्रकार
के कुष्ठों की तरह यह पकता, बहता और पीड़ा नहीं करता ।
जिसमें केश सफेद न हुए हों तथा जिसमें दाग परस्पर मिलकर
एक न हो गए हों, वह साध्य है ।

२ शरीर के चर्म पर पडा हुआ श्वेत कुष्ठ का दाग। सुफेद कोठ का घन्वा (को०)।

शिवत्रघ्नी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली। पोतपर्णी। बिछाली का पौधा।

शिवत्रनाशन, शिवत्रहर—वि० [सं०] कुष्ठ रोग दूर करनेवाला।

शिवत्ररि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी।

शिवत्री—वि० [सं० शिवत्रिन्] [वि० स्त्री० शिवत्रिणी] १. शिवत्र रोगी। सफेद कोठवाला। २. शिवत्र रोग सवधी।

श्वेत—वि० [सं०] १ जिसमें कोई रंग न मालूम हो। बिना रंग का। सफेद। धौला। चिट्ठा।

विशेष—विज्ञान से सिद्ध है कि श्वेत रंग में सातों रंगों का अभाव नहीं है बल्कि उनका गूढ मेल है। सूर्य की किरणें देखने में सफेद जान पड़ती हैं, पर रश्मि विश्लेषण क्रिया से सातों रंगों की किरणें अलग अलग हो जाती हैं।

२. शुभ्र। उज्ज्वल। साफ। निर्मल। ३. निर्दोष। निष्कलक। ४ जो साँवला न हो। गोरा।

श्वेत—सञ्ज्ञा पुं० १ सफेद रंग। श्वेत वर्ण। २ चाँदी। रजत। ३. कौडी। कपर्दक। ४ पुराणानुसार एक द्वीप। ५ आयुर्वेद में तीसरी त्वचा की सञ्ज्ञा। शरीर के चमड़े की तीसरी तह। ६ एक पर्वत। ७. स्कन्द के एक अनुचर का नाम। ८ शोभाजन वृक्ष। सहिजन। ९ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १०. शख। ११ शुक्र ग्रह। १२ सफेद घोड़ा। १३ सफेद बादल। १४. एक केतु या पुच्छल तारा। १५ सफेद जीरा। श्वेत जीरक। १६ शिव का एक अवतार। १७ वराह-मूर्ति-भेद। श्वेत वराह। १८. पुराण के अनुसार हिरण्यवर्ष और रम्यवर्ष के बीच का एक पर्वत। १९ सफेद वकरा (को०)। २० आँखों की सफेदी। नेत्र का श्वेत रंग (को०)। २१. अग्निपुराण में वर्णित एक राजा का नाम (को०)। २२. भागवत के अनुसार एक नाग (को०)। २३. तक्र या मट्टा जिसमें समानुपात में जल मिलाया हो (को०)।

श्वेतकटकारी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतकण्टकारी] सफेद कटकारी। श्वेत पुष्पवाली कटकारी (को०)।

श्वेतकन्द—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतकन्द] प्याज।

श्वेतकन्दा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतकन्दा] अतिविषा। अतीस नामक ओषधि।

श्वेतक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चाँदी। रजत। रोप्य। २ कौडी। कपर्दक। ३ काँसा। ४ एक नाग का नाम।

श्वेतकपोत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का चूहा। २. एक प्रकार का साँप।

श्वेतकमल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] उज्ज्वल कमल। पुडरीक (को०)।

श्वेतकल्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक कल्प का नाम (को०)।

श्वेतकाड़ा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतकाण्डा] सफेद दूध। श्वेत दूर्वा।

श्वेतकाक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद कौआ अर्थात् असमर्ब बात।

श्वेतकाकीय—वि० [सं०] असमर्ब। व्यर्थ। बेकार (को०)।

श्वेतकापोती—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पीवा (को०)।

श्वेतकि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में वर्णित एक वर्मपरायण राजा।

श्वेतकिण्वही—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] शतपत्रा। विपद्घ्निका नामक वृक्ष (को०)।

श्वेतकुजर—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतकुञ्जर] १ श्वेत वर्ण का हाथी।

२ इन्द्र का ऐरावत हाथी (को०)।

श्वेतकुक्षि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

श्वेतकुश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष। सित दर्भ (को०)।

श्वेतकुष्ठ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद दागवाला कोढ़। शिवत्र।

श्वेतकृष्ण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद और काला। २ यह पक्ष और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात। जैसे,—हम श्वेत कृष्ण कुछ न कहेंगे। ३ एक प्रकार का विपैला कीड़ा। (संश्रुत)।

श्वेतकृष्णा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक विपैला कृमि (को०)।

श्वेतकेतु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. बोधिसत्त्व की अवस्था में गौतम बुद्ध का नाम। ३. केतु ग्रह-विशेष।

श्वेतकेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. लाल फुन का सहिजन का पेड़। २ सफेद बाल।

श्वेतकोल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पोठी या पोठिया नाम की मछली। शफर (को०)।

श्वेतक्षार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शोरा (को०)।

श्वेतगज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी। उ०—
अप्सरा पारिजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पाँच नरपतिहि देने।
—सूर (शब्द०)।

श्वेतगरुड, श्वेतगरुत—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हंस (को०)।

श्वेतगुजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतगुञ्जा] सफेद घुँघची (को०)।

श्वेतघटा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतघण्टा] नागदती।

श्वेतचदन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतचन्दन] श्वेत मलयागिरि चदन। दे० 'चदन'।

श्वेतचरण—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक पक्षी।

श्वेतचिलिका, श्वेतचिल्ली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शाक। बथुआ (को०)।

श्वेतच्छेद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. गधपत्र। वनतुलसी। २. हंस।

श्वेतजीरक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] सफेद जीरा।

श्वेतटकक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतटङ्कक] सोहागा। श्वेत टकण (को०)।

श्वेतटंकण—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतटङ्कण] सोहागा।

श्वेतता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। उज्ज्वलता। शुक्लता। उ०—उसने
देखा मन्त्रील की फेनिल श्वेतता युवती की सुषडता पर विराज
रही है।—पिंजरे०, पृ० १३।

श्वेतद्युति—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

श्वेतद्रुम—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वरुण वृक्ष ।

श्वेतद्विप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. ऐरावत हाथी । २. सफेद रंग का हाथी (को०) ।

श्वेतद्वीप—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार क्षीरसागर के पास एक अत्यन्त उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु भगवान् निवास करते हैं । २. वह स्थान या देश जहाँ श्वेत रंग के व्यक्ति या गोरे रहते हैं । योरप । उ०—यूरप या श्वेतद्वीप मानो पश्चिमीय सभ्यता का मायका ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५९ ।

श्वेतधातु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत रंग के खनिज पदार्थ । २. खडिया मिट्टी । ३. दूधिया पत्थर (को०) ।

श्वेतधामा—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतधामन्] १. चंद्रमा । २. कूर । ३. समुद्र फेन । ४. अपामार्ग । चिचडा । ५. अपराजिता ।

श्वेतनील—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मेघ । बादल ।

श्वेतपटल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] जस्ता नामक धातु ।

श्वेतपत्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. हँस । २. किसी प्रकार की राजनीतिक वार्ता या संधिचर्चा के अंत में उसमें तै को हुई शर्तों आदि को लिखित घोषणा (अ० ह्वाइट पेपर) ।

श्वेतपत्ररथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा (को०) ।

श्वेतपर्णा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] जलकुंभी । वारिपर्णा ।

श्वेतपर्णासि—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी (को०) ।

श्वेतपाटला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत वर्ण के फूलवाला पाटल या पाडर वृक्ष (को०) ।

श्वेतपाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक गण का नाम ।

श्वेतपिंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्ग] सिंह (को०) ।

श्वेतपिंगल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्गल] १. सिंह । २. महादेव । शिव । ३. वह जिसका वर्ण श्वेत और कपिल रंग का हो (को०) ।

श्वेतपिंगलक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्गलक] सिंह ।

श्वेतपुष्प—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. निर्गुंडा । सफेद फूल ।

श्वेतपुष्पा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागपुष्पा । २. तारई । ३. सन । ४. सेंधुप्रार । सभालु । ५. नागदत्ता । ६. सफेद अपराजिता ।

श्वेतपुष्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्रदात्रा लता । २. बड़ी सन-पुष्पी ।

श्वेतप्रदर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफेद रंग की धातु गिरती है ।

श्वेतप्रस्तर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १० 'श्वेतधातु' (को०) ।

श्वेतवर्वर—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन ।

श्वेतविंदुका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतविंदुका] १. वह कन्या जिसके शरीर पर सफेद धब्बे या दाग हो । (यह विवाह के अयोग्य मानी जाती है) । २. कोई भी श्वेत दूँदीवाला वस्तु ।

श्वेतबुद्धा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बनतिका ।

श्वेतभडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतभण्डा] सफेद फुलावाली अपराजिता (को०) ।

श्वेतभानु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

श्वेतभिधु—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी साधु । धूर्त (को०) ।

श्वेतभुजंग—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतभुजङ्ग] ब्रह्मा का एक अन्तार ।

श्वेतमंडल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतमण्डल] एक प्रकार का सौर । (मुद्रुत) ।

श्वेतमदारक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतमदारक] सफेद फुलावाला अर्क वृक्ष । सुफेद मदार (को०) ।

श्वेतमव्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] मुस्तक । मोघा ।

श्वेतमयूख—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

श्वेतमरिच—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. शोभाजन बीज । नहिजन के बीज । २. सफेद मिर्च ।

श्वेतमाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २. धूम्र । धुआँ ।

श्वेतमूला—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदहपूरना । पुनर्नया का एक भेद ।

श्वेतयावरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] (श्वेत बहनेवाली) एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद में आया है ।

श्वेतरजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० श्वेतरञ्जन] सोसा धातु ।

श्वेतरक्त—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] गुलाबी रंग ।

श्वेतरक्त—वि० गुलाबी रंगवाला (को०) ।

श्वेतरथ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] शुक ग्रह ।

श्वेतरस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] तक्र या मट्ठा जिसमें जल का अनुपात समान हो (को०) ।

श्वेतराजी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] चिचिडा (जिसका तरकारा होता है) ।

श्वेतरावक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] निर्गुंडो ।

श्वेतरोचिस्—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

श्वेतरोहित—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड का एक नाम । २. एक प्रकार का पोवा जिनका फूल सफेद और फल लाल होता है ।

श्वेत रोध्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] पठाना लाव । पट्टेका लाव ।

श्वेतवक्त्र, श्वेतवक्त्र—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] रुद्र के एक अनुचर का नाम ।

श्वेतवचा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेद वच । २. प्रतिवचा । अतीत ।

श्वेतवल्लल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. गूलर । उदुवर वृक्ष । २. सफेद रंग की छाल ।

श्वेतवह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [सञ्ज्ञा स्त्री० श्वेतोहा] इद्र ।

श्वेतवाजी—सञ्ज्ञा पुं० [श्वेतवाजिन्] १. सफेद घोड़ा । २. चंद्रमा । ३. अर्जुन । ४. कूर (को०) ।

श्वेतवाराह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. वाराह भगवान् की एक मूर्ति । २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मरने का प्रथम दिन माना गया है । ३. एक तीर्थ ।

श्वेतवासा—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी सन्नाता । २. वह जिनने श्वेत परिधान धारण किया हो (को०) ।

श्वेतवाह—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. (सफेद जाड़वाने) इद्र । २. अर्जुन ।

श्वेतवाहन—सङ्घा पुं० [सं०] १ चंद्रमा । २. अर्जुन का एक नाम ।
३ समुद्र का मकर । ४ शिव का एक रूप या मूर्ति । ५
कपूर (को०) । ६ हरिवंश के अनुसार एक राजा जो विदूरथ
का पौत्र था (को०) ।

श्वेतवाही—पञ्चा पुं० [सं० श्वेतवाहिन] अर्जुन (को०) ।

श्वेतवृक्ष—पञ्चा पुं० [सं०] वरुण नाम का वृक्ष (को०) ।

श्वेतशिशपा—सङ्घा स्त्री० [सं०] श्वेत वर्ण का शिशपा वृक्ष (को०) ।

श्वेत शिशु—पञ्चा पुं० [सं०] श्वेत पुण्यवाला सहजित वृक्ष (को०) ।

श्वेतशुग, श्वेतशृंग—सङ्घा पुं० [सं० श्वेतशुङ्ग, श्वेतशृङ्ग] जो ।
यव ।

श्वेतसर्प—सङ्घा पुं० [सं०] १ वरुण वृक्ष । २ सफेद साँप ।

श्वेतसर्पप—सङ्घा स्त्री० [सं०] पाली सरपो ।

श्वेतसार—सङ्घा पुं० [सं०] खैर । कत्था । खदिर ।

श्वेतसिंही—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शाक ।

श्वेतसिद्ध—सङ्घा पुं० [सं०] स्कंद के एक अनुचर का नाम ।

श्वेतसुरसा—सङ्घा स्त्री० [सं०] सफेद फूल की निर्गुंडी ।

श्वेतस्पदा—सङ्घा स्त्री० [सं० श्वेतस्पन्दा] अपराजिता (को०) ।

श्वेतहनु—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप । (मुश्रुत) ।

श्वेतहय—सङ्घा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोड़ा । उच्चैश्चरा । २
अर्जुन । ३ इंद्र (को०) । ४ श्वेत वर्ण का अश्व ।

श्वेतहस्ती—सङ्घा पुं० [सं०] १. ऐरावत । २ श्वेत वर्ण का हाथी ।

श्वेताग^१—वि० [सं० श्वेताङ्ग] १. श्वेत अगवाला । गोरा । गौराग ।
२ श्वेत वर्णवाला ।

श्वेताग^२—सङ्घा पुं० यूरोप का निवासी । यूरोपियन । अंग्रेज । उ०—
(क) भारत भर आज श्वेताग होने की अभिलाषा से ।—प्रेम-
धन०, भा० २, पृ० २५६ । (ख) जो आज श्वेताग लोग करते
हैं ।—प्रेमधन०, भा० २, पृ० २५८ ।

श्वेतावर—सङ्घा पुं० [सं० श्वेताम्बर] १. सफेद वस्त्र धारण करने-
वाला । २ जैनो के दो प्रधान संप्रदायों में से एक ।

विशेष—ये लोग चंदरी रखते, बाल उखड़वाते, श्वेत वस्त्र पहनते,
क्षमायुक्त रहते और भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं ।
ये स्त्रियों को भी अपवर्ग मानते हैं ।

३ शिव का एक रूप ।

श्वेताशु—सङ्घा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

श्वेता^१—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।
२ कौडी । ३ भोजपत्र का पेड़ । ४. श्वेत पाटला । काष्ठ
पाटला । ५ श्वेत या शङ्ख नामक हस्ती की माता । शखिनी ।
६ अतीस । अतिविष । ७ अपराजिता लता । ८ सफेद
वन भटा । ९ श्वेत कटकारी । भटकटैया । १०. पापाणभेद ।
पखानभेद । ११ वंशलोचन । १२. श्वेत पुनर्नवा । सफेद
गदहपूरना । १३. शिलावाक । १४ फिटकरी । १५ चीनी ।
शक्कर । १६. मिस्री । १७. सफेद बच । १८. धुरपत्री ।
पर्वमूला ।

विशेष—यह वृक्ष वरमात में उगता है और जाड़े में नष्ट हो जाता
है । यह एक या डेढ़ बालिश ऊँचा और छतनारा होता है ।
पत्तियाँ छोटी, फूल नीले या बैंगनी रंग के और बीज छोटे
छोटे दाना की तरह के हान हैं । कुम्पत्री मधुर, पीतन और
मृदा का दूध बढ़ानेवाला बड़ी गई है ।

१६ स्कंद की अनुचरी एक मातृगा । २० कश्यप का क्रोवज्जा
नाम्ना पत्नी में उत्पन्न एक कन्या जो दिग्गजा की माता है ।

श्वेता^२—वि० श्वेत वर्ण की । गोरी । गौरमणी ।

श्वेताक्ष—सङ्घा पुं० [सं०] एक प्रकार की मोमरता ।

श्वेताद्रि—सङ्घा पुं० [सं०] १ श्वेत नाम का पर्वत । २ बंलाश
पर्वत (को०) ।

श्वेताभ—वि० [सं०] आभायुक्त । श्वेतकातिवाना ।

श्वेताम्नि—सङ्घा स्त्री० [सं०] इमली ।

श्वेतारण्य—सङ्घा पुं० [सं०] कावेरी नदी के किनारे का एक वन जो
ताय माना गया है ।

श्वेतार्क—सङ्घा पुं० [सं०] १. चंद्रमा । २ श्वेत मद्यार का वृक्ष ।

श्वेताचि—सङ्घा पुं० [सं० श्वेताचिम] चंद्रमा ।

श्वेतालु—सङ्घा पुं० [सं०] महिष कंद । भैमाकंद ।

श्वेतावार—सङ्घा पुं० [सं०] सितावर जाक ।

श्वेताश्व—सङ्घा पुं० [सं०] अर्जुन का एक नाम ।

श्वेताश्वत्तर—सङ्घा स्त्री० [सं०] १ वृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा ।
२ उपनिषद् विशेष ।

विशेष—वृष्ण यजुर्वेद की यह उपनिषद् छह अध्यायों की है ।
इसमें वेदात के प्रायः सब सिद्धांतों के मूल पाए जाते हैं ।
मगवद्गीता के बहुत से प्रसंग इसमें लिए हुए जान पड़ते हैं ।
इसकी संस्कृत बड़ी ही सरल और स्पष्ट है । वेदात के प्रसंगों के
अतिरिक्त इसमें योग और सांख्य के सिद्धांतों के मूल भी मिलते
हैं । वेदान्त, सांख्य और योग तीनों शास्त्रों के कर्त्तव्यों ने मानों
इसी के मूल वाक्यों को लेकर ब्रह्म के स्वरूप तथा पुण्य-प्रज्ञात
भेद आदि का विस्तार किया है ।

श्वेताह्वा—सङ्घा स्त्री० [सं०] श्वेत पाटला ।

श्वेतिका—सङ्घा स्त्री० [सं०] माँक ।

श्वेतिता—वि० [सं०] श्वेत या सफेद बनाया हुआ या किया
हुआ (को०) ।

श्वेतिमा—सङ्घा स्त्री० [सं० श्वेतिमन्] शुक्लत्व । शुभ्रता । धवलिमा ।
सफेदी (को०) ।

श्वेतेक्षु—सङ्घा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ईख । सफेद ईख (को०) ।

श्वेतींदर—सङ्घा पुं० [सं०] १ कुवेर । २. एक प्रकार का साँप ।
(मुश्रुत) । ३ मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक पर्वत ।

श्वेतीही—सङ्घा स्त्री० [सं०] इद्राणी । राची ।

श्वेत्र—सङ्घा पुं० [सं०] सफेद कोट ।

श्वेत्य—सङ्घा पुं० [सं०] १ श्वेतता । शुभ्रता । २ सफेद कुष्ठ (को०) ।

श्वेत्र, श्वैत्र्य—सङ्घा पुं० [सं०] सफेद काढ़ (को०) ।

प

प—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१ वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारणस्थान मूर्धन्य है। इससे यह मूर्धन्य वर्णों में कहा गया है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में होता है और उच्चारण दो प्रकार से होता है। कुछ लोग 'श' के समान इसका उच्चारण करते हैं और कुछ लोग 'ख' के समान। इसी से हिंदी की पुरानी लिखावट में इस अक्षर का व्यवहार कवर्गों 'ख' के स्थान पर होता था। जैसे,— देषि (देखि), लपन (लखन) इत्यादि।

अनेक धातुएँ जो दत्त 'स' से आरंभ हैं वे संस्कृत धातुगण में मूर्धन्य 'प' से लिखी गई हैं इस अक्षर का परिवर्तन अधिकतर 'श', 'स' और 'ख' के रूप में होता है। एक तरह से इसका शुद्ध उच्चारण, 'ऋ' की तरह, लुप्तप्राय है। व्रज और अवध में यह 'स' लिखा जाता है।

पजन—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पञ्जन] १. आलिंगन। २. मिलन। समागम।

पड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्ड] १. राशि। समूह। २. झाड़ा। ३. प्रजनन के लिये पालित वृष। छुड़ा साँड। ४. भेड़ वकरो का झुंड (को०)। ५. हीजडा। नपुंसक। नामर्द।

विशेष—कुछ विद्वान् इनके १४ तथा कुछ २० प्रकार मानते हैं।

६ कमलो का समूह। ७. शिव का एक नाम। ८. लिंग। चिह्न। लक्षण (को०)। ९. वृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

पडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डक] हीजडा। नपुंसक (को०)।

पडत्व—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डत्व] नामर्दा। हीजडापन। पुस्त्व का अभाव।

पडयोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्डयोनि] वह स्त्री जिसे मासिक वर्म न हो और जिसके स्तन न हों, अर्थात् जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

पडव(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० खाण्डव] दे० 'खाण्डव'। उ०—रवि पडव पडव लषि ग्रह ।—पृ० रा०, १२। ४७।

पडवेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डवेश] दे० 'पण्डवेश'।

पडामर्क—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डामर्क] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम। उ०—कविसुत असुर वश गुरु आमा। पडामर्क रह्यो अस नाम।—रघुराज (शब्द०)।

पडाली—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्डाली] १. तेल नापने की एक छोटी धरिया जिसमें एक छटाँक वस्तु आ सकती हो। २. दुश्चरित्रा स्त्री। व्यभिचारिणी। ३. ताल। तलैया।

पडी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्ड] वह स्त्री जिसे मासिक वर्म न होता हो, स्तन छाटे हों, और जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

पड—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डक] दे० 'पण्ड'।

पडक—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डक] दे० 'पण्डक' (को०)।

यौ०—पडकतिल = दे० 'पडतिल'।

पडतिल—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डतिल] १. बाँझन का तिल। २. (लाक्ष्०) निकम्मा आदमी (को०)।

पडवेश—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पण्डवेश] १. वह जो हिजडे का वेश धारण करे। २. जनखा। हीजडे के वेश में रहनेवाला।

पडा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्डा] वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषों की सी हो।

पडता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्डता] दे० 'पंडा' (को०)।

पडियोनि—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पण्डियोनि] दे० 'पण्डियोनि' (को०)।

प^१—सञ्ज्ञा पुं० १. विद्वान् पुरुष। आचार्य। २. कुच। चूचुक। ३. नाश। ४. शेष। बाका। ५. प्राप्त ज्ञान का क्षय। ६. मुक्ति। मोक्ष। ७. स्वर्ग। ८. अंत। समाप्ति। अन्तिम। ९. गर्भ। १०. धैर्य। सहिष्णुता। ११. निद्रा। नीद (को०)। १२. कच। केश। बाल (को०)। १३. गर्भवेमाचन (को०)।

प^२—वि० १. बहुत अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २. विद्वान् (को०)।

पट^१—वि० [सं०] गिनती में ६। छह।

पट^२—सञ्ज्ञा पुं० १. छह की संख्या। २. पांडव जाति का एक राग।

विशेष—यह राग दीपक राग का पुत्र माना गया है। इसके गाने का समय प्रातः १ दंड से ५ दंड तक है। इसमें सब कोमल स्वर लगते हैं। कोई कोई इसे आसावरी, ललित, टोड़ी और भैरवी आदि रागिनियों से उत्पन्न कर राग मानते हैं।

पटक(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पटक] दे० 'पट्कर्म'। उ०—ती पंडित आये वेद भुनाए पटक रमाए अपनाए ।—सु दर० ग्र०, भा० १, पृ० २३७।

पटतुकी(पु)—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० पट्+हि० तुक+ई (प्रत्य०)] छप्पय छह। उ०—[कए कवित पटतुकी बहुरि मनहर अरु इदव। कुडलिया पुनि सापि भक्ति विमुखान को निदव।—सु दर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० १४४।

पटवदन(पु)—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पट्+वदन] (छह भुँहवाले) कार्तिकेय। उ०—तब जनमेज पटवदन कुमार। तारकु असुर समर जेहि मारा।—मानस, १। १०३।

पट्क^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १. छह। ६ की संख्या। २. छह वस्तुओं का समूह।

विशेष—इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान के समूह को प्रायः पट्क कहते हैं।

३. दे० 'पड्विकार'।

पट्क^२—वि० छह सबधी। छह का। छहवाला।

पट्कर्ण^१—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की वीणा या सितार जिसमें छह कान होते हैं।

पट्कर्ण^२—वि० १. छह कानों से सुना गया। वक्ता या श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे आदमी से भी सुना गया। २. जिसे छह कान हो (को०)।

पट्कर्म—सञ्ज्ञा पुं० [सं० पट्कर्मन्] १. ब्राह्मण के छह कर्म— (१) यजन, (२) याजन, (३) अव्ययन, (४) अव्यापन,

(५) दान देना और (६) दान लेना । २. स्मृतियों के अनुसार छद्म काम जिनके द्वारा आपत्काल में ब्राह्मण अपनी ज विका कर सकता है (१) उच्छ वृत्ति (कटे हुए खेतों में दाने बिना), (२) दान लेना, (३) याचना करना, (४) कृषि, (५) वाणिज्य और (६) गोरक्षा (अथवा किसी किसी के मत से सूद पर रखा देना) । ३. तांत्रिका के वध आदि छद्म कर्म—(१) शांति, (२) वशीकरण, (३) स्तम्भन, (४) विद्वेष, (५) उच्चाटन तथा (६) मारण । ७. योगाभ्यास सबको छद्म क्रियाएँ (१) धोनी, (२) वस्ती, (३) नेती, (४) नौलिकी या नौलिक, (५) त्राटक तथा (६) कपालभाती (को०) ।

पट्कर्मा—संज्ञा पुं० [सं०] १ यजन याजन आदि नियत कर्मों को करनेवाला ब्राह्मण । कर्मनिष्ठ ब्राह्मण । २ तांत्रिक ।

पट्कल—वि० [सं०] (मुहर्न आदि) जो छद्म कलाओं तक रहे (को०) ।

पट्कला—संज्ञा पुं० [सं०] सगात में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक भेद ।

पट्कसपत्ति—संज्ञा पुं० [सं० पट्कसम्पत्ति] छद्म प्रकार के कर्म—(१) ज्ञान, (२) दम (३) उपरति, (४) नितित्वा, (५) श्रद्धा और (६) समाधान ।

पट्कुलीय—वि० [सं०] छद्म कुलीवाला (को०) ।

पट्कूटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भैरवी का एक रूप (को०) ।

पट्कोण^१—वि० [सं०] छद्म कोनोवाला । छद्मकोना । छद्मपहला ।

पट्कोण—संज्ञा पुं० ज्योतिष में लग्न से छाठा घर जो रिपुक स्थान कहा जाता है । २. एक प्रकार का यंत्र जिसमें छद्म कोण की आकृति रहती है । ३. इन्द्र का वज्र । ४. हीरा (को०) ।

पट्कोप—संज्ञा पुं० [सं०] एक पुराने आचार्य का नाम ।

पट्खड—वि० [सं० पट्खण्ड] जिसमें ६ खंड हों । छद्म खंडों या विभागोंवाला (को०) ।

पट्चक्र^१—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग में माने हुए कुडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छद्म चक्र जो मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनहत, विशुद्ध और आञ्ज चक्र कहे गए हैं ।

पट्चक्र^२—संज्ञा पुं० [सं० पट्+चक्र (= चक्कर या घेरा)] किसी के विरुद्ध आयोजन । भीतरी चाल । पड़्यंत्र ।

क्रि० प्र०—चलाना ।—छड़ा करना ।—रचना ।

पट्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रमर । भौरा । २. जू । यूका (को०) । ३. टिड्डा (को०) ।

पट्चित्ति, पट्चित्तिक—वि० [सं०] छद्म स्तरो या तहोवाला (को०) ।

पट्त्तत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्त्तन्त्री] छद्म दर्शनो का एक नाम षड्दर्शन (को०) ।

पट्त्तकतैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक का एक तेल जिसमें तेल से छद्म गुना अधिक तक्र (मट्ठा) मिलाया जाता है ।

पट्ताल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मृदंग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है ।

विशेष—इसमें पहले २ आघात, १ खानी, फिर ४ आघात और अंत में एक खाली हाता है ।

२ एक प्रकार का ग्याल जा एकनाना ताल पर बजाया जाता है ।

पट्तिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महोत्सव के गृहण पत्र को पकाइजी का नाम । इसमें तिल के व्यवहार और दान की वृत्त कन कहा गया है । उ०—पहिकर नाम पट्तिता अर्द्ध । करि त्रत नेम निकर अत्र दहई ।—विग्राममागर (शब्द०) ।

पट्तिती—संज्ञा पुं० [सं० पट्तितीन्द्र] तिल को ६ प्रकार से व्यवहार करनेवाला व्यक्ति ।

विशेष—इसके व्यवहार के ढंग ये हैं—(१) तिलोद्वर्तन, (२) तिलस्नान, (३) तिलहोम, (४) तिल का दान, (५) तिल-भक्षण और (६) तिलपन ।

पट्तिश—वि० [सं०] छत्तासवा (को०) ।

पट्तिशत्—संज्ञा पुं० [सं०] छत्तोम को मर्या (को०) ।

पट्पचाशत्—संज्ञा पुं० [सं० पट्पञ्चाशत्] छत्तन ती मर्या (को०) ।

पट्पन—वि० [सं०] छद्म पत्ता या दान से युक्त । जिसमें छद्म पते हों (को०) ।

पट्पद^१—वि० [सं०] [वि० स्त्री० पट्पदा] छद्म परिवाला ।

पट्पद^२—संज्ञा पुं० १ भ्रमर । भौरा । २. किनना । ३. छद्म पदोंवाला छद्म । गति छद्म (को०) ।

पट्पदज्य—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का पुत्र जो भ्रमरश्रेणी का बना माना जाता है (को०) ।

पट्पदप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल । २ नागकेशर का वृक्ष ।

पट्पदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचिन छद्म (को०) ।

पट्पदातिथि—संज्ञा पुं० [सं०] १ (जहां भ्रमर अतिथि रत में हा अर्थात्) ग्राम का वृक्ष । २ चंपक । चम ।

पट्पदानदवर्चन—संज्ञा पुं० [सं० पट्पदानदवर्चन] (भ्रमर के भ्रान्त का बढानेवाला) किकरात का वृक्ष ।

पट्पदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दं 'पट्पदा' (को०) ।

पट्पदी^१—वि० स्त्री० [सं०] छद्म परिवाली ।

पट्पदी^२—संज्ञा स्त्री० १ भ्रमर । भौरा । २ एक छद्म जिसमें छद्म पद या चरण हाने ह । छप्पय । ३. किलनो या जू (को०) । ४ भूल प्याम, शोक अव्यवस्थित चेतना, वाधक्य तथा मृत्यु नाम को छद्म स्थितियाँ । ५ काम, क्रोध, लोभ, माह, मद तथा मान नाम को छद्म भावनाएँ (को०) ।

पट्पाद—संज्ञा पुं० [सं०] दं 'पट्पदा' (को०) ।

पट्पितापुनक—संज्ञा पुं० [सं०] सगात में ताल का एक भेद जिसमें १२ मात्राएँ होती हैं । एक पुन, एक लघु, दो गुरु, एक लघु, एक पुन, यह इसका प्रमाण है ।

पट्प्रज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञान । २. उच्छ्र खल । ३. कामुक । ४. प्रच्छेद स्वभाववाला पड़ोसी (को०) ।

षट्मुख—सङ्घा पुं [मं] कार्तिकेय । उ०—गिरिवेध पट्मुख जीति तारकनद को जब ज्यो हस्यो ।—केशव (शब्द०) ।

षट्स—सङ्घा पुं [मं] छह प्रकार के रस या स्वाद । विशेष दे० 'पट्स' ।

यौ०—पट्स भोजन ।

पट्राग—सङ्घा पुं [सं पट्+राग] १ सगीत के ६ राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल मालकोस और दीपक । २. बखेडा । जजाल । आडवर । जैसे—इसमें बडा पट्राग है, हमसे न होगा । ३. भक्त ।

पट्रिपु—सङ्घा पुं [सं] दे० 'पट्रिपु' ।

पटशास्त्र—सङ्घा पुं [सं] हिंदुओं के ६ दर्शन ।

पटशास्त्री—सङ्घा पुं [मं पटशास्त्रिन्] छह दर्शनों का जाननेवाला ।

षट्वाग—सङ्घा पुं [सं पट्वाङ्ग] खट्वाग नामक राजपि जिन्हें केवल दो घडों की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी । उ०—एक पट्वाग राजरूपि भयऊ । असुर विजय हित सो दिवि गयऊ ।—रघुराज (शब्द०) । २ शिव का एक शस्त्र । दे० 'खट्वाग' ।

पडग^१—सङ्घा पुं [सं पडङ्ग] १. वेद के छह अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, नसक्त, छंद और ज्योतिष । २ शरीर के छह अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और घड । तथा कुछ लोगों के मत से हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच तथा अस्त्र ।

३. गाय से प्राप्त होनेवाली पवित्र छह वस्तुएँ—गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, गोरोचन (को०) । ४. छह वस्तुओं का समाहार (को०) । ५. छठा भाग । पठाश (को०) । ६ छोटा गोखरू (को०) ।

पडग—वि० जिसके छह अंग या अवयव हो ।

पडगजित्—सङ्घा पुं [सं पडङ्गजित्] सब अंगों को वश में करनेवाले विष्णु ।

पडगवृष—सङ्घा पुं [सं पडङ्गवृष] एक प्रकार का घुव जिसमें ६ वस्तुएँ मिली रहती हैं ।

पडगिनी—सङ्घा स्त्री [सं पडङ्गिनी] अपने सभी अंगों से पूर्ण सेना (को०) ।

पडंघ्रि—सङ्घा पुं [सं पडङ्घ्रि] अमर । भौरा ।

पडक्षरी—सङ्घा स्त्री [मं] वैष्णवों के रामानुज संप्रदायवालों का मुख्य मंत्र ।

पडक्षीण—सङ्घा पुं [मं] मछली जिसे छह आँखें कही जाती हैं ।

पडग्नि—सङ्घा स्त्री [सं] १ कर्मकांड के अनुसार छह प्रकार की अग्नि ।

विशेष—इनके नाम इस प्रकार कहे गए हैं—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि । इनमें से प्रथम तीन प्रधान हैं । कुछ लोगों ने अग्नि के ये ६ भेद किए हैं—धूमग्नि, मदाग्नि, दीपाग्नि, मध्यमाग्नि, खराग्नि और भयाग्नि ।

पडधिक—वि० [सं] छह से अधिक जैसे, पडधिक दत्त = सोनह (को०) ।

पडभिज्ञ—सङ्घा पुं [सं] बुद्ध या बोधिमत्त्व ।

पडष्टक—सङ्घा पुं [सं] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का योग (को०) ।

पडशीत—वि० [सं] छियासीवां (को०) ।

पडशीति—सङ्घा स्त्री [मं] १ छियासी की मत्था । २ मूर्ध का एक राशि से दूसरे राशि पर जाने का चार मार्ग (को०) ।

पडह—सङ्घा पुं [सं] छह दिनों का समय (को०) ।

पडात्मा—वि० [सं पडात्मन्] अग्नि जो छह स्म्पोंवाला है (को०) ।

पडानन^१—वि० [सं] जिसे छह भुँह हो ।

पडानन^२—सङ्घा पुं १ कार्तिकेय । २ सगीत में स्वरमाधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है—आरोही मा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि मा । अवरोही—सा नि घ प म ग नि घ प म ग रे, घ म प ग रे सा ।

पडाम्नाय—सङ्घा पुं [सं] छह तंत्र (को०) ।

पडायतन^१—सङ्घा पुं [सं] छह इंद्रियों के छह स्थान (को०) ।

पडायतन^२—वि० १ जो पट् आयतन से युक्त हो । २ विज्ञान, भूमि, जल, आकाश, अग्नि और वायु के आयतनवाला (को०) ।

पडायतन भेदक—सङ्घा पुं [मं] बुद्ध (को०) ।

पडार—वि० [सं] जिसमें छह किनारे या कोण हों (को०) ।

पडूपण—सङ्घा पुं [सं] वैद्यक में ये छह गरम ममांश—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चीता, सोठ और काली मिर्च ।

पड्गया—सङ्घा स्त्री [सं] गयादित्य, गयागज, गायत्री, गदाधर, गया-सुर तथा गया क्षेत्र—जो मोक्षदायक हैं (को०) ।

पड्गव—सङ्घा पुं [सं] १ छह बैलों की जोड़ी । २ वह छुवा जिसमें छह बैल जोते जायें (को०) ।

पड्गवीय—वि० [मं] छह बैलों से खींचा जानेवाला (को०) ।

पड्गुण^१—सङ्घा पुं [सं] १ छह गुणों का समूह । २ राजनीति की छह बातें—मधि, विग्रह, यान (चढाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय ।

पड्गुण^२—वि० १. छगुना । २ जो छह गुणों में युक्त हो (को०) ।

पड्ग्रन्थ—सङ्घा पुं [मं पड्ग्रन्थ] १ मोठी वच । विशेष दे० 'वच' । २. करज का एक भेद (को०) ।

पड्ग्रथा—सङ्घा स्त्री [मं पड्ग्रन्था] १ इसमा गि जठ जो काशीर और काबुल से आती है । २ वच । ३. स्तेन वच (को०) । ४ शटी (को०) । ५ महाकरज (को०) ।

पड्ग्रथि—सङ्घा स्त्री [सं पड्ग्रन्थि] १ 'पड्ग्रथिना' ।

पड्ग्रथिका—सङ्घा स्त्री [मं पड्ग्रन्थिका] १. पीपलामूल । पिपलामूल । २ शटी । शटी ।

पड्ज—सङ्घा पुं [सं] सगीत के मात स्वरों में से चौथा स्वर ।

विशेष—यह गरहे के स्वर में मित्ता उन्नता माना गया है । इसके उच्चारणस्थान छह कहे गए हैं—नागा, कठ, उर, तालु, जिह्वा और दंत, स्त्री से इसका नाम पट्ज पड़ा । मूल

स्थान दत्त और अत स्थान कठ है। देवता इसके अग्नि हैं। वर्ण रक्त, आकृति ब्रह्मा की, ऋतु हिम, वार रविवार, छद अनुष्टुप् और सतति इसकी भैरव राग है। कुब्ज के मतानुसार यह प्रथम स्वर है और मोर के स्वर से मिलता जुनता है।

षड्दर्शनी ७—सञ्ज्ञा पु० [सं० षड्दर्शन + हि० ई (प्रत्य०)] दर्शनों का जाननेवाला। ज्ञानी। उ०—षड्दर्शनी अभाव सर्वथा घट करि मानै।—(शब्द०)।

षड्दर्शन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छह दर्शन।

षड्धा—अव्य० [सं०] छह प्रकार का। छह प्रकार से [को०]।

षड्दुर्गा—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह प्रकार के दुर्ग जिनके नाम घन्व दुर्ग, मही दुर्ग, गिरि दुर्ग, मनुष्य दुर्ग, मृद दुर्ग और वन दुर्ग हैं [को०]।

षड्विंदु—सञ्ज्ञा पु० [सं० षड्विन्दु] विष्णु। दे० 'षड्विंदु'।

षड्भाग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छठा हिस्सा। छठा भाग या अंश [को०]।

षड्भुज—वि० [सं०] १. छह भुजाओंवाला। २. छह पहल का।

षड्भुज—सञ्ज्ञा पु० १. चैतन्यदेव का एक नाम। षड्भुज क्षेत्र [को०]।

षड्भुजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. खट्वूजा। २. दुर्गा का एक नाम [को०]।

षड्यत्र—सञ्ज्ञा पु० [सं० षड् (= छह) + यत्र (कोशल)] १. किमी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भौतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—रचना।

षड्योग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] योगाभ्यास में प्रयुक्त छह प्रकार के तरीके [को०]।

षड्योनि—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शिलाजीत। शिलाजतु।

विशेष—रांगा, सीमा, तँवा, रूपा, सुवर्ण और लोहा इन छह धातुओं में से किसी एक की सुगंध शिलाजीत में अवश्य आती है, इसी से इसे षड्योनि कहते हैं। कारण यह है कि ऊपर कही हुई धातुओं में से जिस किसी एक धातु का अंश जिसमें होगा उसी पर्वत से शिलाजीत की उत्पत्ति होगी।

षड्स—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल अर्थात् माठा, नमकान, तीता, कडुआ, कसैला और खट्टा।

यौ०—षड्स भोजन = अनेक प्रकार के व्यंजन या खाद्य पदार्थ।

षड्रसायन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'लसिका'।

षड्राग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] दे० 'पट्राग'।

षड्रात्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह रात का समय [को०]।

षड्रिपु—सञ्ज्ञा पु० [सं०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छह विकार।

षड्रेखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा।

षड्वक्त्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] कार्तिकेय। पडानन।

षड्वदन—सञ्ज्ञा पु० [सं०] पडानन। कार्तिकेय।

षड्वर्ग—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह वस्तुओं का समूह या वर्ग। १. ज्योतिष में क्षेत्र, होरा, द्रोष्काण, नममाग, द्वादशांश और त्रिणाश जो षड्वर्ग कहलाते हैं। २. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह।

षड्विंदु—सञ्ज्ञा पु० [सं० षड्विन्दु] १. विष्णु। २. गुप्तरीति की जानि का एक कोटा जिसकी पोंठ पर छह गोले त्रिदयाँ होती हैं। इसे पूरव में 'छतुर्दवा' कहते हैं।

षड्विन्दुतैल—सञ्ज्ञा पु० [सं० षड्विन्दुतैल] वैद्यक का एक तैल जिसकी छह बूँद नास लेने में निर का दर्द दूर होना है और शीघ्र तया दाँत को लाभ पहुँचता है।

विशेष—रेंड की जड़, तगर, मोरु, सेंवा नमक, पुत्रजीवा, रास्ना, जलभंगरा, वायविडग, मुलेठा, सोठ, इन सबका चोगुना पल, भंगरे का रस और आठ गुना नेल इन सबको कटाहों में मद-मद पकावे। जब रमादिक जनकर तेल मात्र रह जाय, तो छान ले।

षड्विंश—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. नामवेद का एक ब्राह्मण।

षड्विंशति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छत्तीस की संख्या [को०]।

षड्विकार—सञ्ज्ञा पु० [सं०] १. प्राणों के छह विकार या परिणाम, अर्थात् (१) उत्पत्ति, (२) सरीरवृद्धि, (३), बालपन (४) प्रौढता, (५) वृद्धता और (६) मृत्यु। २. काम, क्रोध आदि छह विकार।

षड्विध—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह प्रकार का। छहगुना [को०]।

षण्णवति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] छानवे की मर्यादा।

षण्णाडीचक्र—सञ्ज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का चक्र।

षण्णाभि, षण्णाभिक—वि० [सं०] चक्र या पहिया जिसमें छह नाभि हों।

षण्मतस्थापक—सञ्ज्ञा पु० [सं०] शंकराचार्य [को०]।

षण्मास—सञ्ज्ञा पु० [सं०] छह महीने की अवधि [को०]।

षण्मासनिचय—वि० [सं०] छह मास की भोजननामग्री इकट्ठा करनेवाला [को०]।

षण्मासिक—वि० [सं०] अर्धवार्षिक [को०]।

षण्मुख—वि० [सं०] छह मुँहवाला।

षण्मुख—सञ्ज्ञा पु० पडानन। कार्तिकेय।

षण्मुखा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा [को०]।

षण्मुख पु०—सञ्ज्ञा पु० [सं० षण्मुख] दे० 'षण्मुख', उ०—जग जान षण्मुख जन्मु कर्म प्रताप पुरसारथु महा।—मानस, ११०३।

षप्र ७—सञ्ज्ञा पु० [हि० खप्पर] दे० 'खप्पर'। उ०—भरि रद्धि पप्र जुगनोय ईस मुडन भर वधियय। पनचर रुचिचर पूरि सबक करि कारज सधियय।—पृ० रा०, २।२६३।

षर्षपी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

षष्ट—वि० [सं०] साठवाँ।

षष्टि—वि० [८०] जो गिनती में पचास से दस अधिक हो। साठ।

षष्टि—सच्चा स्त्री० साठ की संख्या।

षष्टिक—वि० [८०] १. साठवाला। २. जो साठ पर खरीदा जाय।

षष्टिक—सच्चा पुं० एक प्रकार का वान जो बहुत जल्दी तैयार होना हैं। साठी धान।

षष्टिका—सच्चा स्त्री० [८०] साठी धान [को०]।

षष्टिक्य—सच्चा पुं० [८०] १. वह खेत जिसमें साठो धान बोया गया हो। २. वह खेत जो साठो धान बोने लायक हो। ३. साठो धान से परिपूर्ण खेत [को०]।

षष्टितम—वि० [८०] साठवाँ। उनमठ के बाद का [को०]।

षष्टिभाग—सच्चा पुं० [८०] शिव का एक नाम [को०]।

षष्टिमत्—स्त्री० पुं० [८०] दे० 'षष्टिमत्'।

षष्टियोजनी—सच्चा स्त्री० [८०] साठ योजन की यात्रा या दूरी [को०]।

षष्टिलता—सच्चा स्त्री० [८०] भ्रमरमारी नाम का पौधा। विशेष दे० 'भ्रमरमारी' [को०]।

षष्टिवर्षी—वि० [८०] षष्टिवर्षी जो साठ वर्ष का हो।

षष्टिवासरज—सच्चा पुं० [८०] साठो धान। षष्टिक [को०]।

षष्टिशालि—सच्चा पुं० [८०] साठो धान।

षष्टिसवत्सर—सच्चा पुं० [८०] साठ वर्ष की अवधि। साठ वर्ष का समय। प्रभव आदि साठ सवत्सर या वर्ष [को०]।

षष्टिहायन—सच्चा पुं० [८०] दे० 'षष्टिहायन' [को०]।

षष्टिहृद—सच्चा पुं० [८०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

षष्ट्यशक—सच्चा पुं० [८०] एक यंत्र जिससे जहाज पर नौचत्रों की स्थिति देखकर यह स्थिर करते हैं कि जहाज पृथ्वी के किस भाग में है।

षष्ठ—वि० [८०] [वि० स्त्री० षष्ठी] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठक—वि० [८०] छठा [को०]।

षष्ठकाल—सच्चा पुं० [८०] भोजन का छठा समय जो तीसरे दिन का सायंकाल है [को०]।

षष्ठकालोपवास—सच्चा पुं० [८०] एक व्रत। दे० 'षष्ठान्नकाल'।

षष्ठभक्त—वि० [८०] छठे समय अर्थात् तीसरे दिन शाम को भोजन करनेवाला [को०]।

षष्ठभक्त—सच्चा पुं० छठा भोजन। षष्ठकाल का आहार [को०]।

षष्ठम—वि० [८०] छठा [को०]।

षष्ठमी—सच्चा स्त्री० [८०] षष्ठी तिथि [को०]।

षष्ठाश—सच्चा पुं० [८०] १. छठा हिस्सा। २. कर के रूप में दिया जानेवाला उपज का छठा भाग या हिस्सा। राजस्व के रूप में राजा को दिया जानेवाला कृषि का छठा अंश [को०]।

षष्ठाशवृत्ति—सच्चा पुं० [८०] नरेश। वह जिसकी वृत्ति राजस्व के रूप में प्राप्त कृषि का छठा भाग हो। राजा जो कर के रूप में मिने कृषि के छठे अंश द्वारा कार्यवृत्ति संपादित करता है [को०]।

षष्ठान्न—सच्चा पुं० [८०] वह भोजन जो तीन दिनों के बीच में केवल एकवार किया जाय। षष्ठान्नकाल नाम के व्रत की विधि के अनुसार तीसरे दिन सायंकाल किया जानेवाला आहार।

षष्ठान्नकाल—सच्चा पुं० [८०] एक व्रत जिसमें तीन दिन में केवल एक बार, विशेषतः सायंकाल के समय, भोजन किया जाता है।

षष्ठान्नकालता—सच्चा स्त्री० [८०] षष्ठान्नकाल व्रत के अनुसार भोजन करना [को०]।

षष्ठान्नकालक—सच्चा पुं० [८०] दे० 'षष्ठालुकालुक' [को०]।

षष्ठालुकालुक—सच्चा पुं० [८०] तीन दिन में केवल एक बार किया जानेवाला भोजन [को०]।

षष्ठिका—सच्चा स्त्री० [८०] १. एक देवी। षष्ठी देवी। २. जातक के जन्म से छठे दिन का उत्सव जिसमें षष्ठी देवी की पूजा विधेय है [को०]।

षष्ठिमत्—सच्चा पुं० [८०] हाथी। वह हाथी जो साठ वर्ष का हो।

विशेष—कहते हैं कि हाथी को साठ वर्ष की अवस्था होने पर उमर के गडस्यल से मदस्त्राव होता है।

षष्ठिहायन—सच्चा पुं० १. हाथी। २. साठो धान।

षष्ठी—सच्चा स्त्री० [८०] १. किसी पक्ष का छठा दिन। शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षाडश मातृकाग्रा में से एक। देवसेना। ३. कात्यायनी। दुर्गा। ४ (व्याकरण में) सवय कारक। ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

यौ०—षष्ठीजाय = जिसने छठा विवाह किया हो। षष्ठीतत् रूप = तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद में षष्ठी विभक्ति होती है। षष्ठापूजन = प्रसव के छठे दिन होनेवाला पूजा। षष्ठीव्रत = व्रतविशेष। षष्ठा समास = दे० 'षष्ठी तत्पुरुष'।

षष्ठीप्रिय—सच्चा पुं० [८०] स्कंद। कार्तिकेय [को०]।

षष्ठ्य—सच्चा पुं० [८०] छठा हिस्सा। छठा अंश।

षहसातु—सच्चा पुं० [८०] १. मयूर। मोर। २. यज्ञ [को०]।

षहसातु—वि० सहिष्णुता से परिपूर्ण [को०]।

षाड—सच्चा पुं० [८०] षाण्ड शिव का एक नाम। षड।

षाड्य—सच्चा पुं० [८०] षाण्ड्य हीजडापन। नपु सकता।

षाट्कौशिक—वि० [८०] [वि० स्त्री० षाट्कौशिकी] जा ६ कोश या तह में लिपटा हुआ हो [को०]।

षाट्पौरुषिक—वि० [८०] [वि० स्त्री० षाट्पौरुषिकी] ६ पौढ़ियों से सवय र [को०]।

षाड्व—सच्चा पुं० १. राग का एक जाति जिसमें ५ और ६) लगते हैं और निषाद सेव। षाड्व दो प्रकार का है।

(१) शुद्ध पाडव और (२) ब्राह्म पाडव । २ मिठाई । ३ हलवाई का काम । ४ मनोरंग । मनोविकार । ५ गाना । संगीत (को०) ।

पाडविक—सङ्घा पु० [स०] मिठाई बनानेवाला । हलवाई [को०] ।

पाडगुरय—सङ्घा पु० [म०] १ छह उत्तम गुणों का समूह । २ नीति के छह अंग । विशेष दे० 'पडगुरा' । ३ किसी वस्तु का छह से गुणा करने से प्राप्त गुणफल । ४, तत्व (को०) ।

यी०—पाडगुरय प्रयोग = राजनीति के ६ अंगों का प्रयोग करना पाडगुरयवेदो = नीति के छहों अंगों का जानकार । पाडगुरय युत, पाडगुरयसयुत = ६ गुणों से युक्त जो नीति के छहों अंगों से युक्त हो ।

पाडूसिक—सङ्घा पु० [म०] १ वह जिसे छह रसों का ज्ञान हो । २ वह जिसमें छहों रसों का स्वाद प्राप्त हो ।

पाडवर्गिक—वि० [स०] पाचा ज्ञानेंद्रियों और मन से सत्रय रखनेवाला [को०] ।

पाएमातुर—सङ्घा पु० [म०] कार्तिकेय (जिनका पालन छह कृत्तिकाओं में किया था) ।

पाएमासिक—वि० [स०] १ छह महीने का । २ छह महीने में होनेवाला । ३ छठे महीने में पड़नेवाला ।

पाएमासिक—सङ्घा पु० मृतक सबंधी एक कृत्य जो किसी की मृत्यु के छह महीने पीछे किया जाता है । छमसो । छमानी ।

षादतर—सङ्घा पु० [स०] संगीत में एक बनावटी मसक जो मद से भी नीचा होता है । यह मसक केवल बजाने के काम में आता है ।

षाष्टिक—वि० [स०] साठ वर्ष की अवस्थावाला [को०] ।

षाष्ठ—सङ्घा पु० [स०] छठा [को०] ।

षाष्टिक—वि० [स०] छठे से संबंधित [को०] ।

षाष्टिक—सङ्घा पु० चार मास का एक व्रत जिसमें प्रति छठे दिन साया जाता है [को०] ।

पिग—सङ्घा पु० [स० पिङ्ग] १ व्यभिचारी । स्त्रिया । कामुक । २ शूरवीर ।

पिङ्ग—सङ्घा पु० [स०] १ कामुक व्यक्ति । २ विट । ३. वेश्या रखनेवाला पुरुष [को०] ।

पु, पू—सङ्घा पु० [स०] प्रसव [को०] ।

पेघ—सङ्घा पु० [स०] निपेघ । वारण [को०] ।

पोडत्—सङ्घा पु० [स० पोडत्] छह दाँत का बेल । जवान बेल ।

पोडश—वि० [स० पोडश] [वि० श्री० पोडशी] सोलहवाँ ।

पोडश—वि० [स० पोडशन्] जो गिनती में दस से छह अधिक हो । सोलह ।

पोडश—सङ्घा पु० सोलह की सख्या ।

पोडशक—वि० [स०] जिसमें सोलह अंश हो [को०] ।

पोडशक—सङ्घा पु० सोलह की सख्या ।

पोडशकल—वि० [स०] सोलह कलाओं या अंशों से युक्त ।

पोडशकला—सङ्घा श्री० [स० पोडशकला] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं । विशेष दे० 'कला'—२ ।

पोडशगण—सङ्घा पु० [स० पोडशगण] पाँच ज्ञानेंद्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पांच भूत और एक मन इन सत्रयों का समूह ।

पोडशदान—सङ्घा पु० [म०] सोलह प्रकार के दान जो ये हैं—(१) भूमि, (२) आसन, (३) पानो, (४) कण्डा, (५) दीपक, (६) अन्न, (७) पान, (८) द्रव्य, (९) मुग्ध, (१०) कूनपाला, (११) फल, (१२) सेज, (१३) खड्ग, (१४) गाय, (१५) साना और (१६) बाँदी ।

पोडशधूप—सङ्घा पु० [स०] 'तनवार' के अनुसार एक धूप जो सोलह वस्तुओं के मिश्रण से तयार होता है और देव वित्तु कार्यों में इसका प्रयोग विहित है [को०] ।

पोडशपक्षशायी—सङ्घा पु० [स० पोडशपक्षशायिन्] मेढक, जो सोलह पक्ष तक निश्चेष्ट रहता है [को०] ।

पोडशपूजन—सङ्घा पु० [म० पोडशपूजन] सोलहों सामग्रियों के साथ पूजन । विशेष दे० 'पाडशोपचार' ।

पोडशभुजा—सङ्घा श्री० [स०] दुर्गा देवी का एक रूप [को०] ।

पोडशभेदित—वि० [म०] जो सोलह भागों में विभक्त हो । सोलह भागों में बँटा हुआ [को०] ।

पोडशमातृका—सङ्घा श्री० [म० पोडशमातृका] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं—(१) गौरी, (२) पद्मा, (३) शची, (४) मेवा, (५) सावित्री, (६) विजया, (७) जया, (८) देवसेना, (९) स्वधा, (१०) स्वाहा, (११) शांति (१२) पुष्टि, (१३) धृति, (१४) तुष्टि, (१५) आत्मदेवता ।

पोडशविध—वि० [म०] सोलह प्रकार का । सोलह भेद का [को०] ।

पोडशशृंगार—सङ्घा पु० [स० पोडशशृङ्गार] पूर्ण शृंगार जिसके अंतर्गत सोलह वार्ते हैं । पूरा सिंगार । विशेष दे० 'शृंगार-२' तथा 'सोलह सिंगार' ।

विशेष—प्राचीन संस्कृत साहित्य में पोडश शृंगार की गणना अज्ञात प्रतीत होती है । अनुमानत यह गणना बल्लभदेव की सुभाषितावली (१५वीं शती या १२वीं शती) में प्रथम बार आती है । उनके अनुसार वे इस प्रकार हैं—

आदौ मञ्जनचौरहारतिलक नेत्राञ्जन कुडले,
नासामौकितवकेशपाशरचना सक्तचुक नूपुरी ।
सौगन्ध्य करकङ्कण चरणयो रागो रण्मेलला,
ताम्बूल करदर्पण चतुरता शृंगारका पोडश ॥

अर्थात् (१) मञ्जन, (२) चौर, (३) हार, (४) तिलक, (५) अञ्जन, (६) कुडल, (७) नासामुक्ता, (८) केशविन्यास, (९) चोली (कङ्कण), (१०) नूपुर, (११) अंगराग (सुगंध), (१२) कफण, (१३) चरणराग, (१४) करवनी, (१५) ताम्बूल तथा (१६) करदर्पण (आरसो नामक अंगूठी) ।

पुन १६वीं शती में आरूपगोस्वामी के उज्ज्वलनीलमणि में शृंगार की यह सूची इस प्रकार गिनाई गई है—

स्नानानासाग्रजाग्रन्मणिरसितपटा सूत्रिणी । बद्धवेणि ।
सोत्त सा चर्चिताङ्गी कुमुमितचिकुरा स्रग्विणी पद्महस्ता ।
ताम्बूलास्योरुविन्दुस्तबकितचिबुका कज्जलाङ्गी सुचित्रा
राघालक्तोज्जलाङ्घ्रि स्फुरति तिलकिनी षोडशाकल्पनीयम् ॥

उक्त प्रमाण से शृंगारो की यह सूची बनती है—

अर्थात् (१) स्नान (२) नासा मुक्त, (३) असित पट, (४), कटि सूत्र (करधनी), (५) वेणीविन्यास, (६) कर्णावतस, (७) अंगो का चर्चित करना, (८) पुष्पमाला, (९) हाथ में कमल, (१०) केश में फूल खोसना, (११) तावूल, (१२) चिबुक का कस्तूरी से चित्रण, (१३) काजल, (१४) शरीर पर पत्रावली, मकरीभग आदि का चित्रण, (१५) अलक्तक और (१६) तिलक ।

यहाँ वल्लभदेव के तथा श्रीरूपगोस्वामी के काल तक की शृंगार सूची में विभिन्नता स्पष्ट है ।

हिंदी कवियों में जायसी के अनुमार ये शृंगार यो है—(१) मज्जन, (२) स्नान (जायसी ने मज्जन, स्नान को अलग रखा है), (३) वस्त्र, (४) पत्रावली, (५) सिंदूर, (६) तिलक, (७) कुंडल, (८) अजन, (९) अचरो का रंगना, (१०) तावूल, (११) कुसुमगंध, (१२) कपोलो पर तिल, (१३) हार, (१४) कचुकी, (१५) छुदघटिका और (१६) पायल ।

रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह शृंगार की गणना इस प्रकार की है—

प्रथम सकल सुचि, मजन अमल वास,
जावक, सुदेस केस पास कौ सम्हारिवो ।
अगराग, भूपत, विविध मुखवास-राग,
कज्जल ललित लोल लोचन निहारिवो ।
बोलन, हँसन, मृदुचलन, चितौनि चार,
पल पल पतिव्रत प्रन प्रतिपालिवो ।
'केसौदास' सो बिलास करहु कुँवरि रावे,
इहि विधि सोरहै सिंगारन सिंगारिवो ।

उक्त छंद की टीका करते हुए सरदार कवि ने ये शृंगार यो गिने हैं—(१) उबटन, (२) स्नान, (३) अमल पट्ट, (४) जावक, (५) वेणी गुँथना, (६) माँग में सिंदूर, (७) ललाट में खोर, (८) कपोलो में तिल, (९) अंग में केसर लेपन, (१०) मेहदी, (११) पुष्पाभूषण, (१२) स्वर्णाभूषण, (१३) मुखवास (१४) दंत मजन, (१५) तावूल और (१६) काजल । यहाँ स्पष्ट है कि टीकाकार ने कई उपकरण अपनी ओर से जोड़े हैं ।

नमोदनाथ वसु ने हिंदी विश्वकोश में इन शृंगारो को गणना निम्नलिखित दी है—

(१) उबटन, (२) स्नान, (३) वस्त्रधारण, (४) केश प्रसाधन, (५) काजल, (६) सिंदूर से माँग भरना, (७) महावर, (८) तिलक, (९) चिबुक पर तिल, (१०) मेहदी, (११) सुगंध लगाना, (१२) आभूषण, (१३) पुष्पमाला, (१४) मिस्ती लगाना, (१५) तावूल, और (१६) अचरो को रंगना ।

‘उक्त विभिन्न सूत्रियों से पता चलता है कि षोडश शृंगार को कोई निश्चित परिभाषा या सूची नहीं रही है । देश और काल के अनुसार उसमें भिन्नता होती रही ।

षोडश संस्कार—संज्ञा पुं० [सं षोडश संस्कार] वैदिक रीति के अनुसार गर्भावधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार जो द्विजातियों के लिये कहे गए हैं । विशेष दे० ‘संस्कार’ ।

षोडशांग—वि० [सं षोडशाङ्ग] सोलह अंगोंवाला । जिसके सोलह भाग या प्रकार हो [को०] ।

षोडशांग—संज्ञा पुं० दे० ‘षोडशधूप’ ।

षोडशांग चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं षोडशाङ्ग चूर्ण] वैद्यक में एक चूर्ण जो विषमज्वर में दिया जाता है ।

विशेष—चिरायता, नीम की छाल, कुटकी, गिलोय, हड का छिनका, नागर मोथा, धनिया, अड़सा, त्रायमाणा, कटियाली, काकडासिंगो, सोठ, पित्तपापडा, प्रियंगु पुष्प, पेखल, पीपल, कचूर सब सामान लेकर पीस डाले और ११ टक प्रति दिन ठंडे जल से आठ दिन तक सेवन करें ।

षोडशांगुलक—वि० [सं षोडशाङ्गुलक] जो सोलह अंगुल माप का हो । सोलह अंगुल के नाप की चौड़ाई का [को०] ।

षोडशाङ्घ्रि—संज्ञा पुं० [सं षोडशाङ्घ्रि] केकडा ।

षोडशाशु—संज्ञा पुं० [सं षोडशाशु] शुक्र ग्रह, जिसमें सोलह किरनें मानी गई हैं ।

षोडशात्मक—संज्ञा पुं० [सं] आत्मा [को०] ।

षोडशार—वि० [सं] १ सोलह अराओ वाला । जैसे, षोडशार चक्र । २ जिसमें सालह पखंडियाँ हों [को०] ।

षोडशार—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कमल ।

षोडशाचि—संज्ञा पुं० [सं] शुक्र ग्रह [को०] ।

षोडशावर्त—संज्ञा पुं० [सं षोडशावर्त] शख ।

षोडशाश्रि—संज्ञा पुं० [सं षोडशाश्रि] नह घर या मंदिर जो सोलह कोनों का हो । ऐसे घर में सदा अँवेरा रहता है । (बृहत्संहिता) ।

षोडशाह—संज्ञा पुं० [सं] व्रत या उपवास आदि जो सोलह दिनों तक चलता रहे [को०] ।

षोडशिक—वि० [सं] [वि० स्त्री षोडशिकी] दे० ‘षोडशक’ ।

षोडशिका—संज्ञा स्त्री [सं षोडशिका] एक प्राचीन तेल जो मागधी मान से १६ मासे और व्यावहारिक मान से एक ताले के बराबर होती थी ।

षोडशिकाम्र—संज्ञा पुं० [सं] एक प्रकार की तीन जिसे पल कहते हैं [को०] ।

षोडशी—वि० स्त्री [सं षोडशी] १. सोलहवीं । २. सालह वर्ष की (लडकी या स्त्री) । जैसे,—षोडशी बाला ।

षोडशी—संज्ञा स्त्री १. सालह वर्ष की स्त्री । नव यौवना स्त्री । २. वस महाविद्यामी में से एक । ३. एक यज्ञपात्र । ४. एक

प्राचीन तौल । पल का एक भेद जो मागधी मान से ५ तोले और व्यावहारिक मान से ४ तोले के बराबर होता था । ५ इन सोलह पदार्थों का समूह—ईक्षरा, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म और नाम । ६ मृतक सबको एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है ।

यौ०—षोडशी सर्पिणी ।

षोडशी^१—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोमयुक्त पात्र विशेष, २. अग्निष्टोम यज्ञ का विभेद या रूपांतर विधान [को०] ।

यौ०—षोडशीग्रह = अग्निष्टोम यज्ञ में देवता के निमित्त दिया हुआ पयनिषेक वातर्पण ।

षोडशोपचार—संज्ञा पुं० [सं० षोडशोपचार] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं ।

विशेष—इनके नाम इस प्रकार हैं—(१) आवाहन, (२) आसन, (३) अर्घ्यपाद्य, (४) आचमन, (५) मधुपर्क, (६) स्नान, (७) वस्त्राभरण, (८) यज्ञोपवीत, (९) गन्धन (चंदन), (१०) पुष्प, (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) ताबूल, (१५) परिक्रमा और (१६) वदना । तत्रसार के अनुसार इनके नाम इस प्रकार हैं—(१) आसन, (२) स्वागत,

(३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) मधुपर्क, (७) आचमन, (८) स्नान (९) वस्त्र, (१०) आभरण, (११) गंध, (१२) पुष्प, (१३) धूप, (१४) दीप, (१५) नैवेद्य और (१६) वदना ।

षोढा—क्रि० वि० [सं०] छद्म ढग से । छद्म प्रकार से । पड़्या [को०] ।

षोढान्यास—संज्ञा पुं० [सं०] तत्र में छद्म प्रकार अग्न्यास [को०] ।

षोढामुख—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय जिनके छद्म मुख कहे जाते हैं परमुर [को०] ।

षोदत्—संज्ञा पुं० [सं०] जवान वृष । दे० 'पोदत्' [को०] ।

ष्ठीवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ष्ठीवित, ष्ठ्युत] १. थूकना । २. लाला । लार [को०] ।

ष्ठीवित्त—वि० [सं०] दे० 'ष्ठ्युत' [को०] ।

ष्ठेव, ष्ठेवन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ष्ठीवन' [को०] ।

ष्ठेविता—वि० [सं०] ष्ठेवितृ थूकनेवाला ।

ष्ठ्युम—संज्ञा पुं० [सं०] १. चद्रमा । २. प्रकाश । ३. जल । ४. सूत्र । होरा । ५. शुभता । कल्याण [को०] ।

ष्ठ्युत—वि० [सं०] थूका हुआ ।

ष्ठ्युति—संज्ञा स्त्री [सं०] थूकना । छीवन करना ।

